ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-८५

पौष शुक्ल १५ रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक ३ जनवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	१५)
छमाही	८)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	५१
अङ्क	१

शहीदों की चिताओं पर ...

काकोरी के शहीदो का साठवाँ बलिदान दिवस

आज जब हम स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक होकर विश्व सम्मान प्राप्त करने मे सफल होते जा रहे हैं, हमारा ध्यान बरबस उन अमर शहीदो की पुण्य स्मृति मे श्रद्धावनत हो जाता है जिन्होंने अथाह कष्ट झेलते हुए अपनी प्रिय मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए हँसते २ अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। यह हमारे स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास की ऐसी अविस्मरणीय पुण्यात्मायें हैं जिन्होने क्रूर ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने का और कोई विकल्प न देखकर पवित्र वेदमाता के इन शब्दो में सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान किया था—

एक शत ता जनता या भूमिर्व्यधूनुत ।
प्रजा हिंसित्वा ब्राह्मणीम् असम्भव्य पराभवन् ॥

अथर्व० ५।१८।१२

(ता) वह (जनता) जनता (शतम्) सैकड़ो की सख्या मे एकत्रित होती है। (या) जो (एक) समान उद्देश्य के लिए (भूमि.) भूमि को (व्यधूनुत) विविध प्रकार से—निरस्त्र अथवा सशस्त्र प्रतिकार से—आन्दोलित करती है। उस (ब्राह्मणीम्) नेता के बनाये रहने वाली, ईश्वर विश्वासी (प्रजा) प्रजा को सताकर और दबाकर रखने वाला प्रजा पीड़क राजा (असम्भव्यम्) अचानक ही (पराभवन्) पराजय को प्राप्त हो जाता है—अर्थात् जहाँ पीड़ित जनता सैकड़ों की सख्या मे एकत्रित होकर क्रान्ति करती हैं, तब वहा अचानक ही प्रजापीड़कों का सदा-सदा के लिए अन्त हो जाता है।

क्रान्ति का यह मार्ग असाधारण रूप से बहुत गम्भीर और कष्टप्रद माना जाता है इसमें उत्कृष्टतम त्याग और अनुशासन बहुत अपेक्षित है उद्देश्य के लिए यहा जीवन सर्वथा नगण्य है। सर पर कफन बाँधे ऐसे वीर बलिदान के अवसरों की खोज मे फिरा करते हैं। "कार्यं साधयेम वा शरीरं पातयेम" शरीर रहे या न रहे मेरा उद्देश्य पूरा होना चाहिए—इसी भावना और प्रेरणा से ९ अगस्त १९२५ को रात्रि में निराशा के घोर बादलो को चीरते हुए देश के यह बलिदानी वीर काकोरी पहुच गए थे, ट्रेन को रोककर अंग्रेज सरकार का खजाना लूटा था। ब्रिटिश सरकार ने मुकद्दमा चलाया और रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर मे, अशफाकउल्ला खाँ को फैजाबाद मे, १९ दिस० १९२७ को फांसी पर लटका दिया गया। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, को गोण्डा मे, रोशनलाल को इलाहाबाद मे १७-१२-२७ को फांसी की सजा दी गई थी तथा शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्ता, मुकुन्दलाल गप्त, विष्णुशरण दुबलिश, रामकृष्ण खत्री आदि अन्य अनेक क्रान्तिकारियों को आजीवन कारावास एव लम्बी सजायें दी गयीं।

इन क्रान्तिकारियो मे अनेकों को ऋषिवर दयानन्द के क्रान्तिकारी जीवन से प्रेरणा मिली थी और वे आर्य समाज के कर्मठ सदस्य थे, बिस्मिल की अन्त्येष्टि उनकी इच्छानुसार वैदिक रीति से की गई थी इस वीरवर ने सत्यार्थप्रकाश हाथ में लेकर फांसी के फन्दे को चूम लिया था। इन वीरों का बलिदान हमें अनन्तकाल तक प्रेरणा देता रहे—यही हमारी प्रभु से कामना है और यही आर्य जनता की श्रद्धांजलि है।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

जो आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह केवल हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-पौष शुक्ल १५ सम्वत् २०४४ रविवार ३ जनवरी १९८८, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

हे मेधा के अपरमित भण्डार ? हमें पवित्र मेधा दो

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया–
मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु।

जीवन के किसी क्षेत्र में, चाहे वह वैयक्तिक हो, सामाजिक हो, राष्ट्रीय हो, अन्तर्राष्ट्रीय हो, बुद्धि की पवित्रता परम आवश्यक है। जब हम वैयक्तिक जीवन से ऊपर उठकर अपने को सामाजिक जीवन का अंग पाते हैं और पूरे समाज के हृदय, मन और बुद्धि की एक रूपता से जिन विचारों का निर्माण करते हैं यदि वह पवित्र हैं, कल्याणकारी हैं, तो निश्चय ही समाज के उत्थान की वही आधार शिला हैं। वहाँ पतन की गुञ्जाइश ही नहीं है क्योंकि यदि किसी एक या दो व्यक्ति की स्वैषणा अथवा अहम्मन्यता के कारण पूरे समाज का पथ कण्टकाकीर्ण बनता है तो समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए वेद बुद्धि की पवित्रता के साथ व्यक्ति को वास्तविकतापरक बनने का भी आदेश देता है–"मेधामयासिषम्–" बुद्धि इतनी पवित्र हो कि 'वास्तविकता को देख सके, परख सके, और स्वीकार कर सके।

हमारा संगठन पवित्र वेदऋचाओं पर आधारित है जहां उत्थान की कोई सीमा नहीं है और पतन की कोई गुञ्जाइश नहीं है। हमारे ऋषियों ने तो 'चरैवेति चरैवेति'–आगे बढ़ना ही सिखाया है, पीछे मुड़ कर देखना हमारे शब्दकोश में ही नहीं है। लेकिन यदि कोई हमारी टांग पकड़ ले या रास्ता अवरुद्ध करना चाहे तो हम क्या करें...

वेद के शब्दों में उस दशा में, हमें अपनी दृष्टि बहुत दूरगामी बनानी पड़ेगी और एक ऐसे महान उद्देश्य को सामने रखकर हमें अपना मूल्यांकन करना पड़ेगा जो अक्षिण है अमिट है और हमारी और विरोध कर्त्ता दोनों की श्रद्धा का केन्द्र है। निर्णय हमें उसी श्रद्धा-समन्वित केन्द्र से लेना है यदि बुद्धि पवित्र है तो यह स्थिति बहुत शीघ्र ही विरोध के आवरण को उतार कर प्रेम और ऐक्य का जामा पहन सकती है। इतिहास में ऐसे अनेक अवसर आये है जब व्यक्ति ने अपनी पवित्र मेधा अथवा विचार शक्ति के बल पर विरोध को प्रेम में परिणित कर दिया है। जो तलवारें गर्दन काटने के लिए उठी हुई थीं वे स्नेहालिङ्गन में परिवर्तित हो गई क्योंकि उस पवित्र बुद्धि ने उन विरोध बुद्धियों को श्रद्धाकेन्द्रकी ओर उन्मुखकर दिया था वहां का आदेश अन्तिम था। ऐसे एकीकृत समाज को ही वेद ने "समानो मन्त्रः समितिः" कहकर पुकारा है। अर्थात हमारे चित्तों में भेदभाव न रहे हम अपने श्रद्धाकेन्द्र उद्देश्य के प्रति एकमना समर्पित होकर निरन्तर बढ़ते रहें। ईसाईयत और इस्लामियत के प्रचार में संलग्न जिन संस्थाओं अथवा समाजों ने अल्पकाल में ही, विस्तार की दृष्टि से ही सही, आशातीत उन्नति की, उनमें कार्य करने वाले व्यक्ति कोई विशेष प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति नहीं थे, पर एक गुण उन्होंने अपने में उत्पन्न कर लिया था और वह था अपने श्रद्धासमन्वित केन्द्र पर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास। यही कारण है कि आपसी विरोधों के बीच भी वह बढ़ते चले गये, बढ़ते चले जा रहे हैं। प्रगति में कहीं अवरोध नहीं दिखाई पड़ता।

परमपिता परमात्मा हमारे समाज के सभी घटकों में ऐसी ही पवित्र मेधा प्रदान करें जिससे विश्व का कल्याण करने वाला हमारा यह पवित्र संगठन संसार का आदर्श एवं सिरमौर संगठन बन जाये।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक ३ जनवरी १९८८ को प्रातः १०–३० बजे नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होगा। विचारणीय विषयों की सूची सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को डाक द्वारा भेज दी गई है।

मनमोहन तिवारी

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

काकोरी के शहीदों की पावन स्मृति में

लखनऊ मान्टेसरी इन्टर कालेज, लखनऊ में भव्य समारोह

१९ दिस० १९८७, को शहीद स्मारक व स्वतन्त्रता संग्राम शोधकेन्द्र लखनऊ के तत्वावधान में लखनऊ मान्टेसरी इन्टर कालेज, लखनऊ के विशाल प्राङ्गण में एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ जिसमें अनेक वक्ताओं ने काकोरी काण्ड में शहीद हुए देश के अमर बलिदानी सपूतों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं।

आज से साठ वर्ष पूर्व आज ही के दिन क्रूर ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने पं० रामप्रसाद बिस्मिल अशफाकुल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशनलाल जैसे भारत मां के नौनिहालों को फांसी पर लटका दिया था और अनेकों क्रान्तिकारियों को आजीवन तथा लम्बे कारावास की सजा सुनाकर जेल के सीखचों में बन्द कर दिया था। काकोरी की घटना से जुड़े हुए इन वीर पुङ्गवों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने रुंधे हुए कण्ठ से कहा—उनके शौर्य और मातृभूमि के प्रति उनके समर्पण की उत्कृष्ट भावना को देखकर हृदय गद्गद् हो जाता है। आज सारा राष्ट्र अपने इन वीर सपूतों की स्मृति में श्रद्धावनत है। इस अवसर पर इन वीर पुङ्गवों के जीवन से सम्बन्धित चित्रों की एक प्रदर्शनी भी दिखाई गई।

सम्वाददाता

उत्सव

आ० स० चौक इलाहाबाद का वार्षिकोत्सव १८ से २१ फरवरी १९८८ ई० तक धूम-धाम से मनाया जायेगा। —मन्त्री



'समय की पूजा'

(श्री अमित प्रताप नारायण सिंह ग्रा० हाटा, पो० नवौली, देवरिया)

'कालो अश्वो वहति ,सप्त रश्मी'

सात किरणों वाला घोड़ा दौड़ा जा रहा है। समय रूपी अश्व भागता चला जा रहा है। दिन, रात, सप्ताह, मास और वर्ष व्यतीत होते जा रहे हैं। समय भागता चला जा रहा है। समय रूपी अश्व अविराम है। वह न कभी सुस्ताता है, न विश्राम करता है।

मनुष्य के जीवन में समय का बहुत अधिक महत्व है। समय जा रहा है, बड़ी तीव्र गति से जा रहा है। देखिये और समय रूपी अश्वों को पकड़िये। मानव जीवन कराल काल का ग्रास बनने के लिए नहीं है, काल (समय) पर सवार होकर काल (मृत्यु) पर विजय प्राप्त करने के लिए है। समय रूपी अश्वों के पीठ पर बैठकर अर्थात् उसके साथ-साथ दौड़िये और मृत्यु पर विजय प्राप्त कीजिए, नहीं तो देखते-देखते जीवन समाप्त हो जायगा और आप जहां हैं वहीं रह जायेंगे' कुछ नहीं कर पावेंगे इस संकुचित जीवन में।

समय नष्ट मत करो। समय मूल्यवान वस्तु है और हम जिसे समय कहते हैं वही जीवन भी तो है। जीवन के सारे घंटे, दिन, महीनो और वर्षों को आप चाहें तो अपने जीवन को उच्च और सफल बनाने में लगा सकते हैं अथवा यों ही नष्ट कर सकते हैं। कहा गया है——का हानिः समय च्युतिः।

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल में समय के सदुपयोग का बहुत ध्यान रखते थे। उनका विचार था खाली मन शैतान का घर होता है। अतः वे छात्रों को उपदेश देते हुये कहा करते थे 'यदि तुम जीवन मे सफलता प्राप्त करना चाहते हो और अमृतत्व की प्राप्ति की अभिलाषा रखते हो तो निरन्तर कार्य में लगे रहो। यदि तुम्हारे पास कभी कोई काम नहीं रहे तो अपनी धोती फाड़ कर सीना प्रारम्भ कर दो। याद रखो तुम 'नर' हो। 'नर' उसको कहते हैं जो 'न रमते इति नर' अर्थात जो कभी विश्राम नहीं करता है, वही नर है। दूसरे शब्दों में नदी की धारा जो निरन्तर अविराम गति से बहती जा रही है। ठीक उसी प्रकार समय भी निरन्तर भागता जा रहा है और नर वही है जो नदी की धारा की तरह समय के साथ भागता है। वह कभी इन्द्रियों का दास नहीं बन सकता अतः वह सफल होगा।

कार्लाइल एक प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक ने कहा है, 'हमारे भाग्य-सूत्रों को हमेशा कौन देख सकता है। पल भर के लिए कल्याण का मौका आता है हम उसे छोड़ देते हैं और महीनों तथा वर्षों का नाश हो जाता है। याद रखो, धीरे-धीरे रास्ते पर चलकर मनुष्य 'कभी नहीं' की मंजिल पर पहुंचता है।'

प्रसिद्ध अंग्रेजी नाटककार शेक्सपीयर ने लिखा है, 'आज का दिन घूमने में खो दो– कल भी वही बात होगी, और फिर काम बढ़ जायेगा और हमें अधिक आलस्य आयेगा।

आखिर यह जीवन है क्या ? कुछ क्षणों का संघात ही न। प्रत्येक क्षण मानव को परमात्मा के द्वारा दी गई सबसे बड़ी पूंजी है। एक-एक क्षण की पूंजी यदि हमने गवां दी तो जीवन का कारोबार ही चौपट हो जायगा। यदि हमने समय का मधुर रस नहीं पिया तो समय ही सारा रस पीकर हमें चूसी हुई नारंगी की तरह एक किनारे फेंक देगा। कहावत है कि 'लेने योग्य देने योग्य, तथा करने योग्य कार्यों का सम्पादन जब शीघ्रता से नहीं होता है तो उनका रस काल (समय) पी जाता है। समय का कारवां सामने से गुजर जाने पर लाख गुहार मचाने पर भी लौटता नहीं।

किसी ने ठीक कहा है 'कल' शैतान का सेनापति है। इतिहास के पन्ने इस 'कल' की तलवार से काटे गये असंख्य प्रतिभाशालियों के खून से रंगे पड़े हैं। कितनों की योजनायें 'कल' के मरुस्थल में सूख गयीं। कितनों के निश्चय 'कल' राक्षस की दाढ़ के नीचे आ गये कितने पछताते रह गये। 'कल' अकर्मण्यता और आलस्य का दूसरा नाम है।'

एक चित्रशाला में एक चित्र टँगा था। इस चित्र का चेहरा बालों से ढंका हुआ था और उसके पैरों में पर (पंख) लगे हुए थे। दर्शक ने पूछा 'यह किसका चित्र है ?' चित्रकार ने कहा 'यह अवसर (समय) का चित्र है।' दर्शक ने पूछा 'इसका मुख क्यों ढंका है ?' चित्रकार बोला 'क्योंकि जब यह मनुष्यों के सामने आता है, तब वे उसे पहचान नहीं पाते।' इसके पैरों में पंख क्यों लगे हैं ? चित्रकार ने बताया 'क्योंकि यह शीघ्र चला जाता है, और इसके एकबार चले जाने के बाद फिर इसे कोई पा नहीं सकता। समय चूक कर पछताने से क्या लाभ, जब काल की चिड़िया ही हमारे जीवन का खेत चुग गयीं। इसलिए महात्मा कबीर ने ठीक ही कहा है कि जो करना है उसे अभी आज करो, जिसे आज करना है उसे अभी बिलकुल अभी करो——

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलय होइगी, बहुरि करैगा कब्ब ॥

इस बात को एक यूरोपियन लेखक ने लिखा है कि समय के सिर के अगले भाग में बाल हैं, और पिछले भाग में वह गंजा है। यदि तुम उसके सामने के बाल पकड़ लो अर्थात् जब वह आये तब उसका उपयोग कर लो तो उसे पकड़े रह सकते हो। यदि उस समय तुम चूक गये तो बाद में पकड़ना असम्भव है।

मित्रों, समय नष्ट करना पाप है, आत्म-हत्या है। इस संसार में सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो परन्तु कर्म करते हुए ही जिओ। कर्मशील बनो, प्रमादी न बनो। ईश्वर ने मनुष्य को श्रम करने को बनाया है। यही आदर्श उसके सामने रखा है——'श्रमेण तपसा सृष्टा'

ईश्वर ने परिश्रम के लिए, पुरुषार्थ के लिये मनुष्य को बनाया है। सब पदार्थ जाकर आते हैं, पर गया समय लौट कर नहीं आता। समय को जाने से रोकना तुम्हारे बस की बात नहीं, परन्तु उसका सदुपयोग करना तुम्हारे बस की बात है। अपने दैनिक जीवन को घड़ी की सुई के समान सततगामी, नियतगति मिताचारी और नियमित बनाओ। चाहे घड़ी चूक जावे पर तुम न चूको। स्वामी विदेह जी के शब्दों में——

[शेष पृष्ठ १० पर]

वेदानुसार परमात्मा का स्वरूप

[लेखक–श्री जीवानन्द नैलवाल एम० ए० (संस्कृत) ग्राम रौड़ा पो० भतरौजखान जिला–अल्मोड़ा]

'यदि नीच व्यक्ति अपनी नीचता का परित्याग नहीं कर सकता है तो श्रेष्ठ-व्यक्ति को भी अपनी श्रेष्ठता का परित्याग नहीं करना चाहिये।' इस सूक्ति के जन्मदाता तथा हमेशा सत्य पर अटल रहने वाले एवं वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की नियमावली को तैयार करते समय किसी भी व्यक्ति के मन में ईश्वर के विषय में किसी भी प्रकार की शंका व सन्देह न रह जाय, इस विषय में दूसरा नियम बनाते हुये परमात्मा के स्वरूप का निम्न प्रकार से वर्णन किया है:–

'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, नित्य, अभय, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।'

उपरोक्त नियम में ईश्वर के २० गुणों का उल्लेख किया गया है। ईश्वर के स्वरूप विषय में वेद का निम्न मन्त्र प्रमाण स्वरूप है–

स: पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं, शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा–
श्वतीभ्य: समाभ्य: (यजुर्वेद, अध्याय ४०, मन्त्र ८)

अर्थात् वह परमात्मा तेजस्वी, कारणस्वरूप, सूक्ष्म एवं स्थूल शरीरो से रहित, अविद्यादि दोषों से रहित, पाप संसर्ग से सदा अलिप्त, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, कवि, ज्ञाता, सर्वोपरि वर्तमान एवं अजन्मा है। वही अनादि काल से सभी पदार्थों को ठीक-ठीक रचता है। ईश्वर की महानता का कोई ओर-छोर भी नहीं है। इसलिए किसी कवि ने मार्मिक एवं हृदयग्राही शब्दो में कहा है कि:–

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे।
सुरवर तरु शाखा लेखनी–पत्रमुर्वी॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं।
तदपि तवगुणानामीश! पारं न याति॥

आत्मा की शान्ति के लिए मनुष्य मात्र को प्रभु के उपरोक्त गुणों का चिन्तन ब्रह्मयज्ञ के समय ध्यान योग के द्वारा प्रतिदिन करना चाहिए। ईश्वर के ओ३म् नाम का चिन्तन तो प्रतिक्षण ही करना चाहिए क्योंकि प्राणिमात्र का जीवन श्वासों पर निर्धारित है। पता नहीं कौन ऐसा क्षण आ जाय कि बाहर आया श्वास बाहर ही रह जाय। किसी ने कहा भी है–

क्षणभंगुर जीवन की कलियाँ कल प्रात को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द सुगन्ध समीर मिली न मिली॥

योगी जब परमेश्वर का चराचर के साथ एकीभाव अनुभव करता है तब उसके हृदय का शोक मोह छूट जाता है। इसका प्रमाण उपनिषद का निम्न श्लोक दे रहा है। तथा योगी तो इसका अनुभव करते ही हैं। श्लोक इस प्रकार है—

भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशया।
क्षीयन्ते पाप कर्माणि तस्मिन दृष्टे परावरे॥
(मुण्डक उ० अ० २। ८)

आत्मा की शान्ति का नाम ही समाधि में पहुंचने की स्थिति है। ध्यान का अर्थ है चित्त अथवा अन्तःकरण से सब प्रकार के विचारों को बाहर निकाल देना। 'ध्यानं निर्विषयं मन:' सांख्य शास्त्र का यह वचन है। आत्मा की शक्ति दो प्रकार की है। एक बहिर्मुखी जो स्थूल और सूक्ष्म शरीर द्वारा जगत् में काम करती हैं। दूसरी अन्तर्मुखी जो भीतर ही भीतर काम करती हैं। ये दोनों शक्तियाँ एक साथ काम नहीं करती हैं। वृत्तियों का अन्तर्मुखी होना ही ध्यान है। इसके अभ्यास से उपनिषद में कहे एकत्व का अनुभव होने लगता है। समाधि दशा में एकमात्र लक्ष्य ईश्वर का रहता है। तब उसे व्यापक ब्रह्म का अनुभव होता है।

कुछ लोग ब्रह्म के विषय में प्रश्न करते हैं कि ब्रह्म साकार है अथवा निराकार। वेद का मन्त्र कहता है कि ईश्वर निराकार है। यथा 'तस्य प्रतिमा नास्ति।' (यजुर्वेद, ३२।३) इस विषय में वेदो का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि वेदों में ईश्वर के निराकारत्व के विषय में सैकड़ों मन्त्र हैं। श्री शंकराचार्य कृत 'निर्गुण मानस पूजा' नामक पुस्तक में मूर्ति पूजा का स्पष्ट विरोध किया गया है। कुछ श्लोक दृष्टव्य हैं–

पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम्।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनंकुत:॥
निर्मलस्य कुत: स्नानं वस्त्रं विश्वोदरस्य च।
निर्लेपस्य कुतो गन्ध: पुष्पं निर्वासनस्य च॥

शरीर आदि यन्त्रों में सर्वत्र निराकार शक्ति काम करती है। निराकार ब्रह्म ही सृष्टि को रचता और चलाता है। इस विषय में फिर प्रश्न हो सकता है कि क्या फिर ईश्वर में क्रियाशीलता है? इसका उत्तर भी नहीं में ही है। वह व्यापक होकर भी अन्य अल्प देशो में चुम्बक के समान क्रिया उत्पन्न कर देता है। प्रकृति में सूक्ष्म क्रिया होते ही उसमें विकृति होकर सृष्टि बनने लगती है।

एक आश्चर्यजनक बात यह है कि परमात्मा निराकार होने के साथ साथ ही इन्द्रियातीत है जब जीवात्मा इन्द्रिय और मन के सम्बन्ध को त्यागकर एकाग्रवृत्ति से अन्तर्मुखी हो जाता है। तब परमात्मा का साक्षात्कार करता है। जब मन का बाह्य विषयों से संसर्ग छूट जाता है तो अपने स्वरूप को अनुभव में लाता है।

परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को न समझकर ही, अर्थात् परमात्मा के निराकार स्वरूप को न समझकर ही आज संसार में मूर्ति-पूजा का प्रचार व प्रसार हुआ है जो सर्वथा नियमों के प्रतिकूल व असंगत है। मूर्ति को माध्यम बनाकर ध्यान लगाने वालों को कोई भी सिद्धी प्राप्त नहीं हो सकती है। उपासना का प्रारम्भिक साधन माध्यम के रूप में प्रकृति का सौन्दर्य ही है। क्योंकि प्रकृति ईश्वर का कार्य है। जो कभी भी नष्ट नहीं हो सकता है। अथर्ववेद का निम्न मन्त्र इस ओर संकेत कर रहा है यथा—

'अन्ति सन्तं न जहाति, अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति॥

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं, परमात्मा के काव्य को देख, जो न कभी मरता है और न बूढ़ा होता है।

आर्य समाज की प्रचार प्रणाली—प्रारम्भिक युग में

—देव नारायण भारद्वाज एफ–४२, मानसरोवर कालोनी
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा लिखित हिन्दी की सर्वप्रथम आत्म कथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' के अवलोकन से जीवन के अनेक आयाम उजागर होते हैं। वर्तमान काल में आर्य समाज के विश्व सम्मेलन, विराट आर्य सम्मेलन, वार्षिक अधिवेशन सभी कुछ होते हैं, आज बड़े-बड़े शामियाने और मन्च बनाये जाते हैं। महाविद्यालय और विश्व विद्यालय आदि सभी कुछ हैं। उपदेशक–महोपदेशक और भजनोपदेशक भी हैं, नियमित रूप से ये सभी आर्य समाज का प्रचार करते हैं, और इनका प्रभाव भी पड़ता है, किन्तु ये सभी कुछ न होते हुए अल्प प्रचार का भी प्रारम्भिक युग में क्रांतिकारी प्रभाव पड़ता था—और बड़ी-बड़ी विभूतियां आर्य समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए उद्यत हो जाती थीं।

पंजाब में प्रथम आर्य समाज लाहौर में स्थापित हुआ था—बच्छोवाली में। कोई साधन और प्रशिक्षण न होने के कारण जो मुसलमान गायक ब्रह्म मन्दिर में भजन गाते थे—वही आर्य समाज मे भी बुला लिए जाते थे—और इसके उपरान्त ही व्याख्यान हो जाते थे। आज यदि किसी आर्य समाजी का बालक कोई राम–कृष्ण सम्बन्धी गीत आर्य समाज में सुना देता है—तो साधारण सदस्य भी अधीर हो उठते हैं। उस समय भी ऐसा होता था कि जब जवाहर सिंह लाहौर आर्य समाज के मन्त्री थे, ऋषि के भक्त थे—जब कि अन्य व्यक्ति ऋषि से उर्दू के माध्यम से पत्राचार करते थे—वे आर्य भाषा मे करते थे। इतना होने पर भी अमृतसर हरिमन्दिर के प्रबन्धक बनने की धुन में आर्य समाज के शत्रु और ऋषि निंदक बन गये थे। लाला मुन्शीराम जो बाद मे महात्मा से संन्यासी श्रद्धानन्द बने थे—ने आर्य समाज में संकोचपूर्वक दी गई अपनी प्रथम वक्तृता में ही कहा था कि भाड़े के टट्टुओं से धर्म प्रचार नहीं हो सकता और समर्पित त्यागी पुरुषों की आवश्यकता होगी।

उस समय आर्य समाज के सदस्य या सत्संगी सभी उच्च स्वाध्याय शील हुआ करते थे और समकक्ष के विद्वानों या विद्वानों से स्वयं ही शास्त्रार्थ करने को उद्यत हो जाते थे और बड़े विद्वानों से निपटने के लिए अपने विशिष्ट पंडित बुलाते थे। महात्मा मुन्शीराम उस समय के प्रसिद्ध पौराणिक पंडितों के समक्ष अपने भाव लेकर मूल वेद मन्त्र उच्चारित करते—तो वे पंडित यह मान लेते थे कि वेदार्थ तक पहुंचने के लिए वेदांगों की सहायता की अपेक्षा मानसिक शुद्धि की अधिक आवश्यकता है। मुन्शीराम जी जालन्धर में वकालत करते थे—यहाँ भी आर्य समाज स्थापित हो चुकी थी—ये उसमें अधिकाधिक सक्रिय थे। बिरादरी के आर्य समाजियों को बहिष्कृत करने का अभियान ब्राह्मणों और बिरादरी के नेताओं द्वारा चलाया गया। इधर समाजियों ने उन ब्राह्मणों की सूची बनानी आरम्भ कर दी जो आचरणहीन-अपढ़ और गायत्री मन्त्र से भी अनभिज्ञ थे—परिणामतः वह पंचायत नहीं हो सकी जिसमें यह बहिष्कार किया जाना था।

मेलों में प्रचार के साथ साथ पारिवारिक उपासना का अच्छा प्रभाव पड़ता। लाहौर आदि में धर्म घट में चुटकी-चुटकी भर प्रति सप्ताह आनेवाले आटे आदि से पर्याप्त सहायता मिलती थी। घरों में बची अखबार आदि रद्दी आर्य समाज को देकर 'रद्दी काण्ड' से जालन्धर आर्य समाज के पुस्तकालय हेतु पुस्तकें आ जाती थीं उस समय आर्य समाजियों में प्रचार की धुन होती थी। मुन्शीराम जब अपने जन्म नगर तलवन जाते तो एक चिरंजीलाल से बाजार आदि में व्यक्तियों को आकर्षक ढंग से एकत्र कराके पाखण्ड खण्डन का व्याख्यान दे दिया करते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने विस्तारपूर्वक लिखा है कि वे अपने साथियों को लेकर ब्रह्म मुहूर्त में उठकर प्रचारार्थ चल पड़ पड़ते थे। मुहल्ले वाली गली के बीचों बीच खड़े होकर एक भजन पूरा करते और एक तारा पर स्वर छेड़ते आगे चल देते। सुनने वाली मातायें कह उठतीं—'बेचारा बड़ा भला फकीर है, केवल भजन गाता है मांगता कुछ नहीं।' कभी अपना द्वार खोलकर कोई माता आवाज लगाती—ऐ भाई। खैर ले–जा–अर्थात भिक्षा लेकर जा। किन्तु जब महात्मा जी लौटकर उसके पास पहुंच कर अपनी झोली फैलाते हुए कहते—मां मै आर्य समाज का भिक्षु हूं और इसलिये फेरी करता हूं कि नर–नारी धर्म पिपासा बुझाने के लिये आर्य मन्दिर में एकत्र हों' कई मातायें तो भिक्षा अनाज या पैसा झोली में डाल भी देती थीं, और इस प्रकार दसियों रुपये एकत्र हो जाते थे। यह प्रातः कालीन नगर कीर्तन प्रभावशाली तो था, किन्तु विरोधी भी चूकने वाले कहां। वे ढोलक को गले में डाल कर रासलीला कर और आर्य समाज को गालियों के गीत सुनाने लगे। इस धम्मड़ धस्सा के कारण वह प्रभात कीर्तन रुक गया। यह प्रणाली अब फिर से चलाई जाये—नित्य नहीं वार्षिकोत्सव से एक मास पूर्व से तो अब भी विशेष लाभ हो सकता है।

उस समय के आर्य प्रचार में बड़े विद्वान-तपस्वी-महात्मा संन्यासी ही नहीं साधारण आर्य भी भाग लेते थे। कहीं कोई चौकीदार रात्रि में "पांच हजार वर्षों से सोने वाले जागते रहो" चिल्लाकर चौकीदारी करता था। कोई उसके इस वाक्य का आशय जानना चाहता था, तो उसके समक्ष सत्यार्थ प्रकाश रख देता था और वह व्यक्ति इस सद-ग्रन्थमें उत्तर खोजते-खोजते आर्य बन जाता था। किसी रेलवे स्टेशन पर चपरासी का कार्य करनेवाला अनपढ़ व्यक्ति खाली बैठे किसी बाबू से एक पृष्ठ पढ़ाकर सुनाने को प्रार्थना करता था—इसी सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का। इसके लिये उसे न जाने कितनी अनुनय–विनय करनी पड़ती थी, किन्तु जो बाबू एक पृष्ठ पढ़ लेता—वह मांगकर पूरा ग्रन्थ पढ़ता और फिर आर्य समाजी बन जाता।

काश आज भी ऐसे मिशनरी होते—मशीनरी नहीं। अब भी ऐसे मौन प्रचारक हैं—अवश्य। उनको मान्यता देकर अन्यों को प्रोत्साहन देना चाहिये। पारस्परिक द्वेष भाव को तज कर फिर नयी उमंग के साथ वेद–धर्म की विजय दुन्दुभी बजानी चाहिए।

———

आर्य समाज मन्दिर के भवन निर्माणार्थ दान की अपील

जनता में वैदिक धर्म के प्रति आस्था जगाने तथा आर्य (हिन्दू) धर्म की रक्षा करने हेतु आवास विकास कालोनी काशीपुर जिला नैनीताल में एक भव्य वेद मन्दिर एवं आर्य समाज के विशाल भवन का निर्माण किया जा रहा है। दानी महानुभावों से इस पुण्य कार्य में धन से सहयोग दिये जाने का अनुरोध है। जो सज्जन ५०१) रु० अथवा उससे अधिक—दान में देंगे उनका नाम शिला लेख में अंकित किया जायेगा।

सभा मन्त्री

उत्सव

देहरादून ३०-१०-८७ आर्य समाज देहरादून के १०८ वें वार्षिकोत्सव पर एक विशाल राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में देश में बढ़ रही साम्प्रदायिकता और विघटन की उभरती प्रवृत्तियों पर गम्भीर चिन्ता प्रगट करते हुए सरकार से तुरन्त समयोचित कार्यवाही करने का अनुरोध किया गया। सर्वसम्मति से पारित एक अन्य प्रस्ताव में काश्मीर से कन्या कुमारी तक समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में आबद्ध रखने वाली महीयसी संस्कृत भाषा के संरक्षण तथा संवर्धन का भी अनुरोध किया गया। सम्मेलन का समापतित्व आर्य समाज के प्रधान तथा आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री यशपाल आर्य ने किया।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला देहरादून, जनपद में १३ दिसम्बर से १७ जनवरी ८८ तक श्रद्धानन्द बलिदान स्मृति समारोह बड़े धूमधाम से मना रही है। यह आयोजन वैदिक धर्म के प्रचार को गति देने तथा स्थान स्थान पर नई आर्य समाजें स्थापित करने हेतु किया जा रहा है।

सभा मन्त्री

"काल चक्र आर्ष पंचांग"

आगामी सं० २०४५ वि० 'सन् ८८८६ ई० का आकार ३०+२०/३२ पृष्ठ १०० मूल्य ४) रु० प्रेषण व्यय २) रु०

छप गया है

प्राप्ति स्थान—आर्य समाज आयुध निर्माणी मुराद नगर (गाजियाबाद)
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल (मेरठ)
वैदिक संन्यास आश्रम दयानन्द नगर, गाजियाबाद

शुभ-विवाह

—श्री हरिगोपाल नारंग के सुपुत्र श्री अनिल नारंग एवं स्व० श्री किशनसिंह हांडा की सुपुत्री आयुष्मती कमल का शुभ विवाह ३०-११-८७ को आर्य समाज मन्दिर शाहजहांपुर में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सभा की ओर से मङ्गलमय आशीः एवं शुभकामनाएं।

सभा मन्त्री

पुत्रहीन बहनों के लिये

स्त्री अथवा पुरुष के गुप्त रोगों के कारण शादी के बाद सन्तान का न होना या होकर मरजाना, बार-बार कन्यायें ही जन्म लेना आदि दोषों को दूर कर पुत्र प्राप्ति के लिए पति-पत्नी अपना-विवरण लिख कर हजारों द्वारा परीक्षित दवा से अपनी मुराद पूरी करें। मूल्य सेम्पुल २५) दवा बेफायदा होने पर मूल्य वापस।

श्रीमती रामप्यारी देवी (ए० १५) पो० कतरी सराय (गया)

सफेद दाग का इलाज

हमारे चिकित्सालय में सफेद दाग की चिकित्सा आयुर्वेदिक पद्धति से होती है। हम डाक द्वारा भी रोगियों की चिकित्सा करते हैं। रोग विवरण लिख कर इलाज के लिये लिखें या मिलें।

नोट—सफेद दाग कारण और चिकित्सा नामक पुस्तक निःशुल्क मंगायें।

पता—समाज कल्याण (आर० एल०)
पो०—कतरी सराय (गया) ५

"पुरोहित की आवश्यकता"

आवश्यकता है एक आर्य पुरोहित की जो संस्कार कराने में निपुण हो, आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धांतों का जिसे अच्छा ज्ञान हो और तत्सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान देने में कुशल हो, आवास व्यवस्था भी देख सके। संगीत में भी रुचि हो, शास्त्री व समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हो। वेतन योग्यतानुसार। बिजली पानी एवं आवास निःशुल्क।

पत्र व्यवहार का पता—मदनमोहन दिव्य मन्त्री आर्य समाज चौक (जीरो रोड) इलाहाबाद।

वार्षिक चुनाव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद आगरा
प्रधान श्री हरिगोपालसिंह चौहान, एडवोकेट
मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्त (भूतपूर्व प्रधानाचार्य)
कोषा० श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

आर्य समाज तिलकद्वार मथुरा
प्रधान...डा० राधाकृष्ण वर्मा
मन्त्री...मुन्शी नरबीलाल यादव
कोषा० कुंजबिहारीलाल सक्सेना

आर्य समाज स्टेशन रोड, कोसीकलां
प्रधान श्री कुन्दनलाल जी
मन्त्री श्री मोहन लाल गंगवार
कोषा० श्री सुशीलचन्द्र वकील

आर्य समाज खाजपुरा पटना
प्रधान श्री गंगाप्रसाद
मन्त्री डा० राजेन्द्र प्रसाद गुप्त
कोषा० श्री प्रेमनाथ ग्रोवर

धर्म परीक्षा एवं प्रशिक्षण शिविर सम्बन्धी आवश्यक सूचना

धर्म रत्न परीक्षा

कक्षा ५ में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष 'धर्म रत्न' नामक धर्म परीक्षा अनिवार्य होगी चाहे वे सभा से सम्बद्ध विद्यालयों में पढ़ते हों या असम्बद्ध में, आर्यसमाज के अधिकारी एवं विद्यालयों के प्रबन्धक महोदय इस ओर विशेष ध्यान देने की कृपा करें। परीक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित कक्षा ५ की धार्मिक शिक्षा की पुस्तक के आधार पर होगी। प्रथम तीन स्थान पाने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया जावेगा, परीक्षा फार्म सभा कार्यालय से प्राप्त करें।

धर्म प्रशिक्षण शिविर

प्रदेशीय विद्यार्य सभा कुछ विद्यालयों में धर्म प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है ये तीन दिन तक चलते हैं उनमें वेद शास्त्र, उपनिषद, ब्राह्मणादि आर्ष ग्रन्थों, पंचमहायज्ञ, संस्कार, महर्षि दयानन्द जीवनी एवं कृतियां, आर्यसमाज की मान्यताएं, आदि विषयों की सामान्य जानकारी शिक्षकों, छात्रों को दी जाती है।

दयानन्द रामेश्वर हंसरानी आर्य कन्या इण्टर कालेज सीतापुर मे एक शिविर ८, ९, १० नवम्बर १९८७ को वहां की प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्या एवं छात्राओं तथा अध्यापिकाओं के हार्दिक सहयोग से हो चुका है।

सभी आर्य विद्यालयों में इस प्रकार के शिविरों का आयोजन होना चाहिये इन शिविरों में विद्वानों की व्यवस्था मे विद्यार्य सभा सहयोग देगी जो विद्यालय इस शिविर को चलाना चाहते हैं वे मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क करें।

धर्म परीक्षाएं

प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण, धर्माधिकारी परीक्षाएं २८ फरवरी १९८८ को होंगी जिनको क्रमशः कक्षा ७, ९, ११ के छात्र सुगमता से दे सकेंगे।

प्रधानाचार्य महोदय इन कक्षाओं के सभी विद्यार्थियों को इन परीक्षाओं में प्रविष्ट होने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित कक्षा ७, ९, ११ की पुस्तकों पर सामान्यतया, आधारित होंगे जिनको विद्यार्थी स्वयं भी पढ़ सकते हैं। सभा कार्यालय से तुरन्त फार्म मंगा लें परीक्षा शुल्क क्रमशः २) रु०, २.५० रु० तथा ३) रु० होगा।

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ०प्र०, लखनऊ

आवश्यकता

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज चान्दपुर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ से १४ नवम्बर ८७ तक बड़े समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। १२ नवम्बर को वर्षा हो जाने के बावजूद भी नगर की मुख्य सड़कों पर भव्य शोभा-यात्रा निकाली गई जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर के बाल कलाकारों का बैण्ड प्रदर्शन दर्शनीय था। महिला समाज की सदस्याएं बड़ी संख्या में आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का यशोगान गा रही थीं—राकेश गायन मण्डल का प्रभावशाली प्रदर्शन था—अन्य दोनों दिन विभिन्न सम्मेलन आयोजित किये गये जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के संयुक्त मन्त्री श्री जयनारायण अरुण, प्रसिद्ध वेदविदुषी बहन सावित्री देवी वेदाचार्या बरेली, पं० जयप्रकाश आर्य (भू० पू० इमाम वेतिया) श्री दिनेशचन्द्र त्यागी राष्ट्रीय अध्यक्ष हिन्दू देशम, प्रो० रमेशचन्द्र यादव आदि विद्वानों के प्रभावशाली भाषण हुए। प्रधान डा० रामेश्वर प्रसाद तथा मन्त्री श्री देवेन्द्र त्यागी का प्रयास इस बार विशेष सराहनीय रहा। —मन्त्री जिला सभा, बिजनौर

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

दिल्ली में 'वेद और कुरान' पर संगोष्ठी

भारतीय जन संचार संस्थान नई दिल्ली में गत दिनों 'वेद और कुरान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी मे श्री शम्स नवेद उस्मानी ने तर्कपूर्ण विचार रखे। चौदह वर्षों तक वेदों और कुरान का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद शम्स नवेद श्री उस्मानी का मानना है कि आज की तमाम समस्याओं का हल वेदों मे वर्णित है। अगर उस ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाया जाय, तो साम्प्रदायिकता जैसी समस्यायें चुटकी बजाते हल हो जायगीं।

नवेद उस्मानी ने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि जिन वेदों को अहमियत को अंग्रेजों तक ने समझा, कड़ी मेहनत से संस्कृत-अंग्रेजी भाषा कोश तैयार कराया, जिन वेदों को अलबरुनी ने तरजीह दी, आज वे अपने ही मुल्क मे उपेक्षित हैं।

नवेद उस्मानी का यह भी मानना है कि वेद ज्ञान की शुरुआत है। उनके अनुसार कुरान में 'आदम' शब्द संस्कृत से लिया गया है। क्योंकि आदम शब्द फारसी-अरबी का नहीं है जो वेदों की प्राचीनता का द्योतक है।

श्री उस्मानी ने कहा कि जिस मुसलमान शब्द के पीछे इतने लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, फिरका परस्ती फैल रही है, आश्चर्य की बात यह है कि 'मुसलमान' शब्द कुरान में कहीं भी नहीं मिलता।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डा० रामगोपाल जांगिड ने भी उस्मानी के कार्य को एक नयी सोच की संज्ञा दी। संचालन मुजफ्फर उल्ला खाँ ने किया।

[पाञ्चजन्य ४ अक्टूबर १९८७ के सौजन्य से]

शुभ विवाह

आर्यसमाज मण्डी बाँस, मुरादाबाद के उप प्रधान श्री सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट के सुपुत्र कैप्टेन अतुल का शुभ विवाह श्री श्यामाचरण गुप्त की सुपुत्री आयुष्मती सीमा के साथ दिनांक १-११-८७ को पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। दो हजार से अधिक स्त्री-पुरुषों ने उपस्थित होकर चि० वर-वधू को आशीर्वाद दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से शतशः बधाइयां एवं शुभ कामनायें।

—सभा मन्त्री

आर्य जगत

वैदिक प्रचार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद शाहजहाँपुर ने आर्य सामाजिक प्रचार की दृष्टि से एक बृहत् योजना तैयार की है जिसके द्वारा प्रत्येक ग्रामीण अंचल में अन्धविश्वास, कुरीतियों एवं जड़वाद के विरुद्ध प्रचारक एवं उपदेशक अपना प्रचार करेंगे और प्रत्येक स्थान पर जिला सभा का एक अधिकारी भी उपस्थित रहेगा। जनपद की समस्त समाजें एवं आर्य बन्धु अपने-अपने यहाँ प्रचारक मण्डली बुलाने हेतु सम्पर्क करें-

राजेन्द्र शर्मा प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, टाउनहाल रोड
शाहजहांपुर

आचार्य रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन समारोह

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य रामानन्द शास्त्री जिनकी विद्वत्ता, प्रचार साधना से समस्त आर्यजगत परिचित है-के सम्मानार्थ एक अभिनन्दन समारोह आर्यसमाज बेतिया में १९८८ में होगा। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसमाजों तथा आर्य विद्वानों से अनुरोध है कि वे आचार्य जी से सम्बन्धित संस्मरण, लेख, जीवन वृत्त, शुभकामनायें आदि तथा अनुग्रह राशि निम्न पते पर भेजें-

डी० के० शास्त्री मन्त्री
जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, चम्पारण (बिहार)

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर को भूमि दान

श्री गिरीशचन्द्र धीमान पौत्र श्री मूलराज ने १४११० वर्ग फीट भूमि आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर को दान की है। रुड़की रोड पर इसी स्थान पर स्वामी दयानन्द ने ८-१० दिन निवास किया था। उक्त भूमि की रजिस्ट्री हो गई है तथा नव भव्य भवन के निर्माण की आधार शिला भी रख दी गई है। दानी महानुभाव को बहुत-बहुत साधुवाद।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

दयानन्द कालेज ट्रस्ट की स्थापना

आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर के अन्तर्गत संचालित दयानन्द कालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं की अचल सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु 'दयानन्द कालेज ट्रस्ट' की स्थापना की गई है। ट्रस्ट के ७ ट्रस्टी सर्व सम्मति से मनोनीत हुए हैं जो न्यायमूर्त्ति श्री डी० पी० बेरी, डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी दिल्ली के प्रधान प्रो० वेदव्यास, मन्त्री श्री दरबारी लाल, श्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री रामसिंह कंन्टेन देवरत्न आर्य (बम्बई) मेजर प्रभाकर वाब्ले हैं।

पूरे सीताराम तिवारी ग्राम में वैदिक संस्थान स्थापित

जुलाई १९८७ में पूरे सीताराम तिवारी नामक ग्राम में आर्य नव युवकों की प्रेरणा से 'वैदिक संस्थान' की स्थापना की गई है जिसके प्रधान श्री राम उदित पाण्डे, मन्त्री-श्री बैरागी तिवारी तथा कोषाध्यक्ष श्री कृष्णप्रसाद तिवारी हैं सत्साहित्य का प्रचार करना इसका उद्देश्य है।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों की सेवा में आवश्यक निवेदन

हैदराबाद सत्याग्रह का अर्ध शताब्दी समारोह निकट भविष्य में होने जा रहा है। इस अवसर पर आगामी वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज का लगभग ३०० से भी अधिक पृष्ठों का ऐतिहासिक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह विशेषांक बड़ी साज सज्जा के साथ प्रकाशित हो रहा है। हम प्रत्येक स्वतन्त्रता सेनानी से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सत्याग्रह सम्बन्धी विवरण अथवा संस्मरण संक्षेप में लिखकर भेजिए। साथ में आपका पासपोर्ट साइज का चित्र जिसके पीछे आपका नाम व पता सुन्दर अक्षरों में लिखकर भिजवा दीजिए।

हमारे पास शोलापुर केन्द्र से जाने वाले लगभग सभी जत्थों के चित्र व सत्याग्रहियों के नामों की सूची है जो इस विशेषांक में प्रकाशित की जाएगी। वे अलभ्य चित्र अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं।

यदि आपके पास अपने सत्याग्रही जत्थे का भी ग्रुप फोटो है तो वह भी हमारे पते पर भेजिए।

आपके संस्मरणों व चित्र को ऐतिहासिक स्वरूप देने का और इसे चिरजीवी बनाने का हमारा संकल्प है। अप्रैल १९८८ तक आप उपरोक्त सामग्री निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। धन्यवाद!

यदि आपके ग्राम का कोई वीर पुरुष इस सत्याग्रह में शहीद हुआ है तो उसका जीवन चरित्र भी लेख रूप में भेजने की कृपा कीजिए।

आचार्य वेदभूषण
मुख्य सम्पादक
अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज
४-५-७५४, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००२७

आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना

ग्राम बिटा बधा जिला मुजफ्फरनगर में आर्यसमाज की स्थापना १५ अगस्त १९८२ को पं० फूलसिंह आर्य, प्रधानाचार्य, आदर्श वैदिक इण्टर कालेज, दाहा (मेरठ) की प्रेरणा से हुई थी। इस वर्ष यहां आर्यसमाज मन्दिर की भी स्थापना हुई है तथा ५ सितम्बर १९८७ को श्री पं० सत्येकचन्द, प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर के कर कमलों से भवन का उद्घाटन हुआ एवं इस अवसर पर अनेक रोचक कार्यक्रम भी हुए।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की शताब्दी

स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म की अजस्र धारा बहाते हुए १८ अगस्त १८७६ को अयोध्या पधारे थे। यहीं २० अगस्त १८७६ को उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' का लेखन प्रारम्भ किया था जिसे १०० वर्ष से अधिक हो गया है। यह ग्रन्थ वेदों की कुंजी है अतः समस्त आर्य बन्धुओं तथा आर्यजगत से इस पवित्र ग्रन्थ की शताब्दी मनाए जाने का विनम्र अनुरोध है।

-कामताप्रसाद 'कमंठ' प्रधान
आर्यसमाज डेहरियावां (फैजाबाद)

आर्य नेता का देहान्त

गंगोह-महाशय सीताराम आर्य का अस्सी वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। उन्होंने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लिया था। और लम्बे समय तक जेल में रहे। श्री आर्य गत तीस वर्षों से यमुनानगर (हरियाणा) आर्यसमाज के प्रमुख व सम्माननीय कार्यकर्त्ता थे। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

-मनमोहन तिवारी सभामन्त्री

कविता कलाप

'सः दाधार पृथिवीम्'

[गद्य गीत]

एक दिवस
आया एक पण्डित,
धारण किए वस्त्र सित,
तुलसी की माला थी कंठ बीच
आसोभित,
भाल पुष्प से मण्डित।
नहीं वह अकेला था,
साथ एक चेला था।
आ समीप बोला वह स्वामी दयानन्द से।
शास्त्रार्थ करने हम आए हैं आपसे !
बोले ऋषि–
कौन–कौन ग्रन्थ आप हैं पढ़े ?
बोला पंडित आगत,
सत्य ग्रन्थ 'भागवत'
पूंछा स्वामी जी ने–
बतलाएं पृथ्वी का आधार कौन है !
पंडित बोला 'वासुकि'
पूंछा स्वामी जी ने
पिता कौन था इसका ?
पडित बोला–'कश्यप'
फिर पूंछा ऋषिवर ने
कश्यप था किसका पुत्र ?
पडित ने कहा–
पुत्र कश्यप था मरीचि का !
'इसका पिता था कौन ?
पंडित बोला 'ब्रह्मा'
प्रश्न किया ऋषिवर ने
वासुकि के अभाव पर
इन तीनों के युग में
बतलाएं कौन रहा आधार पृथ्वी का ?

पंडित अब चकराया,
शिथिल हो गई काया,
बोल कुछ नहीं पाया,
देख पराजित गुरु को
शिष्य भी हुआ लज्जित;
सरल भाव से पूंछा–
महाराज !
अपना मत प्रकट करें कृपया इस विषय में !

बोले ऋषि दयानन्द
प्रलय पश्चात् शेष रहता जो परमेश्वर
नाम है उसी का 'शेष'
आधार एक मात्र वही शेष पृथ्वी का।

—बद्रीप्रसाद गुप्त 'आर्य' पैगम्बरपुर, बिन्दकी (फतेहपुर)

सात मर्यादायें

सात मर्यादा कहलायें, नाम ऋषियो ने गिनाये।
विषय विकार के, मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

१– प्रथम मर्यादा वाणी की, सब व्यवहार इससे सिद्ध हो।
कठोर वचन, चुगली, झूठ, तोहमन्द से मर्यादा भंग हो ॥
मृदु–सत्य भाषण द्वारा, छोड़ चारो का सहारा।
लिए उपकार के, मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

२– दूसरी मर्यादा श्रवण की, काम कान का है सुनना।
अश्लील कथा, असत्य भाषण, सुनना, न सुनाना मनन करना ॥
ध्यान विषयों से हटाकर, श्रवण चतुष्टय अपनाकर।
सुने संवार के, मानव मर्यादित बने संसार के ॥

३– स्वभाव मन का चंचल, वैराग्य अभ्यास द्वारा वशकर।
बुरे विचारों से बचकर, इन्द्रियों की लगाम को कशकर ॥
ध्यान ईश्वर में लगाले, सिद्धासन नियम अपना ले।
मन को मार के, मानव मर्यादित बने संसार के ॥

४–हाथ–पैर पुरुषार्थ के लिए, बिगड़े सुधारे काम के लिए।
उपकार के लिए रक्षा के लिए, सत्संग में जाने के लिए ॥
जो बृत्ति सारी विधर्मी, बनालो सबको वैदिक धर्मी।
उन्हे सुधार के, मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

५–पांचवी मर्यादा नासिका की, घ्राण जिसका नाम सुनो।
अच्छी व बुरी गन्ध परखना, प्राण–अपान है काम सुनो ॥
जो नहीं हितकारी, विवेकी बुद्धि से त्यागो सारी।
विषय विकार के, मानव मर्यादित बनें ससार के ॥

६–देखने की इन्द्रिय चक्षु, महत्वशाली कही जाती है।
भद्राभद्र, उचितानुचित, मार्ग की परख हो जाती है ॥
ऊंचा–नीचा देखकर, आकर्षित विषयों से हटकर।
इस संसार के मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

७–उपस्थ की मर्यादा का साधन, ब्रह्मचर्य का समग्र पालन।
ब्रह्मचर्याश्रम के बाद, गृहस्थ धर्म का करना पालन ॥
व्यभिचार मनसे तजले, कामुकता–रोग से बचले।
विषय विकार के, मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

८–मर्यादा का करना उल्लंघन, जग में हो दु.खो का कारण।
धर्मानुकूल आचरण से, 'सुरेश' होता है निवारण ॥
दयानन्द ने निभायीं, राम, कृष्ण ने अपनायीं।
सात प्रकार के, मानव मर्यादित बनें संसार के ॥

—अध्यापक सुरेशपाल आर्य ग्रा० हरीपुर, पो० बेहट, सहारनपुर

शास्त्रार्थ का खुला निमन्त्रण

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के मन्त्री डा० विजयपाल सिंह आर्य ने सत्यासत्य का निर्णय करने के इच्छुक धर्म प्रेमी विचारको को शास्त्रार्थ का खुला निमन्त्रण देते हुए आह्वान किया है कि वेदो मे मूर्तिपूजा नहीं, हिन्दू शब्द वैदिक नहीं, सती प्रथा का वेदो मे कहीं विधान नहीं आदि शाश्वत सत्यों पर कोई भी कभी भी शास्त्रार्थ कर सकता है। विजेता को ५० हजार रु० का नगद पुरस्कार मिलेगा।

मूर्ति पूजा बन्द हो

(श्री रश्मि पुरुवार, आर्यसमाज औरैया)

आज चारो ओर अज्ञान एवं अंधविश्वास बढ़ता जा रहा है। इसका कारण है कि हमने वेद और अन्य सत्य शास्त्रों का पठन-पाठन बन्द कर दिया है। हम सभी लोगों के अन्दर अन्धविश्वास इतना अधिक बढ़ गया है कि आज शिक्षित-अशिक्षित अनेक नर-नारी गली-मुहल्लों, चौराहों-सड़कों, मन्दिरों आदि में बनी हुई पाषाण मूर्तियों को पूज रहे हैं, प्रति दिन वहाँ जाकर धूप-दीप जलाते हैं, मिठाई चढ़ाते हैं, और उस पाषाण मूर्ति से अपनी मनो-कामनायें पूर्ण करने की प्रार्थना करते हैं। अनेक हिन्दू नर-नारी इन मन्दिरों में जाकर हाथ जोड़कर, शीश झुका कर, मनोकामना पूरी करने के लिये गिड़गिड़ाते हैं।

कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि अमुक मन्दिर में पूजा करने से हमारी मनोकामना पूर्ण हो गयी हैं लेकिन यह कहना पूर्णतः असत्य है, मनोकामना तो परमात्मा की कृपा तथा व्यक्ति के उचित परिश्रम से होती है क्योंकि श्रम से ही उचित फल की प्राप्ति होती है। कहा भी गया है—

'श्रम ही सो सब मिलत है, बिन श्रम मिले न काहि।
सीधी अंगुरी घी जमो, कबहुं निकसत नाहिं'॥

किसी पाषाण मूर्ति में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो वह किसी की पुकार सुन सके। वह तो जड़ है, निर्जीव है, मनुष्य के द्वारा रचित एक कलात्मक नमूना है। उसकी शक्ति की बात बनाकर आपको लूटा जा रहा है। कुछ निठल्ले तथा आलसी व्यक्तियों ने यह खाने-पीने का धन्धा बना लिया है और आप को मूर्ख बना कर ठाठ कर रहे हैं।

सफलता प्राप्त करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना ही पड़ता है, और जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल भी प्राप्त होता है। यदि प्रत्येक मनुष्य गलत कार्य करके, पाषाण मूर्ति की प्रार्थना करने से मोक्ष को प्राप्त कर ले तो सभी व्यक्ति ऐसा ही करेंगे। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। मनुष्य पाषाण मूर्ति की आराधना अवश्य करता है परन्तु उसे अपने कर्मों का ही फल प्राप्त होता है क्योंकि—

'कर्मों की खेती है जगती, जैसे जिसने बोई।
देवों का भी कर्म नियन्ता, एक और है कोई।'

दुनियाँ के श्रेष्ठ पुरुषों

तुम उन महान आर्यों की सन्तान हो, जिनका शीश केवल एक निराकार परमात्मा के सामने झुका था अन्य किसी के आगे नहीं। पर अत्यधिक खेद की बात है कि अब तो उन महान आर्यों की सन्तान प्रत्येक चौराहों पर बनी कब्रों, मन्दिरों में बनी पाषाण मूर्तियों आदि के सामने शीश झुकाती हैं, गिड़गिड़ाती हैं, धूप-दीप जलाकर उनकी पूजा करती हैं, चादर चढ़ाती हैं, मिठाई चढ़ाती हैं।

पाषाण मूर्तियों की पूजा की यह कुपरम्परा आर्यों की श्रेष्ठ परम्पराओं तथा वैदिक धर्म को नष्ट करने वाली हैं।

यदि आपका अपना कोई धर्म या संस्कृति है तो भूलकर भी इन पाषाण मूर्तियों की, कब्रों की पूजा मत करना। जिन्होंने इनका निर्माण किया है वे भी उस परम-पिता ईश्वर की सन्तान हैं जिसने हम सभी को उत्पन्न किया है। यदि हम उन पाषाण मूर्तियों के ढेर में पड़े रहे तो हमारा विनाश शीघ्र ही हो जायेगा।

देश की स्थिति बिगड़ती जा रही है यह तो आगामी खतरे की सूचना है। यदि हम सुनकर भी जागृत नहीं हुए तो शीघ्र ही गुलामी के बन्धन में दोबारा बंध जायेंगे। इसलिए इन दूषित अंध-विश्वासों को सदैव के लिए त्याग दीजिए, जीवन में कोई दुःख है, तो परमपिता परमेश्वर का ध्यान कीजिए। गायत्री मन्त्र का जाप कीजिए। महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थों को पढ़िए और जीवन सफल बनाइए।

समय की पूजा

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रत्येक समय के लिये एक नियत कार्य।
प्रत्येक कार्य के लिये एक नियत समय॥

मित्रो! मनुष्य के प्रत्येक क्षण की कीमत है। मुझे बेंजामिन फ्रेंकलिन लेखक की घटना याद आ रही है। एक बार उनकी दुकान के सामने घूमते रहने के बाद एक व्यक्ति ने दुकान में प्रविष्ट होकर एक किताब की कीमत पूछी।

उत्तर मिला 'एक डालर'

'कुछ कम नहीं'

'नहीं।'

खरीदने वाले ने इधर-उधर देखा और उस कर्मचारी से पूछा, क्या फ्रेंकलिन अन्दर हैं? मै उनसे मिलना चाहूंगा।' फ्रेंकलिन बाहर आये और दाम पूछने पर उन्होंने कहा 'सवा डालर'

आश्चर्य चकित होकर ग्राहक ने कहा, 'अभी तो आपका कर्मचारी इसकी कीमत एक डालर बता रहा था?'

'जी हाँ, यह चौथाई डालर मेरा वक्त नष्ट करने के लिए देना पड़ेगा आपको।'

'अच्छा तो एक कीमत बताइये, जो लेनी हो।' अब डेढ़ डालर। जितनी देर करते जायेंगे उतनी कीमत बढ़ती जायेगी।

एक के बजाय डेढ़ डालर देकर ग्राहक महोदय आगे बढ़े। उनको मालूम हो गया कि वक्त की भी कुछ कीमत है और चाहे वह दुकान के सारा समय चक्कर लगाकर समय नष्ट कर दे, फ्रेंकलिन सरीखा जागरूक आदमी एक मिनट भी नष्ट करने को तैयार नहीं।

मेरियसज वर्थ ने लिखा है 'वर्तमान के समान कोई धन नहीं है। कोई व्यक्ति तत्काल निश्चयों को पूरा नहीं करता तो बाद में उनके पूरे होने की क्या आशा?'

सदा याद रखिये—

एक-एक दिन करके देखो जीवन बीतता जाता है।
गया समय सो गया लौट कर गया समय नहीं आता है॥

अतः वैयक्तिक और सामूहिक सफलता का एक मात्र रहस्य है—समय की पूजा, अर्थात एक-एक पल का सदुपयोग या समय पालन। हम यदि एक-एक पल सावधानी का दीप बना सकें, पूजा का पुष्प बना सकें तो हमारा जीवन मंगलमय हो जाय प्रभाः पूरित हो जाय, इसमें कोई सन्देह नहीं।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों का अभिनन्दन

अजमेर ७ नवम्बर–१९३८–३९ में पूर्व निजाम रियासत में आर्य समाज द्वारा चलाये गये सत्याग्रह में भाग लेने वाले वीरों का ४८ वर्ष बाद पहली बार सार्वजनिक सम्मान यहां महर्षि निर्वाण स्थली अजमेर के ७ नवम्बर १९८७ के आर्य सम्मेलन में किया गया। सभा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह, पूर्व मन्त्री भारत सरकार थे तथा परोपकारिणी सभा, अजमेर, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, डी० ए० वी०कालेज प्रबन्धक कमेटी, दिल्ली, आर्यसमाज बम्बई आदि संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सम्मेलन में विभिन्न प्रदेशों के लगभग एक दर्जन सत्याग्रही उपस्थित थे। डा० भारतभूषण दिल्ली, सैयद फैयाजअली, शाहपुरा राज्य, बंशीलाल सोनी शाहपुरा, श्री वेंकटराव कर्नाटक, श्री भंवरलाल अजमेर श्री बलवन्तसिंह अजमेर, श्री गजाधरसिंह अजमेर, श्री जे० पी० पवारे, रतलाम और डा० मेघराज जैन मध्यप्रदेश, उपस्थित थे। इसमें सैयद फैयाजअली अब अजमेर में ही निवास करते हैं। श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने सत्याग्रहियों का परिचय देते हुए बताया कि सैयद फैयाजअली (६८) हिन्दुस्तान के पहले दीनदार मुसलमान सत्याग्रही हैं, जिन्होंने न केवल इस सत्याग्रह में उत्साहपूर्वक भाग लिया था अपितु वे ऋषि दयानन्द के आज भी श्रद्धावान भक्त हैं। शाहपुरा, राजस्थान आर्य रियासत के दरबार हाई स्कूल में शिक्षा पाते हुए उन्होंने संध्या–हवन तथा धार्मिक शिक्षा पाई थी। निजाम सरकार ने जेल के रिकार्ड में उनका मुस्लिम नाम जानकर नहीं रखा। इसी प्रकार श्री बलवन्तसिंह, अजमेर कांग्रेस में कारावास भुगतने पर राज्य सरकार से पेंशन तो पा रहे हैं, परन्तु उनको केन्द्र सरकार से हैदराबाद में साढ़े पांच मास कारावास की पेंशन नहीं मिली। सैयद फैयाज अली को राज्य की पेंशन मिलने की सूचना अधिवेशन में ही प्राप्त हुई है। इसी प्रकार श्री भंवरलाल, अजमेर को केन्द्र से स्वाधीनता सेनानी पेंशन दिये जाने के आदेश जारी हो गये हैं। अन्य सभी मामले केन्द्र / राज्य सरकारों के यहां अब तक निपटाये नहीं गये हैं।

सत्याग्रहियों का अभिनन्दन सर्वप्रथम श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने किया और सैयद फैयाज अली को अपनी ओर से १०१ रुपये भेंट करते हुए बताया कि आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह में मुस्लिम, सिख, जैन आदि सभी वर्गों ने भाग लिया था। उन्होंने बताया कि लाहौर से मजीठिया कस्बे में काले पानी में सजायाफ्ता सरदार मदनसिंह गागा आदि अनेक सिखों ने भाग लिया था।

सत्याग्रहियों को माल्यार्पण करते हुए परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य, डी० ए० वी० कालेज के प्रबन्धक कमेटी की ओर से श्री रामनाथ सहगल तथा बम्बई की ओर से कैप्टन देवरत्न आर्य ने २१०० रुपये तथा आने जाने का मार्ग व्यय भेंट किया। उपस्थित जनता ने सत्याग्रहियों का अभिनन्दन किया और आशा प्रकट की कि इनसे प्रेरणा पाकर आर्यसमाज में नवयुवक सेवा व बलिदान के लिए आगे आयेंगे।

अभी तक लगभग २५०० (ढाई हजार) सत्याग्रहियों या उनकी विधवाओं के स्वाधीनता सेनानी सम्मान के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें से लगभग ५० को केन्द्र तथा कुछ और को राज्य सरकारों ने पेंशन देना शुरू किया है। अजमेर के सम्मेलन ने इन सारी कठिनाइयों को देखकर इस शब्दों में एक प्रस्ताव पारित किया है। जिसमें सरकार के निर्णय पर बधाई देते हुए शेष मामलों को जल्दी से जल्दी निपटाने की मांग की गई है। इनका एक अखिल भारतीय संगठन बनाने का भी निश्चय है। आर्यसमाज केसरगंज अजमेर ने भी इस अवसर पर इन सत्याग्रहियों का सम्मान–अभिनन्दन किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश अपने इन वीर सत्याग्रहियों को हार्दिक बधाई देती है और उनके मंगलमय स्वस्थ व यशस्वी जीवन की कामना करती है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार–१९८८

संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित १२००) रु० का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष वेद प्रचार तथा सामाजिक सेवाओं के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है।

चयन सम्बन्धी नियम–

१–आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनों एवं सभाओं को दिया जा सकेगा जो वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एवं प्रसार जनसामान्य तक करें।

२–उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति/ संस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

३–उक्त विषयों पर संगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रंगमंच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिये आमन्त्रित हैं।

४–उक्त विषयों पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एवं नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या संस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

५–उक्त विषयों का ग्राम–ग्राम में जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनों द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं / सकती है।

६–आधुनिक युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति, सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पानेवालों में सम्मिलित किया जा सकता है।

७–उक्त पुरस्कार चयन नियमों को परिवर्तित करने का अधिकार संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर को होगा।

योग्य महानुभाव अथवा संस्था आगामी वर्ष के लिए पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण–पत्र यथा नाम, पता, आयु, प्रकाशित कृतियां, पुस्तकों की विधा, पुस्तकों का प्रतिपाद्य विषय, प्रकाशन वर्ष एवं प्रकाशक का नाम व पता, वेद प्रचार में किये कार्यों का विवरण, आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में की गई सेवाएं, यदि किसी संस्था द्वारा सम्मानित हुए तो उसका विवरण, प्रस्तावित कृति पूर्व पुरस्कृत हुई या नहीं–विवरण, निम्न पतों पर १५–१–१९८८ तक भेजने की कृपा करें।

१–श्रीमती सावित्री कपूरिया, उप–सचिव, संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, सी–२११ ए, ज्ञानमार्ग, तिलक नगर, जयपुर। (चुनी हुई पुस्तकों की १ प्रति भी साथ भेजें)

२–श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार चुनी हुई पुस्तकों की ३ प्रतियां भी साथ भेजें।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45998 ४५९९१
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७५
पौष शुक्ल १५
३ जनवरी रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वृहदविवेकम दिनांक १४ नवम्बर १९८७ को डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ के विशाल प्राङ्गण में एक अखिल भारतीय स्तर पर आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसकी रिकार्डिंग की गई थी। सभा कार्यालय में सम्पूर्ण कवि सम्मेलन की रिकार्डिंग के ३ कैसेट ९०) रु० में (प्रति कैसेट ९० मिनट का) तथा प्रति कैसेट ३०) रु० के हिसाब से उपलब्ध हैं।

इच्छुक महानुभाव आर्डर देकर अथवा सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त कर सकते हैं।

—सभा मन्त्री



★ ओ३म् ★



सर्वोत्तम हवन सामग्री १४.०० किलो (महर्षि, आकर्षक डिब्बा बंद)
अतिउत्तम हवन सामग्री ८.०० किलो (मनुरंगी एच.एम.प्लास्टिक में)
उत्तम हवन सामग्री ५.०० किलो (मनुरंगी प्लास्टिक में)

निर्माता—प्रभाकर गृह उद्योग

५३/१० नयागंज, कानपुर—१

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए सन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य	१०००-०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट—	मूल्य	१००-०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—		२०-०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		५-०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८, १९ तथा २० अक्तूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नारायणस्वामी आर्यसमाज प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए छपाई कार्य में एम० पी० प्रिंटर्स ([illegible]) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० [illegible]

माघ कृष्ण ६ रविवार सम्वत् २०४४ वि० दिनांक [illegible] जनवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

[illegible] एम० ए०

[illegible]

★

[illegible] शुल्क

आजीवन शुल्क	[illegible]
वार्षिक	[illegible]
छमाही	[illegible]
विदेश में	[illegible]

★

वर्ष	८१
अङ्क	९

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि

विचारों का [illegible] किसी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि सत्य को [illegible] [illegible] [illegible] किसी प्रकार का [illegible] नहीं [illegible] था।

स्वामी [illegible] संस्कृत भाषा में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] १९८८ [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]	मनमोहन तिवारी
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, [illegible]

से आँख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ— माघ कृष्ण ६ सम्वत् २०४४ रविवार १० जनवरी १९८८, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

चुनौतियों से जूझता वर्ष १९८७

"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता :"

राष्ट्रीय अस्मिता को चुनौती देने वाली कई समस्याएं हमारे सामने अतीत के वर्षों में आकर उपस्थित हो गईं। अपने परमप्रिय राष्ट्र के स्वातन्त्र्य सूर्योदय के साथ ही हमने यह आशा की थी कि हम संसार में एक बार फिर अज्ञान और अन्धविश्वास की तमिस्रा हटाकर अपने वैदिक ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित कर देंगे और "एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः—स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" के उद्‌घोष को सार्थक बनाकर जगद्गुरु की पदवी प्राप्त करेंगे। स्वतन्त्रता के ४० वर्ष, किसी राष्ट्र की प्रगति के लिये अच्छा खासा अवसर देते हैं, हमने देखा महायुद्ध की भयङ्कर ज्वालाओं में वास्तविक रूप से झुलसे हुए ध्वस्त विनष्ट राष्ट्र १५–२० वर्षों के ही अन्तराल में पुनः उठकर खड़े हो गये और ऐसे खड़े हुए कि हर क्षेत्र में आकाश चूम रहे हैं। किन्तु हम किस पर गर्व करें, आर्थिक क्षेत्र में जो कुछ भी परिलब्धियां हमें प्राप्त हुई हैं, निःसन्देह वे भव्य हैं, प्रशंसनीय हैं किन्तु दूसरी ओर जब हम बढ़ते हुए आतंकवाद, विघटनवाद और मातृभूमि को विखण्डित करने वाले अनेकानेक प्रस्तावों और नारों की ओर ध्यान देते हैं तो हमारी अन्तरात्मा कराह उठती है और हम इन परिलब्धियों को निर्जीव शरीर का अलंकरणमात्र समझ सकने को विवश हो जाते हैं।

वह दिन हमारे राजनैतिक क्षितिज का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दिन था जब हमने "आत्मनिर्णय" के अधिकार को सिद्धान्ततः स्वीकार करके भारत का विभाजन स्वीकार किया था। भारतवर्ष तो सदियों, सहस्राब्दियों से एक था, एक रहा है, आत्मनिर्णय के नाम पर देश को खंडित करने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया जा सकता—बोध और निर्णय तो यह होना चाहिये था, जैसा कि स्वयं लार्ड माउन्टबेटन के पूर्ववर्ती तत्कालीन भारतीय वायसराय लार्ड वेवेल ने कहा था— "भारत भौगोलिक दृष्टि से एक है, अखण्ड है।" किन्तु जहां हम भारतीय भू भाग के टुकड़े कर देने के लिये ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को कोसते हैं वहां हमें यह भी सोचने के लिये बाध्य होना पड़ता है कि यह आत्मनिर्णय का अधिकार देकर हमने स्वयं कितनी बड़ी भूल की है। आज खालिस्तान या गोरखालैण्ड की ही समस्या नहीं है, कल कोई दूसरा समूह यदि इसी प्रकार की मांग करता है तो उसका प्रतिकार किस आधार पर किया जाये—यह प्रश्न है ?। खून की नदियां बहने के बाद भी एकीकृत अकालीदल द्वारा आयोजित सम्मेलन में तथा कथित खालिस्तान के समर्थन में अभी-अभी प्रस्ताव पास हुआ है, नारे लगाये गये हैं, और खुले आम यह चुनौती दी गई है कि जो भी अकाली नेता खालिस्तान बनने में बाधक बनेगा उसे सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल की तरह परिणाम भोगना पड़ेगा। दूसरी तरफ भारत की पूर्वी सीमा पर गोरखालैण्ड की मांग जोर पकड़ती जा रही है।'२७ दिस० को पुलिस ने बड़ी मात्रा में गोरखा नेशनल फ्रन्ट के ठिकानों से हथियार एवं विस्फोटक सामग्री बरामद की है। पूर्व और पश्चिम दोनों सीमाओं पर बढ़ते हुए आतंकवाद से लोग भयभीत हैं, घर छोड़कर भागने को विवश हो रहे हैं। जो युवाशक्ति सीमा पर प्रहरी की भांति तन मन सर्वस्व समर्पण करके मातृभूमि की रक्षार्थ सन्नद्ध होकर अभेद्यदुर्ग के रूप में खड़ी रहनी चाहिये थी वही उसे खण्डित करने पर तुली हुई है। ऐसे समय में हमारे पवित्र वेद भगवान का यह उद्‌घोष "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता :" कैसे सफल और सार्थक होगा।

आशा की किरण आर्य समाज ही है क्योंकि इसी के साथ हमारे जीवनमरण का प्रश्न जुड़ा हुआ है। भारतभू के रहनेवाले सभी आर्यों की सन्तान हैं और उनका धर्म कर्म वही है जो उनके पूर्वजों का था। यह भारत वसुन्धरा आसेतु हिमाचल एक है यह हमारी मातृभूमि ही नहीं पुण्यभूमि है, पूर्वजों की भूमि है, उसके टुकड़े करने की कल्पना भी घोर पाप है—यह ज्वलन्त भावना आर्यों को घर-घर जाकर जगाना है, मिट-मिटकर भी जगाना है, बताना है कि सारा देश तुम्हारा है, इसके एक-एक कण में तुम्हारे पूर्वजों की गौरव गाथाएं छिपी हुई हैं। यह पंचनद (पंजाब) पूरा आर्यों की जन्मस्थली, कर्मस्थली शताब्दियों तक रहा। इसके टुकड़े टुकड़े कर तुम कितने दिन जिन्दा रह सकते हो दुश्मन अकेला पाकर तुम्हें निगल जायेंगे, कल्याण एकता में ही है, माँ का पूरा आंचल बचाकर रखने में ही है—इस भावना को, यदि हम, सम्पूर्ण भारतीय जनमानस में हृदयङ्गम करा सकें तो हमारा वर्ष १९८८ निश्चय ही मङ्गलमय होगा।

श्रद्धाञ्जलि—

—राजर्षि दुलारसिंह—

आर्य समाज मैनपुरी के भूतपूर्व प्रधान, देवता स्वरूप महात्मा राजर्षि दुलार सिंह जू देव जिन्होंने आर्य समाज के लिये अपना तन-मन सर्वस्व समर्पित किया जो ऋषिवर्य दयानन्द के अनन्य भक्त थे—उनकी तीसवीं पुण्य तिथि—दिनांक ६-१-८८ पर, हम आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की ओर से, उनकी पुण्य-स्मृति में, उन्हें सादर श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

हंसराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

वैदिक सूर्य का उदयाचल गुरुधाम (मथुरा)

[श्री आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री दर्शन वाचस्पति, आनन्द मन्दिरम् कूंचा पांडा, बदायूं]

कमनीय कीर्ति-मण्डित दण्डी स्वामी गुरुवर विरजानन्द सरस्वती ने प्रखर-प्रतिभा-सम्पन्न अपने यशस्वी शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा जगत्-पावनी जिस ज्ञान-जाह्नवी को प्रवाहित कराया था, उसके पावमान-पीयूष-प्रवाह में समस्त सम्प्रदायों के पाखण्ड भी स्नान करके नव-व्याख्यानों के परिधानों में शनैः२ सत्य कलेवर को धारण करते जा रहे हैं।

ऋषिवर की अनुपम दीक्षा की वह कुटिया—३०—४० वर्ग गज भूमि की वसुधा, भारत ही नहीं विश्व भर के सुधारने के असीम—स्वप्न—सपनों को अपने अवर्णनीय—आंचल में संजोये, पञ्चमंजिल (मञ्जिल) प्रशस्त प्रासाद के रूप में शिर को सगर्व ऊँचा उठाये हुए, आज भी तरणि तनुजा के तट वर्ती तमाल तरुलतियों से आच्छादित यमुना की उत्ताल तरङ्गों के शीतल-स्पर्श से सुखद समीरण की थपकियों से दुल-राई जाती हुई, पुञ्जीभूत-ज्ञान के किसी (गुरु विरजानन्द) कङ्काल मात्र कृश कलेवर की स्फूर्तिप्रद-स्मृति की सूखी हड्डियों को दीवट पर भावी अदमनीय—आशा भरे अरमानों के अगणित—दीप जलाए, उस लघु कुटीर के वक्ष स्थल ने निराशा के क्षणों में भी अपनी धड़कनों को धीमा नहीं पड़ने दिया है। क्योंकि (जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्) जीवित रहकर ही तो मङ्गलमयी मेघमाला की ऊष्मा-शामक पावसी-फुहार और मधुमयी मादक वसन्त भी देखी जा सकती है।

आज २४—११—८७ का पुण्य—प्रभात है, किसी कमनीय कङ्कल्प की अविराम प्रवाह की उर्मियों में कभी कम्पित और अब निस्तब्ध मौन में कुटिया के द्वार पर मैं खड़ा था। निरभ्र आकाश में स्वर्णिम बल्ल-रियाँ, नवेली ऊषाकरों के संकेतों से लटक कर नीचे उतरतीं, अर्सचिम कुटीर के शीर्ष पर फहराते केशरिया 'ओ३म्' ध्वज को अपने परिवेश-पाशपार्श्व में परिरम्भण की मुद्रा में लपेटतीं, प्रासाद के उपरिगत प्राचीर की सुनहरी आभा में आत्मसात् कर चुकी थीं।

किसी अपने खोये हुये तपस्वी की मधुर, पर टीसभरी स्मृति में लीन कुटिया के द्वारों को पं० ओङ्कारराम शास्त्री ने अकस्मात् आ खोला। कपाटों की चरमराती आवाज में कोई वेदना थी, कराह थी, कुछ बोल न पाने की बेबसी थी। यहां से महतो महीयान आत्मा से, महान् महर्षि की विदाई विरह की वेला अब सुदूर अतीत की स्वर लहरी में खो चुकी थी। पर आज भी उस समय का वह आकाश कुटिया की चहारदीवारी के बन्धन को तोड़ कर खुले हुए द्वार से बाहर आने को तैयार नहीं था। गुमसुम, वहीं अनवरत बन्द बना रहा था। क्यों? क्योंकि उस कुटिया के अवसन्न, गमगीन—विषादित व्योम के कानों में, वे जरा-जर्जरित गुरुमुख से निकले सबल, सप्राण स्वर—अब भी गूंजते रहते :—

'ओ दयानन्द ! तू थोड़ी सी लौंगें दक्षिणा में देकर मुझसे उऋण होना चाहता है ?'

इन स्वरों में कितनी अप्रकम पीड़ा, कितनी असह्य वेदना' कैसी अटूट-टीस और कौन-कौन से असीम अरमान भरे होंगे।

गुरुवर की शान्त मेघ गिरा—कुछ अन्तराल पाकर फिर गूंज उठी :—

'दयानन्द ! तुझे मैंने अपने जीवन की संजोई पूंजी—सुपात्र मिलने के अभाव में अब तक कंजूसी से जोड़ी थाती—सारी श्रुति ज्ञान राशि बेहिचक तुझे सौंप दी। दयानन्द तेरी प्रकाण्ड—प्रतिभा ने मुझे छला है मैंने समझा था, तेरी ही प्रतिभा का प्रकाश, मेरी ज्योति—खोई इन आँखों का प्रकाश बनेगा। पर मैं इन लौंगों के समर्पण के छलावे से आज समझ पाया कि वह मेरा कोरा सपना था—मीठी कल्पना थी।

अपार प्यार और भावों के आवेश में गुरुदेव कहते ही गये:—

'उस अमूल्य ज्ञान निधि का तेरे द्वारा यह मूल्याङ्कन देख मेरी आशा का सूर्य मेरी कमनीय कल्पनाओं के ऊँचे अम्बर के अन्तराल में निराशा में अनाशासित सघन तिमिर में डूबता देख कर मेरा दिल बैठा जा रहा है।'

इतना सुन, सर्वस्व समर्पण की साधना का स्वर, तिमिर तोम के वक्ष को विदीर्ण करता हुआ—उदीयमान भास्कर की रम्य-रश्मियों से ज्वलन्त ज्योतिर्मय जाल सा बुनता हुआ— अनादि काल से प्रतीक्षा के पथ पर बिछे लालची लोचनों के अभीप्सित प्रणयी के प्रिय दर्शनों से प्यास को बुझाता हुआ सा-अनव्याहे अभिलाषों के पालने में पले हुए अकं-रित वार्धक्य के असम्भाव्य आत्मज—जन्मोत्सव के सुखद—सन्देश का कानों में अमृत उंडेलता मधुर मादक स्वर सा—चिरकाल से अन्न से अपरिचित किसी क्षुधित की जाठराग्नि को मिले अमृत-ग्रास की मधुर ललक जैसा—अन्तिम प्रयाण के निष्करुण चरम क्षणों में प्राणों के प्रत्या-नयन की सामर्थ्यवती संजीवनी बटी जैसा— विद्रुम पङ्क्ति को लजाने वाले बाल ब्रह्मचारी दयानन्द के अरुणिम—बिम्बाधरों से उषा की लाली लिए वर्षों से पिताओं के अधरों से झरते झरने का सान्द्र गम्भीर नाद लिए वह स्वर फूट पड़ा :—

'गुरुदेव ! मेरे सर्वस्व ! करुणावतार ! आप इस तथ्य से विदित हैं कि इस अकिञ्चन के पास एक लंगोटी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ये लौंगें भी गुरु चरणों के समर्पण हेतु मांगकर लाया हूं।'

दयानन्द ने इतना कह गुरु चरणों में माथा टेक दिया।

पर फिर भी प्रतिवाद के स्वर में गुरुवर की गर्व गौरवमयी गम्भीर गिरा—भङ्गुर और भी गहरी हो गई। गुरुवर कहने लगे :—

'दयानन्द ! तू अप्रतिम—वैभव—सम्पन्न है, मुझसे छिपा रहा है। तू मुझे नेत्र-विहीन समझ धोखा देना चाहता है, पर मेरे अन्तर की आंख ने तेरी सम्पत्ति को अच्छी तरह देख लिया है।'

दयानन्द के स्वर में कम्पन था, उद्वेग, पीड़ा और घबड़ाहट व अधीरता थी—कहने लगे—

'गुरुदेव ! आपके चरणों की साक्षी कर कह रहा हूं, मेरा अपराध क्षमा कीजिए, मैं कुछ भी छिपा नहीं रहा हूं। मै सच कहता हूं मैं अकिञ्चन हूं।'

[शेष पृष्ठ ११ पर]

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की काशी यात्रा

राष्ट्र को यदि बचाना है तो जैसलमेर कच्छ से लेकर काश्मीर तक एक मजबूत सुरक्षा पट्टी का निर्माण करना होगा

—आनन्दबोध सरस्वती

काशी— २२ नवम्बर की अपराह्न मे आर्य समाज लल्लापुरा के सभा कक्ष मे वाराणसी कमिश्नरी के पाँचों जिलो के आमन्त्रित प्रमुख कार्यकर्त्ताओ का सम्मेलन, 'वेद प्रचार गोष्ठी' के रूप मे श्री शंकरलाल पोद्दार, प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी के प्रधानत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमे मुख्य अतिथि एव मुख्य वक्ता के रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी सम्मिलित हुए। सर्व प्रथम आर्य समाज लल्लापुरा पहुंचने पर, समाज के प्रधान—श्री कमलाकान्त इन्जीनियर तथा मन्त्री—श्री रामगोपाल आर्य के नेतृत्व मे उपस्थित जन समुदाय ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर आर्यसमाज भवन एव आस-पास के मार्केट को भलीभाति सजाया गया था। सम्मेलन की कार्यवाही का आरम्भ करते हुए, सचालक श्री वेधर्मसिंह आर्य ने बताया कि वाराणसी कमिश्नरी मे आर्य समाज का प्रचार कार्य निरन्तर अबाध गति से चल रहा है। कमिश्नरी स्तर की समिति के सयोजक, श्री बुद्धिसेन आर्य ने कहा कि कमिश्नरी के पाँचो जिलो मे परस्पर सहयोग रहता है और उपदेशको द्वारा बराबर प्रचार किया जाता है। इस अवसर पर उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप मन्त्री, डा० विनय प्रताप ने कहा कि प्रचार कार्य मे जो बाधायें आती हैं, उन्हे दूर कराने का वे पूरा प्रयास करेंगे। उन्होने सगठन की एकता को सर्वोपरि बताया। प्रतिनिधि सभा ने जो ट्रैक्ट छपाये हैं, उनसे प्रचारकार्य मे मदद मिलेगी।

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री, डा० आनन्द प्रकाश ने कहा कि आर्य समाज की विचार धारा ने सभी सामाजिक आन्दोलनों को प्रभावित किया और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र मे अतुलनीय भूमिका अदा की, तथापि इसके द्वारा प्रतिपादित धार्मिक क्रान्ति का समुचित प्रभाव नहीं हुआ है। यही कारण है कि अन्ध विश्वास, गुरुडम, नवीन मत-मतान्तर और जड़ पूजा फैलती जा रही है। उन्होने कहा कि आर्य समाज के प्रचार का दायित्व, आर्य समाज के सगठन के साथ-साथ सभी आर्यों का भी है। सगठन का कर्तव्य है कि वह सिद्धान्त प्रचार के काम पर अधिक ध्यान देवें। इसी के साथ सभी आर्यों को अपने व्यक्तिगत जीवन मे ब्रह्म यज्ञ और देव यज्ञ को अपनाना तथा उनका प्रचार करना, भी उतना ही आवश्यक है। उन्होने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि आर्य समाजो मे पुस्तकालयो का प्रसार घटता जा रहा है। स्वाध्याय और शास्त्रार्थ परम्परा को जीवन्त बनाने से ही सैद्धान्तिक प्रखरता स्थापित रह सकती है। डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज को अपनी शक्ति का उपयोग वेद प्रचार मे ही अधिक से अधिक करना चाहिए। प्रतिनिधि सभाओ को भी इस कार्य मे अपनी आय का अधिकाश भाग व्यय करना उचित हैं।

मुख्य अभिभाषण देते हुए स्वामी आनन्दबोध जी ने आर्य समाज के सगठन की व्यापकता और सार्व देशिक सभा के कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि वे २१ वर्ष की अवस्था से ही सार्वदेशिक सभा के कार्यों से जुडे हुए हैं। महात्मा नारायण स्वामी जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने तप और त्याग से इस सभा को बनाया। उन्होने कहा कि आर्य समाज में समय देने वालो की कमी जरूर आ गयी है परन्तु वे भविष्य के प्रति निराश नहीं है। आज भी आर्यसमाज के पास योग्य शिक्षित और कर्मठ युवक हैं जो अनेक क्षेत्रो मे कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अपने सस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्होने अपनी सूझ-बूझ से राष्ट्रपति भवन मे मस्जिद का निर्माण रुकवाया, जो किसी अन्य उपाय से रोका जाना सम्भव नहीं था। पोप पाल के आने पर आर्य समाज ने उनका सक्रिय विरोध किया और उसका परिणाम यह हुआ कि राँची मे, भारत सरकार ने उनका प्रवास २ दिन से घटा कर मात्र २ घण्टे कर दिया। उस क्षेत्र मे ईसाइयो द्वारा बनाई गई धर्मान्तरण की योजना पूरी नहीं हो सकी। आपने आर्यजनो का आवाहन किया कि वे पूरे उत्साह से आर्य समाज का कार्य करें। आर्य समाज ही देश और समाज को पतन से बचा सकता है। आपने सती प्रथा प्रकरण की चर्चा करते हुए, अपनी उस बात को दोहराया कि वेदों मे कहीं भी सती प्रथा का समर्थन नहीं किया गया है। पुरी के शकराचार्य अथवा कोई भी पौराणिक विद्वान इस विषय मे आर्य समाज से शास्त्रार्थ कर सकते हैं। अन्त मे अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री पोद्दार जी ने कहा कि आर्य समाज के कार्य मे चाहे प्राणो की आहुति ही क्यो न देनी पड़, हमे पीछे नहीं हटना चाहिए। सकल्प और दृढ़ता से ही हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं ?

इसके उपरान्त स्वामी जी जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या विद्यालय देखने गये। विद्यालय के सिंह द्वार पर बालिकाओ ने बिगुल ध्वनि कर सैनिक अभिवादन द्वारा उनका स्वागत किया। विद्यालय की प्राचार्या एवम् आर्य जगत की उच्च कोटि की विदुषी डा० प्रज्ञादेवी ने विद्यालय की अन्य शिक्षिकाओ का परिचय कराया, विभिन्न विभागो का निरीक्षण कराया एव विद्यालय की प्रगति से अवगत कराते हुए उच्च कोटि के प्रकाशन भेंट किए। विद्यालय की सुन्दर आवासीय और शिक्षण व्यवस्था से स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए और अपना आशीर्वाद दिया। अतिथियो के भोजन की व्यवस्था भी विद्यालय की ओर से की गयी।

रात्रि मे आर्य समाज लल्लापुरा के वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होने हेतु स्वामी जी इसके विशाल पडाल मे पधारे। आर्य समाज लल्लापुरा के प्रधान श्री कमलाकान्त इन्जीनियर ने उनका स्वागत किया। कुछ अन्य सस्थाओ की ओर से भी स्वामीजी का स्वागत किया गया। अपने ओजस्वी सार्वजनिक भाषण मे स्वामी जी ने राष्ट्रीय एकता और हिन्दुओ की सुरक्षा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान बंगला देश का बदला पजाब मे ले रहा है। यदि पूर्वी पश्चिमी सीमा पर जैसलमेर—कच्छ से लेकर कश्मीर तक ५ मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाई जाय, और ४१ लाख भूतपूर्व सैनिकों को बसाया जाय, तभी पजाब और कश्मीर सुरक्षित रह सकता है और अलगाववादी ताकतों का सफाया किया जा सकता है। आपने कहा कि १००० वर्ष पूर्व मुहम्मद बिन कासिम ने भारत पर हमला किया था और उसके बाद ही सभी मस्जिदें बनी हैं। बाबरी मस्जिद सहित हिन्दुओ के मन्दिरों को तोड़कर बनाई गयीं सभी मस्जिदें हिन्दुओं को सौंपी जायें तभी हिन्दुओं और मुसलमानों मे वास्तविक प्रेम उत्पन्न हो सकता है। सैयद शहाबुद्दीन को दूसरा जिन्ना बताते हुए उन्होने कहा कि इसने भारत के सम्मान को गिराया है और मांग की कि ऐसे लोगो को ससद मे नहीं होना चाहिये। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्रवादी मञ्च के गठन को आवश्यक बताया, जिस पर सभी राष्ट्रवादी शक्तियाँ एकत्रित हो सकें। दहेज प्रथा और अन्य सभी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आन्दोलन करने की जरूरत पर उन्होने बल दिया। (सम्वाददाता)

निज हृदय निर्मल बनाओ

[आचार्य रामकिशोर शर्मा, श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा (उत्तर प्रदेश)

विश्वहित के अग्रदूतो, निज हृदय निर्मल बनाओ,
चाहते हो यदि जगत में सभ्यता का वास होवे।
सब मनुष्यों में परस्पर प्रेम का सुविकास होवे।।
हों सभी के मन मुदित मुख में मनोहर हास होवे;
तो स्वयं सब पाप के पथ से हटो सब को हटाओ।।
विश्व०

चाहते हो यदि किसी को भी न कलुषित कामना हो,
हों सभी प्राणी मुदित ऐसी सभी की भावना हो।
हानि करने को न जग में मानवों का सामना हो,
तो सदा सुस्नेह की गंगा धरातल पर बहाओ।।
विश्व०

चाहते हो यदि किसी को भी किसी का भय न होवे,
स्वच्छतम व्यवहार हो जिसमें कहीं संशय न होवे।
सब जगह सबका उदय हो किसी का भी क्षय न होवे।
तो सभी परमाणु आयुध सिन्धु में सत्वर डुबाओ।।
विश्व०

चाहते हो यदि सुखी हो सब सभी में प्यार होवे।
सभी का बन्धुत्वमय सबसे मधुर व्यवहार होवे।
कहीं पर भी विश्व में क्यों व्यर्थ नर-संहार होवे,
तो नए शस्त्रास्त्र लेकर मत बुरी ज्वाला जलाओ।।
विश्व०

चाहते हो यदि रहें हम सब सदा स्वाधीन घर में,
हम भला क्यों कष्ट भोगें व्यर्थ बन कर दीन उर में।
वास करने ही न पायें भावनायें हीन उर में।
तो पुनः सब वेद के पथ पर चलो मत डगमगाओ।। विश्व०

हे वेद देव ? शत् नमन् नमन्

मेरे जीवन का अब लम्बन,
मेरे पथ का तू ही बन्धन,
मेरे जीवन के रश्मि तुम्हीं,
हे वेद देव है श्रुति सुज्ञान,
जगती भर का तू सही पंथ,
भू-मण्डल का निर्माण ज्ञान,
गगन अन्य लोकों का तू,
है वेता ज्ञान वेद भगवान,
चपला, घन, विषय के गुप्त ज्ञान,
तेरे उर तन में निहित भाव,
यह प्रकृति सहचारी जीवों को,
बन्धन, स्वभाव का माप दण्ड,
ऋषि, मुनियों की सत्पथगामी,
पण्डित, दर्शन के विषय वस्तु,
कितना तेरे अन्ततम में,
निहित है कितना अभी गुप्तज्ञान,
मानव के भोग्य प्रसंगों में
तू ही सारा सत्य मान्
तेरे ही सारे छन्दो से,
सुख वर्षा होती बहु मूल्यवान्
हे 'वेद' मेरे उर के बन्दन
तू समा जाओ अन्तर तम में
मेरा जीवन सुविचारित हो
हे वेद देव शत् बार नमन
यह मेरा तुझको कोटि नमन
मेरा प्रकाशित ज्योति नमन
मेरे उर का बहु नमन-नमन

—अखिलेश सिंह आर्य 'वैदिक' आर्य समाज कटरा, इलाहाबाद

सभा प्रधान जी के निवास पर पारिवारिक सत्संग

दि० १९-१०-८७ को प्रातः ७॥ बजे श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निवास स्थान गोहटीपुरा में एक पारिवारिक सत्संग में प्रवचन करते हुए मेरठ के वयोवृद्ध नेता श्री मास्टर सुन्दरलाल जी ने अपने अमेरिका यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए बताया कि अमेरिका में पारिवारिक जीवन नहीं है। १० वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् पुत्र पिता से पृथक हो जाता है। विदेश में न कोई पुत्र है, न भाई न पिता और न ही माता। हां व्यापारिक दृष्टि से या अन्य दृष्टिकोण से मित्र हैं परन्तु वे भी स्वार्थ वश। भारत में पारिवारिक जीवन है परन्तु वह टूट रहा है। हमें सबको प्रभु का रूप समझते हुए परस्पर प्रेम-प्यार से रहना चाहिए। श्री पं० इन्द्रराज जी ने श्रीयुत मास्टर जी का एवं श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए बताया कि भारत में संयुक्त परिवार पद्धति है परन्तु वैदिक पथ से हटने के कारण आज परिवारों में शिथिलता आ गई है' यद्यपि विदेशों में बहुत कम आयु में ही बेटे और माता-पिता का सम्बन्ध नहीं रहता परन्तु वैदिक प्रणाली के अनुसार एक युवा परिवार बनाने के पश्चात् वृद्ध दम्पत्ति को वानप्रस्थ जीवन व्यतीत करना चाहिए जिससे घरो में शांति हों। आज घरों में अशान्ति का मुख्य कारण परिवार में अधिकारवाद है। वृद्ध अधिकार छोड़ना नहीं चाहते और युवालोग अधिकार पकड़ना चाहते हैं। जिसके कारण परिवार में तनाव, कलह-क्लेश चलता है। आज यदि वानप्रस्थ व्यवस्था चालू हो जाय तो कलह क्लेश स्वतः ही समाप्त हो जाता है। आज परिवारों में शिष्टाचार, विनम्रता, बड़ो के प्रति आदर, छोटों के प्रति प्रेम एवं आध्यात्मिक वातावरण की आवश्यकता है। इसी का बोध कराने के लिए ही ये पारिवारिक सत्संग रखे जाते हैं।

शान्ति पाठ और प्रसाद वितरण के पश्चात् पारिवारिक सत्संग समाप्त हुआ। आगन्तुक महानुभावों को यथोचित आदर सत्कार के पश्चात् विदा किया गया।

सम्वाददाता

संस्कृत किसी सम्प्रदाय विशेष की भाषा नहीं अपितु मानव मात्र की कल्याण कारिणी भाषा है

—उपकुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद १४ दिस०—

आर्य कन्या इन्टर कालेज, इलाहाबाद मे आयोजित विश्वजु सरल-तम संस्कृत प्रचार समिति के १२ वें दीक्षान्त समारोह में उक्त विचार प्रकट करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० श्री वहीदउद्दीन मलिक ने कहा कि संस्कृत विश्व की सर्व प्राचीन मधुरतम सौन्दर्यसे भरपूर विश्व कल्याणकारिणी भाषा है जो संसार की समस्त भाषाओं की जननी है। मानव की अमूल्य धरोहर है।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव, जो अपने निर्णय प्रायः संस्कृत भाषा में ही लिखते हैं—ने कहा—"यह कहना असत्य है कि भारतीय संविधान पाश्चात्य देशों की नकल है। संसार के सर्वोच्च विधि वेत्ता मनु तथा स्मृतिकारों की दी हुई व्यवस्था आज भी सर्वोत्कृष्ट तथा अपरिवर्तनीय मानी जाती है। मृच्छकटिकम् में लिखा है कि मुखिया ही ऐसा व्यक्ति है जो घटना के विषय में सर्वाधिक जानता है उससे जिरह की जानी चाहिए। गौतम स्मृति' में १६ प्रकार के व्यक्ति बताए हैं जिनके विरुद्ध निषेधाज्ञा नहीं लागू होती जबकि वर्तमान संविधान में ६ प्रकार के ही व्यक्ति गिनाए गये हैं। इस प्रकार ५००० वर्ष और उससे पूर्व हमारे यहाँ पूर्ण विकसित कानून व्यवस्था मिलती है जो संस्कृत भाषा में है आज के कम्प्यूटर द्वारा भी यह बात सिद्ध हो चुकी है कि संस्कृत ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक भाषा है। अतः संस्कृत को मृत भाषा कहना वास्तविकता से मुख मोड़ना है। वह पूर्ण जीवन्त भाषा है प्रत्येक भारतीय एवं विश्व नागरिक को यह भाषा पढ़नी चाहिये।

उत्सव

आर्य समाज देवबन्द (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव ११ से १३ दिस० ८७ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। देवबन्द क्षेत्र में एक "दयानन्द सेवा संस्थान" खोलने का निर्णय लिया गया है उत्सव पर कई सम्मेलन भी हुए।

—चम्पारन जिला आर्य सभा के द्वारा बिहार के उत्तराञ्चल एवं नेपाल के तराई क्षेत्रों में प्रचार कार्य बड़े जोर शोर से चलाया जा रहा है दिस० मास में लक्ष्मीपुरा, सीसवा बहुअरवा, चम्पारन, डुमरिया रौतहट, रामपुरा कुड़िया सिसवनिया आदि स्थानों पर मुख्यो महतो सरपंच श्री हजारी प्रसाद गुप्ता पं० चन्द्रिका प्रसाद आर्य के सहयोग से कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

—गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम कलाल घाटी (कोटद्वार) पौड़ी गढ़वाल का वार्षिकोत्सव २२ से २५ जनवरी ८८ तक बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेकों योगी, सन्त, विद्वान, भजनोपदेशक आदि अपने सुन्दर प्रवचन तथा अन्य कार्यक्रम जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। अवश्य पधारिए।

आर्य समाज आदर्श नगर, लखनऊ का रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ का रजतजयन्ती समारोह पूर्ण वैदिक निष्ठा एवं उत्साहमय वातावरण में दि० ७ से १३ दिसम्बर ८७ तक सम्पन्न हुआ। तपोवन देहरादून से पधारे हुए तपोनिष्ठ महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी ने यज्ञ के ब्रह्मापद को सुशोभित किया। १३ दिस० को पूर्णाहुति के उपरान्त उनका परम पवित्र आशीर्वाद पाने के लिए अपार जनसमूह उमड़ा हुआ था।

इस अवसर पर प्रतिदिन महात्मा जी की अमृत वर्षा के अतिरिक्त श्री उत्तमचन्द्र शरर, आचार्य वागीश कुमार एवं सत्यपाल पथिक आदि अनेकों बाह्य तथा स्थानीय विद्वानों के सुन्दर प्रवचन एवं भजनों से जनता बहुत प्रभावित हुई। ११ दिस० को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने अपने सारगर्भित भाषण में जीवन के वास्तविक उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा—कि ईश्वर का दर्शन तभी संभव है जब मानवमन निर्मल बने इसके लिए स्वाध्याय और सत्संग अनिवार्य है। १२ दिस० की विचार गोष्ठी में आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचारार्थ विद्वानों ने अनेक सुझाव प्रस्तुत किए जिनमें निम्न ५ सुझाव महात्मा जी ने सर्वाधिक उपादेय घोषित किए—

१—प्रत्येक आर्य परिवार में प्रतिदिन संध्या, सत्संग में गुरुजनों का उपदेश हो।

२—उपदेशक स्वयं तपस्वी व कर्मठ हों।

३—नगर को कई क्षेत्रों में बाँट कर पारिवारिक सत्संग नियमित रूप से हों।

४—उत्सव आदि कार्यक्रम सार्वजनिक स्थलों पर हों।

५—विद्यालयों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ उच्चस्तरीय व्याख्याता पहुंचते रहें।

पूरा समारोह अत्यन्त सफल रहा। सम्वाददाता

बाल जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

पशु बलि और देवता

—ले० उपेन्द्र कुमार विश्वकर्मा बी० काम०, युवराजदत्त
महाविद्यालय लखीमपुर खीरी

जिस प्रकार से जल का प्रवाह बहते-बहते भूमि को काट देता है और फिर उसको रोकने के लिए कठिन प्रयासों की आवश्यकता होती है। ठीक उसी प्रकार हिन्दू समाज में अनेक प्रकार के अंधविश्वासो ने अपना घर बना लिया है। उन्हे समाज से बाहर उखाड़ फेंकने के लिए शिक्षित नव युवकों की आवश्यकता है। हिन्दू समाज में अंधविश्वासों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि उनसे छुटकारा पाना बहुत कठिन हो गया है। उनकी जड़ें इतनी गहराई तक पहुंच गई हैं। उन्हीं अन्ध-विश्वासों में से एक है जिसका नाम है पशुबलि। लोग पशुओं को देवी की बलि चढ़ाते हैं। आये दिन लाखों पशु धर्म के नाम पर देवताओं को चढ़ाये जाते हैं। मनुष्य की बुद्धि क्षीण हो गई है। उसके मस्तिष्क में कुछ सोचने की शक्ति नहीं रह गई है। वह बिना कुछ सोचे समझे ही धर्म के नाम पर देवी को पशुओं की बलि चढ़ाकर उनसे कार्य सिद्ध होने की कामना करता है। लेकिन— — — — — उसने देवी के अस्तित्व को नहीं समझा। देवी क्या है उसका अस्तित्व क्या है। यह विद्या उसके ज्ञान से परे है। देवी ईश्वर की अव्यक्त प्रतिमा है। उसे ईश्वर का अंश माना गया है। यदि देवी ईश्वर की प्रतिमा है तो उसमें वही लक्षण होने चाहिये जो ईश्वर के हों। यदि उसमें वह लक्षण नहीं पाये जाते हैं तो उसे ईश्वर का अंश नहीं माना जाना चाहिये ईश्वर जगतकर्ता है जो सारे संसार का पालनकर्ता है। सभी प्राणी उसकी संतानें हैं उसकी संतानो में वह भी आते हैं जो प्रति दिन बलि चढ़ाये जाते हैं ईश्वर दयालु है। यदि वह स्वतः बलि स्वीकार करता है तो उसे सिंह की बलि स्वीकार करनी चाहिए बलि सिंह की क्यों नहीं चढ़ाई जाती। उन निरीह पशुओं की ही क्यों चढ़ाई जाती है। उसके लिए सभी प्राणियों की बलि चढ़ाई जानी चाहिए क्योंकि उसकी नजर में तो सभी प्राणी एक समान हैं। यदि वह सबको अपनी संतान समझता है तो अपने ही संतानो को स्वतः क्यो मारने का आदेश देता है। कोई भी माता अपनी आंखो के सामने अपने पुत्र को मारने का आदेश नहीं दे सकती। यदि वह ऐसा करती है तो वह असली मां नहीं हो सकती। यदि देवी बलि स्वीकार करती है तो हम उसे देवी नहीं कह सकते। उसे प्रत्यक्ष राक्षसी कहा जाएगा। क्योंकि देवी हिंसात्मक कार्य नहीं कर सकती। ऐसे हिंसात्मक कार्य करनेवाला कोई दैत्य ही होगा। लोग शिक्षित होते हुए भी इस अंधविश्वास को समझ नहीं पाते हैं। क्या इन देवी देवताओं से कोई इष्ट कार्य सिद्ध हो सकता है। क्या इनमें किसी प्रकार की शक्ति है क्या? यदि शक्ति है तो जब इनका सहारा लिया जाता है तो कोई कार्य सिद्ध हो जाते हैं और कोई कार्य सिद्ध नहीं होते हैं। जो कार्य सिद्ध नहीं होते हैं तो उनकी शक्ति कहां चली जाती है। क्या उस समय इनकी शक्ति क्षीण हो जाती है। लोगों को समझना चाहिए कि इन देवताओं में किसी प्रकार की शक्ति नहीं होती। यह न आपका कुछ बिगाड़ सकते हैं और न तो कुछ बना सकते हैं। बनाने और बिगाड़ने वाला केवल वही परमपिता परमात्मा है। यदि कहा जाय कि इनकी सिफारिश से काम बन जाता है तो ऐसा नहीं है। उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के यहां किसी प्रकार की सिफारिश नहीं चलती। कोई रिश्वत नहीं चलती। वह न्यायकारी है। वह सभी को कर्म के आधार पर फल प्रदान करता है। संसारमे पता नहीं कितने देवता हैं। लेकिन क्या इनमें कोई शक्ति है। नहीं है। यह सब जड़ हैं। इनका और परमात्मा का कोई सम्बन्ध नही है। यदि एक विद्यार्थी परीक्षा में उत्तर न दे और उत्तीर्ण होने की आशा करे तो क्या यह सम्भव है। कदापि नहीं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इनको बलि चढ़ाने से कोई लाभ नहीं है यदि जीवन मे आपको किसी का सहारा लेना है तो उसी ईश्वर का सहारा लो। वही सबका मूल है। उसी को पूजो। उसी की पूजा से यह सब जड़ देवता स्वतः प्रसन्न हो जायेंगे। इनको पूजने की क्या आवश्यकता है। जिस प्रकार से किसी एक पेड़ की विभिन्न शाखाओं को सींचने से पेड़ हरा भरा नहीं हो जाता और यदि उसके मूल मे पानी डाला जाये तो पेड़ शीघ्र ही हरा भरा हो जाता है। ठीक उसी प्रकार वह परमात्मा इन सबका मूल है। इन सभी को छोड़कर उसकी पूजा करो। उसी की पूजा से यह जड़ देवता स्वतः प्रसन्न हो जायेंगे। इसी बात को संत तुलसीदास ने इस प्रकार कहा है—

एकै साधे से 'सब सधे, सब साधे सब जायं।

अर्थात उसी एक को प्रसन्न कर लेने से वह सभी प्रसन्न हो जाते हैं। सबसे ऊपर की शक्ति वही है। वह असीम कल्याण को देने वाला है। संसार में सबसे श्रेष्ठ परमाश्रय ईश्वर ही है। ईश्वर को ही परमाश्रय बताते हुए कविवर रहीम ने कहा है—

अमर बेलि बिन मूल की, प्रतिपालति है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिये काहि॥

अर्थात जीवन मे सबसे श्रेष्ठ परमाश्रय है यदि कोई तो ईश्वर ही है।

वैदिक मिशनरी गुरुकुल वेद मन्दिर, मथुरा को सहयोग दीजिए

वैदिक मिशनरी गुरुकुल का शुभारम्भ ११ जुलाई ८७ (गुरु-पूर्णमा) को हुआ। यह गुरुकुल युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द की दीक्षा-स्थली मथुरा की एक सीमा पर मथुरा वृन्दावन मार्ग, पर एक प्रशान्त भूखण्ड मे स्थित है, इस गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य मिशनरी भावना वाले—जीवनदानी ऐसे व्यक्तियो का निर्माण करना है जो अपने जीवन समर्पण की भावना को देश, समाज एवं आर्य हिन्दू जाति के उत्थान के लिये लगायेंगे। इस कार्य मे ऐसे प्रौढ़ व्यक्तियो को भी दीक्षित करने की योजना है, जिनके अन्दर मिशनरी भावना हो।

वर्तमान मे प्रौढ़ वैदिक मिशनरियो के अलावा नवयुवक एवं बाल-विद्यार्थी इस गुरुकुल में अध्ययनरत हैं। एक संन्यासी व एक आचार्य इनको प्रशिक्षण दे रहे हैं। इस कार्य के लिए और भी विद्वानो को नियुक्त करने की योजना है।

इस अभिनव गुरुकुल को सम्यक् व्यवस्था के लिये ५ हजार रुपये मासिक चाहिए जनता मासिक सहायता अथवा स्थायी निधि में भी एक मुश्त सहायता देकर इस महायज्ञ के पुण्य की भागी बन सकती है। सहायता की यह राशि वैदिक मिशनरी गुरुकुल, मथुरा के नाम का चैक/ड्राफ्ट के जरिये आप भेज सकते है।

सभामन्त्री

राष्ट्रीय शिक्षा के स्वप्न-द्रष्टा:

स्वामी श्रद्धानन्द जी

[श्री कृष्णदत्त भू० पू० आचार्य हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद]

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् आर्य समाज के मूर्धन्य नेता थे। राजनैतिक क्षेत्र में भी वे देश के प्रथम श्रेणी के नेता थे। १९०७ ई० में लाहौर के 'हिन्दुस्तान' नामक एक पत्र ने अपने पाठकों से देश के तत्कालीन महापुरुषों के नाम मंगवाये थे। उस मत प्राप्ति के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्थान सातवां था, इसी प्रकार १९१२ ई० में लाहौर के एक उर्दू पत्र ने अपने पाठकों से देश के छः महापुरुषों के नाम मंगवाए थे। प्रथम छः नामों का ब्योरा प्राप्त मतों के अनुसार इस प्रकार है—श्री गोखले–७६२ म० मुन्शीराम जी (संन्यास लेने के पूर्व स्वा० श्रद्धानन्द जी का नाम) –६०३, लाला लाजपतराय–५३३, लोकमान्य तिलक–४७५, पं० मदनमोहन जी मालवीय–४७५, और दादाभाई नौरोजी–४३३। महात्मा गांधी अभी भारत नहीं आये थे। इन दोनों तथ्यों से बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का राष्ट्रीय स्तर पर कितना महत्त्व था, इस बात की कल्पना की जा सकती है।

स्वामी जी ने भारत के शैक्षणिक इतिहास में एक अद्भुत और नवीन प्रयोग किया था। वह एक सफल प्रयोग था। तत्कालीन प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरुद्ध वह एक विद्रोही कदम था; लार्ड मेकाले द्वारा भारत के लिए बनाई गयी शिक्षा–योजना का प्रत्युत्तर था। स्वामी जी की शिक्षा-योजना को गुरुकुल शिक्षा-योजना का नाम दिया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में शिक्षा के सम्बन्ध में जो महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये थे, उनको मूर्त रूप देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना की थी।

गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) की स्थापना १६ मई १९०० ई० को गुजरांवाला में हुई। ४ मई १९०८ को गुरुकुल गुजरांवाला (पंजाब) से हरिद्वार के पास कांगड़ी में लाया गया। गुरुकुल की स्थापना के पीछे जो मूल तत्व स्वामीजी के समक्ष थे, उन्हें इन शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है–(अ) गुरु और शिष्य का आध्यात्मिक सम्बन्ध। (आ) दृढ़ चरित्र का निर्माण। (इ) भारतीय धर्म, संस्कृति और सभ्यता के साथ समीकरण करते हुए आधुनिक विषयों की उच्च-शिक्षा का प्रबन्ध (ई) आर्य भाषा या हिन्दी को सम्पूर्ण शिक्षा का माध्यम बनाना।

एक संस्था की स्थापना, संचालन और स्थिरता के लिए प्रारम्भ में जो कठिनाइयां आया करती हैं, उन सभी का स्वामी जी को सामना करना पड़ा, किन्तु उनके श्रेष्ठ व्यक्तित्व और व्यापक प्रभाव के कारण सभी कठिनाइयां दूर हो गयीं। किन्तु यह संस्था सरकार की आंख में खटकने लगी। उसके अनेक कारण थे।

बीसवीं शती के प्रारम्भ में स्वयं आर्य समाज सरकार की आंखों की किरकिरी बना हुआ था। गुरुकुल आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता स्वा० श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित था। लार्ड मेकाले द्वारा संपुष्ट शिक्षा नीति के एकदम विपरीत शिक्षानीति को स्वामी जी ने अपनाया था। विद्रोह का यह पहला चरण था। वह एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय था। सरकार से एक पैसा भी आर्थिक सहायता के रूप नहीं लिया था। जनता को इस बात का आश्चर्य था कि वहां एक भी प्राध्यापक अंग्रेज नहीं था। उस युग में कालेज और विश्वविद्यालय बिना अंग्रेज प्राध्यापकों के चलाना असम्भव समझा जाता था। सरकारी यूनिवर्सिटियों में प्रचलित पुस्तकों में से एक भी पाठ्य-पुस्तक यहां प्रयोग में नहीं आती थी। अंग्रेजी साहित्य, विज्ञान आदि सभी विषयों की पाठ्य पुस्तकें भी गुरुकुल ने अपने आप तैयार कर ली थीं। यहां के विद्यार्थी किसी भी यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में सम्मिलित नहीं होते थे। गुरुकुल ने अपनी डिग्रियों के लिए स्वतन्त्र भारतीय नाम दे रखे थे। सबसे बढ़कर जो असम्भव कार्य समझा जाता था वह था शिक्षा के माध्यम का प्रश्न। यहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं था, हिन्दी था। यह देश की पहली यूनिवर्सिटी थी, जहां उच्च शिक्षा का माध्यम एक भारतीय भाषा हिन्दी को बनाया गया था। उसके (१६) वर्ष बाद उस्मानियां विश्वविद्यालय ने उर्दू को माध्यम बनाया था। वस्तुतः गुरुकुल कांगड़ी सरकारी नीति की खुली अवज्ञा थी। गम्भीर विद्रोह था। सरकारी कागज इस संस्था के विरोध में काले होने लगे। सरकारी फाइलें आर्य समाज गुरुकुल और स्वामी श्रद्धानन्द के विरोध में फूलने लगीं। स्वामी जी का ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध यह पहला विद्रोह था।

स्वामी जी का दूसरा विद्रोह भारतीय हिन्दू समाज के विरोध में था। बीसवीं शती के प्रारम्भ में छूत-छात, ऊंच-नीच और आर्थिक दृष्टि से छोटे-बड़े का भाव तीव्र था। किन्तु गुरुकूल में अमीर-गरीब या ऊंच नीच या छूत-अछूत का कोई भेद-भाव नहीं था। ब्राह्मण और अछूतों दलितों के बच्चे एक साथ और समान स्थिति में रहते थे, एक साथ भोजन करते थे। सबके एक जैसे वस्त्र, एक जैसा भोजन और एक जैसा रहन-सहन था। सब एक दूसरे को भाई-भाई और कुल बन्धु समझते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी माध्यम से गुरुकुल विश्वविद्यालय को शिक्षा का प्रबन्ध करके न केवल राष्ट्र भाषा हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था, अपितु भारतीय भाषाओं का मार्ग दर्शन भी किया है। सन् १९१८ के आस-पास कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन के प्रधान डा०सड्लर गुरुकुल पधारे थे। साथ में सर आशुतोष मुकर्जी भी थे। डा० सड्लर ने एक पत्र में स्वामी जी को लिखा था– 'मैं समझता हूं कि जिस शिक्षा-विधि में मातृ-भाषा को प्रथम और सबसे प्रमुख स्थान दिया जाए, वहां यह सम्भव है कि मन का स्वतन्त्र विकास हो कर मानसिक वृत्तियों तथा भावों पर प्रभुत्व प्राप्त होगा.........मेरी हार्दिक इच्छा है कि गुरुकुल का विकास राज्य द्वारा स्वीकृत एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप में हो।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कभी भी विदेशी सरकार की मान्यता और आर्थिक सहायता के लिए प्रयत्न नहीं किया, बल्कि इन्कार करते रहे।

राइट ऑनरेबल सर श्रीनिवास शास्त्री भारत के मूर्धन्य मनीषी और शिक्षा-शास्त्री हुए हैं। उनका यह दृढ़मत था कि भारतीय भाषाओं में उच्च-शिक्षा (यूनिवर्सिटी एज्युकेशन) नहीं दी जा सकती। गुरुकुल को देखने के बाद सर श्रीनिवास शास्त्री ने जो मत लिखित रूप में अभिव्यक्त किया था, वह इस प्रकार है– 'शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे या भारतीय भाषायें, इस प्रश्न पर बहुत वाद-विवाद है। मेरा अपना विचार यह रहा है कि विद्यालय (हाई स्कूल) विभाग में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषायें ही रहना चाहिए, परन्तु महाविद्यालय (कालेज) विभाग की पढ़ाई अंग्रेजी के माध्यम द्वारा होनी चाहिए। परन्तु अब गुरुकुल को देखकर मैं इस विचार से परे हट रहा हूं।' निस्सन्देह गुरुकुल के नाते स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को क्रान्तिकारी शिक्षाशास्त्री और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा का जनक कहना उचित होगा।

सम्माननीय विद्वज्जनों से-

निवेदन है कि १९ फरवरी १९८८ को 'आर्यमित्र' अपना 'ऋषि-बोध अंक' प्रकाशित करने जा रहा है। विद्वद्वर्ग अपनी रचनाएं भेजने की कृपा करें। —प्रबन्ध सम्पादक

धर्म परीक्षा एवं प्रशिक्षण शिविर सम्बन्धी आवश्यक सूचना

धर्म रत्न परीक्षा

कक्षा ५ में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष 'धर्म रत्न' नामक धर्म परीक्षा अनिवार्य होगी चाहे वे सभा से सम्बद्ध विद्यालयों में पढ़ते हों या असम्बद्ध में, आर्यसमाज के अधिकारी एवं विद्यालयों के प्रबन्धक महोदय इस ओर विशेष ध्यान देने की कृपा करें। परीक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित कक्षा ५ की धार्मिक शिक्षा की पुस्तक के आधार पर होगी। प्रथम तीन स्थान पाने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा, परीक्षा फार्म सभा कार्यालय से प्राप्त करें।

धर्म प्रशिक्षण शिविर

प्रदेशीय विद्यार्य सभा कुछ विद्यालयों में धर्म प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है ये तीन दिन तक चलते हैं उनमें वेद शास्त्र, उपनिषद, ब्राह्मणादि आर्ष ग्रन्थों, पंचमहायज्ञ, संस्कार, महर्षि दयानन्द जीवनी एवं कृतियां, आर्यसमाज की मान्यताएं, आदि विषयों की सामान्य जानकारी शिक्षकों, छात्रों को दी जाती है।

दयानन्द रामेश्वर हंसरानी आर्य कन्या इण्टर कालेज सीतापुर मे एक शिविर ८, ९, १० नवम्बर १९८७ को वहां की प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्या एवं छात्राओं तथा अध्यापिकाओं के हार्दिक सहयोग से हो चुका है।

सभी आर्य विद्यालयों में इस प्रकार के शिविरों का आयोजन होना चाहिये इन शिविरों में विद्वानों की व्यवस्था में विद्यार्य सभा सहयोग देगी जो विद्यालय इस शिविर को लगाना चाहते हैं वे मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क करें।

धर्म परीक्षाएं

प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण, धर्माधिकारी परीक्षाएं २८ फरवरी १९८८ को होंगी जिनको क्रमशः कक्षा ७, ९, ११ के छात्र सुगमता से दे सकेंगे।

प्रधानाचार्य महोदय इन कक्षाओं के सभी विद्यार्थियों को इन परीक्षाओं में प्रविष्ट होने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित कक्षा ७, ९, ११ की पुस्तकों पर सामान्यतया, आधारित होंगे जिनको विद्यार्थी स्वयं भी पढ़ सकते हैं। सभा कार्यालय से तुरन्त फार्म मंगा लें परीक्षा शुल्क क्रमशः २) रु०, २.५० रु० तथा ३) रु० होगा।

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ०प्र०, लखनऊ

आर्यसमाज मीरजापुर का शताब्दी समारोह

२० दिसम्बर—आर्य समाज मीरजापुर का शताब्दी समारोह, आर्य कन्या इन्टर कालेज के विशाल प्राङ्गण में दि० १७ से २० दिस० १९८७ तक बड़े ही समारोह के साथ धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ। १७ दिस० को एक विशाल शोभा यात्रा जो कि मीरजापुर के इतिहास में सबसे बड़ी शोभा यात्रा थी, निकाली गयी। इसमें हजारो की संख्या में आर्य नर-नारियों एवं शिक्षण संस्थाओं के बालक बालिकाओं ने बड़े ही उत्साह पूर्वक भाग लिया। सारा मार्ग तोरण द्वारो से सजा हुआ था तथा वैदिक नादों से आकाश गुञ्जायमान था।

इस समारोह में पधारने वाले उत्कृष्ट विद्वानों एवं भजनोपदेशकों में श्री बाल दिवाकर हंस संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल, नई दिल्ली डा० आनन्द सुमन, देहरादून, श्री पं० जयप्रकाश आर्य (भू० पूर्व इमाम बेतिया) हरियाणा, प्रसिद्ध विदुषी महिला श्रीमती सावित्री शर्मा. वेदाचार्या, बरेली, के अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा० महिपाल सिंह, श्री महानन्द, श्रीमती अमिता मालवीय, तथा भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ की सुप्रसिद्ध मधुर गायिका कोकिल कण्ठा श्रीमती कमला श्रीवास्तव, श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव आदि पधारी थीं। प्रतिदिन प्रातः कालीन यज्ञ के ब्रह्मा डा० आनन्द सुमन के आध्यात्मिक प्रवचनों एवं उनके द्वारा प्रस्तुत वेद मन्त्रों की दार्शनिक व्याख्या सुनकर जनता मन्त्रमुग्ध हो उठी। रात्रिकालीन प्रवचनों एवं भजनों के द्वारा जनमानस में एक अपूर्व आध्यात्मिक शान्ति का वातावरण उत्पन्न हुआ। हजारों की संख्या मे उपस्थित जनता ने आर्य समाज द्वारा किये गए कार्यों की सराहना की और इस क्रांतिकारी आन्दोलन को अपना पूर्ण समर्थन देने का व्रत लिया। मीरजापुर के इतिहास में यह एक अपूर्व आध्यात्मिक संगम था जिसका श्रेय आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र० की उप प्रधाना एवं उ० प्र० नागरिक परिषद की अध्यक्षा बहन सन्तोषकुमारी कपूर, समाज के प्रधान डा० गणेशप्रसाद गुप्त मन्त्राणी डा० मधुचोपड़ा एवं श्री रामरत्न तिवारी प्रेमचन्द तिवारी सीताराम गुप्त आदि जैसे कर्मठ महानुभावों को है।

वार्षिकोत्सव

स्थानीय आर्यसमाज शोहरतगढ़ का ३३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ३१ जनवरी एवं १-२ फरवरी १९८८ को होने जा रहा है। जिसमें उच्च कोटि के विद्वान् पधार रहे हैं।

शोक समाचार

हमें निम्न आर्य पुरुषों व महिलाओ के दुखद निधन का समाचार प्राप्त हुआ है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओ को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

सभा मन्त्री

—आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान एवं कवि श्री पं० ओंकार मिश्र 'प्रणव' की पूज्यनीया माता जी का ९२ वर्ष की आयु में झांसी में दुखद निधन हो गया। वे आर्य विदुषी महिला थीं।

—विद्यामार्तण्ड स्व० आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री जी की धर्म पत्नी श्रीमती गार्गीदेवी शर्मा का दुखद निधन २८-११-८७ को रामपुर (मध्य-प्रदेश) में हो गया। वे कई वर्ष स्त्री आर्य समाज बुढ़ाना (मेरठ गेट) की प्रधाना तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ की प्रबन्धिका रही थीं।

—आर्य समाज गोला के भूतपूर्व मन्त्री श्री हरबन्शलाल सूरी के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज मन्दिर गोला में एक शोक सभा हुई जिसमें दिवंगत आत्मा को शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में जिलाधिकारी माननीय टी० आर्ज जोसफ का भव्य स्वागत

१७-१०-८७ को प्रातः १०-३० बजे गुरुकुल भूमि ग्राम टीकरी (मेरठ) जिलाधिकारी टी० जार्ज जोसफ के पहुंचने पर गुरुकुल के मन्त्री श्री इन्द्रराज जी, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं टिकरी ग्राम के निवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया। गुरुकुल के अतिथि कक्ष, स्वाध्याय कक्ष, निवास कक्ष, वैदिक पुस्तकालय, यज्ञशाला, साधना कक्ष, कृषक कक्ष, गोशाला, एवं खेल-कूद के मैदान तथा ट्यूबवैल आदि के निरीक्षण से जिलाधिकारी महोदय बहुत प्रभावित हुए। प्राचीन शिक्षा पद्धति का उन्होंने रुचि पूर्वक अध्ययन किया। साधना कक्ष में वे जिलाधिकारी महोदय का संस्कृत गीतिका के द्वारा स्वागत किया गया। श्री इन्द्रराज जी मन्त्री ने उनके मेरठ के कार्यों की भूरि-२ प्रशंसा करते हुए मेरठ के भीषण साम्प्रदायिक दंगे पर सफलतापूर्वक काबू पाने पर उन्हें बधाई दी। एक सच्चरित्र अनुशासन प्रिय ईमानदार और सच्चे इन्सान के रूप में उनके विषय में वर्णन करते हुए उन्हें ब्रह्मचारियों को सदुपदेश देने की श्री इन्द्रराज जी ने प्रार्थना की। जिलाधिकारी महोदय ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए यह कामना की कि वे अपने जीवन में अनुशासन, सच्चरित्रता और योग्यता लाने के साथ २ आधुनिक विज्ञान के साथ भी अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे। भारत में नई शिक्षा नीति का जिकर करते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीकी के साथ आत्मा को जोड़ने वाली शिक्षा पद्धति से ही भारत का कल्याण हो सकता है। बिना विश्वास के व्यक्ति में कमजोरी आती है और उसे भौतिकवादी विज्ञान जैसा देश परास्त कर सकते हैं। आज शिक्षा जगत में जो सामूहिक नकल के रूप में भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है उसको दूर करने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसी शिक्षण संस्थाओं से ही आशा की जा सकती है कि वे नैतिकता के आधार पर इस भ्रष्टाचार को दूर करें।

गुरुकुल के मन्त्री श्री इन्द्रराज जी ने जिलाधिकारी महोदय का बहुत २ धन्यवाद किया कि उन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकाल कर हम गुरुकुलवासियों को दर्शन देने की कृपा की।

अन्त में गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने आशीर्वाद देते हुए जिलाधिकारी महोदय के गुरुकुल पधारने पर उनका स्वागत करते हुए कहा कि विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय बहुत आवश्यक है। गति आत्मोन्मुख होनी चाहिए। आज शिक्षा पद्धति कैसी हो इस पर विचार विमर्श और परीक्षण भी चल रहे हैं। परन्तु प्राचीन गुरु शिक्षा परम्परा को सामने रख कर अध्यात्म को गतिशील बनाना अत्यन्त आवश्यक है अर्थात आत्मा शुद्धि और आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी का समन्वय बहुत आवश्यक है।

स्वामी जी के आशीर्वाद और शान्ति पाठ के पश्चात् स्वागत सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

तत्पश्चात जिलाधिकारी महोदय ग्राम टीकरी पहुंचे वहाँ ग्रामवासियों ने उनका स्वागत करते हुए उनसे ग्राम में हस्पताल के जीर्णोद्धार करने की मांग की। जिलाधिकारी महोदय ने आश्वासन दिया तत्पश्चात् जानी क्षेत्र में एक पम्प को देखने की जिलाधिकारी महोदय वहाँ गये।

संवाददाता

निर्वाचन

–आर्य समाज फजलपुर (सुन्दर नगर) मेरठ का वार्षिक चुनाव दिनांक २-१०-८७ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये वर्ष १९८७–८८ हेतु।

प्रधान–बाबू सोहनलाल जी
मन्त्री–श्री रामबहादुर राम आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री डा० सोमदेव

-२२ वर्ष बाद पुनर्जीवित आ० स० राजा का रामपुर (एटा) का निर्वाचन
प्रधान–श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी
मन्त्री–श्री सूर्यदेव शर्मा
कोषाध्यक्ष–श्री ओमप्रकाश जी

–आर्य समाज पालीगंज (पटना)
प्रधान–श्री राजेन्द्रप्रसाद यादव
मन्त्री–श्री शशिकान्त आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री रामचन्द्र आर्य

नवीन आर्य समाजों की स्थापना

ग्राम इटहिन पुरवा सोनरहा पो० रेहराबाजार जिला गोंडा में जनता के सहयोग से एक नवीन आर्यसमाज की स्थापना दिनांक ८-११-८७ को पवित्र यज्ञ के पश्चात् हुई।

निम्न पदाधिकारी चुने गये–
प्रधान–श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह
मन्त्री–श्री भारतनरेश सिंह
कोषाध्यक्ष–श्री रामचन्द्र पाण्डेय

–ग्राम नबोवा पो० उतरास जिला प्रतापगढ़ में १४-१२-८७ को नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई। निम्न पदाधिकारी चुने गये–
प्रधान–श्री नर्मदेश्वर आर्य
मन्त्री–श्री शिवकुमार
कोषाध्यक्ष–श्री रवीन्द्रकुमार

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवम्बर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

६३२, ८११९, ८८५४, ८८५६, ११०६९, ११३६५, ११३६८, १२४५८, १२७६५, १२७७७, १३६५०, १३६५१, १३६५३, १४१११, १४११३, १४११५, १४१२१, १४१२२, १४१२४, १४१२५, १४१२६, १४१२७, १४१२९।

विनीत–
व्यवस्थापक

वैदिक सूर्य का उदयाचल गुरुधाम (मथुरा)

[पृष्ठ १ का शेष]

गुरुदेव ! आज्ञा कीजिये। मेरा तन-मन और सर्वस्व आपके चरणों की पावनी धूल पर निछावर है।'

दयानन्द की वाणी सुनकर गुरुवर विरजानन्द का रोम-रोम पुलकित था, वे बोल उठे 'दयानन्द ! मैंने तुझे भगवत् ज्ञान राशि वेद दिये, तू मुझे अपना जीवन दे दे और इसे वेद प्रचार में लगा दे।'

दयानन्द अति प्रमुदित हो तत्क्षण बोल उठे 'तथास्तु'।

आपने महती कृपा की है गुरुदेव ! यह दक्षिणा तो सहज है। वेद प्रचार में जीवन लगा देने का आदेश शिरोधार्य है, यह जीवन अब कृतार्थ हो गया।'

कुटीर कक्ष के वद्ध व्योम में यह गुरु शिष्य की अनुपम दक्षिणा का सम्वाद आज भी गूंज रहा है।

बस तभी से 'तथास्तु कह कर विदा हुआ वत्स दयानन्द कुटिया से गया आज तक वापस नहीं आया। कुटिया के चमकते पाषाणों के नीचे कच्चे आंगन में दबी हुई वे स्मृतियाँ आज भी कुलबुला रही हैं। जब कि अद्भुत प्रतिभा से गुरुवर, व्याकरण, श्रुति और दर्शनों की गुत्थियों को सुलझाकर शिष्य वर्ग को प्रस्तुत करते थे।

इस बार गुरुधाम की पावन कुटी को देखकर मेरा भावुक हृदय अतितरां श्रद्धाभिभूत हुआ था। भासित हुआ कि यह कुटिया राष्ट्रिय नहीं, प्रत्युत अन्तरराष्ट्रिय गौरव स्थली है।

आर्यों के महान् महर्षि का यह पावन ज्ञान-केन्द्र है जहाँ से उठ कर ऋषिवर ने अपने जीवन को तपोमय और यज्ञमय किया।

पावमानी इसी स्थली पर दैनिक यज्ञ न होने की बात जले भुने उत्साहभरे स्वर में मुझसे कही—मथुरा के श्रद्धालु, आर्य श्री सेठ छेदालाल जी ने। वे कहने लगे कि अधिकारियों ने भी मेरी शिकायत की उपेक्षा की। मुझे उनकी इस गम्भीर बात ने गहराई से छुआ, और त्याग मूर्ति पं० आशाराम जी शास्त्री के साथ २४-११-८७ को प्रातः दैनिक यज्ञ प्रारम्भ करा दिया गया।

जो अब अखण्ड दैनिक रूप में होता ही रहेगा। जो श्रद्धालु महानुभाव अपनी ओर से कुटिया पर विशेष 'पारायण' या बृहद यज्ञ कराने का दान-संकल्प करेंगे, उसकी यथा समय वहाँ व्यवस्था रहेगी।

निर्वाचन

—आर्य समाज दौराला का वार्षिक चुनाव समस्त औपचारिकतायें पूर्ण करते हुए दि० ४ अक्तूबर ८७ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री मूलचन्द

मन्त्री—श्री ओमपालसिंह

कोषाध्यक्ष—श्री जयपाल सिंह

'गंगाप्रसाद उपाध्याय ट्रैक्ट विभाग'

आर्य समाज चौक, प्रयाग

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तकें	अजिल्द	सजिल्द
१—इस्लाम और आर्य समाज नवीन संस्करण	९—००	१२—००
२—इस्लाम के दीपक	१२—००	१५—००
३—कर्मफल सिद्धान्त	४—००	
४—मीमांसा प्रदीप		१५—००
५—वैदिक विवाह पद्धति	२—५०	
६—उपदेश सप्तक	१—७५	
७—वेद और मानव कल्याण	२—५०	
८—आर्योदय काव्यम्	३—००	
९—फलसफाए आमाल (उर्दू)	२—००	
१०—मुसद्दस दयानन्द ,,	—६०	
११—मुसद्दस आहेवेजुबां ,,	—२५	
१२—सुपरस्टीशन (अंग्रेजी)	२—५०	५—००
१३—वरशिप ,,		१२—००
१४—रिलीजियस ट्रैक्ट सीरीज	४—००	
१५—ह्यूमिनि टेरियन डाइट	१०—००	१२—००
१६—सोशल रिफा० बाई बुद्धा एण्ड दयानन्द	३—००	
१७—राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द (डा० ज्वलन्त कु० शास्त्री)	२—०० (दो)	
१८—उपाध्याय जी ट्रैक्ट माला (ट्रैक्ट संग्रह)		१४।००

उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य प्रकाशनों से प्रकाशित उपाध्याय जी की समस्त पुस्तकें, विभिन्न पुस्तकें तथा पं० जी द्वारा लिखित व सम्पादित १६ पेजी एवं ८ पेजी ट्रैक्ट वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित सरल खण्डनात्मक एवं मण्डनात्मक अनेक रूढ़ियों अन्धविश्वासों पर प्रभावी अत्यल्प मूल्य पर उपलब्ध हैं। हजार ट्रैक्ट पर ३०/ तक की छूट है, आदेश के साथ आधा अग्रिम भेजें।

जन प्रचारार्थ ट्रैक्टों एवं पुस्तकों की विस्तृत सूची पत्र एवं क्रय नियम निःशुल्क निम्न पते से मँगावें।

विश्वप्रकाश आर्य
प्रबन्धक
गंगाप्रसाद उपाध्याय ट्रैक्ट विभाग
आर्य समाज चौक, इलाहाबाद
द्वारा, श्री विनयकुमार प्रो० गुरुकुल
कांगड़ी फार्मेसी, २७
जानसेनगंज, इलाहाबाद (यू० पी०)

आर्यमित्र
उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का ...
१० जनवरी ... रविवार ...

प्रसिद्ध कवियों की मधुर वाणी

लखनऊ में १४ नवम्बर १९८७ को हुए ... कविवर ... निर्भय हाथरसी, प्रा० राजवीरसिंह ... कु० ... शाहजहाँपुर श्री राधेश्याम आर्य सुल्तानपुरी, श्री ... कुमार ... सभा के उपमंत्री श्री जयनारायण ... मिश्र ... कैसेट (प्रति कैसेट ६० मिनट के) केवल रु० ... में प्राप्त कर और कविता ... काव्य धारा का रसास्वादन ... ।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

बृहद् यज्ञ एवं विराट ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द व गुरुकुल ... (फर्रुखाबाद) के प्रांगण में २०, २१ २२ फरवरी को बृहद यज्ञ एवं ऋषि मेला का आयोजन अति हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी महोपदेशक पधार रहे हैं। समस्त धर्मप्रेमी महानुभावों से अनुरोध है कि इष्टमित्रों सहित उपर्युक्त तिथियों में अधिकाधिक संख्या पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें तथा यज्ञ की सफलता एवं ऋषि लंगर हेतु अपनी सात्विक आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। पधारने वाले सभी सज्जनों के लिए आवास एवं भोजन की निःशुल्क व्यवस्था है।

आचार्य जगदीश शास्त्री
कुलपति



शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❋ आवश्यक सूचना ❋

... को आर्य समाज के ... शताब्दी ... समारोह में ... सम्पूर्ण शताब्दी समा... की रिकार्डिंग (कैसेट) ... आर्य प्रतिनिधि सभा ... सभा मन्त्रियों के ... सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० सी० आर० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त सत्र में पधारे हुए सन्यासियों, विद्वानों उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं ... शिक्षण संस्थाओं के समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा ... बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएँ इन्हें ... चाहती हैं वह श्री ... व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क ... अथवा ... भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ ... मूल्य
वी० सी० आर० कैसेट— १००० ०० रु०

२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट— मूल्य १०० ०० रु०

३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के रिकार्डिंग कैसेट
कुल संख्या १०, प्रति कैसेट— ...

४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो— ...
(... फोटो भी आर्डर देकर ... बनवाई जा सकती हैं)

और ... शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १० ... तथा ... के एक एक ... के ... से रिकार्डिंग कैसेट ... मूल्य पर ... दिए जा सकते हैं।

आर्यसमाज के ... तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

... आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए ... प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. स० २२४१।५७ | घोषणा पत्र स ७१२८-२-८५

माघ कृष्ण १३, रविवार, सवत् २०४४ वि०, दिनांक १७ जनवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पोंड

★

वर्ष	८१
अङ्क	३

वर्ष १९८८ को–

'आर्य युवा वर्ष' मनाने का संकल्प

युवा शक्ति किसी जीवन्त राष्ट्र का प्राण है

–इन्द्रराज, प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० की नव निर्वाचित अन्तरंग सभा,

३ जनवरी १९८८ के महत्त्वपूर्ण निर्णय

प्रदेश की प्रत्येक आर्यसमाज मे आर्य वीर दल तथा आर्यकुमार सभाओ की स्थापना की जायेगी। मण्डलीय स्तर पर आर्य युवक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन होगा और उनके सफल सञ्चालन हेतु अन्तरग ने एक बृहत् योजना स्वीकार की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की नव निर्वाचित अन्तरग सभा की प्रथम महत्वपूर्ण बैठक सभा कार्यालय, नारायणस्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ मे सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम प्रधान जी ने नव निर्वाचित अधिकारियो एव सदस्यो को नव वर्ष की बधाई देते हुए स्वागत किया। पारस्परिक परिचयोपरान्त अन्तरग सभा ने आगामी सत्र म पूरे उत्साह, त्याग और सौहार्द पूर्वक वातावरण मे आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया और वर्ष १९८८ को "आर्य युवा वर्ष" के रूप मे मनाने का सर्वसम्मत निर्णय लिया।

अन्तरग सभा ने अपने एक अन्य प्रस्ताव द्वारा सर्वसम्मति से निश्चय किया कि इस वर्ष प्रदेश की प्रत्येक आर्यसमाज मे आर्य वीर दल की शाखा स्थापित करके व आर्यकुमार सभा के माध्यम से वैदिक बौद्धिक कार्यक्रम को गति देने हेतु योजनाबद्ध कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जायेगा। प्रत्येक मण्डलीय मुख्यालय पर एक मण्डलीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा और प्रत्येक शिविर को योग्य प्रशिक्षक, विद्वान व्याख्याता, उपदेशक और पांच हजार रुपये की राशि अनुदान के रूप मे सभा की ओर से प्रदान की जाएगी–जनपदीय मुख्यालय पर आयोजित शिविर को दी जा रही एक हजार रुपये की राशि यथावत रहेगी।

सभा प्रधान जी ने सभा से निष्कासित कुछ व्यक्तियों द्वारा १५ नवम्बर को हुए सभा के वार्षिक निर्वाचन के सम्बन्ध में किये जा रहे भ्रामक दुष्प्रचार का खण्डन करते हुए बताया कि आर्य जनता इस प्रकार के भ्रामक दुष्प्रचार से सावधान रहे और ऐसे असामाजिक व्यक्तियो को कर्मयोगी के रूप मे मुहतोड़ जवाब दे। आर्यसमाज विवादो को हवा देने के लिए नहीं है बल्कि परस्पर प्रेम सद्भावना और सगठन को सुदृढ़ करने हेतु कार्य करने के लिये है। इसी से राष्ट्र रक्षा सम्भव है और आज समय की यही आवश्यकता है।

से आंख मींच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—माघ कृष्ण १३ सम्वत् २०४४ रविवार १७ जनवरी १९८८ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

उठो आर्यो उठो सपूतो

अपने प्रदेश मे आर्य समाज के यश और श्रीवृद्धि का सर्वाधिक दायित्व हमारे आर्य प्रतिनिधियों पर है। इस विशाल प्रदेश की महनीया कमनीया पुण्या भूमि पर आर्य समाजों का जाल सा बिछा हुआ है। हर आर्य का घर मन्दिर हैं हर मन्दिर से "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का शंखनाद हो रहा है। हर आर्य मन्दिर राष्ट्र का सजग प्रहरी है। आज सारे देश में अराजकता, अशांति, आतंकवाद और विनाश का जो ताण्डवनृत्य चल रहा है उससे बचाने का दायित्व भी हमी पर है। हमारी प्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा की नवनिर्वाचित अन्तरङ्ग ने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने तथा देश की युवाशक्ति को वैदिक विचारो से ओतप्रोत करने का संकल्प लिया है। हमारा वर्ष—१९८८ "आर्य युवावर्ष" के रूप मे मनाया जायेगा। आर्य वीरों एवं आर्य वीराङ्गनाओं की टोलियां प्रदेश के कोने-कोने मे अपना परम—पावन वैदिक सन्देश जन—जन को सुनायेंगी।

वास्तव में युवाशक्ति किसी राष्ट्र की ज्वलन्त प्राणशक्ति है। आज पाश्चात्य चकाचौंध वाली सभ्यता ने हमारे युवावर्ग को दिग्भ्रमित कर दिया है। गञ्जा, सिगरेट, मांस तथा अनेक प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन आधुनिक फैशन का अंग बनता जा रहा है। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सङ्गों में उनकी उपस्थिति नगण्य होती जा रही है। नैतिक आदर्शों की अवहेलना हो रही है। जो तरुणाई समाज से भ्रष्टाचार, पापाचार, अनाचार विनष्ट करने में लगनी चाहिए थी वह आज विलासप्रियता की ओर बढ़ती जा रही है। क्या हम समाज की इस भावी पीढ़ी को, जिनके कन्धों पर हमें इस विशाल समाज का दायित्व सौंपकर जाना है, इसी प्रकार दिग्भ्रमित होने देगें? क्या हमारे आर्य समाज मन्दिर तरुणाई से शून्य केवल पूजा पाठ के ही स्थल बनकर रह जायेंगे। वेद भगवान की तो आज्ञा है.—

"सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं—चक्षुरजस्रज्योतिः"
अथर्व १६।२।५

ऐ आर्य? तेरी दृष्टि और तेरे समाज की दृष्टि गरुड़ के समान तीक्ष्ण हो।" उसमें अनन्त शक्ति और तेजस्विता का वास हो। निःसन्देह हम आर्यों में अनन्तशक्ति और तेजस्विता है केवल हम उसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। हमने संकल्प लिया है हम उसे प्रदर्शित करेंगे और संसार को पुनः वैदिक ज्योति से प्रदीप्त करेंगे। हमारी तरुणाई हमारे उज्वल भविष्य का सृजन करने में सफल होगी। हम अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करेंगे न किसी पर अत्याचार करेंगे परन्तु हम इतने शक्तिशाली अवश्य बनेंगे कि किसी को हम पर अत्याचार करने की हिम्मत ही न पड़े क्योंकि "अत्याचार करने से अत्याचार सहना अधिक पाप है।' हम शक्तिशाली बनकर ही क्षमाशील बनेंगे—

क्षमा शोभती उस भुजङ्ग को जिसके पास गरल है।
उसे कौन डरेगा जो दन्तहीन, विषहीन, सरल है ॥

हम अपनी समाजों मे जैसे सागर का जल अथाह है, मध्याह्न का सूर्य देदीप्यमान है, हिमालय की चोटियां अडिग हैं उसी प्रकार की आर्य वीरों और वीराङ्गनाओं की विशाल वाहिनी खड़ी करेंगे। उखड़ी हुई निराशा को स्वर्णिम आशामयी उषा में परिवर्तित कर देंगे। याद रखना—कहीं सुदूर अनन्त में, अज्ञात बना बैठा हुआ तुम्हारा प्रेरक, तुम्हारा मसीहा, अपने तीक्ष्ण नेत्रों से तुम्हारी कर्मस्थली का मूल्यांकन कर रहा है—तुमने उसके "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के सन्देश को कितना आगे बढ़ाया है? यदि तुम जर्जर हो गये हो, हाथों में कम्पन आ गया है तो उठों अपने इन सपूतों के तरुणाई भरे हाथों में, प्यार से बुलाकर दायित्व सौंप दो। कह दो—यह समाज तुम्हारा है यह यज्ञशाला तुम्हारी है और यह वेद मन्दिर तुम्हारा है" हम भी तुम्हारे हैं। हमने इस किश्ती को आगे बढ़ाया है, इस वैदिक मशाल को शक्ति भर जलाया है। हम इससे स्वयं रोशन हुए दुनियां को रोशनी दी है, अब हमारे हाथ कमजोर होते जा रहे हैं, हम तुम्हें विश्वास के साथ, आत्मीयता और प्रेम के साथ, आशीर्वादों के ढेर के साथ तमस को दूर करने वाली यह वैदिक ज्योति समर्पित करते हैं। हमें तुम्हारी तरुणाई पर विश्वास है और हम जानते हैं तुम नई चेतना और स्फूर्ति लेकर इस वैदिक ज्योति को संसार के कोने कोने में प्रदीप्त कर दोगे।

आज आवश्यकता है इस भावना की इस भावना के साथ तरुणाई को आह्वान करने की। आज आवश्यकता है समाज मन्दिरों में साप्ताहिक सत्सगोंके अतिरिक्त समय-समय पर ऐसे रोचक, आकर्षक, शिष्ट कार्यक्रम रखे जावें जिनसे युवावर्ग आकर्षित हो, आर्य वीर दल की शाखाओं का नियमित संचालन हो। सुन्दर विचारों से ओतप्रोत आकर्षक प्रतियोगितायें, कवि गोष्ठियां, प्रहसन, वक्तृत्वकाएं, समाज मन्दिरों में प्रस्तुत होती रहें। सरल सुन्दर रोचक भाषा में शिष्ट साहित्य का सृजन एवं वितरण होता रहे। देखना—वे लालायित हैं आने के लिये" तुम उन्हें बुलाओ तो सही, लेकिन प्रेम की आंखों से, प्यार की भाषा में। यह तरुणाई तुम्हारी हैं, तुम्हारे लिये है। यह आर्य वीर, वीराङ्गनाएं तुम्हारे वर्धमान बच्चे हैं तुम्हारे लिए, तुम्हारे धर्म के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देने की बाट जोह रहे हैं। इन्होंने दो ही प्रतिज्ञाए की हैं—

आर्य वीराणां प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यं न पलायनम्।

कन्या गुरुकुल, हाथरस (उ० प्र०)

१—कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों एवं अधिकारियों ने कुछ समय तक के लिए घी खाना छोड़कर उसका मूल्य तथा अन्य चन्दा एकत्रितकर २०००—०० रु० प्रधान मंत्री सूखा राहत कोष के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दिये हैं।

२—कन्या गुरुकुल, हाथरस की स्नातिका, पंजाब निवासी श्रीमती सत्यावती की धर्मपत्नी श्री वीरसेन शर्मा आयुर्वेदालङ्कार मुजफ्फरनगर निवासी ने कन्या गुरुकुल को छात्रवृत्ति स्थायी कोष के लिये ५०००—००रु० दान दिए हैं। गुरुकुल परिवार एवं सभा मन्त्री की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

"वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" पर विचार विमर्श

[लेखक—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम० ए०, पी- एच० डी०, प्राध्यापक—संस्कृत विभाग, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी (उ० प्र०)

ऋषि निर्वाण शताब्दी पर वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की महत्वपूर्ण कृति 'वेदो के राजनीतिक सिद्धांत' का प्रकाशन हुआ। इस ग्रन्थरत्न के प्रकाशन से पूर्व डा० रामनाथ वेदालंकार ने अपने एक लेख मे आचार्य प्रियव्रत जी की इस रचना का पूर्व परिचय आर्य जगत को दिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने ऋषि निर्वाण शताब्दी पर आयोजित वेद सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण मे (जो लिखित रूप मे छपा था और बाद मे आर्य पत्रो म भी छपा) भी इस ग्रन्थरत्न की चर्चा की थी। इस पुस्तक पर और कोई चर्चा आर्यमित्र मे नहीं हुई। एक लम्बे अन्तराल के बाद डा० प्रज्ञादेवी जी का इस ग्रन्थ की समीक्षा से सम्बन्धित एक निबन्ध अक्टूबर-नवम्बर मे विविध आर्य पत्रो मे 'क्या वेदो के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं?' शीर्षक से छपा। आचार्य प्रियव्रत जी ने डा० प्रज्ञादेवी जी की उक्त समीक्षा के सन्दर्भ मे अपना स्पष्टी करण 'वेदो के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं हैं' शीर्षक से आर्य पत्रो मे प्रकाशित कराया है। जुलाई १९८७ मे श्री रामकृष्ण आर्य का एक लेख आर्य संसार म 'क्या वेद केवल राजनीतिक सिद्धान्तो के ही ग्रन्थ है?' छपा था। इस लेख का सदर्भ देते हुए पुन डा० प्रज्ञादेवी जी का एक निबन्ध 'वेद राजनीति के ही नहीं समस्त विद्याओ के आकर ग्रन्थ हैं' आर्य मित्र मे छपा है।

इस ग्रन्थ को आर्य समाज की अनेक सस्थाओ द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। पुनरपि मेरी समझ से इस ग्रन्थ की जितनी अधिक चर्चा (प्रशंसा या समीक्षा भी) होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई। आर्य समाज मे स्वाध्यायशीलता की वर्तमान शोचनीय स्थिति ही सम्भवत इसका कारण है। आर्य विद्वानो द्वारा वैदिक साहित्य की सेवा मे लिखे गये—वैदिक इतिहासार्थ निर्णय (प० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ) वैदिक सम्पत्ति (प० रघुनन्दन शर्मा) प्रभृति अमूल्य ग्रन्थो की परम्परा मे यह ग्रन्थ है ऐसा मेरा मानना है जो आचार्य जी के वेदो पर सुदीर्घ चिन्तन मनन और आलोडन का ही सुपरिणाम है। अस्तु।

किसी भी कृति के प्रथम सस्करण मे सशोधन और परिमार्जन की गुञ्जाइश रहती ही है। ग्रन्थ छपने के बाद ग्रन्थ की त्रुटियों, न्यूनताओ भूलो और सशोध्य स्थलो की ओर ध्यान स्वय लेखक का और समालोचको का जाता है। 'वैदिक सम्पत्ति' मे भी ऐसे स्थल थे और 'वैदिक इतिहासार्थ निर्णय' मे भी प्रस्तुत समालोच्य ग्रन्थ भी इसका अपवाद नहीं है। इसी दृष्टि से कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हू। आचार्य जी अन्यथा न लेंं।

इस ग्रन्थ मे सर्वाधिक खटकने वाली बात यह है कि आचार्य जी वेद के अग्नि, इन्द्र, वरुण, रुद्र, मरुत्, सोम, नर आदि शब्दो के स्व अभीष्ट अर्थ लिखने के बाद अन्य अर्थ निषेधक वाक्य भी लिख जाते हैं। मेरी समझ से अन्य अर्थो के निषेधक वाक्यो को इस ग्रन्थ से निकाल देना चाहिए। डा० प्रज्ञादेवी जी की भी प्रमुख आपत्ति यही है कि आचार्य जी स्वकृत अर्थो का प्रतिपालन करने के बाद यह क्यो लिखते हैं कि 'इस मन्त्र या पद का अन्य कोई अर्थ नही हो सकता।' आचार्य जी ने प्रज्ञा बहिन जी की इस आलोचना के उत्तर मे लिखा है—'लिखते समय मेरा ध्यान उन शब्दो के सायणाचार्य आदि के अर्थों की ओर था। इन लोगो के अर्थ मुझे सगत नहीं लगे। इसलिए अपनी बात पर जोर देने के लिए मैने वैसा लिख दिया है'। किन्तु आचार्य जी को मन्त्रो का अर्थ लिखते समय उन मन्त्रो या मन्त्रोपात्त शब्दो का सायणाचार्य के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द कृत अर्थो की ओर भी ध्यान रहा होगा। सायण के अर्थ असगत दीखे होगे यह तो माना किन्तु ऋषि दयानन्द के अर्थों मे कौन सी असगति दिखाई पड़ी जो आचार्य जी को अपनी बात पर जोर देने के लिए—'ये लोग उन विशेषणो को आग मे घटा लेते हैं यह हम कभी नहीं समझ सके' इन स्थलो मे अग्नि का अर्थ साधारण आग कभी सगत नही हो सकता' अग्नि के ये तीन कर्म जड़ आग में सगत नहीं हो सकते (खण्ड १ पृ० ७९, ८०, ८२) जैसे वाक्य लिखने पड़े। इस ग्रन्थ में इस प्रकार की पंक्तियो को हम उचित नहीं समझते। आचार्य जी द्वारा उद्धृत मन्त्रो में ऋग्वेद के वे मन्त्र भी है जिन पर ऋषि दयानन्द का भाष्य उपलब्ध है। उदाहरणार्थ—

ऋग्वेद के—'अग्निमग्निमहवीमभि सदा हवन्त विश्पतिम् (ऋ० १ १२ २) कविमग्नि सत्यधर्माणाम् (ऋ १ १२ ७) इन मन्त्रो को आचार्य जी ने अपने ग्रन्थ के प्रथम खण्ड (पृ० ७९ ८०) पर दिया है और इन मन्त्रो मे आये अग्नि शब्द का 'सम्राट अर्थ करते हुए—यहा अग्नि का प्रसिद्ध भौतिक आग अर्थ नही हो सकता यह भी लिख देते है। जब कि इन मन्त्रो मे आये 'अग्नि शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द ने क्रमश परमेश्वर, प्रसिद्ध भौतिक अग्नि तथा बिजुली (ऋ० १ १२ २ में) तथा ज्ञाता और दाहक अग्नि (ऋ० १ १२ ७ मे) किया है। आचार्य जी ने अपने स्पष्टीकरण म यह लिखा है—मेरे ग्रन्थ का विषय तो मन्त्रो मे वर्णित राजनीति विज्ञान को दिखाना है। इसलिए मैने राजनीति विज्ञान विषयक अर्थ मन्त्रो के किए ह, आधिदैविक नहीं'। फिर आधिदैविक, आधिभौतिक आदि अर्थो का प्रत्याख्यान या अपलाप करने की क्या आवश्यकता थी? आचार्य जी के अनुसार जब विषय भेद या प्रकरण भेद से मन्त्रो के विविध अर्थ हो सकते हैं, तब सैकड़ो बार यह लिखने का क्या औचित्य है?—यहा अग्नि का अर्थ सम्राट् ही लेना चाहिए [खण्ड १ 'राजा का चुनाव' अनुच्छेद पृष्ठ २३], यहा अग्नि का अर्थ आग न लेकर शरीरधारी सम्राट ही लेना चाहिए [पृ० २४] आग अर्थ मे सारा सूक्त सुन्दर ढग से घट हो नहीं सकता [पृ० २५], अग्नि का अर्थ इन मन्त्रो मे तथा पूर्व मन्त्रो मे सम्राट् ही करना होगा आग नहीं [पृ० २६], अग्नि विषयक सूक्त के वर्णन सम्राट पर ही अधिक सगत रीति से लग सकते हैं आग पर नही [पृ० २७] आग अर्थ मे इनकी सगति दु शक्य है [पृ०२८] आग अर्थ म ये विशेषण चरितार्थ नहीं हो सकते [२९] अग्नि का अर्थ राजा ही लिया जा सकता है आग नही [पृ० ३०], आग म य वर्णन सगत नही हो सकते [३१], इत्यादि अग्नि के विशेषण भी आग मे सगत नहीं हो सकते [३२], अग्नि के ये सारे ही कार्य राजा परक अर्थ मे सगत हो सकते है आग परक अर्थ मे नहीं [पृ० ३३] यहा अग्नि का अर्थ आग न लेकर राजा ही लेना चाहिए [३६], मन्त्र गत वर्णन तथा पूर्व लिखित प्रमाणों के आधार पर यहा अग्नि का अर्थ सम्राट् ही करना चाहिए मन्त्र गत वर्णन चेतन सम्राट् मे ही हो सकता है, जड़ आग मे नहीं

[शेष पृष्ठ ४ पर]

"वेदों के राजनीतिक सिद्धांत" पर विचार विमर्श

[पृष्ठ ३ से आगे]

[पृ० ३७] इसी प्रकार इसके आगे 'इन्द्र का अर्थ करते हुए आचार्य जी लिखते है–'इ द्र शब्द का अर्थ सम्राट् ही ऐसे स्थलो मे लेना उचित है [३९], इसलिए इन्द्र का अर्थ सम्राट् लेना ही अधिक उपयुक्त है [४३], मन्त्र गत वर्णन यह सिद्ध करता है कि यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही लेना चाहिए [४५] यहाँ इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही लेना अधिक सुसगत है [४६] इन्द्र का यह विशेषण भी यही सूचित करता है कि यहाँ इन्द्र का अर्थ सम्राट् या भूपति करना चाहिए [पृ० ४६] यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही लेना चाहिए यह मन्त्र गत वर्णन से स्पष्ट है [पृ० ४७], यह सारा वर्णन और यह सारे विशेषण सम्राट् अर्थ मे अधिक उचित रीति से सगत होते है। इसलिए अर्थ–निर्णय के प्रमुख निर्णायक 'औचित्य' के आधार पर हमे यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही करना होगा [पृ० ४९], जो अर्थ हमने ऊपर किया है वही करना होगा और उस अर्थ मे इसकी सगति सम्राट् अर्थ मे ही हो सकती है [पृ० ५१], इस सारे सूक्त मे जो इन्द्र का वर्णन हुआ है उससे भी यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट् करना चाहिए। सूक्त गत इन्द्र के ये सारे वर्णन सम्राट् अर्थ में ही अधिक सुन्दर रीति से सगत होते हैं [५१] ऐसी अवस्था में इस सूक्त तथा सूक्तान्तरो की साक्षी के आधार पर हमें इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही करना चाहिए [५२], मन्त्र गत वर्णन तथा पूर्व प्रमाणो के आधार पर यहाँ इन्द्र का अर्थ राष्ट्र में ऐश्वर्य देने वाला सम्राट् ही करना चाहिए [पृ० ५३], इसी प्रकार 'अग्नि और इन्द्र' नामक चतुर्थ अनुच्छेद में आचार्य जी लिखते है–'इन कर्मों को करने वाला अग्नि कभी आग नहीं हो सकता [पृ० ८४], यह लक्षण आग में नहीं घट सकता (८७), इन मन्त्रो में भी अग्नि का जो वर्णन है वह किसी सगठित और व्यवस्थित राज्य के अधिपति में ही घट सकता है लोक प्रसिद्ध आग में नहीं (पृ०६१)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य जी ने अपने ग्रन्थ में उद्धत इन्द्र और अग्नि सूक्तो में आये इन्द्र और अग्नि शब्द का अर्थ राजा या सम्राट् करते हुए भौतिक अग्नि आदि अन्य अर्थों का प्रत्याख्यान करते हैं। आचार्य जी की इस मान्यता से हम सहमत नही हो सकते क्योकि उन्हीं अग्नि और इन्द्र सूक्तो में आये अग्नि और इन्द्र शब्द का क्रमशः भौतिक अग्नि और परमात्मा आदि अर्थ स्वामी दयानन्द तथा अन्य आर्य विद्वानो ने किया है और उसकी सगति भी लगाई है। यथा– ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि शब्द शब्द का परमेश्वर और भौतिक अग्नि अर्थ किया है। द्वितीय मण्डल के प्रथम सूक्ति में अग्नि शब्द की विद्युदादि व्याख्या है। तृतीय और चतुर्थ मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि शब्द का विद्वान अर्थ किया गया है। पञ्चम और षष्ठ मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि शब्द से भौतिकाग्नि और सप्तम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि शब्द से विद्युत की व्याख्या ऋषि ने की है। अन्यत्र अपने वेदभाष्य में ऋषि दयानन्द ने अग्नि शब्द के अनेक अर्थ किये है। जैसे–अग्नि का अर्थ जठराग्नि [यजु० ५. ९·] सूर्य [यजु० ५. ९.] युद्ध जन्य क्रोधाग्नि [यजु० ६. १८.] सर्व विद्या प्राप्तविद्वान [यजु० ६· १६] न्याय मार्ग में चलाने वाला विद्वान [ऋ० १. १०. ३] तथा सब विद्या का जानने वाला और बताने वाला विद्वान [ऋ० १. १०५. १४]।

आचार्य जी अपने बचाव में लिखते है। कि 'मैने अपने ग्रन्थ की भूमिका मे 'वेद में विविध ज्ञान–विज्ञान' शीर्षक में स्पष्ट लिखा है कि वेद के शब्दो के प्रसङ्ग-भेद से विविध प्रकार के अर्थ हो जाते है। वेद में इन्द्र शब्द के परमात्मा, जीवात्मा, राजा और विद्युत तथा अन्य अनेक अर्थ हो जाते हैं। इसी भांति वेद के कितने ही स्थलो पर इन्द्र के विशेषणो और वर्णनो से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वहा इन्द्र का अर्थ विद्युत है।' आचार्य जी ने अपनी पुस्तक के प्रथम खण्ड के पृ० ९३ पर लिखा है– 'प्रकरण–प्रकरण के अनुसार उसका इन्द्र और अग्नि आदि शब्दों का अर्थ कहीं परमात्मा, कहीं सम्राट् और कहीं कुछ और करना चाहिये।'

आचार्य जी द्वारा स्पष्टीकरण मे लिखे गये इन वाक्यो का यह तात्पर्य नहीं है कि उन्होने जिन स्थलो में अग्नि और इन्द्रादि शब्दो का सम्राट् अर्थ किया है उन्ही स्थलो में अग्नि और इन्द्र शब्द का परमात्मा, जीवात्मा या विद्युत आदि अन्य अर्थ भी हो सकते है। अपितु वे यह कहना चाहते हैं कि उनके द्वारा उद्धृत मन्त्रो से भिन्न-मन्त्रो में आये अग्नि और इन्द्रादि शब्दो का परमात्मा, जीवात्मा या विद्युत अर्थ होगा। आचार्य जी के उपरिलिखित वाक्यो में रेखांकित शब्दो से यही ध्वनि निकलती है। आचार्य जी ने अग्नि और इन्द्र सूक्त से सम्बन्धित जो स्थल उद्धृत किये हैं वहा उनके अनुसार मन्त्रगत वर्णनो विशेषणो, प्रकरण और औचित्य के आधार पर अग्नि इन्द्रादि शब्द का सम्राट् या राजा अर्थ ही सगत हो सकता है अन्य अर्थ नहीं। इसलिए उन्होने उन मन्त्रों का स्व अभीष्ट अर्थ लिखते हुए यह भी लिख दिया है कि यहाँ अन्य अर्थ सगत नहीं हो सकता। उनके इस अन्य अर्थ निषेधक पचासो वाक्यो को ऊपर मैने उद्धृत कर दिया है। यदि आचार्य जी उन मन्त्रो में अपने अभीष्ट अर्थों से भिन्न अर्थों की भी सगति समुचित समझते तो उन्हे इस प्रकार के अन्य अर्थ निषेधक वाक्यो को सैकडो बार बलपूर्वक लिखने की क्या आवश्यकता थी? यह तो सभी जान रहे हैं कि आप वेदो में राजनीतिक विज्ञान परक अर्थ प्रस्तुत कर रहे है। अधिदैव, अधिभूत या अधियज्ञ परक विषयक और अर्थ का विचार आपके ग्रन्थ का उद्देश्य नही है। अतः अधिराष्ट्र परक अर्थ के प्रतिपादन के बाद अन्य अर्थ निषेधक वाक्यो का तात्पर्य उन स्थलो में राष्ट्र या राजनीति परक अर्थ से भिन्न अध्यात्म, अधिदैव, अधियज्ञ या अधिभूत परक अर्थ के प्रत्याख्यान से ही है। आचार्य जी अपने लेख में लिखते हैं कि 'सायणाचार्य के असगत अर्थों के प्रत्याख्यान से मेरा तात्पर्य है।' लेकिन आचार्य जी के ग्रन्थो में उन मन्त्रो के राष्ट्र परक अर्थ के बाद भौतिक अग्नि परक अर्थ के प्रत्याख्यान का स्पष्टतः और शतशः उल्लेख है, और उन मन्त्रो का भौतिक जड अग्नि परक अर्थ ऋषि दयानन्द ने किया है।

आचार्य जी अपने ग्रंथ के प्रथम खण्ड में अग्नि सूक्त से सम्बन्धित अनेक मन्त्रो को उद्धृत कर मन्त्रगत 'विश्पतिम्' 'चर्षणीनाम्' 'चर्षणि.' इत्यादि शब्दो के आधार पर अग्नि शब्द का सम्राट् अर्थ करते हुए यह लिखते है–'इन स्थलो में अग्नि का अर्थ साधारण आग कभी संगत नहीं हो सकता' (पृ० ८०) जब कि उन्हीं सूक्तो में अनेक मन्त्रो का अर्थ करते हुए ऋषि दयानन्द ने अग्नि का अर्थ सूर्य किया है। विश्पतिम्, चर्षणीनाम् और चर्षणि. का अर्थ भी क्रमशः 'प्रजायाः पालकम् सूर्यम्' ऐश्वर्येण प्रकाशमानानाम्', 'धायिता आदित्यः' किया है। यही स्थिति 'सोमः आयुः ओषधिः और अहि. आदि शब्दो की है।

[क्रमशः]

यह कैसा प्रजातान्त्रिक समाजवाद ?

श्री इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का वक्तव्य

इन दिनों दो विवाह देश मे ऐसे हुए जिनकी समाचार पत्रों में बहुत चर्चा है। एक विवाह रेल मन्त्री श्रीयुत माधवराव सिन्धिया की सुपुत्री आयुष्मती चित्रांगदा का युवराज विक्रमादित्यसिंह सुपुत्र श्रीयुत कर्णसिंह जी पूर्व मन्त्री केन्द्रीय सरकार के साथ इस विवाह समारोह में समाचार पत्रों के अनुसार सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, करोड़ों रुपये का व्यय और वैभव का ईर्ष्यायुक्त प्रदर्शन खुलकर किया गया।

दूसरा विवाह समुद्र की लहरों पर हिन्दूजा परिवार की ओर से शाहाना-विवाह किया गया। जुहू के समुद्र तट पर सरकारी आदेशो के अभाव में समुद्र में २० फुट ऊंचा एक मञ्च बनाया गया जिसे फूलों से सजाया गया और इतर से महकाया गया। जिसके निर्माण में दो मास लगे। लन्दन से आए हुए विशेष मेहमानो को एक बहुत खर्चीले पचतारा होटल में ठहराया गया। तथा मोटर बोट और हैलीकोप्टरो की व्यवस्था भी बारातियो की चहलकदमी के लिए की गई। मेहमानों के लिए उच्चकोटि के व्यञ्जन भी इंग्लैण्ड से मंगाये गये। इसमें भी करोड़ों रुपये व्यय होने का अनुमान है।

जब देश में इस प्रकार के विवाहो को होने दिया जाएगा तो देश में भयंकर भूख और गरीबी को हटाने के लिए प्रजातान्त्रिक समाजवाद कैसे आएगा ? इस प्रकार के वैभव के प्रदर्शन और रुपये और सत्ता का दुरुपयोग, क्या ऐसे गरीब देश के अनुकूल है ? एक तरफ हम दहेज लेने और देने को अपराध मान रहे हैं। इस दहेज की खातिर नित्यप्रति हत्याएं और आत्महत्यायें हो रही हैं। कानून अन्धा और बहरा है। अपराधी दण्ड से बच निकलते हैं। हरी भरी जवानियां दहेज की बलि-वेदी पर भस्म हो जाती है और दूसरी तरफ दहेज के अपराध को उकसाने वाले इस प्रकार के विवाह जहां दूल्हा लाखों रुपये की सम्पत्ति मोतियो की मालाओ और मुकुट में लगे हीरो के रूप में पहनकर अपराधों को उकसाने में मदद करते हैं।

सरकार को इस प्रकार के वैवाहिक प्रदर्शनों पर रोक लगानी चाहिए और विरोधी पार्टियो को भी पैसे का दुरुपयोग करने वालों की आय की जांच की आवाज उठानी चाहिए। अन्यथा यह वैभव का प्रदर्शन गरीब और अमीर के बीच में इतनी खाई पैदा कर देगा जिसमें हिंसा का जन्म होगा और देश हिंसा की आग में जलकर नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा।

आर्यसमाज प्रहरी के रूप में बराबर आवाज उठा रहा है कि देश से सतीप्रथा, दहेज प्रथा और वैभव का दुरुपयोग समाप्त हो और हम प्रजातान्त्रिक समाजवाद लाने के लिए और देश से गरीबी भगाने के लिए प्रयत्नशील हो।

हिन्दू राज्य संग्राम मंच

जनपद शाहजहांपुर के ग्राम धन्योरा में हिन्दू जागरण दल की ओर से २६-१२-८७ को उ० प्र० हिन्दू राज्य संग्राम मंच स्थापित किया गया जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध हिन्दू धर्म प्रेमी कुंवर विजयकुमार सिंह आर्य 'लाला साहब' ने किया।

वन्दनीय है वह समदर्शी

[ले०-सावित्री रस्तोगी जवाहर नगर-मेरठ]

ऐसा भीषण चक्र चला, सब आदि ब्रह्म को भूल गये।
अथ अनर्थ हुआ भारत में, वेद शास्त्र सब भूल गये॥
मठ महन्त सब जादूगर थे, पंच यज्ञ को ध्वंस किया।
कल्पित कथा-पुराण सुनाये, सत्य मार्ग को भूल गये॥

एक अलौकिक दिव्य शक्ति ने, अकस्मात आंखें खोलीं।
भारत की यह देख दुर्दशा, मन की थी तन्त्री डोली॥
हुआ ज्योति से विश्व प्रकाशित, हुए अचम्भित नारी नर।
अंशुमाल की स्वर्णिम किरणें, ज्ञान प्रकाश लिये घर घर॥

दिया ऋषि ने जागृति बोध जब, तन मन प्राण हुए पुलकित।
दूर हुआ अज्ञान अंधेरा, दीप्ति प्राप्त कर हुए मुदित॥
'देह रहित वह परम प्रभु है' करता है सब का सिरजन।
'उसकी कौन बनाये प्रतिमा' वेदों से निकला मन्थन॥

गुरुवर ने सबको बतलाया, हम वेदों के हामी हैं।
साक्षी है इतिहास हमारा, सत्य मार्ग अनुगामी है॥
राम कृष्ण ने वेद पढ़े थे, सीता, कौशिल्या, सुलभा।
गार्गी, मैत्रेयी, ऋषिकाए सब ने तत्व ज्ञान समझा॥

महा ऋषि ने घोष गुंजाया, नारी नर की जननी है।
इनको भोग्य वस्तु मत समझो, पूज्या हैं, गृह लक्ष्मी हैं।
शान्ति सरलता सौम्य मूर्ति हैं, इनका मत अपमान करो।
त्याग तपस्या, शक्ति रूपिणी, इनका रिक्त स्थान भरो॥

शिक्षित हैं, कर्तव्य निपुण हैं, पति की नित सहकारी हैं।
परम पुरातन मर्यादायें, उनकी यह रखवारी हैं॥
वर्तमान इनके हाथों में, यह भविष्य निर्मात्री हैं।
देश काल की सभी चुनौती, डटकर हरने वाली हैं॥

धीरे-धीरे मन मानस में, स्वयं चेतना प्रकट हुई॥
वेद पाठ करती महिलायें, प्रभु को समझीं निकट हुईं॥
हम कृतज्ञ है उस ऋषिवर के जिसने हमें उठाया है।
'वन्दनीय है वह समदर्शी' सम-अधिकार दिलाया है॥

शोक समाचार

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् वेद मूर्ति श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य का देहावसान मंगलवार २२ दिसम्बर १९८७ को उनके गृह नगर इन्दौर मे हो गया।

उन्होने वेदों पर अनुसंधान कर ३० से भी अधिक पुस्तकें लिखी, जिनमें प्रमुख हैं, 'वैदिक सम्पदा', यज्ञ महाविज्ञान, संध्या योग रहस्य, याज्ञिक आचार संहिता, वेद कथा आदि। उन्हें अपनी पुस्तकों पर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।

पं० वीरसेन वेदश्रमी जी का जन्म ५ दिसम्बर १९०८ को देवास में हुआ था, उन्होंने १९३० में गुरुकुल, वृन्दावन, मथुरा से आयुर्वेद शिरोमणि की उपाधि प्रतिष्ठित स्नातक के रूप में प्राप्त की। वे वेद विश्व परिषद के भी अध्यक्ष रहे।

२३ दिसम्बर १९८७ को उनकी अन्त्येष्टि संस्कार में भारी संख्या में नागरिकों ने हिस्सा लिया जिसमें नगर के प्रतिष्ठित नागरिक एवं विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी शामिल थे। परमपिता परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है। —सभा मन्त्री

आर्य समाज और शिक्षण संस्थायें

—लेखकः—श्याम मोहन आर्य, विद्यालय निरीक्षक विद्यार्य सभा उ० प्र०

गुरुवर विरजानन्द दण्डी स्वामी जी से वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करने के उपरांत गुरुवर को जीवन पर्यन्त सत्य सनातन वैदिक धर्म की प्रचार दक्षिणा देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्ष ग्रन्थों की स्थापना और अनार्ष ग्रन्थों के विरुद्ध जन जागरण करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने बम्बई में सन् १८७५ ई० में आर्य समाज की स्थापना कर आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्यायशील सदस्यों के लिये एवं वैदिक प्रचार के लिए संस्था का निर्माण किया। वैदिक सिद्धान्तो के पोषक नियमों को आर्य समाज में दस नियमों के तहत प्राथमिकता—देकर "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है—का उदघोष किया। लोक मान्य तिलक लाला लाजपत राय राम प्रसाद बिस्मिल शहीदे आजम भगत सिंह जैसे महान स्वाधीनता सेनानी इन्हीं आर्य सिद्धांतों की देन थे—जिसके कारण भारत देश आजाद हुआ। ब्रिटिश शासकों को भारत छोड़कर ब्रिट्रेन जाना पड़ा। जहाँ आर्य समाज ने राष्ट्र योद्धा सेनानी राष्ट्र को प्रदत्त किये वहाँ आर्य समाज के सभासदों के समक्ष स्वामी जी ने लक्ष्य रखा वह था। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् समस्त विश्व में वैदिक विचारधारा का विस्तार हो एवं सारे संसार में आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय होवे। इसी भावना से प्रेरित स्वामी जी के शिष्यों ने आर्य जगत के महान् विद्वान् मनीषी जिन्होंने में अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि के उद्देश्य को लक्ष्य रखकर एवं नारी जाति को पुनः गौरव दिलाने के लिये आर्य समाज के हंस-राज जी ने दयानन्द स्वामी के सिद्धांतों से समन्वय करते हुए सरकारी पाठ्यक्रम को शामिल करते हुए आर्य समाजके तत्वावधानमे सारे राष्ट्र में डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा दिया। वैदिक विचारधारा का प्रचारकर आर्य सभासद् तैयार होवें यह लक्ष्य था। जहाँ एक तरफ हंसराज जी ने डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से वैदिक विचार का विस्तार किया वही दूसरी ओर स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य रखकर वैदिक विचारों के साथ कन्याओं में वैदिक संस्कार होवे अतः कन्या गुरुकुल की स्थापना प्राचीन पद्धति से शिक्षा देने के लिये की। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत वर्ष में शिक्षा का जाल बनाकर विद्या की वृद्धि हेतु युद्ध स्तर पर कार्य किया। आज हम विचार करें कि क्या आर्य शिक्षण संस्थाओं से और गुरुकुल से वैदिक विचार धारा के अनुयायी निकल रहें हैं या नहीं, दयानन्द शिक्षण संस्थाओं की हालत यह है कि आर्य समाज के सभासद बनना तो दूर वरन विद्यार्थी डी० ए० वी० का हिन्दी रूपता का भी ज्ञान नहीं है। दयानन्द शिक्षण संस्थान में कार्यरत प्रधानाचार्य आचार्य कार्यालय कर्मचारी एवं प्रबन्ध समिति के सभासद भी आर्य विचार धारा से कोसों दूर हो गये हैं। उनका लक्ष्य वैदिक विचार धारा का विस्तार करना न होकर किसी प्रकार पद पर बने रहना है इसलिये प्रबन्ध पद पर बने रहने के लिये वैदिक विचार धारा के न होने पर भी आर्य सभासद बनाकर दयानन्द शिक्षा संस्थाओं पर एकाधिकार करना है। यही हालात आज अधिकांश विद्यालयों की है। मैने आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रबन्ध के अन्तर्गत चलने वाले विद्यालयों को जनपद के प्रवास के दौरान बहुत ही नज-दीकी से देखा है। यह स्थिति आज दयानन्द संस्थाओं की है।

सूचना

प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

सभी आर्य प्राथमिक विद्यालयों एवं दयानन्द बाल मन्दिरों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष से कक्षा ५ के विद्यार्थियों के लिये 'धर्म-रत्न' नामक धर्म परीक्षा चालू की गई है। इस परीक्षा में सभी विद्यालयों के कक्षा ५ के छात्रों का सम्मिलित किया जाना अनिवार्य होगा। परीक्षा सभा द्वारा प्रकाशित कक्षा ५ की धर्म-शिक्षा की पुस्तक के आधार पर होगी। परीक्षा शुल्क दो रुपये प्रति परीक्षार्थी होगा तथा परीक्षा तिथि २७ मार्च १९८८ होगी। परीक्षार्थियों की सूचियां शुल्क सहित विद्यार्य सभा, कार्यालय में फरवरी के अन्त तक पहुंच जानी चाहिए।

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र० लखनऊ।

आर्य समाजों के मुख्य निरीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने श्री धर्मपालसिंह आर्य, ग्राम-बड़ावद (मेरठ) को प्रदेश की समस्त आर्य समाजों का मुख्य निरी-क्षक नियुक्त किया है। इनके निरीक्षणार्थ पहुंचने पर समाजें इन्हें हर प्रकार का सहयोग दें।

इन्द्रराज प्रधान सभा

शोक समाचार

[१]

१—आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर) के भूतपूर्व प्रधान आचार्य विद्यासागर जी प्रधानाचार्य का स्वर्गवास हो गया। आप एक पैतृक आर्य समाजी परिवार के विद्वान और बड़े व्यावहारिक कार्यकर्ता थे।

२—आर्य समाज वेद मन्दिर चांदपुर (बिजनौर) के प्रसिद्ध निदेशक महात्मा बलदेव जी वानप्रस्थी का अनायास हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया जिससे न केवल चांदपुर नगर में अपितु समस्त आर्य जगतमें शोक छा गया। महात्माजी बड़े कर्मठ कार्यकर्ता थे और निस्पृही एवम् सादगी की प्रतिमूर्ति थे। उनका चांदपुर वेद मन्दिर के निर्माण में भारी योगदान रहा। महात्मा जी की शवयात्रा में सारा नगर रोता-बिलखता हुआ उमड़ पड़ा।

सभा की ओर से शोक प्रस्ताव पारित कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

[२]

आर्य समाज बिजनौर के भूतपूर्व मन्त्री पं० प्रभुदयाल शर्मा का आकस्मिक निधन दिल्लीमें अपने पुत्रके निवासपर हो गया। वे एक बड़े व्यावहारिक और हंसमुख कार्यकर्ता थे आर्य समाज बिजनौर और जिला सभा बिजनौर मण्डल की ओर से शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आर्यमित्र परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के लिए शोक संवेदना।

—मदन बिजनौर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की काशी यात्रा—

[श्री डा० आनन्द प्रकाश उप मन्त्री सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली]

२३ नवम्बर को प्रातःकाल स्वामी जी ने 'महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट' के आजीवन सदस्यों की विशेष बैठक में भाग लिया। सन् १८६९ में काशी में दुर्गाकुण्ड के समीप अमेठी राज्य के विशाल उद्यान आनन्दबाग में महर्षि ने अपने जीवन का सबसे बड़ा शास्त्रार्थ किया था, जिसकी अध्यक्षता स्वयम् काशी नरेश ने की थी और दर्शकों की संख्या बड़े-बड़े अंग्रेजी समाचार पत्रों के अनुसार ५० हजार थी। इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ में युग प्रवर्तक दयानन्द ने उस काल की सबसे विद्वान मानी जाने वाली पौराणिक पंडित मंडली को परास्त कर, अपनी अपराजेयता सिद्ध की। सुप्रसिद्ध इतिहासकारों और महर्षि के जीवनी लेखकों ने यह मत व्यक्त किया है कि यदि काशी शास्त्रार्थ न हुआ होता, तो महर्षि को अपने जीवनकाल में ही विश्व-प्रसिद्धि नहीं मिलती। इस दृष्टि से यह शास्त्रार्थ स्थल महर्षि के जीवन से सम्बन्धित सबसे प्रमुख स्थलों में से एक है। इस स्थल पर एक भव्य यज्ञशाला निर्मित है और आर्यसमाज एवं स्त्री आर्यसमाज भी स्थापित है। श्री सत्यप्रिय वानप्रस्थी जी इस स्थल पर स्थायी रूप से रहकर, पिछले अनेक वर्षों से कार्य कर रहे हैं। दैनिक, साप्ताहिक एवं अन्य विशेष कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रतिवर्ष कार्त्तिक शुक्ला द्वादशी को 'काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस' भी समारोह मनाया जाता है, जिसमें विद्वत् जन आर्य समाज की मूल मान्यताओं के संदर्भ में प्रचार करते हैं। इस वर्ष के प्रारम्भ से इस स्मृति ट्रस्ट की स्थापना इस उद्देश्य के साथ की गयी है, जिससे इस स्थल के गौरव के अनुकूल उच्च स्तर के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सके और आर्यसमाज के अन्तर्गत शास्त्रार्थ परम्परा को शक्तिशाली बनाया जा सके। शास्त्रार्थ महारथी एवं प्रसिद्ध सन्यासी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज इसके स्रोत थे और इस ट्रस्ट के वे संस्थापक प्रधान बने।

इस ट्रस्ट की बैठक में श्रद्धेय स्वामी जी का पधारना, स्वयम् में एक स्मरणीय घटना रहेगी। ट्रस्ट के वर्तमान प्रधान श्री यज्ञदत्त गौतम ने उनका स्वागत किया और मन्त्री, डा० आनन्द प्रकाश ने प्रथम वर्ष की प्रगति का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि प्रथम वर्ष में सम्पर्क का कार्य ही विशेष रूप से हुआ और साहित्य-प्रचार भी किया गया। परोपकारिणी सभा द्वारा 'काशी शास्त्रार्थ' पुस्तिका का पुनर्मुद्रण कराया जा रहा है। स्वामी जी ने सारे विवरण को बहुत रुचि के साथ सुना और अपना सहयोग, इस पुनीत कार्य में देने का आश्वासन दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस ट्रस्ट के निर्माण से काशी नगरी में आर्य समाज के कार्य को नयी दिशा मिलेगी। अनेक उच्च स्तर के कार्यों को कर पाना सम्भव होगा। काशी नगरी का धर्म, संस्कृति और विद्या की दृष्टि से पूरे देश में सर्वोपरि स्थान है, अतएव यहां पर इस प्रकार के ट्रस्ट की उपयोगिता स्वयम् सिद्ध है। आवश्यकता तो काम करने की है, सहायक मिल ही जाते हैं। आपने 'काशी शास्त्रार्थ स्थल' को ट्रस्ट को दिलाने हेतु प्रयास करने का भी आश्वासन दिया। महर्षि दयानन्द काशी को जगाना चाहते थे, यह कार्य इस ट्रस्ट के माध्यम से जारी रहना चाहिए। इस बैठक में प्रोफेसर वीरेन्द्रकुमार वर्मा (विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री देवर्षिसिंह आर्य (मिर्जापुर), श्री आर्य मुनि जी (जौनपुर), श्री अमरनाथ सिंह (बम्बई), श्री भृगुनाथ जी (आसनसोल), डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), श्री कमलाकांत इन्जीनियर (आकाशवाणी के अवकाश प्राप्त स्टेशन इन्चार्ज), श्री रवीन्द्रकुमार बेरी (विशेष कार्याधिकारी एवं प्रेस मैनेजर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री शिवमित्र शास्त्री, एवं शंकरलाल पोद्दार उपस्थित थे। श्री उत्तम चन्द शरर भी इस बैठक में विशेष आमन्त्रित के रूप में सम्मिलित हुए। ट्रस्ट की बैठक में भाग लेने के उपरान्त स्वामी जी काशी शास्त्रार्थ स्थल (आनन्दबाग) पधारे, जहां श्री सत्यप्रिय वानप्रस्थी के नेतृत्व में आर्य समाज महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल के सदस्यों ने उनका स्वागत किया। संक्षिप्त औपचारिकताओं के उपरान्त आपने उद्यान का निरीक्षण किया और उस जगह को देखा, जहां बैठकर स्वामी जी ने यह शास्त्रार्थ किया था!

स्वामी जी का आगामी कार्यक्रम पार्श्वनाथ जैन शोध संस्थान में था। यह जैन शोध संस्थान राष्ट्रीय ख्याति का है और काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। इसके पुस्तकालय में जैनमत के साथ-साथ बौद्धमत और हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदायों की धार्मिक पुस्तकों का उच्चकोटि का विशाल संग्रह है। स्वामी जी इस शोध संस्थान को देखने इस उद्देश्य से गये ताकि वे इसकी कार्य प्रणाली से अवगत हो सकें तथा इस सम्भावना का भी पता लगा सकें कि इस विश्वविद्यालय में वैदिक शोध संस्थान किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है। शोध-संस्थान के निदेशक डा० सागरमल जैन एवं डा० सुदर्शनलाल जैन ने स्वामी जी की अगवानी की। उन्होंने संस्थान में हो रहे उच्चस्तरीय शोध कार्य पुस्तकालय तथा प्रकाशनों का दिग्दर्शन कराया। शोध संस्थान के अधिकारियों का व्यवहार अत्यन्त आत्मीय और सौहार्दपूर्ण था। उन्होंने स्वामी जी को अपने प्रकाशन भेंट किये और पुस्तकालय के लिए आर्य समाज के साहित्य और सार्वदेशिक सभा की पत्रिकाओं की मांग की। आर्यसमाज के किसी व्यक्ति का इस शोध संस्थान में यह पहला पदार्पण था।

स्वामी आनन्दबोध जी का सबसे प्रमुख कार्यक्रम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में भाषण था। यह भाषण विश्वविद्यालय की ओर से अधिकृत रूप से आयोजित किया गया था और विभागाध्यक्ष महोदय ने स्वामी जी को बहुत समय पूर्व से ही आमन्त्रित किया हुआ था। यह सम्मान की बात समझी जायगी कि आर्यसमाज के किसी संन्यासी अथवा विद्वान को इस विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रथम बार भाषण देने के लिए अपने यहां पर आमन्त्रित किया गया। कला संकाय के परिसर में पहुंचने पर उपस्थित अध्यापकों और शोध छात्रों ने पंक्तिबद्ध होकर उनका स्वागत किया और संस्कृत विभाग के प्रोफेसर वीरेन्द्र कुमार वर्मा ने वरिष्ठ प्राध्यापकों से उनका परिचय कराया। सभा कक्ष में पहुंचने पर, तुमुल करतल ध्वनि के साथ, अपने स्थान से उठकर उपस्थित जन समुदाय ने उनका अभिवादन किया। काशी के संस्कृत के विद्वानों द्वारा आर्य समाज के एक संन्यासी का इतनी श्रद्धापूर्वक अभिवादन किया जाना, सचमुच एक रोमांचकारी दृश्य ही था। प्रोफेसर वीरेन्द्रकुमार वर्मा ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहा कि उनके कार्यों का परिचय समाचार पत्रों के द्वारा तो मिलता रहता है, आज निकट से दर्शन करने का अवसर भी प्राप्त हुआ है। डा० आनन्द प्रकाश ने स्वामी जी का परिचय देते हुए कहा कि उनका जीवन अनेक संघर्षों से भरा हुआ है।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

लखनऊ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

देश की एकता अखण्डता का संकल्प लें

—मनमोहन तिवारी

पहाड़ी क्षेत्र में जागरण का मन्त्र स्वामी श्रद्धानन्द ने फूंका

—बल्देवसिंह आर्य

लखनऊ २५ दिसम्बर—स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान मे स्थानीय गंगाप्रसाद मेमोरियल हाल मे बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह का शुभारम्भ श्रीमद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ के ब्रह्मचारियों ने वैदिक मन्त्रो से किया। मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए वन मन्त्री श्री बल्देवसिंह आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने पर्वतीय क्षेत्र मे जागृति लाने के लिए स्थान-स्थान पर स्कूल खोलकर नवजागरण का मन्त्र फूंका। पहाड़ की पददलित, अशिक्षित जनता उनकी प्रेरणा से जागृत हुई। पर्वतीय जनता विशेष रूप से उनकी सदैव ऋणी रहेगी। सभा के मुख्य वक्ता श्री पवनकुमार शास्त्री ने भारतीय हिन्दू महासभा का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वामी जी ने जब देखा कि हिन्दू जाति को कमजोर करने के लिए तबलीग का कार्य बहुत तेजी से एक षड्यन्त्र के रूप में चलाया जा रहा है जिसकी पुष्टि उन्हें ख्वाजा हसन निजामी की पुस्तक 'दाइये इस्लाम' पढ़कर हुई थी जिसमें पूरे राष्ट्र का इस्लामीकरण करने की वृहद योजनाएं थीं; स्वामी जी ने इस खतरे की ओर देशवासियों का ध्यान आकर्षित करते हुए 'खतरे का घंटा' नामक पुस्तक लिखकर शुद्धि का बिगुल बजा दिया।

सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता श्री पुरुषोत्तमसिंह योग ने कहा कि हैरत होती है कि तत्कालीन कांग्रेसी नेता मौलाना मोहम्मद अली ने दलितों को हिन्दू तथा मुसलमानो मे आधा-आधा बांट लेने की मांग कांग्रेस के मञ्च से की। स्वामी जी की सूझबूझ तथा उनके अदम्य साहस की प्रशंसा करते हुए श्री योग ने बताया कि जलियां वाले बाग मे हुए शर्मनाक हत्याकाण्ड के पश्चात् सारा पंजाब भय और आतंक मे डूब गया था उस समय स्वामी श्रद्धानन्द ने वहां की जनता के आदर साहस का प्रचार किया और १९१९ में कांग्रेस अधिवेशन को सफल बनाया। वयोवृद्ध आर्य विद्वान वैद्य कुन्दनलाल ने सरकार की अल्पसंख्यक तुष्टीकरण एवं आरक्षण की नीति की आलोचना करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने दलितो, अछूतों को हिन्दू समाज में सम्मान जनक स्थान दिलाने हेतु सदैव संघर्ष किया है और बिना किसी भेदभाव के उन्हे पण्डितों पूज्य संन्यासियों एवं विद्वानों की श्रेणी में स्थान दिलाया। अब समय आ गया है और आर्यसमाज पुनः राजनीति में सक्रिय बने और हम चुनाव के समय बेशक अपना वोट हारने वाले को दें किन्तु उसे हर्गिज न दें जो प्राचीन वैदिक संस्कृति का पोषक न हो। सभा क संचालन कर्ता कुंवर शान्तिप्रकाश एडवोकेट ने बताया कि जो लोग स्वामी जी को साम्प्रदायिक कहते हैं वे शायद इस तथ्य को भूल जाते हैं कि दिल्ली की शाही जामा मस्जिद से बोलने वाला संन्यासी १९२२ में 'गुरु का बाग' आन्दोलन में भाग लेने अमृतसर पहुंचा और गैर सिक्ख होते हुए अकाल तख्त से भाषण दिया गया गिरफ्तारी देकर १६ मास का कारागार भोगा।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुली शिक्षा पद्धति प्रसारित करके जन-जन मे राष्ट्रीयता भरकर देश को एकता के सूत्र में पिरोने का अनथक प्रयास किया था। स्वराज्य आन्दोलन में वह अदम्य साहस से अग्रणी रहकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते रहे। शुद्धि आन्दोलन, दलितोद्धार एवं निस्पृह देश भक्ति के वे सर्वात्मना समर्पित थे। समारोह मे सभा की उपप्रधान श्रीमती सन्तोष कपूर एम० एल० सी०, श्री महेश्वर पाण्डेय, मेजर पी०एन० त्रिपाठी अध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद लखनऊ, श्री रविदास मेहरोत्रा, श्री बी०एन० पाल एवं श्री नाथूराम जी आर्य ने स्वामी जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुये श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं। इस अवसर पर बाराबंकी के भजनोपदेशक श्री पं० सत्यप्रकाश आर्य को स्थानीय वैदिक प्रचार में विशेष योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र, १०१) रु० की सम्मानित राशि एवं एक गरम शाल देकर सम्मानित किया गया।

*

नवीन आर्यसमाजों की स्थापना

ग्राम मन्सूराबाद जि० इलाहाबाद मे ६-११-८७ को हवन तथा सत्संग के उपरान्त नवीन आर्यसमाज की स्थापना हुई इसमे चौक आर्य समाज इलाहाबाद के श्री राधेमोहन केसरवानी श्री पुरुषोत्तम लाल केसरवानी एवं जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति उ० प्र० के अध्यक्ष श्री सुरेशकुमार का विशेष सहयोग रहा।

आदर्श विवाह

आयुष्मती किरण कुमारी पुत्री श्री राधेश्याम आर्य ग्रा० रम्पुरा (मुरादाबाद) का शुभ विवाह श्री चेतराम आर्य पुत्र श्री द्वारिकाप्रसाद के साथ पूर्ण सादगी से बिना किसी दहेज आदि के वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। चि० वर वधू को मंगलमय आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं।

—सभा मन्त्री

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जौनपुर के तत्वावधान में सस्ती प्रचार योजना के अन्तर्गत १६ नवम्बर से २४ नवम्बर तक मड़ियाहूं आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया गया। जनता विशेष रूप से प्रभावित हुई।

—श्री रामलाल मलिक प्रधान अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली के तत्वावधान में समस्त भारतदर्शन की योजना रेल द्वारा दिनांक २५ अक्टूबर से २२ नवम्बर ८७ तक सम्पादित हुई। इसके द्वारा विशाल आर्य नरनारियों का प्रत्येक गन्तव्य शहर में भव्य स्वागत हुआ और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार हुआ।

शोक समाचार

भागलपुर (देवरिया) आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री पं० कमलनयन शर्मा की धर्मपत्नी का आकस्मिक निधन १०-११-८७ को हो गया परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

—आर्यसमाज बिसवाँ (सीतापुर) के मन्त्री श्री बैजनाथप्रसाद रस्तोगी की वयोवृद्धा माता श्रीमती रामजानकी देवी का ८८ वर्ष की आयु में १२-११-८७ को दुःखद निधन हो गया। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति दें।

सम्पादक के पत्र

राजा रणञ्जयसिंह पर कांग्रेस महामन्त्री के निरर्थक आरोप

राजर्षि रणञ्जयसिंह जी हमारी प्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्षों अध्यक्ष रह चुके हैं। इस वृद्धावस्था मे भी समय समय पर उनका मार्ग निर्देशन हमे मिलता रहता है। उन पर किसी भी प्रकार की कीचड़ उछालना हम सूय पर धूल फेंकने के समान समझते हैं। ऋषिवर्य की तरह इस राजर्षि का भी ध्येय "निन्दन्तु नीति निपुणा : ...है।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

जब से आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता तथा वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी राजा रणञ्जयसिंह जी ने कांग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद किया है तब से राजनैतिक मामलो को अपने स्वार्थो के लिए उछालने वाले लोग उन पर निरर्थक आक्षेप करने लगे हैं। यह कौन नही जानता कि राजा रणञ्जयसिंह जी ने अंग्रेजो के जमाने मे भी सदा कांग्रेस का साथ दिया था। यद्यपि वे एक प्रतिष्ठित तथा सम्पन्न राज्य के अधीश्वर थे, किन्तु उनके सभी कार्य प्रजा हित की भावना से ही किये जाते थे। यो भी आर्य समाज की विचारधारा को ग्रहण करनेवाले राजा साहब ने स्वदेश और स्वदेशी के मन्त्र को बहुत पहले ही धारण कर लिया था। अमेठी के राज परिवार की देश भक्ति एक खुली पुस्तक की भांति रही है। नेहरू परिवार से उनके वैयक्तिक और पारिवारिक सम्बन्ध रहे है। प० नेहरू के प्रधान मन्त्री काल मे वे लोक सभा के सदस्य चुने गये। खद्दर धारण करना उनके स्वभाव का अंग बन चुका है। उनकी राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति अनन्य निष्ठा है।

केवल अमेठी ही नहीं, देश में सर्वत्र एक सौम्य सन्त राजर्षि की तरह उन्हें सम्मान प्राप्त है। ऐसी स्थिति मे कांग्रेस के एक महामन्त्री द्वारा उन्हें लांछित करने का प्रयास नैतिकता के सभी मानदण्डो की खुली अवहेलना है। आश्चर्य होता है कि क्षुद्र राजनीति मनुष्य को कितना नीचे गिरा देती है। राजा रणञ्जयसिंह को अंग्रेजो का एजेंट कहना तथा उन्हें विदेशी राज्य का हिमायती बताना गैर जिम्मेवारी की पराकाष्ठा है। यह और भी आश्चर्य की बात है कि राजर्षि के बारे मे ऐसे अनुचित लांछना युक्त आक्षेप वे लोग लगाते हैं जिनका अपना सार्वजनिक जीवन या तो नगण्य सा रहा है, अथवा जो खुशामद और चापलूसी के द्वारा ही अपने वर्तमान पदो को प्राप्त कर सके है। गांधी हत्याकाण्ड से उनको जोड़ना तो घोर अपराध से कम नहीं है।

हम व्यक्तिशः राजा साहब को जानते हैं। आर्य समाज के कार्यक्रमों और समारोहों में उनसे मिलने तथा विचार विमर्श करने कराने के अनेक अवसर हमें मिले हैं। गत मई में अमेठी यात्रा के दौरान उनके रामनगर स्थित भूपति भवन में जाने और वहां गरिमामय परिवेश को निकट से देखने का भी हमे अवसर मिला। इस प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर हम कहना चाहते हैं कि राजनैतिक विद्वेष वश यदि कोई व्यक्ति राजर्षि रणञ्जयसिंह जी अथवा उनके देश के लिये समर्पित परिवार पर कोई लांछन युक्त आक्षेप लगाता है, तो इसे देश का दुर्भाग्य ही समझना चाहिये। राजनीति में मतभेद होना-कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि हमारे देश के बचे खुचे इन वयोवृद्ध महानुभावों का निरर्थक चरित्र हनन करने की आज्ञा दी जाये।

—भवानीलाल भारतीय अध्यक्ष : दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

हीरक जयन्ती

हर्ष का विषय है कि आर्य समाज औरैया, जिला, इटावा की हीरक जयन्ती दि० १९से २१.फरवरी ८८ तक, 'यजुर्वेद पारायण बृहत् यज्ञ' के साथ, समारोह पूर्वक मनाई जावेगी।

इस शुभ अवसर पर सर्व श्री स्वामी दीक्षानन्द जी (दिल्ली), ब्र० आर्य नरेश (दिल्ली), प्रो० रमेशचन्द्र ज (दिल्ली), डा० वागीश शर्मा (गुरुकुल एटा), आचार्य प्रशस्य मित्र शास्त्री (रायबरेली), पं० जयप्रकाश जी (पूर्व इमाम-बेतिया) पं० शिव कुमार जी शास्त्री (दिल्ली), प्रो० रूपरेखा (करनाल), आधुनिक अर्जुन (अयोध्या) तथा वेदपाल सिंह भजनीक (वाराणसी) आदि के साथ-साथ आर्य जगत के मूर्धन्य नेता माननीय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), मान० प० इन्द्रराज जी व मान० प० मनमोहन जी क्रमशः प्रधान व मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० आदि पधार रहे हे।

महामहिम राष्ट्रपति जी (भारत) ने भी इस समारोह मे पधारने की स्वीकृति भेजी है।

मेरी, आर्य समाज औरैया के मन्त्री जी की ओर से, सम्पूर्ण आर्य जगत से प्रार्थना है कि—आर्य बन्धु अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर हीरक-जयन्ती की शोभा बढ़ाने की कृपा करें।

कुं० ध्रुवपाल सिंह अटल,
मुख्य निरीक्षक, सभा।

प्रशासक नियुक्त

आर्य समाज नया शहर इटावा की कालातीत अन्तरग सभा को इस सभा के माननीय प्रधान ने, अपने आदेश दि० २-१-८८ द्वारा, तात्कालिक प्रभाव से भंग करके, उसके स्थान पर, उक्त आर्य समाज पर श्री भगवत् प्रसाद, प्रबन्धक, दयानन्द मान्टेसरी स्कूल, इटावा को प्रशासक नियुक्त कर दिया है और इस नियुक्ति की पुष्टि इस सभा ने दि० ३-१-८८ को सर्वसम्मति से कर दी है और इस आदेश की प्रतियां सम्बन्धित आर्यजनों को, परिपालन हेतु, प्रेषित कर दी गई हैं।

कुं०ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

सम्माननीय विद्वज्जनों से–

निवेदन है कि १६ फरवरी १९८८ को 'आर्यमित्र' अपना 'ऋषि-बोध अंक' प्रकाशित करने जा रहा है। विद्वद्वर्ग अपनी रचनाएं भेजने की कृपा करें। —प्रबन्ध सम्पादक

आर्यसमाज बलदेवाश्रम खुरजा से निष्कासन

अनुशासनहीनता व अन्य नियम विरुद्ध कार्य करने के कारण आर्यसमाज खुरजा ने अपनी साधारण सभा दिनांक २६-१०-८६ में सर्व सम्मति से सर्व श्री कृष्णलाल बाधवा, अशोककुमार गुप्त, यशपाल बाधवा, वीरेन्द्रकुमार अग्रवाल, दौलतराम बाधवा, वीरपालसिंह, जुगुल किशोर गुप्त, त्रिलोकीनाथ शर्मा व सुरेन्द्र शर्मा को आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया है। यह सभी सदस्य आर्य समाज तथा उससे सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओं के सदस्य अथवा प्रबन्ध समिति के सदस्य तथा पदाधिकारी भी नहीं रहे हैं।

आर्यसमाज बलरामपुर का स्वर्ण जयन्ती समारोह

आर्य समाज बलरामपुर (गोंडा) का स्वर्ण जयन्ती समारोह १२ से १५ फरवरी ८८ तक ससमारोह मनाया जा रहा है। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, उपदेशक, एवं नेता पधार रहे है। जनता सादर आमन्त्रित है।

आनन्द उपमन्यु
मन्त्री

—श्री केदारसिंह, मन्त्री आर्य समाज नैनीताल, जिनका सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में लगा हुआ है, दुर्भाग्य से रुग्ण हो गये और मरणासन्न स्थिति में पहुंच गये थे। श्री यशपाल शास्त्री जिनका जीवन समाज सेवा में पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित है—ने तन मन एवं धन से सहयोग देकर श्री केदारसिंह के जीवन की रक्षा की। श्री रामनाथ सहगल ने उनके इलाज में ५००० रुपये एकत्रित करके शल्यक्रिया में सराहनीय योगदान दिया-आर्यसमाज नैनीताल सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करती है।

—श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर लखनऊ के अधीक्षक श्री गोपालशरण के ग्राम शृंगवेरपुर (इलाहाबाद) में कार्तिकी मेले के अवसर पर धुआंधार प्रचार हुआ जिसमे आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशकों एवं प्रचारकों ने वैदिक धर्म का प्रचार किया। जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

शोक समाचार

श्री सत्यस्वरूप भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज चौक, बुलन्दशहर की पत्नी श्रीमती रामकली देवी का स्वर्गवास हो गया।

श्री कुंवर बहादुर भूतपूर्व मन्त्री आ० स० चौक, बुलन्दशहर की धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया।

परमात्मा से मृतात्माओं की शान्ति तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

उत्सव एवं वैदिक प्रचार

—स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ चम्बल (हि० प्र०) की अध्यक्षता में मठ का वार्षिकोत्सव ६ से ९ नवम्बर १९८७ तक सम्पन्न हुआ जिसमें ३२ यतियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई तथा अनेक विद्वानो के प्रभावशाली प्रवचन एवं भजनों से विशाल जनता लाभान्वित हुई।

—संस्कृत हिन्दी रक्षा समिति के सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे संस्कृत की रक्षा एवं उसके प्रचार प्रसार के लिए सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक मे दिनाक ६ दिसम्बर १९८७ को एक बैठक हुई जिसमे सर्वसम्मति से कई योजनाओं के कार्यान्वयन पर निर्णय लिया गया।

—वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के तत्वावधान में ५ नवम्बर से १५ नवम्बर १९८७ तक दुखविमोचन साधना शिविर का आयोजन हुआ जिसमें अन्तर्मुखी साधना के लिए साधको को प्रशिक्षण दिया गया, वेद संस्थान के अध्यक्ष डा० अभयदेव ने वैदिक मन्त्रो के उच्चारण की विधि बताई तथा १५-११-८७ को समापन करते हुए कामधुक प्रार्थना की गई।

आवश्यकता एक आर्य पुरोहित की

आर्यसमाज पलियाकला (खीरी) के लिए स्थायीरूप से एक आर्य पुरोहित की आवश्यकता है जो वैदिक संस्कार व प्रचार कार्य में निपुण हो। पारिश्रमिक प्रारम्भ में ५००) मासिक एवं रहने की व्यवस्था आर्यसमाज मन्दिर में रहेगी। गुरुकुल के स्नातक को वरीयता। पूर्ण विवरण सहित स्वलिखित प्रार्थनापत्र निम्न पते पर भेजें—

ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री
आर्यसमाज पलिया कला (खीरी)

आदर्श डायरी १९८८ खरीदें

सुन्दर आर्ट पेपर, अन्दर लाइन, प्रत्येक पेज पर, वेद मन्त्रों की सूक्तियां, विक्रमी सम्वत्, नक्षत्र दयानन्दाब्द प्रत्येक पेज पर, हिन्दी एवं अंग्रेजी में, कपड़े की सुन्दर जिल्द पीतल के कोने लगे हुए हैं। स्टाक सीमित है प्रति कापी २०-०० रु० मात्र है और अधिक लेने पर १५-०० रु० के हिसाब से, विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

मधुर प्रकाशन—२८०४ बाजार
सीताराम, गली, आर्यसमाज मन्दिर, दिल्ली-६

वैदिक ज्ञान मेला

उन्नाव। महिला आर्यसमाज उन्नाव के तत्वावधान में प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दिनांक ५ से ८ नवम्बर १९८७ तक वैदिक ज्ञान मेला आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में विविध सम्मेलनों के साथ सम्पन्न हुआ।

शोक समाचार

आर्य समाज सदर बाजार कैण्ट बरेली के संस्थापक सदस्य एवं भूतपूर्व प्रधान पं० श्री राधाकृष्ण जी का दिसम्बर ८७ में स्वर्गवास हो गया। वे बड़े ही धर्मनिष्ठ, कर्मठ एवं उदार व्यक्ति थे उनके निधन से आर्य जगत की अपार क्षति हुई जो अपूरणीय है।

अंग्रेजी का बन्धन तोड़ो

—डा० कृष्णलाल आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

पर्वतराज हिमालय बोलो, घाटी के फूलों तुम बोलो,
खेतों कलधामो तुम बोलो, घर–घर धरती के कण बोलो।

गंगा यमुना गोदा बोलो, महानदी कावेरी बोलो,
सतलुज व्यास नर्मदा बोलो, ब्रह्मपुत्र कृष्णा तुम बोलो।

लालकिले के वैभव बोलो, तांत्या की सांसें तुम बोलो,
सूर्य का मन्दिर मुखरं बोलो, अजन्ता और एलोरा बोलो।

सागर की लहरो तुम बोलो, हुगली, पुरी, बम्बई बोलो,
मद्रास, रामेश्वरम् बोलो, उठो कुमारी कन्या बोलो।

चला गया अंग्रेजी शासन, हम अंग्रेजी नहीं सहेंगे,
हम शिक्षा में अपनी भाषा, में ही सब कुछ पढ़ा करेंगे।

अनिवार्य विदेशी भाषा का, बोझा क्यों अपने सिर लावें ?
स्वतन्त्र देश के रहने वाले, निज भाषा में भाव सजा दें।

भाषाओं की जननी संस्कृत, प्रबल संयोजक सूत्र हमारा,
इसको शिक्षा से हटा रहे, लगता है सिर घुमा तुम्हारा।

अपनी संस्कृति की रही वाहिका, इतिहास पुरातन बतलाती,
जो भाषा है सारे जग में, भारत मां का शीष उठाती।

जिसमें ज्ञान–विज्ञान भरा है, जिसमें गहरा वैदिक दर्शन,
जिसे सजाया श्रेष्ठ काव्य से, नैतिकता का निर्मल दर्पण।

सन्त विनोबा गांधी नेहरू, तिलक राजेन्द्र प्रसाद जी भी,
मालवीय अरु राधाकृष्णन्, थके न कर गुणगान कभी।

उस संस्कृत को हटा रहे ये, गीता शिक्षा से नहीं सोचते,
देश का मूलाधार निकाल, भारत–आत्मा कहाँ खोजते।

है पहचान स्वतन्त्र देश की, उसकी अपनी प्यारी भाषा,
उससे ही उन्नति सम्भव है, वही बनी जन–जन की भाषा।

अंग्रेजी का ज्ञान अधूरा, अंग्रेजी का ज्ञान उधारा,
निज भाषा से सब सम्भव है, यदि हो निश्चय प्रबल हमारा।

बोलो पत्थर' नदियां बोलो, धरती और गगन तुम बोलो,
हटाओ शिक्षा से अंग्रेजी, अब तो मुख अपना तुम खोलो।

न्यायालय से अंग्रेजी को, जाना होगा जाना होगा,
ऊंची शिक्षा नौकरियों से, अंग्रेजी को जाना होगा।

अपनी धरती पर सबको ही, यहां वायु पर है अधिकार,
स्वच्छन्द श्वास लें साथ विचारें, हो जायें मन से एकाकार।

जन–जन की भाषा में बोलो—मन की दासता नहीं चलेगी,
काले बाबू की गिटपिट की, अंग्रेजी, अब नहीं चलेगी।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भू सम्पत्ति विभाग की एक महत्वपूर्ण बैठक दि० ३१–१–८८ को प्रातः १० बजे से आर्य समाज मन्दिर नया शहर इटावा में सम्पन्न होगी जिसमें निम्न विषयों पर विचार होगा—

१–ईश प्रार्थना।

२–सभा की अन्तरंग सभा दि० ३–१–८८ में गठित भू सम्पत्ति विभाग की उपसमिति की कार्य शैली पर विचार।

३–अन्य विषय अध्यक्ष की आज्ञा से।

समस्त सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

वेद प्रकाश आर्य	वेद प्रकाश आर्य
पत्राचार का पता–	मुख्याधिष्ठाता
आर्य समाज मन्दिर,	(भूसम्पति विभाग)
औरैया जिला इटावा।	आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

चालीस बरस हुए अभी भी, स्वतन्त्रता रही अधूरी है,
अंग्रेजी को नहीं छोड़ते, ऐसी भी क्या मजबूरी है।

उठकर मेरे युवको बोलो—और दासता नहीं सहेंगे,
अंग्रेजी का रोड़ा अब तो, नहीं सहेंगे नहीं सहेंगे।

निकाल अंग्रेजी शासक को, स्वतन्त्र पताका फहराई,
तोड़ो अंग्रेजी के गढ़ को, सुखद हवा देखो फिर आई।

स्वच्छन्द मस्तिष्क से सोचें, रटना नहीं पड़े कुछ भी फिर,
उन्नति के ऊंचे शिखरों पर, अपनी भाषा से जाता सिर।

अपना देश अरु अपना वेष, अपनी भाषा ही श्रेय स्कर,
आओ करें प्रतिज्ञा भाई, अपने ध्वज के नीचे आकर।

अपने गौरव के लिये सभी अपनी भाषा अपनायेंगे,
झूठी आभा अंग्रेजी की, उसको हम दूर भगायेंगे।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 41913 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
माघ कृष्ण १३
१७ जनवरी रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[पृष्ठ ७ का शेष]

प्राय सभी सामाजिक और राष्ट्रीय गतिविधियो से उनका सम्बन्ध रहता है। नई शिक्षा नीति म संस्कृत भाषा को उचित स्थान न मिलने पर स्वामी जी ने संस्कृत रक्षा समिति का गठन किया और इस आन्दोलन म भी सक्रिय है। स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि महर्षि दयानन्द हिन्दू धर्म मे व्याप्त अज्ञान की बातो को समाप्त कर सत्य सनातन वैदिक धर्म की स्थापना करना चाहते थे। काशी को जगाना और विद्वानो को सामाजिक उत्थान के कार्य मे प्रेरित करना उनका मन्तव्य था। इसीलिए महर्षि दयानन्द ७ बार इस विद्या की नगरी म पधारे और उस काल के विद्वानो को धर्म चर्चा के लिए आमन्त्रित करते रहे। उन्होने कहा कि हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म को मजबूती के लिए इनकी सामाजिक कुरीतियो को दूर करना अनिवार्य है। संस्कृत रक्षा अभियान की चर्चा करते हुए कहा कि फिर किसी कुमारिल भट्ट की आवश्यकता है जो इसके लिए अपना बलिदान देने को उद्यत हो। आपने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्कृत के ग्रन्थो मे समस्त विद्यायें विद्यमान हैं। संस्कृत के विद्वानो को हीनता का भाव छोड़ना चाहिए। यह तो देव भाषा है। स्वामी जी ने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि आज संस्कृत पढ़ने वालो की संख्या घटती जा रही है। संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना से भी संस्कृत भाषा का अधिक लाभ नहीं पहुंचा। आपने संस्कृत भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पूरी तरह वैज्ञानिक भाषा है, यहाँ तक कि कम्प्यूटर मे इसका प्रयोग किया जा सकता है। स्वामी आनन्द बोध जी ने अत्यन्त मार्मिक शब्दो मे संस्कृत भाषा की रक्षा पर बल दिया। अन्त मे प्रोफेसर भट्टाचार्य ने धन्यवाद प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी जी के भाषण से उनके मन मे एक नई आशा उत्पन्न हुई है।

डा०आनन्दप्रकाश के निवास स्थान पर मध्यान्ह भोज के अवसर पर काशी हिन्दू विश्वविद्या० के प्रमुख आर्य जन सम्मिलित हुए और स्वामी जी को विदाई दी। स्मरणीय है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ महामना मदनमोहन मालवीयजी के समय मे मान्यता प्राप्त आर्य समाज था। अभी भी आर्यसमाज का कार्य चलता है, यद्यपि संगठित आर्य समाज नहीं है। स्वामी जी की इस यात्रा का काशी के लिए विशेष महत्व है और इसे लम्बे काल तक स्मरण रखा जायेगा।

★★★ प्रसिद्ध कवियो की मधुर वाणी ★★★

लखनऊ मे १४ नवम्बर १९८७ को हुए कवि सम्मेलन म कविवर निर्भय हाथरसी, प्रो० राजवीरसिंह क्रान्ति, कु० उर्मिला श्रीवास्तव शाहजहांपुर, श्री राधेश्याम आर्य सुल्तानपुरी, श्री लवकुश कुमार लखनऊ, हुक्का बिजनौरी श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र" मैनपुरी तथा सभा के उपमन्त्री श्री जय नारायण "अरुण" बिजनौर की मधुर रिकार्डिंग मे एक साथ सुनिये। ३ कैसेट (प्रति कैसेट ९० मिनट के) केवल रु० ९० मे प्राप्त करें और कवियो की श्रुतिमधुर काव्य धारा का रसास्वादन लें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओ एव शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० को शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षणिक एव कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमे विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताए तथा सम्मेलनो के अंश सम्मिलित हैं एव विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एव कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी मे पधारे हुए सन्यासियो, विद्वानों, उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एव जिन शिक्षण संस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय मे बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थायें इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विशम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ... मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य १००० ०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट— मूल्य	१०० ०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—	२० ०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—	५.०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया एव पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८, १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ये चित्र एव कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होंगे।

[विक्रेता संस्थाओ को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवनिर्माणाधीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विशम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आय प्रतिनिधि सभा उत्त' प्रदेश का मुखपत्र

रजि. स० २२४१।५७ घोषणा पत्र म ७।२८-२-८५

माघ शुक्ल ६, रविवार, सवत् २०४४ वि०, दिनाक २४ जनवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द
देवता माक्ष इच्छान्त
राष्ट्र भाषा हिन्दी सवैधानिकता और मानसिकता
उरप्रदेश के आर्या !
वेदो के राजनीतिक सिद्धान्त पर विचार–विमर्श
आय जगत एव सार सूचनायें
कवितायें

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौड

★

वर्ष	८१
अङ्क	४

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का

ऐतिहासिक निर्णय

प्रदेश मे, वेद प्रचार को व्यापक गति देने तथा सगठन को अधिक सुदृढ़ करने के लिए सभा द्वारा समस्त जिला उपसभाओ को आर्थिक सहायता एव और अधिकार दिए जाने की घोषणा

[१] सभा ने निर्णय लिया है कि वर्ष १९८७–८८ में जिले की समस्त आर्यसमाजो द्वारा प्राप्त धन का २५ प्रतिशत धन उसी जिले मे वेद प्रचार हेतु सम्बन्धित जिला सभाओ को दिया जायेगा।

[२] जिला स्तर पर आर्यकुमार सभाओ। आय वीर दलो के गठन तथा जिला स्तर पर आयोजित शिविरो को सभा द्वारा १०००) की धनराशि एव नि शुल्क वैदिक साहित्य वितरणार्थ दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त जिला स्तर पर बृहद् वेद प्रचार काय के लिए उपदेशको/भजनोपदेशको की व्यवस्था सभा द्वारा उपलब्ध कराई जायेगी।

[३] वर्ष १९८८ को "आर्य युवा वर्ष" के रूप मे मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए प्रदेश को (पश्चिम, मध्य, पूर्व) ३ भागो मे बॉटा गया है। प्रत्येक भाग मे शिविरो का आयोजन होगा तथा प्रत्येक शिविर के लिए सभा द्वारा सहायता के रूप मे ५०००) का अनुदान दिया जायेगा।

[४] सभा के आगामी बृहदधिवेशन से पूर्व आय वीर दल। जिला उपसभाओ द्वारा क्षत्राय प्रतियोगिताए आयोजित की जायेंगी और उन बालक / बालिकाओ को, जो प्रादेशिक स्तर पर आयोजित फाइनल प्रतियोगिता मे विजयी होगे, पुरस्कृत किया जायेगा तथा विजयी टीमो को स्वामी दयानन्द चल वैजयन्ती, गुरु विरजानन्द चल वैजयन्ती एव प० ।काशवीर शास्त्री चल वैजयन्ती प्रदान की जायेगी।

[५] सभा द्वारा दगा पीड़ित सहायता कोष मे प्राप्त धन से दगा पीड़ित क्षेत्रो मे सहायता पहुचायी जायगी तथा भारत नेपाल सीमा पर सभा द्वारा सस्ता साहित्य प्रकाशित कराकर कम मूल्य पर अथवा नि शुल्क वितरित कराया जायेगा।

[६] वर्ष १९८८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ पर महर्षि दयानन्द भवन के निर्माण का शुभारम्भ करने का भी निणय लिया गया है जिसम प्रदेश के ही नहीं अपितु अन्य प्रदेशो से आए हुए सम्मानित अतिथियो के ठहरने आदि की सुव्यवस्था रहेगी साथ ही एक सभाकक्ष (मीटिंग रूम) का भी निर्माण कराया जायेगा।

[७] जिला स्तर पर चुनाव सम्बन्धी अथवा अन्य किसी प्रकार के विवादा स सम्बन्धित विषय मे जिला सभा द्वारा ही निर्णय लिया जायेगा। जिला सभा द्वारा लिये गये निणय क विरुद्ध अपील सुनने का अधिकार सभा द्वारा गठित न्याय सभा का होगा जिसका निर्णय अन्तिम और सभी पक्षो को मान्य होगा।

[८] लखनऊ मे गुरु विरजानन्द की स्मृति मे "विरजानन्द स्मारक पुस्तकालय' की स्थापना का भी निणय लिया गया है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

ले आँख मीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

-सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-माघ शुक्ल १ सम्वत २०४४ रविवार २४ जनवरी १९८८, दयानन्दाब्द
१६३ सृष्टि- सम्वत १९६०८५३०८८

गणतन्त्र दिवस की पूर्व सन्ध्या पर--------------

हमें भी कुछ कहना है

कहीं दूर क्षितिज पर उगते हुए भगवान अंशुमाली की पहली किरण के साथ, आज हम बड़े उल्लासमय वातावरण मे, इस पावनी वसुन्धरा पर अपना गणतन्त्र दिवस मनाने जा रहे हैं। यह हमारा महानतम राष्ट्रीय पर्व है जहाँ धर्म, भाषा, वर्ग और प्रान्तीय मतभेदों से कहीं बहुत ऊंचे उठकर हमने आसेतु हिमाचल फैली हुई इस विशाल भारत माँ को नमन् किया है। आज हमें उन महान बलिदानी वीरों की याद आती है जिन्होंने अपना रक्त देकर इस प्यारी माँ का तिलक किया था। आज हमें उन महान् मनीषियों की याद आती है जिन्होंने अपने बुद्धिकौशल से इस देश में समता, समानता, एकता, बन्धुता और समृद्धि के लिए सर्वनिष्ठ संविधान की रचना की थी। हमने अपना राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय भाषा, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय फूल यहां तक कि राष्ट्रीय पोशाक भी घोषित करके मानो राष्ट्र के साथ तदाकार, एकाकार, महाकार बनने का स्वप्न संजोया था---"काश ? उस महान् आर्यपुत्र राम के राज्य की कल्पना इस धरती पर पुनः साकार हो सके---

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काँहुहि व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥"

.. .. पर हम देख क्या रहे है--कुण्ठा, निराशा, घृणा, आतंक, अलगाव और हत्या का बढ़ता हुआ ताण्डव।

हम अपने देशवासियों, आर्य बन्धुओ को इस पावन पर्व पर बधाई देते हुए कुछ कहना चाहते हैं---कुछ कमी है हममें, हमारे विधान मे, वर्ना--"मर्ज बढ़ता जाये ज्यों-ज्यों दवा करें।"

राम का राज्य इसलिए रामराज्य था, क्योंकि उसका विधान वीरबल की खिचड़ी नहीं थी---वैदिक ऋचाओं पर आधारित संविधान था। व्यवस्था ऋषियों की थी जो वेदों के निष्णात तत्वज्ञानी थे। संविधान को वेदानुकूल बना दो। विश्व को प्रकाशित करने वाले उगते हुए सूर्य की रश्मियों से इस केतु को चिन्हित कर दो---अज्ञान की यामिनी नष्ट हो जायेगी। "गावो विश्वस्य मातरः" का उद्घोष करने वाली इस धरती को गोमाता के खून से मुक्त कर दो---घी दूध की नदियां बहने लगेंगी। "आराष्ट्रे राजन्यः" को राष्ट्रीय गान की पंक्ति में जुड़वा दो---तरुणाई अजेय शक्ति के रूप में है खड़ी हो जायेगी---दुश्मन आंख नहीं उठायेगा। मन्दिरों, मस्जिदों के दरवाजे सबके लिए खोल दो---सुबह को अजान होगी तो शाम को वहां यज्ञ होगा--प्रेम की गंगा बहने लगेगी। नफरत फैलाने वाली पुस्तकें जब्त कर लो---मस्तिष्कों में विकार उत्पन्न ही नहीं होंगे।

इसीलिए हमें कहना है कि बहुत कुछ जुड़वाना है संविधान में क्योंकि यहीं राष्ट्र का प्राण है, मूल है--सींचना इसी को है। वृक्ष हरा-भरा हो जावेगा मीठे-मीठे फलों से लद जावेगा हम भी खायेंगे दुनियां को खिलायेंगे।

"सर्वेभवन्तु सुखिनः"।

ऋषि बोधोत्सव कैसे मनायें

[महाशिव रात्रि की वह निशा हम आर्यों के जीवन में ज्ञान का दीपक लेकर आई थी। हमारा प्यारा ऋषि तो निमित्तमात्र था। प्रभु ने आदेश दिया आर्यों ? चिरनिद्रा छोड़ो, अज्ञानतमिस्रा से आच्छन्न इस विश्व को ज्ञान की ज्योति से जगमग कर दो। यही शिव सन्देश है और यही शिवतर है।]

१६ फरवरी १९८८ को सम्पूर्ण आर्य जगत बड़ी शालीनता से ऋषिबोधोत्सव पर्व मनाने जा रहा है। इस सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के युवामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने समस्त समाजो को कतिपय निर्देश प्रेषित किये हैं जिन्हें हम यहाँ अविकल उद्धृत कर रहे हे और आशा करते हैं कि यह कार्यक्रम इसी परिपत्र के अनुसार मनाया जायेगा।] ---प्रबन्ध सम्पादक

सेवा में---

समस्त प्रधान/ मन्त्री महोदय

आर्य समाज/ जिला उपप्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

श्रीमन्नमस्ते !

जैसा कि आपको विदित है, महाशिवरात्रि का पर्व समस्त भारत-वर्ष में बड़ी श्रद्धा और उत्साह से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसी रात्रि को इस युग के महान मनीषी, समाज सुधारक ऋषिवर दयानन्द को परमपावन वैदिक ज्ञान की ज्योति प्राप्त हुई थी। हम आर्यों के जीवन मे तो इस बोध रात्रि का विशेष महत्व है, हम प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आगामी १६ फरवरी १९८८ को समस्त आर्यजगत में ऋषि बोधोत्सव अत्यन्त भव्यता एवं उत्साह के साथ मनाने जा रहे है। इस सम्बन्ध मे एक विस्तृत कार्यक्रम आपको अलग से भेजा जा रहा है। हम चाहते है कि आर्य जगत की गरिमा के अनुरूप ही अपने प्रदेश में इस बोधोत्सव को अत्यन्त भव्य एवं प्रेरक रूप से मनाया जाये और हमारे इस कार्यक्रम का देश विदेश में व्यापक प्रचार एवं प्रसार हो।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने जनपद की समस्त आर्य-समाजों का यह पर्व संयुक्त रूप में एक केन्द्रित स्थान पर विशेष आयोजन एवं रोचक कार्यक्रम के साथ मनाएं। इस कार्यक्रम के प्रसारण हेतु समस्त स्थानीय एवं विशेष समाचार पत्रो में समाचार प्रकाशित कराएं एवं दूरदर्शन केन्द्र तथा आकाशवाणी के क्षेत्रीय अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर उनसे अनुरोध करें कि वे इसे राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरा स्थान देकर प्रसारित करें।

अपने इस कार्यक्रम की सूचना से मुझे भी अवगत कराने का कष्ट करें।

भवदीय

मनमोहन तिवारी

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

धर्म निरपेक्ष नहीं सम्प्रदाय निरपेक्ष

ले०— मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति, इन्दौर

धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर

धर्म मनुष्य जाति को जोड़ता है और सम्प्रदाय मानव को मानव से तोड़ता है। सम्प्रदायवादी केवल अपने सम्प्रदाय को महत्व देता है और वह अपने से भिन्न सम्प्रदायवालो को काफिर और 'वाजिबल कत्ल' अर्थात वध कर देने योग्य तक कहने मे संकोच नहीं करता। सम्प्रदाय ही मानव जाति का दुश्मन है और जब तक इन सम्प्रदायो का अस्तित्व रहेगा, तब तक वे मनुष्य जाति को कभी एक नहीं होने देंगे और न शांति से जीने देंगे।

—प्रधान सम्पादक

हमारे संविधान मे गणतन्त्रात्मक राज्य-व्यवस्था हेतु 'धर्म-निरपेक्ष' राज्य की घोषणा की गई है। धर्म निरपेक्ष का अर्थ कुछ लोग 'सम्प्रदाय निरपेक्ष' ही लगाते हैं, जब कि धर्म और सम्प्रदाय मे आकाश पाताल का अन्तर है। गणतन्त्रात्मक रूप राजनीति का अभिन्न धर्म है, तब गणतन्त्र को धर्म निरपेक्ष नहीं कहा जा सकता। धर्म निरपेक्ष का वास्तविक भाव न समझने के कारण ही हमारा विगत ४० वर्ष का राजनैतिक जीवन नैतिकता रहित हो गया है। हम सम्प्रदाय-निरपेक्ष के पृष्ठ पोषक है। हम धर्म निरपेक्ष के समर्थक कभी भी नही हो सकते।

वास्तव मे सारा विवाद धर्म और सम्प्रदाय के भेद को न समझने के कारण है। इसी अविवेक के कारण 'सेक्यूलर' शब्द के लिए धर्म-निरपेक्ष शब्द का प्रचलन हो गया है।-'सेक्यूलर' शब्द का जन्म पश्चिम मे थियोक्रटिक स्टेट (धार्मिक राज्य) के प्रतिरोध (मुकाबला) मे हुआ। हमारे लिए और पश्चिमी विश्व के लिये धर्म का अलग-अलग अर्थ स्थापित किया गया है। यह निर्विवाद सत्य है कि पश्चिमी-समाज मे धर्म जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। वहा तो केवल सम्प्रदाय है। वस्तुतः धर्म और सम्प्रदाय मे बड़ा अन्तर होता है। सम्प्रदाय का एक पर्य्यायवाची शब्द मजहब है। बड़े आश्चर्य का विषय है कि मजहब, सम्प्रदाय का आधार भी धर्म ही है। किसी भी सम्प्रदाय-मजहब के लिए रूढ़ियां, अंध विश्वास तथा विकृतियां आवश्यक है, जब कि धर्म शाश्वत सत्यो का सुन्दर संग्रह है। विज्ञानाचार्य प्रो० सत्यप्रकाश सरस्वती ने मजहब या साम्प्रदायिकता का समीकरण इस प्रकार किया है।

मजहब (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई) = धर्म+अंध विश्वास, रूढ़िया एवं व्यर्थ के कर्मकाण्ड। इस प्रकार पश्चिम के लोग सम्प्रदाय को धर्म समझते है। मौलिक रूप से वहाँ उनका तथाकथित धर्म सदैव बहुमुखी रहा है, वहां अन्तर्मुखी होने का विज्ञान अभी तक विकसित नहीं होने पाया है। यही कारण है कि पश्चिम मे धार्मिक स्वतन्त्रता और धर्म निरपेक्षता दोनों का अर्थ हमारी भारतीय मान्यताओ से भिन्न है।

'सेक्यूलर स्टेट' का विचार पश्चिमी देशो मे किस प्रकार विकसित हुआ इसका भी एक रोचक इतिहास है। जब यूरोप के देशो मे मध्य कालीन चर्च ने राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने का प्रयास किया तब चर्च से अलग एक राजनैतिक संस्था के रूप मे 'सेक्यूलर स्टेट' का विचार पैदा हुआ। इसका अभिप्राय केवल इतना ही था कि राज्य केवल लोगो के लौकिक जीवन की व्यवस्था करेगा, क्योंकि धार्मिक जीवन की व्यवस्था का अधिकार तो चर्च का रहेगा। जिन कारणो से पश्चिमी राष्ट्रो मे चर्च को राज्य की सीमा से अलग करने का प्रयत्न किया गया, वे सबके सब कारण हमारे भारत मे कभी नहीं उत्पन्न हुए। हमारी दार्शनिक दृष्टि धर्म और सम्प्रदाय को अलग-अलग समझने की रही है। हमने हमेशा सम्प्रदाय को धर्म बनाने का उदार दृष्टिकोण अपनाया। हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमने कभी भी किसी भी सम्प्रदाय को समाज पर लादने का बलात् प्रयत्न नहीं किया। इधर यूरोपीय समाज की प्रवृत्ति सर्व सत्तावादी रही है। इसलिए वहा चर्च या राज्य दोनो के माध्यम से धार्मिक या राजनीतिक विधि-विधान सभी पर लादने की कोशिश की जाती रही है और इसीलिए वहा चर्च और राज्य मे सदा संघर्ष चलता रहा। इसी तथ्य के कारण वहा राज्य को चर्च से अलग रखा गया।

अब हम यहा अत्यन्त संक्षेप मे धर्म और सम्प्रदाय का मूल अन्तर दिग्दर्शित कराना चाहते हैं। धर्म का आधार नैतिकता है और सम्प्रदाय का आधार किसी व्यक्ति विशेष मे निष्ठा और उसके द्वारा बताया गया कर्मकाण्ड होता है। दुर्भाग्य की बात है कि पश्चिमी देशो मे धर्म और सम्प्रदाय को पर्यायवाची मानकर अनेक उलझने खड़ी कर दी गई। इस प्रकार की बौद्धिक-मूर्खता हमारे देश मे कभी नहीं हुई। भारत ने अपनी मूल वैदिक मान्यताओ के अनुसार सारी मानव जाति को एक ईकाई (वसुधैव कुटुम्बकम्) मान कर नैतिक दृष्टि से मानव जाति द्वारा धारण करनेवाले कुछ नियमो का प्रतिपादन किया। हमने इन्हीं मानवीय नैतिक धारणाओ और मान्यताओ को धर्म का रूप दिया था धर्म की संज्ञा दी। इस धर्म को चाहे वैदिक धर्म कहो या मानव धर्म कहो दोनो का अर्थ एक ही माना जाता रहा है यही मानव धर्म और उसके नैतिक तत्व सदैव सार्वकालिक और सार्वदेशिक रहे। यह कितने गर्व की बात है कि मनुष्य जाति के जन्म से लेकर आज तक उसकी नैतिक मान्यताओ मे कभी कोई अन्तर नहीं आया। उदाहरणार्थ यदि सत्य बोलना और सत्याचरण करना सृष्टि के आदि मे धर्म था तो आज भी वही धर्म है। मानव जाति के नैतिक आधारो को बताने वाले उस धर्म की परिभाषा करनी हो तो योग दर्शन के यम-नियम के रूप मे सर्वत्र विद्यमान है। यम पाच है, यथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इसी प्रकार नियम के भी पाच तत्व है, यथा शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान। इन्हीं को हमारे महान स्मृतिकार (कोड आफ कन्डक्ट) ने धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत लेकर यह श्लोक प्रस्तुत किया—

धृति. क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह :।
धी विद्या सत्यमक्रोध, दशकम् धर्म लक्षणम् ॥

इस प्रकार मनु महाराज द्वारा प्रतिपादित धर्म सार्वत्रिक धर्म है और यह धर्म ऐसा है कि जिसका विरोध कोई भी सम्प्रदाय नहीं कर सकता। हमारे उपरोक्त धर्म के दस तत्व नैतिकता पर आधारित है और विश्व का कोई भी सम्प्रदाय, मत, मजहब (रिलीजन) इनका विरोध नहीं कर सकता।

सम्प्रदायो, मजहबो अथवा रिलीजनो मे से उनके पैगम्बरो या

(शेष पृष्ठ १० पर)

"युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द"

आचार्य रामकिशोर शर्मा प्राचार्य श्री राधाकृष्ण संस्कृत
महाविद्यालय खुरजा, उत्तर प्रदेश

अपने साहित्य में युग शब्द से कृतयुग, त्रेता द्वापर और कलियुग का ग्रहण होता है। ये चारों युग सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक क्रमशः आते जाते है। महाप्रलय के पश्चात पुनः सृष्टि की रचना पहली सृष्टि के समान ही होता है। यही नियम अनादि काल से च ा आ रहा है। इस कथन मे 'सूर्याचन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत्' विधाता ने पूर्व की भाति ही सूर्य चन्द्र आदि की रचना की, यह वेद वचन प्रमाण है। सृष्टि की रचना होते ही युगो का आना जाना प्रारम्भ हो जाता हे। इन्हीं के आधार पर सृष्टि की आयु की गणना की जाती है। संकल्प में बोला जाने वाला 'अष्टाविंशतितमे कलियुगे' यह वाक्यांश इस समय अट्ठाईसवां कलियुग है, यह घोषित करता है। युगों की इसी श्रृंखला को आधार मानकर इस सृष्टि की आयु का आंकलन किया जाता है। किन्तु प्रस्तुत लेख में युग शब्द से यह अर्थ नहीं लिया गया, जैसे एक युग के पश्चात दूसरा युग आने पर पूर्व स्थिति में परिवर्तन हो जाता है वैसे ही सहज सी बनी राष्ट्रीय जीवन पद्धति में किसी व्यक्ति विशेष द्वारा गुण दोष की दृष्टि से किये गये परिवर्तन को युगपरिवर्तन मान लिया जाता है। 'युग बदल गया' यह लोकोक्ति ऐसी ही परिस्थिति में प्रयुक्त की जाती है। यह युग शब्द का परिवर्तन रूप सादृश्य पद्धति से बदली हुई जीवन पद्धति वाले समय को लक्षित करने हेतु किया गया लाक्षणिक प्रयोग है। यही अर्थ यहां अभिप्रेत है। इस प्रकार के युग निर्माण में जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है उन्हें ही युग प्रवर्तक कहा जाता है। परमपिता की असीम कृपा से अपने देश में समय समय पर ऐसे अनेक महापुरुष जन्म लेते रहे हैं, जिन्हें वह गौरव प्राप्त हुआ है। इनमें से कुछ धार्मिक कुछ सामाजिक कुछ राजनैतिक क्षेत्र में ही सक्रिय रहे हैं। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी मे यहां एक ऐसे महापुरुष ने भी जन्मलिया जिसने उक्त सभी क्षेत्रों में मार्ग दर्शन करा कर जन-मानस में नवचेतना का संचार किया। परमात्मा के दिव्य ज्ञान वेद के प्रकाश से जनता में व्याप्त अज्ञानान्धकार मिटाने में सतत् प्रयत्नशील रहा। जो स्वदेश स्वभाषा, स्वधर्म और स्वदेश प्रेम की दृष्टि से सर्वथा अनुपम व्यक्तित्व का धनी था। उसका नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती। आओ उनके उक्त क्षेत्रों में किये गये कार्यों का मूल्यांकन करें।

धार्मिक क्षेत्र—महर्षि दयानन्द के आविर्भाव काल में हिन्दू जनता धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूलकर किसी के हाथ का छुआ हुआ भोजन न करने को ही धर्म मान बैठी थी। 'आठ कनवजिया नौ चूल्हे' यह किंवदन्ती सर्वत्र प्रचलित थी। धर्म के नाम पर मन्दिरों तथा यज्ञों तक में निरपराध मूक प्राणियों की हत्या की जाती थी। धर्म के मूल स्रोत वेदों के विषय में विधर्मियों तथा उनके क्रीतदास भारतीयों द्वारा नाना प्रकार की भ्रांतियां फैलाई जा रही थीं। ऐसे अज्ञान तिमिराच्छन्न समय में महर्षि ने अपनी विलक्षण विद्वता तथा वाग्मिता से धर्म के उक्त कल्पित स्वरूप का खण्डन किया। 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल हैं। वेद प्रतिपादित धर्मोह्यधर्मस्तत् विपर्ययः' वेद बोधित कर्म धर्म तथा तद्विरुद्ध कर्म अधर्म है। 'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' वेद जिन कार्यों को करने की प्रेरणा दें, वे कार्य धर्म है। 'आचारः परमो-धर्मः श्रुत्युक्तः स्मृति एवचः' वेदोक्त तथा स्मृति प्रतिपादित आचरण परम धर्म है। धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' धर्म के जिज्ञासुओं को सर्वोत्तम प्रमाण वेद हैं। 'श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥' वेद तदनुकूल स्मृति वेद वेत्ताओं का आचरण तथा अपने लिये प्रिय सत्य भाषणादि ये चार धर्म के साक्षात् स्वरूप है। 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः' जिससे भौतिक तथा पारमार्थिक अभ्युन्नति हो वह धर्म है। धर्म के इस यथार्थ स्वरूप का जन-जन में प्रचार किया। किसी के छुये हुए भोजन से नहीं, चोरी आदि दुर्गुण तथा मदिरापान और मांस भक्षणादि दुर्व्यसनो से धर्म नष्ट हो जाता है इस रहस्य का उद्घाटन किया जिसके फल-स्वरूप छुआछूत के भूत से मुक्त हिन्दू जाति में संगठन की भावना पैदा हुई। निरपराध-मूक प्राणियों की की हत्या 'मित्रस्यचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' सम्पूर्ण प्राणियों को मित्र की (प्रेम पूर्ण) दृष्टि से देखो, इस वेद वचन के विरुद्ध होने से धर्म नहीं अधर्म है यह तत्व हिन्दु जाति को अवगत कराया, विधर्मी योजना बद्ध ढंग से हिन्दु जाति को गड़रियों का गीत कहकर वेदों से विमुख कर रहे थे महर्षि ने उनके आक्षेपों को निर्मूल सिद्ध कर 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' यह नियम बनाया तथा वेद के पठन-पाठन को आर्यों का परम धर्म बताया। महर्षि की प्रबलतम युक्तियों तथा प्रमाणों से शास्त्रार्थ में विधर्मियों का मुखमुद्रण देखकर हिन्दु जाति अपनी संस्कृति की सर्वश्रेष्ठता से परिचित हो गई।

सामाजिक क्षेत्र—महर्षि के कार्यकाल से पूर्व अपने देश की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। शिक्षा के अभाव में पाखण्ड तथा अन्धविश्वास देश को जर्जर बना रहे थे। 'स्त्री शूद्रौनाधीयातामिति-श्रुते:' स्त्री व शूद्र नहीं पढ़ें यह वेद का आदेश है, इस प्रकार कहा जा रहा था। शूद्रों द्वारा वेद मन्त्रों का उच्चारण तथा श्रवण करने पर उन्हें कठोर दण्ड देने का नियम बना लिया था महर्षि ने उक्त श्रुति को कपोल कल्पित घोषित कर—'यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय स्वाय चारणाय च॥' यजुर्वेद के इस मन्त्र से ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र अपने भृत्य स्त्री आदि तथा शूद्रों को भी प्रभु की कल्याणी वाणी वेद पढ़ने का अधिकार है, यह सिद्ध किया। यह युक्ति भी दी कि जैसे परमात्मा ने सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जलवायु पृथ्वी और अन्नादि पदार्थ बिना पक्षपात के सबके लिये बनाये है वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं और सूत्रादि में 'इमम् मन्त्रं पत्नी पठेत्' इस मन्त्र को पत्नी पढ़े, तथा विवाह संस्कार में इस मन्त्र को वधू पढ़े, इत्यादि निर्देश स्त्री जाति को वेद पढ़ने का अधिकार है, इसके प्रमाण हैं। अपने देश में गार्गी, मैत्रेयी आदि वेद शास्त्रों की विदुषी अनेक महिलायें हुई हैं। महर्षि की प्रेरणा से स्त्री शिक्षा के निमित्त अनेक कन्या विद्यालयों की स्थापना की गई, पिछड़ी कही जाने वाली जातियों में उत्पन्न अनेक बन्धु वेद शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन कर पण्डित तथा महोपदेशक बने,। उन्हें सभी क्षेत्रों में सर्वसाधारण के समान सम्मान प्राप्त हुआ। बाल विवाह की कुरीति के कारण अनेक बालायें युवावस्था से पूर्व ही विधवा होकर नारकीय जीवन व्यतीत करती थीं। नारियों के प्रति सम्मान भाव विनष्टप्राय था। कोई उन्हें ताड़न का अधिकारी कोई नरक का द्वार तथा कोई बेजान पदार्थ बता रहे थे। ऐसी स्थितिमे महर्षि ने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। 'न शोचन्तितु यत्रैता वर्द्धते सिद्धि:-सर्वदा।' जहां स्त्रियां प्रसन्न रहती है वह कुल सदा उन्नति करता है। महर्षि ने मनु

(शेष पृष्ठ १० पर)

देवता मोक्षं इच्छन्ति

[विक्रमादित्य 'बसन्त' वेदवारिधि बी–६४ बसन्तिका,
राजाजी पुरम लखनऊ २२६०१७

मन्त्र— ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त
मनसा चक्षुषा च ।
अग्निष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवो
विश्वकर्मा प्रजया संरराणः ॥

ऋषि–अथर्वा (अथर्व० २।३४।३)
देवता–अग्नि विश्वकर्मा

अन्वय— ये बध्यमानम् अनु दीध्यानाः
अनु ऐक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
अग्निः तान् अग्रे प्र मुमोक्तु
देवः विश्वकर्मा प्र+जया सम्+रराणः ॥

शब्दार्थ–

(ये) जो [मानव] (अनु दीध्याना) सतत ध्यान करते हुए (बध्यमानम्) बन्धे हुये को (मनसा च चक्षुषा) मन से तथा नेत्र से (अनु+ऐक्षन्त) निरन्तर देखा करते हैं [उन्हें] (अग्निः) अग्रणी करने वाला (विश्वकर्मा देवः) विश्व का रचयिता देव (प्रजया सम+रराणः) प्रजा के साथ सम्यक रूप से रमण करता हुआ (तान्) उनको (अग्रे) अग्र रूप में, प्रमुखतयः (प्र मुमोक्तु) प्रमुक्त करे ।

व्याख्या–

मानव जीवन की तीन कोटियां है । जिनका जीवन नितान्त पशुत्व को लिये हुए है, जो खाओ, पियो और मौज उड़ाओ को ही अपना धर्म समझते है, जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए निर्मम कठोर हिंसक आततायी, अत्याचारी और दुराचारी बन जाते है वे मानव शरीरधारी होकर भी दानव की कोटि में आते हैं । जो मनुष्य मानवता को अपना धर्म मानकर सुख शांति के अभिलाषी होते है उनकी गणना मानव कोटि मे होती है पर जो इससे ऊपर उठकर दिव्यताओं को धारण कर और दूसरों को सुखी बनाने के उद्देश्य से सर्वस्व अर्पित करते हैं, उन्हें 'देव' कोटि की संज्ञा दी जाती है । 'पश्यतीति पशु' जो केवल देखते ही हैं देखे हुए पर मनन और चिन्तन नहीं करते, वे पशु है क्योंकि पशु के स्वभावानुसार वे बारम्बार ठोकर खाकर भी नहीं संभलते पर जो ठोकर खाकर संभल जाते हैं, वे मानव कहलाते है और जो ठोकर लगने से पहले ही संभल जाते हैं, वे ही देव होते हे ।

मनुष्य जब उत्थान की सीढ़ियो पर आरोहण करता है तो देवताओं के शिखर पर पहुंच जाता है पर जब वह पतन के चिकने मार्ग पर फिसलता है तो पशुता को भी मात कर देता है । देवत्व अमरत्व को प्राप्त करना है । मानव अपने सुकर्मों के आधार पर मरणोपरान्त भी अन्य मानवों के हृदयों में उनके अनुपात से जीवित रहते है परन्तु पशुवृत्ति वाले दुष्ट मानव जीवित होते हुए भी मरों के समान होते हैं ।

जो मानव अपने जीवन के उद्देश्य को ज्ञानपूर्वक जान लेते हैं, वे जीवन को यज्ञमय बनाते हैं । परोपकार की भावना से वे श्रेष्ठतम कर्म करते हैं । वे जीवन के अन्तिम चरण अर्थात् वृद्धावस्था में नहीं अपितु प्रथमावस्था में ही अपना साधना प्रारम्भ कर देते हैं । उनका दाम्पत्य जीवन उनकी साधना में बाधक नहीं बनता क्योंकि वे इस तथ्य को आत्मना स्वीकार करते हैं । गृहस्थाश्रम भोग सम्पता के लिए नहीं बरन् योग सधना के लिए है। गृहस्थ में पति-पत्नी दोनों का लक्ष्य है उस परम दिव्य धाम तक पहुंचना और आत्म मोक्ष को प्राप्त करना ।

प्रस्तुत मन्त्र में इस विशिष्ट ज्ञान का परिचय कराते हुए कहा गया है कि (ये) जो मानव (बध्यमानम्) देह बन्धन में बन्धे हुए हैं, तीन प्रकार की आसक्तियों यथा पदार्थों, जीवों, विषय विकारों और वासनाओं की एवम् तीन एषणाओं, बलवती इच्छाओं यथा पुत्रैषणा, लोकैषणा, वित्तैषणा के पाशों में जकड़े हुए हैं, वे जब (मनसा च चक्षुषा अनुऐक्षन्त) मनसे और नेत्र से उन्हें सतत देखते हैं और (अनुदीध्याना) निरन्तर ध्यान करते हैं, तब ही प्रभु उनका कल्याण करता हैं ।

देखने को भौतिक नेत्रों से सभी देखते हैं पर अज्ञानी और ज्ञानी के देखने का दृष्टिकोण भिन्न होता है । ज्ञानी जिस गहराई तक जाता है, अज्ञानी वहाँ तक नहीं पहुंच पाता । पेड़ से पत्ते नित्य टूटते है और वायु उन्हें उड़ाकर दूर ले जाती है पर जब तत्त्वदर्शी कबीर यह दृश्य देखता है तो वह आशु कवि इन शब्दों में दिव्य ज्ञान को अभिव्यक्त करता है—

टूटा पत्ता डाल से पवन दियो उड़ाए ।
अब के बिछुड़े कब मिलें, दूर पड़ेंगे जाए ॥

इन दो भौतिक नेत्रों के अतिरिक्त मानव के पास एक तीसरा भी नेत्र है जिसे ज्ञानलोचन कहते हैं और जिसके खुलने पर काम भस्म हो जाता है । इस मन्त्र में मन से तथा चक्षुओं से सतत देखने का तात्पर्य है, आत्म निरीक्षण करना ज्ञान और विवेक से । ज्ञान यदि तृतीय चक्षु है तो विवेक इस चक्षु का प्रकाश है । बिना आत्म-निरीक्षण किये मानव को अपनी त्रुटियों का आभास नहीं होता और जब तक निरन्तर इन त्रुटियों को न देखा जाये तो उन्हें दूर करने की इच्छा जाग्रत नहीं होती त्रुटियों को देखने के पश्चात् जो (अनु दी ध्याना) उनका निरंतर ध्यान करता है, सतत चिन्तनरत रहता है, वह मानव इन पाशों और बन्धनों को काटने और तोड़ने के लिये इच्छावान हो कर, प्रयत्नशील होता है ।

इस संसार में एक सर्वोपरि सत्ता है जो सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी हैं, सर्वज्ञ है, साधकों की इच्छायें उससे छिपी हुई नहीं है । इस मन्त्र में उस परम सत्ता को ही (विश्वकर्मा देवः) विश्व रचयिता दिव्य देव कहा गया है । जगत की रचना करने वाला (प्रजया सम्+रराणः) प्रजाओं के साथ सम्यक रूप से रमण करता है । सकल लोक लोकान्तर जड़ चेतन उस परमात्मा की प्रजायें हैं जिनमें सम्यक रूप से वह रमा हुआ रमण कर रहा है । वह परमदेव साधना शील आत्माओं के लिए (अग्निः) स्वरूप हैं, उन्हें अग्रणी करने वाला है । जैसे कोयला अग्नि में पड़कर धधकने लगता है, उसी भांति साधक भी उस परमदेव का ध्यान और चिन्तन कर अपने को शोधते हैं, पवित्र करते हैं और दिव्य ज्ञान की आभा से जगमगाने लगते हैं । साधकों की आत्माओं को परमात्मा अपने दिव्य ज्ञान से अग्रणी करता है और जब वे आगे बढ़ते-बढ़ते इस योग्य हो जाते हैं तो परमात्मा (र.रा) उनको (अग्रे) अग्रतया, प्रमुख रूप से (प्र मुमोक्तु) प्रमुक्त कर देता है ।

मुक्ति क्या है और प्रमुक्ति क्या है । कर्मानुसार देहबन्धन में

[शेष पृष्ठ १० पर]

राष्ट्रभाषा हिन्दी

संवैधानिकता और मानसिकता

सीताराम शर्मा 'बन्धु' मन्त्री आर्यसमाज अमरोहा
जनपद मुरादाबाद

भारतीय भाषाओं का इतिहास बहुत प्राचीन है। हिन्दी भाषा संस्कृत पालि, प्राकृत और शौरसेनी अपभ्रंश भाषाओं से जन्मी हैं। एक समय था जब सम्पूर्ण आर्यावर्त्त की भाषा संस्कृत थी। फिर प्राकृत भाषाओं का समय आया। इसके बाद उन क्षेत्रों मे विभिन्न अपभ्रंश भाषाओं का प्रयोग होने लगा। शौरसेनी अपभ्रंश राष्ट्रव्यापी अपभ्रंश थी। इसी से हिन्दी विकसित हुई। लगभग सातवीं आठवीं सदी से ही हिन्दी का आविर्भाव हो गया तथा हिन्दी भाषा मे सरस काव्य का सृजन हो गया था। परिवर्तित राजनैतिक परिस्थितियों के कारण राष्ट्र मे हिन्दी भाषा को अपेक्षित संवैधानिक स्तर प्राप्त न था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त अपने राष्ट्र का अपना एक संविधान बनना प्रारम्भ हुआ जिसमे राष्ट्र भाषा के सम्बन्ध मे विशद विवेचन के उपरात १४ सितम्बर सन १९४९ ई० से देवनागरी लिपि मे लिखित हिन्दी को राष्ट्र भाषा का पद प्रदान किया गया। राष्ट्रभाषा का तात्पय ऐसी भाषा से है जिसमे प्रान्तीय सरकारें परस्पर एवम् केन्द्रीय सरकार स्वय तथा प्रान्तीय सरकारो से व्यवहार करें। संविधान की धारा ३४३ एवम् उसकी उप धाराओ मे राज भाषा एवम् राष्ट्रभाषा के प्रयोग की स्पष्ट व्याख्या की गयी है।

राष्ट्रभाषा के पद पर संवैधानिक मान्यता प्राप्त करके हिन्दी प्रान्तीय भाषाओं के साथ कोई विरोध उत्पन्न नही करती। प्रान्तीय भाषाओ के प्रयोग मे तो सभी प्रान्त स्वतन्त्र हैं। साथ ही स्वाभाविक एवम् सहजता भी अपनी भाषा मे आती ही है। परन्तु विचार करके देखा जाये तो हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त एवम् हिन्दी भाषेतर प्रान्त हिन्दी के विकास मे ऐसे सलग्न है कि विरोध पक्ष स्वतः ही सूक्ष्म ठहरता है। उ० प्र०, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पूर्णरूप से हिन्दी भाषा क्षेत्र हैं। इनके अतिरिक्त अहिन्दी भाषी प्रान्तो मे गुजरात, पंजाब, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, केरल प्रमुख रूप से आते है, परन्तु इनमे भी हिन्दी के महान् साहित्यकार अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि कर रहे ह। तमिल भाषी डा० रागेय राघव, सरदार पूर्ण सिंह, सरदार कर्तारसिंह, मोहन राकेश, गुजरात क श्री नित्यानन्द पटेल, रघुवीर चौधरी, मराठी भाषी—प्रभाकर माचवे, गजानन माधव मुक्तिबोध, कन्नड़ भाषी प० दिवाकर, डा० एस० एस० कृष्णमूर्ति, डा० दक्षिणा मूर्ति, केरल के प्रो० चन्द्रहासन और केशव नायर, चन्द्रशेखर नायर आदि अनेक प्रसिद्ध विद्वानो ने हिन्दी की उल्लेखनीय सेवा की है। पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक स्वामी वल्लभाचार्य स्वय तेलगू भाषी थे। प्रो० श्री० सुन्दर रेड्डी, प्रो० जे विश्वामित्र, ठा० राघवराव आदि आन्ध्रप्रदेशीय हिन्दी विद्वान हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

हिन्दी के प्रचार प्रसार मे आज अनेक सस्थायें सलग्न हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, अखिल भारतीय हिन्दी सस्था सघ दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्रीनगर [कश्मीर] असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आदि। परन्तु आज भी हम हिन्दी के प्रति न्याय नहीं कर रहे हैं। व्यावहारिकता से हम दूर है। सम्पूर्ण प्रान्तो की बात छोड़िये, आप अपने हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रो को ही ले लीजिए। आप हिन्दी का कितना प्रयोग करते हैं? कार्ड, लिफाफे, बधाई पत्र, विवाह शादी के कार्ड, दुकानों के नाम पट्ट, धन्यवाद पत्र, जन्म दिन पर मनाई जाने वाली खुशी का गीत सब कुछ अंग्रेजी मे चल रहा है। अब तो नामकरण भी अति आधुनिक हो गये हैं। सोनी, मोनी, लकी, इम्पी, पम्पी, डब्लू, मोन्टू, गोल्डी, रोजी, आदि-२। नव वर्ष की शुभ मगलकामना का पत्र हिंदी मे आपको पुस्तक विक्रेताओ पर अथवा दूसरे दुकानदारो पर उपलब्ध ही नहीं होगा। होगा कहां से मानसिकता जो बदल रही है। प्रकाशक बिक्री के हिसाब से ही प्रकाशित करेगें। वह जानता है कि बधाई पत्र एव मगलकामना पत्र अंग्रेजी म नहीं छपवाया जायेगा तब तक लोगो के गले नहीं उतरेगा। हिन्दी मे मगल कामना, बधाई भेजने पर तो नाक जड़ से कट जावेगी।

हिन्दी के प्रयोग की छूट जब बैंको तक मे है तो फिर आप अपनी मुहर अग्रेजी मे ही क्यो बनवाते हैं? विश्वविद्यालय स्तर पर एक ही प्रश्न-पत्र का मुद्रण अग्रेजी एव हिन्दी दोनो भाषाओं मे हो रहा है। अग्रेजी भाषा से भिन्न भाषाओ का प्रश्न पत्र भी इसी प्रकार प्रकाशित हो रहा हे। फिर क्या करेगी राष्ट्रभाषा के पद पर बैठकर बेचारी राष्ट्रभाषा जब हमारी मानसिकता ही बिगड़ गई है। हेय भावना एव हीन ग्रन्थो के शिकार होते जा रहे हे हम। अग्रेजी मानसिकता के शिकार लोग दलीलें देते हैं, 'हिन्दी तो पिछड़े लोगो की भाषा है इससे राष्ट्र की वैज्ञानिक उन्नति नहीं हो सकती। अरे भाई तनिक विचार करो कि जिन देशो मे अग्रेजी का माध्यम नहीं, उनमे वैज्ञानिक प्रगति कैसे हो रही है। ये देश हैं सोवियत रूस, जापान, चीन, जर्मनी, फ्रांस आदि। दुनियां मे विकसित कही जाने वाली—अग्रेजी के ८० प्रतिशत से भी अधिक शब्द अन्य यूरोपियन भाषाओ जैसे फ्रेंच, जर्मनी लैटिन आदि से लिए गये हैं।

आज राष्ट्रभाषा हिन्दी के मार्ग मे साम्राज्यवादी भूत, साम्प्रदायिक मनोवृत्ति, प्रान्तीय सकीर्णता, साम्राज्यवादी शक्तियो का षड्यन्त्र, आदि अनेक बाधायें मार्ग अवरुद्ध कर रही है। इन सबसे भी बड़ी बाधा है हमारी दूषित एव रोगी मानसिकता। सर्वप्रथम तो हमे अपनी मानसिकता को ही बदलना होगा। शिक्षा, न्याय, प्रशासन की गाड़ी आज अग्रेजी से चल रही है। यह देश का दुर्भाग्य है। इससे राष्ट्रीय एकता संभव नहीं। देश को एकता के सूत्र मे बाधने वाली तो एक मात्र भाषा हिन्दी है।

संवैधानिकता सक्षमता को स्वीकार करते हुए हम अपनी मानसिकता को बदलकर राष्ट्रीय एकता की बात सोचें, समझें एव हिन्दी को व्यवहार मे लायें।

सुन्दरगढ़ में विशाल शुद्धि समारोह

२१ दिसम्बर ८७ को राउरकेला से ७ किलोमीटर दूर ग्रामीण वनाञ्चल मे १७५ परिवारो के ७०० से अधिक ईसाई मत स्वीकार किये वनवासी बन्धुओ ने पुनः वैदिक धर्म को स्वीकार किया। इस समारोह को देखने दो हजार से अधिक ग्रामीण जनता उपस्थित थी। यज्ञ का संचालन तथा दीक्षा कार्य श्री प० अखिलेश जी आचार्य एव श्री योगेन्द्रकुमार शास्त्री आर्य समाज भुवनेश्वर ने सम्पन्न कराया। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने दीक्षित बन्धुओ को नवीन वस्त्र देकर उनका स्वागत किया, तथा अपने मार्मिक उद्बोधन मे उनके पूर्वजो के अपने सनातन धर्म के लिए त्याग तप तथा बलिदान का उल्लेख किया जिससे सभी मे उत्साह भर गया।

युवा राष्ट्रीय गीत

हम हैं वीर जवान, हम हैं वीर जवान ।
अद्भुत अपनी शान, अद्भुत अपनी आन ।।

इस भारत की मिट्टी की, सौगन्ध आज हम खाते हैं ।
आजादी की रक्षा का, सबको विश्वास दिलाते हैं ।।
शंखनाद करके कहते हैं, अपनी धरती प्यारी है ।
बढ़े चलो ऐ वीर बाकुरो, बीड़ा यही उठाते हैं ।।
हम हैं वीर जवान ।
भारत की सन्तान ।।

हम खतरों से नहीं डरेंगे देश धर्म के दीवाने ।
हम मंजिल पर सदा बढ़ेंगे, फौलादी सीना ताने ।।
सदा तिरंगा फहरायेगा, लाल किले की चोटी प॰ ।
भेद नहीं मन मे आयेगा, बात बड़ी या छोटा पर ।
हम है वीर जवान ।
सब कुछ हे कुर्बान ।।

भगतसिंह, बिस्मिल, नेता जी, हर दिल के सरताज है ।
वीर शिवा, राणा प्रताप पर, हमे साथियो नाज ।।
अमर शहीदों की अर्थी पर, हमने कसम उठाई है ।
आंखो मे पानी भर के, घर-घर यह कथा सुनाई है ।।
हम हैं वीर जवान ।
वे देंगे बलिदान ।।

'करो मरो' का मत्र सिखाकर गांधी जी ने दीक्षा दी ।
'कर्म योग' की वीर जवाहर ने थी, कठिन परीक्षा दी ।।
लोभ पदों का छोड़, विवादो का हल करना आता है ।
सब फसाद की नींव खोद कर, हमे निबटना आता है ।।
हम हे वीर जवान ।
है आराम हराम ।।

हमने अपने कदम उठाये, सूर्य रश्मियाँ चमक उठीं ।
हमने अपने अर्घ्य चढ़ाए, दिव्य शक्तियां महक उठी ।।
भारत के ऋषियो, सन्तों को, मङ्गलमय आशीष मिली ।
अब न रुकेंगे, कार्य प्रगति के प्रान्त, नगर में गली नली ।।
हम है वीर जवान ।
निर्भय शक्तिवान ।।

—सावित्री रस्तोगी जवाहरनगर मेरठ कैन्ट

मर्याद हरोगे

भारत की वह पिछली संस्कृति, न तुम याद करोगे ।
सच कहता हूं दिव्य देश की तुम मर्याद हरोगे ।।

धन्य यहां की परम्परायें, वेदों ने दुहराईं,
त्याग तपस्या, सेवा वृत्ति, मुनियो ने विकसायीं ।
डलहौजी की हड़प नीति को गर तुम आज करोगे ।
सच कहता हूं दिव्य देश की तुम मर्याद हरोगे ।१।

दया, धर्म और अनुशासन को, सबने था अपनाया ।
अनुशासित उन राम, भरत ने राज्य को गेंद बनाया ।
भाई का हक हड़प आज तुम स्वार्थ की नीति गहोगे ।
सच कहता हूं दिव्य देश की तुम मर्याद हरोगे ।२।

अनुशासित उन देव कृष्ण ने, नन्द की गाय चराई ।
प्रेम बांसुरी के छिद्रों से, कर्म क्रिया समझायी—
चोर बताकर भी कृष्ण को, छलिया रूप धरोगे ।
सच कहता हूं, दिव्य .. .. ।३।

इन्द्रिय सयम ब्रह्मचर्य से वीर बने रणधारी ।
भीष्म, भीम, अरु हनूमान से थे यहां पर ब्रह्मचारी ।
सुरा पान कर पागल बन तुम, गर व्यभिचार करोगे ।
सच कहता हूं दिव्य ... . ।४।

श्रद्धा और भक्ति से यहां पर शिक्षा सबने पायी ।
गुरु की कृपा पाइ पारथ ने, कीर्ति ध्वजा फहराई ।
गाली और दुराचारो से, गुरु मे भक्ति भरोगे ।
सच कहता हूं दिव्य ... . ।५।

शुद्ध खान पान से अपने बल विक्रम दिखलाते ।
देश और धर्म की खातिर, प्राणो को तज जाते ।
अपनों को कर कत्ल आज तुम राक्षस रूप धरोगे ।
सच कहता हूं दिव्य ... ... ।६।

नित्य कर्म से निवृत्त होकर प्रभु को ध्यान लगाते ।
शक्तिमान् तब जान प्रभु को कभी न पाप कमाते ।
'आर्य' देश मे 'ओ३म्' शब्द को न तुम याद करोगें ।
सच कहता हूं दिव्य .. .. ।७।

—होतीसिंह आर्य वीर लहरी मदनगढ़ी, अलीगढ़

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०के नवनिर्वाचित प्रधान एव मन्त्री के प्रति शुभ कामना

सौख्य भोगो सर्वदा तुम, हो कृपा भगवान की ।
तुम चरम सीमा पर पहुचो, उन्नति उत्थान की ।।
विश्व के आकाश में, चमको रवि सम तुम सदा ।
और फैले विश्व में, आपकी नव ज्योति प्रभा ।।
अभि उदय हो नित तुम्हारा, नित्यप्रति उत्कर्ष हो ।
प्रभु करे मंगल तुम्हारा, नित्य नूतन हर्ष हो ।।

—ललताप्रसाद, उपदेशक सभा

शोक समाचार

आर्यसमाज गोण्डा के भूतपूर्व मन्त्री श्री रामशंकर लाल श्रीवास्तव का कैंसर की बीमारी से २५ दिसम्बर १९८७ को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ । परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवम् पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है ।

बलराम गोविन्द
मन्त्री
जिला सभा गोण्डा

वधू की आवश्यकता

"वेदोंकेराजनीतिक सिद्धान्त" पर विचार विमर्श

[लेखक–डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम० ए०, पी– एच० डी०, प्राध्यापक–संस्कृत विभाग, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी (उ० प्र०)

[गताङ्क से आगे]

आचार्य जी ने इन शब्दों का अर्थ क्रमशः 'स्नातक, मनुष्य, शिक्षा-संस्था और जल निरोधक पदार्थ' किया है और अन्त में लिख दिया है कि मेरे द्वारा उद्धृत इन स्थलों में आये इन शब्दों का अर्थ इससे भिन्न नहीं हो सकता है। अन्य अर्थ दूसरे स्थलों मे प्रकरणानुसार होंगे। इसी शृंखला में वेदों के 'राजनीतिक सिद्धांत' के द्वितीय भाग में 'राष्ट्र मे नहरें खुदवाई जायें' अनुच्छेद ५, पृ० २८-२९ पर १९ मन्त्र आचार्य जी ने प्रस्तुत किए हैं। उनमें से प्रथम ३ मन्त्रों ऋ० १-३२-१, २, ११ का अर्थ करते हुये मन्त्रगत 'अहि' शब्द का अर्थ 'शिला भूमि आदि जल के गति निरोधक पदार्थ' करते है। यह तो ठीक है किन्तु सर्वाधिक आपत्तिजनक बात यह है कि इसी स्थल पर 'अहि शब्द का अर्थ' शीर्षक के अन्तर्गत पृ० ३० पर आचार्य जी लिखते हैं–'आमतौर से इसका (अहि का) अर्थ मेघ किया जाता है। कई जगह इसका अर्थ मेघ होता भी है। पर प्रस्तुत मन्त्रों में मेघ अर्थ नहीं लिया जा सकता। ऐसे प्रसंगों में प्रचलित टीकाकार अहि और पर्वत शब्दों का अर्थ प्रायः मेघ ही किया करते हैं।'

स्पष्ट है कि आचार्य जी ऋग्वेद के १-३२-१, २, ११ मन्त्रों में अहि शब्द का मेघ अर्थ गलत समझते हैं। इतना ही नहीं अहि का मेघ अर्थ क्यों गलत है इसका कारण बताते हुए आचार्य जी लिखते हैं–'यदि पर्वत का मेघ अर्थ ही लें तो भला मेघ में रहने वाला यह मेघ कौन होगा ?' जब कि ऋषि दयानन्द ने इन मन्त्रों में आये अहि शब्द का मेघ अर्थ किया है। मेघ में रहने वाला मेघ की असम्भावना परक आपत्ति का उत्तर ऋषि दयानन्द ने यह दिया है–'फिर वही मेघ आकाश में से नीचे गिर के पर्वत अर्थात् मेघ मण्डल का पुनः आश्रय लेता है' (ऋग्वेदादि भाष्य–भूमिका)।

इस सम्बन्ध में आचार्य जी की आपत्ति का युक्ति-युक्ति और तर्कपूर्ण परिहार डा० प्रज्ञादेवी जी ने ऋषि दयानन्द के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आलोक में अपने प्रथम निबन्ध में किया है। आचार्या प्रज्ञा जी के द्वारा की गई समीक्षा के इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर आचार्य जी अपने स्पष्टीकरण (द्र०–वेदों के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं है) में सर्वथा मौन साध लिए हैं।

कोई आर्य विद्वान् वेदों में रूढ़ि शब्द है ऐसा नहीं मानता। आचार्य जी मन्त्रार्थ की यौगिक पद्धति को निःसन्देह मानते हैं। तभी तो राजनीति प्रभृति विविध ज्ञान-विज्ञान परक वेदों का अर्थ हो सकेगा जैसा कि उन्होने स्पष्टीकरण वाले लेख में भी लिखा है। इसी प्रकार अपनी पुस्तक के प्रथम खण्ड के पृ० ७ (विषयप्रवेश) पर लिखा है–'इस प्रकार वेद में रूढ़िवाद का स्थान नहीं रहने देना चाहिए' इसके बावजूद 'वेदों के राजनीतिक सिद्धांत' में आचार्य जी द्वारा वेदों में रूढ़ि शब्द भी लिखा गया है। उदाहरणार्थ–'जब वेद और लोक दोनों में विद्युत का अर्थ बिजली होता है तो 'विद्युद्रथ' में भी इसका अर्थ बिजली ही क्यों न करें ? दयानन्द के अनुयायी वेद में यौगिक अर्थ वहां करते हैं वहाँ वैसा किये बिना वेद निरर्थक और विज्ञान विरुद्ध बात कहता हुआ प्रतीत हो। जहां रूढ़ अर्थ मानकर भी वेद शिक्षाप्रद वैज्ञानिक अर्थ देता हो वहां हम यौगिकवाद का सहारा नहीं लेते हैं। (खण्ड २, पृ० १६७)।

(२) ,दयानन्द के अनुयायी यौगिकवाद का वहीं आश्रय लेते हैं जहां वैसा करने से अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है और वह अधिक शिक्षाप्रद बनता हो। हम सर्वत्र यों ही बिना हेतु के यौगिकवाद का सहारा नहीं लेते हैं। प्रस्तुत मरुत सम्बन्धी मन्त्रो मे नर का सुप्रसिद्ध और रूढ़ अर्थ मनुष्य करने पर अर्थों में चमत्कार उत्पन्न होता है और वह राष्ट्रोपयोगी व्यावहारिक शिक्षा देने वाले बन जाते हैं। अतः यहाँ हमें नर का रूढ़ अर्थ मनुष्य ही करना चाहिए, (खण्ड ३ पृष्ठ १६)।

हम यह नहीं समझ सके कि विद्युत और नर का बिजली और मनुष्य अर्थ करने में क्या आपत्ति हुई कि वेदों में रूढ़ि शब्द और रूढ़िवाद परक अर्थ मानने की आवश्यकता पड़ गई ? आचार्य जी के उपर्युक्त दो उद्धरण उनके ग्रन्थ की भूमिका में लिखी गई स्वयं उनकी मान्यताओं के भी विरुद्ध हैं। ऋषि दयानन्द वेद के एक शब्द को भी रूढ़ि नहीं मानते। विद्युत शब्द का बिजली अर्थ उसके यौगिक अर्थ (द्युतद्योतने–चमकने वाली) के आधार पर ही किया जाता है। नर शब्द इन धातुओं से बनता है–नृ नये (ले जाना इत्यादि गण, परस्मैपदी नृणाति–पाणिनिकृत धातुपाठ) (२) नृ नये (स्वादि, नरयति) द्र० क्षीरतरंगिणी पृ० ११६, द्वितीयावृत्ति, रा० क० द्र०, वि० स० २०४२।

(३)नृ नये–विनये (स्वादि, नरति, नरयति–विनीतो भवति) नरः, नृ, नरकः, नर्ता–चत्वारो विनये। द्र० काशकृत्स्न धातुव्याख्यानम् पृ० १०२ भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान अजमेर वि स० २०२२। अतः नरः का अर्थ नेता, ले चलने वाला और विनीत पुरुष हो सकता है। साथ ही नर का मनुष्य अर्थ करना भी रूढ़िवाद या रूढ़ार्थ नहीं है। लौकिक साहित्य मे भी जब शक्र, इन्द्र और पुरन्दर शब्द एक अर्थ में प्रयुक्त होते हुए भी इनके प्रवृत्ति के निमित्त भेद होते ही है। जैसा कि आचार्य धनिक ने धनञ्जय कृत दशरूपक की अवलोक टीका में लिखा है—'एकस्मिन्नर्थे प्रवर्तमानस्य शब्दत्रयस्य 'इन्द्रः पुरन्दरः शक्रः' इतिवत् प्रवृत्तिनिमित्त भेदो दर्शितः।' इसी प्रकार नर, मनुष्य, मानव, मर्त्य आदि शब्द एक अर्थ में प्रवृत्त होते हुए भी इनके प्रवृत्ति के निमित्त भेद तो होंगे ही। फिर वैदिक शब्द तो सभी आचार्यों के मत में यौगिक (धातुज) हैं, फिर इन्हें (एकाध शब्द को भी) रूढ़ि कैसे माना जा सकता है ? जैसा कि निरुक्त शास्त्र के प्रवक्ता यास्क आदि और व्याकरण शास्त्र के प्रवक्ता शाकटायन आदि का मत है—'नामानि सर्वाण्याख्यातजानि इति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च। (निरुक्त १. १३)। नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्। (महाभाष्यम् ३. ३. १)।

ऋग्वेद १०. १२५. वागाम्भृणी सूक्त के सम्बन्ध में आचार्य जी लिखते हैं–'हम प्रचलित वागाम्भृणी को सूक्त का देवता मानने के लिए बाधित नहीं है। क्योंकि यह पद सूक्त में नहीं आता है। हमारी सम्मति में सूक्ति का देवता 'राष्ट्री संगमनी' होना चाहिए।............पर वागाम्भृणी का अर्थ इस सूक्त में (परमेश्वर) नहीं लिया जा सकता क्योंकि वागाम्भृणी का अर्थ निर्णय करने में हमें उनके सूक्तगत वर्णन को भी ध्यान में रखना होगा। इसलिए 'वागाम्भृणी' ऐसी वाणी होनी चाहिए जिसमें 'राष्ट्री संगमनी' पदों का अर्थ भी संगत हो सके।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

राष्ट्रीय प्रश्नों के समाधान के लिए आर्यसमाज का सक्रिय होना आवश्यक

—डा० प्रशान्त वेदालंकार

राष्ट्र की सुरक्षा एवं एकता के लिए हमें संविधान मे अनेक परिवर्तन करने होगे। ये शब्द डा०प्रशान्त वेदालंकार ने ६ नवम्बर को आर्य समाज नकुड़ (सहारनपुर) के ५७ वें वार्षिकोत्सव पर विशाल जन समूह के सम्मुख भाषण देते हुये कहे। उन्होने राष्ट्र को आन्तरिक तथा पंजाब और उत्तर पूर्वी राज्यो की स्थिति का विश्लेषण करते हुये शासन को कठोर नीति का प्रयोग करने के लिए कहा। उन्होने कहा कि जब तक भारत अणुबम नहीं बनायेगा तब तक पड़ोसी राज्यों का विशेषतया पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देश भारत के प्रति अपना रुख नहीं बदलेंगे।

इस वार्षिकोत्सव मे डा० जयदेव वेदालंकार (गुरुकुल हरिद्वार) ने आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय विषयो पर अनेक व्याख्यान दिये और वैदिक संस्कृति और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के आधार पर राष्ट्र का निर्माण करने की प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर आर्यसमाज को राष्ट्र ज्ञारेख। क निर्धारित करने के लिए प्रस्तावित आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशान्त वेदालंकार दिल्ली विश्वविद्यालय ने नगर के प्रमुख आर्यसमाजियो के मध्य इसकी रूपरेखा प्रस्तुत की उन्होने कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति को पुन. जीवित करने के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन के राष्ट्रीय प्रश्नो पर महत्वपूर्ण भूमिका के लिए आर्यसमाज के संगठन को जुझारू बनाने के लिए एक आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन आवश्यक है।

★ —संवाददाता

आर्यसमाज रानी विराटनगर (नेपाल) का वार्षिकोत्सव

दिनांक १९ से २१ नवम्बर तक आर्यसमाज रानी विराटनगर का तृतीय वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा—जो नेपाल राज्य के आर्यसमाज के इतिहास मे प्रथम है—निकाली गई। बाहर से पधारे हुए अनेकों मनीषी प्रचारकों ने आर्यसमाज के मन्तव्य एवं उद्देश्यो से जनता को अवगत कराया। यज्ञ के ब्रह्मा ब्र० अखिलेश्वर ने प्रातःकालीन प्रवचनो मे बताया कि संसार का कल्याण वैदिक धर्म पर चलकर ही सम्भव है। नेपाल अधिराज्य मे आर्यसमाज के कार्यो को प्रगति देने हेतु कई योजनायें स्वीकृत की गई।

विराट नगर निवासी श्री रामकुमार अग्रवाल ने समाज मन्दिर, यज्ञशाला, गोशाला आदि के निर्माणार्थ १ लाख २०हजार रु० मूल्य की भूमि दान मे दी है। सम्पूर्ण आर्यजगत इस दानवीर के प्रति अपना आभार प्रकट करता है। —सभामन्त्री

—आर्यसमाज फतेहाबाद के निर्माता एवं कर्मठ ऋषि भक्त पं० कन्हैयालाल व्यास का ९० वर्ष की आयु मे २०-११-८७ को निधन हो गया।

—आर्यसमाज दीबा (गढ़वाल) के मन्त्री श्री महेशचन्द्र भट्ट की भतीजी श्रीमती रामेश्वरी देवी का बहुत ही दु:खद परिस्थिति मे २९-१०-८७ को निधन हो गया।

उत्तर प्रदेश के आर्यो !

आज आप अपनी एवं आर्यसमाज के प्रचार की शिथिलता से भली भांति परिचित हैं और कभी न कभी आर्यसमाज के बीते हुए स्वर्ण युग को याद भी करते होंगे। भूतकाल को सोचते-बोलते या लिखते समय हृदय प्रसन्न होता है और वर्तमान दशा को देखकर मन रो उठता है। हमारा प्रचार केवल आर्यसमाज मन्दिरो मे ही सीमित हो गया है और वह भी बड़े नगरो मे—ग्रामों मे तो प्रचार बिल्कुल शून्य है अनेको आर्यसमाजो मे ऐसे तत्व घुस आये हैं—जो महर्षि के सिद्धान्तो के प्रति कोई श्रद्धा नही रखते और फिर भी आर्यसमाज (भवनो) एवं संस्थाओ पर अधिकार जमाये बैठे है। परिणाम स्वरूप हमारे साप्ताहिक सत्संग और वार्षिक उत्सव बिल्कुल आकर्षण का केन्द्र न होकर प्रभावहीन हो गये है। विद्वान आर्य नेता और प्रचारक केवल शहरो मे रहना या जाना चाहते हैं—ग्रामो मे जाना कोई पसन्द नहीं करता। (सच) तो यह है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे आर्यसमाज के नाम को भी लोग नहीं जानते। शहरो के लोग अब व्याख्यानो मे सत्संगो मे रुचि नहीं रखते—वह केवल टी० वी०—सिनेमा एवं अखबार को ही उपयोगी मानते है—उनमे प्रचार करने का आशा के अनुरूप फल नहीं मिलता—ग्रामीण जनता आपकी बातो को सुनना चाहती है—परन्तु हम ग्रामो मे जाना ही नहीं चाहते।

नगरो मे भी आर्य लोग केवल मात्र अपनी गद्दी या पद सुरक्षित करने की ही चिन्ता मे रहते है। किसी प्रकार से चुनाव जीत जायें—यह ही लक्ष्य सामने होता है।

आज आर्यसमाज मे भी कुछ विद्वान—श्रद्धालु—तपस्वी—त्यागी बलिदानी महानुभाव अवश्य है—जिन पर हमको गर्व भी है। वह भी आज की दशा देखकर चिन्तित अवश्य है—परन्तु पता नहीं क्यो वह आगे न आकर उदासीन होकर बैठ गये हैं।

आर्यो ! एक स्वर्ण अवसर हमारे पास आया है इस पर हम अधिकाधिक संख्या मे बैठकर अपनी दशा पर गम्भीरता से विचार करें। वह है—उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा का हम सब सहयोग करें क्योंकि हमारे सामने लक्ष्य आर्यसमाज का प्रचार एवं प्रसार है। हम व्रत लें कि हम किसी भी प्रकार के आपसी झगड़े नहीं करेंगे। अपनी शक्ति एवं धन को मुकदमो मे न लगाकर महर्षि दयानन्द के यज्ञ मे आहूत करेंगे।

उठो—जागो-सावधान हो जाओ—पूर्वजो की तपस्या और बलिदान की रक्षा करो। दयानन्द की आत्मा आपसे यही चाहती है।

वैद्य कुन्दनलाल आर्य

५४९/१९२ अर्जुन नगर (आलमबाग) लखनऊ-५

शोक समाचार

निम्न आर्य व्यक्तियों के दुःखद निधन का समाचार प्राप्त हुआ है। प्रभु दिवंगत आत्माओ को शान्ति एवं पारिवारिक जनो को धैर्य प्रदान करें— —सभा मन्त्री

—फतेहाबाद के समाजसेवी तथा फतेहाबाद आर्यसमाज के भू० पू० प्रधान श्री माताप्रसाद जी का ७६ वर्ष की आयु मे दुःखद निधन हो गया।

धर्म निरपेक्ष नहीं, सम्प्रदाय निरपेक्ष

(शेष पृष्ठ तीन से आगे)

प्रवर्तको को निकाल दिया जाये तो उनके भेद की सबसे बड़ी दीवार गिर कर चूर-चूर हो जावेगी और वे उपरोक्त नैतिक तत्वो को निस्सकोच रूप से स्वीकार करने हेतु बाध्य हो जावेंगे।

यह महान् आश्चर्य की बात है कि पश्चिम के देशो ने अपने स्वार्थ-वश धर्म और सम्प्रदाय को गड़बड़ मे डाल कर सम्प्रदायों के विरुद्ध बुद्धि वादियो और वैज्ञानिको के क्रोध और आक्रोश को धर्म के विरुद्ध मोड़ दिया, जबकि सम्प्रदाय को उखाड़ फेंकना चाहिए था। अर्थात सम्प्रदाय से नाक-भौ सिकोड़ने के स्थान पर धर्म को ही अफीम का नशा घोषित किया गया। बेचारा धर्म तो सदा से निर्दोष रहा है और रहेगा। सम्प्रदायवाद के कारण दोहरी मानसिकता उत्पन्न हो गई। सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार सूर्य पृथ्वी का चक्कर काटने लगा और स्कूल मे वैज्ञानिको की कृपा से पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाने लगी। ईसाई लबको मे कभी वैज्ञानिको के विरोध मे आक्रोश आता तो कभी वैज्ञानिकगण धर्म के विरुद्ध विष उगलने लगते। इस प्रकार विज्ञान और बुद्धि के विरुद्ध बाते न केवल ईसाईयत या इस्लाम मे अपितु ससार के सभी सम्प्रदायो मे विद्यमान हैं। इसीलिये पश्चिम के राजनीतिज्ञो ने धर्म के विरुद्ध घोषणा कर अपनी राजकीय व्यवस्था को धर्म निरपेक्ष घोषित करने मे बुद्धिमानी की। वस्तुत उपरोक्त तथ्यो के आधार पर बुद्धि और विज्ञान के विरुद्ध मत-सम्प्रदायो से दूर रहने के लिए ही यह घोषणा की गई, इसलिये इसे 'धर्म निरपेक्ष' नहीं सम्प्रदाय निरपेक्ष कहना ही बुद्धिमत्ता पूर्ण वैज्ञानिक मान्यता हो स्वीकार करना चाहिये। फलतः हमारा यह राज्य धर्म सापेक्ष हो और सम्प्रदाय निरपेक्ष घोषित होना चाहिये। धर्म निरपेक्ष का तात्पय नतिकता, बुद्धि तथा वैज्ञानिकतारहित हो जावेगा, जो कि बुद्धि-वादियो तथा वैज्ञानिको को कभी भी स्वीकार नहा होगा।

"युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द"

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

क इस सिद्धान्तानुसार नारी जाति की समादरणीयता का प्रतिपादन किया, तथा पुनर्विवाह का प्रचार किया जिससे अनेक विधवाओ का जीवन सुखमय बन गया। उन्हीं की प्रेरणा से बने अनाथालय दलिताश्रम तथा नारी निकेतन आदि सस्थान आज भी निराश्रितो की सेवा कर रहे हैं। समाज के सभी अगो म दोषो के स्थल पर गुणों को प्रतिष्ठापित करने का महर्षि ने आजीवन प्रयत्न किया।

महर्षि का प्रयास सफल हुआ धर्म के यथार्थ स्वरूप से आज सर्व-साधारण व्यक्ति भी प्रायः परिचित है। एक ही भोजनालय मे सभी वर्णो के व्यक्ति बिना भेद-भाव के भोजन कर लेते है। केवल स्वच्छता होनी चाहिये। किस वर्ण का व्यक्ति भोजन परोस रहा है, इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं रही। धर्म के नाम पर होने वाली पशु हत्या मे भी काफी कमी हुई है। वेद विषयक भ्रान्तियो का भी निराकरण हो गया। वेद की महत्ता तथा स्वतः प्रामाणिकता के विषय मे भी अब कहीं सन्देह नहीं है। सभी वर्णों के व्यक्ति समान रूप से वेदो को पढ़ने-पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। आकाशवाणी से भी वेद मन्त्रो के पाठ का प्रसारण होता है। अनेक देवियां वेदों की विदुषी बनकर वेद प्रवचन तथा वेदो के विषय मे शोध कार्य कर रही हैं अनेको उच्चतम शिक्षा पाकर विभिन्न क्षेत्रो मे सफलता पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन कर रही है। जो मानव समुदाय महर्षि के समय स्त्री शिक्षा के घोर विरोध मे था, उन्हीं के द्वारा अनेक कन्या विद्यालयो की स्थापना तथा व्यवस्था की जा रही है। प्रबुद्ध भारतवासियो के हृदय मे अपनी सस्कृति और सभ्यता की सर्वोत्कृष्टता का अभिमान है। नारियो को सर्वत्र सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त है। जिन धर्माचार्यों ने महर्षि की शुद्धि योजना का अनेक वर्षों तक समर्थन नहीं किया आज उन्हीं के उत्तराधिकारी तथा अनुयायी अपने बिछुड़े हुए बन्धुओ को पुनः अपने मे लाने हेतु भगीरथ श्रम कर रहे हैं। इस समय अपना देश स्वतन्त्र है। महर्षि ने जिस युग के निर्माणार्थ आजीवन परिश्रम किया, तथा दारुण यातनायें सहीं आज उस युग का साक्षात् दर्शन उन्हें सर्वथा युग प्रवर्तक सिद्ध कर रहा ह। महर्षि की इच्छा थी कि अपने देश का शासन अपनी शासन पद्धति से किया जाय। सम्पूर्ण देश मे अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा, अपनी सस्कृति तथा अपनी सभ्यता प्रतिष्ठापित हो, किन्तु दुर्भाग्यवश जिन हाथो म देश का शासन गया, वे इस दिशा मे चाहे कारण कुछ भी रहे हो, ध्यान न दे सके। इसी-लिए आज भी यहा सुख और शांति का अभाव है। भोगलिप्सा तथा व्यक्तिगत स्वार्थ परता का प्रतिक्षण विकास हो रहा है। यह सब राष्ट्र के लिए अत्यन्त घातक है। अतः हम सभी को महर्षि की अपूर्ण इच्छाओ को पूर्ण करने का सकल्प लेना चाहिए, तभी हम स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखकर उसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

आर्य समाजों से अनुरोध

विगत २-३ वर्षो से 'आर्यमित्र' द्वारा हम निवेदन करते रहे है कि अपने समाज का निर्वाचन जिला सभा से प्रमाणित कराके प्रकाश-नार्थ भेजा करें। इस पर थोड़ी सी ही आर्य समाजो ने ध्यान दिया है।

इस वर्ष पुनः अनुरोध किया जाता है कि जब तक जिला सभा से निर्वाचन प्रमाणित नहीं होगा, तब तक आर्यमित्र मे स्थान न मिल सकेगा। सूचनार्थ—

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

"वेदों के राजनीतिक सिद्धांत" पर

विचार विमर्श

[पृष्ठ ८ से आगे]

अर्थात् वह ऐसी वाणी होनी चाहिए जो ,राज्य सम्बन्धी इकट्ठा होने की जगह में 'बोली जाती हो । परमात्मा की वाणी में यह बात संगत नहीं हो सकती । अतः हमें वागाम्भृणी का अर्थ बहुतों की वाणी (संख्यागत महत्व में) ऐसा करना होगा । बहुतों की वाणी राष्ट्र के लोगों की वाणी हो सकती है ।' (खण्ड १. पृ० २२१, २२२) ।

यह सम्पूर्ण सन्दर्भ ही विचारणीय है । किसी मन्त्र या सूक्त का देवता होने के लिए उस देवता वाचक शब्द का मन्त्रों में उल्लेख होना आवश्यक नहीं है जैसे ऋग्वेद १०. १९०. के अघमर्षण सूक्त में अघमर्षण व भाववृत्त शब्द नहीं है । पुनरपि इस सूक्त को अघमर्षण सूक्त कहा जाता है और इस सूक्त का देवता भाववृत्त है ।

राष्ट्री और संगमनी शब्द का अर्थ क्रमशः धात्वर्थ के आधार पर (राज् +ष्ट्रन् + ङी.प्) 'प्रकाशित करने वाली' और (सम् + गम्लृ + ल्युट् + ङीप्) 'मेल कराने वाली' भी हो सकता है । कुछ आचार्यो ने 'राष्ट्री' का अर्थ 'विश्व सम्राज्ञी' अर्थात् परमात्मा और संगमनी का अर्थ (ऐश्वर्यों की, लाकों का) 'प्राप्त कराने वाली' किया है । (द्र० चतुर्वेद भाष्यकार स्व० प० जयदेव विद्यालंकार का ऋग्वेद भाष्य भाग- ७ पृ० ५१८, प्रथमावृत्ति) इस प्रकार वागाम्भृणी का अर्थ उस महान् प्रभु की वाणी (गुणगत और परिणाम गत महत्व में) हो सकता है । डा० रामनाथ वेदालंकार ने भी इस मन्त्र का परमेश्वर परक अर्थ किया है (द्र०--वेद मजरी पृ० २३७ प्रथम सस्करण) क्या इन विद्वानों के परमेश्वर परक अर्थ गलत हैं ?

वेदार्थ में ऊहा और तर्क अनन्य सहायक होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है । किन्तु पूर्वकृत आचार्यों द्वारा किये गये अर्थों और वैदिक प्रमाणों को सर्वथा अनदेखा करके केवल तर्काधारित अर्थ प्रामाणिक नहीं हो सकता । ऐसी स्थिति में अर्थ बहुधा असगत भी हो जाता है । म. आचार्य जी ने प्रस्तुत ग्रन्थ के दूसरे खण्ड के पृ० १७१ पर' आवा रथोअश्विना...(ऋ० १. ११८. १) तथा 'त्रिबन्धुरेण त्रिवृत्ता' (ऋ० १. ११८. २) मन्त्रों को उद्धृत किया है । प्रथम मन्त्र मे 'त्रिबन्धुरः' का अर्थ करते हुए आचार्य जी लिखते हैं–'त्रिबन्धुरः शब्द का क्या भाव है यह चिन्तनीय है । ऊपर उड़ते हुए विमान के तीन प्रधान अंग दो पक्ष और एक धड़ ही दीखते है । सम्भवतः इस विचार से उसे त्रिबन्धुरः कहा गया है ।' (खण्ड २ पृ० १७७-१७८) सम्भवतः आचार्य जी के अनुसार अर्थ निर्णय का प्रमुख आधार 'औचित्य' शास्त्रीय प्रमाण न होकर स्वपरिकल्पित कल्पना ही हो सकती है, अतः ऐसा लिखा गया होगा ।

यहां इस मन्त्र मे 'त्रिबन्धुरः' शब्द का अर्थ रथ या विमान में सारथी या परिचालक के बैठने का स्थान है, जैसा कि महाभारत में लिखा है–

अन्ये छत्रं वरुथं च बन्धुरं च तथाऽपरे ।
गन्धर्वा बहुसाहस्रास्तिलशो व्यधमन् रथम् ।।

अर्थ–हजारों संख्या वाले गन्धर्वों ने रथ के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये । किन्हीं ने छत्र तोड़ दिया, किन्हीं ने वरुथ, छत्र के ऊपर के भाग को तोड़ दिया, अन्यों ने बन्धुर–सारथी के बैठने के स्थान को नष्ट कर दिया ।

इस प्रकार 'वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त' के थोड़े से स्थलों पर इस लेख में मैंने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं । आशा है आचार्य जी और अन्य आर्य वैदिक विद्वान् इस पर गम्भीरता से विचार करेंगे ।

देवता मोक्षं इच्छन्ति

[पृष्ठ ५ का शेष]

आत्मायें पड़ी हुई हैं । देह त्यागने पर मुक्ति की कामना अपने पुण्य कर्मों के आधार पर करना और बात है पर देह में रहते हुये 'विदेह' बनकर मुक्त रहना प्रमुक्ति है अर्थात् प्रकृष्ट मुक्ति है। सन्त कबीर ने इस सत्य का साक्षात्कार कराते हुए कहा था---

जियत मरण के पाश न काटे
मर कर करे मुक्ति की आशा ।

जो बन्धन मे डालता है, वह मुक्त करने की भी क्षमता रखता है । जिस प्रकार चित्र पहेली में एक केन्द्र होता है, एक प्रवेश द्वार होता है तथा उस केन्द्र तक पहुंचने के अनेक मार्ग दर्शाए हुए होते है, जो कहीं न कहीं बन्द हो जाते हैं परन्तु एक ही मार्ग ऐसा होता है जो लक्ष्य तक ले जाता है, उसी भांति शरीर के बन्धनों से मुक्त होने का भी एक ही मार्ग है अर्थात् उस परमदेव के गुणों को धारण कर उसके समान समदर्शी हो जाना, सबके साथ स्नेहवत व्यवहार करना और सबके हृदय में आनन्द के साथ वास करना ।

पर यह साधना वही करेगा जो प्रथम अपनी ज्ञानेन्द्रियों को अधिकाधिक शून्यत्व की ओर ले जाएगा । वास्तविकता तो यह है कि धी का अभ्यास ही निम्न शून्यताओं से आसनस्थ होकर समावस्था में होता है–

(१) शब्द शून्यता (२) दर्शन शून्यता (३) घ्राण शून्यता (४) रस शून्यता (५) स्पर्श शून्यता (६) विचार शून्यता (७) गति शून्यता (८) आकृति शून्यता (९) वर्ण शून्यता (१०) चक्र शून्यता (११) शरीर शून्यता ।

रूप रस गन्ध श्रवण और स्पर्श शून्यताओं को धारण करके ही अगली शून्यताओं को धारण किया जा सकता है । जो इन समस्त शून्यताओं को विधिवत धारण करता है, वह ही अपनी आत्मन को शुद्ध, बुद्ध और प्रबुद्ध बनाता है । ऐसी ही आत्मा जगत में व्यापनशील अर्थात् यश को प्राप्त करती है । वह परमदेव ऐसी ही यशस्वी आत्माओं पर रीझता है और उसकी कृपा के भी ऐसे ही देव भागी होते है ।

अतएव जो मानव अपने को देवत्व की ओर निरन्तर अग्रसर करते है, उनकी ही आकांक्षा मोक्ष प्राप्त करने की होती है क्योंकि मुक्ति ही मानव जीवन का वह चरम लक्ष्य है, जिसके लिए परमात्मा ने उसे सर्व श्रेष्ठ तन और मन प्रदान किया है ।

से आँख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—माघ शुक्ल १३ सम्वत् २०४४ रविवार ३१ जनवरी १९८८, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

हमारा प्रचार कार्य

आर्यसमाज का मुख्य कार्य विश्व में वैदिक संस्कृति और सभ्यता का प्रचार व प्रसार करना है। इसी कार्य को प्रगति देने के लिए समाजों को समाजों की स्थापना हुई जो साध्य न होकर साधन हैं। साध्य तो हमारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ही है। इस समय बुद्धिजीवी जनता वैदिक धर्म के अकाट्य सिद्धान्तों के प्रति आकृष्ट भी है और हृदय से उसकी सत्यता को स्वीकार भी कर रही है। अब ईश्वर के विषय में ऋषि दयानन्द की दी हुई परिभाषा से किसी को कोई मत-भेद नहीं है जो विशेषण आर्य समाज के दूसरे नियम में ऋषि ने सन्नि-हित किये वे सर्वमान्य हो चुके हैं। वेदों की प्राचीनता और उनमें निहित शाश्वत सत्य सिद्धान्तों पर सभी विवेकीजन एकमत हैं किन्तु कभी २ मानव स्वभाव की दुर्बलता और ईषणाओं के प्रति आसक्ति कुछ ऐसे तत्वों अथवा समूहों का सृजन कर देती है जिसके कारण अज्ञानी जनता की श्रद्धा और विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हुए कुछ लोग अन्यथा बातें भी कहने लगते हैं। ऐसी बातें सृष्टि नियम के विरुद्ध तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं परन्तु अन्धविश्वास मिश्रित श्रद्धा के कारण जनता का एक वर्ग बिना सोचे विचारे उन पर चलने लगता है और धीरे-धीरे एक बड़े समूह में परिवर्तित होजाता है। संख्याधिक्य के कारण बहुमत अल्पमत के लाभ और हानियों से उनका सम्बन्ध जुड़ जाता है और फिर लोकेषणा+वित्तैषणा की प्रवृत्ति धीरे २ बढ़ती जाती है, इसी प्रकार उन्हें केवल मात्र अथवा समूह बढ़ाकर भौतिक उपलब्धियों पर आधिपत्य पाने की उनकी लालसा भी तीव्रतर होती जाती है। यही प्रवृत्ति आगे चलकर निहित स्वार्थों को जन्म देकर पारस्परिक वैमनस्य का कारण बन जाती है और शान्ति पथ का राही मानव अशान्ति का पुंज बन जाता है।

हमारे ऋषिवर्य ने मानव समाज को शांति और सुचितासम्पन्न बनाने हेतु जिस उपदेशात्मक प्रणाली का आश्रय लिया था उसके दो अंश थे (१) खण्डनात्मक (२) मण्डनात्मक। उनकी उपासना का सर्व प्रथम आघोष ही यही था 'दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव' हे प्रभो? बुराइयाँ दूर करो तब भद्र (कल्याणकारी) विचारों का प्रवेश कराओ। जब तक हृदय मलिन विचारों से दूषित रहेगा पवित्र विचार प्रवेश ही नहीं कर सकते। यही स्थिति समाज अथवा समूह पर भी लागू होती है। हम जब तक संसार से मिथ्या आडम्बर, अन्धविश्वास और ईश्वर तथा धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक प्रकार की तथ्यहीन कुरीतियों से मानव समाज को छुटकारा नहीं दिला पायेंगे तब तक वैदिक सत्य शाश्वत ज्ञान का प्रवेश उनके अन्तःकरण में कराना सम्भव नहीं है।

आज हमारे उपदेशक। प्रचारक बड़े परिश्रमशील और कठिन परि-स्थितियों में भी आर्य समाज के प्रचार की धूम मचाये हुए हैं। किन्तु उनके प्रचार का अधिकांश जन श्रद्धा को वैदिक धर्म के प्रति उभाड़ने वाला श्रद्धा समन्वित प्रयास होता है। अकाट्य तर्कों को प्रश्रय देकर 'दुरित' को बलपूर्वक व्यक्ति या समाज के हृदय से उखाड़ फेंकने की ओर कम। यह कमी तभी दूर हो सकती है जब हमारे संस्थान योग्य उपदेशकों को वेद में पारङ्गत ही नहीं अपितु विश्व की अन्य अनेक भाषाओं में प्रवृद्ध तथा सभी धार्मिक मान्यताओं के तुलनात्मक अध्येता बनाकर उन्हें प्रचार क्षेत्र में भेजें।

हमें अच्छी तरह याद है कि पश्चिमी योरोप में हजारों मील दूर स्थित देशों से ईसाई प्रचारकों ने इस देश में आकर यहाँ की भाषा सीखी विभिन्न प्रचलित मतमतान्तरों के अनेक प्रकार के शास्त्र मन्तव्यों का अध्ययन किया। बोलियाँ तक सीखीं और फिर जा क- ऊर जनता में प्रचार किया। हम चाहते हैं प्रचार के जो विभिन्न आधुनिक तरीके हैं उन्हें अपनाया जाये। सस्ते शिष्ट साहित्य का प्रकाशन हो योजनाबद्ध तरीके से प्रचार को गति दी जाय। उपदेशकों को प्रत्येक भाषा और धर्म का तुलनात्मक अध्येता बनाया जाय। इस प्रकार सुसं-गठित ढंग से कार्य करने पर हम अपने प्रचार कार्य में सफल हो सकते हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस सब संघर्षों में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सुधीरा जी विनोद ने पूरी तरह से साथ दिया। वे अत्यन्त धर्मनिष्ठ थीं और घर में नित्य दैनिक यज्ञ करती थीं। वे भी आपको मृत्यु के कारण छोड़ गईं परन्तु आपका मनोबल कम नहीं हुआ। इनकी मृत्यु से पूर्व एक युवा पुत्र आप खो चुके थे। फिर भी आप अडिग रहे। परन्तु जब होनहार बेटा प्रमोद भी चला गया तो आप एक प्रकार से टूट गए। पुनरपि आप धैर्यपूर्वक अपने विचारों को लेखनी द्वारा 'प्रभात' में प्रकट करते रहे।

आज प्रिय सुबोध ने आपका उत्तरदायित्व पूरी तरह से सम्भाल लिया है। मेरठ कभी आपको भूलेगा नहीं। आपको सिंह पुरुष के रूप में सदैव याद किया जाएगा। आर्य जगत की ओर से आपको सादर नमन।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

शोक सम्वेदना

सम्पूर्ण आर्यजगत में यह समाचार बड़े शोक के साथ सुना जायेगा कि मेरठ के एक महान पत्रकार, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, समाज सेवी श्री विश्वम्भर सहाय जी विनोद का आकस्मिक निधन हो गया है। आर्यजगत एवं राष्ट्र से एक महान प्रतिभा सम्पन्न समाज सुधारक चला गया जो हमारे लिए अपूरणीय क्षति है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

वेदोपदेश

वरुण वरणीय है

[श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' बी-६४ राजाजीपुरम्, लखनऊ]

मन्त्र–

यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जने अभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥

(ऋ० ७–८९–५)

ऋषि : वसिष्ठः देवता : वरुणः

अन्वय –

वरुण देव ! मनुष्याः दैव्ये जने यत् किं च इदं अभिद्रोहं चरामसि, यत् तव धर्मं अचित्ती युयोपिम, तस्मात् एनसः नः मा रीरिषः ।

शब्दार्थ–

(वरुण देव) शान्तिदायक परमेश्वर ! (मनुष्याः) [हम] मनुष्य (दैव्येजने) दिव्य जनों के प्रति (यत् किम् च इदम् अभिद्रोहम्) किंचित सा भी विरोध (अचित्ती चरामसि) अचिन्त्या अर्थात् बिना कुछ विचार किए हुए भी करें, अथवा हो जाता है [वह] (तव धर्म युयोपिम) आपके नियमों का विरोध या उल्लंघन होता है (तस्मात् एनसः) उस पाप से (नः) हमें (मा रीरिषः) हानि रहित करें, बचाएं ।

व्याख्या–

इस मन्त्र में परमात्मा को वरुणदेव शब्द से सम्बोधित किया गया है । यद्यपि परमात्मा का मुख्य नाम 'ओम्' है तथापि उसे अनेक गुण कर्म वाचक नामों से भी सम्बोधित किया जाता है । 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋ० १–१६४–४६) इस मंत्रांश के अनुसार उस एक प्रभु को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं । परमात्मा को वेद में 'पुरुहूत' कहा गया है । 'पुरु+हूत' अर्थात् जिसे बहुत बार पुकारा जाता है, बहुत पुकारते हैं, बारम्बार पुकारते हैं । सुख में भले ही बिरले उसे पुकारते हों परन्तु दुःख में तो उसे सभी पुकारते हैं, पुनः पुनः पुकारते हैं । सन्त कबीर ने इस सत्य का वर्णन करते हुए कहा था–

दुःख में तो सिमरन करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सिमरन करें, तो दुःख काहे को होय ॥

जहां साधारणजन उसे दुःखों के निवारणार्थ अथवा स्वार्थपूर्ति के निमित्त पुकारते हैं, वहां साधक जन उसे उठते बैठते सोते जागते आत्मना उसे पुकारते रहते हैं क्योंकि उनकी आत्मा में उस परम की सच्ची लगन होती है और वे उस प्रियतम के दर्शन और मिलन के बिना एक तड़प को अनुभूत करते हैं । साधकों के अन्तःकरण में देवासुर वृत्तियों का जो सतत संघर्ष चलता रहता है, उसमें अपने देवत्व को विजय के लिये, अपने जीवन सदन से अन्तः शत्रुओं को पराजित करने के लिए आत्म शक्ति को संजोने के लिये भी वे उस सर्व शक्तिमान से शक्ति की ही सतत प्रार्थना करते हैं ।

साधक परमात्मा को जब कर्मवाचक नामों से सम्बोधित करते हैं तो उनका एकमात्र उद्देश्य होता है, उस सर्व व्यापक के कर्मों के अनुकूल अपने कर्मों को करना । 'विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥' (ऋ० १–२२–१९) के अनुसार प्रभु उनका युक्त सखा है । विराट विश्व में उसके कर्मों को देखकर वे उसके अनुगामी बनते हैं और ऐसा करते हुए उनकी दृष्टि 'तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम्' ॥ (ऋ० १–२२–२०) के अनुसार उस परमज्योतिमय के धाम पर ही लगी रहती है ।

जहां वह परम सविता देव है, अंजन देव है, प्रकाशमय है, आग्नेय गुणों से भरपूर अरुण है, वहां वह शान्ति प्रदाता वरुण भी है । जल शान्तिदायक है अतएव जल के देवता को भी वरुण कहते हैं । प्रस्तुत मन्त्र में परमात्मा का सम्बोधन वरुण उसके शान्तिमय गुणों का परिचायक है । जब साधक परमात्मा को उसके गुण वाचक नामों से सम्बोधित करते हैं, तो उनका उद्देश्य होता है, उन गुणों को अपने भीतर धारण करना ।

परमात्मा को बिरले ही, केवल उससे प्रणयार्थ स्मरण करते हैं अन्यथा उसे तो सांसारिक जन, भले ही वे साधक क्यों न हों, अपने लिये पुकारा करते हैं । गुणवाचक सम्बोधन इस सत्य का दर्शन कराते हैं कि पुकारने वालों में उन गुणों का अभाव है, न्यूनता है । रोगी वैद्य को उसके नाम से नहीं अपितु उसके गुण विशेष से उसे सम्बोधित करता है, भले ही उस वैद्य में अन्य अनेक गुण भी क्यों न हों क्योंकि उस रोग से निवृत्ति दिलाने की जो क्षमता वैद्य में है, वह पुकारने वाले में नहीं है और पुकारने वाला अपनी इस त्रुटि की पूर्ति के लिए ही उस विशेष गुणवाचक नाम का प्रयोग करता है ।

इस संसार में हम मानव अपने भीतर अशान्ति को अनुभूत करते हैं । हमारी इस अशान्ति का मूल कारण है, हमारे पाप समाहित रहते हैं वे सर्वत्र अशान्त रहते हैं । परमदेव 'शुद्धम, अपाप विद्धम्' (यजु० ४०–८) नितान्त पवित्र है, उसे कोई पाप नहीं बेधता क्योंकि वह मानवों की भांति कायाधारी नहीं है,वह तो 'अकायम् अस्नाविरम्' बिना नस नाड़ी और शरीर के है और सर्वथा नितान्त शान्त है । वह तो मानवों के पापों को दण्डित करने वाला है । वह सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान है, सर्वोपरि है और सर्वनियन्ता है । वह सब देखता और सुनता है और उसकी न्याय व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि उससे किसी का भी बच पाना सम्भव नहीं है परन्तु उसकी यह न्याय व्यवस्था वास्तव में बड़ी हितकारी है । अपराधियों के लिए मानव ने अनेक दण्ड विधान निर्मित किये हैं जबकि प्रभु के दण्ड विधान पापियों के लिए है और विभिन्न योनियों में पापियों की आत्माओं का स्थानान्तरण, उनके सुधार के आधार पर है, ठीक उसी भांति जैसे मानवों को उनके अपराधों के आधार पर निश्चित काल के लिये बन्दी गृहों में डालना और यातनायें देना ।

मानवों में पापों की जो उत्पत्ति होती है, उसके अनेक कारण हैं, जिनका वर्गीकरण इस भांति है–

१–बाल-वृत्तिक–बालवृत्ति अर्थात् अबोधता के कारण, बिना किसी प्रयोजन के मनोरंजनार्थ यथा पशु पक्षी को आघात पहुंचाना, सड़क पर केले के छिलके फेंक देना आदि ।

२–वीर वृत्तिक–अपनी शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करने के निमित्त अपने से जो अशक्त हैं उन्हें पीड़ा पहुंचाना ।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

हमारा गणतन्त्र अमर रहे

डा० शकुनचन्द्र आर्य, आर्य समाज लालगंज रायबरेली

गणतन्त्र भारत के लिए कोई नयी वस्तु नहीं है। इसका उल्लेख तो हमारे प्राचीन साहित्य में भी मिलता है। जिसमें गणपति शब्द का प्रयोग किया गया। स्पष्ट है कि जब गणराज्य थे तो उसके स्वामी को गणपति कहते थे। भारतीय इतिहास में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि महात्मा बुद्ध के जीवन काल में भारत में कई गणराज्य थे जिनमें शाक्यगण, लिच्छविगण, विदेहगण, ज्ञातृकगण, अल्लकप्पा के बुली, देवदह और रामग्राम के कोलिय, पिप्पलिकानन के मोरिय, वज्जि, मल्ल (कुशीनारा), मल्ल (पावा) तथा अन्य उल्लेखनीय है।

परन्तु भारत का वर्तमान गणराज्य जिसका जन्म २६ जनवरी १९५० को भारतीय संविधान सभा द्वारा तैयार किये गये संविधान के अनुसार हुआ था, अ मूल्य पूर्ण एवं उल्लेखनीय है। यह संसार का सबसे बड़ा गणराज्य है जिसकी सीमाएं उत्तर में चीन तथा नेपाल, पूर्व में बंगलादेश एवं बर्मा, पश्चिम में पाकिस्तान की सीमाओं को छूती हैं, दक्षिण में हिन्द महासागर उसके चरणों को चूमता है। संविधान के अनुसार भारत का सर्वोच्च शासक राष्ट्रपति होता है जिसका चुनाव एक निर्वाचक मण्डल द्वारा होता है जिसके मतदाता सभी सांसद तथा राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य होते है। संवैधानिक रूप में वह देश का सबसे प्रमुख अधिकारी तथा समस्त सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति होता है परन्तु व्यावहारिक रूप में कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़ कर वह नाम मात्र का राज्य का प्रमुख होता है और गण-राज्य का सारा शासन प्रधान मन्त्री उसके नाम पर चलाता है।

ऐसे तो अपना भारत १५ अगस्त १९४७ ई० को अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया था, इस दृष्टि से वही हमारा मुक्ति पर्व है। परन्तु हमारी उपरोक्त स्वाधीनता तब तक अधूरी रही जब तक कि वह २६ जनवरी १९५० को गणतन्त्र नहीं बन गया, जबकि ब्रिटेन की महारानी के प्रतिनिधि गवर्नर जनरल का पद समाप्त होकर उसके स्थान पर राष्ट्रपति हमारा सर्वोच्च अधिकारी बना, वायसराय हाउस राष्ट्रपति भवन बन गया उसके ऊपर से यूनियन जैक सदैव के लिए हटा दिया गया। इसी से १५ अगस्त के साथ-साथ २६ जनवरी भी हमारा राष्ट्रीय पर्व बन गया। इस दिन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि आज ही के दिन यानी २६ जनवरी,१९५० को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की देश को पूरी तरह स्वतन्त्र कराने की वह प्रतिज्ञा पूरी हुई जिसे उसने ३१ दिसम्बर १९२९ ई० को लाहौर के रावी के तट पर पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में की थी।

उल्लेखनीय प्रगति हुई

निःसन्देह २६ जनवरी १९५० के बाद अड़तीस वर्षों में देश ने भौतिक दृष्टि से उल्लेखनीय प्रगति की। जहां पहले हमें एक मामूली सुई के लिए विदेशों की ओर देखना पड़ता था, अब हम अन्तरिक्ष युग में प्रवेश कर चुके हैं। हम परमाणु बम एवं प्रक्षेपास्त्र बनाने में समर्थ है, हमारी नभ, जल एवं स्थल सेनायें आधुनिक शास्त्रास्त्रों से सुसज्जित विश्व की सर्वोच्च सेनाओं में से एक हैं। अनेक उद्योगों तथा दवाईयों के क्षेत्रों में हम लगभग आत्मनिर्भर हो चुके हैं। मिट्टी के तेल आदि पेट्रोलियम पदार्थों के मामले में भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे है। राजनीतिक दृष्टि से भी हमारी स्थिति पहले से अच्छी है। जहाँ पहले गणतन्त्र बनते समय हम ब्रिटेन के पिछलग्गू राष्ट्र थे अब विश्व-निरगुट, राष्ट्र मण्डल तथा दक्षेस संगठन के महत्व पूर्ण देश है।

परन्तु अभी हमारी स्थिति सुरक्षित नहीं है

परन्तु जिस प्रकार कि अभी भी हमारे गणतन्त्र के ऊपर आपत्ति के बादल मडरा रहे हैं, चीन, पाकिस्तान हमारी स्वाधीनता को समाप्त करने, हमारी प्रभुसत्ता को चुनौती देने तथा हमारे प्रभाव को मिटाने के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, अमरीका गुप्त रीति से उनकी सहायता कर रहा है, उनकी सहायता से देश के अन्दर चल रहे खालि-स्तान, गोरखालैंड, झारखण्ड तथा अन्य विघटनकारी एवं हिंसात्मक आन्दोलन हमारी एकता एवं अखण्डता को ललकार रहें हैं। देश में चल रहे पाक परस्त तथा विदेशों के इशारे पर चलने वाले मार्क्सवाद एवं कम्युनिस्ट देश में अशांति, अराजकता एवं गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न कर इस देश की राष्ट्रीय शक्तियों को कुचलने का कुचक्र रच रहें हैं। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नीति से ग्रस्त हमारी सरकार भी वास्तविकता से आंख मूंद कर वोट बैंक बनाने की दृष्टि से अपनी नीतियों का क्रियान्वयन कर रही है। देश में सक्रिय विदेशी मिशनरियां भी आदिवासी क्षेत्रों में अराष्ट्रीयता के बीज बोकर देश को अनेक भागों में बाटने का षड्यन्त्र रच रही है। फिजी, सूरीनाम तथा विश्व के अनेक देशों में भारतीय प्रवासियों की स्थिति दयनीय है। निस्संदेह उपरोक्त स्थिति चिन्तनीय एवं विचारणीय है।

सबसे अधिक चिन्ता की बात हमारा नैतिक पतन है।

परन्तु सबसे अधिक चिन्तनीय बात हमारा नैतिक पतन है आज हम उन नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की अवमानना एवं अवहेलना कर रहें हैं जिनकी बदौलत हम सैकड़ों वर्षों तक विदेशी आक्रमणों का सामना करते हुए तथा उनके शासन में रहते हुए अपने अस्तित्व एवं अपनी संस्कृति की रक्षा में समर्थ रहे। "कुछ बात है कि ऐसी हस्ती मिटती नहीं हमारी" "काव्य पंक्ति में जिस कुछ बात" का उल्लेख है वह कुछ बात और कुछ नहीं अपितु हमारे नैतिक एवं चारित्रिक आदर्श है। इन्हीं आदर्शों के बदौलत महाराणा प्रताप ने सम्राट अकबर, वीर शिवाजी तथा गुरुगोविन्दसिंह ने औरंगजेब का सफलतापूर्वक सामना किया था। इन्हीं की बदौलत स्वामी दयानन्द ने अंग्रेजी शासकों का भय न कर सुधारवाद का कठोर आन्दोलन चला राष्ट्रीयता का बीजारोपण कर देश में नवजीवन का संचार किया था तथा महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन चला कर भारत माता को उनके चंगुल से मुक्त कराया था। लेकिन अब स्थिति सर्वथा विपरीत है। नयी पीढ़ी में भारतीयता, नैतिकता, देश प्रेम एवं अनुशासन का सर्वथा अभाव दिखाई पड़ रहा है, वे 'खाओ, पियो एवं मौज करो' की पाश्चात्य विचार धारा से प्रभावित दिख रहे हैं तथा उनमें से अधिकांश में देश के प्रति प्रेम एवं अभिमान का कोई भाव नहीं दिखाई पड़ता है। उनके अधिकांश शिक्षक भी अपने महान आदर्शों से च्युत दिखाई पड़ रहे हैं।

आवश्यकता है कि हम कुछ ठोस कदम उठावे

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता है कि हम हम कुछ ऐसे कदम उठावे तथा ऐसे उपाय करें ताकि लम्बे संघर्ष के बाद प्राप्त हमारी स्वतन्त्रता तथा उसके परिणाम स्वरूप जन्मा हमारा गणतन्त्र अमर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट ऋषिबोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १५-१६-१७ फरवरी १९८८ को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश-देशांतर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

ऋषि जन्म स्थली टंकारा में पानी की भयंकर कमी को दूर करने की व्यवस्था, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार में लेना टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा ऋषि जन्म स्थली को विश्व-[दर्श]नीय बनाना है।

टंकारा की गौशाला में २८ गायें हैं इस वर्ष भयंकर सूखे और चारे की कमी के कारण यह घाटा एक लाख रु० हो जाने की सम्भावना है। यह घाटा ऋषि भक्तों और गोभक्तों के दान से पूरा होता है।

अतः आप से विनम्र निवेदन है कि आप ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिये। यह दान राशि आप क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से टंकारा सहायक समिति दिल्ली' के नाम अथवा 'महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली –११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओ की ओर से अधिकाधिक राशि भेज कर ऋषि ऋण से उऋण हो और पुण्य के भागी बनें।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली दान राशि पर आय-कर की छूट है।

सभा मन्त्री

शोक सम्वेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान स्व० मदनमोहन सेठ की धर्म पत्नी का लखनऊ मे आकस्मिक निधन हो गया। वे एक धर्मपरायण आर्य विदुषी महिला थीं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार किया गया। शान्ति यज्ञ के पश्चात् उनकी सुपुत्री श्रीमती लता टण्डन ने उनकी पुण्य स्मृति में सभा को २५१) दान दिया है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज बलरामपुर (गोंडा) की स्वर्णजयन्ती

दिनांक १२ से १५ फरवरी १९८८ तक

आर्य समाज बलरामपुर (गोण्डा) की स्वर्ण जयन्ती ससमारोह मनाई जा रही है जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी, उच्चकोटि के वक्ता एवं भजनोपदेशको से पधारने की स्वीकृति मिल चुकी है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी एवं मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी भी पधार रहे है।

आनन्द उपमन्यु, मन्त्री

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल भुवनेश्वर का वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव सम्पन्न

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर मे स्थित डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल का वार्षिक क्रीड़ामहोत्सव दिसम्बर ९ एवं १० तारीख को सोल्लास सम्पन्न हो गया है। इस अवसर पर राज्य क्रीड़ा निदेशक श्रीमान अनादि साहू' आई०पी० एस० ने अनुष्ठानिक रूप में उद्घाटन करते हुए क्रीड़ा की उपयोगिता के ऊपर छात्र-छात्राओं को उद्बोधन दिया।

परिचालना समिति के चेयरमैन 'श्रीमान वीरेन्द्र मोहन पटनायक' ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए छात्र-छात्राओ को पुरस्कृत किया। स्कूल के अध्यापक एवं अध्यापिकाओ ने सर्व भारतीय स्तर मे ख्याति लाभ करके पुरस्कृत होने के कारण प्राचार्य जी को हार्दिक संवर्धना ज्ञापन करते हुए उनके द्वारा किये गये कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उत्सव के दूसरे दिन में राज्यपोलिस महानिदेशक 'श्रीमान प्रफुल्ल चन्द्र रथ' ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर विजयी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत कर उत्साहित किया। प्राचार्य 'श्रीमती यू० पी० आर० विट्ठल राजा' ने वार्षिक विवरणी पढ़ के क्रीड़ा, संगीत, नृत्य तथा चित्रकला इत्यादि क्षेत्र में अनेक सांस्कृतिक अनुष्ठानो द्वारा पुरस्कृत छात्र/छात्राओं की सूचना से सबको अवगत कराया।

अन्त में मान्यवर मुख्य अतिथि द्वारा उत्सव उल्लसित वातावरण मे उद्यापित किया गया।

महात्मा सुरेन्द्रमुनि का निधन !

'आर्यसमाज वेद मन्दिर गोविन्दनगर' कानपुर के संस्थापक सदस्य तथा 'गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त्त–बिठूर' के कोषाध्यक्ष महात्मा सुरेन्द्र मुनि (प० सुरेन्द्रनाथ शुक्ल) ७३ वर्ष की आयु में २३ दिसम्बर' १९८७ को चल बसे ! उन्होने ३० दिसम्बर १९८२ को 'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य दीक्षा' के साथ ब्रह्मर्षि ओमानन्द सरस्वती से मगधारा–नर्मदातट–खण्डवा में वानप्रस्थ की दीक्षा ली थी। वह अपने कन्धे पर (ग्रन्थ सहित–'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें !) झोला लटकाये रखते थे। प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना है।

–सभा मन्त्री

पं उदयवीर शास्त्री की पत्नी का निधन

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं वयोवृद्ध दार्शनिक श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती शास्त्री का निधन ३० दिसम्बर रात्रि को नौ बजे हो गया आपकी आयु ८२ वर्ष थी।

श्रीमती शास्त्री पिछले साढ़े छ. वर्ष से पक्षाघात से पीड़ित थीं और चलने फिरने में असमर्थ थीं। अचेत अवस्था मे ही उनका स्वर्ग वास हो गया।

४ जनवरी को शास्त्री जी के अजमेर स्थित निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति एवं परिजनों के लिए धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से शोक सम्वेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

हिन्दुओं का चौकीदार सो रहा है

लेखक–रमेशचन्द्र आर्य कोसीकलाँ (मथुरा)

हिन्दुओं को जगाते रहने वाला चौकीदार आज स्वयं सो रहा है। कोई समय था जब स्वतन्त्रता संग्राम के पूर्व से लेकर ८० वर्ष तक आर्य समाज ने इतना प्रचार किया कि जनता के हृदय में आर्य समाज के प्रति श्रद्धा ने घर कर लिया और मुक्त कंठ से प्रशंसा तथा वरद हस्त से दान देकर आर्यसमाजके काम और प्रचार को बढ़ाने में पूरी सहायता की। स्वतन्त्रता संग्राम में शहीद हुए शहीदों में ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे, सभी में देश और धर्म की लगन और ऋषि की प्रेरणा थी। साधु, सन्त, महोपदेशक, वेद प्रचार बढ़ाने और अंधकार मिटाने के लिए घर की सुख सुविधा छोड़ दौड़ में सदैव आगे रहते थे। हर दूसरे या तीसरे दिन कोई न कोई उपदेशक, संन्यासी या भजन मण्डली समाज मन्दिरों में आते ही रहते थे। भूली भटकी जनता जो पौराणिक पंडित मौलाना या पादरियों के झूठे जाल में फंस गई थी, उसे ऐसा मीठा भक्ति रस पान कराते कि उनके चंगुल से निकाल सच्चा ऋषि भक्त बना देते थे। उसी का परिणाम था कि उन दिनों लोग चोरी, बेईमानी, छलकपट, अत्याचार जैसे अपराधों से डरते थे। धर्म शिक्षा का असर था कि भाई–भाई में अटूट प्रेम और पुत्र पिता की आज्ञा का अनुगामी था। नारियाँ सुघड़, शिक्षित और पतिव्रता के बंधन से जुड़ी हुई थीं, विधर्मी भी आर्य समाज का लोहा मानते थे। हैदराबाद का धर्म सत्याग्रह हो या सिन्ध का सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी का प्रश्न सभी पर आर्य समाज ने सत्याग्रह कर अपने वीरों को केसरिया कफन पहनाकर विजय श्री प्राप्त की और विदेशों में अपनी धाक जमाई तथा वहां कितने ही देशों में आर्य समाजों की स्थापना की और उन्हें भी सत्य मार्ग का दिग्दर्शन कराया। उन दिनों हर जोकमाक मजहब आर्य समाज के संगठन से डरता था व उसके सुन्दर कल्याणकारी मार्ग पर हृदय से मोहित भी था। महिलाओं ने भी आर्य समाज के सत्संग से कुरीतियों को छोड़ना पसंद किया था। हर तीसरे वर्ष राजधानी दिल्ली में या प्रांतों में कहीं न कहीं आर्य सम्मेलन या महासम्मेलन होते ही रहते थे, जिनमें लाखों की संख्या में दूर–दूर से आकर नर–नारी सम्मिलित होते, छोलदारियों में पड़ाव डाल गर्मी की तपन हो या जाड़ों की शीतलता सबको सहते हुए इस प्रकार तीन दिन व्यतीत करते जैसे आर्यों का कोई महापर्व हो। जिसमें बड़े–बड़े आर्य विद्वानों, संन्यासियों के अध्यात्मिक प्रवचन द्वारा आत्मा का भोजन प्राप्त होता था। कैसा सुखद वातावरण था उन दिनों, सुध आने पर कराह उठता हूं।

आज सौ वर्ष से ऊपर आर्य समाज की स्थापना को हो गये, पुराने विचारक आर्य समाजी प्रायः नहीं रहे, आर्य समाज के अधिकतम वेदों के विद्वान पंडित भी अब संसार में कम ही रह गये हैं आज के युवक पाश्चात्य सभ्यता के मोहजाल में फंस गये हैं तथा टी० वी० वीडियो और सिनेमा ने उन्हें उत्तम विचारों से विमुख कर दिया है, गुरुकुलों में रुचि न होने के कारण आर्य शिक्षा की देश में कमी हुई है। अंग्रेजियत हर प्रकार से आगे बढ़ रही है, स्वयं भारत सरकार उत्तम चरित्र बनाने की दिशा में गम्भीर नहीं। देश में चारों ओर से संकट के बादल मंडरा रहे हैं। छोटे–छोटे देश भी आज भारत जैसे महान देश को धमका रहे हैं, मिजोरम फ्रन्ट के नेता हों या गोरखालैण्ड चाहने वाले अथवा पंजाब को खालिस्तान का स्वप्न देखने वाले आतंकवादी या मोपालिस्तान की मांग करनेवाले भी पाकिस्तान न बनाने वालों की तरह अपने–अपने दांव पेचों में लगे हुए हैं, परन्तु अखण्ड भारत का नारा देने वाली भारत सरकार वोट की राजनीति के सहारे ऐसे देशद्रोहियों के साथ समझौता कर हाथ मिला रही है। सांसद शाहबुद्दीन हो या दिल्ली जामा मस्जिद का इमाम बुखारी खुले आम एक और विभाजन सम्बन्धी विद्रोही नारा लगा रहे हैं। यहां तक कि अधिकतर मुस्लिम नागरिक जो यहां का अन्न खाकर तथा जल पीकर और यहां की पवित्र धरती मां की गोद में सर रखकर सोता है वह भी पाकिस्तान की जीत पर खुश और हार पर आंसू बहाता है। इस देश में रहकर बहुल मुस्लिम शहर में गुण्डे हिन्दू महिलाओं से छेड़–छाड़ करने से नहीं चूकते। हर मुस्लिम बहुल जनसंख्या वाले शहरों में साम्प्रदायिक दंगों के लिये विषैले भाषण देकर मुस्लिम लीगी नेता ही दोषी पाये गये हैं जिसमें हिन्दुओं को हर प्रकार से अधिक हानि उठानी पड़ती है और जिसे हम अपनी सरकार कहते हैं, आंखें मूंदें कायरतापूर्वक तमाशा देखती रहती है। काश्मीर भारत का अभिन्न अंग होकर भी वहां हिन्दू अपनी भूमि लेकर नहीं रह सकता है। आर्य समाज जागता हुआ होश्यार रूपी हुंकार लगाता तो देश की इतनी गयीबीती दशा न होती। आर्य समाज के अधिकारियों में से चेतना चली गई, और वे समझ बैठे हैं कि हममें शक्ति नहीं रहीं, हमारे पीछे चलने वालों की जीवन कमी है और अन्य प्रकार से भीरू हो गये हैं। जिस प्रकार हिन्दू "हम दो हमारे दो" के प्रभाव में आ फैलाव रोकने में सक्रिय है उसी प्रकार आर्य समाज आपस के झगड़ों में ही अपनी शक्ति नष्ट कर फैलाव रोक रहा है। गायों के हत्यारे गायों को कटने से नहीं रोक पा रहे हैं। प्यारा पंजाब निर्दोष जनों की लाशों से पट रहा है, किन्तु आर्य समाज सो रहा है, जगह–जगह हिन्दू लुट रहा है और आर्य समाज ने आज तक अपना मुंह नहीं खोला है। क्या हो गया आर्य समाज को, कहां गये वे नेता ?।

दुख से हृदय ठेस पाकर चीख रहा है, सच्चे भारत के हितैषी वीरो जागो और इस भयानक स्थिति का सामना करो। समय आ गया है। अब आर्य समाज आंखें खोलो और देश को खण्डित करने वालों को ललकारो, अवसर आने पर बलिदानी परिधान पहन एक बार पुनः आर्य समाज में जोर शोर से आर्य वीरों के साथ नारा बुलन्द करो कि भारत को छोड़ने वाले दरिन्दों के पर अधिक दिन तक नहीं फड़-फड़ा पायेंगे। पुनः चौकीदार बन होश्यार की स्वर-लहरी में भले ही अपने प्राण दे दें पर पग पीछे न हटायें, शहीदों की परम्परा को आगे बढ़ायें आर्य समाज के उच्चअधिकारियों इन समस्याओं के समाधान हेतु एक वृहद अधिवेशन दिल्ली में बुलायें जिसमें पुराने नये, युवक और बालक कंधे पर ओ३म् ध्वज लगायें गाते पहुंचे—

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे,
दयानन्द का कार्य पूरा करेंगे।

निर्वाचन

दि० ८।११।८७ को अन्तरंग आर्य समाज गोवर्धन (मथुरा) द्वारा डी० ए० वी० इन्टर कालेज गोवर्धन (मथुरा) की प्रबन्ध समिति (आर्य विद्या सभा) का चुनाव हुआ और निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री हरिचरनदास जी अग्रवाल
मन्त्री—एवं प्रबन्धक—श्री चौहानसिंह जी
कोषा०—महेन्द्रसिंह जी

हमारा गणतन्त्र अमर रहे

(शेष पेज ४ से आगे)

रहे। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें ध्यान देने योग्य हैं –

(१) माता तथा पिता अपने बच्चों को बाल्यकाल से ही नैतिक, धार्मिक एवं राष्ट्र प्रेम की शिक्षा दें। उनके चरित्र निर्माण के लिये विशेष ध्यान दें। इतिहास साक्षी है कि वीर शिवाजी को वीर शिवाजी ऐसा महान तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को स्वतन्त्रता सेनानी बनाने का श्रेय रामायण एवं महाभारत की नैतिक एवं धार्मिक कथाओं को था। यदि हमारे बच्चे देश भक्त एवं चरित्रवान होंगे तो हमारे गणतन्त्र को क्षति पहुंचाने का कोई प्रयास नहीं करेगा। जिस प्रकार महात्मागांधी को सत्यवादी बनने की प्रेरणा 'सत्यहरिश्चन्द्र' नामक नाटक से प्राप्त हुई थी, आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों को स्वस्थ्य प्रेरणादायक एवं चरित्र निर्माण में सहायक साहित्य पढ़ने को दे, उनके सामने अच्छी बातें रखें तथा अच्छी बातें करे।

(२) हम स्वयं देश प्रेमी बनें तथा अपने अड़ोसियों-पड़ोसियों को देश प्रेमी बनने की प्रेरणा दे। इस हेतु उन्हें अच्छा देश प्रेम से ओतप्रोत साहित्य पढ़ावे। उन्हें उसी प्रकार का चलचित्र, नाटक तथा कार्यक्रम देखने को प्रेरणा दे तथा उन्हीं संगठनों का सदस्य बनने की प्रेरणा दें जिनसे देशप्रेम उत्पन्न हो तथा देश का कल्याण हो।

(३) सभी को उन लोगों से सचेत करे जो कि इस देश में रहते हुये विदेशी हितों का पोषण कर देश की बाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर रहे है। आवश्यकता पड़ने पर उनकी गलत गतिविधियों की सूचना सरकार को दें तथा उन्हें पकड़वाने में सरकार को सहयोग दें।

(४) उन सरकारी कार्यक्रमों में सरकार को सहयोग दे जिनसे भारतीय गणतन्त्र का कल्याण तथा उत्थान हो परन्तु उन कार्यक्रमो का विरोध करे जिनसे सरकार की अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नीति की भांति राष्ट्र के लिए हानिकारक नीति की गन्ध आती हो।

(५) सरकार के ऊपर दबाव डालें तथा अन्य लोगों द्वारा डलवायें कि वह दूरदर्शन के उन कार्यक्रमों का प्रदर्शन बन्द कर दे तथा उन फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगा दे जिनसे अश्लीलता, कामुकता तथा चरित्र-हीनता को प्रोत्साहन मिलता हो। उनके स्थान पर वह देश भक्ति से युक्त एवं चरित्र निर्माण में सहायक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दे।

(६) सरकार पर इस का दबाव डलवाये कि वह भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए कठोर कदम उठाये। इसमें सरकार को सहयोग दे।

(७) बिजली, नलकूपों के पानी तथा अन्य राष्ट्रीय साधनों का दुरुपयोग न करे। न उन्हें बरबाद करे। बल्कि आवश्यकता नुसार उनकी बचत करे।

(८) देश पर संकट आने पर तन, मन एवं धन से सरकार को मदद करे तथा दूसरों को वैसा करने के लिए प्रेरित करे ताकि हमारा गणतन्त्र अमर रहे।

भूल सुधार

आर्यमित्र दि० १०-१-८८ के पृष्ठ-२ पर 'श्रद्धांजलि' शीर्षक के अन्तर्गत 'तीसवीं' शब्द भूल से छप गया है। कृपालु पाठक इसके स्थान पर 'इकतीसवीं' शब्द समझें।

प्रबन्ध सम्पादक

आभार-प्रदर्शन

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की ओर से उसके माननीय प्रधान पं० इन्द्रराज जी एवं माननीय मन्त्री पं० मन मोहन जी तिवारी ने आर्यमित्र, साप्ताहिक-पत्र दि० १०-१-८८ के माध्यम से मेरे दिवंगत पिता श्री राजर्षि कुमार सिंह जू 'देव' की इकतीसवी पुण्य तिथि-दि० ९-१-८८ पर, उनकी पावन स्मृति में जो श्रद्धा-सुमन समर्पित किये हैं उसके लिये मै उनका तथा उनके माध्यम से आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० व उसके सम्मानित मुख-पत्र आर्यमित्र का हृदय से आभारी हूं।

दि० १७-१-८८। डा० महावीरसिंह चौहान,
आर्य समाज मन्दिर, मैनपुरी।

क्षत्रिय वर चाहिए

सुन्दर, स्वस्थ, सुसंस्कृत एवं गृहकार्यों में दक्ष--स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त आर्य कन्याओं के लिए, उनके अनुरूप, आर्य परिवारों के क्षत्रिय-वरों की तुरन्त आवश्यकता है। अन्य जानकारी हेतु कृपया निम्न पते पर संपर्क करें।

कुं० ध्रुवपालसिंह चौहान,
करपरी, मैनपुरी, उ० प्र०

उत्सव एवं वैदिक प्रचार

महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल, कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) द्वारा संचालित वैदिक प्रचार मण्डल के माध्यम से मथुरा, अलीगढ़ खुदागंज डलियापुर, फर्रुखाबाद आदि स्थानो पर सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। जनता बहुत प्रभावित हुई।

--बदायूं ककोड़ा मेला के अवसर पर गंगातट पर १ नव० से ७ नव० तक आर्य समाज दयानन्द सेवाश्रम बदायूं के उत्साही कर्मठ मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार लल्लन के प्रयास से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी विनोदानन्द श्री सियाराम आर्य आदि कई विद्वानों एवं प्रचारकों के उपदेशों का जनता पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा।

—आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का १०८ वां वार्षिकोत्सव १३ से १६ फरवरी १९८८ तक श्रद्धानन्द पार्क कानपुर में समारोह-पूर्वक मनाया जा रहा है।

--महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का सन्देश प्रसारित करते हुए आर्य नर नारियों की स्पेशल ट्रेन १९-११-८७ को वाराणसी कैन्ट स्टेशन पहुंची जहां मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी तथा विद्यायतन की छात्र-छात्राओं ने आगन्तुकों का भव्य स्वागत किया। उसी दिन सायंकाल आर्य नर नारियों की एक विशाल एवं आकर्षक शोभा यात्रा निकली जिसका नेतृत्व मातृमन्दिर की आचार्या डा० पुष्पावती सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, रघुनाथ सिंघल, ओमप्रकाश आर्य एवं मालती रस्तोगी आदि कर रही थीं। स्थान स्थान पर तोरणद्वार बने हुए थे और वैदिक नादों से आकाश गुञ्जायमान हो रहा था।

नर्क और स्वर्ग

[श्रीमती सन्तोष महाना ५६६ क/२८ स्नेह नगर लखनऊ]

नर्क और स्वर्ग कहीं और नहीं इसी धरती पर ही है। हम सोचते हैं कि मरने के बाद कहीं और स्थान पर जाकर नर्क या स्वर्ग भोगने को मिलता है यही ख्याल होता है कि मरने के बाद हमारे कर्मों का फैसला होगा कि हमे नर्क मे भेजा जाए या स्वर्ग मे। मगर यह सब इसी समय इसी स्थान पर हम अपने जीवन के साथ ही साथ भोगते रहते हैं।

आज हम जो भी कर्म करते हैं उन्हीं कर्मों के अनुसार हमे जन्म मिलता है। आप और हम रोज इस बात को देखते हैं कि एक परिवार मे एक बच्चा जन्म लेता है तो घर वाले दुखी होते है और देखने वाले लोग भी। पहिले ही उसके पास दस बच्चे है छोटासा किराये का कमरा है बच्चे का पिता मजदूरी करके पेट पालता है। पूरा पेट भी नहीं भरता। बच्चे और स्वय कपडे फटे गदे और चीथडे पहने होते है जमीन पर फर्श मे ही गदे इधर-उधर लेटे रहते है। उधर दूसरे परिवार मे एक बच्चा पैदा होता है उसके पहले ही कपडे, झूले, कई प्रकार के रग बिरगे खिलौने और उसको खिलाने के लिए दास दासियाँ तैयार होती हैं। उसके लिए हजारों लाखो रुपया बैंक मे जमा कराया जाता है आस पास खुशियाँ मनाई जाती है मिठाईया बाँटी जाती हैं खूब बडी बडी पार्टियाँ खिलाई जाती हैं बडा सा बगला बना होता है एयर कडीशन कमरे मे गद्देदार झूले झूल रहा होता है चाँदी और सोने के बर्तनो मे उसे पानी पिलाया जाता हैं। आप और हम यह सब रोज होते हुए देखते हैं। एक बच्चा रोता रहता है जमीन पर पडा कोई उसे उठाने को नहीं है, दूसरा बच्चा चुपचाप झूले मे पडा खेल रहा है, स्वस्थ है फिर भी उसे देखने एक डाक्टर रोज आता है जरा सी उस की रोने की आवाज आती है चारो तरफ से घर के लोगो का शोर होने लगता हे कि बच्चा क्यो रो रहा है। कभी-कभी हम देखते है कि घर मे कुछ खाने को नहीं है इसलिए खाने को नहीं मिला। मगर कभी कभी हम यह भी देखते है कि खाने के सामान से मेज भरी हुई है मगर उसका भोग नहीं उसे शुगर है दिल का दौरा पडता है तरह-तरह की बीमारिया हैं, डाक्टर उसे केवल दलिया और खिचडी ही खाने को बताते हैं यह सब ही स्वर्ग या नरक है। ईश्वर का हिसाब चोकस है किस किस कर्म का फल क्या-क्या देना है यह व्यवस्था उस की सुनिश्चित है। ससार के न्यायालय मे वकीलो के वाग्जाल से झूठ को सच व सच को झूठ सिद्ध किया जा सकता है मगर भगवान की अदालत मे कोई गलत न्याय नहीं हो सकता।

हाँ हम सब देखें और विचार करें कि यह नर्क स्वर्ग कौन बनाता है क्यो किसी को ऐसे निधन परिवार मे किसी को सुखी परिवार अर्थात स्वर्ग मे भेजा जाता है हम सब जानते हैं कि मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है मगर फल उसे भगवान उसी के किये हुए कर्मों के अनुसार ही देता है। जो उसके किये हुए कर्म होते हैं उसी के अनुसार आयु वर्षों या मासो के हिसाब से नहीं मगर श्वासो के हिसाब से मिलती है। जितनी जल्दी श्वासो को लेते हैं उतनी जल्दी, जितनी देर से श्वास लेते हैं उतनी लम्बी उमर भोगते हैं। यह श्वास अधिक सोने व विषय भोगो आदि मे जल्दी चलती हैं और नियमित सयमित जीवन यज्ञ प्राणायाम आदि शुभ कार्यों मे धीरे-धीरे चलती हैं। कई कई साधू न्यासी या साधक योगाभ्यास और प्राणायाम करते हुए लम्बी उमर ले जाते हैं। कहते हैं भीष्म पितामह की उमर चार सौ साल थी। दूसरा हमे मनुष्य जन्म मिला कैसा परिवार मिला, कैसा घर व स्थान मिला यह सब पूर्वजन्मकृत कर्मों के कारण होता है।

पशु पक्षी कीट पतग पेड पौध की योनि मिली। योनियाँ असख्य हैं जो हमारे ही कर्मों के हिसाब से मिलती हैं। अब गाय भैंस आदि पशुओ को देखिए उनका खाना निश्चित है घास भूसा खाती है दूध देती है जिस कीले पर बाध दिया बधी रहती है और अपने कर्मों का भोग भोगती रहती है। जो मनुष्य का चोला पाकर निठल्ले बने रहते है काम कुछ करना नहीं।

भाई को लूटा मा को लूटा या और किसी तरह से किसी मित्र के साथ धोखा बाजी की उनको ही अगले जन्म मे भोग योनियो मे पशु-पक्षी कीट पतग आदि का जन्म मिलता है।

जो मनुष्य यहा नेक काम करते हैं उन्हे अगला जन्म भी स्वर्ग मिलता है। मगर कभी कभी हम अज्ञान वश लोभ लालच म आकर बने हुए स्वर्ग घर को नर्क बनाकर रख देते हैं।

प्रभु हमें शक्ति दे कि हम इस जन्म में अपने घर को स्वर्ग बनाए और ऐसे नेक काम करें कि हमारा अगला जन्म भी स्वर्ग में ही मिले।

उत्सव—

—आर्यसमाज शोहरतगढ़ (बस्ती) का ३३ वा वार्षिकोत्सव ३१ जनवरी से २ फरवरी तक मनाया जा रहा है जिसमे उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी पधार रहे हैं।

—आयसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ६५ वां वार्षिकोत्सव १ से ८ नवम्बर १९८७ तक भव्यता के साथ मनाया गया प्रात कालीन यज्ञ के ब्रह्मा आचाय रामप्रसाद वेदालकार उप कुलपति गुरुकुल कागडी थे। आचाय जी के दिव्य प्रवचनो को सुनकर जनता आध्यात्मिक शाति से ओतप्रोत हो गई।

८ नवम्बर को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने की। इस सम्मेलन मे श्री के० नरेन्द्र सम्पादक प्रताप, गोस्वामी गिरधारीलाल प्रधान सनातन धर्म सभा, श्री इन्द्रसेन शर्मा, प्रधान हिन्दू सभा, श्री सोमनाथ एडवोकेट श्री क्षितीश वेदालकार सम्पादक 'आर्यजगत', श्री शिवकुमार शास्त्री भू०पू० ससद सदस्य आदि ने देश मे बढती हुई अराजकता और साम्प्रदायिकता पर चिन्ता व्यक्त की और इसे राष्ट्र की एकता को गम्भीर खतरा बताया। आर्यसमाज की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए देशवासियो को वैदिक धर्म के झडे के नीचे एकत्रित होकर राष्ट्र रक्षा मे सन्नद्ध रहने का आह्वान किया।

—आर्य समाज विधानसरणी कलकत्ता का १०२ वा वार्षिकोत्सव मोहम्मद अली पार्क मे बडे समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के प्रख्यात मनीषियो, विद्वानो, उपदेशको के सारगर्भित भाषणों का जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

—गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल जनपद मुजफ्फरनगर का २३ वा वार्षिकोत्सव २ से ५ नवम्बर तक हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

आर्य कन्या इन्टर कालेज की छवि धूमिल करने का कुत्सित प्रयास

टाण्डा १० जनवरी—आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा की प्राचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर के सेवा निवृत्त होने के बाद कतिपय अनार्य, असामाजिक तथा अराजक तत्वों के इशारे पर विद्यालय के अनुशासन को भंग करने और बदनाम करने की कोशिशें की जा रही हैं। प्रबन्ध समिति द्वारा नियुक्त स्थानापन्न आचार्या कुमारी वीणा वर्मा को अपदस्थ कराने और स्वयमेव प्राचार्या पद पाने की लालसा में श्रीमती माया सक्सैना ने प्रबन्ध समिति की आज्ञा की अवहेलना की है। इससे विद्यालय का स्वच्छ वातावरण दूषित हो रहा है। आर्य संस्था को बदनाम तथा विद्यालय के कर्मचारियों का विरोध कर अनुचित दबाव डालना उचित नहीं। प्रबन्ध समिति इस प्रकार की अनुचित एवं अनुशासनहीन क्रियाकलापों को सहन न करेगी।

प्रबन्ध समिति

नारी उत्पीड़न के विरुद्ध जनजागरण

आर्य समाज संयोगितागञ्ज, इन्दौर के तत्वावधान में जनपद इन्दौर के प्रमुख आर्य समाजियों द्वारा २६ जनवरी ८८ से एक पद यात्रा प्रारम्भ हुई है जिसमें अनेकों संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलाएं एवं आर्य पुरुष सम्मिलित है। यह पदयात्रा सती प्रथा के विरुद्ध जनजागरण करती हुई देवराला में समाप्त होगी।

शोक समाचार

निम्न आर्यों के दुःखद निधन का समाचार हमें प्राप्त हुआ है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्माओं को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

सभामन्त्री

—आर्य समाज सरसावा (सहारनपुर) के प्रधान डा० जयराम जी का निधन ४ जनवरी ८८ को हो गया।

—आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर के आर्य सभासद श्री तेजभान भवान।

—आर्य समाज चान्दपुर (बिजनौर) के भूतपूर्व प्रधान एवं कर्मठ आर्य समाजी आचार्य विद्यासागर शर्मा।

"वैदिक धर्म प्रचार के लिए विदेश यात्रा

महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसन्धान संस्थान, वाराणसी के संस्थापक एवं निदेशक आचार्य विजय मित्र शास्त्री वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गत २२ दिसम्बर को दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की यात्रा पर रवाना हुए। सिंगापुर, थाई लैण्ड, मलाया, इन्डोनेशिया तथा जापान आदि देशों में वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। उसके पश्चात यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों की यात्रा करने का भी कार्यक्रम है।

अक्षय मुनी 'वानप्रस्थी'
आजमगढ़

उत्सव

—आर्य समाज मेंहदावल (बस्ती) का ७२ वां वार्षिकोत्सव २१ से २३ फरवरी तक मनाया जायेगा।

—आर्य समाज धन्योरा (शाहजहांपुर) का चतुर्थ वार्षिकोत्सव २६ से २८ मार्च तक मनाया जायेगा।

—दयानन्द बाल मन्दिर शाहगञ्ज, जौनपुर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ससमारोह मनाया गया।

—आर्य समाज (बल्देवाश्रम) खुरजा द्वारा २३-१२-८७ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ससमारोह मनाया गया।

—आर्य समाज रींवा (मध्य प्रदेश) में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ससमारोह मनाया गया। कु० कल्पना ने स्वामी जी की प्रशस्ति में मधुर भजन प्रस्तुत किया तथा श्री सुशील कुमार ने उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

—आर्य समाज बिसवां (सीतापुर) के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री सोमदत्त प्राचार्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

—आर्य समाज आवास विकास कालोनी काशीपुर (नैनीताल) ने २३-१२-८७ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ससमारोह

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46993 ४५९६१
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७६
माघ शुक्ल १२
३१ जनवरी रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवम्बर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ५-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

८५३, २१४०, २२४०, २२५४, २२६१, २२६७, २३९६, ३३५१, ३३७८, ३४२१, ३९४७, ४२४२, ४७०८, ४७१६, ५४१६, ८९८६, ९३५२, ९७७०, ११०८७, ११०८८, ११३९१, ११७८३, ११७९६, १२०६९, १२५३०, १३३६०, १३६६१, १३६६२, १३६६३, १४१३०, १४१३१, १४१३५, १४१३६, १४१३७, १४१३८, १४११९ए, १४१३९ब, १४१४०, १४१४२, १४१४३, १४१४५, १४१४५ए, १४१४६, १४१४७, १४१४८, १४१४९, १४१५०, १४१५१, १४१५२, १४१५३, १४१५४, १४१५५, १४१५६।

विनीत—
व्यवस्थापक

★★★ प्रसिद्ध कवियों की मधुर वाणी ★★★

लखनऊ में १४ नवम्बर १९८७ को हुए कवि सम्मेलन में कविवर निर्भय हाथरसी, प्रो० राजवीरसिंह क्रान्ति, कु० उर्मिला श्रीवास्तव शाहजहाँपुर, श्री राधेश्याम आर्य सुल्तानपुरी, श्री लवकुश कुमार लखनऊ, हुक्का बिजनौरी श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र" मैनपुरी तथा सभा के उपमन्त्री श्री जय नारायण "अरुण" बिजनौर को मधुर रिकार्डिंग में एक साथ सुनिये। ३ कैसेट (प्रति कैसेट ९० मिनट के) केवल रु० ९० में प्राप्त करें और कवियों की श्रुतिमधुर काव्य धारा का रसास्वादन लें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❋आवश्यक सूचना❋

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थायें इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य १०००-०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट—	मूल्य १००-०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—	२०-०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—	५-०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८, १९ तथा २० अक्तूबर के एक एक दिन के भाषण के रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर भवन से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यालय तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं ७।२८-१-८५

फाल्गुन कृष्ण ४, रविवार, सम्वत् २०४४ वि०, दिनांक ७ फरवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष ८१

अङ्क ६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्णय—

(१) श्री वीरेन्द्र, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से हटाये गये तथा आगामी ३ वर्षों के लिए आर्यसमाज के किसी भी पद पर चुनाव के अयोग्य घोषित किये गये।

(२) श्री योगेन्द्रपाल सेठ निर्वाचित प्रधान घोषित एवं उनके द्वारा गठित आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को मान्यता प्रदान की गई।

[सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग दिनांक २४ जनवरी १९८८ में प्रस्तुत एजेन्डा के विषय सं० १४ पर लिये गये निश्चय सं० (१४) के अनुसार—]

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशों को नहीं मानने और उन आदेशों का उल्लंघन करने तथा अनुशासन भंग करने के अपराध में २१ जून, १९८६ को अन्तरङ्ग सभा की बैठक में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के विरुद्ध निम्न कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया था—

'श्री वीरेन्द्र जी को अनुशासन भंग करने के आरोप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से पृथक करते हुए आगामी ३ वर्षों के लिए आर्यसमाज के किसी भी पद के लिए चुनाव के अयोग्य घोषित किया गया था। निश्चय के क्रियान्वयन का अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया था।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने पंजाब की विशेष परिस्थितियों को दृष्टिगत करते हुए श्री वीरेन्द्र जी के प्रति उदारता का व्यवहार करते हुए अन्तरंग सभा के निर्णय को कार्यान्वित नहीं किया और श्री वीरेन्द्र जी को अपने व्यवहार को सुधारने के लिए पर्याप्त समय दिया।

श्री सभा प्रधान जी द्वारा प्रदत्त इस पर्याप्त समय का श्री वीरेन्द्र जी ने दुरुपयोग तथा निरन्तर सभा के आदेशों का उल्लंघन किया—जब कि दिनांक २६–६–८६ को श्री वीरेन्द्र जी ने [illegible] की मांग के आधार पर सभा के वरिष्ठ उप प्रधान को विवाद के प्रत्येक पहलू पर विचार करने हेतु अपना निर्णय देने के लिए नियुक्त किया। श्री वीरेन्द्र जी ने इनके निर्णय को अक्षरशः पालन करने का लिखित रूप से आश्वासन भी दिया।

वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने यथोचित रूप से विवाद के विषय में सभी सम्बन्धित पक्षों को श्री वीरेन्द्र जी के साथ अपने पक्ष को रखने के लिए पूर्ण समय प्रदान किया। फिर दिनांक ३०–६ १९८६ को अपना निर्णय (एवार्ड) दिया। श्री वीरेन्द्र जी अपने आश्वासन का पालन न करते हुए नित्य नए रूप से सभा के आदेशों व अनुशासन को न मानकर [illegible] अनुशासन भंग करते रहे और अदालत की कानूनी कार्यवाहियों में उलझाये रखा। एक वर्ष के लम्बे समय तक निरीक्षण के उपरान्त भी जब श्री वीरेन्द्र जी अपने अनुचित कार्यों से बाज नहीं आए तो अन्तरङ्ग सभा के निर्णय के पश्चात सभा प्रधान जी ने २४ ६ १९८७ को निम्न आशय का पत्र श्री वीरेन्द्र जी को भेजा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा दिनांक २० सितम्बर १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली में पारित प्रस्ताव के अनुसार सभा प्रधान को यह अधिकार दिया गया है कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विधान सम्बन्धी आदेशों के उल्लंघन करने के [illegible] व्यक्तियों को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करें।

(शेष पृष्ठ २ पर)

से आंख मींच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-माघ फाल्गुन ४ सम्वत् २०४४ रविवार ७ फरवरी १९८८, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

एक और पराकाष्ठा—

अन्धविश्वास की

"तान्त्रिक के चक्कर में पूरा परिवार ही डूब मरा" जनसत्ता में अभी अभी पढ़ने को मिला कि मध्य प्रदेश के एक गांव पिपरिया मे २३ जनवरी को एक कुंए से एक ही परिवार के नौ सदस्यों के शव निकाले गये। ये शव अन्धविश्वास तथा तन्त्र-षड्यन्त्र की रहस्यमयी कहानी उद्घाटित करते हैं। ये सभी किसी तान्त्रिक के चमत्कार में फंसकर आत्म हत्या के लिए बाध्य हो गये। मृतक की पत्नी तथा बेटियों के माथे पर सिन्दूर लगा था, कुंए के पास पूजन किए जाने के चिन्ह भी मिले हैं। यह एक सम्पन्न परिवार था किन्तु किसी तान्त्रिक के जाल में फंस कर समाज से अलग थलग रहने लगा था और अन्ततः विनाश के इस गर्त में सपरिवार समा गया।

आये दिन ऐसी घटनायें पढ़ने को मिलती हैं, कोई ढोंगी साधु सोना दुगना करके ठग ले जाता है, कोई ज्योतिषी भावी आशंकाओं का भय दिखाकर भविष्य सुधारने हेतु धन हड़प लेता है, कहीं कहीं तो माँ बाप अपने जिगर के टुकड़े-नन्हे शिशु को गृह शान्ति हेतु स्वयं बलि चढ़ा देते हैं। कभी-कभी कतिपय प्रतिष्ठित पत्रिकायें तन्त्र, राशि और फलित ज्योतिष के पाखण्ड भरे कारनामों को बड़ी सुन्दर और समर्थन की भाषा में प्रस्तुत कर देती हैं जिनसे बुद्धिजीवी वर्ग तक भ्रमित हो जाता है सामान्य जनता की तो बात ही क्या है। अभी हमने अपने राष्ट्र का महान गणतन्त्र, लोकतन्त्र पर्व मनाया है। इस तन्त्र का अर्थ तो एक ऐसी प्रणाली मात्र है जो लोक को शासन, अनुशासन और व्यवस्था प्रदान करती है। तन्त्र के नाम पर ऐसा ढोंगतन्त्र जो समूचे परिवार को ही समाप्त कर दे—मानवीय इतिहास की क्रूरतम जघन्यतम पापवृत्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। आर्य समाज ने सदैव इसके विरोध में ललकारा है, शास्त्रार्थ की चुनौती दी है और अपने प्रचार माध्यम से ऐसे अमानवीय सृष्टिक्रम के विरुद्ध ढोंगों, पाखण्डों से जनता को सचेत किया है।

यदि अब ऐसी हृदय विदारक विनाशकारी घटनाओं की पुनरावृत्ति से समाज को बचाना चाहते हैं तो आर्य समाज के सम्पर्क में आइए, आर्यमित्र पढ़िए, पढ़ाइए वैदिक साहित्य को पढ़कर जन-जन के हृदय को सत्य ज्ञान के आलोक से आलोकित कीजिए—

पाहि नो अग्ने रक्षसः, पाहि धूर्तेऽरराव्णः॥
प्रभु हमें बचाओ धूर्तों से हम करते तेरा हृदय ध्यान।
हे अग्नि तुल्य तप तीव्रतर, कर प्राणदान दे अभयदान॥

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा का वर्ष ३१-१२-१९८७ को समाप्त हो चुका है अतः समस्त समाजें दिनांक २८ फरवरी १९८८ तक आगामी वर्ष का अपना-अपना वार्षिक निर्वाचन प्रत्येक स्थिति में सम्पन्न कर लें। निर्वाचन की प्रामाणिकता सम्बन्धित जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा से प्रमाणित करा कर मुझे मार्च के प्रथम सप्ताह में अवश्य प्रेषित करने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के अनन्तर मैंने आपको निम्नलिखित तथ्यों पर दोषी पाया है।

१—आपने संयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन सम्बन्धी २६-२७ अप्रैल १९७५ के मूल प्रस्तावों तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा त्रिशासन के निर्णयों की खुली अवहेलना की है।

२—श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा दिये गये फैसले (एवार्ड) के विरुद्ध कार्य किया है, जबकि इस निर्णय को मानने के लिए आपने लिखित आश्वासन दे रखा था। इतना ही नहीं आपने उस फैसले को निष्प्रभावी बनाने के लिए प्रयत्न किए और उसे मानने से इन्कार भी किया है। तथा आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० धर्मपाल जी को अपने ३ सितम्बर १९८७ के पत्र में स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

३—आपने न्यायालय में मुकद्दमे दायर करने भी बन्द नहीं किए।

४—आपने बराबर अनुशासनहीनतापूर्ण कार्य करके आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन की अवहेलना की है।

५—पंजाब सभा के त्रिशासन सम्बन्धी प्रस्ताव पर सार्वदेशिक सभा १० जुलाई, १९७५ को दिये गए आदेश और पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा दिए गए निर्णय के विरुद्ध आपने आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अनुमति के बिना स्वेच्छाचारिता करते हुए हरिद्वार में हरिराम बख्टर कालेज तथा शङ्कर आश्रम की जमीनें बेचने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रखा है, जबकि त्रिशासन के निश्चय के अनुसार पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की राजकीयसीमा से बाहर जो भी सम्पत्ति तथा संस्थाएं हैं, उन पर तीनों प्रतिनिधि सभाओं का समान अधिकार हैं।

६—सार्वदेशिक सभा के विगत २२ जून, १९८६ के प्रस्ताव तथा २० सितम्बर १९८७ के प्रस्ताव की छाया में तथा उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से हटाने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई विकल्प नहीं रहा। साथ ही आप आर्य समाज से सम्बन्धित किसी भी संस्था के चुनावी पद के लिए अयोग्य घोषित किए जाते हैं।

अतः सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा तथा सभा के विधान द्वारा प्रदत्त अधिकार से आपको आज दिनांक २४ सितम्बर, १९८७ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (जिसका कार्यालय गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक जालन्धर है) के प्रधान पद से मुक्त किया जाता है और आपके स्थान पर सभा के वरिष्ठ उप प्रधान सभा के आगामी चुनाव तक कार्य भार संभालेंगे। आपने बार-बार हमारे अनुरोध की अवहेलना की है, अतः विवश होकर पांच वर्षों के पश्चात उपरोक्त निर्णय लेना पड़ा।

ह० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान

किन्तु उपरोक्त आदेश पत्र का भी श्री वीरेन्द्र जी ने उल्लङ्घन किया।

अन्तिम निर्णय

अतः यह अन्तरङ्ग सभा, प्रधान जी के उक्त पत्र की सम्पुष्टि करते हुए यह आदेश देती है कि—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा दिनांक ४ अक्टूबर १९८७ में श्री वीरेन्द्र जी द्वारा सार्वदेशिक सभा के आदेश के विरुद्ध प्रधान पद के लिये खड़ा होना अवैध कार्य था ऐसी अवस्था में श्री योगेन्द्रपाल सेठ ही प्रधान पद के लिए एक मात्र प्रत्याशी थे और प्रधान निर्वाचित हुए। अतः प्रधान के रूप में उनका निर्वाचन वैध है और उनके द्वारा बनी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को मान्यता दी जाती है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्थापित–१८८६ ★ ओ३म् ★ फोन–४५९९३

भ्रमण पत्रिका सं० २ श्रीमद्दयानन्दाब्द–१६३

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश
नारायणस्वामी–भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–२२६००१

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का २८ फरवरी १९८८ को लखनऊ में निर्वाचन नहीं होगा

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की प्रदेश के समस्त जिला सभा के सम्मानित प्रधान/मन्त्री समस्त आर्यसमाजों के प्रतिष्ठित सदस्यों के नाम आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ द्वारा निष्कासित तथा कुछ भ्रमित व्यक्तियो द्वारा प्रदेश की आर्य जनता को चुनाव के नाम पर भ्रमित किया जा रहा है। पहले १७ जनवरी १९८८ को चुनाव कराने हेतु परिपत्र जारी किया गया। फिर २८ फरवरी को लखनऊ के नेशनल इण्टर कालेज में चुनाव की घोषणा की गई।

प्रदेश की समस्त आर्य जनता से अपील है कि वह इन समाचारों से भ्रमित न हो और न ही किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र 'आर्यमित्र' द्वारा प्रकाशित सूचना के अनुसार ही कार्य करें। किसी भी निष्कासित व्यक्ति या सभा विरोधी कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा किसी भी सूचना को कोई महत्व न दें और न ही किसी प्रकार का कोई सहयोग करें।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

भारत में गणतन्त्र

[श्री सत्यनारायण आर्य आर्यसमाज हसनगंज पार, डालीगंज, लखनऊ]

बन्दिनी भारत माता की पराधीनता की बेड़ी अवमुक्ती गौरव गाथा तुम्हें याद है, राणा सांगा के अस्सी घाव, एक हाथ, एक पांव गायब, समरांगण में डटा रहा। प्रणवीर प्रताप के बच्चे गिरि अमरावती की कन्दराओं में घास की रोटियों के लिए बिलख पड़े थे। शिवा के भवानी की भयंकर मार कौन भुला देगा। गुरु तेग बहादुर के समक्ष उनके आत्मीय शिष्य मय दयाल तथा मतिराम को बोटी-बोटी काट कर तेल के खौलते कड़ाह मे पकोड़े की तरह तला गया गुरु द्वारा उफ न करने पर तानाशाही जल्लादो ने उनका भी कत्ल कर दिया, गुरु गोविन्दसिंह तथा उनके सिंह सपूतो की गौरव गाथा सदा सर्वदा अमर रहेगी भारत मां के युगल लाल देश धर्म की आन पर जिन्दा दीवार में चुनकर अमर हुए, धर्म से नहीं डिगे।

मुगल सल्तनत के पाशविक एवं अमानुषिक क्रूर अत्याचारो से उत्पीड़ित भारतीय निवासी परकटे पक्षी की तरह असहाय तड़फ हो रहा था कि अंग्रेजी उपनिवेशवाद, बाज के खूनी पञ्जों का शिकार बनना पड़ा। जिसमें अनेक देशी रियासतो ने भी, अपनी स्वार्थपरता में राज विस्तार की लालसा से अपने स्वजातीय बन्धुओं का ही कुत्तों की तरह मांस नोचना, भेड़ियों की भांति खून पीना शुरू किया। अस्थि पंजर व कंकाल मात्र को भी सर, रायबहादुर, खान बहादुर की खिताब पाने, राज विस्तार के तुच्छ एवं जघन्य लालच में मिटाने पर तुले हुए थे। इन देशी रियासतो एवं विलायती शासको के संयुक्त अत्याचार से भारत में सर्वत्र असह्य हाहाकार एवं करुण क्रन्दन से भारतीय वसुन्धरा दहल उठी। आकाश कम्पायमान हो उठा। सन् १८५७ की रक्तिम क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी। बलिया निवासी वीर शिरोमणि, राज मंगल पाण्डे ने 'मंगलमय स्वाधीन' राज्य की कामना लेकर मेरठ छावनी मे प्रसिद्ध काली मन्दिर से खुलकर विद्रोह का सूत्रपात किया। हजारो स्त्री पुरुषों का संहार हुआ। बेगम पुल से शर्मा पार्क की तरफ जाने वाली सड़क का खूनी पुल भीषण नर संहार की स्थली के रूप में आज भी विख्यात है। उक्त क्रान्ति मेरठ तक ही सीमित न रहकर पूना सितारा, झांसी, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, गोण्डा, गोरखपुर फैल गया धीरे-धीरे सारे उत्तर प्रदेश एवं देश स्तर पर व्याप्त हो गयी थी। झांसी की रानी, तात्याटोपे, नानाराव, मैना बाई, अवध की बेगम, गोण्डा का राजा देवीबक्श सिंह, बांसी का राम लला आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कानपुर का नानाराव घाट, मेमोरी वेल, कम्पनी बाग लखनऊ की रेजी डेन्सी आदि के ध्वस्तावशेष सामूहिक रक्त पात, हत्याओ एवं बलिदानो की याद दिलाते हैं।

उक्त देशव्यापी रक्तिम सशस्त्र क्रान्ति के बावजूद सुसंगठित न होने तथा कुछ अंग्रेजों के पिछलगुए रियासतों के विरोध के कारण यद्यपि हम असफल रहे। परन्तु बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता। बलिदानियो के पवित्र रक्त से रंजित धरती पुनः सहस्रों गुना ताकत से क्रान्तिकारियों को जन्म देती है। वैचारिक क्रान्ति का भी सूत्रपात हुआ। स्वामी दयानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र चटर्जी, अरविन्द घोष, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश से भारत में पुनः स्वाधीनता का मन्त्र फूंका। सारा देश राष्ट्रीय विचारणीय शृंखला में आबद्ध होकर कर्म क्षेत्र में उतर पड़ा। सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमें प्रचार व प्रसार के फलस्वरूप बूढ़े भारत में राष्ट्रीयता की भावना युवा उन्मत्त अंगड़ायी लेने लगी। १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई उस पर भी आजादी हासिल होने में विलम्ब की सम्भावना से सहन शक्ति का सेतु टूट गया और राष्ट्रीय कांग्रेस रूपी स्वाधीनता प्राप्ति की गंगा की धारा दो दिशाओं में विकराल रूप धारण कर सारे भारत मे बहने लगी। एक धारा नर्म दल तथा द्वितीय धारा गर्म दल के नाम से प्रवाहित हुई थी।

गर्म दल का नेतृत्व नेता सुभाषचन्द्र बोस ने लेकर आजाद हिंद फौज का संगठन कर अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति का आवाहन किया। उन्होने देशवासियों से कहा-'तुम हमे खून दो हम तुम्हें आजादी देंगे।' उनकी इस ललकार से सहस्रो नवयुवक अपनी पढ़ाई त्याग कर क्रान्ति की जलती ज्वाल मे घृत की आहुति बनकर कूद पड़े। अंग्रेजों भारत छोड़ो के गगन भेदी नारों से सारा देश आन्दोलित हो उठा। महात्मा गांधी के द्वारा संचालित सविनय अवज्ञा आन्दोलन असहयोग आन्दोलन, साइमन कमीशन, रौलट एक्ट विरोधी आन्दोलन से अंग्रेजी पैर लड़खड़ाने लगे और उसने दमनात्मक कार्यवाहियां प्रारम्भ कर दी जगह-जगह गिरफ्तारियां और रक्तपात से हाहाकार मच गया पंजाब केसरी शेरे बबर लाला लाजपतराय के बलिदान से सारा भारत थरमरा उठा। अंग्रेज डायर के आदेशो से हुए कत्ले आम से तिलमिला कर भारतीय सिंह शावक ऊधमसिंह ने खून का बदला खून लन्दन के हवाइट हाउस मे डायर से चुकाया। मदन धींगड़ा, भाई भगोती चरण वर्मा, दुर्गा भाभी, राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, चन्द्र शेखर आजाद, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, राजेन्द्र लहरी, असफाक उल्लाह आदि आजादी के दीवाने क्रान्तिकारियो का पावन बलिदान आज भी पूर्ववत ललकार रहा है।

जालिम अंग्रेजी राज्य को इतिश्री के कगार पर पहुंचा दिया। काकोरी काण्ड के अभियोग मे भगतसिंह, बिस्मिल, रोशन, लहरी, असफाक आदि को देश के विभिन्न जनपदो में फांसी दी गई। हैरत है भगतसिंह ने फांसी से चन्द मिनट पूर्व मुस्कराते हुए दंड बैठक लगाई। अंग्रेज अधिकारी के पूछने पर कहा-'हम हिन्दू पुनर्जन्म मे विश्वास करते हैं दूसरे जन्म मे भी शक्ति सम्पन्न होकर पैदा हों जिससे भारत से अंग्रेजी राज्य का नामोनिशान मिटा सकूं' इसलिए व्यायाम कर रहा हूं तथा हसते-हंसते फासी के फन्दे को चूमकर सदा सर्वदा के लिए भारत मां का प्यारा हो गया। रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी के समय अपनी अन्तिम वसीयत में ललकारा था-'मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, असफाक अत्याचार से, पैदा होगे सैकड़ो जिनके लहू के धार से' उक्त अमर हुतात्माओं की लहू धारा सन् १९४२ को चिनगारी मे परिणत हो गई जलियां वाले बाग मे असंख्य निहत्थे भारतीय नर नारी गोलियो से भून दिये गये। कितने मा के लाल लुटे कितनो बहिनों के भाई छूटे कितने सुहागिनियों के सिन्दूर पुत गये बताना कठिन है नोआखाली की हृदय विदारक घटना को कौन भुला देगा। मां बहन बेटियों के अमृत मय पयपान कराने वाले स्तनों को काट-काट कर खाइयां पाट दी गई थी मां की गोदियों से दुग्ध मुहे बच्चो को छीनकर आसमान पर उछाल कर संगीनों की नोंक पर रोककर उनकी हत्या की गई।

उक्त असंख्य ज्ञात, अज्ञात अमर बलिदानी शहीद हुतात्माओं को गरम लहू की धारा में अंग्रेजी शासन भस्मीभूत हो गया। अंग्रेज शासक परकटे पक्षी की तरह लाचार होकर भारत को आजाद

(शेष पृष्ठ ९ पर)

राष्ट्र-कल्याण-उत्थान
[बिना गोवध-बन्दी असंभव]

[पं० रणवीर चन्द्र कहोल, (स्वतन्त्रता सेनानी) कबाड़ी गुड़ा, गांधीनगर, हैदराबाद

पुरुषाः सुलभा राजन्सततं प्रियवादिना:
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

आज जो यह विनाश के बादल चारों ओर उमड़ रहे हैं, बरस रहे हैं और घटाटोप बनते जा रहे हैं, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। कर्म की गति को जानने वाले इसके मूल कारण को जानते है, क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता। विष पान चाहे कोई जानबूझ कर करें अथवा अनजाने में उसका फल तो अवश्य होता है। पुण्य और पाप की परिभाषा, मीमांसा में गोवध से बड़ा अघन्य पाप कर्म और अग्निहोत्र से बड़ा पावन पुण्य कर्म संसार मे दूसरा कोई नहीं है। संसार में व्यष्टि और समष्टि दोनों रूप में कर्म का फल मिलता है। यह संसार कर्म भूमि है. कुरुक्षेत्र है।

आज इस घोर तमोगुणी–रजोगुणी विनाशकारी वायुमण्डल में सब प्रकार के कुकर्मों अर्थात् कुविचारों कुप्रवादों और कुशब्दों की तीनों प्रकार की घोर दुर्गन्ध भरी हुई है और सुगन्धों को, सतोगुणी की मात्रा इसमें नहीं है। दुर्गन्ध, प्रकृति अथवा भौतिकवाद का प्रतिनिधित्व करती है, इसमें अपान हैं, अज्ञान-अन्धकार है, मृत्यु है, और सुगन्ध आध्यात्मिकवाद का प्रतिनिधित्व करती है, इसमे प्राण है, प्रकाश है, जीवन है। महान पराक्रमकारी गोघृत द्वारा किए अग्निहोत्र यज्ञ की थोड़ी सी सुगन्ध बहुत बड़ी दुर्गन्ध को समाप्त करने में समर्थ होती है।

और ऐसे इस विकृत विनाशकारी वायुमण्डल में इन निर्दोष निष्पाप गो आदि पशुओं के नित्य घोर बध का कष्टमय आर्त्तनाद पाहिमाम पाहिमाम पुकारता हुआ इस कृतघ्न पिशाच संसार के सर्वनाश का सतत् आवाहन करता हुआ, काल को भयंकरतर से भयंकरतर में नित्य परिणत करता जा रहा है। पाप की प्रबलता में अब यहां 'समस्त भू-मण्डल सहित' समूचे भारत में यह सारे प्राकृतिक प्रकोप, दुर्दैव अधिकाधिक वर्तमान होते जायेंगे और यह सब प्रकार के विद्रोह-विप्लव भी साथ-साथ भड़क उठेंगें। सेना में भी विद्रोह जागेगा और भारी अराजकता फैलेगी। सर्वत्र लूटमार और अग्निकाण्ड होंगे और घर घर के आगे रक्त की धारा बहेगी। तब विश्व-युद्ध अग्नि में यह गो हत्यारा अनार्य संसार जल मरेगा। पश्चात् जब गाय के परम पवित्र विघ्ननाशक गोबर मूत्र के बिना, वनों द्वारा दग्ध भूखण्ड एवं परम विनाशक गोघृत के यज्ञो के बिना घोर विकृत विषभरा वायु मण्डल किमपि कदापि न सुधर पायेगें, तब यह अनार्य संसार इस गाय की महती महिमा को जानेगा।

वेदाचार्यों ने इस गाय को अग्नि-पशु यज्ञ स्वरूपा, सम्पत्तियों की खान और पुण्यमीया अघन्या इत्यादि कहकर पुकारा है। इस गाय की मात्रा अर्थात् तुलना परिमाण और मूल्य में संसार की कोई वस्तु नहीं आती और इसको पाँव से छूना पाप अपराध माना जाता है। राष्ट्र के इस परमधन, गोधन के यथावत् रक्षण-सम्वर्धन का उत्तरदायित्व शासन पर सदा रहा है। संसार में मनुष्य अधिक होंगे तो संसार नरक बनेगा और गौयें अधिक होंगी तो संसार स्वर्ग बनेगा। गोघृत के यज्ञों से वायु मण्डल सतोगुण-प्रधान पराक्रमी बन जाता है। सर्वत्र समयानुकूल वृष्टि होती है और अन्नधन विवेक और विज्ञान पराकाष्ठा को पहुंचते हैं,और ऐसा सुसमय आ जाता है कि एक ओर नित्य सुख सम्पत्ति की वर्षा होती है और दूसरी ओर त्याग की हवायें चलती हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फलों की सिद्धि हो जाती है। बड़ा ही अपार वर्णन है इस गोमहिमा का।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के तत्काल भड़काव का कारण वस्तुत: यह गोवध ही था। कांग्रेस के अधिवेशनों में गोरक्षा-सम्मेलन अनिवार्य रूप से होता था और उसमे अपनी व्यथा और विवशता पर आंसू बहाते हुए पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति में ही इसका निर्बाध-निराकरण सब मानते थे। लोकमान्य तिलक ने उंगली उठाकर कहा था कि स्वतन्त्रता मिलते ही हम पांच मिनट के अन्दर एक कलम की नोक से इस गोवध को बन्द कर देंगे। परन्तु इस अभिशाप भरी स्वतन्त्रता के आने पर यहां नितांत विपरीत हुआ। परतन्त्रता काल मे गोमांस का निर्यात यहां नहीं हुआ था। स्वतन्त्रता आने पर देश के मनोनीत नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री बने। वे गोधन से सर्वाधित भारत के अत्यन्त विज्ञान-वैभव भरे अतीतकाल से नितांत अनभिज्ञ थे,और गोमांस-भक्षक योरोप वालों को ही इस विज्ञान का ज्ञाता, आविष्कारक मानते थे। अत: उन्होंने नि:शंक बनकर, गोमांस के अति निर्यात तथा यहाँ गोमांस-भक्षण के अनर्गल प्रचार द्वारा इस गोवध को उग्र रूप प्रदान कर दिया, और तब यहां अति घोर–पापम् अमंगलम् विनाशम् का आरोपण प्रतिपादन हो गया। पश्चात लालबहादुर शास्त्री जी ने भी इस दिशा में उदासीनता ही दिखाई। इसके पश्चात् महा मनीषी इन्दिरा गांधी ने भी तत्कालीन छिड़े गोरक्षा आन्दोलन को गृहमन्त्री द्वारा आश्वासन दिलाकर रक्तपात के मध्य बलात दबा दिया। फिर धर्म की बांग देने वाली जनता-पार्टी आई तो उसने भी इस गोवध को मान्यता ही दी, और चोर-चोर मौसेरे भाई वाली बात सिद्ध कर दी। इस प्रकार यह गोवध यहाँ निरन्तर चलता बढ़ता चला गया। यहां गोवध ही निश्चय आज इस सारी विपत्ति-विनाश और भावी महा विनाश का मूल कारण तथा हेतु है, और शेष तो सब निमित्त कारण हैं। इन सब विद्रोह-विप्लवों में विदेशी हाथ भी निश्चय काम कर रहा है। अब ये सूखा, बाढ़, तूफान, महामारी रोग आदि सब अत्याधिक बढ़ेंगे और अन्न का आयात भी नहीं हो पायेगा।

स्वामी दयानन्द के शिष्य-रूपी आर्यसमाज से सम्बोधित हो, नम्र निवेदन करता हूं कि दयानन्द के छेड़े गोरक्षा-आन्दोलन को पुनः संचालन कर अपनी कर्तव्य परायणता का परिचय दें। समय तो बहुत निकल गया, पर जागो जब जागे तभी सवेरा। दयानन्द ऋषि थे, त्रिकाल दृष्टा थे, उन्होंने अपनी प्रज्ञा-बुद्धि से देख लिया था कि गोवध की पातकी वायु मण्डल में वेद प्रचार का प्रसार-प्रतिपादन भली प्रकार नहीं हो पा रहा है तब उन्होंने गोवध के प्रति बड़ा सफल गोरक्षा आन्दोलन छेड़ा था। वे दो करोड़ प्रमुख व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त आवेदन-पत्र लेकर स्वयं महारानी विक्टोरिया के समक्ष जाना चाहते थे। अब शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने इस उत्तरदायित्व को, परम कर्तव्य को, निभाने, बिना विलम्ब आगे आना चाहिए। यदि सरकार से भेंट वार्ता द्वारा बात न बने तो अविलम्ब योजनाबद्ध गोरक्षा आन्दोलन का भीषण शंखनाद कर देना चाहिए। यह गोरक्षा का शंखनाद धर्म का नाद है। यह नाद अन्य सब स्वार्थ भरे अधार्मिक नादों (आन्दोलनों) के मध्य बड़ा विचित्र कार्य करेगा। चाहे कल प्रलय आनी है अथवा हजार वर्ष पश्चात् धीर जन, आर्य जन, कर्तव्य पथ पर चलने से एक क्षण भी पग पीछे नहीं धरते।

दिव्य द्रष्टा–

ऋषि दयानन्द

[श्री अरुणकुमार विद्यार्थी, आचार्य उपदेशक महाविद्यालय,टंकारा]

संसार का प्रत्येक स्वाभाविक अथवा अस्वाभाविक कार्य किसी विशेष रहस्य अथवा तत्व का प्रकाशक होता है। परन्तु सभी मनुष्य उसे नहीं जान सकते, अथवा यों कहिये कि सभी जानने के योग्य नहीं होते। संसार मे जितने भी महापुरुष हुये हैं उनमे कुछ न कुछ असाधारण गुण हुआ करते हैं। इसमे कोई सन्देह नहीं कि वे अपने आपको इस योग्य बनाया करते हैं कि वे संसार के साधारण मानव प्रमाण से कुछ उच्च उठ जायें लेकिन साथ ही उनके अन्दर एक ऐसी दैवी प्रतिभा हुआ करती है जो जन साधारण मे नहीं पाई जाती। उस दैवी प्रतिभा के ही कारण वह इस मानव गगन मे एक जाज्वल्यमान सितारे के रूप मे एक साथ जगमगा जाते हैं और कभी-कभी उस प्रतिभा की एक रश्मि किसी विशेष उद्घाटित घटना के रूप मे न केवल उनकी जीवन धारा को ही परिवर्तित कर देती है किन्तु इस विश्व के विशाल प्रागण मे एक ऐसा दृश्य उपस्थित कर देती है कि जो मानव समाज की विचारधारा को ही परिवर्तित करके विश्व इतिहास की एक अमर वस्तु बन जाती है।

कौन जानता था कि एक वृद्ध रोगी और मरने वाला मनुष्य अपने मूक उपदेश से गौतम को अमर बुद्ध बना देगा? कौन जानता था कि कलिंग के युद्ध मे अनेक हताहतो को देखकर एक नृशंस अत्याचारी राजा अशोक संसार प्रसिद्ध धर्म प्रिय प्रियदर्शी बन जाएगा? कौन जानता था कि मकड़ी के जाले वृक्ष की दो टहनियो के बीच मे देखकर होवाट के मस्तिष्क मे नदियों और समुद्रों के ऊपर पुल बनाने का विचार उत्पन्न होगा? कौन जानता था कि आग पर चढ़ी हुई बटलोई के ढक्कन को हिलता हुआ देखकर जेम्स वाट वाष्प शक्ति का महान अविष्कार कर सकेगा जो आज संसार के समस्त रेल, जहाज और मशीनो का संचालन कर रहा है? कौन जानता था एक उड़ती हुई पतंग को देखकर विद्युत शक्ति का अविष्कार फ्रेंकलिन के मस्तिष्क की उपज बनेगा? इगलैण्ड के सभी फलो के बागो मे फल पकने के बाद हमेशा से पृथ्वी पर ही टपकते है, सभी लोग उन्हे देखते भी रहे है परन्तु न्यूटन से पहले किसी ने भी यह नहीं सोचा कि इस प्रकार उनके जमीन पर ही गिरने का क्या कारण है? इसी प्रकार सदा ही पूजन आदि के समय अनेक बार मूर्तियो पर भाग दौड़ मचाने वाले मोटे-मोटे चूहो को देखते हुए भी किसी मूर्ति पूजक के हृदय मे वह उथल-पुथल और विचार नहीं उत्पन्न हुआ, जो बालक मूलशकर के मन मे आज से १५० वर्ष पूर्व शिवपूजन के समय हुआ था। किसने सोचा था कि शिवलिंग पर चढ़ते हुए एक छोटे से चूहे को देखकर मूलशकर के मस्तिष्क मे एक ऐसा विप्लव उठेगा जो उसे संसार का महान सुधारक ऋषि दयानन्द बनाकर रहेगा? ये सब घटनायें बहुत साधारण थीं, जो प्रतिदिन प्रत्येक मनुष्य के सामने घटती रहती हैं लेकिन सभी उनको ग्रहण नहीं कर सकते लेकिन दिव्य द्रष्टा आत्माओ के सम्मुख जब वही घटनाए उपस्थित होती हैं, तो वे महान परिवर्तन उपस्थित कर जाती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे शब्दो की लहरें समस्त आकाश में सब काल मे सर्वत्र समान रूप से वर्तमान रहती हैं लेकिन सभी मनुष्य उनको नहीं सुन सकते, जिनके पास शब्द ग्राहक रेडियो होता है वही उसको सुन सकते हैं।

महामुनि यास्काचार्य ने 'ऋषि' शब्द की व्याख्या करते हुए निरुक्त मे लिखा है कि 'ऋषिर्दर्शनात्' 'क्रान्तदर्शनो भवति' अर्थात् ऋषि वह है जो कि अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थों को भी देखता है। यू तो छोटे से छोटे जन्तु से लेकर मनुष्य तक सब ही प्राणी देखते हैं क्योंकि देखना चक्षु का धर्म है तो भी देखने मे ऋषि की विशेषता यह है कि उसकी दृष्टि सामान्य मनुष्यो की दृष्टि की अपेक्षा बहुत व्यापक होती है। सामान्य मनुष्य तो कार्य को देखकर कारण का अनुमान करते हैं परन्तु ऋषि वह है जो कारण को ही देखकर भविष्य मे होने वाले कार्य का अनुमान कर साधारण लोगो को आने वाले महान कष्टो से सजग कर सच्चे मार्ग का दर्शन करता है। जो महामानव इस कार्य को जितना ही सूक्ष्म दृष्टि से देखता है वह उतना ही महान ऋषि कहलाने का अधिकारी होता है।

उन्नीसवीं सदी मे स्वामी दयानन्द जी महाराज भी ऐसे ही ऋषि हो गए हैं। उनकी दृष्टि इतनी विशाल थी कि वे अब से ११० वर्ष पूर्व ही आने वाली विपत्तियो की ओर संकेत कर उनके समाधान का अपूर्व साधन अपने लेखो एवं उपदेशो मे वर्णन कर चुके हैं। वे आने वाली विपत्तियां अक्षरशः सत्य हुई पर संसार ने उनको वाणी की उस समय उपेक्षा की पर समय पड़ने पर इधर-उधर हाथ मारने आरम्भ किये और महाकवि तुलसीदास की यह उक्ति चरितार्थ हुई–

'का वर्षा जब कृषि सुखाने'

यदि संसार ने ऋषि दयानन्द की बात को स्वीकार किया होता तो आजकल की प्राय सभी राजनैतिक तथा सामाजिक विपत्तिया जो कि आज भारत के बड़े से बड़े नेता को विक्षुब्ध किये हुए हैं, आने से पहले ही टल जातीं।

ऋषि दयानन्द ने शुद्धि आन्दोलन को उठाया और शुद्धि के द्वारा मुसलमानों मे भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार करने का उद्योग किया इसी कार्य को स्वामी दयानन्द के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द व प० लेखराम आदि ने आगे बढ़ाया और सम्प्रति आर्य समाज भी इस ओर अपनी दृष्टि रखे हुए है। अब भी भारत में ऐसे नेता विद्यमान हैं जो एकता सम्मेलनो में विश्वास रखते हैं और सोचते हैं कि मुसलमान अरब भूमि से प्रेम रखते हुए तथा अरबी सभ्यता के गीत गाते हुए और यह कहते हुए–'मेरे मौला मदीने बुला ले मुझे' भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये बलिदान करने मे उद्यत हो सकते हैं। लोकमान्य बालगगाधर तिलक तथा महात्मा गांधी ने मुसलमानो को देशभक्ति का पाठ पढ़ाने के लिए हिन्दू हितो को ठुकराया। परन्तु हिन्दू मुस्लिम समस्या सुलझने के स्थान मे दिन प्रतिदिन उलझती ही गई। इन सब दृश्यो को देखकर अधिकांश राष्ट्रीय नेता यह मानने लगे हैं कि इस समस्या का समाधान एकता सम्मेलनो से नहीं हृदय के परिवर्तन से है।

दूसरी समस्या अछूत कही जाने वाली जातियो की है। अब से १०५ वर्ष पहले ऋषि दयानन्द ने बतलाया था अछूतपन पाप है, मनुष्य मात्र जन्म से एक है और उनके गुणों से ही छुटाई बड़ाई हो सकती है किसी को अछूत कहना उसके साथ बड़ा अत्याचार है। अछूत कही जाने वाली जातियां हिन्दू जाति का अंग है। ऋषि दयानन्द ने कहा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्यसमाज किस ओर

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ.प्र.)

आर्य समाज अपने आरम्भ काल से ही वैदिक ज्ञान प्रवाह के साथ साथ सामयिक समस्याओं पर भी अतीव सुलझे हुए विचार प्रस्तुत करता है। आर्य समाज के विद्वानों मे यह प्रतिभायें प्रारम्भ से रही हैं, जो विविध सामयिक समस्याओ पर तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक विचार व सुझाव प्रस्तुत कर जनता का मार्गदर्शन कर सके। इसका कारण यह है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के अतिरिक्त आर्य समाज के नियम और उद्देश्यस्वरूप दिये गये ऋषिवर के दस सूत्र भी मनीषियों के लिए सर्वाङ्गपूर्ण विचार क्षेत्र प्रदान करते है।

आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगो, वेद प्रचार सप्ताह महर्षि दयानन्द बोध सप्ताह आदि विविध पर्वों के अवसरो तथा आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवों जनपदीय, प्रदेशीय और सार्वदेशिक सम्मेलनो के अवसरों पर उपस्थित समस्याओं पर विचार प्रसारण की दृष्टि से विशेष सम्मेलनों के आयोजन भी किये जाते रहे हैं।

वेद, शिक्षा, दलितोद्धार, महिला, गोरक्षा, राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों को भी आर्य समाज ने कम महत्व नहीं दिया। मुझे भी अपने जीवन में सेंकड़ों सम्मेलनों को अध्यक्ष उद्घाटन कर्ता तथा वक्ता के रूप में सम्बोधित करने के अवसर मिले हैं।

पिछले कुछ समय से यह देखने में आ रहा है कि इन सम्मेलनों–विशेषकर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अवसर पर आर्यसमाजों के अधिकारी सरकारी अधिकारियों को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने लगे तथा आर्य समाज के बड़े से बड़े विद्वान वक्ता से भी बढ़कर सम्मान देने लगे हैं और अब तो स्थिति यहाँ तक आ गयी है कि पुलिस के अधिकारियों को प्रशासकीय अधिकारियों की भाँति मञ्च पर सम्मानित और प्रतिष्ठित रूप में लाने लगे हैं जब कि पुलिस विभाग प्रशासन तन्त्र नहीं अपितु प्रबन्ध तन्त्र है।

गत १ मार्च को उत्तरप्रदेश के जौनपुर नगर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज की सर्वोच्च शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मन्त्री श्री प्रो० आनन्द प्रकाश जी की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हो रहा था। मै भी उस सभा में एक वक्ता था। मेरा भाषण हो रहा था कि सम्मेलन के मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक महोदय मञ्च पर पधारे। मै उस समय शहाबुद्दीन की इस राष्ट्रद्रोही घोषणा का उत्तर दे रहा था कि यदि भारत के बीस करोड़ मुसलमान विद्रोह पर उतारू होकर सड़कों पर निकल आये तो भारत की सेनायें उनका मुकाबला नहीं कर सकती'। मैने उत्तर में कहा था कि 'यदि शहाबुद्दीन के मुसलमान राष्ट्रद्रोह के लिए सड़कों पर आकर भारत की सेनाओं से टकरायेंगे तो अपनी बारह लाख सेनाओं के साथ साठ करोड़ राष्ट्रभक्त हिन्दू भी कमर कस युद्ध के लिये मैदान में निकल आवेंगे।

मेरा इतना कहना था कि पुलिस अधीक्षक महोदय ने कहा 'यह क्या है ?' सम्मेलन के अध्यक्ष स्वनाम धन्य श्री प्रो० आनन्दप्रकाश जी ने कहा 'मैंने तो पहले ही मना किया था' और मन्त्री आर्यसमाज तुरन्त मेरी ओर आये। मैंने उन्हें इंगित किया तथा सूक्ष्म रूप में चाहा। मै नहीं चाहता था कि सम्मेलन अध्यक्ष तथा आर्य समाज के मन्त्री को भी एस० पी० के साथ साथ लताड़ बताकर वातावरण को विषाक्त करूँ, अतएव मैंने मञ्च छोड़ दिया। मेरे मञ्च छोड़ने पर भी जब सम्मेलनाध्यक्ष और आर्य समाज के मन्त्री को अपने पद की गरिमा और आर्य समाज की प्रतिष्ठा व सम्मान का ध्यान नहीं आया तब यह कहकर मैं सभा स्थल से चल दिया कि 'बुला लो किसी को, जो आप लोगों को इच्छानुसार गजल, ठप्पे, ठुमरी आदि सुनाये, जा रहा है दयानन्द का संन्यासी तुम्हारे मञ्च से।'

मेरे बाद श्री राजेश 'पंछी' भजनोपदेशक बोले तो उन्हें भी रोक दिया और जब उन्होंने मञ्च छोड़ा तो सभा से बहुत लोग कहते हुए उठे कि पहले स्वामी जी को रोक दिया और अब पंछी जी को तो क्यों उत्सव किया था और क्यों राष्ट्र रक्षा सम्मेलन बुलाया गया था ? उसके बाद सभाध्यक्ष और समाज के मन्त्री व प्रधान ने एस० पी० का सारगर्भित वैदिक राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत राष्ट्र रक्षा की भावनायें जन मानस में भरने वाला ओजस्वी भाषण सुनकर अपने कर्ण कुहरों को तृप्त और जीवन को पवित्र बनाया।

मध्याह्नोत्तर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की कार्यवाही श्री जयनारायण 'अरुण' प्रधान बिजनौर गढ़वाल जनपदीय आर्योपप्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। सम्मेलन के मुख्य अतिथि महोदय को सायंकाल बिजनौर में कोई मीटिंग लेनी थी। मैने भी एक बार यह कह दिया कि मैं शीघ्र ही अपने विचारों को विराम दूंगा, क्योंकि मुख्य अतिथि महोदय को अभी अन्य कार्यक्रम में भाग लेना है। वे दोनों बार यही बोले मैं तो आज आपको सुनने ही बैठा हूं, आप आराम से अपनी पूरी बात कहिये। मेरे भाषणोपरान्त मुख्य अतिथि का भाषण मेरे पूर्णतया समर्थन में हुआ।

रात्रि की सभा में जब मेरा भाषण हो रहा था तो आर्यसमाज के प्रधान को कहा गया। प्रधान जी का तो मुझे रोकने का साहस नहीं हुआ, उन्होंने एक अन्य काषायधारी व्यक्ति को भेजकर मेरा भाषण बन्द करा दिया।

विचारणीय प्रश्न यह है कि आर्य समाज के मञ्च का दिशा निर्देशन और उसके कार्यक्रमों का इस प्रकार निकम्मा होना है तो न केवल संन्यासी अपितु कोई भी अच्छा वक्ता आर्य समाज के मञ्च पर अपमानित होने और आर्य समाज को इस प्रकार पद द्वेष होते देखने नहीं आयेगा। आर्य समाजों के अधिकारी ही नहीं अपितु आर्यों के सर्वोच्च संगठन के उप मन्त्री तक जब पुलिस को प्रसन्न करने के लिये आर्य समाज में अपने प्रतिष्ठित पद की गरिमा और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता की प्रतिष्ठा को इस प्रकार शासन के चरणों में डालेंगे तो आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की आशाओं का क्या होगा ? शिरोमणि सभाओं को इस विषय में निश्चय ही कुछ ठोस पग उठाने चाहिए। यदि सभायें शीघ्र ही कोई ठोस पग नहीं उठाती तो परिणाम विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा। सभाओं का दायित्व है कि वह इस प्रकार की गतिविधियों को कठोर पग उठाकर प्रतिबन्धित करें तथा इस प्रकार आर्य समाज के गौरव और प्रतिष्ठा को किसी के दबाव में आकर सत्य पथ से विचलित न होने दें।

✻

राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द

—प्रो० रवीन्द्र कुमार पाण्डेय, दयानन्द कालेज, कानपुर

"तू नहीं, पैगाम तेरा, हर किसी के दिल में है।
जल रही अब तक शमा, रोशनी महफिल में है।"

श्री अनन्तशयनम् अय्यंगार के शब्दों में "गांधी जी राष्ट्र के 'पिता' है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र 'पितामह' थे। महर्षि जी हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे। गांधी जी उन्हीं के पद चिन्हों पर चले। यदि महर्षि दयानन्द हमें मार्ग न दिखाते, तो-अंग्रेजी शासन में उस समय सारा पंजाब मुसलमान बन जाता और सारा बंगाल ईसाई हो जाता। महर्षि जी ने सारे विश्व को 'आर्य' बनाने की प्रेरणा दी। महर्षि स्वामी दयानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि जगत की सब संस्कृतियों में सबसे अच्छी संस्कृति आर्यों की संस्कृति है। उन्होंने देश के सामने आदर्श रखा। महर्षि दयानन्द दिव्य महापुरुष थे। उन्होंने ईसाई मत और इस्लाम के हमलों से देश की रक्षा की। आर्य समाज देश की एकता के लिये कार्य कर रहा है।"

महर्षि दयानन्द १९वीं शताब्दी के "सबसे बड़े वेद के विद्वान, धर्म प्रचारक, समाज सशोधक, देशोद्धारक और सर्वतो-मुख सुधारक, थे।" उनका जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में सन् १८२४ में हुआ था। मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण प्रारम्भिक नाम मूल-शङ्कर रखा गया। उनके पिता पंडित कर्शन जी बड़े जमींदार तथा मोरवी राज्य के एक अधिकारी थे। शिव रात्रि के पर्व पर जब मूलशङ्कर की आयु केवल १४ वर्ष की थी उनके पिता उन्हें शिव मन्दिर में रात्रि जागरण और शिव पूजन के लिये अपने साथ ले गये। अर्ध-रात्रि के उपरांत जब पुजारी आदि सो गये तो एक चूहा बिल से निकला और शिव की मूर्ति पर चढ़कर भोग खाने लगा। यह देख मूलशङ्कर ने सोचा कि जो मूर्ति अपनी रक्षा एक चूहे से नहीं कर सकती, वह संसार की रक्षा का भार कैसे उठा सकेगी? उन्होंने उसी समय पिता को जगाकर सन्देह प्रकट किया, किन्तु डांट-डपट के सिवाय कुछ न मिला। छोटी सी ही अवस्था में यह निश्चय कर लिया कि जब तक सच्चे शिव का पता न लगा लूंगा शांत न बैठूंगा।

जब मूलशङ्कर की आयु १६ वर्ष की थी तब उनकी छोटी बहन की हैजा से मृत्यु हो गयी इस मृत्यु को देख कर सब रो रहे थे, बालक मूलशङ्कर एक कोने में वहीं स्तब्ध खड़ा हुआ मृत्यु से छुटकारा पाने का उपाय सोच रहा था। इसके तीन वर्ष बाद उनके चाचा जो उन्हें बहुत प्यार करते थे वह भी विषूचिका से मृत्यु ग्रास बने। इससे उनका वैराग्य और भी दृढ़ हो गया।

मूलशङ्कर को निश्चय हो गया—कि "इस असार संसार में कोई पदार्थ नहीं, जिसके अर्थ जीने की इच्छा की जाय व किसी पर मन लगाया जावे।" उन्होंने घर छोड़ा, सब कष्ट प्रसन्नता से सहन करते हुए ज्ञान और बल की वृद्धि में जुट गये। वह प्राचीन विद्यालयों की ओर भी गये जहां वह शिक्षा और दीक्षा पा सकते थे। उन्होंने पूर्णानन्द सरस्वती नामक विद्वान संन्यासी से संन्यास लिया और मूल-शङ्कर से दयानन्द सरस्वती बन कर योग सीखना प्रारम्भ कर दिया। नर्मदा तट से लेकर हिमालय की कन्दराओं तक जहां जो शिक्षा मिली वह ग्रहण करते रहे।

मथुरा में उन्हें एक योगी विद्वान् गुरु विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु मिले। उनके "तीन वर्ष में व्याकरण आता है" कहने पर अष्टाध्यायी, महा-भाष्य, वेदान्त सूत्र आदि आर्ष ग्रन्थ पढ़े। विद्याध्ययन समाप्ति पर गुरु आज्ञा ली।

पंडित लेखराम जी के सम्पादित किये जीवन-चरित्र में जो शब्द लिखे हैं वह बहुत कुछ स्वाभाविक हैं। गुरु विरजानन्द के शब्दों का भावार्थ था:-

"देश का उपकार करो। सत् शास्त्रों का उद्धार करो। मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ अन्त में आशीर्वाद देते हुए यह भी कहा "मनुष्यकृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की-निन्दा है और आर्ष ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना।"

स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु का समाचार पाकर सर सैय्यद अहमद खां ने लाहौर के कोहेनूर में लिखा था कि "निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहिब ने जो संस्कृत के बहुत बड़े आलिम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे ३० वीं अक्टूबर १८८३ को ७ बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इल्म फजल के निहायत नेक और दरवेश सिफत आदमी थे। इनके मुअक्कत इनको देवता मानते थे। और बेशक वह इसी लायक थे। वह सिर्फ ज्योतिस्वरूप निराकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे।

मैडम ब्लावस्की ने लिखा है कि "यह निरन्तर सत्य है कि स्वामी शङ्कराचार्य के अनन्तर भारत में स्वामी दयानन्द से अधिक संस्कृत का विद्वान् उनसे बढ़कर प्रत्येक बुराई को उखाड़ने वाला, उनसे अधिक विचित्र वक्ता, उनसे गहरा दार्शनिक पुरुष उत्पन्न नहीं हुआ।"

कवि सम्राट रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपनी श्रद्धांजलि में लिखा—"मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिनकी दृष्टि ने भारत के आत्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा, जिसके मन ने-भारतीय जीवन के सब अङ्गों को प्रदीप्त कर दिया।

लाला लाजपत राय ने लिखा है कि "स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं मैंने संसार में केवल उन्हीं को एकमात्र अपना गुरु माना है, वह मेरे धर्म के पिता है। इनकी गोद में मैं पला और अपने हृदय और मस्तिष्क को ढाला।"

वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द जैसा बुद्धिवादी, आडम्बर हीन, पाखण्ड का घोर विरोधी, विद्वान् समाज सुधारक तथा स्वाधीनता का महान् पुजारी और कोई नहीं हुआ। उनके महत्व को स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष तथा नेता जी सुभाषचन्द्र ने बहुत कुछ पहिचाना था। भारतीयता और निर्भयता उनकी महत्व-पूर्ण देन है। महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के शब्दों में "हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिये हम गर्व करते हैं तो-कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उप-कार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित करा दिया।"

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

जग को आर्य बनाने वालो पहले स्वयं आर्य बन जाओ।
आर्य शब्द का अर्थ न जानो, वह है किसी धर्म का-वाची,
सम्प्रदाय की अथवा दल की, सदस्यता जिसमें है राँची।
आर्य शब्द तो अन्तस्तल को "तुम हो कौन" यही बतलाता,
मन को वाणी में परिणत कर, कर्म रूप उसका दिखलाता।।

बाहर भीतर एक रंग हो, पर-स्व के मतभेद मिटाओ, । जग को-।
आर्य नहीं है रंग मंच का कुशल कलाविद अभिनेता,
मंच मात्र तक का उपदेशक, "दयानन्द" का भाव प्रणेता।
नहीं बना है दंडित मति जो, पर "दण्डी" का अभिनय करता।
ज्यों ही उतरा रंग मंच से, "विरज" नहीं रज गुण आचरता,

कथनी को करनी में बदलो अभिनय नहीं विनय दर्शाओ। जग को-
"आर्य समाज-मन्दिर" है मन्दिर इसके कण कण रमा ओ३म हैं,
ऋतं यहां है सत्य भी है, सूर्य चन्द्र है और सोम है।
इसके प्रांगण सभी एक हैं, नहीं दरिद्र धनवान न कोई,
नहीं विप्र चाण्डाल भेद है, रिक्त हस्त लौटे ना कोई।।

घट के ऊपर की चिकनाई भर अन्तस् मे दीप जलाओ। जग को-।
राग द्वेष को स्वयं स्वार्थ पशुता की आग जलाया करते,
त्याग और निःस्वार्थ भाव का पंखा नित्य झलाया करते,
मन्दिर का वह श्रेष्ठ पुजारी स्वयं देवता ज्यों आचरता,
स्वयं रसूल मुल्ला मस्जिद कर बिना कहे जन उसको वरता।।

बुझे दीप से दीप जला कर अन्ध तमस् में मत भरमाओ।-जग--।
बीत गये पन यज्ञ कुण्ड में आहुति देते "स्वाहा" करते,
'इदन्नमम' उच्चारण करते-करते यज्ञ अनल को सहते।
वेदों को तुमने माना है पर वेदो की एक न मानी,
स्वाहा नही अहन्ता की है, मिटी न ममता औ अज्ञानी।
'परासुव' होंगे 'दुरितानि' सविता के साधक बन जाओ। जग--।

विजय गुप्त कौशिक
एम० ए०, शास्त्री
आयुर्वेद रत्न देवेन्द्र मार्केट
रामघाट रोड, अलीगढ

हीरक जयन्ती

आर्य समाज मन्दिर औरैया (इटावा) मे दिनांक १६-२-८८ से २१-२-८८ तक हीरक जयन्ती समारोह बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमे महर्षि दयानन्द प्रतिपादित सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार हेतु अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। इस हीरक जयन्ती का मुख्य आकर्षण यजुर्वेद पारायण बृहद यज्ञ है जिसमे गुरुकुल एटा और सासनी के ब्रह्मचारी और कन्यायें सस्वर वेद पाठ करेंगी। इस बृहद यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (ज्वालापुर) तथा आचार्य, वेदार्थ कल्पद्रुम के प्रणेता विद्वद्वर्य पं० विशुद्धानन्द जी उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के होंगे। आर्य समाजो की ओर से मेरा आर्य जनों से सादर निवेदन है कि अधिक-से-अधिक सख्या मे सपरिवार पधार कर हमारा उत्साह वर्धन करने की कृपा करें। सभी के स्वागत और आतिथ्य की समुचित निःशुल्क व्यवस्था है।

वेद प्रकाश आर्य-मन्त्री- आर्य समाज औरैया।

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की प्रदेश भर मे फैली हुई भू सम्पत्ति की रक्षा, व्यवस्था तथा तत्सम्बन्धी विवादो की पैरवी हेतु प्रत्येक जनपद में अधिष्ठाता भू सम्पत्ति के रूप में निष्काम और निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले स्वयं सेवी आर्य जनो की तुरन्त आवश्यकता है। उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु जो आर्य जन स्वय सेवा की भावना से कार्य करना चाहे वे अपने-अपने नाम पते व योग्यता सहित निम्न पते पर तुरन्त भेजने की कृपा करें। जिससे उनकी उक्त पद पर विधिवत रूप से अवैतनिक नियुक्ति कराई जा सके।

वेद प्रकाश आर्य
मुख्याधिष्ठाता-भू सम्पत्ति, सभा,
आर्य समाज औरैया जिला इटावा

आर्य समाज बलरामपुर की स्वर्ण जयन्ती

अपरिहार्य कारणों से तिथियों में परिवर्तन

कतिपय अपरिहार्य कारणों से आर्य समाज बलरामपुर की आगामी फरवरी मास में मनाई जानेवाली स्वर्ण जयन्ती की तिथियों में परिवर्तन हो गया है। अब यह स्वर्ण जयन्ती बलरामपुर नगर के प्रसिद्ध रमना पार्क (केशव उद्यान) मे अत्यन्त ही उल्लासमय वातावरण में शुक्रवार तदनुसार दिनांक १९ फरवरी से २२ फरवरी १९८८ (सोमवार) तक मनाई जायेगी।

इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मन्त्री पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी एवं श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी तथा उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मन्त्री सहित अनेकों लब्ध प्रतिष्ठ संन्यासी, उपदेशक एवं प्रचारक-पधार रहे हैं। कार्यक्रम यथावत् है।

आनन्द उपमन्यु
मन्त्री

अपवाद रहित, विनम्र निवेदन--

प्रदेश की आर्य समाजों के वार्षिक निर्वाचन प्रारम्भ हो गए हैं। आर्यमित्र में केवल उन्हीं आर्य समाजों के चुनाव प्रकाशित होंगे जिनकी प्रामाणिकता सम्बन्धित जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, द्वारा अथवा सभा द्वारा प्रमाणित होगी। अतः कृपया प्रमाणित करा कर ही निर्वाचन प्रकाशनार्थ भेजें।

प्रबन्ध सम्पादक

"भारत में गणतन्त्र"

(शेष पृष्ठ तीन से आगे)

करने को विवश हो गये। फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ के १२ बजे रात्रि को बंदिनी भारत माता की पराधीनता की बर्बर बेड़ियां खन-खना के टूट गयीं। स्वाधीनता का स्वर्णिम सूर्य उदय हुआ। तत्पश्चात राष्ट्र के प्रहरी कर्णधार नेताओं, विधिवेत्ताओंने देश की शासन व्यवस्था के संचालन के लिये संविधान निर्माण समिति का गठन किया। जिसके चेयरमैन डा० भीमराव अम्बेदकर हुए जिनकी अध्यक्षता मे भारत का संविधान २६ जनवरी, १९५० को भारत में कार्यान्वित किया गया जिसके अनुसार 'भारत संप्रभु सत्ता सम्पन्न, धर्म निर्पेक्ष गणराज्य घोषित किया गया तभी से हम 'गणतन्त्र दिवस, राष्ट्रीय पर्व के रूप में मार्ग दर्शन प्राप्त करने हेतु मनाते हैं। दुर्भाग्यवश अंग्रेजों की भेद नीति तथा कुछ राजनैतिक स्वार्थी महत्वाकांक्षियों के हठ धर्म के कारण अखण्ड भारत माता के पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में दोनों हाथ कट गये। आजाद कश्मीर मस्तक के बायें कलंक का टीका लगा है और आज भी स्थिति बहुत चिन्तनीय है पंजाब में खालिस्तान की कुचेष्टा, उग्रवाद बायें सीने पर तथा असम, नागालैंड, मिजोरम की निन्दनीय घटनायें बायें सीने मे कैंसर का रूप धारण कर रही है।

अतः औपचारिक गणतन्त्र मनाकर गर्व अनुभव करना ठीक नहीं। पेट्रो डालर पर देश में धर्मान्तरण की घटनाओं पर गम्भीरता से सोच कर क्रियात्मक रूप से सगठित होकर तन-मन-धन को गणतन्त्र की बलि वेदी पर आहुति देना है।

श्री भगवानदेव शर्मा अनेक आरोपों के कारण आर्य समाज से निष्कासित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की २५-१-८८ की अन्तरङ्ग सभा द्वारा श्री भगवानदेव शर्मा को अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा करके छल-कपट युक्त व्यवहार तथा सार्वदेशिक सभा एवं इसके वरिष्ठ अधिकारियों के विरुद्ध असत्य एवं मनगढ़ंत झूठे आरोप लगाने तथा सभा प्रधान जी के नाम भेजे गए पत्रों पर सदन मे विचार होने से पूर्व उन्हें सभी आर्य समाजों, आर्य समाज के समाचार पत्रों, सार्वदेशिक सभा के सदस्यों और दिल्ली प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों को भेजकर सार्वदेशिक सभा तथा इसके वरिष्ठ अधिकारियों को बदनाम करने की कुचेष्टा के कारण सर्वसम्मति से आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया गया है।

सदन में डा० गोविन्दराय चौधरी द्वारा श्री भगवानदेव के विरुद्ध चारित्रिक दोष सम्बन्धी जो विस्तृत पत्र सभा प्रधान जी को भेजा गया था, वह भी पढ़कर सुनाया गया। श्री भगवानदेव को इसी प्रकार की अनुशासनहीनता के कारण पहले भी सार्वदेशिक सभा की १५-७-७९ की अन्तरङ्ग सभा द्वारा आर्य समाज से निष्कासित कर दिया गया था किन्तु उनके द्वारा लिखित में खेद प्रकट करने और भविष्य में ऐसा न करने के आश्वासन पर क्षमा किया गया था।

सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

लखनऊ न्यायालय में वैदिक धर्म का प्रचार

नगर आर्य समाज लखनऊ के तत्वावधान में दिनांक २३-१-८८ को बसन्त उत्सव गत वर्षों की भांति दीवानी न्यायालय में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में विशाल यज्ञ के पश्चात् पं० राम चरित्र पाण्डे, श्री पवन कुमार शास्त्री का प्रवचन एवं श्री मुन्नालाल के भजनों द्वारा वैदिक सिद्धांतों का प्रचार हुआ।

कार्यक्रम का संचालन श्री रेवती रमण एडवोकेट द्वारा किया गया तथा भारी संख्या में वैदिक साहित्य एवं आर्यमित्र का वितरण भी किया गया। इस कार्यक्रम मे लगभग १००० वकीलों व मुन्शीगण तथा न्यायालय के सभी जज लोग सम्मिलित हुए सभी ने कार्यक्रम की सराहना की।

आर्यों का रोष

दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले तमस कार्यक्रम में आर्य समाज को साम्प्रदायिक दंगों आदि कराने का वृथा आरोप दिखाये जाने पर समाज के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम की कटु आलोचना की है तथा सरकार से शीघ्र इसे बन्द करने की अपील की है।

सभा मन्त्री

शोक समाचार

१९६० में आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान राय बहादुर बाबू दुर्गाप्रसाद जी रईस (फर्रुखाबाद) के दौहित्र शाह वृजकृष्ण जी का १-१२-८७ को सराय माली खाँ लखनऊ-३ निवास पर निधन हो गया। उनका दाह-संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार हुआ। १२-१२-८७ को विशाल गृह शुद्धि यज्ञ हुआ।

स्वर्गीय शाह जी वैदिक प्रचार केन्द्र लखनऊ के संयोजक श्री ज्ञानकृष्ण जी के अग्रज थे प्रभु से दिवंगत आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है। सभा मन्त्री

वर की आवश्यकता

एक आर्य परिवार की कुलीन, सुन्दर, स्वस्थ, सुशिक्षित, सुशील, गौर वर्ण, २५ वर्षीया ग्रेजुएट कन्या के लिए योग्य, शिक्षित, बरसरे रोजगार वर की आवश्यकता है। जाति का कोई बन्धन नहीं। पत्र व्यवहार भगतसिंह आर्य, न्यू-अयभारत स्टूडियो, रानी के० के० मार्केट, बलरामपुर (गोण्डा) के पते पर करें।

आर्य कवि सम्मेलन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला इटावा के आर्य महा सम्मेलन तथा आर्य समाज औरैया की हीरक जयन्ती का सर्वाधिक आकर्षक आयोजन आर्य कवि सम्मेलन दिनांक २०-२-८८ दिन शनिवार की रात्रि में होना निश्चित हुआ है। इस कवि-सम्मेलन में अखिल भारतीय हिन्दी मञ्च के निम्नांकित मूर्धन्य आर्य कवि गण पधार रहे हैं—

(१) मा० निर्भय जी हाथरसी (२) मा० शिशुपाल जी निर्धन (३) कु० उर्मिला श्रीवास्तव (४) मा० रामवीर सिंह जी क्रांतिकारी' (५) मा० संदीप सपन (६) मा० लाखनसिंह जी 'सौमित्र' (७) मा० वेदव्रत बाजपेई (८) श्री श्रीनारायन 'टोपा'।

इस आर्य कवि सम्मेलन का संचालन कविवर श्री जयनारायण जी 'अरुण' उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा सम्पादित होगा।

वेद प्रकाश आर्य
मन्त्री—आर्योपसभा
इटावा

आर्य महा सम्मेलन आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला इटावा

औरैया। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में दिनांक १६-२-८८ से दिनांक २१-२-८८ तक आर्योपसभा का महा-सम्मेलन यजुर्वेद पारायण बृहत् यज्ञ के साथ उल्लास एवम् समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस महा सम्मेलन में पधारने वाले आर्य जनों के निःशुल्क आवास तथा भोजन की समुचित सुव्यवस्था है। इस महा सम्मेलन मे वैदिक धर्म तथा तत्सम्बन्धी दर्शन, काव्य, शिक्षा और समाज सुधार सम्बन्धी अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया है जिसमे आर्य जगत के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मूर्धन्य आर्य संन्यासी, विद्वान नेता, उपदेशक, कवि तथा भजनीक पधार रहे हैं।

कु० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा

श्रद्धांजलि

—दयानन्द वाल मन्दिर आर्य समाज पिथौरागढ़ में तामिलनाडु के मुख्य मन्त्री श्री रामचन्द्रन की दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी की अध्यक्षता में शांति यज्ञ हुआ दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

महाकवि निराला जी के जन्म दिन बसन्त पंचमी पर—

महाप्राण निराला के प्रति—

अन्धकार में उदित सूर्य-सी कविता कान्ति बिखेरी,
अवरोधों की अनी पराजित कर, प्रतिभा से फेरी।

संघर्षों से झुका न, जिसका पौरुष महा प्रलय था,
अन्तस में अमृत हिलोर थी, दृग में गंगा जल था।

युग ने पागल कहा, सहा क्या क्या तुमने दीवाने,
तुम मर-मर कर जिये, अमृत की गंगा को ढुलकाने।

नील कण्ठ बन गये, काव्य-हित पिया, कष्ट-विष-प्याला,
मिला भारती को ऊर्जस्वित, अपराजेय निराला।

अपने जीवन तरु पर तुमने अमर बेलि थी ढाई,
वह तुम पर छा गयी, तुम्हारी ही पीकर तरुणाई।

जिसकी गिरा, अंगिरा का बल लेकर भूपर उतरी,
अमृत काव्य की प्राण दायिनी, स्वर्ण-राशि है बिखरी।

—लाखनसिंह भदौरिया
'सौमित्र'
भोजपुरा, मैनपुरी

ओ३म् महिमा

श्री गिरिजा प्रसाद द्विवेदी मन्त्री आर्य समाज फ्रेडगंज बाराबंकी

ओम् शक्ति परम् ओम् शांति परम्।
यह है वेदो का ज्ञान, ओम् शक्ति परम्॥
अब है जन-जन की पुकार।
जल्दी आओ करतार॥
तुम हो विश्व के सरदार।
शक्ति ओम् परम्॥
तूने ऋषि को बनाया।
रात दिन भी सजाया॥
औषधि अन्न को उगाया।
शक्ति ओम् परम्॥
फिर मानव की रचना न्यारी।
कोई राजा औ भिखारी॥
जिनमे ज्ञान शक्ति है डारी।
शक्ति ओम् परम्॥
वेदों का ज्ञान कराया।
सत्य असत्य को सुझाया॥
तू समझ ले नर औ नारी।
शक्ति ओम् परम्॥
तेरी कौशल कला निराली।
जग में फैली हरियाली॥
क्यों गिरिजा बात बिसारी।
शक्ति ओम् परम्॥

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible] मदन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
[illegible] ४५६६३
[illegible] एल० डब्ल्यू/एन पी. ०६
फाल्गुन कृष्ण ४
७ फरवरी रविवार, १९[illegible] ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[illegible] आर्यवीर दल जौनपुर का [illegible] सम्मेलन व श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

[illegible] को [illegible] मन्दिर [illegible] में जौनपुर-आर्यवीर दल का [illegible] सम्मेलन और दशोत्सव तथा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस [illegible] मनाया गया जिसमें आर्य वीर दल के ३०० [illegible] भाग लिया मुख्य अतिथि थे प० सत्यदेव शास्त्री [illegible] आर्यवीर दल उ० प्र० व श्री [illegible] (पूर्व [illegible] प्र०) व्यायाम प्रदर्शन कबड्डी, [illegible] का कार्यक्रम देखने योग्य था। [illegible] सराय लोका को [illegible] सिंह अधिष्ठाता आर्यवीर दल [illegible] श्री [illegible] संचालक व श्री प० सत्यदेव [illegible] भाषण हुआ। आर्य मुनि जी [illegible] प्रमुख भूमिका [illegible] किया। श्री रमाकान्त उप संचालक [illegible] सहयोग किया —मन्त्री

[illegible] द्रष्टा ऋषि दयानन्द

(पृष्ठ ५ का शेष)

[illegible] अज्ञान को दूर करो नहीं तो हिन्दु जाति का यह प्रवाह [illegible] हो जायगा। ऋषि की यह आवाज बहरे कानों के ऊपर पड़ी। [illegible] उसका परिणाम आज हमारे [illegible] ऋषि [illegible] होगी उसकी [illegible] के व्यक्तित्व को समझेंगे [illegible] ऋषि दयानन्द ने नवभारत के निर्माण में किस [illegible] है। वस्तुत: इतिहास ही इस बात [illegible] सम्भवत: नव भारत के अभ्युत्थान मन्दिर में नाम [illegible] दयानन्द का नाम न लिखा पर ऋषि दयानन्द [illegible] है जिसके ऊपर वह मन्दिर सुन्दर रूप से स्थित होगा और [illegible] सारे भूमण्डल को सुख और शांति का उपदेश [illegible] यह सब तब होगा जब भारत ऋषि दयानन्द का दिव्य [illegible] अनुभव करेगा।

प्रसिद्ध कवियों की मधुर वाणी

लखनऊ में १४ नवम्बर १९८७ को हुए कवि सम्मेलन में कविवर [illegible] सिंह क्रान्ति कु० [illegible] श्रीवास्तव [illegible] सुल्तानपुरी, श्री [illegible] कुमार [illegible] सिंह भदौरिया 'सौमित्र' मैनपुरी [illegible] नारायण [illegible] किशोर को [illegible] ९६ [illegible] मांगये। ३ कैसेट (प्रति कैसेट [illegible]) [illegible] में प्राप्त कर और कवियों को सुनिये [illegible]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

आवश्यक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, [illegible] एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विविध प्रकार के सांस्कृतिक, [illegible] एवं कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विविध [illegible] तथा सम्मेलनों के [illegible] हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० ([illegible]) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों, विद्वानों, [illegible] आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं [illegible] शिक्षण संस्थाओं के समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट [illegible] सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध है। [illegible] 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य	१०००-०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ६ कैसेट—	मूल्य	१००-०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—		२०-०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		३-०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८, १९ तथा २० अक्तूबर के [illegible] रिकार्डिंग कैसेट [illegible] मूल्य पर [illegible] सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु [illegible] आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को [illegible] कैसेट [illegible] में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को १० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] आर्य [illegible] प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, [illegible] के लिए [illegible]
ए० पी० (निकट [illegible] सिनेमा) [illegible], लखनऊ में श्री [illegible] मुद्रित एवं प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

ऋषि बोध पर्व–विशेषांक

★ ओ३म् ★

आर्यसमाज के संस्थापक—

महर्षि दयानन्द सरस्वती



दयानन्दाब्द १६३, वैक्रमाब्द २०४४, सृष्टि संवत १९७२९४९०८८

रविवार, फाल्गुन कृष्ण ११

वर्ष ९१] १४ फरवरी १९८८ [अङ्क ७-८

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

मुद्रक एवं प्रकाशक—
विश्वम्भर दयाल गुप्त

इस अङ्क का
मूल्य ५)

प्रबन्ध सम्पादक—
इन्द्र देव पाठक
एम० ए०, साहित्याचार्य

ऋषिबोध की पावन सन्ध्या पर शुभ आशीर्वचन

प्रिय तिवारी जी



माननीय आनन्द बोध जी सरस्वती

'मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि आर्यमित्र आगामी १६ फरवरी को ऋषिबोधांक के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

१६ वीं शती के महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत भूमि मे जन्म हुआ। उस समय हिन्दू जाति सामाजिक कुप्रथा रूढ़िवाद अन्धविश्वास छूत-छात आडम्बर बाल विवाह जैसी अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियो मे ग्रसित थी। बारह वर्ष में शिवरात्रि के पर्व पर दयानन्द को ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ और शिव मन्दिर से निकल कर वह सच्चे शिव की खोज मे निकल पड़े अनेक वर्षों तक उन्होंने पदयात्रा करते हुए वनो बीहड़ो नदियो पर्वतो को पार करते हुए सन्तो महात्माओ और कई विद्वानो से सम्पर्क किया किन्तु उनकी ज्ञान पिपासा को कोई शान्त नही कर पाया आखिरकार मथुरा मे गुरु विरजानन्द की कुटी मे पधार कर आर्ष ग्रन्थो के अध्ययन मे उन्हे सत्य का बोध हुआ और वहां से शिक्षा समाप्त करके अपने गुरु विरजानन्द से आशीर्वाद पाकर महर्षि दयानन्द मानव जाति के उद्धार के लिए कृण्वन्तो विश्वमार्यम का महामन्त्र लेकर कर्म क्षेत्र मे जुट गए और १८७५ मे उन्होंने बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। आज भारत तथा भारत से बाहर आर्यसमाज की लगभग ७ हजार इकाइयां कार्यरत है।

महर्षि दयानन्द ने समाज मे व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर विश्व के मानवमात्र मे भाई-चारा राष्ट्रीय सद्भाव धार्मिक जागृति सर्वव्यापक एक ईश्वर की उपासना पर बल दिया। देश की आजादी के लिए स्वतन्त्रता का उद्घोष करने वाले वह पहले भारतीय थे और स्वराज्य शब्द भी उनकी ही देन थी। वह एक युगद्रष्टा पुरुष थे। आर्य जाति सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

मै चाहता हूं प्रत्येक आर्यजन इस पावन वेला मे ऋषि के सन्देश को विश्व के कोने-कोने मे पहुंचाने का अडिग व्रत ले। मेरी समस्त आर्यजनो के प्रति हार्दिक शुभकामनाए।

श्री मनमोहन तिवारी
मन्त्री, आर्य प्र सभा उ० प्र०

आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

शिवरात्रि का पावन सन्देश



श्री पं० इन्द्रराज जी

* * *

परम ज्ञान की ज्योतिर्मयी शिवरात्रि पुनः आ गई। यह केवल बालक मूलशंकर के हृदय मे ज्ञान की ज्योति जलाने नहीं आई थी अपितु सारे विश्व में फैली हुई अज्ञान की तमिस्रा को छिन्न भिन्न करके वैदिक रवि के प्रकाश से समस्त मानव जाति को प्रदीप्त करने आई थी। अतः हम आर्यों के जीवन में इस बोध दायिनी शिवरात्रि का विशेष महत्व है। आज हमारे राष्ट्र में आतंकवाद, विघटनवाद की प्रवृत्तियां सिर उठाने लगी हैं। मध्ययुगीन सड़ी गली मान्यताओं ने अपने कुत्सित करिश्मे फिर दिखाने प्रारम्भ कर दिये हैं। कहीं सती प्रथा के नाम पर निर्दोष अबला को अग्नि समर्पित कर दिया जाता है तो कहीं तान्त्रिकों के भ्रमजाल में फंसकर पूरा का पूरा परिवार ही स्वेच्छा से अपना विनाश कर लेता है गुरुडम और जड़ पूजा के अनेक प्रकार अपने नये-नये रूप में काल का गराल बन कर मनुष्य जाति को ग्रसितकर रहे हैं इन सब गह्वरगर्तों से मानव को कौन बचाएगा ... केवल आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

तो आइए ! आज हम व्रत लें-विश्व के क्षितिज से-समस्त अवैदिक मान्यताओं को तिरोहित करने का, जड़पूजा का निवारण कर एकेश्वर निराकार ब्रह्म की उपासना का, गुणकर्मानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था में पूरी मानव जाति को समाहित कर देने का, अपनी प्रिय देववाणी संस्कृत को परमवन्द्यासन पर प्रतिष्ठित कराने का।

हम 'ज्ञानाग्निः समिध्यते' ज्ञान की समिधा से होतृ करने वाले आर्य हैं, अग्नि के धधकते हुए गोले हैं। हमारा दृढ़व्रत है हम संसार को अज्ञानमयी पापमयी कलुषकालिमा को भस्मीभूत कर देंगे।

मै आर्यसमाज के कन्धों पर आये हुए इस गुरुतर दायित्व को पूर्ण करने हेतु शिवरात्रि की इस पावन वेला में प्रदेश के समस्त आर्य भाई बहिनों का अभिनन्दन करता हूं और उनका आह्वान करता हूं कि वे साधना के इस पवित्र मार्ग पर दृढ़व्रती होकर चलते रहें, प्रभु का मंगलमय आशीः हमारे साथ है, आने वाला कल हमारे साथ है।

इन्द्रराज

प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

सन्देश

आर्यजन ऋषिबोध पर्व को सफल बनाएं



श्री मनमोहन तिवारी

यह वह पावन रात्रि है जिस रात्रि को हमारे ऋषिवर्य दयानन्द को सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ था। उनके हृदय मे ज्ञान की पावन ज्योति प्रदीप्त हुई थी। उसे लेकर वह चल पड़े थे विश्व के कोने-कोने मे अगणित दीप जलाने। वे एकाकी थे, पर गुरु का ज्ञान, असीम कृपा से भरा हुआ प्रभु का वरद् आशी उनके साथ था। भयानक अवरोधो, प्रतिरोधो, अनुरोधो के बीच वे अडिग रहे सत्य पथ पर अचल हिमालय की भाति वे कहा करते थे—'न्यायात्पथ प्रवचलन्ति पद न धीरा'। आज हम हजारो लाखो है, उनकी दिखाई हुई राह का सम्बल हमारे साथ है, वेद की पवित्र ऋचायें हमारेसाथ है। हम चाहे तो क्या नहीं कर सकते, इस धरनी की तो बात ही क्या—'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हम चाहे तो आकाश और पाताल तक को आर्यत्व की वेदी पर झुका सकते हैं। आवश्यकता है केवल एकत्व को समर्पित होकर कार्य करने की।

मै आज की इस पावन वेला मे प्रदेश के अपने सभी आर्य भाई बहिनो का हृदय से अभिनन्दन करता हू। हमारी सभा ने इस वर्ष १९८८ मे, वेद प्रचार को व्यापक गति देने एव सगठन को अधिक सुदृढ़ करने हेतु कतिपय ऐतिहासिक निणय लिये है जिन्हे हम 'आर्यमित्र' के २४ जनवरी के अङ्क मे प्रकाशित कर चुके हैं। मै चाहता हू प्रदेश को आर्य जनता इन कार्यक्रमो को सफल बनाने मे प्राणपण से जुट जायें। हम आपके साथ है, हमारी शुभकामनाए आपके साथ हैं।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

सम्पादकीय—

ओ३म् नमः शिवाय

उस परम कारुणिक महिमामहान परमश्रीमान अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परमदेव प्रभुवर की इस कल्याणमयी करुणामयी रचना में कभी २, मानव की अपनी अज्ञानता के कारण, दिव्य ज्योतिर्मय ज्ञान के अक्षय भण्डार वेदविद्या के लुप्त हो जाने के कारण, जगती के आकाश में तमिस्राच्छन्न बदली, सूर्य के दिव्य देदीप्यमान ज्ञान-प्रकाश के अक्षय भण्डार को, अपने अल्पस्वरूपीय अहम्मन्यता में मदोन्मत्त होकर मानो अस्त करने का दुश्छल कलुषित प्रयास करने लगती है। ऐसा मालूम होता है मानो विश्व का गगन-मण्डल उस आलोकपुञ्ज विधाता की अद्भुत रचना के अद्भुत मञ्जुमयङ्क से सदा सर्वदा के लिए वञ्चित हो जायेगा। आसुरी शक्तियाँ विजय के उन्माद में उन्मत्त होकर पीयूषवर्षिणी परमपावन वैदिक धारा के कगारों को तोड़ती हुई विश्व के एकाधिपत्य का स्वप्न देखने लगती हैं।

मेरे प्रभु ? तुम्हारी दिव्यदया का एक अंश ऐसे समय में, हर युग में, हर विपत्ति में बोध की रात्रि बनकर आया है, अमरता का सन्देश लेकर आया है। अज्ञान और पाप की राह में भटकते इन्सानों को करुणा, प्रेम और मैत्री का सन्देश सुनाने आया है। आज्ञा तुम्हारी और सन्देश उसका...मानव जाति फिर प्राणापन्न होकर अमृत की वर्षा में सराबोर हो जाती है। कोई उन्हें देव कहता है, कोई साक्षात्...कहता है कोई उन्हें पुत्र कहता है, कोई ऋषि-महर्षि, पर हम कहते हैं वह देव भी है, साक्षात भी है और तुम्हारा प्यारा पुत्र भी है। आज अपने मोक्ष सुख को छोड़कर आगया हम इन्सानों, हैवानों के बीच जहर का प्याला पीने, ईंट पत्थर खाने, कड़कती हुई तलवार का वार सहने।

मेरे प्रभु ? वह ऐसी ही निशा थी हम आर्यों के जीवन में, काली भयंकर तमस से आच्छन्न, अपनी काल जिह्व से तुम्हारे प्यारे संसार को निगलने की बलवती दुराकांक्षा लिए हुए। महाभारत का परिवर्तीकाल, वेदविद्या का लोप, अगणित मतमतान्तरों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, दानव लीलाओं से परिपूर्ण कुत्सित विघटन मानव समाज का। तेरी सुन्दर सृष्टि का क्रूरतम उपहास और अन्धकार के गहरे गर्त में गिरती जा रही मानवता...सब कुछ अन्धकारमय। "तमासीत्तमसागूढमग्रे"...और तूने एक देवयान भेज दिया मेरे देव ? एक छोटा सा बालक बिठाया, टंकारा की पथरीली शुष्क जलविहीन धरिणी पर.. नाम था उसका मूल (नक्षत्र) वाला मूलशंकर। सुन्दर, स्वस्थ, बलिष्ठ शरीर के अन्दर अनन्तज्ञान की प्रतिभा संजोये वह अंकुर—चल पड़ा शिवरात्रि को, मठिया में शिव की, तपस्या करके रिझाने, सजाने, मनाने...नहीं नहीं...पहिचानने। वह प्रलयङ्कर भयंकर ताण्डव नृत्यकारी कामारि आशुतोष—बहुत जल्दी प्रसन्न होने वाला है, नहीं नहीं मेरे बच्चे पर बहुत मुश्किल से प्रसन्न हुआ है। रतजगा करा ही दिया। और अरे ? यह

क्या-मूषक-वह भी निर्द्वन्द्व, डर का नाम निशान नहीं, आशुतोष के चेहरे पर मलमूत्र विसर्जन, उफ ? त्रिशूल खामोश है। पिता से पूछा तो लगा एक थप्पड़। शिव शिव ऐसी शंका करता है। वह थप्पड़ क्या था, कमाल कर दिया थप्पड़ ने। थप्पड़ लग गया दुनियां के शैतानों को, गुमराह करने वालों को, धूर्तों को पाखण्डियों को। एक भोलेभाले निर्मल हृदय बालक की जिज्ञासा कोटानुकोटि भुवनभास्कर का प्रकाश लेकर विश्व के कोने-कोने में पहुंच गई। तमिस्रा भाग गई। कभी २ ताल ठोंकती है—हिजड़े की हेकड़ी मर्दों के सामने, स्यार की बौखलाहट सिंह के सामने—अब चल नहीं सकती। टिक नहीं सकता अन्धकार प्रकाश के सामने।

और आज पावन शिवरात्रि की फिर वही वेला आ गई हम आर्यों के जीवन में, जगने जगाने के लिए, आर्य बनने बनाने के लिए, वेद पढ़ने - पढ़ाने के लिए, कितना बड़ा गुरुतर दायित्व दे दिया हमें शिवरात्रि ने उसका .. जिसका वह भी था, हम भी हैं। मेरे प्रभु, हम आज के आर्य समाजी भले ही उसका मूल्यांकन न कर सकें—करेगा जगती का आनेवाला आशामय स्वर्णिम वेद की ज्योतियों से लहलहाता भविष्य।

आइए इस बोधरात्रि पर जगती में बोध की दीपावली जलायें। अज्ञान की यामिनी को छिन्नभिन्न कर दें। शिव की सच्चाई को जन २ में उतार दें। कलुष कालिमा को निर्मल धवल तुषाहार बना दें। प्रेम के पीयूष से मानव के अन्तःस्थल को सराबोर कर दें। वेदों के नाद से आकाश गुञ्जायमान कर दें सजा दें मानस मन्दिर को सच्चे शिव की आरती से।

ओं नमः शिवाय

* *

लिहाफ वितरण समारोह–आर्यसमाज अमरोहा में

आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद) के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य के दामाद श्री राजेश कुमार जी के आदर्श विवाह के शुभावसर पर श्री सीताराम जी शर्मा, मन्त्री आर्य समाज अमरोहा ने निर्धन जनता में लिहाफ वितरण किये।

श्री राजेश कुमार जी ने आर्यसमाज को ११००) रु० की धनराशि दान दी। इस अवसर पर नगर के अनेक गण्यमान्य नागरिकों ने उपस्थित होकर अपनी शुभ कामनाएं अर्पित की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश एवं 'आर्यमित्र' परिवार की ओर से शतशः शुभकामनाएं एवं बधाई।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

मूलशंकर ने ही शंकर का स्वरूप समझा

(श्री विद्यावारिधि आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री दर्शन वाचस्पति बदायूं)

वेद-रूपी ज्ञान का समस्त ब्रह्माण्ड एक बोलता हुआ सर्गबद्ध महाकाव्य है, जिसके सूर्य चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र, राशियाँ आदि सर्गों के शीर्षक हैं। इसके प्रथम सर्ग की प्रस्तावना जल प्लावन में महासमुद्र से अपना अपना सिर ऊँचा उठाते हुये देवतात्मा हिमालय ने लिखना प्रारम्भ किया, जब वासन्ती श्री ने नव किसलय दलों और सुरभित कुसुमस्तबकों के सुनहले और रुपहले अलंकार प्रकृति रानी को उपहार में प्रस्तुत किये। कोयल की कमनीय काकली ने सूर्य की किरणों से देदीप्यमान काञ्चन और राजत किरीट पहने हुए हिमालय का स्वागत और अभिनन्दन किया था। आदि मानव ने हिमवती प्रकृति के पालने में पहले पहल अपने पांव पसारे थे। तभी कण-कण के अधिराज सर्वव्यापक प्रभु ने अमैथुनी सृष्टि मे आदि ऋषि अग्नि, वायु आदित्य और अङ्गिरा के हृदयों में अपने अमृत ज्ञान का आविर्भाव किया था। समय बीतता गया, प्रकृति उपादान से बने पुतलों का क्रमिक पालन-पोषण चलने लगा।

'संयोगो हि वियोगान्त अर्थात् सभी संयोगों का अन्त वियोग के शाश्वत सिद्धान्त के अनुरूप प्रलय या विनाश होने लगा। ऋषियों ने उसी अनादि अनन्त, सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक शक्ति को रचना करते समय ब्रह्मा, पालन करने पर विष्णु और प्रलय करने पर शंकर के नाम से पुकारा। पृथिवी और आकाश के मन भावन दृश्यों से मण्डित उन अमर पन्नों को बहुत काल तक तत्त्वदर्शी महर्षि वस्तु स्थिति में पढ़ते और प्रकट करते रहे।

विविध संस्कार और कर्मों में लिप्त जीवात्माओं के मन और बुद्धि अज्ञान तिमिर से आच्छादित होने लगे, आदि ज्ञान-सूर्य के प्रकाश की क्षीणता में बलवती होती गई। फलतः 'एकोऽहं बहुस्याम' की व्याख्या भी अन्यथा की गई। सनक, सनन्दन सनातन और वाराह आदि २४ अवतारों की कल्पना की गई। और मिट्टी, पत्थर, धातु आदि से निर्मित प्रतिमाओं में शंकर आदि की काल्पनिक प्राण प्रतिष्ठा की गई। और स्वरूपतः निराकार ईश्वर को साकार और मूर्ति के रूप में गढ़ लिया गया और मूर्ति पूजा प्रचलित हो गई।

मूलशंकर ऐसे ही पूजा निष्ठ परिवार में उत्पन्न हुए थे। मूलशकर की शंकर के विषय मे धारणायें बन चुकी थी कि जटाजूट त्रिनेत्र शिव एक देवता है, कैलाशवासी है, बैल पर सवार हो चलता है, पार्वती उसकी पत्नी है चूहे की सवारी करने वाले गणेश और मयूर वाहन स्वामी कार्तिकेय उनके पुत्र हैं, भांग और धतूरा उसका भोजन है तथा साँपों का हार गले में पहने रहते हैं, सिर पर चन्द्रमा और गंगा निवास करती हैं। वह त्रिशूल धारी श्मशान में रहता भस्म रमाता है, बालक मूलशंकर इस देवता के

प्रति बड़े आस्थावान थे, अप्रमेय श्रद्धा से परिपूर्ण यह बालक अन्य आराधकों के प्रसुप्त होने पर भी शिवालय में अतन्द्रित रह त्रिनेत्री और त्रिशूली के दर्शन करने की अवम्य अभिलाषा हृदय में संजोये दत्तोऽवधान एकाग्र अडिग रहे। सहसा मूषक द्वारा चढ़ाये खाद्य को खाने और लेकर भागने की अप्रकल्पित घटना ने मूल जी की आस्था को अप्रशाम्य वात्याचक्र (तूफान) ने झकझोर दिया, उनको अडिग निष्ठा को दूसरी दिशा देते हुए गम्भीर चिन्तन के भूचाल ने शिवालय से उठकर सच्चे शिव की तलाश में भटकने के लिये आमन्त्रण दे दिया।

वे चल पड़े, कण्टकाकीर्ण जंगल में बीहड़ जंगल में भटके, सच्चे गुरु के माध्यम से सच्चे शिव की गवेषणा में सैकड़ों ग्रन्थों को पलटना पड़ा।

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रं रूप वर्जितम्।
अचक्षुः श्रोत्रमत्यर्थं तदपाणिपादम् ॥१॥
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं च तदव्ययम्।
अदभूतयोनिं पश्यन्ति धीराः आत्मावमात्मनि ॥२॥

वह तो इन्द्रियों से आग्राह्य, अगोत्र, रूप-वर्जित, नेत्र, कान, हाथ पांव से रहित अर्थात् पूर्णतया शरीर रहित निराकार है ॥१॥

वह नित्य विभु अतिसूक्ष्म और अव्यय अर्थात् अपरिवर्तनशील है। अखिल चराचर का वही प्राण है, उसी आत्मतत्व शिव को योगी लोग अपनी आत्मा में देखते हैं।-२॥

सोचा, फिर तो यह प्रभु और वह कैलाश वासी तपस्वी राजा शिव अभिन्न या एक नहीं हो सकते' ईश्वर महेश्वर, महादेव दुष्टों को रुलाने वाले सर्वगत रुद्र माने जाने वाले शंकर तो निराकार ही है।

जिसका वर्णन वेदों में इस प्रकार है—

यस्य भूमिः प्रमा अन्तरिक्षं मुहोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मैज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥
यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः।
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥

इसी का भावानुवाद शिवपुराण वायु संहिता खण्ड १ अध्याय १२ में किया गया है—

अ द्यां मूर्धानं तस्य विप्रा वदन्ति,
खं वै नाभं चन्द्र सूर्यो च नेत्रे।
दिशाः श्रोत्रे चरणौ च क्षितिश्च,
सोऽनित्यात्मा सर्वभूतात्मचेताः ॥

अर्थात् ब्रह्मज्ञानी लोग द्यौ लोक को उस शिव का सिर कहते हैं। आकाश उसकी नाभि है। चन्द्र और सूर्य उसके नेत्र हैं। दिशायें उसके कान हैं और पृथिवी उसके चरण हैं वह अचिन्त्य रूप शिव रूप सब प्राणियों का आत्मा है, चेतन है।

(आ) सर्वानन शिरोग्रीवः, सर्वभूत गुहाशयः।
सर्व व्यापी च भगवान् तस्मात् सर्वगतः शिवः ॥

अर्थात् मुख, सिर और गर्दनें उसी की हैं। क्योंकि वह सबमें समाया हुआ है हम सब भी व्यापक हैं, अतः वह शिवशंकर सर्वत्र है।

शिव पुराण में आगे बहुत स्थल वेद और उपनिषदों के छायानुवाद हैं।

कतिपय श्रद्धालु कहते हैं कि वह कण-कण व्यापी भगवान् भक्तों के हित में साकार भी बन जाता है, परन्तु इस कथन पर गम्भीरता से विचार करने पर यह युक्ति भी निःसार प्रतीत होती है। विचारणीय है कि जब भगवान् निराकार रूप मे रहता है तो क्या भक्तों के अहित में रहता है? और फिर अपने असली रूप को छिपाकर वह मायावी माया रूप धारण करता है अर्थात् असली हीरे के रूप मे स्वयं को प्रस्तुत न कर नकली हीरे के रूप में प्रस्तुत करता है। भाई मेरे। निराकार व्यापक भगवान् तो निश्चित ही घट-घट के भावों को चाहें वे छलपूर्ण हों या निश्छल सबको जानने मे समर्थ है, पर एक देशी साकार होने पर व्यापकता के अभाव मे प्रत्येक मन की जानने की सामर्थ्य तो समाप्त ही हो जायेगी जैसे साकार शिव भस्मासुर के मनः कामना को न जान पाये, वरदान दे बैठे और तब रक्षार्थ विष्णु की शरण में भागे-भागे गये।

फिर प्रश्न यही उठता है कि कैलाश वासी शंकर का यह कथानक कैसे प्रसार पा गया? इसमें सच्चाई यही है कि हमारे अप्रतिम शक्तिशाली महापुरुष, देवस्वरूप शंकर जो हिमालय पर रहते थे, उन्हीं का यह वर्णन है, प्रत्यक्ष मे सामान्य लोगो का स्नेह, लगाव अधिक होने, तथा तात्कालिक जनता के प्रभु शंकर की भांति ही उपकारक व कल्याणकारक होने से व्यापक प्रभु शकर की भांति ही उनकी मान्यता हो गई,

आप कह सकते है, यह बात वास्तविकता पर आधारित कैसे मानी जा सकती है? इस पर हमारा कथन है कि यह कहानी जब पुराणकारों द्वारा विश्लेषणात्मक ढंग से यथार्थ रूप में प्रस्तुत की गई, तो उक्त तथ्य स्थिति सामने आयी देखिये पुराणों मे—

स आदिः सर्वजगतां, कोऽस्य वेदान्वयंततः।
सर्व जगदस्य रूपं दिग्वासः कीर्त्यते ततः ॥१
गुण त्रयेमयं शूलं शूलीयस्माद् बिभर्ति सः।
अबद्धाः सर्वतो मुक्ता भूता एव स तत्पतिः ॥२
श्मशानं चापि संसारस्तद्वसन् कृपयार्थिनाम।
भूतयः कथिता भूतिः, तां बिभर्ति स शंकरः ॥३
वृषोधर्म इति प्रोक्तस्तमारूढ़स्ततो वृषः।
सर्पाश्च दोषः क्रोधाद्यास्तान् बिभर्ति जगन्मयः ॥४
नानाविधाः कर्मयोगाः जटारूपा बिभर्ति सः।
वेदत्रयं त्रिनेत्राणि, त्रिपुरत्रिगुणं वपुः ॥५
भस्मीकरोति तद्देवास्त्रिपुरघ्नस्ततःस्मृतः।
एवं विधं महादेवं विदुर्ये सूक्ष्मदर्शिनः ॥६
कथंकारं हिते नाम भजन्ते नैव ते हरम् ॥

अर्थात् वह शिव सबका आदि कारण है, उसका अन्वय अर्थात् वंश कोई नहीं है।१। इसीलिए वह दिगम्बर, सत्व, रज और तम ये तीन गुण ही त्रिशूल हैं, इसलिये वह त्रिशूली है, बन्धन रहित मुक्त जीव ही भूत (प्राणी) है और वह शिव उनका पति है।२। यह संसार ही श्मशान (जिसमें शरीर सोते हैं) वह शिव कृपाकर इसमें रहता है। इसलिए वह मरघट वासी है, समस्त ऐश्वर्य ही विभूति है, उनका धारणकर्ता एकमात्र शिव है।

धर्म को वृषया वृषभ (बैल) कहते हैं, क्योंकि यह आनन्द की वर्षा करता है, अतः शिव वृषभारूढ़ कहलाते हैं, क्रोधादि ही सर्प है, वह जगन्नियन्ता इसको धारण करता है, पर इनका

उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।४। नानाकर्म योग ही बताये हैं, वेदत्रयी (ऋग्, यजुः, साम) ही तीन नेत्र हैं, सत् रज और तम तीन गुण ही सोना, चांदी और लोहे के त्रिपुर हैं, जिनसे बने जीवात्मा के स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरों के शिव के द्वारा निवृत्ति हो जाती है। इसलिए शंकर को त्रिपुरारि कहते है। सूक्ष्मदर्शी तत्त्व ज्ञानी ही उस महादेव को जान सकते हैं, फिर न जाने लोग क्यों नहीं ? उक्त व्यापक अजन्मा शंकर का ध्यान धरते हैं ?

प्रस्तुत पुराण मनुष्यों द्वारा कल्पित काव्य है, अतः किसी भी वस्तु के दार्शनिक या वैज्ञानिक वर्णन में सरलता लाने के लिए काल्पनिक और मनोहारी वर्णन ही अपेक्षित होता है। पुराण काव्यों का काम ही यह है कि वे किसी अव्यक्त वस्तु का सुबोध दृश्य रूप में व्यक्त मनोरंजक रूप में वर्णन करें।

इसी सत्यस्वरूप की प्राप्ति और प्रसार में उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन महर्षि दयानन्द बनकर जन कल्याण के लिए अर्पित किया। वे निर्लोभ और निर्भीक थे। परन्तु समस्त मूर्तिपूजक अर्थलोलुप और उदरम्भरि थे, 'मूर्ति पूजा के चढ़ावा से होने वाली आय में महर्षि को बाधक समझ उनके विद्रोही बन गये। हजारों पण्डे पुजारी ही नहीं, वे मूर्ति भञ्जक मुसलमान बड़ी-बड़ी कब्रों की पूजा करके अपनी पेटपूजा कर रहे हैं।

हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान मूर्ति मात्र के ही नहीं, प्रत्युत मुर्दा परस्त हैं, अजमेर में या बदायूं की छोटी बड़ी कब्रगाह पर जाकर देखा जा सकता है। यहां के पण्डों ने अल्ला के बजाय कब्रों की पूजा की ओर जनसाधारण को आकर्षित किया है। कुरआन की दृष्टि में साफ नक्शा खींचा है।

बजाहिर पीरो पैगम्बर परस्ती इनका है ईमां।
मगर लफ्जी नुमायश के लिए तौहीद का सामां।

यह स्पष्ट रूप से पीर पैगम्बर को ही पूजते हैं, केवल कहने को एक ईश्वरवाद का ढंढोरा पीटते हैं।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने वेद के शब्दों में कहा है कि ..

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततोभूय इवते तमो योऽसंभूत्यां रताः॥
यजु० ४०/९

अर्थात् जो प्रकृति का या उससे बने पाषाण आदि की ब्रह्म के स्थान पर उपासना करते हैं वे अज्ञान और दुःख सागर में डूबते हैं। अतः मूर्ति-पूजा त्याज्य है।

★

नम्र निवेदन

आर्य मित्र के "ऋषि बोध पर्व-विशेषांक" में प्रकाशनार्थ अनेकों मान्य विद्वानों, लेखकों आदि की अमूल्य रचनाएं हमें प्राप्त हुई हैं और सामग्री मुद्रणार्थ प्रेस में जाने के समय तक रचनाएं प्राप्त हो रही हैं। हम सभी लेखकों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं। जो रचनाएं स्थानाभाव के कारण इसमें प्रकाशित न हो सकेगीं उन्हें हम आगामी अंकों में यथासमय प्रकाशित करते रहेंगे।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

वेद तथा मानवता के प्रति ऋषि की देन

(श्री प्रेम प्रकाश जी शास्त्री गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ)

भारतीय वैदिक एवं लौकिक वाङ्मय में वेद सर्वोपरि हैं। यही कारण है कि वेदोत्तर-कालीन साहित्य में अत्यन्त प्राञ्जल शब्दों में वेदों की महिमा गाई गई है। मनु महाराज ने लिखा है--

यः कश्चित् कस्यचिद् धर्मो मनुना संप्रकीर्तितः।
स सर्वाभिहितो वेदे सर्व ज्ञान मयो हि सः॥

अनादिनिधना भगवती श्रुति के अन्दर ही नानाविधि विज्ञान, अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति एवं मानवीय नैतिक मूल्यों का सम्यग् समावेश है। यद्यपि वेदों की धर्म ग्रन्थों के रूपमें लौकिक जगत् में प्रसिद्धि नहीं है, पुनरपि मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्र।

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"

इस उक्ति को गर्व के साथ कहते हुए वेदों का धर्ममूलकत्व स्वतः प्रकट कर रहे हैं।

वेदों की सार्वभौमिकता को दर्शाते हुए कहा गया है कि "सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति" इसका एक उदाहरण यह है कि जिन वर्गों पन्थों एवं सम्प्रदायों ने वेदो को धर्म ग्रन्थ नहीं माना गया है, उनमें भी वेदो के प्रति सम्मान बना रहा। वे निर्गुण पन्थी हों, सिख हों, भक्तिमार्गी हों, शैव हो, शाक्त हों या फिर वैष्णव, सभी ने वेदो को आदर की दृष्टि से देखा है।

वेद ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक उपनिषद् वेदांग एवं उपांग आदि पर जो भाष्य लिखे गये हैं उनका यदि भली भांति अध्ययन किया जाये तो कई जन्मों में भी सम्भवतःपूर्ण न हो सकेगा।

मध्यकालीन भारत में कुछ ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं कि वेदों का अध्ययन अध्यापन प्रायः लुप्त सा हो गया था। धन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्होने लुप्त वैदिक परम्परा को पुनः जन-जन तक फैलाया एवं वेदालोक से समस्त संसार को आलोकित किया। महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व इस भारत की विचित्र ही दशा थी। सम्पूर्ण भारत वर्ष में अन्ध विश्वासकी अविच्छिन्न परम्परा परिलक्षित हो रही थी। वेद-मत-विरोधी विकासवादी झंझावात की तरह अपनी प्रबल कल्पनाओं से भोली-भाली जनता को ठगने में संलग्न थे। वेदों की धज्जियां उड़ाई जा रही थीं, सन्त सताये जा रहे थे और हिंसक दयाशून्य घृणित कर्मों मे प्रवृत्त थे। सती-प्रथा, बाल-विवाह, अनमेल-विवाह आदि सामाजिक कुरीतियां जोरो पर थीं। रूढ़िवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद एवं भाषावाद रूपा ज्वालाओ से यह भारतवर्ष धधक रहा था। "स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्" इस निन्दनीय समुद्घोष से यह सम्पूर्ण भारतवर्ष मुखरित था।

इतना ही नहीं कहीं अस्पृश्यता की बहुलता दिखाई दे रही थी तो कहीं धर्म के बहाने अधर्म का शखनाद गूञ्ज रहा था। तीर्थ स्थानों में लुटेरों का प्रवेश, घर-घरमें मूर्त्तिओं का आडम्बर पूर्ण अन्धपूजन तथा निराकार परमेश्वर में अश्रद्धा आदि नाना दुष्कर्म परितः व्याप्त थे।

वेदों मे भी प्रतिमा-पूजन, मांस भक्षण, पवित्रतम एवां श्रेष्ठतम यज्ञ कर्म में हिंसानुष्ठान, इन्द्र, विष्णु, विश्वामित्र, वसिष्ठ भरद्वाज आदि शब्दों को आधार मानकर इतिहास की परि-कल्पना, यम-यमी, सरमा-पणी, पुरुवा-उर्वशी, नदी-विश्वामित्र इत्यादि कथानको को लेकर वेदों में अनैतिकता सिद्ध करना, वितण्डावाद का सहारा लेकर वेदों का अनित्यत्व एवं अपौरु-षेयत्व स्वीकार करना इस प्रकार के अलीकपूर्ण भ्रान्तियों एवं कथनों से हमारी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता तथा विश्वमानवता के आधारभूत वेदों पर कुठाराघात किया जा रहा था। ऐसी संकटा-पन्न अवस्था में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस भारत वर्ष में जन्म लेकर वेदों का डंका बजाया, और सम्पूर्ण समाज में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

शिवरात्री के शवन पर्व पर उनको ठोकर लगी और उनका मन मस्तिष्क सत्य ज्ञान की खोज के लिये उद्वेलित हो उठा। वैसे तो सदियों से शिवरात्री पर्व चला आ रहा है, किन्तु विक्रम संवत् १८९५ की शिवरात्री अनोखी ही ठहरी। उस रात्री के व्रतानुष्ठान के अवसर पर प्रतिमा रूपमें प्रतिष्ठित शिव को असत्य एवं शक्तिविहीन समझ कर बालक मूल शङ्कर सत्य शिव की खोज में घर से निकल पड़े। प्रारम्भिक उप-नयनादि संस्कार से दीक्षित होकर, अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण कर तथा कतिपय सन्तों, महात्माओं से बोधित हो, स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती के पास, मथुरा पहुंचे। गुरु ने प्रश्न किया तुम कौन हो? यही तो जानने के लिये आया हूं ऋषिवर ने उत्तर दिया। गुरुवरने सोचा आज प्यासे को पानी मिल गया और अन्धे को लाठी।

गुरु के सान्निध्य में समस्त विद्याओं का स्वल्प समय में ही अध्ययन कर दीक्षान्त समय में दक्षिणा के रूप में गुरु के द्वारा आदिष्ट वेदो-द्धार रूप कर्म को सहर्ष स्वीकार किया। और उनके उद्धार, रक्षा तथा तदुक्त वैदिक मत को स्थापित करने मे अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया।

उन्होने वेद ईश्वरोक्त वचन होने से, छल-कपट-दोष-रहित ब्रह्मा आदि आप्त पुरुषों के द्वारा प्रमाणित होने से, एवं मन्त्र आयुर्वेद की भांति उनका प्रामाण्यत्व सिद्ध होने से समस्त विश्व में वेदों के प्रचार का प्रारम्भ कर दिया।

जिस तरह स्वामी दयानन्द जी की वेद भाष्य-सरणि सरलता सुगमता एवं औचित्य की पराकाष्ठा को स्पर्श करती हुई दृष्टि-गोचर होती है, उस तरह दूसरे भाष्यकारों की नहीं।

स्वामी जी ने यास्क आदि प्राचीन भाष्य-कारों की शैली का समर्थन किया और रावण सायण, उव्वट महीधर प्रभृतियों की कड़ी आलो-चना की है। सायण द्वारा प्रतिपादित कर्म-कांड-

परक भाष्य-शैली को उन्होंने अनुचित ठहराया। उदाहरण स्वरूप 'इन्द्रं मित्रं' वरुणमग्निमाहुः॥ उक्त मन्त्र में सायण ने इन्द्र इस पद को विशेष्यत्व के रूप में और अन्य दूसरे मित्र आदि पदों को विशेषण के रूप में व्याख्यान किया है, परन्तु स्वामी दयानन्द ने "इममेवाग्निं" इस यास्क-वचन को उदाहरण के रूप में उपस्थापित करते हुये "अग्नि" शब्द को निराकार परमेश्वर-वाचक के रूप में व्याख्यान कर विशेष्य के रूप में स्वीकार किया।

मध्यकालीन भाष्यकारों का अनुसरण करते हुये कुछ पाश्चात्य विद्वान तथा उनके कतिपय अनुयायी भारतीय विद्वानों ने वेदों में मांस भक्षण सिद्ध करने का प्रयास किया। स्वामी जी ने 'वेदों में मांस भक्षण सर्वथा वर्जित है' इस कथन को पुष्ट किया, जैसा कि ऋग्वेद के इस मन्त्र से ज्ञात होता है।

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥ (११)

स्त्रियों के शिक्षण के विषय में भी महर्षि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि स्त्री एवं पुरुष का समान अधिकार है। बिना पुरुष को नारी अर्थकारिणी नहीं तथा नारी के बिना पुरुष भी अपने लौकिक उद्देश्य को प्राप्त करने में असमर्थ है। दोनों के परस्पर सौहार्द सामञ्जस्य भावना में ही समाज एवं राष्ट्र का हित निहित है।

महर्षि दयानन्द के वैदिक क्रांति का ही यह फल है कि तात्कालिक अथवा तदुत्तरवर्ती प्रो० मैक्समूलर, अरविंद घोष पं० गिरिधर शर्मा, पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार आदि विद्वानों ने उनकी वेद-भाष्य शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वेद एवं मानवता के प्रति उनका उपकार सदियों तक नहीं भुलाया जा सकता। प्रभु हमें शक्ति प्रदान करे कि हम उनके वेद-भाष्य सरणि का अनुसरण कर, अपने जीवन को कृतार्थ कर सकें और उनके ऋण से उऋण हो सकें। ऋषि बोध के अवसर पर उस महान् विभूति को कोटिशः नमन्।

शुद्धि संस्कार

दिनांक २६/१/८८ को गणतन्त्र दिवस के पुनीत पर्व पर 'आर्य समाज' बहेड़ी (बरेली) के सौजन्य से श्री दीनमुहम्मदने अपनी पूर्ण आस्था से इस्लाम धर्म त्याग कर हिन्दू धर्म स्वीकार किया जिसका नाम पूर्व निर्धारण के अनुसार चैतन्य गिरि रखा गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। जिनमें श्री कुन्दन लाल धींगरा का योगदान विशेष सराहनीय रहा।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३१/३/८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय एकता

(श्री सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट उप-प्रधान मण्डी बांस आर्य समाज मुरादाबाद)

राष्ट्रीय एकता का जो स्वप्न आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने लगभग १२५ वर्ष पूर्व भारत की भूमि पर संजोया था कहीं उस समय के शासन ने यदि सही अर्थों में उनके विचारों को समझ कर उस समय दयानन्द जी का सहयोग दे दिया होता तो आज भारत का राजनैतिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक चित्रण कुछ और ही होता। ब्रिटिश शासन का हित तो भारतवासियों को यानि हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाना था। जरा विचारिये तो सही स्वामी दयानन्द के वैचारिक आन्दोलन आर्य समाज में प्रारम्भ से जो राष्ट्रीय एकताके प्रयास किये उनमें महिला जागरण, पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिये प्रचार आदि के अतिरिक्त धार्मिक क्षेत्र में वैचारिक क्रांति लाना भी था।

राजस्थान के प्रवास में स्वामी दयानन्द एक समय उदयपुर में ठहरे हुए थे और वहां पर अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का कुछ भाग लिख रहे थे। महाराजा उदयपुर के आग्रह पर महलों में स्वामी जी के राष्ट्रीय एकता पर व्याख्यान हो रहे थे और महलों की रानियां भी स्वामी जी के प्रवचनों से प्रभावित होती थीं। उन दिनों उदयपुर राज्य के दीवान श्री मोहनलाल जी स्वामी जी के साथ सदा रहते थे एक दिन श्री मोहनलाल स्वामी जी से पूंछ ही बैठे कि देश की एकता किस प्रकार से मजबूत व स्थाई हो सकती है।

स्वामी जी ने राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में कितना महत्वपूर्ण एवम् एकटूक उत्तर दिया स्वामी जी बोले—

"जब तक देश में एक भाषा एक धर्म और समाज में सबको एक जैसा सम्मान नहीं मिलेगा तब तक देश में एकता आनी कठिन है।"

जब आर्य समाज की स्थापना हुई थी तब उसके प्रचार एवं प्रसार के लिये हिन्दी भाषा को चुना गया और उन्होंने स्पष्टरूप से कहा था जब तक किसी राष्ट्र में अभिव्यक्ति का माध्यम कोई एक सशक्त भाषा नहीं होती जिसे सारा देश समझ सके तब तक एकता की चर्चायें हवा में घूमती रहेगी। ब्रह्म समाज के एक संस्थापक नेता ने स्वामी दयानन्द की कलकत्ता यात्रा में एक बार उनसे निम्न शब्दों में कहा कि कहीं आपने अंग्रेजी पढ़ी होती तो कमाल हो जाता स्वामी दयानन्द जी ने तुरन्त प्रश्न किया कि कौन सा कमाल हो जाता जो अंग्रेजी से ही हो जाता है इस पर वे ब्रह्म समाजी बोले कि वेदों का सन्देश आप आज भारत में दे रहे हैं उसे अंग्रेजी भाषा के माध्यम से इंगलैण्ड अमरीका फ्रांस जर्मनी में प्रसारित किया जा सकता

था इसका उत्तर स्वामी जी ने निम्न प्रकार दिया था।

'मुझसे भी बड़ी एक भूल आपने अपने जीवन में यह कर रखी है जो संस्कृत और हिन्दी नहीं जानते नहीं यदि हम दोनों भाषाओं को जानते होते तो हम एक-एक ग्यारह हो जाते दोनों मिलकर पहले भारत मे इस ज्ञान का प्रकाश करते और बाद में बाहर चलने की सोचते। जिनके अपने घर मे कूड़ा—करकट भरा है वह पड़ोसियों को सफाई के उपदेश कैसे दे सकता है।"

महर्षि देश और राष्ट्र की उन्नति के लिए एक भाषा का होना एक राष्ट्रीय एकता के लिये अनिवार्य मानते थे और उसके लिये उन्होंने गुजराती को छोड़कर हिन्दी को अपनाया और यही कारण हुआ कि उनके महान शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने लार्ड मैकाले योजना को असफल बनाने के लिए गुरुकुल की स्थापना की थी। भारत भर मे और दुनिया के अन्य देशों में जहां जहां स्वामी जी की वाणी पहुंची वहां हिन्दी के माध्यम से आर्य समाजियों ने भारतीय राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया और राष्ट्रीयता प्रदान की। हम उनके त्यागमय जीवन मे स्पष्ट शिक्षा मिलती है कि जिस धर्म शुद्ध के शुद्ध स्वरूप की रक्षा करने के लिये आर्य समाज की स्थापना की गई थी वह कोई संकुचित धर्म नहीं था वरन राष्ट्रीय एकता का एक महान आन्दोलन है। ये कोई संकुचित धर्म नहीं है वरन स्वामी दयानन्द का उद्देश्य था कि उस धर्म को पूरे भारत में और विश्व मे प्रचारित करना चाहते थे वह भी सबके लिए समान्य रूप से ग्राह्य था। डा० राधाकृष्णन ने अंग्रेजी के सेक्यूलर शब्द का अर्थ धर्मनिरपेक्ष किया था-धर्म एक शाश्वत सत्य है जो प्राणी मात्र के कल्याण की कामना करता है इसी स्वरूप को देव दयानन्द ने जन हित में सम्पूर्ण मानवों के हित के लिए राष्ट्रीय एकता के लिये नया आयाम दिया।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के १० नियम निर्धारित किये और उन नियमों के पठन-पाठन से स्पष्ट है कि वे हर राष्ट्रीय एकता एवम् मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये वे कितने उपयोगी हैं इन नियमो मे संकुचित होने की झलक भी देखने को नहीं मिलती।

जब स्वामी जी आर्य समाज की स्थापना के लिये देश भ्रमण कर रहे थे तब भारत वर्ष की भौगोलिक एवं भावनात्मक स्थिति भी अनेकों भागों में बट चुकी थी वह समय था जब देश मे लगभग ५८० स्वदेशी राज्य न होकर देशी रियासतें थीं जो विलासता के कुचक्रो मे पड़ी हुई थी स्वामी दयानन्द ने वस्तु स्थिति की स्थिति को भांप लिया और स्पष्ट रूप से संकेत दिये कि यदि यही स्थिति रही तो हमारे देश में पराधीनता के बन्धन भी कड़े हो जायेंगे और समाज टुकड़ों-टुकड़ों में विभक्त होकर पतन के गर्त में गिर जायेगा और राष्ट्रीय एकता के चिन्तन पर सदा के लिये प्रश्न चिन्ह लग जायेगा।

इस थोड़े से चिन्तन से हम विचारें कि ऋषि दयानन्द की राष्ट्रीय एकता मे यदि उस समय के भारतीय रजवाड़े सम्मिलित होते तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता और आज थोपी जाने वाली राष्ट्रीय एकता से कहीं अधिक गौरवमय राष्ट्रीय एकता हम वर्षों पूर्व प्राप्त कर लेते।

आर्यसमाज की प्रगति कैसे हो ?

[एक आत्म चिन्तन]

[श्री जगत्प्रिय वेदालंकार 'हिरण्यको', आचार्य अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा]

★

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने विश्व को सुख और शान्ति का धाम बनाने के लिए इस बात पर सर्वाधिक बल दिया है कि हमें सबसे पहले अनिवार्य रूप से अच्छे श्रेष्ठ व आदर्श मानव उत्पन्न करने होंगे। उसने कभी नहीं कहा कि विज्ञान की उन्नति करने अथवा चांद और मंगल ग्रहों पर मनुष्य के चरण पड़ जाने से संसार में सुख और शान्ति व्याप जाएगी। विज्ञान की उन्नति कुछ सुविधायें मनुष्य को भले ही दे दे, परन्तु सुख और शान्ति वह कदापि नहीं दे सकती। आज तक विज्ञान ने क्या किया? यही कि मनुष्य को पारस्परिक द्वेष, घृणा और विनाश के मार्ग पर चला दिया। मनुष्य को मनुष्य बनाने का यह मार्ग नहीं है। मनुष्य को मनुष्य यदि बनाना है तो उसे कोई मजबूत सहारा चाहिये। भगवान् से बढ़कर ऐसा कोई अन्य दृढ़ सहारा उसे नहीं मिल सकता। वही सृष्टि का एकमात्र आधार है। उसके सच्चे और वास्तविक स्वरूप के ज्ञान की आवश्यकता मनुष्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ईश्वर का यथार्थ स्वरूप जितना स्पष्ट और तर्क संगत ढंग से वेद में वर्णित है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। इसीलिए विश्व को वेदाभिमुखी बनाना ही ऋषि दयानन्द के महत् कार्य का सारतत्व था। आर्यसमाज की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने की। आर्य समाज द्वारा वे महान् लोकाभ्युदय को ससिद्ध करना चाहते थे। अपना समस्त जीवन इसी पवित्र कार्य के लिए उन्होंने समर्पित किया। उनका जन्म ही जैसे इसके लिए हुआ हो। 'भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्'।

विचारणीय प्रश्न यह है कि अपनी लक्ष्य सिद्धि में आर्यसमाज कहां तक अग्रसर हुआ? कितनी सफलता प्राप्त की?

जीवन को यज्ञिय पद्धति से जीना आर्यत्व का लक्षण है। हम लोग साधना का मार्ग छोड़ते जा रहे हैं और सुविधा जीवी होने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझने लग पड़े हैं। आश्चर्य तो यह है कि हमें परस्पर द्वेष और घृणा करने के लिए समय मिल जाता है, जबकि स्वाध्याय आत्म चिन्तन और प्रेम करने के लिए जीवन बहुत छोटा है। दुर्भाग्य से साधना का दक्षिण-पथ हम से छूट गया और संस्थावाद के कुचक्र मे इस बुरी तरह फस गये। आधुनिक संस्थावाद आधुनिक प्रजातन्त्रवाद की अवांछनीय सौगात है, जो भ्रष्टाचार की वृद्धि तो कर सकती है, किन्तु सदाचार को प्रतिष्ठित वह नहीं कर सकती।

यह अत्यधिक क्षोभ पूर्ण है। ब्राह्मी-वाटिका को उजाड़ने का जैसे इसने ठेका ही ले रखा है।

अंधी श्रद्धा को कोसते-कोसते हमने सूझती श्रद्धा का भी परित्याग कर दिया। तर्क का अन्त नहीं। वह अन्तिम निर्णय में सदा असफल रहा है। तर्क कभी अकाट्य न हुआ है, न होगा। श्रद्धा के साथ तर्क का नहीं, चिन्तन का गठबन्धन करना होगा। चारों वेदों में तर्क कहीं भी प्रतिष्ठित नहीं हुआ। वहां सर्वत्र श्रद्धा, मेधा, सुमति प्रगति एवं चिन्तन को ही सत्य की खोज एवं ऐश्वर्यों के सम्पादन का आधार माना गया है। भौतिक विज्ञान के भी सभी अन्वेषण व आध्यात्मिक विज्ञान की निखिल उपलब्धियां चिन्तन, धारणा, ध्यान व समाधि जन्य हैं, तर्क जन्य नहीं। न्याय सहित सभी दर्शनों का जनक भी चिन्तन ही है, तर्क नहीं। समाज का मेरुदण्ड साप्ताहिक अधिवेशन था। वह अब टूट चुका है। वह किसी तरह यदि ठीक हो जाए तो फिर चैतन्य आ जाए।

क्या हमारे सब कार्य-'सूत्र प्रोत। दारुमयी व योषा' अर्थात् कठपुतली की तरह नहीं हो रहे? संसार का उपकार करने वाला आर्य समाज न जानें कब से केवल हिन्दू हित की दुहाई दिये चला आ रहा है या देने लगा है। इसमें रहकर कोई क्या कार्य करे? इसका वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि भले आदमी को सांस लेकर रहना भी दूभर हो उठा है। आर्य शब्द का उच्चारण करते ही क्या हमें एक दिव्य स्फूर्ति का आभास होने लगता है? दीन-हीन, निस्तेज, अन्ध गतिक चाटुकार पुरुष आर्य नहीं होता। उससे संसार का तो क्या अपना ही भला होने वाला नहीं। केवल व्यक्ति ही नहीं कभी कभी पूरा समाज या राष्ट्र भी भूल कर बैठता है, जिसके कारण भावी पीढ़ियों को घोर विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। विवेक द्वारा उनसे बचने के पूर्वोपाय किये जा सकते हैं।

दयानन्द का आर्यसमाज जब अर्जुन की तरह आत्म स्मृति लाभ कर जागेगा, उठेगा और लक्ष्याभिमुख हो विश्व-प्रांगण में कूदेगा, तब ही वास्तविक भारतोदय होगा। हम ऋषि के सिद्धान्तों पर दृढ़ रह, अनवरत एकजुट होकर साधना के सुपथ पर अग्रसर हों। क्योंकि बलिष्ठ तपस्वी, स्वाहाकारी व सुपठित ब्रह्मचारी ही महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं। राज नेता कितने भी दूध के धुले और तुला पर तुले क्यों न हों, वे भारत की समस्याओं को कभी भी हल नहीं कर पायेंगे। इसलिये ऐ आर्यजन! अपने बलिष्ठ हाथों के साथ, बलवती भावना के साथ वेदों को कस कर थामिए। भारत राष्ट्र की सन्तति आज उत्तरोत्तर अधिकाधिक कामुक, निर्लज्ज, हतप्रभ एवं दुर्नय होती जा रही है। परिणाम स्वरूप जातीय तेज, ओज शौर्य सब नष्ट हुआ जा रहा है। इस घोर संकट की घड़ी में आपके सिवाय-'को राष्ट्रमुद्धरिष्यति'। कभी मनु महाराज ने इस देश के धर्म का मूल कम से कम वेद को माना था। पर आज यह मान्यता प्ररोचना मात्र हो चली है। क्यों? वेदों में ऐसी बातों या शिक्षाओं की कमी नहीं, जो हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सार्वभौम दायित्वों एवं अधिकारों का सुन्दर प्रतिपादन करने वाली

है। महर्षि ने वेदों के धर्म-शास्त्रीय स्वरूप एवं आधार उजागर किया। देव दयानन्द ने वेदों की सर्वतन्त्रसिद्धान्तीय, आधिभौतिक अथवा व्यावहारिक व्याख्या सरणि को पुनः प्रशस्त बनाया। वेद का वास्तविक स्वरूप कोरे प्रमाणवाद से निखरने वाला नहीं। उसके लिए तो स्वतन्त्र चिंतन ही मुख्यतः अपेक्षित है। प्रमाण वाद को तो वहीं पर स्वीकारा जाना चाहिए, जहां उससे अर्थ विकास में सहायता मिले।

आर्यसमाज के सामने अब दो ही विकल्प हैं। या तो वह तप, घोर तप करे अन्यथा पतन और पतन को प्राप्त हो। गिरे, गिरे और खूब गिरे। इतना कि नाम निशान भी न बचा रहे। यदि जीवन में तपन नहीं तो पतन अनिवार्य है। सिद्धान्त आर्यसमाज के सुपुष्ट और मानने योग्य हैं। श्रद्धा उसमें हिन्दुओं की जा जाए। कार्य विशाल राष्ट्रीय क्षेत्र चुना जाए। तभी कुछ बात बनेगी। पहले जैसी धुन समाज में अब नहीं रही। इसीलिए उसे घुन खाए जा रहा है। श्रद्धावान् आत्मवान् नर-शार्दूलों में ही धुन समाया करती है। अब हम में पहले की सी स्वसिद्धान्तों के लिए अटल आस्था कहां रह गई है? सारा का सारा धन्धा वाचिक चल रहा है। ठोस कार्य कुछ भी नहीं हो रहा है। इसीलिए प्रथमतः आत्म शुद्धि अपेक्षित है। हमें अपनी धुन के पक्के धुनी लोग पैदा करने होंगे। उनकी विद्यमानता में ही समाज की डांवाडोल स्थिति संभल पाएगी। आर्य जनों में क्षमा, तितिक्षा, शान्ति, धैर्य, पारस्परिक सहानुभूति, गुणप्रेमता और सेवाभाव चिरस्थायी हों, तभी कुछ सुधार सम्भव है।

वेद-विचार या धर्म प्रचार में कटुता या कटाक्ष का लेशमात्र भी पुट नहीं होना चाहिए। उसमें तो प्रेम, प्रेरणा और समाधान ही अपेक्षित है। प्रचारक का जीवन सर्वतोभद्र रहना चाहिए। वेदाचार से शून्य रहकर वेद का ढोल बजाना कभी भी शोभनीय एवं श्रेयस्कर नहीं। आर्य प्रचारक तो 'स्वेन क्रतुना संवदेत्' अपने कर्तृत्व के साथ ही बोले। सदा जीवन की भाषा में बात करना ही उसका अलंकरण है।

करना उपकार जगत् का है हमारा लक्ष्य।
पर वह लक्ष्य है हमारा अभी पूरा न हुआ।
थोड़ा कर पाये हैं,करना है बहुत कुछ बाकी।
जितना चाहिए था, उतना न अभी तक हुआ।
यह दुआ दीजिए हमसे कि कर्म से अपने।
हम वह कर कर जाएं जब जो अभी तक न हुआ।।

अपने सम्यग्दर्शन की सिद्धि में प्रभु ही हमें संभाल सकता है। अपने संकल्प में हमें स्वयं आस्थावान् और दृढ़ रहना है। वेद आत्म-साधना, विवेक और उपासना ये चारों सहचारी व अनुयायी बने रहें। वेद अन्य तीनों का मूल है, सिद्ध करने वाला है, तो विवेक हमारे वेदाचार, आत्म साधना एवं उपासना को सार्थक बनाता है। भीतर के द्वेष और बाहर के झगड़ों को समाप्त किये बिना संगठन सूक्त का दैनन्दिन पाठ साकार कैसे होगा? हमें आर्यसमाज को एक चरित्र प्रतिष्ठित संस्था फिर से बनाना होगा। संगठित रहकर हम बने रहेंगे। विघटित होकर विनाश सुनिश्चित है। मिथ्या दोषारोपण एवं निराधार निन्दा की दुष्प्रवृत्ति से क्या हम मुक्त नहीं हो

पायेंगे ? विश्व भर के श्रेष्ठ जनों को एक सूत्र में पिरोने का उपदेश ऋषि दयानन्द ने हमें दिया था। यही उनकी वसीयत थी।

मानवात्मा आज उस अद्भुत 'दैवी-विधान' की सुपावन व्यवस्था के लिए चीत्कार कर रहा है, जिसमें कानून का नहीं, न्याय का राज्य हो। बहुमत का नहीं, न्यायप्रिय एवं ईश्वर परायण सज्जनों का शासन हो। सम्प्रदाय की नहीं, मानव धर्म की पूजा हो। स्वार्थ नहीं, सर्वहित भावना की जिसमें प्रतिष्ठा हो। उच्छृङ्खलता एवं नग्नता के स्थान पर जहां शालीन शील हो व सौम्य आचार का सन्दर्शन हो भोग और असन्तोष का स्थान जहां योग और सन्तोष को मिले। शासन लोलुप व स्वार्थ परायण शासकों का मस्तिष्क जब हृदयहीन हो जाता है, तब जन सुख की हानि और धर्म की ग्लानि फिर क्यों न हो ?

आज का समूचा समाज राष्ट्र व विश्व दिनानुदिन पतन की ओर दौड़ा चला जा रहा है। प्रयत्न व आयोजन सुख के लिए हो रहे हैं, मगर दुःख दारिद्र्य बढ़ रहा है। कोशिश गरीबी मिटाने की है, पर मिट अमीरी रही है। लक्ष्य हमारा समानता का है, किन्तु असमानता प्रचण्ड से प्रचण्डतर होती चली जा रही है। पुकार चरित्र शोधन की है, किन्तु बोलबाला दुश्चरित्र का देखने में आता है। वस्त्रों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी है, रुझान नग्नता की ओर है। घोषणायें विश्व शान्ति की हैं, तो तैय्यारियां विश्व विध्वंस की सभी हैं। यह सब भयंकर चरित्र हनन व पतन दिल दहला देने वाला है। स्वराज्य में बीभत्स काण्ड निर्लज्ज नृत्य, आपाधापी कर्तव्य शून्यता छा जाने से चारों तरफ अराजकता का ताण्डव है। अनुशासनहीनता से विद्यालय, कार्यालय सब पट गये हैं। वे मनोरंजनालय से अधिक कुछ नहीं रह गये। कामकाज में दक्षता के अभाव में लापरवाही व उत्तरदायित्व हीनता द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ती जा रही है। जिसका स्पष्ट परिणाम यह है कि शासन सभी कार्यों में गलतियों, विफलताओं व दीर्घसूत्रताओं का शिकार हो रहा है। कितनी भयावह स्थिति है।

ऋषि दयानन्द के सिपाहियो ! उठो जागो,
शोला बनकर फूंक दो पाप के अम्बार को।
उठो बना दो पावन फिर से अपने इस संसार को॥

वेद के शब्दों में-'सुपर्णोऽसि गरुत्मान्, पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिशमुदृंह'।

ऐ आर्य जाति ! तू सुपर्ण है, गौरवयुक्त है। समस्त धरती की पीठ पर सवार हो जा। अपने दिव्य प्रकाश से उसे भर दे। द्युलोक को अपनी ज्योति से थाम ले और दिशा-विदिशाओं को अपने तेज से दृढ़ बना दे। ★

स्वामी दयानन्द द्वारा नारी उत्थान के प्रयास

[डा० रामनाथ वेदालंकार, वेद मन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार]

★ ★ ★

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जहां अपने समय में भारत में प्रचलित विविध कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा मिथ्या धारणाओं के उन्मूलन का बीड़ा उठाया, वहां स्त्री जाति को दयनीय स्थिति से उबार कर समाज में उचित स्थान दिलाने का भी भरसक प्रयास किया। उस समय स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी। स्त्री-शिक्षा का प्रसार नाम को भी नहीं था, स्त्रियों को शिक्षित करना सर्वथा अनावश्यक समझा जाता था। घरों में उनका सम्मान भी नहीं होता था, अपितु वे ताड़न की ही अधिकारी समझी जाती थीं। बाल-विवाह प्रचलित थे, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्त्रियां बाल विधवा हो जाती थीं। विधवाओं का मांगलिक उत्सवों में भाग लेना अच्छा नहीं समझा जाता था। विधवाएं या तो सती हो जाती थीं, या जीवन भर कष्ट भोगती रहती थीं और समाज से अपमानित होती रहती थीं। नारियों को वेद पढ़ने के अधिकार से भी वंचित रखा गया था। वे बाहर नहीं निकलती थीं, घर में भी उन्हें पर्दे में रहना पड़ता था। नारी के विदुषी और अध्यापिका बनने की बात कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था। स्वामी जी ने नारी के विषय में प्रचलित इन हीन विचारों को परिवर्तित करने के लिए और समाज में नारियों को उच्च स्थान दिलाने के लिए अपनी लेखनी और वाणी को प्रवृत्त किया।

वैधव्य के अभिशाप और सती प्रथा से विह्वल

स्वामी दयानन्द ने जब देखा कि छोटी-छोटी बालिकाओं के विवाह हो जाते हैं तब देश के अधःपतन को देखकर उनका हृदय नारी जाति के प्रति दयार्द्र हो उठा। उपदेशमंजरी के १२ वें प्रवचन में वे कहते हैं–

'यदि इस समय हम लोगों में बाल-विवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात और इतनी भ्रूण हत्याएं होती।'

उस समय विधवा-विवाह का भी प्रचलन नहीं था, अतः नारी के लिए वैधव्य का कष्ट दुस्सह हो जाता था। उक्त प्रवचन में ही विधवा विवाह के सम्बन्ध में स्वामी जी कहते हैं– 'विधवा-विवाह से जो लोग विरोध करते हैं, उनकी पुष्टि करके विधवा विवाह का खण्डन करने की मेरी इच्छा नहीं है। पर यह अवश्य कहूंगा कि ईश्वर के समीप स्त्री पुरुष दोनों बराबर हैं, क्योंकि वह न्यायकारी है, उसमें पक्षपात का लेश नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जावे तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जावे।······वाह रे ! तुम्हारा सामाजिक प्रबन्ध। इस अन्ध परम्परा

को देखकर तो मानना पड़ता है कि इससे विधवा विवाह सब प्रकार अच्छा है ।'

उक्त प्रसंग में ही सती-प्रथा को वेद विरुद्ध बताते हुए कहते हैं—'वेदबाह्य रीतियों को हमें परम्परा की पदवी कभी नहीं देनी चाहिये । सदुपदेशपूर्ण वेदों और आर्ष ग्रन्थों में जिस सच्ची परम्परा का विधान किया गया है, उसका पालन करना चाहिए ।

सती होने के लिए वेद की आज्ञा नहीं है ।

स्त्री शिक्षा पर बल

स्वामी जी ने स्त्री-शिक्षा पर बहुत बल दिया है । प्राचीन-काल में स्त्रियाँ शिक्षित होती थी इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उपदेश-मंजरी के तृतीय प्रवचन में वे कहते हैं—

'पूर्वकाल में आर्य लोगों में स्त्रियां उत्कृष्ट रीति से पढ़ती थीं । आर्य लोगों के इतिहास की ओर देखो—स्त्रियाँ आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर रहती थीं और साधारण स्त्रियों के भी उपनयन और गुरुगृह में वास इत्यादि संस्कार होते थे । गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि बड़ी—बड़ी सुशिक्षित स्त्रियां होकर बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थी ।'

स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में लड़के लड़की सबके लिए शिक्षा का विधान करते हुए लिखा है—'सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण—कर्म—स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है' (समु० ३) । स्वामी जी लड़के-लड़कियों सब की शिक्षा को अनिवार्य बताते हैं तथा जो माता पिता उन्हें शिक्षा से वंचित रखना चाहें उन्हें राजदण्ड मिलना चाहिये, ऐसा कहते हैं—'इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके । पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो (समु० ३) । ऋग्भाष्य ६–४४–१८ के भावार्थ में लिखते हैं कि राजा ऐसा यत्न करे कि जिससे सब बालक और कन्यायें ब्रह्मचर्य से विद्या युक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हो सत्य, न्याय और धर्म का निरन्तर सेवन करें । यजु० १०–७ के भाष्य में लिखा है कि राजा को प्रयत्नपूर्वक अपने राज्य में सब स्त्रियों को विदुषी बनाना चाहिये ।

वेदाध्ययन और यज्ञ में अधिकार

स्वामी दयानन्द ने प्रमाणपूर्वक बताया कि यज्ञ करने—कराने और वेदों के अध्ययन-अध्यापन करने का अधिकार नारी को भी वैसा ही है जैसा पुरुष को । उन्होंने इस ओर ध्यान आकृष्ट किया कि प्राचीनकाल में यज्ञों में यजमानों के साथ यजमान पत्नी भी बैठती थी तथा मन्त्रोच्चारण करती थी । वेद के अनुसार कन्याओं का भी उपनयन संस्कार होना चाहिये, परन्तु मध्यकाल में स्त्रियों का उपनयन का अधिकार समाप्त कर दिया गया । अनुपनीत व्यक्ति पढ़ने का अधिकारी नहीं होता, अतः नारियां वेदाध्ययन से वंचित कर दी गयीं । यथा, भागवत पुराण में लिखा है कि स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है—"स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा" (भा० पु० १–४–२५) दयानन्द ने इसका सप्रमाण खण्डन किया ।

स० प्र० तृतीय समु० में 'क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वे लिखते हैं—' अवश्य, देखो श्रौत सूत्रादि में इसी 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्', अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके ? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थीं, यह शत-पथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है।"

ऋग्० १।१६४।४१ के भाष्य में लिखते हैं—"जो स्त्रियां समस्त सांगोपांग वेदों को पढ़के पढ़ाती हैं वे सब मनुष्यों की उन्नति करती हैं।"

माता का महत्व

स्वामी जी स० प्र० के द्वितीय समुल्लास में 'मातृमान् पितृमान्–आचार्यवान् पुरुषो वेद' इस वचन को उद्धृत करते हुये लिखते हे—"जब उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्य-वान्, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों से प्रेम और उनका हित चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करती है।" यजु० भाष्य १/२८/१६ में भी ऐसा ही विचार प्रकट करते हैं—"माता की शिक्षा से ही संतान उत्तम होते हैं, और प्रकार से नहीं।"

इस प्रकार सन्तान के योग्य, शिक्षित, सदा-चारी और उत्साही होने में स्वामी जी माता का विशेष योगदान मानते थे इसी कारण नारी की शिक्षा आदि पर बल देते थे।

नारी का सम्मान

स्वामी जी इसके प्रबल पक्षपाती थे कि नारियों का घर में और समाजमें अत्यन्त सम्मान होना चाहिये। चतुर्थ समुल्लास में वे मनुस्मृति के "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" (मनु० ३।५६)

श्लोक का स्मरण कराते हुए कहते हैं कि जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें पुरुष विद्वान् होकर देव संज्ञा प्राप्त करके आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रियायें निष्फल हो जाती हैं। स्वामी जी के मत में घर में पति-पत्नी दोनों का समान स्थान है, अतएव वे लिखते हैं कि स्त्री के लिये पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूज्यनीय है। (स० प्र० समु० ११)।

ऋग् भाष्य १।५०।१ में लिखते हैं कि जैसे नक्षत्र चन्द्रमा के साथ और प्राण शरीर के साथ वरतते हैं, वैसे विवाह करके स्त्री पुरुष आपस में वरतें। यजु० ६।३४ के भाष्य में प्रेरणा करके

हैं कि पुरुष-जन अपनी स्त्रियों को निरन्तर प्रसन्न रखें।

संस्कार विधि के विवाह प्रकरण में वधू के प्रति घरवालों का कैसा व्यवहार होना चाहिये, इस विषय में लिखते हैं—"अपने घर आके पति, सासु, श्वसुर, ननन्द देवर, देवरानी, ज्येष्ठ, जेठानी आदि कुटुम्ब के मनुष्य वधू की पूजा अर्थात् सत्कार करें। सदा प्रीतिपूर्वक परस्पर बर्तें और मधुर वाणी, वस्त्र, आभूषण आदि से सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट वधू को रखें।"

इस प्रकार नारी के विषय में दयानन्द के समस्त विचार उसे एक गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित करने वाले हैं। इन विचारों का प्रभाव शनैः-शनै समाज पर पड़ा है और इनसे नारी जाति के उत्थान में बड़ी सहायता मिली है। दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज ने भी उनके विचारों से अनुप्राणित होकर नारी को समाज मे उत्कृष्ट स्थान दिलाने के लिए सराहनीय प्रयास किया है।

आज राजस्थान के दिवराला ग्राम में घटित सती-काण्ड के समर्थकों की ओर से आर्य समाज को मानों एक चुनौती है कि वह मैदान में उतरे और नारी की सम्मान रक्षा करें।

कलकत्ता में प्रथम डी०ए०वी० विद्यालय का उद्घाटन

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदर्शों को अक्षुण्ण रखने के लिये देश में शिक्षण केन्द्रों की स्थापना के क्रम में कलकत्ता महानगर में स्थापित प्रथम डी० ए० वी० सार्वजनिक विद्यालय का उद्घाटन १-१-८८ को सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में डी० ए० वी० सोसाइटी के अध्यक्ष प्रो० वेदव्यास एवं संगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने दिल्ली से आकर योगदान किया।

आयोजन में प्रधान अतिथि थे "विश्वमित्र" सम्पादक श्री कृष्णचन्द्र अग्रवाल। आचार्य उमाकान्त जी के नेतृत्वमें हवन एवं प्रार्थना से समारोह की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। मञ्च पर प्रधान श्री मुलकराज आनन्द एवं सर्वश्री रामनाथ सहगल, हीरालाल चोपड़ा, आनन्द कुमार अग्रवाल और विद्यालय के प्रिंसिपल श्री आर० एस० शर्मा आदि उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में श्री यतीन चक्रवर्ती ने कहा—"दयानन्द जी ने देश की आजादी और सुशिक्षा दोनों के लिये काम किया था। लोगों को शिक्षित करके वे कुसंस्कारों को समाप्त करना चाहते थे। आशा है इस विद्यालय की स्थापना से आर्य संस्कृति के प्रचार व प्रसार में सहायता मिलेगी।

आइये ! ऋषि बोधोत्सव पर व्रत लें

ले०— श्री आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति, महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद

"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" यह ऋषि महर्षियों का शाश्वत सिद्धांत रहा है। इसके लिए वेद और वेदानुकूल ऋषि-महर्षियों द्वारा प्रतिपादित आर्ष ग्रन्थो के पठन-पाठन की व्यवस्था हेतु उच्चादर्श प्रदायिनी गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करना हमारी विद्यार्य सभा का मुख्य कर्त्तव्य कर्म था। क्योंकि वेद के साङ्गोपाङ्ग अध्ययनाध्यापन से ही हम संसार को विद्यालोकित करते हुए प्राणी-मात्र का कल्याण करने में समर्थ हो सकते हैं।

जब हम मानते है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है और वेद ही ईश्वरीय वाणी है तो ईश्वर से बड़ी मान्यता और किसकी हो सकती है ? अतः हम आर्यों को चाहिए कि वेद के प्रति पूर्ण निष्ठावान् होकर हम अपने बच्चो को वेद पढ़ायें। जब हमारे ही बच्चे वेद नहीं पढ़ेंगे तो अन्यों का क्या कहना ? वस्तु स्थिति यह है कि पिता जी तो आर्यसमाज मन्दिर में जाकर संध्या हवन करते हैं तथा वेदमन्त्रों का कुछ शुद्धाशुद्ध पाठ भी करते हैं और कहते हैं कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इधर बच्चे घरों में टी० वी० देखते हैं तथा उपन्यास पढ़ते है। यह कैसी विडम्बना है कि अपने बच्चो के साथ घोर अन्याय किया जाता है, उन्हें परम धर्म का एक अक्षर भी नहीं पढ़ाते ?

सन् १८५७ की क्रान्ति से लेकर १९४७ यानी स्वतन्त्रता प्राप्ति तक देश को पराधीनता से मुक्ति दिलाने में आर्यसमाज का ही सर्वाधिक यहां तक कि ९० प्रतिशत योगदान रहा। देश स्वाधीन हुआ, स्वराज्य आया। इसके साथ ही आर्यसमाज के कर्णधारों ने बिना सोचे–विचारे ही आर्यसमाज को केवल धार्मिक संस्था घोषित कर स्वयं को राजसत्ता से नितरां पृथक् कर लिया। आर्यों को तो सस्पष्ट घोषणा करनी चाहिए थी अथवा अब करें कि हमारे संस्थापक ने हमें "अग्ने नय सुपथा राये" यह वेद का प्रमाण प्रस्तुत कर नित्य प्रति प्रातः-सायं जग-त्पिता प्रभु से विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य प्राप्ति का दिव्य संदेश दिया है। हम केवल धर्म-२ चिल्लाने वाले नहीं हैं। हम राजसत्ता का भोग करते हुए ईश्वर प्रोक्त सार्वभौमिक वैदिक धर्म की स्थापना कर प्राणी मात्र को सुख एवं शांति का जीवन-यापन प्रदान करेंगे। यही नहीं हमारा इतिहास साक्षी है कि हम आर्यों ने ही सार्वभौ-मिक चक्रवर्ती साम्राज्य का उपभोग करते हुए समस्त संसार के सम्राट् पद को समलङ्कृत किया है। "अहं भूमिमददामार्य्याय" वेद के अनुसार प्रभु ने आर्यों को ही राज्य करने के लिये ही यह भूमि प्रदान की है। अतः स्पष्ट है कि हम आर्यों की तीसरी राजार्य सभा अवश्य

होनी चाहिए । जिसके द्वारा हम भारत में ही नहीं अपितु अखिल विश्व में अपना अस्तित्व स्थापित करें ।

आज इस धर्म निरपेक्षता की आड़ में ही यवन-ईसाई आदि विदेशी विधर्मी भारत में अपना स्वामित्व बढ़ाते जा रहे हैं । देश खण्डित हो चुका और हुआ जा रहा है, विधर्मी भारतीयों को समूल नष्ट करने पर तुले हैं ।

आर्यो ! क्यों नहीं कहते कि ईश्वर की सृष्टि पूर्ण है और वही उसका नियन्ता है, उसकी सृष्टि में मोक्ष से पूर्व भोग की व्यवस्था है ।

अतः यह निश्चित है कि आर्यसमाज को चाहिए कि राष्ट्र रक्षा हेतु इन विदेशियों का पाद चुम्बन करने वाले राजनेताओं से भिक्षा जैसी न मांगकर स्वयं उपर्युक्त तीनों विद्यार्य धर्मार्य और राजार्य सभाओं का सुगठन कर अपने पूर्ण कर्त्तव्य का परिचय दे । तीनों सभायें क्रमशः विद्या, धर्म और राजधर्म में अपने-२ कर्त्तव्यानुसार क्रान्ति कर पुनः विद्या सभा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में, धर्म सभा सार्वभौमिक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में और राजसभा सम्पूर्ण राज नियम पालने में अपने-अपने कर्त्तव्य को पूर्ण निष्ठा एवं विश्वास के साथ निभाते हुए मनुष्यादि प्राणियों के कल्याणार्थ विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा, और धनादि आभूषण रूप पदार्थों की प्राप्ति करा पुनः वैदिक साम्राज्य स्थापित करें । यह संक्षेप से आर्यजनों के समक्ष कुछ सुझाव हैं, कोई त्रुटि हो तो सुधार लें । लेकिन आर्यजन मेरी इस बात को अन्यथा न समझकर ऋषिबोधोत्सव पर आत्मनिरीक्षण कर महर्षि के उद्देश्यों की पूर्ति का संकल्प लें । क्योंकि "यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्रदोषः' अर्थात् यत्न करने पर भी यदि हमें शुभ कार्य में सफलता नहीं मिलती तो पुनः कर्त्तव्य में दोष देखें कि हमारे प्रयत्न में अभी क्या न्यूनता शेष है ? जिससे सफलता नहीं मिली । इस प्रकार स्वदोष दर्शन में समर्थ व्यक्ति या समाज निश्चित रूपेण कभी न कभी अपने लक्ष्य की पूर्ति कर ही लेता है । महर्षि देव दयानन्द ने एक साधारण चूहे के शिव मंदिर में कल्पित शिव पिण्डी पर कौतूहल को देख सच्चे शिव की खोज का व्रत लिया और उसे अन्ततोगत्वा प्राप्त कर ही लिया । इसी प्रकार आज ऋषिबोधोत्सव पर हम आर्यों का कर्त्तव्य बनता है कि सङ्कुचित जीवन बना पारस्परिक भेदभावों को भुला, अहंमन्यता को तिलाञ्जलि दे समूचे विश्व के मानवों को "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के रूप में वेद का दिव्य सन्देश देते हुये महर्षि के उद्देश्यों को पूर्ण कर, उनके सच्चे उत्तराधिकारी होने का परिचय दें ।

★

वार्षिक-चित्र

सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जो वार्षिक चित्र सभा कार्यालय से सीधे भेजे जाते रहे हैं, वह जिला सभा को भेज दिये गये हैं । आप अपनी जिला सभा से सम्पर्क करके चित्र प्राप्त करने की कृपा करें ।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

बात सन् १९६१ के जनवरी मास की है जबकि मुझे अधिकतर महर्षि दयानन्द की शिक्षास्थली मथुरा नगरी के विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम में रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। आश्रम से एक मील की दूरी पर मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बिरला परिवार द्वारा निर्मित 'आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ' के संरक्षण में एक विशाल गीता मन्दिर है। सायंकाल भ्रमणार्थ जब जाना होता तो इसी मन्दिरमें लगभग एक घण्टा बिताया करता। इस मन्दिर का जो मुख्य भाग है और जिसमें योगीराज श्री कृष्णचन्द्र की मूर्ति की स्थापना की गई है, उसके पीछे की ओर पाँच महापुरुषों के चित्र बने हैं, जिनमें एक चित्र महर्षि का भी है। चित्र पर लिखा है 'जागृति और एकता' जिसका तात्पर्य यह है कि आपने जागृति और एकता के लिये कार्य किया।

चित्र के साथ एकता शब्द को पढ़ते ही ऋषि के एकता के लिये किये गये कार्य मस्तिष्क में क्रमशः एक के बाद एक आने लगे और एक बार महर्षि के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास का वह प्रकरण नेत्रों के सम्मुख आकर स्थिर हो गया, जिसमें राष्ट्रीय गठन के लिये ग्राम सभाओंसे लेकर महाराज सभा सभी तक का वर्णन किया गया है। प्रकरण क्या है ? किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ तथा चिरस्थाई बनाने का वास्तविक सूत्र है।

महर्षि लिखते हैं कि 'एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष को रखो, उन्हीं दस ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीस ग्रामों के ऊपर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों के ऊपर चौथा और उन्हीं सहस्र ग्रामों के ऊपर पांचवा पुरुष रखो।

इस प्रकार के संगठनों को जिनके अध्यक्ष यह प्रधान पुरुष होंगे, महर्षि ने 'राज सभा' की संज्ञा प्रदान की है। अर्थात् यह ग्राम सभा वह हुई, जो ग्राम पर राज्य करे, ग्राम का शासन चलाये। किन्तु इन ग्राम सभाओं की सत्ता को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नहीं रखा अपितु दश ग्रामों के ऊपर भी एक प्रधान पुरुष का विधान किया, जो उन दशों ग्रामों के प्रतिनिधियों की बनी 'राज-सभा' का अध्यक्ष होगा। उससे आगे इसी प्रकार बीस ग्रामों की, सौ ग्रामों की तथा सहस्र, दश सहस्र, लक्ष ग्रामों आदि की राज-सभाओं का भी वर्णन किया है तथा सबसे अन्त में वर्णन किया है महाराज सभा का।

राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक ग्राम से लेकर ऊपर तक सबको एक सूत्र में बांधने का इतना सुन्दर विधान है कि जिसमें प्रत्येक ग्राम को अपनी–अपनी परिस्थिति के अनुसार स्व-शासन चलाते हुए भी ऊपर के संग-

ठनों के अन्तर्गत रहने से राष्ट्रीय हित में किसी भी प्रकार बाधा पहुंचने की संभावना नहीं रहती।

इन सारी राज सभाओं की जो शिरोमणि अर्थात सबसे ऊपर की सभा होगी, जिसे हम वर्तमान में 'लोक सभा' कहते हैं और उसका प्रधान पुरुष होगा 'लोक सभाध्यक्ष' लोक–सभा और 'लोक सभाध्यक्ष' तक ही महर्षि ने विचार किया हो सो बात भी नहीं। वह तो आगे तक बढ़े और इससे आगे उन्होंने जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आये हैं, 'महाराज सभा' का भी निर्देश दिया है जिसे आज कल की परिभाषा में 'राज्य सभा' कहा जाता है और जिसका कार्य लोकसभा द्वारा पारित विषय पर विचार के पश्चात् ही विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये लाते हैं। इस सभा का अध्यक्ष उप राष्ट्र-पति होता है।

अन्तिम राज सभा अर्थात लोक सभा तथा महाराज सभा तो वर्तमान काल में भी है, जैसा कि महर्षि मनु महर्षि दयानन्द ने विचार प्रस्तुत किये हैं किन्तु इनसे नीचे की स्थिति सर्वथा विप-रीत है। आज कल राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता के पश्चात् जो ईकाईयां हैं, उन्हें राज्य नाम दिया गया है, जिसका परिणाम हमारे सामने राज्य पर होने वाले झगड़ों के रूप में आने लगा है। और वह झगड़े हैं अधिकतर सीमा सम्बन्धी, बिहार और बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश तथा मैसूर और महाराष्ट्र आदि के। पंजाब को पंजाबी भाषी प्रदेश कहकर खालिस्तान अथवा सिखिस्तान बनाने के लिये तथा बंगालमें गोरखा-लैण्ड बनाने के आन्दोलन भी इसी के परिणाम स्वरूप प्रारम्भ हुए हैं। कारण पर यदि गम्भीरता पूर्वक निष्पक्ष रूपेण विचार करें तो इसी परि-णाम पर पहुंचेंगे कि वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दिन था, जब भारत के प्रांतों को राज्य तथा भारत को भारतीय संघ नाम दिया गया।

उपरोक्त नामकरण यह स्पष्ट करने को पर्याप्त है कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राज्यों का मिलकर बनाया हुआ संगठन है जिसे 'संयुक्त-राज्य' भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से जिन लोगों के हाथों में राष्ट्र की बाग-डोर है, उन्होंने इस विषय में अमेरिका का अन्धानुकरण किया है। अन्धानुकरण हम इस-लिये कहते हैं कि यदि थोड़ा भी बुद्धि का उप-योग किया जाता तो बात बड़ी स्पष्ट है, कि अमेरिका कोई स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राष्ट्रों का समूह है इसलिए उसका नाम 'अमे-रिका यूनियन' ठीक ही है। भारत की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। भारत अनेक राष्ट्रों का समूह नहीं अपितु स्वयं राष्ट्र है। उत्तर प्रदेश, बिहार आदि उसके प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से बनाये गये प्रांत हैं, राज्य नहीं। जब राज्य नाम दिये अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ था तभी सीमा सम्बन्धी झगड़े आरम्भ हो गये थे। भिन्न-भिन्न प्रांतों में वह झगड़े हो रहे हैं उनमें से प्रत्येक प्रांत की जनता दूसरे प्रांत को विदेश तथा वहां के निवासियों को विदेशी सम-झने लगी है। अधिक समय बीतने पर जो परि-णाम हो सकते हैं उपर्युक्त झगड़ों को दृष्टिगत रखते हुए उनका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह असम्भव नहीं कि कुछ समय

पश्चात यह प्रश्न उग्र हो उठे कि प्रत्येक राज्य की स्वतन्त्र सत्ता है, परिस्थितियों वश उस समय एक संघ के रूप में एकत्र हुए थे किन्तु अब पृथक होना चाहते हैं। पहले तो सीमायों झगड़े थे और अब विघटन की प्रवृत्ति प्रबल हो चुकी है, जिसका प्रमाण खालिस्तानकी मांग और उसके लिए विद्रोह है।

इस प्रान्तीयता के नाम पर होने वाले झगड़ों तथा उनसे होने वाली भयंकर हानियों से बचने व भावी विघटन की विनाशकारी प्रवृत्ति को रोकने का एक मात्र उपाय है स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण और वह यह कि समस्त प्रांतों को जिन्हें राज्य का नाम दे रखा है समाप्त कर दिया जाय। इससे प्रथम लाभ तो यह होगा, कि प्रत्येक प्रांतीय सरकार होने वाला व्यय बच सकेगा, तथा दूसरा यह है कि प्रांतीयता की भावना मिट कर केवल मात्र एक भावना राष्ट्रीयता की रह जायेगी।

इस समय कोई बिहारी है तो कोई बंगाली, कोई पंजाबी है तो कोई मद्रासी और कोई महाराष्ट्रीय है तो कोई गुजराती। भारतीय कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। इन प्रांतों के समाप्त होने पर न कोई बिहारी होगा न बंगाली, न पंजाबी होगा न मद्रासी, न महाराष्ट्रीय होगा न गुजराती, अपितु केवल भारतीय होंगे। वहीं संघीयता का वास्तविक रूप होगा, संघ नाम देने से नहीं। नाम के मूल में तो विघटन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने वाला मन्त्र निहित है।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत का पुनर्गठन किया जाये। जिलों और उनसे निचले स्तर के गठन को तो छुआ न जाय अर्थात उन्हें तो ज्यों का त्यों रखा जाये। जिलो से ऊपर प्रति दश जिलों को मिलाकर एक क्षेत्र या कमिश्नरी बनाई जाये, जिसका अधिकारी क्षेत्राधिकारी या कमिश्नर रहे। सारे भारत को पाँच भागों में व्यवस्था की दृष्टि से विभक्त किया जाये और इन भागों के नाम भाषा तथा जातीयता नहीं अपितु दिशाओं के नाम पर उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत, पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत रखे जायें। इनमे से प्रत्येक भाग का अधिकारी प्रधान क्षेत्राधिकारी अथवा चीफ कमिश्नर हो इन सभी चीफ कमिश्नरों का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय सरकार से हो। इस प्रकार सारा राष्ट्र व्यवस्थित रूपेण एक सूत्र मे, एक ही राष्ट्रीय सरकार द्वारा शासित होगा।

दूसरा सूत्र राष्ट्रीय एकता के लिये ऋषि दयानन्द से जो हमें प्राप्त हुआ है, वह है भाषायी। भारत मां के उस सच्चे सपूत ने एक शताब्दी पूर्व ही यह जान लिया था कि किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने के लिए भाषायी एकता परमावश्यक है। यही कारण है कि जन्म से गुजराती तथा संस्कृत के महान पंडित होते हुए भी उन्होंने अपने भावणों का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया तथा अपने समस्त ग्रन्थ भी वेदांग प्रकाश (संस्कृत व्याकरण) को छोड़ कर देवनागरी लिपिमें लिखी जानेवाली हिन्दी भाषा में लिखे। यदि वह चाहते तो भाषण के माध्यम स्वरूप संस्कृत का प्रयोग कर सकते थे तथा लेखन के लिये संस्कृत या गुजराती भाषा का। परन्तु महर्षि यह भली-भांति जानते थे कि एक

तो हिन्दी भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली तथा लिखी जाती है। दूसरे हिन्दी की लिपि तथा वर्णमाला पूर्ण तथा वैज्ञानिक है।

यद्यपि भारत के संविधान में भारत की चौदह भाषायें स्वीकृत हैं तथापि भारत का हित इसी में है कि संविधान द्वारा स्वीकृत इन सभी भाषाओं की एक मात्र लिपि देवनागरी हो। इसमें भाषायी उन्माद का मूलोच्छेदन होगा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र की जनता एक दूसरे को समझेगी तथा पारस्परिक निकटता की स्थापना हो सकेगी।

आर्य समाज का जो सदैव से राष्ट्र हित के कार्यों में अग्रणी रहा है यह अनिवार्य कर्तव्य हो जाता है, कि वह एतद्विषयक प्रचार में पूरी शक्ति के साथ जुट जायें, जिससे जनमत जागृत हो। एक समय था जब विदेशी साम्राज्य भारत पर छाया था, तब आर्य समाज ने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय जागरण के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यदि यह कह दिया जाय तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्यसमाज की सारी शक्ति स्वाधीनता के मन्त्र का प्रचार करने मे लगी हुई थी। यह एक ऐसा सत्य है कि जिसे भारतीय नेताओं ने ही नहीं अपितु भारत से बाहर के विदेशी विद्वानो तथा स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य ने भी स्वीकार किया।

अच्छा हो कि स्वामी दयानन्द के इन दोनों सूत्रों के प्रचार में आर्यजन दृढ़ता पूर्वक जुट जायें तथा ऋषि दयानन्द के बोध दिवस शिवरात्रि के महान पर्व को अपने लिये जैसा कि इसे नाम दिया गया है 'बोध रात्रि' ही समझें। और उस दिन को, जब तक उपर्युक्त कार्यक्रम पूर्ण न हो जाये संकल्प दिवस के रूप में मनाया करें।

शोक समाचार

(१)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (भूतपूर्व लाला रामगोपाल शाल वाले) की प्रिय पुत्र-वधू के निधन के समाचार से बड़ा दुःख हुआ।

परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी
प्रधान — मन्त्री

(२)

दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य समाजी परिवार और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती पूर्व नाम श्री रामगोपाल शाल-वाले की पुत्रवधू श्रीमती कमला आर्या का अचानक ४५ साल की आयु मे निधन हो गया है। अन्त्येष्टि संस्कार यमुना किनारे शवदाह-गृह मे ज्येष्ठ पुत्र संजय कुमार आर्य द्वारा सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के हजारों गणमान्य आर्य नर-नारियो ने दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में शोक सभा का आयोजन करके दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और दुःखी परिवारके प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वैज्ञानिक मनोधर्म के पुरोधा महर्षि दयानन्द

[श्री ज्येष्ठ वर्मन, बम्बई]

आजकल दुनियां में वैज्ञानिक मनोधर्म की बड़ी चर्चा हो रही है। दुनियां के कुछ उच्चकोटि के विद्वानों के अनुसार, विनाशोन्मुख इस मानव संस्कृति का वही एक तारक मन्त्र है। धार्मिक मतांधता के शिकार, और अपने-अपने संकीर्ण आदर्शों के कारावास में बंद लोगों को वही मुक्ति दिलाने वाला है। अपने-अपने मूल के भूल के कारण आपस में शत्रुवत् लड़ने वाले भाई-भाई को स्नेह के बन्धन में बांधने वाला भी वैज्ञानिक मनोधर्म है। भौतिक ऐश्वर्य का हेतु भी वही है और मोक्ष का साधन भी वही है। भारतीय संविधान की धारा भी कहती है कि वैज्ञानिक मनोधर्म का विकास करना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। लेकिन इस बात को जानने वाले विद्वान आज बहुत कम होंगे कि भारत के आर्य लोग सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही वैज्ञानिक मनोधर्म के पुजारी रहे हैं और आधुनिक युग में भी वैज्ञानिक मनोधर्म के झंडे को हाथों में लेकर दुनियां के लोगों को उस झंडे के नीचे आने के लिए आह्वान करने वाला भी एक भारतीय ऋषि था। उसी का नाम था स्वामी दयानन्द सरस्वती।

सत्य की खोज की मानसिक प्रवृत्ति (स्पिरिट आफ इन्क्वायरी) को ही वैज्ञानिक मनोधर्म कहते हैं यह मनोधर्म सांसारिक सीमाओं के सामने आत्म समर्पण नहीं करता है। आध्यात्मिक जगत में भी उसकी गति देखी जाती है। सच्चाई की खोज का क्षेत्र केवल पाश्चात्य पद्धति से, कुछ आधुनिक ढंग से निर्मित प्रयोगशालाओं तक ही सीमित नहीं है। तर्क भी विद्वानों को सच्चाई तक पहुंचाता है। अतः तर्क को भी हमारे यहाँ ऋषि कहा गया है। वैज्ञानिक परीक्षण भी तर्क के आधार पर ही चलते हैं। शुद्ध और सहज विचार (प्यूर थाट) तथा अन्तर्ज्ञान (इन्ट्यूशन) भी विज्ञान का अंग माना गया है। प्रायः लगभग सभी वैज्ञानिक आविष्कार पहिले शुद्ध और सहज चिंतन या अन्तर्ज्ञान के ही परिणाम थे जिन्हें बाद में प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा सत्य सिद्ध करके दिखाया गया था। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार, इसे साधना या तप कहते हैं। इस साधना या तप की सिद्धि या उसके फल को 'दर्शन' या 'आप्ति' करने वाले महापुरुषों को ऋषि या आप्त पुरुष कहते हैं। महर्षि यास्क के अनुसार— 'साक्षात् कृत धर्माण ऋषयो बभूवुः' (निरुक्त १–२०–३) अर्थात् इस सृष्टि और इसके अन्तर्गत जीवन को धारण करने वाले नियम एवं उन नियमों के नियन्ता के बारे में यथार्थ ज्ञान प्राप्त किये हुए लोगों को ऋषि कहते हैं। 'ऋषिर्वेदः। तदर्थतदनुष्ठानात् पुरुषोऽपि ऋषिः।।' (मेधातिथि)। अर्थात् विशुद्ध ज्ञान के भण्डार वेद को भी ऋषि कहते हैं और उस ज्ञान को साक्षात्कार या उसका अनुष्ठान करने वाले मनुष्य भी ऋषि हैं। जो साक्षात् सब

पदार्थ विद्याओं का जानने वाला, कपट आदि दोषों से रहित धर्मात्मा है, कि जो सदा सत्यवादी, सत्यमानी, और सत्यकारी है, जिसको पूर्ण विद्या से आत्मा में जिस प्रकार का ज्ञान है उसके कहने की इच्छा की प्रेरणा से सब मनुष्यों पर कृपा दृष्टि से सब सुख होने के लिए सत्य उपदेश का करनेवाला है और जो पृथ्वी से लेके परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थों को यथावत् साक्षात् करना और उसी के अनुसार वर्तना, इसी का नाम आप्ति है, इस आप्ति से जो युक्त हो उसको 'आप्त' कहते हैं। (आप्तः खलु साक्षात्कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात्करणमर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्तत इत्याप्तः।' वात्स्यायन भाष्य न्यायदर्शन १-१-७)

इसका अभिप्राय यह है कि केवल जानकारी (इन्फोरमेशन) रखने वाला व्यक्ति न ऋषि है न आप्त पुरुष है। ऋषि या आप्त कहलाने के लिये सत्य का ज्ञान, उसका साक्षात् अनुभव (एक्सपीरियेन्स), अनुष्ठान (प्रेक्टिकल एप्लीकेशन) और उसके पीछे मानव जाति के कल्याण (ह्यूमन वेलफेयर) अथवा परोपकार की भावना आवश्यक है। अतः वेद मन्त्र का पाठ करने वाला तोता, किसी आध्यात्मिक सत्य का रट लगाते हुए फिरने वाले पाखण्डी या शिकारी अथवा केवल प्रवचन या लेखनमात्र करके जीविका कमाने वाला पण्डित ऋषि या आप्त नहीं माना जाता है। इसी प्रकार जिसके जीवन में पवित्रता न हो, और जिसके प्रयासों के पीछे मानव समाज के कल्याण की भावना न हो, अथवा जिसके आविष्कारों के पीछे क्षुद्र स्वार्थ छुपा हो, उस वैज्ञानिक को भी ऋषि या आप्त नहीं कहा जाता।

एक ऋषि अवश्यमेव एक वैज्ञानिक (सायंटिस्ट) भी होता है। क्योंकि वैज्ञानिक मनोधर्म के बिना वह ऋषि नहीं बन सकता। लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है कि किसी वैज्ञानिक को भी ऋषि माना जाय। उन्नीसवीं सदी से जो वैज्ञानिक युग प्रारम्भ हुआ, उसके परिशीलन से पता चलता है कि इन वैज्ञानिकों का ज्ञान अल्प ज्ञान पक्षपातादि दोषों से युक्त है और उससे मानव जाति को लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हुई है। एक वैज्ञानिक के पास तर्क अवश्य है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह सत्यवादी या सत्यमानी या सत्यकारी हो। अतः उसका वैज्ञानिक मनोधर्म भी दोषपूर्ण हो सकता है। प्राचीन भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा ऋषियों की देन है और आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता वैज्ञानिकों की देन है। ऋषियों की देन से मानव जाति का कल्याण हुआ है और वैज्ञानिकों की देन आज भस्मासुर के रूप में दुनिया के सामने खड़ी है।

सृष्टि के प्रारम्भ काल से, महर्षि ब्रह्मा से लेकर, महाभारत काल के महर्षि जैमिनि तक हमारे देश में ज्ञान-विज्ञान और धर्म के क्षेत्र में आर्ष परम्परा का आधिपत्य था। अच्छे विद्वानों के अभाव, आलस्य, प्रमाद आदि के कारण यह परम्परा क्षीण होने लगी। धीरे-धीरे, उसके स्थान पर अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, अन्धविश्वास रूढ़िवाद आदि फैल गये। इसके फलस्वरूप, लोगों में अनैक्यता, लड़ाई-झगड़े, पुरुषार्थहीनता स्वार्थ, भोगवाद, दुःख, दारिद्र्य आदि का प्राबल्य हुआ। इससे आर्य जाति का पतन हुआ।

इसके बाद इस आर्य जाति को क्या-क्या कष्ट, नष्ट और दुःख उठाना पड़ा, यह इतिहास प्रसिद्ध बात है।

लेकिन ईश्वर को शिव अर्थात् कल्याणकारी कहते हैं। वह एक पिता के समान सदा अपनी मानव प्रजा का कल्याण ही चाहता है। अतः वह इस आर्य जाति को इस प्रकार नष्ट होते कैसे देख सकता है? किसी न किसी निमित्त के माध्यम से आर्य जाति का उद्धार और मानव जाति की रक्षा उसे करना ही था। तो महाशिवरात्रि के दिन बालक मूलशंकर के अन्दर वैज्ञानिक मनोधर्म जागृत हुआ। वह सत्य की खोज में निकला और उसने आर्य जाति के उद्धार के लिये, मानव जाति की उन्नति के लिये घोर तप किया, परिश्रम किया और गुरु विरजानन्द की कृपा से नष्टप्राय आर्य परम्परा को पुनर्जीवित किया। आज संसार में वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से अमर है।

यों तो, दयानन्द के जीवनकाल में और उससे पूर्व भी, न केवल भारत में, अपितु अन्य देशों में भी वैज्ञानिक मनोधर्म या तर्क को आगे रखकर अपने समाज की सेवा करने के लिये कई लोग आगे आये थे। कई अन्य लोगों ने अन्ध विश्वास, रूढ़िवाद और शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया था। महात्मा सोक्रेटीस, मार्टिन लूथर, थोमस पायने आदि लोग भारत के बाहर, और अनेक सन्त महात्मा भारत के अन्दर अपने-अपने जीवन काल में अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार मानव समाज को उन बुराइयों से बचाने की योजना बनाई। लेकिन दयानन्द का नाम आज सबसे ऊपर इसलिये है कि विद्या बल, शारीरिक बल, आत्मबल, चरित्र बल और तपोबल की दृष्टि से वे सबसे बड़े थे। उन्होंने न केवल लोगों के धार्मिक जीवन में, अपितु सामाजिक जीवन में भी वैज्ञानिक मनोधर्म का प्रतिपादन किया। वह एक सत्य द्रष्टा, सत्यवादी और सत्यकारी थे। संसार का उपकार करना उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये ही उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। वैज्ञानिक मनोधर्म के बिना यह कार्य ठीक तरह से नहीं हो सकता। इसलिये उन्होंने आर्यसमाज के नियमों में इस बात को भी जोड़ दिया। आर्यसमाज का नियम (४) कहता है कि सत्य को ग्रहण करने असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। नियम (५) कहता है कि सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये। वैज्ञानिक मनोधर्म की बातें बहुत सारे लोग करते हैं। भारत का संविधान भी कहता है कि वैज्ञानिक मनोधर्म का विकास करना चाहिये। लेकिन आर्यसमाज को छोड़कर, न भारत सरकार के पास, न संसार की अन्य किसी संस्था के पास उसे कार्य रूप देने की कोई योजना है। अतः आर्यसमाज के सदस्य, कार्यकर्त्ता, प्रचारक एवं दयानन्द के भक्तों को चाहिये कि ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर, इस श्रेय का लाभ उठाकर, संसार में वैज्ञानिक मनोधर्म के प्रचार के लिए पुरुषार्थ करें। प्रति वर्ष मूषक और शिवलिंग की कहानी सुनाकर ऋषि बोधोत्सव मनाने की रूढ़िमात्र का पालन करने से यह कार्य पूरा नहीं होगा।

★ ★ ★

राष्ट्र निर्माण में—

महर्षि दयानन्द का योगदान

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर कालोनी, श्यामगंज, बरेली]

राष्ट्र निर्माण में मृत्युञ्जय देव दयानन्द का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। स्वराज्य के मूल प्रेरक भी महर्षि दयानन्द ही थे। १८५७ के गदर के बाद, जब महारानी विक्टोरिया ने विज्ञप्ति निकलवाई, कि अंग्रेजी शासन अब भारतीयों के लिए माता-पिता के समान हितकारी होगा, तब हिन्दू और मुसलमान, दोनों ही प्रशंसात्मक भावों से गदगद हो उठे। उस समय नर्मदा के किनारे घूमने वाला योगी केवल एक ही था, जिसने इस विज्ञप्ति का विरोध करते हुए संयत शब्दों में कहा था, कि माता-पिता के समान हितकारी केवल स्वराज्य ही हो सकता है, यह योगी, वेदालोक से आलोकित दयानन्द ही था। आम लोग भले ही इस तथ्य को न जानें, किन्तु स्वराज्य स्थापना का मूल मन्त्र भारतवासियों को देव दयानन्द ने ही दिया।

'कोई माने न माने सच, तो यह है ऋषिराज ही पहिले, स्वराज्य स्थापना का सच्चा मन्त्र ले के आये थे। दयानन्द देव वेदों का उजाला ले के आये थे।

वेद ज्योति के प्रसारक महर्षि दयानन्द ने मानव को अज्ञान जनित अन्धकार से प्रकाश में लाने का संकल्प लिया था, उसे उन्होंने पूर्ण करने का यथासम्भव प्रयास किया था। अपने अगाध पाण्डित्य से, उन्होंने भारत में स्फूर्ति का संचार किया था। यदि देव दयानन्द न होते, तो वेद ज्योति का प्रसार न हो पाता। पाखंडों के अन्धकार में देश दिग्भ्रान्त होता। इतिहास वेत्ताओं एवं विश्व भर के मनीषियों की दृष्टि में, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द उन्नीसवीं सदी के क्रान्तिकारक विचारक थे।

महर्षि की वैचारिक क्रान्ति ने देश में, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा राष्ट्रीय आदि सभी क्षेत्रों में नूतन दिशायें, नयी आशायें तथा नयी सम्भावनायें उत्पन्न की है।

देव दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तों द्वारा देश के धार्मिक क्षेत्र में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न की। धर्माडम्बरों के जाल में फंसकर जनमानस घुट रहा था, उसे न कोई दिशा थी, और न कोई मार्ग। 'मूर्ति पूजा' से सर्वत्र जड़ता का साम्राज्य था। महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराई तथा सत्यासत्य का निर्णय वेदानुसार कर दिग्भ्रान्त जनता का मार्गदर्शन किया था। वेदालोक द्वारा महर्षि ने निराकार ईश्वर का स्वरूप मानव कल्याण के लिए सिद्ध किया। ईसाई, मुसलमान व अन्य मतवादी, धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं पहचान पाये। पश्चिमी

संसार के बुद्धिजीवी वर्ग ने 'धर्म को घृणा की दृष्टि से देखा था। मार्क्स ने 'धर्म' को 'अफीम' का नाम दिया। कुछ ने धर्म को संहारक तथा कुछ ने इसे पाखण्डियों का षड्यन्त्र समझा।

किन्तु देव दयानन्द ने वैदिक धर्म का सार्वभौम स्वरूप विश्व भर के कल्याण के लिए प्रस्तुत किया, जिसका आधार वैदिक धर्म की विश्वजनीनता ही है।

मानव के कल्याण के लिए कुछ वेदोपदेश।

- अश्वत्थे वो निषदनम्। यजुर्वेद
  हे जीव तेरा निवास पीपल के पत्ते पर है। तू आत्मज्ञानी बन।
- मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। —यजुर्वेद
  मैं सबको मित्र दृष्टि से देखूं।
- उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। (वेद)
- कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्। (वेद)
- सगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। (ऋग्वेद)
- पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति। (ऋग्वेद)

असत्य, छल, अन्धविश्वास, व पाखण्ड को धर्म से जोड़ना मूर्खता है। 'जियो और जीने दो' का भाव ही धार्मिक चेतना है। वेद सम्मत मान्यता है—

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'

वैदिक धर्म ही ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो का आधार है। आर्यसमाज' का अभिप्राय श्रेष्ठों के समाज से है। वस्तुतः यह न कोई नवीन मत है और न सम्प्रदाय। आर्यसमाज के सिद्धान्तो का आधार यही सार्वभौम वैदिक धर्म है।

वैदिक धर्म के प्रसार एवं राष्ट्रीय निर्माण हेतु महर्षि ने अनेक अमूल्य ग्रन्थों का प्रणयन किया—ऋग्वेद भाष्य, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, यजुर्वेद भाष्य, भ्रमोच्छेदन, गो करुणा निधि, पोपलीला, कुरान- हिन्दी, वेद विरुद्ध मत खण्डन, संस्कार विधि, संस्कृत वाक्य प्रबोधादि कुल इकतालीस कृतियो द्वारा महर्षि ने हिन्दी साहित्य को ही सम्पन्न नहीं किया अपितु राष्ट्रीय स्तर पर वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर जनमानस की सुप्त चेतना को जागृत किया।

सच्चे शिव के दर्शन ने महर्षि को तेजोमय बना दिया, एवं वे मूलशंकर से ऋषि दयानन्द हो गये। ईश्वर के तात्विक स्वरूप को भूलकर ही मानव उसे मूर्तरूप दे देता है। आर्यसमाज के द्वितीय नियम मे बताया गया है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसे कहीं ढूंढने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह हृदय मे है—

'अणोरणीयान् महतो महीयान्,
आत्मा गुहाया निहितोस्य जन्तोः।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको,
धातुः प्रसादान्महिमानमीशम्॥

राष्ट्रीय निर्माण एवं मानव कल्याण हेतु महर्षि ने सगठन तथा एकता का सन्देश दिया—

'समानो मन्त्रः समितिः समानी
समा न मनः सहचित्तमेषाम्॥

हम निर्विरोध होकर संगठनमय उन्नति पथ पर चलें। दयानन्द ने बताया कि जन्म से सभी मनुष्य समान है, ऋषि ने वर्ण-व्यवस्था का आधार 'जाति' नहीं, अपितु गुण, कर्म और स्वभाव को माना।

राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु ऋषि दयानन्द ने जातिवाद की दीवारो को ध्वस्त कर अन्तर्वर्ण

विवाह की छूट, तथा छुआछूत का भाव मिटाया। प्रान्तवाद, जातिवाद, तथा भाई-भतीजेवाद को निर्मूल करने हेतु योगिराज ने अनवरत संघर्ष किया था।

नारी उत्थान में योगिराज का योगदान भी अविस्मरणीय रहेगा। नारी को विकृत रूप देकर समाज ने शूद्रों से भी गया गुजरा, तथा नरक का द्वार बताकर शोषित किया था। ऋषिराज ने शोषित नारी को समानाधिकार दिलाकर, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, सतीप्रथा व अन्य अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर, उसे नूतन जीवन का सन्देश दिया। शिक्षा में समानता, यज्ञोपवीत धारण कर वेद पढ़ने का अधिकार देकर—'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' इस वाक्य को हटाकर 'शक्ति' और 'भगवती' का पद दिलाया। ईसाई धर्म में नारी बपतिस्मा नहीं करा सकती, इस्लाम में नारी 'इमाम' नहीं बन सकती, किन्तु वैदिक धर्म की ही यह विशिष्टता है कि यहां नारी 'आचार्या' होकर, संस्कार करा सकती है। 'आचार्यादणत्वञ्च' सूत्र से आचार्य की पत्नी 'आचार्यानी' कहलाती है किन्तु जो यज्ञ स्वयं कराती है वह 'आचार्या' कहलाती है। विदुषी आचार्या डा० शारदा पाठक, आचार्या निर्मला, आचार्या सावित्री देवी डा० आचार्या प्रज्ञादेवी व अन्य विदुषी नारियां आधुनिक युग में भी है जिन्हें 'आचार्या' होने का एवं वेद प्रसार करने का गौरव प्राप्त है।

मातृमान् शब्द से माता पूज्या तथा 'माता निर्माता भवति' माँ वेदवित् और मन्त्रवित् होकर शिवा प्रताप व भगतसिंह आदि उत्पन्न करे। आज से सौ वर्ष पूर्व नारी का नारकीय जीवन था, जिससे निकाल कर उच्चासन पर प्रतिष्ठित करने का गौरव आर्यसमाज को ही प्राप्त है। नारी का सम्मान मानवता की रक्षा, और नारी के उत्थान से राष्ट्र का उत्थान निश्चित है।

ऋषि दयानन्द सत्य को सर्वोपरि मानते थे। मानव को आत्मतत्व का ज्ञान कराना ही उनका लक्ष्य था। ऋषि का अटूट विश्वास था कि 'वेद' सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वस्तुतः वैदिक विचारधारा का भूतल पर साम्राज्य स्थापित करना ही ऋषि का चरम लक्ष्य था। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, छुआछूत और अन्धविश्वास, भूत प्रेतादि और मतमतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे, तथा इन कुरीतियों को वे समाज तथा जाति के पतन का कारण मानते थे।

भारत के निर्माण में, महर्षि की इस वैदिक विचारधारा का अनुपालन आज और अधिक आवश्यक हो गया है। महर्षि के समय से भी अधिक पाखण्ड अब बढ़ गया है। चारों ओर दानवता, आतंक, और असुरक्षा का साम्राज्य है। देश में विध्वंसात्मक शक्तियां, विदेशी षड्-यन्त्रों से प्रेरित होकर सिर उठा रही हैं। भेद नीति ने भाई-भाई के मध्य प्राचीर उठा दी है। ऐसे समय में मात्र वैदिक धर्म का अनुपालन ही सम्बल है जिससे संगठन विश्वबन्धुत्व, धर्मोत्तरच एकता, शौर्य, एवं पराक्रम को प्रश्रय मिल सकता है। 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' अर्थात् 'विश्व को आर्य बनायें'—का उद्घोष आर्यत्व समन्वित होकर ही किया जा सकता है। वैदिक धर्म के विस्मरण से ही नारी की दुर्दशा हो रही है। महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रसार ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है, तथा भावी राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की सशक्त भूमिका भी है। ✻

'गुरवे नमः'

[सावित्री देवी शर्मा एम० ए०, वेदाचार्या, १० केलाबाग, 'सावित्री-सदन', बरेली]

टङ्कारेति सदा समृद्धि बहुले मोर्वी प्रदेशस्थिते ।
ग्रामे शास्त्र पुराण पाठ कुशलैः सुब्राह्मणैः सेविते ॥
श्री कृष्णार्यद्विजगृहं स्वजनुषा यो वै समालोकयत् ।
मानार्हाय मनस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मै नमः ॥

आसीत् वीरव्रती त्रिलोक विजयी शास्त्रेषु पारङ्गतः ।
प्राज्ञो वेदकथा प्रचार चातुरो मेधावसुः ज्ञानवान् ॥
आबाल्याद् विजितेन्द्रियेणसुधिया तेजो नवं धारितम् ।
श्रद्धेयाय तपस्विने गुरुदयानन्दाय तस्मैनमः ।:

ज्ञानालोकप्रबुद्धतापसवरः सम्परस्तु वैराग्यवान् ।
दृष्टो भावेषु स्वबन्धुस्नेह कलिका [रागेष्वनासक्तधीः ॥
कल्याणाय सुबुद्ध मानवहृदा त्यक्तं स्वकीयं कुलम् ।
पूजार्हाय महर्षये गुरुदयानन्दाय तस्मैनमः ॥

आचारप्रवरःक्षमो सुविदुषामादर्शं यायावरः ।
यस्यासीत् हृदये सदा विकलता लोकार्तिनाशाय वै ॥
आमृत्योः शुचि ब्रह्मचर्यं निरतः संसार संरक्षणे ।
पूजार्हाय तपस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मै नमः ॥

सत्यासत्य विचारणेऽति निपुणोधीमान् कृपावारिधिः ।
शास्त्रानर्थं विचारखण्डन पटुः वेद प्रमाणमण्डनः ॥
दीनानाथ जनैक मात्र शरणं सद्धर्मसञ्चालकः ।
मानार्हाय महर्षये मुनिदयानन्दाय तस्मैनमः ॥

अज्ञानान्धस्वशीलभ्रष्टदनुजैर्हालाहलं पायितम् ।
क्षम्यमानेन तथापि तेन मुनिना नैवाहितं चिन्तितम् ॥
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनसा सद्भावमावेदयत् ।
पूजार्हाय मनस्विने गुरुदयानन्दाय तस्मैनमः ॥

पाषाणैरस्याहतोऽपि प्रावात् शुभं सौरभम् ।
स्वप्ने नो विरतो कदापि तेभ्यः सत्यं सुधावर्षणात् ॥
कष्टैर्येन परोपकारव्रतिना सञ्जीवनं यापितम् ।
मानार्हाय तपस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मैनमः ॥

देव दयानन्द

[श्री धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द' हल्दौर (बिजनौर]

तेरे नाम का देव दयानन्द डंका बज रहा गली–गली।
हिली मान्यता हर मजहब की तेरे कारण सड़ी गली ।।

एक छोटी सी घटना देखी बचपन में संन्यास लिया।
यह पत्थर है सच्चा शिव तो कोई और विश्वास किया।
सभी तीर्थ, मन्दिर, गिरि ढूंढ़े पर शंकायें नहीं हिली ।।

गया अन्त में मथुरा में गुरु विरजानन्द का चयन किया।
पढ़ा व्याकरण संस्कृत सीखी वेदों का अध्ययन किया।।
उड़ी धज्जियां पाखण्डों की जब वेदों की हवा चली ।।

हुये विरोधी व्यथित प्रमाणों तर्क पूर्ण आघातों से।
तेरी दयानन्द युक्ति युक्त और मंजीमंजाई बातों से ।।
दिव्य प्रभा मस्तिष्कों में आई जब तेरी ज्योति जली ।।

छुआ छूत औ धर्म हीनता बाल विवाह को छोड़ दिया।
स्त्री शूद्रो नाधीयताम का मुख सत्पथ पर मोड़ दिया ।।
स्वतन्त्रता का घोष लगाया देश भक्ति की बेल फली ।।

शिखा, सूत्र, हिन्दी, संस्कृति का दयानन्द रखवारा था।
उसे किसी से द्रोह नहीं था घातक तक भी प्यारा था ।।
मात्र अन्ध विश्वास, प्रपंचों की खोली थी पोल भली ।।

व्याख्यानैरथ सारगर्भित पद्यैर्वेदप्रमाणैर्युतैः।
विश्वेषामुपकारभावन प्रियश्चेतांसि प्राबोधयत् ।।
ऊहापोहनयेन भ्रान्तिमुरसां विद्राव्यपासारयत्।
मानार्हाय मनस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मैनमः।
योगाभ्यासपरायणोऽपि सततं नित्यक्रियातत्परः।
सर्वेषामिह जन्म पावनविधि योगः क्रियाकौशलम् ।।
स्वाचारस्य प्रतिष्ठयैव विबुधो लोकेषु प्रादर्शयत्।
मानार्हाय मनस्विने मुनि दयानन्दाय तस्मैनमः ।।
मिथ्याध्वान्त निवारणाय जगतो भाष्य प्रणाली पुनः।
'ब्रह्मा' प्राप्तमनोषिशास्त्र रचनाभाषानुकूलाकृता ।।
येनानार्ष विचारपद्धतिरियं ज्ञात्वा समुन्मूलिता।
पूज्यार्हाय महर्षये गुरुदयानन्दाय तस्मै नमः ।।

महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि

[श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, सम्पादक–आर्य पुनर्गठन, अजमेर]

उन्नीसवीं शती में जब समस्त भारत अज्ञान-अन्धकार से आच्छादित था, विदेशी शासकों के अत्याचारों से मुक्ति और त्राण पाने को जब भारत के प्राण अकुला उठे थे, राष्ट्रीय भावना को मिटाने के सभी सम्भव प्रयत्न किये जा रहे थे, मातृशक्ति को तिरस्कृत किया जा रहा था, ऐसी निराशा की घड़ी में स्वामी दयानन्द का राष्ट्र के क्षितिज पर प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपनी ओजस्विनी वाणी एवं निर्भय लेखनी के प्रखर प्रकाश से निशीथ के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करके समस्त संसार को सत्य-ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर डाला।

शिवरात्रि की घटना

बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द में परिवर्तित करने वाली यह महाक्रान्तिकारी घटना आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व गुजरात राज्य के टंकारा ग्राम के शिवमंदिर में शिवरात्रि को घटी थी। बालक मूलशंकर ने पिता की आज्ञा एवं शिवदर्शन की उत्कट अभिलाषा में शिव का व्रत रखा। सरल स्वभाव बालक प्रभु दर्शन हेतु रात्रि भर जागरण करता रहा। यहाँ तक कि अन्य सभी शिवभक्त दिन भर के व्रत एवं कीर्तन की थकान के कारण-निद्रा के आगोश में चले गये। ऐसे निशीथ काल में बालक मूलशंकर ने शिव प्रतिमा पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाये गये पुष्प, चन्दन, अक्षत, नैवेद्यादि को एक क्षुद्र जन्तु मूषक को प्रतिमा पर चढ़कर भक्षण एवं लघुशंका कर तिरस्कृत करते देखा। कथित भगवान की इस पर कोई प्रतिक्रिया न होने पर बाल निर्मल हृदय पर गहरा आघात लगा। इसी आघात ने मूलशंकर को जड़ पूजा से विमुख कर सच्चे शिव दर्शन करने का दिव्य सन्देश दिया, और आगे चलकर यही बालक महर्षि दयानन्द के नाम से विख्यात हुआ। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में, भारत में जो कुछ नवीन जागृति सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हुई, उसका आदि मूल वह मूल शंकर ही था।

ज्ञान-बोध और साधारण घटना

एक अति साधारण घटना से दयानन्द को ज्ञान-बोध होना कोई अभूतपूर्व घटना नहीं थी। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि राजकुमार गौतम को महात्मा बुद्ध बनाने वाली ऐसी ही एक घटना थी। वृक्ष के नीचे गिरते फलों को किसने नहीं देखा? किन्तु विलक्षण नेत्रों वाले सर आइजिक न्यूटन का देखना अद्भुत सिद्ध हुआ। जेम्सवाट ने पतीली पर रखे हुए ढक्कन को अन्दर से आती हुई पानी की भाप के द्वारा उठता हुआ और हिलता हुआ ही तो देखा था और हम सब प्रतिदिन ऐसी घटनाएं देखते रहते

हैं, परन्तु हमें कोई प्रेरणा प्राप्त नहीं होती, लेकिन जेम्सवाट ने उससे भाप की शक्ति को पाया जो जार्ज स्टीफेन्सन द्वारा विकसित रेलवे इंजन के रूप में हमारे समक्ष आई और जिससे आज औद्योगिक क्षेत्र का अधिकांशतः संचालन होता है।

जर्मनी के मार्टिन लूथर को प्रोटेस्टेंटधर्म के प्रवर्तक के रूप में एक छोटी सी घटना ने ही तो महापुरुषों की कोटि में लाकर खड़ा किया था।

शिवरात्रि का संदेश

शिवरात्रि का जो संदेश मूलशंकर ने सुना, वह समस्त भारत के लिए ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। इसी शिवरात्रि की महिमा के विषय में कविवर लाखन ने कितना सुन्दर लिखा है–

कामना जागे किसी में तो यही जागे,
माँगना चाहे मनुज तो बस यही मांगे,
कोध हो तो, मूलशंकर मातृ जैसी हो,
प्रात हो, ऋषि–बोध की उस प्रात जैसी हो,
रात हो, तो बस उसी शिवरात जैसी हो।

यह दिन युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध–दिवस है, जिसने मृतप्राय राष्ट्र को जिलाया, धूमेमटके मानव को सत्य पथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम समानता का पाठ पढ़ाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नहीं एवं जीवन भर पाखण्ड, ढोंग, शोषण, अन्याय एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ता रहा। जिसने एक दिन विश्व हित में ही अपने प्राणों की बलि दे दी।

अतएव आओ, हम सभी भारतीय इस पावन अवसर पर राष्ट्र की अखण्डता और गौरव को अक्षुण्ण रखने एवं भ्रष्टाचार मिटाने की शपथ लें। ★

सम्माननीयः – सम्माननीयः

आर्यजगत को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के अन्तर्गत स्व० श्री दीपचन्द जी आर्य की पुण्य स्मृति में 'विद्वदभिनन्दन–योजना' के आयोजन दिल्ली में, १६ फरवरी १९८८ को, महाशिवरात्रि की ज्ञान बोध वेला में, ज्ञान के अतलिम धनी, वेदों के निष्णात, मधु से भी अधिक मधुराओं, भावों, अनुभावों अनुभावों के लहलहाते सागर 'वेदकल्पद्रुम' के प्रणेता आचार्य प० विशुद्धानन्द शास्त्री का सम्मान किया जा रहा है। इस ऋषि भक्त विद्वान को 'आर्यरत्न' की उपाधि एवं अन्य सम्मानों से विभूषित किया जायेगा। हम इसे सम्पूर्ण आर्यजगत का गौरव एवं सम्मान समझते हैं। आर्यमित्र की शतशः बधाइयाँ।

–प्र० सम्पादक

काठमांडू में विश्व हिन्दू सम्मेलन

नेपाल के पूर्व प्रधान मन्त्री और विश्व हिन्दू संघ के अध्यक्ष श्री नागेन्द्र प्रसाद जी रिजाल ने बताया कि यह सम्मेलन २४ से २८ मार्च १९८८ को काठमाण्डू में होगा और इसमें ५० देशों के लगभग १००० प्रतिनिधियों के भाग लेने की सम्भावना है। सम्मेलन का उद्घाटन २५ मार्च को नेपाल नरेश करेंगे। सम्मेलन में प्रमुख विचारणीय विषय (आर्य) हिन्दू एकता के माध्यम से विश्व शान्ति का संवर्धन रहेगा।

इस अवसर पर संस्कृत सम्मेलन, संत सम्मेलन और युवा सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है। भारत से आर्य विद्वानों को भी आमन्त्रित किया गया है।

सत्यान्वेषी–दयानंद

(श्री इन्द्रदेव पाठक एम० ए० (गोल्डमेडलिस्ट) साहित्याचार्य, दर्शनवाचस्पति)

इस पावन वसुन्धरा पर सृष्टि के आदिकाल से ही अनेकों महापुरुषों ने समय-समय पर जन्म लेकर वैदिक धर्म की उदात्त और नित्य परम्पराओं का प्रचार एवं प्रसार किया है। वेदों के ज्ञान की जो अक्षुण्ण परम्परा सृष्टि के आदिकाल से लेकर, महर्षि जैमिनि पर्यन्त ऋषि–मुनियों ने प्रवाहित रखी थी, उसी परम्परा के प्रेरक, उद्बोधक एवं ज्ञाता इस युग के महान् तत्त्वदर्शी ऋषिवर दयानन्द थे जिन्हें एक सामान्य घटनामात्र ने आज ही की रात्रि को बालक मूल–शङ्कर से सच्चा शङ्करानुयायी बना दिया। वास्तव में महान् आत्माओं के लक्षण ही यही होते हैं। सामान्य जन जिन घटनाओं को साधारण समझते हैं वे ही घटनाएं महान् पुरुषों के जीवन में असीमित मोड़ दे देती हैं। इसी को वैदिक विचारधारा में ("बुध्येम शरदः शतम्" कहा गया है। अर्थात् हम संसार में प्रतिक्षण घटित होती हुई घटनाओं से सच्चा ज्ञान प्राप्त करते रहें। मरते हुए इन्सान को किसने नहीं देखा है मगर वे युवराज गौतम ही थे, जिन्हें इस घटना ने गौतम से बुद्ध बना दिया, जिनकी करुणा और अहिंसा हमारी वैदिक परम्परा के ज्योतिर्मय स्वरूप की एक किरण है। शिव की प्रतिमा पर चढ़े हुए खाद्यान्न को खाते हुए चूहों को किसने नहीं देखा होगा, मगर वाह रे? लक मूलशङ्कर? तूने तो शङ्कर के मूल का ही पता लगा लिया। जड़ता की परिधि में फंसे हुए आदिदेव, महादेव, शिवशङ्कर को, उस तमस् की अन्धकारमयी, चूहों से भरी कोठरी से निकाल कर जन–जन के हृदय मन्दिर में ज्योतिर्लिङ्ग बनाकर प्रकाशवान् करने वाला तू ही तो है। तेरी जिज्ञासा, तेरी खोज अनुपम, तेरा दर्शन अनुपम, और फिर तेरा जैसा शङ्कर का खोजी, शङ्कर का उपासक, आज तक देखने को नहीं मिला। हम सबको भी उसी सच्चे शङ्कर का अनुयायी बना दिया। हमारी प्रार्थना (संध्या) का समापन भी उसी शिव की उपासना से करा दिया—

"ओंनमः शम्भवाय च मयोभवाय च, शंकराय च, नमःशिवाय च"।

कथानक की पुनरावृत्ति बौद्धिकवर्ग के सन्मुख—पिष्टपेषण मात्र ही है। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द उन महान् पुरुषों में अद्वितीय थे जिन्होंने केवल आर्यावर्त्त को ही शारीरिक एवं मानसिक दासता से मुक्ति दिलाने के लिये प्रयास नहीं किया अपितु समस्त विश्व एवं प्राणिमात्र के कल्याण के लिये अपने जीवन को बलिदान कर दिया। अपने नियमों में उन्होंने लिखा है—"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" वे केवल वाणी द्वारा उपदेश देने वाले तत्त्ववेत्ता

ऋषि ही नहीं थे अपितु जिस सत्य का संसार प्रचार में करना चाहते थे उसे क्रिया में व्यवहृत करा देना भी उनका कार्य था। उन्होंने मानव को आध्यात्मिक उन्नति का श्रेष्ठ मार्ग दिखाने के लिये आधिभौतिक उन्नति को कभी हेय नहीं बताया। वे व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में महान थे। शिवरात्रि की एक छोटी सी घटना मात्र से इतना स्पष्ट है कि उनके जिज्ञासु हृदय ने, शिव के उस स्वरूप को, जो मध्ययुग की अनेक मान्यताओं, किंवदन्तियों एवं कपोल-कल्पित कथानकों से घिरकर अपने कल्याणकारी स्वरूप को खो चुका था, सच्चे स्वरूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया।

उनका आविर्भाव समाज में व्याप्त कुरीतियों, धर्म के नाम पर फैले हुए अनेक मतमतान्तरों और पाखण्डों को दूर करने के निमित्त हुआ था। वे किसी देश अथवा जाति विशेष के न होकर मानवमात्र के थे। उनके बताए वैदिक आदर्शों पर चलकर हम निःसन्देह मानवता का बड़ा कल्याण कर सकते हैं। वेद के शब्दों में वे ऐसे परोपकारी संन्यासी थे जिसे "मीढ्वान्" अर्थात् बादलों की तरह बरसने वाला कहा जाता है। वे मानव कल्याण के लिए ही धरती पर अवतरित हुए और मानव कल्याण के लिए ही समर्पित हुए।

वास्तव में आज की रात्रि में जिस "शिव" का अन्वेषण उन्होने किया था वह उसी कल्याणकारी, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी परमात्मा का ही नाम है जिसकी तीन शक्तियां (त्र्यम्बकं यजामहे) सृजन, पालन और संहार निरन्तर कार्य कर रही हैं। ये तीनों ही शक्तियां (त्र्यम्बक-त्रीणि अम्बिकानि यस्य सः) कल्याणकारिणी हैं और यही उसके त्रिनेत्र माने गये हैं। तो आइये-शिवरात्रि की इस पावन बेला में हम वेद के शब्दों में "असम्भूतिमुपासते" अज्ञानता और जड़ता की उपासना के विरुद्ध अभियान छेड़ने का व्रत लें और सच्चे शङ्कर की उपासना का बोध संसार को करायें।

शोक समाचार

आर्यजगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायेगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान, विद्वद्वरेण्य श्री पं० विश्वबन्धु जी आचार्य का, नारायण भवन आर्य नगर, ज्वालापुर में दिनांक २६/१/८८ को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से गंगातट पर दिनांक २७/१/८८ को सम्पन्न हुई जिसमें हजारों श्रद्धालु आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। शांति यज्ञ दिनांक ५/२/८८ को सम्पन्न हुआ जिसमें अनेकों प्रतिष्ठित आर्य पुरुषों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं।

वे आर्यसमाज के कर्मठ नेता, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, एवं उच्चकोटि के वक्ता थे। उनका जीवन आर्य समाज के लिए पूर्णतया समर्पित था। आर्य जगत को उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। प्रतिनिधि सभा कार्यालय उनके शोक में बन्द कर दिया गया। प्रभु उनकी आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनो को धैर्य प्रदान करें।

इन्द्रराज   मनमोहन तिवारी
प्रधान   मन्त्री

महर्षि दयानन्द

[श्री लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र' एम० ए०, साहित्यालंकार, भोजपुरा, मैनपुरी]

सत्य से जन्मे, हुए तुम सत्य में लयमान।
बन गया जीवन तुम्हारा, सत्य का अभियान॥

एक मूवक ने जगाया, उग्र ऊहापोह,
जन्म के संग क्रान्ति लाया, सत्य का विद्रोह,
बांध पायी थी नहीं, पितु-मोह की जंजीर।
मातु की ममता बहाती रह गई दृग-नीर।
तुम छुपाये मुक्ति-गंगा, बन गये चट्टान!
था तुम्हारे सामने इस विश्व का कल्याण।

व्यक्ति के व्यक्तित्व में बांधे समष्टि विवेक,
तुम युगों के बाद आये, एक केवल एक।
क्रान्तिदर्शी दृष्टि झांकी, पार युग के पार!
विश्व की सुख शान्ति का सपना लिये साकार।
देश के अन्तिम पतन में तुम चरम उत्थान,
बन गये उगते अरुण, मध्यान्ह के दिनमान।

वेद की गंगा मरुस्थल में गई थी सूख,
था तिमिर बहु व्याप्त, भूपर थी न एक मयूख!
थे घुटन में छटपटाते, मनुजता के प्राण!
कर रहा था विश्व वैदिक वायु का आह्वान।
तुम उदय के साथ कोई प्राण का पवमान।
पा गये जिससे पुनः निष्प्राण भी नव प्राण।

वर लिये अभिशाप सारे, तब दिये वरदान!
विश्व को अमृत पिलाने-हित, किया विषपान।
फूल बाँटे विश्व को, पा शूल के प्रतिदान।
हैं तुम्हारे अनगिनत, अहसान पर अहसान।

भूल सकता कौन, तुमको, देव, श्रद्धावान।
तुम हुए माँ भारती के क्रान्ति पुत्र महान।
सत्य से जन्मे, हुए तुम सत्य में लयमान।
बन गया जीवन तुम्हारा, सत्य का अभियान॥

ऐसे थे हमारे ऋषि

—डा० ऋषिदेव विद्यालङ्कार, ई २ / रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ।

सारा संसार ऋषि को नाना रूपों में देखता है। क्रान्ति के पुजारी क्रान्तिकारी के रूप में, तप, साधना और योग पथ पर चलने वाले योगी के रूप में, दार्शनिक और कर्मण्य व्यक्ति जगद्गुरु के रूप में, सुधारणा के उपासक सुधारक के रूप में ऋषि के नाम का स्मरण करते हैं। ऋषि का स्मरण सदैव संसार के अग्रणी के रूप में किया जाता रहेगा।

आज से डेढ़ शताब्दि पूर्व जब भारत में घन-घोर घटाएं छाई हुई थी, लक्ष्मी के पुजारी भोली-भाली जनता के अंग प्रत्यंग को चूस रहे थे, मन्दिरों और देव-स्थानों में आमोद प्रमोद का राज्य था, वेदों, उपनिषदों और धार्मिक ग्रन्थों का अपमान किया जाता था, मजहब और गुरडम के नाम पर हिंसा, झूठ, व्यभिचार और पाप को धर्म का अंग समझा जाता था—जगती के विशाल प्रांगण में एक ज्योति का आविर्भाव हुआ। इस ज्योति के पुञ्ज से संसार का कोना कोना आलोकित हो उठा। लोभ और पाखण्ड की भित्तिकाएं चकनाचूर हो गई, भ्रान्तियों और कुरीतियों का मटका फूट गया, हिंसा और विद्वेष की चट्टानें चकनाचूर हो गई। समुद्र में तूफान उठ आया, अकेले मांझी ने पाप, ईर्ष्या, द्वेष और लोलुपता की नाव को समुद्र की उत्तुङ्ग तरंगों से ऊपर कर लिया।

तू आया आशा और उत्साह का सन्देश लेकर, तू आया त्याग और तपस्या का बाना पहनकर, तू आया प्रेम और सहिष्णुता की वीणा लेकर, तेरी हृत्तन्त्री के अनहद नाद से सम्पूर्ण विश्व गूंज उठा, अन्धकार का पर्दा फट गया, सोते हुए जाग उठे, आबाल वृद्ध घर-घर में खुशियां मनाने लगे।

सारा संसार तुझे नानारूपों में देखता है। क्रांतिके पुजारी क्रांतिकारीके रूपमें, तप, साधना और योग के पथ पर चलने वाले तुझे योगी के रूप में, दार्शनिक और कर्मण्य लोग जगद्गुरु के रूपमें तेरे नाम का स्मरण करते हैं। तेरे आंदोलन का विरोध किया गया, तुझे गालियां दी गईं, सरे बाजार तेरा अपमान किया गया, फिर भी तू टस से मस न हुआ। तेरे में एक विचित्र प्रकार के मिठास की अनुभूति थी, जो लोग प्रारम्भ में तेरे कथन को अस्वीकार करते थे, वे तेरी तपस्या का सिक्का मानने लगे। तेरा यश दिग्दिगन्त में फैलता चला गया।

तू महान् विचारक था। तूने भीरु जाति के हृदय में वीरता के भाव फूंके। सम्पूर्ण प्रजा तेरे पीछे मस्तानी हो गई। घर घर में तेरी

आराधना होने लगी। जो लोग तेरी हंसी उड़ाते थे, तेरी जादू भरी वाणी को सुनकर झूमने लगे। तूने अपने ध्येय के लिए जंगलों की खाक छानी, शहर के गली कूचों में भिखारी की तरह दर-दर भटकता रहा। आखिर तेरा यज्ञ समाप्त हुआ, तू भारत के करोड़ों हृदयों का सम्राट् बन बैठा। जिन अछूतों की छाया से ब्राह्मण और तिलकधारी पण्डित आपने आपको अपवित्र समझते थे उन्हें तूने अपने गले लगाया, जो सनातनी और कट्टरपन्थी वेद और उपनिषद् की वाणी को सुनना पसन्द न करते थे, उनके कानों में तूने वेद के पवित्र मन्त्रों की पावन ध्वनि भर दी। भारत के बच्चे बच्चे को मातृ संस्कृति और मातृभूमि से प्यार करना सिखाया। तूने सोई हुई हिन्दू जाति में क्षत्रियत्व के भाव भरे। तू सचमुच क्षत्रिय था। तूअपने देश, अपनी भाषा और अपनी संस्कृति का परवाना था। तूने दरिद्रों और निर्बलों में हिम्मत बांधी और और अबलाओं की रक्षा की।

तूने जिस चीज का बीड़ा अपने हाथ में लिया उसे पूरा करके छोड़ा। प्रभु भक्ति के मस्ताने गीत गा गा कर तूने सम्पूर्ण विश्व को गानमय बना दिया। तेरे तेज और तेरी दिव्य-मयी आभा से पाखण्डियों का पाखण्ड निष्प्रभ हो गया। गुरुडम का जाल छिन्न भिन्न हो गया, तूने समाज की काया का आमूल चूल परि-वर्तन कर दिया। वंश परम्परा से चली आने वाली रूढ़ियों की इति श्री हो गई। तू समझता था कि हमारे समाज का कल्याण इसी में है कि उसे भूले भटके मार्ग से हटाकर नवीन एवं सुन्दर मार्ग पर लाया जाय। हिन्दू जाति का काया-पलट किया जाय। हिन्दू जाति के रगों में नया और ताजा खून पैदा किया जाए।

ऋषि क्रांतिदर्शी होते हैं। तू भी तो क्रान्ति-दर्शी था। तू ने संसारको कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का संदेश सुनाया। सारा संसार तेरा ऋणी है। मनुष्य अपने स्वरूप को भूला हुआ है। प्रत्येक आत्मा राम है, कृष्ण है, बुद्ध है, दयानन्द है। अमेरिका के पादरी एण्ड्रो जैक्सन ने भविष्यवाणी की थी कि "मैं एक आग देख रहा हूं।" यह एक प्रेम की आग है। अमेरिकाके सुन्दर मैदानों पर, अफ्रीका की विस्तृत भूमि पर यह प्रत्येक वस्तु को पवित्र करनेवाली है। यह आग उज्ज्वल सपूत दयानन्द की छाती से प्रारम्भ हुई है। हिन्दू मुसलमान, ईसाई इस आग को बुझाने के लिए चारों ओर से दौड़ेंगे परन्तु यह आग और भी भड़क उठेगी और सर्वत्र फैल जाएगी।

ऋषि तुम इस असार संसार से चले गये हिन्दू जाति को बिलखता छोड़ कर, तुमसे तो न मालूम हिन्दू जाति को क्या कुछ सीखना था? परन्तु तुम जाति की नौका को मंझधार में ही छोड़कर हमसे बिछुड़ गये। तुम आये थे मोहन बनकर अपनी मीठी और सुरीलीतान से सम्पूर्ण विश्व को मुग्ध करने के लिये, तुम आये थे बुद्ध बनकर संसार का कल्याण करने के लिये, तुम आये थे राम बनकर विश्व को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने के लिए।

आज दरिद्र एवं निर्धन भारत के करोड़ों

(शेष पेज ४५ पर)

राष्ट्र पितामह—ऋषि दयानन्द

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी० आर्य समाज गोरखपुर)

स्वामी दयानन्द जी की राष्ट्रीयता पर विचार करने से पूर्व हम जब उनके जीवन और कार्यों पर विचार करते हैं तो शायद विश्व में दूसरा कोई भी व्यक्ति अपने जीवन काल में उतनी वैचारिक क्रांति करने वाला नहीं दिखाई देता जितनी ऋषि दयानन्द ने की धर्म, समाज, अर्थ, राष्ट्र और आध्यात्मिक क्षेत्र में अद्भुत् कार्य की विचारधारा ही नहीं प्रकट की परन्तु उसे कार्य क्षेत्रमें भी कर दिखाया। उन्होंने अपना जीवन और कार्य चतुर्मुखी दिशाओं में प्रसारित किया।

महर्षि की इस व्यापक और चतुर्मुखी जीवन की झांकी देखने के लिये हम स्वामी दयानन्द पर दृष्टि डालते है तो हमें आज आर्यसमाज का दृष्टिकोण कुछ संकुचित सा लगने लगता है। आर्य समाज के उपदेशक तथा धर्म प्रचारकों ने ऋषि दयानन्द के चतुर्मुखी और व्यापक रूप को और उनके सिद्धान्तों को उतना प्रचारित नहीं किया जितना उनके धर्म संशोधक रूप को। स्वामी दयानन्द की महान् आकांक्षा, महान् उद्देश्य महान् आदर्श और महान् स्वप्न तो अपने देश को पूर्ण स्वाधीन देखकर सारे-संसार में उसके अखण्ड चक्रवर्ती सार्वभौम स्वराज्य की स्थापना था।

महर्षि दयानन्द ने चक्रवर्ती सार्वभौम स्वराज्य के लिए जनता तथा देश के राजाओं और रईसों तथा नेताओं को सच्चरित्र बनने का मार्ग दर्शन दिया। मैं समझता हूं राजनैतिक क्षेत्र में किसी ने भी वैसा मार्गदर्शन नहीं किया। वास्तव में जिस तरह स्वामी रामदास ने शिवा जी को खोजा, जैसे पंजाब से निराश होकर दक्षिण की यात्रा करते हुए बंदा वैरागी गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज को मिल गया था ठीक वैसे ही ऋषि दयानन्द ने राजस्थान के राजाओं के दरवाजे खट खटाये और देशी नरेशों का पतन देखकर उनको बहुत दुःख हुआ। जोधपुर महाराज को नन्हीं जान वेश्या की पालकी में हाथ लगाते हुए देखा, तो सबके सामने कहा—'राजन् राजा लोग सिंह समान समझे जाते थे। स्थान-स्थान पर भटकने वाली वेश्या कुतिया सदृश है। "इस दुर्व्यसन को तिलांजली दे देनी चाहिए।" हम इस प्रसंग को अधिक न बढ़ाते हुए पाठकों से कहेंगे कि वे स्वामी दयानन्द के जीवन की घटनाओं में श्री मान्यवर शूर महाराजा श्री प्रतापसिंह को लिखा महर्षि का पत्र, बम्बई के उत्सव मे महर्षि की भर्त्सना और राजाओं को उनकी अवनति तथा चरित्र हीनता का बोध कराना, मारवाड़, मेवाड़, जयपुर, शाहपुर, भरतपुर, रीवां, ग्वालियर, धौलपुर करौली और इन्दौर आदि की पराधीनता के विरुद्ध

जागृत करना आदि घटनाओं को देखना चाहिए।

स्वामी जी की राष्ट्रीयता की भावना को समझने के लिए हमें सत्यार्थ प्रकाश भी देखना होगा। महर्षि ने वहाँ लिखा है "कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये के पक्षपात शून्य प्रजापर माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशी राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।"

सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने दूसरे स्थान पर लिखा है "जबसे विदेशी इस देशमें आकर राज्याधिकारी हुए तब से आर्यों के क्रमशः दुःख की बढ़ती होती जाती है।"

स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य और स्वतन्त्रता की जिस भावना को अपने ग्रन्थों में और अपने भाषणों में प्रकट किया वह एक सत्य है कि उनके बताए सुराज्य की स्थापना उसके बिना संभव नहीं। स्वतन्त्रता और स्वराज्य शब्दों की व्याख्या से उनका क्या तात्पर्य था यह हम आपके सामने स्पष्ट करना चाहते हैं। भारत जिस दिन स्वतन्त्र, स्वाधीन हुआ। उस दिन अंग्रेजी के समाचार पत्रों ने भारत के 'इंडिपेण्डेंट' होने या 'इंडिपेण्डेंस' होने की घोषणा की। परन्तु हिन्दी या प्रांतीय भाषाओं ने स्वराज्य या स्वतन्त्रता या स्वाधीनता शीर्षक देकर अपने मनोभाव प्रकट किये। आप कहेंगे कि इंडिपेण्डेंस, इंडिपेण्डेंट और स्वतन्त्रता या स्वाधीनता शब्द तो एक ही अर्थ के सूचक हैं। परन्तु बात ऐसी नहीं। यदि आप 'इंडिपेण्डेंट' शब्द का वास्तविक अर्थ अंग्रेजी के कोश से समझने का प्रयत्न करें तो इंडिपेण्डेंस का अर्थ स्वाधीनता नहीं, अनधीनता है। अनधीनता का मतलब है अब हम किसी के आधीन नहीं रहे और किसी के आधीन न रहने का मतलब है, हम उच्छृंखल हो गये। स्वतन्त्रता या स्वाधीनता शब्दों ने उच्छृंखलता को रोकने के लिये तन्त्र से पहले 'स्व' विशेषण लगा दिया।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

ऐसे थे हमारे ऋषि

(शेष ४३ से आगे)

बच्चे भूख और प्यास से तड़प रहे हैं, भारत की वीरांगनायें हतोत्साहित हैं, युवक समाज अपने मार्ग को छोड़कर घोर अन्धकार के गर्त में गिर चुका है, मानव समाज पतन के कगार पर पहुंच चुका है। तेरा प्यारा आर्य समाज, तेरा प्यारा राष्ट्र तुझे पुकार रहा है। अपने टूटे शब्दों से तेरा आह्वान कर रहा है, तू उसकी तनिक भी परवाह नहीं करता? क्या तू सचमुच क्रूर है? नहीं, नहीं तू तो दीनों और दुःखियों की पुकार सुनने वाला, अन्धों और निराश्रितों को सहारा देने वाला, मार्ग से भूले हुओं को राह दिखाने वाला और सोते हुओं को जगाने वाला है। तू मोहन है तू फिर से अपनी जादू भरी वीणा से सम्पूर्ण विश्व को मोह ले, तू अपने सुरीली राग से संसार को पुनः मस्ताना बना दे।

राष्ट्र पितामह-ऋषि दयानन्द

(शेष ४५ से आगे)

अब स्वतन्त्रता का मतलब हुआ अब हम किसी के तन्त्र या अधीन तो नहीं हुए पर हम अपने या 'स्व' के अधीन हैं। आत्मा के अधीन हुए। इस शब्द का अर्थ या भाव स्वामी दयानन्द समझाना चाहते थे और उनका विचार था कि जब देश में सच्ची स्वतन्त्रता का आगमन होगा तब भ्रष्टाचार मिटेंगे, निर्भयता आयेगी, मनुष्य परोपकारी हो सकेगा और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की स्थापना होगी। इसीलिये उन्होंने सत्य, अहिंसा और निर्भयता की शिक्षा दी।

महर्षि सुराज्य की स्थापना के लिए 'स्वतंत्र' शब्दके महत्व को समझते थे और देश के कायाकल्प के लिए चरित्र निर्माण द्वारा व्यक्ति-व्यक्ति का कायाकल्प करना चाहते थे। उनका कहना था "प्रथम आत्मिक अर्थात् व्यक्तिगत उन्नति ही समाज एवं विश्व की उन्नति की इकाई है। इसलिए अपने दोष देखकर दूसरों के दोषों को निकालें। "आचार के बिना प्रचार में अपने को लगाना वैसा ही है जैसे कि कोई बिना पुख्ता नींव बनाए ऊंचा शानदार महल खड़ा करना चाहे।

यह बात निर्विवाद रूप से मानी जाती है कि राष्ट्रीयता के जिस महायज्ञ की पूर्ति महात्मा गांधी ने की और जिसके लिए उन्हें राष्ट्रपिता की संज्ञा मिली वही उस यज्ञ का प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था और यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता थे स्वामी दयानन्द को राष्ट्रपितामह कहा जाना चाहिए।

जापानी शिष्ट मण्डल का गुरुकुल वि० वि० वृन्दावन में जोशीला स्वागत

२०/१२/८७ को गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन में जापानी शिष्ट मण्डल का जोशीला स्वागत किया गया। गु० वि० वि० वृन्दावन के ब्रह्मचारियों व अध्यापकोंने वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित हवन आदि किया व ब्रह्मचारियोंने योगासन प्रस्तुत किये। वेद पाठ, श्लोक अन्त्याक्षरी, आदि का बड़े सुन्दर ढंग से प्रदर्शन किया, टीम के डाइरेक्टर श्री इति रोहिगा ने योगासन, वेद पाठ, यज्ञ आदि पर वीडियो रिकार्डिंग की जापानी दल ने छात्रों के अनुशासन, व्यवस्था, व संस्कार की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उप-मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

शोक समाचार

गांव कुशावली, सरधना (मेरठ) में २२ जनवरी १९८८ शुक्रवार को स्व० श्री भरतसिंह जी आर्य का शांति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्व० श्री भरतसिंह जी आर्य, आर्य समाज ग्राम कुशावली के अग्रणी सदस्य थे तथा आर्य युवक डा० रमेश आर्य के पिता जी थे। ग्राम आर्यसमाज की ओरसे एक शांति यज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धाञ्जलि देने वालों में मेडिकल कालेज के डाक्टर, ग्राम के सम्भ्रान्त व्यक्ति, सरधना आर्य समाज के प्रधान आशाराम वर्मा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी भी थे। —मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

संकल्पों का पर्व पधारा

[श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर]

बोधरात्रि है यह शिवरात्रि,
नव जागृति की यह अभिलाषा।
युग परिवर्तन की इसमें है–
अन्तर्निहित अमृत परिभाषा।

इसी महाशिवरात्रि – रात्रि मे–
किया दयानन्द को उत्प्रेरित।
बालक मूल शंकर को इसने–
ज्ञान प्रदान किया व प्रेरित।

इसी रात्रि को ज्ञान प्राप्त कर–
मूलशंकर बन गए दयानन्द।
युग परिवर्तन की वेला में–
धरती पर आया अति आनन्द।

अज्ञानान्धकारापहारिणी–
रश्मि उषा की उदित हुई,
मानवता की गरिमा भू पर–
फिर से थी प्रमुदित हुई।

तिमिर भगा अन्याय – अनय का–
छाया फिर से सत्य वितान।
वेद – धर्म का लहराया फिर–
अपराजेय सा जयी निशान।

डंका बजा पुनः वेदों का–
लेने लगा सत्य – अंगड़ाई।
जाग उठीं फिर मानवता की–
नव चेतनमय तरुणायी।

पुनः वही नव जागृति वाला,
संकल्पों का पर्व पधारा।
जाग उठी भारत भू जिससे–
जाग उठा था जग सारा।

हे देव ! हे ऋषीवर !

[आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर, लखनऊ]

गुरुवर यती दयानन्द शतशत प्रणाम तुमको
हे देव ! हे ऋषीवर शत शत प्रणाम तुमको
तुमने हमें जगाया, पथ वेद का दिखाया
पाखण्ड को मिटाया, गिरतों को है उठाया ॥

अहसान हम चुकायें हे देव कैसे तुमको
हे देव हे ऋषीवर शतशत प्रणाम तुमको
भारत जननि व्यथित थी, पीड़ा असह्य अब थी
पशुओं की जिन्दगी जब जीने की विवशता थी

स्वातन्त्र्य मन्त्र फूंका देकर सहारा हमको
हे देव ! हे ऋषीवर शत शत प्रणाम तुमको
नारी विलाप करती, दलितों को मार पड़ती
भेदी विदेश नीती हममें विभेद भरती

'सत्यार्थ कर प्रकाशित' दे दी सुशक्ति हमको
हे देव ! हे ऋषीवर शत शत प्रणाम तुमको
हे गुरु तुम्हारे ऋण को हम तो चुका न सकते
मन में सदैव तेरे उपदेश ज्ञान भरते

श्रद्धा प्रसून अर्पित भारत सपूत तुमको ।
हे देव ! हे ऋषीवर ! शत शत प्रणाम तुमको

आओ ! आर्य सपूतों ! आओ !!
वेद – पथों पर कदम बढ़ाएं ।
ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों–
को मिलकर साकार कराएं ।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का–
गूंज उठे धरती पर नारा ।
मानवता की रक्षा के हित–
तत्पर जन धरती का सारा ॥

दयानन्द वचनामृतम्

★

—यद्यपि आज कल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ सर्व तंत्र सिद्धान्त अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं उनका परित्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।

o o o

बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते हैं जो कि वक्ता के अभिप्राय के विरुद्ध कल्पना किया करते हैं विशेषकर मत वाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस नष्ट हो जाती है। मैं पुराण जैनियों के ग्रन्थ बाइबिल कुरान आदि को बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग कर मनुष्य जाति की उन्नति पथ पर चलने का विचार देता हूं। —स० प्र०

o o o

—सब वेदादि शास्त्रों में परमात्मा का प्रमुख नाम ओ३म् है। बाकी सब नाम गौण हैं।

o o o

—माता पिता आचार्य का कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों व शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन उनका ग्रहण करो और जो दुष्ट कर्म हों उन्हें त्याग देना। —स० प्र०

o • o

—हवन न करना पाप है क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। होम से सुगन्ध फैलती वायु और जल शुद्ध होकर रोग का निवारण करता है। जितना सामान खिलाने से एक व्यक्ति का सुख मिलता है उतना ही सामान होम करने से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। —स० प्र०

o o o

—वेद स्वाध्याय, संन्ध्या, अग्निहोत्र आदि नित्य कर्म में अनध्याय नहीं होना चाहिए जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिये जाते हैं बन्द नहीं किये जाते वैसे ही नित्य कर्म प्रतिदिन करना चाहिए किसी भी दिन नहीं छोड़ना चाहिए।, —स० प्र०

o o o

—संकलनकर्त्ता संजय अवस्थी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश का २८ फरवरी १९८८ को

लखनऊ में निर्वाचन नहीं होगा

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की प्रदेश के समस्त जिला सभा के सम्मानित प्रधान/मन्त्री समस्त आर्यसमाजों के प्रतिष्ठित सदस्यों के नाम आवश्यक सूचना

★ ★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित तथा कुछ भ्रमित व्यक्तियों द्वारा प्रदेश की आर्य जनता को चुनाव के नाम पर भ्रमित किया जा रहा है। पहले १७ जनवरी १९८८ को चुनाव कराने हेतु परिपत्र जारी किया गया। फिर २८ फरवरी को लखनऊ के नेशनल इण्टर कालेज में चुनाव की घोषणा की गई।

प्रदेश की समस्त आर्य जनता से अपील है कि वह इन समाचारों से भ्रमित न हो और न ही किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र 'आर्यमित्र' द्वारा प्रकाशित सूचना के अनुसार ही कार्य करें। किसी भी निष्कासित व्यक्ति या सभा विरोधी कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा किसी भी सूचना को कोई महत्व न दें और न ही किसी प्रकार का कोई सहयोग करें।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० [illegible] घोषणा पत्र सं [illegible]

फाल्गुन शुक्ल ४, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक २१ फरवरी १९८८

अन्त:करण मे निहित विलक्षण प्रतिभा के धनी, आर्य की एक प्रार्थना—

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरे भरे ।
अस्मभ्यमिन्द्र वरीयः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज: ॥

अन्वयार्थ —

वयम्—हम
जयेम—विजयी हों
त्वया—आपके साथ
युजा—युक्त होकर
वृतम्—जो हमें चारो ओर से घेरे हुए हैं
अस्माकम्—हमारे
अंशम्—भाग (पक्ष) को
उत+अव—भली प्रकार रक्षा कीजिए
भरे भरे—संग्राम में
अस्मभ्यम्—हमारे लिए

इन्द्र+मघवन—ऐश्वर्यवान सर्वशक्तिमन्
वरीय:—धन+समृद्धि+यश का
सुगम—सहज हो
कृधि—प्राप्त करने योग्य बनाइए
शत्रूणाम्—शत्रुओं को
वृष्ण्या—शक्तियों का
रुज—छिन्न भिन्न कर दीजिए

भावार्थ —

इस वेद मन्त्र में अनन्त शक्ति सम्पन्न प्रभु से अपने को जोड़ता हुआ एक आर्य किस प्रकार अपनी समस्त आत्मिक, सांसारिक बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है—इसका उल्लेख करते हुए बतलाया गया है कि हम अपने वैयक्तिक अथवा सामाजिक जीवन में जब कभी काम क्रोधादि मनोविकारी शत्रुओं से अथवा समाज को पतनोन्मुख करने वाले असुर भारी शत्रुओं से घिर जाय तो हमें उस सफल ऐश्वर्य के स्वामी से प्रार्थना करनी चाहिये कि हे सर्वशक्तिमन् ! हम इस कठिन घड़ी में आपका आश्रय चाहते हैं। हमें उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराइए जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं। इस जीवन संग्राम में आप हमारे पक्ष की भली प्रकार रक्षा कीजिए। हमें पवित्र यश एवं समृद्धि की प्राप्ति के साधनों को सुलभ करा दीजिए। हमारे अन्दर इतना उत्साह, आत्मविश्वास और शक्ति भर दीजिए कि हम विरोधी शक्तियों को, जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं, छिन्न-भिन्न करने में पूर्ण सक्षम बन जाय

आज मानवता के उद्धार एवं विश्वशान्ति हेतु आर्यों से अधिक व्यापक और क्रान्तिकारक सुझाव किसी के पास नहीं है। संसार से अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि कुरीतियों को समाप्त करके "विश्वं भवत्येक नीडम्" की भावना को जागृत करना, समस्त प्राणियों को कल्याण मार्ग का पथिक बनाना हम आर्यों का कर्तव्य है क्योंकि हमारा उद्देश्य ही 'संसार का उपकार करना है

आज हम अवरोधों, विरोधों, प्रतिरोधों में निराश न हों। प्रभु की दिव्य शक्तियों से हमने अपने को जोड़ लिया है अब आसुरी शक्तियां छिन्न-भिन्न होकर ही रहेंगी विजय हमारी ही होगा।

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सहायक सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य २५१)
वार्षिक २५)
छमाही ११)
विदेश में १२ पौंड

वर्ष ४१
अङ्क ६

जो आँख भीत अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—फाल्गुन शुक्ल ४ सम्वत् २०४४ रविवार २१ फरवरी १९८८, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

इतिहास का अनदेखा पृष्ठ—

तमस

हमारे परमप्रिय राष्ट्र के जीवन में तत्कालीन राजनैतिक अदूरदर्शिता के कारण आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व "तमस" की एक भयंकर निशा भयंकर झंझावात लिए आई थी, रहमतदिगार के नाम पर रहमत का उपहास करती हुई, एक ही माँ के स्तनों का दुग्धपान करने वाले भाइयों के आपसी खून से रंगी हुई, निर्दोष मासूमों की हत्या के गुनाहों की गठरी सिर पर बांधती हुई, जुल्मोसितम के खूनी पंजों से इतिहास के पन्ने रंगती हुई, एक भीषण आंधी की तरह आई और राष्ट्रविभाजन की अकल्पनीय, अकथनीय, क्रूर कहानी लेकर माँ के माथे पर काले कलुषित अक्षरों की कालिमा पोत गई। स्वर्णाक्षर मण्डित भारतीय इतिहास के पन्ने "तमस" की कालिमा से काले हो गये। माँ का विभाजन क्या हुआ, प्यार में पलते हुए बच्चों के दिल विभाजित हो गये, मातृभूमि का खण्डन नहीं, आशाओं का खण्ड-खण्ड हो गया। अपनी मधुर झंकार से संसार को सम्मोहित करने वाली, दुनियां के लोगों को अपने मधुमय सन्देशों से पवित्र और उदात्त बनाने वाली मधुमती रसवती मुखरित विश्ववीणा के तार टूट गये……एक वहाँ गिरा……एक यहाँ गिरा……

शेख ने मस्जिद बना मिस्मार बुतखाना किया।
पहिले तो एक सूरत भी थी अब साफ वीराना किया॥

तमस की इस आग में हर भारतीय जला है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या ईसाई, हर घर वीरान हुआ है। और यह आग आज भी जल रही है। काश? भीष्म साहनी अतीत के इतिहास के चश्मे से इसे देख पाते? आग कहां से शुरू हुई है, कब से शुरू हुई है, क्यों शुरू हुई है—लगाने वाला धर्मों के किस लबादे में छिपा हुआ है। गुनाहों का अम्बार देखकर भी, जैसा मसीहा है, क्यों नहीं आकर कहता—भूल हुई है, भयंकर राष्ट्रीय भूल—तुम एक हो, एक ही माँ के लाल हो किसी नाम से पुकारो तुम्हारा परवरदिगार एक है। यह इन्सान की मिल्कियत बार-बार नहीं मिलती इसे प्रेम की आरती से सजाओ नहीं तो यह दोजख की आग में तुमको, हमको सबको जलाकर भस्म कर देगी।

"तमस" की आलोचना प्रत्यालोचना पर हम कुछ लिखना नहीं चाहते थे—क्योंकि यह उपन्यास है, वास्तविकता से दूर, लेखक की कल्पना और विचारों की उड़ान का प्रतिबिम्ब। लेकिन दूरदर्शन पर दिखाए जाने के पीछे शासन की मूर्खता भरी क्या है और इसकी विषयवस्तु जिस ढंग से प्रस्तुत की गई है उस पर हमें सख्त आपत्ति है। भारत विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम दंगों पर आधारित इस कहानी में अनेक विसंगतियां खड़ी कर दी हैं और अनेक विन्दु गलत दिए हैं। तथ्यों के विपरीत यह कहना "किसी हिन्दू ने मुसलमान की रक्षा नहीं की", मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में हिन्दुओं ने दंगों की शुरुआत की, "आर्य समाज के मन्दिरों में हवन के पश्चात् भड़काने वाले उपदेश दिए गये" आदि ऐसी घटनायें हैं जो शरारतन जोड़ी गयी प्रतीत होती हैं। दंगों के लिए हिन्दुओं को दोषी ठहराना और प्रतिक्रिया स्वरूप मुसलमानों में उत्तेजना फैलना इतिहास की वे विसंगतियां हैं जिनका तथ्य से कोई वास्ता नहीं है। हम पाठकों को इतिहास के उस युग में ले जाना चाहते हैं जहाँ से इस विध्वंस की सृजनभूमि बनी है, बन रही है, बनती रहेगी। यह वे तथ्य हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। मोहम्मद बिन कासिम (सन् ७१२) ई० से, महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, तैमूर लंग कत्लेआम के जगप्रसिद्ध शहन्शाह नादिरशाह अब्दाली से लेकर औरंगजेब तथा परवर्ती मुगलकाल तक हैवानियत से भरी विचारधारा धर्म के नाम पर उन हिन्दुओं को जो मूर्ति में भगवान को देखने के इच्छुक थे, गाजर और मूली की तरह काटती रहीं। दोष सिर्फ इतना था कि वे बुतपरस्त थे, उनकी भाषा में काफिर थे……। "तमस" के प्रणेता से हम पूछना चाहते हैं उस समय तो आर्य समाज नहीं था और न समाज मन्दिरों में हवन के बाद उपदेश होते थे। ऋषि का तो जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय किसकी प्रतिक्रिया थी जिसके फलस्वरूप मुसलमानों में उत्तेजना फैली और लाखों, लाखों निर्दोष मासूम मौत के घाट उतारे जाते रहे। एक से एक बढ़कर आता गया और वही करता गया जो उनकी विचारधारा में निहित था।

"तमस" ने जो दृश्यावलियां प्रस्तुत की हैं उनमें "गुरु के द्वारा शिष्य से मुर्गा कटवाना" मस्जिद के सामने सुअर फेंकना" "मन्दिरों को तुड़वाना" आदि ऐसी दृश्यावलियां हैं जिनसे हमारे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की छवि संसार में धूमिल हो रही है। इसका प्रदर्शन निःसन्देह राष्ट्रीय एकता और शान्ति के लिए खतरा है इसकी सामग्री सर्वथा अमान्य ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत तथा देश की हिन्दू जनता के लिए अपमानजनक है। इस सीरियल के दो खण्डों में पंजाब में उपद्रवों और हिंसा की घटनाओं का आरम्भ हिन्दुओं द्वारा दिखाया जाना—इस बात का द्योतक है कि लेखक ने हिन्दू विरोधी भावना को उजागर करके अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण द्वारा ओछी लोकप्रियता अर्जित करने की कोशिश की है। लेखक ने साम्यवादी विचारधारा का समर्थन करते हुए कम्युनिस्टों को शान्तिप्रिय और देशभक्त बताने का दुस्साहस किया है आर्य समाज जैसी पवित्र और शान्तिप्रिय संस्था पर मिथ्या कीचड़ उछाला है हम यहाँ स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि किसी को भी ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ने-मोड़ने का अधिकार नहीं है।

जनसत्ता ९ फरवरी में "आमने-सामने" शीर्षक के अन्तर्गत साहनी जी एक प्रश्न के उत्तर में फरमाते हैं—आजादी की लड़ाई में आर्य समाज ने कुछ योगदान नहीं किया। हाँ आर्य समाज से लाला लाजपत राय और भाई परमानन्द व्यक्तिगत हैसियत से आजादी की लड़ाई में शामिल हुए थे……। संसार का सबसे बड़ा झूठ इससे अधिक और

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा ऋषि दयानन्द के परस्पर सम्बन्ध

[डा० भवानीलाल जी भारतीय]

हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी परिवर्तन करने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। भारतेन्दु का जन्म ९ सितम्बर १८५० को काशी के बाबू गोपालचन्द्र (गिरिधरदास के नाम से साहित्य जगत में प्रसिद्ध) नामक एक अग्रवाल रईस के यहां हुआ। इन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय बाल्यकाल मे ही दे दिया था। पिता की मृत्यु हो जाने के पश्चात हरिश्चन्द्र को बहुत बड़ी सम्पत्ति का स्वामित्व मिला, किन्तु अपनी उदारता तथा दानशील प्रवृत्ति के कारण वे शीघ्र ही आर्थिक संकट मे फंस गये।

भारतेन्दु की प्रतिभा बहुमुखी थी। एक ओर वे यदि उत्कृष्ट कोटि के नाटककार, निबन्धकार तथा पत्रकार थे, तो दूसरी ओर उन्होने ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में सफल काव्य रचना कर अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया। हिन्दी कविता का प्राचीन रूढ़िगत विषयो से मुक्त कर, उसके माध्यम से नवीन सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करना भारतेन्दु के कवित्व की विशेषता है। उन्होंने कवि वचन सुधा, बाला बोधिनी, हरिश्चन्द्र मैगजीन तथा हरिश्चन्द्र चन्द्रिका नामक पत्र पत्रिकाओ का सम्पादन एवं प्रकाशन कर हिन्दी पत्रकारिता को नूतन आयाम प्रदान किया। वे नागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे। शुद्ध हिन्दी को प्रोत्साहित करने और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की उर्दू फारसी के शब्दों से लदी 'आम फहम' भाषा का विरोध करने में उनका स्वर सर्वाधिक सशक्त था। ३५ वर्ष की अल्पायु में ही १८८५ ई० मे उनका निधन हो गया।

भारतेन्दु धार्मिक विचारो की दृष्टि से पुष्टिमार्गीय आचार्य वल्लभ के मतानुयायी वैष्णव थे। उन्होने वैष्णव सर्वस्व, वल्लभीय सर्वस्व, तदीय सर्वस्व, श्रीयुगल सर्वस्व, उत्सवावली आदि अनेक साम्प्रदायिक ग्रन्थ लिखे हैं, किन्तु धीरे-धीरे उनका धार्मिक दृष्टिकोण अधिकाधिक उदार और सामाजिक चिन्तन प्रगतिशील तथा युग सापेक्ष बन गये। भारतेन्दु के इस वैचारिक परिवर्तन में स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व तथा सिद्धान्तो ने परोक्ष भूमिका निभाई थी। सर्वप्रथम हम भारतेन्दु को स्वामी दयानन्द के उस शास्त्रार्थ मे पौराणिक पक्ष की ओर से उपस्थित पाते हैं जो १८६९ ई० के नवम्बर मास में काशी स्थित दुर्गाकुण्ड के निकट आनन्द बाग मे हुआ था। पं० लेखराम ने स्वलिखित स्वामी दयानन्द के उर्दू जीवन चरित में शास्त्रार्थ में उपस्थित अनेक पौराणिक विद्वानो की जो सूची प्रस्तुत की है उसमे बाबू हरिश्चन्द्र का नाम अंकित है वे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही है। इस समय तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वामी दयानन्द को प्रचलित हिन्दू धर्म की नाना पुरातन आस्थाओं के प्रति विद्रोह करने वाले एक पथ भ्रष्ट संन्यासी के रूप में ही जानते थे। उनकी वैष्णव आस्था का भी तकाजा था कि वे इस मूर्तिभंजक तथा प्राचीन रूढ़ियों के विध्वंसक संन्यासी के प्रति नितान्त कठोरता का व्यवहार करते। फलतः काशी शास्त्रार्थ की समाप्ति के तुरन्त पश्चात् हरिश्चन्द्र ने दूषणमालिका नामक एक पुस्तक १९२७ वि० (१८७० ई०) में लिखी जो काशी की लाजरस कम्पनी के मेडिकल हाल प्रेस में मुद्रित हुई थी। इसमें स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों पर नाना प्रकार के तथ्यहीन आक्षेप करते हुए उनसे ६४ प्रश्नो का उत्तर मांगा गया था।

किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रति भारतेन्दु का यह विरोधमूलक दृष्टिकोण धीरे-धीरे दूर हो गया। ज्यों-ज्यों स्वामी दयानन्द की धर्म संशोधक समाज संस्कारक तथा देश भक्त महापुरुष के रूप में ख्याति बढ़ने लगी और उनको प्राचीन आर्य धर्म तथा आर्य मान्यताओं के उद्धारक के रूप में पहचाना जाने लगा, त्यों-त्यों भारतेन्दु भी उनके प्रशंसक बनते गये। नवीन अनुसंधान से पता चलता है कि १८७६ ई० अथवा १८८० ई० में जब स्वामी जी पुनः काशी आए तो स्टेशन पर उनका स्वागत करने वालों मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा प्रसिद्ध दार्शनिक डा० भगवानदास के पिता भी थे। भारतेन्दु के स्वामी दयानन्द विषयक विचारो में सुनिश्चित परिवर्तन, आ गया था, इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिये निम्न प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

१–धर्मयुग के एक अंक में प्रकाशित राय कृष्णदास के एक लेख से यह विदित होता है कि भारतेन्दु ने स्वसंचालित कवि वचन सुधा के सम्पादक मण्डल में स्वामी दयानन्द के नाम को प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था।

२–स्वामी दयानन्द ने जब १९२७ वि० में अद्वैतमत खण्डन शीर्षक पुस्तक नव्य वेदान्त की आलोचना में लिखी तो भारतेन्दु ने अपने पत्र कवि वचन सुधा के अंकों (ज्येष्ठ तथा आषाढ़ १९२७ वि०) में उसे प्रकाशित किया। ऐसा करने मे एक कारण यह भी था कि श्री वल्लभाचार्य के द्वारा प्रतिपादित शुद्धाद्वैत वेदान्त के समर्थक भारतेन्दु शांकर वेदान्त के आलोचक थे, अत. उन्होने दयानन्द कृत अद्वैतवाद की समीक्षा को अपने पत्र में स्थान दिया।

३–स्वामी दयानन्द द्वारा हुगली में पं० ताराचरण तर्करत्न से किये गये मूर्तिपूजा विषयक शास्त्रार्थ को भारतेन्दु ने प्रतिमा पूजन विचार शीर्षक से १८७३ ई० मे लाइट प्रेस बनारस से प्रकाशित किया था। इसी का द्वितीय संस्करण बाबू रामदीनसिंह ने खड्गविलास प्रेस बांकीपुर से १८८८ ई० मे प्रकाशित किया। इस संस्करण के मुख पृष्ठ पर इस ग्रन्थ को 'भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र संगृहीत' उल्लिखित किया गया है।

४–स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् भारतेन्दु ने कविवचन सुधा मे 'स्वर्ग मे विचार सभा का अधिवेशन' शीर्षक एक लेख लिखा जिसमे स्वामी जी के कतिपय धार्मिक सिद्धान्तों से अपनी असहमति व्यक्त करते हुए भी उनके सामाजिक तथा देशभक्ति युक्त विचारो की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गई थी।

५–स्वयं भारतेन्दु की अनेक रचनाओ में धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक कुप्रथाओ तथा अन्धविश्वासों के प्रति जो तीव्र कटाक्ष युक्त आलोचना का स्वर मुखर हुआ है, उसे स्वामी दयानन्द के विचारों का ही प्रभाव समझना चाहिए। भारत दुर्दशा नाटक में भारतेन्दु हिन्दु समाज मे प्रचलित जातिभेद जन्म पत्र के आधार पर विवाह स्थिर करना, बाल विवाह, कुलीनो के बहु विवाह, विधवा विवाह निषेध, विलायत गमन निषेध आदि कुप्रथाओं का तीव्र खण्डन करते हैं। 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' में उन्होंने साम्प्रदायिक पाखण्डो का पर्दाफाश किया है जबकि अपने अपूर्ण नाटक प्रेमयोगिनी मे तीर्थस्थानो एवं धर्म स्थानो में फैले दुराचार तथा काशी जैसे धर्म स्थानो मे विद्यमान पाखण्डो का भण्डाफोड़ करने मे उन्होने यथार्थवादी लेखक की भूमिका निभाई है। यह सब तथ्य इस बात के प्रमाण है कि परम वैष्णव भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी वैचारिक उदारता के लिए स्वामी दयानन्द के ऋणी थे।

'युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द'

(अमित प्रताप नारायणसिंह, ग्राम–हाटा, डा०–नवोली)
जनपद–देवरिया, यू० पी०

इस पवित्र भारत भूमि पर समय–समय पर ऐसे महापुरुषों का आविर्भाव होता आया है जिन्होने समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। महर्षि दयानन्द उन्हीं महापुरुषों में से एक थे। वे सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे।। यदि हम उन्हें युगप्रवर्तक कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ज्ञान का आलोक फैलानें, वेद प्रचार करने, अन्ध विश्वास, पाखण्ड तथा कुरीतियों को उन्मूलन करने और ऊंच–नीच का भेद–भाव मिटाने मे लगा दिया।

गुजरात राज्य में भी भाग्यशाली है–मोरवी रियासत की टंकारा नगर की पावन धरती जिसकी धूल में लोट–लोटकर बड़े हुए थे—महर्षि दयानन्द। इनका जन्म १८२४ में हुआ था। इनके बचपन का नाम मूलशङ्कर तथा दयाराम भी था। कर्मकाण्डी ब्राह्मण परिवार से सम्बन्ध रखते हुये भी इन्होंने कर्मकाण्डों तथा कुरीतियों का घोर विरोध किया। अल्प समयमें ही व्याकरण का अभ्यास कर उन्होंने सम्पूर्ण यजु-र्वेद तथा अन्य वेदों के अंशों को कंठस्थ कर लिया। १३ वर्ष की अवस्था में ही एक अद्भुत घटना ने उनके जीवन में एक नया मोड़ ला दिया। उन्होंने शिव रात्रि का व्रत रखा था। रात को उन्होने शिव की प्रतिमा पर एक चूहे को चढ़ते उतरते और प्रसाद खाते हुये देखा। उन्होंने मन ही मन सोचा,–सर्व शक्तिमान ब्रह्म इस प्रतिमा में नहीं हो सकता।' अतः उन्होंने शिव का ज्ञान प्राप्त करने का संकल्प किया। वे सांसारिक जीवन से विरक्त हो गये और उनके मस्तिष्क में ज्ञान के प्रकाश का उदय हुआ। गुरु तथा ज्ञान की खोज में उन्होंने अनेक स्थानों की यात्रा की। अन्त में मथुरा पहुंच कर उन्होंने तीन वर्ष तक दण्डी स्वामी विरिजानन्द जी से शिक्षा समाप्त होने पर जब यह गरीब बालक कहीं से कछ व्यवस्था कर गुरु के चरणों में गुरु दक्षिणा प्रस्तुत किया तो गुरु हतप्रभ रह गया। गुरु ने कहा, 'बस यही गुरुदक्षिणा।' बालक ने सोचा कि अब इससे अधिक वह क्या दे सकता था? परन्तु गुरु ने शिष्य से गुरुदक्षिणा में जीवन की दक्षिणा मांगते हुये कहा, वत्स! ज्ञान का आलोक फैलाने, वेद प्रचार करने तथा अन्धविश्वास और पाखण्ड का उन्मूलन करनेमें तुम्हें अपना जीवन लगा देना है तथा गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को विदेशी शासन से मुक्त कराना है।'

गुरु के आज्ञानुसार महर्षि दयानन्द ने वेदों का भाष्य किया और सारे भारत में घूम–घूम कर वेदों की शिक्षाओं का प्रचार किया। व्याप्त अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने में वे निरन्तर लगे रहे। समाज सुधार सम्बन्धी कठिन कार्यों में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कभी–कभी तो उनके प्राण संकट में पड़ गये। अनेक स्वार्थी लोगों ने अज्ञान वश उनकी हत्या करने की चेष्टा की। अमृतसर में उनकी सभा में पत्थरों की वर्षा की गयी। उन्होंने इसे पुष्प वर्षा के समान समझा और जब उनपर सांप फेंका गया तो उसे पुष्प माला के समान मान कर वे सच्चे अर्थ में शंकर बन गये। उन्हें १७ बार मारने का प्रयत्न किया गया। एक बार एक ब्राह्मण ने उन्हें पान में विष दिया। वह पकड़ा गया। परन्तु स्वामी जी ने यह कहकर मै संसार को बन्धन से मुक्त कराने आया हूं। इन्हें क्यों बन्धन में डालूं? छोड़ दिया। उनकी शक्ति के स्रोत थे—ब्रह्मचर्य, तप और त्याग मय जीवन।

महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के लिये समर्पित था। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में देश भक्ति का उल्लेख करते हुये उन्होंने लिखा है—"उन्नति करना चाहो तो 'आर्य समाज' के साथ मिल कर उसके आदेशानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे भी होगा। उसकी उन्नति तन मन धन से सब जनें मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" स्वामी जी के जीवन की एक घटना है। वे अनूप शहर मे गंगातट पर जब समाधि टूट गयी। उन्होंने देखा एक फटे चिथड़े गन्दे कपड़े पहनी हुई दीनहीन महिला एक बच्चे के शव को अपने कन्धों पर लिये हुये तट पर गयी और उसे जल में बहाकर कफन को उतार कर रोती हुई लौट रही थी। स्वामी जी से रहा नहीं गया। उन्होने पूछा 'माता जी! आपने तो अपने अमूल्य बच्चे को गंगा को समर्पित कर दिया और इस फटे पुराने कफन को वापस लेती आयीं। इसका क्या कारण है?' महिला, और अधिक रो पड़ी और कुछ देर के पश्चात् चुप होने पर बताया महाराज तन ढकने के लिये मात्र यही तो घर में कपड़ा था।' रोती हुई महिला तो चली गई। परन्तु स्वामी जी कई घन्टे तक रोते रहे। उसी समय उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने का दृढ़ संकल्प किया और कहा, स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।

स्वामी दयानन्द ने समाज की सारी गड़बड़ी का कारण तीन शत्रुओं को बताया–प्रथम–अभाव तथा गरीबी दूसरा–अज्ञान तथा अशिक्षा, तीसरा अन्याय अर्थात गुलामी। उन्होंने बताया कि आर्यसमाज संस्था का उद्देश्य है–संसार का उपकार करना अथवा शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उनका कहना था कि आर्थिक विषमता, गरीबी तथा गुलामी उन्नति में सबसे बड़े बाधक तत्व हैं। सन १८८० में लार्ड थेम्स भारत का गवर्नर जनरल था। इसने स्वामी जी को बुलाया और कहा, 'महात्मन! आप आर्य समाज की प्रार्थना में यह भी सम्मिलित कर दीजिये कि ब्रिटिश राज्य भारत में अजर अमर रहे।' स्वामी जी ने निर्भीकतासे उत्तर दिया, 'मैं अपनी प्रार्थना में ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि ब्रिटिश साम्राज्य भारत से शीघ्र से शीघ्र समाप्त हो जाय। और हम भारतवासी स्वतन्त्र वातावरण में सांस ले सकें।' थेम्स फोर्ड ताकता रह गया स्वामी जी की ओर तथा स्वामी जी निकलकर चल दिये। इस प्रकार स्वामी जी, साहस, निर्भीकता तथा दया की मूर्ति थे।

वर्तमान परिवेश में महर्षि दयानन्द के उपदेशों तथा शिक्षाओं का और अधिक महत्व बढ़ गया है क्योंकि इस समय देश में जातिवाद, ऊंच-नीच का भेदभाव, पाखण्ड भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता अलगाववाद बढ़ता चला जा रहा है। देश की एकता तथा अखण्डता खतरे में है। अलगाववादी शक्तियां सिर उठा रही हैं। पंजाब में सिक्ख आतंकवादी निरीह तथा निहत्थे लोगों की हत्या कर रहे हैं तथा खालिस्तान की मांग कर रहे हैं। पश्चिमी बंगाल में नेपाली गोरखा-लैंड की मांग कर रहे हैं। नागालैंड में विद्रोही नागा तथा त्रिपुरा में टी० एन० वी० छापा मार आदिवासी लोगों की हत्याएं कर रहे हैं तथा राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं। ऐसी दशा में हम महर्षि दया-नन्द के बताए गये मार्ग पर चलकर और उनकी शिक्षाओं का प्रचार प्रसार कर अपने देश की एकता तथा अखण्डता की रक्षा कर सकते हैं तथा पाखण्ड, कुरीतियों तथा साम्प्रदायिकता और हर प्रकार के भेद-भाव को समाज से मिटा सकते हैं।

भारत उद्धारक प्रेरणा के स्रोत–

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

[डा० शकुन्तचन्द्र आर्य लालगंज, जिला रायबरेली (उ० प्र०)]

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती महान समाज सुधारक, राष्ट्रीय एवं स्वदेशी भावना के पोषक, वेदों के श्रेष्ठ ज्ञाता, संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान, राष्ट्र भाषा के हिमायती, नारीउत्थान के प्रबल समर्थक, गोवधबन्दी के पक्षधर, छुआछूत, मूर्तिपूजा, आडम्बर, ढोंग, ऊँच-नीच की भावना एवं अवतारवाद के घोर विरोधी थे। उन्होंने जिस प्रकार आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर, मायामोह घरबार त्यागकर उत्तम विचारो के प्रसार, कुरीतियों के उन्मूलन, राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने तथा देशवासियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया' वह भुलाने योग्य नहीं है, इसके लिए देशवासी सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् १८२४ ई० (संवत् १८८१ विक्रमी) को गुजरात के प्रायद्वीप के मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में हुआ था। उनके पिता करसनलाल जी तिवारी एक कट्टर ब्राह्मण थे-जिनके धार्मिक एवं कर्मकाण्डी स्वभाव का प्रभाव उनके ऊपर पड़ा। उनके बाल्यकाल का नाम मूलशंकर था। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि, होनहार एवं विचारशील थे अपने पिता का अनुसरण कर वे धर्म-कर्म, पूजापाठ एवं धार्मिक नियमों के पालन में विशेष रुचि लेते थे।

सच्चे शिव की खोज की प्रतिज्ञा

एक बार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि के दिन जब कि वे १४ वर्ष के थे, उन्होने अपने पिता की आज्ञानुसार व्रत रखा। बालक मूलशंकर ने बड़ी श्रद्धा से व्रत व रात्रि जागरण किया। ओर सब उपासक सो गए परन्तु वह जागता ही रहा, मन्दिर में शिवलिंग पर लगी भोगसामग्री पर चूहों ने उछलकूद एवं उनकी लीला को देखा। बालक के हृदय में शंका उत्पन्न हुई कि "क्या वह वही महादेव है जो कि दैत्यों, राक्षसों एवं दुष्टों का संहार करता है ? पर वह तो अपने ऊपर उछलकूद मचा रहे चूहों को नहीं हटा पा रहा है। अनेक संकल्पों विकल्पों के पश्चात् बालक ने पिता को जगाकर अपनी शंका उनके सामने रखी। पिता ने समझाते हुए कहा कि "असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं, यह तो उनकी मूर्ति है।" इसके बाद जब मूलशंकर ने ओर तर्क वितर्क किया तो पिता ने डाट डपट कर उसे शांत कर दिया। परन्तु इससे बालक की शंका का समाधान नहीं हो सका। उस दिन से उसका मूर्तिपूजा पर से विश्वास उठ गया। उन्होने दृढ़ निश्चय किया कि 'मैं सच्चे शिव के दर्शन के बिना उसका पूजन कदापि नहीं करूँगा।' तब से उन्होने सच्चे शिव (परमात्मा) की खोज की प्रतिज्ञा की।

मूलशंकर से दयानन्द बने

कुछ समय बाद उनकी एक बहिन तथा चाचा की मृत्यु हो गई। उन अवसरों पर उनकी आँखो में आँसू नहीं आये 'अपितु मृत्यु क्या है', इस सम्बन्ध में वे गहराई के साथ विचार-विमर्श करने लगे। उनका मन गृह संसार से उचट गया। पिता ने गृहस्थाश्रम में बांधने के लिए उनके विवाह की तैयारी प्रारम्भ कर दी। इस बीच जब कि वे लगभग २१ वर्ष के थे, घर त्याग कर चल दिए। पिता ने चारों ओर आदमी भेज कर उनकी खोज कराई। वे सिद्धपुर के मेले में साधुवेश में पकड़े गये। घर में बुरी तरह पीटे गये, उनके भगवा वस्त्रों को चीड़ फाड़ कर फेंक दिया गया तथा उनके ऊपर पहरा बिठा दिया गया परन्तु वे अपने दृढ़ निश्चय से नहीं डिगे। एक दिन शौच के बहाने लोटा लेकर रात्रि के तीसरे पहर घर से निकल गये। फिर पिता के हाथ कभी नहीं आये। सच्चे शिव की खोज में नवयुवक मूलजी ने जगह जगह योगियों की तलाश की, अनेक विद्वान संन्यासियों का सत्संग किया तथा एक दक्षिणी संन्यासी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा ली। तत्पश्चात् उनका नाम मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती हो गया।

सच्चे गुरु विरजानन्द की आज्ञा का आजीवन पालन किया

तत्पश्चात दयानन्द सरस्वती इधर उधर भटकते रहे। योगियों से योगाभ्यास की क्रियायें सीखी, गुजरात नर्मदा, नर्मदा से वे अरावली, वहाँ से उत्तर भारत में आये। विन्ध्याचल के पर्वतों में एकबार उनका पाला एक रीछ से पड़ा परन्तु अन्त में वह स्वामी जी के डंडे को देख कर भाग गया। जंगलों में उन्होंने अनेक कष्ट उठाये। अलखनन्दा जैसी बर्फीली नदी में बर्फ के टुकड़ों से उनके पैर लोहू-लुहान हो गये, इच्छा हुई कि वहां ही तप से देह गला दे। फिर दिल में विचार आया कि 'संसार का उपकार करना चाहिए। इस हेतु विद्याध्ययन करना चाहिए।' इस ध्येय से वे मथुरा आये। वहां विरजानन्द दंडी की पाठशाला में प्रवेश लिया। गुरु विरजानन्द की आज्ञानुसार सभी अनार्ष ग्रन्थ यमुना में बहा दिये तथा वेद-वेदांग तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। विद्याध्ययन के बाद लौंगों से भरा थाल अपने गुरु को दक्षिणा में देना चाहा। परन्तु गुरु ने उसे न लेकर अपना आशीर्वाद एवं अन्तिम आदेश यह दिया– 'भारत की अविद्या का नाश करो, पाखण्ड का खण्डन करो, वैदिक धर्म का प्रचार करो।' गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामी दयानन्द निकल पड़े ओर सम्पूर्ण जीवन गुरु की आज्ञा के पालन में लगा दिया।

संस्कृत भाषा एवं वेदों के महान विद्वान

स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित तथा वेदों के महान ज्ञाता थे। उन्होंने पौराणिक पण्डितों की लीक से हटा कर वेदों का सही भाष्य कर उपरोक्त अमूल्य ईश्वरीय ज्ञान जिस प्रकार मानव जाति के समक्ष रखा, उसके लिए मानव जाति सदैव उनकी कृतज्ञ रहेगी।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के सम्बन्ध में उनके विचार तथा महत्वपूर्ण रचनायें

प्रारम्भ में स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रचार एवं प्रवचन की भाषा सरल एवं सुबोध संस्कृत भाषा थी। परन्तु सारे देश के भ्रमण तथा बंगाल के सुप्रसिद्ध ब्रह्मसमाजी नेता केशवचन्द्र से मिलने के बाद उन्होंने अनुभव किया कि 'इस देश की जनसाधारण की भाषा केवल हिन्दी है।' इस विचार से प्रेरित होकर ही उन्होने गुजराती भाषा-भाषी होते हुए हिन्दी को आर्यभाषा की संज्ञा देकर उसे अपने प्रचार की भाषा बनाया, अपने सभी ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे। उनका सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' है, जिसने अपने नाम के अनुरूप सारे विश्व में सत्य एवं ज्ञान का प्रकाश किया। उनके अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि वचनामृतम्

[संकलनकर्त्री–सावित्री देवी वेदाचार्या, एम० ए०]

युग प्रवर्तक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचारार्थ विविध विषयों पर अपने महत्वपूर्ण विचार व्याख्यानों अथवा ग्रन्थों के माध्यम से प्रकट कर महान लोकोपकार किया है। ऋषिवर को इस पावन महाबोधरात्रि (शिवरात्रि) के शुभावसर पर वे आर्य वाव प्रसून जनता जनार्दन के कल्याणार्थ सादर सप्रेम समर्पित हैं–

१–आर्यावर्त–यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिये इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि के आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना है कि जिसको लोहारूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। [स० प्र० ११ समु०]

२–अवतार–जो मनुष्य अनेक ईश्वर या ,उसके अवतार मानता है वह सबसे बड़ा मूढ़ है, (ऋ० १–७–१०)

युक्ति से परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता क्योंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक, अनन्त और सुख दुःख दृश्यादि गुणरहित है वह एक छोटे से वीर्य, गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है ? आता जाता वह है जो कि एक देशीय हो और जो अचल अदृश्य है और जिसके बिना एक परमाणु भी खाली नहीं है उसका अवतार कहना जानो बन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन की बात करना है। (स० प्र० ११ समुल्लास)

३–आर्य–दस्यु–जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी सत्य विद्या आदि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं उनको आर्य कहते हैं। (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

आर्य नाम धार्मिक विद्वान आप्त पुरुषों का है और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट अधार्मिक और अविद्वान है।

४–आर्यसमाज–इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देशानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा–जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं। (सप्र० ११समु०)

५–ईश्वर भक्ति–विद्या तथा धर्म के मार्गों का प्रचार करते हुये सब लोग ईश्वर की भक्ति में परायण हो के सदा सुखी रहें।

(यजु० ८–२३)

जैसे कि अत्यन्तोत्तम गुणयुक्त पति की सेवा में तत्पर पतिव्रता नारी रात–दिन तन, मन, धन और अति प्रेम से अनुकूल रहती है वैसे प्रेम प्रीतियुक्त होकर आओ भाई लोगो ! ईश्वर की भक्ति करें और मिल के परमात्मा से परम सुख लाभ उठावें। (आर्या भि०)

६–एक धर्म–सब मनुष्यों के एक धर्मादि के बिना आत्माओं से मित्रता नहीं होती और मित्रता के बिना निरन्तर सुख भी नहीं हो सकता। (यजु० १२–५८)

७–ऋतुचर्या–जो मनुष्य सब ऋतुओं में समय के अनुसार आहार-विहार युक्त होके विद्या, योगाभ्यास और सत्संगों का अच्छे प्रकार से सेवन करते हैं वे सब ऋतुओं में सुख भोगते हैं और इनको कोई चोर आदि पीड़ा नहीं दे सकता। (यजु० १०–१४)

८–प्रातः जागरण–जो मनुष्य रात्रि के चौथे प्रहर में जागकर शयन पर्यन्त व्यर्थ समय को नहीं जाने देते वे ही सुखी होते हैं अन्य नहीं। (ऋ० १–११–३६)

९–प्रार्थना–जब–जब परमेश्वर की प्रार्थना करनी योग्य हो तब-तब अपने लिये वा औरों के लिए समस्त शास्त्र के विज्ञान से युक्त उत्तम बुद्धि ही मांगनी चाहिये जिसके पाने पर समस्त सुखों के साधनों को जीव प्राप्त होते हैं। (यजु० २२–१२)

१०–बाल–विवाह–जो कोई युवावस्था में विवाह न कराके बाल्यावस्था में अनिच्छित, अयोग्य वर कन्या का विवाह करावेंगे वे वेदोक्त ईश्वराज्ञा के विरोधी होकर महादुःख सागर में क्यों न डूबेंगे ?

(संस्कार विधि)

पुत्र और पुत्रियों का छोटी आयु में विवाह करना बहुत बुरा है। सन्तान के परित्राण के लिए इस कुरीति को अपने में सदा के लिये निकाल दो। (श्री० द० प्र०)

११–ब्रह्मचर्य–विद्वान लोगों को चाहिये कि इस जगत में दो कर्म निरन्तर करें। प्रथम ब्रह्मचर्य और जितेन्द्रियता आदि की शिक्षा से शरीर को रोगरहित, बल से युक्त पूर्णावस्था वाला करें दूसरे विद्या और क्रिया की कुशलता के ग्रहण से आत्मा का बल से युक्त हुये सब काल में आनन्द भोगें। (यजु० ११–३५)

१२–जितना हिंसा और चोरी, विश्वासघात, छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य है और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है।

(स० प्र० दशम० समु०)

१३–योग–जिस की वृत्तियों को सब बुराइयों से हटाके शुभ गुणों में स्थिर करके परमेश्वर के समीप में मोक्ष को प्राप्त करने को योग कहते हैं। (ऋ० भा० भू०)

१४–विद्या–जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य ज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है उसका नाम विद्या है। (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

१५–सती प्रथा–सती होने के लिए वेद की आज्ञा नहीं है किन्तु सती होने की कुरीति पहले पहल पाण्डु राजा के समय से चली।

(उ० मञ्जरी)

१६–संस्कृत भाषा–ईश्वर में जैसा अनन्त आनन्द है उसी तरह संस्कृत भाषा में भी अनन्त आनन्द है। कहो कि इस भाषा के सदृश मृदु मधुर और व्यापक सर्वभाषाओं की माता अन्य कौन सी भाषा है?

(उ० मञ्जरी)

*

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

(शेष पेज ५ से आगे)

यजुर्वेद भाष्य, ऋग्वेद भाष्य (७ मण्डल तक), ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कृत वाक्य प्रबोध, व्यवहारभानु, वेदविरुद्धमतखंडन, शिक्षापत्री-ध्वान्त-निवारण, भ्रमोच्छेदन, भ्रांतिनिवारण, वेदान्तिध्वान्त निवारण, सत्य-धर्म विचार, आर्योद्देश्य रत्नमाला, गोकरुणानिधि, वेदांग प्रकाश (१४ भागों में), अष्टाध्यायी भाष्य, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश तथा काशी शास्त्रार्थ है ।

सबसे महत्वपूर्ण स्मारक

स्वामी दयानन्द सरस्वती का सबसे महत्वपूर्ण स्मारक आर्य समाज संस्था है जिसकी स्थापना उन्होने सन १८७५ ई० में बम्बई में कांग्रेस की स्थापना के दस वर्ष पूर्व की थी । आर्य समाज ने जिस प्रकार वेदों एवं संस्कृत भाषाके प्रचार, ढोंग आडम्बर, छुआछूत, ऊंच-नीच एवं मिथ्या विश्वासों के समाप्त करने, राष्ट्रीयता के प्रचार तथा देश को स्वाधीन कराने में महत्वपूर्ण योगदान किया, स्वामी जी के इस महत्वपूर्ण कार्य एवं उनकी दूरदर्शिता का मूल्यांकन किया जा सकता है । स्वामी श्रद्धानन्द, लालालाजपतराय तथा रामप्रसाद बिस्मिल आदि स्वाधीनता सेनानी आर्य समाज के ही देन थे ।

स्वदेशी भावना के पोषक

स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वदेशी भावना के प्रबल पोषक थे । उनका विचार था कि "अच्छे से अच्छे विदेशी शासन से बुरा से बुरा स्वदेशी शासन बेहतर होता है ।" वे राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी तथा खादी के स्वदेशी वस्त्रों के प्रयोग के हिमायती थे ।

स्वामी जी के विचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप के प्रतिपादक थे । वे वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सभी विद्याओं का आदि मूल मानते थे । वे मूर्तिपूजा के विरोधी तथा निराकार परमात्मा के उपासक थे । संसार का उपकार करना एक श्रेष्ठ कार्य मानते है । सभी गृहस्थो के लिए पंच यज्ञों का करना आवश्यक मानते थे । कर्म से जाति तथा चारों आश्रमों के सिद्धान्त के समर्थक थे । वे सुखी जीवन को स्वर्ग तथा दुःखी जीवन को नरक मानते थे । मृतश्राद्ध को अवैदिक मानते थे । वे अवतारवाद के विरोधी थे परन्तु राम एवं कृष्ण को श्रेष्ठ पुरुष मानते थे । उनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे प्रस्तुत उनके विचार मानवमात्र के लिए कल्याणकारी एवं अनुकरणीय हैं । वे ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानते थे । उनका विचार था कि "जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु सुख व दुःख भोगने में पराधीन है ।"

जीव के कल्याण का मार्ग स्वामी जी ने उसे बताया

धुनिया नामक एक व्यक्ति बड़े चाव एवं श्रद्धा से स्वामी दयानन्द के उपदेश सुना करता था । वह अनपढ़ था । एक दिन उसने विनम्रता-पूर्वक स्वामी जी से कहा कि "महाराज ! क्या ऐसी कोई विधि भी है जिससे मुझ ऐसे अनपढ़ व्यक्ति का कल्याण हो ? स्वामी जी ने उसे नित्यप्रति "ओ३म्" का जप करने तथा व्यवहार में सच्चाई एवं ईमानदारी से काम करने की सलाह दी ।

निस्सन्देह स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्य, दया, क्षमा, कर्मठता, ब्रह्मचर्य, सहिष्णुता, निर्भीकता एवं वीरता आदि गुणों के भंडार थे । उन्होंने आजीवन देश के कोने-कोने में घूमकर जो ज्ञान की ज्योति जलाई तथा देश के उत्थान के लिये अनेकों कष्टों को सहकर अनेक कार्य किये, उसी का परिणाम है कि आज हमारा देश स्वतन्त्र है एवं ऐकता के सूत्र में आबद्ध है । परन्तु वर्तमान स्थिति मे जिस प्रकार से देश का नैतिक पतन तेजी से हो रहा है, राष्ट्रवाद की भावना कमजोर पड़ रही है, व्यावहारिक रूप में हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा नहीं बन पा रही है, अतीत के प्रति हमारा गौरवभाव लुप्त हो रहा है, मूर्तिपूजा, व्यक्तिपूजा, ढोंग, आडम्बर तथा मिथ्या विश्वास जोर पकड़ रहे हैं, आवश्यकता है कि उनके विचारों एवं कार्यक्रमों के प्रचार एवं प्रसार की ओर समुचित ध्यान दिया जाये क्योंकि उनसे ही उपरोक्त स्थिति का निराकरण संभव है । ऋषि-बोध-उत्सव के इस महान पर्व के अवसर पर हम स्वामी जी के महान, प्रेरणादायक एवं जनोपयोगी विचारों को घर-घर तथा जन-जन तक पहुंचाने का व्रत लें । यही उस महामानव के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी ।

बाल जगत

न्याय

[उमेशकुमार विश्वकर्मा बी. काम. युवराजदत्त महा विद्यालय, लखीमपुर-खीरी]

[आजकल बहुत सी भ्रांतियां फैली हुई हैं। कहीं कहते हैं ईश्वर न्याय करने के लिए आता है लेकिन ऐसा नहीं वह बिना शरीर धारण किये हुए ही न्याय कैसे कर लेता है। प्रस्तुत नाटक में देखिए]

पात्र–परिचय

१–राम—एक गरीब युवक। डा०–श्याम
२–घनश्याम—राम का मित्र। स्टेशन मास्टर
३–राजू — राम का पुत्र।
४–कमला — राजू की मां (राम की पत्नी)
५–दीनदयाल–घनश्याम का पिता।
६–कान्ती—घनश्याम की मां।

प्रथम-अंक

स्थान–रामपुर
समय–सायंकाल
ऋतु–वर्षा ऋतु

[बरसात के दिन हैं। राम अपने परिवार सहित अपनी टूटी–फूटी झोंपड़ी में बैठा हुआ है। उसके दिन बहुत गरीबी में कट रहे हैं।]

कमला–कल आप कहां काम के लिये जायेंगे ?
राम –कल, कल तो कहीं नहीं जाना है।
कमला–क्यों ? कल काम नहीं करोगे तो क्या खाओगे ?
(बीच में ही, घनश्याम का प्रवेश)
घनश्याम–क्या बात कर रहे हो भाई।
राम–कुछ नहीं भाई ऐसे ही ?
घनश्याम–कल आप कहां जायेंगे ?
राम–कल हम कहीं नहीं जायेंगे ?
घनश्याम–तो कल हमारे साथ रामनगर चलना।
राम–ठीक है चलेंगे।

[दूसरे दिन प्रातः दोनों रामनगर जाते हैं और काम करके लौटते समय आपस में विचार करते हैं।]

राम–अब भाई इतने पैसे में काम नहीं चलता है।
घनश्याम–तो भाई कोई दूसरा धन्धा करना चाहिये।
राम–तो फिर चलो दिल्ली चलें और वहीं कोई धन्धा करेंगे।
घनश्याम–तो ठीक है। सोमवार को दिल्ली चलेंगे।

[वार्ता समाप्त होती है। सूर्य अस्त हो जाता है। दोनों अपने–अपने घर चले जाते हैं।]

द्वितीय-अंक

[सोमवार को दोनों रामनगर रेलवे स्टेशन पहुंचते हैं।]

राम–भाई किसी से पूछो कितने समय गाड़ी आयेगी।
घनश्याम–अच्छा स्टेशन मास्टर से पूछकर आता हूं।
राम–जाओ, जल्दी आओ।
घनश्याम–बाबू जी रेल कितने समय आयेगी।
स्टेशन मास्टर–२ बजकर ४५ मिनट पर।

[घनश्याम पूछकर आता है और बताता है कि २ बजकर ४५ मिनट पर रेल आयेगी। इतने में गाड़ी आ जाती है और दोनों बैठते हैं। कुछ समय पश्चात् दिल्ली पहुंचते हैं। वहां एक दुकान पर दोनों नौकरी करते हैं।]

राम–भाई अब तो ऐसा किया जाय कि कोई दुकान खोली जाय।
घनश्याम–हां ठीक है। अब कोई दुकान करें।
[दोनों कपड़े की दुकान करते हैं।]
राम–भाई अब घर से आये बहुत दिन हो गये तो घर को चलना चाहिये।
घनश्याम–बात तो ठीक है। ऐसा ही किया जाय।

तृतीय-अंक

[घर जाने के विचार से दोनों रेलवे स्टेशन दिल्ली पहुंचते हैं। ट्रेन आती है और दोनों बैठते हैं, चलते हैं। राम का मन कपट से भर जाता है। वह घनश्याम को मारकर उसका पैसा लेना चाहता है। ईश कृपा से उसकी इच्छा पूर्ण हुई। महराज नगर स्टेशन पर गाड़ी रुकती है।]

घनश्याम–क्यों ? कौन सा स्टेशन है।
राम–महराजनगर।
घनश्याम–भाई भूख बढ़ रही है। कुछ खाने के लिए लाओ।
राम–अच्छा लाता हूं।

[राम के मन में पहले से ही विश्वासघात था और उसे मौका भी मिल गया वह २ गिलास शर्बत लाता है। एक गिलास में उसने जहर मिला दिया। लेकर आता है और जहर वाला गिलास घनश्याम को देता है। दोनों पीते हैं। गाड़ी चलती है। आगे जहर अपना प्रभाव दिखाता है।]

घनश्याम–भाई कितनी दूर है रामनगर।
राम–थोड़ी दूर है क्या बात है ?
घनश्याम–मेरे पीड़ा हो रही है।
राम–यहां कोई इलाज का साधन नहीं है। रामनगर में इलाज करायेंगे।

[कुछ समय बाद पीड़ा बढ़ती है और उसकी मृत्यु हो जाती है। तब तक रामनगर भी आ जाता है। राम उसका शव छोड़कर चला जाता है और सोचता है कि घनश्याम के घर में कुछ पैसा दे देना चाहिये ताकि मुझ पर कोई इल्जाम न आये। घनश्याम के घर जाता है।]

स्थान–घनश्याम का घर

दीनदयाल–घनश्याम की मां।
कान्ती–क्या है ?
दीनदयाल–आओ यहीं बैठो।
कान्ती–आती हूं।

दीनदयाल–देखो बहुत दिन हुये अपना बेटा नहीं आया और न ही उसने कोई पत्र भेजा।

(राम का प्रवेश)

राम–बाबा जी नमस्ते।

दीनदयाल–नमस्ते बेटा नमस्ते।

राम–और सब ठीक है बाबा जी।

दीनदयाल–हां ठीक है।

राम–(१०००० रु० निकालते हुये) लो बाबा जी ए रुपये।

राम–(आँसू बहाकर) उनकी ... ...हो गयी।

दीनदयाल–उसकी ... ... क्या मृत्यु हो गयी।

राम–हाँ बाबा।

(रुपये के मद में आकर उसके माता पिता ने कोई छानबीन नहीं की राम अपने घर चला जाता है।)

चतुर्थ-अंक

["हम पुलिस और सरकार को धोखा दे सकते हैं। लेकिन उस सर्व शक्तिमान सर्वव्यापक परमेश्वर को नहीं जो सकल जगत मे विद्यमान है।"]

[राम अब उस पैसे के द्वारा उस क्षेत्र का लखपति आदमी बन जाता है कुछ समय बाद उसके एक तेजस्वरूप पुत्र उत्पन्न होता है। बच्चे का नाम राजू रखा जाता है और शहनाई बजती है। बालक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ता जाता है। उसे पढ़ने के लिये भेजा जाता है। कुछ दिन बाद वह पढ़ लिखकर विवाह लायक हो जाता है।]

[वह परमेश्वर सबको कर्म के अनुसार ही फल प्रदान करता है अब जगत पिता अपनी माया शुरू करते हैं। बालक विवाह के ५ दिन पूर्व बीमार पड़ जाता है। डा० को बुलाया जाता है।]

राम–मेरा बच्चा बहुत बीमार है। डा० साहब चलो देखो।

डा० श्याम–चलते हैं।

राम–चलो।

डा० श्याम–इसकी तो हालत बहुत खराब है। इसे कलकत्ता ले जाओ।

राम–क्यों डा० साहब ?

डा० श्याम–मेरे समझ में नहीं आता है। मै इसे नहीं ठीक कर सकता हू।

[डा० की आज्ञानुसार वे कलकत्ता जाते हैं और वहां भी डा० साहब जवाब दे देते हैं और कहते हैं कि इसे लन्दन ले जाओ नहीं तो बचेगा नहीं।]

अकेला पुत्र होने के कारण वे लन्दन ले जाते हैं। वहां भी डा० ने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए सलाह दी कि इसे अमेरिका ले जाओ। अब राम अमेरिका जाता है। वहां भी कोई लाभ नहीं होता है। इस प्रकार अब समस्त धन भी समाप्त हो जाता है इसलिये अब वह हताश होकर घर लौट आता है।

पंचम–अंक

[राम अपने पुत्र को लेकर घर आता है और बहुत उदास हो जाता है। आधी रात्रि का समय है। अब अपनी झोपड़ी में बैठा है। (मकान इलाज में बिक चुका है। झोपड़ी ही पहले वाली रह गई) उसके निकट उसका प्राण प्यारा राजू बिस्तर पर पड़ा है। पड़ोस में ही एक छोटी सी लैम्प जल रही है। राम अपने पुत्र की चिन्ता में दुर्बल हो गया है।]

[आधी रात्रि का समय है। सहसा राजू आंखें खोलता है। राजू की आँखें खुली देखकर राम प्रसन्न चित्त हो जाता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है।

ऋषिवर्य्य

[आर्य लेखकानामग्रे निवेदनमेतत्–संस्कृत भाषायामपि रचनाः प्रकाशिताः भविष्यन्ति–प्रेषयन्तु–प्रबन्ध सम्पादकः]

[आचार्य मुंशीराम शर्मा 'सोम', कानपुर]

कथि कीर्तनीया ते कथा, ऋषिवर्य वेदोद्धारिणी।
वसति स्म यस्यां यज्ञ संस्था पाप तापापहारिणी ॥ १

यज्ञाय वै श्रेष्ठाय पावन कर्मणे वयमागताः।
प्रभु पूजनं मिलनं मनुष्यैः त्यागदाने ऽप्युक्तता. ॥२

तस्यार्थ तेजो जीवने दीप्येत हविषा संयुतम्।
हविरस्तु वह्निः तं विना सार्थम् न मे हव्यं हुतम् ॥

ईडे ऽहमग्निं वेद मंत्राण्यास्वरैः संदीपितम्।
स्वाहा स्वधा वाचा वषट् कारेण यज्ञे बोधितम् ॥४

ऋषिणा दयानन्देन यज्ञानां तु पंचानां विधिः।
लिखितो विधेय प्रतिदिनं मत्वा प्रदत्तोऽयंनिधिः ॥५

वेदोहि चक्षुः दृष्टिदं शास्त्रं प्रमाणं शाश्वतम्।
तस्मात्परं किंचिन्नविज्ञानं न वा ज्ञानं मतम् ॥६

दिव्या हि वाणी वैदिकी नित्या सनातन कपिणी।
विश्वे प्रवृत्ति – निवृत्ति – दात्री सामधुरमधुर्वषिणी ॥ ७

हिन्दी भविष्यति राष्ट्रभाषा भारते स्वाधीनता।
स्वप्नोऽभवत्ते सार्थकोमध्दा समस्ता दीनता ॥८

चारित्र्य मित्रे किं गतं हृदये धनेप्सा संप्रथा।
प्रभुता च लोलुपता बिलिप्सा लुप्तमध्यात्मं तथा ॥९

चित्त विलोक्येदं दहति बहु दूयतेमम मानसम्।
वृद्धि गता च महर्घता धर्मिष्ठता धूषिता भृशम् ॥१०

बुद्धिं प्रदेहि सुपावनीं चारित्र्यमेतु च चारुताम्।
आदर्शमर्षिते प्राप्नुयाम प्रमातु मेधा मञ्जुताम् ॥११

'हे जगत पालक प्रभो तेरी लीला अपार है। तू क्षण में बनाने वाला एवं क्षण में बिगाड़ने वाला है। तेरी महिमा अपार है। पता नहीं मै कहाँ–कहाँ मारा–मारा फिरा सब पैसा खाक हो गया और कोई लाभ भी नहीं हुआ लेकिन आज तेरी कृपा से मेरे पुत्र ने स्वतः आँखें खोल दी हैं। तेरा लाख–लाख धन्यवाद है। हे मेरे प्रभो।'

राजू के कान में यह आवाज पड़ी (मेरे पुत्र) वह राम की तरफ आंख निकालते हुये बोला–'रे दुष्ट मै तेरा पुत्र नहीं मै वही हूं जिसको तूने ट्रेन में जहर देकर मार दिया था और सब पैसा ले लिया था। मै अपना पैसा वसूल करने आया था और अब मेरा पैसा खत्म हो चुका है। अब मैं जाता हूं' यह कहकर वह सदैव के लिए आँखें बन्द कर लेता है। राम यह देखकर दंग रह जाता है।

उपरोक्त एकांकी में हम देखते हैं कि परमेश्वर अपना न्याय कैसे करता है। उसका न्याय ऐसे ही होता रहता है। उसका कहीं दरबार नहीं लगा है। कोई जज नहीं है। कवि के शब्दो मे–

जल और वायु अग्नि का लेता नहीं किराया है।
सर्दी गर्मी और वर्षा का सुन्दर चक्र चलाया है ॥
कहीं सिपहे सालार नहीं, लगा कहीं दरबार नहीं।
कर्मों का फल देय सभी को रिश्वत की सरकार नहीं ॥
परम पिता से प्यार नहीं, तो ॥

डा० सत्यकेतु विद्यालङ्कार सम्मानित

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरकिशन लाल कपूर ने १८ दिस० को हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित वर्ष ८५–८६ के सम्मान अर्पण समारोह में आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान डा० सत्यकेतु विद्यालङ्कार को हिन्दी की विशिष्ट सेवा के लिए ११ हजार रुपये, शाल, स्मृति-चिन्ह तथा प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया।

उत्सव

(१)

आर्य समाज मेंहदावल (बस्ती) का वार्षिक उत्सव २१ से २५ फरवरी तक ससमारोह मनाया जावेगा। इसमें अनेक विद्वान उपदेशक प्रचारक पधार रहे हैं।

(२)

बिहार प्रदेश के मुंगेर जिले के अन्तर्गत टीकारामपुर धोतास महतो आर्य समाज का १४ वां वार्षिकोत्सव २२ से २५ जनवरी तक ससमारोह मनाया गया।

श्री सीताराम गोयल की गिरफ्तारी की निन्दा

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ ने श्री सीताराम गोयल वायस आफ इन्डिया नईदिल्ली को एक पुस्तक "अन्डर स्टैन्डिंग इस्लाम थ्रू हदीस" का हिन्दी अनुवाद करने पर पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने का घोर विरोध करते हुए इसे संविधान प्रदत्त स्वतन्त्रता पर घोर कुठाराघात बताया है। उपसभा ने शासन से अनुरोध किया है कि विचार स्वातन्त्र्य को मान्यता देकर लेखकों के मन में व्याप्त भय को दूर करें।

शोक समाचार

हमें निम्न आर्य पुरुषों के दुःखद निधन का समाचार मिला है। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं पारिवारिक-जनों के धैर्यधारण हेतु प्रार्थना है।

—आर्य समाज शाहजहांपुर के भूतपूर्व प्रधान प्रतिभाशाली विद्वान, सामवेदी डा० ताराशङ्कर जी 'राकेश' का मधुमेह रोग के कारण निधन हो गया।

—: राष्ट्र देवो भव :—

श्रद्धास्पद सम्माननीय श्री पं० मनमोहन जी तिवारी, प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ की सेवा में

-० स्वागत् शुभ कामना-पत्र ०-

कर रहे अविराम गति से आप जन सेवा निडर।
आपका शत्बार स्वागत् देश के नेता प्रवर॥

अनुभवी चिन्तक मनीषी धर्मनिष्ठ प्रवीर हो तुम,
कर्मयोगी देश भक्त प्रशान्त चित्त सुधीर हो तुम।
गूंजती मानस भवन में ओजस्वी वाणी तुम्हारी,
बात उद्बोधक मधुर करते श्रवण प्राणी तुम्हारी।

छा रही असमानता से तुम चले करने समर।
आपका शत्बार स्वागत् धार्मिक नेता प्रवर॥

राष्ट्र के प्रहरी सजग रहते सदा गतिमान हो तुम,
आर्य (हिन्दू) जातिके नेता महा मतिमान हो तुम।
मार्ग दर्शन संकटों में देश का तुमने किया है,
लोक सेवा का कठिन व्रत आपने अपना लिया है।

हे अभय नर श्रेष्ठ तुमको प्राप्त है प्रतिभा प्रवर।
आपका शत्बार स्वागत् देश के नेता प्रवर॥

राजनीति विडम्बनाओं से विषमता आ रही है,
कालिमा जनतन्त्रके पावन क्षितिज पर छा रही है।
थामना तुम ओम को पावन पताका झुक न जाये,
दलित उत्पीड़ितजनों की गति प्रगति को रुक न जाये।

भव्य युग निर्माण को अब बांधलो कसकर कमर।
आपका शत्बार स्वागत् धार्मिक नेता प्रवर॥

ऋषि प्रणीत विचार धारा पर सदा चलते रहो तुम,
लोक मंगल के हवन की हव्य बन जलते रहो तुम।
आपका मिलता रहे चिरकाल तक नेतृत्व हमको,
शब्द श्रद्धा के सुमन करते समर्पित आज तुमको।

देश सेवा आपकी इतिहास में होगी अमर।
आपका शतबार स्वागत देश के नेता प्रवर॥

—सत्यव्रत सोहम सिद्धान्त शास्त्री मन्त्री
आर्य समाज कुहरी मैनपुरी उ० प्र०

आर्य समाज विद्यामन्दिर किरावली (आगरा) का स्थापना दिवस

दिनांक १३ जनवरी को श्री शांति स्वरूप श्रीवास्तव प्रबन्धक की अध्यक्षता में आर्य समाज विद्यामन्दिर विद्यालय किरावली आगरा का २५वां स्थापना दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त जिला सभाओं/समाजों के मन्त्री तथा प्रधान महोदय की सेवा में सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, प्रदेश की समस्त जिला उपप्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की एक नवीनतम संशोधित विवरण पत्रिका, जिसमें सभी वांछित सूचनाएं उपलब्ध रहेगीं, प्रकाशित करने जा रही है।

अतः कृपया निम्न प्रारूप में अपनी-अपनी जिला सभाओं तथा आर्य समाजों से सम्बन्धित विवरण पूर्ण रूप से भर कर मुझे दो प्रतियों में शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

प्रारूप

१-जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा/ आर्य समाज
का नाम एवं कार्यालय का पूरा पता......................
(यदि टेलीफोन हो तो उसका नम्बर)

२-समस्त सभासदों की संख्या..... ... .
(सहायक सदस्य / आर्य सभासद)

३-वर्ष १९८८ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के
नाम एवं उनके आवासीय पते

(यदि घर पर फोन हो तो उसका नम्बर)......................

४-क्या जिला सभा मुख्यालय/ में आर्य समाज
में आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभा स्थापित है.........

५-यदि हां ? तो कबसे तथा क्या
उसमें नियमित शाखायें लगती हैं।............

नोट---यह विवरण पत्रिका आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहदधि-वेशन के अवसर पर समाजों के प्रतिनिधियों को लिखित आवेदन पर दे दी जायेगी। एक प्रति का मूल्य ५) रु० दशांश के साथ ही भेजना अनिवार्य होगा। सभा मन्त्री

आर्य समाज, चेम्बूर, बम्बई का उत्सव

दि० २५, २६, २७ दिसम्बर ८७ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। नगर कीर्तन के अतिरिक्त महिला सम्मेलन श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालङ्कृता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमे नारी जागरण के लिए अभियान की तीव्रता बनी। श्रद्धानन्द बलिदान समारोह बम्बई प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विविध वक्ताओं में प्रमुख श्री पं० सत्यकाम जी विद्यालङ्कार, डा० सोमदेव जी, श्री रामप्रसाद जी वेदालङ्कार उपकुलपति गु० कु० कांगड़ी हरिद्वार महात्मा आर्य भिक्षु जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी अमृतसरी रहे।

वेदकथा

आर्य समाज नगरा, झांसी में वेद कथा एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन दिनांक १४-२-से २१-२-८८ तक हुआ। श्री ओंकार मित्र "प्रणव" शास्त्री के प्रवचनों का जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

सूचना

वर्ष, १९८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अतः वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महो-पदेशकों, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना-अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को १५ मार्च, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

श्रीवैद्य कुन्दनलाल जी आर्य, वैद्यवाचस्पति का सम्मान

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ में दिनांक ६ दिस० १९८७ को आयोजित "आर्य युवा सम्मेलन" में आर्य समाज के प्रति की गई सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में श्री वैद्य कुन्दनलाल जी का भावभीना स्वागत किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पं० हरि-वंशलाल मेहता ने उन्हें एक शाल २५१ रुपये तथा मानपत्र से विभू-षित किया।

वैद्य जी का जन्म ४ अप्रैल १९०८ को स्यालकोट (पंजाब) में हुआ था। आपने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उपदेशक विद्यालय लाहौर में कई वर्ष रहकर वैदिक सिद्धान्तों का गहन अनु-शीलन किया। भारत विभाजन के पश्चात आप लखनऊ आ गये और आयुर्वेदिक औषध निर्माणशाला लखनऊ में सहायक प्रबन्धक के पद पर रहकर सेवानिवृत्त हो गये। आप ऐसे महामानव हैं जिनका जीवन जन सेवा में "अहर्निशं सेवामहे" के रूप में समर्पित है। आर्य समाज आपको सम्मानित करके स्वयं गौरवान्वित हुआ है।

आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० आपके दीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करते हुए अभिनन्दन करती है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३१/३/८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

लखनऊ में त्रिदिवसीय संस्कृत महासम्मेलन

देववाणी संस्कृत भाषा की सुरक्षा एवं उसे सम्माननीय पद दिलाए जाने हेतु लखनऊ में आगामी अप्रैल की ९, १० तथा ११ तिथियों में अखिल भारतीय संस्कृत महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश के प्रमुख संस्कृत विद्वान सम्मिलित होंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे।

...ताब्दी समारोह को स्थायी स्मारक हेतु

आवश्यक सूचना

...आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं विभिन्न संस्थाओं को ... हर्ष ... कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, ... आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न ... प्रतियोगिताएं ... सम्मेलनों के ... सम्मिलित हैं, एक विशेष रूप से ... शताब्दी ... पर ... कैसेट के ... शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों, विद्वानों, ... आदि के महत्वपूर्ण ... एवं ... सम्मेलनों ... समारोह में ... और ... सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। ... ग्रहण करना चाहते हैं वह श्री विश्वम्भरनाथ गुप्ता, ... ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में सम्पर्क स्थापित ... अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ ऑ० वा० सी० कैसेट —	मूल्य	१०००.० रु०
सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के १ कैसेट	मूल्य	...
सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—		२०.०० रु०
कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		...० रु०

बड़ी फोटो भी आर्डर देकर अलग से बनाई जा सकती हैं।)

... ने शताब्दी समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार ... लिए उन्हें २८, २९ तथा ३० अक्टूबर के ... सभा ... से ... प्रमाण ... पुस्तक ... से लिए जा सकते हैं।

आर्यसमाज व ... तथा ... शताब्दी समारोह को स्थायी ... बनाने ... प्रचार तथा ... आर्य संस्थाओं ... प्रचार कार्य में ... सहायक होंगे।

(... संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा)

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सम्पादकीय

(पृष्ठ १ का शेष)

क्या हो सकता है जबकि विश्व के सभी राजनीतिज्ञों, सुधारकों ... इतिहासकारों आदि ने यह एक मत से स्वीकार किया है कि आजादी की लड़ाई में लड़ने वाले व्यक्तियों / संस्थाओं में ८० प्रतिशत से अधिक ... विचारधारा के थे और उन्हें आजादी की प्रेरणा आर्य समाज से प्राप्त हुई थी। स्वराज्य का सर्वप्रथम मूलमन्त्र देने वाले हमारे ऋषिवर ही थे जिन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य का आह्वान किया था। तुच्छ लोकप्रियता का आवरण पहनकर खुश होने वाले, अपनी संस्कृति को भुलाकर ... का गुणगान करने वाले, आत्मविस्मृत व्यक्ति इस समाज से ... हुए हैं। ... के लिए उन्होंने क्या-क्या न किया— ... है। आर्य समाज को ऐसों की लेखनी से ... नहीं ... का सूर्य हमेशा प्रकाशित हुआ है और होगा। इतिहास ... को सच्चे अर्थों में रखेगा ... हम ... तथा सत्यप्रिय मानव का आह्वान करते हैं ... साम्प्रदायिकता को बढ़ाने वाली ... को दूर ... के माध्यम से ... के लिए बन्द कर देने के हमारे अभियान ...।

ऋषि बोधोत्सव पर लखनऊ में शोभा यात्रा

ऋषि बोधोत्सव (महाशिव रात्रि) के पावन पर्व पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में नगर की समस्त आर्य समाजों ने एक विशाल शोभा यात्रा निकाली जिसमें ... जनता, ... मोटर ... ट्रक आदि थे। यह यात्रा ... नगर दयानन्द गुरुकुल से प्रारम्भ होकर ... होते हुई ... समाज में समाप्त हुई जहाँ अनेकों विद्वान ... गणमान्य व्यक्तियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण की तथा उनके बताए रास्ते पर चलने का ... किया।

सभा मन्त्री

प्रसिद्ध कवियों की मधुर वाणी

लखनऊ में १२ नवम्बर १९८७ को हुए कवि सम्मेलन में ... विमल ..., श्री० ... सिंह ..., कु० ... , ... आर्य ..., श्री ... तथा सभा के ... की ... रिकार्डिंग में एक साथ सुनिये। १ कैसेट (प्रति कैसेट ६० मिनट के) ... ६० रु० में प्राप्त करें और कवियों की ... काव्य धारा का रसास्वादन लें।

... तिवारी
सभा मन्त्री

... आर्य प्रतिनिधि सभा ... के लिए ... ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए ... (...) ... लखनऊ में श्री विश्वम्भरनाथ गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र स. ७।२४-१-८५

फाल्गुन शुक्ल ११, रविवार, सवत् २०४४ वि०, दिनांक २८ फरवरी १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सहायक सम्पादक—

दण्डदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

४१

९०

आर्यसमाज बलरामपुर (गोंडा) के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर—

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की घोषणा

दिनांक २२ फरवरी—बलरामपुर (गोण्डा) में एक विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी अध्यक्ष, भगवावेश धारी स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपनी ओजस्वी वाणी मे जनता को सचेत करते हुए कहा—'भारत का रहने वाला प्रत्येक भारतवासी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान सिक्ख हो या ईसाई भारतीय राष्ट्र का अभिन्न अंग है। हमारी और उनकी रगों मे एक ही पूर्वजों का खून है। आज प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि वह आपसी मतभेदों और झगड़ों को भूलकर इस विशाल भारत राष्ट्र को विश्व की महानतम शक्ति के रूप में उभरने में मदद करे। हमने कतिपय तथाकथित मुस्लिम लीगी नेताओं के हठ के कारण तथा अंग्रेजों की कूटनीति के दबाव मे आकर राष्ट्र का विभाजन स्वीकार किया था। हम सदा से "प्रेम से जियो और जीने दो" सिद्धान्त के पक्षधर रहे हैं।। इस देश मे हमेशा से भिन्न-भिन्न उपासना पद्धतियां एवं विभिन्न विचार धाराएं जन्म लेती रही हैं परन्तु राष्ट्र सदैव एक एवं अखण्ड रहा है। आज कुछ विदेशी ताकतें हमारे इस प्रिय राष्ट्र को कमजोर करने का कुचक्र रच रही हैं। सीमा पार से जो खबरें आ रही हैं वे बड़ी चिन्ताजनक हैं—बड़े-बड़े घातक अस्त्रों के अम्बार इकट्ठे किये जा रहे हैं भारत के विरुद्ध उस भूखण्ड पर रहने वाली शान्तिप्रिय जनता के मस्तिष्क को विषाक्त बनाया जा रहा है—यह सब किसलिए" ?

गरजती हुई आवाज मे "भारत माता की जय" के गूंजते हुए गगन भेदी नारों के बीच स्वामी जी ने पुन चेतावनी देते हुए घोषणा की—यदि पाकिस्तान ने हमारे देश पर इस बार हमला करने की पुन भूल की तो मैं ससार को स्पष्ट बता देना चाहता हू कि इस देश का रहने वाला प्रत्येक भारतीय चाहे वह किसी विचारधारा को मानने वाला हो, एक अजेय राष्ट्रपुरुष के रूप मे खड़ा होकर दुश्मन का नामोनिशान दुनियां से मिटा देगा। फिर तो शक्ति का मुकाबला शक्ति से ही होगा। यही वेद कहता है और यही आर्यसमाज का "यथायोग्य व्यवहार" है।

बलरामपुर आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आर्यों का यह विशाल सम्मेलन, बलरामपुर के इतिहास मे अभूतपूर्व ही कहा जायेगा। स्वामी जी का तथा उनके साथ दिल्ली से पधारे हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री का गोण्डा जनपद में जगह-जगह भावभीना स्वागत किया गया। तरुणाई के प्रतीक श्री शास्त्री ने अपने ओजस्वी एवं सारगर्भित भाषण में जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि—आर्यसमाज राष्ट्रीय सकट की घड़ी में कभी पीछे नहीं रहा है। राष्ट्र हमारी माता है इसकी रक्षा के लिए प्रत्येक आर्य को कटिबद्ध होकर सदैव सन्नद्ध रहना है।

इस सम्मेलन के आयोजकों में जनपदीय जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के कर्मठ मन्त्री श्री बलराम गोविन्द, बलरामपुर आर्यसमाज के युवामन्त्री श्री मानन्द उपमन्यु तथा अन्य पदाधिकारियों एवं स्थानीय जनता का सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा। इस अवसर पर पूर्वांञ्चलक्षेत्र मे वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनायें स्वीकृत हुई हैं। एक "धर्म रक्षा अभियान समिति" का भी गठन हुआ है। क्षेत्रीय जनता मे वैदिक धर्म के प्रति नवचेतना का सचार हुआ है।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने सम्मेलन की सफलता हेतु अपनी शुभ कामनायें प्रेषित कीं। सम्मेलन का सचालन श्री बलराम गोविन्द, अधीक्षक विधिक एवं भूसम्पत्ति विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने किया।

जो आंख नीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—फाल्गुन शुक्ल ११ सम्वत् २०४४ रविवार २८ फरवरी १९८८ दयानन्दाब्द
१६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

मेरा रङ्ग दे बसन्ती चोला—

बासन्ती नवशस्येष्टि यज्ञ

(होलिका)

वसन्त इन्नु रन्त्यो, ग्रीष्म इन्नु रन्त्य ।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्त ., शिशिर इन्नु रन्तय ।

साम० ६।४।२

प्रभु की इस करुणा भरी सृष्टि मे सभी ऋतुए रमणीय हो, प्रेम और शान्ति की वर्षा करने वाली हो।

उस चराचर परब्रह्म के नियमानुसार हमारी इस पवित्र भूमि पर पृथ्वी की गति के साथ ही ऋतुओं का आवागमन होता रहता है। प्रत्येक ऋतु अपना सन्देश लेकर आती है और मानव को समृद्धियो के उपहार बांटती हुई एक सन्देश देकर चली जाती है। आर्यों के जीवन मे भी "बसन्त" ऋतु का एक सन्देश है। यह एक रमणीय पर्व तो है ही, नई—नई कोमल किसलिया फूट पड़ती हैं पुराने पतझड (वैमनस्य के रूखे सूखे विचार) झड़कर गिर जाते हैं। चारो ओर नवीन मादकता वातावरण मे छा जाती है। नया प्राणदायक अन्न हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। कलह की अग्नि मे द्वेष भस्मीभूत होकर प्रेम और मिलन की वेला गले मे गलबहियां डालकर झूम उठती है। एक ही पथ के पथिक फिर एक साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने लगते हैं। "यद्भूत तद् भूतम्' बीती ताहि बिसारि दे का उद्घोष करके हम आर्य लोग उसी निर्मल और प्रेम से लबालब भरे हुए हृदय को लेकर दुनिया मे प्रेम और शान्ति की पताकाए लेकर निकल पड़ते हैं। सगच्छध्वम् सवदध्वम् हमारी गति एक है, हमारी बोली एक है हमारे मन और हृदय एक हैं। हमने नव सस्येष्टि यज्ञ किया है कलह की कलुषित विचार धारा भस्मीभूत हो चुकी है प्रेम की सुगन्धि का मादकतामय वातावरण चारों दिशाओ मे फैल रहा है। हमारी तो बात ही क्या, हम तो मानवमात्र को प्रेम के रङ्ग में सराबोर करने जा रहे हैं। यह है इस ऋतु का होली का सन्देश, आदेश, उपदेश।

इस बसन्त को बहार कहा जाता है। आर्यो का इतिहास इस ऋतु के सम्बन्ध मे तीन दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा है। नये अन्न को अग्नि मे समर्पित किया, पावन यज्ञ वेदी पर बैठकर प्रभु के आदेशो का मनन किया, मानवमात्र को प्रेम और मिलन की मधुरिम दिया और कलह को मधुमय बना दिया।

पहिले दृष्टिकोण में वे लोग हैं जो काम क्रोध लोभ मोह आदि आसुरी वृत्तियों के शिकार हैं। सदियो के रूप में किन्ही निहित स्वार्थो ने उन्हें जकड़ रखा है। वे इस ऋतु की प्रतीक्षा तो करते हैं और आने पर ऊपरी शिष्टाचारवश वह सब भी करते हैं जो आर्य किया करते थे। वे नये अन्न का यज्ञ, सामूहिक मिलन आदि परन्तु गाडी फिर उसी बेढंगे रास्ते पर चलने लगती है और इस ऋतु का उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता न जीवन मे कोई सुधार आता है। दूसरे दृष्टिकोण मे वे लोग हैं जो फसल की आशा मे इस ऋतु की प्रतीक्षा करते हैं धन-धान्य से लहलहाती फसल को देखकर झूम उठते हैं तिजोरियां और खलिहान भर लेते हैं। प्रसन्नता का तो पारावार ही नहीं पर आगे जमाखोरी, चोर बाजारी महगाई, अभाव आदि की बीमारियां समाज मे फैला कर स्वय भी ग्रस्त होते है समाज को भी ग्रसित कर देते हैं। इस ऋतु का उन्हें भी कोई लाभ नहीं मिलता। तीसरे दृष्टिकोण मे वे लोग हैं जो बड़ी आशा और बेसब्री से जीवन मे इस ऋतु के आने की बाट जोहते हैं। कब वह ऋतु आवे और मैं तीनो ईषणाओ (लोकेषणा, पुत्रैषणा, वित्तैषणा) को छोड़कर, मेरे प्रभु ? तेरे बासन्तीय परिधान पहिन लूं और निकल पड़ू ससार को बासन्ती रङ्ग में सराबोर करने के लिए। ऐसी शक्ति देना, सारे ससार को "बसन्तिका" का उपवन बना दूं बहारो की दुनिया बसाकर गले से गले को मिला दूं यही तो तूने बसन्त के माध्यम से मुझे सन्देश भिजवाया था। प्रतीक्षा करते—करते चौथापन आ गया।

आज हमारे राष्ट्र के जीवन मे एक प्रधान मन्त्री पजाब समस्या का समाधान भाग्य पर छोड देता है इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना और क्या हो सकती है। जब पढ़े लिखे राष्ट्र के अग्रदूत ही भाग्य का भरोसा लेकर समस्याओं का समाधान करने लगेंगे तो हो चुका राष्ट्र कल्याण। फिर तो ज्योतिषियो से पूछ कर सेना को बढने के लिये कहा जायेगा तब तक आग अपना काम कर चुकेगी सब कुछ भस्म हो चुका होगा इसलिये हम आर्यों को इतिहास की वह गलतियां फिर नहीं दुहरानी है। वेद हमे भाग्यवादी नहीं कर्मवादी पुरुषार्थी बनाने का आह्वान करता है। कृत मे दक्षिण हस्ते जयो में सव्य आहित।

हर ऋतु हमे कर्मशील, पुरुषार्थशील भाग्य के आधीन नहीं अपितु भाग्य का निर्माण करने वाला बनाने के लिए आती है। बासन्ती होलिका का यह स्वरूप हम आर्यों के जीवन मे पुन प्रकट हो मिलन के गीत गाती हुई इस आर्यो की टोली विश्व कल्याण के मङ्गलमय पथ पर चलने मे अधिक गतिशील हो—इसी आशा के साथ आर्यमित्र की बधाई एव शुभकामनाए।

छुट्टी की सूचना

होलिकोत्सव के उपलक्ष्य मे प्रेस में अवकाश होने के कारण 'आर्यमित्र' का अगला अङ्क १३ मार्च १९८८ को प्रकाशित होगा।

—प्रबन्ध सम्पादक

केन्द्र और परिधि

[आचार्य मुंशीराम शर्मा 'सोम', कानपुर]

व्यक्ति और ब्रह्माण्ड दोनों मे केन्द्र और परिधि व्याप्त हैं। केन्द्र एक है जिससे अनेक बिन्दु चलकर परिधि का विस्तार करते हैं और फिर वही समरेखा में लौटकर केन्द्र में लीन हो जाते हैं। व्यक्ति और ब्रह्माण्ड दोनों के भीतर यह चक्र चल रहा है। विदित और अविदित ज्ञात और अज्ञात, वाच्य तथा अनिर्वाच्य, दृश्य तथा अदृश्य, भव्य एवं अभव्य, मन तथा बुद्धि से गम्य एवं अगम्य यहाँ बहुत कुछ है, परन्तु केन्द्र में एकत्व है। हम सबकी गति का लक्ष्य यही एकमात्र केन्द्र है।

वैदिक वर्णमाला में १६ स्वर और ३६ व्यंजन हैं, परन्तु अक्षर ओ३म् सबके केन्द्र मे है। एक अक्षर मूलतः पाद तथा मात्राओं से ...र है जिन्हें अ उ म की संज्ञायें प्राप्त हैं। कण्ठ से चलकर ओष्ठ तक ये मुख रूपी आकाश में व्याप्त हैं। आकाश शब्द प्रधान है। वैदिक ऋषियों ने इस विज्ञान को उपलब्ध किया था। वैदिक वर्णमाला का क्रम स्वर तथा व्यंजनों में विशुद्ध वैज्ञानिक है। भीतर से बाहर, कण्ठ से ओष्ठ अथवा आकाश से पृथिवी तक यह क्रमशः समरेखा में चलकर परिधि का निर्माण करता है जो बाहर के देशों में प्रचलित वर्णमालाओं में दिखलाई नहीं देता। अ से आ जिस क्रम में चला है, वह क्रम अलिफ से बे या ए से बी में दृष्टिगोचर नहीं होता।

अ उ म की व्याख्या एक ओर भूः भुवः और स्वः कर रहे हैं, दूसरी ओर अग्नि, वायु और आदित्य कर रहे हैं, तीसरी ओर ऋक्, यजु, साम या रथन्तर, वामदेव्य एवं बृहत् और फिर स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर कर रहे हैं। इन्हीं मे एक के ऊपर एक, भूः से सत्य तक सात परिधियां भी बनी हैं जो तीन गुणों की न्यूनाधिकता के कारण २१ रूप धारण कर लेती हैं। इन सात मे महत अहंकार तथा पंचतन्मात्राओं की गणना भी की जाती है। तीन ज्योतियाँ तथा षोडश कलाओं का वर्णन भी मिलता है। कलाओ मे एकादश इन्द्रिया तथा पाँच महाभूत आते हैं। गीता न इन्हें क्षेत्र की संज्ञा देकर संख्या ३१ कर दी है। देव ३३ हैं–८ वसु+११ रुद्र+१२ आदित्य+इन्द्र और प्रजापति। यही ३३० भी हो जाते हैं।

केन्द्र का परिधि रूप से यह विस्तार विचित्र है जिसे वेद उसी चित्र रूप प्रभु की विशेषता या रचना कहता है–चित्र इत् राजा राजा-का इत् अन्यके! क्या ...आभुवश्रुतो। त्व वा चित्र दाशुषे। सविता चित्र चितयन्तमस्मे चित्र क्षत्र चित्र तमं वयोधाः। महान् अर्क मघवन् चित्र मर्च। आदि। रचना मे यह चित्र एक ओर सृष्टि है तो दूसरी ओर श्रुति। एक गृह या सत्ता है तो दूसरा चिति या ऋत। एक वास है तो दूसरा वास का ज्ञान। अंग्रेजी मे एक (एक्जिस्टेन्स) है तो दूसरा (ला एण्ड आर्डर)।

जो केन्द्र स्वयं चित्र है, उसी से चित्र रूप परिधि का निर्माण हुआ है। रचयिता ही रचना में रमण कर रहा है। 'प्रजापतिः प्रजयास-रराणः त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी।' अतः यह भी कहा गया है कि 'यस्मान्न जातः परोऽन्योऽस्ति तर्वाय आवमुवमुवमानिविश्वा' अथवा प्रजापते न त्वदेतान्यन्योविश्वाजातानि परिता बभूव। इस विचित्र लीला का कोई पार नहीं है। सूर्य आदि का प्रकाश तथा चक्षु–मन आदि की शक्तियाँ वहाँ तक पहुंच नहीं सकतीं। जो कुछ हम कहते हैं या लिखते हैं, उससे वह कहीं विशिष्ट अन्य या अधिक है।

पुरुष सूक्त में सात परिधियों और इक्कीस समिधाओं का उल्लेख है। उसके पहिले ऋतुओं में बसन्त को घी, ग्रीष्म को ईंधन तथा शरद को हवि का रूप दिया गया है, परन्तु केन्द्र सर्वत्र यज्ञ रूप पुरुष ही है। यज्ञ द्वारा ही इस यज्ञ रूप वा यजनीय पुरुष का यजन या अर्चन किया जाता है। जिसने जीवन को यज्ञमय नहीं बनाया, वह केन्द्र रूप यज्ञ पुरुष को प्राप्त नहीं कर सकता। परिधि में तो हम सब घूम ही रहे हैं और घूमते ही रहेंगे, कर्म विपाक वश नाना योनियों में जन्म धारण करेंगे। यह चक्र परिभ्रमण होता ही रहेगा। अन्त तो तभी होगा जब हम इस बहुत्व को छोड़कर एकत्व का वरण करें। यह एकत्व केन्द्र के अतिरिक्त और कहीं नहीं है।

केन्द्र एक है, परन्तु परिधि से वहां तक पहुंचने के लिए प्रत्येक बिन्दु का अपना–अपना पथ है, जो सीधा जाता है। यदि वक्र हो गया तो दूसरों के मार्ग से टकरायगा और अपना भी अहित सिद्ध करेगा। यह सीधा पथ यजन का है, पूजा–संगतिकरण और दान का है। इसमें टकराव नहीं, मेल है, कार्पण्य नहीं, त्याग शीलता है और अपमान या निन्दा का भाव नहीं, मान–सत्कार–अर्चन–पूजन का विधान है।

वेद कहता है–समेतं विश्वे वचसा पतिं दिवः एकोविभूः अतिथिर्जनानाम्। स पूर्व्यो नूतनमाविवासत् तं वर्तनिः अनुवावृत् एक मित् पुरु॥
–अथर्व ७–२१–१

इकट्ठे हो जाओ, वचन द्वारा, द्यावा–पति का पूजन करो। वह एक है, विभु है, सर्वत्र व्याप्त है और हम सब जनों का अतिथि है, पूज्य है। वह पूर्व्य, पहिले ही विद्यमान है और प्रत्येक नवीन रूप से पैदा होने वाले में बसा हुआ है, उनकी सेवा कर रहा है। वह एक है, परन्तु इस तक पहुंचने के लिए मार्ग अनेक हैं। केन्द्र एक है, परन्तु परिधि में बिन्दु अनेक हैं, जो अपने-अपने मार्ग से ही इसके पास पहुंचते हैं।

द्यावा–पति कहने का अर्थ है! क्या वह पृथिवी का पति नहीं है? है, वह सबका पति है। द्यावा पति कहने का अर्थ है कि आपको वहां पहुंचना है, वहाँ वहां एक मात्र स्वामी है–अन्य कोई नहीं। यहां, जहाँ हम इकट्ठे होकर उसकी पूजा कर रहे हैं, हमारे माता–पिता–ज्येष्ठ–ग्रामपति–राष्ट्रपति आदि अनेक स्वामी है, परन्तु वहाँ अकेला वही है–वही पिता माता आदि सब कुछ है।

ऊपर सात परिधियों का नाम आया है, इन्हें सात धाम भी कहा जाता है। तीन पदों या लोकों के नाम भी आते हैं। ये बाहर भी हैं और शरीर के भीतर भी। संध्या करते हुए हम सब इनका स्मरण करते हैं। स्थूल से सूक्ष्म होते हुए ये क्रमशः जैसे बाहर है वैसे ही अन्दर हैं, प्रकाश की मात्रा उत् से उत्तर और उत्तम होती गई है। प्रकाश के स्तर हम मानवों में भी दिखाई देते हैं। यहां सब व्यास, काण्ट या आइनस्टाइन नहीं हैं। पर प्रयत्न सबका इस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए होना चाहिये। द्यावा का प्रकाश सूर्य द्वारा प्रकट होरहा है। हमारा गायत्री मन्त्र इसे सविता का वरेण्य भर्ग कहता है। यह वरणीय है। हमारी बुद्धियां इसी की ओर प्रेरित हों। यह सविता सौर मण्डल का केन्द्र है। ऐसे सौर मण्डल अनेक हैं और उनका अपना सविता केन्द्र है। इन सविताओं का भी जो सविता है, परम केन्द्र है, वही एक है, विभु है और हम सबका पूज्य अतिथि है। सूर्य अनेक हैं वह एक है। शरीर में जैसे ज्योति केन्द्र अनेक हैं, परन्तु आत्म तत्व एक है, वैसे ही सप्त धामों की ज्योतियों की ज्योति एक है। वही पूजनीय है। समेत=मिल कर बैठ जाओ, सब बन्धु उसी एक का अर्चन–वन्दन करने के लिए वचनों द्वारा स्तुति गान गाओ वह भक्ति पद्धति सबकी अपनी–अपनी होते हुए भी उसी एक की उपलब्धि कराती है। ☆

हनुमान का वास्तविक स्वरूप

[श्री ज्येष्ठ वर्मन, बम्बई]

वाल्मीकि रामायण में किष्किन्धा काण्ड में हमें हनुमान का प्रथम दर्शन होता है। वह सुग्रीव का अनुचर, मन्त्री था। जब सुग्रीव को यह पता चला कि दो धनुर्धारी वीर क्षत्रिय युवक मुनिवेश में सुग्रीव के निवास स्थान के आस-पास घूम रहे हैं, तब उसको सन्देह और भय हुआ। क्योंकि उसका अनुमान था कि शायद ये बाली द्वारा अपने को और अपने साथियों को समाप्त करने के लिए भेजे गये हों। इसीलिये सुग्रीव ने अपने मन्त्रियों की एक बैठक बुलाई। हनुमान उन मन्त्रियों में से एक था।

ततः स सचिवेभ्यस्तु सुग्रीवः प्लवगाधिपः।
शशंस परमोद्विग्नोपश्यंस्तौ रामलक्ष्मणौ॥
(किष्किंधा काण्ड सर्ग २, श्लोक २)

आजकल सरकारी प्रशासनिक कार्यालयों में कार्य करने के लिये जैसे आई० ए० एस० की योग्यता आवश्यक मानी जाती है, पुराने समय में मन्त्री बनने के लिए कुछ विशेष योग्यता आवश्यक मानी जाती थी। उन दिनों मन्त्री उसी को बनाते थे जो सब प्रकार के शास्त्रों को जानने वाला था, जो शूर-वीर था, अपने लक्ष्य को अच्छी तरह जानने वाला था और उत्तम कुल में उत्पन्न व्यक्ति था। ऐसे ही सात या आठ व्यक्तियों को अच्छी तरह परीक्षा करके मन्त्री पद में नियुक्त किया जाता था।

मौलान् शास्त्रविदः शूरान् लब्धलक्षान् कुलोद्गतान्।
सचिवान् सप्तं चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥
(मनुस्मृति ७ । ५४)

आज हमारे राष्ट्र का पतन इसलिये हुआ है कि हम मन्त्री के लिये किसी भी योग्यता की आवश्यकता नहीं समझते। पहले ऐसी बात नहीं थी। हनुमान में ये सारे उत्तम गुण थे। इसीलिए उसको मन्त्री बनाया गया था। सुग्रीव ने अपने मन्त्रियों से सलाह करके, उन मन्त्रियों में से एक हनुमान को उन दो अज्ञात मुनिवेशधारी क्षत्रिय वीरों के पास दूत के रूप में भेजने का निश्चय किया। क्योंकि हनुमान के पास एक श्रेष्ठ दूत के भी सारे लक्षण थे। वह सर्वशास्त्रविशारद, सामने वाले की बोल, उसकी चाल, और उसकी हर प्रकार की चेष्टा को समझनेवाला, शुद्ध पवित्र मन वाला, कार्यदक्ष सुन्दर, निष्ठावान, निर्भीक और अच्छा वाग्मी था।

अब प्रश्न उठता है कि क्या ऐसा वीर पराक्रमी, सुन्दर, वाग्मी और श्रेष्ठ विद्वान् कोई बन्दर हो सकता है? बन्दरों के मुख की रचना इस प्रकार के शुद्ध और सुन्दर वर्णोच्चारण के योग्य कदापि नहीं होती। उनके मस्तिष्क भी इतने विकसित नहीं होते। वे सुन्दर भी नहीं हो सकते।

लंका में जाने के बाद इन्द्रजित के साथ काफी देर तक हनुमान का युद्ध होता है। जब वे दोनों वीर मल्लयुद्ध में लगे हुए थे पता नहीं लगता था कि कौन हनुमान था और कौन इन्द्रजित था। यदि हनुमान का रूप रंग बन्दर का होता, तो ऐसा अभेदाभास नहीं हो सकता था। इन्द्रजित भी मनुष्य था हनुमान भी मनुष्य था।

हनुमतो वेद न राक्षसोऽन्तरम्।
न मारुतिस्तस्य महात्मनोऽन्तरम्॥
(सुन्दर काण्ड, श्लोक ३२, श्लोक ६)

अब दुबारा प्रश्न उठता है कि यदि हनुमान मनुष्य था, तो उसको वानर अथवा कपि क्यों कहते थे? रामायण में ही अनेकों स्थानों पर हनुमान और उसके समाज के लोगों को वानर और कपि कहा गया है। इसी प्रकार बन्दर अर्थ वाले प्लवंग आदि शब्द भी उनके लिए प्रयुक्त पाये जाते हैं।

इसके यहां तीन कारण दिखाई देते हैं। एक कारण यह था कि इनका परिधान अथवा वेशभूषा बन्दरों का सा था। इसी कारण, हनुमान जब सीता के सामने गये तब कपिरूप को छोड़कर भिक्षु रूप को धारण करके गये।

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान मारुतात्मजः।
भिक्षुरूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः॥
(किष्किंधा काण्ड, सर्ग २, श्लोक ११)

दूसरा कारण यह था कि इस जाति के लोग बड़े सरल स्वभाव के थे, किन्तु साथ में बड़े चपल बुद्धि के भी थे। जाम्बवान् अंगद को एक बार याद दिलाया था कि ये अस्थिर बुद्धि के लोग जब अपने पुत्र और स्त्रियों को याद करेंगे, तब उसकी भी आज्ञा को नहीं मानेंगे।

नित्यमस्थिरचित्ताहि हरिपुंगव।
नाज्ञाप्यं विषहिष्यंति पुत्रदारान विना त्वया॥
(किष्किंधा काण्ड, सर्ग ३७, श्लोक ७)

इस प्रकार कपि जाति में पायी जाने वाली स्वाभाविक चंचलता इस जाति के लोगों में अन्यों की अपेक्षा कुछ अधिक मात्रा में पायी जाने के कारण भी उनको कपि, वानर आदि नाम प्रसिद्ध हुए होंगे, और यह भी हो सकता है कि बन्दरों के समान वृक्षों पर चढ़ने, ऊंचे और लम्बे छलांग लगाने में ये बड़े निपुण थे।

तीसरा कारण यह भी था कि महर्षि ब्रह्मा के मानस पुत्रों में पुलस्त्य भी एक थे। पुलस्त्य भी ऋषि थे।

ब्रह्मणो मानस पुत्रः विदितः षण्महर्षयः।
मरीचि रत्र्यंगिरसो पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः॥
(महाभारत, आदिपर्व)

इन ऋषियों को पितर भी कहते थे।

मनोर्हैरण्यगर्भस्यमरीच्यादयः सुताः।
तेषामृषीणां सर्वेषां पुत्राः पितृगणाः स्मृताः॥
(मनुस्मृति ३ । १९४)

इन पितरों से देव, मानवादि संतान की उत्पत्ति हुई है। पुलस्त्य से वानरऔर किन्नर जाति के लोग उत्पन्न हुए। ये सारे मनुष्य ही थे। लेकिन इनकी अपनी-अपनी आनुवंशिक विशेषता थी। मरीच के पुत्र कश्यप थे। कश्यप को कद्रू से नागवंश की उत्पत्ति हुई थी। नागवंश के लोगों की अपनी विशिष्ट आनुवंशिक परम्परा थी। उन लोगों में प्रतिशोध की भावना अधिक क्षमा की भावना का अभाव था। इसी प्रकार वानरों में सरलता, चपलता इत्यादि विशिष्ट आनुवंशिक गुण थे। आज तिब्बती लोग भी अपने को वानर वंशज बताते हैं।

[शेष पृष्ठ १० पर]

बोध अर्थात् विवेक

[स्वा० ब्रह्मानन्द वेदभिक्षु आर्यसमाज गुन्नौर (बदायूं)]

विश्व में अनेक महान व्यक्तियों को बोध हुआ और उन्होंने उस प्राप्त बोध से यथाशक्ति मानव जाति का कल्याण ही किया। बुद्ध, शंकर, न्यूटन और जेम्स आदि कई महान व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपनी असाधारण मेधा द्वारा विशेष विवेक प्राप्त करके ख्याति पाई है।

बुद्ध का बोध मृत्यु और जीव मात्र पर दया के रूप में प्रकट हुआ और उन्होंने वैदिक धर्म में आई विकृतता पर प्रहार किया। शंकर के बोध ने गुरु के टपकते अश्रुओं से उनके हृदय की पीड़ा को समझा और वास्तविकता पर प्रहार करके वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना का प्रयत्न किया। न्यूटन ने पेड़ से फल गिरता देखकर, पृथ्वी में आकर्षण शक्ति का सिद्धान्त दिया और जेम्सवाट ने चूल्हे पर रखी देगची के ढक्कन को खट-खटाते देखकर भाप की शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करके-वाष्प शक्ति के सिद्धान्त पर रेल इन्जन का निर्माण करके संसार में यातायात में एक क्रान्ति पैदा कर दी। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने समय के प्रत्येक महान पुरुष ने किसी न किसी क्षेत्र में बोध प्राप्त करके मानवों को प्रगतिमान होने का सन्देश दिया है। संसार के इन महानुभावों का बोध एकाकी ही था। वह देश काल की सीमाओं में बंधा ही रह गया। काल की द्रुतगति के साथ उन्हें लोग भुलाने लगे हैं। उनका यह बोध मात्र पुस्तकों तक ही सीमित सा हो गया है। उसका मूल्यांकन इने-गिने विद्वत्जन ही कर पाते हैं।

अठारहवीं सदी के अन्त तथा उन्नीसवीं सदी के आरम्भ काल में विश्व अज्ञान के अन्धकार से निकलने के लिए अनेकानेक प्रयत्नों में लगा था। वैज्ञानिक शोध तथा विस्तारवादी मानवता के शत्रु अपने-अपने क्षेत्रों में दिन-रात पांव फैला रहे थे। ईश्वर के नाम पर चतुर (समाज शोषक) पुरोहितवाद मानव समाज को और भी अज्ञान-अन्धकार की ओर ले जाकर अपना उल्लू सीधा करने में जुटा हुआ था। ईश्वर और धर्म के नाम पर यह सब कुछ कुकर्म देखकर (वेदों से अनभिज्ञ) बुद्धिवादी समाज घृणा करने लगा था। ऐसे समय में विश्व की सबसे महत्वपूर्ण (अब सुलझी) पहेली का पूर्ण बोध-बालक मूलशंकर (बाद में महर्षि दयानन्द) को मन्दिर के एक कोने में बैठे-बैठे (शीत भरी मध्य रात्रि में) सन् १८३७ ई० में हुआ था। यह पहेली ईश्वर और धर्म का यथार्थ स्वरूप था, जिस पर बाद के अपने प्रचार काल में महर्षि स्वामी दयानन्द ने विशद प्रकाश डालकर दुःखी जन समुदाय को ज्ञान प्रभा से सत्य बोध कराया। कोई माने या न माने आज जगत में ऋषिराज दयानन्द का बोध ही प्रभावान हो रहा है। जो कुछ भी उन्होंने एक सदी से भी पूर्व चिन्तन किया था, आज का सभ्य समाज उस पर आगे बढ़ रहा है। बोध पर्व पर हम सब उस ऋषि के ऋण से उऋण होने का सत्संकल्प करें और अब आइए निम्न वेद मन्त्र का भी मनोयोग पूर्वक अध्ययन करें।

मन्त्र-ओ३म् उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥
-ऋग्वेद, १०-७१-४

पदार्थ-उत त्वः=और कोई-कोई तो,—

पश्यन्=देखते हुए भी, न ददर्श=नहीं देखता है, वाचम् उत=वाणी को और, त्वः=कोई-कोई, शृण्वन्=सुनते हुए भी, न-शृणोति=नहीं सुनता है, एनाम्=इसको।
उत-त्वस्मै=किसी-किसी को-(तुम में से) प्रभु स्वयं, तन्वम्=अपने-अनन्त विस्तार को, विसस्रे=दिखला देता है, (कैसे) जाया+इव=पत्नी के समान, पत्य=पति के लिए, उशती=कामना वाली, सुवासाः=उत्तम-परिधान धारे हुए।

चिन्तन-सुन्दर, सु-व्यवस्थित, आश्चर्य जनक ब्रह्माण्ड रचना और मानव तथा जीव-जन्तुओं की वैज्ञानिक रचना को देखकर भी कई भोगवादी-नास्तिक उस परमेश्वर को नहीं समझते हैं।

अनन्त आकाश में टिम-टिमाते नक्षत्र, शीतल चांदनी छिटकाता चन्द्रमा और तेज पुंज सूर्य यह सब जगत निर्माता प्रभु के कार्य ही तो है, जिनमें कर्ता का प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है। 'विष्णोः कर्माणि पश्यत' ईश्वर के कर्मों को देखो। लेकिन सभी तो देख ही नहीं पाते हैं। 'सदा पश्यन्ति सूरयः' योगी जन ही उसे हमेशा उसके कर्मों में देखते हैं और ज्ञान ज्योति से समाधि में जाकर हृदय में अनुभव करते हैं।

वेदों की पावन ऋचाओं का संगीत, चिड़ियों की चहक में और हृदय की धड़कन में उस महेश्वर का संगीत गूंजता रहता है। उसे भी विरले ही सुनते हैं, सब नहीं। वाणी का प्रयोग भी प्राणिमात्र करते हैं, लेकिन उसका सार्थक प्रयोग तो प्रभु भक्त ही करते हैं, परमात्मा रहस्य है, उस रहस्यमय को जानने के लिए स्वयं को रहस्य बनाना पड़ता है। तब ईश्वर की विद्या का प्रकाश या वेद माता का शाश्वत विज्ञान भक्त (योगी पर) प्रकाशित हो जाता है। जैसे व्रत चारिणी सुनारि अपने पति के पास सु-निवेदित होती है। आदित्य ब्रह्मचारी देव दयानन्द की तपस्या के प्रताप से तथा प्रारब्ध के पुण्य उदय पर वेद विद्या का उत्तम बोध उन्हें हुआ। उस पवित्र बोध ने विश्व भर के जन समाज का अमित कल्याण किया है।

दो मुस्लिम लड़कियां बचाई गयी

कानपुर-केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान तथा प्रख्यात महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य के सत्प्रयत्नों से दो मुस्लिम लड़कियां असामाजिक तत्वों से मुक्त कराई गयी।

इनमें एक १८ वर्षीय कु० किमी उर्फ कमला (ग्वालियर) की रहने वाली है। हिन्दू माता पिता के निधन के बाद उसकी बड़ी बहन ने एक मुस्लिम से विवाह कर लिया था। किमी भी उसके साथ रहती थी। घर से झगड़ा होने पर वह कानपुर भाग आयी थी। तब उसको असामाजिक तत्वों से श्री आर्य ने मुक्त कराकर घर भिजवा दिया। परन्तु घर वालों ने उसे स्वीकार नहीं किया, तब पुनः उसको श्री देवीदास आर्य के पास भेज दिया।

दूसरी लड़की लखनऊ निवासिनी ना जनीन १४ वर्ष की है। उसको अनाथ देख कर कार द्वारा अपहरण किया गया था। उसको भी किसी प्रकार श्री आर्य ने मुक्त कराया। गोविन्दनगर पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद एक निःसन्तान हिन्दू महिला के सुपुर्द कर दिया जिसने उसको गोद ले लिया। ना जनीन ने भी सहर्ष स्वीकार किया।

ऋषि बोधरात्रि–स्व बोधरात्रि

[श्री रमेशचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष आ० स० बरहा बाजार (बहराइच)

ओ३म् यां मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।

कितनी सुन्दर है अपने प्रभु से प्रार्थना मेधा बुद्धि के लिए। ऐसी मेधा बुद्धि जो हमें ज्ञान रूपी प्रकाश से मण्डित कर दे। ऐसी ही मेधा थी हमारे महान ब्रह्मचारी प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती की जिनके बोधरात्रि के पर्व को हम शिवरात्रि के दिन मनाते हैं। प्रसंग उस समय का है जब सारा संसार चक्षु विहीन जाग्रत हो सुषुप्त था। तभी गुजरात प्रान्त में शुद्ध शंकर के मूल को ज्ञान रूप में परिणित कर विश्व के आगे रख देने वाला मूलशंकर अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण शैशवावस्था से वृद्धि कर रहा था। जिसने शिवरात्रि का व्रत रखा। परन्तु परमात्मा की असीम कृपा कि उन्होंने व्याप्त घोर पाखण्ड देखकर शिवरात्रि को बोधरात्रि बना दी। साथ ही साथ मूलशंकर की जिज्ञासु प्रवृत्ति उसे स्वामी दयानन्द सरस्वती बनाकर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरवाने में शत प्रतिशत सफल सिद्ध हुई। आज हम सोंचे कि अगर यह शिवरात्रि न आती तो बेचारा मूलशंकर भी उन पाखण्डों में फँसता रहता। परन्तु वैशेषिक बात यह है कि शिवरात्रि के बोधरात्रि हो जाने से हम पाखण्डी धूर्तों द्वारा लूटे एवं ठगे जाने की बहुत बड़ी सीमा तक बच गये। अन्यथा हमारी बातें कभी विचार एवं तर्क प्रधान नहीं हो सकती थी। हमारी भावना क्रान्तिकारी भावना कदापि नहीं हो सकती थी। हम कब्रों, मजारों, पत्थरों, वृक्षों और यहाँ तक कि सड़क पर गड़े पत्थरों को देव मानकर पूजते घूमते। हम भूत प्रेत टोने टोटके आदि अन्धविश्वासों में आ गये होते और इन्हीं में पड़कर अपने स्वजन भाई बन्धु खो चुके होते। हमें आर्यभाषा हिन्दी से किञ्चित प्रेम नहीं होता हम अपने में से क्रान्तिकारी न निकल पाते। हम स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त कर सकते थे क्योंकि स्वराज्य शब्द उन्हीं महर्षि का दिया हुआ है जिनका हम बोधोत्सव मना रहे है। उन महर्षि ने आज यह आर्य समाज न स्थापित किया होता तो विधवायें ठोकर खाती रहतीं। विधवा विवाह कभी न होते। बाल विवाह भी होते रहते। बालविवाह रोकने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ रहा है। सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार आर्य समाज २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने की आज्ञा देकर, २५ वर्ष के बाद ही विवाह की अनुमति देता है। शैक्षिक चरित्र पतन को देखकर आर्य समाज द्वारा स्थान २ पर गुरुकुल खुलवाये जा रहे हैं। सह शिक्षा का विरोध हो रहा है। सती प्रथा आदि को वेद सम्मत कहने वालों को शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी गयी है। स्थान-२ पर आर्यसमाज शाखाओं में स्थापित हो गया है जहाँ दैनिक साप्ताहिक यज्ञ आयोजित कर सत्संग का आयोजन किया जाता है। आर्यवीर दल स्थापित कर दिये गये हैं। बालकों को अस्त्र शस्त्र प्रशिक्षण देने के लिए स्थान-स्थान पर शिविर लगाये जाते हैं। योग, व्यायाम, ब्रह्मचारित्व की शिक्षा देकर चरित्र पतनोन्मुख समाज को विकासोन्मुख बनाया जा रहा है।

हमें चाहिए कि हम क्रोध पूर्वक नहीं अपितु ज्ञानपूर्वक सोचें कि हम जानते हुए भी इन गलत बातों कुप्रथाओं का समर्थन क्यों करते हैं ? क्या हम किसी के अधीन हैं ? नहीं हम स्वतन्त्र हैं हमें किसी सत्य, वेदोक्त कर्म करने में कोई डर नहीं है।

इस विषय को दृष्टिगत में रखकर हमें शिवरात्रि के पावन पर्व को ऋषि की बोधरात्रि के साथ-२ अपनी बोधरात्रि (स्वबोधरात्रि) के रूप में मनाना चाहिए।

तभी हम सब मिलकर संगठित हो सकेंगे, तभी हमारी यह प्रार्थना साकार हो सकेगी।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

अर्थात्–प्रेम से मिलकर चलें, बोलें सभी ज्ञानी बनें।
पूर्वजों की भाँति हम कर्तव्य के मानी बनें॥

और तभी हम एक ऊँची आवाज मे कह सकते हैं जो बोले सो अभय–वैदिक धर्म की जय'

मध्य प्रदेश के अनेक स्थानों में विशाल शुद्धि अभियान

जनवरी तथा फरवरी मास में मध्य प्रदेश के सुदूरवर्ती कई इलाकों यथा ग्राम लोमनोपारा, रामपुर, सुखरापारा, रजपुरी, बरबलगांव, लैलूगां जिला रायगढ़ में उराव जाति के ईसाई बने हुए सैकड़ों व्यक्तियों ने सपरिवार स्वेच्छा से वैदिक (हिन्दू) धर्म को स्वीकार किया। इस शुद्धि अभियान में स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा, प्रधान आर्यसमाज सलखिया श्री उजलोराम श्री मंगलदेव श्री करमदेव एवं मन्त्री श्री सुन्दरलाल आर्य सलखिया आ० स० एवं सर्व श्री भृगुदेव महादेव धर्मसिंह उपदेशक का विशेष सराहनीय योगदान रहा। यह कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री उपमन्यु शास्त्री ने यज्ञोपरान्त सम्पन्न कराया। स्थानीय जनता हजारों की संख्या में उपस्थित थी। इस अवसर पर शुद्ध हुए व्यक्तियों को कम्बल तथा साड़ियां भी वितरित की गयीं।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा, अलीगढ़ द्वारा वैदिक आश्रम, अलीगढ़ के प्रांगण में दिनांक २३ एवं २४ अप्रैल को आर्य महा सम्मेलन समारोह मनाया जा रहा है जिसमें देश के प्रख्यात आर्य नेता एवं विद्वान पधार रहे हैं।

डा० विजयपालसिंह आर्य
मन्त्री

वार्षिक-चित्र

सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जो वार्षिक चित्र सभा कार्यालय से सीधे भेजे जाते रहे हैं, वह जिला सभा को भेज दिये गये हैं। आप अपनी जिला सभा से सम्पर्क करके चित्र प्राप्त करने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

वैदिक वर्ण व्यवस्था

[श्रीमती उर्मिला आर्य, प्रधाना आर्यसमाज, लालबाग, लखनऊ]

वेदों के अनुसार महर्षि दयानन्द के बोध होने के उपलक्ष्य में आर्य जगत ऋषिबोधोत्सव बड़े उत्साह से मनाता आ रहा है। क्यों? क्यों कि महर्षि के बताए सत्य सनातन मानव धर्म वेद मार्ग पर चल कर मानव, मानव बन सके। महर्षि ने जो कुछ भी मान्यतायें प्रतिपादित की, प्रचारित की वह सब वेदों पर आधारित और ऋषि-मुनियों के मनन की परिणाम थीं। इसीलिए ऋषि ने कोई नया मत नहीं खड़ा किया। महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में यह भावना प्रकट की है कि मेरा कोई नया मत चलाने का आशय नहीं। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी जो वेदमत मानते आये हैं वही मेरा मत है।

आज ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग से हम काफी भटक चुके हैं, प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव मना लेते हैं, परन्तु उनके बताये सत्य सनातन वैदिक धर्म पर अब हम नहीं चलते जहां अब फिर धीरे-२ गुरुडम, कुरीतियाँ, अन्धविश्वास पनप रहे हैं वहां वर्ण व्यवस्था फिर से जन्म से प्रचारित हो गई है। शूद्र चाहे कितना पढ़ जाये परन्तु वह शूद्र ही है, क्योंकि उसके लिए अलग से सब स्थानों पर आरक्षण सुरक्षित है। ब्राह्मण नीचे गिरने के भय से मुक्त हो कर प्रमादी हो गया है।

इन सब विकृतियों के आने का मुख्य कारण हमारा ब्राह्मण वर्ग (कर्म से) शिथिल हो गया है। अपने कर्तव्य से विमुख हो गया है।

मेरा आज का विषय वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर है और सब वर्णों में शिरोमणी समाज का मस्तिष्क ब्राह्मण वर्ण है। उसी से विशेष अनुग्रह है कि ब्राह्मण देवता जानो। ऋषि ने हमें बताया था कि भारत की संस्कृति के मूलाधार वेद है, और वेद ईश्वरीय ज्ञान है। आर्यों की यह सत्य मान्यता है।

वेदों में सब प्रकार का ज्ञान विज्ञान परमपिता परमात्मा ने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य के कल्याण के लिए दिया, इस ज्ञान को ग्रहण करने के लिए मनुष्य को बुद्धि दी। इस बुद्धि के कारण मनन करने से मानव, मानव कहलाता है।

मनुष्य अकेला नहीं रह सकता, वह सामाजिक प्राणी है। समाज के साथ उसका अटूट सम्बन्ध रहता है। इस सम्बन्ध का सुचारु रूप से निर्वाह करने के लिए समाज को संगठित और सुव्यवस्थित रखने के लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों का आधार लेकर कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था स्थापित की। चिर काल तक हमारे देश में वैदिक काल में कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था स्थापित की जाती रही।

जो समाज के अज्ञान को दूर करने की क्षमता वाली बुद्धि का स्वामी होता था वह ब्राह्मण वर्ण कहलाया, जो समाज में अन्याय को बाहुबल से परास्त कर सके, वह क्षत्रिय, जो मनुष्य धन से समाज की अभाव पूर्ति करे वह वैश्य कोटि में गिना जाता था। जिसमें तीनों उपरिलिखित कार्य करने की क्षमता न हो, वह तीनोंवर्णों की सेवा सुश्रुषा करता। परन्तु समाज में उसका महत्व तीनों वर्णों से कदापि कम न होता। सेवा कार्य बिना भी समाज लंगड़ा है जैसे पांव बिना शरीर।

महाभारत युद्ध के बाद हमारी संस्कृति में कैसी-२ भ्रान्तियाँ विकृतियां उत्पन्न हुई उनमें वर्ण व्यवस्था भी प्रभावित हुई। वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर नहीं, जन्म के आधार पर मानी जाने लगी। परिणाम स्वरूप जो शूद्र थे उन्हें ऊँचे उठने का अवसर न मिलता और ऊँचे वर्णस्थ नीचे गिरने के भय से मुक्त हो गये और अपने कर्मों में प्रमादी हो गये। फलतः समाज का अज्ञान दूर नहीं होता था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की कृपा से वर्ण व्यवस्था के वास्तविक दृष्टिकोण को पुनः पहचाना गया। वेदों के सत्यार्थप्रकाश होने से वेद रूपी सूर्य से अज्ञान अंधकार के बादल छंट गये। जहां और कुरीतियों का उन्मूलन हुआ वहां वर्ण व्यवस्था में भी सुधार आया।

ब्राह्मण समाज रूपी शरीर का मुख है मुख होने से ही वह मुख कहलाया। क्षत्रिय भुजा है, तो वैश्य समाजरूपी शरीर का उदर है जिसके द्वारा पूरे समाज शरीर का पोषण होता है, शूद्र पांव है जिस पर पूरा शरीर खड़ा है। शरीर के लिए किसी भी अंग की उपयोगिता कम नहीं। यहां मेरा विषय भावों का सम्बन्ध केवल ब्राह्मण है। ब्राह्मण को जागरूक, स्वस्थचिन्तक और सत्यार्थी के रूप में जानना है।

शरीर में यदि भुजाओं में बल, क्षीण हो जाये तो शरीर का निर्वाह फिर भी हो ही जाता है। यह निर्बल प्राणी समाज में भली-भांति समाज का अंग बना ही रहता है। उदर में भी यदि विकार उत्पन्न हो जाय तो औषधियों द्वारा जीवन की गाड़ी चलती रहती है। पांव कट जायें या विकृत हो जायें तो बैसाखी या पहियों वाली कुर्सी द्वारा शरीर का काम चल जाता है।

अब विचार करें यदि किसी का मस्तिष्क ही गड़बड़ा जाता है तो उस शरीरधारी व्यक्ति का परिवार में, समाज में, स्थान नहीं रहता। अधिक विकृति होने पर उसे पागलखाने भेज दिया जाता है। जो महत्व मस्तिष्क का शरीर में है वही महत्व ब्राह्मण का समाज रूपी शरीर मे है।

चाहे हमारा क्षत्रिय वर्ण कुछ निर्बल हो जाये, चाहे वैश्य भी अपने कर्म में कुछ शिथिल हो जाय, शूद्र भी प्रमाद करने लगें, तो समाजरूपी शरीर जैसे-तैसे काम चला लेगा अधिक उन्नति न करेगा तो भी समाप्त भी न हो पावेगा। परन्तु समाज रूपी शरीर का मस्तिष्क (ब्राह्मण) ही शिथिल, विकृत और अस्वस्थ हो जावे तो समाज कहीं का कहीं रहेगा, समाप्त ही हो जायेगा।

आज यह विचारने योग्य विषय है कि हमारे समाज रूपी शरीर का मस्तिष्क ब्राह्मण कहां तक स्वस्थ जागरूक, और चेतन है। परमपिता परमात्मा की कृपा से परम श्रद्धेय महर्षि के भारत में न चेतना जाग्रत करने से ब्राह्मण कुछ जागा, केवल चेतन हुआ, जिससे निष्प्राण समाज में स्फूर्ति उत्पन्न हुई। भारत मां आशावान हुई कि अब मैं आर्य रत्नों को पाकर निहाल हो जाऊंगी। स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम आदि कई ब्राह्मण आर्य रत्न भारत मां की गोद को मिले। परन्तु अब स्वतन्त्रता के ४० वर्ष पश्चात हमारी समाज की बुद्धि का संतुलन डगमगा गया है। निज स्वार्थ और पार्टीबाद से उच्च कोटि ब्राह्मण भी प्रभावित हुए। सत्यासत्य का निर्णय पक्षपात से आच्छादित हुआ। गुरुडम वाद फिर सिर उठा रहा है। समाज के इस रोग का निदान महर्षि दयानन्द ने समझा था, तभी तो वह अपने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में लिखते हैं कि—"यद्यपि आज के बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं उसका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि सिद्धान्तों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर दुख की वृद्धि होती है, इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों का प्रिय है सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबो दिया है।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

ऋषि दयानन्द का स्वराज्य

(धर्मपाल विद्यालङ्कार बदायूं)

सुप्रसिद्ध है कि जब जब सत्यधर्म की हानि होती है तब तब सत्य धर्म की रक्षा के लिये कोई महापुरुष आते है ।

हजारों वर्षो से भारत मे अनाचार व अत्याचार हो रहा था और सत्यधर्म का प्रतिष्ठा नष्ट हो गई थी, ऐसे कठिन समय मे सत्यधर्म की रक्षार्थ ऋषि दयानन्द जैसे अनुपम महानुभाव का आगमन हुआ । हमारे आर्यावर्त्त–भारत देश मे भी गत १०० वर्षो से एकाएक परिवर्तन प्रारम्भ हुआ । यूरोपियन देशो के सम्पर्क से उनकी राजनैतिक प्रणालियाँ, पार्लियामेण्ट, जनतन्त्र प्रणाली आदि व्यवस्था का भारत मे गहरा प्रभाव पड़ने लगा । १८५८ के गदर के बाद रानी विक्टोरिया के शासन मे विदेशी अंग्रेजो का शासन हो गया । इसलिये स्वदेशीय स्वराज्य प्राप्त करने का आन्दोलन होने लगा । स्वराज्य के विषय मे ऋषि दयानन्द का मन्तव्य था कि "विदेशियो का राज्य कितना ही उत्तम हो परन्तु पूर्ण सुखदायक नहीं है" और "आर्यो का आर्यावर्त्त मे अखण्ड स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य नही है ।" सभी आर्य व आर्य समाजें स्वराज्य प्राप्त कराने के आन्दोलन मे सम्मिलित हो गये । अंग्रेजो का राज्य था, सन १९४७ मे अग्रेजो ने अपनी ब्रिटिश पार्लियामेण्ट मे निश्चय किया कि १९४८ से पहले ही भारत को भारत वासियो के हाथमे शासन देकर स्वराज्य दे दिया जाये । जब स्वतन्त्रता दिये जाने का ड्राफ्ट ब्रिटेन के एक प्रमुख व्यक्ति के सामने गया, सब सुनने के बाद उसने कहा कि "जिन्हे आप स्वराज्य दे रहे है । वे शासन करने मे सर्वथा अनुभवहीन, करप्ट (भ्रष्टाचारी) व्यवस्था विरोधी और उपद्रवी हैं स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं जानते ।"

अब तो स्वदेश की मान्यता के अर्थ मे विचित्र परिवर्तन प्रतीत होने लगा है । भारत मे ऐसे भी रहने वाले बहुसख्यक निवासी हैं कि जिनका इस देश से पृथक विदेश मे अपने धर्म, आदर्श व सिद्धान्त व धर्मशास्त्र के अनुसार जीवन निर्वाह होता है तो क्या उन्हे स्वदेशी कहा जाय । ऋषि दयानन्द के लेखानुसार स्वदेश वासियो के हाथ मे शासन व स्वराज्य सत्ता तो आ गई परन्तु अब तो स्वदेशी व विदेशी शब्दो मे कुछ ज्यादा अन्तर प्रतीत नहीं होता ।

यदि देश के अन्दर निवास करने वाले इस देश के लाखो वर्षो की विकास को प्राप्त आदि परम्पराओ व आदर्शो को छोड़कर विदेशो मे प्रतिदिन होते रहने वाले आदर्शो व विचारो मानने लगे और विदेशियो राजनैतिक परिवर्तनो को स्वीकार करके भारत मे व्यवहार करने लगे और विदेशो से सम्बन्ध करले व आदेश प्राप्त किया करें तो क्या उन्हें स्वदेशी कहा जायेगा स्वभावता ही श्रेणी सघर्ष और वर्ग सघर्ष होगा । भारत विघटन के मार्ग विभाजन पर आ रहा है ।

भारत को स्वराज्य प्राप्त हुये चालिस वर्ष व्यतीत हो गये । सर्वत्र परिवतन हो रहा है आर्य समाज मे भी परिवर्तन की बात सुनी जाती है । शिक्षा, समाज व्यवस्था, न्याय, सुरक्षा और व्यक्तिगत जीवन के आदर्शो मे साथ ही उस अग्रेज नेता का शासन की अयोग्यता भ्रष्टाचार और उपद्रव आदि की बात सामने आती प्रतीत होती है । आज देश मे कोई भी ऐसा प्रशासक नेता नही ह कि जिस पर भ्रष्टाचार शासक की अयोग्यता आदि का दोष न लगाया गया हो । चारो तरफ हर क्षेत्र मे रिश्वत का बाजार गरम है । बिना रिश्वत के कोई काम नहीं हो सकता देश के नेतृत्व और शासन जिन व्यक्तियों के हाथ मे हैं । वे पश्चिम के आदर्शो को मानकर चलते प्रतीत होते है । उन्हे उचित व अनुचित चाहे जिस तरह हो भारत विरोधी व्यक्तियो का मत प्राप्त करने मे कोई संकोच नहीं होता ।

ऋषि दयानन्द को सच्ची शिव की अनुभूति शिवरात्रि को हुई थी और उनका सारा जीवन सत्यज्ञान को जानने प्रचार करने मे ही व्यतीत हो गया । इस सकट काल मे केवल एक ऐसी संगठित आर्यसमाज की सस्था है । जिसका अपना पृथक कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं है । जो यदि काय करें तो क्या आर्य पुरुषो को सत्य धर्म की अनुभूति है ।

आर्यो को पूर्व की, प्रतिष्ठा क्या अब भी है ? ऋषि आर्यावर्त्त मे आर्यो का स्वराज्य चाहते थे । कहीं आय पुरुष पद लोलुपता, लोकेषणा, दलबन्दीमे तो नहीं फस रहें । एक समय था जब अदालतें आर्यो की शहादत और साक्षी को सत्य माना करती थी । क्या ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित आर्य सदाचारी और श्रेष्ठ व्यक्ति हैं । श्रेष्ठ आर्य हुये बिना आर्य समाज आर्यावर्त्त नहीं बन सकेगा ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम" के लिये स्वय आर्य पुरुषो को जागृत और प्रतिष्ठित होना आवश्यक है । अन्यथा आर्यावर्त्त मे आर्यो का स्वराज्य नहीं हो सकेगा ।

स्वच्छ भावना मन में होवे

स्वच्छ भावना मन मे होवे,
जीवन सफल महान है ।
वेदो का उपदेश यही,
उरु गीता का भी ज्ञान है ।
अपने वतन से प्रेम करें सब,
एक सूत्र का मान है ।
हिन्दी से हम प्रेम करें,
मेरा प्यारा हिन्दुस्तान है ।
आर्य सस्कृति आर्य देश की,
आर्यावर्त की शान है ।
सत् पथ पर हम बढ़ते जावें,
यही सकल सत्ज्ञान है ।
गगा, यमुना, सरस्वती मे,
एकता का भान है ।
अखण्ड देश की हम मर्यादा,
रखते सब मिल ज्ञान है ।
हिन्द देश की गौरवशाली,
परम्परा का भान है ।
मान रखें हम पूर्वजों का,
यही अभीष्ठ सुजान है ।

—अखिलेश सिह 'आर्य'
आर्य समाज कटरा (इलाहबाद)

वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ का चुनाव

प्रधान...श्री आचार्य देवव्रत अवस्थी श्रृंगार नगर
मन्त्री...श्री तिलक नारायण तलवार आदर्श नगर
कोषा०...श्री गोविन्दराम खरबन्दा चन्द्र नगर

विश्व के मानवों की महती आवश्यकता

उत्तम - सन्तान

(रघुवीर शरण आर्य, विश्व कल्याण शोध संगम सराय‍न टोला, बहजोई [मुरादाबाद])

पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा वृत्ति से ग्रसित मानव आज भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता दहेज प्रथा, जातिवाद, प्रान्तवाद, अन्धानुकरण, मंहगाई आदि अनेकानेक समस्याओं के जाल में दिन प्रतिदिन इस प्रकार उलझता जा रहा है कि वह अपने जीवनके परम सत्य पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के प्रयत्न करने के स्थान पर साध्य भौतिकता का दास बनता जा रहा है। वह अपने आप पर विश्वास न करके मानवी माया द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों द्वारा दिनो दिन पराश्रित होने के लिये प्रयत्नशील है। पूर्व महापुरुषों के जीवन चरित्र को अपने जीवन मे धारण करने के स्थान पर मनुष्यकृत विभिन्न देवी देवताओं की पाषाण मूर्तियों का दर्शन, पूजन, स्पर्श करने के साथ-साथ भेंट चढ़ावा चढ़ाकर प्रच्छन्न आतंकवाद व नास्तिकता को जन्म दे रहा है। उसके शोषण की यह लघु प्रक्रिया हर स्तर पर छोटे बड़े रूप में पग-पग पर हो रही है। भौतिकवाद के भूत ने समाज में राग, द्वेष, कलह, क्रांति, रक्तपात, और अनेकानेक प्रकार के झगड़े उत्पन्न कर दिये हैं। मानव लालच में इतना फंस गया है कि एक-एक पैसे पर अपना धर्म ईमान नष्ट कर रहा है। शस्य मांसं (अन्न) के स्थान पर निरीह स्वास्थ्य रक्षक, परोपकारी जन्तुओं की हत्या करके उनका मांस खाना, प्राणवायु दायक पौधों को काटकर जलाना, धर्मोन्माद की पूर्ति हेतु मानव हत्या करना, सोमरस पान (आनन्द रस पान) के स्थान पर मदिरा का पान करना, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" को भूलकर निर्धन कन्याओं माताओं के नग्न नृत्य कराना व देखना, पति की मृत्यु होने पर उन्हें आग में जला देना या उनकी इच्छा न होते हुये भी कामवासना का शिकार बनाना, पैसा कमाने के लालच मे खाद्य वस्तुओं में अखाद्य हानिकारक वस्तुओं की मिलावट, अपना राजनीतिक अस्तित्व बनाये रखने के लिये हठधर्मी और जनता आक्रांत बनाये रखने वाले काम करना तथा राजनीतिक संरक्षण प्रदान कर दुष्टों से परेशान कराना आम बात हो गई है। स्वार्थवाद के राक्षस ने समाज को इतना दूषित कर दिया है कि मानव "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। (यजु० ३६/१८)

हम प्राणीमात्र को मित्र जैसे स्नेहमयी आँखों से देखें तथा "उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।" (पंचतंत्र) उदार चरित वाले तो सम्पूर्ण पृथ्वी को ही अपना कुटुम्ब मानते हैं, जैसी उत्तम बातें जो सम्पूर्ण मानवता को भारतीय संस्कृति और महापुरुषों की सर्वोत्तम देन है भूलता जा रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी में समस्या ग्रस्त पराधीन भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सृष्टि प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ऋषियों को प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद का सन्देश ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों की परम्परा को स्थापित करते हुये स्वदेशी, स्वराज्य के उद्घोष के साथ-साथ ईश्वर, जीव, प्रकृति के त्रैतवाद की स्थापना करते हुए मातृभूमि के प्रति समर्पण तथा देश भक्ति का सन्देश सुनाकर अनेकानेक सनातन (सेवा भावी) वैदिक (वेद का अनुसरण करनेवाले) धर्मी (धारण करने वाले) देशभक्त तैयार किये। आज हम उन्हीं के पुण्य प्रताप से स्वतन्त्रता के ४१वें वर्ष में प्राचीन भारतीय गणतन्त्र के नागरिक हैं।

विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद का कथन है—

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मत : पथोरक्ष धियाकृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥
ऋग्वेद १० / ५३ / ६

संसार का ताना बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश के पीछे जा, बुद्धि से बनाये हुए प्रकाश युक्त मार्गों की रक्षाकर, निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के उलझन रहित कर्म को फैलाओ। इन सब उपायों से मनुष्य बन और देवों के हितकारी जनको अर्थात् सन्तान को उत्पन्न कर। संसार में भारत भूमि को ही वह गौरव प्राप्त है जिसने देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप महापुरुषों, महर्षियों, वीरों, दानियों, वीरांगनाओं को समय-समय पर जन्म देकर देश भक्त बनाया है और विश्व कल्याण के कार्य कराये हैं। पुत्रेष्टि यज्ञ की क्रिया का सम्पादन आज भी उतना ही सरल है जितना कि प्राचीन काल में था।

वैदिक आश्रम व्यवस्था ब्रह्मचर्य २५ वर्ष, गृहस्थ २५ वर्ष, वानप्रस्थ २५ वर्ष, संन्यास २५ वर्ष की पुनर्स्थापना के द्वारा तथा वेदों के पठन पाठन का पुनः प्रचार कर संसार की जटिल से जटिल समस्या का समाधान चुटकी बजाते ही हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है श्रद्धायुक्त भावना की और पूर्व ऋषियों की शिक्षाओं का अनुसरण करने की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पूर्व ऋषियों की परम्परा में आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए ही की थी आर्य समाज की कार्य पद्धति पूर्ण वैज्ञानिकता से पूर्ण क्या, क्यों और कैसे पर आधारित है। घातक को क्षमादान तथा तथा आर्थिक सहायता प्रदान करना और गायत्री मंत्र का पाठ करते हुए प्राण त्यागना उनकी पूर्णता का परिचायक है।

"नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः"। (ऋ० १०/१४/१५) पूर्वज ऋषियों को नमस्ते।

तन मन धन से सेवा करो प्राणिमात्र की।
है हर एक मानव को शिक्षा शिवरात्रि की॥

स्वार्थ पूर्ति हेतु विष वमन न करो।
विश्व के कल्याण हेतु सबका दुख हरो॥
खेले जिसके आँगन में राम और श्याम।
विश्वमाता, विश्वगुरु को करो प्रणाम॥

———

हनुमान का वास्तविक स्वरूप

(पृष्ठ ४ का शेष)

महात्मा टालस्टाय ने भी कहा है कि बुद्धिमान लोग अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए पढ़ते हैं और मूर्ख लोग दूसरों को बताने के लिए, अथवा प्रभावित करने के लिए पढ़ते हैं। हनुमान सचमुच बुद्धिमान था। वह कभी भी अपने ज्ञान का प्रदर्शन नहीं करता था। अर्थात् वह बड़ा विनयशील था।

हनुमान बड़ा शूरवीर भी था। लंका में निरायुध होकर भी अकेले ने बहुत बड़े वीर प्रहस्तपुत्र को मार डाला। रावण के पांच सेनापतियों को भी खतम किया। फिर अतिवीर पुरुष इन्द्रजित के साथ बहुत देर तक युद्ध किया।

हनुमान एक सिद्ध पुरुष भी था। योग दर्शन के अनुसार उदान-वायु पर ध्यान केन्द्रित करके जप करने से अथवा शरीर और आकाश के साथ सम्बन्ध संयम करने से भी शरीर कपास के समान हल्का हो जाता है और आकाशगमन सम्भव हो जाता है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति पर काबू पाने की इस क्रिया को आजकल अंग्रेजी में लेविटेशन कहते हैं।

उदान जयात् जलपंककंटकादिषु असंगः उत्क्रान्ति च।

कायाकाशयोः सम्बन्धसंयमाल्लघुतूल समापत्तेश्च आकाशगमनम् ॥

(योगदर्शन ३ । ३९, ४१)

हनुमान इस विद्या को अच्छी तरह जानता था। अतः आकाश में हवा के समान मेघजाल को चीरते हुए, पक्षी की तरह उड़ते हुए वह लंका पहुंच गया।

सत्यवानाथ वेगेन वेगवानविचारयन्।

सुपर्णमिव चात्मानं मेने स कपि कुञ्जरः ॥

हनुमान् मेघजालानि प्रकर्षन् मरुतो यथा।

प्रविशन्नभ्रजालानि निष्पतंश्च पुनः पुनः ॥

(सुन्दर काण्ड, सर्ग १, श्लोक २३३)

इतनी सारी विशेषतायें होते हुए भी हनुमान के पास न कोई दर्प, न कोई अहंकार हमें दिखाई देता। वह एक मात्र निष्ठावान् आदर्श स्वामिभक्त सेवक बनकर ही रहा। उसने कभी नेता बनने अथवा अपनी छवि बनाने और अन्यों को अपने से कम बताने अथवा अपनी बड़ाई करने का प्रयत्न नहीं किया। न कोई पद की कामना, अथवा न कोई प्रतिष्ठा की कामना उसने कभी की। वह केवल अपने सामर्थ्य के अनुसार अपनी तरफ से यथोचित रीति से स्वामी की सेवा करता रहा। इसीलिए एक आदर्श सेवक की कीर्ति पाकर अमर हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द महाराज हनुमान के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने एक बार आर्य कुमारों को सम्बोधित करते हुए निवेदन किया था कि आज आर्य जाति को लीडरों की अपेक्षा सेवकों की अधिक आवश्यकता है। उनके अनुसार आर्य युवक यदि दयानन्द को राम के समान स्वामी मानकर, अपने आपको उनके सेवक, महावीर हनुमान समझकर कार्य करें, तो ही दयानन्द का काम पूरा होगा। किन्तु आज हम देख रहे हैं कि दयानन्द का काम पूरा नहीं हो रहा है। क्या इसका कारण यही नहीं, कि विद्वान और शक्तिशाली लोग लीडर बनने में, मंच सम्भालने और भाषण देने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं, और उनमें से कोई भी सेवक बनना पसन्द नहीं करता? सेवा का कार्य प्रायः गरीब अनपढ़ बकरतमन्द अथवा दीन-हीन नौकरों को सौंपा जाता है। क्यों नहीं हम इस स्थिति को बदलें?

वैदिक हनुमान

वाल्मीकि रामायण के हनुमान के व्यक्तित्व का कुछ मुख्य अंशों की यहां मैंने चर्चा की है। लेकिन आजकल एक बहुत विचित्र प्रकार के हनुमान के मन्दिर बनते हैं और उसकी पूजा होती है। उसका रहस्य भी थोड़ा यहां बता देना चाहता हूं।

वैदिक संस्कृति में मुंह अथवा जबड़े को हनु कहते हैं। अतः हनुमान का अर्थ होता है बड़ा और सुन्दर जबड़े वाला। रामायण के हनुमान को शायद उसके बड़े सुन्दर जबड़े के कारण यह नाम रखा गया होगा। लेकिन वेद में यह शब्द अग्नि के वर्णन में आता है। यथा—

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु।

नाना हनू विभृते सम्भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः

(ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ७९, मन्त्र १)

इस मन्त्र में अग्नि के अनेक प्रकार के हनु का वर्णन है। अग्नि की शिखायें, अथवा ज्वालायें ही उसके हनु हैं। पूजा के यो‥ वह अग्नि यज्ञाग्नि है। हनुमान की मूर्ति का लाल रंग भी इस बात का समर्थन करता है कि वास्तव में ये हनुमान के मन्दिर यज्ञशालायें हैं। अज्ञान और अविद्या के कारण लोग हनुमान की विचित्र मूर्ति बनाकर, उसको सिन्दूरादि से लाल बनाते हैं और तेल चढ़ाते हैं। इन हनुमान मन्दिरों में यह बड़ा दिखने वाली लाल मूर्ति की अर्चना नहीं, प्रज्वलित पवित्र यज्ञाग्नि पर घी की आहुतियाँ पड़नी चाहिए।

वेद में अग्नि को भी मारुति कहा गया है। मारुति का अर्थ है, मरुत याने वायु से उत्पन्न। महत् से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति का क्रम है देखो वेदमन्त्र जहां मारुति का उल्लेख है—

यथा ते मारुतिर्विश्वस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे ॥

(ऋग्वेद ८ । १२ । २९)

जैसे रामायण का हनुमान किष्किंधा वन में रहता था वैसे यह वैदिक हनुमान अग्नि भी वन में विराजमान है। वेद कहता है—

सेदे वनेषु मातोः संत्वा मर्तासः इन्धते ॥

(ऋग्वेद ८ । ६० । १५)

अग्निर्वनेषु रोचते ॥ (ऋग्वेद ८ । ४३ । ८)

लेकिन यहां वन शब्द का अर्थ जल भी है। अतः यह बिजली या वड़वानल का वर्णन है।

उषाकाल में सूर्य का रंग बिलकुल अग्नि के समान लाल होता है। अतः लगता है कि सूर्य को विशाल जबड़े वाली अग्नि ने खा लिया हो। वेद में इस प्रसंग का वर्णन देखो——

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः।

प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आततान ॥

(अथर्व—७ । ८२ । ५)

अर्थात् प्रातःकाल में अग्नि ही उषा को प्रकाशित करता है। अग्नि ही सूर्य की रश्मियों को आकाश और पृथ्वी में फैलाता है। सूर्य अग्निमय है। इसके पीछे एक कहानी बनी है, कि पैदा होते ही हनुमान सूर्य को खाने के लिए दौड़ा। यह केवल गप्प है।

अच्छे विद्वानों के अभाव के कारण वेद शास्त्रों की पढ़ाई लुप्त हो जाती है और अज्ञान, अन्धविश्वास फैलता है। इस अज्ञान और अन्धविश्वास के कारण ही नाना प्रकार के विचित्र काल्पनिक देवि-देवताओं का प्रचार होता है। फिर इनके प्रचार के कारण सत्य विद्या और वैज्ञानिक मनोधर्म का विकास नहीं हो पाता।

*

लखनऊ में अष्टाध्यायी पद्धति से संस्कृत शिक्षा का निःशुल्क प्रबन्ध

गत अनेक वर्षों से जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति लखनऊ शाखा के अन्तर्गत तीन–२ मास के शिक्षण शिविर आचार्य पं० धर्मानन्द जी शास्त्री के सकल्प के फलस्वरूप आयोजित होते रहे हैं।

दि० ११ अक्टूबर, ८७ को, वर्ष १६८७ एवं वर्ष, १६८६ के प्रशिक्षार्थियो को प्रमाण–पत्र देने हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय के लोक प्रशासन प्रेक्षागार में श्री हरमोहन मेहरोत्रा विशेष सचिव, शिक्षा मन्त्रालय उ० प्र० शासन की अध्यक्षता मे प्रथम दीक्षान्त समारोह का सफल आयोजन हुआ जिसमे प्रो० एस० पी० नगेन्द्र कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे।

पं० धर्मानन्द जी शास्त्री ने प्रशिक्षार्थियों को अनुशासनोपदेश दिया तथा मुख्य अतिथि द्वारा सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं विशेष पुरस्कार वितरित किये गये। गत वर्ष के सभी श्रेणियों के प्रशिक्षार्थियों में कु० ललिता सैनी, पुत्री श्री इं० सत्यदेव सैनी ने सर्वोच्च अंक प्राप्त किये जिसका साक्षात्कार भी लखनऊ दूरदर्शन पर दीक्षान्त समारोह के साथ प्रसारित हुआ। वर्ष १६८६के प्रशिक्षार्थियों में श्री रूपचन्द्र दीपक जी ने सर्वोच्च अंक प्राप्त किये थे। सर्वोच्च अंक प्राप्त दोनों वर्षों के प्रशिक्षार्थियों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती देवकी रानी पत्नी श्री इं० सत्यदेव सैनी अपने पूरे परिवार को संस्कृत श्रेणी मे लाने एवं सफलता प्राप्त करने पर विशेष पुरस्कार से सम्मानित की गईं।

संस्कृत के शिक्षण कार्य हेतु जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति, लखनऊ शाखा द्वारा स्थायी व्यवस्था की गई है। आज कल यह व्यवस्था प्रत्येक रविवार को दोपहर २ बजे से ४ बजे तक ७३१ साकेत पल्ली लखनऊ (चिड़िया घर के मुख्य द्वार के निकट) श्री आई० आर० चतुर्वेदी पी० एम० टी० कोचिंग में निःशुल्क रूप से आयोजित की जा रही है। लखनऊ के सभी संस्कृत प्रेमी नरनारी इस सुअवसर से लाभ उठावे––

सत्यदेव सैनी मन्त्री
जिला उपसभा, लखनऊ

वैदिक वर्ण व्यवस्था

(शेष पेज ७ से आगे)

परन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि ऋषि के इस रोग के निदान को किसी ने समझा नहीं, आर्य जगत जो महर्षि दयानन्द का नाम लेता है वह भी अब ऋषि के बताये वेद मार्ग से हट गया है। जिसका कुप्रभाव पूर्ण हिन्दु समुदाय पर पड़ रहा है। हिन्दु समाज का आधार और उन्नति का कारण ब्राह्मण का वेद ज्ञान जो समाज को संगठित भी रख सकता है अब यदि वह ब्राह्मणरूपी मस्तिष्क 'स्वस्थ' न रहा तो हिन्दु समाज वेद जैसा ईश्वरीय ज्ञान, उपनिषद, स्मृति और दर्शन ग्रन्थों का स्वामी होते हुये भी अवैज्ञानिक तर्कहीन ग्रन्थों के मतावलम्बियों द्वारा अपना बहुमत होते हुये भी अपने ही देश में उसे अपना एक मात्र हमारी वेद, गीता संस्कृति का देश कहने का अधिकार नहीं रहा।

"सर्वत्र सुखिना सन्तु" हमारी आर्य संस्कृति की ही भावना है आज वास्तव मे यदि भारत मे सुख शांति परस्पर का भाई चारा, नैतिकता और राष्ट्रीयता की भावनाओं का प्रचार–प्रसार हो जाये तो हमारी साम्प्रदायिक, विषमता जैसी समस्यायें भी उन्मूल हो जायें। ये काम समाज रूपी शरीर के मस्तिष्क ब्राह्मण अथवा विद्वान को ही करना होगा, अपने सत्य ज्ञान द्वारा। जैसे कि श्रद्धेय स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश की अनुभूमिका मे भी लिखा है कि–"यह निश्चय है कि इन विद्वानो के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फसा रखा है।"

समाज के इस रोग का निदान आर्य ब्राह्मण के पास है इसलिए इसका दायित्व आज के भारत मे पहले से कहीं अधिक है। आर्य विद्वान परस्पर सब व्यक्तिगत स्वार्थहितो से ऊपर उठकर आगे आयें। सब मिलकर एक्य भावना से समाज के अज्ञान अन्धकार को दूर करके सत्य ज्ञान का प्रकाश करें। जिससे राम और कृष्ण का देश फिर सुख सम्पन्नता से भरपूर हो जाए।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १६८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३१/३/८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट मे सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सूचना

वर्ष, १६८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अतः वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महोपदेशको, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना–अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को १५ मार्च, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज कालपी (जालौन)
प्रधान–श्री भवानीसिंह जी
मन्त्री–श्री प्रकाश वेतली जी
कोषा०–ज्ञानेन्द्र कुमार आर्य

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५९९३ ४५४४१
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७८
फाल्गुन शुक्ल ११
२८ फरवरी रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त जिला सभाओं/समाजों के मन्त्री तथा प्रधान महोदय की सेवा में सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, प्रदेश की समस्त जिला उपप्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की एक नवीनतम संशोधित विवरण पत्रिका, जिसमें सभी वांछित सूचनाएं उपलब्ध रहेगी, प्रकाशित करने जा रही है।

अतः कृपया निम्न प्रारूप में अपनी-अपनी जिला सभाओं तथा आर्य समाजों से सम्बन्धित विवरण पूर्ण रूप से भर कर मुझे दो प्रतियों में शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

प्रारूप

१—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा/ आर्य समाज
का नाम एवं कार्यालय का पूरा पता......................
(यदि टेलीफोन हो तो उसका नम्बर)

२—समस्त सभासदों की संख्या...............
(सहायक सदस्य / आर्य सभासद)

३—वर्ष १९८८ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के
नाम एवं उनके आवासीय पते

(यदि घर पर फोन हो तो उसका नम्बर)...................... .....

४—क्या जिला सभा मुख्यालय/ आर्य समाज
में आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभा स्थापित है?.........

५—यदि हां ? तो कबसे तथा क्या
उसमें नियमित शाखायें लगती हैं।...... ......

नोट—यह विवरण पत्रिका आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहदधि-वेशन के अवसर पर सभाओं के प्रतिनिधियों को लिखित आवेदन पर दे दी जायेगी। एक प्रति का मूल्य ५) रु० धनराशि के साथ ही भेजना अनिवार्य होगा। सभा मन्त्री

निर्वाचन

दिनांक ३।१।८८ को आर्य समाज फतेहपुर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमें वर्ष ८८ हेतु निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान—श्री डा० हर्षवर्धन जी
मन्त्री— श्री डा० विनय अरोरा जी
कोषा०—श्री रामनारायण रस्तोगी

आवश्यक सूचना

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा सभी आर्य विद्यालयों एवं आर्यसमाजों के प्रति अनुरोध

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा संचालित धर्मशिक्षा परीक्षा आर्य विद्यालयों में शून्य हो गई है। खेद है कि इसके लिए जहां प्रधानाचार्यों की उदासीनता उत्तरदायी है वहां आर्यसमाजों के अधिकारियों की उपेक्षावृत्ति भी कम उत्तरदायी नहीं है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० और आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी भी अपनी शिक्षण संस्थाओं की इस कमी की ओर ध्यान नहीं देते। यदि सप्ताह में एक बार सन्ध्या हवन का क्रम चलता रहे तो वातावरण में धार्मिकता का पुट बना रहे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि विद्यालयों में वैदिक धर्म शिक्षा का थोड़ा बहुत कार्यक्रम चलता या नहीं तीन धर्म परीक्षाओं की योजना कितने ही वर्षों से चल रही है, धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण, धर्माधिकारी परीक्षाओं में क्रमशः कक्षा ७, ९, ११ के छात्र प्रविष्ट होते हैं।

इस वर्ष कक्षा ५ के विद्यार्थियों के लिए धर्मरत्न परीक्षा प्रारम्भ की गई है। जिस [illegible] के सभी आर्य प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रविष्ट के [illegible] अनुरोध किया गया है।

लगभग प्रत्येक आर्यसमाज एक न एक प्राथमिक विद्यालय चला रहा है। वह अपने विद्यालय की कक्षा ५ के सभी विद्यार्थियों को प्रविष्ट करने के लिए प्रधानाध्यापकों को अनुप्रेरित कर सकती है। इस परीक्षा में ४० अंक सन्ध्या, प्रार्थना मन्त्रों, गायत्री मन्त्र और आर्य समाज के नियमों के ही होंगे जिनमें से ३० अंक तो प्रत्येक विद्यार्थी प्राप्त कर सकता है, उपरोक्त तीन परीक्षाओं में भी संध्या हवन के मन्त्रों के अतिरिक्त प्रार्थना मन्त्रों, प्रातःकालीन पाठ एवं शिव संकल्प के मन्त्र जिस विद्यार्थी को याद होंगे वह सुगमता से पास हो सकता है।

सभी प्रधानाध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों से साग्रह अनुरोध है कि वे इन परीक्षाओं में अपने विद्यालयों की कक्षा ५, ७, ९, ११ के विद्यार्थियों को अवश्य प्रविष्ट करें। आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे इस कार्य में विद्यार्य सभा को हार्दिक सहयोग दें।

हमें हर्ष है कि गुलावठी, हसनपुर, सीतापुर व लखीमपुर खीरी, के आर्य कन्या विद्यालय और बहादराबाद (सहारनपुर) के विद्यालय ही अभी तक इस दिशा में सतत् सचेत रहे हैं। वे बधाई के पात्र हैं।

आशा है इस वर्ष हमारी यह अपील सफलता दिलायेगी।

इस वर्ष कक्षा ५ की धर्मरत्न परीक्षा ३ मार्च को होगी, और अन्य परीक्षायें २८ फरवरी के स्थान पर ६ मार्च को होंगी। प्रत्येक परीक्षा के परीक्षार्थियों की सूचियां तत्काल कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

भवदीय—
माधवसिंह
मन्त्री—प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए जगदानन्दीय आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० (फिक्स पुरुकंम लिमिटेड) वारमाय, लखनऊ में श्री शिवशंकरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४।५७ घोषणा पत्र सं० [illegible]

चैत्र कृष्ण १०, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक १३ मार्च १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

क्रान्तिदर्शी दयानन्द
धर्म पथिक बलिदानी
भारतीय नया साल कब और क्यों ?
मोरध्वज का पावन व्रत
स्वतन्त्रता संग्राम और—
आर्यसमाज
आर्य जगत एवं सार सूचनायें
कवितायें

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३५)
छमाही	११)
विदेश में	१५ पौंड

[illegible]

नव संवत्सर मङ्गलमय हो

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।

—ऋग्वेद ।

जिस सृष्टि पर हम निवास करते हैं उसकी रचना आज से १,९६,०८,५३०८६ वर्ष पूर्व सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने की थी। वह इस सृष्टि का निमित्त कारण है। अतएव अणु परमाणुओं को गति देकर इस विशाल सुन्दर संसार की रचना करने वाला वही विधाता हमारा परम पूजनीय है। उसने हमें यह संसार उत्तम कर्म करते हुए मोक्ष पद की प्राप्ति के लिए बनाया था। आर्यों के जीवन में इस पर्व का विशेष महत्व है क्योंकि आज ही के दिन ११२ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वि० सं० १९३२ को बम्बई में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना अपने कर कमलों से की थी। इसका उद्देश्य विश्व में वैदिक आदर्शों का प्रचार करना है।

इस सृष्टि की सम्पूर्ण आयु वेदों के अनुसार ४,३२,४०००००० वर्ष है। इसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलयुग को मिलाकर एक चतुर्युगी। सतयुग १७,२८,००० वर्ष, त्रेता १२,९६,००० वर्ष, द्वापर ८,६४००० वर्ष, कलयुग ४,३२००० वर्षों का है। ऐसी ७१ चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर तथा १४ मन्वन्तरों का एक ब्राह्म दिन—अर्थात यही सृष्टि का सम्पूर्ण जीवनकाल है। इसी को वेद ने ब्रह्मा (प्रजापति) का एक दिन कहा है। इस समय ब्रह्मा के दिन के द्वितीय प्रहर का आधा समय बीत चुका है। अट्ठाइसवां कलयुग चल रहा है। इसमें १,९६०८५३०८९ वर्ष बीत चुके हैं। शेष २,३३,३२,२७,९१४ वर्ष सृष्टि की आयु के शेष हैं।

नव संवत्सर का यह आह्लादकारी आगमन ऋषि के कार्यों को पूर्ण करने की हमें प्रेरणा दे—इस कामना के साथ आपका अभिनन्दन है। तो आइए—

'नव संवत्सर की उस पावन बेला में,
हम सब मिलकर करें कामना—
शान्ति की, समृद्धि की, खुशहाली विजय पथ की
जगती में आयी है—
उत्थान की, प्रगति की, मंगलमय जीवन की॥

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

जो आज मौन अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—चैत्र कृष्ण १० संवत् २०४४, रविवार १३ मार्च १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

बलिदान दिवस पर प्रेरणा लें

वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त आर्य पथिक पं० लेखराम जी को—६ मार्च को उनके बलिदान दिवस पर सम्पूर्ण आर्यजगत् में श्रद्धांजलियां भेंट की गयीं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्यसमाज की स्थापना का मूल उद्देश्य वेद पथ से दिग्भ्रमित मानव जाति को वेद का पथिक बनाना तथा लुप्तप्राय आर्य संस्कृति की सुदृढ़ स्थापना थी। जिसके अभाव में देश पददलित और पराधीन बन गया था। नाना पन्थों के प्रवाह से मतिभ्रमित हो, भाई—भाई का शत्रु बन रहा था।

महर्षि दयानन्द के उद्देश्य को सर्वात्मना स्वीकार करके हमारे जिन पूर्वजों ने वेद प्रकाश को प्रकाशित करने, आर्य संस्कृति के पुनः स्थापित करने में अपना योगदान और बलिदान किया—उनमें आर्य पथिक पं० लेखराम, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के नाम अग्रगण्य हैं। इन दिव्य विभूतियों के बलिदानों से ही आर्य जाति में चेतना फूकी, जिससे हमने अपने स्वत्व की पहचान की और हमने संघर्ष करके विदेशी दासता से मुक्ति पायी, वेद का पढ़ना—पढ़ाना अपना धर्म स्वीकारा।

जब तक हमने इन पूर्वजों के बलिदानों को श्रद्धा से देखा और आंका—तब तक हम बढ़ते रहे। जबसे हमने मात्र रस्म-अदायगी बना ली—हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के अलावा अपने पथ से भ्रमित से ही होने लगे।

आर्यसमाज की स्थापना में त्याग और बलिदान हमारा लक्ष्य था, परन्तु आज हमारा लक्ष्य भाषण बाजी अधिक होती जा रही है। स्थान—स्थान पर पदों के लिए झगड़े, विद्वानों द्वारा एक दूसरे की निन्दा, मात्र अपनी श्लाघा एक सामान्य सी बात बनती जा रही है। परन्तु यह प्रवृत्ति हमें नष्ट कर देगी, हमारी संस्कृति को नष्ट कर देगी, हमारा स्वत्व ही मिटा देगी। हमें अपने को बदलना होगा, स्वयं बदलकर ही समाज बदला जा सकेगा। हमें पदलिप्सा छोड़नी होगी, हमें अपना अहंकार त्यागना होगा। तभी हम अपने समाज, जाति और राष्ट्र की सुरक्षा में योगदायी रह सकेंगे।

जन्म दिवस, स्मृति दिवस, बलिदान दिवस हमें आत्मनिरीक्षण का सन्देश लेकर ही आते हैं।

वीर पथिक लेखराम जी अपने 'स्व' का परित्याग करके मानवता, भारतीय संस्कृति और वेद धर्म की रक्षा के लिए अपने एक-एक

आर्यमित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म—४

प्रपत्र नियम—८

१—प्रकाशन का स्थान—स्वतन्त्रता भास्कर प्रेस, आर्यसमाज भवन, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

२—प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक, प्रति बृहस्पतिवार व शुक्रवार।

३—मुद्रक का नाम—श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त, स्वत्वाधिकारी श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये।

४—राष्ट्रीयता—भारतीय।

५—प्रधान सम्पादक—श्री मनमोहन तिवारी, ८—पार्कलेन, लखनऊ।

प्रबन्ध सम्पादक—श्री इन्द्रदेव पाठक, एम० ए०, साहित्याचार्य
५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

६—पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

मैं विश्वम्भर दयाल गुप्त घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी में और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही हैं।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
दिनांक १ मार्च १९८८ — मुद्रक प्रकाशक 'आर्यमित्र' साप्ताहिक
५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ, उ०प्र०

क्षण का मापन करके वेद के प्रचार प्रसार में ही एक मदान्ध कादियानी के कटारी प्रहार से बलिदान हो गये परन्तु वे अन्तिम श्वांस में हमें यही सन्देश देकर गये कि लेखन और प्रचार प्रवचन का कार्य कभी बन्द नहीं होना चाहिए।

आइये आज उनके पवित्र बलिदान दिवस पर हम प्रेरणा लें और संकल्प लें आपस के वैरभाव के परित्याग का, पदों के लिए आपाधापी त्यागने का, एक दूसरे विद्वान के प्रति स्नेह प्यार और आदर के संवर्द्धन का। हमारा यह संकल्प निश्चय ही, डूबती मानवता की रक्षा करेगा। वेद का प्रकाश घर—घर फैलेगा। सभी परस्पर प्रीति व स्नेह से देश जाति धर्म के लिए त्याग और बलिदान की कामना के साथ कहेंगे—

मुझे तोड़कर ऐ वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।
देश धर्म हित शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक॥

★ ★ ★

वार्षिक-चित्र

सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जो वार्षिक चित्र सभा कार्यालय से सीधे भेजे जाते रहे हैं, वह जिला सभा को भेज दिये गये हैं। आप अपनी जिला सभा से सम्पर्क करके चित्र प्राप्त करने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

क्रान्तदर्शी—दयानन्द

[स्व० पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य,]
[वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर—४५२००७]

[अद्भुत प्रतिभा के धनी वेदों के प्रकाण्ड पण्डित स्व० श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी आर्यजगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। आर्यजगत का यह महान दुर्भाग्य ही है कि वे हमें छोड़कर इस संसार से चले गये। चलते-चलते उनकी लेखनी उस क्रान्तिदर्शी दयानन्द के गुणगान में लिप्त रही। पाठक देखेंगे अन्तिम समय में उनके द्वारा महर्षि के प्रति व्यक्त किये गये उद्गार कितने मार्मिक और सामयिक हैं।—सम्पादक]

१-महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश

महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति, आर्यावर्त्त तथा मानव जाति के अधःपतन के कारण को अपनी दिव्य योगजन्य दृष्टि से सम्यक् जानकर आर्य जाति को उद्घोषित करने का प्रयत्न किया। आर्य जाति का पूर्व काल में अखिल भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य रहा। अतः उसको, उसी आर्य नाम से पूर्व संस्कारों को जागृत कराने के लिए और पुनः भूमण्डल का चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्त करने के प्रयत्न के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति को वेदों का दिव्य सन्देश दिया तथा वेदों को अपनाने का सन्देश दिया। वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का परम धर्म रूपी परमावश्यक कर्म घोषित किया और यह बताया कि-वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद ही धर्म, कर्म, उपासना, मोक्ष का मूल है।

२-वेदों का भूमण्डल में प्रचार

वेदों का भूमण्डल में प्रचार महर्षि दयानन्द का प्रधान लक्ष्य था। इसके लिए प्राथमिक कार्य महर्षि ने यह घोषित किया था कि-वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है। इसको ध्यान में रखकर प्रयत्न करने चाहिये। जब वेदों को पढ़ेंगे-पढ़ावेंगे तभी उनके अर्थों के प्रति प्रीति होगी और वेद की विविध विद्याओं का ज्ञान होगा। वेद की विद्याओं के ज्ञान से उनके उपयोग की विधियों का अनुसंधान प्रारम्भ होगा। विधियों के अनुसन्धान के आधार पर विद्या और शिल्प कला यन्त्रों का निर्माण होगा और मानव जाति की आवश्यकताओं की पूर्ति वेद के विज्ञान से होगी। तभी वेदों का पठन-पाठन प्रचलित हो सकेगा।

३—वेदों का भूमण्डल में प्रचार यज्ञ विज्ञान से सम्भव

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अतः इस बात को भी नितान्त आवश्यकता है कि वेद में से उन सब सत्य विद्याओं को या उनमें से कतिपय सत्य विद्याओं को संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया जावे, उन विद्याओं से संसार को लाभान्वित किया जावे और उन विद्याओं को व्यवहारोपयोगी बनाकर विश्व के जीवन के इतने निकट स्थापित कर दिया जावे कि मानवमात्र को वेद एवं वैदिक यज्ञ-विज्ञान बलात् अपनाना ही पड़े। ऐसी स्थिति में मानव जाति को अपने ज्ञान एवं प्रेरणा के स्रोत के लिए वेद को ही अंगीकार करना होगा और अपने समस्त व्यवहारों के लिए वैदिक यज्ञ-विज्ञान पर ही आश्रित होना होगा। 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ, विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है"—अतः वेद की विद्या और उसको व्यवहारोपयोगी बनाकर मानवमात्र को आदि मूल परमेश्वर के निकट लाने का जो भी प्रयत्न हम करेंगे तो वह निःसन्देह चतुर्विधफल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने-कराने वाला ही होगा। अन्य सब योजनाओं एवं कार्यों को प्राथमिकता न देकर वेद के यज्ञ-विज्ञान के अनुसंधान को ही पूर्ण महत्व देते हुए इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। संसार का उपकार करने का यही सर्वोत्कृष्ट मार्ग है। इसके लिए उदासीनता या उपेक्षा भाव आत्मघात के तुल्य है।

४—वैदिक विज्ञान की उपयोगिता का प्रतिपादन हो

क्या वर्तमान वैज्ञानिक युग में वेद की विद्या और उसका यज्ञ-विज्ञान उपयोगी हो सकेंगे? क्या यज्ञ के विज्ञान द्वारा कुछ ऐसे भी कार्य किये जा सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव आज के विश्व के मस्तिष्क एवं हृदय पटल पर पड़ सके? क्या वेद के विज्ञान के उपयोग से ऐसे भी कार्य हो सकते हे जिनको वर्तमान विज्ञान अभी तक नहीं कर सका है? यदि इसका उत्तर हां में दिया जा सकता है तो उसके लिए हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए और उसके लिए सब प्रकार से सहयोग भी देना चाहिए।

५—अनुसन्धान कार्य के लिए उत्कट साधना

वेद के विज्ञान के अनुसन्धान कार्य के लिए हमें जीवन को अर्पण करना होगा और बल एवं धन को भी वेदों के लिए अर्पण करना होगा। वेद को शब्द ब्रह्म कहा गया है। यही वेद की मन्त्र राशि, ब्रह्म का परम पवित्र, श्रेष्ठतम, सत्य, पूर्ण निर्भ्रान्त ज्ञान मानव जाति का परम आश्रय रूप सर्वकालिक पथ-प्रदर्शक है। वेद शाश्वत परम ज्योति है। वेद का पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण तथा उसमें ज्ञान एवं कर्म की प्रवृत्ति मानव जाति के लिए परम धर्म है। इस परम धर्म की साधना से हमें अनेक विद्या एवं विज्ञानों की प्राप्ति हो सकेगी और उससे विश्व को लाभान्वित किया जा सकता है।

६—यज्ञ विज्ञान के प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में हों

वेदों के स्वाध्याय के तथा अब तक के अपने प्रयोग एवं प्रयत्नों के आधार पर अनेक कार्यों को हम अपने अनुसन्धान का क्षेत्र बनाकर विश्व को आशातीत सफलता के क्षेत्र में प्रवेश करा सकते हैं। वैदिक यज्ञ-विज्ञान की सफलता से विश्व के लाभान्वित होने पर शिक्षा, विज्ञान, समाज, राजनीति आदि क्षेत्रों में भी वेद को महत्वपूर्ण स्थान विश्व में स्वतः ही प्राप्त हो सकेगा। 'अग्निहोत्र फला वेदाः' यह निष्कर्ष प्राचीन ऋषियों ने वेद की सफलता एवं यज्ञ के विज्ञान को सत्य सिद्ध करने तथा व्यवहारोपयोगी बनाने के लिए घोषित किया था। अतः हमें भी वेदों के यज्ञ-विज्ञान के द्वारा वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न करना ही चाहिए।

७-प्रयोगशाला यज्ञ वेदी ही है

वेद विद्याओं एवं विज्ञान से पूर्ण हैं—और उन विद्याओं एवं विज्ञान की सबसे उत्कृष्ट प्रयोगशाला यज्ञ वेदी-यह मानव देह ही है। जब इस देहरूपी प्रयोगशाला से विश्व में प्रयोग किये जाते हैं तो उसका प्रभाव विश्व पर भी पड़ता है। जब तक ये प्रयोग पंच तन्मात्राओं से ऊपर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

स्वतन्त्रता संग्राम और आर्य समाज

[श्री भगवानदेव 'चैतन्य' एम० ए०, सुन्दरनगर, (हि० प्र०]

आर्यसमाज एक अमर क्रान्ति की आग है। एक ऐसी क्रान्ति जिसने अपने परिवर्तनशील प्रवाह से एक नई चेतना और नया आलोक बिखेर दिया। वह एक ऐसी आग है जिसमें जलन और तपन नहीं बल्कि उत्साह, वेग और अविरल गतिशीलता है। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मजात क्रान्तिकारी थे। उनकी क्रान्ति संकुचित नहीं बल्कि बहुआयामों को अपने भीतर समाविष्ट किये हुये थी। उनकी क्रान्ति के स्रोत बहुमुखी थे। उनका ओज-तेज स्वयं उनकी महानता का साक्षी था। उन्होंने बचपन से ही झूठ, छल-कपट और जर्जर मान्यताओं से संघर्ष किया। जड़ता से चेतनता की ओर उनका अभियान उसी समय प्रारम्भ हो गया था जब वे अभी मात्र बारह वर्ष के थे। उसी अल्पवय से वे सब सड़ी-गली परम्पराओं के प्रति विद्रोही हो उठे थे। झूठे शिव को त्यागकर सच्चे शिव को प्राप्त करने का संकल्प भी उनकी क्रान्ति का ही एक हिस्सा था। आजीवन कठिन से कठिन बाधाओं और मुसीबतों से जूझकर अन्ततः मृत्यु को अंगूठा दिखाकर अमरत्व का आलिंगन करने वाला यह अद्भुत महा-मानव अपनी मिसाल आप ही था। सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, पोगापंथियों से जिस साहस और दृढ़ता से यह सत्य का उपासक जा टकराया वह अद्वितीय और अभूतपूर्व है। यही नहीं प्यारे राष्ट्र को परतन्त्रता की कठोर बेड़ियों में जकड़ा हुआ देखकर तो दयानन्द मानो क्रान्ति का एक दहकता अंगारा बन गया। इनके उत्कट देश प्रेम की भावना इनके प्रवचनों ग्रन्थों के अध्ययन से सहज ही प्राप्त हो जाती है। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम की नींव इसी क्रान्तिकारी ने घूम-घूम कर रखी थी। यही नही इसने अपनी सक्रिय भूमिका भी निभाई मगर समय से पूर्व ही प्रस्फुटित होने और अपने ही देश के कुछ गद्दारों के विश्वासघात क कारण वह सग्राम सफलता के मस्तक को नहीं चूम सका मगर दयानन्द इससे हताश और निराश नहीं हुए बल्कि स्वतन्त्रता की लड़ाई की नींव और भी अधिक गहरी रखने के प्रयास मे जुट गए। इनके हृदय मे राष्ट्र के प्रति अथाह प्रेम था तभी तो सन् १८७२ मे भारत के वायसराय नार्थब्रुक के मुंह पर ही इस फकीर ने कह दिया था, मै नित्य प्रातः साय परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि मेरा देश पराई दासता से मुक्त हो'। अपने विश्व विख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के आठवें समुल्लास में वे लिखते हैं, 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरी उत्तम होता है।' लोकमान्य जी का कथन है,–'दयानन्द स्वराज्य शब्द के प्रधान सन्देशवाहक थे।' मदनमोहन मालवीय जी कहते हैं, 'वे भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे।' इसी स्वतन्त्रता और दिव्यता की विधिवत प्राप्ति के लिए उन्होने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने चारों ओर चेतनता और जागरण की वह धूम मचाई कि एक अमेरिकन विद्वान कह उठा–'मैं एक धधकती ज्वाला को देख रहा हूं, अत्यन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला जो समस्त दुःख दावानल को भस्मसात कर देगी। इस धधकती ज्वाला का नाम है–'आर्यसमाज'।

जंजीरों से जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने,
जिसको न काल भी बुझा सके वह शमा जलाई थी तूने।
घनघोर तिमिर के आगम में तू बीज उषा के बोता था,
अवाज लगाई थी तूने जब सारा भारत सोता था॥

धीरे-धीरे 'आर्यसमाज' क्रान्तिकारियों का पर्यायवाची बन गया। एक अंग्रेज विद्वान के अनुसार 'किसी भी आर्यसमाजी की खाल को खुरचकर देखो तो अन्दर छिपा हुआ क्रान्तिकारी देशभक्त दयानन्द दिखाई देगा'। आर्यसमाज क्रान्तिकारियों का स्रोत बन गया- श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, भाई बाल मुकुन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, वीर सावरकर, मदनलाल ढिंगरा, सरदार भगतसिंह, पण्डित खुशीराम, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद जैसे सैकड़ों वीर भारत मां की बेड़ियों को छिन्न-भिन्न करने के लिए अपने प्राण हथेली पर लेकर निकल पड़े। अंग्रेजी शासकों की कुदृष्टि हमेशा आर्यसमाज पर बनी रहती थी। यहां तक कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में अंग्रेजी गुप्तचर बैठे रहते थे। आर्यसमाज को कई यातनायें सहनी पड़ीं मगर नर्म और गर्म दोनों दलों में वह अपनी सक्रिय भूमिका निभाता रहा। डा० पट्टाभि सीतारमैया अपने इतिहास ग्रन्थ में लिखते हैं–'स्वतन्त्रता संग्राम में ८५ प्रतिशत से भी अधिक आर्य समाज के सदस्यों का सहयोग रहा।'

आज हम स्वतन्त्र तो हो गये हैं मगर जिस स्वतन्त्र भारत की कल्पना हमारे शहीदों ने की थी उसका निर्माण हम आज चालीस वर्षों के पश्चात भी नहीं कर पाये हैं क्योंकि कुछ गद्दीधारी स्वार्थियों ने स्वतन्त्रता के प्रसाद को जनसाधारण तक नहीं पहुंचने दिया बल्कि अपनी मुट्ठियों में बन्द कर दिया–

जो कफन चुराकर बैठ गये जा महलों में,
देखो झांसी की अर्थी नंगी जाती है।
इस राम राज्य के सुघर रेशमी दामन में,
देखो सीता की लाज उतारी जाती है॥

*

रजिस्ट्रार हस्तक्षेप न करें

मैनपुरी– २६–२–८८। रजिस्ट्रार, सोसायटीज् उ० प्र० आदि के विरुद्ध, स्थानीय मुन्सिफ न्यायालय मे विचाराधीन, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) में हस्तक्षेप न करने के मूलवाद सं० १०५/८८ में हुये अवैध आदेश दि० २७-१-८८ के विरुद्ध स्थानीय जिला जज के न्यायालय में विचाराधीन प्रकीर्ण अपील सं० २२/८८ मे हुये आज क आदेश में रजिस्ट्रार आदि को, अग्रिम आदेशों तक, प्रबन्ध समिति के अस्तित्व मे हस्तक्षेप न करने के लिए निर्देशित कर दिया गया।

कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
निवास– मुख्य निरीक्षक
जरपरी, मैनपुरी। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

कैलाशनाथसिंह का प्रार्थना-पत्र स्थगित

मैनपुरी–२७–२–८८। स्थानीय मुन्सिफ न्यायालय में विचाराधीन आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० विषयक वाद सं० १०५/८८ में कैलाश नाथसिंह द्वारा, अपने को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का प्रधान दर्शाते हुए, उक्त वाद में पक्षकार बनने हेतु दिया गया ११ पृष्ठीय प्रार्थना-पत्र जिसमें विभिन्न उच्च न्यायालयों से लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय तक की रूलिंग्स अङ्कित हैं, विगत दो दिन की अविराम बहस के बाद भी आज स्वीकृत नहीं हो सका।

कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
निवास– मुख्य निरीक्षक
जरपरी, मैनपुरी। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

आयी होली

ऊंच नीच का भेद मिटाएं,
मानवता की ज्योति जलाएं,
बढ़ें निरन्तर प्रगति-पथों पर-
सुन्दर सा संसार बनाएं,
नव आशा, अभिलाषा लेकर-
आयी होली, आयी होली।

प्रेम बढ़े फिर से जन-जन में,
'पर उपकार' भाव हो मन में,
शांति-सुखों की बहे निरन्तर-
धारा जगती के कन-कन में,
नव जागृति का लिए संदेशा-
आयी होली, आयी होली।

कर्मशील हों मानव सारे,
धर्मशील हो मानव सारे,
भारत माँ का मान बढ़ाएं-
आगे बढ़कर मानव सारे,
ऋतु बसन्त में हमें जगाने-
आयी होली, आयी होली॥

प्राणों से भी प्यारा है

नव जागृति का रहा प्रणेता,
पाखण्डों के गढ़ का जेता,
वेदों का पावन प्रकाश को-
जगती के जन जन को देता,
वही क्रान्ति दर्शी इस युग का-
प्राणों, से भी प्यारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

अन्यायों से जो लड़ता है,
वेदों का प्रचार करता है,
प्रेम दया को, मानवता को-
शिक्षा जगती को देता है।
वही धरा पर खुशहाली का-
जगा रहा अब नारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

जगती के जन श्रेष्ठ बनें,
सौम्य - समृद्धि वितान तनें,
घनीभूत हों इस धरती पर-
सत्य-धर्म के मेघ घने,
दलितों तथा अछूतों को दे-
आश्रय, भाग्य संवारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

स्वतन्त्रता का कर उद्घोष,
मिटा गुलामी का सब दोष,
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का-
किया धरिती पर है घोष,
नया समाज बनाएंगे हम-
कण - कण ने ललकारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, सुल्तानपुर

होली

असत्य पर सत्य की विजय,
महान पर्व आयया,
उमंग उल्लास उड़ेलता
आनन्द पर्व आगया
आओ हम प्रेम की सरिता बहायें
आओ हम होली धूमधाम से मनायें।

विगत बैर द्वेष भुला,
छाती से छाती मिलायें,
परस्पर का - खिला,
स्नेह बन्धन में बंध जायें,
एकता के सूत्र में आबद्ध हो जायें,
आओ हम होली धूमधाम से मनायें।

संगठन रूपी समिधाएं एकत्र कर,
त्याग रूपी अग्नि परचायें,
ऐसी विराट होली जलायें
ताकि अन्याय की होलिका भस्म हो जाये
हम सत्यवादी प्रहलाद के अनुयायी बन जायें,
आओ हम होली धूमधाम से मनायें।

—डा० शकुनचन्द आर्य, लालगंज, (रायबरेली)

उग्रवाद

वे उग्रवाद क्यों फैलाते ?
है देश, धर्म, संस्कृति समान,
क्यों सत्य निरन्तर बिसराते ?
माँ की दुर्दशा भूल गये,
अपनों पर गोली बरसाते।
कर दिया जाम शासन सारा,
यहाँ प्राचीरें हैं उठवाते।

नर भक्षी रक्त पिपासित हैं,
अंकुश वंचित होते जाते।
स्वर्णिम इतिहास अमर प्रस्तुत,
कालिमा उसी पर बरसाते।
हरि मन्दिर में दानव दल को,
प्रति पल क्यों हैं सिखलाते ?

है देश नहीं जिसको प्यारा,
वह जीवन्मृत है कहलाता।
कब वर्ष आयु का मूल्यांकन,
जो कर्म वीर, सब कर पाता।
वे मनुज नहीं सरदार, नहीं,
जो नहं भद्र कुछ कर पाते

खालसा कहो या आर्य कहो,
यह व्यापक विश्व भावना है।
गुणवाचक शब्द यहाँ सिंचित,
क्यों फिर संकीर्ण कामना है।
जब व्यथा, रक्त, राहें समान,
क्यों भेद नीति हैं उपजाते।

हिंसा तो केवल कायरता,
हृदयों को विजय नहीं मिलती।
केवल अपयश का लोक उसे,
उल्लास चन्द्रिका कब खिलती।
बन रहे कुचक्रों के धारक,
लज्जा न हृदय में क्यों लाते ?

—डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर कालोनी, श्यामगंज, बरेली

भारत का नया साल कब और क्यों ?

(डा० राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा २२-ए०, कस्तूरबा नगर सिगरा, वाराणसी)

भारत ऐसे विशाल एवं प्राचीनतम देश मे राष्ट्रभाषा के समान ही नव-सम्वत्सर का प्रश्न भी अत्यधिक जटिल एवं महत्वपूर्ण है। यहां प्रत्येक मतावलम्बी अपनी संस्कृति, अपने विशिष्ट गुरुओं एवं अन्य महत्वाकांक्षी राजाओं के चिरस्मरणीय प्रचार व प्रसार के लिये अलग-अलग सम्वत्सर चलाये, जो अब भी अलग-अलग प्रांतो में प्रचलित हैं।

१-विक्रम सम्वत्-

यह महाराज विक्रमादित्य के शासनारूढ़ से सम्बन्धित है। इसके मास, चैत, बैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्वनि, कार्तिक, अगहायण, पौष, माघ, फाल्गुन हैं। चैत को दो भागों मे बाँटकर नया साल सृष्टि सम्वत के अनुसार चैत शुदी प्रतिपदा को मानते हैं। मासो के नाम प्रत्येक पूर्ण-मासी को नक्षत्रानुसार वैदिक मास के नामों को बदलकर के रख दिये हैं। इसकी गणना चन्द्रमा के अनुसार होती है। अतः कभी एक ही तिथि दो दिनों तक चलती रहती है तथा कभी बीच-बीच मे एक तिथि लुप्त हो जाती है। कभी मलमास के कारण एक ही मास दो बार आ जाते हैं। अतः यह दैनिक व्यवहारिक जीवन के लिये अनुपयुक्त है। आजकल संवत् २०४४ चल रहा है इससे पूर्व काल के लिये बिलकुल मौन है। अतः भारतीय राष्ट्रीय संवत् के लिये यह सर्वथा अनुपयुक्त है।

२-शक सम्वत्-

शकों के भारत पर आक्रमण कर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात् इस वंश का महाप्रतापी राजा शालिवाहन द्वारा यह सम्वत् प्रचलित किया गया, यह सरल व गणना के लिये सुगम है। इसके मास भी वही हैं, जो विक्रम संवत् के हैं। शको का अब नामोनिशान नहीं है। ये लोग यहां के प्राचीन लोगोमें घुल-मिल गये। आज कल १९१० संवत् चल रहा है। यह राष्ट्रीय संवत् के लिए अनुपयुक्त है क्योंकि यह हमे गुलामी व पराभव की हमारे हृदय में घुमन उत्पन्न करती रहती है। यह अधिकतर दक्षिण में प्रचलित है।

३-प्रविष्टा संवत्-

पञ्जाब प्रान्त मे बैसाखी के दिन [जो मेष संक्रान्ति को पड़ता है] नया संवत्सर मनाया जाता है। ये महातपस्वी व महात्यागी गुरुगोबिन्दसिंह द्वारा प्रचलित किया गया है।

४-बंगाब्द संवत्-

यह बंगाल प्रांत में प्रचलित है। आज कल १४०५ संवत् चल रहा है।

५-हिजरी संवत्-

यह मुस्लिम मतावलम्बियों का संवत्सर है। मुहम्मद साहब की यादगार मे मनाया जाता है। आजकल १४०७ चल रहा है। इसके केवल १० माह होते हैं।

६-ईसवी संवत्-

यह विश्व के अधिकतर भागों में प्रचलित है। क्योंकि ईसाई मतावलम्बी और उनके राज्य बहुत अधिक थे एवं हैं। भारत में भी अंग्रेजी राज्य [ईसाई मतावलम्बी] स्थापित होने के बाद से प्रचलित है। यह उनके पैगम्बर ईसामसीह की याद दिलाता रहता है और ईसाई मत एवं उसके प्रवर्तक ईसामसीह का प्रचार एवं प्रसार करता है। आजकल १९८८ ए० डी० है। इसके पूर्व के काल को बी० सी० कहकर अनुमानित किया जाता है। इस सवत् को भारतीय राष्ट्र संवत् स्वीकार करना विशेष समुदाय से सम्बन्धित होने के नाते साम्प्रदायिक और धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध है। यह भारत मां को गुलामी की बेड़ियो मे बांधने व उससे छुटकारा पाने वाले तथा सिर उठाने वालों को निर्ममतापूर्ण दमन के बारे में ठेस उत्पन्न करती है। अतः यह भारतीय राष्ट्रीय सम्वत के बिल्कुल ही अनुपयुक्त है।

७-सृष्टि सम्वत्-

यही हमारे भारतीय राष्ट्रीय सवत के लिए उपयुक्त है। यह असाम्प्रदायिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है एवं वेदानुकूल है। [जिसकी सम्पूर्ण विश्व प्रशंसा करता और अनुकरण करने एवं समझने में प्रयत्नशील है।] वैदिक काल मे मासों के नाम मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभ, नभस्य, ईश, उर्ज सह, सहस्य, तप, तपस्य हैं (यजुर्वेद १३/२५) आज कल १, ९७, २९, ४९०८९ चल रहा है। यही भारत का राष्ट्रीय संवत् होना चाहिये।

इससे लाभ यह है कि इससे हमें हमारी प्राचीनतम संस्कृति का आभास मिलता है। कुल १४ मन्वन्तर है। ७वां मन्वन्तर आज कल चल रहा है। एक मन्वन्तर मे ७१ चतुर्युगी होते हैं। [देखे मनुस्मृति १-२ श्लोक ६८-७३, ७९, ८०]।

अतः चैत शुदी प्रतिपदा ही हमारे राष्ट्र का नया साल है। यह सरल एवं सुबोध है। इसी के अनुसार भारतीय कैलेण्डर इत्यादि बनना चाहिये। आर्य (श्रेष्ठ) लोगो को इसके लिए सक्रिय होना चाहिये और अपनी प्राचीन संस्कृति को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात प्राप्त करने मे प्रयत्नशील रहना चाहिये। प्रत्येक आर्य को अपने साप्ताहिक सत्संग एवं दैनिक कार्यक्रम से इसका प्रयोग करना चाहिये। आर्य समाज एवं आर्य कैलेण्डर बनाने वालों को प्रमुखतया इसका वर्णन करना चाहिये।

क्रान्तदर्शी दयानन्द

(पृष्ठ ३ का शेष)

की शक्तियों द्वारा किये जाते हैं तब तक संकल्प शक्ति के आधार पर सफलता को प्राप्त करते हैं। यह वैदिक विज्ञान की सूक्ष्म एवं उच्च स्थिति है। परन्तु जब वैदिक विज्ञान का स्थूल रूप, स्थूल जगत के पदार्थ एवं उनकी शक्तियों के आश्रय से सम्पन्न किया जाता है तो उसकी प्रयोगशाला बाह्य यज्ञ-वेदी को ही बनाना पड़ता है। उसमें सर्व प्रकार के क्रियाकलापों की सिद्धि के लिए अग्नि स्थापन करके द्रव्यों की आहुतियों द्वारा उनको सूक्ष्म करके संयोग, वियोग एवं विभाग क्रियाओं द्वारा विश्व में यथा-स्थान, यथाशक्ति तत्वों को वृद्धि एवं ह्रास द्वारा इच्छित क्रिया की जाती है जो कि इष्ट प्राप्ति कराती है। यदि इसके साथ मानसिक शक्तियों का भी प्रयोग किया जाता है तो और भी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

८—समस्त कामनाओं की पूर्ति-यज्ञ से

वैदिक विज्ञान की इस प्रक्रिया को यज्ञ कहते हैं। इसीलिए वेद ने यज्ञ को 'कामधुक्' कहा। गीता में भी यज्ञ को 'कामधुक' कहा गया है। अर्थात् सर्व कामनाओं की प्राप्ति। दोहन कार्यवत् यज्ञ से हो सकती है। कामनानुकूल इष्ट प्राप्ति के लिए जो विविध प्रकार के प्रयत्न एवं क्रिया समूह हैं वे ही पृथक् पृथक् यज्ञों के रूप में विविध नाम व रूप से कहे जाते हैं। इस प्रक्रिया को समझ कर यज्ञ द्वारा अनुसन्धान-कार्य बड़ी सफलता से सम्पन्न हो जाता है। इसी यज्ञ विज्ञान के आधार पर—

१—यज्ञों द्वारा असमय में अन्तरिक्ष में सोम भरा जा सकता है और उसमें मेघों का निर्माण इच्छित समय पर हो सकता है। यज्ञ निर्मित इन मेघों को यथेच्छ स्थानों पर बरसाया भी जा सकता। आज बड़े-बड़े बांध बने हुए हैं, यदि वर्षा न हो तो वे शीघ्र ही निष्फल हो सकते हैं। अतः इच्छित रूप से वर्षा कराने के सुलभ यज्ञ-विज्ञान द्वारा संसार को लाभान्वित किया जा सकता है जिससे कृषि एवं उद्योग विकसित बने रह सकते हैं।

२—अतिवृष्टि को रोकने के प्रयत्न वर्तमान विज्ञान नहीं कर सका—परन्तु अवर्षण की स्थिति निर्माण करने या अतिवृष्टि को रोकने की क्रिया भी यज्ञ द्वारा सम्पन्न होती है और उसमें सफलता भी दृष्टिगोचर हुई है। इस क्रिया द्वारा वर्षा पर सन्तुलन एवं नियन्त्रण स्थापित होने से नदियों की बाढ़ समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है और देश को जन, धन, अन्नादि की हानि से बचाया जा सकता है।

३—यज्ञ द्वारा वर्षा कराने एवं वर्षा रोकने की यज्ञ प्रक्रिया तथा विज्ञान के आधार पर ही ऋतु विज्ञान पर भी इच्छित नियन्त्रण स्थापित हो सकता है। अर्थात यज्ञ द्वारा ऋतुओं के तापमान में न्यूनता एवं वृद्धि की जा सकती है। शीत ऋतु में यदि आवश्यकता से अधिक शीत लहरें वातावरण को अति शीतल बना दें अथवा ग्रीष्म ऋतु में ग्रीष्म की प्रचण्डता से जनहानि की सम्भावना हो तो दोनों अवस्थाओं में अपने अनुकूल वातावरण में परिवर्तन यज्ञ के द्वारा सम्भव है अथवा ऋतुओं की स्थिति क्षीण प्रभावहीन एवं असमर्थ हो तो उसको समर्थ एवं प्रभाव युक्त भी यज्ञ के द्वारा किया जा सकता है।

४—यज्ञ द्वारा मरुभूमि को अर्वरा भूमि मे परिवर्तित करने की क्रिया भी की जा सकती है। आज मरुभूमि को रोकने के उपायों में बबूल के वनों को लगाने के उपाय व्यवहार में लाया जा रहा है। कांटों को बोने का फल कांटे के रूप में ही भोगना पड़ता है। मरुथल पृथिवी का क्षय रोग है। इस क्षय की चिकित्सा यज्ञ द्वारा हो सकती है। यदि नियम क्षेत्र में ५ वर्ष परीक्षण का अवसर प्राप्त हो तो इसमें सफलता प्राप्त हो सकती है। पृथवी के तत्वों में जो विपरीत क्रिया विघटनात्मक प्रारम्भ हो गई है उस क्रिया के प्रति विपरीत रूप में क्रिया करने से मरुभूमि में अनुकूल परिवर्तन होने लगेंगे।

५—यज्ञ द्वारा राष्ट्र की खनिज सम्पदा की भी वृद्धि हो सकती है। पृथिवी में खनिज पदार्थों का संग्रह पृथिवी के अतिरिक्त अन्तरिक्ष व द्युलोक में स्थित इन की सूक्ष्म स्थितियों के कारण भी होता है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष व द्युलोक के पदार्थों का एवं बीजात्मक अंश विविध प्रकार की वनस्पतियों में भी केन्द्रित होता रहता है। इस प्रकार विविध तत्वों से प्रधान रूप से युक्त ओषधि वनस्पतियों के यज्ञ के द्वारा उनके धूम के अन्तरिक्ष एवं पृथवी में प्रसारित होने से उन-उन प्रकार की खानों में उसी प्रकार के खनिज द्रव्यों के सूक्ष्म अंश को स्थूल रूप में अपने केन्द्र के साथ संग्रहीत होने में सहायता होती है और खनिज द्रव्यों में उन्हीं-उन्हीं पदार्थों की वृद्धि हो सकती है। यदि प्रत्येक धातु अभी द्रव रूप में और गैस रूप में भी परिणत की जा सकती है तो कभी वह द्रव्य द्रव एवं गैस रूप में भी था और अब भी वह इन रूपों में न्यूनाधिक मात्रा में पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में विद्यमान है। कभी उसकी अधिकता पृथ्वी में होती है तो कभी उनकी अधिकता अन्तरिक्ष तथा द्युलोक में हो जाती है। यज्ञ प्रक्रिया द्वारा उनका आकर्षण पृथ्वी में सम्भव होने से यज्ञ से खनिज पदार्थों की वृद्धि सम्भव है।

यज्ञ-विज्ञान के उपयोग द्वारा उपरोक्त प्रकार से जहां स्थूल जगत में परिवर्तन किये जा सकते हैं वहां विश्व के मानसिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में भी परिवर्तन किये जा सकते हैं—

६—यज्ञ द्वारा विश्व के मानस क्षेत्र में शान्ति, प्रेम, आस्तिकता, अभ्युदय, अनुशासन आदि की भावनाओं को जागृत किया जा सकता है और सुबुद्धि तथा सत्कर्मों की वृद्धि की जा सकती है।

इसी प्रकार के अनेक कार्य यज्ञ-विज्ञान से सम्पन्न हो सकते हैं तभी भूमण्डल में वेद प्रचार होगा हो सकेगा। हमने यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने, वृष्टि रोकने रोग दूर करने, आरोग्यता प्रदान करने, बुद्धि की वृद्धि सम्पादन करने, सम्पदा वृद्धि, वाक्शक्ति के विकास आदि में लाभ होते देखा है। यदि और भी अधिक परीक्षण करने का अवसर और एतदर्थ सहयोग प्राप्त हुआ तो यज्ञ-विज्ञान के अनेक कार्यों में सफलता से विज्ञान का विकास करने में हम समर्थ हो सकेंगे।

★ ★ ★

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त जिला सभाओं/समाजों के मन्त्री तथा प्रधान महोदय की सेवा में सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, प्रदेश की समस्त जिला उपप्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की एक नवीनतम संशोधित विवरण पत्रिका, जिसमें सभी वांछित सूचनाएं उपलब्ध रहेंगी, प्रकाशित करने जा रही है।

अतः कृपया निम्न प्रारूप में अपनी-अपनी जिला सभाओं तथा आर्य समाजों से सम्बन्धित विवरण पूर्ण रूप से भर कर मुझे दो प्रतियों में शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

प्रारूप

१–जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा/ आर्य समाज
का नाम एवं कार्यालय का पूरा पता......................
(यदि टेलीफोन हो तो उसका नम्बर)

२–समस्त सभासदों की संख्या..... ....
(सहायक सदस्य / आर्य सभासद)

३–वर्ष १९८८ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के
नाम एवं उनके आवासीय पते

(यदि घर पर फोन हो तो उसका नम्बर)........................

४–क्या जिला सभा मुख्यालय/ आर्य समाज
में आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभा स्थापित है?.........

५–यदि हां ? तो कबसे तथा क्या
उसमें नियमित शाखायें लगती हैं।............

नोट—यह विवरण पत्रिका आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहदधि-वेशन के अवसर पर समाजों के प्रतिनिधियों को लिखित आवेदन पर दे दी जायेगी। एक प्रति का मूल्य ५) रु० दसांश के साथ ही भेजना अनिवार्य होगा।

सभा मन्त्री

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

गंगापुर सिटी, ७ फरवरी। स्थानीय आर्य समाज द्वारा १ फरवरी से ७ फरवरी तक आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ डा० आनन्द-सुमन (तपोवन आश्रम देहरादून) के आचार्यत्व में बड़े ही हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी पं० प्रीतिप्रकाश जी (जयपुर), प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० सत्य-पाल 'सरल', कुं० भूपेन्द्रसिंह एवं श्री केशव देव शर्मा द्वारा शिक्षाप्रद प्रवचन एवं भजनोपदेश की झड़ी लगी। श्री ओम प्रकाश शास्त्री एवं श्रीमती सत्यवती स्नातिका (बयाना) द्वारा मधुर स्वरों से वेद पाठ किया गया।

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज अमेठी (जनपद सुल्तानपुर) में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आर्य समाज भवन में ऋषि बोधोत्सव समारोह मनाया गया जिसमें 'राजर्षि श्री रणञ्जयसिंह' एवं आचार्य श्री वेदप्रकाश जी प्रभृति के प्रभावशाली भाषण हुये। महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुये 'राजर्षि श्री रणञ्जयसिंह' ने कहा यदि हम लोग उनके बतलाये वैदिक मार्ग पर ठीक से चलते होते तो आज भारत क्या विश्व में प्रेम की गंगा दृष्टिगोचर होती और वास्तविक एकता तथा अखण्डता का प्रयास सफलीभूत होता।

सायंकाल सरायखेमा (अमेठी) में एक वृहत् सार्वजनिक सभा हुई वहां भी खेलकूद के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए राजर्षि महोदय ने कहा कि संसार का उपकार करना अर्थात शारीरिक, एवं सामाजिक उन्नति करना और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानना महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तानुसार सभी के लिये अनि-वार्य है।

उत्सव

(१)

आर्य समाज बाराबंकी का ६७ वां वार्षिकोत्सव १३ से १६ फर-वरी तक ससमारोह मनाया गया। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, सर्व धर्म सम्मेलन, शंका समाधान तथा कई अन्य रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत हुए। अनेक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों ने अपने सारगर्भित व्याख्यानों द्वारा जनता पर अच्छा प्रभाव डाला।

(२)

आर्य समाज डोमनपुर, धनैरा, बगहा, रामगढ़ (मिर्जापुर) का सम्मलित वार्षिकोत्सव १० से १६ फरवरी तक तथा आ० स० आही का उत्सव १७ तथा १८ फरवरी को सोत्साह मनाया गया। श्री पं० जयप्रकाश आर्य एवं श्री राजेश कुमार "पंछी" के उपदेशों और भजनों से जनता बहुत प्रभावित हुई।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३१/३/८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री का निधन !

बड़े दुःख के साथ यह समाचार प्रकाशित किया जा रहा है कि आर्यजगत के उद्भट विद्वान, विद्वद्वरेण्य आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री का महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली में दिनांक ११-३-८८ को रात्रि में १-३० बजे देहान्त हो गया। वे कई मास से पक्षाघात से पीड़ित थे।

उनके निधन से आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा पारिवारिकजनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

निर्वाचन-

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर

प्रधान-श्री सीताराम आर्य
मन्त्री-श्री शंकर लाल आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री सत्यनारायण प्रसाद

आर्य समाज आदर्श नगर, लखनऊ

प्रधान-श्री परमानन्द तलवार
मन्त्री-श्री मदन मोहन जोशी
कोषाध्यक्ष-श्री बसन्त प्रकाश बाबला

आर्यसमाज रांची (बिहार)

प्रधान-श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता
मन्त्री-श्री दयाराम पोद्दार
कोषाध्यक्ष-श्री भोलाराम सैनी

आर्यसमाज मेंहदावल (बस्ती)

प्रधान-श्री जगदीश प्रसाद
मन्त्री-श्री प्रभू दयालु गुप्त
कोषाध्यक्ष-श्री कान्त वर्मा

आर्यसमाज प्रेमनगर देहरादून

प्रधान-डा० आदर्श कुमार बंसल
मन्त्री-श्री रघुनन्दन लाल जी
कोषाध्यक्ष-श्री वेदानन्द त्यागी

आर्यसमाज गुलावठी [बुलन्दशहर]

प्रधान-श्री पं० फकीरचन्द शर्मा
मन्त्री-श्री धन प्रकाश अग्रवाल
कोषाध्यक्ष-श्री राजेश कुमार गुप्ता

आर्यसमाज देहराइच

प्रधान-श्री बख्शी राम मोहन जी
मन्त्री-श्री चरतसिंह जी
कोषाध्यक्ष-श्री हरीराम वर्मा

आर्यसमाज भृङ्गार नगर

प्रधान-श्री हंसराज नन्दा
मन्त्री-श्री रूपचन्द्र दीपक
कोषाध्यक्ष-श्री ओम प्रकाश मलिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए प्रतिनिधि-
१-आचार्य देवव्रत अवस्थी
२-श्री विक्रमादित्य 'बसन्त'
३-श्री अर्जुनदेव महात्मा
(पदेन) श्री कृष्ण बलदेव महात्मा

नगर आर्यसमाज रकाबगंज, लखनऊ,

प्रधाना-श्रीमती मनोरमा जी
महामन्त्री-श्री कुंवर शान्ति प्रकाश जी
मन्त्री-श्री रेवती रमण एडवोकेट
कोषाध्यक्ष-श्री जगत नारायण जी

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जनवरी ८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

८१८, १९५७, २६६८, ४२९३, ४२९८, ५४३६, ६३२२, ६३२८, ६६९४, ८१८३, ८४९६, ८७००, ८७०९, ८७१३, ९०७५, ९०८६, ९३९०, ९७९२, १००६३, १०१६७, ११०९८, ११४४४, ११४६२, ११४६४, ११४६५, ११४७०, ११४७७, ११८१७, १२०७८, १२०८४, १२०९६, १२१०२, १२५४९, १२५५१, १२५५५, १२६०४, १२८०४, १२८१६, १३०३५, १३३६६, १३३७०, १३३७२, १३३९८, १३४००, १३४०२, १३६६७, १३६७९, १३६८०, १३६८२, १३६८४, १३६८६, १३६८७, १३६८९, १३६९४, १४१५८, १४१५९, १४१६०, १४१६४, १४१६५, १४१६६, १४१६७, १४१६८, १४१६९, १४१७०, १४१७१, १४१७२, १४१७३, १४१७४, १४१७५।

मास फरवरी १९८८

७४३, ७९६, ९४३, १९२०, २२२३, २९३१, ४२७३, ४७८९, ४७९१, ५६०८, ५७९६, ६२५९, ६३५७, ८२०१, ८५१६, ९१००, ९१०६, ९८०८, ९८२०, ९८२२, ९८३४, १००९६, १००९७, १०११५, १११३७, ११५०५, ११५११, ११५१४, ११५४७, १२१११, १२११२, १२१२०, १२५७६, १२५८४, १२५८५, १२८२४, १२८३१, १२८४०, १३०५३, १३०५४, १३४२२, १३४२५, १३७०६, १३७१३, १३७२२, १४१७६, १४१७७, १४१७८, १४१७८ अ, १४१७९, १४१८०, १४१८१, १४१८२, १४१८३, १४१८४, १४१८५, १४१८६, १४१८७, १४१८८, १४१८९, १४१९०, १४१९१, १४१९२, १४१९३, १४१९४, १४१९५' १४१९६, १४१९७, १४१९८, १४१९९, १४२००, १४२०२, १४२०३, १४२०४।

विनीत-
व्यवस्थापक

आर्यसमाज उसंड, पो० बेहट, जनपद सहारनपुर

प्रधान-श्री मेघपाल जी
मन्त्री-श्री विजेन्द्र कुमार जी
कोषाध्यक्ष-श्री राम आर्य

आर्य समाज फर्रुखाबाद

प्रधान-श्री श्रीराम आर्य जी
मन्त्री-श्री हरिदत्त द्विवेदी जी
कोषाध्यक्ष-श्री राम प्रकाश आर्य

आर्य समाज जौनपुर

प्रधान-श्री अयोध्या प्रसाद शास्त्री
मन्त्री-श्री सुरेन्द्रकुमार जी
कोषाध्यक्ष-श्री पन्नालाल जी

धर्म पथिक बलिदानी

(श्री योगेश चन्द्र आर्य उपमन्त्री आर्य समाज चन्दौसी)

जन्म–पं० लेखराम का जन्म ८ चैत्र १९१५ वि० (१८५८ ई०) को सैयदपुर ग्राम (जि० जेहलम) पश्चिमी पंजाब में श्री मेहता तारासिंह सारस्वत ब्राह्मण परिवार में इस होनहार आर्य सपूत का जन्म हुआ। इनका सांवला बदन, शरीर गठीला, छाती और ललाट चौड़े थे।

शिक्षा-प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू तथा फारसी का अध्ययन हेतु इन्हें विद्यालय में प्रविष्ट करा दिया गया। ये विद्या व्यसनी तथा मेधावी बुद्धि के छात्र थे। इनकी हाजिर जवाबी से समस्त शिक्षक वर्ग इनसे अत्यधिक स्नेह रखते थे।

पुलिस में भर्ती–१७ दिसम्बर को पेशावर पुलिस में प्रवेश ले लिया। इनके कार्यों से प्रसन्न होकर इनके उच्च अधिकारियों ने इन्हें सार्जेंट बना दिया।

ईश्वर भक्त–यह ईश्वर भक्तिमें संलग्न रहते और गीता पाठ करते थे।

ऋषि एवं आर्य समाज के भक्त—

आ.स. के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों की धूम मची थी। आप भी उनके अमृतरूपी व्याख्यानों से प्रभावित हुए न रह सके। आपने पेशावर में आर्य समाज की स्थापना करके उनके कार्यक्रम को प्रसारित किया।

११ मई १८८० ई० को अजमेर मे स्वामी जी के दर्शनार्थ गये। वहां स्वामी जी से इतने अधिक प्रभावित हुए। कि उनके वैदिक धर्म का कार्य करने का निश्चय कर लिया।

स्वाभिमानी वीर—इन्सपेक्टर को आये एक मुसलिम अधिकारी ने इनके उत्तरों से खिन्न होकर छोटे पद पर नियुक्त कर दिया। स्वाभिमानी वीर पुरुष ने नौकरी को त्याग दिया।

अब दिन रात वैदिक धर्म के प्रचार की धुन सवार रहती थी। आर्य समाज पेशावर से मासिक पत्र निकाला। नौकरी के समय में ही आपने "बुराहीन अहमदिया" का उत्तर "तकजीब बुराहीन अहमदिया" लिखकर नगर में बंटवा दिया। हिन्दी की पुस्तकों का स्वाध्याय करने लगे।

विवाह-आपने ३५ वर्ष की अवस्था में कु० लक्ष्मी देवी से आदर्श विवाह किया।

पिता, भाई और पुत्र वियोग—आप शिमला आर्य समाज के उत्सव में धर्म प्रचार कार्य कर रहे थे। इधर पिता और भाई चल बसे। परन्तु कर्त्तव्य पथ पर डटे हुये धर्म प्रचार करते रहे। कुछ समय उपरांत पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

कुछ समय पश्चात् पुत्र भी बीमार हो गया। उसकी चिकित्सा करा रहे थे कि खबर मिली कि हिन्दू मुसलमान होने जा रहे हैं। आप तुरन्त सामान उठाकर चल दिये। जिस स्थान पर पहुंचना था, वहां रेल रुकती न थी। आप चलती रेल से कूद पड़े और खून में लथ-पथ अपने हिन्दू भाईयो से मिलकर पूंछा आपको अपने धर्म में क्या कष्ट है जो मुसलमान बन रहे हो।

लोगों ने आप से पूंछा पंडित जी आपके यह चोट कैसे आ गई, उन्होंने झट उत्तर दिया कि मुझे आपके विधर्मी होने की सूचना मिली थी पुत्र बीमार पड़ा है आपके यहां रेल रुकती नहीं है। अतः मैं रेल से कूदा हूं। आपको अपनी गोद में से विधर्मियो की गोद में कैसे जाने दूंगा। खबर दी एक आदमी ने आकर पुत्र संसार में नहीं रहा। बस क्या था। आपने कहा एक पुत्र गया हजारों पुत्र आर्य समाज की गोद में खेलेंगे।

सभी ने आपके नाम का जयकारा बोला और कभी विधर्मी न होने की प्रतिज्ञा की।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक–सभा से अपने खर्चे के लिए २५ रुपये मासिक लेते थे। विवाह उपरान्त ३०) से ३५) रुपये मासिक दक्षिणा लेते थे।

जो कुछ एक बार स्वाध्याय कर लेते थे। वह कभी भूलते नहीं थे। इन्होने समाधि लगाना भी सीख लिया था। वेदान्त की पुस्तकों के स्वाध्याय से अत्यधिक प्रभावित हुए। वेदो की प्रशंसा सुनकर संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ किया।

भाषण देना तथा पुस्तको का प्रकाशन—जगह-जगह भाषण देने के लिये सैकड़ों निमन्त्रण आने लगे और उन निमन्त्रण पत्रो पर विशेष ध्यान देते जो शुद्धि आन्दोलन से सम्बन्धित होते थे। साप्ताहिक एवं मासिक पत्रों का सम्पादन कराकर। वैदिक आर्य धर्म का प्रचार व प्रसार करने में सदैव सलग्न रहते थे। इसी कारण वह वैदिक सिंह कहलाते थे।

गोरक्षा—इन्होंने गोरक्षा का बीड़ा भी उठाया, इसी बीच जब विजय श्री इनके गले में जय माला डाल रही थी, दुर्भाग्य से आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द जी का निधन हो गया।

साप्ताहिक 'आर्य गजट' पंजाब के सम्पादक बनकर लेखो द्वारा जनता को आर्य धर्म की ओर आकर्षित करते रहे।

पंजाब सभा के आग्रह पर आपने दयानन्द जीवन चरित्र लिखने के लिए तूफानी दौरा किया तथा वेदों का प्रचार भी करते रहे। अनेकों स्थानों पर शुद्धि संस्कार किये। कुछ विधर्मी लोग इनके शत्रु बन गये। आप कहते थे "अपने धर्म के लिये मै बलिदान हो जाऊं" इससे बढ़कर और प्रसन्नता मुझे क्या हो सकती है।

इस समय आप प्रभावशाली व्याख्यान मार्तण्ड तथा शास्त्रार्थ महारथी बन चुके थे।

कर्तव्य परायणता, निडरता, मृदु भाषी परोपकारी और ईमानदारी आपके मानो अस्त्र थे।

साहित्य सेवी—आप एक यशस्वी और श्रेष्ठ साहित्यकार थे

(शेष पेज ११ पर)

"गोरक्षा का पावन व्रत"

आचार्य राजदेव शर्मा व्याकरणाचार्य, प्रधानाचार्य–आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा ।

तपःपूत आर्यों ! आज देश में गो माँ के ऊपर बहुत बड़ा अत्याचार हो रहा है । ऋषियों के देश में राष्ट्र माता गो-की दशा अतीव दयनीय हो गई है जिसका वर्णन करने में मेरी लेखनी मूक हो रही है । गो माँ की विपत्ति को देखकर बाल-ब्रह्मचारी योगिराज महर्षि दयानन्द जी ने भी अतीव हार्दिक वेदना अनुभव की थी तथा माँ की रक्षा हेतु "गो करुणा निधि" रचकर तैयार की थी । जिस माँ का दूध हमने पिया है यदि उस पर हमारे रहते अत्याचार होता है तो हमारा जीना निरर्थक है ।

लोग कहते हैं कि बाबा गांधी ने कहा था कि स्वतन्त्रता मिलने के बाद अपनी पहली कलम से गोहत्या बन्द कर दूंगा ।

गांधी के जीवन वृत तथा भारत के इतिवृत्त से ज्ञात होता है कि उन्होंने गोहत्या बन्दी के लिए कभी भी कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया । आज गोरक्षा जैसा अतीव महत्वपूर्ण कार्य स्वतन्त्रता मिलने के ४० वर्ष बाद भी सम्भव न हो सका ।

अंग्रेजी काल से भी अधिक मात्रा में आज आज गोएं कट रही हैं किन्तु हम आर्य लोग मूक दर्शक बनकर देख रहे हैं । गोहत्या के कारण गायों की संख्या तथा दुग्ध उत्पादन में अत्यधिक न्यूनता आ गई है ।

भारत स्वतन्त्र होने पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति–डा० राजेन्द्र प्रसाद ने गांधी जी को बताया कि "मेरे पास हजारों की संख्या में तार व पत्र आये हैं कि देश स्वतन्त्र हो गया है ।

अतः गो हत्या बन्द की जाये ।" तब बाबा गांधी ने जो उत्तर दिया वह प्रत्येक विचारशील आर्य के लिये ध्यान से पढ़ने योग्य है कि "हम किसी पर गो हत्या न करने के कानून को बलात थोप नहीं सकते जो गोरक्षा की मांग करते हैं उनको चाहिए कि इस देश में मुसलमान, ईसाई, पारसी भी बसते हैं हम उनके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते" गांधी का एक और वक्तव्य ध्यान से पढ़ने योग्य है जो कि दैनिक प्रताप लाहौर में–२६-१२-२४ को छपा था गांधी ने कहा था "मैं कट्टर सनातनी धर्मी हूं, परन्तु एक मुसलमान को अधिकार दूंगा कि यदि उसका विश्वास है तो वह निःसन्देह गाय मांस खाए, यदि कुरान किसी को गोवध की आज्ञा देता है तो मैं कौन हूं जो उन्हें जबरदस्ती मना कर सकूं ।"

आर्य बन्धुओं ! अब आप विचार कीजिये कि बाबा गांधी मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं । यदि हैं तो क्या मनुष्यता का लक्षण यही है कि मूक पशुओं पर आरा चले तथा उनके ऊपर गरम पानी डाल कर ऊपर से डण्डों से पिटाई करके जीवित ही खालें उतारी जाएं किन्तु एक मनुष्य कहाने वाले व्यक्ति का हृदय करुणा से द्रवित न हो बल्कि वे रक्त से सने हुए धन को पाने में अत्यन्त आनन्दित हों मैं ऐसे नरतन धारी जन्तुओं को कभी भी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिन सकता ।

आर्यो गोरक्षा जैसा महत्वपूर्ण कार्य बिना क्रांतिकारी बलिदानों के सम्भव नहीं हैं अतः आर्यो ! वेद के आदेश को अपने बलबूते पर चरितार्थ करो ।

क्योंकि वेद का आदेश है—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तन्त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसोऽवीरहा ॥
(अथर्व०)

यद्यपि पशुओं के हत्यारों को मारने के लिए आर्य वीरों तैयार हो जाओ तथा दुष्ट कसाइयों को घेर-घेर कर मारो तब कहीं सौ, पचास मरने पर यह सरकार तुम्हारी बात सुनेगी, इतना करने के बाद ही भारत से गोहत्या का कलंक दूर हो पायेगा । अन्यथा तुम कितने ही चिल्लाते रहो उनके कानों पर जूं नहीं रेंगेगी ।

ये सबके सब गोहत्यारे, नास्तिक, मांसभक्षी तथा मद्य पानादि करने वाले दुष्कर्मी है इनसे कोई आशा करना दुराशा मात्र है ।

अतः आर्यो ! जिस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता आर्य वीरों के बलिदान से मिली उसी प्रकार गोरक्षा भी बलिदान चाहती है ।

धर्म पथिक बलिदानी

(शेष पृष्ठ १० से आगे)

इस्लाम धर्म के समीक्षकों में पंडित जी का गौरवपूर्ण सर्व प्रथम स्थान है । सर्वश्रेष्ठ और मौलिक उर्दू रचना ऋषि दयानन्द की जीवनी है ।

रचनाएं—आपने लगभग दो दर्जन पुस्तकों से अधिक लिखी हैं जो आर्य साहित्य की अमूल्य निधि है ।

शुद्धि के लिये हर समय जीवन की चिन्ता किये बिना तैयार रहते थे । दिल्ली और बम्बई में अनेकों मुसलमानों ने मुकद्दमे चलाये । जिनमें से एक में बुलाया गया और शेष रद्द कर दिये गये । आप शुद्धि आन्दोलन के शास्त्रार्थ महारथी थे ।

घातक का प्रवेश—जब यह लाहौर में दयानन्द जीवन चरित्र लिख रहे थे । उसी समय एक धर्मान्ध मुसलमान इनके कमरे में कम्बल ओढ़े आया और बोला मैं शुद्ध होना चाहता हूं । माता जी ने कहा बेटा लेखराम तेल नहीं है । इन्होंने लिखना बन्द किया और जैसे ही अंगड़ाई ली वैसे ही ६ मार्च १८९७ ई० को घातक ने इनके पेट में छुरा भोंक दिया । तुरन्त डेढ़ घण्टे के उपरान्त आपके प्राण पखेरू उड़ गये । समस्त आर्य बन्धुओं में अपने महान विद्वान के आकस्मिक निधन से शोक की लहर दौड़ गई । दूर-दूर के अन्य नगरों से शव यात्रा में सम्मिलित होने के लिये आर्य सन्यासी, नेता और कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त दूसरे धर्मों के लोग भी भारी संख्या में पधारे ।

शव यात्रा—आर्य समाज भवन लहौर में आपका शव जनता के दर्शनार्थ रखा गया । श्वेत वस्त्रों में लिपटी अर्थी सजायी गई । शव यात्रा में लगभग १ लाख नर-नारियों एवं बच्चों का अपार समूह चल रहा था । मार्ग के दोनों ओर के छज्जे महिलाओं और बच्चों के भार से नीचे झुकी जा रही थीं । इनकी वसीयत को इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है ।

धर्म के मग में अधर्मी से कभी डरना नहीं ।
चेतकर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं ।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४८०९३ ४५८८१
पंजीकरण सं० एल० डब्लू/एन पी. ७४
एक प्रति मूल्य १०
१३ मार्च रविवार १९८८ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

ऋषि बोध पर्व पर—

सुन्दर सुझाव

[बहिन श्री कुन्दनलाल जी आर्य [illegible] लखनऊ]

[बहिन श्री [illegible] तपोनिष्ठ आर्य [illegible] हैं। उनका प्रस्तुत लेख सामयिक समस्या पर महत्त्वपूर्ण उपयोगी सुझाव प्रस्तुत कर रहा है, हम उसे यहां अविकल उद्धृत कर रहे हैं क्योंकि यह समाज की सेवा का क्रियात्मक स्वरूप है। विदुषी आर्य बहिन माधुरी के प्रस्ताव पर प्रत्येक आर्य गम्भीरता से विचार करे निर्णय में आर्यमित्र का पूरा-पूरा सहयोग उन्हें मिलेगा। सम्पादक]

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव पर लखनऊ नगर में आर्यों की सुन्दर आकर्षक श्रद्धा से परिपूर्ण शोभा यात्रा निकाली गई और वैदिक धर्म की जय-महर्षि दयानन्द के जयकारों से वातावरण गूंज उठा जिसकी सफलता का श्रेय जिला सभा के प्रधान श्री [illegible] देव जी महात्मा [illegible] मन्त्री श्री सत्यदेव जी सभी को है।

इस शोभा यात्रा की समाप्ति के पश्चात नगर आर्यसमाज मोतीनगर रकाबगंज में एक सभा [illegible] की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें श्री पं० [illegible] पाठक प्रधान सम्पादक आर्यमित्र सहित अनेक विद्वानों एवं विदुषी महिलाओं ने महर्षि को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी सभा में हमारी विदुषी बहिन माधुरी श्रीवास्तव जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते समय एक सुन्दर प्रस्ताव आर्यों के सामने रखा जिसका स्वागत होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज आर्यसमाज में नवयुवक एवं नवयुवतियां नहीं आ रहीं— साथ ही माता-पिता को यह शिकायत है कि हम सम्बन्ध करने के लिए आर्य विचारों के लड़के-लड़कियां नहीं मिलते। इन दोनों समस्याओं की पूर्ति के लिए यह अच्छा है कि हम आर्यसमाज के लोग आपस में ही लड़की लड़कों के विवाह करें।

पूज्या बहिन जी के इस सुन्दर प्रस्ताव का हम हार्दिक अनुमोदन करते हैं और आर्यजगत से अनुरोध करते हैं कि इस बात को आवश्यक मानकर इसका अनुसरण किया जाये। इस कार्य में जहां रिश्ते नातों में सुगमता होगी—वहीं आर्यसमाज का संगठन भी शक्तिशाली होगा। साथ ही दहेज की समस्या एवं [illegible] जाति पांति की समस्यायें स्वयमेव हल हो जायेंगी।

ऋषि बोध सप्ताह

(१) आर्यसमाज मेरठ शहर में ऋषिबोध सप्ताह के अवसर पर श्री स्वामी वेद मुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक आश्रम नजीबाबाद (बिजनौर) की कथा होती रही। प्रातः [illegible] से ८ [illegible] बजे तक पारिवारिक सत्संगों में भी श्री स्वामी जी के प्रवचन होते रहे। श्री इन्द्रराज [illegible] एवं श्री मनोहरलाल जी प्रधान द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(२) दि० [illegible] को प्रातः ८ बजे आर्य समाज जवाहर नगर मालकुली द्वारा शिवरात्रि पर्व के उपलक्ष में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें [illegible] आर्य समिति के प्रधान श्री मानसिंह जी [illegible] एवं श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० भी सम्मिलित हुए।

(३) दि० १ [illegible] को [illegible] १ बजे आर्यसमाज दयानन्द [illegible] की ओर से एक भव्य शोभा यात्रा शिवरात्रि के उपलक्ष में निकाली गई जो नगर के प्रमुख बाजारों में से निकली। वहां की आर्यसमाजों ने भी इसमें भाग लिया। श्री मानसिंह जी वर्मा [illegible] आर्य [illegible] समिति तथा श्री पं० इन्द्रराजजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] में सम्मिलित हुए।

(४) आर्यसमाज [illegible] में श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री [illegible] महारथी के [illegible] व्याख्यान हुए तथा वो पारिवारिक सत्संगों [illegible] प्रवचन हुए।

(५) आर्यसमाज [illegible] सुल्तानपुर में दि० १७-[illegible] को ऋषि बोध दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी के पहुंचने पर जिले भर के आर्यसमाजों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। श्री [illegible] शंकरानन्द जी के प्रवचन के पश्चात श्री [illegible] प्रधान एवं श्री विद्यासागर जी मन्त्री द्वारा आयोजित गरीब महिलाओं को सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी द्वारा वस्त्र वितरित किये गये तथा अपने व्याख्यान में सभा प्रधान ने आर्य समाज का भारत की वर्तमान अवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालते हुए आर्य जनों से संगठित होकर सभा के [illegible] में कार्य करने पर बल दिया। उन्होंने आर्यसमाज [illegible] के अधिकारियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने अपने में युवाशक्ति को स्थान देकर सेवा के कार्य करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। इस समय देश विघटन के कगार पर है। विदेशी शक्तियाँ देश के टुकड़े टुकड़े करना चाहती हैं। आर्यसमाज को जागरूक होकर अपने अन्दर और बाहर विघटनकारी शक्तियों से लोहा लेना है।

आशा है आर्यसमाज इस विकट समय में महत्त्वपूर्ण भूमिका अपनाएगा। श्री बी०पी० गौतम [illegible] मन्त्री ने प्रधान जी एवं अन्य महानुभावों का धन्यवाद किया।

—संवाददाता

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एस० पी० ([illegible]) चारबाग, लखनऊ में श्री [illegible] गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४।१५७ | घोषणा पत्र स ०१२८-१-८५

चैत्र शुक्ल ३, रविवार, सम्वत २०४४ वि०, दिनांक २८ मार्च १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

संस्कृत के लिए ... का ...
... में उ...मण ...
हमारे देश की विविध धर्म-निरपेक्षता
... एवं सार सूचनायें
सूचनायें
आर्यसमाजों के वार्षिक ...
आर्य ... के वार्षिक निर्वाचन

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

प्रधान सम्पादक—
डा० ... पाठक एम० ए०, ...
... प्रकाश

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	... ३५)
छमाही	१३)
विशेष अंक	१५ पैसे

४१

१२

❀ संस्कृतस्य रक्षार्थमुत्तिष्ठ ❀

★ ★ ★

उस परमपरमात्मा ने सृष्टि के आदि में जहाँ हमें अनेक कल्याणकारी पदार्थ प्रदान किए वहाँ उसने अपने अपार ज्ञान का ... भी भाषा और ... के ... हमें प्रदान किया— ... संस्कृत ... । हम ... ऋषियों के हृदय में ज्ञान के ... जिस भाषा के साथ प्राप्त हुई उसी वाक् भाषा को, उनका व्याकरणिक ... नाम दिया गया संस्कृत के नाम से ... — गीर्वाणवाणी सरस्वती । इतिहास साक्षी है ... के आदि ... लेकर महाभारत ... मानव समाज की भाषा संस्कृत थी ... का ... भी साहित्य उपलब्ध है ... संस्कृत में है । कालान्तर में ... विभाजित ... हुई समय और ... के कारण इसको अनेकानेक ... विश्व में प्रचलित हुई । ... आदि ... प्राकृत ... इस प्रकार ... प्रचलित ... गई । आज का ... वैज्ञानिक ... स्वीकार करता है कि सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है और प्रत्येक भाषा में संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों के अनेक ... पाये जाते हैं ।

भाषा के साथ भाषा ... घनिष्ठ सम्बन्ध जुड़ा हुआ है क्योंकि ... इतिहास ... छिपा रहता है । संस्कृत की अपनी ... एवं ... की ... क्षमता को ... कोई भी भाषा ... नहीं कर सकती ... देवभाषा आज भी कोटि कोटि हृदयों की पूजनीय भाषा ... के साथ रहता ... पश्चात् इस भाषा को ... राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान ... इसका गौरवमय पद ... राष्ट्र में ... संस्कृत के ... पूजनीय ... और ... किया है । परिणाम ... हम अपनी सांस्कृतिक विरासत के ... और हमारी भावात्मक एकता का स्वप्न ... हो रहा है ।

आर्यसमाज संस्कृत को ... गौरवमय पद पर आसीन देखना चाहता है ... अस्मिता की सुरक्षा ... शक्तियों द्वारा ... अनेक विघटनकारी ... और राजनैतिक अव्यवस्थाओं के कुप्रभावों ... सांस्कृतिक अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने में ... सहायक ... स्तर पर ... अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख सकते हैं । ... लखनऊ में अखिल भारतीय संस्कृत महा सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है जिसकी ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती कर रहे हैं । आर्य मित्र समस्त भारतीय जनता से इस सम्मेलन को सफल बनाने की अपेक्षा करता है ।

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

वे आंख मीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—चैत्र शुक्ल १ संवत् २०४५, रविवार २० मार्च १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

करिश्मा विश्वासों का—

सत्य की गहराइयों में—

एक समाचार—

… … और मिन्नतें पूरी होने पर ख्वाजा जी की मजार पर वे देग में चावल पकाते हैं। एक देग में साठ मन दूसरी में १२० मन। जब चावल पकने लगता है तो वे उबलती देगों में कूद पड़ते हैं और बड़े-बड़े बर्तनों से देग खाली करने लगते हैं। शरीर पर नाममात्र के कपड़े पहने रहते हैं, करिश्मा ख्वाजा साहब का, कूदने वालों का कुछ नहीं बिगड़ता— वाह धन्य है ख्वाजा साहब।

… …और मृतपति के शव को गोद में लेकर, घूंघट काढ़ने वाली, पतिपरायणा, बीसवीं सदी की दुलहिन, कुकर्मी, अधर्मी, पापाचारी, व्यभिचारी पति के साथ "देवयानेन गच्छति स्वर्गलोकम् सुखानि पश्यन्" चिता में जलकर मर गई, खुद भी तरी, उसे भी तारा (कुकर्मी को भी नैया पार... खुद भी पार)

धन्य है सती नारी का करिश्मा।

… … और आई बकरीद, हजरत इब्राहीम की यादगारे कुर्बानी, रहमत से भरे हुए का नाम लेकर, जिबह किया बेजुबानों को तो, खुश हो गया परवरदिगार, क्या कहने · मांस खाया हमने मजाबेदार, वह भी खुश हम भी खुश। वाह री रहमत···कटने वाले से भी तो पूछो वह क्या कहता है।

… … भिड़ गये आपस में दोनों बोलते हैं, हम हैं सच्चे, फिर झूठा कौन? । एक ने कहा हम "ऋषि" की जय बोलते हैं दूसरे ने कहा हम महर्षि की जय बोलते हैं···हम बड़े हैं अधिकार हमें मिलना चाहिये। और इसी में बीत गई कितनी रातें, महारातें, भूल गये, हमें कुछ करना था—ऋषिऋण चुकाना था—वह तो भूल ही गये, जवाब क्या देंगे वहां—आर्य हो कि अनार्य?

ज्ञान विज्ञान की ऊंचाईयों को छूते हुए, लांघते हुए इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ने वाले दुनियां के वासियो? सच-सच बताना—मन क्या कहता है, बुद्धि क्या जवाब देती है। आज तुम न हिन्दू हो न मुसलमान न ईसाई हो न सिक्ख, न पारसी हो न यहूदी तुम आखिर हो, दुनियांके—विद्वान्, धीमान् ज्ञानवान् ज्ञानवतीनाः भगवान्। तुमने दूध का दूध पानी का पानी किया है। क्या उसके नाम पर···इस सुन्दर मानव चोले को इन्हीं पाखण्ड भरे नाना कार्यों में उलझाते रहोगे, धरम का तमाशा देखते रहोगे। कहीं ऐसा तो नहीं है—"बिखरा भरा झमकवट देवे।" देखो वेद कहता है—"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्" सुवर्ण के ढक्कन ने सच्चाई को छुपा लिया है। हे मेरे पुत्र! उस सच्चाई को निर्भयता से उजागर कर दे, उसे ऋषिवर की तरह यही सच है, यही धर्म है और यही आर्य समाज की आवाज है।

अखिल भारतीय संस्कृत महासम्मेलनम्

लक्ष्मणपुरम्। केन्द्रशासनेन नवशिक्षा नीतेऽप्रवर्तमाने त्रिभाषा-सूत्रात् संस्कृतं सर्वथा बहिष्कृतम्। नेदानीं कोऽपि जनः इच्छन्नपि संस्कृतं पठितुं पारयिष्यति। अतः नव शिक्षा नीतौ संस्कृतस्य पुनः प्रतिष्ठा हेतौ उत्तर प्रदेशस्य राजधान्यां डी० ए० वी० कालेजस्य प्राङ्गणे अप्रैलमासस्य। ९, १०, ११, तिथिषु अखिल भारतीय संस्कृत-महासम्मेलनस्य आयोजनं सम्पत्स्यते। अस्योद्घाटनं सार्व-देशिक आर्य प्रतिनिधि सभायाः मान्यः प्रधानः श्रीमद्रामचन्द्रराव वन्दे-स्वामि महाभागकरकमलैः भविष्यति।

अस्मिन् सम्मेलने भारतवर्षस्य सर्वेभ्यः प्रदेशेभ्यः विद्वांसः, महा-त्मानो धर्माचार्याश्च समा-गमिष्यन्ति। सम्मेलनं दिनत्रयं यावत् चलि-ष्यति। अनेके प्रस्तावाः पारिताः भविष्यन्ति। यदि शासनेन संस्कृतस्य प्रतिष्ठा न भविष्यति तर्हि आन्दोलनस्यापि प्रवर्तनं भविष्यतीति सुनि-श्चितम्। सर्वेषामार्यजनानां संस्कृतानुरागिणाञ्च सहयोगः अपेक्षितः—

—प्रबन्ध सम्पादक:

मुस्लिम युवक व युवती ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर—आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज के प्रधान प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने एक मुस्लिम युवक आफताब खां तथा एक मुस्लिम युवती यासमीन को उनकी इच्छा-नुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश कराया।

फर्रुखाबाद निवासी २३ वर्षीय आफताब खां का शुद्धि के बाद एक हिन्दू लड़की सुनीता देवी के साथ तथा २० वर्षीय यासमीन का उसकी इच्छानुसार श्री घनश्याम गुप्त के साथ विवाह करा दिया गया।

इस अवसर पर देवीदास आर्य ने कहा वैदिक धर्म ही ईश्वरी धर्म है। दूसरे मत मनुष्यकृत हैं। समारोह में उपस्थित लोगों ने दोनों जोड़ों का स्वागत किया तथा आशीर्वाद दिया।

मन्त्री

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३१/३/८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

"नववर्ष में उत्क्रमण की ओर"

[श्री पं० इन्द्रराज प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

जनवरी सन् १९८८ का मास बड़ा महत्वपूर्ण है। जहाँ इसका प्रारम्भ पंजाब में उग्रवाद के रक्तपात से हुआ। जहाँ गोरखालैण्ड के लिए हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। जहाँ लंका में हमारी शांति सेना लिट्टे हिंसा वादियों से जूझ रही है। वहीं इसी महीने की १२ तारीख को एक महान् पुरुष का जन्म भी हुआ था। उनका नाम था "स्वामी विवेकानन्द"। संसार में वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाने वाले स्वामी विवेकानन्दजी ने अमेरिका में जब एक विशाल जन समूह को भाइयों और बहनों करके सम्बोधित किया तब हजारों विदेशी भाइयों का इस सम्बोधन मात्र से मन मोह लिया। जहाँ "लेडीज एण्ड जेन्टलमेन" के सम्बोधन के अतिरिक्त कभी किसी विदेशी ने कोई और सम्बोधन ही नहीं सुना था। तत्पश्चात् आदर भक्तिपरक व्याख्यानों ने भौतिकवाद को हिलाकर रख दिया। विदेशियों को आभास हुआ कि यदि सच्ची शान्ति कहीं उपलब्ध हो सकती है तो केवल मात्र एक वेद का ही रास्ता है।

इसी मास में दूसरा पर्व है "मकर और संक्रान्ति"। इस पर्व से सूर्य अपना रास्ता बदलकर दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर चलने लगता है। प्रकाश बढ़ने लगता है और अन्धकार घटने लगता है। इस पर्व का भी सारे देश में बहुत महत्व है। पंजाब में लोहड़ी के नाम से, गुजरात में उत्तरायण के नाम से, असम में भोगाली बहू के नाम से, आन्ध्र प्रदेश में उगादि के नाम से और तामिलनाडू में पोंगल के नाम से यह पर्व बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाता है। महाभारत में भीष्म पितामह ने शरशैया पर पड़े-पड़े इस पर्व की प्रतीक्षा की और उत्तरायण में अपने प्राण छोड़े। इस पर्व पर तिल, तूल (रुई) और तेल के दान का विशेष महत्व है। यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हमारे जीवन में, परिवार में, समाज में और संसार में उत्तरायण आना चाहिए। हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ना चाहिए। हिंसा, लूटपाट, छीना झपटी, भय आदि सभी दुर्गुण अन्धकार हैं। अहिंसा, प्रेम, विश्वबन्धुत्व, ज्ञान का प्रचार-प्रसार, ये प्रकाश हैं। हमारे जीवन में सद्गुण रूपी प्रकाश आवे और हम दुर्गुण रूप अन्धकार से दूर हों यह ही इस पर्व की महान प्रेरणा है।

इसी मास में तीसरा पर्व हकीकत राय के बलिदान का दिवस है। २१ जनवरी बसन्त पञ्चमी वाले दिन उस छोटे से बच्चे का वैदिक हिन्दु धर्म पर महान् बलिदान हुआ था। छोटे से शरीर में बहुत बड़ी आत्मा थी। उसने बूढ़े माता-पिता का ध्यान नहीं किया, छोटी-सी धर्म पत्नी का ध्यान नहीं किया, और बिलखती बूढ़ी असहाय सास का ध्यान नहीं किया। अदालत जब उसकी छोटी उम्र पर रहम खा कर उसे मुसलमान बनने की बात कहती थी तब वह बहुत छोटा बच्चा दृढ़ता से पूछता था कि क्या मुसलमान बनने पर मैं मौत से बच जाऊँगा। जब उत्तर मिलता था कि कोई भी प्राणी चाहे हिन्दू हो या मुसलमान मृत्यु से नहीं बच सकता तो वह छोटा-सा वीर पुरुष कह उठता था कि अपने वैदिक हिन्दू धर्म को छोड़ कर मैं भगवान के प्रति द्रोह नहीं कर सकता, चाहे मेरा जीवन रहे या न रहे। और एक दिन उसे जल्लाद के हवाले कर दिया गया और बसन्त पंचमी वाले दिन वह धर्म की बलिवेदी पर हंसते-हंसते बलिदान हो गया। क्या उसका बलिदान व्यर्थ जायेगा। नहीं-नहीं भारत को धर्म परिवर्तन की एक बहुत बड़ी बाढ़ से रोकना होगा। अन्यथा भारत, भारत नहीं रहेगा। वीर हकीकतराय की आत्मा पुकार-पुकार कर कह रही है ऐ हिन्दुओ उदार बनो, किसी बाहर वाले को शरण दो, धर्म और ईमान बेचकर किसी की शरण में मत जाओ। तुम्हारे विशाल वैदिक धर्म में किस बात की कमी है।

२३ जनवरी को ही नेता सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिवस है। आजादी को संघर्ष से प्राप्त करने वाले सुभाष ने कहा था तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। इस आवाज पर हजारों नौजवानों ने आजादहिन्द फौज में अपनी जवानियाँ नेता जी को समर्पित कर दीं। हिन्दू-मुसलमान सिक्ख-ईसाई उसके झण्डे के नीचे एक हो गए। भारत की आजादी का बिगुल बज गया। नेता जी के पीछे केवल युवक ही नहीं चले अपितु युवा देवियों की झांसी की रानी की रेजीमेन्ट भी बनी। उस अकेले सुभाष ने अंग्रेजों को हिलाकर रख दिया। आखिर वह बलिदान हो गया। उसके उग्र संघर्ष के कारण अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश होना पड़ा। आज भी नेता जी सुभाष को लोग मृत नहीं मानते। वह अब भी जीवित के समान है। साम्प्रदायिक एकता का नेतृत्व देने वाले नेता जी के लिए आज भी भारतवासियों की आंखें तरस रही हैं। क्या निर्दोषों का रक्त बहाने वाले इस बलिदान से कोई पाठ सीख सकेंगे।

२३ जनवरी को ही बसन्त पंचमी का भी पर्व है। प्रकृति अपना परिधान बदल रही है। पेड़ पौधों में नवीनता। पशु पक्षियों में नये बाल और नये पंख। सर्वत्र नवीनता के दर्शन। प्रकृति पुरुष को भी इस अपने मूक परिधान परिवर्तन से प्रेरणा दे रही है कि ऐ मानव! उग्र पुरुषार्थ कर और अपने-अपने परिवार और अपने समाज में भी एक सुनहरा परिवर्तन ला जहां दरिद्रता, भूख, नग्नता, अज्ञानता और अभाव का दर्शन न हो सके। जहां वैभव, समृद्धि, ज्ञान, प्रकाश और सम्पन्नता दिखलाई दे। कैसी अनोखी है प्रकृति की मूक प्रेरणा। जैसे प्रकृति कह रही हो बस—अन्त, और हिंसा, अशान्ति, दरिद्रता और अन्धकार नहीं चाहिए, अब तो इनका अन्त ही करना है। फिर २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस। आज देश में भ्रष्टाचार, दुराचार, अन्धविश्वास, अविश्वास, आलस्य, प्रमाद, अखाद्य पदार्थों का सेवन, मद्यपान, जुआ आदि दुर्गुण और दुर्व्यसन, चारों तरफ फैलते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि वे सब मिलकर हमारे गणतन्त्र को खा जायेंगे। आज इस गणतन्त्र दिवस पर संकल्प लेना होगा कि हम इस को अक्षुण बनाए रखेंगे। अन्न तथा पशुबलि के प्रतीक हैं। गणतन्त्र मानवता का प्रतीक है। आज न्यायपालिका, विचारों की स्वतन्त्रता तथा चरित्र निर्माण इन तीनों का विकास ही गणतन्त्र को जीवित रखने का एक उपाय है। विदेशी शक्तियों के इशारों पर अराष्ट्रीय लोग इस गणतन्त्र को छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं। अपने गणतन्त्र की रक्षा करने के संकल्प मात्र से उन विघटनकारी तत्वों का नाश होना स्वाभाविक है।

आइए! देश की रक्षा के निमित इन पर्वों से प्रेरणा प्राप्त कर त्याग और बलिदान की भावना से देश रक्षा में जुट जावें। हमारी कामनायें परमपिता परमात्मा पूर्ण करें।

★

वेद का अनर्थ–

मरुतों के पिता रुद्र की कथा

[आचार्य वीरेन्द्र मुनि, अध्यक्ष विश्ववेद परिषद, लखनऊ]

वेद प्रदीप पत्रिका (जनवरी १९८८) में स्वामी गंगेश्वरानन्द उदासीन ने अपनी वेदोपदेश चन्द्रिका का २८ वाँ निबन्ध 'उपकार सन्तों का सहज कार्य' शीर्षक से एक पृष्ठ ३७ पर प्रकाशित कराया है, जिसमें वेद मन्त्र के साथ रुद्र और मरुतों की एक लम्बी कथा भी दी है जिसका वेद मन्त्र के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। किन्तु सायण भाष्य और पुराणों से प्रभावित स्वामी गङ्गेश्वरानन्द ने इस कथा का सम्बन्ध इस मन्त्र के साथ जोड़ दिया और इस ऋचा को कथा सूचक बता दिया। मन्त्र इस प्रकार है–

> इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादो=स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
> रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृल ॥
> (ऋग्वेद १–११४–६)

सायण और श्री गंगेश्वरानन्द का अर्थ–कुत्स ऋषि कहते हैं कि हम मरुद्गणों के पिता रुद्र के लिए यह स्तुति वचन बोल रहे हैं जो मधु, घृत आदि से स्वादुतर, मधुरतर और अति हर्षजनक है। ये वचन स्तुत्य पुरुष के संवर्धक हैं (स्तोत्र से प्रसन्न हो देवता हृष्ट-पुष्ट बन जाते हैं)। हे अमर रुद्र, आप हमें मनुष्यों का भोजन अर्थात् मुझे पौत्र देकर सुखी करें।

१–इस अर्थ कुत्स को स्तुति वचन बोलने वाला अर्थात् मन्त्र निर्माता बताना अनुचित है क्योंकि वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है। कुत्स ऋषि तो इस मन्त्र का द्रष्टा (प्रचारक) मात्र है।

२–यहाँ रुद्र कोई व्यक्ति विशेष नहीं, क्योंकि वेद में मनुष्यों का अनित्य इतिहास नहीं है। यह गुरु, वैद्य और उपदेशक है।

३–मरुद्गण भी व्यक्ति विशेष नहीं हैं। आधिभौतिक अर्थ में ये मनुष्य तथा शिष्य हैं।

४–क्या देवता खुशामदी है जो स्तुति से हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं ?

५–पौत्र को मनुष्यों का भोजन बताना गलत है। भोजन तो खाया जाता है, क्या पौत्र भी खाने की वस्तु है ?

श्री गंगेश्वरानन्द ने पूरी वैदिक कथा इस प्रकार दी है–

प्राचीन काल में असुरों के उपद्रव बढ़ गये थे तो देवराज इन्द्र ने भीषण आक्रमण कर उनको पछाड़ दिया। अपने पुत्रों की यह दुर्दशा असुरों की माता दिति से देखी नहीं गई। उसने इन्द्र के हनन में समर्थ पुत्र की कामना से उग्र तप किया, फलस्वरूप उसके पति कश्यप ने उसे गर्भ धारण कराया।

देवराज इन्द्र को जब इस रहस्य का पता चला तो वे वज्र से सूक्ष्म रूप धारण कर दिति के उदर में प्रविष्ट हो गये और उन्होंने वहां स्थित गर्भ के सात टुकड़े कर दिये। पुनः उन सात खण्डों के प्रत्येक सात–सात खण्ड कर दिये। सारे टुकड़े जरायु से बाहर निकल पड़े और जोर–जोर से रोने लगे। असुर माता दिति यह सब देख अत्यन्त खिन्न हो उठी। उसे चैन नहीं पड़ रहा था।

इसी बीच क्रीडार्थ निकले शंकर–पार्वती उसी स्थल पर आ पहुंचे। वह दयनीय दृश्य देख पार्वती का नारी–हृदय अत्यन्त करुणाप्लुत हो उठा। गर्भ खण्डों से माता दिति के महान शोक को जानकर तो जगज्जननी का धैर्य टूटने लगा।

उन्होंने देवदेव से कहा–नाथ, यदि आपका सचमुच मुझ पर असीम प्रेम है तो इन सभी खण्डों को मेरे पुत्र बनादें। पालपोसकर मैं इन्हें जिला लूंगी। देखिए, इनकी माता ने कितने उग्र तपसे इन्हें पाया है। फल निर्मम इन्द्र ने खण्ड–खण्ड कर दिया। बेचारी दिति माता बिलख रही है। आपसे इसकी पीड़ा देखी जाती है ?

आशुतोष भोले बाबा को भी इस घटना ने विचलित कर दिया और अर्धाङ्गिनी के सत्याग्रह से वशीभूत हो उन्होंने लीलामात्र से उन सभी खण्डों को समान रूप, वय तथा वस्त्रालङ्कारों वाले दिव्य पुत्र बना दिया और जगत् माता गौरी को यह कहकर सौंप दिया कि 'लो, अब ये तुम्हारे पुत्र हो गये, इन्हें सम्भालो।

दिति को जब इसका पता चला तो उसका सारा खेद मिट गया और वह पूर्ण आश्वस्त हो गयी। प्रसविनी जननी मात्र इतना ही चाहती है कि मेरा गर्भ सुरक्षित रहे। बालक जी जाय, फिर वह कहीं भी रहे, या किसी का बन जाय। उस निरुपाधि ममता-मयी को इसकी परवाह नहीं रहती।

भगवान् शंकर ने इन मांस खण्डों में नवजीवन भरकर ४९ पुत्र बनाये। अतएव अबसे ये मरुद्गण 'रुद्र पुत्र' के रूप से स्तुत होने लगे। भगवान् रुद्र इनके पिता माने जाने लगे।

सन्त इसी तरह लीलावश परोपकार किया करते हैं।

समीक्षा–कहानी सच्ची नहीं है। पौराणिकों द्वारा कल्पित है। इस पर कई प्रश्न उपस्थित होते हैं–

१–इन्द्र देवों का राजा था उसने यह कुकृत्य क्यों किया ?

२–वेद में इन्द्र कोई व्यक्ति विशेष नहीं है।

३–कश्यप और दिति भी व्यक्ति विशेष नहीं हैं।

४–वज्र ले गर्भ में इन्द्र कैसे घुसे ? यह सृष्टिक्रम विरुद्ध है।

५–सात ही टुकड़े क्यों किये ? फिर प्रत्येक के ७ ही टुकड़े क्यों ?

६–शंकर–पार्वती वेद ज्ञान के समय से बहुत बाद को हुए। वेद में रुद्र कोई व्यक्ति विशेष नहीं।

७–उन्हें असुरों की माता से सहानुभूति क्यों हुई ? देवों और देवराज से क्यों नहीं हुई ?

८–सभी खण्डों को मिलाकर वस्त्रालंकार युक्त कैसे कर दिया ? यह सृष्टिक्रम विरुद्ध है।

९–इन पुत्रों को उनकी माता दिति को सौंपना चाहिये था, अपनी पत्नी को सौंपना तो स्वार्थ हुआ।

१०–इस कथा का वेद मन्त्र में कुछ संकेत भी नहीं है।

वास्तव में यह एक वैज्ञानिक तथ्य प्रतीत होता है कि मरुद् गण (आकाशस्थ मेघ) सात–सात की संख्या में और फिर उनके सात-सात भेद होकर ४९ प्रकार के मेघ हैं। रुद्र नामक वायु शक्ति इनका पालन करती है अतः ये रुद्र-पुत्र कहलाते हैं। इन ४९ मरुतों और उनके पालक रुद्रवायु के गुणों का वर्णन इस मन्त्र में आधि दैविक अर्थ के रूप में है।

मन्त्र का आधिभौतिक अर्थ–हे अमृत (वैद्य या उपदेशक) यह मरुतों (विद्वानों) का बढ़ाने वाला वचन पिता रुद्र (सभाध्यक्ष) के लिये है। आप हमारे शरीर, छोटे–बड़े बालकों के लिए स्वादिष्ट से स्वादिष्ट पदार्थ दीजिए जो मनुष्यों का भोजन हो, आप हमें सुखी कीजिये।

★

'हमारे देश की विचित्र धर्मनिरपेक्षता'

(श्री दत्तात्रेय आर्य, भूतपूर्व आचार्य, दयानन्द कालेज, अजमेर)

संसद के वर्तमान अधिवेशन में प्रधान मन्त्री राजीव गांधी ने अपने एक महत्त्वपूर्ण भाषण में कहा है कि अब समय आ गया है कि इस देश में धर्म और राजनीति के सम्बन्ध में व्यापक विचार विनिमय किया जाय। स्पष्ट है कि उनका यह वक्तव्य देश की वर्तमान बढ़ती हुई पृथकतावादी प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर दिया गया है जिसका सबसे दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शन आज कई वर्षों से पञ्जाब में हो रहा है।

इस सामयिक प्रासंगिकता से भी अधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि स्वतन्त्र भारत के संविधान में हमने जिस धर्म निरपेक्ष राजनैतिक व्यवस्था को स्वीकार किया है वह कहाँ तक सफल या असफल हुई है। गत कुछ वर्षों की घटनाओं से स्पष्ट है कि धर्म निरपेक्षता का यह आदर्श, सैद्धान्तिक दृष्टि से निर्विवाद होने पर भी व्यवहार में असफल सिद्ध हुआ है।

"धर्म निरपेक्षता का अर्थ"

इस असफलता के दो मुख्य कारण हैं। एक यह कि हमने परम्परागत धर्म निरपेक्षता के आदर्श को अपने देश में एक नवीन रूप देने का प्रयत्न किया है और दूसरा यह कि पश्चिम के राष्ट्रों और विचारकों की धर्म निरपेक्षता की मान्यताएं जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विकसित हुई वह हमारे देश की परिस्थितियों और विशेषकर यहां की धार्मिक और सामाजिक भिन्नताओं से मेल नहीं खाती थी।

शासन व्यवस्था में धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त का अर्थ यह है कि राज्य का किसी एक धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् वह अपने प्रशासन तथा देश के राजनैतिक जीवन में किसी धार्मिक विश्वास को न स्वीकार करेगा और नहीं उससे प्रभावित होगा। दूसरे शब्दों में देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी धर्म जाति या सम्प्रदाय का अनुयायी हो उसके साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जायेगा बल्कि सब नागरिकों के राजनैतिक अधिकार समान होंगे।

भारत का संविधान जब विचाराधीन था तो उस समय देश के सिर पर मुस्लिम लीग द्वारा की गई पाकिस्तान की मांग की छाया मंडरा रही थी इसीलिये देश को खण्डित न होने देने के एक प्रयत्न के रूप में मुस्लिम बहुल प्रान्तों को कुछ विशेष अधिकार देकर एक भारतीय राज्य में बनाये रखने का प्रयत्न किया गया किन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान के रूप में देश का विभाजन अनिवार्य है तो हमारे नेताओं और विधान निर्माताओं ने धर्म के नाम पर पृथक निर्वाचन तथा आरक्षण आदि की अंग्रेजी राज्य की परम्परा को समाप्त कर दिया।

"हिन्दू मुस्लिम एकता की शर्त"

अंग्रेजों तथा मुस्लिम लीग की पृथकतावादी नीतियों के इस तात्कालिक निराकरण के उपरान्त भी हम एक विशुद्ध धर्म निरपेक्ष संविधान क्यों नहीं बना सके? इसका उत्तर हमारे राजनैतिक आन्दोलन की पृष्ठ-भूमि से मिलता है। देश के स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व जब महात्मा गांधी के हाथ में आया तब उन्होंने सबसे अधिक बल इस बात पर दिया कि हिन्दू और मुसलमानों की एकता के बिना न हमारा देश आजाद हो सकता है और न ही हम अपनी आजादी को सुरक्षित रख सकते हैं। गांधी जी के लिए यह केवल एक नीति का प्रश्न नहीं था बल्कि उनके इस सर्व विदित विश्वास का परिणाम था कि संसार के सब धर्म न केवल सत्य हैं बल्कि उन सबके प्रति हमें समान आदर और सद्भाव रखना चाहिये दूसरे शब्दों में इसे हम सर्व धर्म कह सकते है।

स्पष्ट है गांधी जी और उनके जिन प्रमुख अनुयायियों की प्रेरणा से हमारे संविधान की रूपरेखा निर्धारित की गई उसका आधार प्रचलित अर्थों में धर्म निरपेक्ष राज्य न होकर एक ऐसा राज्य था जो सब धर्म सद्भाव के आदर्श को स्वीकार करता है।

"धर्म निरपेक्ष या सर्व धर्म सापेक्ष"

धर्म निरपेक्ष राज्य का परम्परागत अर्थ है कि राज्य न तो किसी धर्म का समर्थक है और न किसी धर्म का विरोधी है। किन्तु हमने इसके स्थान में सब धर्मों का समर्थन करना इसका अर्थ कर लिया है। यदि राज्य का किसी एक धर्म से सम्बन्ध अवांछनीय और हानिकर है तो अनेक धर्मों से इस प्रकार का सम्बन्ध स्वभावतः अनेक गुना हानिकारक है। गत लगभग ३८ वर्षों के अनुभव से भी यह स्पष्ट है कि सब धर्मों के प्रति निष्ठा या आदर असम्भव है इसने राज्य का राजनीतिक जीवन को विकृत अवश्यकर दिया है। सब धर्मों के प्रति सद्भाव व्यक्तिगत आदर्श तो हो सकता है किन्तु वह किसी राज्य-या प्रशासनकी नीति नहीं बन सकता। आज देशमें धर्म सम्प्रदाय और जाति के नाम पर जो अनेक संगठन पुनः उभर रहे हैं वह धर्म निरपेक्षता की इसी विकृत नीति का परिणाम है। दुर्भाग्य से इन धर्मों में से अनेक तथा विशेषकर तथा कथित अल्पमत के धर्म प्रत्येक राष्ट्रीय और सार्वजनिक प्रश्न को अपने संकीर्ण धार्मिक और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखने लगे हैं और उनकी इस प्रवृत्ति को हमारी सर्व धर्म सद्भाव की इस नीति से प्रोत्साहन मिलता है। पंजाब में अकाली दल खुले रूप से एक धार्मिक आधार पर बना राजनैतिक दल और यही कारण है कि सिखों के धार्मिक नेता और पुजारी पंजाब की राजनीति को भारतीय संविधान के अनुसार नहीं अपितु अपनी धार्मिक मान्यताओं के आधार पर संचालित करना अपना अधिकार समझते हैं। वहां की अकाली सरकार भी धर्म गुरुओं के इस हस्तक्षेप को सिद्धांत रूप से चुनौती न देकर केवल धर्म गुरुओं की कार्यप्रणाली को अप्रजातन्त्रीय तथा एक तरफा कहकर कहती है मगर उनके सर्वोपरि अधिकार को स्वीकार करती है। दक्षिण में ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय राष्ट्रगीत को अपने धर्म के विरुद्ध समझता है। अनेक धार्मिक संगठन संविधान तथा राष्ट्रीय झण्डे तक का अपमान करते हैं। और यहां तक कि उन्हें सार्वजनिक रूप से जलाते हैं। दो राष्ट्र के सिद्धांत के आधार पर देश का विभाजन करने वाली मुस्लिम लीग तक को स्वतन्त्र भारत में कानूनी मान्यता प्राप्त है। केरल में स्वयं राष्ट्रीय कांग्रेस ने उसके साथ राजनैतिक समझौता करके उसे मान्यता प्रदान कर दी। शाहबानो के विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस्लाम धर्म के नाम पर देश की जनता का एक बहुत बड़ा भाग हमारे संविधान के धर्म निरपेक्ष आदर्श को खुले आम चुनौती देता है।

"इस्लाम की धार्मिक राज्य व्यवस्था"

वस्तुतः इस्लाम की स्पष्ट मान्यता है कि राजनीति उनके धर्म का

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यसमाज मेरठ शहर द्वारा आयोजित होली मिलन

आर्यसमाज मेरठ शहर द्वारा आयोजित आदर्श होली यज्ञ दि० ३-३-८८ भीमखाना मैदान मेरठ में सायं ७ से ९ बजे तक सम्पन्न हुआ। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया।

यजमान थे-(१) सर्वश्री वेदप्रकाश जी सर्राफ, (२) भरतसिंहजी (३) सुभाषचन्द्रजी एवं (४) डा०वेदप्रकाश जी। इन चारों सपत्नीक यजमानों को आशीर्वाद देते हुए सभा प्रधान एवं आर्यसमाज के मन्त्री श्री पं० इन्द्रराज जी ने होली को प्रेम और प्यार का पर्व बताया परन्तु पंजाब दार्जिलिंग एवं जाफना (लंका) में खून की खेले जाने वाली होली पर चिन्ता व्यक्त की। जिस खून की होली में निर्दोषों का व्यर्थ में रक्त बहाया जा रहा है। श्री मन्त्री जी ने आगे कहा कि घृणा और ऊंचनीच तथा छुआछूत के कारण अमानवीय ढंग से हमने करोड़ों लोगों को अपने से पृथक कर दिया जिसके कारण देश में विषम परिस्थिति बनी हुई है। आज इस प्रेम और प्यार के पर्व पर सबको गले लगाने की आवश्यकता है। तभी हम बिना किसी भेदभाव के संगठित होकर अपने देश की रक्षा कर सकते हैं।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री मनोहरलाल जी सर्राफ ने की तथा संयोजन श्री ओमप्रकाश जी जोहरी ने किया।

श्री हीरालाल जी तथा श्री पं० इन्द्रराज जी ने मधुर संगीत प्रस्तुत किया। डा० ओम वीर तोमर ने पशुओं की बोलियां सुनाईं। तथा श्री गुरुदत्त जी बख्शी ने उर्दू में एक कविता सुनाई। लोगों ने यज्ञ की अग्नि में जौ भूने तथा प्रसाद वितरण के पश्चात सभा की एवं यज्ञ की कार्यवाही समाप्त हुई।

४-३-८८ को मध्याह्न ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर में श्री मूलचन्द जी शास्त्री की अध्यक्षता में होली मिलन के अवसर पर आयोजित सभा श्री पं० इन्द्रराज जी के संगीत से आरम्भ हुई। संयोजक थे श्री ओमप्रकाश जी जोहरी। तत्पश्चात् श्री धर्मवीर जी शर्मा ने चुटकुले तथा डा० ओमवीर जी तोमर ने पशुओं की बोलियों से जनता का मनोरंजन किया। श्री हीरालाल जी का मधुर संगीत हुआ। श्री मूलचन्द जी शास्त्री अध्यक्ष ने सब का धन्यवाद एवं श्री मनोहरलाल जी सर्राफ ने सबको आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में आने का निमंत्रण दिया। श्री पं० इन्द्रराज जी मन्त्री ने विशाल आर्यसमाज में पधारे हुए सम्भ्रान्त नागरिकों का अभिनन्दन करते हुए दानदाताओं का धन्यवाद किया। इस पर कुछ और सज्जनों ने दान की घोषणा की। सबके लिए होली की मंगल कामना के साथ आगन्तुक महानुभावों से जलपान स्वीकार करने की प्रार्थना की। नगर के लगभग ६०० सम्भ्रान्त नागरिकों ने जलपान में भाग लिया। —सम्वाददाता

वैवाहिक विज्ञापन

वैश्य-चन्द्र सैनी आयु ३० वर्ष, १५५ से० मी० रंग गेहुंआ होम्योपैथ डाक्टर जी० एच० एम० एस कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिये।

केदारनाथ गुप्ता

५८१ सत्य प्रेमी नगर, बाराबंकी

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की ओर से पारिवारिक यज्ञ

आर्यसमाज शास्त्री नगर के सहयोग से दि० २८-२-८८ को प्रातः ८ बजे केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की ओर से श्री जयपाल जी ग्राम काजीपुर (शास्त्री नगर) के निवास स्थान पर एक विशेष पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। आर्यसमाज शास्त्री नगर के पुरोहित द्वारा यज्ञ एवं भक्ति संगीत सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त श्री ओमदत्त जी (सुपुत्र श्री शोभाराम जी प्रेमी भजनोपदेशक) ने आधुनिक युग में धर्म की महिमा पर अपने विचार प्रकट किए।

सभा समाप्ति के अवसर पर केन्द्रीय आर्य समिति के उप मन्त्री एवं आर्यसमाज शास्त्री नगर के उपप्रधान श्री देवदत्त जी आर्य ने बताया कि शहरों की कुरीतियां जैसे जूआ, शराब, नाच, गाना आदि ने धीरे-धीरे गांवों में भी प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया है। जिससे गांवों से सरलता-सदाचार आदि का लोप हो रहा है। हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। यजमान महोदय एवं ग्रामवासियों को धन्यवाद के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

रजत जयन्ती समारोह

आर्य स्त्री समाज जागृति नगर मेरठ की रजत जयन्ती प्रधाना श्रीमती फूलारानी जी मल्होत्रा की अध्यक्षता, मन्त्राणी श्रीमती प्रेम लता की व्यवस्था एवं मञ्च संयोजन, बृहद यज्ञ की संयोजिका श्रीमती कैलाश सोनी, पाकशाला संयोजिका श्रीमती चन्द्रकला जी और स्वागताध्यक्षा श्रीमती इन्द्रा देवी जी बत्रा के संयोजन में दि० २०-२१ दिसम्बर १९८७ को समारोहपूर्वक मनाई गई। जिसका उद्घाटन इस अवसर पर आयोजित बृहद् यज्ञ के ब्रह्मा पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी महाराज अध्यक्ष गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल के कर-कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी मेरठ, आर्यजगत की प्रख्यात विदुषी बहिनें सर्वश्रीमती उषा जी (गुड़गांवा), शकुन्तला जी आर्या दिल्ली, यशोदा जी देहरादून, वेदवती जी शास्त्री दिल्ली, शकुन्तला जी गोयल, सावित्री जी रस्तोगी, पद्मावती जी शर्मा मेरठ ने अपने उत्कृष्ट के विचारों तथा कविताओं द्वारा महिला समुदाय को प्राप्तव्य अधिकारों की रक्षा एवं उनको सदुपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती हुई राष्ट्रोत्थान में, सन्तति निर्माण में सजग प्रहरी बनने की चेतावनी दी। सर्वश्रीमती प्रभा जी कामरा, प्रमोदबाला जी रस्तोगी, शकुन्तला जी, भगवतीजी कैलाश जी, यशोदा जी ने अपने भजनों द्वारा ईश्वर के प्रति समर्पण महर्षि के प्रति श्रद्धा के फूल और बधाई गीत गाकर सजीव कर्म और व्यवहार की दिशा प्रदान की।

इस अवसर पर समाजसेवी बहिनों (सर्वश्री माता द्रोपदी देवी जी, माता कौशल्या जी, इन्द्रादेवी जी, मेलादेवी जी, सावित्री देवी जी, फूलारानी जी) का अभिनन्दन करके उन्हें एक-एक शाल और अभिनन्दन पत्र भेंट किए गये। इस समाज की कोषाध्यक्षा चन्द्रकान्ता जी ने महर्षि दयानन्द जी का कैलेण्डर वितरित किया। इस शुभावसर पर हमारी समाज द्वारा प्रकाशित 'स्मारिका' का विमोचन मान्या बहिन श्रीमती वेदवती जी शास्त्री के करकमलों द्वारा हुआ। अन्त में रजत जयन्ती समारोह का समापन स्वागताध्यक्षा जी तथा प्रधाना जी के धन्यवाद सहित सम्पन्न हुआ।

ऋषिबोधोत्सव

हमें निम्न संस्थाओं / आर्यसमाजों से महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर सोल्लास 'ऋषिबोधोत्सव' मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक स्थान पर प्रभातफेरी, दैनिक यज्ञ व प्रवचन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिनमें स्थानीय जनता बड़ी संख्या में सम्मिलित हुई।

आर्यसमाज जमानियाँ, आर्यसमाज नेमदारगंज (नवादा), आर्य समाज बस्यूरा पट्टी सोला पो० बुमकुडा (गढ़वाल), आर्यसमाज छिकाना (मेरठ) की ओर से आर्य कन्या गुरुकुल छिकाना की भूमि पर, आर्यसमाज मसेना मिर्जापुर बहोड़ा रोड पो० रामनगर जनपद फैजाबाद, आर्यसमाज भटौली (बदायूं), आर्यसमाज केसरगंज अजमेर, आर्यसमाज बोवा मल्ला ढांगू ग्रा० धारी पो० हांसी (गढ़वाल), आर्य समाज कासगंज (एटा), आर्यसमाज प्रेमनगर (देहरादून), आर्यसमाज राजपुरा (बदायूं), आर्यसमाज नगरा [झांसी]।

(२) बिसवां-सीतापुर। आर्य समाज द्वारा दयानन्द बोध सप्ताह सोल्लास मनाया गया। ९ फरवरी से १४ फरवरी तक प्रातः ५ बजे से नगर में प्रभातफेरी निकाली गयी। १५ फरवरी को मोटर साईकिलों एवं स्कूटरों के साथ विशाल शोभा यात्रा निकली।

१६ फरवरी के समारोह के मुख्य अतिथि गजराजसिंह उप प्रधाना चार्य ने कहा—भारत को प्राचीन उज्वल गौरव वैदिक संस्कृति ही प्राप्त करा सकती है जिसके लिए आर्यसमाज सतत प्रयत्नशील है। उन्होंने विश्वबन्धुत्व एवं शान्ति के लिए आर्यसमाज को मजबूत करने पर बल दिया। आर्यसमाज के उपमन्त्री प्रदीप आर्य ने बोध पर्व के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पक्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द को प्राप्त बोध ने भारत में अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न की।

समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मन्त्री वैद्यनाथ प्रसाद ने किया एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष रामानन्द कनिष्ठ अभियन्ता ने आभार प्रदर्शन किया। सुरेशचन्द्र आर्य एव रामनाथ आर्य ने 'आ गई शिवरात्रि फिर हमको जगाने के लिये' आदि बोध गीतों का पाठ किया। विष्ठावान एवं उत्साही आर्य नवयुवकों ने समारोह में विशेष सहयोग दिया। १६ फरवरी को रात्रि ८ बजे श्री अशोक आर्य 'पुष्प' एडवोकेट का उद्बोधन वेद मन्त्रों का पाठ—ईश-प्रार्थना, स्तुति तथा भजनों के साथ समारोह का समापन हुआ।

(३) वैदिक प्रचार मण्डल गोविन्दनगर अम्बाला छावनी द्वारा बोध पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर डा० विक्रम विवेकी ने बड़े भावुक शब्दों में श्रद्धांजलि भेंट की तथा समस्त आर्यों (हिन्दुओं) का आत्म निरीक्षण करने की अपील की गई। आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र पं० देवव्रत जी ने प्रभावशाली विचार रखे। डा० ओ० पी० विद्यार्थी एवं ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी के भाषण हुये। इस समारोह को देखने के लिए काफी जनता उपस्थित थी। समारोह अतीव उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

(४) आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का १०८ वाँ वार्षिकोत्सव शिवरात्रि एवं महर्षि बोधोत्सव के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी शनिवार १३ से मंगलवार १६ फरवरी १९८८ तक श्रद्धानन्द पार्क एवं आर्यसमाज के हाल में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः ५ बजे से प्रभातफेरी, ७ बजे से सन्ध्या एवं गायत्री महायज्ञ तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ध्वजोत्तोलन, आर्य विशाल शोभायात्रा—हाथी, बैण्ड, झाँकियों से युक्त संयोजक मेजर सुरेश बहादुर जी

नगर कीर्तन में नगर की समाजों के अधिकारी एवं सदस्य, डी०ए०वी० कालेज के प्राध्यापक एवं छात्र चारों वर्ष दोनों समय महर्षि लंगर का आयोजन था उसमें लगभग २००० आर्य महानुभावों ने भाग लिया। नगर के जिले के तथा बाहर के अधिकारी एवं सदस्यों ने भाग लिया। ऋषि बोधोत्सव के दिन प्रीतिभोज था। श्री सन्तराम सेंगर, सरला चौधरी डा० हरपालसिंह, श्री निरंजनसिंह आदि भी थे। श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री श्रीमती शशीकान्ता भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

राही

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली]

राही कम्पित डर न बनाओ।
क्यों करते हो यहाँ अपेक्षा,
करो नियन्त्रित अपनी इच्छा।
मेघ मनोबल तोल रहे हैं,
मत इसको बिसराओ।
अंगारों पर चल मुस्काओ,
शूर वीर निज को दर्शाओ,
गूंज रहे जो विषम राग हैं,
सम्वादी कर पाओ।
स्वात्मवशी होकर जो चलता,
उसे छद्म कोई कब छलता,
छूट गये जो संगी-साथी,
मत जिनको पछताओ।
आयु कहो या इसे साधना,
बाधक बनती जहाँ वासना।
घोर निशा में विश्वासों की,
ज्वाला को विकसाओ।
स्वार्थ गन्ध से सभी सने हैं,
जो कहने को मीत बने हैं।
भूल-भुलइयों में इनकी,
मत अपना मन बहलाओ।
जब तक कार्य सिद्ध हैं करते,
मूल्यवान उसको हैं कहते।
इस परिवर्तन के गिरगिट पर,
मत अभिमान दिखाओ।
बस पैसे का मूल्य जहाँ है,
क्रीतदास यह मनुज वहाँ है।
ऐसे निष्ठुर को आहत उर,
अपन मत दिखलाओ।
बधिर और जो पंगु निरन्तर,
नूतन राह नहीं रच सकते।
बैसाखी के बल पर ही जो,
उनके साथ न जाओ।
एक परिधि में व्यस्त त्रस्त जो,
किन्तु नहीं हैं आगे बढ़ते।
करुण कथा ऐसों को अपनी,
जाकर नहीं सुनाओ।
साथ-साथ बहु सतत चिरन्तन,
भूल जिसे हो जाते बन्धन।
रश्मि निकर को हृदय बसाकर,
साध्य चरम पा जाओ।

उत्सव

निम्न आर्यसमाजों / आर्य संस्थाओं के वार्षिकोत्सव ससमारोह सम्पन्न हुए जिनमें आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान संन्यासी। उप देशक एवं प्रचारकों के व्याख्यानों / भजनों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा—

१—आर्यसमाज, कालपी का शताब्दी समारोह २६ से २८ फरवरी, तक सम्पन्न हुआ। महात्मा आर्यभिक्षु, श्री लक्ष्मीशंकर शास्त्री, श्री जगेश्वरसिंह आदि के उच्चकोटि के प्रवचन एवं भजन हुए। २७ फर-वरी को महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

२—ऋषि बोध पर्व पर जनपद अलीगढ़ के आर्य वीरदल के तत्वाव धान मे एक विशाल शोभा यात्रा वैदिक आश्रम से निकाली गई। इस यात्रा मे जनपद की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए स्थान-स्थान पर जनता ने पुष्प वर्षा से स्वागत किया। इस अवसर पर एक वैदिक साहित्य प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

३—ऋषि बोध पर्व पर दिनांक १६ फरवरी को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर के तत्वावधान मे यज्ञ, प्रवचन आदि कार्य क्रम हुए। भारी संख्या में जनता उपस्थित थी। वैदिक धर्म के प्रचार का अच्छा प्रभाव पड़ा।

४—आ०स० गांधी कालोनी, मुजफ्फरनगर मे ८—२—८८ से १६—२ ८८ तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। डा० सुरेन्द्रकुमार विद्याभास्कर के प्रति दिन वेद प्रवचन हुए।

५—आर्य वेद प्रचार मण्डल साकेत [फैजाबाद] द्वारा वेद प्रचार अभियान के अन्तर्गत पूरे सीताराम, कुच्छा, बीकापुर आदि स्थानों पर वैदिक प्रचार अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया। रात्रि मे भजन, प्रव-चन हुए। जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

६—आर्यसमाज बसोतरा शास्त्री चौक, [राजस्थान] का वार्षिक उत्सव ससमारोह दिनांक १७ फरवरी से १९ फरवरी तक मनाया गया प्रतिदिन राष्ट्रभृत यज्ञ के उपरान्त पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के वेद प्रवचन हुए।

७—आ०स० शाहगंज [आगरा] के तत्वावधान में शिवरात्रि को प्रभात फेरी निकाली गई एवं सायंकाल विद्वानों के प्रवचन एवं भजन हुए।

८—जनपद प्रतापगढ़ के ग्राम बेलूपुर के बाजार मे १६—२—८८ को ऋषि बोध पर्व हर्षोल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। सायंकाल श्री जगन्नाथ प्रसाद की अध्यक्षता में एक नवीन आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमे प्रधान सर्वश्री प्यारेलाल शर्मा, मन्त्री हीरालाल शर्मा एवं कोषाध्यक्ष अमरनाथ आर्य निर्वाचित हुए।

९—आ०स० बांगरमऊ (उन्नाव) का १५ वां वार्षिकोत्सव २६ से २९ जनवरी तक ससमारोह सम्पन्न हुआ। सर्वश्री ब्रह्मदत्त स्नातक, डा० आनन्द सुमन, स्वामी वेदमुनि परिव्राजक आदि के उच्चकोटि के उपदेशो से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

१०—आ०स० खेड़ा अफगान (सहारनपुर) का उत्सव २८ फर-वरी से १ मार्च तक सम्पन्न हुआ। श्री पं० सत्यप्रिय शास्त्री प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

११—आ०स० रामपुरा, कोटा [राजस्थान] का ८९ वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पं० प्रेमभिक्षु, प्रो० धर्मवीर सतपाल भजनोपदेशक के प्रवचनों का व्यापक प्रभाव जनता पर पड़ा।

१२—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के तत्वावधान में वैदिक आश्रम के प्रांगण में २३ एवं २४ मार्च को एक आर्य महा सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। इसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उ० प्र० प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मन्त्री तथा अनेकों उच्चकोटि के संन्यासी विद्वान उपदेशक पधार रहे हैं।

१३—आर्यसमाज गया [बिहार] का ६५ वां वार्षिकोत्सव ३१ मार्च से ३ अप्रैल तक ससमारोह मनाया जा रहा है।

१४—आर्यसमाज महावीरगंज, लखनऊ का वार्षिकोत्सव १ से ३ मई तक ससमारोह सम्पन्न होगा।

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जनपद मुरादा-बाद के तत्वावधान में प्रचार कार्यक्रम

सर्वश्री पं० महावीर शास्त्री, ब्रह्मचारी रामपाल आर्य भजनोपदेशक, जयपाल शर्मा, ब्रह्मचारी चतुर सेन, नरेन्द्रदत्त आर्य, ब्रह्मदेव आर्य भजनोपदेशक, सेवपालसिंह आर्य ने माह दिसम्बर १९८७ तथा जनवरी १९८८ में धनौरा, हसनपुर, बछरौआ, रतनपुर, अवधपुरी, चन्दावली आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा हुसैनपुर, हसन पुर कलां, रहौता, रफातपुर आदि स्थानों पर नवीन आर्यसमाजों की स्थापना की।

आर्यसमाज 'जोकड़ा' हसनपुर, हिल्डोली (जनपद मुरादाबाद) में क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कतिपय निर्णय लिए गये। मास मार्च में जनपद मुरादाबाद, सहारनपुर हरदोई, नैनीताल, फतेहपुर तथा सीरो के अनेक स्थानों पर समाजों के उत्सवों पर प्रचार की योजना है।

हरिश्चन्द्र आर्य संयोजक / मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा
मुरादाबाद

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ का १६वां वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनांक १४–१–८८ को प्रातः ७–३० बजे से गायत्री महापारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ। प्रातः १० बजे नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार हुआ तथा १०–३० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। कार्यक्रम निम्नलिखित प्रकार से हुआ–

(१) श्री हरस्वरूप जी, (२) श्री मनवीर जी, (३) श्री शोभाराम जी प्रेमी, (४) श्री इन्द्रसेन जी विश्वप्रेमी, (५) श्री कर्णसिंह, (६) श्री हीरालाल जी।

इन भजनोपदेशकों का भक्ति संगीत और भजनोपदेश हुआ।

(७) श्री स्वामी दीक्षानन्द जी ने यज्ञोपवीत संस्कार की वैज्ञानिक परिभाषा करते हुए इसे व्रत सूत्र बताया तथा समाज के तीन भयंकर शत्रुओं, अज्ञान, अन्याय और अभाव का मुकाबला करने के लिए इस यज्ञोपवीत को संकल्प सूत्र के रूप में प्रस्तुत किया।

(८) बाल्मीकि युवक रतन भाई का बड़ा ही सुमधुर भजन हुआ जिसकी सराहना सबने की।

(९) केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान श्री मानसिंह वर्मा ने विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही संस्कार देने पर बल दिया। ताकि शिक्षा के क्षेत्र में सुधार आ सके।

(१०) छोटे बच्चे अमित तथा समर्थ ने तुलसीदास का दोहा तथा चुटकुला सुनाया।

(११) गुरुकुल के ब्रह्मचारीगणों ने संस्कृत में स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। ब्र० वीरेश्वर वीर तथा ब्र० धर्मराज ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर अपने विचार व्यक्त किए। एकलव्य की गुरुभक्ति का संस्कृत में नाटक भी देखा गया।

(१२) श्री डा० ओमशरण जी अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग मेरठ कालेज, श्री डा० वेदप्रकाश जी हिन्दी विभाग तथा श्री डा० सत्यपाल जी कंकरखेड़ा ने भी वर्तमान परिस्थितियों में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को अनिवार्य बताया।

(१३) श्री चौ० माधवसिंह जी मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा तथा प्रधान जिला सभा मेरठ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरुकुल पद्धति को वर्तमान शिक्षा नीति के लिए उपयुक्त बताते हुए लोगों को गुरुकुल की सहायता करने की प्रेरणा की।

(१४) श्री इन्द्रराज जी मन्त्री गुरुकुल प्रभात आश्रम ने देश को बड़े गम्भीर समय से गुजरते हुए शिक्षा पद्धति को सुधारने पर बल दिया। आज शिक्षण संस्थाओं में न तो आदर्श अध्यापक ही रह गया है और न ही आदर्श विद्यार्थी। शिक्षण संस्थाओं में राजनीति के प्रवेश से शिक्षण संस्थाएं राजनीति का अखाड़ा बन गई हैं। अर्थ के पीछे भागता हुआ शिक्षक अपने गुरु के आसन से डोल गया है। आज की पढ़ाई अक्षर ज्ञान मात्र है। चरित्र निर्माण की ओर कोई ध्यान नहीं है। इसलिये किसी अच्छे राष्ट्र निर्माण की आशा नहीं की जा सकती। गुरुकुल प्रभात आश्रम के अनुशासन की प्रशंसा करते हुए ब्रह्मचारियों की गुरुभक्ति की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करते हुए मन्त्री जी ने कहा कि यदि इस शिक्षण संस्था में आधुनिक तकनीक का सम्पर्क हो जाए तो यह शिक्षा नीति ही देश का कल्याण कर सकती है जिसमें गुरु शिष्य का परस्पर सम्पर्क शिष्य के चरित्र का निर्माण करता है।

(१५) स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य ने सब दानदाताओं का धन्यवाद किया कि उनके दान से ही यह निःशुल्क गुरुकुल बिना सरकारी अनुदान के सफलतापूर्वक चल रहा है।

शान्ति पाठ के पश्चात् गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की कार्यवाही समाप्त हुई।

इन्द्रराज
मन्त्री–गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त (कानपुर) में वानप्रस्थ-संस्कार

कानपुर गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर में शिवरात्रि, १९८८ को सुन्दर लाल जी (विश्राम वाटिका) के संयोजकत्व में स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी द्वारा चन्द्रिकाप्रसाद जी चौबेपुरवासी को चन्द्रमुनि के रूप में वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई। उक्त अवसर पर पं० शिवदत्त मिश्र एडवोकेट ने आश्रम व्यवस्था पर प्रकाश डाला। ज्ञातव्य है कि स्वामी जी द्वारा अब तक ७ को संन्यास तथा १६ को वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई है। गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी)।

पांच मुसलमानों की शुद्धि

ग्राम नीमचना जिला–बुलन्द शहर के वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर अलीबंज पेठा निवासी ५ व्यक्तियों ने स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया। यह शुद्धि पं० जय प्रकाश जी आर्य भूतपूर्व इमाम की देख–रेख में उनकी इच्छा अनुसार हुई। उक्त अवसर पर श्री बलबीर सिंह जी उपदेशक, स्वामी सोमानन्द सरस्वती एवम् अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उनके नाम इस प्रकार है।

		(आयु)
रसमुसली	(रसमपाल सिंह)	२८ साल
मानी बेगम	मानोदेवी	२२ साल
रईस खां	रेसपाल सिंह	२० साल
छोटू खां	सोरपाल सिंह	१ साल

शुद्धि संस्कार के उपरांत श्री बलवीर सिंह, पं० जयप्रकाश एवम् अन्य विद्वानों ने इन व्यक्तियों को हर तरह सम्मानित किया।

स्वामी सोमानन्द सरस्वती
आर्य समाज नीमचना
जि० बुलन्द शहर उत्तर प्रदेश

मड़पा के ईमाम हिन्दू बने

आर्य समाज मड़पा (भागलपुर) में वार्षिक उत्सव के शुभ-अवसर पर १८ फरवरी १९८८ को हजरत मौलाना करीमुद्दीन ईमाम मड़पा (भागलपुर) ने अपनी स्वेच्छा से अपने परिवार के ११ व्यक्तियों सहित सनातन धर्म वैदिक धर्म को स्वीकार किया। शुद्धि के उपरांत मौलाना करीमुद्दीन का नाम पं० कर्मवीर, रईस अहमद का नाम–पं० राजेन्द्र, नूरजहा का नाम नर्मदा, बेबुन निशा का नाम जयदेवी। इसी तरह बच्चों का नाम भी वैदिक धर्म–अनुसार रखा गया। शुद्धि के पश्चात पं० कर्मवीर जी पूर्व ईमाम मड़पा ने अपने एक घण्टे के ओजस्वी भाषण में बताया कि प० जयप्रकाश पूर्व–ईमाम की शुद्धि के बाद मैंने विरोध प्रकट करने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना शुरू किया और जयप्रकाश जी से कई पत्र व्यवहार किये। परन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी आंखे खोल दी और मैंने महसूस किया–मुझे अपने आप को कीचड़ और दलदल से निकालकर एवं कुरान के अन्ध विश्वास वाले अन्धकार से निकालकर सत्यार्थ प्रकाश की प्रकाश में डालना चाहिए। मेरा विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश की तुलना में किसी मजहबी ग्रन्थ को महत्व नहीं दी जा सकती। सत्यार्थ प्रकाश से हर मजहब के बारे में जानकारी प्राप्त हो चुकी है। अब पूरा जीवन आर्य समाज एवं वैदिक धर्म की सेवा करता रहूंगा। मुझे उम्मीद है कि आज मेरे जो सम्बन्धी जो किसी कारण से अपना शुद्धि संस्कार नहीं करा सके, वे भी जल्दी ही वैदिक धर्म के प्रकाश में आ जायेंगे।

गोविन्द सिंह (मन्त्री)

वार्षिक निर्वाचन

सम्बन्धित जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा से प्रमाणित, निम्न आर्य समाजों के वार्षिक निर्वाचन सूचनार्थ प्रकाशित हैं।

आ० स० स्टेशन रोड, पीलीभीत
प्रधान श्री बुधसेन
मन्त्री श्री मोहनलाल गंगवार
कोषा० श्री सुशीलचन्द्र

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, रामपुर
प्रधान श्री रामस्वरूप जी आर्य विशारद
मन्त्री श्री महेन्द्र प्रतापसिंह आर्य
कोषा० श्री सुखदेव शास्त्री

आ० स० फतेहपुर
प्रधान डा० हर्षवर्धन
मन्त्री डा० विनय अरोरा
कोषा० श्री राजनारायण रस्तोगी

आ० स० नकुड़ (सहारनपुर)
प्रधान श्री साधूराम
मन्त्री श्री भूपेन्द्र कुमार गोयल
कोषा० श्री मोहनलाल आर्य

आ० स० मधुरम रेलवे कालोनी, देवमन्दिर गोरखपुर
प्रधान श्री जवाहर लाल शर्मा
मन्त्री श्री सन्तप्रसाद शर्मा
कोषा० श्री वासुदेव शर्मा

आ० स० मठधारा, दुर्ग (म० प्र०)
प्रधान श्री गुलाब चन्द्र
मन्त्री श्री टुकीलाल आर्य
कोषा० श्री रामलाल नूतरा

आ० स० हल्दौर (बिजनौर)
प्रधान श्री धर्मेन्द्रनाथ
मन्त्री श्री देवेन्द्र सिंह आर्य
कोषा० श्री शिवरतन जी

आ० स० चांदपुर (बिजनौर)
प्रधान श्री रामेश्वर प्रसाद मित्तल
मन्त्री श्री चन्द्रपाल अग्रवाल
कोषा० श्री ओमप्रकाश आर्य

आ० स० बिजनौर
प्रधान श्री आदित्य प्रकाश रस्तोगी
मन्त्री श्री जितेन्द्र पालसिंह
कोषा० श्री बालेश्वर प्रसाद

आर्य स० सावंली पंचपुरी गढ़वाल
प्रधान श्री राजेन्द्रसिंह नेगी
मन्त्री श्री वासुदेव विमल अध्यापक
कोषा० श्री देवबन्धु अध्यापक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद, आजमगढ़
प्रधान श्री भृगुप्रसाद
मन्त्री श्री नरेन्द्र प्रसाद
कोषा० श्री सतीशचन्द्र

आ० स० लाजपत नगर, कानपुर
प्रधान श्री हरबंसलाल आनन्द
मन्त्री डा० आशारानी राय
कोषा० श्री लक्ष्मण दास मग्गो

आ० स० आगरा नगर, आगरा
प्रधान श्री मानसिंह परमार
मन्त्री श्री राधेश्याम सारस्वत
कोषा० श्री मदनलाल द्विवेदी

आ० स० डीडा, मल्ला डांगू, गढ़वाल
प्रधान श्री देवीराम
मन्त्री श्री महेशचन्द्र भट्ट
कोषा० श्री सत्य प्रसाद

आ० स० रसौली [बाराबंकी]
प्रधान श्री स्वामी दयाल एडवोकेट
मन्त्री श्री आचार्य रमाकान्त चतुर्वेदी
कोषा० श्री राम लखन गुप्त

आ० स० पिथौरागढ़
प्रधान श्री लक्ष्मीदत्त भट्ट
मन्त्री श्री लक्ष्मीचन्द्र मित्तल
कोषा० डा० जायन्तसिंह

आ० स० शहर झांसी
प्रधान श्री राजेन्द्र गुप्त
मन्त्री श्री कृष्णगोपाल झा
कोषा० श्री गणपतराम

आ० स० रमपुरा (टाण्डा) जिला फैजाबाद
प्रधान श्री कन्हैलाल आर्य
मन्त्री श्री नौबतराम
कोषा० श्री माधराम

आ० स० बक्सर भोजपुर [बिहार]
प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ जायसवाल
मन्त्री श्री राजेश्वरी प्रसाद आर्य
कोषा० ओमप्रकाश सर्राफ

आ० स० ईसानगर पो० गुरुकुली [सीतापुर]
प्रधान श्री रामऔतार आर्य
मन्त्री श्री नेतराम आर्य
कोषा० श्री बरातीलाल आर्य

आ० स० मेरठ शहर
प्रधान श्री मनोहरलाल
मन्त्री श्री पं० इन्द्रराज
कोषा० श्री देवेन्द्र स्वरूप

स्त्री आर्य समाज, नयेगंज, लखनऊ
प्रधाना श्रीमती शांति राजवंशी
मंत्राणी श्रीमती कुसुमसूद
कोषाध्यक्षा श्रीमती परमेश्वरीदेवी

आर्य वीर दल, जनपद अलीगढ
संरक्षक डा० रघुवीर शास्त्री,
प्रधान जिला आर्य उपसभा, अलीगढ़
संचालक श्री अभेद मुनि, हाथरस [अलीगढ़]
मन्त्री श्री गजेन्द्रसिंह, एडवोकेट, आगरा रोड अलीगढ़
अर्थनायक श्री शैलेन्द्रकुमार आर्य, जयगंज, अलीगढ़

आ० स० [बल्देवाश्रम] चुरखा
प्रधान श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद
मन्त्री श्री मंगलदेव शर्मा
कोषा० श्री मुकुटलाल

आ० स० लालबाग, लखनऊ
प्रधान श्री ओमप्रकाश सेवक
मन्त्री श्री इं० सत्यदेव सैनी
कोषा० श्री विश्वमित्र अरोड़ा

आ० स० रामनगर [नैनीताल]
प्रधान इन्द्रवर्मा चौहान
मन्त्री श्री [illegible] चन्द्र गोयल
कोषा० श्री अवधेश कुमार अग्रवाल

आ० स० अगहरी [मिरजापुर]
प्रधान श्री देवनसिंह
मन्त्री श्री बसन्तसिंह
कोषा० श्री ज्वालाप्रसादसिंह

आ० स० बौना परियोजना [मिरजापुर]
प्रधान श्री ओमप्रकाशसिंह
मन्त्री श्री वीरेन्द्रनाथ आर्य
कोषा० श्री अशोक कुमार सिंह

आ० स० कासगी
प्रधान श्री भगवानसिंह
मन्त्री श्री प्रकाश जैतली
कोषा० श्री ज्ञानेन्द्र आर्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, [बलिया]
प्रधान श्री सुदर्शनसिंह आर्य
मन्त्री श्री इन्द्रदेवसिंह 'साहित्यरत्न'
कोषा० श्री राधाकृष्ण शर्मा

आर्य समाज बहुहलगंज गोरखपुर
प्रधान श्री रामनारायण जी आर्य
मन्त्री श्री मक्खनलाल जी आर्य
कोषा० श्री धर्मदत्त जी आर्य

आर्य समाज बबाली (बदायूं)
प्रधान श्री राधाकृष्ण शर्मा
मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र मिश्र
कोषा० श्री अशोक कुमार माहेश्वरी

आर्यसमाज पाली जनपद (हरदोई)
प्रधान श्री लालाराम वाजपेयी
मन्त्री श्री रामगोपाल गुप्त
कोषा० श्री धीरान आर्य

महिला आर्य समाज बाबर नगर मेरठ का वार्षिक निर्वाचन।
प्रधाना श्रीमती नैनादेवी जी
मन्त्राणी श्रीमती कैलाश सोनी जी
कोषा० श्रीमती चन्द्र कान्ता जी कश्मीर

"हमारे देश की विचित्र धर्म निरपेक्षता"

(शेष पेज ५ से आगे)

एक अनिवार्य अंग है। इसीलिये उन्हें इसी प्रकार की कोई राज्य व्यवस्था स्वीकार नहीं हो सकती जो उनके धार्मिक विश्वासों के प्रतिकूल हों। इतना ही नहीं विवाह, तलाक, गुजारे का भत्ता आदि जैसे प्रश्न जिनका महिलाओं के अधिकारों और समानता से सम्बन्ध हैं उन्हें भी वे देश के सब पर लागू होने वाले किसी कानून द्वारा नियंत्रित करने के विरुद्ध है, यही कारण है कि संविधान मे सबके लिये समान सिविल कोड बनाने की व्यवस्था होने पर भी देश का बहुमत उसके पक्ष में होने पर भी वह कोड अभी तक नहीं बन पाया है और अब जिस प्रस्तावित सिविल कोड की चर्चा है वह भी स्वैच्छिक होगा अर्थात मुसलमानों के लिए उसे मानना अनिवार्य नहीं होगा। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब राष्ट्रीय और सार्वजनिक हित के प्रश्नों तक के बारे में धर्मों की मान्यता भिन्न है तो इन सब धर्मों को राज्य समान समर्थन और आदर कैसे दे सकता है ?

"अन्धविश्वासों को प्रोत्साहन"

धर्म निरपेक्षता की इस विकृति का एक और दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दू धर्म की अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतियां जिन्हें हमारे राष्ट्रीय नेताओं और धार्मिक सुधारकों ने देश की प्रगति और यहां तक की स्वाधीनता तक में बाधक समझ कर दूर करने का प्रयत्न किया सब धर्मों के प्रति आदर के नाम पर वे अब पुनः उभर रही हैं। इसी प्रकार अनेक अन्धविश्वास हमारे राजनैतिक जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। तांत्रिक ज्योतिषी और धर्म गुरुओं का बढ़ता हुआ प्रभाव इसके प्रमाण हैं। अजमेर के ख्वाजा साहब की दरगाह तो अब एक प्रकार से सरकारी तीर्थ स्थान बन गई है। राज्यों और केन्द्रों के मन्त्री और यहां तक कि स्वयं प्रधान मन्त्री तक सिर पर रख कर इस मजार पर चादर चढ़ाते हैं तो सर्व साधारण व्यक्तियों के अन्धविश्वास को एक नया समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है। यदि दरगाह पर मन्नत मांगने से राजनेताओं को चुनाव में सफलता मिल सकती है तो सन्तान प्राप्ति, मुकदमों में सफलता, सट्टे में लाभ आदि की मन्नतें मांगने वालों को हम अन्धविश्वासी कैसे कह सकते हैं ?

यह सर्व विदित है कि इस प्रसिद्ध दरगाह की जियारत या उस पर चादर चढ़ाने का मुख्य उद्देश्य कोई न कोई मन्नत मांगना होता है। यदि आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व दिवंगत फकीर के अवशेषों पर किसी समाधि या दरगाह आज भी ऐसा चमत्कार कर सकती हैं तो जीवित सन्त और भगवानों, धर्म गुरुओं द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों को इक्कीसवीं सदी के नाम पर हम कैसे निषेध कर सकते हैं। विशेषकर जब इन चमत्कारों पर स्वयं सरकार की मोहर और छाप लगायी जा रही हो और वह भी धर्म निरपेक्ष राज्य के नाम पर।

शोक संदेश

आर्य समाज गुलावठी के स्तम्भ एवं कठोर कार्यकर्ता श्री डा० अमरसिंह जी का निधन १४-१-८८ की रात्रि को लगभग ८५ वर्ष की आयु में हो गया है। आर्य समाज गुलावठी व नगर के लिए यह एक महान् आघात है। आप समाज के परिश्रमशील कर्मठ कार्यकर्ता थे। आपका अनेक समाज सेवी व शिक्षण संस्थाओं से गहरा सम्बन्ध था। आर्य कन्या इन्टर कालेज गुलावठी के आप प्रधान व प्रबन्ध पदों पर कार्य किया। आपका निःस्वार्थ जीवन प्रत्येक नागरिक के लिये एक प्रेरणा स्रोत है।

गुलावठी आर्य समाज इस महान आत्मा को हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके शोकाकुल परिवार को शांति व धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री आर्यसमाज गुलावठी बुलन्दशहर

विद्यालय भवन निर्माण के सम्बन्ध में अपील

प्रदेश की आर्य समाजों के मन्त्री व प्रधानों से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी आर्य समाजों से भवन निर्माण हेतु सहायता भेजने की कृपा करें। कम से कम १ रु० प्रति सदस्य के हिसाब से एकत्र कर प्रबन्धक दयानन्द आदर्श विद्यालय के नाम चकचगढ़ी पो० गजरौला मुरादाबाद भेजने की कृपा करें। क्योंकि यहां पर ईसाईयत का बहुत ही जोर से प्रचार हो रहा है अतः गिरजा घर व स्कूल व अस्पताल के मुकाबले हेतु सभी आर्यजनों से प्रार्थना है कि विद्यालय भवन निर्माण हेतु कुछ न कुछ धन अवश्य भेजने की कृपा करें।

सूचना

वर्ष, १९८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अतः वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना-अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को २५ मार्च, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible] भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष [illegible]
पंजीकरण सं० [illegible]
[illegible] रविवार १६ [illegible] ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[illegible]

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र के [illegible] सदस्यों का शुल्क [illegible] जनवरी [illegible] को समाप्त हो गया है [illegible] वी० पी० भेजने में ३ [illegible] अधिक पोस्ट [illegible] लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क [illegible] के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा [illegible] अथवा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा [illegible] अपने अपने ग्राहक नम्बर [illegible] नीचे लिख हैं १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो [illegible] है

[illegible] १९५७ [illegible] ४२९६ [illegible] ५४३६ ६३२९ ६३२८ [illegible] ८७०९ ८७१३ ९०७४ ९०८६ [illegible] ११०८८ ११४४४ ११४६२ [illegible] ११५७७ [illegible] १२४४१ [illegible] १२६०३ १२८०४ [illegible] १३३०२ [illegible] १३६८४ १४१८६ [illegible] १४१४८ १४१६० १४१०४ [illegible] १४१७० १४१३१ [illegible] १४१३३ [illegible]

मास फरवरी १९८८

[illegible] ४३८८ [illegible] ५३९९ [illegible] ६३५७ [illegible] ८४१६ ९१०० [illegible] १००९ १००६० [illegible] ११५४७ १२१११ [illegible] १२८३१ [illegible] १३०१ [illegible] १४१७ [illegible] १४१८ [illegible] १४१६ [illegible] १४१८७ १४१८८ [illegible] १४२०० [illegible]

[illegible]

बाजार से सस्ती, बहुत सस्ती

शुद्ध हवन सामग्री

[illegible] हवन [illegible] लाभ उठाइये। [illegible] मूल्य इस प्रकार है [illegible] जिस भाव की चाहें उसी भाव की [illegible] सकते हैं। [illegible] शानदार सामग्री [illegible]

सुनीता शुद्ध हवन सामग्री

[illegible] व पो० [illegible]
[illegible] [उ० प्र०]

विश्व शान्ति एवं ऋषि मेला

[illegible] गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के [illegible] से [illegible] स्वामी [illegible] महाराज [गाजियाबाद] के ब्रह्मत्व में विश्व शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर श्रीयुत [illegible] द्वारा एक विराट ऋषि मेला का उद्घाटन किया गया। [illegible] बिहार बंगाल उड़ीसा हरियाणा [illegible] तथा उत्तरप्रदेश के सुदूर अंचलों से हजारों [illegible] ने भाग लिया। [illegible] विविध सम्मेलनों का आयोजन हुआ। दिनांक २१ फरवरी को श्रीमती [illegible] की अध्यक्षता में एक महिला सम्मेलन भी हुआ। सम्मेलन में पधारे हुए मुख्य महानुभावों [illegible] तथा श्री [illegible] आदि अनेक [illegible] ने अपने प्रवचनों तथा मधुर गीतों द्वारा जनता को [illegible] कर दिया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने [illegible] प्रदर्शन [illegible] अपने प्रवचनों द्वारा जनता को प्रभावित किया।

—आचार्य [illegible] शास्त्री कृष्णपुर

वार्षिकोत्सव

[illegible] का वार्षिक [illegible] अनेक [illegible]

वैदिक रीति से निर्मित शत प्रतिशत शुद्ध

हवन सामग्री

हेतु आदेश पत्र भेजिए—

हवन सामग्री भण्डार

[illegible] दिल्ली ११००[illegible]

(१) [illegible] निर्मित सामग्री बहुत कम [illegible] हमारे यहाँ [illegible] है
( ) हवन सामग्री की शुद्धता और उत्कृष्टता के कारण भारत सरकार से पूरे देश में इसे निर्यात करने का अधिकार प्राप्त है।
(३) [illegible] के [illegible] १० १० तथा १९ [illegible] में उपलब्ध है।
([illegible] प्रयोग हेतु [illegible] रु० ५० [illegible] उपलब्ध [illegible] पूरे देश में [illegible] है

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] ५ मीराबाई [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible] द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८-२-८१

चैत्र शुक्ल १०, रविवार, संवत् २०४५ वि० दिनांक २७ मार्च १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक-

मनमोहन तिवारी

★

सहायक सम्पादक-

सुखदेव पाठक एम० ए०,
व्याकरणाचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ४१

अङ्क १३

मानवता की रक्षार्थ-

आर्यसमाज को सहयोग दीजिए

पंजाब से हिन्दुओ का पुन पलायन - शरणस्थली आर्य समाज ही है।

★ ★ ★

दिनांक २६ माघ-था तो पंजाब कोई समस्या ही नहीं है, यह भारत के आनन्द की समृद्धि से भरा हुआ खुशहाल प्रदेश। उस धरती पर रहने वाले हिन्दुओं और सिखों ने, जो एक ही आर्य जाति के वंशज हैं, अपने खून पसीने की मेहनत से पंजाब की धरती को हराभरा बनाया है। पंजाब पर सारे देश को नाज था और हमारी बढ़ती हुई समृद्धि, लहलहाते हुए खेत और अन्न भण्डार कतिपय विदेशी शक्तियों को फूटी आंख नहीं सुहाए। उन्होंने विभाजक नीति अपनाकर भाई-भाई में फूट डालने का प्रयास किया है। तस्करी से बड़ी मात्रा में सीमा पार से आ रहे घातक हथियारों के पकड़े गए जखीरे इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं। निर्दोष हिन्दुओं / सिखों की हत्या का सिलसिला फिर शुरू हो गया है। फलतः हिन्दुओं का पंजाब से पलायन फिर हो रहा है। प्रतिदिन पचासों की संख्या में पुरुष स्त्री बच्चे अत्यन्त दयनीय हालत में करुणाजनक दर्दनाक गाथा के साथ आर्यसमाज दीवानहाल एवं दिल्ली स्थित अन्य आर्यसमाज मन्दिरों में शरण ले रहे हैं। कैसा कारुणिक एवं मार्मिक दृश्य है-अपने ही देश में अपने ही भाइयों का काफिला फिर शरणार्थी बनकर आ पड़ा है—अपने अस्तित्व की रक्षा करने। उग्रवादियों ने हिन्दुओं का गांवों में रहना मुश्किल कर दिया है। कोई दिन समाचार पत्र ऐसा नहीं आता जो बेगुनाहों के खून से रंगा हुआ न हो। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई बहुत दूरगामी नीति और षडयन्त्र के तहत सीमान्त इलाके को हिन्दूविहीन करा देने का कुचक्र चल रहा है ताकि फिर, अवसर मिलते ही, घात लगाती हुई दुश्मन की फौजें उस पवित्र भूमि पर कब्जा कर लें। आज हमारी जाति घोर संक्रमण काल में से गुजर रही है। ऐसे समय में हमारे नेताओं को महान दूरदर्शी राजनैतिक बुद्धिकौशल से काम लेने की आवश्यकता है।

आर्यसमाज के नरवीरों ने जब-जब समाज और देश पर विपत्ति आई है, अपनी जान हथेली पर रखकर मानवता की सेवा की है। हैदराबाद की निजामशाही जब हिन्दुओं पर घोर अत्याचार कर रही थी-आर्यसमाज ने सत्याग्रह का बिगुल बजाकर मानवता की रक्षा की थी। सिन्ध में जब अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को जब्त करने की आवाज उठाई गई तो आर्यसमाज ने ही अपने नेता सत्यनारायण स्वामी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह का बिगुल बजाया और विजय हमारी हुई। आज पंजाब में मानवता कराह रही है। अपने ही भाइयों के हाथों अपने भाइयों का खून होते हम नहीं देख सकते। आर्यसमाज को आगे आना होगा।

हम आर्यजगत के महान तपस्वी नेता पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी से निवेदन करते हैं कि वे एक 'अखिल विश्व आर्य महासम्मेलन' का आयोजन करें जिसमें देश-विदेश के प्रख्यात आर्य मनीषियों / विद्वानों / समाज सुधारकों / सिख गुरुओं, और राजनीतिक पुरुषों की सलाह से कोई ऐसी रणनीति तैयार हो जिससे हमारे देश के इस भूभाग में शान्ति का साम्राज्य हो जाए। आर्य जनता अपने नेता के मार्ग-दर्शन की प्रतीक्षा कर रही है।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—चैत्र शुक्ल १० संवत् २०४५, रविवार २७ मार्च १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि सवत् १९७२९४९०८८

रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति रामः-

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

राम का अर्थ है—जिसमें योगी लोग रमण करते हैं—उस साक्षात् पराशक्ति को ही राम कहते हैं। आज से ९।। लाख वर्ष पूर्व, त्रेतायुग मे, इस धरित्री पर धर्म के मूर्तिमान सूर्यवंशीय कुल में एक सुन्दर बालक जन्म लेता है। कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ उसका नाम 'राम' रखते हैं। योगियों का प्यारा ··· ··· प्रभु का प्यारा नाम—'राम'—'रामो नाम जनैः श्रुतः'। संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना करते समय महर्षि नारद से पूछा—'इस विश्व मे—'चारित्र्येण को युक्तः'—सबसे चरित्रवान् कौन है?। उत्तर मिला—'रामो विग्रहवान् धर्मः' धर्म की सगुण साकार प्रतिमा, वैदिक मर्यादाओं से समन्वित, इतिहास मे अनुपमेय राम ही तो है। और सच ··· ··· इस पावन वसुन्धरा ने सृष्टि के आदिकाल से जिन नरपुङ्गवों को जन्म देकर अपने को कृतार्थ किया है, उनमें आर्य पुत्र राम अद्वितीय है, अनुपमेय है। तुम जैसा तो, धरती आज तक पैदा ही नहीं कर सकी—'तो सो एक तू ही, और दूसरो न राजाराम' ··· ··· ··· ···। या तो तू पुरुष ही मेरे राम? पर तेरी करनी ने तुझे ईश्वर से भी ज्यादा प्यारा बना दिया। वह तो निराकार है··· ··· ··· ··· अजन्मा है, लेकिन उसके गुणों को प्रतिमूर्त करके, संसार क्षेत्र में उतरकर तेरे महान् कार्यों ने तुझे हमेशा हमेशा के लिए आर्यजाति के इतिहास में स्वर्णाक्षरमण्डित कर दिया है। 'यावच्चन्द्र दिवाकरौ' सूरज और चांद की तरह तेरा नाम भी अमर है। तेरे बिना हम सूने, हमारा इतिहास सूना है। कौन सी ऐसी वेद मर्यादा है जिसका तूने पालन नहीं किया, पालन करने की प्रेरणा नहीं दी। आदर्श मातृ पितृ भक्त, गुरुभक्त, ऋषिभक्त, भ्रातृभक्त, सखाभक्त, पतितपावन, प्रजाभक्त, शरणागत वत्सल, एकपत्नीव्रत, यती, तपस्वी, अछूत को हृदय से लगाने वाले—निषाद सखा, शबरी के झूठे फल खाने वाले, दुष्टदल विनाशक परम वीर क्षत्रियवंशावतंस—तेरे गुणों की अविरल शृङ्खला··· ··· ··· 'लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालम् तदपि तव गुणानां राम पारं न याति' सरस्वती भी लिखने में असमर्थ है, हमारी इस लेखनी में तो शक्ति ही कितनी है।

और तेरी—धर्मपरायणा ने, धर्म का पालन करके कमाल ही कर दिया। एक प्रसंग है—वनवास की आज्ञा तुझे होती है उसे नहीं ··· ··· पर जब देखा ··· ··· वनगमन के समय, वल्कलवस्त्र धारण करके तुरन्त साथ चलने को तैयार, उतावली पहिले स्वयं आगे-आगे ··· ··· ··· तो बहुत समझाया था तुमने ·· ··· 'वन में भयानक कष्ट हैं' ··· ··· ··· । 'सासु ससुर की सेवा करना तुम्हारा धर्म है··· ...' १४ वर्ष तो यूं ही बीत जायेंगे और मैं लौट आऊंगा। पर नहीं ·· ··· ··· आर्य पुत्री का एक ही उत्तर था—

'जल बिनु मीन, नदी बिनु वारी, तैसेहि नाथ पुरुष बिनु नारी'।

मैं तो तुम्हारे साथ ही चलूंगी, साथ ही रहूंगी चाहे जंगल हो या राजसिंहासन। भांवरों में तुमने वेद मन्त्र की शपथ ली थी—'समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ'—हम जल में जल की भांति मिलकर एक हो गये हैं, हमें कोई अलग नहीं कर सकता। और इस देश की प्यारी आर्य पुत्री! तेरे उस त्याग ने, विश्व की कोटि-कोटि ललनाओं को, आज लाखों वर्ष हो गये, महतों महीयसी, पूज्यनां पूज्य बती बनाकर रखा हुआ है। तेरे नाम की माला जपकर वे अपने को धन्य और पुण्यशीला समझती हैं।

इसलिए मेरा राम केवल आस्थाओं और विश्वासों का राम नहीं है। वह वास्तविकता के क्षेत्र में, मर्यादाओं की अग्नि में तपा हुआ देदीप्यमान आर्य रत्न है। कवियों ने उसका चरित्र नहीं बनाया उसका चरित्र, स्वयं ही काव्य बन गया। 'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है'। जो उसे कल्पना की आंखो से देखना चाहते है वे झूठे हैं, आर्य जाति के शत्रु हैं। उसके चरित्र का अनुकरण करके चाहे हमारा वैयक्तिक जीवन हो, सामाजिक जीवन हो, राजनैतिक जीवन हो, आध्यात्मिक जीवन हो, पिता पुत्र का सम्बन्ध हो, राजा प्रजा का सम्बन्ध हो, किसी भी कोने में हम पहुंच जायें, हम महान से महानतम, पुण्य से पुण्यतम बने है। समता, समानता, एकता, बन्धुता का अनुपम आदर्श लिए उसका 'राम राज्य' आज भी भटकती हुई राज्य व्यवस्थाओं के लिए एक चुनौती भरा आदर्श है। काश! पृथ्वी पर कहीं 'राम राज्य' उतर आये।

रामराज बैठे त्रैलोका, हरषित भये गये सब सोका।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

राम के सम्बन्ध में आर्यसमाज का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट है। हमारे प्रवर्तक ऋषि दयानन्द उन्हें आर्यपुत्र, आर्य जाति का रक्षक मानते थे। सुदूर दक्षिण में, अविद्या अन्धकार पूर्ण महारण्य में वैदिक आर्य सभ्यता का प्रकाश सर्वप्रथम दिग्विजयी राम ने ही पहुंचाया था। राम ने अपने विषय में स्वयं कहा है—

'आत्मानं मानुषं मन्ये रामो दशरथात्मजः' मैं दशरथ का पुत्र राम हूं, मनुष्य हूं। उन्होने अपनी आत्मिक शक्ति को इतना विकसित कर लिया था—जो किसी भी पुरुष के लिए असम्भव नहीं है—कि बड़े से बड़े दुर्गम कार्यों को अपनी बुद्धि कौशलता से पूर्ण करके दिखा दिया।

आज उनके जन्म दिवस पर हम केवल उनका गुणगान करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री न समझें बल्कि उनके उदात्त गुणों को अपने अन्दर विकसित करें। आज आर्य जाति निस्तेज होती जा रही है आज उसे जोरदार राम का क्षात्र तेज चाहिए। इसलिए आर्यो उठो उस वीर वर को क्षात्र शक्ति को धारण करके संसार से अधर्म, अन्याय, अत्याचार रूपी रावण का विनाश कर दो—यही वेद कहता है—अपघ्नन्तो ऽराव्णः 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' यही आर्यसमाज चाहता है, और यही उस महान पुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

———

नैतिक उत्थान आन्दोलन

चल चित्रो में–

नग्नता का प्रदर्शन

[श्री प० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

अपने देश के सनीमा कलाकारो का स्वागत अभिनन्दन होना ही चाहिए। कला के बिना मनुष्य पशु के समान है। बम्बई मे पुर्तगाली वर्ष (वाबर) के लायस क्लब ने १९८७ के लिए क्रमश. श्री देवी और अनिल कपूर को सवश्रेष्ठ अभिनेत्री तथा अभिनेता घोषित किया है। क्लब के मुख्य सलाहकार श्यामलबस गुप्त ने संवाददाताओ को बताया कि आगामी १९ मार्च को आयोजित अखिल भारतीय फिल्म पुरस्कार नाईट ८८ के अवसर पर इन तथा अन्य और अभिनेताओ को पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। इन अभिनेताओ का अभिनन्दन हो बहुत अच्छा है। परन्तु इनके द्वारा फिल्म जगत् मे नित्यप्रति नग्नता का प्रदर्शन जो कि अश्लीलता और भोग विलास की ओर हमारी युवा पीढ़ी को धकेल रहा है क्या सचमुच यह अभिनन्दनीय है। सनीमा विज्ञान और टी० वी० के माध्यम से सारी कौम को उत्तजक दृश्य दिखला-दिखला कर किस ओर बढ़ाया जा रहा है यह कुछ समझ मे नहीं आता। इन फिल्मी दृश्यो मे मार काट, लूट पाट, हिंसा, तस्करी, नशीली वस्तुओ का प्रयोग, विलासिता से परिपूर्ण नृत्य, डकैती, चोरी एव बलात्कार के दृश्य देश मे कितनी बुराई फैला रहे हैं इसकी किसी भी कर्णधार को फिक्र नहीं है। कच्ची उम्र मे इस प्रकार के दृश्य युवा पीढ़ी को भोगी शराबी और विलासी बना रहे है। इन फिल्मों को देखकर यह समझ मे नहीं आता कि उस सेंसर बोर्ड को इस फिल्मी दुनिया मे क्या उपयोगिता है।

मै तो स्पष्ट इन कर्णधारो से पूछना चाहता हू कि जिस प्रकार के अश्लील लिपटा-लिपटी के चित्र और दृश्य आम जनता को दिखलाए जाते हैं यदि इस प्रकार की हमारे परिवारो की बेटिया और बहुए उद्यानो मे, पार्को मे और सड़को पर ऐसे घिनौने दृश्यो को करने लग जाए तो क्या परिवार और समाज इस प्रकार चल सकता है?

आजादी के चालीस वर्षो के पश्चात् हिंसा, भ्रष्टाचार, डकैतियां, लूटपाट, चोरी और बलात्कार बढ़ हैं। इन सब बुराईयो का प्रचार चलचित्र जगत् से ही हो रहा है। किसी भी घर मे पहले दिन मे अथवा रात मे चोरी या डकैती होती थी तो सामान छीन कर और लूटकर ले जाने के अतिरिक्त कुछ नहीं होता था।

परन्तु अब सबसे पहले बलात्कार होता है और फिर सामान और धन की लुटाई। सबसे पहले उस घर की इज्जत लूटी जाती है और फिर सम्पत्ति। क्या इस बढ़ते हुए विलासिता से परिपूर्ण भ्रष्टाचार पर किसी ने विचार किया है। साधारण जनता अनुभव कर-करके रह जाती है। किससे शिकायत की जाए और किससे कहा जाए। आज कौन सुन रहा है। अच्छी और सच्ची आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज बन कर रह जाती है।

कहां तो भारतवर्ष का यह ऊचा गौरवमय आदर्श– मातृवत् पर दारेषु' दूसरी स्त्री को माता-बहन और बेटी के समान देखना और कहा आज का दूषित वातावरण जहा माता बहन और बेटी का सम्बन्ध ही समाज से गायब होता जा रहा है।

चलती और दौड़ती हुई सिटी बसो को देखिए देवियो को कितना तंग किया जा रहा है। किसी यात्री बस मे या ट्रेन मे बड़ी दुर्दशा है। आज पवित्र सम्बन्ध तो समाप्त होते जा रहे है।

इस सब का दोषी किसको ठहराया जाए। और इस सब मे कैसे सुधार लाया जाए यह एक जटिल प्रश्न है और बहुत बड़ी चुनौती है। घूम फिरकर फिर दृष्टि चलचित्र जगत के सुधार की तरफ ही जाती है। कहा तो कभी चरित्रवान् व्यक्ति एवं सती साध्वी पतिव्रता देवी की प्रतिष्ठा थी और कहा आज अस्थिर, चचल और अपनी कला के द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप मे अश्लील प्रदर्शन करने वाले सनीमा कलाकारो का अभिनन्दन हो रहा है। उन्हे पुरस्कृत किया जाता है।

जब तक देश मे नैतिक मूल्य स्थापित नहीं होंगे और आम जनता को उन नैतिक मूल्यों मे आस्था नहीं होगी तब तक देश निरन्तर अवनति की ओर बढ़ता चला जाएगा चाहे जितनी भी भौतिक सम्पदा एकत्र हो जाए।

अत सरकार, जनता सस्थानो, धार्मिक सस्थाओ, व्यावसायिक सस्थानो एव बुद्धि जीवियो को आगे बढ़कर सनीमा जगत् मे इस बढ़ती हुई नग्नता को तुरन्त रोकने का उपाय करना चाहिए अन्यथा यह हमारा पतन हमे पुन परतन्त्रता की ओर धकेल देगा।

मेरठ में रविदास जयन्ती

आर्यसमाज मेरठ शहर के साप्ताहिक सत्सग मे सन्त रविदास जयन्ती पर सन्त रविदास जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने सन्त जी की शिक्षाओ को आधुनिक सभ्य के लिए बड़ा उपयुक्त बताया। सन्त रविदास जी ने जन्म गत जात-पात को न मानते हुए ऊच-नीच के आधार पर घृणा के व्यवहार को अमानवीय बताया। सारी मानव जाति को एक मानने पर बल दिया। उन्होने अपनी शिक्षाओ मे मन की पवित्रता पर भी बल दिया। गंगा आदि पवित्र नदियों मे भी स्नान करने से व्यक्ति का उद्धार नहीं होता जब तक कि वह अपने मन को पवित्र न करें। समाज मे जनता की सेवा ही को उन्होने भगवान की वास्तविक उपासना बताया।

श्री प्रधान जी ने उनके आदर्शो पर चलने पर बल दिया जिससे कि समाज मे एकरूपता स्थापित हो सके और हम सब प्रेम और प्यार से मिलकर अपने देश की रक्षा करें। जिसे आज विदेशियो ने खतरे मे डाला हुआ है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज फतेहपुर का ७४वा वार्षिकोत्सव १ अप्रैल से ४ अप्रैल १९८८ तक बड़े धूमधाम से मनाया ज यगा। जिसमे महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, पण्डित महेन्द्रपाल आर्य, कुवर महिपालसिंह, सोहनलाल पथिक आदि उपदेशक प्रचारक पधार रहे हैं।

आर्यजन और दस्युजन

[स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी, पिथौरागढ़]

',विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान"

(ऋग्वेद १-५१-८) के अनुसार सज्जन-सदाचारी-शान्तिवादी-सुकर्मी मानव आर्यजन हैं और इसके विपरीत दुर्जन-दुराचारी-आतङ्कवादी-कुकर्मी मानव दस्युजन है। अज्ञान, अन्याय, अभाव आदि दूर करते हुए आर्यजन समाज व देश की सेवा करते हैं।

१९८८ ई० में संसार को बने हुए १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ८८ वर्ष हो गये। मनुष्यों की आदि अमैथुनी सृष्टि युवावस्था में त्रिविष्टप (तिब्बत) में हुई। सृष्टि के आदि आर्यसमाज में सुव्यवस्था हेतु मनीषियों ने आर्यजनों को चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में किसी एक वर्ण के वरण (चुनाव) के अनुसार जीवन यापन की परम्परा चलाई।

कालान्तर में आर्यजन तिब्बत के दक्षिण मे लगे हुये भूभाग में आ बसे। इसीलिये इस देश का नाम 'आर्यावर्त' पड़ा। बाद में यह देश भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, इण्डिया आदि नाम से जाना गया। १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के बाद यह देश 'भारत' कहलाया। संसार के प्राचीनतम संविधान 'मनुस्मृति' के अनुसार आर्यावर्त की सीमा-उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल के आग रामेश्वर-कन्याकुमारी तक, पश्चिम में सरस्वती (अटकनदी) और पूर्व में दृषद्वती (ब्रह्मपुत्र नदी)।

'किसी संस्कृतग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा, कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुये'-(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ८) स्वामी दयानन्द

ईरान के विद्यालयों में पढ़ाया जाता है, कि कुछ हजार साल पहले आर्यजन हिमालय-भारत से आकर अनुकूल जलवायु पाकर ईरान में में बस गये। 'चन्द हजार साल पेश अज़ ज़माना माजिरा बुजुर्गी अज़ निज़ाद आर्या अज़ कोहहाय कफ़ काज गुजिश्तः बर सर ज़मीनें कि इमरोज़ मस्कने मारत क़ौम निहादन्द। व चूं आब-व-हवाय ईं सर ज़मीन मु आफ़िक तब' अ खुद याफ़्तन्द दरीं जा मस्कने गुज़ीदन्द व आं रा बनाम खेश ईरान दादन्द।'

—जुगराफ़िया पंज कि तब (मतब अ दरसमहि तिहरान)

'किसी भी संस्कृत ग्रन्थ, चाहे वह कितना ही पुराना क्यों न हो, आर्यों के विदेशमूलक होने का उल्लेख नहीं मिलता है। ऋग्वेद में जिन दास, दस्यु एवं असुर जैसे नामों का उल्लेख है, वे अनार्यमूलक अर्थात् मूल आदिवासियों के लिये प्रयुक्त किये गये हों-इस प्रकार का कोई प्रमाण या संकेत उपलब्ध नहीं है।' —म्यूर (पाश्चात्य विद्वान्)

'न मनुस्मृति में, न वेदों में (वेदों में तो हो ही नहीं सकता-क्योंकि ये ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है) और न मनुस्मृति से प्राचीन किसी अन्य ग्रन्थ में (भारत आने से पूर्व) आर्यों के भारत से बाहर अन्य किसी देश में रहने का उल्लेख है।'

—हिस्ट्री आफ इण्डिया (वालूम-१) एलफिन्सटन

'आर्यों के भारत पर आक्रमण की मान्यता का न कोई प्रमाण है और न इसे पुरातत्व की सहायता से सिद्ध किया जा सकता है।'

—कल्चरल हिस्ट्री आफ इण्डिया (क्लारेन्डन प्रेस, आक्सफोर्ड १९७५) ए. एल. बाशम।

सिन्धुघाटी के मोहन जोदड़ो हड़प्पा की खुदाई में प्राप्त एक सील (मुद्रा) में : 'एक वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों में एक फल खा रहा है; जबकि दूसरा केवल देख रहा है'-इस चित्र का आधार संसार की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद (१-१६४सू२०) का प्रसिद्ध निम्नांकित मन्त्र है-

> द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
> तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

अतः हड़प्पा-संस्कृति, आर्य संस्कृति का ही अङ्ग है।

डा० विष्णु श्रीधर वाकंकर (पुरातत्व विभागाध्यक्ष, उज्जैन विश्वविद्यालय) ने ३० विशेषज्ञों के सहयोग से सिन्धुघाटी की सभ्यता से सम्बन्धित लगभग ढाई हजार मुद्रायें पढ़कर सिद्ध किया था, कि आर्य-सभ्यता, सिन्धुघाटी-सभ्यता से पुरानी है। इस खोज पर आधारित हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित डा० पद्मधर पाठक के लेख को पढ़कर केम्ब्रिज के डा० अल्चिन ने इसी समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखकर सावधान किया था, कि डा० फतेहसिंह की खोज से तो आर्य तथा द्रविड़ सभ्यता का तो भेद ही नहीं रह जायेगा।

दशाम्बे-तजाकिस्तान (रूस) में १९७७ ई० में यूनेस्को के तत्वावधान में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो० बी० बी० लाल के नेतृत्व में भारत सरकार के सात सदस्यीय दल ने सिद्ध किया, कि पुरातत्व के आधार पर एक भी प्रमाण नहीं है, जिससे आर्यों का कहीं बाहर-ईरान, अफगानिस्तान या मध्य एशिया से आकर भारत पर बलात् अधिकार कर लेना सिद्ध होता हो।

प्रिन्सपल पी० टी० श्रीनिवास आयंगर ने अपनी पुस्तक (द्रविड़यन स्टडीज) में आर्यों और दस्युओं के भेद को जातीय न मानकर गुण-कर्म स्वभाव पर आधारित माना है।

मद्रास विश्वविद्यालय के श्री बी० आर० रामचन्द्र दीक्षितर ने अपनी पुस्तक (ओरिजिन एण्ड स्प्रेड आफ दि तमिल्स) में लिखा है-'सत्य यह है कि दस्यु (जातीय भेद की दृष्टि से) आर्येतर नहीं थे। यह मत कि दस्यु व द्रविड़ लोग पंजाब और गंगा की घाटी में रहते थे और जब आर्यों ने आक्रमण किया, तो वे आर्यों से पराजित होकर दक्षिण की ओर भाग गये और दक्षिण-भारत को ही अपना घर बना लिया-युक्तियुक्त नहीं है।' वास्तव में विभिन्न जलवायु-स्थानादि के कारण-गुण कर्म-स्वभाव पर आधारित-द्रविड़, कोल, भील, सन्थाल आदि आर्यजनों के वंशज हैं तथा इनकी भाषाओं में संस्कृत शब्द बहुत हैं।

भारत में अस्थिरता पैदा करने हेतु आर्यजनों को विदेशी आक्रान्ता और द्रविड़, कोल, भील, सन्थाल आदि को भारत का मूल निवासी बताने का विचार सर्वप्रथम 'केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' में दिया गया। तत्पश्चात् इस मान्यता का निरन्तर प्रचार करने हेतु टी० एच० ग्रिफिथ को बनारस कालेज का प्रिन्सिपल और ए० सी० वुल्नर को ओरियन्टल कालेज लाहौर का प्रिन्सिपल बनाया गया।

अंग्रेजों के षड्यन्त्र का शिकार-भारतीय इतिहास-ग्रन्थों में

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भारतीय नवजागरण का द्रष्टा ऋषि दयानन्द

[प्रस्तुति—डा० वसन्त कुमार शास्त्री, अमेठी डा० रघुवंश के शोध प्रबन्ध के आधार पर]

उन्नीसवीं शती के भारत की पूरी परिस्थिति को सामने रखा जाय तो एक ओर हिन्दू समाज की विश्रृंखलता और मूल्यों के क्षेत्र में व्यक्ति निष्ठा का प्राधान्य था, तो दूसरी ओर इस्लाम कुछ शताब्दियों तक विजेताओं और शासकों का धर्म रहने के कारण अपनी पराभूत अवस्था में भी हिन्दू समाज से अंग्रेजों की विदेशी शक्ति के विरुद्ध मिलने की मानसिकता नहीं रखता था। अंग्रेजों ने आगे इसका लाभ ही नहीं उठाया, वरन् इस अलगाव को गहरे विरोध में परिणत किया। ईसाई-धर्म, शासकों के संरक्षण में हिन्दू समाज की कमजोरियों का लाभ उठा रहा था। इस समय हिन्दू समाज पुन. निहित स्वार्थ के व्यक्तियों और वर्गों से हर तरह पीड़ित और शोषित था, और अन्य धर्मों के सामने असुरक्षित भी। छुआ छूत वर्ण-व्यवस्था का अत्यन्त विकृत रूप, मन्दिरों तथा तीर्थों में पाखण्ड और ठगी, कुरीतियां आदि हिन्दू समाज में व्यापकरूप में छा गये थे। चारों ओर नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो रही थी, समाज का मानवीय मूल्यों का आधार समाप्त हो चुका था। ऐसा मूल्य विहीन विघटित हिन्दू समाज विघटित विश्रृंखलित रूपमें राजनीतिक-आर्थिक स्तर पर विदेशी शासन के सामने टिक नहीं सका, कमजोर होता ही जा रहा था अंग्रेज उनके पाखण्ड और उनकी स्वार्थपरता का लाभ उठा कर अपनी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाते गये थे।

स्वामी दयानन्दमें भारतीय हिन्दू समाज की जड़ता और विकृतियों की पहचान सहज भाव से उत्पन्न हुई। शिवलिंग पर दौड़ते हुए चूहों से उस बालक के मन में जो घटित हुआ, वह साधारण नहीं था। भारतीय समाज के अन्दर सैकड़ों वर्षों से जमती हुई जड़ता इस प्रकार उस द्रष्टा के मन में कौंध गई। फिर वह उस परिवेश से मुक्त होकर सत्य की खोज के लिए निकल पड़ा, उनके सामने दूसरा विकल्प नहीं था। वर्षों, काफी आयु तक उसे सत्य के अनुसंधान के लिए भटकना पड़ा। नदी-नाले, घाटी-दर्रे, पर्वत-शिखर चारों ओर वह भटकता रहा। पण्डितों से उसने शास्त्रों का अध्ययन किया, योगियों से उसने योग सीखा। पर उसके सामने एक ही लक्ष्य था—भारतीय हिन्दू समाज को इस अन्धकार से प्रकाश में किस प्रकार लाया जाय? कुरीतियों, कुसंस्कारों, जड़ताओं, अन्धविश्वास से कैसे मुक्त किया जाय? यह लक्ष्य उनके सामने से कभी ओझल नहीं हुआ।

अन्तत स्वामी विरजानन्द के पास उसने अध्ययन किया। गुरु-शिष्य ने एक दूसरे को पहचाना। जैसे दोनों को एक-दूसर की तलाश थी। शिष्य शास्त्रों के अध्ययन के बाद गुरु को दक्षिणा देने के लिए प्रस्तुत हुआ, गुरु ने दक्षिणा मांगी—जाओ सत्य का प्रचार करो और अन्धकार दूर कर अपने समाज की सेवा करो। शिष्य निकल पड़ा, उसने जीवन भर गुरु दक्षिणा को चुकाया। स्वामी दयानन्द का व्यक्तित्व खण्डन-मण्डन प्रधान जान पड़ता है, क्योंकि ऐसा प्रक्षेपित किया गया है। पर यह सही नहीं है। अन्धविश्वास, पाखण्ड कुसंस्कार, स्वार्थपरता के अन्धकार को दूर करने के लिये यह मार्ग अपनाना अनिवार्य था। इसी प्रकार दूसरे धर्मों की जड़ताओं और अन्धविश्वासों को उजागर करना जरूरी था, क्योंकि धर्म के स्तर पर अपने हिन्दू समाज में आत्मविश्वास जगाना भी जरूरी था। पर उनकी दृष्टि अन्यत्र थी, क्योंकि उनका लक्ष्य भिन्न था। समाज के स्वस्थ और गतिशील निर्माण के लिए जड़ताओं के अन्धकार को दूर करना आवश्यक था। परन्तु वास्तविक लक्ष्य तो समाज का पुनर्निर्माण ही था।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की कल्पना की। यह उनकी सूक्ष्म दृष्टि का परिणाम है। उन्होंने आर्य धर्म नहीं कहा, उन्होंने परम्परित हिन्दू समाज से अलग होकर सम्प्रदाय, धर्म के नाम पर, चलाने की चेष्टा नहीं की। उनका उद्देश्य पूरे भारतीय समाज को एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक धारावाहिक इकाई के रूप में परिभाषित और संगठित करने का था। साथ ही उनका प्रयत्न था कि यह समाज कुसंस्कारों से, जड़ताओं से, अन्धविश्वासों से, कर्मकाण्डों से मुक्त होकर शुद्ध मानवीय मूल्यों के आधार पर गतिशील हो। यहां स्वामी जी आर्य शब्द को जाति अथवा धर्मवाचक न मान कर श्रेष्ठता वाची मानते हैं और उनके अनुसार जो भी श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का आचरण करता है, वह आर्य है। उन्होंने जाति, वर्ण, धर्म के परे ऐसे समाज की कल्पना की जो इन मूल्यों का जीवन बिताने के लिए प्रयत्नशील हो।

उन्होंने यह अनुभव किया होगा कि जब-जब समाज को मूल्यों-मुखी करने का प्रयत्न किसी विशेष संगठन के नाम पर किया जाता है तो आगे चल कर नामधारी धर्म या सम्प्रदाय प्रमुख हो जाता है और मूल्य गौण हो जाते हैं, यहां तक कि वे विकृत और भ्रष्ट हो जाते हैं। स्वामी जी ने इसी कारण अपने आन्दोलन को ऐसा नाम नहीं दिया। यद्यपि उन्होंने जब वैदिक धर्म की व्याख्या की, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को स्थापित करने का प्रयत्न किया, नाम देने का आग्रह नहीं किया अपनी व्याख्या में उन्होंने पूरा प्रयत्न किया कि भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म से उन तत्वों को उजागर किया जाय जो व्यक्ति और समाज को ऊंचे मूल्यों के स्तर प्रतिष्ठित और विकसित करते हैं और ऐसे अंशों, पक्षों और तत्वों का अवैदिक [अर्थात् जो श्रेष्ठ मूल्य-परम्परा में नहीं आते] कहकर खण्डन किया जो मानवीय मूल्यों के विपरीत पड़ते हैं। यह मूल दृष्टि साधारण व्यक्ति की नहीं है, सूक्ष्म दिव्य द्रष्टा की है, जो साधारण अर्थ में सही-गलत, पक्ष-विपक्ष, अर्थ-अनेकार्थ को स्वीकार नहीं करता वरन् अपने समाज को मानवीय मूल्यों की उच्चस्तरीय भूमिकाओं की ओर प्रेरित करने की दृष्टि से सत्य को ग्रहण करता है।

स्वामी दयानन्द ने वेद और उपनिषदों को स्वीकार किया उपनिषदों में केवल प्राचीनों को, और उनकी अपनी व्याख्या पद्धति अपनाई। पुराणों के बृहद् साहित्य को प्रमाण की दृष्टि से उन्होंने अस्वीकार किया। स्वामी जी ने धार्मिक और सामाजिक संस्कारों और कर्मकाण्डों से एक विशिष्ट वर्ग के रूप में पुरोहित को हटा दिया। इसी प्रकार साधु सन्यासी की स्थिति को बदल दिया। समाज के द्वारा पूजा जाने वाले और मात्र आशीर्वाद देने वाले साधुओं सन्यासियों को उन्होंने समाज में स्वीकृति नहीं दी। इस रूप में उस पर समाज की सेवा, शिक्षा और उसके उन्नयन का दायित्व रखा। अन्यथा अपने गृहस्थ-आश्रम के कर्त्तव्य को निभाने के बाद व्यक्ति को वानप्रस्थ आश्रम में समाज की सेवा और शिक्षा का दायित्व निभाना अपेक्षित है सन्यास आश्रम में आत्मोन्नयन के साथ व्यक्ति का अपने

(शेष पृष्ठ ११ पर)

योगियों की खोज में

दयानन्द का प्रयाण

(आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव जी स्नातक, शिरोमणि शास्त्री, एम० ए०, पी० एच० डी०, भोगांव (मैनपुरी)

ऋषिवर दयानन्द को अपने सच्चे गुरु विरजानन्द जी के समीप में पहुंचने से पूर्व यह लगन लगी हुई थी कि वे किसी भांति सत्य एवं योग सम्बन्धी ज्ञान को प्राप्त करलें और योगियों का दर्शन तथा उनका सामीप्य प्राप्त कर योग सम्बन्धी शिक्षा को ग्रहण कर सत्य स्वरूप परम ब्रह्म 'परमात्मा की उपासना में संलग्न रहते हुए मानव-जीवन के लक्ष्यीभूत 'मोक्ष'[सभी प्रकार के कष्टों एवं दुखों से छुटकारा]को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना लें। इसी लक्ष्य अथवा उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए २६ मार्च सन् १८५७, बृहस्पतिवार के दिन वे नर्मदा के उद्गम स्थान की ओर चल पड़े।

इससे पूर्व भी वे एकबार नर्मदा की यात्रा कर चुके थे किन्तु नर्मदा के उद्गम स्थान तक पहुच न सके थे। इस बार उन्होंने यह निश्चय कर रखा था कि वे नर्मदा के उद्गम स्थान अर्थात् जहां से नर्मदा नदी निकलती है वहां तक अवश्य पहुंचेंगे और उन स्थलों पर निवास करने वाले योगियों का दर्शन एवं उनका सामीप्य प्राप्त कर योग की शिक्षा को अवश्य ग्रहण करेंगे। नर्मदा के उद्गम स्थान तक पहुंचने का मार्ग जानने के लिए उन्होंने किसी से बात भी न की। जिस ओर से नर्मदा निकल कर आ रही थी, उसी ओर पूर्ण निर्भीकता के साथ चल दिए। चलते-चलते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए जो पूर्णतया निर्जन तथा सुनसान था। इस स्थान के चारों ओर बहुत घने वन थे। उस वन में क्रमरहित एवं भग्न तथा सुनसान झोपड़ियां थीं। उन्होने एक झोपड़ी पर थोड़ा सा दुग्धपान किया और तदनतर वे पुनः आगे की ओर चल पड़े। लगभग ढाई किलोमीटर चलने के पश्चात् वे एक ऐसे स्थल पर पहुंच गये कि जहां से कोई बड़ा मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता था। कुछ छोटे-छोटे मार्ग अवश्य दृष्टिगोचर हो रहे थे। इन्हीं छोटे मार्गों में से एक मार्ग को उन्होने चयन कर लिया तथा उसी पर चल पड़े और इस भांति वे एक सुनसान तथा निर्जन वन में पहुंच गये। इस स्थल पर बेरों के अनेक वृक्ष थे, साथ ही वहां लम्बी-लम्बी तथा सघन घास उगी हुई थी कि जिसके कारण कहीं भी कोई मार्ग दृष्टिगोचर नही हो रहा था। उस स्थान पर एक बृहत्काय कृष्णवर्ण का लम्बा रीछ आ पहुंचा। उसे देखकर सच्चे तथा निर्भीकता के साक्षात्स्वरूप एव आस्तिक ऋषि दयानन्द तनिक भी विचलित नहीं हुए और उसी स्थान पर चेष्टाविहीन स्थिति में निस्तम्भरूप में खड़े रहे। वह रीछ ऋषिवर को इस स्थिति में देखकर भीषण रूप में चीखा तथा चिंघाड़ मारकर अपनी पिछली टांगों के बल खड़ा हो गया। साथ ही उसने ऋषिवर को खा लेने के लिए अपने मुख को खोला। यह देखकर ऋषिवर ने अपने दण्ड को ऊपर की ओर उठाया। उसे देखकर रीछ वहां से चला गया।

इसी बीच कुछ शिकारी लोग रीछ के इस भीषण शब्द को श्रवण कर अपने शिकारी कुत्तों के साथ ऋषिवर की सहायता हेतु वहां आ पहुंचे तथा उन्होंने ऋषिवर से अपने ही साथ चलने का आग्रह किया तथा उन्होने ऋषिवर से यह भी कहा कि यह वन अत्यन्त सघन तथा सिंह, हाथी और रीछ आदि भयंकर जन्तुओं से युक्त है अतएव भयावह है।

आस्तिकता के प्रबल समर्थक एवं निर्भीक ऋषिवर ने उनके कथन की तनिक भी चिन्ता न की क्योंकि वे जानते थे कि उनके शरीर में तथा उस वन में सर्वात्मना व्याप्त उनका आराध्य देव सर्वत्र उनके साथ है तथा वही उनका रक्षक और सहायक है। इससे महान् उनका सहायक अन्य और कौन हो सकता था ? अतएव उन्होंने उन शिकारियों से कह दिया कि वे उनकी तनिक भी चिन्ता न करें।

उस यात्रा का उनका एकमात्र उद्देश्य नर्मदा के उद्गम स्थान को देखना था। अतएव अविचलित रूप में निर्भीकता के साथ एकाकी ही आगे की ओर बढ़ते गये। पुनः आगे बढ़ने से पूर्व उन शिकारी बन्धुओं ने एक लम्बा दण्डा देकर कहा कि इससे अपनी रक्षा करते रहना। ऋषिवर के समीप तो अपना दण्डा था ही। अतएव थोड़ी दूर आगे चलकर उनके द्वारा प्रदत्त दण्डे को फेंक दिया। तथा वे बराबर आगे की ओर बढ़ते गये।

सयंकाल हो रहा था। शीघ्र ही चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार छा गया। चारों ओर कुछ भी दृष्टिगोचर न हो रहा था। न कोई ग्राम, न कोई मानव और न कोई झोपड़ी ही दृष्टिगोचर में आ रही थी। थोड़ा ही आगे बढ़ने के पश्चात् उनको एक भीषण वन मिला जिसके अन्दर प्रवेश करना भी दुस्तर तथा दुरुह था। चारों ओर कांटेदार बेर आदि के वृक्ष लगे थे जिनके कारण मार्ग भी कण्टकाकीर्ण हो रहा था। अन्धकार के आवृत उस स्थल पर कुछ दृष्टिगोचर हो सकना संभव न था। परिणाम स्वरूप उनको उस वन में प्रवेश करना असम्भव सा प्रतीत हुआ किन्तु फिर भी अपने आत्मबल का आश्रय लेकर बड़े साहस के साथ उस वन में प्रवेश किया। यहां उन्हें पेट के बल तथा घुटनों के सहारे सर्प के सदृश लेट लेटकर आगे की ओर बढ़ना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि उनके सभी वस्त्र फट गये, साथ ही उनके शरीर में अनेक गहरे घाव भी हो गये। इस भांति उनका शरीर पूर्णतया क्षत-विक्षत हो गया। तब भी उन्होंने आशा का त्याग नहीं किया। कहीं २ मार्ग अवरुद्ध भी हो जाता था किन्तु फिर भी वे किसी न किसी प्रकार आगे बढ़ते ही गये। कुछ दूर पहुंचने के पश्चात् वे एक ऐसे भीषणतम स्थान पर पहुंच गये कि जहा चारों ओर ऊंची-ऊंची चट्टानें तथा पहाड़ियां थीं किन्तु वहाँ से कुछ दूर पर उन्हें बस्ती के होने के कुछ स्थान दृष्टिगोचर से हुये। पुनः आगे बढ़ने पर उन्हें कुछ झोपड़ियां तथा टूटे-फूटे घट दिखलाई दिये कि जिनके अन्दर टिमटिमाता हुआ प्रकाश परिलक्षित हो रहा था। वहीं एक झोपड़ी में उन्होंने उस रात्रि को व्यतीत किया। अगले दिन पुनः उनकी कष्टकाकीर्ण यात्रा प्रारम्भ हुई और अनेकों कष्टों को झेलते हुए वे योगियों की तलाश में इतस्ततः घूमते रहे और अन्त में महान योगिराज गुरुवर विरजानन्द को पाकर स्वयं निहाल हुए तथा विश्व को निहाल कर दिया।

★

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

(श्री रघुवीरशरण आर्य जिज्ञासेवक विश्वकल्याण शोध संगम
नारायन टोला, बहजोई, मुरादाबाद)

वैदिक धर्म को शाश्वत् सचाइयों को अपने समग्र रूप मे अपने जीवन में धारण करने वाले मानवरत्न मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम महर्षि वाल्मीकि के शब्दों मे–'रामो विग्रहवान् धर्मः'।

श्री राम का जीवन वैदिक मर्यादाओ का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मातृ पितृ भक्ति, आदर्श गुरुभक्ति, आदर्श भ्रातृ प्रेम, आदर्श मित्र, सुराज्य संस्थापक, एक पत्नीव्रत निरत, परोपकारक, प्रजापालक नरेश, नौलाख वर्ष के इतिहास मे अन्य कोई नहीं हुआ।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार 'राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिये विदा किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैने कुछ भी अन्तर नहीं देखा'।

दक्षिण पथ के सुदूरवर्ती, अविद्यान्धकार पूर्ण महा अरण्य में वैदिक आर्य सभ्यता का प्रकाश मुख्यतया सर्वप्रथम लोक-दिग्विजयी श्री राम ने ही पहुंचाया था। श्रीराम से पूर्व विन्ध्याचल पार का वन प्रदेश इन्द्रिय लोलुप, रक्त पिपासु राक्षसो का लीला निकेतन बना हुआ था। वानर वंश के एक दो छोटे राज्यों के अतिरिक्त सर्वत्र राक्षसो का ही एकाधिपत्य था। श्रीरामचन्द्र जी ने दण्डकारण्य मे प्रेम और सदुपदेश से वानर जाति को मित्र बनाया तथा महावीर हनुमान के सेनापतित्व में उन्हीं वानरो को अपनी संगठन शक्ति एवं राजनीति कौशल से लंका द्वीप के अतुल बलशाली तथा महा पराक्रमी राक्षस जाति के साम्राज्य का अनाचारी रावण सहित विध्वस किया। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय वैजयन्ती फहराकर रावण के अनुज विभीषण को प्रजा पालनार्थ अभिषेक कर नियुक्त किया। दक्षिण पथ मे वैदिक संस्कृति का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा को अवधि पूर्ण होने पर श्री रामचन्द्र जी अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या मे लौट आये और साकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति धर्म का पालन करते रहे। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार श्रीराम आत्मवान् नियतात्मा, अदीनात्मा, गुणवान्, सर्वगुणोपेतः, ज्येष्ठगुणैर्युक्तः, शुभ लक्षणः, वशी, जितक्रोधः, साधु, नीतिमान, धर्मज्ञः, कृतज्ञः, शुचिः, चारित्र्य सम्पन्न, दृढ़व्रतः, अनसूयकः, आर्यः, समाधिमान्, समुद्रइव, गम्भीरः, पृथ्वीसम. क्षमावान्, धनदेवसमः त्यागवान्, धर्म इव सत्ये स्थितः, समः, सर्वसमः, सदा सद्भिरभिगतः, श्रीमान्, लक्ष्मीवान्, धाता, सर्वभूतहितेरतः, जीवलोकस्य रक्षिता, धर्मस्य रक्षिता, सर्वलोक प्रियः, प्रजापतिसमः, अरिन्दमः, रिपुनिषूदनः, शत्रु निबर्हणः, प्रतापवान् सुविक्रमः, यशस्वी, महेष्वासः, जातरोषस्य देवा अपि बिभ्यति, कालाग्निसदृशः, क्रोधः, विद्वान, ज्ञान सम्पन्न, विचक्षणः, बुद्धिमान्, स्मृतिमान्, प्रतिभानवान्, वेद वेदाङ्ग तत्त्वज्ञः, सर्वशास्त्रतत्त्वज्ञः, धनुर्वेदे निष्ठितः, वीर्यवान्, महावीर्यः, धैर्येण हिमवान् इव, सत्यपराक्रमः, समर्थः, विष्णुना सदृशो वीर्ये, सत्वाक्, वाग्मी, समविभक्ताङ्ग, सुशिराः, सुललाटः, महाहनुः, कम्बुग्रीवः, गूढजत्रुः, महाबाहुः, पीनवक्षाः, विशालाक्षः, प्रियदर्शनः, द्युतिमान् आदि अनकानेक गुणों से युक्त हैं। हम भी श्रीराम के जीवन चरित्र से शिक्षा लेकर उन जैसे ही गुण धारण करके उनकी सच्ची भक्ति करने का प्रयत्न करते रहें। इसीलिए प्रति वर्ष रामनवमी का पर्व मनाने की परिपाटी नौ लाख वर्ष बीत जाने के उपरान्त भी आज तक चली आ रही है।

शुभ रामराज्य यदि लाना है

सुख-शान्ति और सौजन्य भरा, शुभ रामराज्य यदि लाना है।
ऋषि दयानन्द की वाणी का, जगती को बोध कराना है ॥ टेक ॥

अगर महल की नींव सुदृढ़ हो,
और ईंट मजबूत सुगढ़ हो,
तभी भव्य प्रासाद बनेगा–
मिस्त्री यदि अनुभवी कुशल हो,
सद्धि सुजनता की वेदी पर, जीवन का महल बनाना है ॥सुख-शान्ति।

नींव बने भारत की शिक्षा,
यहाँ न कोई मांगे भिक्षा,
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' गायें,
दयानन्द की थी यह इच्छा,
दयानन्द की ही शिक्षा से, जग में उजियाला लाना है। सुख-शान्ति।

सारे अगणित धर्म एक है,
धर्म अनेकों देश एक है,
वेद–वाक्य यह पूर्ण सत्य है,
देव बहुत पर ईश एक है,
उस एक ईश का पूजन हो, जग में सबको सिखलाना है। सुख-शान्ति।

मानव सेवा श्रेष्ठ कर्म है,
गीता का बस कर्म मर्म है,
सत्य – अहिंसा को अपनायें,
वैदिक ओ' यह आर्य-धर्म है,
वैदिक मत का सत्य विवेचन, अब मानव को बतलाना है। सुख-शान्ति

वैदिक पथ पर चलकर मानव,
मारेगा हिंसा का दानव,
सत्य अहिंसा की डाली पर–
सौख्य–सुमन महकेगा अभिनव,
मधुर शान्ति-फल खिला-खिलाकर, मार्ग मुक्ति का दिखलाना है। सुख०

हिंसा औ आतंक मिटाओ!
मैत्री, करुणा, प्रेम बढ़ाओ,
हिंसा के दल - दल में डूबे–
भ्रातृ जनों को गले लगाओ,
शान्ति अहिंसा का 'ईश्वर' अब उज्ज्वल नव-दीप जलाना है। सुख०।

–ईश्वरचन्द्र (सा०ला०उ०का० शिक्षक) केन्द्रीय विद्यालय, फतेहगढ़

निराकरण

'आर्यमित्र' अङ्क १२ दिनांक २०–३–८८ के पृष्ठ १० पर आर्य समाज पाली जनपद हरदोई का निर्वाचन गलत प्रकाशित हो गया है उसका निराकरण करते हुए संशोधित मान्य निर्वाचन निम्न प्रकार पढ़ें।

प्रधान–श्री चन्द्रप्रकाश मिश्र
मन्त्री–श्री राधेश्याम जोशी
कोषाध्यक्ष–श्री सुधीर कुमार बाजपेयी

आदेश

स्वयं सेवा की भावना से भेजे गये प्रार्थना-पत्रों के आधार पर, निम्नांकित आर्यजनों को आर्य-संगठन के हित में, उनके नाम के सम्मुख अंकित जनपद मे अवैतनिक सेवा करने हेतु, इस सभा की ओर से, निरीक्षक नियुक्त किया जाता है।

यह नियुक्तियाँ सर्वथा अस्थायी हैं और किसी भी समय बिना कोई कारण बताये समाप्त की जा सकती हैं।

निरीक्षकों के कर्तव्याधिकारों के लिए कृपया इस सभा का मुख्य-पत्र (गजट) 'आर्यमित्र' साप्ताहिक देखें।

क्र०सं०	नाम व पता	नियुक्त जनपद
१–	श्री छेदालाल जी आर्य पचवारी, इटावा	इटावा
२–	,, रमाकान्त जी आर्य, ३३० गुलरिया गार्डी, बाराबंकी	बाराबंकी
३–	,, श्रीकृष्ण जी आर्य, महुआखेड़ा (काशीपुर) नैनीताल	नैनीताल
४–	,, डा०ओमप्रकाश जी गुप्त, गुजहट्टी, मुरादाबाद	मुरादाबाद
५–	,, सन्तोषकुमार जी आर्य, ५६, के०एल० कीडगंज, इलाहाबाद	इलाहाबाद
६–	,, ब्रह्मसिंह जी आर्य, छपरौली, मेरठ	मेरठ
७–	,, विजयशंकर जी आर्य, ढकौली, कठहारा, बलिया	बलिया
८–	,, सत्यनारायण जी गुप्त, मोहम्मदपुर, फखरपुर, बहराइच	बहराइच
९–	,, वीरेन्द्रसिंह जी वीर मनौना आँवला, बरेली	बरेली
१०–	,, विद्यासागर जी आर्य, मेरापुर, फर्रुखाबाद	फर्रुखाबाद

इन्द्रराज
प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

अध्यापक धर्म प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज मवाना के मन्त्री एवं अन्य अधिकारियों तथा प्रधानाचार्या, आर्य कन्या इन्टर कालेज के सराहनीय सहयोग से मवाना में धर्म प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १४, १५, १६ फरवरी १९८८ को किया गया। इस कार्य में श्री द्विजेन्द्रपाल, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, कृषक डिग्री कालेज,मवाना,श्री नरेन्द्रकुमार शास्त्री,मवाना, श्री देवपाल शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज मवाना ने प्रशिक्षण कार्य में बिना किसी प्रकार की दक्षिणा लिये सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उनके प्रति विशेष आभार व्यक्त करती है तथा अन्य सभी सहयोगी महानुभावों को धन्यवाद देती है। माधवसिंह

मन्त्री–प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश

धर्मरत्न परीक्षा तिथि ३-४-८८ के स्थान पर १७-४-८८ कर दी गई है। परीक्षार्थी सूचियाँ शुल्क सहित तत्काल भेज दी जावें। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा ५ के विद्यार्थियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित कराया जावे। संस्थाओं के प्रधानाचार्यों और उनके प्रबन्धकों से सानुरोध निवेदन है कि वे इस ओर तत्काल ध्यान देवें। माधवसिंह

मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के निरीक्षकों के कर्तव्याधिकार

१–वह आर्य उप-प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों व उनके सत्संगों आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा अन्य सभी प्रकार की आर्य संस्थाओं व उनसे सम्बद्ध इस सभा की सम्पत्ति आदि का निरीक्षण, उनके आय–व्यय का सम्परीक्षण तथा उनकी अव्यवस्थित सम्पत्ति की नियमानुसार व्यवस्था करके प्रत्येक कृत कार्यवाही से, एक सप्ताह के भीतर, उचित माध्यम से, मान० मंत्री जी, सभा को विस्तारपूर्वक अवगत करावेंगे।

२–वह उक्त उपसभाओं व आर्यसमाजों के वार्षिक चिट्ठों के साथ-साथ उन पर देय दशांश, सुबकोटि, प्रतिनिधि तथा वेद प्रचार निधि का शुल्क एवं आर्यमित्र ग्राहक शुल्क आदि तथा इस सभा की सहायतार्थ मिलने वाले अन्य सभी प्रकार के दान व चन्दा आदि, इस सभा की छपी हुई रसीद देकर, विधिवत प्राप्त करेंगे और प्राप्त धन यथा समय सभा को उपलब्ध करावेंगे।

३-वह नवीन आर्यसमाजों व अन्य सभी प्रकार की नवीन आर्य संस्थाओं की स्थापना, निष्क्रिय आर्य समाजों को सक्रिय तथा असम्बद्ध आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं को इस सभा से सम्बद्ध करावेंगे।

४–वह आर्यमित्र-पत्र के नवीन ग्राहक बनावेंगे तथा पुराने अनियमित ग्राहकों को प्रेरित कर उन्हें पुनः नियमित करेंगे।

५–वह आर्यसमाज के नियमोपनियम तथा इस सभा के नियमों, निश्चयों तथा आज्ञाओं का उल्लंघन करने वाले अनुशासनहीन आर्य जनों पर तीव्र दृष्टि रखेंगे और असाधारण स्थिति में उनके विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही, हेतु माननीय मन्त्री जी, सभा की सेवा में विस्तारपूर्वक अपनी संस्तुति प्रेषित करेंगे।

६–वह, उपर्युक्त के अनन्तर, इस सभा के उन सभी निश्चयों तथा आदेशों का भी निष्ठापूर्वक परिपालन करेंगे जो उन्हें समय समय पर प्राप्त होंगे। इन्द्रराज

प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

देव दयानन्द

न जाने जीवन में कष्ट कितने सदा ऋषिवर उठाये तुमने।
स्वयं बुझा करके दीप अपना असंख्य दीपक जलाये तुमने।।

जो घोर निद्रा में सो रहे थे स्वयं ही अपने को खो रहे थे।
जगा के घर-घर में ज्ञान ज्योति यह सोते मानव जगाये तुमने।।

कुसुम जो उपवन के झर रहे थे जिगर के टुकड़े बिखर रहे थे।
उठा के कोमल जिगर के टुकड़े हृदय से अपने लगाये तुमने।।

जिन्होंने तुमको यह विष दिया था उन्हीं को तुमने क्षमा किया था।
दया के सागर दया को जानो यह चार चांद लगाये तुमने।।

–जगदीश शरण शीतल, चाँदपुर (बिजनौर)

सूचना

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा दस सुयोग्य आजीवन ब्रह्मचर्य व्रतधारी स्नातकों को भारतीय दर्शनों की शिक्षा देने हेतु एक अनुपम योजना प्रारम्भ की गई है।

इसका प्रशिक्षण समारोह दिनांक २७–३–१९८८ रविवार प्रातः ९–०० बजे, आर्यसमाज मन्दिर, सी–३ ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली में सम्पन्न होगा। सभी आमन्त्रित हैं।

अजमेर में उपदेशक महाविद्यालय

महर्षि दयानन्द की पुण्यस्थली अजमेर में दिनांक १ से ३ अप्रैल १९८८ तक एक उपदेशक महाविद्यालय का उद्घाटन समारोह अत्यन्त भव्यता के साथ मनाया जा रहा है जिसका उद्घाटन डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार कर रहे हैं। मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती हैं। देश के प्रख्यात आर्य विद्वान्, तपस्वी संन्यासी एवं महोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जनपद मुरादाबाद की अन्तरङ्ग का निर्णय

मास अप्रैल, मई, जून १९८८ में सघन प्रचार योजना के अन्तर्गत जनपद के विभिन्न स्थानो पर व्यापक प्रचार की योजना स्वीकार की गई है इसके अतिरिक्त ४०० रुपयो की सस्ती द्विदिवसीय प्रचार योजना (उत्सव) करने की योजना भी स्वीकृत हुई जिसमें जनपद की सभी समाजो का सहयोग अपेक्षित है। समाजें श्री हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री, जिला सभा, मुरादाबाद से सम्पर्क स्थापित करें।

उत्सव

–आर्यसमाज भरथना (इटावा) का वार्षिकोत्सव ११ से १४ अप्रैल १९८८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। अनेक विद्वान संन्यासी, उपदेशक, प्रचारक पधार रहे हैं।

–आ०स० असुरन रेलवे कालोनी वेद मन्दिर गोरखपुर का ४५ वां वार्षिकोत्सव २४–४–८८ के २५–४–८८ तक ससमारोह मनाया जायेगा।

–आ०स० मीरापुर मुकल्लमपुर (मुजफ्फरनगर) का २६ वां वार्षिकोत्सव १५ से १७ मार्च तक ससमारोह मनाया गया। अनेक विद्वानों, भजनोपदेशको के उपदेश एवं भजनों से जनता बहुत प्रभावित हुई। इसका संयोजन जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री देवपाल आर्य ने किया।

शुभ विवाह

आ० स० मीरजापुर के मन्त्री श्री लालजी गुप्त के भतीजे चि० प्रेमचन्द्र गुप्त का शुभ-विवाह १० मार्च १९८८ को इलाहाबाद के श्री पारसनाथ कौशल की आयु० कन्या शोभारानी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। चि० वरवधू को मंगलमय आशीर्वाद एवं बधाई। –सभा मन्त्री

रामलाल कपूर ट्रस्ट [अमृतसर] की हीरक जयन्ती

वैदिक वाङ्मय के प्रकाशन और वेदांगों के प्रचार प्रसार में गत साठ वर्षों से रत रामलाल कपूर ट्रस्ट, जी० टी० रोड दिल्ली–करनाल विरजानन्द आश्रम बहालगढ़ में १० अप्रैल को हीरक जयन्ती समारोह धोधूमधामसे मना रहा है।

शोक समाचार

–आर्यसमाज कैसरबाग, लखनऊ के संस्थापक अध्यक्ष श्री नारायणदास गांधी का ८५ वर्ष की आयु में ८–२–८८ को निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनके पुत्र श्री दीपक गांधी ने २५१) समाज को दान में दिए। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें। –सभा मन्त्री

–आर्यसमाज झिझना जनपद मुजफ्फरनगर के प्रधान श्री नारायण दास का अचानक हृदयगति रुक जाने से दिनांक २९–२–८८ को स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज के समर्पित सेवक थे। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें। –सभामन्त्री

–मुसाहबगंज (ठाकुरगंज) लखनऊ के प्रतिष्ठित नागरिक श्री बाबूलाल आर्य का ६–३–८८ सायंकाल निधन हो गया। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार हुआ। १०–३–८८ सायंकाल उनके पुत्र श्री ओमप्रकाश आर्य ने विभिन्न वैदिक संस्थाओं सहित सौ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० को भी दान दिये। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति दें। –सभा मन्त्री

–श्री रुचीराम गुलाटी (आर्योपदेशक) का स्वर्गवास दिनांक २–३–८८ को हो गया। उनका जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

–पिथौरागढ़ ३१ जनवरी १९८८। आर्यसमाज (दयानन्द वास) मन्दिर में पं० लक्ष्मीदत्त भट्ट की अध्यक्षता मे आचार्य माधवानन्द जोशी के पौरोहित्य में डा० एल० आर० बहुगुणा (निधन तिथि १२ जनवरी) संयुक्त निदेशक कार्मिक (भूतपूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी अल्मोड़ा) की दिवंगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती ने दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

दानदाताओं का अभिनन्दन एवं स्वागत समारोह

आर्यसमाज मन्दिर साकेत में सोमवार दि० ११–१–८८ को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक अतिथि कक्ष का उद्घाटन समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमे नगर की समस्त समाजों के सदस्यो ने उत्साह के साथ भाग लिया।

मेरठ के सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक डाक्टर श्री जितेन्द्र वीर रस्तोगी तथा उनके समधी श्री वैजनाथसिंह जी इंजीनियर ने अपनी धर्मपत्नियों की पुण्य स्मृति में समधन हाल बनाया जिसमे चालीस हजार से अधिक धन लगाया।

यज्ञ के पश्चात् श्रीमती सावित्री देवी ने दानदाताओं के सम्मान में स्वागत गान गाया और श्रीमती पद्मावती शर्मा ने मधुर लय व ओजस्वी वाणी मे कई धार्मिक गीत गाये जिसको सुनकर श्रोतागण आनन्द विभोर हो गये।

इस अवसर पर श्री पं० इन्द्रराज जी ने बताया कि जो मनुष्य जितना दान देता है उसकी उतनी ही यश कीर्ति फैलती है तथा सब को प्रेरणा दी कि अधिक से अधिक धन देकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार करें।

इस समारोह की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला गोयल ने नगर में आये समस्त भाई बहिनों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस समारोह मे सम्मिलित होकर इसे सफल बनाया।

आर्य जगत

उत्सव

आ०स० तुलसीपुर (गोण्डा) का वार्षिकोत्सव दि० २५ से २७ फरवरी तक उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री शान्तिप्रकाश, श्री रामकृष्ण जी तथा ठा० इन्द्रदेवसिंह के प्रवचनों तथा भजनों का व्यापक प्रभाव पड़ा।

हिन्दू युवती की रक्षा

आर्यसमाज गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद के प्रधान श्री जगन्नाथ सिंह के अथक प्रयास से एक हिन्दू युवती जो शादी शुदा थी, एक मुसलमान के साथ विवाह करने से बचा ली गई और उसे उसके पति के साथ कर दिया गया।

जौनपुर में आर्य वीर सम्मेलन

आर्य वीर दल केराकत (जौनपुर) के तत्वावधान में २७ दिस० को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं मण्डलीय आर्य वीर दल का सम्मेलन बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेक प्रदर्शन एवं बौद्धिक गोष्ठियां सम्पन्न हुई। आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश के अधिष्ठाता श्री देवव्रतसिंह ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्र एवं समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व को स्मरण कराते हुए राष्ट्र रक्षा के लिए सन्नद्ध रहने का आह्वान किया।

ध्यान योग शिविर

योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में दिनांक ३ अप्रैल से १० अप्रैल तक ध्यानयोग शिविर का आयोजन हो रहा है। योगाभिलाषी महानुभाव शिविर में सम्मिलित होकर प्रशिक्षण प्राप्त करें। भोजन तथा निवास की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी।

सस्ती उत्सव योजना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के तत्वावधान में आर्यसमाज हिंडोली के सौजन्य से मोहम्मदपुर, ढहेली, नगला जोकर, धनेरा सोतीपुरा, ताहरपुर, फजलपुर आदि स्थानों पर मार्च मास में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। इसमें श्री उत्तम चन्द्र शरर, प्रो० रमेश चन्द्र, श्री ब्रजपाल शर्मा, श्री पं० नरेशदत्त आर्य समण्डलीक ने अपने प्रवचनों तथा भजनों द्वारा जनता पर व्यापक प्रभाव डाला।

आर्य केन्द्रीय सभा आगरा के प्रस्ताव

आर्य केन्द्रीय सभा, आगरा के तत्वावधान में आयोजित श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर दूरदर्शन पर अश्लील चित्रों के दिखाए जाने की तथा सिनेमा संचालकों द्वारा अश्लील पोस्टरों के लगाये जाने की घोर भर्त्सना करते हुए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किये गये जिनके द्वारा उक्त बुराइयों को दूर करने का अनुरोध किया गया।

आर्य समाज और दस्युजन

(पृष्ठ ४ का शेष)

भारत की एकता-अखण्डता में दरार डालने का संस्कार देता है। लोगों में परस्पर घृणा-विरोध-द्वेष आदि को बढ़ावा मिलता है। उदाहरणस्वरूप-'वैदिक युग का जीवन' (प्राचीन भारत) शीर्षक के कुछ शब्द-

'जब पहले-पहल आर्यों ने भारत में पदार्पण किया, तो उन्हें भूमि के लिए उन लोगों से युद्ध करना, जो यहां पहले से रह रहे थे। आर्य इन लोगों को दस्यु या दास कहते थे। आर्य गोर वर्ण के थे और दस्यु काले रंग और चपटी नाक वाले थे। दस्यु उन देवताओं की पूजा नहीं करते थे, जिनकी आर्य पूजा करते थे। वे जो भाषा बोलते थे, उसे आर्य नहीं समझते थे। आर्य संस्कृत बोलते थे। आर्यों ने दस्युओं को युद्ध में पराजित किया; परन्तु उनके साथ दयालुता का व्यवहार नहीं किया। और अनेक दस्युओं को दास बना लिया। दस्युओं को आर्यों की सेवा करनी पड़ती थी। उन्हें कठिन और नीच काम भी करने पड़ते थे।'

अंग्रेज यह जानते थे कि एक दिन-'अंग्रेजो भारत छोड़ो!' का नारा लगेगा। अतः भारत के आर्यजनों को विदेशी आक्रान्ता सिद्ध करने का षड्यन्त्र रचा। भारतीय इतिहास के ऐसे गलत प्रकरणों के संशोधन मे देर करना अच्छा नहीं है।

'साम्प्रदाय निरपेक्ष संविधान' के अनुसार भारत रूपी मकान के विभिन्न कमरों में वास करने वाले हर इन्सान को अपने विश्वास और आस्था के अनुसार उपासना-पूजा की स्वतन्त्रता व सुविधा दी गई है। महान भारत की एकता-अखण्डता - सम्पन्नता से ईर्ष्या-द्वेष करने वाले विदेशी षड्यन्त्रों से हम सावधान रहें।

याद रखना चाहिये, कि संसार के हर देश में, हर समाज मे आर्य जन (मानवतावादी-शान्तिवादी जन) तथा दस्युजन (दानवतावादी आतंकवादी जन) मिल जायेंगे ! विश्वबन्धुत्व का प्रसार ही मानवत" [आर्यत्व] का प्रसार है।

शोक समाचार

आर्यसमाज रजोली [नवादा] के भूतपूर्व प्रधान डा० शिवनन्दन प्रसाद 'निझर' का आकस्मिक निधन हृदयगति रुक जाने से २० जनवरी को हो गया। आर्यसमाज के वे एक समर्पित निष्ठावान सेवक थे। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति तथा पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

भारतीय नवजागरण का द्रष्टा-ऋषि दयानन्द

(शेष पृष्ठ ५ से आगे)

समाज को उच्चादर्शों की ओर प्रेरित करना कर्त्तव्य है। इन मान्यताओं के पीछे गहराई से देखने पर स्वामी जी पूरे भारतीय समाज के इतिहास को समझ कर भविष्य को देखने वाली सूक्ष्म दृष्टि है। पुरोहित गृहस्थ के सामाजिक दायित्व और उच्चादर्शों का पथप्रदर्शक नहीं रह गया, जो उसका दायित्व था। निहितस्वार्थ होकर यह एक वर्ग बन गया। इससे सत्ता की प्रतिद्वंद्विता में कुटिल से कुटिल दाव लगाये। समाज पर प्रभुत्व जमाने के लिए तमाम कर्मकाण्डों को जन्म दिया, तमाम अन्धविश्वासों को प्रश्रय दिया। अतः स्वामी जी ने यज्ञ-विधान और संस्कार-पद्धतियों के लिए सम्माननीय गृहस्थ को, स्त्री या पुरुष को अधिकार प्रदान किया। और हर अवसर पर सम्मिलित रूप कर्त्तव्यों और मूल्यों के स्मरण करने का विधान किया।

स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म [भारतीय धर्म के रूप में] और संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए उसके अन्धविश्वासों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया साथ ही दूसरे धर्मों की इसी स्तर पर कड़ी आलोचना की, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में ऐसा ही जड़ और कुसंस्कार ग्रस्त हो जाता है। इस दृष्टि से इस्लाम और ईसाई धर्म भी कट्टरपंथी, अन्ध विश्वासी और निहितस्वार्थियों के द्वारा नियंत्रित हैं। ध्यान देने की बात है, वे धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे। उन्होंने अन्य धर्मावलम्बियों के नेताओं से इस सम्बन्ध में चर्चाएं भी कीं। उनका दृष्टिकोण था कि अगर मूल मानवीय धर्म को स्वीकार करके विभिन्न सम्प्रदाय चलें तो वे कुसंस्कारों और जड़ताओं से मुक्त होकर मूल्यों पर प्रतिष्ठित रह सकते हैं और आपसी वैमनस्य से भी मुक्त हो सकते हैं। पर हर धर्म-सम्प्रदाय में निहित स्वार्थ वर्ग इतना प्रबल है कि वह स्वामी जी की दृष्टि को न समझ सकता था और न उनके विचारों को मान सकता था। उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए उनके इस पक्ष को दृष्टि में रखना आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व की प्रेरणा के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रारम्भ से आर्यसमाज को मानने वाले तमाम लोग रहे हैं। उनकी स्वयं की दृष्टि राष्ट्रीय रही है, देश को स्वाधीन करने के बारे में और देश को मूल्यों के स्तर पर उन्नत और संगठित करने के लक्ष्य से भी। उनके अनुसार देश में सामाजिक जीवन को सुगठित, उन्नत मूल्यों पर प्रतिष्ठित करना पहला कार्य है, राष्ट्रीय स्वाधीनता उसके आधार पर प्राप्त करना न केवल आसान है, वरन् उसे सुरक्षित रख देश को विकसित करना भी अधिक सरल है।

प्रभात आश्रम (मेरठ) के स्नातक विजयी एवं सर्व प्रथम

२६, २७, २८, दिसम्बर १९८७ को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा 'त्रिचूर' (केरल) में आयोजित अन्तर्विद्यापीठ युवजन समारोह में हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में ब्र०शिवशङ्कर निगमालङ्कार ने "न्याय वैशेषिक एवं वेदान्त दर्शन इन दो विषयों में सर्वप्रथम तथा संस्कृत गान प्रतियोगिता में सर्वद्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्नातक बन्धु के विजय से प्रभात आश्रम को जहाँ हार्दिक-प्रसन्नता हुई। वहीं आर्य जगत का गौरव भी बढ़ा।

आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री-शान्ति यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ़ उत्तर प्रदेश में २१ फरवरी,१९८८ को भोलानाथ चटर्जी की अध्यक्षता में आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री (निधन-२६ जनवरी, ८८) भूतपूर्व प्रधान-आय प्रतिनिधि सभा की दिवंगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारीने परमात्मा से शान्ति एवं धैर्य हेतु प्रार्थना की।

शुभ विवाह

(१) चि० दिनेशकुमार शाक्य सुपुत्र श्री कृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज बिल्सगढ़ के साथ कु० सन्ध्या तनया श्री राधेश्याम नि० बिलाइन (मैंनपुरी) का दिनांक २३-१-८८ का विवाह संस्कार हुआ जिसमें १०१ रु० समाज को दान में प्राप्त हुए।

(२) चि० प्रमोद कुमार स्नातक सत्यार्थ भूषण सुपुत्र बालकराम आर्य पथिक प्रधान आर्यसमाज बिल्सगढ़ के साथ कु० उर्मिलार्य तनया श्री छंगेसिंह यादव नि० अबारा (फर्रुखाबाद) का विवाह संस्कार दि० २६-४-८८ को सम्पन्न हुआ तथा जिसमे १०१) रु० आर्यसमाज को दान में प्राप्त हुये।

(३) कु० कमलेश सुपुत्री श्री रामलाल शाक्य नि० बहुपुर मानपुर हरी (मैनपुरी) का विवाह सस्कार चि० अवधेशकुमार सुपुत्र श्री रामदुलारे शाक्य नि० छोटी कुरावली (मैनपुरी) के साथ दिनांक १३-५-८८ को सम्पन्न हुआ और ११) रु० आर्यसमाज बिल्सगढ़ को दान में प्राप्त हुए।

आर्य व्रत गुजराती मासिक

आर्य जगत को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्यसमाज संजपुर बोधा, अहमदाबाद जो इस समय तक गुजराती व सिंधी भाषा में सैकड़ों नमूने के ट्रैक्ट व पुस्तकें लाखों की सख्या मे प्रकाशित कर चुका है, अब गुजराती मासिक पत्रिका 'आर्य व्रत' का आरम्भ कर रहा है। प्रथम अंक 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' पर प्रकाशित हो चुका है। गुजराती भाषा में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में यह पत्रिका अत्यन्त महत्व का कार्य करेगी।

वैदिक विधि से गृह प्रवेश सम्पन्न

दिनांक २३-१-८८ को गुदरी बाजार स्थित श्री सुरज प्रसाद किराना मर्चेण्ट बलिया के नवनिर्मित भवन का गृह प्रवेश वैदिक विधि से आर्यसमाज बलिया के मंत्री श्री रामनाथ चौरसिया ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आर्यसमाज बलिया के सदस्य, सन्यासी एवं बन्धु बान्धव सहित अनेक नर-नारी उपस्थित थे।

१० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

आर्य वन विकास फार्म सागपुर, जि० साबरकांठा (गुजरात) में स्वामी सत्यपति जी के निर्देशन में एक योग प्रशिक्षण शिविर ६ से १५ मई ८८तक आयोजित होगा। भोजन आवास आदि की व्यवस्था शिविर की ओर से होगी।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५५६१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७२
अंक मूल्य १०
२७ मार्च रविवार, १९८८ ई०

आर्यमित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मार्च १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। जनवरी १९८८ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

३५७, ३६१, १४३२, १८४५, ३१५४, ४३५५, ४३७५, ५८४५, ६०४३, ६६१३, ८२३८, ८७४५, ८७८०, ८९२१, ८९२८, ८९५५, ८८४१, ९८५९, ९९०९, ११११९, १११४८, १११५३, १११६४, १११८०, १२१२४, १११२९, १२१३५, १२१४१, १२१४३, १२६११, १२६१०, १२८४४, १२८४६, १२८५२, १२८५९, १३०६१, १३०६६, १३०६९, १३४३४, १३४३९, १३७२९, १३७३४, १३७३९, १३७४४, १३७४५, १३७४७, १४२०४, १४२०५, १४२०६, १४२०७, १४२०८, १४२१३, १४२१४, १४२१५, १४२१६, १४२१७, १४२१८, १४२२०, १४२२१, १४२२७, १४२२८, १४२२९, १४२३१, १४२३२, १४२३३।

विनीत—
व्यवस्थापक

समस्त विद्या प्रेमी धर्मानुरागी सज्जनों के नाम

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा की मार्मिक अपील

आर्य बन्धुओ ! आर्य गुरुकुल ऐरवा ,कटरा (इटावा) ऐसे पिछड़े क्षेत्र में वैदिक शिक्षा का प्रचार व प्रसार कर रहा है जहाँ बहुत लोग आर्य समाज से अपरिचित हैं। इस गुरुकुल में भारत के सुदूर अंचलों के ब्रह्मचारी वेद विद्या पारायण कर रहे हैं। हमारे पास कार्य करने की क्षमता तो बहुत है किन्तु साधनों के अभाव में हम विधिवत रूप से कार्य करने में असमर्थ हैं। अतः आर्य वीरो ! आपके सहयोग की परम आवश्यकता है।

हमारी प्रमुख आवश्यकताएं निम्न प्रकार हैं।

१—यज्ञ शाला (२५x२५) वैज्ञानिक शोध हेतु
२—छात्रा वास (५०x५०) ५० छात्रों के निवास हेतु
३—विद्यालय भवन (५०x५०) ५० छात्रों के अध्ययन हेतु

यह कार्य आपका है। परन्तु सज्जनों ! बिना आपके पवित्र सहयोग के कभी पूर्ण नहीं हो सकता है। अतः आपका पावन कर्तव्य है कि इस विद्या वाटिका को मुक्त हस्त होकर सहयोग करें। आप या ... भूल न जावें। वसिष्ठाऽगस्त्योऽमृतंमश्नुते [वेद] ज्ञानी अमर बन जाते हैं। गुरुकुल को दिया गया दान आय कर की धारा ८० जी० के अन्तर्गत आय कर से मुक्त होगा। कृपया चैक, ड्राफ्ट, मनी आर्डर आर्य गुरुकुल सेवा समिति (ऐरवा कटरा, इटावा) के पते पर भेजें।

निवेदक—

आचार्य रामदेव शर्मा
प्रधानाचार्य

स्वामी देवानन्द मेधावी
कुलपति

वेद रहस्य

ऋषि बोध और आर्यसमाज स्थापना के उपलक्ष में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उपहार ग्रन्थ जो ४१६ पृष्ठ का प्लास्टिक कवर वाला है वेद प्रचारार्थ केवल रु० १७—(सत्तरह) मात्र में भेजना निश्चित किया गया है। वेद प्रेमी अवसर का लाभ उठावें।

—रामसिंह आर्य
१७ गांधी नगर आगरा—३
लेखक एवं प्रकाशक

बाजार से सस्ती, बहुत सस्ती

शुद्ध हवन सामग्री

सस्ती एवं शुद्ध हवन सामग्री मंगवा कर आर्थिक लाभ उठाइये। श्रेष्ठता के आधार पर मूल्य इस प्रकार है—२.५०, ३.००, ४.००, ६.०० व १०.०० रु० प्रति किलो। आप जिस भाव की चाहें उसी भाव की हवन सामग्री तैयार करवा कर भेजी जा सकती है। आर्य समाजें, धार्मिक संस्थायें एवं दुकानदार सामग्री मंगाकर खूब लाभ उठायें।

सुनीता शुद्ध हवन सामग्री

स्थान व पो०—भोगांव
जनपद—मैनपुरी [उ० प्र०]

वैदिक रीति से निर्मित शत प्रतिशत शुद्ध

हवन सामग्री

हेतु आदेश पत्र भेजिए—

हवन सामग्री भण्डार

(*A. M.*) ६३१ खिनगर, दिल्ली—११००३५

(१) १०० प्रतिशत शुद्ध सुगन्धित जड़ी-बूटियों से निर्मित सामग्री बहुत कम भाव पर हमारे यहाँ उपलब्ध है।
(२) हवन सामग्री की शुद्धता और उत्कृष्टता के कारण भारत सरकार से पूरे देश में इसे निर्यात करने का अधिकार प्राप्त है।
(३) मजबूत लोहे की चादर के बने ८x८, १०x१० तथा १२x१२ इंची (स्टैण्ड सहित) हवन कुण्ड भी क्रमशः रु० ४८/— ६०/— तथा ७२/— में उपलब्ध हैं।
(४) शुद्ध मारवाड़ी गुगल औषधि में प्रयोग हेतु असली शहद रु० ५०/- प्रति किलो के हिसाब से उपलब्ध है पूरे देश में भेजने की व्यवस्था है।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए प्रकाशकीय आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एन० पी० (निकट गुरुनानक विद्यालय) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ — घोषणा पत्र सं [illegible]

वैशाख कृष्ण १, रविवार, सम्वत् २०४५ वि० दिनांक ३ अप्रैल १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

सुखदेव शास्त्री एम० ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड
[illegible]	[illegible]
वर्ष	[illegible]
	१४
अंक	[illegible]

पाकिस्तान में हिन्दू लड़कियों का बलात् धर्म परिवर्तन

लखनऊ – पाकिस्तान के सिन्ध प्रदेश में सैकड़ों हिन्दू लड़कियों के [illegible] के समाचार पर उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने [illegible] चिन्ता व्यक्त करते हुए प्रेस वक्तव्य में कहा है––"हमारे मान्य नेताओं ने तत्कालीन मुस्लिम [illegible] नेताओं के हठ तथा ब्रिटिश कूटनीति के दबाव में आकर भारत विभाजन स्वीकार किया था। उस [illegible] भारत पाकिस्तान के बीच जो समझौता हुआ था जिसकी बाद में नेहरू–लियाकत समझौते में पुष्टि की गई और जिसे बार–बार [illegible] दोहराया भी जाता रहा है [illegible] वाले अल्पसंख्यकों के [illegible] तथा सम्मान की रक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व वहाँ की सरकारों का है। लेकिन इधर सिन्ध (पाकिस्तान) से जो खबरें आ रही हैं उनसे भारतीय जनता विशेषकर आर्य समाज के क्षेत्रों में गहरी चिन्ता एवं निराशा उत्पन्न हो गई है। गत दिनों पाकिस्तान की राष्ट्रीय असेम्बली में एक कामरोको प्रस्ताव द्वारा [illegible] लगाया गया है कि सिन्ध प्रान्त के हिन्दू अनुसूचित जाति के कोहली समुदाय की सैकड़ों लड़कियों का सामूहिक अपहरण करके उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया जा रहा है। कोहली [illegible] हिन्दू हैं। इस प्रकार के सामूहिक अपहरण एवं बलात् धर्म परिवर्तन की घटना से उत्तेजित हिन्दू अनुसूचित जाति के कोहली, भील, [illegible] लोगों ने जब प्रदर्शन किया तो पुलिस ने अकारण ही गोली चलाकर ७ लोगों को [illegible] ४०० से अधिक लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हो रहे भीषण अत्याचारों की खबर समय–समय पर आती ही रहती हैं जिसके कारण जनता में काफी आक्रोश है। श्री तिवारी ने आगे बताया––[illegible] लड़की हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या किसी जाति अथवा धर्म से जुड़ी हो––यह सम्पूर्ण नारी जाति के सम्मान की रक्षा का प्रश्न है। इस प्रकार की घटनाएं चाहे वह किसी भी [illegible] नारियों के साथ घटित होती हों घोर लज्जाजनक हैं। भारत सरकार को [illegible] बनाकर अपने स्तर पर पाकिस्तान से बात करनी चाहिये और यदि आवश्यक हो [illegible] संघ में उठाना चाहिये। आर्य समाज इस बलात् धर्मपरिवर्तन की कड़ी [illegible] है और कड़ी चेतावनी देना चाहता है कि इस अन्याय के खिलाफ आवाज [illegible] सकता। कोई धर्म इस प्रकार की जोर–जबरदस्ती की इजाजत नहीं देता है। [illegible] सम्पूर्ण मानवता के माथे पर कलंक है। आर्य समाज चाहता है उन कन्याओं के सम्मान [illegible] हुए उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में वापस लिया जाय और उनके परिवारों को सौंप [illegible] स्वतन्त्र देश की एक स्वतन्त्र नागरिक की तरह ससम्मान जीने का निर्भीकता पूर्वक अवसर दिया। यदि वहाँ का शासन अपने इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में विफल है तो विश्व की समस्त मानव [illegible] प्रेमी जनता को इसके विरुद्ध एकमत होकर अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिए

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ-वैशाख कृष्ण १ संवत् २०४५, रविवार ३ अप्रैल १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

चुनाव के कारण घर को आग न लगाओ

—आनन्द बोध सरस्वती

कुछ दिनो से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव के अवसर पर कतिपय लोगो ने आर्य समाज की धवल कीर्ति को धूमिल करने के लिए झूठी पर्चेबाजी करके आर्यसमाज के निःस्वार्थ कार्यकर्त्ताओं को बदनाम करने का जो अभियान छेड़ रखा है, वह सर्वथा निन्दनीय है । मुझे अपने सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं । अपनी १२ वर्ष की आयु से मैंने एक-एक क्षण आर्य समाज की प्रेरणा से जन सेवा मे लगाया है । उसे मै ही जानता हूँ या अन्तर्यामी परमपिता परमात्मा । मुझे उसका कोई पुरस्कार नहीं चाहिए ।

इस अभियान में जो धन खर्च किया गया है, यदि उसे आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में किया जाता तो कितना अच्छा होता ।

कुछ बेनाम लोगों ने हमारे परम स्नेही मित्र श्री बाबू सोमनाथ मरवाह जी एडवोकेट के सम्बन्ध में भी अनर्गल आक्षेप करके प्रायः अनेक आर्य बन्धुओं के चरित्र पर भी कीचड़ उछालने का दुष्प्रयास किया है । मतभेद तो होते हैं किन्तु मन भेद नहीं होने चाहिए । जो लोग स्वयं कुछ नहीं करते, वे ही आपसी मतभेदों को हवा देकर वातावरण को दूषित करते हैं ।

मै बड़ी नम्रता से निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्यजन इस प्रकार की पर्चेबाजी से विचलित न हों ।

महात्मागांधी ने कहा था कि आर्य समाज के लोग बड़े जुझारू हैं किन्तु जब इन्हे दूसरों से लड़ाई का मैदान नहीं मिलता है तो यह आपस में लड़ते हैं । महात्मा हंसराज जी से पूछा गया कि आपके विरोधी आपके सम्बन्ध में गलत प्रचार करते हैं आप जवाब क्यों नहीं देते ? महात्मा जी ने कहा कि मैं ऐसे दुष्प्रचार पर कोई ध्यान नहीं देता । मुझे काम से ही फुरसत नहीं । स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में भी दुखी दिल की दास्तां से पता चलता है कि उन्हें भी गुरुकुल कांगड़ी से निकालने के लिए इसी प्रकार के दोषारोपण किये गये किन्तु आज स्वामी श्रद्धानन्द तो अपनी निष्काम सेवा के कारण अमर हो गये, उन्हें संसार हमेशा याद रखेगा, परन्तु उनका विरोध करने वालों का कोई नाम भी नहीं लेता है ।

महर्षि दयानन्द को जनता की निगाहों में गिराने के लिए आर्य समाज से निष्कासित पं० अखिलानन्द कविरत्न ने रमा-महर्षि सम्वाद छपवाया । जैनी जियालाल ने दयानन्द छलकपटदर्पण लिखा । स्वामी करपात्री ने वेदार्थ पारिजात में महर्षि के सत्य सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ाई तो आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री ने दयानन्द कल्पद्रुम लिखकर करपात्री के अनर्गल प्रलाप को तार-तार करके तोड़ दिया । इस संसार में अनादिकाल से आर्य और दस्यु का युद्ध होता रहा है, इससे घबराने की कोई बात नहीं ।

अतः आर्य जनता से मेरा निवेदन है कि मिलजुल कर काम करें ।

(आर्य सन्देश दिल्ली २७ मार्च १९८८ से साभार)

सम्पादकीय-

सिर पर कफन बान्धे, ऋषिवर के चरणों में सर्वस्व समर्पण की उद्दाम भावना लिए, आर्य जगत् की, किंवा जन-जन की सेवा में अहर्निश दीवाने होकर घूमने वाले, वीतराग पूज्य संन्यासी स्वा० आनन्द बोध के ऊपर भी कतिपय अपनों ने, अपने ही प्रिय आत्मीयों ने, निमित्त की आड़ लेकर, नहीं-नहीं...तिनके की आड़ लेकर हिमालय की ऊँचाइयों पर कीचड़ फेंकने का, उछालने का कुत्सित प्रयास किया है । शिशु हाथों से धूल उड़ाकर सूर्य के अनन्त ज्योतिर्मय प्रकाश को ढंकने की चेष्टा की है । पर हन्त ? तुम कितनी ही चेष्टा करो..... सूर्य तो चमकेगा ही, चमकता रहेगा ही,—

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।।

पूज्य स्वामी जी का जीवन एक खुला हुआ पृष्ठ है । जो चक्षुविहीन हैं वे भले ही न देख सकें परन्तु सारा विश्व एवं आर्य जगत देख रहा है— आज आर्य समाज के जीवन की इस संक्रमण वेला में उनकी कितनी महती आवश्यकता है । कुछों के कहने से हम उन्हें छोड़ नहीं सकते, उनका जीवन हमारा जीवन है, समाज का जीवन है । उनकी धवल कीर्ति को धूमिल करने वाले तुच्छ आरोपों का उत्तर देना हम जानते हैं और समय आने पर हम देंगे । यहाँ हम केवल उनके मर्मान्तक उद्गारों को उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं । पाठक देखेंगे—अन्तरतम की इस अनुभूति में स्वार्थ की कहाँ झलक है—

प्रधान सम्पादक

आवश्यक सूचना

जिले की समस्त आर्य समाजों के साथ ही साथ आर्य भाइयों से भी अनुरोध है कि सभा के महोपदेशक, उपदेशक एवं भजनोपदेशक को जो भी धन जिस मद में प्रदान करें, उनसे सभा की रसीद अवश्य ले लें ।

सभा के महोपदेशक, उपदेशक एवं भजनोपदेशकों से भी नम्र निवेदन है कि जहाँ कहीं से भी जिस मद में उन्हें धन प्राप्त हो, (वार्षिक-शुल्क, वेद-प्रचार धन, दशांश, आर्यमित्र का मूल्य) उसकी रसीद दानदाता को अवश्य दे दें, तथा प्रत्येक धन रसीद अपने पास अवश्य रखें ।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार :

ऋषि दयानन्द का महान् संकल्प

डा० प्रशान्त वेदालंकार ७/२, रूपनगर, दिल्ली–११०००७

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है, और आज इसका कुछ भी महत्व नहीं है। इसी कारण त्रिभाषा सूत्र और नयी शिक्षा-नीति में संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गयी है। पर यह धारणा संस्कृत के महत्व को न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुखलाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द सर्वप्रथम आगरा पहुंचे। वहाँ सुन्दरलाल उनके शिष्य बने। एक दिन आदित्यवार के दिन सुन्दरलाल जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि—संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कहीं व्यवहार में नहीं आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—'इससे अपना परलोक सुधारेंगे'। दयानन्द का संकेत संस्कृत मे विद्यमान आध्यात्म–विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमे विद्यमान अध्यात्म विद्या के कारण ही नहीं मानते थे। उनके मत मे अनेक भौतिक विज्ञानों की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का निश्चय था कि जैसे पूरी विद्या संस्कृत मे है, वैसी किसी भाषा में नहीं है। वे उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत-सी भाषा पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढ़ी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बड़ा आनन्द हुआ है। (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास)

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ़ में मुसलमानों से बातचीत के मध्य दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वर प्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिए, इसकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है; सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षर माला नैसर्गिक है। छोटा-सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क, ख आदि व्यञ्जनों का उच्चारण ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरों से बनी है वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा में होने उचित हैं।

६ सितम्बर १८७२ को आगरा में ही आरा के तत्कालीन मजिस्ट्रेट जिला मिस्टर एच० डब्ल्यू–अलेक्जेण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत में सम्भाषण किया, जिसे रघुनी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषायें बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं ? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्तव्य निश्चित किया था। दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा—आर्यावर्त देश का राजा इंगरेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि–मुनियों की रीति से प्रवृत्ति कराये। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख–लाभ होगा। और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। व इससे अत्यन्त आनन्द होगा। और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जायगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमे कुछ सन्देह नहीं।

दयानन्द जहाँ भी जाते वहाँ संस्कृत का प्रचार करते और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूं। उन्हीं की प्रेरणा से पं० सुन्दरलाल जी और बालमुकुन्द जी ने अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर मे उन्होने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने लग गये थे। स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगर्भित उपदेशो को सुनकर अनेक लोगो के हृदय में संस्कृत भाषा सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला उन्होंने स्वयं अनेकों लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहाँ पाठशाला आदि खोलकर भी संस्कृत का विकास किया। सन् १८७८ में अपने एक विज्ञापन में उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्य समाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सबको सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली और वेदादिसत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिए पाठशाला किया चाहते थे।

१६ मार्च १८७९ को दीनापुर (दानापुर) के आर्यसमाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्य–संस्कृत–पाठशाला खोलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नों से फरुखाबाद मे पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमें भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। २३ मई १८८१ को सेठ निर्भयराम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगों की पाठशाला मे आर्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हमने कभी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रीराम विवाह वयो विचार

लेखक . स्वर्गीय आर्यवीर राजकुमार श्री रणवीरसिंह जी अमेठी

विवाहोपरान्त श्री रामचन्द्र महाराज अयोध्या मे कितने दिन रहे और तदुपरान्त कब उनको वनवास की आज्ञा मिली ? यह एक असमाध्य प्रश्न है तथापि असाध्य नहीं ।

मनुष्य की आयु को १०० वर्ष न्यून से न्यून निर्धारित कर उसके चार भाग पच्चीस पच्चीस वर्ष के किए गये हैं । प्रत्येक भाग क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास–इन चारों आश्रमो के शास्त्रीय रीत्यानुसार पालनार्थ रखे गये हैं–

आयु के प्रथम चौथाई भाग, (२५) वर्ष) द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य) गुरुकुल मे ब्रह्मचर्य आश्रम को धारण करें । इससे सिद्ध होता है कि श्री रामचन्द्र जी के माननीय पूर्वज भगवान मनु के आज्ञानुसार मनुष्य की न्यून से न्यून २५ वर्ष की अवस्था तक निःसन्देह ब्रह्मचर्य का पालन कर तदनुब्याह करना धर्मानुकूल है । ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का और २५ वर्ष तक की अवस्था तक उसके पालन करने का आरम्भिक समय वेदारम्भ संस्कार है । इस संस्करण के अनन्तर गुरुकुल मे ही रखकर वेदाध्ययन करना चाहिए । जिसके सम्पूर्ण नियम मनु महराज ने विस्तृतरूपेण वर्णन किये हैं । वेदाध्ययनोपरान्त २५ वर्ष की अवस्था के ऊपर गृह आगमन तथा समावर्तन संस्कार का समय है । समावर्तन के ही उपरान्त विवाह संस्कार शास्त्र विहित है ।

संस्कारो के उपर्युक्त क्रम पर तो आर्य (हिन्दू) मात्र का एक मत है, यह विषय तो निर्विवाद सिद्ध है । अतः अब हमें बतलाना यह है कि श्री रामचन्द्र जी महाराज का विवाह शास्त्रोक्त रीत्यानुसार वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य-पालन, गुरुकुल में रहकर यथोचित रीति से पढ़-लिख लेने के उपरान्त समावर्तन संस्कार हुआ था या नहीं ?

वाल्मीकीय रामायण मे अयोध्या काण्ड के १२ वें सर्ग में महाराज दशरथ जी कैकेई से कहते हैं–

वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य-पालन तथा गुरुकुल सेवन से राम यों ही दुर्बल हो गये हैं । अब सुख-भोग के समय महा कष्ट होगा ।

मनु के प्रमाण से सिद्ध है कि पुरुष का विवाह २५ वर्ष की अवस्था से कम समय मे करना अनुचित है, सो श्री रामचन्द्र जी की अवस्था भी विवाह काल मे न्यून से न्यून २५ वर्ष होनी चाहिए । यदि ऐसा न होता तो अशास्त्रोक्त रीति से महात्मा विश्वामित्र, राजर्षि जनक तथा भगवान् दशरथ श्री राम का विवाह अल्प वय मे कदापि न करते । इसमे सबसे प्रबल प्रमाण यह है, बालकाण्ड सर्ग ४०, श्लोक १८ में महात्मा विश्वामित्र से जनक महाराज लक्ष्मण को देखकर पूछ रहे हैं–कि कमल के पत्र के सदृश नेत्र वाले, कृपाण, तूणीर तथा धनुष लिए हुए, अश्विनी कुमारो के समान स्वरूपवान, यौवनावस्था को प्राप्त ये दोनों तरुण यहां पर क्यों तथा कहां से आये)

यौवनावस्था का कथन ही सारा झगड़ा मिटा देता है ।

सुश्रुत ने यौवनावस्था की २५ से २६ वर्ष के मध्य कहा है । पञ्चविंशे ततो वर्षे० मे २५ वर्ष के पुरुष के निमित्त १६ वर्षीया स्त्री की समता तथा उपयोगिता कही गई है ।

महात्मा सुश्रुत के मत से तथा राजर्षि जनक के कथन से धनुर्यज्ञ के समय जनकपुर में रामचन्द्र जी जब महर्षि विश्वामित्र के संग गये थे तब यौवनावस्था प्राप्त थे अतः २५ वर्षीय युवक थे–यह दृढ़ रूप से प्रमाणित होता है ।

वर सांवरो जानकी जोगू । गोस्वामी के इस पद ने जानकी जी के योग्य श्री रामचन्द्र जी को सिद्ध कर दिया तथा "पात संयोग सुलभ वयो दृष्ट्वात् मे पिता०–"जानकी जी का यह वचन पुष्ट कर रहा है कि विवाह काल में श्री जानकी जी १६ वर्ष की अवस्था पूर्ण कर चुकी थीं ।

पंचवटी में रावण को वस्तुतः संन्यासी समझ भोली-भाली सीता जी ने उसी से (राम लक्ष्मण की अनुपस्थिति मे विशुद्ध हृदय से) कहा था कि (देश निकाले के समय) मेरे महा तेजस्वी पति (श्री रामचन्द्र जी) की अवस्था २५ वर्ष तथा मेरी १८ वर्ष की थी ।

राजा दशरथ ने कैकेयी से जो वेदैश्च ब्रह्मचर्यैश्च० कहा है वह स्पष्ट रूपेण सिद्ध करता है कि रामचन्द्र जी को वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य व्रत पालन और गुरुकुल सेवन को अभी इतने थोड़े दिन व्यतीत हुये थे और विवाह को भी ऐसा स्वल्प ही समय बीता था कि न श्री रामचन्द्र जी के शरीर की कृशता मिट सकी थी न यथेष्ट सुख-भोग कर पाये थे । यदि १२-१२ वर्ष विवाहोपरान्त अयोध्या मे रहते बीत चुके होते तो किसी बात की कमी शेष न रह जाती ।

एक मत श्री शिव सहाय शर्मा का यह भी है कि वन गमन के अवसर पर श्री रामचन्द्र २८ वर्ष के थे तथा जानकी जी ने जो 'मम भर्ता महातेजा वयसा पंचविंशकः' कहा है इसका अर्थ २८ ही है, क्योंकि पंचविंश का अर्थ हुआ २५ तथा कः अर्थात् अग्नि (जो तीन प्रकार का होता है) जोड़ दिया तो २५ और ३ ठीक २८ हुए । पण्डित जी ने अपनी टीका में यह भी लिखा है कि बालकाण्ड, सर्ग २० के दूसरे श्लोक में जो श्री दशरथ जी ने विश्वामित्र जी से कहा है–

ऊन षोडश वर्षो मे रामोराजीवलोचनः–इसमे ऊन (सर्वोत्तम तपस्वी) कहकर विश्वामित्र जी का सम्बोधन किया गया है, आगे श्री रामचन्द्र जी की अवस्था बतलाई है कि 'षोडश अर्थात् १६ के हैं । इससे सिद्ध होता है कि यज्ञरक्षणार्थ विश्वामित्र जी के साथ श्री रामचन्द्र सोलह वर्ष की अवस्था में गये ।

रामायण से ही ज्ञात होता है कि रामचन्द्र जी ने वहां धनुर्विद्या अर्थात धनुर्वेदादि की शिक्षा प्राप्त की । वेदाध्ययन के लिए तीन अवधि मुनि जी ने अध्याय ४ के श्लोक १ से ३६ वर्ष १८ वर्ष तथा न्यून से न्यून ९ वर्ष तक की नियत की है, जो रामचन्द्र जी ने वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य–रक्षण तथा गुरुकुलवास में न्यून से न्यून ९ वर्ष व्यतीत किए होंगे क्योंकि वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे और अल्प काल विद्या सब पाई के अनुसार ३६, १८ तथा ९, इन तीन अवधियों में ९ ही वर्ष के भीतर यथेष्ट रूपेण वेदाध्ययन में समुत्तीर्ण हो गये होंगे तथा १६ में ९ जोड़िये ठीक ठीक २५ हुए । इस प्रकार २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य-व्रत पालन कर तदुपरान्त जनकपुर गये राम वहां धनुर्भङ्ग

[शेष पृष्ठ ६ पर]

ऋषि दयानन्द-राष्ट्रीय एकता और मत-मतान्तर

(डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी)

श्री महीपसिंह प्रभृति छद्म बुद्धिजीवियों [?] का आरोप है कि स्वामी दयानन्द द्वारा नानक पन्थ की आलोचना किये जाने से पंजाब में हिन्दू-सिख एकता में दरार पैदा हुई। इस प्रकार के आरोपकर्ता स्वयं में साम्प्रदायिक सोच के व्यक्ति हैं। क्योंकि स्वामी जी ने नानक पन्थ से कहीं अधिक कड़ी भाषा में विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों की खबर ली है। अतः स्वामी जी की सोच में न तो साम्प्रदायिकता है और न एकता को भंग करने की आकांक्षा। वे तो भारतीय और अभारतीय दोनों प्रकार के सम्प्रदायों के अन्धविश्वासों, रूढ़ियों तथा पाखण्डों का खण्डन करके बौद्धिक तर्क युक्त वैज्ञानिक विचार की प्रतिष्ठापना चाहते हैं। कबीर, दरिया, नानक आदि स्वयं मध्यकालीन सन्तों ने अपने-अपने समय में हिन्दू धर्म के पाखण्डों का तीव्र खण्डन किया है। इस प्रकार के समाज सुधारक सन्तों का अभिप्राय मानव समुदाय को गलत रास्तों से हटाकर प्रशस्त पथ पर रखने की प्रेरणा देना रहा है। स्वामी जी का स्थान मध्यकालीन सन्तों तथा दार्शनिक विचारकों से तनिक भी कम नहीं है। अतः उन पर किसी सम्प्रदाय विशेष का विरोधी होने का आरोप स्वयं में एक निन्दनीय प्रयास है। इस संदर्भ में कौंसिल आफ साइन्टिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च के भूतपूर्व महा-निदेशक, भारतीय विज्ञान संवर्धन संस्था के अध्यक्ष, देश के गण्यमान वैज्ञानिक स्व० डा० आत्माराम द्वारा स्वामी जी के खण्डन-मण्डन परक व्यक्तित्व तथा कार्य का मूल्यांकन उल्लेखनीय है—"समय की पुकार है कि समाज में बड़ी गहराई तक व्याप्त अन्धविश्वास को जड़ से उखाड़कर फेंका जाय और स्वामी जी का अन्धविश्वास को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुंचाया जाए। उनकी एक यही उपलब्धि, आइन्सटाइन, गैलीलियो, न्यूटन की उपलब्धियों से किसी भी तरह कम नहीं। इसमें वैज्ञानिक तत्त्व हैं, जो सार्वभौम हैं। स्वामी जी को एक धार्मिक पथद्रष्टा, समाज प्रवर्तक ही समझा जाता है। उनका दृष्टि-कोण, विचारधारा मूलतः वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित थी। मेरे विचार से वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने विज्ञान के आधार पर अन्ध-विश्वासों पर प्रहार किया और उन्हें दूर करने में बहुत कुछ सफल भी हुए। अन्धविश्वास का अन्धेरा छांटने के लिये स्वामी जी ने बार-बार प्रकाश डाला है। उन्होंने सभी धर्मों के पाखण्डों पर, "पोप-लीलाओं" पर, जम कर चोट की है। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह स्वामी जी ने अपने-पराये का भेद किये बगैर तमाम धार्मिक विश्वासों पर जमी काई हटाने का पूरा प्रयास किया। भले ही किसी विद्यालय में न पढ़े हों, भले ही किसी वैज्ञानिक से दीक्षा न ली हो, भले ही किसी प्रयोग-शाला में रिसर्च न की हो, मेरे विचार में स्वामी जी गैलीलियो की अपेक्षा कहीं ऊंचे स्तर के वैज्ञानिक थे। गैलीलियो में वह निर्भीकता नहीं थी, स्वामी जी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कूट-कूट कर भरा हुआ था।"

क्रमशः

पदयात्रा द्वारा वेद प्रचार

बलिया जिला आर्य उप सभा के प्रधान श्री सुदर्शनसिंह आर्य के के निर्देशन में १५ जनवरी को एक विशाल पदयात्रा कामपुर, डुमरिया, बेरसा-कृरिपुर आदि ग्रामों में निकली। सैकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष, बच्चे ओ३म् पताका लिए हुए वैदिक भजन गाते हुए चल रहे थे जनता बहुत प्रभावित हुई।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण १५ अप्रैल ८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी

सभा मन्त्री

गीत स्तुति का विमोचन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आर्याभिविनय पर आधारित श्री देव नारायण भारद्वाज, रचित काव्य संकलन गीत स्तुति का विमोचन आर्य समाज मन्दिर सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम, अलीगढ़ में यशो-पराम्त श्रीमती डा० जानकी देवी और पूर्व रीडर मुस्लिम विश्व-विद्यालय, अलीगढ़ के कर कमलों द्वारा ३१ जनवरी सन १९८८ को प्रातः १० बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिष्ठित साहित्यकार डा० नरेन्द्र तिवारी ने वेद के महत्व पर प्रवचन किया।

३००० हजार गौवों के प्राण बचे

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद), राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (फर्रुखाबाद), मेला रामनगरिया (ढाईघाट) की क्षेत्रीय जनता एवं सन्त महन्तों के सत्प्रयास से राजस्थान से बरेली बूचड़खाने की ओर ले जाने वाले कसाइयों से लगभग ३००० हजार गौओं को मुक्त कराकर क्षेत्र के गो भक्तों को सौंप दिया गया। इस शिष्ट मण्डल ने गो भक्ति का कीर्तिमान स्थापित किया है।

ग्राम नगला मूसा (मोदी नगर) में नई आर्य-समाज की स्थापना

दिनांक १३-३-८८ को ग्राम नगला मूसा में एक नवीन आर्य-समाज मोदी नगर के प्रयास से स्थापित हुई।

इसमें आर्य जगत के तार्किक विद्वान, 'दयानन्द सन्देश' के सम्पादक श्री राजवीर शास्त्री जी ब्रह्मा बने। ब्रह्मा जी ने वैदिक यज्ञ कराकर सभी यजमानों को एवं सभी उपस्थित नर-नारियों द्वारा वेद मन्त्रों के द्वारा आशीर्वाद दिलवाया।

सीकरी मेले पर धर्म सम्मेलन

२३, २४ तथा २५ मार्च १९८८ को सीकरी गांव में होने वाले मेले पर गाजियाबाद जनपद की आर्य-उपप्रतिनिधि सभा द्वारा तीन दिन धर्म-सम्मेलन (वैदिक धर्म प्रचार) का आयोजन किया गया है। इस शुभ अवसर पर उच्चकोटि के साधु-महात्मा, विद्वान महो-पदेशक तथा भजनोपदेशक पधारे जनता प्रभावित हुई।

निर्वाचन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गोरखपुर

प्रधान…श्री पं० द्विजराज शर्मा पुरोहित

मन्त्री…श्री विश्ववासनी आर्य

कोषा०…श्री रमेश गुप्त जी

कविता कलाप

बन्धन मुक्त करो

उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत ।
अवाधमानि जीव से ।। ऋग्वेद

हे तोड़ हमारे प्रभु बन्धन सारे ।
बन्धन तो बन्धन ही ठहरे सारे ।
हों उत्तम मध्यम या अधम हमारे ।।
ये बन्धन जीवन के हैं अँधियारे ।
हे तोड़ हमारे प्रभु बन्धन सारे ।।
जब दोष हमारे सब मिट जायेंगे ।
ये बन्धन सकल तभी हट पायेंगे ।।
अब अवरोध दोष है ईश हटा रे ।
हे तोड़ हमारे प्रभु बन्धन सारे ।।

★

मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् ।
सुम्नैरिद्व आ विवासे ।। ऋ०

सज्जन - दुर्जन, का कोई मेल नहीं ।
हो शत्रु हमारा, या शत्रु मित्र का ।
हो दुष्ट दनुज या सभी सत्र का ।।
करना दुर्जन से कोई खेल नहीं ।
सज्जन-दुर्जन का कोई मेल नहीं ।।
वह मार बैठता दुर्जन शत्रु हमें ।
या आक्रोश कोसता अपशब्द हमें ।।
रे बोल चाल कर बन्द धकेल नहीं ।
सज्जन - दुर्जन का कोई मेल नहीं ।।
जांच परख कर दुर्जन को ठुकराया ।
गुण वान सरल को सेवा अपनाया ।।
सदगुणी जहां, हो दुख की बेल नहीं ।
सज्जन - दुर्जन का कोई मेल नहीं ।।

★

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् ।। ऋ०

ठहरा विश्व विष्णु के तीन पदों में ।
अविनाशी का नाश नहीं हो सकता ।
संव्याप्त विष्णु सबकी रक्षा करता ।।
धारण किया जगत निज देव पदों में ।
ठहरा विश्व विष्णु के तीन पदों में ।
ज्ञात किया, आगे जो ज्ञान योग हो ।
प्राप्त किया समस्त जो प्राप्ति योग्य हो ।
हर वस्तु धर्म धरती इन्हीं पदों में ।
ठहरा विश्व विष्णु के तीन पदों में ।।

★

स्वोतं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्यते ।
विभूतिरस्तु सुनृता ।। ऋ०

करो नमन राधापति परमेश्वर को ।
जो सुख सिद्धि वृद्धि की वस्तुयें सभी ।
वे कहलाती राधा वस्तुएं सभी ।।
पायें दुःखनाशक वस्तु परमेश्वर को ।
करो नमन राधापति परमेश्वर को ।।
हम सुन्दर श्रेष्ठ वस्तुयें पा जायें ।।
पाकर राधा बाधा से हट जायें ।
राधा प्रेमी-पति नमन नरेश्वर को ।
करो नमन राधा पति परमेश्वर को ।।

—देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़

श्रीराम विवाह वयो विचार

(पृष्ठ ४ का शेष)

किया तब समावर्तन तथा विवाह संस्कार हुए । मनुस्मृति अध्याय २, श्लोक ३६ में कहा है—

अर्थात गर्भ से ८ वें वर्ष मे ब्राह्मण, १२ वें क्षत्रिय, और १८ वें में वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार होना चाहिए ।

वन गमन के समय श्री रामचन्द्र को द्विजन्मा (यज्ञोपवीत संस्कार) हुए १७ वर्ष व्यतीत हो चुके थे । शास्त्रीय रीत्यानुसार क्षत्रिय के बाल का यज्ञोपवीत संस्कार ११ वर्ष की अवस्था तक हो जाना चाहिए । सो ११ और १७ यही २८ हुए निर्विवाद सिद्ध हुआ कि वन-गमन के समय श्री रामचन्द्र जी २८ वर्ष के थे । विवाह यदि २५, २६ वर्ष की अवस्था में और १६ वर्ष की अवस्था वाली जानकी जी से हुआ तो इस लेख से यही प्रतीत होता है कि विवाहोपरान्त श्री रामचन्द्र २ वर्ष से कुछ ही अधिक समय तक अयोध्या में रह पाए थे कि उन्हें वन-गमन करना पड़ा,

जो एकाध श्लोक इन बातों के विरुद्ध रामायण में मिल जाते है वे अवश्य प्रक्षिप्त है, क्योंकि शास्त्र के विरुद्ध श्री रामचन्द्र जैसे आदर्श नर-पुंगव स्वप्न में भी नहीं चल सकते थे तथा उनका प्रत्येक कार्य शास्त्र विहित हुआ । अवैदिक दुराचार करना राम जैसे धर्मात्मा महापुरुष के लिए घोर असम्भव था । रामचन्द्र की वेद तथा धर्मशास्त्र पर पूर्ण भक्ति थी । भगवान राम के पवित्र जीवन से समस्त संसार को सब प्रकार की सुशिक्षा प्राप्त होती है । राम विषयी, कामी, छली? अधर्मी तथा नास्तिक नहीं थे । राम के प्रत्येक गुण मनुष्यमात्र को समभाव से ग्रहणीय है । राम के विशुद्ध सुकार्यों से त्रिगुणात्मक मनोहर उपदेश का अमिट प्रभाव पड़ता है । राम का सर्वप्रिय चरित्र, राम का दिव्य स्वभाव राम का सुखद व्यवहार तथा राम की वैदिक धर्मपरायणता देख सारा संसार निस्संकोच रूप से मस्तक झुकाता है । उन अनुचित कार्य करने वाले असज्जन पुरुषों को न्यायकारी परमेश्वर दण्ड देगा जिन्होंने रामायण में प्रक्षिप्त श्लोकों को घुसेड़ कर एक विमल मणि को कलंकित करने की अनाधिकार चेष्टा की है । यद्यपि मणि की बहु मूल्यता उन कलंकों का दुर्गुणों का शाठ्य स्पष्टतः बतला रही है, क्षीर नीर बिलगाने वाले विद्वान रामायण को शुद्ध तथा आदि कवि महात्मा बाल्मीकि के अलौकिक सुकाव्य को यथा तथ्य रख प्रक्षिप्त कूड़ा-करकट दूर करने में संलग्न है । ईश्वर हमें साफल्य प्रदान करे ।

मेरी डाक से

(स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, आ०स० मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली)

(१)

दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध नगर डरबन की आर्यसमाजों में कई वर्षों से यह परम्परा रही है, नव-वर्ष (जनवरी १) को नगर की समस्त आर्यसमाजें एक जगह मिलकर हवन करती हैं, और उत्सव मनाती हैं। १९८६ के नव वर्ष पर मैं डरबन में था, और ऐसे ही उत्सव में मेरा परिचय आशिका नामक एक आर्य परिवार की कन्या से हुआ। पिछले वर्ष के समान इस वर्ष भी नव वर्ष का उल्लेख करते हुए उसने एक पत्र मुझे लिखा है। वह अब वयस्क है और वह तमिल-भाषी एक हिन्दू लड़के से स्नेह करने लगी है।

सम्भवतया उसके माता-पिता उसके प्रेम प्रसंग को इसलिए बुरा समझते हैं, कि वह लड़का तमिल-भाषी हिन्दू है, और आशिका हिन्दी भाषी हिन्दू। जो भारतवंशी विदेशों में बसे हैं, उनमें भाषा-भेद वैवाहिक सम्बन्ध के लिए एक दोष माना जाता है। तमिल भाषियों का परिवार तो एक दृष्टि से अपने को भारतीय तो मानता ही नहीं। श्री मणिलाल गांधी की पुत्री ने बिहारी युवक से विवाह का प्रस्ताव रक्खा, तो गुजरातियों ने विरोध किया था। किन्तु विरोध होते हुए भी एक बेटी का विवाह बिहारी युवक के साथ हुआ-दूसरी बेटी अवश्य गुजराती परिवार में ब्याही गयी, मैं दोनों परिवारों से डरबन में मिला हूं।

दक्षिण अफ्रीका में दाक्षिणात्य भारतवंशियों के मन्दिर अलग है, उनके साधु-संन्यासी अलग हैं। स्वामी शिवानन्द जी के डिवाइन मिशन के एक संन्यासी को वस्तुतः बहुत बुरा लगा-उसके व्याख्यान तमिल भाषियों में कराये जाते थे और मेरे उत्तर भारतीयों के परिवारों में। इस प्रकार की भारतवर्षीय संकीर्णताओं को लेकर हमारे लोग भारत के बाहर गये हैं। यह अनुचित है। मैंने आशिका को लिख दिया है, कि विवाह करना उसका व्यक्तिगत प्रश्न है, और उसने यदि विवाह सम्बन्धी अन्य बातों पर विचार कर लिया है, तो तमिलभाषी लड़के से विवाह होने में हमें गर्व होना चाहिये-आशिका को मेरी बधाई और आशीर्वाद।

(२)

पिपाड़ शहर (जोधपुर) के एक व्यक्ति श्री कल्याणराम आर्य ने मुझे पत्र लिखा है-जिसमें कई सैद्धान्तिक प्रश्न अंकित किए हैं। मैंने जो उत्तर संक्षेप में दिए हैं-इस प्रकार हैं-

(१) प्रश्न-क्या ईश्वर जीवों के आगामी कर्मों को (अर्थात् हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्मों को किये जाने से पूर्व ही) जानता है?

उत्तर-ईश्वर यह जानता है कि कुछ बातों में जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। वह यह भी जानता है कि जीव ने 'स्वतन्त्र कोटि' वाला वह कर्म अभी नहीं किया है। वह कर्म अभी नहीं हुआ-यही जानना परमात्मा की सर्वज्ञता है। कर्म करने के स्वातन्त्र्य का यही अर्थ है, कि आगे इस कोटि के कर्म वह करे, न करे, या उल्टा करे-कर्त्तुं अकर्त्तुं, अन्यथा कर्त्तुं। स्मरण रहे कि कर्म करने के बाद फल भोगने में जीव का स्वातन्त्र्य नहीं है।

(२) प्रश्न-क्या शरीर में आत्मा उसी प्रकार रहती है, जैसे ब्रह्माण्ड में ईश्वर?

उत्तर-शरीर में जीव केवल उस केन्द्र पर मस्तिष्क में रहता है, जहाँ पर समस्त ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान एकीभूत होता है। इसी स्थान पर आसीन जीव अपनी कर्मेन्द्रियों को स्नायु-तन्तुओं के माध्यम से कर्म करने की प्रेरणायें भी देता है, इसी अर्थ में जीव अल्पदेशी है, अणु है, किन्तु परमात्मा समस्त ब्रह्माण्ड में विभु है-तदन्तरस्य सर्वस्य, तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः। सत्ता में वह एक है, पर विस्तार में विभु और अनन्त, और अखण्ड व्यापक।

(३) प्रश्न-क्या योगी मन को जीत लेने के बाद भूतकाल, भविष्यत् काल और वर्तमान काल तीनों कालों की सिद्धि प्राप्त कर लेता है?

उत्तर-तीनों कालों का सापेक्षमान मनुष्य को केवल जागृत अवस्था में होता है। सुषुप्ति, समाधि और मुक्ति में वह मन से काम लेता ही नहीं। केवल मन के सचेष्ट होने पर हमें भूत-भविष्यत्-वर्तमान इन तीनों कालों की भावना होती है। ऋचा है-ये नेदं भूतं भवयं० वाला मन्त्र-तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु वाला मन्त्र।

(४) प्रश्न-जब योगी समाधि में लीन रहता है, तो क्या प्राण बन्द हो जाता है, या वह अपने स्वाभाविक रूप में चलता रहता है?

उत्तर-समाधि में भी सुषुप्ति के समान ही प्राण पूर्व सामान्य स्वाभाविक गति से चलता रहता है, स्मरण रहे कि समाधिस्थ योगी मृत व्यक्ति नहीं है। वह जीवित है। समाधि से जगकर वह सदा की भाँति इसी शरीर से सब क्रियायें करेगा (ज्ञान, कर्म, भोग की) प्राणों के संचार होने पर ही उसका रक्त धमनियों में बराबर बह सकेगा। प्राण के साथ अपान, व्यान, समान में भी गतियां रहेंगी।

(५) प्रश्न-कितने महीनों तक योगी समाधि लगा सकता है?

उत्तर-इसका मुझे व्यक्तिगत कोई अनुभव नहीं, इसका उल्लेख भी किसी विश्वसनीय ग्रन्थ में नहीं है। ऋषि दयानन्द ने अपने एक लेख में ६ घण्टे समाधिस्थ रहने की बात कही है-इस समाधि का क्या अर्थ है-मैं नहीं जानता। सम्भवतया वह सविचार संप्रज्ञात समाधि हो।

(३)

अहमदनगर (महाराष्ट्र) में श्री मांगेराम जी आर्य हैं। उनका एक विस्तृत पत्र मुझे मिला है। पिछले ऋषि निर्वाण दिवस पर मैंने जोरबाग आर्यसमाज में आशीर्वाद देते समय कहा था कि "मैं अब न माला पहनता हूं, न पहनाता हूं', इस बात की चर्चा 'आर्य मर्यादा' के १ नवम्बर १९८७ के अंक में हुई। मांगेराम जी ने लिखा है कि 'मूर्ति, बुत या समाधि (कबर) पर माला या चादर चढ़ाना तो नितान्त मूर्खता है, क्योंकि उनमें जीवात्मा नहीं है, उन्हें न तो खुशी होती है, और न गम। पर आपको हम गृहस्थी लोगों की पुष्पमाला ग्रहण करने में किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करनी चाहिए।' मैं श्री मांगेराम जी की भावनाओं का आदर, करता हूं-मैं तो गृहस्थियों की दी हुई याचित और अयाचित भिक्षाओं पर ही निर्भर हूं-इस भिक्षा की तुलना में पुष्प माला तो बहुत ही तुच्छ है।

मेरा सम्बन्ध विज्ञान से है। वैज्ञानिक जगत में प्रदूषणों को लेकर

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि दयानन्द का महान् संकल्प

(पृष्ठ ३ का शेष)

परीक्षा के कायबात व आजतक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आपलोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त मे संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट् की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। आज इसकी वृद्धि मे हम तुमको इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हा, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आपलोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

स्वामी जी ने अपने परम शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में एक पत्र लिखा। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वह चिट्ठी प्रो० मोनियर विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर वह इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के २३ अक्तूबर सन् १८८० के अङ्क में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त में पत्र-व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर के शिक्षित मनुष्यों के बीच में यही भाषा विचार विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग २०० भाषायें बोली जाती हैं। यदि यह माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से बातचीत करने में अत्यन्त कठिनता होती। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है, वह भूल करते हैं।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें विशेषतः उनके अनुयाइयों को राष्ट्र में संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्य समाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश मे जितने भी संस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतियां हैं, उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी। साथ ही भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ आन्दोलन भी चलाने होंगे। हम ऋषि के ऋण से तभी उऋण होंगे जब हम महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुरूप संस्कृत के प्रति अपने को समर्पित कर दें

★

बलुवाकोट में कुष्ठ निवारण यज्ञ

पिथौरागढ़। कुष्ठ नियन्त्रण केन्द्र बलुवाकोट में १० जनवरी १९८८ को ग्राम प्रधान कालूचन्द्र की अध्यक्षता में कुष्ठ निवारण यज्ञ के अवसर पर प्रधानाचार्य जी कालेज, परगनाधिकारी श्री जे० एम० दुर्गापाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। डा० कन्धाहारी (जिला कुष्ठ अधिकारी) ने २१ वीं शताब्दी में प्रवेश से पूर्व कुष्ठ उन्मूलन अभियान पर प्रकाश डाला तथा मार्च से अप्रैल तक सौ से अधिक कुष्ठ रोगी खोजने वाले कर्मचारी को पुरस्कार सहित प्रमाण पत्र देने की घोषणा की।

चित्र भेजने की तिथि बढ़ा दी गयी

ऐसा ज्ञात हुआ है कि जिला समाओं ने अपने जिले की आर्य समाजों को अभी तक वार्षिक चित्र नहीं भेजे हैं, अतः सभा कार्यालय में चित्र भर कर भेजने की तिथि १५-४-८८ तक बढ़ाई जाती है।

समस्त जिला सभा के मन्त्री महोदयों से अनुरोध है कि जिन्होंने अभी तक समाजों को चित्र न भेजे हों, शीघ्र भेजने की कृपा करें। तथा जिन समाजों को अभी तक न मिले हों शीघ्र सभा को लिखें जिससे कि शीघ्र भेजे जा सकें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

शोक समाचार

बदायूं आर्य समाज के प्रतिष्ठित सदस्य श्री रामचन्द्र जी रिटायर्ड डिप्टी पोस्ट मास्टर, जी० पी० ओ० लखनऊ का ९९ वर्ष की आयु मे निधन हो गया। आप एक निष्ठावान आर्य समाजी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सहायक कोषाध्यक्ष भी रहे। आर्य समाज के प्रति की गई उनकी सेवायें अविस्मरणीय हैं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। प्रभु उनकी आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें। बदायूं का विशाल दयानन्द सेवाश्रम उन्हीं की प्रेरणा का फल है। वे बड़े साहसी, धर्मनिष्ठ तथा कर्तव्य परायण ईमानदार आर्य व्यक्ति थे।

–ठा० बिन्देश्वरी सिंह आर्य भजनोपदेशक का गत दिनो लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। वे एक कर्मठ प्रचारक थे उनका सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में बीता। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति एवं परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे।

आ० स० बहेड़ी का अर्द्धशताब्दी महोत्सव

आर्य समाज बहेड़ी (बरेली) अपने जीवन के ५० वर्ष पूर्ण करके आगामी १ से ४ जून १९८८ तक अर्द्ध शताब्दी समारोह बड़े धूमधाम से मनाने जा रहा है। इसमें अनेक विद्वान् संन्यासी उपदेशक प्रचारक भाग ले रहे हैं।

आ.स. संभल [मुरादाबाद] में विशाल जनसभा

देश में नारी जाति के प्रति हो रहे अत्याचार उत्पीड़न, सतीप्रथा, दहेज हत्याओं आदि के विरोध में ८-१२-८८ को आर्य समाज सम्भल मुरादाबाद के तत्वावधान में एक विशाल जनसभा का आयोजन हुआ जिसमें महिला आर्यसमाज, कन्या इन्टर कालेज, दयानन्द बाल मन्दिर की छात्राओं। अध्यापक वर्ग ने बड़ी संख्या में भाग लिया। श्री जगदीश शरण आर्य ने विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि जब-जब हिन्दू समाज पर आपत्ति आयी आर्य समाज ने अपने दृढ़-संकल्प से आन्दोलन चलाकर आपत्ति का निवारण किया है। सतीप्रथा के विरोध में शास्त्रार्थ का खुला चैलेन्ज आर्य समाज ने ही तथाकथित धर्म गुरुओं को दिया था जिन्होंने सतीप्रथा के अनुमोदन का कुत्सित प्रयास किया था। आर्य समाज हिन्दू जाति का जागरूक प्रहरी है। विशाल जनसभा में अनेक प्रस्ताव पारित हुए और जन जागरण को सफल बनाने में महान् सफलता प्राप्त हुई।

शोक संदेश

आ० स० रिफाइवरी, मथुरा के प्रधान श्री अरविन्द कुमार वशिष्ट की धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता का असामयिक निधन हो गया वे धर्मपरायण सुशील परोपकारी महिला थीं अन्त्येष्टि एवं शांति यज्ञ पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। प्रभु उनकी आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

आ० स० राजा का ताजपुर [बिजनौर] के प्रधान डा० विजयपालसिंह के सुपुत्र सुधीरकुमार राणा [२४ वर्षीय] का एक दुःखद दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति एव पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

आ० स० उझानी [बदायूं] के संरक्षक पं० सुनहरी लाल आर्य का २२ दिसम्बर को असामयिक निधन हो गया। वे कर्मठ आर्य पुरुष थे। उनका जीवन आर्यसमाज की सेवा में सदैव रत रहा। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

ग्राम कुशावली, सरधना [मेरठ] में ७२ वर्षीया श्रीमती वक्तावरी देवी का १२-२-८८ को स्वर्गवास हो गया। वे श्री भरतसिंह आर्य जिनका निधन १०/१/८८ को हो गया था, की धर्मपत्नी थीं। दम्पति पूर्ण निष्ठावान वैदिक विचारों से ओतप्रोत कट्टर आर्य समाजी थे। दोनों की अन्त्येष्टि एवं शांति यज्ञ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवंगत दम्पति की आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

सभा प्रधान

उत्सव

जनपद मथुरा के आर्य समाज अंधागांव तथा आर्य समाज रसमई के वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुए। अनेक विद्वानों के भाषण हुए जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

जनपद अलीगढ़ में आर्य महासम्मेलन

दिनांक २३ तथा २४ अप्रैल को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद अलीगढ़ के तत्वावधान में वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ़ के विशाल प्राङ्गण में एक आर्य महासम्मेलन आयोजित हो रहा है जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, पू० म० नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी एवं अन्य प्रख्यात उपदेशक, भजनीक पधार रहे हैं।

डा० विजयपाल सिंह आर्य
मन्त्री जिला आर्य उ० प्र० सभा अलीगढ़

निर्वाचन

आ० स० कोपागंज, आजमगढ़
प्रधान श्री मृत्युञ्जय आर्य
मन्त्री श्री वीरेन्द्र आर्य
कोषा० श्री सतीशचन्द्र आर्य

आ० स० रजपुरा [बदायूं]
प्रधान श्री ओंकार प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री भगवान दास आर्य

विद्वदभिनन्दन-समारोह

आर्य बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि "आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट" स्व० लाला दीपचन्द आर्य की स्मृति में विद्वदभिनन्दन-समारोह का आयोजन आर्य समाज नया बांस [दिल्ली] के वार्षिकोत्सव पर दिनांक ३ अप्रैल ८८ को कर रहा है।

इस उत्सव में आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान श्री पं० विशुद्धानन्द जी मिश्र [बदायूं] का सम्मान किया जायेगा आर्यमित्र की बधाई।

कानपुर में आर्यों की विशाल जन सभा

कानपुर २० मार्च—आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में जनपद की समस्त आर्य समाजों की ओर से विशाल व भव्य शोभा यात्रा आर्य समाज दर्शनपुरवा से २ बजे से प्रारम्भ होकर, गुमटी, बम्बा रोड, जरीब चौकी, जी० टी० रोड, सौसामऊ बाजार होते हुए मोतीझील में जन सभा में परिवर्तित हो गई। शोभा यात्रा में मुख्य नारे 'जीवित नारी नहीं जलेगी, अब मुर्दों के साथ में, अपना जीवन आप जीएगी आदर सहित समाज में' वेदों का है यह एलान, नर और नारी है समान' 'छुआछूत मिटाने को 'ऋषि दयानन्द आए थे, 'सती प्रथा समस्या है, धर्म नहीं यह हत्या है।' जन सभा में ओजस्वी वक्ता स्वामी अग्निवेश (दिल्ली) ने युवा पीढ़ी को उद्बोधित करते हुए कहा कि वेदो में संसार का समस्त ज्ञान भरा पड़ा है, आवश्यकता है, उसे उजागर करने की। नई पीढ़ी को सम्बोधित करते हुए विशेष रूप से नारी-उत्पीड़न, तथा सती प्रथाके विरोधमें जाग्रत होने का आह्वान किया। कानपुर में हुई दहेज की हत्याओं के प्रति क्षोभ प्रकट करते हुए बिना दहेज व जाति बन्धन के विवाह करने व युवक युवतियों को संकल्प लेने के लिये प्रेरित किया। श्री विश्वामित्र मेधावी, कुलपति सिराथू गुरुकुल, श्रीमती सरला चौधरी, देवीदास आर्य, पं० लक्ष्मण कुमार शास्त्री ने भी विचार प्रकट किये। संचालन डा० आशा रानी राय संयोजन डा० हरपाल सिंह मन्त्री ने किया। अध्यक्षता श्री सन्तरामसिंह तोमर प्रधान ने की।

गांगूपुर (पीलीभीत) में विराट आर्य सम्मेलन

दिनांक ९ व १० जनवरी को मा० तेजबहादुर विधायक की अध्यक्षता मे विराट आर्य सम्मेलन मनाया गया प्रतिदिन यज्ञ एवं विद्वानो के प्रवचन हुए। ब्रह्मचारी दिव्यपाल जवन्त (आधुनिक भीम) द्वारा दिखाए गये यौगिक शक्ति प्रदर्शन को जनता ने बहुत सराहा। भ० राकेश आर्य के मधुर भजनों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

ऋषि बोध पर्व सम्पन्न

आर्य समाज चौक बाजार बुलन्द शहर में ऋषि बोध उत्सव ससमारोह मनाया गया जिसमें विशेष रूप से श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा प्रधान, श्री अनिल कुमार मन्त्री, श्री गणेश दत्त गोयल कोषाध्यक्ष तथा श्री शान्ती सरन राठी प्रबन्धक सतीश चन्द गोयल संयोजक व प्रधाना चार्या महोदया आर्य कन्या इन्टर कालेज बुलन्द शहर के सहयोग से हर्ष के साथ सम्पन्न हुआ।

वीरेन्द्रपाल शर्मा
प्रधान आर्य समाज चौक बुलन्द शहर

शंकराचार्य इंका० पर बरसे

[श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

आज के अमर उजाला समाचार पत्र में शंकराचार्य जी ने हिन्दुओं को इंका० को वोट न देने का आह्वान किया है। परन्तु हिन्दू वोट किसको दे इसका कहीं भी जिकर नहीं है। उन्होंने अपने वक्तव्य में अटलबिहारी वाजपेयी जी को 'काला अक्षर भैंस बराबर' के रूप में व्यक्त करके भारतीय जनता पार्टी पर करारा प्रहार किया है। हिन्दू न तो इंका० को वोट करे और न ही भारतीय जनता पार्टी को वोट करे तो फिर किसको वोट करे। सनातन दल जो अभी हवा में है क्या उसको वोट करे। चारो शंकराचार्य न तो अभी तक मिले हैं और न ही मिलने की भविष्य में आशा है। इन चारो के विचार भी भिन्न-भिन्न हैं। हिन्दू धर्म में छुआछूत, घृणा, विद्वेष आदि के उत्तरदायित्व से शंकराचार्य नहीं बच सकते हैं। क्या इन में इस बात का साहस है कि एक तथा कथित (हरिजन) हिन्दू भाई को अपने चरण स्पर्श करने दे।

हिन्दुओं के संगठन में सबसे बड़ी बाधा छूआछात और जन्म से जाति का मानना है। वेद शास्त्रों में जाति को गुण कर्म स्वभाव पर माना गया है न कि जन्म के आधार पर मनु जी लिखते हैं—

जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विज उच्यते।

जन्म से सब शूद्र हैं—संस्कारों से द्विज बनते हैं।

भगवान कृष्ण गीता में लिखते हैं—

'चातुर्वर्ण्यम् मया सृष्टम् गुण कर्म विभागशः'।

सृष्टि की आदि में चार वर्णों का गुण कर्म स्वभाव के अनुसार मैंने सर्जन किया।

ऐसे अनेको प्रमाणों के होते हुए यही पुरानी रट हिन्दुओं के मध्य घृणा और विघटन का कारण बनी हुई है।

इसलिए आर्यसमाज की मान्यता को आदर देते हुए हिन्दू धर्म को बचाने का प्रयास करें। यही अवसर है अन्यथा नाश अवश्यम्भावी है।

मेरठ समाचार

१—उत्तरी भारत के नौचन्दी मेले में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी के निर्देशन में आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र द्वारा आधे मूल्य में सत्यार्थ प्रकाश बेचा जा रहा है। अन्य वैदिक साहित्य के कारण भी मेले में प्रचार केन्द्र की धूम मची हुई है। श्रीमद्भगवद्गीता, यज्ञ पर्व सुधा, वेद यज्ञ एवं कायाकल्प की भारी बिक्री हो रही है।

२—भूतपूर्व सैनिक रैली मेरठ में दि० ३०-३-८८ के पटेल मण्डप दरबार हाल नौचन्दी मेले में श्री वी०के० दीवान आयुक्त मेरठ मण्डल मेरठ मुख्य अतिथि के करकमलों से आर्यसमाज मेरठ शहर स्टील के बर्तनों के १० सैट अपंग सैनिकों एवं सैनिक विधवाओं को श्री पं० इन्द्रराज जी सभा प्रधान के निर्देशन में भेंट किये गये। मेले में आर्य समाज के इस कार्य की महान् प्रशंसा है।

मेरी डाक से

(पृष्ठ ७ का शेष)

आजकल बराबर चर्चा होती रहती है, और गोष्ठियां होती हैं, इसी प्रदूषण की दृष्टि से मैंने पुष्पमालाओं के पहनने-पहनाने की बात कही थी। काशी में गंगा नदी को भक्त लोग फूलों से लादने का प्रयास करते हैं। ये फूल नदी के पानी में सड़कर, प्रदूषण बढ़ाते हैं। इधर आर्यसमाजों के सत्कार समारोहों में सैकड़ों रुपये की मालाओं का प्रयोग मैंने देखा है, जो गलों में पड़ते-पड़ते उतार दी जाती है. और फिर इनका क्या होता है ? ये कूड़े में सड़ती हैं, मेहतर झाड़ू से बटोर कर कूड़े में बहाता है। हम देवयज्ञ प्रदूषण कम करने के लिए करते हैं, और ये फूलमालायें प्रदूषण फैलाती हैं। इसीलिए मैंने कहा था कि आप दोनों कामों का समर्थन नहीं कर सकते—प्रदूषण बढ़ायें भी, और हवन भी करें।

मुझे सबसे अधिक ग्लानि उस दृश्य को देखकर हुई, जब गाजियाबाद में दाह-संस्कार के लिए श्री अमरस्वामी का शव आया था। अन्त्येष्टि कर्म से पूर्व एक नया विनियोग आर्यसमाज के प्रतिष्ठित पुरोहितों और अधिकारियों के देखते-देखते हुआ। शव पर दिल्ली और गाजियाबाद की संस्थाओं की ओर से दर्जनों बड़ी-बड़ी मालायें चढ़ायी गयीं। बाद को शव तो चिता पर रखा गया, और ये मालायें गीले पानी में वहीं सड़ने के लिए छोड़ दी गई। उसी दिन से मैंने इस प्रसंग में कहना आरम्भ किया है, कि न मैं माला स्वीकार करता हूं—न मैं पहनाता हूं। ये मालायें ताजे फूलों की न होकर न सड़ने वाले और किसी पदार्थ की हों, और जो सड़ने के लिए छोड़ दी जावें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। प्रदूषण दूर करने के लिए जो हवन करते हैं, उन आर्य व्यक्तियों को इस बात की सावधानी रखनी चाहिये। ताजे फूलों की मालाओं का जो दुरुपयोग भारत में है, वह आज के उन्नतशील देशों में और कहीं नहीं।

३—श्री धर्मपालसिंह जी निरीक्षक सभा की सुपुत्री के विवाह पर सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी तथा श्री चौ० माधवसिंह जी मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा उनके ग्राम बड़ावद में पधारे। विवाह संस्कार आर्यसमाज के आदर्शों के रूप में सरल रूप से सम्पन्न हुआ। श्री सभा प्रधान जी ने तथा चौधरी माधवसिंह जी ने वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया।

४—आर्यसमाज हापुड़ के वार्षिकोत्सव पर श्री पं० इन्द्रराज जी सभा प्रधान के पधारने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने नये जिला सभा के अधिकारियों को बधाई दी तथा अधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं को सोकरी के मेले पर सफल शिविर के लिए धन्यवाद दिया। एवं प्रचार की योजनाओं पर भी परस्पर विचार-विमर्श हुआ।

—सभा मन्त्री

उत्सव

आर्यसमाज रसौली बाराबंकी का ४३ वां वार्षिकोत्सव २९ अप्रैल से १ मई १९८८ तक ससमारोह सम्पन्न होगा जिसमें आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान, महोपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिक निर्वाचन

स्त्री आर्य समाज, बुढ़ाना गेट मेरठ शहर
प्रधाना…श्रीमती कैलाशदेवी रस्तोगी,
मन्त्राणी…श्रीमती विनोद बाला
कोषाध्यक्षा…श्रीमती प्रकाशवती रस्तोगी

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर (हमीरपुर)
प्रधान…श्री सुन्दर लाल आर्य
मन्त्री…श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य
कोषा०…श्री प्रकाश आर्य

आ० स० मोहम्मदपुर माडेन जनपद (मुजफ्फर नगर)
प्रधान…श्री हरपाल सिंह आर्य
मन्त्री…श्री राजेन्द्र प्रसाद कपिल
कोषा० श्री फेरूसिंह आर्य

आर्य समाज देवरामपुर मोटाढांक कोटद्वार [पौढ़ी गढ़वाल]
प्रधान…श्री नारायण दत्त शास्त्री
मन्त्री…श्री चन्द्रशेखर जी
कोषा०…श्री रतनमणि जी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शाहजहांपुर
प्रधान…श्री राजेन्द्र शर्मा
मन्त्री…डा० श्याम सुन्दर लाल
कोषा०…श्री सेठ श्रीकृष्ण

आ० स० ठाकुरद्वारा मुरादाबाद
प्रधान…श्री ला० हरिराम
मन्त्री एवं कोषा० श्री छज्जूमल

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद
प्रधान…श्री विजयभूषण
मन्त्री…डा० जयवीरसिंह
कोषा०…श्री माया प्रकाश त्यागी

हरिपुर, निकट सहतवार जनपद बलिया
प्रधान…म० बच्चन शर्मा
मन्त्री…श्री विजय शङ्कर आर्य
कोषा०…श्री जयप्रकाश वर्मा

आ०स० सिरसी जनपद मुरादाबाद
प्रधान…श्री वृजानन्द
मन्त्री श्री आदित्यवीर
कोषा०…श्री राजेन्द्र पाल

आर्य समाज कृष्णा नगर प्रयाग
प्रधान…श्री अशोक कुमार पाठक
मन्त्री…श्री सन्तोष कुमार
कोषा०…श्रीकेदार नाथ गुप्ता

आ० स० सेवहारा जनपद बिजनौर
प्रधान…श्री चौ० रणवीरसिंह
मन्त्री…डा० सन्तराम
कोषा०…श्री सुनील कुमार

आ० स० मण्डीबांस मुरादाबाद
प्रधान…श्री वेदप्रकाश जी
मन्त्री · श्री अम्बरीश कुमार जी
कोषा०…श्री राधेरमन जी

आ० स० सिम्भालका मुजफ्फरपुर
प्रधान…श्री ईश्वरसिंह
मन्त्री…श्री रघुवीरसिंह
कोषा०…श्री जिलेसिंह आर्य

आ० स० सुल्तानपुर, जिला रायसेन (मध्य प्रदेश)
प्रधान…श्री बाबूलाल गौर
मन्त्री…श्री ओम प्रकाश मलिक
कोषा०…श्री रामचन्द्र सिंह यादव

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ
प्रधान…श्री ओमप्रकाश सेवक
मन्त्री…श्री रूपचन्द्र 'दीपक'
कोषा०…श्री शिवनाथ जी

आ० स० रुस्तमपुर, महुवत बावली जनपद मेरठ
प्रधान… श्री देवराजसिंह
मन्त्री०…श्री प्रीतमसिंह
कोषा०…श्री चेतराम

आ० स० बड़ौत जनपद मेरठ
प्रधान…श्री रामलाल
मन्त्री…डा० ओमवीर सिंह
कोषा०…श्री सुन्दर लाल

आर्य समाज गोविन्दपुरी, मोदीनगर जिला गाजियाबाद
प्रधान… श्री हीरालाल जी
मन्त्री · श्री विश्व बन्धु जी
कोषा०…श्री गोपी चन्द्र जी

महिला आर्य समाज गोविन्दपुरी [मोदीनगर, गाजियाबाद]
प्रधाना…श्रीमती सुमित्रादेवी
मन्त्राणी…श्रीमती राजकुमारी मलिक
कोषाध्यक्षा…श्रीमती सत्यवती

आर्यसमाज मवाना, मेरठ
प्रधान…श्री दया प्रकाश सर्राफ
मन्त्री…श्री कान्ति प्रकाश
कोषा०… श्री प्रेमप्रकाश

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर देहात
प्रधान · श्री ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री…श्री बाल कृष्ण शर्मा
कोषा०…श्री प्रभुदयाल सिंह

आर्यउपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर
प्रधान…श्री सन्तराम सिंह सेंगर
मन्त्री…डा० हरपाल सिंह
कोषा०…श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आर्य समाज टांडा बादली जिला रामपुर
प्रधान…श्री बुद्धसेन आर्य
मन्त्री…श्री रमेश चन्द्र वर्मा
कोषा०…श्री विनोद कुमार वर्मा

आ० स० रायपुर खुम्सी जिला खीरी–लखीमपुर
प्रधाना…श्रीमती तारादेवी आर्या
मन्त्री…डा० सूर्यप्रकाश आर्य
कोषा०…श्री मेवालाल आर्य

आ० स० गुलावठी बुलन्दशहर
प्रधान…श्री पं० फकीर चन्द्र शर्मा
मन्त्री…श्री दिनेश कुमार गुप्ता
कोषा०…श्री राजेश कुमार गुप्ता

नवीन आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज धर्मपुर जनपद देहरादून के युवक कार्यकर्त्ताओं के प्रयास से ग्राम जोगी वाला तथा बद्रीपुर में आर्य समाज की स्थापना की गई। चौधरी श्री सत्येन्द्र सिंह द्वारा आर्य समाज मन्दिर निर्माणार्थ एक बीघा जमीन दान में दी गई है। आर्य जगत को बधाई।

सूचना

वर्ष, १९८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अतः वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना–अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को १५ अप्रैल, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४६९९३ ४२६६१
रजिस्ट्रेशन सं० एल डब्लू एन २१ ७६
वार्षिक शुल्क १
३ अप्रैल रविवार १९८८ ई०

आर्यमित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सिकन्दरा इन्टर कालेज के समीप से बूचड़ खाना हटाया जाय

दिनांक ११ जनवरी को कानपुर देहात में सिकन्दरा इन्टर कालेज के समीप राजमार्ग के किनारे चल रहे [बूचड खाने) पशुवधशाला को हटाये जाने के लिए डा० गयाप्रसाद शास्त्री की अध्यक्षता में सत्याग्रह किया गया और स्थानीय प्रशासन से अनुरोध किया गया कि इस बूचड़ खाने को तुरन्त बन्द किया जावे। सत्याग्रहियों में डा० गयाप्रसाद शास्त्री के अतिरिक्त अनेकों गणमान्य नागरिकों ने सम्मिलित होकर भाग लिया। डा० गयाप्रसाद के सत्प्रयास से गतवर्ष काफी मात्रा में गोमांस ले जाते हुए कसाइयों को पकड़ा गया तथा सैकड़ों गायों की रक्षा की गई।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य भेजने की कृपा करें

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मार्च माह १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भजने में ७.५० अतिरिक्त पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिख हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है

३४७, ३६१ ५४३२ १८४६ ४१५४ ४३५५ ४३३५, ५८४५ ६०४३, ६६१२ ८२३८ ८७३४ ८७३७, ८९०१ ८६२८, ८६५५ ८८४१ ८८५८, ८९०८ ११९३८ १११४८, १११५३, ११५६४, ११८८० १०१०४ १२१२० १२१४४ १२१४१ १२१४३ १२६११ १२९१०, १२८४४, १२८०६, १२८५२ १२८५८ १३०६१, १३०६६ १३०६८, १३४३४, १३४२६, १३७२८ १३७३४, १३७३८, १३७४८ १३७४५ १४६०४ १४२०८ १४४०६, १४२०७, १४२०८, १४२११, १०,१४, १४२१५, १४२१६ १४२१७ १४२१८, १४२२० १४२२३ १४२२३ १४२२८ १ ... ... १४२३१ १४२३२ १४२४३।

व्यवस्थापक

पुत्रहीन बहनों के लिये

स्त्री अथवा पुरुष के गुप्त रोग के कारण शादी के बाद सन्तान का होना न होना या होकर मरजाना-बार-बार कन्यायें ही जन्म लेना आदि दोषों को दूरकर पुत्र प्राप्ति के लिये पति-पत्नी अपना विवरण लिखकर हमारी द्वारा परीक्षित दवा से-अपनी मुराद पूरी करें। मूल्य सम्पूर्ण २५/ रुपये। दवा बेफायदा होने पर मूल्य वापस।

श्रीमती रामप्यारी देवी
(ए १५) पो० कतरी सराय (गया)

वैदिक रीति से निर्मित शत प्रतिशत शुद्ध

हवन सामग्री

हेतु आदेश पत्र भेजिए-
हवन सामग्री भण्डार
(...) ... दिल्ली-११००२८

(१) १०० प्रतिशत शुद्ध सुगन्धित जड़ी बूटियों से निर्मित सामग्री बहुत कम भाव पर हमारे यहां उपलब्ध है
(२) हवन सामग्री की शुद्धता और उत्कृष्टता के कारण भारत सरकार से पूरे देश में इस निर्यात करने का अधिकार प्राप्त है।
(३) मजबूत लोहे की चादर के बने ८x८, १०x१० तथा १२x१२ इंचों (स्टैण्ड सहित) हवन कुण्ड भी क्रमशः रु० ४८/-, ६०/- तथा ७२/- में उपलब्ध हैं।
(४) शुद्ध गारण्टी शुदा औषधि में प्रयोग हेतु असली शहद रु० ५०/- प्रति किलो के हिसाब से उपलब्ध है पूरे देश में भेजने की व्यवस्था है।



स्वामी सर्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए जगदीश्वरीय आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए ... एम० पी० (...) ... लखनऊ से श्री ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ | घोषणा पत्र सं ७।२८-२-८५

वैशाख कृष्ण ८ रविवार संवत २०४५ वि०, दिनांक १० अप्रैल १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ९१

अङ्क १५

पंजाब का यह वीरबाँकुरा—राष्ट्र को जिस पर अभिमान है—

"कुल पवित्रं जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती बभूव"

प० इन्द्रराज, सभा प्रधान

दिनांक २१/३/८८ को मेरठ के शर्मा स्मारक मैदान मे आयोजित एक विशाल जनसभा मे पंजाब के वीर बाँकुरे शहीद भगतसिंह, सुखदेव एवं राजगुरु को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने कहा—पंजाब की यह वीर भूमि पञ्चनद मे विख्यात आर्यों की पवित्र स्थली रही है। इतिहास साक्षी है ईसा के पूर्व यूनान के दिग्विजयी सम्राट सिकन्दर की सेनायें इस वीर भूमि से टकराकर पराह्त हो गयीं थी। महाराज पुरु ने उसे झेलम से आगे नहीं बढने दिया था और उसका दिग्विजय का स्वप्न चूर-चूर कर दिया था। जब-जब राष्ट्र पर आपत्ति आई है इस धरती के वीरवर सैनिको ने अपने युद्ध कौशल से दुश्मन को परास्त करके राष्ट्र की रक्षा की है। वीर पुत्रप्रसविनी इसी धरती ने अमर सपूत भगतसिंह को जन्म दिया जिसकी मातृभूमि के प्रति समर्पण की उत्कृष्ट भावना और उसके अपूर्व बलिदान का स्मरण करके हृदय गद्गद और रोमाञ्चित हो उठता है। इन बलिदानी वीरो की अमर गाथायें हमे अनन्तकाल तक प्रेरणा देने वाली हैं।

श्री प्रधान जी ने रुंधे हुए कण्ठ से इन वीरो का स्मरण करते हुए आगे कहा—जिस स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए इन शहीदो ने अपना बलिदान दिया था वैसी स्वतन्त्रता के दर्शन-अभी हमे नहीं हुए हैं। किसी को यह अनुमान नहीं था कि आज प्राप्त आजादी मे भ्रष्टाचार, लूटपाट, उग्रवाद, आतंकवाद, निर्दोष लोगो की हत्या एवं साम्प्रदायिक दंगे होंगे। आजादी के इस वर्तमान स्वरूप की कल्पना उन शहीदो के हृदय मे न थी। आज तो हम जिस तरफ देखते हैं अन्धकार ही अन्धकार नजर आता है लेकिन हमे आशा अवश्य है—"सत्येन पन्था विततो देवयान" सच्चाई से सच्चाई का जन्म होता है, शहीदो के खून से शहीद ही पैदा होते हैं। हमारे इन सपूतो का बलिदान कभी व्यर्थ नही जा सकता। उनकी कल्पना की आजादी का स्वरूप एक दिन अवश्य साकार होगा। आवश्यकता है सही दिशानिर्देशन की। आर्य समाज यही चाहता है और यही कर रहा है। आज देश मे जो कुण्ठा व्याप्त हो रही है उसे हमे दूर करना है। आसेतु हिमाचल भारत एक अखण्ड राष्ट्र है—यह भावना हमे जन-जन मे भरनी है। हमारा उद्देश्य ही है—"अनृतात् सत्यमुपैमि" हम सत्यमार्ग पर सदैव बढते चलें। आज पंजाब की शक्ति को विध्वंस की ओर नहीं निर्माण और शान्ति के रास्ते पर ले जाना है। हमारा अतीत महान था भविष्य भी महान होगा—केवल वर्तमान को सम्भालने की आवश्यकता है।

बलिदानी सपूतो को श्रद्धाञ्जलि देते हुए। कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लो ने वर्तमान दशा के लिए सत्तादल के साथ-साथ विरोधी दलो को भी जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने बताया कि यदि विरोधी दल मजबूत होते तो देश की यह दुर्दशा न होती। स्वतन्त्रता सेनानी श्री मुरसद्दीलाल, श्री सुन्दरलाल जैन, सर्वोदयी नेता मास्टर सुन्दरलाल कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डा० एन० एन० श्रीवास्तव ने इन क्रान्तिकारियों को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए उनके आदर्शों पर चलने के लिये युवा-पीढी का आह्वान किया। इस अवसर पर "शहीद की मौत" नामक एक नाटक की प्रस्तुति भी हुई जिसे देख कर जनता मे वीर रस का संचार हुआ और उसने इस नाटक द्वारा प्रदत्त भावों की बड़ी सराहना की।

भरा नहीं जो भावो से, बहती जिसमे रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ-वैशाख कृष्ण ८ सवत् २०४५, रविवार १० अप्रैल १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि सवत् १९७२९४९०८८

अनर्गल प्रलाप

आजकल देश मे अनेक स्थानो पर गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस का आधार लेकर रामायण मे आई हुई अनेको कथाओ का प्रचलन चल रहा है जिनमे हजारो की सख्या मे श्रद्धालु जनता आध्यात्मिक शान्ति की लालसा मे उपस्थित होती है। हमने पिछले सम्पादकीय मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के उदात्त चरित्र की प्रशसा करते हुए उन्हे आर्य जाति का अमूल्य रत्न बताया था। और नि सदेह वे आय जाति के महान आदश पुरुष थे, उनके प्रेरक चरित्र का श्रवण मनन, अनुकरण आय जाति के लिए गौरव की बात है। इतिहास साक्षी है, कौन सा ऐसी पवित्र वेदमर्यादा है जिसके अनुपालन मे वे खरे न उतरे हो। आज आसेतु हिमाचल इस भूखण्ड मे ही नहीं, अपितु जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, इण्डोनेशिया, बर्मा, मलाया आदि दक्षिणपूर्वीय अञ्चलो एव विश्व के अन्य अनेको भागो मे रहने वाली कोटि-कोटि जनता उनके नाम व लीलाधाम का स्मरण, वाचन एव दर्शन करके अपने को पवित्र एव कृतार्थ समझती है। बाल्मीकि ने कई स्थानो पर कहा है-'वे स्वय निराकार ब्रह्म के उपासक थे, सन्ध्या हवन करते थे, प्रजा के महान रक्षक थे। मनुष्य थे-ऐसा उन्होने स्वय स्वीकारा है-'आत्मान मानुष मन्ये, रामो दशरथात्मज'-मै दशरथ का पुत्र राम, मनुष्य हू। इस प्रसग मे कथावाचको को यह भी स्मरण करा दें कि गोस्वामी तुलसीदास ने स्वय ब्रह्म के स्वरूप का वणन करते हुए उसे निराकार एव अजन्मा माना है—

बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कम करै विधिनाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु बाणी वक्ता बड योगी॥

जब उसका कोई आकार ही नहीं है तो उसकी मूर्त्ति कैसे बन सकती है? और जब मूर्त्ति ही नहीं बन सकती तो मूर्त्तिपूजा का प्रश्न ही नहीं पैदा होता—यही सनातन आर्य धम का मूल सिद्धान्त है।

दिनाक १० मार्च को, शुकताल (मुजफ्फरनगर) म रामकथा का वाचन करते हुए श्री मुरारी बापू ने ऋषिवर देवदयानन्द के विरुद्ध यह कहकर—'महर्षि दयानन्द ने सनातनी सिद्धान्त मूर्त्तिपूजा का खण्डन बचपन मे अपरिपक्व बुद्धि की अवस्था मे किया था मगर बुद्धिपरिपक्व हो जाने पर वे स्वय छिपकर चोरी से मूर्त्तिपूजा किया करते थे—' बहुत ही अशोभनीय एव मिथ्या लाछन है जो उनके सूर्य के समान उज्ज्वल चरित्र पर धूल फेंकने के समान है। ऋषिवर्य ने पूर्ण ज्ञान और परिपक्व बुद्धि की अवस्था मे ही वेद शास्त्रों का अध्ययन एव अपनी विमल बुद्धि द्वारा मनन, चिन्तन एवं तर्क के आधार पर पूर्णतया सन्तुष्ट होकर ही मूर्त्तिपूजा के खण्डन मे अपनी दृढ़ आवाज बुलन्द की थी। यह कहना—'कि वे परिपक्व अवस्था मे छिपकर चोरी छिपे मूर्त्तिपूजा किया करते थे—' सत्य से कोसो दूर मिथ्या प्रलाप मात्र है। उन्हे किससे छिपना छिपाना था, वे तो एक निर्भीक सन्यासी थे किसी से नहीं डरे—इतिहास साक्षी है। अगर उनके हृदय मे किसी का भय था तो वह ईश्वर का था।

यह एक सच्चाई का खुला हुआ पृष्ठ है कि यदि वे किसी बात के कट्टरतम विरोधी रहे—तो वह थी जड पूजा मूर्त्तिपूजा। वे इसे अवैदिक ही नहीं आर्य जाति को रसातल पहुचाने वाली एक भयानक कुप्रथा मानते थे। उनका ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ इसी विषय पर हुआ था जिसमे काशी के दिग्गज पण्डितो को मुहकी खानी पड़ी थी। आर्य समाज सदा इस विषय पर शास्त्रार्थ के लिए तैयार है। कोई भी जहा चाहे, इस विषय पर सत्यासत्य का निणय कर सकता है। ऐसा लगता है कि श्री मुरारी बापू ऋषि दयानन्द के प्रति अत्यन्त ईर्ष्यालु भावना रखते हैं। हम उन्हे सचेत करना चाहते ह कि वे इस प्रकार अनर्गल आरोप लगाकर जनता को भ्रमित करने की चेष्टा न करें। आयसमाज का मच सत्यासत्य के लिए सदा खुला हुआ है। आर्यसमाज का सिद्धान्त है—

'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भू याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य
समाभ्य ॥ —यजुर्वेद

वह प्रभु (अकाय) (अव्रण) बिना काया के है, नस नाड़ियो आस्रवम आदि से रहित है। (शुद्ध) (अपापविद्धम्) पवित्र और पापरहित है। (स्वयम्भू) अपनी सत्ता से स्वय विराजमान ह—उसी की उपासना करनी योग्य है—यही उनका सन्देश था और यही आर्य समाज का नियम है। हमारा यह निश्चित मत है कि जडपूजा मे बुद्धि लगाने से बुद्धि जडवत बनी है कुछ भी हासिल न हुआ है न होने का। अत प्रत्यक आय प्रात सायम निराकार चेतन शुद्धस्वरूप परब्रह्म परमात्मा की ही उपासन करता है। मूर्त्ति की कभी नहीं कभी नहीं ।

★

चित्र भेजने की तिथि बढ़ा दी गयी

ऐसा ज्ञात हुआ है कि जिला सभाओ ने अपने जिले की आर्य समाजों को अभी तक वार्षिक चित्र नहीं भेजे हैं, अत सभा कार्यालय मे चित्र भर कर भेजने की तिथि ३०-४ ८८ तक बढ़ाई जाती है।

समस्त जिला सभा के मन्त्री महोदयो से अनुरोध है कि जिन्होने अभी तक समाजो को चित्र न भेजे हो, शीघ्र भेजने की कृपा करें। तथा जिन समाजो को अभीतक न मिले हो शीघ्र सभा को लिखें जिससे कि शीघ्र भेजे जा सकें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

अध्यात्म सुधा

वेदों में कहीं भी सती प्रथा नहीं है

[श्री प० इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश]

पुरी महादेव मे महारुद्र यज्ञ के अवसर पर पुरी के पीठाधीश्वर शकराचार्य श्रीयुत् निरजनदेव तीर्थ एव श्रीमाधवाश्रम शुकदेव जी महाराज के वक्तव्य पढ़ने पर बड़ा खेद हुआ कि जब आज हिन्दू पजाब मे मारा जा रहा है। देश के पूर्वाञ्चल प्रदेश मे हिन्दू भारी सख्या मे धर्म परिवर्तन कर चुका है। मीनाक्षीपुरम और रामनाथपुरम मे बड पैमाने पर धर्म परिवतन का षडयन्त्र किया गया। दारजीलिंग मे गोरखालण्ड को लेकर भयकर हिंसा हो रही है। जब भारत को अमेरिका के इशारे पर पाकिस्तान को फौजो ने घेर रखा है। एक तरफ चीन भारत का समाप्त करने का षडयन्त्र कर रहा है। भारत के अन्दर ईसाई पादरी बड़े सक्रिय हैं तथा पाकिस्तान की ओर से भारत के इस्लामीकरण के षडयन्त्र चल रहे हैं। अमरिका भारत को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे देश भर से आए हुए २०० माने हुए विद्वान सती प्रथा का प्रच्छन्न रूप से समर्थन, बाल विवाह का समर्थन और आर्यसमाज की वेद सम्बन्धी मान्यताओ पर आक्रमण जैसी बातो का प्रदर्शन करके हिन्दू संगठन मे विघटन की स्थिति पैदा कर रहे है। छुआ छूत ऊंच-नीच की भावना, जातिपाति आदि के आधार पर घृणा के प्रदर्शन के विरुद्ध महारुद्र यज्ञ मे विचार करके हिन्दू जाति को समानता, सद्भावना, सगठन और प्रेम का एक सन्देश और आदेश देना चाहिए था वहा हिन्दू जाति के प्रहरी आर्यसमाज को ही एक विशेष केन्द्र बिन्दु बनाकर उसकी मान्यताओ को झुठलाने का प्रयास करना हिन्दू जाति की हत्या करना जैसा है। हर निष्पक्ष हिन्दू इस बात को स्वीकार करता है कि यदि स्वामी दयानन्द न होते तो आज यज्ञ पवीत और चोटी भी दिखलाई न देती और भारत कुछ और ही होता।

स्वामी दयानन्द जी ने चार वेद माने हैं जो कि प्राचीन काल से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से सर्वसम्मत एव निर्विवाद रूप से माने गए हैं परन्तु वेदो को सख्या ११३१ बताना कितना हास्यास्पद है। शास्त्रों मे तो 'अनन्ता वै वेदा' 'वेद अनन्त हैं' लिखा मिलता है। इसका क्या अर्थ करेंगे ? क्या ११३१ वेदो को गिना सकेंगे ? वेदो के व्याख्यान ग्रन्थो को वेद मानना कितना विचित्र है। इस विषय मे पहले बहुत शास्त्रार्थ हो चुके हैं और वेदो का विषय निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि वेद चार हैं। इन चारो वेदो मे स्त्री के सती होने की बात कहीं भी नहीं लिखी है। है। इस विषय मे शास्त्रार्थ का चैलेंज करना हिन्दुओ मे एक तनाव और विघटन पैदा करना है। यदि कोई मन्त्र सती होने की बात कहता हुआ किसी विद्वान् को दृष्टिगोचर हो तो उसका समाचार पत्रो के माध्यम से उल्लेख कीजिए। उसका उत्तर दिया जाएगा और जनता जनार्दन के रूप में अपने आप समझ जाएगी कि सत्य क्या है ? सती होकर जलना या जलाना अमानवीय वेद विरुद्ध और धर्म विरुद्ध है। जिस ऋग्वेद मे माधवाश्रम जी सती प्रथा के समर्थन की बात कहते हैं उसको उद्धृत करना उपयुक्त होगा। मन्त्र निम्नलिखित है-

इमा नारीर विधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संविशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥
(ऋग्वेद १०-१८-७)

इस मन्त्र का अर्थ सायणाचार्य के अनुसार निम्नलिखित है-

जीवद्भर्तृका शोभनपतिका इमा नार्य सर्वतोऽञ्जनसाधनेन घृतेन अक्तनेत्रा सत्य स्वगृहान् प्रविशन्तु। अश्रवत्य मानसदुःख वर्जिता शोभन धन सहिता जनयन्त्यपत्य भार्या। ता सर्वेभ्यो प्रथमत एव गृह आगच्छन्तु।" अर्थात्-जीवित पति वाली सधवा सुपत्निया सभी प्रकार की स्त्रियोचित अञ्जन आदि प्रसाधनो से अलंकृत होकर अपने घरो मे प्रवेश करें। वे मानस दुःखो से रहित हो, अश्रुपात न करें, सुन्दर धनो से युक्त होकर सुसन्तान उत्पन्न करें तथा सबसे पहले ही अपने घरो मे आए।

इस मन्त्र को शकराचार्य जी सती प्रथा के समर्थन मे प्रस्तुत करते हैं। सायणाचार्य के इस प्रामाणिक भाष्य मे विधवा की तो चर्चा ही नहीं है। इस मन्त्र में पद है 'अविधवा' (नारी+अविधवा =नारीर-विधवा) आश्चर्य है कि इतना स्पष्ट मन्त्र होते हुए और आचार्य सायण का उक्त अर्थ होते हुए भी मध्यकालीन पण्डितों और शकराचार्य जी ने इस मन्त्र का अर्थ 'विधवा स्त्री के लिए अग्नि मे जल जाना' कैसे किया। कुछ लोगो का यह कहना है कि मन्त्र के अन्तिम पद मे अग्रे के स्थान पर अग्ने शब्द है। इन फेर बदल से भी 'अग्ने' का अर्थ सस्कृत व्याकरण के अनुसार-'हे अग्नि' होगा। अग्नि मे जलना कदापि नहीं हो सकता। अग्नि शब्द का सप्तमी विभक्ति में 'अग्नौ' रूप बनता है 'अग्ने' नहीं।

वैदिक धर्म मे जैसे स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म है वैसे ही समान रूप से पुरुषो के लिए पत्नीव्रत धर्म है। इसमे मर्यादा पुरुषोत्तम राम का विमल चरित्र साक्षी है। क्या वेदो में पुरुष के सती होने का भी विधान है ? क्या वेद शास्त्रो मे ऐसा लिखा हुआ है कि पति जो चाहे करे परन्तु स्त्री को नहीं करना चाहिये। व्रत की बात तो दोनो के लिए एक समान है। इसलिए केवल स्त्री का वेद शास्त्रो से सती होने का समर्थन धर्म विरुद्ध, न्याय विरुद्ध, बुद्धि विरुद्ध अमानवीय और पूर्णतया पक्षपात पूर्ण है।

इस युग मे शकराचार्य जी का बाल-विवाह को ठीक बताना भी अस्वाभाविक आयुर्वेद के विरुद्ध अनुचित, वेद विरुद्ध और हिन्दू धर्म के पतन का बहुत बड़ा कारण है। मैं बड़े विश्वास से कह सकता हू कि ऋग्वेद के किसी मन्त्र मे सती होने का विधान नहीं है। यह तो जगद् गुरु जी भी जानते हैं कि चारो वेदो में सती प्रथा को कोई स्थान नहीं है। इस कमजोरी को बचाने के लिए वे वेदो ११३१ सख्या पर आ जाते हैं। यह बड़ा दुःखद है।

यह समय इन बातो का नहीं है यदि हम इन्हीं बातो मे उलझे रहे तो विदेशी षडयन्त्र के हम शिकार हो जायेंगे। इस समय सारी शक्ति इस बात पर लगाना चाहिए कि ऐसी छोटी सी समान सहिता बनाई जाए जिस पर हिन्दू मात्र चले परस्पर प्रेम करें तथा हिन्दुओ की रक्षा हो। इस समय हिन्दू का अस्तित्व खतरे मे है। इसको किसी प्रकार से बचाना आवश्यक है।

आर्यसमाज हिन्दू-मुसलमान-ईसाई के लिए समान कानून का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

अपना-अपना स्वभाव

[आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर एम० ए०]
[डी० २९, रसानिवास, दयानन्दनगर, गाजियाबाद, उ०प्र०]

महाकवि जयदेव तीर्थयात्रा पर थे। कुछ डाकुओं ने उन्हे घेर कर धन लूट लिया और उन्हें एक जल रहित कुएं में डाल दिया। जयदेव कुएं में पड़े-पड़े संकीर्तन करने लगे। गौड़ेश्वर राजा लक्ष्मणसेन अपने राज कर्मचारियो के साथ उधर से गुजर रहे थे। उनके कानों में संकीर्तन के शब्द पड़े, तो उन्होने कौतूहल-वश कुएं में झांककर देखा; तो कोई आदमी दिखाई पड़ा। उनके आदेश से सेवकों ने कुएं में गिरे हुये आदमी को बाहर निकाला। कुएं में गिरा हुआ आदमी महाकवि जयदेव हैं, यह जानकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। राजा लक्ष्मणसेन उन्हें सम्मान सहित राजमहल में ले आये और विद्वत् सभा का प्रधान बना दिया। इसी बीच में राजा ने अनेक बार प्रयास किया कि लुटेरे कौन हैं ?, किन्तु महाकवि ने इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी।

राज-महल में महोत्सव था। बहुत से इष्ट-मित्र जन उस महोत्सव मे पधारे। महाकवि को लूटने वाले लुटेरे भी साधुवेश में आये। महाकवि ने उन्हें पहिचान लिया। पहिचाने जाने के कारण साधुवेश में लुटेरे भयभीत थे। महाकवि ने राजा से कहा–"राजन् ! ये मेरे मित्र हैं। आप इन्हें खुलकर दान दीजिये।" राजा ने भी महाकवि का मित्र समझ कर खूब स्वागत किया और धन दिया। राजा ने विदाई के समय उन लोगों के साथ कुछ सेवकों को भेज दिया, ताकि मार्ग में इन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो। जब काफी रास्ता तय कर चुके, तब एक सेवक ने पूछा–'महात्मन् !, आपका महाकवि जयदेव जी के साथ क्या सम्बन्ध है।' उनमें से एक ने कहा–हम दोनों किसी राज्य में साथ-साथ काम करते थे। जयदेव ने एक भयंकर अपराध किया, जिसके कारण राजा ने इसके वध का मुझे आदेश दिया। मेरी जयदेव के साथ मित्रता थी, इसलिये मैने जंगल में ले जाकर इसे छोड़ दिया और कहा कि तुम इस राज्य से बहुत दूर चले जाओ, ताकि तुम्हारे बारे में राजा को कुछ पता न लगे। मैंने जयदेव को पहिचान लिया, इसीलिये वह डर गया कि मै कहीं राजा लक्ष्मणसेन के आगे इसके कारनामे जाहिर न कर दूं, इस कारण उसने राजा–द्वारा सत्कार करवाया।' कर्मचारी ने आकर राजा और जयदेव से ज्यों की त्यों बातें सुना दीं।

राजा लक्ष्मण सेन को महाकवि जयदेव के पावन चरित्र पर विश्वास था। उन्होने आश्चर्य के साथ कहा-'महाकवि ! यह सब मुझे सरासर झूठ लग रहा है।'

'राजन् ! आपका अनुमान बिलकुल सही है। ये वही लोग थे, जिन्होंने मुझे लूटकर कुएं मे डाल दिया था। मैंने इन्हें पहिचान लिया था, किन्तु यह सब सोचकर मै चुप रहा कि रहस्य खोलने पर आप इन्हे दण्डित करेंगे। मैं नहीं चाहता था कि मेरे कारण किसी को दुःख मिले। ये बेचारे गरीबी के कारण लुटेरे बन गये हैं, यही विचार कर मैने आपसे काफी धन दिलवा दिया, ताकि गरीबी के जीवन से मुक्त होकर आराम से जीवन बिता सकें।'

बाल सूर्योदय

[प्रो० उत्तमचन्द्र 'शरर' पानीपत]

सारी रात के शासन के पश्चात् प्रातःकाल से कुछ पूर्व, अन्धेरे ने कहा–'मेरा राज्य कितना विस्तृत तथा शान्त है।'

कुछ ही देर में आकाश में ऊषा का आंचल लहराया और धरती के एक कोने में लजाती और मुस्काती दुल्हन के समान, धूप–चुपचाप आकर बैठ गयी।

अंधेरे ने उसे देखा, तो उसकी भौंवें तन गयीं, तड़पकर बोला–'मेरी आज्ञा के बिना तुम यहाँ कैसे प्रविष्ट हो पाई ?

लजाते हुए धूप बोली 'दादा ! मैं तो एक कोने में बैठी हूं और आपकी छत्रछाया के लिए धन्यवाद करती हूं।'

अन्धकार का क्रोध भभक पड़ा–'यहां से तुम तत्काल निकल जाओ!

'मेरे साम्राज्य में विघ्न डालने का तुम्हारा कोई अधिकार नहीं।'

धरती के कोलाहल को सुन, आकाश की खिड़की खोलकर सूर्य ने नीचे झांका। सूर्य को देखते ही अन्धकार का रंग पीला पड़ गया और वह चुपचाप भाग खड़ा हुआ।

खिलखिलाते हुए धूप ने अपने हाथ फैलाकर कहा–'दादा जरा ठहरो, यह तो बाल सूर्य है, इससे क्या भय ?'

पीछे देखे बगैर अंधेरा बोला–'पगली तुम क्या जानो तेजस्वी का तेज आयु से नहीं मापा जाता।'

स्वभाव का परिवर्तन मुश्किल कार्य है। सन्त सज्जनता के कारण बुरे आदमी की भी भलाई चाहता है और दुर्जन दुर्जनता के कारण सज्जन की भलाई का मूल्यांकन गलत रूप में करता है। ठीक ही तो है, कण्टक चुभन ही दे सकता है, सुमन को सुगन्ध नहीं दे सकता और फूल मसला जाकर भी खुशबू देता है।

बहुत मुश्किल जगत में है बदलना आदतें नर की।
जलाती किसको ना अग्नि भले वो हो स्वयं घर की।
करे इंसान कितनी भी हजारों कोशिशें हर पल–
मगर शैतान की आदत बदलती है नहीं जल्दी॥

वानप्रस्थ दीक्षा

आर्यसमाज उन्नाव के वयोवृद्ध सभासद् श्री अशोकेसिंह आर्य ने दिनांक २०–३–८८ को श्री वरुणमित्र शास्त्री के पौरोहित्य में वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा प्राप्ति के पश्चात् उनका नाम 'आनन्द वानप्रस्थी' रखा गया। इस अवसर पर आर्यसमाज उन्नाव के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। सभी ने श्री आनन्द जी वानप्रस्थी के शतायु होने व स्वस्थ जीवन की कामना की।

मन्त्री
आर्य समाज, उन्नाव

शरीअत ने महिला को वैधानिक समानता से वंचित रखा है।

एक ज्वलन्त उदाहरण

(अमरेश आर्य, अब्दुल उलमा) आ० प्र० स०
आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद।

पाकिस्तान के एक न्यायालय ने शाहिदा परवीन नामी महिला को 'संगसार' (पत्थरो से आहत कर प्राण लेना) के द्वारा मृत्यु दण्ड देने के आदेश की घोषणा की है। इस प्रकरण ने समूचे पाकिस्तान मे हलचल मचा दी है।

१९७९ ई० मे संवैधानिक रूप से पाकिस्तान एक इस्लामी गणतन्त्र राष्ट्र घोषित किया गया है। राष्ट्रपति जियाउल हक के अध्यादेश द्वारा यह प्रचलन मे आया इस प्रकार पाकिस्तान मे इस्लामी शरीअत ने राज्य नियम का रूप धारण किया। समस्त राष्ट्रो के मुसलमान तथा भारतीय मुसलमानो ने इस उपलक्ष्य मे अत्यन्त हर्ष एव आनन्द की अभिव्यक्ति की है। उत्सव तथा बड़े–बड़े समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किये गये, किन्तु उसी शरीअत ने न्याय के उज्ज्वल मुख पर एक निन्दनीय कालिमा लगाई है।

पच्चीस वर्षीय शाहिदा, परवीन अपने पती के साथ वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही थी। इस अवधि मे किसी साधारण घटना पर उसका पति उस पर कुपित हुआ। बिना सोचे समझे अदुरदर्शितापूर्ण ढग से निरपराध शाहिदा से वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) किया।

सामान्य प्रथा के अनुसार यह 'तलाक' भी मौखिक रूप से दी गयी। इस प्रकार उसके पतिने उसे परित्याग कर अपने घर से निष्कासित कर दिया। विवश होकर वह उस घर से चली गयीं और पृथक रहने लगीं। दीर्घकाल के अनन्तर दूसरा व्यक्ति स्वेच्छा से उससे विवाह करने के लिए उद्यत हुआ। शरीअत के अनुसार उन दोनो का विवाह सम्पन्न हुआ और प्रसन्नता के साथ जीवन व्यतीत करने लगे। इसी अवधि मे उसे एक सुन्दर पुत्र–रत्न हुआ।

) अकस्मात् शाहिदा के पूर्व पति को पुनश्च उसे अपने सदन मे लाने के लिये उत्कट इच्छा हुई। उसने न्याय मन्दिर का आश्रय लेकर अनुरोध पूर्वक न्यायाधीश के समक्ष यह निवेदन प्रस्तुत किया कि उसने कदापि शाहिदा को तलाक नह दिया है ' अत शाहिदा को अपने वैवाहिक जीवन मे प्रवेशानुमति दी जाये। अदालत ने उसके वक्तव्य को सत्य माना तथा शाहिदा के साथ द्वितीय पति के वैवाहिक जीवन को व्यभिचार का निर्णय दिया और अति अमानुषिक 'संगसार' का दण्ड देकर उसके प्राण हरण करने का क्रूरतम आदेश दिया। "विवाहित प्राणी चाहे पुरुष हो या स्त्री, उससे व्यभिचार कृत्य करने पर शरीअत का यही दण्ड विधान है। इसे इस्लामी शरीअत मे 'हद्द' कहा जाता है।

शरीअत के इस कानून के अन्तर्गत समाहित अन्याय का अनुमान इस कथन से किया जा सकता है कि जिस शरीअत के आधार पर न्यायालय ने शाहिदा को व्यभिचार के आरोप मे मृत्यु दण्ड का निर्णय दिया है। उसी शरीअत के आधार पर उसी न्यायालय ने शाहिदा के के साथ लैंगिक सम्बन्ध स्थापित किए हुवे दोनो पुरुषो को निरपराध घोषित करते हुए व्यभिचार दण्ड से उन्हे विमुक्त कर दिया। इसके समर्थन मे यह प्रमाण प्रस्तुत करते हुए न्यायालय ने इस प्रकार प्रकाश डाला कि उसके प्रथम पति के द्वारा दिए गए अभियोग को सत्य मान लिए जाने से वह कानून निरपराधी है। और द्वितीय वर का विवाह शरीअत के अनुसार होने के कारण वह निरपराधी माना गया है।

लैंगिक सम्बन्ध चाहे वैधानिक हो, चाहे अवैधानिककेवल एक स्त्री अकेली नहीं कर सकती। स्वाभाविक लैंगिक वासना की पूर्तिके लिये स्त्री और पुरुष दोनों की आवश्यकता होती है। शाहिदा का लैंगिक सम्बन्ध द्वितीय पति से स्थापित करना न्याय दृष्टि मे यदि व्यभिचार है, तो उसकी भांति उससे लैंगिक सम्बन्ध रखने वाला द्वितीय पुरुष भी अपराधी ही नहीं वरन महापराधी है। आश्चर्य की बात है कि शरीअत मे शाहिदा को व्यभिचारिणी सिद्ध किया है, किन्तु उसके साथ लैंगिक सम्बन्ध रखने वाले दोनो पुरुषो को व्यभिचार से निर्लिप्त होने का निर्णय दिया है। शरीअत की न्याय–रचना की कितनी लज्जास्पद है।

पाकिस्तान के महिला सगठन ने शरीअत के स्त्री घातक न्याय–विधान को जीर्ण-शीर्णकर कूड़े कचरे की पेटीमे फेंक देने के लायक समझकर इसके विरोध मे घोर विप्लव मचाने की सुसगठित रूप से योजना बनाई है इस प्रकार की घटनायें यह सिद्ध कर रहीं हैं कि इस्लामी शरीयत के विधि विधान का बहुमूल्य भाग इस युग के लिए अयोग्य है। भारत मे इस्लामी राज के स्वप्न द्रष्टाओ को इससे सचेत होना चाहिये ! ! !

श्रद्धाञ्जलि समर्पणम्

["आर्य जगत का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इधर उसके दो विद्वद्वरेण्य ऋषि भक्त, वेदो के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य श्री वीरसेन जी "वेदश्रमी" एव आचार्य श्री विश्वबन्धु शास्त्री, हमे सूना करके स्वर्गीय विश्राम स्थल", को प्रयाण कर गये। इन दोनों की विद्वत्ता एव पाण्डित्यपूर्ण लेखनशैली की अमिट छाप 'आर्य मित्र' के स्मृति पटल पर सदा–सदा के लिए अंकित है। आचार्य विश्वबन्धु की पुण्यस्मृति मे श्रद्धाञ्जलि समर्पित गीतिका की कुछ पंक्तियां पढ़िये—]

सम्पादक

प्रसन्नवदनो श्रीमान सदाचारी जितेन्द्रिय. ।
आचार्यो विश्वबन्धुर्वै वेद विद्याप्रचारक. ।। १ ।।
विहायाखिल सम्बन्धान् स्नेहभावमयानिह ।
भवपाश विनिर्मुक्तो देहमुक्तिमवाप ह ।। २ ।।
वेदार्थ कुशल सौम्य · शास्त्रज्ञान विचक्षण ।।
नास्ति तस्य यश.काये जरामरणजं भयम् ।। ३ ।।
मृदु भाषी सुशीलश्च सद्व्यवहारमय स: ।
यशस्वी साधुभिर्मान्य. स्वकर्तव्य परायण . ।।४।।
जयतां वन्दनीय : स: कर्मयोगी समाहित : ।
सर्वबन्धु : धर्मप्रियो वैदिका चार सयुत : ।।५।।
जयतु भुवन श्रेष्ठः सत्यधर्मानुयायी ।
श्रुतिमत पथगामी विश्वविद्वद्वरेण्य : ।।
नवनव गुणरागी लोक कल्याणकारी ।
सुकृती हितकारी पूजनीयो महात्मा ।।

सावित्री देवी शर्मा,बरेली ,

इतिहास और आस्थाओं के दयानन्द

(श्री स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी)

ईसा मसीह जी के सम्बन्ध में एक वाक्यांश प्रसिद्ध है—जीसस आफ हिस्ट्री एण्ड क्राइस्ट आफ फेथ जो बात ईसा के सम्बन्ध में कही गयी हैं, वही महात्मा बुद्ध, श्री कृष्ण आदि व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। भारतीय वाङ्मय के दो व्यक्तित्व बड़े लोक-प्रिय रहे हैं—राम और कृष्ण दो कवि प्रसिद्ध हैं—बाल्मीक और तुलसीदास।

दयानन्द की मृत्यु को हुए अभी १०५ वर्ष हुए हैं। इस बीच में धीरे-धीरे दयानन्द का व्यक्तित्व हमने विशुद्ध ऐतिहासिक ही नहीं, काफी आस्था का बना दिया है, इसमें कवियों, शायरों, भजनीकों और उपदेशकों का हाथ है, मैं कुछ उदाहरण दूंगा—पढ़ा था—'जिस समय दयानन्द अपनी माता के गर्भ में आये, और इसकी अनुभूति उनकी माँ को हुई, तो उन्हें स्पष्ट लगा कि कोई दिव्य आत्मा उनके गर्भ में आयी है। (ईसा- मूसा-कृष्ण की आख्यायिकाओं के समान)।

सबसे अधिक कल्पना का दयानन्द वह बना जिसके साथ योगकी विभूतियों का सम्बन्ध है। स्वामी दयानन्दने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में योग के विभूतिपाद वाले उन सूत्रों का कोई निर्देश नहीं, किया। जिनसे योगी की विभूतियां सिद्ध होती हैं—यह माना जाय।

बंगाल में ऋषि दयानन्द जब गये, उस समय की कुछ गप्पें पंडित दीनबन्धुशास्त्री द्वारा संकलित कुछ कतिपय सूचनाओं के आधार पर प्रचलित कर दी गयी हैं।

अभी वेदवाणी के 'दयानन्द विशेषांक' (५) में पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा लिखित एक समालोचना छपी है (जनवरी १९८८ का अङ्क) जिसमें उन्होंने श्री आदित्यपाल सिंह आर्य और डा० देवव्रत 'आलोक' की पुस्तक 'अपना-जन्मचरित्र' के विषय में अपने विचार विस्तार से दिये हैं। यह पुस्तक मैंने भी पढ़ी है, इस पर मैंने अपने कुछ विचार लेखक-द्वय को लिखकर भी दिये थे। इस पुस्तकमें दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में तीन स्रोतों का परिपाक किया है—उनके पूना-प्रवचन, उनकी थियोसोफिस्ट में छपी घटनायें, और पं० दीनबन्धु जी द्वारा संकलित सामग्री। स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती जी ने दीनबन्धु जी की इस सामग्री के आधार पर 'योगी की आत्म कथा' पुस्तक लिखी थी, जिसने काफी भ्रान्तियां फैलायीं।

मेरा ऋषि-प्रेमियों से आग्रह पूर्वक एक निवेदन है। शोध-विद्या से स्नेह रखते हुए श्री दयानन्द की जीवनी को इस प्रकार की आस्थाओं से बचाना चाहिए। मेरे इन दो युवक बन्धुओं ने जो अपना यह ग्रन्थ प्रकाशित किया है, वह उसी प्रकार का है, मानों किसी ने मूल महाभारत के कृष्ण को श्रीमद्भागवत के कृष्ण के साथ, और फिर राधा और कृष्ण के परकीया भाव वाले कृष्ण के साथ जोड़ा हो। इस पुस्तक की मैं यहाँ समालोचना नहीं करना चाहता। मुझे केवल यह आशंका है, कि श्रद्धालु विद्वानों के ऐसे प्रयासों से दयानन्द का ऐतिहासिक चरित्र विलुप्त न हो जावे, और केवल आस्थाओं वाला दयानन्द हमारे समक्ष रह जावे।

दयानन्द अद्भुत मानव व्यक्ति था। उसका कोई भी विचार ऐसा नहीं था, कि वह जिस संस्था को जन्म दे रहा है, वह संस्था उसके व्यक्तित्व के प्रति उसी प्रकार के नारे लगावे, जैसे नारे हम अपने देश की हिन्दू परम्परा में अन्य महापुरुषों के नाम पर लगाते आ रहे हैं। अगर आज वह हमारे आर्य समाज के अधिवेशनों, जलूसों, और उत्सवों को देखता जिनमें 'दयानन्द की जय' बोली जाती है, तो निश्चय है, कि वह हमारी भर्त्सना या ताड़ना करता।

वेद—कथा

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी की वेद कथा आर्य समाज मन्दिर प्रहलाद नगर में दि० २१/३/८८ से ३१/३/८८ तक स्वामी दयानन्द जी के कार्यवश बाहर चले जाने के कारण हुई। प्रातः ८ से ८॥ तथा रात्रि ८॥ से ९॥ बजे तक सभा प्रधान जी ने अपने प्रवचनों में ईश्वर का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के उपायों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपने विचार प्रकट किए। उनके प्रवचनों से स्थानीय जनता ने लाभ उठाया। समयाभाव के कारण जनता की इस मांग को वे पूरा न कर सके कि प्रवचनों का क्रम कम से कम एक सप्ताह के लिए और हो।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३० अप्रैल ८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित किया जा सके।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

निर्वाचन

आ० स० शास्त्री नगर (मेरठ)
प्रधान श्री वेद प्रकाश जी
मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार जी
कोषा० श्री अखिल कुमार जी

आर्य समाज बगहा
प्रधान श्री चेतन सिंह
मन्त्री श्री बसन्त सिंह
कोषा० श्री ज्वालाप्रसाद सिंह

आ० स० हांसीपुर
प्रधान श्री रामकिशोर सिंह
मन्त्री श्री यज्ञदेव, वानप्रस्थी
कोषा० श्री रामलाल सिंह

आ० स० बागेसोती
प्रधान श्री किशोरी प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री मगन प्रसाद आर्य
कोषा० श्री राम अधार

आर्य समाज रेणुकूट
प्रधान श्री बलधारी सिंह
मन्त्री श्री गिरधर लाल
कोषा० श्री राजाराम सिंह

आ० स० मकंहरा
प्रधान श्री राजाराम सिंह
मन्त्री श्री श्यामधनी सिंह
कोषा० श्री विजय नारायण सिंह

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम विषयक कतिपय निर्णय प्रकाशित किये जा रहे हैं। यह निर्णय उत्तरप्रदेशस्थ आर्यसमाजों के समस्त सदस्यों / सभासदों एवं आर्य जनता पर तात्कालिक प्रभाव से लागू माने जायेंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

★ ★ ★

आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम विषयक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित उपसमिति की कई बैठकों के पश्चात् समिति के संयोजक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने जो रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को प्रस्तुत की थी, उस पर १९ सितम्बर १९८७ को सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्यों, प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मन्त्रियों तथा समिति के संयोजक तथा सदस्यों एवं अन्य विद्वानों के सम्मेलन में विचारार्थ रखा गया और सम्मेलन द्वारा स्वीकृत निर्णयों पर सार्वदेशिक सभा की २० सितम्बर ८७ की बैठक मे विचार करके भावी कार्यक्रम समिति के केवल चार बिन्दुओं पर अन्तरङ्ग सभा ने अपना निर्णय निम्न प्रकार दिया–

बिन्दु (क) आर्यसमाज के किसी भी सदस्य व अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दों का अपने नाम के आगे प्रयोग न करने के प्रस्ताव पर निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक सभा पहले से ही इस विषय में उचित प्रेरणा करती रही है।

बिन्दु (ख) आर्यसमाज में सदस्यों की दो श्रेणियां होती हैं। सभासद् तथा आर्य सभासद्। साधारण सभासदो को उपरोक्त सिद्धान्त सम्बन्धी नियमों के अन्तर्गत प्रवेश दिया जाय। आर्य सभासद् बन जाने के उपरान्त वे समाज द्वारा सचालित कार्यक्रमों मे से किसी एक या अधिक मे नियमित रूप से कार्य करते रहने पर 'सक्रिय सदस्य' समझे जायेंगे।

इस बिन्दु पर गम्भीरता से विचार–विमर्श के उपरान्त निश्चय हुआ कि आर्यसमाज के नियम सशक्त और सार्वभौम हैं। शब्दों की व्याख्या का प्रश्न नहीं है, बल्कि उन्हें जीवन में धारण करने और आचरण करने की बात आवश्यक है। इसलिए आर्यसमाज के नियमों में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करने वालों को ही २ वर्ष पश्चात् आर्य सभासद् घोषित किया जाय और उस समय उनसे एक शपथ पत्र भरवाया जाय जिसका प्रारूप निम्न प्रकार हो–

प्रतिज्ञा पत्र (आर्य सभासद)

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति पूजा या जड़ वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूंगा ना हो मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा। तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नहीं मानूंगा। अर्थात्–वेद विरुद्ध आचरण नहीं करूंगा। मै जन्मगत जाति पाति वा छुआ-छूत को नहीं मानूंगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी नहीं बनूंगा। तथा आर्यसमाज के नियमोपनियमों में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करूंगा।

यदि मैं इसके विपरीत आचरण करूं तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे। ह० आर्य सभासद्

(नोट–प्रतिज्ञापत्र का यह प्रारूप आर्यसमाज के प्रवेशपत्र (फार्म) के दूसरी ओर मुद्रित किया जावे अथवा अलग से प्रकाशित करा लिए जावें।)

३–बिन्दु (ग) आर्यसमाज के पदाधिकारी सक्रिय सदस्यों से ही निर्वाचित हो सकेंगे।
निश्चय हुआ कि सक्रिय सदस्यता का कोई औचित्य नहीं है, आर्य सभासद् बनते समय प्रतिज्ञापत्र द्वारा इसकी पूर्ति हो जाती है।

४–बिन्दु (घ) किसी राजनैतिक दल का पदाधिकारी तथा उसका सांसद् या विधान सभा में निर्वाचित व्यक्ति आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी नहीं हो सकेगा।

इस विषय पर गम्भीरता से विचारान्तर निम्न निर्णय हुआ–

"आर्यसमाज के किसी भी सदस्य को जो किसी राजनैतिक पार्टी का निर्वाचित प्रतिनिधि अथवा पदाधिकारी हो तो आर्यसमाज का पदाधिकारी बनने पर यदि वह राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज अथवा सम्बन्धित संस्था को प्रभावित करना चाहता हो, या कर रहा हो तो ऐसे पदाधिकारी को पद से अन्तरङ्ग सभा द्वारा पृथक कर दिया जावे।"

★

वेदों में कहीं भी सती प्रथा नहीं है

(पृष्ठ ३ का शेष)

समर्थक है। इसमें परिवार नियोजन भी अपने आप ही आ जाता है। परिवार नियोजन केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं अपितु सबके लिए अनिवार्य होना बहुत आवश्यक है। विदेशों की ओर से भारत को तोड़ने का भरपूर प्रयत्न चल रहा है। बाहर से नशे की गोलियों का युवा पीढ़ी में खुलकर प्रयोग, मद्यपान एवं मांसाहार का प्रचार, गो हत्या, अश्लील साहित्य, जूए का राज्य की लाट्रियो के रूप में बहुतायत से प्रचलन, सनेमा जगत में नग्नता, हत्या, हिंसा और बलात्कार का प्रदर्शन, दहेज हत्याएं और दहेज आत्महत्यायें इस समय हिन्दू धर्म और भारत के पतन का कारण है। महायज्ञ यज्ञ में इन्हीं विषयो पर गम्भीर विचार होना चाहिए था परन्तु इस तरफ ध्यान न होकर हिन्दू विघटन का अनायास ही प्रयास हो रहा है।

अतः आर्यसमाज मेरठ शहर का अनुरोध है कि आपस में टकरा कर शक्ति नष्ट न करें अपितु भारत को ईसाईकरण और इस्लामीकरण एवं नास्तिकता से बचाने के उपायो पर विचार करें। इसमें आर्यसमाज भी हृदय से सहयोग करने का प्रयास करेगा। यदि इन सामयिक बातो की उपेक्षा की गई तो न हिन्दू रहेगा और कोई गुरु और न ही कोई जगद्गुरु।

★

वेदप्रचार समिति आलमबाग लखनऊ की ओर से ४ मार्च ८८ को होली के पावन पर्व पर शुभ कामनाएं तथा उक्त अवसर पर वितरित उपाधियां

१–श्री पं० इन्द्रराज जी–फहर-फहर फहरे जग में ओ३म् पताका मेरी
२–श्री हरिवंशलाल मेहता–हम वेद पढ़ें सुविचार गहें
३–,, विक्रमादित्य 'बसन्त'–वेद ही जीवन हमारा वेद प्राणाधार है
४–,, रूपचन्द्र 'दीपक'–ज्योति से ज्योति जलाये जा
५–,, रामचरित्र पाण्डेय–बताओ क्या बोलूं
६–,, मेधावी शास्त्री–फुर्सत कहां से लाऊं
७–,, वीरेन्द्र शास्त्री–योग: कर्मसु कौशलम्
८–,, सुधीन्द्र शास्त्री–एक तेरा ही सहारा
९–डा० वीरेन्द्र बहादुरसिंह–आसन, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान,समाधि
१०–श्री कुन्दनलाल वैद्य–जो सुनो हम वही सुनायें
११–,, इन्द्रदेव पाठक–एवमस्तु
१२–,, देवव्रत अवस्थी–कोई सुनने वाला तो हो
१३–,, मनमोहन तिवारी–हमने बाजी जीत ली
१४–,, यशपाल आर्य–सत्यमेव जयते
१५–,, कु० जयलदेव महाना–आप माने न माने खुशी आपकी
१६–,, अर्जुनदेव महाना–तत्व बोध
१७–,, सत्यदेव सैनी–कुछ करने की तमन्ना है
१८–,, विश्वम्भरदयाल गुप्त–सम्भल-सम्भल कर पग तुम धरना
१९–,, वासुदेव सहाय अग्रवाल–हम तो बूढ़े हो गये
२०–,, देसराज –ओ३म् ही ओ३म् पुकारेंगे
२१–,, गोविन्दराम खरबन्दा–झण्डा ऊंचा रहे हमारा
२२–,, सोमदत्त बाधवा–मुझे ओ३म् का सोम पिला दे पिता
२३–,, नरेन्द्रकुमार मलिक–चलो सत्संग जहां मिलता हो
२४–,, हंसराज नन्दा–ओ३म् नम: शिवाय
२५–,, ओम प्रकाश मलिक–गाये जा गीत मिलन के
२६–,, वेदपाल निझावन–मेरा तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई
२७–,, वेदप्रकाश डांगिया–स: शृणोति स: पश्यति
२८–,, मदन मोहन जोशी–जयति जयति जय व्योम बिहारी
२९–,, परमानन्द तलवाड़–शान्ति: शान्ति: शान्ति:
३०–,, तिलकनारायण तलवाड़–मै वेद पथ का राही हूं
३१–,, विजय जी–गलत कभी न होने दूंगा
३२–कैप्टेन सुखपाल सेन मेहता–दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे
३३–श्री आनन्दकुमार भण्डारी–भज ले मन रे ओ३म् नाम तू
३४–माताएं, बहनें, बेटियां एवं मेरी धर्मपत्नी जी–ओ३म् नाम को
पीकर जाय घूम मचा दें गली-गली

जल्दी-जल्दी में जो कुछ नाम स्मृति पटल पर आये, उनके अलावा जो नहीं याद आये सभी का अभिनन्दन।

सभी की याद समाये हमारे दिल मे,
सभी मौज बहार से गुजारें अपनी जिन्दगी।
सबकी खुशहाल जिन्दगी से,
खुशहाल हो मेरी भी जिन्दगी॥

सबका सेवक
देवव्रत अवस्थी
प्रधान
वेद प्रचार समिति आलमबाग क्षेत्र, लखनऊ

सत्यमेव जयते–

रिवीजन निरस्त

मैनपुरी–२१-३-८८। स्थानीय आर्यसमाज पर सत्यवीर (करहल) के द्वारा प्रशासक के रूप मे किये गये छलपूर्ण हस्तक्षेप के विरुद्ध, स्थानीय मुन्सिफ न्यायालय में संस्थित किये गये निषेधाज्ञा के वाद सं० ३/८४ में उस (सत्यवीर) के विरुद्ध हुये आदेश दि० ९-१-८६ के विरुद्ध उस (सत्यवीर) के द्वारा, स्थानीय जिला जज के न्यायालय में, संस्थित किया गया प्रकरण सिविल–रिवीजन सं० १५/८६ आज विद्वान न्यायाधीश के द्वारा व्यय सहित निरस्त (खारिज) कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि–

(१) सत्यवीर के द्वारा, उक्त वाद से सम्बन्धित, दो अन्य प्रकरण १–प्रकीर्ण अपील स० ६१/८४ तथा २–प्रकीर्ण सं० २४५/८४ भी उक्त जिला जज के न्यायालय में संस्थित किये गये थे। वे भी विद्वान न्यायाधीश द्वारा दि० १८-७-८७ को निरस्त किये जा चुके है।

(२) सत्यवीर ने अपने और अपने साथियों के अपराधों को छुपाने तथा ज्ञात होने की स्थिति में उनके दण्ड से अपने को दीर्घकाल तक बचाये रखकर उससे अवैध लाभ उठाते रहने के बुरे उद्देश्य से माननीय प्रधान जी, सभा–श्री प० इन्द्रराज जी व मन्त्री जी, सभा श्री मनमोहन जी तिवारी आदि अनेक आर्यजनों के विरुद्ध स्थानीय न्यायालयों में, दीवानी और फौजदारी के, अन्य अनेक प्रकरण–१–वाद सं० ७५४/८६ (मुन्सिफ) तथा २–केस न० ९९४/८५ (स्पे०जुडीशियल मजिस्ट्रेट), भी संस्थित कर रखे हैं। यद्यपि इन प्रकरणों (मुकदमों) में कोई भी बल नहीं तथापि ये इन (सत्यवीर आदि) के अपराधों के लिये कानूनी आड़ बने हुए हैं।

(३) सत्यवीर के झूठे मुकदमों की उन (सत्यवीर) की ओर से व्यवस्था, वकालत तथा पैरवी आदि करने वाले क्रमश: सरताज, धर्म मित्र तथा जगदीश आदि ने विगत ५-५ वर्षों में, इन मुकदमों के फर्जी खर्चे के नाम पर, उक्त आर्य समाज को उसके वृक्ष, मोटर, पंखा, फर्नीचर तथा प्राचीन साहित्य आदि बेचकर, हजारों रुपये की हानि पहुंचा करके स्वार्थ सिद्ध किये हैं।

उक्त जानकारी देते हुए मेरा आर्यजनों से विनम्र अनुरोध है कि वे आर्य संगठन के हित में, उक्त असामाजिक तत्वों व उनके गंग के नेता, जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० में अवैध हस्तक्षेप करने के उद्देश्य से, शासन और न्यायालयो में भटक रहे हैं, की कुचालों से सर्वथा सावधान रहते हुए, वेद, दयानन्द और आर्यसमाज के आदेशानुसार–"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहने" की कृपा करें तथा 'आर्यमित्र' की सूचनाओं के अनुसार कार्य करें।

आर्यसमाज मन्दिर रघुनन्दनसिंह शास्त्री
मैनपुरी संयोजक

सूचना

वर्ष, १९८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अत: वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना–अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को ३० अप्रैल, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के सम्मानित प्रधान/मन्त्री की सेवा मे आवश्यक अनुरोध

प्रदेश की जिन आर्योपसभाओं व आर्यसमाजों में, इस सभा द्वारा प्रेषित वार्षिक चित्र अभी तक न पहुंचे हों, उनके अधिकारियों से अनुरोध है कि वे उक्त चित्र, अपने जनपद के सम्मुख अंकित पते से, प्राप्त करके तथा उन्हें पूर्ण करके यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें–

१–आगरा श्री रोशनलाल, २९ विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा।
२–अलीगढ़ ,, विजयपालसिंह, छिड़ावली, अलीगढ़।
३–एटा ,, शिवदेव, नगला कोठी, मारहरा, एटा।
४–मैनपुरी ,, सूबेदार, आर्यसमाज बेवर, मैनपुरी।
५–मथुरा मन्त्री जी, आर्योपसभा, वेद मन्दिर, मथुरा।
६–इलाहाबाद ,, ,, , आ०स० रानीमंडी, इलाहाबाद
७–इटावा ,, ,, , ,, औरैया, इटावा।
८–कानपुर (नगर) श्री हरपालसिंह, २-ए/१७० आजादनगर, कानपुर।
९–कानपुर (देहात) ,, ,, ,, ,, ,,
१०–फर्रुखाबाद ,, सच्चिदानन्द, अंगूरी बाग, फर्रुखाबाद।
११–फतेहपुर ,, रूप किशोर, १–निबरहा, फतेहपुर।
१२–बरेली मन्त्री जी, आर्योपसभा, आर्यसमाज भूड़, बरेली।
१३–बदायूं ,, ,, ,, बदायूं।
१४–पीलीभीत ,, ,, ,, पीलीभीत।
१५–शाहजहांपुर श्री राजेन्द्र शर्मा, टाउनहाल रोड, शाहजहांपुर।
१६–गोण्डा " बलराम गोविन्द, आर्यसमाज गोण्डा।
१७–बहराइच मन्त्री जी, आर्योपसभा, आर्यसमाज बहराइच।
१८–प्रतापगढ़ ,, आर्यसमाज, प्रतापगढ़।
१९–फैजाबाद ,, आर्योपसभा, आर्यसमाज फैजाबाद।
२०–बाराबंकी ,, आर्यसमाज बाराबंकी।
२१–चमोली श्री जयनारायण 'अरुण' सिविल लाइन्स, बिजनौर।
२२–पौढ़ी ,, ,, ,, ,, ,,
२३–टेहरी मन्त्री जी, आर्यसमाज टेहरी।
२४–देहरादून ,, आर्योपसभा, आर्यसमाज देहरादून।
२५–उत्तर काशी ,, ,, ,, ,, ।
२६–आजमगढ़ ,, ,, आजमगढ़।
२७–बस्ती ,, ,, ,, बस्ती।
२८–देवरिया श्री कृष्ण धर्मालंकार, आर्यसमाज देवरिया।
२९–गोरखपुर ,, विनयप्रताप आर्यसमाज बख्शीपुर, गोरखपुर।
३०–बांदा मन्त्री जी, आर्यसमाज बांदा।
३१–हमीरपुर ,, ,, हमीरपुर।
३२–जालौन ,, ,, जालौन।
३३–झांसी ,, आर्योपसभा, आर्यसमाज नगरा, झांसी।
३४–ललितपुर ,, ,, ,, ,, ,, ।
३५–अल्मोड़ा ,, आर्यसमाज अल्मोड़ा।
३६–नैनीताल ,, आर्योपसभा आर्यसमाज नगर, नैनीताल।
३७–पिथौरागढ़ ,, ,, ,, ,,
३८–हरदोई ,, ,, ,, हरदोई।
३९–लखनऊ ,, ,, दयानन्द शिक्षा सदन, मोतीनगर, लखनऊ
४०–खीरी ,, ,, आर्यसमाज खीरी।
४१–रायबरेली ,, ,, ,, रायबरेली।
४२–सीतापुर ,, ,, ,, सीतापुर।
४३–उन्नाव ,, आर्योपसभा, आर्यसमाज, उन्नाव।
४४–बुलन्दशहर श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा, १३९-सुनारगली, बुलन्दशहर।
४५–मेरठ मन्त्री जी, आर्योपसभा, आ०स० बुढ़ानागेट, मेरठ।
४६–सहारनपुर ,, ,, ,, चालापार, सहारनपुर।
४७–मुजफ्फरनगर श्री अरविन्दकुमार, आर्यसमाज, मुजफ्फरनगर।
४८–गाजियाबाद मन्त्री जी, आर्योपसभा, आर्यसमाज गाजियाबाद।
४९–बिजनौर श्री जयनारायण 'अरुण' सिविल लाइन्स, बिजनौर।
५०–रामपुर ,, महेन्द्रप्रतापसिंह आर्यसमाज रहमतगंज, रामपुर।
५१–मुरादाबाद ,, हरिश्चन्द्र, आ०स० अमरोहा, मुरादाबाद।
५२–बलिया मन्त्री जी, आर्योपसभा, आ०स० खरसरा, बलिया।
५३–गाजीपुर ,, ,, ,, जम्बानियां, गाजीपुर।
५४–मिर्जापुर श्री देवनसिंह, बगहा (चुनार), मिर्जापुर।
५५–जौनपुर मन्त्री जी, आर्योपसभा, आर्यसमाज जौनपुर।
५६–वाराणसी ,, ,, आ०स० लल्लापुरा, वाराणसी।
५७–सुल्तानपुर ,, ,, ,, सुल्तानपुर।

कुं० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' मुख्य निरीक्षक, सभा से अनुरोध है कि वह कृपया उक्त चित्रों के उक्त आर्योपसभाओं तथा आर्यसमाजों तक पहुंचने की कार्यवाही को अपने स्तर से भी सुनिश्चित करने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृत, निश्चय सं० १४ (अ) दि० २६–२–७८, जिसके सम्बन्ध में 'आर्यमित्र' १६–४–७८ तथा २२–९–८५ में आवश्यक जानकारी प्रकाशित की जा चुकी है, के सम्बन्ध में पुन: स्मरण दिलाया जाता है कि उक्त निश्चय के अनुसार–"आर्यसमाजों के आन्तरिक विवाद, सभा से बाहर, न्यायालयों में नहीं जाने चाहिए। यदि सभा की इस आज्ञा की कोई अवहेलना करेगा तो उसे छ: वर्ष के लिए आर्यसमाज की सदस्यता से पृथक कर दिया जायेगा।"

अत: आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि वे सभा के उक्त निश्चय का पूर्ण रूप से आदर करें और यदि कोई विवाद न्यायालय में पहुंच गया हो तो उसे १ मास के भीतर वापस ले लें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

निर्वाचन संबन्धी भूल सुधार

दिनांक ३ अप्रैल १९८८ के 'आर्यमित्र' में पृष्ठ ५ पर, प्रबन्ध सम्पादक की त्रुटिवश जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का जो निर्वाचन प्रकाशित हुआ है, उसे निरस्त करते हुए, कृपया उसके स्थान पर निम्न निर्वाचन पढ़ने की कृपा करें–

आर्यसमाज गोरखपुर (बख्शीपुर) गोरखपुर
प्रधान–श्री अवधेश कुमार राय
मन्त्री–श्री रामनरेश गांधी
कोषाध्यक्ष–श्री वीरेन्द्रनाथ आर्य

सभा मन्त्री

गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवनधारा के प्राण हैं

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी (पलवल) के २१ वें वार्षिकोत्सव पर विशाल जनसभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा—गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवनधारा के प्राण हैं। यही हमारी संस्कृति और परम्पराओं को पुनर्जीवित रखने का आधार रहे हैं। स्वामी जी ने हरियाणा के मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल से अपील की कि उनकी सरकार गुरुकुलों और संस्कृत विद्यालयों को अधिक से अधिक अनुदान देकर इनके कठिन कार्य को सुगम बनाने में सहायता करे।

स्वामी जी ने भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में संस्कृत की उपेक्षा पर गहरा दुःख प्रकट किया और कहा कि सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत प्रेमियों का एक सम्मेलन बुलाने का कार्यक्रम बना रही है। इससे पूर्व १० मार्च को लखनऊ में संस्कृत विद्वानों की एक गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

हरियाणा के आवास एवं डेयरी विकास राज्य मन्त्री श्री सुभाष चन्द्र कत्याल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा—आर्यसमाज केवल एक संस्था नहीं अपितु एक आन्दोलन है, जिसने समाज से अन्धविश्वास, अज्ञानता, आडम्बर और छुआछूत जैसी कुरीतियों को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है, उन्होंने लोगों से अपील की कि वे संकीर्णता क्षेत्रीयवाद तथा जातिवाद की भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा प्रगति के लिए मिलकर कार्य करें।

श्री कत्याल ने इस अवसर पर गुरुकुल की सहायतार्थ ११ हजार रुपये देने की भी घोषणा की। समारोह में क्षेत्र के हजारों नर-नारियों ने भाग लिया।　　-संवाददाता

आवश्यकता

इस सभा को अपनी आर्यसमाजों व संस्थाओं की गतिविधियों के निरीक्षण, उनके आय-व्यय के सम्परीक्षण तथा उनसे, सभा के प्राप्तव्य धन की वसूली आदि के कार्यों के लिए प्रत्येक जनपद मे एक-एक अवैतनिक निरीक्षक की तुरन्त आवश्यकता है।

अतः जो आर्य जन पूर्ण निष्काम एवं निःस्वार्थ भाव से इस सभा की, उक्त प्रकार के कार्यों के माध्यम से, अवैतनिक सेवा करने के इच्छुक हों वे कृपया अपना प्रार्थना-पत्र, साधारण कागज पर लिखकर अधोहस्ताक्षरी को दि० ३१-५-८८ तक भेजने का कष्ट करें। शुद्ध यात्रा भत्ता व आतिथ्य सम्बन्धित आर्यसमाजों से प्राप्त होगा।

विशेष जानकारी हेतु इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुं० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' (बरपरी, मैनपुरी) से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

प्रार्थना पत्र में निम्नतथ्यों का उल्लेख अवश्य होना चाहिये—
१—नाम, २—पिता का नाम व पता, ३—वर्ण, ४—जन्म तिथि, ५—शिक्षा, ६—व्यवसाय तथा ७—आर्य समासदी आदि।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

महर्षि दयानन्द महिमा गान

भारत में घोर अंधियारी छायी थी।
आसुरी संस्कृति ने धूम मचायी थी॥
भारतीय स्वधर्म छोड़ विधर्मी होते रहे।
विदेशियों से आकर्षित हो अधर्मी होते रहे॥
अनार्यों व पाखण्डियों का बोलबाला था।
भारतीय सत्य धर्म का निकला दिवाला था॥
विदेशियों का अति गुणगान हो रहा था।
सच्चे भारतीयों का अपमान हो रहा था॥
ऐसे विकट काल में ऋषि दयानन्द आए।
सच्चे भारतीयों मे अब आनन्द छाये॥
ऋषि ने अन्धकार की तिमिर को हटाया।
ढोंग पाखण्ड की पोपलीला मिटाया॥
ऋषि ने भारत सुधार का बिगुल बजाया।
वेद प्रचार में अपना तन-मन लगाया॥
सत्यार्थप्रकाश रचकर सत्य प्रकाश दिखाया।
वेद-भाष्य कर वेद का सच्चा रहस्य दिखाया॥
भारत भ्रमण कर सुप्त आर्यों को जगाया।
आर्यसमाज स्थापित कर आर्य धर्म को फैलाया॥
भारतीयों को गुमराह होने से बचाया।
बिछुड़े बन्धुओं को ऋषि ने गले लगाया॥
नारियों पर हो रहे अत्याचार को सुधारा।
नारियों के शोषक को बार-बार धिक्कारा॥
चारों वर्ण तथा नारियों के भेद मिटाया।
सभी को वेद पढ़ने का अधिकार बताया॥
विदेशी राजा कितना भी सुख दे 'तुच्छ' है।
अपने देश मे अपना राज्य ही 'सब कुछ' है॥
दयानन्द की ऐसी जादू भरी वाणी थी।
सच्चे आर्य वीरों की शुरू हुई कुरबानी थी॥
ऋषि दयानन्द ने क्रान्ति का बिगुल बजाया।
ऋषि शिष्यों ने आजादी हेतु कदम बढ़ाया॥
कितने ही सच्चे आर्य वीरों का बलिदान हुआ।
कितने ही सच्चे देश भक्तों का जीवन-दान हुआ॥
अन्त में भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ।
देश मे अपना राज्य ऋषि का स्वप्न पूर्ण हुआ॥
किन्तु आर्यो ! ऋषि का स्वप्न अधूरा रह गया।
देश के पाखण्ड का मिटना अपूर्ण रह गया॥
हम सब आर्य संकल्प लें, वेदों का प्रचार करें।
'ब्रह्मानन्द' सब आर्यों ! आर्य धर्म प्रसार करें॥
यदि हम दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ायेंगे।
तो हम महर्षि दयानन्द के सच्चे शिष्य कहलायेंगे॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु अतरदह मुजफ्फरपुर (बिहार)

डा० रामनाथ वेदालंकार की वानप्रस्थ दीक्षा

आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् आचार्य रामनाथ वेदालंकार ने दिनांक २४ मार्च १९८८ को वेद मन्दिर (गीता आश्रम) ज्वालापुर में विधिवत् वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर आचार्य प्रियव्रत जी वेदमार्तण्ड, माता आनन्दा यति, पं० रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, आश्रम के उपाध्यक्ष श्री जगदीश मुनि जी, श्री शिवपूजनसिंह कुशवाह आदि ने आचार्य जी की वेद सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके प्रति अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। अन्त में आचार्य जी ने अपना यह संकल्प व्यक्त किया कि भविष्य में भी मेरे जीवन का व्रत वेद सेवा ही रहेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की—

प्रतिमा प्रतिष्ठा

[श्री सोती वीरेन्द्रचन्द्र ५६५ सुमापनगर, इलाहाबाद]

[महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गान्धी, प्रधान मन्त्री ने नवम्बर ३, १९८३ को अजमेर में किया। उसमें मुझे भी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यहां इस बात की चर्चा हुई कि, अजमेर के दयानन्द उद्यान में, जहां स्वामी दयानन्द सरस्वती का अन्त्येष्टि संस्कार आनासागर के तट पर हुआ था, उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाय।

इस प्रकार का प्रस्ताव यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाय, तब स्वामी जी की भावना एवं निर्देशन के नितान्त विरुद्ध है। स्वामी जी अपनी मूर्ति के निर्माण के बिल्कुल विरुद्ध थे। क्योंकि उन्हें यह आशंका थी, बल्कि वह यह भली भांति जानते थे कि इसका परिणाम यह होगा कि भावावेश में, अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के रूप में मनुष्य उनकी मूर्ति पर फूलमाला आदि चढ़ाकर उसकी अर्चना करने लगेंगे जो कि आगे चलकर मूर्तिपूजा का रूप धारण कर लेगा तथा यह परिपाटी उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के पूर्णरूपेण प्रतिकूल होगी। इसी कारण उनकी मूर्ति अब तक निर्मित कराकर स्थापित नहीं की गई थी।

यहां बौद्ध धर्म का दृष्टान्त द्रष्टव्य है। गौतमबुद्ध अपनी प्रतिमा की स्थापना के अनुकूल नहीं थे। अतएव आरम्भिक बौद्धकाल में बुद्ध की प्रतिमा नहीं बनाई जाती थी। बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा का विचार था कि गौतमबुद्ध निर्वाण को प्राप्त हो गए। इसके कारण वह इस भवसागर के आवागमन के चक्र से मुक्त हो गये। अतएव इस मुक्ति के उपरान्त उनकी मूर्ति को आकृति में आबद्ध करना उनके द्वारा निर्धारित नियमों की अवहेलना करना है तथा तथागत का अपमान करने के समान है। हीनयान मतावलम्बियों का यह भी दृढ़ विश्वास था कि निर्वाणोपरान्त बुद्ध 'अननुवज्जो अर्थात् न जाने जा सकने योग्य हो गये थे तथा 'यो यो धम्मं पस्सति सो मं पस्सति' उनको केवल वह ही देख सकता था जो धर्म को देख सकता हो।

ऐसी परिस्थिति में गौतम बुद्ध की मूर्ति का निर्माण न कर कुछ प्रतीक बना लिये गये थे जिनके द्वारा बुद्ध एवं उनसे सम्बन्धित तथ्यों को प्रदर्शित किया जाता था जैसे चक्र को स्वयं बुद्ध का प्रतीक माना गया था। स्तूप को महापरिनिर्माण का चिन्ह उद्घाषित किया गया था। बोधि वृक्ष को संबोधि के सदृश मान्यता दी गई थी।

कालान्तर में जब बौद्ध धर्म की हीनयान एवं महायान दो शाखाएं हो गईं तब महायान अनुयायी बुद्ध की मूर्ति बनवाने लगे और उसका फल यह हुआ कि बुद्ध की मूर्ति की पूजा होने लगी।

अतः स्वामी जी की मूर्ति स्थापित कराने के पूर्व उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिकोण में रखते हुए इस मामले पर आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वानों को विचार करके ही कोई निर्णय लेना चाहिए।

——

जनपद अलीगढ़ में आर्य महासम्मेलन

दिनांक २३ तथा २४ अप्रैल को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद अलीगढ़ के तत्वावधान में वैदिक आश्रम रामघाट रोड, अलीगढ़ के विशाल प्राङ्गण में एक आर्य महासम्मेलन आयोजित हो रहा है जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, पू० म० नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी एवं अन्य प्रख्यात उपदेशक, भजनीक पधार रहे हैं।

डा० विजयपाल सिंह आर्य
मन्त्री जिला आर्य उ० प्र० सभा अलीगढ़

आर्य जगत के समाचार

(१) —दि० १/४/८८ को डी० ए० वी० सेन्चुरी पब्लिक स्कूल शास्त्री नगर मेरठ के समारम्भ में विशेष अतिथि के रूप में श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान के पहुंचने पर स्कूल के प्रबन्धक श्री सरदारी लाल जी धवन एवं सुषमा कक्कड़ प्रधानाचार्य एवं अन्य स्टाफने उनका भव्य स्वागत किया। यज्ञ के पश्चात् श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने भारतीय अध्यात्मवादी संस्कृति पर बल देते हुए शिक्षा जगत् में आर्य समाज के योगदान की चर्चा की तथा बताया कि आर्य समाज ने स्वतन्त्रता संग्राम में गुरुकुलों और डी० ए० वी० कालेजों के माध्यम से हजारों नव युवक प्रदान किए जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। आज बच्चों को संस्कार से युक्त करने की आवश्यकता है। इसलिये अंग्रेजी माध्यम में अपने बच्चों को पढ़ाने वालों के लिये एक सुनहरा मौका है कि वे अपने बच्चों को इस स्कूल में प्रवेश दिलवायें तथा अंग्रेजी तथा अन्य विषयों की योग्यता के साथ-साथ अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत होने का सुअवसर प्राप्त करें। बाद में मुख्य अतिथि सभा प्रधान जी से बच्चों में पारितोषिक वितरण करवाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज शास्त्री नगर के अधिकारी एवं सदस्य भी उपस्थित थे।

(२)—मेला नौचन्दी में पटेल मण्डप दरबार हाल में दि० ३०/३/८८ को मध्याह्न १२ बजे सैनिक पुनर्मिलन रैली में सैनिक विधवाओं और अपंग सैनिकों आर्य समाज मेरठ की ओर से ३० सेंट स्टीफन के बतनों के प्रति सैट १००) रुपये भेंट किये गये। मुख्य अतिथि मेरठ मण्डलायुक्त श्री दीवान जी थे। अपने भाषण में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने उन सैनिकों को जो वीर गति प्राप्त कर गये हैं, श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा नागरिक भी अपने वीर गति प्राप्त सैनिकों के लिये श्रद्धासुमन अर्पित करें एवं सेना और नागरिक मिल कर देश की रक्षा करें यही उद्देश्य इस भेंट का अपने भाषण में सभा प्रधान जी ने बताया आर्य समाज की इस भेंट पर अधिकारियों ने आर्य समाज को धन्यवाद दिया।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
वैसाख कृष्ण ८
१० अप्रैल रविवार, १९८८ ई०

आर्य मि[redacted]

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०[पंजीकृत]

आधिकारिक विज्ञप्ति

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यजनो / आर्यसमाजों / आर्यउप प्रतिनिधि सभाओ के पदाधिकारियो के सूचनार्थ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० लखनऊ, ऐक्ट २१ सन् १८६० के अन्तर्गत एक पंजीकृत संस्था है, जिसका प्रधान कार्यालय ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ है। रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटीज तथा चिट्स उ० प्र०, लखनऊ द्वारा अधिकृत सर्वमान्यता प्राप्त इस संस्था का वर्तमान समय मे मन्त्री मैं, अधोहस्ताक्षरी 'मनमोहन तिवारी' स्वयं, तथा प्रधान श्री प० इन्द्रराज है। इस सम्बन्ध मे अनेक भ्रामक समाचार एव विज्ञापन सबंधी कैलाशनाथसिंह, चन्द्रकिरण शर्मा, धर्मेन्द्रसिंह, राजपाल आर्य तथा उनके कतिपय साथियो द्वारा प्रकाशित कराए जा रहे हैं। आर्य जन इससे भ्रमित न हो, न इन्हे किसी प्रकार का सहयोग दें। साथ ही समस्त समाचार पत्रों एव प्रशासकीय विभागो को भी सूचनार्थ निवेदन है कि बिना मेरे स्पष्टीकरण के यदि कोई विज्ञापन या कार्यवाही की जाती है तो वह अनधिकृत एव अवैधानिक मानी जायेगी। और उसकी वैधानिक जिम्मेदारी सम्बन्धित समाचार पत्र अथवा विभाग की होगी।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१

आवश्यक सूचना

जिले की समस्त आर्य समाजों के साथ ही साथ आर्य भाइयो से भी अनुरोध है कि सभा के महोपदेशक, उपदेशक एवं भजनोपदेशक को जो भी धन जिस मद् मे प्रदान करें, उनसे सभा की रसीद अवश्य ले लें।

सभा के महोपदेशक, उपदेशक एवं भजनोपदेशको से भी नम्र निवेदन है कि जहा कहीं से भी जिस मद् मे उन्हे धन प्राप्त हो, (मार्ग-व्यय, वेद-प्रचार धन, दशांश, आर्यमित्र का मूल्य) उसकी रसीद दानदाता को अवश्य दे दें, तथा प्रत्येक दशा रसीद अपने पास अवश्य रखें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज ओबरा (मिर्जापुर)

संरक्षक-श्री ओमप्रकाश धमीजा, महाप्रबन्धक
प्रधान-श्री आर० डी० कटियार अधीक्षण अभियन्ता
मन्त्री-श्री प्रीतमसिंह परमार, उप-निदेशक
कोषाध्यक्ष-श्री शिवकोमल जी

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

४०५, ४५९, ८११, १२५९, २८१८, ३८५१, ३८९३, ४०००, ४८७६, ५५४९, ५५५६, ५५६१, ६१०३, ६११२, ६४०५, ८०४७, ८२४८, ८३४६, ८७७०, ८७८४, ९१५३, ९४३७, ९४४०, ९४४३, ९६४८, ९८६१, ९८७६, १००४२, १०१३९, ११५८६, ११८९३, ११८९५, ११८९६, १२१५७, १३०७०, १३०७६, १३०७७, १३०७८, १३०८५, १३०८७, १३४४१, १३४४२, १३७५०, १३७६१, १३७६३, १३७७९, १३७८२, १३७८५, १३७८६, १४२३३, १४२३५, १४२३६, १४२३८, १४२३९, १४२४०, १४२४१, १४२४३, १४२४५, १४२४७, १४२४८, १४२४९, १४२५१, १४२५२, १४२५३, १४२५६, १४२५७।

विनीत-
व्यवस्थापक

वैदिक रीति से निर्मित शत प्रतिशत शुद्ध

हवन सामग्री

हेतु आदेश पत्र भेजिए-

हवन सामग्री भण्डार

(A M.) ६३१ दिननगर, दिल्ली-११००३५

(१) १०० प्रतिशत शुद्ध सुगन्धित जड़ी-बूटियो से निर्मित सामग्री बहुत कम भाव पर हमारे यहां उपलब्ध है।

(२) हवन सामग्री की शुद्धता और उत्कृष्टता के कारण भारत सरकार से पूरे देश मे इसे निर्यात करने का अधिकार प्राप्त है।

(३) मजबूत लोहे की चादर के बने ८x८, १०x१० तथा १२x१२ इंचो (स्टैण्ड सहित) हवन कुण्ड भी क्रमशः रु० ४८/-, ६०/- तथा ७२/- मे उपलब्ध हैं।

(४) शुद्ध गारण्टी युवा औषधि मे प्रयोग हेतु असली शहद रु० ५०/- प्रति किलो के हिसाब से उपलब्ध है पूरे देश मे भेजने की व्यवस्था है।

स्वत्वाधिकारिणीआर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए जगपालसिंह आर्य भास्कर प्रेस ५मीराबाई मार्ग,लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० (विकास मुद्रणालय लिमिटेड) चारबाग, लखनऊ में श्री शिवचन्द्रप्रकाश गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-७३

वैशाख शुक्ल १, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक १७ अप्रैल १६८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

*

प्रबन्ध सम्पादक—

रुद्रदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

*

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

*

वर्ष ८१

अंक १६

सुख शान्ति का आधार उत्तम धर्म एवं राज्य व्यवस्था

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥

यजुर्वेद १६।१५

भारत की इस बलिदान भूमि पर असंख्य महात्मा, सन्त, और मनीषियों ने जन्म लेकर सत्य, धर्म, न्याय और मर्यादा की स्थापना की वर्तमान युग के संवंतो महान् मनीषी ऋषि दयानन्द ने वैदिक आदर्श पर विश्व के समस्त मानव समाज को सुगठित करने का संकल्प लिया था। उनकी राज्यव्यवस्था केवल भौतिक प्रगतिमात्र के लिए न होकर समस्त मानवों की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक कल्याणकारिणी थी। राजा के इष्ट गुणों का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा—राजा विद्वान, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, न्यायकारी प्रजापालक होना चाहिए। यदि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उनके बताए आदर्श (धर्मार्य सभा पर आधारित राज्य व्यवस्था) चली होती तो निश्चितरूपेण हमारा राष्ट्र सुख और शान्ति का धाम बन गया होता। एक समय था जब, उपनिषद्कालीन हमारे एक सम्राट् (राजा अश्वपति) ने अपनी राज्य व्यवस्था का वर्णन करते हुए कैसी सुन्दर घोषणा की थी—

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप : ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुत : ॥

मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कंजूस नहीं है, मद्यपी नहीं है, अयज्ञीय नहीं है, अविद्वान नहीं है, व्यभिचारी पुरुष ही नहीं है तो व्यभिचारिणी स्त्री कहां होगी ?।

आज की इस राज्य व्यवस्था में यह सब काल्पनिक ही प्रतीत होगा क्योंकि व्यवस्थाओं का आधार प्रभु की आज्ञा वेद नहीं रहा। जो राजनैतिक पुरुष हैं और राज्य व्यवस्था सम्भाले हुए हैं वे धर्म की व्यवस्था लेना ही नहीं चाहते और लेते भी हैं तो ऐसे पाखण्डियों से जो धर्म के नाम पर अधार्मिक अवैदिक व्यवस्थाओं और मान्यताओं को प्रचलित करना चाहते हैं। ऊपर दिए गए वेद मन्त्र में, परमपिता परमात्मा ने राजा के—कर्त्तव्यों का कैसा सुन्दर निर्देशन किया है—" (मा नो महान्तं) राजन् ? तेरे राज्य में किसी महान पुरुष, (निर्दोष) की हत्या न होने पावे। (मा नो अर्भक उक्षन्तं) किसी बच्चे की, वयस्क की हत्या न होने पावे। (मा नो वधी : पितरं मातरं) किसी माता पिता की हत्या न होने पावे…सर्वत्र मानव का, पशुओं का सत्कार होना चाहिए।" पर ऐसी व्यवस्था तब हो सकती है जब हम वोट की राजनीति से ऊपर उठकर सत्य पथ अनुगामी बनेंगे "सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च सोपर्णचक्षुरजस्रं ज्योतिः" उत्तम बात को सुनने, स्वीकारने, गुणों को ग्रहण करने वाले बनेंगे। गरुड़ के समान तीक्ष्ण दृष्टि वाले भविष्य द्रष्टा बनेंगे, विद्यादि सद्गुणों से अनन्त तेजस्विता प्राप्त करेंगे।

इसलिए इस भूमण्डल को सुख और शान्ति का धाम बनाने के लिए आर्य समाज मानवमात्र को किंवा राजनेताओं को ऐसी ही वैदिक बुद्धि दिये जाने की प्रभु से इस मन्त्र से प्रार्थना करता है।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—वैशाख शुक्ल १ सवत् २०४५, रविवार १७ अप्रैल १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि सवत् १९७२९४९०८८

वेदों की गलत व्याख्या

पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने सतीप्रथा को धार्मिकता प्रदान करके पुनः जो हड़कम्प मचाने की कोशिश की है, वह अत्यन्त निन्दनीय है । शंकराचार्य को बहुत अधिक गम्भीर, न्याय प्रिय और संतुलित होना चाहिए । इस पद पर बैठने वालो की यह एक प्रमुख गरिमा होनी चाहिए कि वे संतुलित होकर ब्रह्म ज्ञान से ओत-प्रोत बात करते हों । ब्रह्म ज्ञान से ओतप्रोत बात का अर्थ होता है भेदभाव रहित बात । सर्वत्र ईश्वर दर्शन की भावना से अभिसिंचित होकर बोला जाने वाला वचन, ब्रह्म की चेतना में निरंतर स्थिर रह कर कार्य करने वाले व्यक्ति को ही वास्तव मे शंकराचार्य कहलाने का अधिकार प्रदान करता है । बात कटु अवश्य है, पर शंकराचार्य के प्रति पूर्ण रूप से श्रद्धावनत होते हुए यह निवेदन करना ही पड़ेगा कि स्वामी निरंजनदेव तीर्थ बहुत हल्के नेताओं की तरह बात कर रहे हैं । उनके बात करने का लहजा और उनके विचार वैसे ही हैं जैसे किसी रूढ़िवादी मुस्लिम नेता के होते हैं या रूढ़िवादी सिख नेता के ।

वेद कोई पुस्तकीय ज्ञान नहीं है और न कोई ऐसी पुस्तक है जिसमें अन्तिम रूप से कोई एक वाक्य लिख दिया गया हो । वेद का अर्थ होता है ज्ञान की वाणी और ज्ञान की तो कोई सीमा नहीं होती । वेदों के ज्ञान की जो वाणी संकलित की गई है, वह किसी एक युग की नहीं है, किसी एक समय की नहीं है, किसी एक ऋषि के वाक्य नहीं हैं तथा किसी एक लेखक के कथन नहीं है, लाखों वर्षों में विभिन्न ऋषियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया अपने को तपाकर, अपने को मानवता के प्रति समर्पित करके, अपने को ब्रह्म की स्थिति में लाकर, उस ज्ञान को चार प्रमुख पुस्तकों में एकत्र किया गया । उन पुस्तकों के नाम हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद । लेकिन ये चार वेद तो स्थूल स्वरूप हैं, सूक्ष्म स्वरूप नहीं । उदाहरण स्वरूप वेदों के इस ज्ञान को लेकर आदि शंकराचार्य ने जो विवेक चूड़ामणि नामक ग्रन्थ लिखा, वह भी तो वेद का ही अंग है । भले ही रूढ़िवादी नेता या शंकराचार्य इस बात को स्वयं माने या ना माने । उदाहरण स्वरूप गीता पर जो श्रेष्ठ भाष्य लिखे गये हैं जैसे कि तिलक महाराज का भाष्य या स्वामी चिन्मयानन्द का भाष्य या स्वयं आदि गुरु शंकराचार्य का भाष्य, ये भाष्य भी तो एक प्रकार से वेदों के ही अंग हैं । जो कुछ भी ब्रह्म चेतना में स्थिर हो स्फूर्त हों समाज के लिए अर्पित हों, वह वेदों का अंग बनेगा । यह हुआ वेदों का असली स्वरूप । लेकिन जो लोग वेदों को साम्प्रदायिक रूप दे रहे हैं, उन्हें गुट विशेष या वर्ग विशेष का ग्रंथ मान बता रहे हैं, वे एक प्रकार से वेदों का अपमान कर रहे हैं । वेद सर्वत्र मानवता को श्रेष्ठ मानव की या ब्रह्म चेतना की देन है और चेतना में स्थित हर मानव इस प्रकार की स्थिति मे होकर यह देन प्राप्त कर सकता है । पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ शायद इस बात को नहीं समझ पाये और इसलिए शायद वे इस बात का भी विरोध करेंगे । शायद यही कारण है कि वे कभी मनुस्मृति की बात करने लगते हैं, कभी हरिजनों के घोर विरोधी हो जाते हैं, कभी वे सतीप्रथा को समर्थन देने लगते हैं और कभी अस्पृश्यता को समर्थन देने लगते हैं, लेकिन ऐसा करके वे हिन्दुओं को समस्त विश्व के समक्ष नीचा ही दिखा देंगे ऐसा करके वे हिन्दुओं की भलाई नहीं कर रहे हैं, वे हिन्दुओं का मस्तक ऊँचा नहीं कर रहे हैं । स्वामी निरंजनदेव तीर्थ के कारण हिन्दुओं का मस्तक पहले ही बहुत नीचा हो चुका है और उन्हें विश्व जनमत के समक्ष अनेकबार अपमानित भी होना पड़ा है । आज जब सर्वोच्च न्यायालय की निन्दा करके या भारतीय संविधान की या कानून की निन्दा करके स्वामी निरंजनदेव तीर्थ सतीप्रथा की वकालत कर रहे हैं, तो एक बार फिर वे हिन्दुओं के मुख पर कालिख पोत रहे हैं । हिन्दू दर्शन ब्रह्म चेतना से स्फूर्त दर्शन है । वह स्त्री और पुरुष मे भेद नहीं करता । वह कहता है—सर्वत्र एक ही पुरुष है, एक वही सर्वरक्षक, सर्वव्यापी सर्वपालक, वही सर्वदाता, वही सर्वरूप, अकाल पूर्ण, अखंडित, दिव्य और शाश्वत है । ऐसे श्रेष्ठ दर्शन को खेमो मे बाँटकर और साम्प्रदायिक दुराग्रहों से ग्रस्त होकर हम अपमानित कर रहे हैं, उस पर कीचड़ पोत रहे हैं, उसे लाँछित कर रहे हैं । कितनी चिन्ता की बात है कि यह कार्य एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से हो रहा है, जो परिस्थितियोंवश शंकराचार्य की गद्दी पर बैठ गया है ।

काश इन संकीर्ण धर्मान्ध और रूढ़िवादी नेताओं को यह समझ में आ जाता कि मानवसमाज का प्रतिक्षण दिव्यारोहण हो रहा है समस्त सृष्टि समस्त प्रकृति दिन प्रतिदिन अपना नया रूप विकसित हो और खोल रही है । प्रकृति निरंतर जागृति हो रही है । प्रकृति का यह दिव्य कुसुम अपनी सुरभि अधिकाधिक बिखेर रहा है । ऐसी स्थिति में इन विसीपिटी, इन पुरानी परिभाषाओं का कोई मूल्य नहीं रहा । मानव ने अपनी भूलो से जो कुछ सीखा है और जो प्रगति की है क्या उसका कोई मूल्य नहीं ? जो लोग मानव की प्रगति पर मौन रहना चाहते हैं या उसे नकारना चाहते हैं, वे मूर्ख हैं, समाज के द्रोही हैं और उन्हें समाज स्वीकार नहीं करेगा । समाज ने जो प्रगति कर ली है, उसके कारण मानव दिव्य आरोहण के पथ पर बढ़ना चाल गया है और ऐसी स्थिति उत्पन्न होने के बाद स्वामी निरंजन देव तीर्थ सरीखे व्यक्ति उसे पीछे नहीं घसीट सकते । कौन हिन्दू है, कौन मुसलमान, कौन सिख है, कौन

[शेष पृष्ठ ११ पर]

आवश्यक सूचना

प्रेस में कम्पोजीटरों के अत्यावश्यक कार्य वश आकस्मिक अवकाश पर चले जाने के कारण १० एवं १७ अप्रैल का आर्यमित्र विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है जिसका हमे खेद है । आगामी २४ अप्रैल एवं १ मई का सम्मिलित १६ पृष्ठीय अँक हम पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करेंगे ।

प्रबन्ध सम्पादक

भारत में सती प्रथा कभी भी नहीं रही

सती के शरीर से योगानल का प्रकटन एक अपलाप मात्र

—सन्तोष 'कण्व'—

हमारे पौराणिक भाइयों का भी जवाब नहीं है। लिखते हैं, तो कलम तोड़ देते हैं। बोलते हैं तो आसमान फाड़ देते हैं। शास्त्रार्थ के लिए बुलाओ तो दुम दबा कर भागते हैं। भूले-भटके आ भी जायें तो दम तोड़ देते हैं।

दिवराला में रूपकुंवर की चिता ठण्डी हो गयी है, चर्चा अभी भी गर्म है। यार लोग हाथ सेंक रहे हैं। नेताओं की नेतागीरी—दादाओं की दादागीरी, सब चल रही है। किसी को संसद की कुर्सी दिखाई दे रही है, तो किसी को मन्दिर का चढ़ावा! सब अपना-अपना स्वार्थ साध रहे हैं।

बचता है— आर्य समाज!

'सारे जहां का दर्द, इसी के जिगर मे है।'

हो भी क्यों न! अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने का संकल्प जो लिया हुआ है।

भाई लोग चिल्ला रहे है— सती-प्रथा वेदानुकूल है। ऋग्वेद मे है। अथर्ववेद में है।

अरे बाबा है तो दिखा क्यो नहीं देते। मन्त्र बोलो—पता बताओ। चिल्लाते क्यों हो!

सौ वर्ष से ऊपर हो गए, मूर्ति-पूजा वेद मे कहीं नहीं दिखा सके। पितृ-तर्पण के नाम पर करोड़ों का माल डकार कर भी, मृतक-श्राद्ध वेदानुकूल है' सिद्ध न कर सके। मूर्ति मे प्राण-प्रतिष्ठा का नाटक भले ही करते रहे हों, अवतारवाद को वेद सम्मत नहीं बता सके। अब सती पर काहे को उछल रहे हो?

आर्ताऽऽर्ते मोदिता हृष्टे प्रोषिते मलिना कृशा।
मृते च म्रियते पत्यौ सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता॥

पतिव्रता (जो पति के मरने पर मर जाती है) की यही परिभाषा आप जैसे किसी संस्कृतज्ञ की दुष्ट कल्पना है। वेद को बीच में क्यों लाते हो?

गोहत्या, ब्रह्महत्या, भ्रूण हत्या के समान आत्म-हत्या भी घोर अपराध है। इसे स्तुत्य बताने का कलंक अपने मत्थे क्यों मढ़ रहे हो? पाप को पुण्य की संज्ञा देकर महापाप के भागी न बनो भाई!

नारी भर्तारमासाद्य यावन्न दहते तनुम्।
तावन्न मुच्यते सा हि स्त्री शरीरात् कथञ्चन॥

"पति के मरने पर पत्नी जब तक अपनी देह को पति के शव के साथ भस्म नहीं कर देती तब तक उसको मोक्ष नहीं मिलता"; ऐसी (कु) व्यवस्थाओं का प्रचार करना जघन्य अपराध है, महाराज!

आप कहते हो, कानून क्या कर सकता है। सब कुछ कर सकता है; अगर वास्तव में न्यायकर्ता के हाथ मे हो! आज तो अन्धेरगर्दी है। त्रेता के राम होते तो 'निशिचर हीन मही करूँ भुज उठाय प्रण कीन्ह' की प्रतिज्ञा में आप भी सिमट गये होते। मर्यादा पुरुषोत्तम के न्याय के सम्मुख—'श्री राम जय राम जय जय राम' का अखण्ड कीर्तन भी काम न आता। द्वापर का सुदर्शन जो कहीं कलयुग मे घूम जाये तो बस उद्धार ही समझो अपना।

प्राचीनकाल में आर्य नारियां सती होती थीं, हंसती-हंसती पति के शव को गोद मे रखकर अपने शरीर को भस्म कर डालती थीं; यह सब मिथ्या प्रलाप है। पृथु की पत्नी अर्चि, वासुदेव की पत्नी देवकी, पाण्डु की पत्नी माद्री, धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मणी के नाम से प्रचारित व प्रसारित कथायें मनगढ़न्त कल्पनायें हैं। इतिहास से बलात्कार भला अतीत का साक्ष्य क्यो कर हो सकता है?

आप कहते हो 'जो सती होना चाहे उसे कौन रोक सकता है!' रोक सकता है; आर्य समाज रोक सकता है।

यो तो हर आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। अच्छा-बुरा जैसा चाहे वैसा करे; परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। इस परतन्त्रता से उसे कोई मुक्त नहीं कर सकता। आप भी नहीं।

हां जिसकी बुद्धि शुद्ध और पवित्र है। जीवन और मृत्यु की मीमांसा को जिसने समझ लिया है। जिसे नित्य पदार्थों में अनित्य और अनित्य पदार्थों में नित्य का भ्रम नहीं होता उसे आप जैसो का प्रचार, प्रोत्साहन और प्रलोभन भी 'सती' होने को विवश नहीं कर सकता।

आर्य समाज उसी बुद्धि को ठीक कर रहा है। सरकारी कानून भले ही सती होने को न रोक सके आर्य समाज का प्रचार रोक देगा।

फिर सती हो कौन रहा है? निर्मम हत्या काण्डों को सती चमत्कार बताकर हत्यारों को संरक्षण दिया जा रहा है। भारत मे सती प्रथा कभी भी नहीं थी। बंगाल में जो घटनायें घटीं वे किसी प्रथा का अंग नहीं, प्रत्युत हत्यायें थीं। सीमित क्षेत्र मे थोड़े काल के लिए यह अन्धकार छाया था। सम्पूर्ण भारतीय समाज जिसे कालान्तर मे हिन्दू समाज कहा गया, में ऐसी कोई भी प्रथा या परम्परा कभी भी नहीं रही। आज भी नहीं है।

अपराधियों ने स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए एक ओर जहां संस्कृत में श्लोक रचकर सती विधान का औचित्य दर्शाया वहीं भारत के गौरवमय अतीत के साथ बलात्कार भी किया। परन्तु उनके ये दोनों प्रयास असफल सिद्ध हुए। संस्कृत में लिखे होने मात्र से ही कोई बात प्रमाणित नहीं हो जाती। सत्यासत्य के निर्णय की कुछ कसौटियां हैं, जिन पर कस कर ही प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

धर्म और मजहब के नाम पर, ईश्वरीय विधानों की आड़ में देश-देशान्तरों में जघन्य अपराध हुए हैं। आज भी हो रहे हैं। पीड़ित को न्याय मिलना ही चाहिए। अपराधियों को कठोरतम दण्ड देना राजा और शासन का काम है। वह अपने इस दायित्व से कदापि बच नहीं सकता। दण्ड व्यवस्था का समुचित प्रयोग न होने से ही समाज मे ये उत्पात होते हैं। अपराधी पनपते और सज्जन सिर धुनते हैं। सामान्य

(शेष पृष्ठ १० पर)

गुरुकुलीय शिक्षा की विशेषताएं

श्री गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम० ए० एम० फिल (संस्कृत)
१७५ जयनग जबलपुर ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' मे लिखा है कि 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद' । लोग कह सकते हैं कि माता-पिता वाले तो सभी होते हैं और जो पढ़ता है वह आचार्यवाला भी हो जाता है । इसी को ध्यान में रखकर स्वामी जी ने व्याख्या की कि 'प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यस्य स मातृमान्' अर्थात् माता वाला तो वही होता है जिसकी मां विदुषी व धार्मिकी हो और जो अपने बच्चे को गर्भाधान से लेकर (केवल जन्म से नहीं) जब तक पूरी विद्या न हो तब तक लगातार सुशीलता का उपदेश करती रहे । इसी प्रकार पिता भी विद्वान व धार्मिक होवे तथा अपने बच्चे को भी धार्मिक सुशील व विद्वान् बनावे तभी वह सच्चा पिता वाला कहलाता है । आचार्य केवल पढ़ाने वाले को नहीं कहते वह तो उपाध्याय या शिक्षक भी कहला सकता है । 'आचारं ग्राहयति स आचार्यः' अर्थात् आचार्य उसको कहते हैं जो न केवल सदाचार की शिक्षा देता है बल्कि वह जो शिष्य को साम, दाम, दण्ड, भेद सभी प्रकारों से सदाचरण ग्रहण कराता है । ऐसा आचार्य प्राप्त होने पर ही शिष्य आचार्यवान् कहलाता है ।

२. गुरुकुलों में विद्या के साथ-साथ सदाचरण की शिक्षा ही नहीं दी जाती बल्कि आचार्य अपने सदाचरण का आदर्श प्रस्तुत करके प्रेरणा पूर्वक शिष्य को सदाचरण ग्रहण करवाता है । आर्य गुरुकुलों की यही विशेषता है कि न केवल सदाचार का बलपूर्वक पालन बल्कि सदाचरण में रुचि सदाचार से प्रेम और सदाचार के परिपालन की आदत डलवाई जाती है, जिससे कि छात्र सदाचार के प्रेमपूर्वक पालन का अभ्यासी हो जाय और फिर वह उससे जीवन भर, न छूटे । जीवन में चाहे जितने प्रलोभन आवें या कठिनाइयां आवें गुरुकुल का विद्यार्थी सत्य से नहीं डिगता बल्कि प्राणों की बाजी लगाकर भी सदाचरण जो वस्तुतः सत्याचरण ही है, उसको कभी नहीं छोड़ता । परीक्षा की घड़ी आने पर वह ईश्वर से सहायता मांगता है और सर्वदा विजयी होता है ।

३. बोर्डिंग हाउस अर्थात् छात्रावास वाले विद्यालय जो रेजिडेंशियल स्कूल जिनमें छात्र का चौबीसों घंटे विद्यालय परिसर में ही रहना अनिवार्य है, बहुत से हो सकते हैं व हैं भी । वहां पर अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ अच्छा भोजन-पान, व्यायाम व मनोरंजन आदि तो हैं परन्तु वहां सदाचार पर उतना ध्यान व जोर नहीं है, जितना कि गुरुकुलों मे होता है, इसीलिए गुरुकुलों से भिन्न हैं ।

४. गुरुकुलों की दूसरी विशेषता यह है कि छात्रों को विलासिता, प्रमाद व उच्छृंखलता तथा आलस्य से दूर रखकर उन्हे सुदृढ़ व परिपक्व भी बनाया जाता है । उन्हें वर्षा व शीत झेलने व सहने तथा कठोर जीवन जीने का अभ्यासी बनाया जाता है । फिर वे जीवन के किसी भी विषम मोड़ पर न झिझकते हैं और न घबराते है ।

५. जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धियों व सिद्धियों को प्राप्त करने का मूल साधन है अखण्ड ब्रह्मचर्य, जिसके द्वारा शरीर व मन को स्वस्थ, सबल व सुदृढ़ बनाया जाता है, कि वे किसी भी वज्राघात को सह सकें । ब्रह्मचर्य व्रत पालन गुरुकुलों में ही सम्भव है, अन्यत्र तो उस पर चर्चा तक नहीं होती ।

६. गुरुकुलों के छात्र सोना, चांदी, हीरा, मोती के आभूषणों की कौन कहे पुष्पों तक के आभूषण धारण नहीं करते । उनके सच्चे आभूषण तो विद्या, सुशीलता व सदाचार ही हैं । विलासिता के पंक से उनके मन मलिन नहीं होते । सत्याचरण के तेज व वेद ज्ञान के प्रकाश से वे सदा प्रकाशित व प्रमुदित रहते हैं ।

७. गुरुकुलों में सहशिक्षा अर्थात् लड़के व लड़कियों की एक साथ शिक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता । इसीलिए विपरीत लिंग के विषय में उनके मन में न तो उत्कट जिज्ञासा उठती है न उत्सुकता । उनके मन शान्त, निर्मल व विषय-रससे विमुख रहते हैं ।

८. गुरुकुलों के सभी छात्र एक समान जीवन बिताते हैं । न तो वहां अमीर व गरीब की सन्तान होने का भान होता है और न ब्राह्मण या अब्राह्मण की सन्तति होने का । हरिजन या गिरिजन, आदिवासी या वनवासी, मुसलमान या ईसाई, बौद्ध या जैन की सन्तान होने का भी वहां कोई बोध नहीं रहता । जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है कि, "सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जायें चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए ।

९. गुरुकुलों में नित्य दोनों समय का सन्ध्योपासन, अग्निहोत्र, व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, ध्यान तथा खेलकूद व गुरुकुल के जीवनोपयोगी व्यवहारों कृषि, बागबानी, पशुपालन, भोजनशाला का प्रबन्ध व अतिथि सत्कार की भी शिक्षा दी जाती है ' इस बहाने से छात्र स्वावलम्बन का भी पाठ पढ़ते हैं ।

१०. भारत के अधिकांश गुरुकुलों में अर्थाभाव व विपन्नता की एक विषम समस्या है । क्योंकि उन्हें पर्याप्त राजाश्रय प्राप्त नहीं है । और न उनके पास इतना संचित धन ही है कि वे उसे बैंकों में रखकर केवल उसके ब्याज से गुरुकुल का सारा खर्च चला सकें । वे तो धनिकों के तत्कालिक दान पर ही निर्भर करते हैं और उनकी स्थिति ऐसी रहती है कि 'रोज कुआं खोदो, तब पानी पियो' । यदि देश के धनपति अपनी तिजोरियां गुरुकुलों के लिए खोल दें और अपने नाम से लाखों करोड़ों रुपयों के ट्रस्ट बनाकर उनका ब्याज गुरुकुलों को समर्पित कर दें तो उनकी दशा सुधर सकती है । जब तक धनपति ऐसा नहीं करते, तब तक यह काम प्रतिनिधि सभाओं व सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए । राज्य सरकारों को भी गुरुकुलों को पर्याप्त मासिक अनुदान देना चाहिए और 'अक्षय निधि' की स्थापना करनी चाहिए ।

११. यदि ऐसा हो जाय और गुरुकुलों की शिक्षा बहुआयामी व उत्कृष्ट हो जाय, तो गुरुकुलों के स्नातक देश के प्रशासनिक अधिकारी व राजनेता बन कर देश में सुशासन ला सकेंगे और भ्रष्टाचार मिटा सकेंगे । तब वहां से ऐसे समाचार आवेंगे कि 'गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है । परमात्मा वह दिन शीघ्र लावे ।

★

क्या यज्ञ से वर्षा हो सकती है ?

आचार्य वेद भूषण, अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

जिज्ञासु के मस्तिष्क मे यह प्रश्न स्वभावतः उठ जाता है कि-क्या यज्ञ से वर्षा हो सकती है ? वास्तव मे किन्हीं अन्ध विश्वासों और पूर्वाग्रहों के आधार पर इसका समाधान खोजना समीचीन न होगा ! वैसे इस शंका के पक्ष और विपक्ष मे पर्याप्त बातें कही व सुनी जाती हैं फिर भी विचारकों के मन मे अनेक सन्देह जन्मते हैं। किसी प्रश्न का उत्तर या शंका का समाधान वैज्ञानिक आधार पर ही किया जाना या खोजा जाना अधिक युक्तियुक्त और मान्य होता है।

क्या यज्ञ से वृष्टि संभव है ? इस विषय मे भी हमें वैज्ञानिक आधार पर ही विचार करना चाहिए !

यज्ञ क्या है ?

यज्-धातु से यज्ञ शब्द की निष्पत्ति होती है ! यज्-धातु के तीन अर्थ होते हैं ! देव पूजा संगति करण और दान ! देव पूजा शब्द पर विचार करने से पता चलेगा कि-देव कहते हैं-दानाद्वा-दीपनाद्वा-द्योतनाद्वा-द्युस्थानी-भवतीतिसवादेवः। देव उसे कहते है जो देता है दान करता है, या जो प्रकाशित होता है, या जो औरों को प्रकाशित करता है या जो द्युलोक में स्थित है उसे देव कहते है। शास्त्रों मे मुख्य रूप से तेतीस देवता माने जाते हैं। इनमे बत्तीस देवता जड़ हैं और तेतीसवां देव चेतन परमात्मा और आत्मा। ये तेतीस देव मुख्य रूप से माने जाते है।

पूजा शब्द का अर्थ है पवित्रता और पुष्टि को जन्म देना पूजा कहाती है। पवित्रता और पुष्टि का आदान-प्रदान ही पूजा है। जो सर्वोपरि सत्ता अर्थात् परमेश्वर है उसके भाग रूप को अपने में धारण करना ही परमेश्वर की पूजा है। जड़ पूजा से अभिप्राय जो बत्तीस जड़ देवता हैं उन्हें सदा पवित्र रखना और उनसे पुष्टि प्राप्त करना जड़ देवों की पूजा कहाती है। इस प्रकार पूजा के दो भेद हो जाते हैं प्रथम ब्रह्म की पूजा अर्थात् ब्रह्म को धारण करना। उनके गुण कर्म स्वभाव को अपने भीतर धारण करना ब्रह्मयज्ञ कहाता है। दूसरी पूजा जड़ पूजा जिसे देव यज्ञ कहा जाता है। देव यज्ञ के स्थान को ही देवल या देवालय कहा जाता है। आज भी देवलों और मन्दिरों में जो 'दीप' जलाया जाता है वह देव यज्ञ का ही संक्षिप्त रूप है। प्राचीन काल में यज्ञ स्थली या यज्ञशाला को ही देवल, देवालय कहते थे क्योंकि ये देव यज्ञ के स्थान थे। देव यज्ञ उस प्रक्रिया को कहते हैं जिससे जल, वायु और अग्नि में पवित्रता बनी रहती है। जिससे वे हमें पुष्टि प्रदान करते व हमारे पोषण में समर्थ रहते हैं। इसी देव पूजा की विधि को हम देव यज्ञ कहते हैं।

यज्ञ शब्द का दूसरा अर्थ है संगति करण। 'सम्+गति से अभिप्राय है समन्वित व सम्यक् चेष्टा ही संगति कहाती है। चेतन में सम् गति करने का अभिप्राय है समाज को संगठित करना अनुशासित करना। दुर्गति से बचकर सुगति युक्त होना। अच्छों का संग करना ही संगतिकरण कहाता है ! मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे सामूहिक रूप से उन्नति करने के लिए जो नियम अथवा कर्त्तव्य आवश्यक हैं उनका पालन करना संगति करण कहाता है ! जड़ पदार्थों में समन्वय करना ही शिल्प विद्या कहाती है। कल पुर्जों का युक्ति पूर्वक संयोजन ही शिल्प विद्या है ; यही समन्वय अथवा संगति करण कहाता है !

तीसरे दान शब्द का अर्थ है देना लेना। आदान प्रदान ! क्योंकि देने से पूर्व लेना भी आवश्यक है, बिना लिए संचित नहीं होगा ! संचित होगा तो ही दान होगा। अतः आदान प्रदान की प्रक्रिया ही दान कहाती है !

इन तीन प्रकार की प्रक्रियाओं का नाम ही यज्ञ है। ये तीनों ही कार्य क्रिया से संबन्धित हैं इसीलिए इन्हें कर्म कहते हैं। यज्ञ शब्द का अर्थ इस प्रकार से कर्म "करना" माना जाता है।

समस्त कर्म इन्हीं तीन भागों में सन्निविष्ट हैं। कर्म के यही तीन भेद हैं। देव पूजा संगति करण और दान। इन्हीं प्रकार के कर्मों के जो नियम सिद्धान्त या फार्मूले हैं इन्हें एक सूत्र में पिरोकर एक जो अत्यन्त श्रेष्ठ प्रक्रिया बनी उसी का नाम हमारे ऋषि मुनियों ने देव यज्ञ रख दिया।

इसी देव यज्ञ को अग्नि होम भी कहा जाता है। इस प्रकार जो यज्ञ किया जाता है उसे शतपथकार ने श्रेष्ठतम कर्म माना है। "यज्ञो वै श्रेष्ठ तमं कर्म"

यजुर्वेद में इसी यज्ञ विद्या की ओर संकेत करने वाला मन्त्र है जिसे मृत्युंजय मंत्र भी कहा जाता है !

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात् ॥

देव यज्ञ का मूल आधार यही मन्त्र है ! त्रि अर्थात् तीन या तीन प्रकार के अम्बकों को या तीन द्रव्यों को यजामहे हुत करें ! तीन प्रकार के अम्बक बलीय पदार्थों से जल से उत्पन्न होने वाली वनौषधियों से तथा घृतादि से हम "यजामहे" यज्ञ करें !

वे तीन प्रकार के पदार्थ कौन से हैं ? मन्त्र आगे कहता है कि— सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। एक पदार्थ तो वे जो सुगन्धयुक्त हैं दूसरे वे जो पुष्टि को देने वाले या बढ़ाने वाले हैं। दो से ही तीन का निर्माण होता है तीसरे वे जो सुगन्धि और पुष्टि दोनों हो देने वाले हैं वे तीसरे हो गये।

जो इन तीन प्रकार के अम्बकों से द्रव्यों से यज्ञ करेगा वह खरबूजे के समान पूर्ण आयु को प्राप्त होगा अर्थात् रोग आदि से पीड़ित होकर अल्पायु में मृत्यु का शिकार नहीं होगा पूर्ण आयु को प्राप्त करेगा। मृत्युञ्जयी हो जायगा। अकाल मृत्यु का रोगादि से शिकार नहीं होगा।

इसी प्रक्रिया का नाम है यज्ञ ! अब प्रश्न पैदा होता है कि-क्या यज्ञ से अतिवृष्टि या अनावृष्टि दूर होती है अथवा नहीं ?

(क्रमशः)

देश में आने वाले विदेशी धन की कहानी सरकार द्वारा दिये गये आंकड़ों की जबानी

[श्री विशन स्वरूप गोयल]

गत दिनों गृह मन्त्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठकमें समिति के सदस्यों ने देश में मुस्लिम देशों तथा ईसाई देशों से आने वाले धन के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाही। इसी बीच में जनतापार्टी के प्रसिद्ध कट्टरपन्थी तथा फिरका परस्त संयद शहाबुद्दीन ने दारुल उलूम लखनऊ मदवा को विदेशी धन प्राप्त करने पर सरकार द्वारा लगाई जाने वाली पाबन्दी का कारण पूछते हुए सरकार के इस फैसले का विरोध किया। इस पर गृहराज्य मन्त्री श्री चिदम्बरम ने उत्तर दिया कि लखनऊ की इस संस्था दारुल उलूम पर सरकार की अनुमति के बिना विदेशी धन प्राप्त करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है क्योंकि यह संस्था इस धन का जिस काम के नाम पर वह आता था उसमें उपयोग न कर राष्ट्र विरोधी या मत परिवर्तन के काम में उपयोग करती थी। इसका अन्य सदस्यों ने भी समर्थन किया। कुछ सदस्यों ने तो यहाँ तक मांग की कि जब सरकार विदेशी धन के व्यय करने पर नियन्त्रण नहीं कर सकती तो उसे देश में आने वाले विदेशी धन पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

श्री चिदम्बरम ने देश में आने वाले विदेशी धन की जानकारी देते हुए बताया कि गत कुछ सालों से देश मे आने वाले विदेशी धन की मात्रा निरन्तर बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि सरकार की जानकारी के अनुसार सन १९८४ में १६१२ व्यक्तियों संस्थाओं को २५३ करोड़ रुपये की धनराशि प्राप्त हुई है और सन १९८६ में यही संख्या बढ़ कर व्यक्तियों तथा संस्थाओं की संख्या ३६१२ से बढ़ कर १००४० और विदेशी धन २५३ से बढ़ कर ४३४ करोड़ रुपये हो गई है इस प्रकार लगभग दो वर्ष में ही यह दो गुनी बढ़ गयी है। उन्होंने यह भी बताया कि यह आंकड़े तो सरकार की जानकारी के अनुसार है किन्तु विदेशी धन देश में इससे कई गुना अधिक आ रहा है।

उन्होंने आगे बताते हुए यह भी बताया कि यह धन पूजा स्थानों की मरम्मत, निर्माण तथा देखभाल के नाम पर आता है यह १९८४ में १९ करोड़ था किन्तु आश्चर्य की बात है कि प्राकृतिक विपत्ति के नाम पर केवल एक करोड़ रुपये ही आये। सरकार ने इस धन को व्यय करने के लिये कुछ मद तय की हुई हैं उनमे एक मद ऐसी भी है जो होटल, मनोरंजन आदि किसी भी मद पर व्यय की जा सकती है उस मद मे सबसे अधिक धन ८९ करोड़ आया जो एक चिन्ताजनक बात है क्योंकि यही धन हिन्दुओं के मतपरिवर्तन करने के लिये प्रलोभन के रूप में दिया जाता है।

संयद शहाबुद्दीन के अतिरिक्त सभी सदस्यों ने विदेशी धन की आमद पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करते हुए कहा कि जब सरकार उसके व्यय पर नियंत्रण नहीं कर सकती तो उसके आने पर भी रोक लगा देनी चाहिये यही नहीं कांग्रेस (ई०) के ही एक मुस्लिम सदस्य काजी जलील अब्बासी ने भी इस पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करते हुए कहा कि इस विदेशी धन से कुछ लोगों तथा संस्थाओं को लाभ हो रहा है किन्तु बदनाम सारा सम्प्रदाय हो रहा है इसलिये इस पर प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक है।

कुछ सदस्यों ने यह भी बताया कि यह जो विदेशी धन आता है उसका प्रयोग प्रलोभन के रूप में पिछड़े हुए और गरीब हिन्दुओं का मत परिवर्तन करने के लिये मुस्लिम तथा ईसाई मिशन कर रहे हैं। श्री चिदम्बरमने यह भी बताया कि सरकार ने इस प्रकार की कुछ मुस्लिम और ईसाई संस्थाओं पर बिना पूर्व सरकार की अनुमति के विदेशी धन स्वीकार करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है जिसकी संख्या ११ है और इस वर्ष अन्य १७ संस्थाओं को भी इसी प्रकार के आदेश दे दिये गये हैं और ऐसी १६ संस्थाओं के खिलाफ सी० बी० आई० जांच कर रही है जिन्होंने इस आदेश का उल्लंघन कर विदेशी धन बिना सरकारी अनुमति के प्राप्त किया है।

हमारे देश के बुद्धिजीवी हिन्दू समाज को अब अनुमान लगा लेना चाहिये कि किस प्रकार हिन्दू का मत परिवर्तन करने के लिये विदेशों से कितना धन पानी की तरह बहाया जा रहा है और दूसरी ओर हमारे हिन्दू समाज के धनाढ्य और सम्पन्न परिवार है जो इन उपेक्षित और गरीब पिछड़े हुए अपने ही समाज के अभिन्न अंगों की अवहेलना कर रहे हैं उनकी सहायताके नाम पर कुछ नहीं देते किन्तु मन्दिर, धर्मशाला आदि पर लाखों रुपये व्यय कर देते हैं जहाँ वे मन्दिरों और धर्मशालाओं के लिये व्यय करते हैं वहीं उसका कुछ अंश हमारी ऐसी संस्थाओं को भी प्रदान करें जो इन पिछड़े हुये गरीब लोगों के उत्थान के कार्यों में लगे हुए हैं ताकि ये लोग ईसाई और मुस्लिम प्रभाव से बच कर अपना मत परिवर्तन न करें। उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि यह देश बचेगा तभी मन्दिर धर्मशाला बचेंगी और देश तब बचेगा जब हिन्दू बचेगा।

यहाँ एक बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि यहाँ जो ईसाई मिशनरियों द्वारा कान्वेन्ट स्कूल चलाये जा रहे हैं उनमें पादरी अध्यापक हमारे छात्र और छात्राओं के साथ यौनाचार भी करते हैं अभी गत कुछ दिन पूर्व राजस्थान के ब्यावर के सेंटपॉल स्कूल के पादरियों के खिलाफ थाने में इस बात की रिपोर्ट लिखाई गई है कि ये दोनों पादरी अध्यापक छात्र-छात्राओं को अपने घर ट्यूशन पढ़ाने के बहाने से बुलाते थे और उन्हें फेल करने का भय दिखाकर उनके साथ अनैतिक यौनाचार करते थे इस प्रकार ये ईसाई पादरी अध्यापक हमारे बच्चों का चरित्र किस प्रकार खराब कर रहे हैं यह इस बात से प्रमाणित हो जाता है। हमारी सरकार से मांग है कि यह ईसाई मिशनों द्वारा चलाये जाने वाले सभी स्कूलों का राष्ट्रीयकरण कर ईसाई पादरियों को यहां से हटा दें तथा जो विदेशी ईसाई पादरी यहां हैं उन सबको यहां से इस प्रकार से मतपरिवर्तन करने काम के कारण वापस भेज दे या फिर नेपाल की तरह हिन्दू मत परिवर्तन करनेवाले ईसाई को जिस प्रकार वहां ६ साल का कारावास दिया जाता है यहां भी विधेयक लाकर इस प्रकार का कानून बनाया जाना चाहिये कि प्रशासन, नौकरी, या शादी का झांसा देकर मत परिवर्तन करने पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया जावे।

आज जो हमारे धन सम्पन्न परिवार इन कान्वेन्ट स्कूलों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए बहुत बड़ी धन राशि व्यय करते हैं उन्हें यह सोच लेना चाहिये कि क्या वे अपने बच्चों को इसी काम के लिये कि उनके बच्चों के साथ इस प्रकार के अमानवीय मैथुन और यौनाचार हों प्रेरणा दिलाते हैं।

(शेष पेज ९ पर)

हमारी प्रचार पद्धति

[श्री सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)]

सार्वदेशिक १७ जनवरी सन् ८८ के अङ्क में सम्पादकीय में कहा गया है कि "आर्य मन्दिरों, आर्य विद्यालयों, आर्य कालेजों की आज भरमार है परन्तु ईंट पत्थर के भवनों मे वे स्वर नहीं गूंज रहे हैं जो पुरातन पीढ़ी के प्रचारकों के प्रचार काल मे गूंजा करते थे।" कारणों पर किसी को याने उपदेशकों या प्रान्तीय सभाओं शिरोमणी सभा या समाज के पदाधिकारियों को दोष दे देने मात्र से समस्या का हल नहीं हो सकता। इसके कारणों पर गहराई से विचार करना पड़ेगा तों बात सहज में ही समझ में बैठ जावेगी कि उस समय हमारे पास एक ही बात थी भगवान् दयानन्द कृत ग्रन्थों से ही हमारे सम्पूर्ण कार्यक्रम होते थे। आज की तरह अनेक विषयों पर मतभेद नहीं थे। उस समय का वर्णन करते हुए श्रद्धेय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने श्रीमद्दयानन्द प्रकाश में अन्तिम पंक्तियाँ लिखते हुये लिखा है कि उस समय "जहाँ जाओ वहाँ आर्य बन्धुओं में देशहित के गीत गाये जाते, एकता देवी के पाठ सुनाई देते। सामाजिक संशोधन के सूत्र सङ्कठित होते। परमात्म देव के यश का वर्णन होता और आर्यों के मनो मे, आर्यों के घरों में, आर्यों की मण्डलियों मे आर्यों के मन्दिरो मे, आर्यों के महोत्सव में, जहां देखों वहीं सर्वत्र वेद प्रचार था। ईश्वर विचार था। शिक्षा विस्तार था। सामाजिक सुधार था और आनन्द कन्द भगवान् दयानन्द के जीवन प्रकाश का जय-जय कार था।"

अतः आज भी हम महर्षि के बतलाये मार्ग पर ही कोई शका न करके चलें तो वही स्थिति पुनः आ सकती है। चाहिये श्रद्धा। और श्रद्धा तभी आवेगी जब हम महर्षि के सभी जीवन चरित्रों को स्वय पढ़ेंगे और साथ में जैसे राम और कृष्ण के जीवन वृत्त कथा के रूप मे सुना-सुनाकर श्रद्धा बढ़ाते चले आ रहे है ठीक उसी प्रकार महर्षि के जीवन की भी अद्भुत बल पराक्रम युक्त धैर्य साहसिक घटनाओं को वक्ता के ६ गुण जो वर्णोच्चारण शिक्षा मे बतलाये हैं कि।

माधुर्यमक्षर व्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं तथा सामर्थ्यं षडेते पाठका गुणाः॥

अर्थात् मधुरता, भिन्न-भिन्न अक्षर, पृथक-पृथक पद, सुन्दर ध्वनि, धीरता एवं अपने-अपने स्थानों से वर्णों का उच्चारण होना तथा सत्य भावनादि गुणों से युक्त होकर प्रवचन करें।

यह सभी तभी संभव हो सकेगा जब हम महर्षि की विचार धारानुसार पठन-पाठन विषय को पढ़ाने का प्रयास करेंगे और प्रयास के लिए भी महर्षि ने तो अत्यन्त सुगम सुलभ साधन बतला दिया कि "जो शाहपुरा नरेश ने ३०) महावार की घोषणा महर्षि के विदाई समारोह में की थी उसका उपयोग धर्म प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक रखने के लिए पत्र भेजे गये तो अजमेर से गोरी शंकर जी को उपदेशक नियुक्ति का विचार किया तो उसके कार्यक्रम को निर्धारित करते हुये ठाकुर नन्दकिशोर सिंह को लिखते हैं कि "जितने दिन जहाँ कहीं रहना होगा व्याख्यान देवें और सभा सदों को उचित समय में पढ़ावेंगे भी।"

तो प्रश्न यह होता है कि क्या पढ़ावेंगे तो सीधा उत्तर है जो संस्कार विधि में कहा गया है कि इतना तो अवश्य पढ़ लेवे। तो यहीं पर इसी आशय से कहा गया है कि हवन के सामान्य प्रकरण तो अवश्य ही पढ़ लेना चाहिये यदि इतना भी न पढ़े तो वह शुद्ध वेद पाठ करने में सर्वथा तत्पर नहीं रह सकता। लेकिन उसके कर्म उसी के हाथ से कराने को कहा है।

अतः जहाँ भी हो वहाँ दो दिन न्यून से न्यून २० घण्टे की पढ़ाई शिक्षण महर्षि की बातों का ज्ञान कराने हेतु शिविर लगाना है जिसमे प्रश्नोत्तर ढङ्ग से केवल महर्षि की बातो को ही स्वतः प्रमाण मानकर महर्षि कृत ग्रन्थों से ही याने पञ्च महायज्ञ विधि, संस्कार विधि से ही पढ़ाने की चेष्टा करें। ताकि अन्य धर्मावलम्बियो के सदृश हमारा काम भी बढ़ सके। संध्या यज्ञ पर श्रद्धायुक्त उपस्थिति बढ़ सके।

धूम्रपान से कैंसर

[श्री श्याम मुरारी आर्य वेद प्रचारक, मन्त्री आर्य समाज शिकरना अलीगढ़]

"आज कल धूम्रपान द्वारा शरीर पर हुए कुप्रभावो को भली-भान्ति देखते ही रहते हैं, जिसमे मनुष्य अपना जीवन जल्दी ही दांव पर लगा देता है। आज कल के नवयुवक मुंह मे सिगरेट लगाकर अपने को बहुत गौरवशाली समझते हैं। लेकिन कुछ वर्षों बाद वे बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। जैसे खांसी, दमा, स्वांस फूलना, टी० बी० व कैंसर आदि। जिनमे से कैंसर एक भयकर बीमारी है। जिसके सम्बन्ध में कुछ विद्वानो के विचार प्रस्तुत हैं।

१–मि० एडवार्ड १९८४ मे लिखते हैं कि सिगरेट में लड व पोलो सुगम के तत्व मिलते हैं। जो ट्यूमर पैदा करने के लिए पर्याप्त होते हैं और यह तत्व तम्बाकू मे भी होते हैं।

२–प्रैक्टीशनर नामक मैडिकल जनरल के अक्टूबर १९५९ ई० के अङ्क में डा० आर्चर डब्ल्यू हिल्स जो स्काट लैण्ड की महारानी के अवैतनिक चिकित्सक हैं कहते हैं कि आंकड़ो पर आधारित रिपोर्ट पर यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि प्रतिदिन बढ़ते हुए फेफड़ों के कैंसर आधुनिक युग में सिगरेट धूम्रपान के विस्तार के ही कारण है।

३–इटली के प्रोफेसर पी० आर० पीकाक कैंसर के बचाव पर बोलते हुए स्पष्ट शब्दो में कहते हैं कि फेफड़ों का कैंसर सिगरेट न पीने वालों में बहुत कम होता है और पीने वालों मे कैंसर को बढ़ावा मिलता है। इस बात की पुष्टि प्रैक्टीशनर १९६० ई० अक्टूबर मास के लेख से होती है कि खांसी व फेफड़ों बीमारियो से जिसमे विशेषकर कैंसर से मरने वालों की संख्या धूम्रपान करने वालो मे ७२./. है जबकि न पीने वालों की मरने वालों की संख्या १२./. है।

"इसी वर्ष भारतीय चिकित्सक संघ के जनरल में सम्पादक महोदय उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि मुंह तथा जीभ के कैंसर का कारण सिगरेट पीने, तम्बाकू, चूना व सुपारी खाने से सम्बन्धित है।

इस प्रकार पाठक गण समझ गये होंगे कि कैंसर का कारण मुख्य रूप से धूम्रपान है। अतः धूम्रपान सर्वथा वर्जित है।

आर्य जगत

—सुधारती सेवा संस्थान की ओर से आयोजित मेला मोचन्दी के पटेल मण्डप दरबार हाल में सर्व धर्म सम्मेलन मे दि० ३-४-८८ को वैदिक धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए देशभक्ति को ही धर्म बताया। वेद की इस उक्ति को दोहराते हुए "भूमि माता पुत्रोऽहं पृथिव्या।" अर्थात् भूमि मेरी माता है और मै इस भूमि माता का पुत्र हूँ। सब सम्प्रदायों को प्रचार करना चाहिए कि हम सब लोग एक ही भूमि माता के पुत्र हैं और परस्पर भाई-भाई हैं। उन्होंने आगे कहा कि कोई भी सम्प्रदाय आपस में लड़ने की बात नहीं कहता। धर्म तो विशुद्ध रूप से प्रेम और प्यार का प्रचार और प्रसार करता है, परन्तु फिर भी सम्प्रदाय आपस में टकराते हैं। यह राजनीति का दोष है। राजनीति जब धर्म में प्रवेश करती है तो धार्मिक लोग भी आपस में टकराने लगते हैं। श्री इन्द्रराज जी ने इस सर्व धर्म सम्मेलन के विशेष अतिथि पेट्रोलियम राज्य मन्त्री रफीक आलम साहब से अनुरोध किया कि एक केन्द्रीय राज्य मन्त्री के रूप में वे आज की राजनीति मे प्रमुख स्थान रखते हैं। अतः उन्हें राजनीति के स्तर को ऊँचा उठाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए ताकि धर्म अपने विशुद्ध स्वरूप में संसार को मानव धर्म और भाईचारे का उपदेश दे सके। श्री इन्द्रराज जी ने यह भी बताया कि हमारे शास्त्रों मे राजनीति शब्द का प्रयोग नहीं है, वहाँ राजधर्म का प्रयोग है। इसलिए धर्म के नेतृत्व मे राजनीति को चलना अनिवार्य है। आज दुःख का विषय है कि राजनीति धर्म को प्रभावित कर रही है और परिणाम स्वरूप पंजाब में धार्मिक स्थलों पर हत्याकाण्ड और जघन्य अपराध हो रहे हैं। इस समय देश के दुश्मन भारत को तोड़ना चाहते हैं। सब हिन्दू—मुसलमान सिख ईसाई एवं अन्य सम्प्रदाय मिलकर इन विघटनकारी शक्तियों को परास्त करें तभी हमारी स्वतन्त्रता कायम रह सकती है। इस अवसर पर इसलाम की ओर से मौलाना शाहीन जमाली, ईसाईयों की ओर से पादरी जानलाल और सिखों की ओर से श्रीयुत सरदार तीर्थ सिंह जी ने अपने अपने भाई चारे के विचार रखे। एस० एस० पी० महोदय श्री गिरधारी लाल जी शर्मा ने विचार व्यक्त करते हुए सब को प्रेम और प्यार से मिलकर सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में रहने की अपील की। अन्त मे माननीय मन्त्री महोदय ने साम्प्रदायिक दंगों के फैलाने वालों को कौम और देश का दुश्मन बताया तथा सब को मिलकर भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा एवं इस सर्वतोभावेन उन्नति की प्रेरणा की। अन्त मे सुधारतीय सेवा संस्थान के अध्यक्ष महोदय डा० मुकेशकुमार ने सब का आभार प्रकट किया। यह उल्लेखनीय है कि श्रीयुत शादाब जी ने इसका सफल संयोजकत्व किया। श्री डा० मेराजुद्दीन एवं सिराजुद्दीन साहब की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

देश और धर्म बचाना है

प्राणों की आहुति दे करके देश और धर्म बचाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

जब ऋषि आये यहाँ उस समय छाया घोर अंधेरा था,
भेद-भाव और छुआ-छूत का पड़ा हुआ तो डेरा था,
तब ऋषि ने वेदों की ज्योति जलाकर किया उजेरा था,

उसी ज्योति को लेकर के घर-घर प्रकाश फैलाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

जाति धर्म पर लेखराम, श्रद्धानन्द जी ने प्राण दिया,
विधर्मियों की हठधर्मी का निर्भय हो अपमान किया,
वैदिक धर्म ही सर्वोपरि है—कह कर सीना तान दिया,

उनके इन बलिदानों की कीमत को हमें चुकाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

प्राण भले ही जायें किन्तु निज आन नहीं जाने देंगे,
देश धर्म की परम्परा पर आंच नहीं आने देंगे,
भारत को पाकिस्तान और खालिस्तान नहीं बनने देंगे,

जन जन के मन में देशभक्ति की जगमग ज्योति जगाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

हम दीपक की तरह जलेंगे जग को मार्ग दिखायेंगे,
सारे जगत को आर्य बनाओ यह उद्देश्य बनायेंगे,
वेद हमारा मूल धर्म है यह सन्देश सुनायेंगे,

"सरल" विश्व में ओ३म्प्रभु का ही ध्वज तो फहराना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

—राजेन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा "सरल"
आर्य समाज रामपुर धुन्सी (खीरी)

★

—आर्य समाज हस्तिनापुर के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान श्री इन्द्र राज जी ने दि० २-४-८८ को अपने प्रवचन में जनता से अनुरोध किया कि वे भौतिकवादी जीवन को आध्यात्मवादी जीवन में बदलें। उन्होंने मानव जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए श्रोताओं से कहा कि केवल मात्र आध्यात्म ही व्यक्ति के जीवन, परिवार, समाज और संसार में सुख, शान्ति और आनन्द का देने वाला है। हमें अपनी दिन चर्या में स्वाध्याय और ध्यान को स्थान देना चाहिए।

देश में आने वाले विदेशी धन की कहानी सरकार द्वारा दिये गए आंकड़ों की जबानी

(शेष पेज ६ से आगे)

खेद की बात तो यह है कि हमारी सरकार जानती है कि यह सब कुछ हो रहा है किन्तु फिर भी मुसलमानो और ईसाईयो को इस प्रकार हिन्दुओं का मत परिवर्तन करने की छूट देती है और संसदीय सलाहकार समिति की मांग पर भी इस धन पर प्रतिबन्ध लगाने लिये तैयार नहीं है आर्य हिन्दू समाज को समझ लेना चाहिये कि यह सरकार हिन्दू विरोधी है और चाहती है कि हिन्दू अल्पमत मे हो जाये इसीलिये उसने इन सबको छूट दे रखी है। इसके लिये हिन्दू समाज को अपने सभी हिन्दू सांसदो को इसके लिए बाध्य करना होगा कि वह इस विदेशी धन की आमद पर प्रतिबन्ध लगाने की संसद मे मांग उठायें यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनका घेराव किया जाय।

हमारे देश के राजनीतिक दल स्वयं को यहाँ की संस्कृति और बहुसंख्यक समाज से जुड़ने को तैयार नहीं है जबकि उन्हे चाहिए कि वे ऐसे विदेशी धन की आमद पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाने की मांग करे और यदि सरकार न माने तो सामूहिक रूप से सभी हिन्दू चाहे वे किसी राजनीतिक दल मे हो एक मन्च पर एकत्र होकर संसद भवन पर उस समय तक धरना देते रहें जब तक इस विदेशी धन पर सरकार प्रतिबन्ध लगाने के लिए तैयार न हो जाए और संसद मे विधेयक लाकर इसके लिए कानून न बनावे। मै समझता हू कि हमारे देश के सब राजनीतिक दलो के हिन्दू सांसद इस बारे मे गम्भीरता से विचार कर आवश्यक कार्यवाही करेंगे और इस देश तथा हिन्दू समाज को बचाने के लिए आगे आयेंगे।

आचार्य विशुद्धानन्द जी का हार्निया का सफल आपरेशन

वेदार्थ कल्पद्रुम के महान् रचयिता, आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य शिरोमणि श्री पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री गत कई वर्षों से हार्निया रोग से पीड़ित थे। आर्य समाज नयाबांस दिल्ली के मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी एवं आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री धर्मपाल जी के पावन सहयोग से दिनांक ७/४/८८ को डा० ताराचन्द अस्पताल, नई दिल्ली में कुशल सर्जनों द्वारा उनकी हार्निया का सफल आपरेशन हो गया है और वे, प्रभु कृपा से अस्पताल के प्राइवेट वार्ड के कक्ष नं० १९ में पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

उन्हें देखने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध जी एवं मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के साथ लखनऊ से श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ने अस्पताल में जाकर उनसे भेंट की और उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर श्री मनमोहन तिवारी ने आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ की ओर से ५००) रु० की धनराशि उनके फल आदि के सेवन के लिये भेंट की। 'आर्यमित्र' अपने आचार्य प्रवर के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है—"शतं जीव शरदो शतंवर्धमानः"
तुम जियो हजारों साल—

आवश्यकता है

"जादौन राजपूत ११८ से० मी० २२ वर्षीय स्वस्थ, सुन्दर एम० ए० (फाइनल) अध्ययनरत कन्या व २७ वर्षीय होम्योपैथिक प्राइवेट प्रक्टिशनर भाई हेतु सजातीय वर/वधू चाहिये।"

अमर सिंह जादौन, पुस्तकाध्यक्ष
नारायण कालेज, शिकोहाबाद –२०५१३५

पूर्वी उ०प्र० आर्यवीर दलका शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा फैजाबाद एवं पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल के तत्वावधान मे आर्य वीर दल का शिक्षक प्रशिक्षण शिविर दिनांक २२ मई ८८ से २९ मई ८८ तक गुरुकुल अयोध्या फैजाबाद मे लग रहा है। सभी आर्य समाजें कम से कम २ आर्यवीर इस शिविर में भाग लेने हेतु अवश्य भेजें तथा शिविर मे भाग लेने वालों की सूची मेरे पास भेजने का कष्ट करें। इस शिविर मे मौसमी बिस्तर, खाना खाने का बर्तन एवं कन्धे बराबर लाठी सफेद कमीज खाकी नेकर सफेद जूता सफेद मोजा अवश्य लावें। —प्रयागदीन जायसवाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल पूर्वी उ० प्र०, सुलतानपुर

शुद्धि समाचार

दिनांक २७/३/८८ को आर्यसमाज श्रद्धानन्द रोड न्यू कालोनी पलवल (फरीदाबाद) के उत्सव के शुभ अवसर पर मोहम्मद यूसुफ खां की शुद्धि पं० जय प्रकाश जी (भूतपूर्व इमाम–बिहार) के द्वारा हुई। शुद्धि के पश्चात मोहम्मद यूसुफ खाँ का नाम कृष्ण लोलू रखा गया। तथा स्वामी ओमानन्द जी महाराज एवं अन्य सज्जनों ने उन्हें सम्मानित किया। श्री कृष्ण लोलू ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए यह कहा कि मेवात के क्षेत्र में दूसरे मेव भाइयो को भी अपने वह-धर्म मे लाने का प्रयास करूंगा एवं अपना पूरा जीवन आर्य समाज के प्रचार मे लगाऊंगा। अशोक कुमार आर्य
मन्त्री, आर्य समाज पलवल (फरीदाबाद)

आवश्यक सूचना

(१)

प्रदेश की प्रत्येक समाजों से विनम्र निवेदन है कि अपनी-अपनी समाज के निर्वाचन को जिला सभा से प्रमाणित करवा कर ही सभा को भेजें, जिससे समय पर 'आर्यमित्र' मे प्रकाशित किया जा सके।

ऐसा न होने पर निर्वाचन बिना जिला सभा के प्रमाणित किये हुए सभा को प्राप्त होते हैं, उन्हे सभा को जिला सभा के पास भेजना पड़ता है, जिससे समय अत्यधिक लग जाता तथा अपव्यय भी होता है।

(२)

सभा से सम्बन्धित प्रत्येक जिला सभा को सूचित किया जाता है कि वर्ष १९८७ का संक्षिप्त वार्षिक विवरण ३० अप्रैल ८८ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि सभा की रिपोर्ट मे सम्मिलित किया जा सके।

(३)

वर्ष, १९८७ निर्विघ्न समाप्त हो गया है, अतः वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है 'दयानन्द संघ' के अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों, तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि अपना-अपना संक्षिप्त कार्य विवरण, १ जनवरी से ३१ दिसम्बर ८७ तक का, प्रत्येक दशा में सभा कार्यालय को ३० अप्रैल, ८८ तक भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी, सभा मन्त्री

धर्म के बिना राष्ट्रीय एकता असंभव

वेदमित्र हापुड़ वाले अम्बाला, छावनी

भारतवर्ष एक महान देश है और अतीत में यह वैदिक राष्ट्र के रूप में रहा। जहां से सम्पूर्ण विश्व को मानवता का सन्देश दिया जाता था, परन्तु आज सम्पूर्ण देश में अशान्ति फैल रही है। कहीं जातिगत, कहीं, दलगत, कहीं सम्प्रदायगत विद्वेष विषधर राष्ट्रीय एकता की आत्मा को डस रहा है। इसलिए संपूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए सभी चिन्तित हैं, परन्तु एकता स्थापित करने की जितनी चिन्तायें हो रही हैं, उतना ही भटकाव पैदा हो रहा है। क्योंकि देश में सहिष्णुता के स्थान पर असहिष्णुता शान्ति के स्थान पर उपद्रव, अशान्ति, मानवता के स्थान पर दानवता बढ़ रही है। क्यों कि धर्म को मानने वाले वह राजनीतिज्ञ आत्मायें आज कहां हैं— जैसे महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, सरदार पटेल, पुरुषोत्तमदास टंडन, नेता जी सुभाष बाबू, लाल बहादुर शास्त्री जिनके दर्शन मात्र के लिये जन मानस श्रद्धा से नत मस्तक होता था तथा देश की एकता के लिए अपने जीवन का सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहता था। क्योंकि उस समय एकता, समता, समानता और बन्धुता का आवेश देदीप्यमान हो रहा था।

राष्ट्रीय एकता के महर्षि दयानन्द कितने अधिक समर्थक थे, यह इसी से ज्ञात होता है कि उन्होंने देश की एकता के लिए समस्त देश-वासियों के परस्पर व्यवहार में हिन्दी को अपनाने का जोर दिया तथा १८०४ में एकता सम्मेलन का आयोजन देहली दरबार के समय किया था। वह हमेशा ही देश की एकता के कट्टर समर्थक रहे। परन्तु आज हमारे देश में भय, एक दूसरे के प्रति आक्रोश, घृणा बढ़ती जा रही है, इसके चिन्तन में हमें एक ही उत्तर मिलता है कि आज देश के शासक व नागरिक सभी अपने—अपने धर्म से दूर हो रहे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए हमें अपने पूर्वजों की भांति ही अपना राष्ट्र धर्म सुनिश्चित करना होगा। हमें वही कार्य अपनाना होगा जिसमें सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति दिखाई पड़े। अतः हमें पाश्चात्य वेश-भूषा, चकाचौंध से हटकर भारतीय संस्कृति तथा भारतीय दर्शन को देखना, समझना और अपनाना होगा।

आओ आज हम जन-जन में धर्म तथा स्वदेशी के सच्चे स्वरूप को पहुचावें तथा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो॥

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शक्तिनगर (मिर्जापुर) का चतुर्थ वार्षिकोत्सव २६ से २८ अप्रैल ८८ तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डा० व्यवस्तकुमार शास्त्री, पू० म० नारायण स्वामी क्रान्तिकारी आदि उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

मन्त्री आ० स०

भारत में सती प्रथा कभी भी नहीं रही

(पृष्ठ ३ का शेष)

जन अपनी विवेक हीनता के कारण इन अपराधियों पर माल्यार्पण कर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। अतः जन-जागरण और लोक-शिक्षण की आवश्यकता है!

'सहमरण' को 'सती चमत्कार' सिद्ध करने हेतु अनेक कल्पनायें की जाती रही हैं। उन्हीं में से एक है—'सती के शरीर से अग्नि का स्वतः प्रकट होना।'

अग्नि सर्वत्र व्याप्त है। सत्य है। हमारे शरीर मे भी है; यह भी सत्य है। परन्तु अरणि-मन्थन के समान वह प्रज्वलित नहीं हो सकती। जंगल के वृक्ष टकराकर अग्नि प्रज्वलित कर देते हैं। इस दावानल का कारण अत्यन्त शुष्क वृक्ष होते हैं, जिनमें जल तत्व प्रायः समाप्त हो चुकता है। हरी लकड़ी के मन्थन से आग नहीं निकलती। पत्थर के टुकड़ों से अग्नि प्रज्वलित हो सकती है; परन्तु हाड़-मांस के शरीरों से नहीं, क्योंकि हमारे शरीर में पंचतत्वों का समन्वय ही ऐसा है। इसके बिगड़ने पर आत्मा शरीर छोड़ देती।

दीपक राग से अग्नि का उद्दीपन होता है; यह कथा मात्र है। गायक का मुंह न जले और अग्नि उद्दीपित हो जाय; ऐसा असम्भव है। फिर इससे स्वतः अग्नि प्रज्वलन की बात सिद्ध नहीं होती।

सती-समर्थक कहते हैं—'चिन्ता, शोक और विरह के कारण शरीर गर्म हो जाता है। विशेष शोक में अग्नि उद्दीप्त भी हो सकती है।"

नहीं हो सकती है। भयंकर से भयंकर ज्वर में भी शरीर की उष्णता अग्नि उद्दीपन की स्थिति तक नहीं पहुंचती। तीव्र ज्वर में प्राणान्त हो जाता है; अग्नि प्रज्वलन नहीं।

अतः सती के शरीर से योगानल का प्रगटन किसी दुष्ट बुद्धि का अपलापन मात्र है। इसमें अल्प-बुद्धि जन ही फंसते हैं, विवेकी नहीं।

मानव शरीर की कोई भी ग्रन्थि, भले ही वह 'थायोराइड—ग्लैण्ड' क्यों न हो किसी भी परिस्थिति में कभी भी इतनी ऊष्मा नहीं दे सकती कि पञ्चतत्व से निर्मित यह शरीर स्वतः जल उठे।

*

वेदों की गलत व्याख्या

(पृष्ठ २ का शेष)

ईसाई है ? हम सब मानव हैं, सब भाई-भाई है। धर्म एक वैयक्तिक चीज है और उसका उद्देश्य है केवल मात्र अपनी आध्यात्मिक चेतना को जागृत करना अर्थात् व्यक्ति में जो श्रेष्ठ गुण हैं उन्हें विकसित करना। इसके अतिरिक्त धर्म का कोई उद्देश्य नहीं। जो समाज को खण्डित कर दे, जो समाज में त्राहि-त्राहि उत्पन्न कर दे, जिसके कारण समाज पर नृशंसता का लांछन लगने लग जाये, अनैतिकता का, आराजकता का, बर्बरता का लांछन लगने लग जाये; ऐसा कोई भी कार्य धर्म नहीं हो सकता। विधवा को आग मे जला देने की अनुमति देना बर्बरता है, अनैतिकता है, अत्याचार है और आज के युग मे मानव पतन की निम्नतम सीमा है।

स्वामी निरंजनदेव तीर्थ सर्वोच्च न्यायालय को चुनौती देकर हिन्दुओं के बड़े नेता बनना चाहते हैं। हिन्दुओं का प्रबुद्ध वर्ग ऐसे कमजोर, कायर, विवेकहीन व्यक्ति को कभी भी अपना नेता नहीं मानेगा। यह तो पाखण्ड है। जो जाति प्रथा पर प्रहार नहीं कर सके, जो हिन्दुओं के एक वर्ग को शूद्र मानकर उनके साथ श्रेष्ठ आचरण न कर सके, बराबरी का आचरण न कर सके, जो नारी और पुरुष का भेद करके नारी को सामान्य अधिकारो से वंचित करना चाहता हो, जो नारी पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करने के स्थान पर उन्हें शास्त्र सम्मत बता रहे हो, ऐसा व्यक्ति हिन्दुओं का नेता बने यह तो बड़े आश्चर्य की बात होगी। ऐसे व्यक्ति का विरोध होना चाहिए और सभी ओर से विरोध होना चाहिए, यह धर्म है, यह कर्त्तव्य है। हिन्दुओ उठो ! पाखण्डियों का विरोध करो, धर्मान्ध व्यक्तियों का विरोध करो, और दिव्य चेतना में स्थिर होकर मानव मात्र की सेवा में अपने को अर्पित करो और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को जागृत करो।

(दैनिक जागरण से साभार)

चित्र भेजने की तिथि बढ़ा दी गयी

ऐसा ज्ञात हुआ है कि जिला सभाओं ने अपने जिले की आर्य समाजों को अभी तक वार्षिक चित्र नहीं भेजे हैं, अतः सभा कार्यालय में चित्र भर कर भेजने की तिथि ३०-४-८८ तक बढ़ाई जाती है।

समस्त जिला सभा के मन्त्री महोदयों से अनुरोध है कि जिन्होंने अभी तक समाजों को चित्र न भेजे हों, शीघ्र भेजने की कृपा करें। तथा जिन समाजों को अभीतक न मिले हों शीघ्र सभा को लिखें जिससे कि शीघ्र भेजे जा सकें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज सदर बाजार झांसी

प्रधान...श्री शांति प्रसाद
मन्त्री.. श्री जगदीशचन्द्र बाघवा
कोषाध्यक्ष...ओमशरण गुप्ता

आर्य समाज नगरा, झांसी

प्रधान...श्री हरीसिंह जी यादव
मन्त्री...श्री आर० के सिंह परिहार
कोषा०...श्री बृजेन्द्रपाल सिंह जी

आर्यसमाज मऊरानीपुर झांसी

प्रधान...श्री रघुवीर सिंह परिहार
मन्त्री...श्री श्रीपालसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष...श्री सत्यप्रकाश शर्मा

आर्य समाज ऋषि कुन्ज झांसी

प्रधान . श्री भगवानदास जी
मन्त्री...श्री रामलाल आर्य वानप्रस्थी जी
कोषा०...श्री रमेशकुमार जी

आर्य समाज गंगापुर सिटी

प्रधान...श्री डा० रामजीलाल जी महरवाल
मन्त्री श्री नन्द किशोर सोनी
कोषा०...श्री गजानन्द जी गोयल

आर्य समाज शाहगंज, जौनपुर

प्रधान...श्री सन्त प्रसाद आर्य
मन्त्री.. श्री दयाशकर आर्य
कोषा० . श्री राधेश्याम आर्य

आर्य समाज बरवहा-बाजार बहराइच

प्रधान...श्री रामलखन गुप्ता
मन्त्री...श्री रामसुमिरन मौर्य विद्यावाचस्पति
कोषा०...श्री रमेशचन्द्र गुप्त

आर्यसमाज विकासनगर कुर्सी रोड लखनऊ

प्रधान...श्री सहदेव रस्तोगी
मन्त्री...श्री बन्शीलाल आर्य
कोषा०...श्री डेरीलाल आर्य

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४६९९३ ४५६६१
रजिस्ट्रेशन नं० एल. डब्ल्यू/एन पी ७६
वैसाख शुक्ल १
१७ अप्रैल रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

उत्तर प्रदेश की पुलिस को बधाई

दिनांक ६ अप्रैल को कानपुर के कांग्रेसी विधायक श्री विद्यावती राम बत्याल एवं उनके अंगरक्षक की नृशंस हत्या करके कानपुर से फरार हुए दोनों आतंकवादी रणजिन्दर सिंह तथा सतविन्दर सिंह २४ घन्टे के अन्दर ही बरेली मे पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गये। ज्ञातव्य है कि जैसे ही इस हत्याकांड की सूचना उ० प्र० के पुलिस महानिदेशक श्री आर० एन० गुप्ता को मिली, उन्होंने अपनी कुशल सूझबूझ से पूरे प्रदेश की पुलिस एवं खुफिया विभाग को सतर्क कर दिया और प्रदेश से बाहर जाने वाले सभी रास्तों को सील करके प्रत्येक वाहन की तथा आपराधिक अड्डों की जबरदस्त चेकिंग करनी शुरू कर दी। अन्ततः दोनों अभियुक्त मारुति कार सहित बरेली मे गिरफ्तार कर लिए गये इसके अतिरिक्त भारी मात्रा मे गोला बारूद कारतूसें मशीनगन तथा अन्य घातक हथियार बरामद हुये है अभियुक्तो से पूछताछ चल रही है।

अपराधियों को इतनी शीघ्रता से गिरफ्तार कर लेने से प्रदेश की पुलिस क्षमता पर चार चांद लग गये हैं और उन्होंने देश में अपनी सर्वोत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता की पुनः सिद्ध कर दिया है। इसके लिए प्रदेश के पुलिस महानिदेशक श्री आर० एन० गुप्ता सचमुच बधाई के पात्र हैं—

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आचार्य श्री विशुद्धानन्द जी सम्मानित

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्वर्गीय श्री दीपचन्द आर्य जी की पुण्य स्मृति मे नई दिल्ली में ३ अप्रैल १९८८ को संस्कृत के प्रचारक–प्रसारक "वेदार्थ कल्पद्रुम" के सुप्रसिद्ध मनीषी लेखक पं० विशुद्धानन्द मिश्र को आर्य समाज नया बांस के वार्षिकोत्सव पर स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रधान पं० राजवीर शास्त्री व मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य द्वारा "आर्य रत्न" से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इक्कीस हजार रुपये एक शाल एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। समारोह में श्री पं० क्षितिविनय भारती, श्री शिवराज शास्त्री, प्रो० सुरेन्द्रकुमार प्रो० रत्नसिंह, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री रामनाथ सहगल और अनेकों आर्य समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। उत्तर प्रदेशीय आर्य जनता की ओर से आचार्य प्रवर श्री पं० विशुद्धानन्द जी को शतशः बधाई।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

४०५, ४५९, ८११, १२५९, २८१८, ३८५१, ३८९३, ४०००, ४८७६, ५५४९, ५५५६, ५५६१, ६१०३, ६११२, ६४०५, ८०४७, ८२४८, ८३४६, ८७७०, ८७८४, ९१५३, ९४३७, ९४४०, ९४४३, ९६४८, ९८६१, ९८७६, १००४२, १०११९, ११५८६, ११८९३, ११८९५, ११८९६, १२१५७, १३०७०, १३०७६, १३०७७, १३०७८, १३०८५, १३०८७, १३४४१, १३४४२, १३७५०, १३७६१, १३७६३, १३७७९, १३७८२, १३७८५, १३७८६, १४२३३, १४२३५, १४२३६, १४२३८, १४२३९, १४२४०, १४२४१, १४२४३, १४२४५, १४२४७, १४२४८, १४२४९, १४ २५१, १४२५२, १४२५३, १४२५६, १४२५७।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वामी सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए ... आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए ... एम० पी० (...) ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ...

वैशाख शुक्ल १५, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक १ मई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

सम्पादक

मनमोहन तिवारी

*

...

... ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

*

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

*

वर्ष	९१
अङ्क	१७-१८

आर्यसमाज में अनार्यत्व एवं व्यक्तिवाद को कोई स्थान नहीं है

यह एक महान सन्यासी द्वारा संस्थापित विश्व की महान पुण्यमयी संस्था है

इसे राजनीति का अखाड़ा मत बनाओ–विद्वानों में मतभेद होते हैं पर–

ऋषिवर्य के अनुसार बहुमत का सदैव सम्मान करना होगा

–राजर्षि रणञ्जयसिंह (अमेठी राज्य)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान एवं सांसद आर्यजगत के वयोवृद्ध नेता राजर्षि रणञ्जयसिंह ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं उ० प्र० के वर्तमान प्रधान श्री प० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के विरुद्ध कतिपय व्यक्तियों द्वारा सुनियोजित ढंग से चलाए जा रहे निन्दनीय एवं मिथ्या आरोपों से युक्त अभियान पर अपनी दुःखमयी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 'आर्यमित्र' के विशेष सम्वाददाता से अपनी भेंटवार्ता में कहा——

"उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा देश की मान्य प्रतिनिधि सभा मानी जाती है। इसका अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है–मैं स्वयं इसका कई वर्षों तक प्रधान रहा। अतीत का विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि एक समय था जबकि सारा प्रदेश अवैदिक रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। मेरे राजघराने (अमेठी) में ही दशहरे के अवसर पर बकरों का काटा जाना पुण्य समझा जाता था। यह आर्य समाज की ही प्रेरणा थी कि आज से ५० वर्ष पूर्व मेरे अग्रज राजकुमार रणवीरसिंह ने "जीव रक्षिणी सभा" की स्थापना की और पशुबलि को बन्द कराया।

उस समय सारे देश में उर्दू का बोलबाला था। ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर हमने 'उर्दू उन्मूलनी सभा' का निर्माण किया और हिन्दी का प्रचार किया। प्रतिनिधि सभा के समर्पित कार्यकर्ताओं एवं प्रचारकों के अकथनीय प्रयास का ही यह परिणाम है कि प्रदेश से अनेकों कुरीतियों का उन्मूलन हो चुका है। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के महान अतीत को स्मरण करते हुए वयोवृद्ध नेता ने बताया कि जब जब आर्य धर्म पर कोई संकट आया है इसी शिरोमणि सभा के निर्देशन में आर्यवीरों ने इकट्ठे होकर अपने बलिदानों से आर्यसमाज के इतिहास को अमर बनाया है। इस शिरोमणि संस्था को सदैव महान सन्यासियों महात्मा नारायणस्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द आदि का वरद आशीर्वाद प्राप्त रहा है।

राजर्षि ने कतिपय क्षुद्र विचारों वाले तथाकथित आर्यसमाजियों द्वारा पत्रिका जो आदि के माध्यम से स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के विरुद्ध निम्न स्तर का झूठा प्रचार करने की दूषित भावना को तिरस्कृत करते हुए कहा–कि आर्यसमाज की इस संक्रमण की घड़ी में मैं देख रहा हूं दो नक्षत्रों का उदय हुआ है एक सूर्य है तो दूसरा चन्द्र। स्वामी आनन्द बोध जी सूर्य के समान हैं, सन्यासी हैं मेरे मस्तक पर उनका स्थान है जिन्होंने अपनी कर्मठता से आर्यसमाज को नव ज्योति प्रदान की है तो दूसरे उत्तरप्रदेशीय ... के वर्तमान उदीयमान मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं जिनका स्थान मेरे हृदय में है। इनकी कार्यक्षमता और क्षमता को मैं बखूबी जानता हूं। मुझे विश्वास है इन दोनों हाथों में आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है। इस अवसर पर उन्होंने कानपुर से प्रकाशित पत्रिका 'ब्रह्मचारी' में डा० प्रशस्यमित्र के उस लेख की अत्यन्त भर्त्सना की जिसमें मिथ्या मनघड़न्त आरोप लगाकर प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा की छवि को धूमिल करने का कुत्सित प्रयास किया है। उन्होंने सार्वदेशिक तथा उ०प्र० सभा के वर्तमान नेतृत्व के प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए अपना अमर आशीर्वाद प्रदान किया है।

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

शोक समाचार

अभी-अभी मेरठ से दुःखद समाचार प्राप्त हुआ है कि उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की पूज्यनीया माता जी का मेरठ में आकस्मिक निधन हो गया वे अतिधर्मपरायणा विदुषी आर्य महिला थीं वैदिक धर्म के लिए उनका सारा जीवन समर्पित रहा। वे एक महान पुत्र की वन्दनीया आर्य जननी थीं। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

सभा कार्यालय उनके शोक में बन्द कर दिये गये ।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सम्पादकीय

लखनऊ—वैशाख शुक्ल १५ संवत् २०४५, रविवार १ मई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

अर्धसत्य

कामराजनगर [मद्रास] में कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए हमारे राष्ट्र नायक श्री राजीव गांधी ने पाकिस्तान से मित्रता की तीन शर्तें रखी हैं—(१) पाकिस्तान अपना ऐटमी कार्यक्रम बन्द कर दें (२) पंजाब में दखलन्दाजी करना छोड़ दें (३) और सियाचिन ग्लैशियर पर टकराव का रास्ता न अपनायें । पाकिस्तान ने इस पर अभी तक न कोई प्रतिक्रिया व्यक्त की है और न करने की आशा है । वे अपनी राह चलते जा रहे हैं मगर हम सोचते हैं—आजादी के चालीस वर्ष बीत गये हम आज तक राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के स्वप्न को साकार नहीं बना सके । विपरीत इसके एक ओर आतंकवाद के खूनी पन्जे ने हमारे पंजनद प्रदेश को त्राहि-माम् बना रखा है तो दूसरी ओर गोरखालैण्ड की आड़ में हिंसा का दुष्ट दानव भारत की इस पवित्र सीमा पर भी सिर उठाता आ रहा है । एक समय था जब दक्षिण पूर्वी एशिया से लेकर भारत भूखण्ड ही नहीं अपितु पश्चिम एशिया के अधिकांश भागों पर ब्रिटिश साम्राज्य का आधिपत्य था । भारत के मनीषियों ने, आजादी के दीवानों ने, जिनमें ऋषिवर्य दयानन्द का नाम प्रमुखता से लिया जायेगा, जिन्होंने कांग्रेस की स्थापना के पूर्व ही स्वतन्त्रता का उद्घोष दे दिया था, अपने अथक बलिदानों एवं प्रयासों से इस विशाल देश को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाई । आजादी की इस लहर ने ब्रिटिश दासता में पिसते, कराहते, चीखते-चिल्लाते लगभग इन सभी देशों को स्वाधीनता दिलाने में प्रमुख भूमिका अदा की । किन्तु जैसी स्थिति आज हमारे देश की बन गई है वैसी स्थिति स्वतन्त्र हुए अन्य किसी देश में दिखाई नहीं पड़ती । समस्याएँ वहां भी हो सकती हैं, और हैं, किन्तु राष्ट्रीय एकता और अखण्डता जैसी कोई समस्या इन स्वतन्त्र हुए देशों में देखने को नहीं मिलती है । इसका कारण बहुत स्पष्ट है—इस बीसवीं शताब्दी में भी धर्म मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला मूलतत्त्व है । क्या कारण है वही हिन्दू जब मुस्लिम समुदाय में दीक्षित हो जाता है तो पाकिस्तान और मक्का के गीत गाने लगता है । हमने देखा भारतीय मूलवंश के ही लोगों ने वैदेशिक धर्म अपना कर—अपने लिए अलग देश का निर्माण करा लिया और आज भी आत्मनिर्णय के सिद्धान्त की दुहाई देकर पृथकता के स्वप्न देख रहे हैं । इस इतिहास को झुठलाया नहीं जा सकता कि सिक्ख हिन्दू ही हैं । हिन्दू जाति की रक्षा के लिए अजेय सैन्यशक्ति के रूप में गुरुओं ने हिन्दुओं से ही इस वर्ग को क्षात्र शक्ति के रूप में खड़ा किया था किन्तु जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो उसे हतभाग्य के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है । जो राष्ट्रीय एकता, अखण्डता हमारे खून में शामिल होनी चाहिये थी—उसके लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है जगह २ उसका रोना रोया जा रहा है जबकि अन्य देश, इससे कहीं बहुत ऊपर उठकर प्रगति और शक्ति के पुंज बनते चले जा रहे हैं, हमें ललकार रहे हैं, मुट्ठी भर हैं मगर ताल ठोंक रहे हैं । और हम, न जाने कितने साल हो गये दुनियां को यही बतलाते घूम रहे हैं—हथियार मत दो—हमारे ऊपर हमला होगा—शक्ति सन्तुलन बिगड़ेगा "और वह हैं कि कानों में रुई ठूंस रखी है तुम चिल्लाते रहो, हम अपनी मन्जिल चले जा रहे हैं—एक दिन देख लेंगे ? ।

इसलिये हम अपनी प्यारी आर्य जाति को सचेत करना चाहते हैं कि तुम्हें आमूल चूल नष्ट करने के लिये कितने मीठे और कड़वे आयाम, कितने साम–दाम–दण्ड–भेद चलाये जा रहे हैं । एक ओर महाविनाशकारी प्रलयंकारी ऐटमी हथियारों के जखीरे इकट्ठे किए जा रहे हैं । तो दूसरी ओर प्यार से पुचकार से सोने की अशर्फियां दिखाकर हमें अपनी ओर बुलाया जा रहा है । धर्म की दुहाई देकर हमें कत्ल करके बहिश्त के फतवे दिए जा रहे हैं । सारे अरब देशों ने भारत में इस्लामीकरण को गति देने के लिए पेट्रोडालर की थैलियां खोल दी हैं । अभी अभी समाचार मिला है कि दो अरब देश लीबिया और सऊदी अरब पाकिस्तान के काहुटा ऐटम संयन्त्र के लिये भरपूर आर्थिक सहायता दे रहे हैं । एक तरफ भारत तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में निवास करने वाली गरीब जनता को आर्थिक प्रलोभन देकर इस्लामीकरण की दिशा में सहायता दी जा रही है तो दूसरी तरफ इन्हीं अरब देशों के पैसों पर—पाकिस्तान सशक्त परमाणु सम्पन्न देश बन कर इस्लामिक परमाणुबम बनाने में जुटा हुआ है ताकि जहां भी इस्लाम खतरे में हो इस बम का इस्तेमाल किया जा सके । एक और मीठा षड्यन्त्र चल रहा है—जहर से भरा हुआ प्यार का प्याला—मुस्लिम युवकों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है कि जहाँ तक हो सके हिन्दू लड़कियों को बहलाकर फुसलाकर भ्रष्ट करके उनसे शादी करने का । कई ऐसे उदाहरण सामने आये हैं कि मुस्लिम युवकों ने छद्मवेश में आर्य धर्म की प्रशंसा के गीत गाकर शुद्धि कराई और हिन्दू लड़कियों से विवाह रचाने के पश्चात् अरब देशों में ले जाकर उन्हें फिर मुस्लिम बना लिया । यदि इसी तरह चलता रहा तो विनाश में कितने दिन लगेंगे ? ? ।

इसलिए हमारे राष्ट्र नायक ने मित्रता की जो तीन शर्तें रखी हैं वे अर्धसत्य हैं । अगर वे, शायद कदाचित सम्भवतः—भूलकर आपकी यह तीनों बातें मान भी लें तो उनका धर्म—जो काफिरों को कत्ल करने की जगह जगह इजाजत देता है—वह कहाँ समाप्त हो जाएगा । आपके विनाश के दूसरे तरीके वे निकाल लेंगे । इसलिए समस्त हिन्दू (आर्य जाति) से हमारा निवेदन है कि आर्य समाज के व्यापक कार्यक्रम को अपनाइए । और इसे तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग दीजिए । इस सहयोग को देने का अर्थ होगा प्रखर राष्ट्रीयता को सहयोग देना । अर्धसत्य को पूर्णसत्य में परिवर्तित कर देना । राष्ट्र की एकता अखण्डता को सदा सर्वदा के लिए अक्षुण्ण बना देना ।



कामः ऊर्वः इव प्रपथे

[श्री विक्रमादित्य जी 'बसन्त' बी. ६४ राजाजीपुरम्, लखनऊ]

आज विश्व में काम बड़वानल की भांति फैलता चला जा रहा है। काम मानव जीवन का अंग तो हो सकता है पर सर्वाङ्ग नहीं। मानव ने अपने अज्ञान के कारण इसे जीवन में प्रधानता देकर प्रत्येक क्षेत्र में इसका इतना व्यापक प्रचार और प्रसार किया है कि आज मानव इसे ही आनन्द का स्रोत समझ कर इसके पीछे व्याकुल होकर द्रुतगति से दौड़ रहा है। आज व्यापार और मनोरंजन के तौर पर जो भी विज्ञापन वितरित किये जाते हैं और प्रदर्शन किये जाते हैं वे सबके सब केवल कामोत्तेजक हैं। फैशन के नाम पर किये गये कृत्रिम शृंगार, आधुनिक वेषभूषायें विशेष रूप से नारियों की बाह्य सर्व सज्जा केवल कामोत्तेजना को भड़काने वाली है। लगभग समस्त विज्ञापनों में नारियों के नग्न अथवा अर्द्धनग्न शरीर का प्रदर्शन किया जा रहा है। उन्हें भोग्या रूप प्रदान कर कामाग्नि को प्रदीप्त किया जा रहा है। संगीत का भी यही अनुरूप कर दिया गया है और जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है, वह भी अधिकांश रूप से अश्लील है। अभद्र दर्शन, अभद्र श्रवण, अभद्र पठन पाठन सबके सब केवल कामाग्नि को प्रज्ज्वलित और प्रदीप्त कर रहे हैं। वेद इस सत्य का दिग्दर्शन कराते हुए इसका निवारण अपनी प्रार्थना शैली में इस प्रकार कराता है —

आ नो भर भगमिन्द्र द्युमन्तम्
नि ते देष्णस्य धीमहि प्ररेके ।
ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे
तमा पृण वसुपते वसूनाम् ॥
(ऋ ३।३०।१९)

इस मन्त्र का ऋषि विश्वामित्र है और देवता इन्द्र है। इन्द्र शब्द का प्रयोग इस मन्त्र में सम्बोधन के रूप में किया जा रहा है—

(इन्द्र) परम इन्द्र जहां ऐश्वर्यों का दाता और प्रदाता है, वहां शत्रुओं को परास्त करने की क्षमता भी रखता है। इन्द्र के ऐश्वर्य सुभगरूपा हैं जिनमें षड् रिपुओं का दमन किया जाता है। इन्द्र जहां भौतिक ऐश्वर्य प्रदान करता है, वहां आध्यात्मिक सुभगों का भी एकमात्र वही प्रदाता है। अतः आध्यात्मिक ऐश्वर्य दाता से प्रार्थना के द्वारा विश्व का मित्र बनने की आकांक्षा रखने वाले, इस ऋषित्व को ग्रहण करने के अभिलाषी कहते हैं—

(नः द्यु+मन्तम् भगम् आ भर) हमें द्युतिमय, प्रकाशमय ऐश्वर्य, ज्योतिर्मय भग प्रदान करो। वे दिव्य सुभग हैं, वैराग्य, ब्रह्मचर्य ज्ञान, सन्तोष, स्नेह और विनम्रता। वैराग्य से काम, ब्रह्मचर्य से क्रोध, ज्ञान से मोह, संतोष से लोभ, स्नेह से द्वेष और विनम्रता से अहंकार रूपी शत्रुओं का नाश होता है और आत्मा में इन्द्रत्व आता है।

मानव जीवन में ऐसी भी स्थितियां और परिस्थितियां आती हैं जब प्रत्यक्ष के अभाव में संशयात्मक भावनायें शंकाओं का रूप ले लेती हैं और मनुष्य कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता है। इन अवस्थाओं में विश्व का कल्याण करने वाले अपने व्यक्तिगत जीवन में क्या करें तो वेद कहता है—

(प्र+रे के ते देष्णस्य नि+धीमहि) प्रशका में तुझ दिव्यदाता का ही निरंतर ध्यान करें। परमात्मा सर्व व्यापक है, सर्वान्तर्यामी है एतएव सर्वज्ञ रूप में त्रिकालदर्शी है। उसे प्रत्येक वस्तु, पदार्थ जीव और रचना आदि का प्रत्यक्ष ज्ञान है अतएव जो उसका सतत ध्यान करता है, उसे जब मनवांछित का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है तो उसे न कोई शंका होती है और न कोई जिज्ञासा—जिसके समाधान के लिए उसे व्याकुल रहना पड़ता हो।

मानव जीवन की वास्तविक परीक्षा ही कामजित होने में है क्यों कि (कामः ऊर्वः इव पप्रथे) काम बड़वानल की भांति फैलता जाता है। एकबार काम के वशीभूत होकर उसके प्रहार से बचना सहज नहीं होता। चाहे पुरुष हो चाहे नारी—ये दोनों काम के वश में होकर जघन्य अपराध करते हैं। काम वासना की अग्नि इन्हें निरन्तर जलाती है। भोग भोगने से और भी बढ़ते जाते हैं। इनकी रोकथाम का एकमेव उपाय है आध्यात्मिकता जो जीवन में दिव्य ज्ञान से सत्य को उदित करके वैराग्य को स्थापित करता है। इस शाश्वत सत्य को वेद ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—(वसूनाम् वसुपते तम् अस्मे आपृण) हे सकल वसुओं के स्वामी! समग्र ऐश्वर्य प्रदाता उस काम का हमारे भीतर शमन कर हमें उस से तृप्त कर दे।

परमात्मा जब हमारा भीतरी चक्षु खोलता है जिसे ज्ञान लोचन कहते हैं तो इस भीतर नेत्र से अपना कल्याणकारी जिसकी संज्ञा वेद के शब्दों में 'शिव' है, काम को भस्म कर देता है। काम की तृप्ति जिस वैराग्य से होती है, उसके लिए मनुष्य प्रणीत होना पड़ता है। जिन आत्माओं को परमात्मा से प्रीति हो जाती है, उनका प्रेम ही 'इश्क हक' अर्थात् यथार्थ प्रेम होता है। जगत में कामासक्ति का सम्बन्ध शारीरिक सौंदर्य और युवावस्था तक सीमित रहता है। यह नश्वर, परिवर्तनशील और स्वार्थ ग्रस्त है जब कि परमात्मा की प्रीति अटूट तृप्त करने वाली और आनन्द मग्न बनाने वाली है। काया के मोह ग्रस्त जब काया के भीतर यह अस्थि पिंजर, मल मूत्र आदि को आत्मना ग्रहण कर लेते हैं तो सकल शारीरिक आसक्तियां ज्ञानाग्नि में भस्मीभूत हो जाती हैं। वह परम तत्व अशरीरी, नस नाड़ी के बन्धन रहित, शुद्ध पवित्र है। उसकी प्रीति में ही शांति है, आनन्द है अतएव राग विमुक्त वैरागी ही अपने को कामाग्नि से जलाने में बचा पाता है। विश्व के मानवों को भी इस अग्नि से जलने से बचाने का एकमेव उपाय है, उनके जीवन में वेद प्रतिपादित आध्यात्मिकता लाना।

★

भूल सुधार

आर्यमित्र दिनांक १०-४-८८ के पृष्ठ–१० पर 'रिवीजन निरस्त' शीर्षक के अन्तर्गत वर्णित उल्लेख सं० २ में प्रेस की त्रुटिवश केस नं० ९९४/८५ अशुद्ध छप गया है। पाठक वृन्द उसके स्थान पर केस नं० ४९४/८५ पढ़ें।

प्रबन्ध सम्पादक

"हिन्दी के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान"

(ले०–श्री राधेमोहन, उपप्रधान आर्य समाज प्रयाग)

आज स्वाधीनता प्राप्ति के ४० वर्षों के पश्चात् तथा हिन्दी का समुचित विकास व समृद्धशाली हो जाने पर भी वह राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकी है और अंग्रेजी को पराधीनता व मानसिकता से मोहासक्त तथाकथित विद्वानों द्वारा अग्रेजों की अंग्रेजी को भारत में सर्वदा के लिए उसे राजभाषा के सिंहासन पर अभिषिक्त रहने देना चाहते हैं। जिसके कारण लार्ड मैकाले की कुटिल नीति पर यथावत् फलवती हो रही है। जैसा कि उसने अंग्रेजी शिक्षा का सूत्रपात करते हुए उसकी आरम्भिक भूमिका में कहा था–मेरे द्वारा प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग को जन्म देगी जिसका रुधिर और रंग तो भारतीयों का होगा किन्तु अपनी रुचि, सम्मति, आहार, व्यवहार और बुद्धि से तो अंग्रेज होंगे। किन्तु आज तो शताधिक वर्षों पूर्व (जब हिन्दी अविकसित भाषा के रूप में पढ़ी व जानी जाती थी) हिन्दी के प्रारंभिक काल में अहिन्दी भाषी प्रदेश में उत्पन्न हुए एक नरपुंगव ने हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार का अपना मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया था। और हिन्दी को आर्य भाषा कहकर बड़ी श्रद्धा से सम्बोधित किया जाता था। उस नरपुंगव महापुरुष का नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के समक्ष भी भाषा की जटिल समस्या विद्यमान थी। उनकी मातृभाषा गुजराती थी और वे देवभाषा संस्कृत के अप्रतिम विद्वान थे। परन्तु जब उस दिव्य द्रष्टा दयानन्द ने देखा कि प्राचीन भारतीय संस्कृति की रक्षा में ही राष्ट्र की रक्षा है और यह किसी अभारतीय भाषा द्वारा सम्भव नहीं हो सकती, तब उस समय उन्होंने समाज सुधार के अपने समस्त कार्यों में आर्य भाषा हिन्दी को शीर्षस्थ स्थान दिया। और अपने समस्त ग्रन्थ मुख्यतया हिन्दी भाषा में ही लिखा। उनका अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में ही पढ़ा जाता है। महर्षि दयानन्द के पूर्व व उत्तरवर्ती महापुरुषों में हिन्दी के प्रति इस प्रकार की निष्ठा नहीं दिखाई पड़ती। उदाहरणार्थ–समर्थ गुरु रामदास व लोकमान्य तिलक ने मराठी में, सिख गुरुओं के ग्रन्था गुरुमुखी तथा महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एवं बंकिम बाबू ने बंगला भाषा मे अपने ग्रंथों का सृजन किया था। राष्ट्ररत्न पं० जवाहरलाल नेहरू जी ने लगभग समस्त रचनायें मूलरूप से अग्रेजी में ही लिखा है। राष्ट्रपिता महात्मागांधी की अधिकांश मौलिक कृतियां गुजराती में ही लिपिबद्ध हैं। आगे चलकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भाषा के प्रश्न पर महर्षि दयानन्द की नीति का अनुसरण करते हुए हिन्दी के प्रचार में उल्लेखनीय कार्य किया।

आज हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने का बहुविध प्रयत्न हो रहा है। किन्तु आज से लगभग ९२ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को राज कार्यों में प्रचलित कराने के लिए २०० स्मृति–पत्र तत्कालीन शिक्षाकमीशन के अध्यक्ष डा० हन्टर साहब तथा अवध के ले० गवर्नर सर एल्फ्रेड कामिन्स लायल आदि उच्चाधिकारियों की सेवा में विभिन्न आर्य समाजों द्वारा प्रेषित किये थे। जिनमें हिन्दी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की प्रार्थना की गई थी। और हिन्दी गुण-गरिमा की प्रशंसा की गई थी।

थियोसाफिकल सोसाइटी के संस्थापक श्री कर्नल अल्काट द्वारा भेजा हुआ स्काटलैंड के पीटर डेविडसन का एक पत्र महर्षि दयानन्द को १३ जून १८७९ को प्राप्त हुआ था। जिसमें उन्होंने अंग्रेजी में वेदभाष्य कराने का अनुरोध किया था। महर्षि दयानन्द की प्रबल उत्कंठा थी कि वेदों का प्रचार विश्वभर मे शीघ्रातिशीघ्र हो जाय किन्तु उनकी हिन्दी की अनन्य निष्ठा ने अंग्रेजी में वेदभाष्य के लिए उत्साह नहीं दिखाया। उनके पत्र का उत्तर आप अविकल रूप में पढ़ें—

'कल्पना कीजिए कि वेद भाष्य के लिए सब प्रबन्ध सफलतापूर्वक कर दिये जायें तो भी सबसे बड़ी बाधा यह है कि भारत की आर्य जनता (अंग्रेजी के विद्यार्थी) मेरे वेदभाष्य के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित होने पर संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन त्याग देंगे। और वेदभाष्य को समझने के लिए संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन जिसको वे कर रहे हैं और जो मेरा मुख्य उद्देश्य है नष्ट हो जायेगा। मेरा विचार आपको अंग्रेजी अनुवाद करने से रोकने का नहीं है। क्योंकि बिना अंग्रेजी अनुवाद के यूरोपियन जातियां सत्य प्रकाश को नहीं पा सकतीं किन्तु पहले उपर्युक्त बातों पर ध्यान दीजिए–(महर्षि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन पृष्ठ १५३)

महर्षि के समय देशी रियासतों में अंग्रेजी का प्रबल्य था और राजकुमारों को विशेष रूप में अंग्रेजी में पठन-पाठन की व्यवस्था थी। महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख शिष्य उदयपुराधीश महाराणा सज्जन सिंह के दिनचर्या के नियम लिखते हुए हिन्दी की प्रगति की ओर अंगित करते हुए लिखते हैं कि "इससे (हिन्दी) विरुद्ध भाषाओं की प्रवृत्ति वा उन्नति न करें व करावें। किन्तु जितना दूसरे राज्य के सम्बन्ध में यदि वे इस भाषा को न समझ सकें, उतने ही के लिए उन भाषाओं का यत्न रखें जो वह प्रबल राज्य हो" (पत्र व विज्ञापन पृष्ठ ३७१)

इसी प्रकार का एक और पत्र महाराजधिराज जोधपुर नरेश यशवंत सिंह के नाम से मिलता है कि "महाराजकुमार के सब संस्कार वेदोक्त कराइयेगा। २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रखकर प्रथम देवनागरी भाषा और पुनः संस्कृत विद्या जो कि सनातन आर्ष ग्रन्थ हैं, जिनके पढ़ने में परिश्रम व समय कम होवे और महालाभ प्राप्त हों, इन दोनों को पढ़ें। पश्चात् समय हो तो अंग्रेजी भी। जो कि ग्रामर और फिलास्फी के ग्रन्थ है, पढ़ने चाहिए"
(पत्र व विज्ञापन पृष्ठ ४६५)

उपर्युक्त पत्रों के उद्धरणों से महर्षि दयानन्द की हिन्दी के प्रति अनन्य निष्ठा तथा दूरदर्शिता का सहजतया भान हो जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द सरस्वती द्वारा प्राप्त आर्ष ज्ञान व वेदों को समस्त विश्वभर में प्रसारित करने के लिए १८७५ ई० में आर्य समाज की स्थापना की थी। और अपने समस्त अनुयायी आर्य सभासदों को संस्कृत व हिन्दी ज्ञान की अनिवार्यता के लिए आर्य समाज के ३९ वें उप नियम में आर्यों को स्पष्ट आदेश दिया है कि–प्रत्येक आर्य और आर्य सभासद् को संस्कृत

[शेष पृष्ठ ९ पर]

मुक्ति एक समीक्षा

(श्री सुर्यबली पाण्डेय सरैया-कुटीर बक्शे–जौनपुर)

मनुष्य शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, सुबोध हो या अबोध, धनी हो अथवा निर्धन और सबल हो किंवा निर्बल, किसी भी अवस्था में रह रहा हो पर उसके मानस में मुक्ति प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा सदा तरंगित होती रहती है। वह सदा इस भावना से परिपूर्ण रहता है कि उसके जीवन का चिर लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। यह और बात है कि वह मुक्ति या मोक्ष के स्वरूप को जानता है कि नहीं ? किन्तु जन्म जन्मान्तर से उसके चित्त पर तथा कथित मुक्ति का जो संस्कार पड़ता रहा है वह उससे जाने अथवा अनजाने में भी सदा प्रभावित होता आ रहा है। यही कारण है कि मुक्ति के लोभ का सम्वरण करने में वह असमर्थ रहता है। इतना ही नहीं अपितु किसी जीवन में वह मुक्तावस्था के सुखद स्वाद का आस्वादन कर चुका है जिसकी छाप उस पर अमिट रूप से पड़ चुकी है। यही कारण है कि वह गूंगे के गुड़ की भांति भाड़े उसके स्वाद को व्यक्त न कर सके पर उसके प्राप्त करने की लालसा को वह त्यागने में असमर्थ है। देखें वह मुक्ति क्या हैं ? और उसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ?

मुक्ति या मोक्ष छुटकारा का नाम है। "मुञ्चन्ति पृथक भवन्ति जनः यस्यां सामुक्ति"। अर्थात् जिसमें मनुष्य छूटते और पृथक होते हैं उसे मुक्त कहते हैं। किससे छूटते और पृथक होते हैं ? जिसमे छूटने और पृथक होने की उसके अन्दर सदा से अभिलाषा रहती है। स्पष्ट है कि मानव ही नहीं, कोई भी प्राणी दुःख को दूर भगाने की सदा चेष्टा करता तथा सुख की प्राप्ति में सदा पुरुषार्थ लगाता रहता है। इसी कारण सांख्यकार महर्षि कपिल ने अपने दर्शन के प्रथम सूत्र में ही "अथ त्रिविधि दुखात्यन्त निवृत्ति रत्यन्त पुरुषार्थः" का उद्घोष किया है। अर्थात् दैहिक दविक और भौतिक जो तीन प्रकार के कष्ट हैं, उनसे अत्यन्त छुटकारा पाने की चेष्टा का नाम ही अत्यन्त पुरुषार्थ है। इस अत्यन्त पुरुषार्थ का परिणाम है दुखों की अत्यन्त निवृत्ति। और दुखों की अत्यन्त निवृत्ति का ही नाम है मुक्ति अथवा मोक्ष। यह भी सत्य है कि जब किसी वस्तु से निवृत्ति होगी तब उसके साथ ही उसके विलोम पदार्थ की प्रवृत्ति भी हो जायगी। जब किसी स्थान पर वायु उष्ण होकर ऊपर उठती है और स्थान रिक्त करती है तब दूसरी वायु तुरन्त उस स्थान को अपनी सत्ता से परिपूर्ण कर देती है। इसी प्रकार जब दुःख की अत्यन्त निवृत्ति हो जाती है तब सुख की अत्यन्त प्रवृत्ति भी स्वयमेव हो जाया करती है। अत्यन्त सुख का ही नाम आनन्द है। सांसारिक पदार्थों से मात्र किञ्चित सुख की उपलब्धि सम्भव है पर आनन्द तो आनन्द स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति से ही सम्भव है। अतः मुक्ति या मोक्ष जीवन की वह प्रक्रिया है जिस में सृष्टि कुल-चूड़ा-मणि-मानव अपने सम्पर्क में आये हुए समस्त दुखों से विमुक्त हो आनन्द के धाम परम पुरुष परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त कर अत्यन्तानन्द की अनुभूति करने लगे। इसीलिए मनीषियों ने जीव का दुखों से छूटना सुख को प्राप्त करना और लम्बी अवधि तक ब्रह्म में रहना मुक्ति का लक्षण बतलाया है।

मुक्ति साध्य है। उसके लिए साधन अपेक्षित है। बिना साधन के साध्य का सिद्ध होना सम्भव नहीं है। अतः किन साधनों से जीवन के अन्दर उक्त प्रक्रिया आयेगी ? यह विषय विमर्श है।

सर्व प्रथम मुक्ति की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपने नित्य के क्रिया–कलाप में परिवर्तन लाना पड़ेगा। मनुष्य जब कभी किसी कार्य को करने के लिए उद्यत होता है तब उसके मानस में संकल्प और विकल्प का प्रादुर्भाव हो जाता है। सात्विक चित्त का संकल्प प्रायः ईश्वर प्रदत्त होता है जो सदा शुभाचरण की प्रेरणा प्रदान करता है। पर विकल्प मानव की वासनाओं की देन होती है जिससे मानव प्रायः पतनोन्मुख होता है। (कभी-कभी वासनाभ्यासी मानव का संकल्प भी विपरीत दिशा का कारण बन जाता है।) संकल्प ईश्वर सत्ता और विकल्प उसका प्रतिरोध है। अतः मुक्ति पथावलम्बी के लिए ईश्वराज्ञानुकूल आचरण करना और तदनुकूल अपने जीवन को ढालना प्रथम कर्त्तव्य है।

२–जीवन में वैराग्य के आगमन से मुक्ति का पथ सुगम बनता है। वैराग्य क्या है ? विवेक के द्वारा सत्यासत्य को भलीभांति समझ कर उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और उसके विपरीत का त्याग करना वैराग्य कहलाता है। धर्म का आचरण और अधर्म का परित्याग वैराग्य है।

३–सत्संगति के सदुपदेश तथा सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से सद्ज्ञान का अर्जन कर सदा शुभाचरण में तत्पर रहना और प्राणिमात्र में सम भाव रख कर सबके अन्दर एक ही प्रभु की दिव्य ज्योति का दर्शन करना मुक्ति का सुगम सोपान सिद्ध होता है।

४–मुक्ति मार्ग के पथिक को षट् सम्पत्ति का धनी होना चाहिए। अर्थात् उसके जीवन में शम, दम, उपरति, तितीक्षा, श्रद्धा और समाधान का होना परमावश्यक है। अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना 'शम' है। अपने ज्ञान कर्मेन्द्रियों को नियन्त्रित और निग्रहीत रखना 'दम' है। दुराचारी और हीन कर्मी जनों से अपने को सर्वथा पृथक रखना 'उपरति' है। अपनी की गई निन्दा स्तुति से प्रभावित न होना, हर्ष और शोक अथवा हानि और लाभ की अवहेलना न कर सदा मुक्ति-साधन में लगे रहना 'तितिक्षा' है। वेदादि सत्य शास्त्रों और उनका ज्ञान रखने वाले आप्त मनीषियों के उपदेशों को विश्वास पूर्वक आदर के साथ स्वीकार करना 'श्रद्धा' है और चित्त की चंचलता का अवरोध कर एकाग्र करना 'समाधान' कहलाता है। जिस महाभाग के अन्दर उक्त ६ गुण हैं निश्चय ही वह मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

५–उक्त सारी विशेषताओं के होते हुये भी यदि मानव के अन्दर मुमुक्षुत्व न हो तो वह विपथगामी बन जायगा। अतः जैसे क्षुधा तृषातुर का अन्न और जल के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता उसी प्रकार मुक्ति के पथिक को सदा मुक्ति तथा उसके प्राप्ति करने के साधन में ही लगे रहना उपयुक्त होगा।

६–मनुष्य का शरीर पांच कोशों का समवाय है। वे कोश हैं अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्द मय कोश। मुक्ति की कामना करने वाले व्यक्ति को प्रयास पूर्वक उक्त पंच कोशों की इयत्ता को समझना और उसमें दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है। अन्नमय कोश में त्वचा से लेकर अस्थि पर्यन्त का ज्ञान प्राप्त कर उसकी वास्तविकता को समझना, प्राणमय कोश में प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय आदि दसों प्राणों का बोध प्राप्त कर उनकी साधना मनोमय कोश में

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अनैतिकता और अन्धविश्वास के साथ समझौता नहीं

प्रस्तुति डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री

ऋषि दयानन्द इस युग के इस बात के एक मात्र प्रवर्त्तक थे, जिन्होंने कहा कि हम सब आपस के वैरभाव को त्यागकर सत्य वैदिक आस्थाओं को स्वीकार करें। और सत्य का ग्रहण और असत्य का प्रतिवाद करें। अनैतिकता और अन्धविश्वासों को मतमतान्तरों से निकाल दें, तो सभी मनुष्य एक सार्वभौम मञ्च पर मानवमात्र की सेवा कर सकते हैं।

इस वर्तमान बीसवीं शती में मनुष्य मात्र का एक गणित है, सबका एक रसायन शास्त्र है, एक प्राणिशास्त्र है, एक भौतकी और एक शिल्प है। इसी प्रकार वेद और वेदांग के प्रति प्राचीन युग में ज्ञान-विज्ञान मानव मात्र का एक था। हिन्दू गणित, अरब ज्योतिष यूनानी तर्क शास्त्र और चीनी या मिस्री तत्वज्ञान-ऐसे शब्द मध्य युग में प्रचलित हुए। अब प्राचीन ऋषियों की परम्परा में विश्व के सभी विद्वान और तत्वज्ञानी सत्य और ज्ञान को समझने में संकीर्णताओं को छोड़ कर एक हो गये हैं। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने प्रयास किया सब व्यक्ति मतमतान्तरवाद छोड़ कर सत्यधर्म के सिद्धान्तों में एक हो जायें।

भारत में अन्धविश्वासों के पोषण और समर्थन का नाम हिन्दुत्व है। अन्य देशों में ईसाई और मुसलमान भी इन्हीं अन्धविश्वासों का पोषण और समर्थन कर रहे हैं। आर्य समाज, महर्षि दयानन्द, और आर्य कालीन प्राचीन परम्परायें इन मान्यताओं का न तो पोषण करती थीं, न समर्थन। हम तुम्हारे असत्यों, अन्ध विश्वासों और अनैतिकताओं का प्रतिवाद न करें और तुम हमारे असत्यों, अन्धविश्वासों और अनैतिकताओं का विरोध न करो–इस प्रकार के समन्वय की बात करना पतनोन्मुख होना है। आर्य समाज का दृढ़ संकल्प है कि किसी भी स्थिति देशकाल या अवस्था में किसी के अन्धविश्वास, असत्य या अनैतिकता के साथ वह साझा या समझौता नहीं करेगा।

प्रभु की कृपा पर ज्ञान विज्ञान और सत्यशिल्प पर सब एक हो सकते हैं किन्तु मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, कबरें, अवतार, पैगम्बरवाद, मूर्ति और छल-कपट पूर्ण चमत्कारों पर एकता नहीं हो सकती। अपने देश में हिन्दुओं को इस बात पर पूरी तरह विचार करने की आवश्यकता है।

आर्य समाज भारतवर्ष में अपने को किसी भी राष्ट्रीय अंग से पृथक नहीं करना चाहता। वह सबका हितैषी है, चाहे वह किसी प्रदेश का क्यों न हो। किन्तु बिना अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को तोड़े, बिना परम्परा से चली आ रही रस्मरिवाजों और आस्थाओं को शुद्ध और पवित्र किए हम अपने राष्ट्र का संगठन नहीं कर सकते। अनैतिक और अन्धविश्वासी तत्वों के साथ समझौता करने से राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है।

पिछले १००० वर्ष से भारत में भारतीयों के बीच मुसलमानों का कार्य आरम्भ हुआ। सन् ९०० से लेकर १९०० के बीच में दस करोड़ भारतीय मुसलमान बन गये, अर्थात् १०० वर्ष में एक करोड़ व्यक्ति मुसलमान बनता गया, अर्थात् प्रति वर्ष। १ लाख भारतीय मुसलमान बन रहा था। पिछले दो सौ वर्षों में भारत में ब्रिटिश राज्य का आधिपत्य होने पर इसी गति से भारतीय हिन्दू ईसाई भी बनने लगे। इस धर्म परिवर्तन का आभास न किसी हिन्दू राजा को हुआ, न किसी धार्मिक हिन्दू नेता को। भारतीय जनता ने अपने समाज के संगठन की समस्या पर इस दृष्टि से कभी सूक्ष्मता से विचार नहीं किया था। पंडितों विद्वानों मन्दिरों के पुजारियों के सामने यह समस्या राष्ट्रीय दृष्टि से प्रस्तुत ही नहीं हुई।

पिछले १००० वर्ष के इतिहास में स्वामी दयानन्द अकेले ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस समस्या पर विचार किया। उन्होंने दो समाधान बताये—भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों से आक्रान्त हो गया है—समाज का फिर से परिशोध आवश्यक है। भारतीय सम्प्रदायों के कतिपय कलंक हैं, जिन्हें दूर न किया गया तो यहां की जनता मुसलमान तो बनती ही रही है, आगे तेजी से ईसाई भी बनेगी। हमारे समाज के कतिपय भयंकर कलंक ये थे—

१–मूर्तिपूजा और अवतारवाद।

२–जन्मना जाति पांतवाद।

३–अस्पृश्यता या छुआ छूतवाद।

४–परम स्वार्थी और भोगी महन्तों, पुजारियों, शंकराचार्यों की गद्दियों का जनता पर आतंक।

५–जन्मपत्रियों, फलित ज्योतिष, अन्धविश्वासों, तीर्थों और पाखण्डों का भोलीभाली ही नहीं शिक्षित जनता पर भी कुप्रभाव।

राष्ट्र से इन कलंकों को दूर न किया जायगा, तो विदेशी सम्प्रदायों का आतंक इस देश पर रहेगा ही।

दूसरा समाधान स्वामी दयानन्द ने यह प्रस्तुत किया कि जो भारतीय जनता मुसलमान या ईसाई हो गई है उसे शुद्ध करके वैदिक आर्य बनाओ। न केवल इतना ही, बल्कि मानवता की दृष्टि से अन्य देशों के ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनी सबसे कहो, कि असत्य और अज्ञान का परित्याग करके विद्या और सत्य को अपनाओ और विश्वबन्धुत्व की स्थापना करो। ('अध्यात्म और आस्तिकता' के लेखक–स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, पुस्तक से उद्धृत)

*

मुक्ति एक समीक्षा

(पृष्ठ ५ का शेष)

देव, यक्ष, प्रज्ञान, चित्त, धृति, पृथक् भाव, विश्वभाव' और वशीकरण शक्तों की गतियों पर अधिकार करना, विज्ञानमय कोश के द्वारा बुद्धि तत्व पर अधिकार जमा उसे धारणा और मेधा की संज्ञा प्रदान कर स्थिर प्रज्ञ बनना और अन्त में आनन्दमय कोश के द्वारा प्रीति–प्रसन्नता और आनन्द से आप्लावित हो प्रभु के पावन चरणों में आत्म समर्पण करना ही मुक्ति के द्वार तक पहुंचना है।

[क्रमशः]

क्या यज्ञ से वर्षा हो सकती है ?

आचार्य वेद भूषण, अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

(गताङ्क से आगे)

अतिवृष्टि या अनावृष्टि एक ही प्रक्रिया के दो परिणाम हैं ! प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कर जब वृष्टि होगी तो वह अति वृष्टि कहाती है ! समय के प्रतिकूल अथवा आवश्यकता से अधिक वर्षा का होना अतिवृष्टि कहाता है और जब वर्षा की ऋतु हो या समय हो तब वर्षा का न होना अनावृष्टि कहाती है ! इन दोनों ही स्थितियों का कारण प्रकृति में विकृति का होना ही होता है ! आइए इन विकृतियों के कारणों को समझने का यत्न करें ।

इस ब्रह्माण्ड के रहस्यपूर्ण ज्ञान विज्ञान का एक सारभूत सूत्र है जो इस रहस्य को जान लेगा वह बहुत कुछ जान लेगा । वास्तव में यह उक्ति सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ज्ञान विज्ञान की सारभूत है। कहने में सरल किन्तु अत्यन्त सारपूर्ण उक्ति है कि—"यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"

आज कल का विज्ञान अभी इस सूक्ष्मता तक पहुंचा नहीं है। इस उक्ति में जो महत्वपूर्ण बात कही गई है। वह बहुत सार युक्त है। जो कुछ पिण्ड में है। मानव देह में वही कुछ ब्रह्माण्ड में है। हमारा मानव देह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक छोटा मॉडल, नमूना या प्रतीक है।

वस्तव में यह बात अत्यन्त सारपूर्ण है। वेद स्वयं इसका अनुमोदन करते हैं। मानव देह आत्मा का देह है। और ब्रह्माण्ड परमात्मा का देह है। एक ब्रह्माण्ड है। एक अल्पाण्ड है। स्वल्पाण्ड है।

वेद मन्त्र ब्रह्माण्ड और पिण्ड की तुलना करते हैं।

"यस्य भूमिः प्रमा अन्तरिक्षमुतोदरम् • सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ०" इत्यादि मन्त्रों से उपर्युक्त उक्ति का अनुमोदन होता है। देह और ब्रह्माण्ड की तुलना का विषय भी एक स्वतन्त्र लेख की आवश्यकता रखता है। यहां विस्तार में न जाते हुए हम इतना भर कहना चाहेंगे कि—पिण्ड के नियमों और व्यवस्थाओं को जानकर हम ब्रह्माण्ड के नियम, व्यवस्था और स्वरूप को जान सकते है।

जो स्थिति आज ब्रह्माण्ड में दृष्टि गोचर हो रही है वही स्थिति हमारे देह अथवा पिण्ड में देखी जा सकती है।

जिस प्रकार का ऋतु चक्र ब्रह्माण्ड में देखा जाता है वैसा ही चक्र हमारे देह में भी होता है। ऋतु चक्र का मुख्य सम्बन्ध भूलोक से है। शास्त्रों में स्त्री को पृथिवी कहा गया है। विवाह में वर कहता है वधू से—द्यौ अहं पृथिवीत्वं। मैं द्युलोक हूँ तू भूलोक है। आयुर्वेद में नारी के शारीरिक विकास में ऋतुकाल शब्द का प्रयोग स्पष्ट करता है कि—मनुष्य देह में भी ऋतु चक्र चलता है। नारी देह में जब प्रकृति में विकृति जन्म ले लेती है तब अत्यार्तव और अनार्तव की स्थिति उत्पन्न होती है।

मानव देह में विकृति के कारण कभी-कभी बहु मूत्र और मूत्राव-रोध या अतिसार और आंव मल बद्धता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब कुशल वैद्य देह की इस विकृति को नष्ट कर देह को स्वस्थ कर देते हैं तब फिर हमारा शरीर यन्त्र नियमानुकूल चलने लगता है। जब-जब मनुष्य के देह में रोग या ज्वर आदि का प्रकोप होता है तब तब डाक्टर रक्त परीक्षा करवाते हैं और जांच करते हैं कि—रक्त में किस प्रकार का विष उत्पन्न हो गया है। उस विष को प्रतिरोधक दवाइयां देकर वे अस्वस्थ देह को स्वस्थ बना देते हैं।

जैसी स्थिति हमारे पिण्ड में उत्पन्न हो जाती है वैसी ही स्थिति इस ब्रह्माण्ड में भी जन्म ले लेती है। यह ब्रह्माण्ड भी रोगी हो जाता है। जब इसमें वात, कफ और पित्त की विकृति हो जाती है तो सृष्टि भी नियम विरुद्ध आचरण आरम्भ कर देती है। वात अर्थात् वायु और कफ अर्थात् जल और पित्त अर्थात् अग्नि। इन तीनों के दोषों से ऋतु चक्र बिगड़ने लगता है।

आज ब्रह्माण्ड में जल वायु प्रदूषण बढ़ चुका है। ब्रह्माण्ड तीव्र ज्वर का शिकार हो रहा है। जल वायु प्रदूषित होते जा रहे हैं। आज के वैज्ञानिक इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं हैं। प्रदूषण एक प्रकार का विषैला तत्व है जो जल और वायु में घुल गया है।

आयुर्वेद में जब मानव देह में विष फैल जाता है या मनुष्य को सर्प आदि विषैला जन्तु काट लेता है तो उस विष के प्रतिरोध के लिए गाय के घी का प्रचुर मात्रा में सेवन कराया जाता लिखा है जिससे देह में व्याप्त विष नष्ट हो जाता है।

इसी आधार पर ब्रह्माण्ड में गाय के घृत का धुआं कर देना देने से मेघ जल का और वायु का विष नष्ट हो जाता है। प्रदूषण के नष्ट का यह अत्यन्त वैज्ञानिक व व्यावहारिक उपाय है।

हम संसार के समस्त वैज्ञानिकों को विनम्रता भरी चुनौती देना चाहते हैं कि—गाय का घी एक मात्र प्रकृति में फैले प्रदूषण को नष्ट करता है। प्रदूषण के नष्ट होने से ब्रह्माण्ड का ऋतु चक्र स्वयं ही नियमित हो जायगा और ऋतु चक्र के नियमन से अतिवृष्टि और अनावृष्टि जैसे लक्षण स्वयं ही नष्ट हो जायेंगे।

इसके साथ ही अनेक ऐसी औषधियां वनस्पतियां भी हैं जो शरीर में जल का शोषण कर सकती हैं या जल की मात्रा का सग्रहण कर सकती हैं। ऐसी ही वनस्पतियों की सामग्री के निर्माण से अति-वृष्टि को रोका जा सकता है और अनावृष्टि को वृष्टि मे बदला जा सकता है।

जैसे परमाणु के दो प्रकार के प्रयोग होते हैं एक तो परमाणु विद्या से शस्त्रास्त्र का निर्माण कर ससार का नाश किया जा सकता है दूसरे परमाणु शक्ति का शान्ति पूर्ण कार्यों में सदुपयोग।

प्राकृतिक शक्ति का शान्तिपूर्ण कार्यों में नियोजन ही यज्ञ कहाता है।। अतः यज्ञ द्वारा वर्षा ऋतु में ही वर्षा की प्राप्ति या निवारण किया जा सकता है।

जो वर्षाऋतु के प्रतिकूल कराई जाती है वह यज्ञ में नहीं आती है। वह विद्या युद्ध विद्या में प्रयुक्त की जा सकती है। यज्ञ तो ऋतु में ही सुप्रभाव दिखा सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भविष्य में न वैसी गलती दोहरायें

श्री डा० शकुनचन्द्र आर्य बाग्रगंज, रायबरेली

कभी अपना भारत था महान
समृद्धिशाली सम्पन्न था, धनवान
सारे विश्व में इसका था सम्मान
कृपालु थे इस पर दयानिधान
पर जब हम महाभारत में लड़ गये
भाई से भाई भिड़ गये
विद्वानों विशेषज्ञों से वंचित हो गये
तो हमारे पतन के पट खुल गये
पर अब हम विवेकशील बन जायें
भविष्य में न वैसी गलती दोहरायें।

कभी यहाँ शासन करता था पृथ्वीराज चौहान
जिसकी अद्‌भुत थी शान बान आन
जिसका लोहा मानता था सारा हिन्दुस्तान
सारा देश करता था जिसका सम्मान
पर हम उसके भी काल बन गये
नृपति जयचन्द मुहम्मद गोरी से मिल गये
जिससे उस सम्राट् का तो पतन हो ही गया
जयचन्द समेत सारा भारत गुलाम हो गया
अब हम विचारवान बन जायें
भविष्य में न वैसी गलती दोहरायें।

याद करो अठारह सौ सत्तावन का स्वाधीनता संग्राम
निश्चय हुआ था अंग्रेजों को भेजने को उनके धाम
स्वाधीनता सेनानियों के हुये थे साहसिक काम
लक्ष्मीबाई नानासाहब के हैं उल्लेखनीय नाम
पर उनमें भी हम असफल हो गये
हमारे ही कुछ देशवासी अंग्रेजों के तरफदार हो गये
कुछ राजे महाराजे अंग्रेजों के पैरोकार हो गये
स्वाधीनता के हमारे अरमान मिट्टी में मिल गये
पर अब हम फूट को मार भगायें
भविष्य में न वैसी गलती दोहरायें।

★ ★ ★

अपनों पर गोली ?

डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी श्यामगंज बरेली

रिपु देख तमाशा है हंसता,
अपनों पर गोली बरसाते।
प्रक्षेपास्त्रों को दे दे कर,
वह शुभचिंतक बनकर छिपता।
जब बन्धु तुम्हारा मृत होता,
वह अपनी विजय देख खिलता।
जो है पयस्विनी मातृभूमि,
तुम उसको ही क्यों बिसराते ?

घर में ही बंट करके रहना,
अपनी माँ को स्वीकार नहीं।
मानव-मानव का हो हन्ता,
कब कहलाया अधिकार सही।
जननी अपनी, उनकी दासी,
क्यों नहीं समझ तुम यह पाते।

कितनी ही मातृ शक्तियों के,
हन्ता होकर बनते मोदित।
आबाल वृद्ध निर्दोष पान्थ,
उनके घातक क्या आमोदित ?
वे नादिरशाही के प्रेरक,
तुम कायरतम ! घर लुटवाते।

मधुपूर्ण मनुजता का शिक्षण,
पर उसकी सतत उपेक्षा है।
दानवता का जहं शासन हो,
क्या नहीं दनुज की ईक्षा है ?
मारीच तुम्हारा पथ दर्शक,
तुम भ्रमित स्वयं को करवाते।

जो बीत गया उसको छोड़ो,
अब भी तो समाधान प्रस्तुत।
इतिहास कलंकित हो धूमिल,
तुम बनो दिव्य, होगे संस्तुत।
भूलें संशोधन मार्ग बनें,
क्यों कर मल-मल पछताते हो।

निर्वाचन—

आर्य समाज पलिया कलां
खीरी लखीमपुर

प्रधान...श्री भवानीशंकर अवस्थी
मन्त्री...ओमप्रकाश आर्य
कोषा०...श्री मुल्कराज कल्याण

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा
[झांसी]

प्रधान...श्री आचार्य मदनमोहन सिटोरिया
मन्त्री...श्री जगदीशचन्द्र बाधवा
कोषा०...श्री निहालचन्द बजाज

आर्य समाज समशेरगढ़
(देहरादून)

प्रधान...श्री डबलसिंह जी
मन्त्री...श्री प्रकाशचन्द जी
कोषा०...श्री विश्वम्भर दयाल

आर्य समाज, अल्मोड़ा

प्रधान...श्री सुभाषचन्द्र आर्य
मन्त्री...श्री डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री
कोषा० तथा प्रबन्धक...श्री पूरन सिंह

हिन्दी के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

[पृष्ठ ४ का शेष]

व आय भाषा हिन्दी अवश्य जानना चाहिए इस उप नियम ने आर्यो मे हिन्दी व सस्कृत के लिए स्वाभाविक रूप से अदभुत राग उत्पन्न कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप भारत के जिन जिन प्रान्तो मे तथा भारत के बाहर मारीशस अफ्रीका आदि देशो मे जहा जहा भी आय समाज का विस्तार हुआ वहा वहा हि दी भाषा को सुचारु रूप से पल्लवित व पुष्पित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ और हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सचालित हि दी की परीक्षाओ का भा उ हीं स्थानों पर विशेष सफलता मिली जहाँ आय समाज का विशेष प्रचार रहा है। आय समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों, कार्यालयो व धम प्रचार की भाषा हिन्दी ही रही है। प्रारम्भ मे भारत सुदशा प्रवतक शुद्धि समाचार आयमित्र प्रकाश आदि पत्र जो निकले वे हि दी मे ही थे। महर्षि के पश्चात स्वामी नित्यानन्द, प० भीमसेन शर्मा प० आय मुनि और प० तुलसीराम स्वामी आदि विद्वानो ने जो ग्रन्थ लिख जिनका आय समाज के बाहर व अ दर खब प्रचार हुआ, सब हिन्दी मे ही थे।

आय समाज के जन्म के पूव पजाब मे मुख्य रूप से उदू व गुरमुखी का प्रचलन था। आय समाज के प्रभाव से उदू का स्थान हि दी लेने लगी और जब जालधर मे देवराज जी के प्रयास से आय क या विद्यालय की स्थापना हुई उससे उदू के गढ पजाब मे क याओ द्वारा हि दी का प्रवेश घर घर हो गया। यह कहने मे अतिशयोक्ति नहीं कि पजाब के पुरुषो को हिन्दी की प्रारम्भिक शिक्षा क याओ व स्त्रियो की कृपा से मिली। उत्तर प्रदेश मे लखनऊ उदू का गढ था और रुहेलखण्ड प्रदेश मे उदू का बोलबाला था। उस गढ़ की दीवारो मे सुराख करने का प्रथम श्रेय आय कन्या पाठशालाओं को ही है। घरो मे प्रविष्ट होकर हिन्दी भाषा पुरुषो मे फन गई। कालान्तर मे आय समाज द्वारा पजाब, उत्तर प्रदेश बिहार मध्य प्रदेश आदि के मुख्य नगरो में आय कन्या पाठशाला व दयानन्द कालेज की स्थापना मे हि दी के प्रचार व प्रसार मे महत्वपूण योगदान दिया। १६ वीं शताब्दी मे अहिन्दी प्रान्तो मे हिन्दी को ले जाने का प्रारम्भिक श्रेय महर्षि दयान द व ग्रन्थो व आय समाज को रहा है। हिन्दी भाषा को अपनाने से महर्षि दयानन्द व आय समाज को भी भारी लाभ पहुचा है। आय समाज के समकालीन ब्रह्म समाज व प्रथना समाज ने अपना प्रचार मुख्य रूप से अग्रजी के माध्यम से किया जिसके कारण वह सवसाधारण में अपना स्थान न बना सकी जब कि आय समाज एक सावजनिक सस्था के रूप मे दिक दिगन्त मे फैल गई। परोक्ष वर्षो महर्षि ने हि दी को उपदेश का माध्यम बनाकर न केवल आय समाज को लोकप्रिय व व्यापक बनाया बल्कि भविष्य मे राष्ट्रभाषा व राजभाषा बनने वाली हि दी भाषा को पुष्टि देकर राष्ट के स्वाधीनता भवन की दृढ बुनियाद भी रख दी।

आग चलकर हिन्दी भाषा के सवद्धन के मैदान मे आय समाज अग्रगामी बना रहा। भारत में वह प्रथम विश्वविद्यालय था जिसमें वसम ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा का सफल परीक्षण हिन्दी भाषा में ही किया गया था वह था गुरुकुलकांगड़ी हरिद्वार जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने किया था। जिसमें प्रशिक्षित होकर शताधिक हिन्दी के प्रबुद्ध विद्वानो ने अपनी तपस्या से देश देशान्तर में अपने ग्र थ रचनाओं के द्वारा हिन्दी को यशस्वी बनाया और हिंदी के साहित्य भण्डार को समृद्ध शाली बनाया। सवश्री प० जयचन्द्र विद्यालकार जयदेव विद्यालकार अत्रिदेव विद्यालकार, प्रियव्रत वेदवाचस्पति सत्यकेतु विद्यालकार अ चाय रामदेव, सत्यकाम विद्यालकार धमदेव विद्यामातण्ड, प० बुद्धदेव विद्यालकार इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रियरत्न आय आदि हिन्दी के मूधन्य विद्वान गुरु कुल क गडी की ही देन है। उपयुक्त विद्वानो की लौह लेखनी से लिखित वेद, दशन उपनिषदो की सरल व सरस टीकायें तथा ऐति हासिक ग्रन्थों ने हिन्दी भाषा के भण्डार को धनी बना दिया है। प० भगवद्दत्त के गवेषणापूण ग्रन्थ उदयवीर शास्त्री के दशनो पर किए गये विद्योदय भाष्य प० युधिष्ठिर मीमासक की महाभाष्य और मीमासा दशन का भाष्य तथा प० गगाप्रसाद उपाध्याय के गौरवशाली दाश निक ग्रन्थ हिन्दी जगत में धम के जिज्ञासुओ के लिए चिरकाल तक सुख और शांति का कारण बने रहेंगे।

★

अमर शहीद भगत सिंह

सरदार कुलतार सिंह भू० पू० राज्य मन्त्री खाद्य एवं रसद तथा राजनैतिक पेंशन उत्तर प्रदेश (भाई अमर शहीद भगतसिंह)

[अमर शहीद भगतसिंह ने आर्य जगत के सुप्रसिद्ध नेता पंजाब केसरी लाला लाजपतराय से प्रेरणा प्राप्त की थी। वे आर्य सामाजिक विचारो से ओतप्रोत थे। २३ मार्च १९३१ को उन्होने भारत मा के चरणों में अपने को न्योछावर कर दिया। उनके भाई सरदार कुलतार सिंह का प्रस्तुत लेख हमें विलम्ब से प्राप्त हुआ है उसे प्रस्तुत कर रहे हैं अमर शहीद की कहानी उन्हीं के भाई की जुबानी —सम्पादक]

सरदार भगतसिंह के बारे में एक बार महात्मा गांधी ने कहा था कि इतनी कम आयु मे इतनी ख्याति और अपने देशवासियों का इतना प्यार इतिहास में शायद ही किसी दूसरे व्यक्ति को प्राप्त हुआ हो। स्मरणीय है कि फांसी के समय सरदार भगतसिंह अपने जीवन के २४ साल भी पूरे नहीं कर पाये थे।

जहां तक जोखिम से भिड़ने, साहस एवं बलिदान का प्रश्न है उनसे पहले एवं बाद मे ऐसे अनेक क्रांतिकारी हुए हैं जो उनमें से किसी बात में भी भगतसिंह से कम नहीं थे। तो फिर सरदार भगत सिंह में वह कौन सी विशेषता थी जिसके कारण उन्हें अन्य क्रान्तिकारियों के मुकाबिले इतनी ख्याति मिली और देश ने उन्हे शहीदे आजम कहकर पुकारा। इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें उनके विचारो पर निगाह डालनी पड़ेगी।

भगत सिंह से पहले के क्रांतिकारी देश को आजाद तो कराना चाहते थे, लेकिन आजादी का रूप क्या होगा इस पर उनके दिमागों में सफाई नहीं थी। भगत सिंह के निकटतम सहयोगी श्री शिववर्मा के शब्दों में "भगतसिंह से पहले के क्रान्तिकारियों का उद्देश्य था केवल मात्र देश की आजादी लेकिन इस आजादी से हमारा क्या अभिप्राय है इस पर उससे पहले हमारे दिमाग साफ न थे। क्या अंग्रेज वायसराय को हटाकर उसके स्थान पर किसी भारतीय को रख देने से आजादी की समस्या का समाधान हो जायगा ? क्या समाज में आर्थिक समानता और उस पर आधारित मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के बरकरार रहते हम सब सही मानों में आजादी का उपयोग कर सकेंगे ? आजादी के बाद की सरकार किसकी होगी और भावी समाज की रूप रेखा क्या होगी आदि प्रश्नों पर क्रांतिकारियों में काफी अस्पष्टता थी। भगत सिंह ने सब से पहले क्रान्तिकारियों के बीच इन प्रश्नों को उठाया और समाजवाद को दल के ध्येय के रूप में सामने लाकर रखा। उसका कहना था कि देश को आजादी की लड़ाई लक्ष्य की ओर केवल पहला कदम है और अगर हम वहीं पर आकर रुक गये तो हमारा अभियान अधूरा ही रह जायगा। सामाजिक एवं आर्थिक आजादी के अभाव में राजनैतिक आजादी दरअसल थोड़े से व्यक्तियों द्वारा बहुमत को चूसने की ही आजादी होगी। शोषण और असमानता के उन्मूलन के सिद्धांत पर गठित समाजवादी समाज और समाजवादी राजसत्ता ही सही अर्थों में राष्ट्र का चौमुखी विकास कर सकेगी।

आगे चलकर शिववर्मा जी लिखते हैं—

'समाजवाद उस समय युग की आवाज थी। क्रांतिकारियों में भगत सिंह ने सबसे पहले उस आवाज को सुना और पहचाना। यहीं पर वह अपने दूसरे साथियों से बड़ा था।'

भगत सिंह जी का जन्म २८ सितम्बर १९०७ के दिन पंजाब के एक क्रान्तिकारी परिवार में हुआ था। उनके चाचा सरदार अजीत सिंह का नाम १९०७ में ही, जब उन्हें लाला लाजपत राय के साथ देश निकाला देकर माण्डले भेज दिया गया था, देश के कोने-कोने में छा गया था। उनके पिता सरदार किशन सिंह कई बार जेल गये और उनके छोटे चाचा सरदार स्वर्ण सिंह की जेल यातनाओं के कारण १९१० में जेल में ही मृत्यु हो गई थी।

परिवार की इस राजनीतिक पृष्ठभूमि में १९२३ में, जब वे बी० ए० की पढ़ाई की तैयारी कर रहे थे, उनकी भेंट प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल से हुई और वे क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्य बन गये। उन्होंने घर छोड़ दिया और कानपुर आकर श्री योगेशचन्द्र चटर्जी के साथ काम करने लगे। यहीं पर उनका परिचय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री सुरेश भट्टाचार्य, श्री विजयकुमार सिन्हा श्री बटुकेश्वरदत्त, श्री अजयकुमार घोष आदि क्रान्तिकारियों से हुआ। कानपुर में उस समय लोग उन्हें बलवन्तसिंह के नाम से जानते थे।

कुछ दिन कानपुर रहने के बाद वे फिर पंजाब वापस आ गये और भगवतीचरण बोहरा, सुखदेव, यशपाल आदि के साथ मिलकर नौजवान भारत सभा की स्थापना की। यह क्रान्तिकारियों का खुला मंच था। इसका प्रकट उद्देश्य भारतीय युवकों में देश प्रेम एवं क्रान्तिकारी भावनाओं का प्रचार करना था। नौजवान भारत सभा की स्थापना की एक मंशा यह भी थी कि उनके विश्वसनीय एवं कर्मठ सदस्यों को क्रांति मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित कर उन्हें दल का सदस्य बनाया जा सके। नौजवान भारत सभा का घोषणापत्र, जिसका मसविदा भगवतीचरण बोहरा और भगतसिंह ने मिलकर तैयार किया था, आज भी एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

भगतसिंह को अध्ययन एवं लेखन का भी बेहद शौक था। इस सम्बन्ध में श्री शिववर्मा एवं श्री यशपाल जी का कहना है कि हमें ऐसा एक भी अवसर याद नहीं पड़ता जब हमने उसके कोट की जेब में कोई न कोई पुस्तक न देखी हो। भगतसिंह को जब भी अवसर मिलता तो वे क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रचार के लिए कुछ न कुछ लिखते रहते थे। उनके अधिकांश लेख श्री सोहनसिंह जोश द्वारा संपादित 'किर्ती' दिल्ली से प्रकाशित 'महारथी' और कानपुर से 'प्रताप' एवं 'प्रभा' में प्रकाशित हुए थे। इलाहाबाद से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'चाँद' के फांसी अंक में विप्लव यज्ञ की आहुतियां शीर्षक के अन्तर्गत क्रान्तिकारी शहीदों की जो बहुत सी जीवनियां छपी थीं वे सरदार भगतसिंह और शिववर्मा द्वारा लिखी गई थी।

पार्टी के पुनर्गठन की दिशा मे भी भगत सिंह की भूमिका नेतृत्व कारी थी। उनके सुझाव पर दिल्ली में पार्टी की एक केन्द्रीय कमेटी का गठन हुआ। और एक व्यक्ति के नेतृत्व के स्थान पर सामूहिक नेतृत्व की परम्परा बनाई गई। उसी मीटिंग में पार्टी का नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन से बदलकर हिन्दुस्तान सोसलिस्ट

(शेष अगले पृष्ठ पर)

अमर शहीद भगतसिंह

(पृष्ठ १० का शेष)

रिपब्लिकन एसोसिएशन किया गया। यह समाजवाद के आदर्श की ओर बढ़ने की स्पष्ट घोषणा थी। दिल्ली मीटिंग का तीसरा महत्वपूर्ण फैसला था सेनापति का चुनाव। संगठन के क्षेत्र में जनवादी परम्परा कायम करने की दिशा में यह बहुत बड़ा कदम था। शहीद श्री चन्द्रशेखर आजाद इसी मीटिंग में दल के प्रथम सेनापति चुने गये थे। दिल्ली मीटिंग में यह भी निश्चय किया गया कि क्रान्तिकारियों को ऐसे काम करने चाहिए जिनसे जनता का सीधा सम्पर्क हो। साण्डर्स की हत्या और असेम्बली बम काण्ड ऐसे ही काम थे।

सांडर्स की हत्या से देश के नौजवानों में एक नया बल एवं आत्म विश्वास आया और उससे पूर्व जो लोग क्रान्तिकारियों को थोड़े से बिगड़े दिमाग वाले नौजवानों की जमात कहा करते थे वे ही उन्हे देशभक्त और राष्ट्रीय सम्मान के रक्षक के नाम से पुकारने लगें। इस सम्बन्ध में पं० जवाहरलाल जी नेहरू के ये शब्द उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कहा–

"......भगतसिंह को पहले बहुत से लोग नहीं जानते थे, पर वे इस लिए प्रसिद्ध हुए कि लोगों को ऐसा जान पड़ा कि उन्होने कम से कम उस समय तो लाला लाजपतराय की और इस प्रकार सारे देश के सम्मान की रक्षा की। इस प्रकार वह एक प्रतीक हो गये। लोग उस कार्य को तो भूल गये पर वह प्रतीक कुछ महीनों के अन्दर फैल गया। और पंजाब का हर गांव और शहर तथा उत्तर भारत उसके नामों से गूंजने लगा।

असेम्बली बम कांड का प्रभाव भी ऐसा ही था। मजदूर आन्दोलन को कुचलने के उद्देश्य से सरकार ने दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में दो बिल पेश किये थे। देश के कोने-कोने से उनका विरोध होने के बावजूद सरकार उन्हे कानून का रूप देने पर तुली हुई थी। देश के सर्वहारा वर्ग के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए सरदार भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बहरों के कानों तक देश के प्रतिवाद की आवाज पहुंचाने के लिए असेम्बली में बम फेंका।

असेम्बली बम केस में अदालत के सामने अपने कार्य का औचित्य सिद्ध करते हुए भगतसिंह ने कहा–

'समाज का सबसे आवश्यक अंग होते हुए भी उत्पादन करने वालों या मजदूरों के शोषकगण उनकी मेहनत का फल लूट लेते है। एक ओर तो सभी के लिए अनाज पैदा करने वाले किसान के परिवार भूखों मरते हैं, सारे संसार को सूत जुटाने वाला बुनकर अपना और अपने बच्चों का तन ढंकने के लिए पर्याप्त कपड़ा नहीं पाता, शानदार महल खड़ा करने वाला राज, लुहार, बढ़ई झोपड़ियो मे ही जिन्दगी बसर करते और मर जाते हैं और दूसरी तरफ पूंजीपति शोषक अपनी सनक पर करोड़ों बहा देते हैं।

क्रान्ति की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा–

'क्रान्ति से हमारा अभिप्राय यह है कि समाज में ऐसी व्यवस्था की स्थापना की जाय, जिसमें इस प्रकार के हुड़कम्प का भय न हो और जिसमें मजदूर वर्ग के प्रभुत्व को मान्यता दी जाय जिससे कि विश्व एवं मानवता को पूंजीवाद के बन्धनों, दुखों तथा युद्धों से सदा के लिए छुटकारा दिलाया जा सके।'

अपने बयान के अन्त में सरदार भगतसिंह ने कहा–

"समाज का वास्तविक पोषक श्रमजीवी है। जनता का प्रभुत्व मजदूरों का अन्तिम भाग्य है। इन आदर्शों और विश्वास के लिए हम उन तमाम कष्टों का स्वागत करेंगे जो हमें सजा के तौर पर दिए जायंगे। हम अपनी तरुणाई को इसी क्रान्ति की वेदी पर होम करने आये हैं, क्योंकि इतने गौरवशाली उद्देश्य के लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं है।'

आज देश के कोने कोने से इंकलाब जिन्दाबाद की जो आवाज हम सुन रहे हैं वह भी सबसे पहले भगतसिंह ने ही बुलन्द की थी। फांसी की सजा के बाद अपने साथियों से आखिरी मुलाकात के समय जब उनसे पूछा गया कि इतनी कम उम्र में मृत्यु का आलिंगन करने के लिए तुम्हें अफसोस तो नहीं है तो उन्होने हंसते हंसते जबाब दिया कि मैने सोचा था अपना जीवन देकर अगर मैं देश के कोने कोने तक इंकलाब जिन्दबाद का नारा पहुंचा सकूं तो मै समझूंगा कि मुझे अपने जीवन का मूल्य मिल गया फिर उन्होने अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज फांसी की कुर्सी पर बैठ कर देश के कोने कोने से इन्किलाब जिन्दाबाद का नारा सुन रहा हूं। मैं समझता हू कि २३ साल की जिन्दगी का मूल्य इससे अच्छा नहीं हो सकता।

जेल के बाहर अध्ययन के फलस्वरूप भगतसिंह जैसे–जैसे समाजवाद के सिद्धान्तों का हृदयंगम करते गये वैसे-वैसे उनका यह विश्वास दृढ़ होता गया कि क्रान्ति की अन्तिम सफलता के लिए मेहनतकश जनता को जागृत एवं संगठित करना पहली शर्त है। फांसी से कुछ पहले लाहौर सेंट्रल जेल के सुपरिन्टेन्डेंट के नाम लिखे एक पत्र में अपने उक्त विचारों का स्पष्टीकरण उन्होंने इन शब्दों में किया था–

'मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हमको बमों और पिस्तौलों से विशेष लाभ नहीं होगा।.........बम चलाना निरर्थक ही नहीं, कभी-कभी हानिकर भी होता है।, हलांकि कुछ परिस्थितियों में उसकी अनुमति दी जा सकती है। हमारा मुख्य उद्देश्य मजदूरों और किसानों को सगठित करना ही होना चाहिए '

अन्त मे लाहौर षड्यन्त्र केस में अंगरेज सरकार ने उन्हें राजगुरु तथा सुखदेव के साथ मौत की सजा देकर फांसी पर लटका दिया।

उनकी फांसी का समाचार सुनकर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था हम भगतसिंह को न बचा सके, हमारी इस असमर्थता पर देश दुखी होगा। पर जब इंगलण्ड हमसे समझौते की बात करेगा तो हमारे और उसके बीच में भगतसिंह का शव पड़ा होगा।'

भगतसिंह ने जिस आदर्श के लिए अपना जीवन बलिदान किया था उसका अभी तक हम एक हिस्सा ही पूरा कर पाये हैं। हमने अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति पा ली लेकिन समाजवाद की लड़ाई अभी बाकी है। शोषण, असमानता, गरीबी, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता आदि अभिशापों से समाज को मुक्ति दिलाकर शोषण रहित–भेदरहित समाजवादी समाज की स्थापना करके ही हम भगतसिंह के आदर्श को पूरा कर सकेंगे। आज जब देश ने समाजवाद को ध्येय के रूप में अपनाया है तो हमें विशेष रूप से भगतसिंह की याद आती है। मुझे विश्वास है कि हमारे नौजवान इस आदर्श के लिए उसी लगन एवं निष्ठा के साथ आगे आकर इस काम को पूरा करेंगे जिस लगन एवं निष्ठा के साथ आगे आकर भगतसिंह ने अपना जीवन कुर्बान किया।

सिद्धांत का सूर्य अस्त होगया

हा ! मेरे एक मात्र साथी आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

(आचार्य विश्वश्रवा व्यास बरेली)

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री दिवंगत हो गये। यह समाचार मेरे घर बरेली आने पर मेरी पत्नी ने इस समाचार को दिन भर मुझसे छिपाया और रात्रि का भोजन संध्या से पूर्व दिन में कर लेने को कहा। यह कह कर कि आज मुझे विशेष काम है। मैने दिन में भोजन कर लिया। भोजन के पश्चात् उन्होंने सूचना दी कि आचार्य वैद्यनाथ दिवंगत हो गये। यह सुनते ही मैं रोने लगा। पर्याप्त समय तक यही दशा रही। समझ में नहीं आता था कि अब मैं क्या करूं ? आचार्य जी मेरे एक मात्र साथी थे। हम दोनो समस्त ऋषि विरोधियों का उत्तर देने मे समर्थ रहते थे। आज मैं अकेला रह गया। आचर्य जी भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन दोनों के विद्वान थे। चारों वेदों पर उन्हें पूर्ण अधिकार था। अंग्रेजी और संस्कृत दोनों भाषाओं के वे पंडित थे और दोनों भाषाओं में ग्रन्थ लिखने की उनकी योग्यता थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में उनकी बहुत बड़ी जानकारी थी। कोई व्यक्ति स्वामी जी के साहित्य और सिद्धान्तों पर प्रश्न करता था तो आचार्य जी के उत्तर को सुनकर चकित हो जाता था। आचार्य जी और मेरी विचारधारा एक जैसी थी। कोई व्यक्ति बरेली में मुझसे प्रश्न करे जो मै उत्तर देता उसमें और बड़ौदा जाकर आचार्य जी से वही प्रश्न करे तो उनके उत्तर में और मेरे उत्तर मे कोई अन्तर न होता था। आचार्य जी कुछ दिन अमेरिका में रहे, उनके बाद मै भी अमेरिका में गया और दो मास वहाँ रहा। वहाँ के व्यक्ति कुछ प्रश्न मुझसे पूछते थे, मैं जो उत्तर देता था उसको सुनकर अमेरिका में लोग यह कहते थे कि यही उत्तर आचार्य वैद्यनाथ जी देते थे। अब ऐसा साथी हमारा ससार में कोई नहीं रहा। सार्वदेशिक सभा में मैं धर्मार्य सभा का दस वर्ष प्रधान मन्त्री रहा। उस समय धर्मार्य सभा में लगभग दो सौ विद्वान समस्त भारत तथा विदेशों के प्रतिनिधि थे। अपने मन्त्री काल में हमने संध्या और यज्ञ की प्रमाणित पद्धति प्रकाशित की ब्रह्मपारायण यज्ञ और साप्ताहिक सतसंग की पद्धति भी छापी। अपने मन्त्रीकाल में ही हमने स्वामी दयानन्द की जन्म तिथि क्या है, राजकोट आदि के व्यक्तियों को बुलाकर और गणित ज्योतिष के आधार पर निर्णय किया। इसका भी एक ट्रैक्ट छापा और आर्य समाज की स्थापना तिथि क्या है ? इसका निर्णय बम्बई से विजयशंकर को बुला कर तथा बम्बई समाज के रिकार्ड को मंगाकर और बम्बई जाकर स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज भवन पर लगे शिलालेख को देख कर किया कि आर्य समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ला पञ्चमी नहीं है प्रत्युत सृष्टि सम्वत का प्रथम दिन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा है। उसका भी एक ट्रैक्ट छापा। मेरे बाद आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी बने। तब मैंने उनसे कहा कि इतने निर्णय मैंने मन्त्री काल में किये हैं। आप इन सबको दुबारा देख लें और जो संशोधन करना उचित समझें, करके अगले संस्करण अपने नाम से छापें। आचार्य जी ने सब को देखकर यह कहा कि इन सब में एक अक्षर संशोधन की आवश्यकता नहीं है। तब संस्करण उन्होंने अपने नाम से छापने आरम्भ कर दिये।

आचार्य जी तथा मेरा सदा साथ रहा। लाहौर में 'दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय में वे भी रहे, उसके पूर्व मैं भी वहाँ रहा था। आचार्य जी संस्कृत युनिवर्सिटी बनारस में रहे, मैं भी उसी युनिवर्सिटी की कौंशिल में रहा। बम्बई में प्रताप भाई सूर्य वल्लभ दास ने एक महीने का यज्ञ रखा। उसमें सौ विद्वान थे जो अनेक वेदियों पर यज्ञ कराने को बैठे। प्रताप भाई जी ने मुख्य वेदी पर मुझे और आचार्य वैद्यनाथ जी को बैठाया। हम दोनों सब वेदियों के यज्ञों का संचालन करते थे। अभी कुछ वर्ष पूर्व स्वामी विद्यानन्द सरस्वतीजी की अध्यक्षता में पानीपत में शताब्दी मनाई गई। वहाँ जहाँ हम दोनों ठहरे हुए थे। वहाँ से यज्ञशाला दूर थी, हम दोनों साथ-साथ जाते थे और यज्ञशाला में एक ही चौकी पर बैठते थे। वहां दोनों प्रवचन करते थे। साथ-साथ लौट कर टहलते हुए आते थे। हम दोनों की राम लक्ष्मण की सी जोड़ी थी। हम दोनों के धर्म पत्नियाँ भी वहाँ थीं। लाहौर में प० भगवतदत्त जी और मैं माडल टाउन में एक ही कोठी में रहते थे। पं० भगवतदत्त जी के साले पं० ऋषिदेव की पुत्री के साथ आचार्य जी का विवाह हुआ। अतः हमारे पारिवारिक सम्बन्ध भी थे। आचार्य जी बीमार होकर दिल्ली आकर सार्वदेशिक सभा भवन में रहे। उनकी लम्बी बीमारी के दिनों में कुछ लेख आर्य विद्वानों के समाचार पत्रों में छपे। एक ने लिखा कि स्वामी जी वेदभाष्य में स्वरों की अशुद्धियां हैं। एक और विद्वान ने लिखा कि स्वामी जी के ग्रन्थों में अशुद्धियों की भरमार है। इससे प्रभावित होकर परोपकारिणी सभा ने मुझे पत्र लिखा कि जो अशुद्धियां हों उन्हें देख लें और परोपकारिणी सभा को लिखकर भेज दें जिनका हम संशोधन कर दें। मैंने परोपकारिणी सभा को स्पष्ट लिख दिया कि परोपकारिणी सभा ऋषि की उत्तराधिकारिणी सभा है अनुसन्धान शाला नहीं। मैंने उन्हें चेतावनी दी कि परोपकारिणी सभा ने पंडितों के बहकावे में आकर बार बार भूलें कीं और फिर पछतायी। वह सारा इतिहास मैंने उनको लिखकर भेज दिया। मैं सोचता था कि मेरे साथी आचार्य वैद्यनाथ जी स्वस्थ हो जायें तो हम दोनों उन विद्वानों की बातों का उत्तर देवें। परन्तु भगवान को वह दिन इष्ट नहीं था। आचार्य जी की बीमारी के दिनों में मैं उनके पास जाना चाहता था परन्तु आंखों से न देख सकने के कारण बहुत दिन दिल्ली नहीं जा सका। मेरा लड़का वेदश्रवा अमेरिका से घर आया, कुछ दिन रहा जब वह वापस जाने लगा तो मैं उसके साथ हवाई अड्डे तक उसे छोड़ने सपरिवार बरेली से दिल्ली को चला। दिल्ली पहुंचते पहुंचते रात हो गई। मैं रात में ही सार्वदेशिक सभा भवन पहुंचा। आचार्य जी सब से ऊपर वाले कमरे में थे। मैं भी इस कमरे मे बहुत वर्ष रह चुका था। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और आचार्य जी की पत्नी वहाँ थे। आचार्य जी मुझे देखकर प्रेम से विह्वल हो गये। उन्हें ठीक तरह से बोल नहीं निकलता था, फिर भी उन्होंने अपनी बीमारी का हाल आदि से अन्त तक सुनाया, और इस समय मुझे क्या कष्ट है यह भी बताया। मैं नहीं समझ रहा था कि मेरा और उनका अन्तिम मिलन है। मैं अपने लड़के को हवाई अड्डे छोड़ कर बरेली आ गया। बरेली मुझे समाचार आया कि आचार्य जी दिवंगत हो गये। मैं इस कष्ट को सहन नहीं कर सका। हमारी जोड़ी बिछुड़ गई। मैंने अपना त्याग पत्र सार्वदेशिक सभा को भेज दिया, यह कर हमारा युग समाप्त हो गया। जैसे द्वापर के अन्तिम दिन भगवान कृष्ण की मृत्यु का समाचार जब

(शेष पेज १४ पर)

आर्यों का प्राण–'यज्ञ'

[रामपाल व्याकरणाचार्य, आर्यसमाज जयपुर हाउस, आगरा]

[प्रबुद्ध वैज्ञानिकों ने मान्यता दी है कि विश्व के वातावरण में प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है जिसका यदि समय पर निवारण न किया गया तो सम्पूर्ण मानव समाज के विनाश का कारण बन सकता है। हमारे प्राचीन युग में प्रत्येक परिवार में प्रतिदिन यज्ञ हुआ करते थे समय समय पर विशेष यज्ञों के आयोजन होते रहते थे वातावरण प्रदूषण रहित था। अतः यह कहना कि–"महँगाई के इस युग में अग्निकुण्ड में घी डाल कर नष्ट करना उचित नहीं–" सर्वथा भ्रामक है जब कि कोई पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु अग्नि में प्रदीप्त होकर घी सहस्त्रगुणित होकर वायु मण्डल को प्रदूषण रहित बनाकर लोकोपकारी होता है–लेखक के विचार मननीय एवं पठनीय हैं।

–सम्पादक]

सार्वदेशिक साप्ताहिक के १९ जुलाई के अंक पृष्ठ ५ पर 'आचार्य राम शास्त्री' जी का "यज्ञ के नाम पर बरबादी क्यों ?" लेख पढ़ा। शास्त्री जी ने लिखा कि–हमारे गुरु महर्षि दयानन्द की यह विशेषता है कि बुद्धि और तर्क के प्रयोग की छूट हमें दी। शास्त्री जी का यह कथन सत्य है साथ ही हमें अपने गुरुवर की आज्ञा का पालन पूर्ण ईमानदारी से करना चाहिये यह भी लिखा। आगे शास्त्री जी लिखते है कि–"मेरे कथन का अभिप्राय यह है कि इस मंहगाई के समय में लाखों रुपयों का घृत अग्निकुण्ड में डालना कहां तक उचित है ? जब कि गरीब घी की एक बूंद को भी तरसते हैं। आचार्य जी के ये शब्द भ्रामक एवं पूर्ण अनुचित हैं। इससे यज्ञ प्रेमी समुदाय में अश्रद्धा की भावना जागेगी; आचार्य जी द्वारा प्रयुक्त शब्द 'अग्निकुण्ड में डालना, फूंकना' भी यज्ञ के प्रति अश्रद्धा के द्योतक हैं। आचार्य जी का तात्पर्य है कि घृतादि पदार्थ अग्नि में डाल कर नष्ट किये जाते हैं लेकिन आगे लिखते हैं कि 'मैं दैनिक यज्ञ का प्रबल समर्थक हूं' मैं पूछना चाहूंगा कि क्या दैनिक यज्ञ मे घी सामग्री नहीं डाली फूंकी जाती है अगर अग्नि में आहुत पदार्थ नष्ट हो जाते हैं, बरबाद हो जाते हैं तो फिर थोड़ा हो या अधिक नष्ट तो होगा ही, जब कि किसी पदार्थ को नष्ट करना सचमुच अपराध ही हो सकता है या आचार्यजी का विधान ऐसा हो कि थोड़ा पदार्थ तो नष्ट किया जा सकता है अधिक नहीं। कैसी हास्यापद बात है शास्त्री जी 'वदतो व्याघात' आप दोष के शिकार हो चुके हैं।

विचारणीय है कि क्या वस्तुतः अग्नि में आहुत पदार्थ नष्ट हो जाते हैं ? वस्तुतः ऐसी बात कतई नहीं है क्योंकि मनु लिखते हैं–'अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते' वैसे इस विषय में शास्त्री जी गुरुवर दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को ही पढ़ लेते तो ऐसी भ्रान्ति न होती, मैं महर्षि की मान्यता महर्षि के ही शब्दों में उद्धृत कर रहा हूं–

प्रश्न–चन्दनादि घिस के किसी के लगाने या घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डालकर व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

स्वामी जी का प्रश्न और आचार्य जी का तर्क समान हैं। महर्षि इस प्रश्न के उत्तर में लिखते हैं–

उत्तर–जो तुम पदार्थ विद्या को जानते तो ऐसी बात कभी न कहते, क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो ! जहाँ होम होता है वहाँ दूर देश मे स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है। वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने मे ही समझ लो कि अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध निवृत्त करता है।

पुनः प्रश्नोत्तर लिखते हुए स्वामी जी लिखते हैं–

प्रश्न–जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखशान्ति होगा।

उत्तर–उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु का प्रवेश करा सके, क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का ही सामर्थ्य है कि वायु और दुर्गन्ध को छिन्न-भिन्न तथा हल्का करके निकाल कर पवित्र वायु का प्रवेश करा देता है। आगे ऋषि लिखते हैं कि–खिलाने-पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है, परन्तु जो लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इससे अच्छे पदार्थ खिलाना पिलाना भी चाहिए, परन्तु उससे होम अधिक करना उचित है इसीलिए होम करना अत्यावश्यक है।

इस प्रकार महर्षि द्वारा सत्यार्थप्रकाश के उद्धरणों से तो खाने की अपेक्षा यज्ञ करना आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक है और साथ ही अग्नि में आहुत पदार्थ का संसार के किसी पदार्थ का अभाव नहीं होता। आधुनिक विज्ञान भी कहता है भले स्वरूप परिवर्तन हो जाये। अग्नि में प्रदत्त पदार्थ की शक्ति भी और मात्रा करोड़ों गुना वृद्धि को प्राप्त होती है जैसे मिर्च में अग्नि डालने पर अग्नि पदार्थ को सूक्ष्म करके वायु को दे देता है और वायु सर्वत्र वितरण कर देता है।

यह सिद्ध हो जाने पर कि अग्नि पदार्थ को नष्ट नहीं करती विचारणीय है कि क्या हम बड़े-बड़े यज्ञ करें ? क्या लाखों मन घी सामग्री से हवन करें ? प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णन प्राप्त होता है कि वर्षों तक यज्ञ होते रहते थे। जब कि आज की अपेक्षा पहले वातावरण अत्यल्प दूषित एवं विषाक्त था और प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ करता था जैसी कि अश्वपति की उद्घोषणा से ज्ञात है–"नाऽनाहिताग्निः" आज के विषमय वातावरण में तो यज्ञ जितनी मात्रा में कर सके उतना बेहतर होगा क्योंकि आज तो ९० प्रतिशत व्यक्ति यज्ञ नहीं करते है और बीड़ी सिग्रेट तमाम तरह के वाहनों से प्रति मिनट करोड़ों मीटर की मात्रा में तैलादि के द्वारा वातावरण दूषित होता है इसलिए आज अहर्निश यज्ञों की परमावश्यकता है 'और फिर "अधिकास्याधिकं फलम"। यद्यपि इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा सकता है विस्तार भय बाध रहा है।

अन्त में मैं श्री शास्त्री जी से निवेदन करूंगा कि वे सार्वजनिक रूप में अपने लेख के लिये समस्त यज्ञप्रेमी जनों के प्रति खेद व्यक्त करें।

*

आवश्यकता है

आर्य समाज हेतु समर्पित एवं धार्मिक प्रवृत्ति कर्मचारी–एक विद्वान पुरोहित तथा एक कर्मचारी और चौकीदारी हेतु एक अवकाश प्राप्त सैनिक। वेतन जो स्वीकार हो लिखें।

जगतनारायन, रैन बसेरा, बुलन्दबाग
लखनऊ–१८

वैद्यनाथ शास्त्री

(पृष्ठ १२ का शेष)

इन्द्र प्रस्थ में आया उसी समय युधिष्ठिर ने राजगद्दी छोड़ दी। अब हम दोनों के बाद आर्य समाज में हमसे अधिक विद्वान आयेंगे और ऋषि के काम को संभालेंगे परन्तु इस समय तो ऐसा लग रहा है कि समालोचना करने वाले अधिक हैं। भीष्म पितामह ने कहा था कि–

"श्वः श्वः पापिष्ठ दिवसः पृथिवी गतियोवना"

(पृथिवी का यौवन समाप्त हो गया है, दिन बुरे आ रहे हैं)

*

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज फतेपुर का ७४ वाँ वार्षिकोत्सव बड़े उत्साहपूर्वक दिनांक १ अप्रैल से ४ अप्रैल तक आर्य समाज के प्रधान डा० हर्षवर्द्धन की अध्यक्षता में मनाया गया। १ अप्रैल को आर्य समाज फतेहपुर की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें आर्य उपदेशकों ने नगर के विभिन्न चौराहों में आकर्षक गीत प्रस्तुत किए। गुरुकुल सिराथू सरस्वती शिशु मन्दिर फतेहपुर एवं जहानाबाद से आये हुए आर्य वीरो तथा लोक नर्तकों का दल विशेष आकर्षण रहे।

दिनांक २, ३ एवं ४ अप्रैल को वर्तमान सामाजिक रूढ़ियों और दहेज प्रथा, विधवा दहन विरोधी गोरक्षा मद्य निषेध एवं अछूतोद्धार सम्मेलन सम्पन्न हुए।

तीनों दिन प्रातः ८ बजे से लेकर अर्द्ध रात्रि तक क्रमशः यज्ञ एवं धार्मिक भजन व प्रवचन हुए।

इस उत्सव में पधारे हुए म० नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, कुंवर महिपालसिंह, श्री सोहनलाल पथिक, पण्डित महेन्द्रपाल आर्य कलकत्ता, आधुनिक भीम विश्वपाल जयन्त आदि के प्रवचनों भजनों तथा प्रदर्शन से जनता बड़ी प्रभावित हुई।

सूचना

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीरजापुर की साधारण सभा की बैठक दिनांक १५ मई रविवार को १० बजे आर्य समाज बगहां में होगी। सम्बन्धित आर्य समाजें कृपया ठीक समय पर उपस्थित होकर बैठक को सफल बनावें।

देवव्रतसिंह
मा० स० मीरजापुर

क्या यज्ञ से वर्षा हो सकती है ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

इस तथ्य को भी जान लेना चाहिए। जैसे खसखस के सेवन से प्रसूता स्त्री के स्तनों में दूध की मात्रा बढ़ाई जा सकती है पर कोई कहे कि बिना प्रसूता के आप स्त्री स्तन से यदि खसखस द्वारा दूध निकाल दें यह तर्क अज्ञान भरा है। बिना वर्षा ऋतु के वर्षा कराना यज्ञ नहीं विनाश का कारण होता है। अतः प्रत्येक बात को हमें सूक्ष्म रूप में समझ लेना चाहिए।

अतः हम बहुत विनम्रता पूर्वक वैज्ञानिक आधार पर कह सकते हैं कि–विधि पूर्वक पूर्ण वैज्ञानिक विधि से यज्ञ द्वारा वर्षा ऋतु में वृष्टि कराई जा सकती है और जल शोषण करने वाली औषधियों व द्रव्यों से स्वाहाकार कर अति वृष्टि को रोका जा सकता है। आशा है कि–विचारशील जन प्राचीन वैदिक विज्ञान के रहस्यों को जानने व उनसे लाभान्वित होने का यत्न करेंगे।

*

पूर्वांचल प्रशिक्षण शिक्षक शिविर

दि० २२ मई से २६ मई ८८ तक गुरुकुल अयोध्या फैजाबाद में श्री अवधबिहारी खन्ना संचालक की अध्यक्षता में लगाया जा रहा है। जिसमें १०० आर्यवीरों की व्यवस्था की जा रही है।

पूर्वाञ्चल के समस्त आर्य समाजों के मन्त्री, प्रधानों से निवेदन है कि अपने यहाँ से २–२ आर्यवीरों को प्रशिक्षण हेतु गणवेश में भेजने की कृपा करें। दीक्षान्त भाषण श्री बाल दिवाकर जी हंस करेंगे।

मनमोहन तिवारी अधिष्ठाता एवं
देवन सिंह भू० पू० अधिष्ठाता

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म० प्र०) का हीरक जयन्ती समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक राष्ट्र निर्माण को साकार बनाने वाला पवित्र नर्मदा के पावन तट पर अप्रैल १९१२ में स्थापित आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण करके दिनांक २५ से २९ मई १९८८ तक होशंगाबाद में विशाल रूप में हीरक जयन्ती समारोह मना रहा है।

इस अवसर पर एक विराट वैदिक महायज्ञ के साथ, बौद्धिक सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, तथा यति मण्डल सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह में देश के अनेक प्रमुख महात्मा, विशिष्ट आर्य नेता और विद्वान पधार रहे हैं।

निर्वाचन

आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली

प्रधान...श्री गुरमुखराय दुग्गल
मन्त्री...श्री रामकृष्ण सतीजा
कोषाध्यक्ष...श्री हरकिसनलाल गुलाटी

आर्य समाज करौदा, मिर्जापुर

प्रधान...श्री डा० गुलाबसिंह
मन्त्री...श्री कैलाशनाथ सिंह
कोषाध्यक्ष...श्री माता अनुराधा सिंह

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन

संकलनकर्ता—वेद प्रिय हापुड़ वाले अम्बाला छावनी

(१) महात्मा गान्धी ने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द के कार्यों को ही अग्रसर किया। पं० गोविन्द बल्लभ पंत

(२) वेदोंकी रक्षा का सारा श्रेय आर्य समाज को आता है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के केवल दो मन्त्रों से गीता ऐसा महान ग्रन्थ बना। —डा० सम्पूर्णानन्द

(३) आर्यसमाज न होता तो आजादी प्राप्त करना मुश्किल था। —अकबर अली भू० पू० गवर्नर उ० प्र०

(४) यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ गम्भीर आध्यात्मिक,आश्चर्यजनक वक्ता और बुराइयों पर निर्भीक प्रहार करने वाला भारत को प्राप्त नहीं हुआ। —मेडम ब्लेवट्स्की

(५) मैं देखता हूं कि कोई भी जब आर्य समाज में आता है, तो उसमे विशेषता आ जाती है, उसके अन्दर उत्साह देशभक्ति, कर्मशीलता और एक प्रकार की अद्भुत भावना काम करने लगती है। असहयोग के युग से पहले लगभग ९० प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज्य के कार्यों में भाग लेने वाले लीडर थे। —मौलाना हसरत मोहानी

(६) गांधी जी से पूर्व दयानन्द ने राष्ट्र के लिए महान कार्य किया, उन्होंने भारतीयों को स्वराज्य का मार्ग बताया। ऋषि एक पूर्ण पुरुष थे भारत के युग निर्माता थे। —डा० पट्टाभि सीतारमैया

(७) स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे। स्वामी दयानन्द राजनीतिक और मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। उन्होंने कहा सभी मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि मे समान हैं। उन्होने स्त्रियों की समानता और शिक्षा व सामाजिक उत्तरदायित्वों से अधिकार के लिए संघर्ष किया। —श्रीमती इन्दिरागांधी

(८) आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धात दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है, और वेद चुनी हुई पुस्तक है। —रैमेल मेक डानल्ड



नाजिर हुसैन से विष्णुचन्द्र आर्य

२२-४-८८ को आर्य समाज बलरामपुर के विशेष सहयोग से आर्य समाज उतरोला (गोण्डा) द्वारा श्री बलराम गोविन्द, अधीक्षक,विधिक एवं भू सम्पत्ति विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की संरक्षिता में एक मुस्लिम युवक को पुन: वैदिक धर्म मे प्रवेश कराया गया। इस अवसर पर आर्य समाम उतरोला द्वारा एक प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने जिनमे लगभग २०० व्यक्ति सम्मिलित हुए न भाग लिया।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद गोण्डा का वार्षिक निर्वाचन

स्थान आर्य समाज बलरामपुर

दिनांक २४ ४-८८ की अन्तरग सभा में यह निश्चय किया गया कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद गोण्डा का वार्षिक निर्वाचन मन्त्री आर्य समाज बलरामपुर के अनुरोध पर दिनाक १५-५-८८ को समय सायं ३ बजे आ० स० मन्दिर बलरामपुर में सम्पन्न होगा। जनपद की सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियो, प्रधान एवं मन्त्रीगण से अनुरोध है कि समय से पधार कर अपना योगदान प्रदान करें तथा अन्य महत्व-पूर्ण विषयों पर अपनी सम्मति देकर कार्यक्रम को सफल बनावें।

बलराम गोविन्द मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा गोण्डा

आर्यसमाज उतरोला जनपद गोण्डा का वार्षिक निर्वाचन वर्ष १९८८

प्रधान—डा० धर्मपाल आर्य मन्त्री—जगदीश प्रसाद एडवोकेट
कोषाध्यक्ष—हरिप्रसाद आर्य

शोक सन्देश

आर्य समाज की स्वरूप नगर की वरिष्ठ सदस्या एवं भूतपूर्व मन्त्री श्रीमती विमला जी मांगलिक का हृदयगति रुक जाने से दि० १८-३ ८८ को निधन हो गया वे आर्य समाज की स्तम्भ थीं, अत्यन्त मृदुल भाषी और समाज सेवी थीं। आर्य समाज के अतिरिक्त अनेक समाज सेवी संस्थाओ हिन्दू अनाथालय और शिक्षा संस्थाओं में भी उनका सक्रिय योगदान था। विदेशों में भी कई बार जाकर आर्य समाज एवं विश्व हिन्दू परिषद के प्रचार कार्य मे योगदान दिया प्रभु से दिवगत आत्मा की शांति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

अम्बाला छावनी में ऋषि मेला

वैदिक प्रचार मण्डल ७२ बी गोविन्दनगर की ओर से दिनांक १६-२-८८ को दोपहर २ बजे महेश नगर (बाहरी बस्ती) में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर ओजस्वी वक्ता डा० विक्रम विवेकी एम० ए० (हिन्दी संस्कृत) तथा ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी आदि वक्ताओं अपने विचार रखें।

आर्य समाज खण्डवा का स्थापना दिवस

आर्य समाज खण्डवा (म० प्र०) में दिनांक १९-३-८८ को आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में प्रात: प्रभातफेरी निकाली गई, जिसमें शहर के गणमान्य पुरुषों महिलाओं के साथ ही स्कूल बच्चे, विद्यार्थी एवं आर्यवीरदल के नवयुवकों ने भारी संख्या में भाग लिया।

सार्वदेशिक साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४६९९८ ३५५२१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७४
वैशाख शुक्ल १५
१ मई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पुस्तक-परिचय

पुस्तक का नाम	महाकवि शंकर-स्मृति-ग्रन्थ
सम्पादक	श्री देवराज सिंह तथा सहयोगी
प्रकाशक	महाकवि शंकर स्मारक समिति, हरदुआगंज (अलीगढ़) प्राप्ति स्थान
मुद्रक	मेसर्स आगरा फाइन आर्ट प्रेस, राजामण्डी आगरा मेसर्स नवयुग प्रेस, महावीरगंज, अलीगढ़
मूल्य	दो सौ पचास रुपये

महाकवि नाथूराम शंकर 'शर्मा' अपनी अनूठी काव्य प्रतिभा लिए, हिन्दी संसार में प्रख्यात थे। उनका काव्यसाहित्य सामाजिक चेतना का प्रतीक था। वे काव्य की भाषा में सचमुच जन प्रतिनिधि कवि थे। जिस समय हिन्दी के काव्य क्षेत्र में ब्रजभाषा का बोलबाला था कवि शंकर जी ने ब्रज भाषा की समस्त विशेषताओं को खड़ी बोली की काव्य रसधारा में प्रवाहित कर दिया था। वे बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी परम सम्मानार्ह कवि थे। वे समाज सुधारक कवि थे उनकी दृष्टि कभी एकांगी नहीं रही। वे जीवन और समाज को जगाने वाले सच्चे प्रहरीक थे। आर्य समाज से उन्हें विशेष प्रेम था। वह और उनका परिवार आर्य समाज के प्रति सदैव पूर्ण समर्पित रहा। ऋषि दयानन्द के वे सच्चे अनुयायी थे। ऋषि को वे एक महान् समाज सुधारक ही नहीं अपितु विश्व कल्याण का प्रेरक मानते थे। वैदिक धर्म में उनकी अटूट श्रद्धा थी। उनकी काव्य कृतियों में हमें उस महनीयता के दर्शन होते हैं जो ऋषि और मुनियों की बताई पावन परम्पराओं की उद्बोधक है।

उनकी पावन स्मृति में प्रकाशित इस ४०८ पृष्ठीय विशाल ग्रन्थ के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन से हमें उनके प्रखर व्यक्तित्व, काव्य की अनेक विधाओं, सामाजिक चिन्तनों, समस्याओं से जूझते हुए समाज को राहत देने वाले समाधानों का प्राञ्जल, मनोहारी तथा हृदयग्राही शैली में रोचकतापूर्ण वर्णन देखने को मिलता है। भाषालालित्य के साथ ही भाव सुन्दर भावों के पोषक हैं। उनके काव्य में जनसाधारण की आवाज है। समाज की सड़ी गली मान्यताओं पर उन्होंने करारी चोट की है। शिष्ट मनोरञ्जन के साथ ही "सत्य शिव सुन्दरम्" की महान् अभिव्यक्ति स्थान-स्थान पर परिलक्षित हो रही है। कुरीतियों पर चुभते हुए व्यङ्ग्यबाणों से मानव हृदय को सचेत करना उनके काव्य की एक अनूठी शैली थी। ऋषि दयानन्द को वे अपना गुरु, आदर्श एवं पथ-प्रदर्शक मानते थे। उनके सुपुत्र श्री हरिशंकर शर्मा में उनके समस्त गुणों का प्राकाट्य था। आर्यमित्र को उनके कुशल सम्पादन निर्देशन का वर्षों सौभाग्य प्राप्त रहा है।

गंगाप्रसाद त्रिवेदी को मातृ शोक

बड़े दुःख के साथ यह शोक समाचार प्रकाशित किया जा रहा है कि आर्यमित्र (नवजागरण आर्य भास्कर प्रेस) के मैनेजर श्री गंगाप्रसाद त्रिवेदी की पूज्य माता जी श्रीमती सरस्वती देवी का ७२ वर्ष की आयु में ग्राम [illegible] ([illegible]) में गत १०-४-८८ को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयीं।

प्रभु से उनकी दिवंगत आत्मा की शांति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

आर्यमित्र कार्यालय तथा प्रेस दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करके बन्द कर दिये गये।

सभा मन्त्री

प्रकाशित ग्रन्थ का नियोजन सुन्दर, सम्पादन, मुद्रण, गेटअप अत्यन्त आकर्षक है। कागज बहुत ही उत्तम कोटि का चिकना सफेद प्रयुक्त हुआ है। हिन्दी साहित्य के माने जाने महारथियों, विद्वद्रेण्यों एवं सन्तों के उनके प्रति व्यक्त किये गये विचार अनमोल हैं, पठनीय हैं, एवं हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। प्रत्येक आ०स० के पुस्तकालयों में आर्य परिवारों में विश्वविद्यालय एवं कालेजों में तथा हिन्दी निष्ठ शोध कर्त्ताओं को यह पुस्तक अत्यन्त उपादेय होगी। हमारी दृष्टि में यह हिन्दी [illegible] की एक मूल्यवान निधि है।

—सम्पादक

स्वत्वाधिकारिणी उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवजागरण आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए सम्पादक एम० सी० ([illegible]) सम्पादक, लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. स० २२४१।५७ | घोषणा पत्र स ७।२८-१-८१

ज्येष्ठ कृष्ण ७, रविवार, सवत् २०४५ वि० दिनांक ८ मई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक-

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक-

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष ९१

अङ्क १९

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ऐतिहासिक निर्णय

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का त्यागपत्र सर्वसम्मति से अस्वीकार

नई दिल्ली १८ अप्रैल-विगत कुछ समय से आर्यों की शिरोमणि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के विरुद्ध कतिपय व्यक्तियो द्वारा निन्दनीय एव मिथ्या आरोपो से युक्त एक सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा था। पत्रिकाओ एव अन्य माध्यमो द्वारा आर्यजगत के वर्तमान नेतृत्व के प्रति अमान्यता प्रकट करते हुए स्वामी जी से सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से त्याग पत्र देने के लिए कहा जा रहा था। कुछ समय पव अखिल भारतीय यतिमण्डल की बैठक हुई थी जिसमे स्वामी आनन्द बोध जी ने अपने गुरुवर श्री स्वामी सर्वानन्द जी को अपना त्यागपत्र प्रस्तुत भी कर दिया था जिस पर देश विदेश म विभिन्न प्रतिक्रियाए प्रारम्भ हो गई। परिणामस्वरूप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग ने दिनाक १७ अप्रैल १९८८ का लम्बा विचार-विमर्श किया। स्वामी आनन्द बोध जी उस दिन गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट मे भाग लेने हेतु हरिद्वार गये हुए थे। अत उनकी अनुपस्थिति मे बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने की।

अन्तरङ्ग ने स्वामी जी द्वारा प्रस्तुत त्यागपत्र और उस पर देश-विदेश के आर्य नेताओ, एव आर्य समाज के मनीषियो, विचारको द्वारा व्यक्त प्रतिक्रियाओ, पर लम्बे विचार-विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से निम्न निर्णय लिया है-

नि० स० ११ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने गुरु श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के केवल एक संकेत मात्र से कि वे सभा के प्रधान पद से त्यागपत्र दे दें गु० शिष्य परम्परा को ध्यान म रखते हुए उनके आदेश का पालन किया, स्वामी आनन्द बोध जी का यह काय एक ऐतिहासिक घटना है जिससे यह विदित होता है कि उनमे प्राचीन परम्पराओ के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा है। इसके लिए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज और स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती दोनों ही बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं।

परन्तु प्रधान जी का यह कार्य-

१-न वैधानिक है और न ही आर्यसमाज के लिए हितकर है।

२-न ही सभा सस्थाओ के विधान के अनुकूल है।

क्योंकि-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैधानिक रीति और सर्वानुमति से निर्वाचित प्रधान जी को अपने मतदाताओ की सहमति के बिना ऐसा कोई काय नहीं करना चाहिए था।

स्वामी जी ने सिर्फ त्यागपत्र दिया है। पद त्याग नहीं किया है। अपने गुरु जी के आदेशानुसार अन्तरग सभा के निणय तक अध्यक्ष के नाते कार्यरत रहने का न सिर्फ वायदा ही किया परन्तु उस नाते प्रधान पद पर कार्य भी करते रहे हैं।

प्रधान जी के त्यागपत्र देने के पश्चात लोगो मे जो प्रतिक्रिया हुई है, सम्भवत. उसी कारण स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने दिनाक २३-३-८८ को प्रधान जी के नाम एक पत्र भेजा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रधान जी सभा के हित मे जो उचित है, उस प्रकार ही निणय लें।

अतः अन्तरंग सभा की यह बैठक निर्णय करती है कि स्वामी आनन्द बोध सरस्वती यथावत सभा प्रधान के नाते कार्यरत रहें। उनका त्यागपत्र अवैध है और सभा की दृष्टि मे उसका कोई औचित्य नहीं है। प्रधान जी के नेतृत्व मे हमे पूर्ण विश्वास है और आज की परिस्थिति मे उनका प्रधान पद पर स्थिर रहना अनिवार्य है। (शेष पृष्ठ १२ पर)

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमे रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं ।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—ज्येष्ठ कृष्ण ७ संवत २०४५, रविवार ८ मई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

सत्यमेव जयते

और सत्य का सूर्य फिर जगमगाने लगा—संसार को अपनी अनन्त रश्मियो से आलोकित करने, पुष्पित करने । गुरुशिष्य की परम्परा एक बार पुनः साकार हो उठी । प्रज्ञाचक्षु ने लौंग नहीं जीवन मांगा था—एक दिन, और प्यारे ऋषि ने तुरन्त, क्षणमात्र का विलम्ब किए बिना जीवन समर्पित कर दिया था—उत्सर्ग कर दिया था, कहा था——'यथाऽऽज्ञापयतु गुरुवर्य'—'मेरा मुझमे कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर, तेरा तुझको सौंपता क्या लागत है मोर'' और आज यतिवर्य सर्वानन्द ने, अपने ही आनन्द से आनन्द का बोध देने वाले आनन्द और त्याग की मूर्ति से कहा——'त्याग दे त्याग का पत्र दे दे' । जिससे एक संस्था से जिससे लाखो करोडो की डोर बन्धी हुई है । माना कि झंझावात भयानक है, तूफानों के थपेडे बढ़ते आ रहे हैं, पर मेरे प्रिय नाविक ? छोड दे मेरी आज्ञा है । और तुरन्त छोड दिया——'एवमस्तु, मेरे गुरुवर्य ?—यह त्याग पत्र आपके चरणो मे समर्पित है——''त्वदीय-वस्तु गुरुवर्य तुभ्यमेव समर्पये' । कहाँ हैं लोकैषणा का मोह ???, लाखो करोडो की डोर टूट जाय, टूट जाय, मैं तो आज्ञा का अनुचर हू । पार लगना होगा तो कोई न कोई लगा ही देगा, पार लगाने वाला तो कोई और है, मै तो निमित्तमात्र हू ।

पर नहीं, नाविक ? तुम हमे बीचमे छोडकर नहीं जा सकते । हमारे जीवन की डोर तुम्हारे साथ बन्धी हुई है । तुम चाहे सन्यासी हो या गृहस्थी तुमने हमे पार ले जाने की कसम खाई है । तुमने हम आर्यों के एक—एक आसू पर हजार—हजार आसू बहाए हैं । हमने तुम्हे जहा पुकारा तुम दीवाने बने दौड़े चले आये हो । तुम्हारे गुरु इतने निर्दयी नहीं हो सकते, उन्हे सोचना होगा, तुम्हारा जीवन तुम्हारा नहीं है । दुनियां क्या कहेगी——एक सन्यासी था जिसने विश्व का बोझ अपने सिर पर उठा लिया था । कन्दराओं और गुफाओं में रहना अस्वीकार कर दिया था । अपनी धोती का कफन बनाकर, अपने प्यारे लख्ते जिगर को लपेटती हुई एक दीन मा को देखकर जो सावन भादो की तरह फूट पड़ा था । क्या उसकी बनाई संस्था आर्य समाज मे कहीं लोकैषणा की गन्ध आ सकती है । यह तो त्यागियों, वलिदानियो की संस्था है । गुरु की आज्ञा पर मिटनेवालो की— और निःसन्देह हमने देखा परमकारुणिक प्रभु की प्रेरणा का उदय हुआ, बढ़ते हुए तिमिरान्ध का उन्मूलन हुआ । उन्हीं गुरुवर्य ने फिर आशीर्वाद दिया——'मेरे प्रिय शिष्य ? मेरी आज्ञा को तुमने प्रेम पूर्वक स्वीकार कर लिया । अब आर्य समाज के हित की दृष्टि से रख जैसा आत्मा कहे स्वीकार करना'' । और १७ अप्रैल १९८८ को सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग ने उनकी अनुपस्थिति मे गुरु और शिष्य दोनो को बधाई देते हुए जनहित की दृष्टि से पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को अपने पद पर यथावत् रह कर जन सेवा करते रहने का सर्वसम्मत निर्देश दिया है ।

सार्वदेशिक सभा के इस ऐतिहासिक निर्णय की ओर आर्य जगत की आँखें टिकी हुई थीं । संकट की इस घडी मे हमारी शिरोमणि सभा ने यह निर्णय देकर आर्य जाति के प्रति महान उपकार किया है । उसका निर्देश हमारे सर आंखो पर है । हमारा विश्वास है इस ऐतिहासिक निर्णय से गुरु शिष्य की प्राचीन परम्पराओं के प्रति आर्यों का अगाध विश्वास एवं श्रद्धा उन्मुख हुई है और हम दलबन्दी के अपावन-पङ्क में पङ्किल होने से बच गये हैं ।

उत्तर प्रदेश की आर्य जनता अपने प्रिय नेता पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के नेतृत्व मे पूर्ण-विश्वास प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से उनके यशस्वी दीर्घ जीवन की कामना करते हुए उनके कुशल नेतृत्व मे प्रगति पथ पर बढ़े चलने का व्रत लेती है ।

प्रधान सम्पादक

*

दयानन्द पब्लिक स्कूल मीरजापुर का चुनाव सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार परगनाधिकारी सदर मीरजापुर की देख-रेख मे सम्पन्न

निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए

श्री गोपीनाथ वर्मा एडवोकेट अध्यक्ष ।
श्री गणेश प्रसाद गुप्ता उपाध्यक्ष ।
श्रीमती डा० मधु चोपडा प्रबन्धक ।
श्री डा० विनोद शुक्ला—उप-प्रबन्धक
श्री बैकुण्ठ नाथ कोषाध्यक्ष
श्री ड० हरि स्वरूप जी सदस्य
श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर ,,
श्री मन्हकूराम कश्यप ,,
श्री सीताराम गुप्ता ,,
श्री बटुक प्रसाद वैश्य ,,

क्या महर्षि सन्तान—आर्य भूल गए ?

[ओम नाथ विद्यार्थी—प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर]

मैं समस्त आर्य समाज का ध्यान महर्षि की उत्कट तड़प, परम लक्ष्य, जिससे वह सारा जीवन उत्पीड़ित रहे, हर प्रकार के कष्ट सहे—यहां तक कि अपने परम पद—मुक्ति की इच्छा को अवश्य दे, त्याग किया। उनकी इस तड़प—लक्ष्य का यथार्थ चित्रण करने हेतु उनके जीवन काल के एक दो प्रसंग पाठकों के समक्ष, उनकी जीवन गाथा में से, यहां उद्धृत करना चाहूँगा, इस आशा और विश्वास के साथ कि वह अपने आलस्य—प्रमाद को छोड़ इस ओर ध्यान ही नहीं वरन उद्यम-पुरुषार्थ करने में तत्पर हो जावेंगे। उनके जीवन के सम्बन्धित प्रसंग "श्री मद्दयानन्द प्रकाश' से अक्षरशः प्रस्तुत हैं—

"एक रात का वर्णन है कि महाराज आधी रात के समय जाग पड़े और उठकर इधर-उधर चक्कर लगाने लगे। उनके पांवकी आहट सुनकर एक कर्मचारी की भी आंख खुल गई। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि स्वामी जी किसी बड़ी व्याकुलता और घबराहट में घूम रहे हैं। उसने विनय की, "भगवन्! यदि कोई वेदना है तो आज्ञा कीजिए। सेवक औषधोपचार करने के लिये उपस्थित है, यदि आदेश हो तो वैद्य को भी बुला लाऊ।"

उस समय, स्वामी जी ने सुदीर्घ सांस लेकर कहा, 'भाई! यह बड़े वेग से बढ़ती हुई वेदना, आपके औषधोपचार से शमन होने वाली नहीं है। यह वेदना भारत के परिश्रमी लोगों की दुर्दशा के चिन्तन से चित्त में अभी उत्पन्न हुई है। ईसाई लोग जोड़ तोड़ आदि भारत वासियों को ईसाई बनाने के लिए अपनी कल्पनाओं के ताने—बाने बुन रहे हैं। रुपया भी पानी की तरह बहाने को कटिबद्ध हैं। परन्तु इधर आर्य जाति के पुरोहित हैं, जो कुम्भकर्ण की नींद पड़ सोते हैं। उनके कानों पर जू तक नहीं रेंगती। मैं अब यह चाहता हू कि राजों—महाराजों को सन्मार्ग लाकर सुधार कर आर्य जाति को, एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र में आबद्ध करू।'

'प्यारा जी! कोई देश, जनशून्य नहीं हो जाया करता। लोग बने ही रहा करते हैं। परन्तु धर्म—गुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और [illegible] से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिन्ह बदल जाते हैं। रहन-[illegible] के ढंगों में भेद आ जाता है। ठीक ऐसा समय अब इस देश पर उपस्थित है। यदि समाला न गया तो आर्य जाति परिवर्तन के चपल चक्र पर अतिशय [illegible] से, अपने पूर्व पवित्र शरीर को परिवर्तित कर डालेगी। इसके पिछले प्रमाद के कारण करोड़ों मनुष्य मुसलमान बन गए। अब प्रतिदिन सैकड़ों ईसाई बनते चले जा रहे हैं। ऐसे समय में तो, अपने सधर्म बन्धुओं को पहले हाथ से उनकी चोटियां पकड़कर भी बचाना होगा। भाई! यह कटु कर्तव्य, मैं कोई अपने स्वार्थ के लिए तो पालन नहीं कर रहा हूं। मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईट पत्थर और विष ही स्थान—स्थान पर मिलता है। परन्तु बन्धु वात्सल्य की भावना मुझे विपत्तियों के विकट और कठिन काल में भी समाज सुधार के लिए प्रोत्साहित कर रही है।'

उपरोक्त घटनाओं से स्पष्ट हो जाता है कि महाराज का लक्ष्य आर्यत्व को पूर्व समान आपूरित कर फिर से अपने देश को सच्चा 'आर्यावर्त' बनाना था। अन्तत 'कृण्वन्तो—विश्वमार्यम्' वेदाज्ञा अनुसार पूर्व काल की भांति चक्रवर्ती आर्य राज्य की स्थापना करना था। ताकि संसार भर में सुख शांति मूर्तिमान हो सके। भूलना न होगा कि महर्षि ने अपनी मानस सन्तान—'आर्यसमाज' का निर्माण इसी उद्देश्य से ही तो किया था। इस सम्बन्ध में उनकी जीवनी "श्री मद्दयानन्द प्रकाश' में उनके यह शब्द मिलते हैं।

'मुझ एक भी सुपात्र—सुयोग्य शिष्य नहीं मिल सका। अब तो मेरे शिष्य सभी 'आर्यसमाजी' हैं। वह ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है।'

क्या सब आर्य समाजी विशेष रूप से आर्य समाज के कर्णधार इस ओर अपने कर्तव्य पूर्त्यर्थ कटिबद्ध होंगे, और महर्षि के विश्वास और भरोसे पर पूरा उतरेंगे ?

आय बन्धुओं! आर्य सन्तान—हिन्दुओं की वर्तमान दशा आपसे छिपी नहीं। हम संख्या की दृष्टि से तो बड़े भारी हैं कितने ५४ ६० करोड़। परन्तु हैं चेतनाहीन। हम अनेक मत मतान्तरो के झाड़—जगल में फसे हुए, आर्य चेतना विहीन हुए हैं। कहने को हम बहु-संख्यक हैं। परन्तु हमारे अधिकार अल्प संख्यक कहलाने वालों में बाँटे जा रहे हैं। फलत समूचे राष्ट्र में हमारा जीना दूभर हो रहा है। हमारी मान्यताओ को यह अल्प संख्यक पैरों तले रौंद रहे हैं। गोवध अभी तक जारी है। यहीं तक कि हमारे पूज्य देव श्री राम, श्री कृष्ण, जिनके इर्द गिर्द हमारी संस्कृति घूमती है, के जन्म स्थानों पर भी हमारा अधिकार नहीं। देश को विभाजन—टुकड़े—टुकड़े करने के प्रयत्न करीब करीब हर प्रदेश मे चल रहे हैं। दिन प्रतिदिन स्थिति बिगड़ती ही जा रही है पंजाब मे क्या कुछ नहीं हो रहा। रोज हत्यायें हो रही हैं। स्थिति विस्फोटक बन चुकी है। हिन्दू मात्र गांव के गांव खाली कर भाग रहे हैं।

इस सब स्थिति से वास्तव में देखा जाये, तो हम हिन्दू ही जिम्मे-दार हैं हमने एकता के सूत्रों को भुला रखा है। महर्षि देश—राष्ट्र को सशक्त, समृद्ध बनाने का नुसखा स्वयं बतलाते हैं।

'कर्नल [illegible] जी, के पूछने पर कि भारत का पूर्णहित—एव जातीय उन्नति कब होगी तो महर्षि स्पष्ट शब्दों में बतलाते हैं। जब तक एक धर्म, एक भाषा एक लक्ष्य न होगा, भारत का पूर्ण हित—और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य होगा। इसका विस्तार करते हुए महर्षि ने कहा। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव, और [illegible] मे एकता आ जावे वहां सारे सुख वैभव एक एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं।

यह एकता कैसे सिद्ध हो ?

महर्षि त्रिकाल दर्शी थे। एक युग पुरुष जिनके स्तर का कोई अन्य महापुरुष गत ४—५ हजार वर्षों मे उत्पन्न नहीं हुआ। हमे उनके बतलाये उपचार के क्रियान्वयन हेतु पूरी शक्ति से जुट जाना होगा। तभी हमारा देश फिर से "आर्यावर्त" बन सकेगा। इस अर्थ हिन्दू मात्र को मत मतान्तरों के झाड़ जगल से निकालने का प्रयत्न और सच्ची आर्य चेतना ला एक रूपता लानी होगी।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अमृत वर्षा

इन्द्रः पुरः एतु

[श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' वेदवारिधि, राजाजीपुरम् लखनऊ]

स्वस्तिदा विशाम् पतिर् वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्र. पुरः एतु न सोमपा अभयम् कर. ॥

[ऋ० १० । १५२ । २ अ० १ । २१ । १]

ऋषि शासो भारद्वाज. / अथर्वा दे०—इन्द्र छन्द अनुष्टुप
अन्वय स्वस्तिदा विशाम् पति वृत्रहा विमृध
वशी वृषा इन्द्र न पुर एतु

अर्थ—कल्याणकारी, प्रजाओ का पालक, अन्धकार समूह का नाशक शत्रुओं को वश मे करने वाला सोमपेयी, निर्भीकता प्रदाता, इन्द्रियो का स्वामी हमारे अग्रणी होकर गतिमान होवे ।

इन्द्रियों का जो करे नियन्त्रण ।
आत्म विजेता और अपना स्वामी ।
पाप तिमिर का जो करे विनाश ।
दिव्य ज्योति का बने अनुगामी ।
सकल शत्रुओ को जो करे परास्त ।
रहे अविचल वश मे रखे नितरामी ।
पान करे जो सतत सोम का ।
होवे एकमेव परम आनन्द कामी ।
प्रजाहित सर्वोपरि जिसको अभीष्ट,
दृढ़ प्रतिज्ञ अजन्य वीर बने कल्याणी ।
अभय दान करे प्रदान सब को ।
चले वह अग्रणी हमारे अविरामी ।
—'वसन्त'

इन्द्र आगे होकर चले

नेतृत्व करने की मानव की स्वाभाविक कामना है । मानव अग्रणी बनकर अन्य मानवों को अपना अनुगामी बनाना चाहता है । वैदिक मान्यताओं के अनुसार जनों का नेतृत्व करने वाला उनके आगे आगे चलता था । किसी भी देश अथवा प्रदेश का शासक प्रजा की रक्षा हेतु सार्वजनिक कल्याण के कार्यो मे अगुआ बनता था । सेनापति सेना के आगे रणभूमि में चलता था । वेद ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण आज स्थिति में घोर परिवर्तन आ गया है । प्रजा के रक्षक अब आगे नहीं पीछे रहते हैं , लोक कल्याण के समस्त कार्यों मे वे साधारण जनों से सर्वस्व त्याग की कामना करते हैं और स्वय अपनी कृपणता का परिचय देते हैं । परन्तु स्वत. भयभीत होकर अपने प्राणों की रक्षा का सतत प्रयत्न करते हैं ।

सच्चा नेतृत्व कौन करे ? सच्चा प्रजा रक्षक कौन होवे तो परमात्मा अपनी अमर वाणी मे कहता है—

(१) 'स्वस्तिदा.' स्वस्ति देने वाला, मगलकारी, कल्याणमय । +अस्ति=अच्छी सुखदायी गति । स्वस्ति अपने भीतर एक दिव्य आशीर्वाद को सजोए है । परमात्मा प्रदत्त यह पूर्ण आशीर्वाद है जिसे सामाजिक प्राणी होने के नाते सस्कारों अथवा विभिन्न सामाजिक कार्यों मे प्रियजनों को तीन बार 'ओम् स्वस्ति, ओम् स्वस्ति 'ओम् स्वस्ति' कह कर दिया करते हैं और अपनी मगल कामनाओं को अभिव्यक्त करते हैं । जो स्वय स्वार्थलीन हो वह अन्यों के लिए 'स्वस्तिदा ' नहीं हो सकता ।

(२) 'विशाम् पति' प्रजाओं का पालन करने द्वारा जो प्रजन हैं वे अर्थात जो प्रकृष्ट जन हैं श्रेष्ठ हैं, उनका रक्षण और जो निकृष्ट व्यक्ति हैं, उन्हे श्रेष्ठ बनाना ही अनार्यों का आर्यकरण है । अनार्यों का आर्यकरण यदि शास्त्रो से न किया जा सके तो प्रजनो की रक्षार्थ शस्त्रों से काम लेकर अनार्यत्व का उन्मूलन करना 'विशाम् पति का । अर्थ है ।

(३) 'वृत्र हा' पाप के अन्धकारमय घेरो का हनन करने वाला । जो स्वय दुरात्मा हो, पाप के तिमिराच्छादित घेरों मे घिरा हुआ हो, वह अन्यो को इन घेरो को तोड़कर कैसे बाहर निकालेगा । दूसरों को शोधने से पूर्व प्रथम अपना शोधन करना होगा । काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष और अहकार ये वृत्त ही पाप के अंधेरे घेरे हैं जिन्हें तोड़कर व्यक्ति श्रेष्ठमार्गी बनकर अन्यो को सन्मार्गी बनाता है ।

(४) 'विमृध वशी' शत्रुओ को वश मे करने वाला । बाह्य और आन्तरिक दो प्रकार के शत्रु होते हैं जिन्हें वश मे करने के लिए जहां शक्ति अपेक्षित है वहां युक्ति की भी आवश्यकता होती है । शत्रुओ को निर्बल समझ कर उनकी उपेक्षा करना मूर्खता है । बुद्धिमत्ता से जो काम लेते हैं वे शत्रुओ को भी मित्र बनाकर उनसे लाभान्वित होते हैं । शत्रुओं का वशीकरण उन्हें मित्र बनाकर उनके वैमनस्य को स्नेह से परिवर्तित करने से सिद्ध होता है । शक्ति से जो उन्मूलन होता है वह अस्थायी और क्षणिक होता है । समय मिलने पर पुन उभरता है ।

(५) 'वृषा' महान वृष्टिकारक, दानी नहीं महादानी । परमार्थ के लिए सतत सतत सर्वस्व अर्पण करने को सर्वदा उद्यत । ऐसा महादानी ही वास्तविक रूप से शूर वीर होकर सच्चा रक्षण करता है क्योंकि वह सकल अभावो और अन्यायो को रोकने मे जीवन तक को अर्पित कर देता है ।

(६) 'सोम पा' सोमपेयी सदैव तृप्त रहते हैं । उनकी आत्मा तथा शान्त रहती है । सीमित कामनाएं और पुरुषार्थ उन्हे निरन्तर तृप्तावस्था मे रखते हैं । जो आत्मना तृप्त होगा वह अन्यो की अतृप्ति का कारण नहीं बनेगा ।

(७) 'अभयङ्कर' जो दूसरों को अभय दे सके, ऐसा वही अभय हो सकता है जो आत्मवेत्ता हो । आत्म ज्ञानी जब आत्मा की अमरता को अनुभूत कर लेता है तो जरा, व्याधि और मरण के भयों से उन्मुक्त हो जाता है । ऐसा आत्मज्ञानी ही दृढ़ प्रतिज्ञ और अजन्य वीर होता है और अपनी प्रजाओं में वीरत्व का सचार करता है ।

उपरोक्त दिव्यगुणों से विभूषित 'इन्द्रः' की संज्ञा से विभूषित होता है । इन्द्रियों का स्वामी ही इन्द्र है । इन्द्रियों का दास न तो ऐश्वर्यवान होता है और न ही नेतृत्व का अधिकारी । ऐसे महान व्यक्तित्व वाले पुरुष के लिए वेद का आदेश है, जनता का आह्वान है कि वह 'नः पुरः एतुः' हमारे आगे आगे चले, हमारा अग्रणी बने ताकि उसके नेतृत्व मे हम फलें फूलें ।

वेद के इस आदेश को स्वीकार कर जो जनता और नेताओं को उसके अनुकूल बनाकर चलाएगा, वही मानवों का कल्याण करेगा ।

मुक्ति एक समीक्षा

[सूर्यबली पाण्डेय सरैया–कुटीर मक्के जौनपुर]

[गताङ्क से आगे]

इस प्रकार मुक्ति के साधनों पर विचार करते समय इस निश्चय पर पहुंचना पड़ता है कि धर्मयुक्त सत्य भाषण आदि करना, धर्माचरण करना और मिथ्या भाषण आदि अधर्माचरण आदि का नितान्त परित्याग कर देना ही मुक्ति का साधन है। किन्तु ऐसी स्थिति विवेक पर ही निर्भर है। बिना विवेक के शुद्ध ज्ञान का उपलब्ध होना सम्भव नहीं। इसी से प्रभावित होकर शास्त्र ने कहा है– ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः। अर्थात् बिना ज्ञान के मुक्ति का मिलना सम्भव नहीं है। इस पर विचार करते समय शास्त्र ने मुक्ति प्राप्ति के प्रयासों को दो भागों में विभक्त कर दिया है। प्रथमतः मृत्यु के प्रपंच से पार होना और अन्ततः ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त करना। इन दोनो भागों की सिद्धि के लिए जो विशिष्ट साधन प्रस्तुत किया है उसका उल्लेख वेद में इस प्रकार है–

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ यजु० ४०-१४

अर्थात् जो मनुष्य विद्या और अविद्या दोनों के स्वरूप को जानता है वह अविद्या अथवा कर्मोपासना से मृत्यु को पार कर विद्या अथवा यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त करता है। इस स्थान पर विद्या और अविद्या दोनों परस्पर विलोम पद के रूप में प्रयुक्त हुए हैं जिनका अर्थ है "वेत्ति यथावत् तत्वपदार्थं स्वरूपं यया सा विद्या। तत्व स्वरूपं न जानाति भ्रमात् अन्यस्मिन् अन्यस्मिन् निनोति यया साऽविद्या'। अर्थात् जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप जाना जाय वह विद्या तथा जिससे तत्व स्वरूप न जाना जाय, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है। मन्त्र में स्थित अविद्या पद का अर्थ कर्मोपासना इस कारण किया गया है कि कर्म और उपासना बाह्य और अन्तर क्रिया विशेष है ज्ञान विशेष नहीं। भगवान् मनु ने भी इसी मन्त्र से ज्योतित होकर अपने धर्म शास्त्र में अविद्या के स्थान पर तप पद (जो कर्म उपासना का आधार है) का प्रयोग करते हुए इसी अर्थ का ज्यों का त्यों समर्थन किया है। वह इस प्रकार है –

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयस करं परम्।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ मनु० १२-१०४।

अर्थात् तप और विद्या ब्राह्मण के लिये मोक्ष का सर्वोत्कृष्ट साधन है। तप या विशिष्ट कर्म और उपासना पापाचरण को मिटाता है और विद्या से मोक्ष को प्राप्त करता है। निश्चय ही मोक्ष–प्राप्ति का प्रथम चरण है पापाचरण के नाश से जीवन को विशुद्ध करना, जो शुभ कर्म और ईशोपासना से ही सम्भव है और अन्तिम चरण है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति, जिसकी उपलब्धि तत्व बोध पर ही निर्भर है। जब तक दोनों प्रकार की प्रक्रिया सिद्ध न हो जाय तब तक मुक्ति गूलर का फूल ही रहेगी। परन्तु कालान्तर में उक्त दोनों अंगों को पृथक पृथक दो निष्ठा मान कर मनीषियों ने मात्र एक एक का सहारा लिया और परस्पर विवादोत्कर्ष करते हुए एकांगी महत्ता पर बल दिया। किसी ने मात्र कर्म और भक्ति पर मोक्ष-प्राप्ति निर्भर माना तो किसी ने केवल ज्ञान को ही मोक्ष के साधन रूप में स्वीकार किया। महाभारत शान्ति पर्व में इसका सम्यक् विवेचन इस प्रकार किया गया है–

मोक्षे हि त्रिविधा निष्ठा दृष्टाऽन्यैः मोक्ष वित्तमैः
ज्ञानं लोकोत्तरं यच्च सर्वं त्यागश्च कर्मणाम् ॥
ज्ञान निष्ठा वदन्त्येके मोक्ष शास्त्र विदो जनाः।
कर्म निष्ठां तथैवान्ये यतयः सूक्ष्म दर्शिनः ॥
प्रहायोभयमप्येवं ज्ञानं कर्म च केवलम्।
तृतीयेयं समाख्याता निष्ठा तेन महात्मना ॥
म० भा० शान्ति० २३०–३४, ३५,

अर्थात् मोक्ष–विद्या–विशारद सूक्ष्म दर्शी यतियों ने मोक्ष विषय में तीन प्रकार की निष्ठा बतलाई है। लोकोत्तर ज्ञान तथा सभी प्रकार के कर्मों का त्याग! कई जनों ने मात्र ज्ञान-निष्ठा का प्रतिपादन किया है। कुछ एक कर्म निष्ठा को ही मुख्य मानते हैं।। परन्तु कुछ मनीषियों ने केवल ज्ञान अथवा केवल कर्म पर बल देना छोड़ कर ज्ञान और कर्म दोनों को मोक्ष प्राप्ति में मुख्य कारण कहा है। हारीत स्मृति के सातवें अध्याय में उसके रचयिता ने उक्त तृतीय निष्ठा पर अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए बड़ा बल दिया है। वह निम्नलिखित रूप में स्पष्ट है –

यथा अश्वा रथ हीनाश्च रथाश्चाश्वैर्विना यथा।
एवं तपश्च विद्याश्च उभावपि तपस्विनः ॥ ७
यथान्नं मधु संयुक्तं मधु चान्नेन संयुतम्।
एवं तपश्च विद्या च संयुक्तं भेषजं महत् ॥ १०
द्वाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा वै पक्षिणां गतिः।
तथैव ज्ञान कर्माभ्यां प्राप्यते ब्रह्म शाश्वतम् ॥ ११

अर्थात् जैसे बिना रथ के घोड़े और बिना घोड़ों के रथ व्यर्थ है। उसकी उपादेयता रथ और घोड़ों के सहयोग पर निर्भर है उसी प्रकार तप और विद्या अर्थात् धर्म और ज्ञान मोक्षार्थी तपस्वी के लिए दोनों आवश्यक हैं। जैसे मधु से संयुक्त अन्न और अन्न मिश्रित मधु गुणकारी होता है उसी प्रकार मोक्ष-प्राप्ति के लिए ज्ञान और कर्म दोनों अपेक्ष्य हैं। जैसे दोनों पक्षों के रहने पर पक्षी उड़ सकते है अन्यथा नहीं, उसी प्रकार जब तक ज्ञान और कर्म दोनों का सहयोग न हो तब तक ब्रह्म की प्राप्ति या मोक्ष संभव नहीं। अतः स्पष्ट है कि केवल ज्ञान या केवल कर्म मुक्ति का साधन नहीं। अपितु दोनों के सम्बल को प्राप्त करके ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

कुछ नव्य वेदान्ती अपनी डफली का अलग राग अलापते हुए आपत्ति करते हैं कि जीव के लिए मोक्ष के प्रपंच में फंसने की आवश्यकता ही नहीं है। वह स्वभावतः मुक्त है। जीवन-मरण पाप-पुण्य और सुख-दुख तो अन्तःकरण के धर्म हैं। जीव उससे पृथक् और सर्वथा निर्लेप है। वह तो स्वयं ब्रह्म है। अन्तःकरण में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब पड़ता है तब उस प्रतिबिम्ब की संज्ञा जीव हो जाती है। वह मात्र अन्तःकरणोपाधि से जीव कहलाता है। किन्तु जैसे दर्पण के टूट जाने से प्रतिबिम्ब की कोई क्षति नहीं होती उसी प्रकार अन्तःकरण के छिन्न भिन्न होने से ब्रह्म के प्रतिबिम्ब जीवोपाधि धारी ब्रह्म की कोई भी क्षति नहीं होती। वह ब्रह्म का ब्रह्म ही रह जाता है। अस्तु जीव ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इसलिए ब्रह्म को ही ब्रह्म का सान्निध्य दिलाने के लिए मोक्ष प्राप्ति का नाटक रचना शास्त्र सम्मत नहीं। इन बुद्धि के कोल्हुओं को इतना भी पता नहीं कि प्रतिबिम्ब

[शेष पृष्ठ ८ पर]

"गायत्री- परिवार के संस्थापक ढोंगी है"

[डा० वेदप्रकाश एम० ए० पी० एच० डी०, मेरठ]

आर्य समाज असत्य मत खण्डन सत्य मत मण्डन का सदैव पोषक एव समर्थक रहा है। लेखक ने प्रस्तुत लेख मे किसी व्यक्तिगत चरित्र पर नही अपितु धर्म के नाम पर प्रसारित ढोंग के विरुद्ध ही लिखा है। पाठक इसी भावना से इस लेख को पढ़े— सम्पादक]

'युग-निर्माण-योजना' और 'गायत्री-परिवार' के संस्थापक श्रीराम शर्मा के जीवन एव कृतित्व पर शोध करने वाले स्वामी प्रज्ञानन्द ने उन्हे झूठा और धोखे बाज बताया। यह समाचार २१-१०-८७ के 'अमर उजाला' समाचार पत्र मे पढ़ा था। स्वामी प्रज्ञानन्द जी का यह कथन सत्य है। यहाँ श्रीराम शर्मा के पाखण्ड का भण्डाफोड़ करने के लिए 'तपोभूमि' नवम्बर १९८६ के आधार पर कुछ तथ्य प्रस्तुत हैं। श्रीराम शर्मा और उनके अन्ध भक्त ध्यान पूर्वक पढ़ें और सत्य असत्य का निर्णय कर सत्य को स्वीकार करें। यथा—

(१) श्रीराम शर्मा आर्य समाज मथुरा के सदस्य रहे हैं, परन्तु वित्तैषणा और लोकैषणा के व्यामोह मे फँसने के कारण वे सत्यसनातन वेद-मार्ग को छोड़ कर, बुद्धिवाद के विपरीत असत्य ढोंग और गुरुडम फैलाने मे लगे हुए हैं।

(२) श्रीराम शर्मा बताते हैं कि एक सूक्ष्म शरीरधारी ऋषि उनके गुरु हैं। यही तथाकथित गुरु उन्हें सूक्ष्म में ७०० वर्षों तक निर्देश देते रहे हैं। यह असत्य की चरम सीमा है।

(३) श्रीराम शर्मा सन्त कबीर, समर्थ गुरु रामदास और रामकृष्ण परम हंस की आत्माओ को अपनी आत्मा बताते हैं। यह मनगढ़न्त कोरी कल्पना है।

(४) श्रीराम शर्मा ने वेदों मे लिखे गायत्री-मन्त्र की काल्पनिक मूर्ति बनाकर उस पर, हवन, फलफूल, धूपदीप आदि से पूजा-अर्चना करनी करवानी आरम्भ कर दी है। यह वेदो, उपनिषदो और दर्शनो के विरुद्ध है,

(५) आप कपोल-कल्पित गायत्री की मूर्ति के साथ-साथ अपनी और माता भगवती के चित्रों की पूजा भी करवाते हैं। यह दम्भ की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है?

(६) वेद-विरुद्ध मूर्ति पूजा के पाखण्ड के साथ-साथ गुरुडमवाद, अवतारवाद, चमत्कारवाद, लीलावादी युक्त फलपरक भक्तिवाद, पुराणवाद और असत्य के अम्बार—श्रीराम शर्मा के जीवन मे अनिवार्य अग बन गये हैं। इन पाखण्डो के साथ-साथ चलने वाले समाज सुधार के कार्य विषमिश्रित अन्न के समान बन गये हैं।

(७) इस महान् और पवित्र भारत देश मे दुर्भाग्यवश एकमात्र सर्वोत्तम वेद-मार्ग के अतिरिक्त वेद-विरुद्ध अनेक छोटे-छोटे मत-सम्प्रदाय अपने अपने झण्डे गाड़कर इस समाज को टुकड़ों में बाँटने में लगे हुए हैं। श्रीराम शर्मा ने भी एक नया 'श्रीराम शर्मा पंथ' बनाकर, क्या वेदमाता का आंचल पकड़कर उसका हृदय नहीं निकाल लिया है?

(८) 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका में जिन लेखकों के लेख छापे जाते हैं, उनके नाम नहीं दिये जाते हैं। यह धोखेबाजी और लेखको का शोषण नहीं तो और क्या है?

(९) यह सत्य है कि श्रीराम शर्मा न तो संस्कृत व्याकरण के विद्वान हैं और न ही वेदों-उपनिषदो और दर्शनों के विद्वान् हैं, फिर स्वयं को 'वेदमूर्ति' कहलवाना आत्मप्रवञ्चना है।

(१०) श्रीराम शर्मा जी ने मूर्तियों की लम्बी पंक्ति में गायत्री-मन्त्र की एक और मूर्ति बनाकर तथा स्वय को अवतार बताकर वेद-विरोधी कार्य किये है।

(११) श्रीराम शर्मा जी ने गायत्री मन्त्र की कपोल-कल्पित मूर्ति बनाकर लोगों के मन मे वेद तथा गायत्री-मन्त्र की महत्ता कम की है तथा मूर्ति पूजको से इस नयी गायत्री देवी की पूजा करवाकर अपार धन प्राप्त किया है। इस कुकर्म से उन्होने वेद और गायत्री-मन्त्र का अपमान करके महापाप किया है।

(१२) जब वेद में गायत्री या अन्य किसी की भी मूर्ति बनाकर पूजने का विधान नहीं है, तब श्रीराम शर्मा जी ने गायत्री मंत्र की मूर्ति बनाकर भोले-भाले लोगो को ठगने का यह ढोंग क्यो रचा?

जो नर-नारी गायत्री-परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा के पाखण्ड का कच्चा चिट्ठा विस्तार से पढ़ना चाहें, वे श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' द्वारा सम्पादित तथा सत्य प्रकाशन मथुरा द्वारा प्रकाशित—'तपोभूमि' नवम्बर १९८६, और "गायत्री-परिवार एक समीक्षा" लेखक रामकृष्ण आर्य प्रधान, नगर आर्य समाज केथूनीपोल, कोटा [राजस्थान] अवश्य पढ़ें। अथवा कुछ दिन धैर्य रखें और मुझ द्वारा लिखी जा रही पुस्तक—"गायत्री परिवार के संस्थापक का भण्डाफोड़" पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय कर लें।

स्वामी प्रज्ञानन्द जी से निवेदन है कि वेद आर्य पत्र-पत्रिकाओं और समाचार-पत्रो मे श्रीराम शर्मा के ढोंग, छल-कपट और इस वेद-विरोधी पन्थ का विस्तार से भण्डाफोड़ करके लोगों को इसके जाल मे फँसने से बचाने का पुण्य कर्म करें। सभी नर-नारियो से निवेदन है सब केवल एक वेद-मार्ग पर चलकर अपना जीवन सफल बनायें।

शोक समाचार

हमे निम्न आर्य व्यक्तियो के दुखद निधन का समाचार प्राप्त हुआ है प्रभु से दिवगत आत्माओ की शान्ति एव पारिवारिक जनो के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

आर्य समाज रेणुकूट [मिरजापुर] के वरिष्ठ सहयोगी श्री एस० एन० उपाध्याय के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज द्वारा शोकसभा एव श्रद्धाजलि का आयोजन हुआ।

श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम देहरादून की अधिष्ठात्री श्रीमती सुशीला शर्मा के पति श्री कृष्णचन्द्र शर्मा एवं उनकी माता का आकस्मिक निधन हो गया। आश्रम के सवासियों की ओर से दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु प्रार्थना की गई।

आर्य समाज बक्सर जिला भोजपुर [बिहार] के कोषाध्यक्ष श्री गौरी शकर आर्य का देहान्त हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। हजारों की संख्या में जनता गंगाघाट तक गई। उनके पुत्र अशोक कुमार ने स्व० पिता की पुण्य स्मृति में १०००) रु० बक्सर समाज को दान दिया।

जौनपुर आर्य समाज के भूत पूर्व प्रधान एवं मन्त्री श्री रामावतार जी के दुखद निधन पर आ० स० जौनपुर ने शोक श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

विश्व ज्योति -वेद

वेद ही ज्योति है सारे जग की,
वेद ही सारे जग मे अमर हैं।
वेद का अध्ययन हमको करना,
वेद पढ़ना पढ़ाना धरम है ।१।

वेद है उस ईश्वर की वाणी,
सारे संसार में जो रमा है।
वेद सब सत्यविद्या की पुस्तक,
नीति व्यवहार का यह मरम है ।२।

वेद से होगा कल्याण मानव,
तेरा जीवन सफल हो जायेगा।
पार देगा लगा तेरी नैया,
बीच मे आ फसी जो भंवर है ।३।

'कृण्वन्तो विश्व आर्यम्,
वेद का है यह सन्देश भाई।
सारे संसार को श्रेष्ठ कर दो,
जिनका बिगड़ा हुआ सब करम है ।४।

वेद का फिर से प्रचार करने,
स्वामी महर्षि दयानन्द आये।
हमको अमृत पिलाया उन्होने,
खुद पीकर गये जो जहर हैं ।५।

वेद फिर आज लुप्त हुआ है,
वेद मुझको यही मेरे बन्धू !
वेद का ज्ञान फैला नहीं है,
बस फैला हुआ अब कहर है ।६।

वेद का ऐसा प्रचार कर दो,
धर्म जिससे बढ़े विश्व भर पर,
ऐसा फैले ये संसार भर मे,
जैसे सागर मे फैला लहर है ।७।

सारे विश्व के लोगो तू जागो,
बनो आर्य, प्रभू को तू जानो,
वेद पढ़कर 'सुशील' बनो तुम,
वेद से ही सुधरता जनम है ।८।

—रामपाल श्रीवास्तव 'सुशील' सुभाषनगर, उतरौला, (गोण्डा)

उत्सव

आर्यसमाज हरचरी (बदायूं) का उत्सव व मण्डलीय आर्य महासम्मेलन दिनांक ७ से ९ मार्च तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। अनेक वक्ताओं के ओजस्वी प्रवचन हुए जनता बहुत प्रभावित हुई।

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम में वेद प्रचार

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, धर्मपुरा कालोनी, (अशोक नगर), रेलवे वर्कशाप रोड, यमुनानगर (अम्बाला) मे प्रथम वेद प्रचार समारोह २० से २२ मई १९९८ तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान स्वामी, प्रवक्ता पधार रहे हैं। कृपया सब बहुन भाई पधार कर धर्म लाभ उठावें।

बाल जगत

हे ! मातृ भूमि हम तेरे लिए बलिदान देने वाले हों !!

[यतेन्द्रसिंह पुत्र श्री यशपालसिंह कक्षा ९ ब, गांधी विद्यालय धनौरा (मुरादाबाद)

वयं तुभ्यम् बलिहृतः स्याम (वेद)

शब्दार्थ—वयम् (हम सब) तुभ्यम् (तेरे लिए)
बलिहृतः (बलिदान देने वाले) स्याम (होवें)

भावार्थ—हमें गर्व है अपनी पवित्र भारत माँ पर, भारत मा हमारी मातृभूमि है। श्री राम, श्री कृष्ण जैसे महान पूर्वज गौतम, कपिल कणाद, पतञ्जलि व्यास जैमिनी और दयानन्द जैसे ऋषि मुनि वीर शिवा, राणा और बन्दा वैरागी जैसे शूर वीर सीता सावित्री दुर्गा जैसी सती देवियाँ, भगतसिंह, सुभाष, रामप्रसाद बिस्मिल, आजाद जैसे देश भक्त इसी हमारी प्यारी मातृभूमि पर जन्मे हैं हम भी अपनी सेवा, तप, त्याग की भावना प्यारी भारत मां का गौरव बढ़ायें और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के सपने को साकार करें।

आर्यसमाज दिलेरगंज का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज दिलेरगंज, पो० सुवांसी, कुण्डा, प्रतापगढ़ का वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ ऋषि बोधोत्सव दिवस के रूप में १५, १६, १७ फरवरी १९९८ को मनाया गया। जिसमे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री यदुनन्दन जी आर्य बिन्दकी फतेहपुर, श्री रामदेव आर्य रायपुर म० प्र०, श्री अशर्फीलाल गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद ने अमूल्य समय देकर अपने विचारों से वैदिक ज्ञान की ज्योति का व्यापक प्रचार जनता में किया।

श्री कड़क ब्रह्मचारी द्वारा वेद प्रचार

ग्रा राईपुर पो० शेरपुर पट्टी तहसील ठाकुरद्वारा जिला मुरादाबाद मे १५ मार्च को श्री कड़क देव आर्य व श्री रामलाल आर्य सहित वेद प्रचारक मण्डल मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। कई व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा मांस मदिरा आदि त्यागने का व्रत लिया।

आर्यसमाज अडींग [मथुरा]

प्रधान—श्री त्रिभुवननाथ शर्मा
मन्त्री—श्री महावीरप्रसाद आर्य

आर्यसमाज आर्यनगर [बदायूं]

प्रधान—श्री रामकुमार आर्य
मन्त्री—श्री शिव ओम आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री हरी ओम प्रकाश जी

मुक्ति एक समीक्षा

[पृष्ठ ५ का शेष]

तो सदा साकार वस्तु का साकार वस्तु मे पड़ा करता है। ब्रह्म तो सर्वथा निराकार है। तब उसका प्रतिबिम्ब कैसे पड़ेगा? साथ ही जब ब्रह्म को ही भांति जीव अनादि सत्ता, उसी का साथी, सर्वथा अपनी सत्ता इससे पृथक् रखता है, जिसका प्रतिपादन वेद और सभी सद्ग्रन्थ करते हैं तब स्वयं ब्रह्म सूत्र वेदान्त दर्शन के प्रतिकूल नव्य वेदान्ती क्यों अपना अलग राग अलापते हैं? अतः जीव ब्रह्म नहीं अपितु ब्रह्म का उपासक, उसका सेवक, और उसकी कृपा का अभिलाषी है। वह अपने कर्मों के बन्धन में बंध कर सुख-दुख भोग करता है। उसी बंधन के दुख से मुक्त होने के लिए मुक्ति हेतु लालायित रहता है। और इसी लिए नाना प्रकार की तपश्चर्या तथा शास्त्र चिन्तन में रत हो ज्ञान अर्जन करने में रत रहता है, अन्त में इन्हीं दोनों साधनों के द्वारा वह शनैः शनैः अभ्यास कर परम पद का भागी बनता है। परन्तु आश्चर्य है कि नव्य वेदान्ती स्वयं को ब्रह्म और ब्रह्म को जीव मान वेद के ज्वलन्त मान सिद्धान्त की प्रतिकूलता करते हुए भगवान् मनु के शब्दों में 'नास्तिको वेद निन्दक' बता कर नास्तिकता के गहरे गर्त में गिरने को ही सच्ची आस्तिकता समझ रहे हैं। भला जीव ब्रह्म तो क्या ब्रह्म के समान भी कैसे बन पायेगा? वेदान्त दर्शन ने ब्रह्म की समता का निरूपण करते हुए "भोग मात्र साम्य लिंगात्" कह कर बतलाया है कि परमात्मा आनन्द स्वरूप है। जीव उसके सम्पर्क में आ उससे प्राप्त आनन्द का उपभोग करता है। बस, आनन्द भोग मात्र में जीव का उससे साम्य है। फिर भी वह साम्य साम्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि ब्रह्म तो आनन्द की राशि है। उसका भोक्ता नहीं। पर जीव इसके द्वारा प्राप्त आनन्द का भोग करता है तब दोनों की समता कैसी? उपनिषद् भी जीव को भोक्ता बतलाता है। भोगने के लिए भोक्ता के पास इन्द्रिय और मन का होना आवश्यक है और वह जीव के ही पास है। इसी कारण "आत्मेन्द्रिय मनो युक्तं भोक्तेत्याहुः मनीषिणः" कह कर कठोपनिषद् के ऋषि ने इसका प्रतिपादन किया है।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब भोग के लिए इन्द्रिय और मन का सहयोग आवश्यक है और मोक्षावस्था में आत्मा उससे भी विमुक्त रहता है तब वह उस स्थिति में आनन्द का भोग फिर कैसे कर सकेगा? प्रश्न उत्तम है। निश्चय ही मुक्तावस्था में जीव अपने शरीरों मन और इन्द्रियों से रहित रहता है किन्तु उसके सत्य संकल्पादि स्वाभाविक गुण और सामर्थ्य सब उसके साथ रहते हैं। मात्र भौतिक संग नहीं रहता। उपनिषद् कहती है—"यं कामं कामयते सोऽस्य संकल्पादेव समुत्तिष्ठति तेन सम्पन्नो महीयते"। छा० ८-२-१०। अर्थात् मुक्त जीव जिस वस्तु की कामना करता है वह उसके संकल्प से ही उपस्थित हो जाती है। उससे सम्पन्न होकर जीवात्मा महत्व पाता है। इस सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन भी अपना साक्ष्य प्रकट करते हुए कहता है—"संकल्पादेव तच्छ्रुतेः"। ४-४-८। अर्थात् श्रुति से सिद्ध है कि वह की हुई कामना जीव के संकल्पमात्र से सिद्ध हो जाती है। शतपथ ब्राह्मण भी कहता है—"प्राणन्नेव प्राणोनाम भवति। वदन् वाक्, पश्यंश्चक्षुः, शृण्वन् श्रोत्रम्, मन्वानो मनम् तस्यैतानि कर्म नामानि"। १४-२-२-१७। अर्थात् जब जीव स्वास लेना चाहता है तब प्राण बोलना चाहता है तब वाणी, देखने की इच्छा पर नेत्र, सुनने की इच्छा पर श्रोत्र और मनन करने की इच्छा होते ही मन उसके समक्ष उपस्थित हो जाता है। जिस इन्द्रिय की कामना हो उस इन्द्रिय की शुद्ध शक्ति उसके पास स्वयमेव प्राप्त हो जाती है। इसी कारण इन्द्रिय-गोलक विहीन होते हुए भी आत्मा के किसी संकल्पित कार्य में कोई अवरोध नहीं उत्पन्न होता। इसी विषय में तैत्तरीयोपनिषद् कहती है—"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति"। तै० उ० आनन्द वल्लरी"। अर्थात् जो जीव अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्य ज्ञान और अनन्त आनन्द स्वरूप परमात्मा को जानता है वह उस व्यापक स्वरूप ब्रह्म में स्थित होकर उस विपश्चित अनन्त विद्यायुक्त ब्रह्म के साथ सब कामों को प्राप्त होती है।

[क्रमशः]

सम्पादक के पत्र

दूरदर्शन द्वारा हिन्दी की उपेक्षा

दूरदर्शन आज के युग में मनुष्य के जीवन का एक अंग बन गया है इसके द्वारा किया जा रहा प्रचार प्रसार बड़ा प्रभावी सिद्ध होता है। आजकल लखनऊ दूरदर्शन ने राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी का मूल स्वरूप खोने का दायित्व लिया हुआ है। जिसकी हम दर्शक न चाहते हुए भी आलोचना करने को बाध्य हो जाते हैं। हमारे ऐसे पत्रों के उत्तर वह 'आपकी डाक' कार्यक्रम में देते ही नहीं। इसलिए अपनी आवाज जनता तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्रों का सहारा लेना पड़ता है।

अभी २१-४-८८ को सायं को दूरदर्शन पर उर्दू ड्रामा 'वो हुए अधूरे से' प्रस्तुत किया गया उसी के कुछ अन्तिम अंशों की पुनरावृत्ति शनिवार को प्रस्तुत की गयी। बार २ दर्शकों से नाटक के विषय में अपनी सम्मति भेजने का आग्रह भी किया गया। परन्तु हम अपनी सम्मति क्या दें जब कि हम ठेठ उर्दू में सम्वाद इस पूर्णतया से पल्ले ही नहीं पड़े जो अपनी राय भेज सकें।

जब भी कोई हिन्दी चलचित्र या हिन्दी धारावाहिक या अन्य हिन्दी कार्यक्रम दूरदर्शन पर प्रसारित किये जाते हैं तो हिन्दी के नाम पर केवल पत्रों के नाम ही हिन्दी में होते हैं। सम्बोधन और अभिवादन अंग्रेजी में, संवाद अधिकतर सरल उर्दू में रहते हैं इन्हें सुन-सुन कर हम सब हिन्दी भाषियों की भाषा भी उर्दूमय बन गई है जिसका कुप्रभाव हमारे साहित्य पर भी पड़ा है।

जब कोई उर्दू कार्यक्रम जैसे 'अदब पंथ' या कोई नाटक उर्दू में प्रसारित किया जाता है तो उसमे सरल उर्दू न होकर अरबी, फारसी निष्ठ उर्दू बोली जाती है जिससे उर्दू कार्यक्रम हम जैसों के लिए निरर्थक सिद्ध होते है जब कि राष्ट्र भाषा और यहाँ की राजभाषा गौरव को प्राप्त हिन्दी के स्वरूप को सरलीकरण के नाम पर बिगाड़ा जा रहा है तो बस उर्दू को विदेशी अजनबी भाषा अरबी और फारसी से क्यों युक्त किया जा रहा है। क्या उसका सरली करण सरल हिन्दी से सम्भव नहीं? हमें उर्दू से कोई द्वेष नहीं परन्तु जब उसका सम्बन्ध विदेशी भाषा से जोड़ दिया जाता है तब वह हमारे लिए अपरिचित सी भाषा हो जाती है।

दूरदर्शन उर्दू का सरलीकरण कर उसका देशी स्वरूप प्रस्तुत करे और एक सविनय आग्रह है कि हिन्दी के सरलीकरण के नाम पर इसे उर्दूमय और अंग्रेजीमय न बना दे कि भविष्य में हम हिन्दी के मूल रूप को ही भूल बैठें।

उर्मिला आर्य
सी०-९५४ महानगर लखनऊ

शुद्धि समाचार

दिनांक २४/१/८८ को बमुई आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर नाथ नगर मदरसे के मौलाना शाजिदअली–सत्यार्थ प्रकाश एवं पं० जय प्रकाश (भूतपूर्व–इमाम) के प्रभाव में आकर सनातन वैदिक धर्म को स्वेच्छा से स्वीकार किया और शपथ लिया कि अपनी पूरी आयु वैदिक धर्म, सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के प्रचार व प्रसार मे लगाऊंगा। इस शुद्धि का स्थानीय तौर पर बड़ा जबरदस्त प्रभाव पड़ा। जनता ने आर्य समाज के जयकार के नारे लगाये। शुद्धि के पश्चात शाजिद अली का नाम सुरेश कुमार, बेगुन निसां का नाम निर्मला आर्य एवं उनके सातों बच्चों का भी संस्कार किया गया।

. रामजीवन साहू
प्रधान, आर्य समाज बमुई

पुरुषार्थ और प्रारब्ध

[श्री जगदीश शरण शीतल भू० पू० प्रधान आर्य समाज चाँदपुर, बिजनौर]

कर्म तीन प्रकार होते हैं (१) क्रियमाण [२] संचित [३] प्रारब्ध। अब इस विषय को इस प्रकार समझिये। किसी व्यक्ति को भोजन बना कर खाना है तो वह सबसे पहले भोजन की सारी सामग्री एकत्र करके उसको बनायेगा और फिर खायेगा। भोजन की सामग्री एकत्र करना क्रियमाण कर्म है। भोजन बनकर तैय्यार होना संचित कर्म है। भोजन खाना प्रारब्ध कर्म है। अब विचार कीजिए यदि भोजन की सारी सामग्री एकत्र करने के लिए पुरुषार्थ न किया जाता और भोजन स्वयं ही बनकर खाने वाले के मुख मे पहुंच जाता तो हम समझते कि इसके प्रारब्ध में ऐसा ही था। परन्तु ऐसा न होकर भोजन की सामग्री चैतन्य के द्वारा एकत्र की गई और उसके द्वारा ही भोजन बनाकर खाया गया। क्योंकि भोजन की सामग्री जड़ पदार्थ है उसमे एकत्र होने बनने या मुख मे पहुंचने की कोई सामर्थ या शक्ति नहीं। वह बिना चैतन्य के कुछ भी कार्य कर नहीं सकती। इस प्रकार चैतन्य के पुरुषार्थ के द्वारा ही क्रियमाण कर्म हुआ। पुरुषार्थ का ही अंतिम परिणाम प्रारब्ध है। इस प्रकार पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध बनता है। अतः पुरुषार्थ प्रधान है।

"पुरुषार्थ"

तुमको नहीं निराशा बेचैन कर सकेगी।
एक दिन तू देख लेना मन की कली खिलेगी ॥
इस भाग्य के भरोसे कब तक रहेगा जीता।
अब तो लगा दे इसको पुरुषार्थ का पलीता ॥
जिस ओर चल पड़ेगा वह राह ही बनेगी।
माना कठिन है मंजिल थक कर न बैठ जाना ॥
कांटों को चीर करके आगे कदम बढ़ाना।
कुछ ही क्षणों में मंजिल कदमों को चूम लेगी ॥

यज्ञोपवीत

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के भजनोपदेशक श्री पं० सीताराम आर्य के चि० सुपुत्र राकेश कुमार आर्य का शुभ यज्ञोपवीत संस्कार ग्रा० बेरवा पो० सुखार्मा (हरदोई) में बड़ी धूमधाम से स्वामी सुदर्शनानन्द जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

आगरा के बलवन्त सिंह कालेज के लिए ५५ लाख रुपए

उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह जी ने आगरा के राजा बलवन्त सिंह महाविद्यालय के परिसरों के विकास के लिए ५५ लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत की है। मुख्यमन्त्री ने यह घोषणा भी की है कि इस कालेज के शिक्षा संकाय के भवन बिचपुरी हाउस के परिसर की भूमि के सरकार द्वारा अधिग्रहण को रोकने के आदेश भी दे दिये गए हैं। मुख्यमन्त्री ने यह घोषणा आगरा में महाविद्यालय के १७ वें दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते समय की। अपने दीक्षांत भाषण में मुख्यमन्त्री ने, जो इस समारोह के मुख्य अतिथि भी थे, स्नातकों तथा नवयुवकों और नवयुवतियों का आवाहन किया कि वे देश की स्वतन्त्रता की विरासत को अक्षुण्ण रखें। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सुदृढ़ करना तथा मानव कल्याण के प्रति समर्पित होना हमारे युवा वर्ग का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे युवा वर्ग को श्रम का महत्व भी समझना चाहिये केवल नौकरी पाने की आकांक्षा के स्थान पर युवा वर्ग को कृषि, छोटे–छोटे उद्योग आरम्भ करना तकनीकी सेवा जैसे विकल्पों को चुनना चाहिए। इससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ेगा और स्वयं कुछ कर सकने की क्षमता का विकास होगा। इस दीक्षान्त समारोह में आर० बी० एस० महाविद्यालय के कला, विज्ञान वाणिज्य, कृषि एवं शिक्षा संकाय के ७६७ छात्र–छात्राओं को स्नातक, स्नातकोत्तर उपाधियां दी गईं। बाद में मुख्यमन्त्री ने आगरा के समीप सिकन्दरा क्षेत्र पुलिसजनों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बनवाए गए ४८ आवासों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री ने पुलिसजनों के परिवारों के लिए वहां पर मनोरंजन के निर्माण के लिए दो लाख रुपए की धनराशि स्वीकृत की।

सूचनायें

इस सभा के माननीय प्रधान पं० इन्द्रराज जी न अपने आदेश सं० मे० १२२ दि० २४–४–८८ के द्वारा वर्ष १९८८ के लिए आर्य समाज नयाशहर इटावा के निम्नांकित आर्य सभासद घोषित किये गए हैं।

१–श्री टिक्कनराम,	२–श्री रूपकिशोर,
३–,, भगवत प्रसाद,	४–,, सुरेन्द्र बहादुर,
५–,, लक्ष्मी नारायण शर्मा,	६–,, मित्र प्रकाश,
७–,, ऋषीश्वरी दयाल,	८–,, जगदीश नारायण शर्मा,
९–,, महेन्द्र शंकर,	१०–,, छेदालाल,
११–,, कमलकिशोर,	१२–,, रमेशचन्द्र,
१३–,, राधेश्याम,	१४–,, महेश्वरी दयालु,
१५–,, श्रीमती सन्तोष,	१६–,, शिववंश राय,
१७–,, चन्द्र नारायण,	१८–"भूपेन्द्र बहादुर,
१९–,, देवेश चन्द्र,	२०–,, रामकिशोर
२१–,, बाबू सिंह,	२२–,, श्रीमती चन्द्रप्रभा जी, तथा
२३–,, चन्द्र प्रकाश, जी	

२—आर्य समाज नयाशहर इटावा के प्रशासक श्री भगवत स्वरूप की सूचनानुसार उक्त आर्य समाज की अन्तरंग सभा तथा उससे सम्बन्धित सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों का निर्वाचन दि० १५-५-८८ को प्रातः १० बजे से उक्त आर्य समाज के सभा भवन में होगा।

वेदार्थ कल्पद्रुम के प्रणेता आचार्य विशुद्धानन्द दम्पती का अभिनन्दन

आज यह सर्व विदित है कि सनातन धर्म के महान् संस्कृत विद्वान् स्वर्गीय श्री करपात्री जी ने १४ पंडितों की सहायता से आचार्य सायण और वाममार्गी महीधर के भाष्यों पर आधारित "वेदार्थ पारिजात" नामक महान् ग्रन्थ संस्कृत में लिखा यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द की "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" के खण्डन में लिखा गया। आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य दम्पती आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र एवं उनकी विदुषी पत्नी आचार्या निर्मला देवी मिश्रा ने ऋषि की भाष्य भूमिका के प्रत्यक्षार खण्डन "वेद परिजात" का सप्रमाण युक्ति युक्त और विद्वतापूर्ण उत्तर दिया है जिस पर पौराणिक पंडित भी चकित रह गये। "कल्पद्रुम" का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने किया।

तीन अप्रेल को आर्य समाज के महोत्सव पर "आर्य-साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली की ओर से स्व० लाला दीपचन्द्र जी आर्य की पुण्य स्मृति में श्री धर्मपाल जी आर्य मन्त्री और ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य श्री रामवीर जी शास्त्री 'दयानन्द सन्देश के सम्पादक" ने आचार्य दम्पती को सुन्दर शाल, संस्कृत में लिखित अभिनन्दन पत्र [इक्कीस हजार रुपये] भेंट करते हुए भावभीना स्वागत किया। इस समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् मूर्धन्य विद्वान् सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने की।

इस अवसर पर "सार्वदेशिक सभा दिल्ली" के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, विद्वान् लेखक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु संस्कृत के विद्वान् आचार्य 'अभिविनय जी महारथी, आचार्य सुरेन्द्रकुमार जी शास्त्री, कविवर सरल, आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, श्री रामनाथ जी सहगल, श्री सूर्यप्रकाश जी आदि विद्वानों ने 'कल्पद्रुम' ग्रन्थ की लेखन शैली की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए अभिनन्दन किया।

अध्यक्ष महोदय ने 'वेदार्थ कल्पद्रुम' ग्रन्थ के लिख जाने पर अपनी शुभकामना इस रूप में अभिव्यक्त की, कि-'अब आर्य समाज के लिए कोई नहीं कह सकेगा, कि वीर-विहीन मही मैं जानी। न आचार्य श्री विशुद्धानन्द जी ने अपने संस्कृत के आशु-रचित श्लोकों द्वारा ट्रस्ट के संचालक अधिकारी एवं उपस्थित विद्वानों के प्रति आभारिता व्यक्त की।

आचार्य दम्पति श्री विशुद्धानन्द जी को उ० प्र० की आर्य जनता की ओर से शतशः बधाई।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

★

आर्यसमाज पीपीगंज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पीपीगंज गोरखपुर का वार्षिकोत्सव अत्यन्त भव्य स्वरूप में जंगल डुमरी पीपीगंज गोरखपुर में ५, ६, ७ अप्रैल को विशिष्ट समाज सेवी नैष्ठिक आर्य कार्यकर्ता श्री मुरलीधर जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के संयोजक जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के उप प्रधान डा० पतिराज कश्यप रहे। उक्त कार्यक्रम में श्री प्रताप-कुमार सक्सेना आर्य उपदेशक, जिला पुरोहित श्री रामचन्द्र आर्य के उपदेशों तथा बाबा अवध-बिहारी दास तथा श्री दुर्गेश्वरदत्त पाठक के भजनोपदेशों से आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धांतों का प्रचार और प्रसार हुआ तथा क्षेत्रीय जनता अत्यधिक लाभान्वित एवं उत्साहित हुई। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में श्री प्रताप कुमार जी ने अनेक नवयुवकों को प्रेरणा देते हुए अनेक व्यसनों तथा सामाजिक कुरीतियों को छोड़ने का व्रत धारण करवाया

के० एन० सिंह मन्त्री
जिला उप सभा गोरखपुर

निर्वाचन

आर्य समाज, कृष्णा नगर (मथुरा)
प्रधान श्री राजेन्द्रप्रसाद जी भटनागर
मन्त्री श्री जनकराज सैनी
कोषाध्यक्षा श्रीमती लज्जावती

आर्य समाज, अड़ींग (मथुरा)
प्रधान . श्री त्रिभुवननाथ शर्मा
मन्त्री श्री महावीर प्रसाद आर्य
कोषा० ..श्री प्रेमबिहारी आर्य

आर्य समाज फिरावली आगरा
प्रधान श्री रामवीर सिंह जी
मन्त्री श्री महेन्द्रसिंह जी
कोषाध्यक्ष · श्री प्रेमचन्द्र बंसल

महिला आर्यसमाज रसूलपुर कस्बा बदायूं
प्रधाना श्रीमती मायादेवी
मन्त्राणी... ,, सत्यवती देवी
कोषा०... ,, मीरा देवी

आर्य समाज लक्ष्मण चौक देहरादून
प्रधान . श्री जगदीशराय जी
मन्त्री.. श्री महाराज सिंह प्रोफेसर
कोषा०...श्री ऋषिकुमार जी

आर्य समाज तानगेर, आगरा
प्रधान.. श्री बृजमोहनलाल जी खण्डेलवाल
मन्त्री...श्री दीवान सतपाल आर्य
कोषा०...श्री कैलाशनाथ जी वर्मा

स्त्री आर्य समाज करनपुर देहरादून
अध्यक्षा...श्रीमती कान्ती शर्मा
प्रधान...श्रीमती कौशल्या गुलाटी
मन्त्री . श्रीमती प्रभा पुरी
कोषा०...श्रीमती शान्ता बैकड़ी

आर्यसमाज तरौंदा [कानपुर]
प्रधान–श्री वीरसिंह आर्य
मन्त्री–वासुदेवसिंह जी
कोषा०–श्री मोतीसिंह आर्य

आ० स० गोरखपुर छावनी मोहद्दीपुर का वर्ष १९८८
प्रधान–श्री रमापति सिंह स्वतन्त्रता सेनानी
मन्त्री–श्री मेवालाल आर्य
कोषा०–डा० बी० आर० मौर्य

आ० स० कुटार शाहजहांपुर
प्रधान–श्री रामदयाल आर्य
मन्त्री–श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषा०–श्रीराम आर्य

आर्य समाज चन्दौसी मुरादाबाद
प्रधान–श्री ओमप्रकाश जी आर्य
मन्त्री–श्री रामकुमार शर्मा आर्य
कोषा०–श्री विनयप्रकाश गोयल

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या [फैजाबाद]
प्रधान–श्री राजर्षि रणञ्जयसिंह
मन्त्री–श्री ज्ञानेन्द्र भटनागर
कोषा०–श्री मुनिवर अग्रवाल

आर्य समाज मोंठ, झांसी
प्रधान–श्री ओमप्रकाश स्नातक
मन्त्री–श्री भूपसिंह
कोषा०–श्री परेशकुमार कनौजिया

आर्यसमाज बौरी खुर्द झांसी
प्रधान–श्री प्रीतमसिंह
मन्त्री–श्री सीताराम
कोषाध्यक्ष–श्री रामप्रसाद आर्य

आर्यसमाज पुनावली कलां झांसी
प्रधान–श्री कोमलसिंह
मन्त्री–श्री चन्दनसिंह
कोषा०–श्री मनीराम

महिला आर्यसमाज सीपरी बाजार झांसी
प्रधान–श्रीमती चन्द्रा मलीन
मन्त्री– ,, शकुन्तला चड्ढा
कोषा० ,, कृष्णा वादी

आ० स० मेंड़ बेहुआ मदारगंजबाजार पो० ईसापुर [अमेठी]
प्रधान–श्री अर्जुनसिंह
मन्त्री–श्री हनुमानप्रसाद जी
कोषा०–श्री रामराज जी

क्या ऋषि सन्तान–आर्य भूल गए ?

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

इसके लिये प्राचीन युग पुरुषों जैसे श्री रामचन्द्र श्री कृष्ण चन्द्र आदि ने सच्चे आर्य का दिग्दर्शन रूप सर्व साधारण हिन्दु–मात्र को दर्शाना होगा। यह दोनों महापुरुष ऐसे हैं जिनके इर्द गिर्द आर्य संस्कृति घूमती है। प्रत्येक हिन्दू इनकी पूजा करता है। मेरे इस सुझाव का समर्थन, वर्तमान रामायण धारावाही देखने में हिन्दु-मात्र की जोरदार रुचि से स्पष्ट है। इनके जीवन के ऐसे पक्षों को, जिनसे फिर से आर्य सन्तान हिन्दू मात्र में फिर से आर्य गौरव की भावना प्रज्वलित हो सके, सर्वत्र आर्य संस्कृति–आर्य मूल्यों का प्रचलन हो सके। सच्चे अर्थों में आर्य राज्य स्थापित हो, सके यह देश फिर से आर्यावर्त बन सके—लाना होगा। साथ ही वेदादि सब शास्त्रों, आर्य ग्रन्थों–उपनिषदों गीता आदि का खूब प्रचलन, प्रचार–प्रसार करना होगा। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब तक आने वाली पीढ़ी अपने बच्चों को नियमित प्रभावी ढंग से संस्कारित करने के उद्योग न करेगी—कुछ भी प्रगती न होगी। इस अर्थ हमें अपनी शैक्षिक संस्थाओं में विशेष–पुरुषार्थ करना होगा।

हमारे साधन—

मैं ऊपर महर्षि के अपने शब्दों में बतला आया हूं कि उनके हृदय में सम्पूर्ण आर्य सन्तान हिन्दू मात्र को जागृत करने की कितनी पीड़ा वेदना थी। और इसी लक्ष्य की पूर्त्यार्थ ही उन्होंने 'आर्य समाज' का सृजन किया, और इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया, इसी पर पूर्ण विश्वास भरोसा रखा था कि यह ही सारी जाति में आर्य–चेतना जगा कर देश को सच्चे अर्थों में आर्यावर्त बना–आर्य राज्य की स्थापना करेगी।

बड़े सौभाग्य की बात है कि इस समय 'आर्यसमाज एक बड़ी शक्तिशाली हर दृष्टि से समृद्ध संस्था है। इसका संक्षेप में दिग्दर्शन कराना चाहूंगा। इसकी सर्वोपरि संस्था सार्वदेशिक आ. प्र. नि.सभा है। इसके अधीन सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रदेशों में आर्य प्रादेशिक सभायें हैं। जिनकी संख्या करीब ५००० आर्य समाजें हैं। शिक्षण संस्थाओं में प्रमुख डी० ए० वी० स्कूल एवं कालेज हैं जिनकी संख्या करीब ४-५ सौ के करीब हैं। आर्य गुरुकुल भी करीब एक सौ हैं। इनके अतिरिक्त आर्यसमाजों से सम्बन्धित अनेक विद्यालय लड़के-लड़कियों के भी हैं। इन सब आर्य शिक्षण संस्थाओं में लाखों बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। परन्तु इस सबके होते हुए दुर्भाग्य की बात यह है कि हम इन लाखों बच्चों को आर्य संस्कृति के परवाने बना नहीं पा रहे। यदि हम हमारी यह शैक्षिक संस्थायें बच्चों को आर्य संस्कार देने में दृढ़-संकल्प हो जावें, तो कोई कारण नहीं, कि अगले २०–२५ वर्षों में ही ४–५ करोड़ सच्चे आर्य न बन पावें। फिर कैसे एक ऐसा वातावरण न बन सकेगा, जिससे समूचा देश कुछ ही काल में स्वयमेव सही अर्थ में 'आर्यावर्त' बन पावेगा।

हम में विद्वानों, तपस्वियों, त्यागियों, धर्म–वीरों, लेखकों, कवियों की कमी नहीं। कमी है तो केवल मिल कर लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ़ भावना और इसे प्राप्त करने के पुरुषार्थ की।

गत वर्ष कुछ बुद्धिजीवियों के उद्योग से एक गोष्ठी २०–२५ अप्रैल १९८७ को देहली में, इस सम्बन्ध में, हुई थी। परन्तु उसमें क्या हुआ। आर्य जगत को कोई पता नहीं। मैंने इसमें भी अपने विचार भेजे थे।

ऋषि भक्त आर्यो! उठो–हिम्मत बांधो, ऋषि के प्रति अपने दायित्व को समझो। ऋषि ऋण से उऋण होने एवं हमारे प्रति उनके विश्वास, भरोसे को सत्य सिद्ध करके दिखा दो।

मैं विशेष रूप से सब आर्य प्रतिनिधि सभाओं, डी० ए० वी० एवं अन्य आर्य शैक्षिक संस्थाओं, के कर्णधारों को इस ओर उद्योग करने की अपील करूंगा।

आर्य समाज शिकारपुर (बुलन्दशहर) में शुद्धि

२४–४–८८ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०) के तत्वावधान में एक मुस्लिम परिवार ने आर्य समाज मन्दिर शिकारपुर जिला बुलन्द शहर में यज्ञ-वेदी पर विधिवत् वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश किया। दीक्षा–संस्कार जिला मन्त्री आचार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया।

इस अवसर पर खुर्जा, डिबाई, बुलन्द शहर, झाझर, करौरा नगला, अहमदगढ़, चौंढेरा, इन्दौर' शेखुपुर तथा शिकारपुर आदि अनेक स्थानों के गण्य मान्य आर्यजन भारी संख्या में उपस्थित थे। वैदिक धर्म के जयघोषों के साथ सभी जनसमुदाय ने दीक्षित परिवार का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। जिला सभा तथा आर्य समाज शिकारपुर की ओर से साहित्य, साड़ी एवं सूट भेंट किये गये।

पूर्व नाम		वर्तमान नाम
१– अब्दुल नईम खां	३१ वर्ष	श्री नवीन कुमार
२– शायरा बानो	२८ वर्ष	श्रीमती कुसुमलता
३– गुड्डू	५ वर्ष	चि० नरेन्द्रकुमार
४– राजू	३ वर्ष	चि० राजेन्द्र कुमार

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ... ४५६६३
पञ्जीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ...
ज्येष्ठ कृष्ण ७
८ मई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख



ऋषि बोध विशेषांक की सफलता

'आर्यमित्र' का ऋषि बोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव मे काफी सुन्दर एव आकर्षक बन पाया है। ऋषि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध मे काफी ठोस एव महत्त्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। शिव रात्रि के पवित्र दिवस पर आपने यह विशेषांक निकाल कर एक अविस्मरणीय कार्य किया है।

विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार सोरायण जलधर जोशी चौहान (सोनीपत) हरियाणा

ओ३म्

महोदय,

'आर्यमित्र' मे इन दिनों सम्पादकीय के अन्तर्गत आपके द्वारा समयानुकूल व प्रेरक विचार दिये जा रहे हैं—इस हेतु धन्यवाद।

२९-११-... के अंक मे पृष्ठ ३ पर आचार्य विश्वश्रवा जी द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पञ्चसूत्री कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा।

'आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की अब अनिवार्य आवश्यकता है।

भवदीय—
राधेलाल मित्तल
आर्य साहित्य प्रचारक आ० स० खुरजा (उ०प्र०)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इन कारणों से प्रधान जी से अनुरोध किया जाता है कि वह अपना त्यागपत्र जिसकी कोई उपयोगिता नही है, वापस लें।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष डा० सोमनाथ जी एडवोकेट ने सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती को ४-२-८८ को अपना त्यागपत्र दिया था। उस पर अन्तरंग सभा १७-४-८८ मे उनकी अनुपस्थिति मे विचार विमर्श के पश्चात् अन्तरंग सभा ने उन का त्यागपत्र भी सर्वसम्मति से अस्वीकार करते हुए उनसे प्रार्थना की है कि वह संगठन के हित मे अपना त्यागपत्र वापस ले लें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्वामी सर्वकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए ... आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए ...
एम० पी० (...) ..., लखनऊ ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।२८-१-८३

ज्येष्ठ कृष्ण १४, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक १५ मई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

[illegible]

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

*

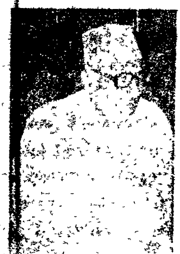
प्रबन्ध सम्पादक—

[illegible]

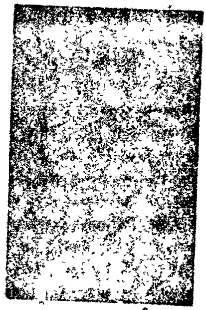
शत शत अभिनन्दन, शत शत प्रणाम

* * *

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां, यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः,
यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्याः, ऊर्ध्वा शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्—
स नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना ॥ —अथर्व० पृथ्वी सूक्त ।



जिस भूतल पर विद्वान बनाते वेदी,
जिसमें करते यज्ञ, अखिल-कर्म-
विधि-वेदी,
आहुति के पहले जहां बनाए जाते,
ऊंचे, चमकीले यज्ञस्तम्भ सुहाते,
वह भूमि, आर्य पुत्रों के, वैभव से
बढ़ जाये,
हम सबको भी नित उन्नतिशील
बनाए ।



राजर्षि रणञ्जयसिंह जी

*

माननीय श्री बलदेवसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान, पूर्व सांसद, अमेठी नरेश राजर्षि रणञ्जयसिंह ने दिनांक ९ मई १९८८ को, अपने जीवन के ८९ वें वर्ष में प्रवेश किया है। उ० प्र० शासन के वन एवं पर्यावरण मन्त्री श्री बलदेवसिंह आर्य का शुभ जन्म दिवस समारोह दिनांक १२-५-८८ को बड़े उल्लास के साथ मनाया गया है। इस अवसर पर उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेश की आर्य जनता की ओर से इन दोनों आर्य नेताओं के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा—"समन्वय स्थापित करने में सिद्धहस्त, कठिन परिस्थितियों को अपनी कुशल सूझबूझ से अनुकूल बनाने वाले, महर्षि दयानन्द के अप्रतिम सेनानी, सौम्यता, शालीनता के मूर्त साकार मूर्तिमन्त इन दोनों नेताओं पर आर्यसमाज को गौरव है। राजनीतिप्रिय होते हुए भी इन दोनों नेताओं ने धर्म प्राण आर्य जनता का सदैव प्रतिनिधित्व साथ दिया है। उत्तर प्रदेश की आर्य जनता अपने इन जनप्रिय एवं धर्मप्रिय आर्य नेताओं का शत-शत अभिनन्दन करती है और परमपिता परमात्मा से उनके दीर्घायुष्य की कामना करती है।

राष्ट्र जाति के लिए तिल-तिल सदा जल-जल जले।
तुम हुए यशस्वी आर्यपुत्र इस ओ३म् के झण्डे तले ॥

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—ज्येष्ठ कृष्ण १४ संवत् २०४५, रविवार १५ मई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

एक प्रश्न है आपसे—?

अजेय योद्धाओं से गौरवान्वित, हमारी यह वीरभूमि, पंजाब, जिसके स्वर्णाक्षरमण्डित इतिहास में सदैव आर्य जाति की रक्षा के लिए आगे बढ़कर शत्रु से लोहा लिया था और परास्त किया था, खदेड़ दिया था, चाहे वह यूनान का दिग्विजयी सिकन्दर हो और चाहे मुगलिया सल्तनत का जगमगाता हुआ खंजर। जब इस भूमि के छोटे-छोटे बच्चों ने देश और धर्म की खातिर हंसते-हंसते दीवारों में चुना जाना पसन्द किया था, उस जलियांवाले बाग और अमर शहीद भगत सिंह के बलिदान की कहानी बहुत पुरानी नहीं है। पर आज उसी पंजाब की धरती को निर्दोषों, मासूमों, बच्चों के खून से रंगा जा रहा है। अपने ही भाई अपने ही भाई के खून से तिलक लगा रहे हैं उस पंजाब का जो इस देश का प्रहरी है, सदियों से जो ऋषियों और मुनियों की जन्मस्थली कर्मस्थली रहा है। जहां कभी अर्जुन ने खड़े होकर शंखनाद किया था—'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्'। आज वह धरती 'वीर विहीन' क्यों होती जा रही है। क्या हम पाकिस्तानी कूटनीति के सचमुच शिकार हो गये हैं। खालिस्तान का लुभावना टुकड़ा फेंककर क्या हमें लड़ाया नहीं जा रहा है। हम इसे उस देश की कूटनीतिक चतुरता ही कहेंगे कि बिना कुछ गंवाये इस देश के सिंह को सिंह से भिड़ा दिया है। लेकिन दूसरी ओर क्या हमारा बौद्धिक दिवालियापन उस पराकाष्ठा पर पहुंच गया है कि हम इतना भी नहीं समझ पा रहे हैं कि जो पाकिस्तान भयकर से भयंकर हथियारों के जखीरे मंगाकर भारत को ललकार सकता है, वह खालिस्तान को छोड़ देगा ………। हमारे श्रद्धेय नेता उस समय भी राजनीतिक अदूरदर्शिता का शिकार बन गये थे जब उन्होंने देशभक्त सावरकर की उस पुकार को अनसुना कर दिया था, जब उस वीरवर ने कहा था—'आजादी की जल्दबाजी में देश के टुकड़े मत होने देना …… नहीं तो यह दोनों टुकड़े दोनों ओर से हमारी पवित्र मातृभूमि को निगल जायेंगे। तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवेल भारतीय विभाजन के सख्त विरुद्ध था उसने कहा था 'भारत भौगोलिक दृष्टि से एक है'। क्रिप्स मिशन, जिसे ब्रिटिश सरकार ने, भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित करने का तरीका खोजने हेतु यहाँ भेजा था—ने अपनी रिपोर्ट में मुस्लिम बहुल प्रान्तों एवं हिन्दूबहुल प्रान्तों की शासन व्यवस्था को अलग-अलग क्षेत्रीय एसेम्बलियों के माध्यम से स्वायत्तता देते हुए शासन व्यवस्था को तीन क्षेत्रों में विभाजित करने का सुझाव दिया था किन्तु पूरे देश का केन्द्रीय शासन एक ही रखा था जिसके आधीन यह क्षेत्रीय एसेम्बलियां काम करतीं और देश विभाजित होने से बच जाता। मुस्लिम लीग ने यह व्यवस्था लगभग स्वीकार भी कर ली थी यद्यपि अन्तिम ध्येय उसका पाकिस्तान ही था लेकिन इसी बीच देश में उस समय मची हुई भयंकर मारकाट से घबड़ाकर अपनी अदूरदर्शिता के कारण, अन्ततः हमने देश का विभाजन ही स्वीकार कर लिया।

और तबसे, सूखे पत्तों की तरह बिखरे हुये सिन्ध के, पंजाब के, बिलोचिस्तान के, बंगाल के,अपने भाइयों के रक्त से रंजित अकथ कहानी को हम रोजाना पढ़ते चले आ रहे हैं। अपने ही देश में शरणार्थी बने शरणार्थियों का वह काफिला आज भी खत्म नहीं हुआ है, बढ़ता आ रहा है हमारी ओर, अपने प्राणों की, अपने अस्तित्व की रक्षा का प्रश्न चिन्ह ? लगाता हुआ। पाकिस्तान से मिली हुई यह एसाल्ट राइफलें दनादन करती हुई आधे मिनट में हमारा, मच्छरों की तरह सफाया कर देती हैं, और फिर चलती है चीख भरी हुई आंधी, उन बेगुनाहों की लाशों से चिपटी हुई मां बहिनों का करुण चीत्कार ??? हाय री? मानवता—तेरी इन अठखेलियों पर धिक्कार है। तूने हमें आज किस युग में पहुंचा दिया है।

इसलिये प्रदेश के आर्य भाइयो ! तुमसे एक प्रश्न है ? हमारे अस्तित्व पर बन आई है और तुम खड़े रहे हो। किसलिए कोर्ट की ओर मुंह करके खड़े हो क्या वह तुम्हारा काबा है ? देखो तुम्हारे ऋषि ने कभी कोर्ट का मुंह नहीं देखा था। एक युग था जब कोर्ट तुम्हारा मुंह देखा करता था, तुम्हारी सत्यशील वाणी पर अपना निर्णय दे देता था। आज यह उल्टी गंगा कैसी है ? तुम्हारी शक्ति, तुम्हारा धन कहां लगना चाहिये था कहां लग रहा है, जाग उठो… आर्य जाति के जीवन में आई हुई इस भीषणतम, क्रूरतम समस्या पर और तुमने ध्यान नहीं दिया तो इतिहास तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। अगले सप्ताह सभा की कार्यकारिणी की बैठक हो रही है—हमारा सुझाव है आर्यसमाज एक सशक्त राष्ट्र पुरुष की भांति, इस भयंकर समस्या के समाधान हेतु आन्दोलन के रूप में खड़ा हो जाये। हम केवल प्रस्ताव मात्र से, डबडबाई हुई आंखों के आंसुओं को पोंछने की कोशिश न करें बल्कि एक जीवन्त कौम की भांति खड़े होकर इस विपत्ति का सामना करें। आज के समय में इससे बड़ा उपकार का काम, आर्यसमाज के लिये और कोई नहीं हो सकता।

* * *

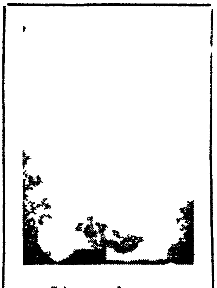
अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक २२ मई १९८८ को प्रातः ११ बजे नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में सम्पन्न होगा। विचारणीय विषयों की सूची सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों को डाक से भेज दी गई है। कृपया समय पर पधारने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी की स्वर्गीया माता जी का अन्तिम शान्ति यज्ञ

स्वर्गीया माता हरदेवी जी का शान्ति यज्ञ दिनांक ९-५-८८ को मध्याह्न ३ से ४ बजे तक निज निवास स्थान १२४५ गोरीपुरा मेरठ में सम्पन्न हुआ। उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री इन्द्रराज जी यजमान थे। श्री इन्द्रराज जी सेवाओं के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाला विशाल जनसमूह उपस्थित था जिससे गोरीपुरे की गली हितैषी भाई बहनों से भरपूर थी। यज्ञ की समाप्ति पर श्री इन्द्रराज जी ने प्रार्थना की कि पूज्या माता जी ने हमारे जीवन का निर्माण किया है इसी प्रकार से उनकी दिवंगत आत्मा भी प्रकाशमय लोकों को प्राप्त हो और हमें उनके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति परमपिता प्रदान करें। तत्पश्चात श्री इन्द्रराज जी ने अपने गुरुकुल से संस्कृत के गुरु तथा मौसा श्री डा० वेदप्रकाश जी शिरस्त्री को आशीर्वाद देने के लिए निवेदन किया। उन्होंने माता हरदेवी जी के आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक परोपकारी आर्यमहिला बताया। तथा महामृत्युञ्जय मन्त्र की व्याख्या करते हुए उनकी मुक्ति की कामना की। मास्टर सुन्दरलाल जी ने माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक महान आत्मा बताया जिन्होंने अपने नगर को एक योग्य सन्तान समर्पित की। श्री मास्टर जी ने श्री इन्द्रराज जी की दीर्घायु की प्रार्थना की तथा उन्हें परोपकार के कार्यों में लगे रहने की प्रेरणा करते हुए परिवार को आशीर्वाद दिया तथा माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम ने माता जी के संस्मरण सुनाते हुए बताया कि वे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा मेरा बहुत ध्यान रखती थीं। निःसन्देह वे महान थीं और उन्हें श्रेष्ठतर योनि मिलेगी। अन्त में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द



देहा० ... ...

बोध जी ने श्री इन्द्रराज जी की सेवाओं का जिकर करते हुए माता हरदेवी जी को एक महान आत्मा बताया। उन्होंने देश पर मण्डरा रहे मुसीबत के काले बादलों को हटाने का आर्यसमाज का दृढ़ निश्चय दोहराया और आर्यजनों को आह्वान किया कि वे सर्वस्व के लिए तैयार रहें। आगे आने वाला समय बहुत भयंकर है और एक बार पुनः स्वतन्त्रता को खतरा उत्पन्न हो गया है। भारत की रक्षा के लिए इन्द्रराज जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। इसलिए मैं इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं। उस महादेवी को भी मेरी श्रद्धांजलि है जिसने इस प्रकार के पुत्र को राष्ट्र के लिये समर्पित किया है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री प्रान्तीय सभा के कोषाध्यक्ष श्री यशपाल जी आर्य, विद्यार्य सभा के महामन्त्री श्री माधवसिंह जी, जिला सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री विजयभूषण जी, जिला सभा गाजियाबाद के मन्त्री श्री डा० जय वीर जी तथा अनेकों आर्यसमाजों के अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

अन्त में श्री इन्द्रराज जी ने विशाल जनसमूह एवं अपने साथियों तथा अपने नेताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि हम आपके आदेशों के पालन करने में दृढ़प्रतिज्ञ हैं। राष्ट्र पर आई किसी भी आपत्ति का मुकाबला आपके आदेश पर करने के लिए सदैव तत्पर हैं। उन्होंने घोषणा की कि वे आज पगड़ी नहीं बांध रहे और न ही किसी से कोई धन इस सम्बन्ध में लेंगे। हां पगड़ी की मूल भावना प्रेम से रहना है। उन्होंने परिवार से प्रार्थना की कि आज माता जी की पुण्यस्मृति में यह प्रतिज्ञा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी कि सारा परिवार परस्पर मिलकर रहेगा। और माता जी की तरह ही सब का परिवार में आदर स्वागत और सत्कार होता रहेगा। और पिता जी को इतनी सेवा होगी कि उन्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट प्रतीत नहीं होगा। सब भगवान को याद अवश्य करेंगे।

अन्त में परिवार की ओर से १०००/-रु० माता जी की पुण्य स्मृति में आर्यसमाज की यज्ञशाला के निर्माण के लिए तथा २५०/- रु० गुरुकुल और २५०/- रु० विभिन्न आर्यसमाजों को दान की घोषणा पर श्री ओमप्रकाश जी जौहरी उप मन्त्री आर्यसमाज ने परिवार का धन्यवाद किया तथा श्री इन्द्रराज जी ने श्री कलाशचन्द जी आर्य, श्री स्वराजचन्द्र जी, श्री नरेन्द्र जी, शिवकुमार वत्सा, श्री ओमप्रकाश जी जौहरी, श्री राजेलाल जी, आदि साथियों का इस समस्त आयोजन के लिए धन्यवाद किया। —विशेष संवाददाता

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की उप प्रधाना श्रीमती सन्तोष कपूर पर अराजक तत्वों द्वारा प्राणघातक हमला

मिर्जापुर २९ अप्रैल—दयानन्द पब्लिक स्कूल मिर्जापुर की प्रबन्ध समिति का विवाद कई वर्षों से न्यायालय में विचाराधीन था। सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार समिति का चुनाव जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के तत्वावधान मे होना था किन्तु वे चुनाव स्थल से पलायन कर गये। उक्त विद्यालय में २ लाख के गबन की जांच भी चल रही है। चूंकि सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार एस० डी० एम० (सदर) द्वारा विद्यालय की प्रबन्ध समिति का चुनाव होना था जिसके कारण कई लोग क्षुब्ध थे और श्रीमती सन्तोष कपूर पर हमले की आशंका थी। श्रीमती कपूर ने इसी आशंका के भय से पुलिस संरक्षण की बार-बार अधिकारियों से मांग की थी परन्तु उनका कहना है कि इसकी उपेक्षा करके पुलिस वालों ने ही अपराधी तत्वों को बढ़ावा दिया और उसी के इशारे पर सर्वश्री सूर्यदेव शर्मा, श्री मोहनसिंह, लालजी गुप्ता, सुधाकर उपाध्याय आदि ने स्कूल की दीवार फांदकर श्रीमती कपूर की हत्या करने के उद्देश्य से लाठियों व लोहे की छड़ों से हमला कर दिया उन्हें गम्भीर चोटें आई हैं। उनके बचाव में आये हुये चौकीदार बालिगराम उपाध्याय का सिर फट गया और वह अस्पताल में भरती है। श्रीमती कपूर की प्राण रक्षा के लिए प्रभु को बार-बार धन्यवाद है। सभा उनके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घजीवन की कामना करती है।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

आर्यसमाज आँवला में शुद्धि

आर्यसमाज आँवला का हीरक जयन्ती समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर एक मुस्लिम युवक समसुद्दीन को वैदिक धर्म में दीक्षित करके उसका नाम श्याम सुन्दर रखा गया। अधिकारी वर्ग बधाई के पात्र हैं।

इन्द्रराज
सभा प्रधान

मुक्ति—एक समीक्षा

[श्री सूर्यबली पाण्डेय सरैया–कुटीर चक्के, जौनपुर]

[गतांक से आगे]

इस विषय के निश्चय हो जाने पर कि जीवात्मा मोक्ष के अन्दर इन्द्रिय गोलकों से रहित होने पर भी आनन्दानुभव में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करता, यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि मोक्ष में जीवात्मा रहता कहां है ? साम्प्रदायिक लोगों ने तो इसे भिन्न-भिन्न स्थानों में निग्रहीत सा बतलाया है पर वेद की स्थिति सर्वथा भिन्न है। मुण्डकोपनिषत् कहती है—'भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्व संशयः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे'। २–२–८। अर्थात् जब इस जीव के हृदय की अविद्या–अज्ञान रूपी गांठ कट जाती है, सब संशय छिन्न हो जाते हैं और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त हो जाते है तभी अपने अन्दर और बाहर निवास करने वाले परमात्मा में आत्मा निवास करता है। स्पष्ट है कि जब हृदय की वासना मूलक गांठ छूट जाती है, मन के संशय मिट जाते हैं और कर्म के साथ उसका बन्धन समाप्त हो जाता है तभी मोक्ष होता है और जब मोक्ष होता है तब आत्मा ब्रह्म के अन्दर निवास करता है। ब्रह्म एक स्थानीय नहीं, सर्वव्यापक है इसी कारण आत्मा सर्वत्र व्याप्त परमात्मा में सर्वत्र अव्याहत गति से विचरण करता है। इसी सन्दर्भ में छान्दोग्योपनिषत् कहती है—'तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति'। ७–२५–२। अर्थात् उन मुक्त जीवों का सभी लोकों मे स्वेच्छा पूर्वक विचरण होता है। वेद स्वयं कहता है—

'यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः। लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधि। इन्द्रायेन्दो परिस्रव:'। ऋ० ९–११३–९।

अर्थात् जिस ब्रह्म मे पवित्र कामना वाले ज्योतिर्मय मुक्त जीव तीनो प्रकाशो से युक्त और तीनो दुखो से रहित मोक्षानन्द में अनुकाम कामनानुकूल स्वेच्छा से विचरण करते हैं उसके लिए मुझे युक्त कीजये। हे आनन्दमय प्रभो ! मुझ मोक्षाभिलाषी पर कृपा दृष्टि कीजिये। उक्त सभी प्रमाणों से सुतरां सिद्ध है कि मोक्षावस्था में जीव स्थान विशेष मे नहीं अपितु सर्वत्र व्याप्त परमात्मा की सत्ता के अन्दर सारे लोक–लोकान्तरों मे स्वेच्छापूर्वक विचरण करता रहता और आनन्दानुभूति में निमग्न रहता है। इसके विपरीत कुछ लोगों का और विशेष रूप से नव्य वेदान्तियों का कथन है कि मुक्ति और कुछ नहीं अपितु आत्मा का परमात्मा में लय होना ही मुक्ति है। यदि यही बात सत्य है तब तो अब तक दिये गये वेदोपनिषद् और दर्शन आदि के सभी प्रमाण व्यर्थ हो गये। भला जब आत्मा का परमात्मा के अन्दर विलीनीकरण हो जाता है तब आनन्द का अनुभव कौन करता है ? जिस परमात्मा की प्राप्ति के लिये आत्मा ने कर्मोपासना किया, यदि वह बूंद सिन्धु में विलीन हो जायगा तब उस आनन्द का उपभोग कौन करेगा ? आत्मा की सत्ता सदा से परमात्मा से पृथक रही है और सदा पृथक रहेगी। दोनों सत्तायें नित्य और समान वय की हैं। ब्रह्म एक और आत्मायें अनन्त हैं उनका कभी भी विलीनीकरण सम्भव नहीं।

यह सब कुछ निश्चित हो जाने के पश्चात् यह प्रश्न अपने आप उठ खड़ा होता है कि मुक्त हुआ आत्मा सर्वव्यापक परमात्मा की सत्ता के अन्दर लोक लोकान्तरों में विचरण तो करता है पर क्या उसके लिए कोई अवधि निर्धारित है अथवा अनन्त काल पर्यन्त उसकी यह क्रिया बनी रहेगी ? यदि सदा सदा के लिये आत्मा आनन्दानुभव में मग्न रहेगा तब तो कुरानी और किरानी परमात्मा के निर्णय से यह मुक्ति कुछ अधिक महत्व नहीं रखती। जैसे कुरान या बुरा पुण्य का भार किंचित भी अधिक होने पर सदा सदा के लिए जन्नत प्रदान कर देता है वैसी ही स्थिति इसकी भी हुई। पर आत्मा की शक्ति सीमित है। और जब कार्य भी सीमित है तब उसका परिणाम निःसीम कैसे होगा ? परन्तु 'न च पुनरावर्तते' स्वर का उद्घोष करने वाली उपनिषदें यही कहती प्रतीत होती हैं कि जीव एक बार मोक्ष को प्राप्त कर लेता है तब वह सदा सदा के लिए उसी अवस्था में अपने को रखता और आनन्दानुभव करता है। कभी भी वहां से पृथक नहीं होता। परन्तु अन्यत्र स्पष्ट किया गया है कि—'ते ब्रह्मलोकेषु परान्त काले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे। मु० ३–२–६। अर्थात् वे मुक्त जीव परान्त काल तक ब्रह्मलोक मे रहकर तभी उस लोक से छुटकारा पा जाते हैं। यह परान्त काल क्या है ? सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग चारों को मिलाकर ४३ लाख २० सहस्र वर्ष की अवधि का नाम एक चतुर्युगी है। ऐसी दो सहस्र चतुर्युगियो के समय का नाम एक ब्राह्म दिन और रात्रि है। ऐसे ३० ब्राह्म दिनों का एक मास, १२ मासों का एक वर्ष और ऐसे शत वर्षों के समय का नाम एक परान्त काल अथवा महाकल्प है। यदि गणित के द्वारा इसका आकलन किया जाय तो एक महाकल्प या परान्त काल में ३१ नील, १० खरब ४० अरब वर्षों का समय होता है। इतनी लम्बी अवधि मानव मस्तिष्क के लिये कल्पनातीत और अनुमान की शक्ति से बाहर जाती है। इसी कारण ऋषियों ने सिद्ध किया कि मुक्त जीव का पुनरावर्तन नहीं होता। और यह सत्य है कि वर्तमान कल्प मे तो पुनरावर्तन नहीं ही होता। परन्तु सत्य इसके विपरीत है। जहां मानव मस्तिष्क अनुमान से काम नहीं ले पाता वहां उसे शब्द प्रमाण की अपेक्षा हुआ करती है। प्रभु की ज्ञान शक्ति सर्वोपरि है। उसी की ज्ञान राशि का नाम वेद है। वेद स्वतः प्रमाण हैं और उस वेद के अन्दर पुनरावर्तन का स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध होता है। तब उसके रहते कौन कह सकता है कि मुक्ति से जीव पुनः वापस नहीं आता ? यदि जीव वापस न आये तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जब शनैः शनैः अपने शुभाचरण से सारे जीव मुक्त होकर ब्रह्म लोक तो बसा देंगे पर, मृत्यु लोक जीव रहित हो जायगा और संसार का उच्छेद हो जायेगा। मुक्ति प्राप्त की जाती है। प्राप्ति के पूर्व न थी अतः मुक्ति सादि है तब यह सान्त भी होगी क्योंकि जिसका एक छोर है उसका दूसरा छोर भी अवश्य होगा। इसी कारण वेद ने इस सन्दर्भ में अपना निर्देश देते हुए कहा है—

> कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
> को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥
> अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
> स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥

इस मन्त्र में जीव प्रश्न करता है कि इन सदा रहने वाले अविनाशी देवों में से मैं किस देव का पवित्र नाम प्रथम लूं ? किसने मुझे महान प्रकृति के पुनः प्रदान किया है; और किसने मुझे माता और पिता का दर्शन कराया है ? उक्त प्रश्न के उत्तर में कहा जा रहा है कि हम लोग उन अविनाशी देवों में सर्वप्रथम अग्नि स्वरूप परमात्मा का पवित्र नाम लें। उसी ने हमें पुनः अदिति को प्रदान किया है और उसी ने पिता और माता का दर्शन कराया है। इस स्थान पर अदिति का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य समाज को कलंकित न करें

[आचार्य देवव्रत अवस्थी, देव मन्दिर हिन्द नगर, लखनऊ]

जब भारत माता पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी थी, देशवासियों का जीवन पशुओं से भी बदतर था, नारी का अस्तित्व ही जब नकार दिया गया था,—अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति से ग्रस्त देशवासी भाई भाई के दुश्मन बन रहे थे, फिरकों पर फिरके बनते जा रहे थे, ढोंगी, पाखण्डी धार्मिक भावना का लाभ उठाकर जन-मानस को तरह-तरह के पाखण्डों कुकर्मों में फंसाकर लूट खसोट कर रहे थे, मानवता, राष्ट्रीयता, और धार्मिकता जब त्राहि-त्राहि कर रही थी तब भगवान् की अनन्य-कृपा से महर्षि स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने अपने जीवन की बाजी लगा दी इन सबसे उबार कर देश को स्वाधीन सुखी, सम्पन्न बनाने के लिए। नारी को उसका यथोचित स्थान दिलाया। ढोंग-पाखण्ड का खुलासा करके मानवता को जगाया। मनुष्य को अपने स्वत्व की पहचान करायी और वैदिक ज्ञान धारा को प्रवाहित करके सदैव उसे प्रवाहित कराते रहने के संकल्प के साथ आर्य समाज की स्थापना की। उनकी उत्कट इच्छा थी कि आर्यसमाज सदैव एक आन्दोलन के रूप में सबको सजग, सचेत करता रहे ताकि फिर अवैदिकता का प्रसार होकर मानवता नष्ट न होने पाये।

महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की थी कि आर्य समाज कोई नया पन्थ या समुदाय नहीं यह ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जिस सत्य सनातन धर्म का प्रतिपादन किया है उसी को-स्वीकारता है और उसी की सतत संस्थापना के लिए एक आन्दोलन है।

निश्चय ही उनके इस आन्दोलन ने धर्म के सच्चे स्वरूप की पहचान करायी, भेदभाव नष्ट हुये। स्वाधीनता की अलख जगी देश स्वतन्त्र हुआ। नारी ने भी अपने को पहचाना। उसने पुरुषों के बराबर अपना स्थान प्राप्त किया। छुआछूत, अशिक्षा से सामान्य रूप से सबको घृणा होने लगी। सभी ने सवर्ण हो या असवर्ण बालक-हो या बालिका इस भेद से परे हटकर समान स्थान, समान शिक्षा। की उपयोगिता को स्वीकारा। महर्षि दयानन्द की आकांक्षा पूर्ण हुयी। परन्तु थोड़े ही समय बाद अब उनकी पवित्र इच्छाओं और कामनाओं पर कुठाराघात किया जाने लगा है। ऋषि दयानन्द के मिशन का अनुयायी होने का जामा धारण करने वालों में ही कतिपय दिग्भ्रमित हो महर्षि के स्वप्नों को ध्वस्त करने लगे।

(५) आज कल समाजों में दलबन्दी ऐसी बढ़ गयी है कि हमें आर्यसमाज का यह नियम "सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये" सर्वथा भूल गये। हमें सत्य और धर्म से शायद प्रीति नहीं रह गयी, हम केवल अपने को ही मात्र सही, सदाचारी, विद्वान् सर्वहितैषी मानने-लगे हैं अपने से इतर अन्य को इसके विपरीत, अविद्वान् कदाचारी सर्वहन्ता सा मानने लगे हैं।

मानव विवेकशील प्राणी है उसमें मतवैभिन्य एक सामान्य बात है। सुधीजन निर्लेप भाव से विवाद को सुलझाते हैं। आपस में चिन्तन, मनन, व विचार विनिमय करके उसका निदान करते हैं। बाहर समाज की छवि को बिगड़ने नहीं देते उसे उज्ज्वल रखने का ही यत्न करते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हे आर्य वीर!

[श्री चन्द्रपालसिंह 'मयंक', कानपुर]

[उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा वर्ष १९८४ की पुरस्कार योजना में 'आर्यमित्र' के लेखक श्री चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक' कानपुर को उनकी बालोपयोगी पुस्तक 'भारत के रत्न' पर तीन हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है। 'आर्यमित्र' परिवार की ओर से श्री 'मयंक' जी को बधाई है। —सम्पादक]

हे आर्य वीर! हे आर्य वीर!
मत रहो मूक दर्शक बन कर!
भारत में फैला अन्धकार;
इसको मेटो बढ़ कर सत्वर!

है कहीं लोभ-लालच देकर
हो रहा धर्म का परिवर्तन!
है कहीं दे रहा दिखलाई;
हा! खुलकर हिंसा का नर्तन!

प्रति दिन कितने निर्दोष व्यक्ति
मर जाते! बहती रक्त-धार!
अखबारों में सब पढ़ लेते;
पर नहीं तनिक करते विचार!

यह हिंसा का अति कुटिल खेल!
आखिर कैसे होगा समाप्त?
सब मौन-मग्न दिखलाते हैं;
चिन्ता न किसी को तनिक व्याप्त!!

क्यों नहीं रोकते हैं इसको?
शासन-सत्ता क्यों बनी शान्त?
दिन-दिन आतंक फैलता है;
व्याकुल जनता रोती अशान्त!

जिनके घर वाले मर जाते,
उन रोतों से पूछो जाकर!
आखिर क्यों चलता जाता है,
दिन-दिन यह हिंसा का चक्कर?

हिंसक क्यों निर्भय घूम रहे?
क्यों नहीं पकड़ता है शासन?
कानून हाथ में लेते जो,
क्यों दण्ड नहीं देता शासन?

यह कमजोरी! यह कायरता!
मानवता को धिक्कार रही!
निर्दोषों की इस हत्या को
झट बन्द करो हे पुकार रही!

दावतें उड़ाई जाती हैं!
गायन – वादन – नर्तन होते!
जो रोते हैं, वे रोते हैं!
उन बेचारों के मन रोते!

पुस्तक-परिचय

पुस्तक का नाम–अंग्रेजी हटाओ : क्यों और कैसे ?

लेखक–डा० वेदप्रताप वैदिक

प्रकाशक / प्राप्ति स्थान–मेसर्स प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली–६

मुद्रक–पैरामाउण्ट पब्लिशिंग हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली

मूल्य–पांच रुपये ।

अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है और सर्वमान्य स्वीकृत सिद्धान्तानुसार किसी राष्ट्र पर विदेशी भाषा का थोपना उस राष्ट्र की गरिमा एवं प्रतिष्ठा के सर्वथा प्रतिकूल है । अंग्रेजी हमारी मानसिक दासता की प्रतीक है । लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को माध्यम बनाकर जिस शिक्षा शिक्षा नीति का प्रचलन इस देश में किया था, उसका परिणाम यह निकला कि हम अपनी भाषा और संस्कृति से विमुख होते गये और अंग्रेजों के साथ ही अंग्रेजियत के भी गुलाम बनते चले गये । भाषा के साथ ही संस्कृति का सम्बन्ध जुड़ा रहता है । हमने अंग्रेजी के वर्चस्व को स्वीकार कर लिया परिणामतः अंग्रेजी रहन–सहन एवं वेशभूषा को अपनाना हम गौरव की बात समझने लगे । किसी राष्ट्र की स्वाभाविक प्रगति का पूर्व एवं पूर्ण एक ही माध्यम है, वह है उसकी अपनी भाषा जिसे हम मातृभाषा भी कह सकते हैं । किन्तु जब उसी राष्ट्र पर कोई विदेशी भाषा हावी होने लगती है तो वह वहां की राष्ट्रीय संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाती है । आजादी के इन चालीस सालों में हम हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए कितने चिल्लाये चीखे कहने को हमने उसे राष्ट्र भाषा के गौरवमय पद पर पदासीन भी किया पर वास्तविकता क्या है–यह किसी से छिपा हुआ नहीं । अंग्रेजी का मोह आज भी यथावत बना हुआ है । हम उसे बड़प्पन और उन्नति की निशानी समझ बैठे हैं । उन्मत्त होकर बेतहाशा धन खर्च करके अपनी नवीन पीढ़ी को अंग्रेजी शिक्षा के प्रति उन्मुख बनाते जा रहे हैं । हमारा विश्वास है इस आत्मघाती प्रवृत्ति को निषेधपरक भावना के माध्यम से ही हटाया जा सकता है । इस दृष्टिकोण से समीक्षित पुस्तक में लेखक ने "अंग्रेजी हटाओ" को आन्दोलन के रूप में प्रस्तुत किया है । ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक हो गया क्योंकि अंग्रेजी ने जिस शोषणकारी प्रवृत्ति को इस देश में जन्म दिया था उससे हमारे देश में समता समानता और एकता की भावना का हनन हुआ और समाजवाद की प्रगति में बाधा पड़ी ।

लेखक ने अपने औचित्यपूर्ण तर्कों से यह सिद्ध कर दिया है कि आज भारत में अंग्रेजी की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है । यह कहना कि अंग्रेजी के कारण भारतीय राष्ट्र एक बना है वैज्ञानिक उन्नति हुई है, उसके आधुनिकीकरण में सहायता मिली है सर्वथा भ्रममूलक है । विश्व के अनेकों देश हैं जिन्होंने आधुनिकीकरण एवं औद्योगीकरण में पश्चिम के अनुभव के लाभ तो उठाया परन्तु अपनी भाषा को नहीं छोड़ा । वास्तविकता तो यह है कि इस भाषा के माध्यम ने हमारे स्वाभाविक विकास की प्रगति को अवरुद्ध कर दिया । सरकार की ऊंची नौकरियों के प्रलोभन ने हमें इस विदेशी भाषा के मोहपाश में आबद्ध कर रखा है ।

पुस्तक में दिए हुए तथ्य पठनीय एवं माननीय हैं । "अंग्रेजी हटाओ" को वास्तविक रूप में क्रियान्वित किए जाने की एक नवीन शैली लेखक ने अपनाई है जिसके लिए वे सचमुच बधाई के पात्र हैं । समस्त हिन्दी प्रेमी स्वतन्त्रता प्रेमी संस्थाओं एवं विचारकों के लिए यह पुस्तिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी । प्रत्येक भारतीय को, भारतीयता प्रेमी को यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए ।

पुस्तक का नियोजन सुन्दर सम्पादन, मुद्रण, गेट अप अत्यन्त आकर्षक कागज चिकना सफेद बहुत ही उत्तम कोटि का प्रयुक्त हुआ है । आवरण पृष्ठ अत्यन्त सुन्दर है । —सम्पादक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रोग्राम

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की अन्तरंग सभा दिनांक १३-३-१९८८ रविवार के निश्चय अनुसार मास मई १९८८ में ५००) रुपये की सस्ती उत्सव योजना द्वि–द्वितीय के कार्यक्रम की रूपरेखा

इस योजना के अन्तर्गत उपदेशक, प्रचारक भेजने की व्यवस्था आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद प्रचार कार्यालय अमरोहा की ओर से की जायेगी ।

तिथि	स्थान		संयोजक
१-२ मई	नन्हेड़ा अल्यारपुर, पो० खास	मुरादाबाद	श्री जसवन्तसिंह आर्य
३-४ मई	जोपुर तिहैया पो० जमालपुर खना	,,	श्री श्योराजसिंह जी
५-६ मई	देवीपुरा पो० नन्हेड़ा अल्यार,	,,	श्री टीकमसिंह जी
७-८ मई	सुल्तानपुर पो० हावरपुर,	,,	श्री रामस्वरूपसिंह
९-१० ,,	हावपुर पो० खास	,,	श्री महाराजसिंह
११-१२ ,,	कुरी, पो० रवाना,	,,	श्री राजेन्द्रसिंह
१३-१४ ,,	रवाना, पो० खास,	,,	
	बैरमपुर, पो० रवाना,	,,	श्री धर्मपालसिंह
१५-१६ मई	करनपुर, पो० रवाना,	,,	श्री नत्थूसिंह
१७-१८ मई	श्योंडाला फरीदपुर पो० रवाना	,,	श्री अतरसिंह
१९-२० मई	मिलक चंगेरी, पो० फतेहपुर बिश्नोई	,,	
२१-२२ मई	दयानाथपुर, पो० फतेहपुर बिश्नोई	,,	

भवदीय–
हरिश्चन्द्र आर्य
मन्त्री–आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद-अमरोहा

कर्णवेध और यज्ञोपवीत संस्कार

पोनपुरा [पटना] में ७ मार्च ८८ को श्रीमती विद्यावती [illegible] आर्य भजनोपदेशिका के पौत्र का कर्णवेध संस्कार और श्री लक्ष्मणदास जी श्री रामनाथ आर्य जी का यज्ञोपवीत संस्कार श्री पं० शिवधर आर्य जी के द्वारा सम्पन्न हुआ । आर्यसमाज मन्दिर में भजन उपदेश भी हुआ ।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द विद्यापीठ बन्द करने का संकेत

आर्य समाज मे गम्भीर प्रतिक्रिया

नई दिल्ली १२ अप्रैल। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अन्तर्गत विगत १२ वर्षों से चलते आ रहे दयानन्द शोध पीठ और उस पर नियुक्त दयानन्द प्रोफेसर के पद को समाप्त किया जा रहा है। इस पद पर कार्य करते हुए डा० श्री निवास शास्त्री और डा० कपिल देव शास्त्री जैसे विद्वानो ने वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द के वेद विषयक दृष्टिकोण पर अनेक ग्रन्थों की रचना की थी, और यह ग्रंथ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी किये गये थे। साथ ही अनेक शोध–छात्रो ने भी यहां शोध कार्य को सम्पन्न किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि डा० कपिलदेव शास्त्री के अवकाश ग्रहण करने के बाद इस पद पर किसी नये विद्वान की नियुक्ति करने पर आनाकानी की जा रही है।

स्वामी जी ने कहा कि इस समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत मे उत्तेजना फैलना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि हरियाणा प्रान्त आर्य समाज के कार्य कलापो का गढ़ माना जाता है। यदि कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय के संचालको ने इस प्रकार की गलती की तो देश भर मे इस की जोरदार प्रतिक्रिया होगी।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने हरियाणा के मुख्य मन्त्री चौधरी देवीलाल जो विश्वविद्यालय के कुलपति भी हैं तथा हरियाणा के शिक्षा मन्त्री को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि एक ओर तो भारत सरकार देश के सभी विश्वविद्यालयो मे शंकर विद्यापीठ स्थापित करने की घोषणा कर रही है और दूसरी ओर हरियाणा सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द विद्यापीठ को समाप्त करने का कुप्रयास हो रहा है। उन्होने कहा कि आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी देवीलाल सरकार की इस मूर्खतापूर्ण गलती का देश व्यापी विरोध करेंगे।

इस विषय मे आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही चौधरी देवीलाल से मिलेगा और उसके पश्चात् अन्तिम निर्णय करेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

सूचना

विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के बाद 'भारत के आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सव, यज्ञ, कथा आदि पर' मै लगभग दस वर्ष विदेशो मे रहा। भारतवर्ष के आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सवो पर नहीं जा सका। अब मेरी आंखो की रोशनी साधारण रह गयी है अतः अमेरिका जर्मनी आदि देशो को जाना स्थगित कर दिया। अब भारतवर्ष की आर्यसमाजें अपने वार्षिक उत्सव, यज्ञ, कथा आदि पर जब बुलायेंगी तो मैं पहुंच जाऊंगा। इतना ध्यान रहे कि मै किसी एक की सहायता से यात्रा कर सकूंगा। अतः आर्यसमाजो को दो व्यक्तियो का मार्ग व्यय वहन करना होगा।

निवेदक–महामहोपाध्याय डा० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य
एम० ए० डी० लिट०
वेद मन्दिर, १०१, बाजार मोतीलाल, बरेली (उ०प्र०)

'निरुक्त के अध्ययन करने वालो से निवेदन'

इस समय तक निरुक्त पर २५ टीकायें हो चुकी हैं, जिनमे पांच टीकायें आर्य विद्वानों की भी हैं। ये सब टीकायें स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्य के विरुद्ध हैं। मैं इस निरुक्त पर 'महर्षि भाष्यम्' लिख रहा था। परन्तु अब मेरी आंखों की रोशनी साधारण रह गई है, अतः यह काम बन्द हो गया। अब मुझे किसी ऐसे सहयोगी की आवश्यकता है जो व्याकरण पढ़ा हो और अंग्रेजी भाषा भी जानता हो क्योंकि निरुक्त का साहित्य अंग्रेजी भाषा मे भी है। मै मौखिक बोलकर भाष्य लिखाऊंगा। लिखने वाले को निरुक्त का पूर्ण सही ज्ञान हो जावेगा। कोई सन्यासी, वानप्रस्थी या विद्यार्थी इस योग्यता का हो वह मुझसे पत्र व्यवहार करे। यदि कोई वृद्ध महिला भी इस योग्यता की हो तो उसका भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। मेरे घर मे मेरी लड़की और पत्नी भी हैं। मेरा निजी मकान है। लाखो का विशाल पुस्तकालय और प्रेस भी है। मेरे निघण्टु, निरुक्त का जो साहित्य है वह इस प्रकार है–

१–पांच टीकायें प्राचीन हैं। दुर्ग, स्कन्द, देवराज यज्वा, वररुचि, निरुक्त श्लोक वार्तिक।

२–पांच ग्रन्थ पाश्चात्य विचारधारा वालों के हैं–
डा० लक्ष्मण स्वरूप, प० सत्यभूषण योगी, सत्यव्रत सामश्रमी, राजवाड़े, सिद्धेश्वर वर्मा।

३–पांच ग्रन्थ पौराणिक विचारधारा वालो के हैं–
प० मुकुन्द झा बक्शी, प० सीताराम शास्त्री, प० छज्जूराम शास्त्री, प० शिवनारायण अग्निहोत्री, ब्रह्म कुशल उदासीन।

४ पांच टीकायें आर्य विद्वानो की हैं–
प० चन्द्रमणि जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी, प० भगवतदत्त जी, प० राजाराम शास्त्री, आचार्य विश्वेश्वर।

५–प० कपिलदेव द्विवेदी आदि पांच विद्वानो ने निरुक्त के कुछ अध्यायो पर टीकायें लिखी हैं।

६–इनके अतिरिक्त कुछ विद्वानो ने निरुक्त पर छोटे–छोटे निबन्ध लिखे–प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा मै आचार्य विश्वश्रवा, प० युधिष्ठिर जी मीमांसक, डा० विजयपाल शास्त्री, प० चमूपति जी। उपर्युक्त सब ग्रन्थ मेरे पास हैं। इनके अतिरिक्त कोई और ग्रन्थ किसी विद्वान की निगाह मे हो तो मुझे सूचना दें।

निवेदक–आचार्य विश्वश्रवा व्यास, वेदाचार्य
वेद मन्दिर १०१, बाजार मोतीलाल, बरेली (यू०पी०)

★

शोक समाचार

आर्यसमाज जहानाबाद सुमेरपुर के मन्त्री श्री रामेश्वर प्रसाद जी गुप्त की पूज्य माता जी का दिनांक २४–३–८८ को देहावसान हो गया वे लगभग ७५ वर्ष की थीं। उनकी शव यात्रा में कई राजपत्रित अधिकारी कर्मचारी एवं गण्यमान्य नागरिक शामिल हुए तथा उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना है।

आर्य महासम्मेलन अलीगढ़

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलीगढ़ के तत्वावधान में दिनांक २३ एवं २४ अप्रैल १९८८ को वैदिक आश्रम के विशाल प्रांगण में एक आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में आर्यजगत के विख्यात उपदेशकों / प्रचारकों ने अपने-अपने उपदेशों एवं भजनों से जनता को अत्यधिक प्रभावित किया।

इस सम्मेलन में उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में वेद प्रचार, शुद्धि, गोरक्षा, हिन्दी, संस्कृत भाषा, सती प्रथा विरोध, परिवार नियोजन का विरोध, समान सिविल कानून, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय स्वरूप अल्पसंख्यक आयोग की समाप्ति, काश्मीर की विशेष संवैधानिक धारा ३७० की समाप्ति, राम जन्मभूमि आदि राष्ट्रीय एवं धार्मिक विषयों पर अनेक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए।

अन्त में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान नेतृत्व के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट करते हुए पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के प्रति पूर्ण विश्वास प्रकट करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। १७ अप्रैल १९८८ को सम्पन्न सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग के निर्णय जिसमें पू० स्वामी जी का त्यागपत्र सर्वसम्मति से अस्वीकार किया गया था— सम्पूर्ण विशाल जन समुदाय ने बड़ी हर्षध्वनि के साथ स्वागत किया तथा यह विश्वास व्यक्त किया कि राष्ट्र तथा समाज की वर्तमान संकट की घड़ी में पू० स्वामी आनन्द बोध जैसे महान तपस्वी संन्यासी की परम आवश्यकता है।

उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की पूज्यनीया माता जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

*

जिला उपसभा गोरखपुर का वर्ष १९८८ का निर्वाचन एवं कतिपय महत्वपूर्ण निर्णय

गोरखपुर २४ अप्रैल जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का वर्ष १९८८ का वार्षिक निर्वाचन आज दोपहर २ बजे जिला मुख्यालय, आर्यसमाज मन्दिर (बक्शीपुर) गोरखपुर में जिला प्रधान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री कल्पनाथ आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से श्री कल्पनाथ आर्य प्रधान, श्री डा० पतिराज कश्यप, अवधेशकुमार राय, श्री रमापतिसिंह—उपप्रधान, श्री के० एम०सिंह—मन्त्री, श्री ब्रह्मचरण लाल, श्री अयोध्याप्रसाद, श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव तथा श्री सीतारामसिंह—उपमन्त्री, श्री बैजनाथ प्रसाद—कोषाध्यक्ष, श्री वीरेन्द्रनाथ आर्य—आय-व्यय निरीक्षक, तथा १४ (चौदह)अन्तरंग सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। उक्त निर्वाचन मे गोरखपुर जिले की आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ से सम्बद्ध ११ [ग्यारह] आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साधारण सभा की इस बैठक में जिला सभा ने, जिन समाजों का वार्षिकोत्सव नहीं सम्पन्न हुआ है उसे कम व्यय में भव्य रूप में सम्पन्न करवाने, जिसमें एक उपदेशक / प्रचारक तथा भजनोपदेशक की स्थायी नियुक्ति तथा शिथिल समाजों को सक्रिय करने, दिकुलही कार्तिक पूर्णिमा तथा मकर संक्रान्ति के मेले में कैम्प लगाकर प्रचार, साहित्य वितरण एवं विक्रय आदि के महत्वपूर्ण निर्णय लिए। सभी उपस्थित प्रतिनिधियों ने श्री कैलाशनाथसिंह द्वारा सारे प्रदेश में झूठे और फर्जी मुकदमे दायर कर, समाज के धन तथा जन शक्ति के अपव्यय को अशोभनीय तथा संगठन विरुद्ध ठहराते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के नेतृत्व में आस्था एवं निष्ठा व्यक्त की। अन्त में आर्यसमाज लोको क्वार्टर के प्रधान श्री रामप्रसाद जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर श्रद्धांजलि के साथ सभा विसर्जित हुई।

जनपद मुरादाबाद की समस्त आर्यसमाजों के मन्त्री महोदयों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के समस्त अधिकारी महानुभावों की सेवा में आवश्यक परिपत्र

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की अन्तरंग सभा दिनांक १३-३-१९८८ रविवार के निश्चय—

तहसील अमरोहा, सम्भल, हसनपुर की आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता सम्मेलन द्वारा अनुमोदित

१—कोटि धन के सम्बन्ध मे पूर्व अन्तरंग सभा एवं वार्षिक अधिवेशन द्वारा निश्चित कोटि धनराशि आर्यसमाजें प्रदान करें।

२—कस्बों, नगरो एवं उपनगरो की आर्यसमाजों से १००) रुपये से कम कोटिधन न लिया जाये।

३—अराष्ट्रीय विरोध कोष संग्रह योजना के अन्तर्गत निश्चय किया गया कि समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी कार्यकर्त्ता, एवं सहयोगियों से अनुरोध किया जाये कि वह अपनी एक दिन की आय पूर्ण निष्ठा एवं उत्साह से इस निधि में प्रदान करें।

इसके अतिरिक्त दानदाताओं का सहयोग लिया जाये।

४—१ अगस्त, १९८८ को हिन्दी के दृढ़ संरक्षक राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी टण्डन के जन्म दिवस समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज गंज, स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद में गत वर्षों की भांति किया जाये।

५—जनपद मुरादाबाद की समस्त आर्यसमाजें वर्ष १९८८ से समस्त सदस्यों के प्राप्त होने वाले मासिक चन्दे की न्यूनतम राशि ५/— रुपये करने की कृपा करें।

६—मास अप्रैल, मई, जून, १९८८ के लिए सघन प्रचार योजना मिशनरी प्रचार योजना के प्रचार कार्यक्रम स्वीकार किये गये है। आर्य समाजों से अनुरोध है कि वह इन योजनाओं के अन्तर्गत अपने यहाँ प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करने की कृपा करें।

७—५००/— रुपये की द्विदिवसीय प्रचार योजना उत्सव करने की योजना स्वीकार हुई है। इस योजना के अन्तर्गत सम्बन्धित आर्यसमाज को पण्डाल, भोजन, ध्वनि विस्तारक यंत्र, साज-सज्जा, इत्यादि का व्यय भार स्वयं वहन करना होगा। उपदेशकों, प्रचारकों की व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। आप अपने उत्सव का निश्चय कर इस योजना को सफल बनायें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

आर्यसमाज को कलंकित न करें

(पृष्ठ ५ का शेष)

आइये हम विचार करें अपने अन्तरतम को टटोलें देखें हम-कहां, कैसे और क्यों गलत करने लगे हैं, जिससे हमारे मतभेद आपस में दूर न होकर सड़क पर आने लगे हैं, हम घर में बैठकर विचार वैमनस्य क्यों नहीं दूर कर लेते। हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी होकर भी आपस में इतना वैर विरोध टकराव क्यों लाने लगे हैं। गम्भीर चिन्तन करके फिर हम संकल्प लें कि हम ऋषि दयानन्द के मिशन के उत्तराधिकारी हैं-अतः हम में कोई विरोध न होगा, हम मतभेद होनेपर आपस में विचार विमर्श से दूर करेंगे। विवाद सौहार्द्र पूर्वक सुलझायेंगे। सड़कों पर, पर्चेबाजियों में कुत्सित लांछन बाजियों में अदालतों में जाकर समाज की छवि कभी भी नहीं बिगड़ेगी विश्वास हो यदि अब भी हम चेत गये तो हमारा भविष्य बिगड़ने से बचेगा और सुखमय बनेगा। दयानन्द के मन्तव्यों को आत्मसात् कर प्रसारित करने में हम सक्षम होंगे। पदों की चाहना में कुत्सित राजनीति खेलकर आर्य समाज की छवि गिराने वालों के मंसूबे ध्वस्त होंगे। मनसा, वाचा, कर्मणा, समर्पित जीवन वाले-विद्वानों, नेताओं के पवित्र जीवन दर्शन से जन-जन में वेद का सन्देश फैलेगा। सभी ईर्ष्या द्वेष, छल-कपट से परे हटकर पवित्र जीवन जीने का प्रकाश प्राप्त करेंगे। राष्ट्र समृद्ध होगा। विश्व में हम गौरवशाली होंगे। हमें अपने को आर्य कहने में गर्व होगा और हम आर्य समाज को कलंकित होने से बचा लेंगे।

* * *

पूर्वाञ्चल आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर दि० २६ मई से २ जून तक

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या में आयोजित है। इस शिविर मे १०० आर्यवीरो के प्रशिक्षण का व्यवस्था की गई है। शिविर का उद्घाटन श्री प० धर्मपाल शास्त्री तथा श्रीकान्त मायक श्री बालदिवाकर हंस द्वारा होगा।

पूर्वाञ्चल के प्रत्येक आर्यसमाज के मन्त्री, प्रधान, दयानन्द बाल मन्दिर तथा अन्य शिक्षण सस्थाएं अपने यहाँ से १ आर्य वीर एवं दो अध्यापक इस शिविर मे भेजने की कृपा करें।

१-भोजन, जलपान व निवास निःशुल्क है। २-शिविर शुल्क १) रु० है। ३-गणवेश (खाकी हाफ पैंट, सफेद स्काउटिंगकट हाफ शर्ट, स० I पी०टी० शू सफेद मोजा) नोटबुक, कलम, सीटी, लाठी, थाली, गिलास कटोरी व मौसमी बिस्तर साथ लाना अनिवार्य है। ४-चरित्र प्रमाण-पत्र आर्यसमाज के मन्त्री तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य से लावें। ५-उत्तीर्ण होने पर प्रमाण-पत्र दिया जायेगा।

-प्रधानदीन जायसवाल मन्त्री

शोक समाचार

-वेदों के मर्मज्ञ डा० जगदवृत्त जी वेदालंकार के निधन पर गुरुकुल प्रभात आश्रम मे एक शोक सभा हुई। दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आश्रम के प्राध्यापक श्री वाचस्पति जी आचार्य ने उन्हें ऋषि दयानन्द का अनन्य भक्त एवं वेद सेवक बताया तथा ११ जनवरी को आयोजित शोध-संगोष्ठी में उनकी उपस्थिति का स्मरण कराते हुए पण्डित जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

हैदराबाद सत्याग्रह के अमर बलिदानी पं० छोटेलाल जी की पुण्य स्मृति में गायत्री बृहद् यज्ञ

मैनपुरी-प्राप्त समाचारों के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के संयोजकत्व में दि० २६-६-८८ से १०-६-८८ तक हैदराबाद धर्मयुद्ध के अमर सेनानी पं० छोटेलाल जी की पुण्य स्मृति में, उनकी जन्मस्थली-ग्राम शाहिजी में, गायत्री बृहद यज्ञ के साथ-साथ एक बृहद आर्य मेला, भी आयोजित किया जा रहा है जिसमे आर्य जगत के विख्यात संन्यासी, विद्वान उपदेशक, नेता तथा भजनीक पधार रहे हैं।

आर्य जनों से अनुरोध है कि वे अपने इष्ट मित्रों व परिवार सहित भारी संख्या में उक्त आयोजन में पहुंचें तथा अमर बलिदानी को श्रद्धांजलि देकर पुण्य के भागी बनें और धर्म लाभ प्राप्त करें।

कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा

उत्सव

आर्यसमाज महावीरगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव दिनांक १-२ व ३ मई ८८ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें सर्वश्री शिवधर, जयप्रकाश एवं सत्यप्रकाश भजनोपदेशकों ने भाग लिया। ३ मई मंगलवार अपरान्ह हनुमान जयन्ती मनाई गई।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष [illegible] [illegible]
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ०४
ज्येष्ठ कृष्ण १४
१५ मई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य [illegible] कृपा करें

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भजने में ७.५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिख हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

८६१, ११५९ १२३२ २३०९, २४६० २५२८, २७५४, २८४६, ४४१२ ४५१६ ४७८७, ६१११, ६१३९, ६६६५, ९६५२, ९६६५, ९८९० ११५९८, ११६०८ ११९१८ ११९२३, १२१८९, १२६५९, १२८९४ १२९०० १२९०४ १२९०५, १३११८ १३४६७ १३४६८, १३४७२ १३७८९ १३७९०, १३७९१, १३८०१ १४२६२, १४२६३, १४२६५, १४२६६, १४२६७ १४२६८ १४२६९, १४२७०, १४२७१, १४२७२, १४२७३ १४२७४, १४२७५ १४२७६, १४२७७, १४२७८ १४२७९।

विनीत—
व्यवस्थापक

निर्वाचन

आर्यसमाज मेजा, इलाहाबाद
प्रधान—श्री [illegible]सिंह
मन्त्री—श्री [illegible]सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री प्यारेलालसिंह

आर्यसमाज गुरुकुल रोड, [illegible]
प्रधान—श्री [illegible]
मन्त्री—श्री [illegible]
कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र गुप्ता

आर्यसमाज कासगंज (एटा)
प्रधान—श्री बिहारीलाल आर्य
मन्त्री—श्री [illegible]लाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री विमेशचन्द्र [illegible]

महिला आर्यसमाज [illegible]
प्रधान—श्रीमती कुन्तीदेवी
मन्त्री—श्रीमती सावित्री देवी
कोषाध्यक्ष—,, सावित्री देवी गुप्ता

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] आर्य [illegible] ५ मीराबाई [illegible] लखनऊ के लिए [illegible]
एम० पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) [illegible], लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ — घोषणा पत्र सं. ७।१८-९-५३

ज्येष्ठ शुक्ल ६, रविवार, संवत् २०४२ वि०, दिनांक २६ मई १९८५

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

कुलदीप पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	८१
अङ्क	११

न्यायालय, अतिरिक्त मुन्सिफ—७, गोरखपुर का महत्वपूर्ण निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ही अधिकृत प्रधान व मन्त्री ।

मुकद्मा न० १४१७/८६ भीमचन्द्र आदि बनाम डा० विनयप्रताप आदि न्यायालय अति०मुन्सिफ-७ गोरखपुर के कोर्ट में लम्बित था । उक्त वाद भीमचन्द्र आदि ने यह घोषित करने के लिए दायर किया था कि "वे लोग आर्यसमाज गोरखपुर के मन्त्री तथा प्रधान हैं और उनके निर्वाचन को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के तथाकथित प्रधान कैलाशनाथसिंह तथा मन्त्री राजपाल आर्य ने मान्यता प्रदान की है, तथा डा० विनयप्रताप आदि जो वर्तमान में आर्यसमाज गोरखपुर के अधिकारी हैं तथा जिनके निर्वाचन को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के मन्त्री के रूप में श्री मनमोहन तिवारी ने मान्यता प्रदान की है—वे लोग अवैध हैं' । इस वाद में उक्त भीमचन्द्र आदि ने सशपथ बयान देकर कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के प्रधान कैलाशनाथसिंह हैं तथा पं० इन्द्रराज व मनमोहन तिवारी कुछ भी नहीं ।

ज्ञातव्य है कि उक्त वाद में कैलाशनाथसिंह स्वयं, अन्तिम सुनवाई के दौरान गोरखपुर के सम्बन्धित न्यायालय में उपस्थित थे और उन्होंने अनेक फर्जी कागजात प्रस्तुत किए एवं अवैधरूप से सभा कार्यालय से हस्तगत किये हुए लेटरहेड्स पर बैक डेट में अपने तथा भीमचन्द्र आदि के पक्ष के समर्थन मे लिखकर दिया । इतना ही नहीं, बल्कि एक नितान्त भ्रामक समाचार, जिसमें अपने आपको आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का प्रधान निरूपित किया गया था और जिसे गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'आज' समाचार पत्र में दिनांक २५—४—८५ को प्रकाशित भी करवाया था—उसकी प्रति न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की ।

उक्त वाद में विद्वान मुन्सिफ मजिस्ट्रेट ने दोनों पक्षों के बयान सुनने, सभी प्रमाणों को देखने तथा लगातार तीन दिन की बहस सुनने के पश्चात् अपना महत्वपूर्ण निर्णय दिया कि डा० विनयप्रताप तथा उनका अधिकारी मण्डल ही आर्यसमाज गोरखपुर का वास्तविक वैध अधिकारीमण्डल है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान पं० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं ।

इस प्रकार कैलाशनाथसिंह तथा उनके साथियों का यह प्रचार कि वे ही आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अधिकृत एवं वास्तविक प्रधान हैं—विद्वान मुन्सिफ द्वारा उक्त वाद में दिये गये निर्णय से सो असत्य सिद्ध हो गया है ।

अतः आर्य जनता की सेवा में सूचनार्थ निवेदन किया जाता है कि जिन समाजों तथा संस्थाओं मे इस प्रकार के झूठे तथा धोखाधड़ी पर आधारित मुकद्मे चल रहे हों, वे यदि आवश्यक समझें तो उक्त निर्णय की प्रति कार्यालय आर्यसमाज गोरखपुर (बक्शीपुर) गोरखपुर से प्राप्त कर अपने वाद में नजीर के तौर पर सम्बन्धित कोर्ट में दाखिल कर सकते हैं ।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।
–राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ–ज्येष्ठ शुक्ल ६ संवत् २०४५, रविवार २२ मई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

हमारा मूलमन्त्र–

चरैवेति

यह विशाल आर्य (हिन्दू) जाति सदियों से पुरानी सड़ी गली अवैदिक मान्यताओं से बुरी तरह जकड़ी हुई थी । महाभारत काल के पश्चात् वेदों की शिक्षायें धीरे २ लुप्त होती गयीं और उनके स्थान पर अनेक मतमतान्तर, पाखण्ड, कुरीतियां और अन्धविश्वास जन्म लेते गये । विद्वानों में द्वेष बढ़ता गया और एक मत दूसरे मत की बुराई तथा अपने मत की श्रेष्ठता सिद्ध करने में प्रवृत्त होता गया । उससे पहिले सृष्टि के प्रारम्भिककाल से लेकर वेदोक्त धर्म ही मानव की श्रद्धा का केन्द्र था । महाभारत के पश्चात् वेदमन्त्रों का मनमाना अर्थ करके संसार में यह भ्रम फैलाया गया कि यह पाखण्ड और अन्धविश्वास ही वेदोक्त प्रतिपादित धर्म है अथवा ईश्वर और धर्म की यही आज्ञा है । अन्धविश्वासों की एक बहुत लम्बी श्रृंखला बन गई और उसे चमत्कारों से युक्त बनाकर और आकर्षक बना दिया गया । कालान्तर में मानव जाति के दो बड़े समूह ईसाइयत और इस्लामियत तथा अन्य भी इसी प्रकार के अन्धविश्वासों की भित्ति पर खड़े हो गये । वेद विद्या लुप्त होने का प्रभाव विश्वव्यापी पड़ा था और इस आर्यावर्त में ही नहीं अपितु संसार के सभी देशों में अनेकों अवैदिक आस्थाओं ने जन्म ले लिया था और जिसके जो मन में आया नई २ रीतियां प्रचलित करके अपने को ऋषि, मुनि, पैगम्बर, मसीहा, खुदा का बेटा आदि घोषित करने लगा । प्रतिस्पर्धा अपने २ मतों को बढ़ाने और अपना वर्चस्व स्थापित करने में लग गई । खूंखार लड़ाइयां हुईं और लाखों निर्दोष प्राणी धर्म के नाम पर कत्ल कर दिए गये । सही बात कहने वाला कोई नहीं था और अगर किसी ने कोई धर्म का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अथवा वैदिक मान्यताओं से मिलता-जुलता सत्य का पक्ष रखा भी तो उसे मार दिया गया या जला दिया गया । यह स्थिति कमोबेश ५००० वर्ष तक सारे विश्व में चलती रही । ईश्वर और धर्म के नाम पर लूट भी खूब मची । वेद की ऋचायें लुप्त होती गईं । गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है—

"हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परत नहिं पन्थ ।
जिमि पाखण्ड विवाद ते लुप्त होहिं सद्ग्रन्थ ।।

हम धार्मिक दृष्टिकोण से इस युग को अन्धा युग कह सकते हैं । "अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः" ।

ऋषि दयानन्द इस युग के सच्चे तत्ववेत्ता ऋषि थे जिन्होंने इस मर्म को पहिचाना और आकण्ठ अन्धविश्वासों में डूबे हुये मानव समाज को वेदों की अमृतौषधि पिलाकर जीवित करना चाहा । उनके कार्यों ने आशातीत सफलतायें भी प्रदान की । मनुष्य के सोचने के तरीके में बदलाव आया । यद्यपि कुरीतियां कहीं २ पुनः सिर उठा लेती हैं लेकिन पनपने नहीं पातीं और उन पर वैचारिक प्रहार प्रारम्भ हो जाता है । अन्ततः, विजय, वेदोक्त सत्य धर्म की ही होती है । जहां कहीं हम सुनते हैं पाखण्डियों ने अपने को भगवान घोषित कर दिया है अथवा अवैदिक श्रद्धा के बल पर अमानवीय घटनायें होने लगी हैं–हम पहुंच जाते हैं, निर्भीक वाणी में उन्हें ललकारते हैं और अन्ततः हमारी नहीं, सत्य की विजय होती है । यह करिश्मा आर्य समाज की वैचारिक क्रान्ति की देन है ।

लोकैषणा और वित्तैषणा से सर्वथा दूर ऋषिवर्य का यह कार्य विश्व के समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ था और इसका असर जादू के समान हुआ है जो जरा भी आर्य समाज के सम्पर्क में आया, उसमें बौद्धिक चेतना जागृत हुई और उसने धर्म के तत्वों को वैज्ञानिक कसौटियों पर कसकर परखना प्रारम्भ कर दिया । इसलिये हम आर्यसमाज को वैचारिक क्रान्ति का उद्घोषक या प्रणेता कह सकते हैं । हमारा विश्वास है कि वेद प्रभु की वाणी है और वे मानवमात्र के लिए कल्याणकारी उपदेशों और ज्ञानविज्ञानों से भरे हुये हैं । वेद में स्वयं भगवान ने कहा है–"मैंने इस कल्याणकारिणी वाणी का सब मनुष्यों के लिये उपदेश किया है चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो या शूद्र हो । जिसे तुम अपना समझते हो उसके लिए भी इसका उपदेश किया है' और जिसे तुम पराया समझते हो उसके लिए भी इसका उपदेश किया है (यजु० २६ । २) इसी भांति अथर्व० १९ । ७१ । १ में प्रभु ने कहा–" हे मनुष्यों ? सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली यह वेदवाणी मैंने तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दी है, यह तुम्हें उद्यमशील, शिक्षित, द्विज बना देगी, तुम्हारे हृदयों को पवित्र कर देगी । इसके अध्ययन और तदनुकूल आचरण से तुम्हें लम्बी आयु प्राप्त होगी बलिष्ठ प्राणशक्ति मिलेगी. कीर्ति, धन मिलेगा ब्रह्मतेज प्राप्त होगा और अन्त में ब्रह्म का दर्शन (मोक्ष) भी प्राप्त होगा ।

पाठकगण ? इससे अधिक कल्याण और मंगल देने वाला वाणी वेदमाता के अतिरिक्त और कौन दे सकता है । न कहीं द्वेष है न कहीं वर्ण भेद,न कहीं हिंसा है न कहीं दुत्कार, प्यार और स्नेह की भरी वाणी है । इसीलिये महर्षि दयानन्द ने "वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना हमारा परमधर्म बताया" । और आज आर्यसमाज इसी वेदमाता का आंचल पकड़े हुये घर २ अलख जगा रहा है । हमने वैचारिक क्रान्ति का तूफान खड़ा कर दिया है । धूर्तों, पाखण्डियों के कान खड़े हो गये हैं उनका पलायन प्रारम्भ हो गया है । स्वर्णिम प्रभात की किरणें क्षितिज पर आ पहुंची हैं । वेदों का डंका विश्व में उद्घोषित हो रहा है । आवश्यकता है हम संगठित रहें, निराश न हों, आगे बढ़ते रहें–बढ़ते रहें क्योंकि यही हमारा मूल मन्त्र है–"चरैवेति चरैवेति" ।

* * *

उत्सव

–आर्य समाज बिहारीगढ़ (सहारनपुर) का पंचम वार्षिकोत्सव २१ से २३ मई तक बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है । प्रख्यात संन्यासी, उपदेशक एवं प्रचारक भाग ले रहे हैं ।

–आ० स० भदोसी (बदायूं) का ३१ वां वार्षिकोत्सव२७ व २८ मई १९८८ को समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है ।

वेदोक्त धर्म

[श्री इन्द्रदेव पाठक एम० ए० आचार्य, दर्शन वाचस्पति, लखनऊ]

ऋग्वेद भाष्य भूमिका के ७वें प्रकरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती सोमनस्य के ३, सत्याचरण मित्रता के ४, श्रम-तप आदि गों के ८, मन्त्र (कुल १५ मन्त्र) और तैत्तिरीय आरण्यक के दा अन्य प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। यह विषय २१ पृष्ठों में है सका खण्डन श्री करपात्री ने वेदार्थ० में पृष्ठ ११७२ से पृष्ठ १२१५ क ४४ पृष्ठों में किया है।

१-संगच्छध्वम्० आदि ऋग्वेद के अन्तिम संगठन सूक्त के द्वितीय मन्त्र की व्याख्या के विषय में श्री करपात्री कहते हैं कि यह र्थ मन्त्र के बाहर, निर्मूल है। (पृष्ठ ११७१) किन्तु उनका थन यथार्थ नहीं उन्हें जानना चाहिये था यहाँ व्याख्या और भावार्थ है, शब्दार्थ नहीं। भाग का अर्थ वे सायण के अनुसार वि का भाग' करते हैं किन्तु महर्षि ने भजनीय ईश्वर किया है जो सर्वथा प्रासङ्गिक और उचित है। सायण ने यह मन्त्र स्तुति करने वालों को सम्बोधित किया है इस पर श्री करपात्री लिखते कि 'यह सम्बोधन सब मानवों को नहीं किया जा सकता'। किन्तु श्वरीय ज्ञान तो सबके लिये है, इसे सायण के द्वारा स्वीकार करने पर भी श्री करपात्री नहीं स्वीकार करते, यह क्षुद्रता की बात है।

२-समानो मन्त्रः० इस तीसरे मन्त्र का अर्थ भी श्री करपात्री को मान्य नहीं। किन्तु यहा भी उन्हें समझना चाहिए था कि यहाँ शब्दार्थ नहीं किन्तु भावार्थ सहित व्याख्या है। मन्त्र का अर्थ विचार है यह मानवमात्र के लिए है। ईश्वर के सामने सभी मानव समान उपदेश है। हवि (भोग्य पदार्थ-अन्न जल भी परमात्मा सब मनुष्यों को समान रूप से देता है।

३-चौथा मन्त्र 'समानीव० है। इसकी व्याख्या को करपात्री जी अस्त व्यस्त' बताते हैं। किन्तु उनका कथन द्वेषमूलक है। मन की व्याख्या में महर्षि ने शतपथ १४-४-३-९ में वर्णित 'कामः संकल्पः, विचिकित्सा, श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति, अधृति, ह्री, धी, भी-ये १० गुण बताये हैं। ये मन में आते हैं। जो अच्छे हैं वे ग्राह्य जो बुरे हैं वे त्याज्य हैं। यह नहीं कहा कि ये सभी गुण धारण किये जायें।

४-दृष्ट्वा रूपे० (यजु० १९-७७) के महर्षि कृत अर्थ को ठीक नहीं बताते हुए श्री करपात्री महीधर के पक्षपाती हो रहे हैं।

५-दृ ते दृं ह मा इत्यादि यजुः १३६-१८) का अर्थ भी उन्हें गलत लगता है। कात्यायन के विनियोग का हरा चश्मा लगाये हुए उन्हें सब हरा ही दिखायी देता है, शुद्ध श्वेत वस्तु दिखायी ही नहीं देती। यहाँ वे दृति से मिट्टी के पात्र' को सम्बोधन मान रहे हैं किन्तु मिट्टी का पात्र जड़ है, वह क्या सुनेगा। अतः महर्षि का किया हुआ दृति का अर्थ-'सर्वदुःखविनाशक ईश्वर सर्वथा उचित है। महर्षि कृत अर्थ सर्वथा प्रकरण के अनुकूल है।

६-यजु० १-५ बहुत प्रसिद्ध है -
अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥

इसके महर्षि कृत अर्थ की आलोचना में श्री करपात्री कहते है कि 'केवल सत्य ही धर्म नहीं है, सत्य के अतिरिक्त अग्नि होत्रादि धर्मों का भी विधान है।' अग्निहोत्रादि धर्म भी तो सत्य हैं, इसे सत्य के अतिरिक्त बताना कदापि उचित नहीं। आगे वे लिखते हैं कि 'धर्म का अनुष्ठान ईश्वर की कृपा और अपने पुरुषार्थ के आधार पर करना चाहिये-ये दोनों ही बातें प्रकरण-विरुद्ध हैं, क्योंकि इस अध्याय में दर्श पूर्णमास इष्टि से सम्बद्ध मन्त्र ही प्रकृत हैं।'

—वेदार्थ० पृ० ११८४

किन्तु उनका यह कथन अनुचित है क्योंकि वेद का ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मानवों को दिया। मन्त्रों का यज्ञों मे विनियोग बाद को हुआ। अतः इस मन्त्र का प्रारम्भिक मुख्य प्रकरण ईश्वरोपदेश ही है। दर्शपूर्णमास में विनियोग बाद का है। उनमें भी इस मन्त्र से व्रत का ग्रहण किया जाता है जिसमें ईश्वर की कृपा और पुरुषार्थ दोनों किये जाते हैं, अतः मन्त्र में पहले व्रतपति अग्नि को सम्बोधन किया, ईश्वर की कृपा मांगी और फिर पुरुषार्थ की बात कही कि मैं सत्यव्रत का आचरण करूंगा। अतः ये दोनों बातें प्रकरण के अनुकूल हैं।

७-व्रतेन दीक्षामाप्नोति० इत्यादि यजु० १९-३० में अन्तिम लक्ष्य सत्य बताया गया है जिसके पाने के लिये व्रत, दीक्षा, दक्षिणा, श्रद्धा-ये चार पहले धारण करना आवश्यक है। श्री करपात्री इस अर्थ को भी उचित नहीं बताते क्योंकि इसके विपरीत भी देखने को मिलता है। किन्तु यह समझ का फेर है। मन्त्र मे बताया क्रम अटल है, शाश्वत है, पहले व्रत (संकल्प), उससे दीक्षा (सामान्य प्रवृत्ति), उससे दक्षिणा (दक्षता, योग्यता), उससे श्रद्धा (सत्यधारण करने की प्रवृत्ति) और तब सत्य की प्राप्ति स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक क्रम है।

८-९-इसके बाद अथर्व८ १०-१५-१-२ को उद्धृत करते हुए महर्षि ने बताया कि 'सब मनुष्यों को धर्म के इन लक्षणो का ग्रहण अवश्य करना चाहिये'। इस पर श्री करपात्री जी कहते हैं कि 'यह कथन भी अयुक्त है, क्योंकि कोई सामान्य लक्षण यहाँ नहीं वर्णित है।' वेदार्थ० पृष्ठ ११८८)।

किन्तु उनका यह कथन यथार्थ नहीं है। क्योंकि महर्षि का तो स्वयं यह कथन है कि ये धर्म के लक्षण हैं (अर्थात् विशेष लक्षण हैं, सामान्य नहीं)।

आगे भी करपात्री जी कहते हैं कि 'परमेश्वर में मनुष्यों को' इन पदों का अध्याहार किस प्रमाण के आधार पर किया है? विद्र इन पद का अर्थ 'ज्ञानी होवे' यह किस प्रमाण से किया गया है' (पृष्ठ ११८८)

इसका उत्तर यह है कि 'आदि सृष्टि में ईश्वर ने ज्ञान मनुष्यों को ही दिया यही अध्याहार का प्रमाण है। ईश्वर मनुष्यों से ही कहता है 'विद्र' तुम इसे जानो। इसी शब्द प्रमाण से 'मनुष्य ज्ञानी होवें' अर्थ महर्षि ने किया।

श्री करपात्री इस सूक्त को ब्राह्मण की गो से सम्बद्ध मानते हैं। यहाँ ब्रह्मगवी-ब्रह्म की वाणी-वेद वाणी है। उसे न पालन करने वाला इन धर्म के लक्षणों से वञ्चित हो जाता है। अतः ये धर्म के विशेष लक्षण महर्षि के बताये हुए ठीक हैं। और इनका सम्बन्ध आगे आये ब्रह्मगवी (वेद वाणी) से ठीक हो जाता है। व्याख्याकार की स्वतन्त्र प्रवृत्ति बताना कोई दोष नहीं है क्योंकि वह विनियोग के बन्धन में जकड़ा नहीं है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

१०–१४ 'परिहिता' का 'हितकारी' अर्थ नहीं, भाव है अर्थ को धारण करता है स्वधा को धारण करके मनुष्य हितकारी हों।

श्रद्धा से प्राप्त किया गया 'सत्य पर विश्वास' है। उत्तर वहीं विद्यमान है।

दीक्षा का अर्थ सत्योपदेश का आधार यही है कि व्रत से दीक्षा (सत्योपदेश) होती है और उससे दक्षिणा अर्थात् कुशलता आती है।

यज्ञ का अर्थ यज्ञोवै विष्णुः (शतपथ) के आधार पर परमेश्वर किया गया है जो ठीक है।

श्री करपात्री महर्षि द्वारा बीच के दो मन्त्र न दिये जाने को महर्षि की चालाकी बताते हैं। यह व्यक्तिगत आक्षेप सर्वथा निन्दनीय है। जो मन्त्र आवश्यक नहीं थे, वे नहीं दिये। इसमें चालाकी कुछ नहीं। चालाकी तो करपात्री जी की है कि अथर्व १२–५ के मन्त्रों को १०–१५ में बता दिया। इस के आगे महर्षि ने तैत्तिरीय शाखा के वचन दिये हैं जिनमें ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च आदि और आचार्य द्वारा दीक्षान्त उपदेश दिया गया है। इस पर श्री करपात्री का आक्षेप है कि ये वचन ब्राह्मण ग्रन्थ के हैं जिसे दयानन्द वेद नहीं मानते अतः उन्हें इनके निर्देशक वेद वचन बताने चाहिये वाक्यों का अर्थ मनमाना किया है (वेदार्थ ११९१)।

इसका उत्तर यह है कि यदि ब्राह्मण वचन वेदानुकूल हैं तो वे मान्य हैं उनके निर्देशक वेद वाक्य बताने की आवश्यकता नहीं। महर्षि ने वाक्यों का अर्थ मनमाना नहीं किया। वास्तविक किया है। श्री करपात्री महर्षि कृत ऋत का यथार्थ ज्ञानपरक अर्थ गलत बताते हैं।

ऋत का अर्थ सत्य है और यथार्थ ज्ञान सत्य ही होता है, अतः ऋत का महर्षि कृत अर्थ ठीक है।

वे दीक्षान्त उपदेश के तैत्तिरीयारण्यक के वचन की महर्षि कृत व्याख्या को निर्मूल बताते हैं। किन्तु यह कथन यथार्थ नहीं, क्योंकि व्याख्या पूर्णतः मूल के अनुसार है।

इसके बाद महर्षि ने तैत्तिरीय आरण्यक (१०–८ और ६२–६३) के वचन दिये हैं जिसमे ऋत आदि १२ प्रकार के तप बताये गये हैं जिसकी व्याख्या को भी करपात्री व्यर्थ बताते हैं। किन्तु यह व्यर्थ नहीं है क्योंकि इसमे १२ साधन बताये गये हैं वे सभी धर्म तप दान और मोक्ष) के साधन हैं–

१–सत्य, २–तप, ३–दम, ४–शम, ५–दान, ६–धर्म, ७–प्रजन (अच्छी सन्तान), ८–अग्नियाँ (३ अग्नियों का आधान रूपी विद्या) ९–अग्निहोत्र, १०–यज्ञ, ११–मानस (उपासना) और १२–न्यास (सन्यास)।

इसकी महर्षि कृत व्याख्या को भी करपात्री असम्बद्ध (ऊलजलूल) बताते हैं और सायण के कथन को ठीक। यह सायण के प्रति पक्षपात और महर्षि के प्रति द्वेष भावना है। किन्तु वास्तविकता यह है कि ये १२ साधन वेदोक्त सत्य धर्म के हैं अतः महर्षि ने यहाँ उनको लिखा। यही महर्षि का पाण्डित्य है।

इसके बाद महर्षि ने मुण्डक उपनिषद् (३–१–५–६) के सत्येन लभ्यः० आदि दो वचन दिये हैं। महर्षि ने इसका अर्थ लिखा कि सत्य अर्थात् सत्य धर्माचरण से यह परमेश्वर मिलता है। इस पर श्री करपात्री कुटिलता से प्रश्न करते हैं कि 'आप यह तो बताइये कि क्या धर्म असत्य भी होता है। (वेदार्थ पृष्ठ १२११)।

महर्षि ने कब कहा कि असत्य भी धर्म होता है ? वह तो सत्य की व्याख्या में सत्यरूपी धर्म का आचरण करना बता रहे हैं। सत्य का अर्थ सत्य धर्म और सत्यभाषण दोनों हैं।

इसके बाद महर्षि ने मीमांसाकृत धर्म का लक्षण चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः (१–१–२) और वैशेषिक दर्शन मे दी गयी धर्म की परिभाषा यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः (१–१–२) लिखी है जिसे भी करपात्री 'अस्तव्यस्त' और गलत बताते हैं। किन्तु उनका कहना द्वेषमूलक है। महर्षि की दोनों सूत्रों की व्याख्यायें ठीक हैं–

मीमांसा–ईश्वर द्वारा सत्यधर्माचरण की प्रेरणा धर्म है।

वैशेषिक–जिससे अभ्युदय (सांसारिक इष्ट सुख) और निःश्रेयस (मोक्ष) की सिद्धि हो वह आचरण धर्म है और यही वेदोक्त धर्म है।

* * *

डा. भवानीलाल भारतीय का दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद से औपचारिक रूप से अवकाश ग्रहण

तीन वर्ष के लिए पुनः नियुक्ति

चण्डीगढ़–४ अप्रैल विगत साढ़े सात वर्षों से पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्यरत आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने अपने जीवन के ६० वर्ष तथा एक आदर्श शिक्षक जीवन की ३० वर्षीय कार्यावधि को पूरा कर औपचारिक रूप से ३० अप्रैल को अवकाश ग्रहण कर लिया। किन्तु उनकी योग्यता एवं शोध प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिए उनके कार्यकाल में वृद्धि कर प्रोफेसर पद पर ही उनकी पुनः नियुक्ति की है। इसप्रकार से १९९१ पर्यन्त दयानन्द शोधपीठ, के अन्तर्गत कार्य कर सकेंगे।

साथ ही पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर० पी० बाम्बा ने उन्हें होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत तथा प्राच्य विद्या संस्थान का आदरी निदेशक भी नियुक्त किया है जिसका कार्यभार उन्होंने गत १७ मार्च को सम्भाल लिया। स्मरण रहे कि उपर्युक्त शोध संस्थान प्राच्य विद्या विषयक अध्ययन एवं शोध का एक विश्वविख्यात केन्द्र है जहां विश्वविद्यालय की एम० ए०, पी-एच० डी० आदि उपाधियों के पठन–पाठन के अतिरिक्त उच्चतर वैदिक शोध की व्यवस्था है तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सहस्रों पाण्डुलिपियों तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थों से सुसज्जित विश्वेश्वरानन्द पुस्तकालय भी विद्यमान है।

गुरुकुल में छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम पो० कलालघाटी कोटद्वार (गढ़वाल) का नवीन सत्र १५ मई १९८८ से प्रारम्भ हो गया है। इस गुरुकुल के संस्थापक ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) के अथक प्रयास से संस्था दिनोंदिन उन्नतिशील है। अपने बच्चों को सुयोग्य, चरित्रनिष्ठ एवं विद्वान बनाने हेतु संस्था में प्रवेश कराएं।

–प्रधानाचार्य

सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी क्यों न हो ?

[श्री किशन स्वरूप गोयल करोल बाग, नई दिल्ली]

आज देश की एकता और अखण्डता को तोड़ने के लिए इस पर चारों ओर से प्रहार किए जा रहे हैं, यहाँ तक कि सरकार की नीतियाँ भी इसे तोड़ने में ही सहायक सिद्ध हो रही हैं। प्रत्येक बुद्धिजीवी देशभक्त यह सोचने पर विवश है कि इसकी रक्षा कैसे की जाए किन्तु उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है। आजादी के बाद के इन ४० सालों में हमारी सरकार ने जो नीतियाँ अपनायी हैं उनसे अलगाववादी तत्वों को ही बढ़ावा मिल रहा है। इन नीतियों में विशेषकर संविधान की धारा ३७० जिससे कश्मीर को विशेष दर्जा प्राप्त है, विशेष सम्प्रदायों को आरक्षण आदि की सुविधाय देना, संविधान में अल्पसंख्यक—बहुसंख्यक शब्दों का समावेश करना, विभिन्न सम्प्रदायों के लिए अलग-अलग कानून बनाना और हिन्दी को राज भाषा का स्थान न देना आदि प्रमुख हैं। भाषा के आधार पर प्रदेशों का गठन भी इसमें पूरा योगदान प्रदान करता है। इन नीतियो से पृथकतावादी तत्वों को विशेष बल मिला है।

आज विशेषतः भाषा पर आधारित प्रदेशों के गठन तथा अपने देश की अपनी भाषाओं में से किसी का भी राजभाषा न होकर वह स्थान अंग्रेजी भाषा को देना इस एकता और अखण्डता को समाप्त करने का मुख्य कारण है। इसी कारण आज अलग-अलग भाषा-भाषी अपनी भाषा के आधार पर प्रदेशों के गठन की मांग कर रहे हैं इसके लिये सर्व प्रथम भाषा विवाद को समाप्त करना होगा। भाषाओं का विवाद हल करने के लिए देश के सभी लोगों को अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को सीखना भी आवश्यक है। जिससे परस्पर भावनात्मक एकता स्थापित हो सके।

हमारे देश की अधिकांश भाषाओं में संस्कृत के शब्दों का काफी समावेश है किन्तु लिपि देवनागरी न होने के कारण उसे पढ़ना और सीखना और समझना कठिन है क्योंकि संस्कृत की लिपि भी देवनागरी ही है। यदि वही भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाए तो उसे पढ़ने और समझने में सुविधा होगी और देश की विभिन्न भाषाओं को सीखने में सरलता हो जायेगी। ऐसा करने से उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम का भेदभाव समाप्त हो कर भावनात्मक एकता को साकार रूप दिया जा सकता है।

देश की अधिकांश भाषाओं को यदि एक ही लिपि में लिखा जाये तो उसे समझने और पढ़ने में सभी को सुविधा होगी। इसलिए देश में सभी भाषाओं की एक ही लिपि होनी अनिवार्य है। इसके लिए हमें चीन से पाठ सीखना चाहिए। चीन एक बहुत विशाल देश है और वहाँ भी बहुत सारी भाषायें हैं। किन्तु उन सभी की लिपि एक ही है। यही कारण है कि वहाँ भावनात्मक एकता पायी जाती है। इसी प्रकार यूरोप के भी सभी देशों की भाषायें भिन्न-भिन्न हैं किन्तु उन सभी की लिपि एक ही 'रोमन' है। किन्तु हमारी सरकार तथा वर्तमान प्रधान मन्त्री देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा की बात तो करते हैं किन्तु जिन नीतियों से सुरक्षा की जा सकती है उन्हेंने अपना कर उनके विपरीत ऐसी नीतियां अपनाते हैं जिन से देश टूट जावे। कारण है कि वे इस ओर से आंखें बन्द किए बैठे हैं। उनकी करनी और कथनी में जमीन और आसमान का अन्तर है। वे कहते हैं बात एकता की रक्षा की और नीति अपनाते हैं एकता को तोड़ने की। विशेष सम्प्रदायो की तुष्टीकरण की नीति अपनाने के कारण ही शाहबानो के केस में इन्हीं प्रधान मन्त्री ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का स्वागत करने के बजाय उसे रद्द करने के लिए संसद में एक विधेयक प्रस्तुत कर उसे रद्द कर दिया। इससे मुस्लिम सम्प्रदाय में अलगाववाद को बहुत ही बढ़ावा मिला है। जब कि प्रधान मन्त्री ने जिन्हें न्याय के मामले में थोड़ी-सी भी जानकारी नहीं है न्यायविदों का निर्णय रद्द कर दिया। यह कार्यपालिका का न्यायपालिका मे सीधा हस्तक्षेप ही कहा जा सकता है।

अब प्रश्न आता है कि देश की ऐसी कौन-सी भाषा है जिसकी लिपि सभी भाषाओं के लिए उपयुक्त हो सकती है और वह वैज्ञानिक दृष्टि से भी सम्पन्न हो। हमें अपने देश की सभी भाषाओं की लिपियों का अध्ययन करने से पता लगता है कि केवल देवनागरी लिपि ही एक ऐसी लिपि है जो जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढ़ी जाती है, वैसी ही बोली जाती है और वैसा ही उसका अर्थ होता है। इसके अतिरिक्त देश की अन्य भाषाओं की लिपियों में यह बात नहीं पायी जाती। इसके अतिरिक्त देश की सभी भाषाओं की लिपियों का उद्गम भी इसी देवनागरी लिपि के अक्षरों को तोड़ मरोड़ कर तथा उनके उच्चारण और अर्थ बदल कर ही निर्माण किया गया है। चाहे वह पंजाबी हो, गुजराती हो, मराठी हो, उड़िया हो या बंगाली हो। इसलिये देवनागरी लिपि ही सभी भाषाओं की लिपि बनने में समर्थ हो सकती है। हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में तो यह प्रयोग की ही जाती है। हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या भी अन्य भाषाओं के बोलने वालों से कहीं अधिक है। इसलिए देवनागरी का ही दूसरा नाम नागरी भी है। साधारणतः लोग नागरी शब्द का ही प्रयोग करते हैं।

लिपि के बारे में की गई खोज के अनुसार सभी भाषाओं की लिपि का जन्म ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ई० पू० ५०० से ई० प० ३५० तक ब्राम्ही लिपि का प्रचलन रहा। यही लिपि गुप्तकाल मे गुप्त लिपि बनी और बाद में यह कुटिल लिपि के नाम से प्रचलित हुई। इसी कुटिल लिपि को बाद में देवनागरी का रूप दे दिया गया। इसी कारण यह देश की सभी भाषाओं की लिपि का उद्गम कही जा सकती है। क्योंकि यह वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न है जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि यह लिपि जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती, वैसी ही पढ़ी जाती है और वैसा ही अर्थ होता है। यह वैज्ञानिक प्रमाणिकता अन्य किसी लिपि में नहीं पाई जाती। वे लिखी किसी तरह जाती हैं और पढ़ी और बोली किसी अन्य तरह जाती है तथा अर्थ कुछ और ही होते हैं। यही कारण है कि केवल देवनागरी या नागरी लिपि ही देश की सभी भाषाओं की लिपि बनने के योग्य है। यही कारण है कि दक्षिण तथा अन्य भाषा-भाषी हिन्दी को देवनागरी लिपि मे लिखे जाने के कारण जल्दी सीख लेते हैं। किन्तु हिन्दी भाषा भाषी दक्षिण तथा देश की अन्य भाषाओं को सरलता से नहीं सीख पाते। यदि देवनागरी लिपि सभी भाषाओं की हो जाये तो हिन्दी भाषी लोगों को भी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

छात्र–संघ

समस्या और समाधान

[श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद]

इस देश का एक तो यही दुर्भाग्य है कि शिक्षा के नाम पर जो कुछ बच्चों को पढ़ाया जाता है, उसमें शिक्षा नाम का कोई तत्त्व है ही नहीं केवल मात्र साक्षरता है, भ्रष्ट साक्षरता। अक्षरों का शुद्ध उच्चारण तक भी नहीं आ पाता।

प्रथम श्रेणी में एम० ए० कर लेने वाले और एक बिना पढ़े में केवल इतना अन्तर होता है कि वह लिख–पढ़ लेता हो और वह लिख पढ़ नहीं सकता। किन्तु वह तथाकथित शिक्षित जो लिखता और पढ़ता है, उसमें कितना शुद्ध होता है और कितना अशुद्ध, यह स्वयं उसे भी पता नहीं होता।

यह ज्ञान तो एम०ए० के छात्रों को पढ़ाने वाले प्राध्यापकों में भी विरले को ही होता है कि अक्षरों के अशुद्ध प्रयोग से बोलने और लिखने दोनों में ही शब्द का अर्थ बदल जाता है और वास्तविक अर्थों में वह उस अभिप्राय को प्रकट नहीं कर पाता, जिसके लिए प्रयोग किया जाता है। इतने पर भी साथ में छात्र संघ का रोग लगा दिया गया है, जिससे समूचे भारत की सन्तति ही बिगड़ जाय।

जिस समय यह छूत का रोग चालू किया गया, उस समय के उत्तरदायी शिक्षा शास्त्रियों और राष्ट्र नेताओं को हमारा खुला चैलेंज है कि वह इसकी उपयोगिता और लाभ सिद्ध करें। यदि न कर सकें तो उन्हें देश की सन्तति को भ्रान्त और पथ–भ्रष्ट करने के अक्षम्य अपराध को स्वीकार कर स्वयं सरकार से मांग करनी चाहिये कि हम राष्ट्रीय अपराधी हैं, हमें दण्डित किया जाये। इन शब्दों में हम उनकी नैतिकता को झकझोर रहे हैं। हम यह भी जानते हैं कि हमारे इन शब्दों को पढ़कर कुछ लोग तिलमिलायेंगे किन्तु उससे कुछ अभिप्राय सिद्ध होने वाला नहीं है। तिलमिलाने वालों का पक्ष ठीक है तो वह हमारे चैलेंज को स्वीकार करें।

एक तो इस तथाकथित शिक्षा में है ही कुछ नहीं, फिर साथ में छात्र–संघ का अभिशाप। लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए विद्यालयों मे भेजते हैं, बिगड़ने के लिए नहीं। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक और शारीरिक विकास है, उसे बेहूदा, नालायक, असभ्य और आचार-हीन बनाना नहीं और यह छात्र-संघ यही सब करते हैं, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। छात्र-संघ के द्वारा किसी शिक्षा शास्त्री, मानव–जीवन–विकास–मर्मज्ञ आदि के निर्माण में कोई सहायता प्राप्त होती हो तो कोई हमें बताये। आज तक कोई उत्तम व्यक्तित्व छात्र संघ की पद्धति और उसकी सहायता से तैयार हुआ हो तो हमें दिखाया जाय।

अपवाद को छोड़कर इन छात्र संघों में आवारा, तीन–तीन वर्ष तक एक ही श्रेणी में पड़े रहने वाले, उत्तीर्ण हों तो कम से कम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वाले, चाकू व छुरे के बल पर नकल करके पास होने वाले छात्र ही अधिकारी होते हैं। पढ़ने के स्थान पर पूरे सत्र ट्रेनें रोकना, मार्ग चलती लड़कियों को छेड़ना, प्रिंसिपल को गोली मारना, कुलपति–डीन–रजिस्ट्रार आदि की टांगें पकड़ कर खींचना तथा हाकियों से उनकी पिटाई करना, कालिज की खिड़कियां–दरवाजे आदि तोड़ना, सार्वजनिक सम्पत्ति को क्षति पहुंचाना इन तत्वों के वह कार्य हैं, जिन्हें सर्वसाधारण नागरिक भली–भांति जानते हैं। इसके अतिरिक्त भी कुछ कार्य हैं, जिनका सर्वसाधारण को पता नहीं है। वह हैं कालिज यूनिवर्सिटियों मे नये आने वाले छात्रों के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा तक पहुंच जाना, जिसे इससे अधिक हम अपनी लेखनी से व्यक्त नहीं कर सकते। यहीं तक नहीं अपितु छात्रावासों में अलमारियों में भरी हुई और छात्रों की शैया के नीचे रिक्त की हुई मद्य की बोतलें तथा रिवाल्वर व छुरे, जो घर से प्राप्त रुपये से आवश्यकतायें पूरी न होने पर ट्रेनें तक लूटने के काम आते हैं तथा छात्रावासों में छिपायी हुई लड़कियां, कहां तक और क्या–क्या गिनाया जाये? यह सब क्या है? और क्या बनाना चाहते हैं उत्तरदायी लोग इस देश को?

पाठ्यक्रम में पुस्तकें इतनी कि उन्हें लेकर चलने के लिए एक गधा चाहिये। हैं भी वह गधे द्वारा ढोकर कूड़े के गड्ढे में डाल देने योग्य ही, मनुष्य के तो छूने योग्य भी नहीं है। यही कारण है कि मनुष्य की सन्तति और राम–कृष्ण तथा ऋषि–मुनियों के पवित्र देश के बच्चे इनके अध्ययन और छात्र संघो के माध्यम से दिन प्रतिदिन मानवता से दूर और पशुत्व से भी गिरकर दानवता के निकट होते जाते हैं।

यह बोगस और बेहूदा पाठ्यक्रम भी इतना कि छात्र पूरे सत्र में सामान्य दृष्टि से भी नहीं पढ़ पाता, गम्भीरता से अध्ययन करना और समझकर पढ़ना तो अलग रहा।

हम कहना यह चाहते हैं कि छात्रसंघ की आवश्यकता क्या पड़ी थी? क्यों इस अभिशाप को इस अभागे इस देश की भावी आशाओं * के मत्थे मढ़ दिया। वह दिन भारत के लिए सबसे बड़ा दुर्दिन था, जिस दिन यह अभिशाप लाया गया और वह व्यक्ति भारत–राष्ट्र का सबसे बड़ा शत्रु था, जिसकी कुमति से भारत की कुगति करने वाला यह भूत उपजा।

आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। कोई छात्र–संघ की आवश्यकता और उपयोगिता तो बताये। कहते हैं विद्यार्थियों की समस्याओं के हल के लिये इसकी आवश्यकता है। विद्यार्थी की समस्या क्या है? क्या आये दिन छुट्टियां मांगना। छुट्टी न होने पर प्रधानाचार्य के कमरे पर पथराव करना। जिसने किसी लड़की को छेड़ा हो तथा उसके परिणामस्वरूप पिटकर आया हो, ऐसे भ्रष्ट लड़के का पक्ष लेकर नगर में तूफान खड़ा कर देना, यातायात रोक देना, बसों व ट्रेनों पर पथराव करना और आग लगाना या कुछ और भी है। वास्तविकता यह है कि विद्यार्थी की समस्या तो विद्यार्थी शब्द में ही निहित है, उसे विद्या चाहिये विषय नहीं, छुट्टियां नहीं। यह तो विषयार्थी और सुखार्थी की बात है–विद्यार्थी की नहीं।

> सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्।
> सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत सुखम्॥

अर्थात् विद्यार्थी को चाहिये कि वह विषय सुख को छोड़ दे, उसकी कामना न करे और सुखार्थी विद्या को छोड़ दे। क्योंकि विषय सुख के चाहने वालों को विद्या और विद्या के चाहने वालों को विषय सुख प्राप्त नहीं हुआ करते।

विद्यार्थी को विद्या के मार्ग से हटाकर विषय सुखों के मार्ग पर डालने का कार्य किया है इन छात्र संघों ने, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। और तो और आज तक कोई छात्र संघ किसी निर्धन विद्यार्थी की सहायता तक नहीं कर सका। कोई छात्र संघ यदि किसी निर्धन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

'आओ सत्संग में चलें'

सन्ध्या–उपस्थान मन्त्र

(वैद्य कृष्णलाल आर्य ५१९/१९२ अर्जुन नगर, लखनऊ–५)

मेरे प्यारे स्वाध्यायशील पाठक वृन्द–कुछ मास पूर्व आर्यमित्र में ही सन्ध्या के दो मन्त्रों के सम्बन्ध में "कर तल कर पृष्ठे" और सत्यं पुनातु पुनः शिरसि', इन दो शीर्षकों के अन्तर्गत कुछ निवेदन किया था। भाव यह ही था कि सन्ध्या का मूल उद्देश्य आत्मा को प्रकृति से ऊपर उठाकर परम पिता परमात्मा की गोद में बिठा देना ही है। इसके लिए भक्त को अपने एक एक दोष को अपने जीवन से निकाल देना परमावश्यक है। जब वह शुद्ध निर्मल हो जावेगा–तभी वह परमात्मा की गोद में बैठने का अधिकारी होगा। सन्ध्या के उप-स्थान मन्त्र भी हमें इसी ओर ले जा रहे हैं–आइये जरा इन पर विचार करें।

बन्धुओ! मेरी धृष्टता को क्षमा करें–सुनने को यह ही मिलता है–मन सन्ध्या में लगता नहीं–सन्ध्या करते जीवन व्यतीत हो गया–कभी कुछ मिला नहीं। इसका सीधा सा उत्तर है–भोजन का आनन्द भूख लगने पर ही मिलता है–बिना भूख के भोजन लाभ के स्थान में हानि ही करता है। भूख किसे कहते हैं–अनायास किसी की याद आ जाने का नाम ही भूख है। सन्ध्या भी एक आत्मिक भोजन है–इसे करने से पहले आत्मा में भूख लगना परमावश्यक है। बात बिल्कुल स्पष्ट है कि सन्ध्या की अनुभूति लिखने पढ़ने व्याख्यान आदि से नहीं होती यह तो केवल अनुभव की वस्तु है–

"गूंगे की रसना के मानिंद अमीचन्द,
कैसे बताये कि क्या रस उड़ाया॥"

इसका वर्णन करना कठिन ही नहीं–असम्भव है। फिर भी जो कुछ विद्वानों से सुना है या प्राप्त किया है–उसे ही आप की सेवा में रखने का यत्न करूंगा।

उपस्थान का सरल एवं सीधा अर्थ है–समीप के स्थान पर बैठना बिल्कुल पास होकर बैठना॥ उपस्थान के चारों मन्त्र बड़े ही सुन्दर भावों से भरे पड़े हैं। जीव तो प्रकृति के द्वारा प्राप्त क्षणिक सुख को ही आनन्द समझता है–इसी में मस्त होकर वह अपने आप को भी भूल जाता है। सर्व साधारण लोगों के लिए प्रकृति ही सत्–उत्कृष्ठ है–परन्तु ज्ञानी जानता और मानता है कि आत्मा प्रकृति से भी उत्तर–ऊँचा है–और उसका कल्याण इसी में है कि सब से उत्तम परमपिता की गोद को प्राप्त कर जन्म मरण के बन्धन से मुक्ति प्राप्त करे। इस उत्तम के पास जाने के लिये इस विश्व की परिक्रमा करनी पड़ेगी॥ प्रकृति का–अपना स्वयं का और प्रभु का ज्ञान प्राप्त करने के लिये जीव को आदित्य–अग्नि–पितर–योगी–संन्यासी–देव एवं ब्रह्म ज्ञानियों की शरण में जाना ही होगा। मनसा परिक्रमा में वह सब विभूतियों में घूम कर ब्रह्म ज्ञान के सत्संग को प्राप्त करता है। उसे ज्ञात मिलता है कि प्रकृति उसके बन्धन का कारण नहीं थी–वरन् उसके अपने ही संस्कार उसको बांध कर रखे हुए थे। इन संस्कारों की वासना से दूर हो जाना ही मेरे लिये कल्याणप्रद है। यह ज्ञान प्राप्त कर भक्त इच्छा–द्वेष, सुख–दुःख, हानि–लाभ से ऊपर उठ जाता है।

अब प्रभु उससे दूर नहीं–किसी से किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं सब में जीव अपने प्रभु के ही दर्शन करता है–उसके चारों ओर प्रभु की लीला ही प्रकाशित होती है। जिस प्रकार समुद्र के जहाज में यात्रा करने वाला व्यक्ति अपने चारों ओर जल ही जल देखता है–उसे जल के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता। जैसे सब रंग मिलकर श्वेत रंग हो जाता है–ठीक इसी प्रकार हृदय-मन–मस्तिष्क में उठने वाली अनेक प्रकार की भावनायें शान्त हो जाती हैं और दिव्य प्रकाश ज्योति के दर्शन होने लगते हैं। अब जीव इस दिव्य ज्योति मे अपनी ज्योति मिलाकर आनन्द में मग्न हो जाना चाहता है।

जाको नजारे एक दम, क्यों न उसे फीके लगे।
भगवान के दरबार का जिसको नजारा मिल गया॥

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है।
कि हर राह में जलवा तेरा हू बहू है॥

बस यह ही अवस्था उपस्थान है। यहाँ पहुंचकर फिर सावधान हो जाने की आवश्यकता है। ऊपर से नीचे गिरना तो बड़ा सरल है–परन्तु नीचे से ऊपर जाना अति कठिन है। ज्योति तो हठ योगी भी प्राप्त कर लेते हैं–परन्तु वह ज्योति को पाकर अहंकार के वशीभूत हो कर फिर प्रकृति की ओर लौट पड़ते हैं और दु:ख सागर में डूब जाते हैं–भ्रमित हो जाते हैं–अपना विवेक ही खो बैठते हैं। सच्चा उपासक भक्त इस ज्योति को पाकर एक ही भाषा बोलता है "दृशे विश्वाय सूर्य्यम्" ' मैंने प्रभु की लीला देख ली है–आओ इस अनुपम सूर्य्य की ओर चलें॥ यह प्रकृति की ओर घूमकर भी नहीं देखता–वह हर हाल में मस्त रहता है। इसका मन इसी निराले रङ्ग में मग्न हो जाता है। इसी दशा को "चित्रं देवानाम्" वाला मन्त्र भक्त के हृदय मन्दिर में एक विशेष प्रकार का बल भर देता है। उसे अब वह आंख–चक्षु: प्राप्त हो गई–जिसे प्राप्त कर वह पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ: लोकों में व्याप्त जड़ चेतना की आत्मा–"सूर्य्य के भी सूर्य्य" के दर्शन कर निहाल हो जाता है। आनन्द में मग्न हो कर पुकार उठता है 'स्वाहा' प्रभु मैंने तेरी चित्र विचित्र लीला देख ली। तेरी ही अमृतमय गोद को प्राप्त करने के लिये अपने आपको तेरे ही चरणों में अर्पण कर रहा हूं।

अब अन्दर और बाहर की रचनायें उसे अपनी ओर आकर्षित करती हैं। भगवान की लीला की अनुपम छटा वह अपने रोम रोम में और जगत के प्रत्येक कण में देखकर हर्षित होता है। उसे अपने ही अन्दर से अनेक प्रकार के स्वर-नाद सुनाई पड़ने लगते हैं। बाहिर की आँखें बन्द कर, अन्तर्मुखी हो जाता है।

इसके आगे "तच्चक्षुर्देवहितं" वाला मन्त्र तो भक्त की विचित्र मस्ती प्रदान कर मतवाला बना देता है। भक्त पुकार उठता है। प्रभो! मैंने वह आंख तेरी कृपा से प्राप्त कर ली है–जो आदि काल से ही तेज–ज्योति–प्रकाश का पुञ्ज है और देवों की हितकारी है प्रभो! अब मैं जीना (जीवित रहना) चाहता हूं, और सैकड़ों वर्षों तक इस तेज पुञ्ज का इस आंख से दर्शन करता रहूं–अर्थात् मैं पहले संसार की ठोकरें खाकर निराश हो गया था अब तेरा सहारा मिल गया है–अब मैं फिर आशावादी हो गया हूं–

[शेष पृष्ठ ९ पर]

सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी क्यों न हो?

[पृष्ठ ५ का शेष]

देश की अन्य भाषाओं को सीखने में सुविधा होगी जिससे दक्षिण उत्तर का भेदभाव समाप्त होकर देश एक सूत्र में बंध सकता है और देश की एकता और अखण्डता को बचाया जा सकता है। इसका एक लाभ यह भी होगा। कि आज तक गत ४० सालों मे जो संविधान में व्यवस्था होते हुए भी हिन्दी राज भाषा नहीं बन सकी वह भी राज भाषा का स्थान लेकर अंग्रेजी को अलविदा कहा जा सकेगा। आज तक यह दुख की ही बात है कि विश्व के किसी भी देश में कोई विदेशी भाषा राजभाषा नहीं है। किन्तु हमारे देश में विदेशी भाषा अंग्रेजी ने ही राजभाषा का स्थान ले रखा है जिसके कारण आज हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूल कर पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण कर रहे हैं। किन्तु हमारा शासक वर्ग और कर्मचारी अंग्रेजी को ही अपनाने में गौरव का अनुभव कर रहे हैं जब कि यह दासता की ही निशानी है।

यहां एक बात का संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक है कि अधिकतर अंग्रेजी का प्रयोग हिन्दीभाषी लोग ही करते हैं जब कि उन्हें नहीं करना चाहिए। दक्षिण के तथा अन्य भाषी लोग अधिकांश अपनी भाषाओं का ही प्रयोग करते हैं। वे अंग्रेजी केवल तभी उपयोग में लाते हैं जब कि दूसरा उनकी भाषा न जानता हो। किन्तु हिन्दी भाषी लोग हिन्दी मे बातें न कर अंग्रेजी मे ही बातें करने मे गौरव समझते हैं। यही नहीं एक गाँव का एक अनपढ़ किसान या मजदूर भी अपने बच्चो से पापा या डैडी कहलवाना ही पसन्द करता है पिता जी या बापू नहीं। इसीलिए हिन्दी को राजभाषा बनने में सबसे अधिक बाधक हिन्दी भाषी लोग ही हैं, न कि दक्षिण के या अन्य भाषाभाषी लोग क्योंकि हिन्दी का टकराव केवल अंग्रेजी से है देश की भाषाओं से नहीं। यदि हिन्दी भाषी लोग अंग्रेजी का पूरी तरह बहिष्कार कर दें तो अंग्रेजी बहुत जल्दी यहां से विदा हो जायगी और हिन्दी राजभाषा बन जायेगी। इसलिए देवनागरी लिपि ही सभी के लिये उपयुक्त हो सकती है।

देवनागरी लिपि के बारे में लिपि विशेषज्ञों के विचार

राय बहादुर पण्डित गौरीशंकर ओझा का विचार है कि वर्तमान नागरी लिपि का मूल अर्थात् प्राचीन रूप सम्राट अशोक के शिला लेखों की लिपि ब्राह्मी मे मिला है। जो विक्रम सम्वत से २०० वर्ष पूर्व के हैं और काठियावाड़ से उड़ीसा तक और नेपाल की तराई से मैसूर तक अनेक स्थानो पर यह स्वरूप मिलता है। अशोक के समय यह लिपि सम्पूर्ण भारत में वैसे ही प्रचलित थी जैसे इस समय देश मे देवनागरी। देवनागरी लिपि का विकास वैदिककाल से ही आरम्भ हो गया। इसका उल्लेख ईसा पूर्व ४५१ मे लिखे जैन ग्रन्थ नन्दिसूत्र में है। तान्त्रिक युग में भी नागरी नाम का उल्लेख मिलता है।

प्रसिद्ध अंग्रेज प्राच्य भाषाविद मैकडोनल ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर" मे देवनागरी की वैज्ञानिकता की प्रशंसा की है। इसी तरह एक अन्य अंग्रेज मोनियार विलियम ने देवनागरी लिपि को विश्व की सर्वाधिक सुडौल और यथा प्रमाण सुन्दर वर्णमाला कहा है।

महात्मा गान्धी ने भारतीय साहित्य परिषद, मद्रास के अध्यक्ष पद से बोलते हुये कहा था कि देवनागरी में जो पूर्णता है और ध्वनियों और स्वरों की समता है वह न तो 'रोमन' में है और न उर्दू में है। १९३७ में गांधी जी ने ही अपने पत्र हरीजन में लिखा था कि भारत की अधिकतम लिपियां देवनागरी से ही विकसित हुई हैं। इस कारण इसे भारत की सर्वमान्य लिपि स्वीकृत किया जाये।

सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डा० सुनीतकुमार चाटुर्ज्या ने हिन्दी देवनागरी के इस गुण की सराहना करते हुये कहा है कि बँगला के किसी शब्दों का उच्चारण जटिल है और दूसरे प्रान्त के लोगों के लिये उसे शुद्ध रूप से ग्रहण करना भी कठिन कार्य है। हिन्दी या देवनागरी में यह बखेड़ा नहीं है। हिन्दी का एक-एक शब्द अपने में पूर्ण है, लिखने और बोलने में उच्चारण का थोड़ा भी अन्तर नहीं पड़ता।

उस्मानियाँ विश्वविद्यालय

उस्मानियाँ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हारून खाँ ने कहा है कि हम हिन्दी का उर्दू से मुकाबला करने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं। किन्तु हिन्दी भाषा में जो विशेषता है वह अन्य किसी भाषा में नहीं है। यह जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती है। उर्दू में यह गुण नहीं है, लिखने वाला ही अपनी लिखावट पढ़ सकता है।

१९३७ में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के आठवें अध्यक्षीय भाषण में श्री अम्बूजम्मा ने कहा था कि नागरी लिपि सीखने में १५ दिन से अधिक समय नहीं लगता है।

जस्टिस शारदाचरण मित्रा ने कलकत्ता में सर्व प्रथम हिन्दुस्तान की सभी भाषायें एक ही लिपि में लिखी जावें, इसके लिये १९ वीं शती में बंगाल में प्रयास किया था तथा देवनागर नाम से एक पत्रिका भी निकाली। उन्होंने इसके लिये एक लिपि विस्तारक नाम की संस्था भी बनायी। देवनागर पत्रिका में सभी भाषाओं के लेख देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित होते थे। श्री शारदाचरण मित्र की प्रेरणा से ही। १९०५ में काशी में सर्व प्रथम एक "लिपि विस्तार परिषद्" का अधिवेशन हुआ जिसमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने तथा बड़ौदा राज्य के तत्कालीन दीवान, एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार व इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र दे ने भी भाग लिया।

इन सभी विद्वानों ने हिन्दुस्तान की सभी भाषाओं की एक लिपि केवल देवनागरी को ही स्वीकार करने की बात इसकी वैज्ञानिकता को देखते हुए ही कही है। १९४९ में संविधान में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा बनाना तो मान लिया किन्तु सब भाषाओं की एक ही लिपि हो यह बात नहीं हो सकी। जिसकी देश की एकता बनाये रखने के लिए बहुत ही आवश्यकता थी। सभी भाषाओं की एक लिपि देवनागरी हो यह देश की भावनात्मक एकता के लिये बहुत जरूरी है, तभी देश को टूटने से बचाया जा सकता है।

छात्र-संघ : समस्या और समाधान

(पृष्ठ ६ का शेष)

विद्यार्थी को पुस्तकें ही क्रय करके दे सका हो, किसी निर्धन छात्र का शुल्क विद्यालय में जमा कर सका हो अथवा किसी निर्धन विद्यार्थी को भयंकर शीत के दिनों में वर्दी, कोट आदि गर्म वस्त्रों की सहायता कर सका हो, उसके शीत से ठिठुरते टूटी चप्पल वाले पैरों के लिए मोजे-जूते लेकर दे सका हो तो हमें बतायें। निर्धन विद्यार्थियों की सहायता के लिए किसी छात्र-संघ ने निधि स्थापित करने के लिए कोई प्रस्ताव ही स्वीकृत किया हो तो कोई हमें दिखाये।

अतीव सन्तप्त हृदय से हम देश के उत्तरदायी लोगों से कह देना चाहते हैं कि वह किसकी दशा पर दया करें। विनाश के कगार पर तो लाकर खड़ा कर ही दिया है, किन्तु सर्वनाश के गर्त में तो न धकेलें। पंच-वर्षीय और प्रतिवर्ष नवीकरण को प्राप्त हो जाने वाली योजनाओं ने यदि देश की रोजी-रोटी की समस्या हल कर भी दी और देश की सन्तति भ्रष्ट हो गई, सम्पूर्ण नसल ही पथ-भ्रष्ट हो गई तो ऐसी रोजी-रोटी, वस्त्र और आवास ही नहीं अपितु मोहन-भोगों, अतएव सुस्वादु वस्त्राभूषणों तथा बहुमूल्य भवनों को लेकर हम क्या करेंगे? जब हम ही न रहे, हमारी सांस्कृतिक धरोहर, हमारा चरित्र, नैतिकता, स्वाभिमान आदि सब कुछ विनष्ट हो गया तो शेष तो पशुत्व का ढांचा ही रह जायगा। हम राष्ट्र नेताओं से पूछना चाहते हैं कि आप ने भारत को पशु-देश समझा है क्या? स्मरण रखिये, यदि समय रहते इधर ध्यान नहीं दिया गया तो राष्ट्र तो डूबेगा ही—बचेंगे आप लोग भी नहीं।

जो डूबेगी किश्ती तो डूबोगे सारे।
न तुम ही बचोगे न साथी तुम्हारे॥

रोग असाध्य होता जा रहा है। आवश्यकता है इसकी तुरन्त चिकित्सा की। यदि तुरन्त चिकित्सा नहीं की गई तो विलम्ब होने पर रोग वश में नहीं आयगा। विष सम्पूर्ण शरीर में फैल चुका है और अब नस-नाड़ियों में घुसने लगा है। बच्चों को उनके माता-पिता विद्यार्थियों के रूप में विद्यालयों में प्रविष्ट कराते हैं। संघार्थियों के रूप में नहीं। देश को विद्यार्थी ही चाहिए संघार्थी नहीं।

विद्यार्थी विद्या के चाहने वाले को कहते हैं, घर से रुपये चुराकर अथवा अन्य अनैतिक कार्यों द्वारा प्राप्त करके छात्रसंघ का चुनाव लड़ने वालों को नहीं। यह विद्यार्थी रहेंगे तो विद्या आयेगी, चुनावार्थी बन कर नहीं आयेगी। इसीलिये इन्हें विद्यार्थी ही रहने दीजिये, चुनावार्थी मत बनाइये।

समाधान—

समाधान इस समस्या का यह है कि शासन छात्रसंघों को सर्वथा समाप्त करने को तैयार नहीं तो कम से कम माध्यमिक स्कूलों से तो इसे समाप्त कर ही दे। स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में यह अनुबन्ध लगा दे कि जो छात्र पिछली परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये हैं, वही छात्र संघों के चुनावों में भाग ले सकेंगे और कोई भी विद्यार्थी किसी भी राजनीतिक दल का सदस्य नहीं बन सकेगा, यदि बनेगा तो आगामी वार्षिक परीक्षा में भाग नहीं ले सकेगा।

इससे एक ओर तो अवांछनीय और उद्दण्ड तत्व आगे नहीं आ सकेंगे अपितु प्रतिभावान तथा विद्याव्यसनी ही आगे आवेंगे। जब ऐसे युवक अधिकारी बनेंगे तो छात्रसंघों की गति छात्रों में प्रतिभा जगाने और विद्या की रुचि उत्पन्न करने में होगी और उनके परिणामस्वरूप राष्ट्र को प्रतिभा सम्पन्न योग्यतम नागरिक उपलब्ध होने में सहायता मिल सकेगी।

दूसरे, राजनीतिक दलों से बचे रहने के परिणामस्वरूप राजनैतिक स्वार्थियों के लिये विद्यार्थियों का तोड़-फोड़ आदि कराने में प्रयोग नहीं होगा। इससे विद्यार्थियों का बहुमूल्य समय विनष्ट होने से बच कर उनके अपने जीवन के निर्माण तथा तदुपरान्त राष्ट्रोत्थान के कार्यों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। तभी भारत के स्वर्णिम भविष्य का वास्तविक निर्माण होगा और तभी भारत विश्व में स्वाभिमान और सम्मान के साथ जी सकेगा।

✱

आओ सत्संग में चलें

(पृष्ठ ७ का शेष)

संगी व साथी की भला उसको जरूरत क्या रहे।
जीवन की राहों में जिसे जगदीश प्यारा मिल गया॥
उसको जुबां से उम्र भर रटते रहे पर न मिला।
जिसने जहां जिस वक्त भी दिल से पुकारा मिल गया॥
मुक्ति को पाना है जिसे—क्या और उसको चाहिये।
इतना ही काफी है पथिक—उसका सहारा मिल गया।
जिसको प्रभु के प्यार का जग में सहारा मिल गया।
उस नाव को मझधार मे समझो किनारा मिल गया॥

जीने का मजा तब ही है—जब यह दर्शन प्राप्त होता रहे। प्रभु मैं इस जीवन में तेरे इस अनुपम ज्ञान को सुनता रहूं—मेरी बुद्धि ऐसे ही श्रेय मार्ग की ओर ले चलो—उस मार्ग पर चलता हुआ सदा सैकड़ों वर्ष तेरे इस आनन्द रस का जहां स्वयं पान करूं—वहां मेरी यह वाणी दूसरों को भी इस अमृत के पान की प्रेरणा दे सके। "प्रब्रवाम शरदः शतम्" प्रभो! शक्ति दे—भक्ति दे—मस्ती दे कि अनन्तकाल तक अपनी जिह्वा से तेरे गुणों का गान कर, संसार में भूले भटकों को तेरा सन्देश सुनाता रहूं। प्रभु तेरी कृपा से मैं अब दीन नहीं रहा—मुझे किसी दूसरे की आधीनता स्वीकार नहीं।

चाह गई—चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जां को कुछ न चाहिए—सो ही शाहनशाह॥

अब मुझे तेरे सिवा कुछ नहीं चाहिये. अब मैं किसी का दीन बन कर नहीं रहना चाहता—प्यारे प्रभु—अपने आशीर्वाद से मेरी झोली भर दो—मैं आत्मविश्वास से पूर्ण होकर यश और बल को प्राप्त कर सकूं। प्रभो! सन्ध्या के प्रारम्भ में ही मैंने इसी यश बल की कामना की थी—जो तू ने आज पूरी कर दी। आज मुझे अधीनता के साथ साथ स्वाधीनता भी प्राप्त हो गई। मैं संसार में निर्भय हो गया—तेरी उपासना की दिव्य सम्पत्ति आज मुझे प्राप्त हो गई है। ना तू मुझ से दूर है—ना मैं तुझ से दूर हूं अपने-पराये का अब भेद नहीं रहा—

तू मुझ में समाया—इस तरह—तन प्राण का जो तौर है।
अब न कोई कह सके मैं और हूं तू और है॥
यह ही उपस्थान है।

✱

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की दयानन्द चेयर क्यों खत्म की जा रही है ?

आर्य जगत् में यह समाचार सर्वत्र दुःख और क्षोभ के साथ सुना जायगा कि विगत १५ वर्षों से कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय में वैदिक शोध के लिए स्थापित दयानन्द प्रोफेसर का पद और दयानन्द चेयर को समाप्त किया जा रहा है। इस पद पर ३१ दिसम्बर १९८७ तक कार्यरत डा० कपिलदेव शास्त्री के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि इसी विश्वविद्यालय की वेद व्यास पीठ के एक पौराणिक प्रोफेसर ने सरकार को लिखकर दे दिया है कि आगे दयानन्द प्रोफेसर के पद को बढ़ाना आवश्यक नहीं है। ज्ञातव्य है कि दयानन्द प्रोफेसर के पद पर रहकर विगत काल में डा० श्रीनिवास शास्त्री और डा० कपिलदेव शास्त्री ने उच्चस्तरीय ग्रन्थों का निर्माण किया किन्तु दयानन्द चेयर के बाद में स्थापित वेद व्यास चेयर के प्रोफेसर को स्वामी दयानन्द के नाम पर शोध कार्य का जारी रहना अच्छा नहीं लगा और उसने इस पद और विभाग को अनावश्यक मानकर उसे समाप्त करने की संस्तुति कर दी जबकि हरयाणा सरकार इस विभाग को आगामी वर्षों तक जारी रखने के लिए समुचित वित्त राशि देने के लिए तैयार है।

मैंने इस समस्या की ओर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी ओमानन्द जी तथा हरयाणा के आर्य नेता प्रो० शेरसिंह जी का ध्यान आकर्षित किया है। यदि हरयाणा के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से ही दयानन्द चेयर को हटा दिया गया तो क्या वेद पर शोध करने के लिए हमें नागालैण्ड और मिजोरम की सरकारों से कहना पड़ेगा। निश्चय ही दयानन्द चेयर को समाप्त किया जाना आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के अपमान और अवमानना से कम नहीं है। अतः इस विज्ञप्ति के द्वारा मैं देश की समस्त आर्यसमाजों से अनुरोध करूंगा कि वे उक्त विश्वविद्यालय के इस दुष्कृत्य का प्रबल प्रतिरोध करते हुए प्रस्ताव पारित करें तथा हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल, शिक्षा मन्त्री श्री खुर्शीद अहमद तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति को प्रस्ताव की प्रतिलिपि तथा विरोध रूप में तार भेजकर उनसे अनुरोध करें कि वे सनातनी प्रोफेसर के षड्यन्त्र का शिकार बनकर दयानन्द चेयर को समाप्त न करें अन्यथा आर्य समाज को अपने आचार्य के गौरव की रक्षा के लिये समुचित वैधानिक कदम उठाने में कोई संकोच नहीं होगा।

भवानीलाल भारतीय

अध्यक्ष—दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय

आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने १९८८ वर्ष आर्य युवक वर्ष घोषित किया है। प्रत्येक आर्यसमाज एवं जिला सभाओं से निवेदन है कि अन्तरंग सभा द्वारा आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता की नियुक्ति करें तथा अपने वार्षिक उत्सव पर अपनी सुविधानुसार 'आर्य युवक सम्मेलन' रखें। उसमें युवकों को ही बोलने के लिए समय देवें। अपनी आय का कम से कम १०% (दस प्रतिशत) भाग नवयुवकों के प्रतियोगिता एवं पुरस्कार पर खर्च करें। अपने-अपने आर्यसमाज में शाखा लगाने की स्वीकृति प्रदान करें [विशेष जानकारी एवम् सूचना भेजने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

धर्मपाल आचार्य, मुख्य संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल उ०प्र०
प्राचार्य गुरुकुल महाविद्यालय, ततारपुर (बाबूगढ़ छावनी)
गाजियाबाद—२४५२०१

उपेक्षित जनजाति के उत्थान के लिए आर्यसमाज का आन्दोलन

देहरादून, १९ अप्रैल। उपेक्षित और पिछड़ी 'कंजर' जन जाति के लगभग एक सौ लोग निकटस्थ ग्राम मोथरोवाला की 'बंगाली बस्ती' में बसे हैं। आम हिन्दू इनसे मेल-जोल में संकोच करते आए और इन के बच्चे विद्यालय में जावें तो अन्य बच्चे उनसे घृणा का व्यवहार करें। विदेशी पादरियों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाने का निश्चय किया उन्होंने आस-पास के अनेक निर्धन परिवारों से यह लिखवा लिया कि हम अपने बच्चे का पालन करने में असमर्थ हैं, हमारे बच्चों को जहां चाहें ले जाकर पढ़ायें, लिखाएं इस चाल से आस-पास रहने वाले अनेक गोरखा परिवारों के बच्चों को वे ले गये। इस क्षेत्र की जनता जानती है कि इस प्रकार के हथकण्डों का उद्देश्य छद्म ढंग से अवयस्कों का धर्मान्तरण कर अहिन्दू जनसंख्या बढ़ाना और अन्ततः यहां अहिन्दू राज्य स्थापित करने का ही उद्देश्य रहता है। क्षेत्र के कतिपय प्रमुख व्यक्तियों ने आर्यसमाज देहरादून का ध्यान इस ओर खींचा तो दयानन्द के सैनिक सतर्क हो गये।

मोथरोवाला गांव में यज्ञों तथा सत्संगों का आयोजन जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की ओर से किया गया और परिणामतः गांव के लोगों ने वहां आर्यसमाज की स्थापना कर दी। कंजर जनजाति के लोगों ने इसे अपनी मुक्ति का श्रीगणेश माना। गत रामनवमी के दिन वे स्त्रियों तथा बच्चों के साथ जलूस बनाकर ओम् ध्वज लिए हुए और आर्यसमाज की जय बोलते हुए आर्यसमाज देहरादून के समारोह में आए जहां उनका स्वागत तथा आतिथ्य किया गया।

रविवार दिनांक १० अप्रैल को गांव मोथरोवाला की नव-स्थापित आर्यसमाज ने अपने यहां सत्संग का आयोजन किया जिसमें क्षेत्र के विधायक श्री किशोरीलाल सकलानी तथा खण्ड विकास अधिकारी श्री नवानी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया ताकि उनके मार्गदर्शन से पिछड़ी जनजाति के लोगों के उत्थान के लिए सरकारी योजनाएं कहां तक सहायक हो सकती हैं यह ज्ञात किया जाए।

यज्ञ के पश्चात् जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली पत्रकार का प्रेरक प्रवचन हुआ। भाषण के अन्त में आपने जनजाति के लोगों को विशेष रूप से सम्बोधित कर कहा कि अब उन की समस्याओं का अन्त आ गया है। अब वे पिछड़े नहीं रह सकते। अब विधायक तथा प्रशासन को उनकी समस्याओं से परिचित करा दिया गया है।

विधायक श्री किशोरीलाल सकलानी ने आर्यसमाज के इस रचनात्मक समाज सेवा कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बताया कि अनेक सरकारी योजनाओं से पिछड़े भाइयों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। आपने अपने सब प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिलाया। खण्ड-विकास अधिकारी श्री नवानी ने भी पीड़ित लोगों को उनकी समस्याओं के समाधान में अपने सहयोग का पूरा भरोसा दिलाया।

गांव के लोगों ने सभी अभ्यागतों का आतिथ्य तथा सत्कार किया।

देवदत्त बाली प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून

आर्यसमाज हस्तिनापुर [मेरठ] का अष्टम वार्षिकोत्सव

★

१, २ तथा ३ अप्रैल १९८८ को सोल्लास सम्पन्न हुआ प्रति दिन प्रातः ७-३० बजे से १०-१० बजे तक प्रभात आश्रम भोलाझाल (मेरठ) के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋग्वेद पाठ द्वारा यज्ञ तदुपरान्त यजमानों को आशीर्वाद तथा प्रवचन होता था तथा उसके पश्चात् माताओं द्वारा भजन तथा विद्वानो द्वारा प्रवचन होता था।

उत्सव के प्रमुख उपदेष्टा थे, पण्डिता आनन्द सजीवनी सरस्वती, पं० निरंजन देव, श्री ओमदत्त जी, श्री चन्द्रदेव जी ब्रह्मचारी परिव्राजक तथा माता मेलादेवी, माता फूलारानी, श्रीमती प्रेमलता वाणिया, श्रीमती कैलाश सोनी तथा श्री प० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश।

उत्सव की संयोजिका माता चंच्चो देवी जी थीं जिन्होने यज्ञ का सुसंचालन किया।

उत्सव की विशेषता 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के सिद्धान्त का क्रियान्वयन था। इस समाज की प्रगति अवरुद्ध हुई पड़ी थी क्योंकि कुछ स्थानीय व्यक्तियों ने समाज की स्थापना तो कर दी और समाज मंदिर का निर्माण भी प्रारम्भ करा दिया परन्तु आर्थिक सहयोग के अभाव के कारण प्रचार कार्य प्राय नगण्य हो गया था। इस परिस्थिति में एक रविवार को मवाना के प्रसिद्ध दुग्गल परिवार की देवी माता चन्द्रकला जी आ पहुची और समाज की प्रगति को देखकर द्रवित हो गई और उन्होने इस समाज को सभालने का भार अपने कंधो पर ले लिया। परिणाम स्वरूप भवन निर्माण की प्रगति भी चालू हो गई और एक भव्य यज्ञवेदी भी निर्मित हो गई। उन्हीं की प्रेरणा से एक कर्मठ महिला माता सत्यबाला जी ने यहीं रहकर मन्दिर की देख भाल भी प्रारम्भ कर दी। माता चन्द्रकला जी ने अपने कर्मठ तथा सुशील स्वभाव के कारण मवाना आर्यसमाज तथा मेरठ के सभी आर्यसमाजो से सक्रिय सहयोग प्राप्त करके इस मृतप्राय समाज मे जीवन सचार कर दिया। इस वर्ष आठवां वार्षिकोत्सव बड़े मनोहर ढग से मनाया गया। तीनों दिन निश्चित कार्यक्रमानुसार सभी प्रोग्राम सम्पन्न हुए।

आज आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए तथा महर्षि के स्वप्न को साकार करने के लिए ऐसे ही कर्मठ व्यक्तियो की आवश्यकता है। शहरों मे तो खूब प्रचार है, परन्तु देश का मेरुदण्ड तो ग्रामो मे निवास करता है। वहां घोर अन्धकार है तभी तो सती काण्ड और बलि काण्ड और धर्म परिवर्तन होते रहते हैं।

समापन के अवसर पर समाज की ओर से सभी भाइयों, बहिनो, माताओं को श्री विद्यासागर दीक्षित प्रधान ने धन्यवाद दिया।

सूचना

समस्त उत्तर प्रदेश की आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मधुर गायक श्री तेजपालसिंह आर्य एवं श्रीमती आशा आर्या की स्वीकृति के लिए सभा कार्यालय को सूचित करें या इस पते पर सूचित करने की कृपा करें।

तेजपालसिंह आर्य एवं श्रीमती आशा आर्या
आर्यसमाज मन्दिर अमरोहा (मुरादाबाद) उ० प्र०

मंजुला शर्मा को पी-एच० डी०


डा० मंजुला शर्मा

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर ने मंजुला शर्मा को उनके शोध प्रबन्ध भारत (विशेष कर मध्य प्रदेश) मे आर्यसमाज की शैक्षणिक गतिविधियों का समालोचनात्मक अध्ययन पर पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की है। आप आर्यसमाज जी०सी० एफ० क्वाटर्स जबलपुर के स्तम्भ व कर्मठ कार्यकर्ता स्वर्गीय डा० श्रीराम शर्मा भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज जी० सी० एफ० क्वाटर्स, जबलपुर की पोती व डा० रवीन्द्र नाथ शर्मा, भूतपूर्व मन्त्री आर्यसमाज जी०सी० एफ० क्वाटर्स जबलपुर की पुत्री हैं। यह शोध प्रबन्ध उन्होंने डा० सुश्री सुशीला जैन, भूतपूर्व प्रोफेसर शिक्षा विभाग शासकीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर के निर्देशन मे सम्पन्न किया। आर्य जगत एव सम्पादक 'आर्यमित्र' की ओर से शतश बधाई।

आर्य कन्या की व्यथा

माता पिता की मृत्यु के उपरान्त परिवार द्वारा तिरस्कृत २१ वर्षीय कु० मीना निवासी जनपद बस्ती किसी तरह उतरौला में आ गयी। यहाँ आते ही विधर्मियो के चंगुल मे फस गयी। जिसे कुछ जागरूक नवयुवकों ने मन्त्री आर्यसमाज उतरौला जनपद गोण्डा के विशेष सहयोग से घेराबन्दी करके छुड़ा लिया और आर्यसमाज मन्दिर उतरौला मे सरक्षण दिया। वहां उसकी इच्छानुसार श्री सहतराम आयु २५ वर्ष निवासी उतरौला जनपद गोण्डा के साथ वैदिक रीति से दिनांक २-५-८८ को विवाह सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य नागरिकों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया।

—मन्त्री आर्यसमाज उतरौला

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45098 32441
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७८
ज्येष्ठ शुक्ल ६
मई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

८९१, ११५९, १२१२, २३०९, २४९०, २५२८, २७५४, २८४६, ४४१२, ४५१६, ४७९७, ६१३१, ६१३९, ६६६५, ९६५२, ९६६५, ९८६०, ११५९८, ११६०८, ११९१८, ११९२३, १२१८९, १२६५९, १२८९५, १२९००, १२९०४, १२९०५, १३११८, १३४६७, १३४६८, १३४७२, १३७८९, १३७९०, १३७९१, १३८०१, १४२६२, १४२६३, १४२६४, १४२६५, १४२६७, १४२६८, १४२६९, १४२७०, १४२७१, १४२७२, १४२७३, १४२७४, १४२७५, १४२७६, १४२७७, १४२७८, १४२७९।

विनीत—
व्यवस्थापक

निर्वाचन

आ०स० कृष्णनगर, मथुरा
संरक्षक—श्री कन्हैयालाल आर्य
प्रधान—श्री राजेन्द्रप्रसाद भटनागर
मन्त्री—श्री बलकराम शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्रीमती सत्यावती

आ० स० शमशेरगढ़, देहरादून
प्रधान—श्री रतनसिंह जी
मन्त्री—श्री प्रकाशचन्द्र जी
कोषाध्यक्ष—श्री विश्वम्भरदयालजी

स्त्री आ०स० करनपुर, देहरादून
प्रधान—श्रीमती कौशल्या गुलाटी
मन्त्री—श्रीमती प्रभा पुरी
कोषाध्यक्ष—श्रीमती शान्ता सेठ

आ० स० बहजोई (मुरादाबाद)
प्रधान—श्री ज्ञानचन्द्र वार्ष्णेय
मन्त्री—श्री नित्यमूर्ति आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री अनिल कुमार

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए सम्पादक आर्य प्रकाशक लेन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए सम्पादक प्रकाशक एम० पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।१०-१-८१

ज्येष्ठ शुक्ल १३, रविवार, सम्वत् २०४२ वि०, दिनांक २६ मई १९८५

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	८१
अङ्क	२१

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का महत्वपूर्ण निर्णय

(१) प्रदेश मे बढ़ते हुए धर्मान्तरण को रोकने हेतु 'धर्मरक्षानिधि' की स्थापना

(२) आर्यसमाज के लिए समर्पित मूर्धन्य विद्वानो को आर्थिक सहायता देकर सम्मानित करना

★ ★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की अन्तरंग सभा, की महत्वपूर्ण बैठक दिनांक २२ मई १९८५ को सभा कार्यालय, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता मे बड़े ही गम्भीर वातावरण में सम्पन्न हुई। इसमे सभा प्रधान जी एवं अन्य सदस्यों ने अपने मार्मिक उद्गार व्यक्त करते हुए सभा को बताया—"इस समय आर्य जाति को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से विदेशियो ने पट्रो डालर की थैलियाँ खोल रखी हैं। बड़े ही सुनियोजित ढंग से हमें इस धरा-तल से सदैव के लिए समाप्त कर दिये जाने का भयानक कुचक्र चल रहा है। एक ओर गरीब हिन्दू जनता को प्रलोभन देकर, तथा दूसरी ओर भोली-भाली हिन्दू बालिकाओं को बलात् भ्रष्ट करके विधर्मी बनाया जा रहा है। सीमाओं पर हमारे अपने ही भाई हमे गोलियों से भून रहे हैं। अगर इतिहास की इस महानतम संक्रमण वेला में हम अब भी न चेते तो हमारा सर्वनाश सन्निकट है।"

अत यह सभा "धर्मान्तरण रोके जाने" के इस विषय को बहुत गम्भीरता से लेती है और सभा के अन्तर्गत एक "धर्म रक्षा निधि" की स्थापना की घोषणा करते हुए देश-विदेश मे रहने वाले सभी धर्म प्रेमी भाइयों से इस पुण्य निधि मे भरपूर आर्थिक सहयोग देने की अपील करती है। यह सभा हिन्दू जाति के "भामाशाहों" से भी अपील करती है कि वो हाथों से कमाए हुए धन को हजार हाथों से इस पुण्य कार्य मे दान कर दें। अब यह समय सोचने विचारने का नहीं रहा अब तो तन मन, धन देकर आर्य जाति के अस्तित्व की रक्षा में जुट जाने का है। आर्यसमाज इस पुण्यकार्य में अपने समर्पित कार्यकर्त्ताओं और सीमित शक्ति के साथ प्राणपण से जुटा हुआ है। इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी की मार्मिक अपील पर तुरन्त लगभग ५०,०००/- रुपये दिये जाने का आश्वासन प्राप्त हुआ है।

२—वाणी तथा लेखनी द्वारा आर्य जाति मे नवजीवन संचार करने वाले आर्यसमाज के लिए समर्पित मूर्धन्य विद्वानों पर सभा को सदैव गर्व रहा है। इस अवसर पर अन्तरंग ने श्री प० शिव कुमार शास्त्री को ५०००) रुपये की मानदेय धनराशि से सम्मानित करने का निर्णय लिया है तथा इसके अतिरिक्त अन्य कई मूर्धन्य विद्वानों को भी सम्मानित करने का निश्चय किया गया।

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—ज्येष्ठ शुक्ल १३ संवत् २०४५, रविवार २९ मई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

धर्मरक्षा अभियान

अरावली की पहाड़ियों में भटकते हुए उस वीरपुङ्गव नरकेसरी ने देखा ... ... घास की रोटियाँ ... ...वह जो मेरी प्यारी बच्ची के हाथों से बिल्ला छीने लिए जा रहा है ... ... धैर्य का बांध टूट पड़ा ... लेखनी उठ गई ... ... शहन्शाह दिल्ली के? तेरी आधीनता मैं स्वीकार करता हूं... हूं... हूं ... ... पर किसी ने पीछे से हाथ पकड़ लिया ... ... पिता जी! खबरदार , हम घास की रोटी खा लेंगे पर मुगल साम्राज्य की आधीनता स्वीकार नहीं करेंगे । भामाशाह ने सुना—मेरा प्यारा क्षत्रिय वीर, पैसा न होने के कारण फौज नहीं जुटा पा रहा है ... ... तुरन्त अशर्फियों से भरी हुई थैलियाँ चरणों में लाकर रख दीं—हे मातृभूमि के प्रहरी ! यह धन किस दिन काम आवेगा, जाओ फौज तैयार करो और उस मुग़लिया सल्तनत की ईंट से ईंट बजा दो—हम तेरी आधीनता स्वीकार नहीं करेंगे । ... ...और अपने प्यारे लखते जिगर को कमर से कसे हुए जो समरांगण में वीरसिंहनी की भांति कूद पड़ी थी—मैं तन मन धन सर्वस्व बलिदान कर दूंगी पर अपनी झांसी नहीं दूंगी...नहीं दूंगी... ... कहते—कहते शान्त हो गई । ....और कोमल किसलय के समान अधखिले मुस्कराते बच्चे, जोरावरसिंह, फतेहसिंह चीख चीख कर कह रहे थे ... ... दीवारों में चुन दो ... ... कबूल है, इस्लाम कबूल नहीं करेंगे .. ... 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' और कोई बहुत दिन नहीं हुए—पंजाब की इन्हीं—किन्हीं दीवालों में हंसते—हंसते समा गये थे । उन्हीं के खून के वंशज हम, आज झोली पसार कर तुमसे केवल धन मांगते हैं—धर्म की रक्षा के लिए, अपनी प्यारी महान आर्य जाति के अस्तित्व को बचाने के लिए ।

तुम दुकानों में, गद्दियों में, कारखानों में, आरामकुर्सियों में, शीतल मन्द सुगन्ध समीरण बिखेरती हुई शिमला और मंसूरी की कोठियों में बैठे हुए नोटों की गड्डियां गिन रहे हो, तुम्हें नहीं मालूम है तुम्हारे पीछे एक भयानक भूचाल आया हुआ है, ऐसा भूचाल जो इतिहास में कभी—कभी आता है । आर्य जाति के जीवन में एक बार और आया था, पर तुम्हारे दिग्विजयी पुरुषों ने अपने प्रताप से, ओजस से, उस भूचाल को जमीन के अन्दर ही सांस घुटाकर मार डाला था । आज अरब में बैठा हुआ धन्नासेठ, सात समुन्दर पार का रहने वाला गोरी चमड़ी का पूंजीपति, अपनी आय का ७० प्रतिशत ८० प्रतिशत, सुदूर कहीं अति दूर इस देश के रहने वाले भोले-भाले गरीबों को अपने धर्म में दीक्षित करने के लिए धड़ाधड़ भेजता चला आ रहा है—बनाओ ईसाई और मुसलमान अब हम भेज रहे हैं । और हम अपने ही देश में नोटों की गड्डियां तिजोरियों में, सात तालों में, बन्द करके बहुत चैन से बैठे हैं—'यहां तो मौज से गुजरती है, आक़बत का खुदा जाने' । बन रहा होगा—कोई ईसाई, मुसलमान, हम तो ठीक हैं ।

अरे ! होश में आओ !! आर्यसमाज तुम्हें फिर जगाना चाहता है । इस भूचाल में न तुम रहोगे न तुम्हारे नोटों की गड्डियां । कहां हैं—तुम्हारी कोठियाँ, तिजोरियाँ, सोने की भारी—भारी बालियां, बड़े अरमान से बनाई थीं—लाहौर में... ... कोठियों में झांककर देखो तो सही कौन बैठा है ? सोने की तुम्हारी भारी—भारी बालियां कौन पहिने घूम रहा है ? क्या मातृभूमि के इस बच हुए हिस्से की भी वही गति कराना चाहते हो, यदि नहीं तो आओ, उ०प्र०की आर्य प्रतिनिधि सभा ने "धर्मरक्षा अभियान" का बिगुल बजा दिया है । घर—घर, गांव—गांव जाकर हमारे कार्यकर्त्ता आर्यत्व का सन्देश देने के लिए कटिबद्ध खड़े हैं केवल तुमसे चाहते हैं धन की सहायता, अपने लिए नहीं, उन गरीब बेसहारा हिन्दुओं के लिए जिनकी मजबूरी का फायदा उठाकर भूखे भेड़िये धन का प्रलोभन देकर उन्हें तुम्हारी संस्कृति से सदा—सदा के लिए अलग कर देने पर तुले हुए हैं ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरङ्ग ने २२-५-८८ को "धर्मरक्षानिधि" नाम से एक कोष की स्थापना कर महान पुण्य कार्य का बीड़ा उठाया है । 'आर्यमित्र' का साधुवाद है । धर्मान्तरण रोकने से अधिक पवित्र और महान कार्य आर्यसमाज के लिए और कोई नहीं है । हमें बड़ी प्रसन्नता है अन्तरङ्ग ने इस विषय को बड़ी गम्भीरता से लिया है । हमारी समस्त धर्म प्रेमी जनता से चाहे वह इस देश में निवास करती हो, अथवा विदेश में, एक ही अपील है कि इस कोष में अधिक से अधिक धन भेजिए इतना धन भेजिए कि पेट्रो डालर की किश्ती तुम्हारे धनकुबेर रूपी जहाज से टकराकर चकनाचूर हो जाये । हम धर्मान्तरण रोकें ही नहीं, अपितु समस्त भारत भूखण्ड (आर्यावर्त) को आर्य धर्मानुरागी बना दें ।

* * *

आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा
दिनांक २२-५-८८ की बैठक में 'धर्मरक्षानिधि' में दान देने वालों की सूची

१—श्री रोशनलाल जी आगरा	रु० २५००—००
२—श्री वेदप्रकाश जी मन्त्री जिला सभा इटावा	,, १५००—००
३—श्री अर्जुनदेव महात्मा जिला सभा लखनऊ	,, ५००१—००
४—श्री चौ० माधवसिंह जी मेरठ	,, ५००१—००
५—श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री आ०स०गोलागंज कानपुर	,, २१००—००
६—श्री विक्रमसिंह जी मुरादाबाद	,, २५००—००
७—आ० स० बुलन्दशहर	,, २०००—००
८—आचार्य विशुद्धानन्द जी आ०स० बदायूं	,, १००१—००
९—आ०स० मुजफ्फरनगर	,, ३१००—००
१०—डा० विजयप्रताप जी बस्ती, गोरखपुर, बलिया	,, ५०००—००
११—श्री यशपाल जी आर्य आ० स० देहरादून	,, २१००—००
१२—आचार्य गुरुकुल सिरसागञ्ज, मैनपुरी	,, ५५१—००
योग	३२,३५४—००

कृपया चैक, बैंक ड्राफ्ट, नकद, मनीआर्डर आदि मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ (भारत) के पते पर भेजें कूपन पर "धर्मरक्षानिधि" का उल्लेख अवश्य करें ।

अध्यात्म सुधा

वैदिक उपासना

(ईश्वर का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के साधन)

[श्री पं० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

ईश्वर की उपासना व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। अल्प अल्पज्ञ जीवात्मा आनन्द की खोज में जन्म-जन्मान्तर से निरन्तर गतिशील है। जब वह समझता है परिवार बसाने में सुख है तो परिवार बसाने में संलग्न हो जाता है। जब वह समझता है धन कमाने में सुख है तो वह आयु भर धन ही कमाने में लगा रहता है। जब वह समझता है प्रतिष्ठा में सुख है तो लोकैषणा में पड़कर प्रतिष्ठा को प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है। जब वह समझता है कि पद (कुर्सी) में सुख है तो राजनीति में कूद कर पद प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है। सांसारिक पदार्थों को आयु भर प्राप्त करने का प्रयास व्यक्ति का चलता रहता है परन्तु उसे सुख तो प्राप्त नहीं होता अपितु अशान्ति, कलह और क्लेश में बुरी तरह से फंसकर रह जाता है।

मानव जीवन का लक्ष्य सुख, शान्ति और आनन्द को प्राप्त करना है। सुख का सम्बन्ध इन्द्रियों से है। इन्द्रियों के द्वारा जब अनुकूल प्रतीति होने लगती है तो वह सुख है और जब प्रतिकूल प्रतीति होने लगती है तो वह दुःख है। शास्त्र भी सुख और दुःख का लक्षण करते हुए कहते हैं—"अनुकूल वेदनीयं सुखम्। प्रतिकूल वेदनीयं दुःखम्।" अर्थात् अनुकूल अनुभूति सुख और प्रतिकूल अनुभूति दुःख है।

शान्ति का सम्बन्ध मन से है। मन में शान्ति है तो अनुकूल अनुभूति अर्थात् सुख की उपलब्धि हो सकती है और यदि मन अशान्त है तो प्रतिकूल अनुभूति अर्थात् दुःख की उपलब्धि ही होती है। योगेश्वर कृष्ण इसी भाव को इस प्रकार से कहते हैं।

> नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य, न चायुक्तस्य भावना।
> न चाभावयतः शान्तिः। अशान्तस्य कुतः सुखम्॥
>
> २-६६

हे अर्जुन जो योगयुक्त नहीं है उसकी बुद्धि ठीक नहीं है। जो योग युक्त नहीं है उसकी परमपिता परमात्मा के प्रति भावना भी ठीक नहीं है और बिना भावना वाले पुरुष को शान्ति भी नहीं होती। और अशान्त पुरुष को भला सुख कहाँ। जो व्यक्ति अशान्त है अर्थात् जिस व्यक्ति का मन अशान्त है उसको सुख की प्राप्ति कभी भी नहीं हो सकती।

आनन्द का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा ही अपने अन्दर छिपे हुए आनन्द धन भगवान् की जब उपासना करता है तो आनन्द को प्राप्त कर लेता है।

सुख शान्ति और-आनन्द भौतिक पदार्थों में नहीं हैं वह तो परमात्मा में छिपे हुए हैं। उस परमात्मा को पहचानने की आवश्यकता है। वह परमात्मा कैसा है? अर्थात् परमात्मा का क्या स्वरूप है? यह भी स्पष्ट होना बहुत आवश्यक है। परमात्मा के स्वरूप के विषय में वेद में बहुत स्पष्ट कहा गया है।

> 'सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापविद्धम् कविर्मनीषी
> परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥'
>
> यजु० अ० ४० / मं० ८

अर्थात्—वह भगवान् कैसा है? वह सर्वव्यापक है, शुक्र है, परं-तेजोमय है स्थूल और सूक्ष्म शरीर से रहित है, छिद्र रहित या क्षत रहित है, नस नाड़ी के बन्धन से रहित है, शुद्ध है, पाप से परे है, क्रान्तदर्शी है, सर्वज्ञ है, सर्वोपरि वर्तमान, एवं स्वयं प्रकट है। वह ही प्राणियों की कर्मानुसार ठीक-ठीक व्यवस्था करता है।

वेद के इसी भाव को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में इस प्रकार प्रकट किया है—

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

ईश्वर के स्वरूप के विषय में योग दर्शन में भी कहा गया है—

> 'क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः'
>
> (प्रथमपाद श्लोक २२)

अविद्या आदि पाँच क्लेश, कर्म, फल और वासनाओं से सम्पर्क रहित संसर्ग रहित पुरुष विशेष ईश्वर कहलाता है।

गीता में भी कहा गया है—

> ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति।
> भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया (१८-६१)

ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में स्थित है तथा समस्त भूतमात्र को यन्त्र के समान उनके कर्मानुसार घुमा रहा है।

वह परमात्मा निराकार है और सब प्राणियों के हृदय में बैठा हुआ है। उस परमात्मा की उपासना कैसे की जाए यह ही ज्ञातव्य है।

हमारे ऋषियों ने वैदिक भक्ति के तीन भाग किये हैं। (१) स्तुति (२) प्रार्थना (३) उपासना। वैदिक भक्ति और अन्य भक्ति के स्वरूप में बहुत अन्तर है। अन्य भक्ति तो ईश्वर से हिसाब मांगती है। एक व्यक्ति शिवलिंग पर जल एवं दूध कुछ समय के लिए चढ़ाने पर उस शिव से प्रार्थना करता है—हे भोलेनाथ! मैंने तुम्हें इतने दिनों जल चढ़ाया। बता तुमने मुझे क्या दिया? परन्तु वैदिक भक्ति में भक्त भगवान् से कुछ नहीं मांगता। वह तो प्रभु को अपना हिसाब देता है। वैदिक भक्ति ईश्वर से हिसाब लेती नहीं अपितु ईश्वर को हिसाब देती है।

स्तुति का अर्थ होता है गुणगान। हमें प्रभु का गुणगान करना चाहिये। लोक भाषा में स्तुति का अर्थ होता है प्रशंसा। निन्दा का अर्थ है बुराई। जब कोई किसी की प्रशंसा करता है तो कहा जाता है कि वह तो उस व्यक्ति की स्तुति कर रहा है। और जब कोई किसी की बुराई करता है तो साधारण भाषा में कहा जाता है कि वह तो उसकी निन्दा कर रहा है। (क्रमशः)

धर्म प्रेमी महानुभावों से–
विनम्र निवेदन:–

आर्य बन्धुओ ! आपका प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर इस जनपद फर्रुखाबाद को केन्द्र बनाकर सत्य सनातनी वेद विद्या का प्रचार-प्रसार कर रहा है, जहाँ युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लोक कल्याणार्थ प्राचीन आदर्श आर्ष शिक्षा पद्धति को अंगीकार कर सुरम्य गंगातट पर एक संस्कृत पाठशाला की सर्व प्रथम स्थापना की थी। वर्तमान में गुरुकुल कृष्णपुर के पास पर्याप्त धन सामग्री एवं सामर्थ्य नहीं है पुनरपि यह आश्रमस्थ समस्त ब्रह्मचारियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने में संरत है। इस संस्था के पास ४ लघुकक्ष भी उपलब्ध हैं परन्तु वे अपर्याप्त हैं क्योंकि उनमें अन्य व्यवस्थायें तो दूर रहीं छात्रावास भी उचित ढंग से नहीं हो पाता है। सम्प्रति गुरु-गुरुकुल में २० ब्रह्मचारी पूर्ण वैदिक रीति से शिक्षारत हैं। गुरुकुलीय गोशाला में छः दोग्धा गायें हैं। इस संस्था द्वारा एक वैदिक प्रचार मण्डल भी सञ्चालित है। जिसके उपदेशक इस जनपद के अतिरिक्त निकट तथा सुदूर वर्ती जनपदों में जाकर वैदिक धर्म एवं विद्या का प्रचार-प्रसार कर सांसारिक उन्नति करने में सुसंलग्न हैं। अस्तु–

आज अभिमान, हठ, दुराग्रह एवं स्वार्थान्धता वशात् धर्म के सत्य स्वरूप को न समझने के कारण लोग अधर्म में प्रवृत्त हो रहे हैं चहुं ओर साम्प्रदायिकता के काले बादल आच्छादित हैं। राष्ट्र में ईसाई-मुसलमान रूपी विद्वेषाग्नि एवं तथा कथित राष्ट्र प्रहरी धन लोलुपों की स्वार्थ परता चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। विश्व कल्याणी देवभाषा संस्कृत पर भी कुठाराघात किया जा रहा है।

धर्म के यथार्थ स्वरूप से लोगों को सुपरिचित कराके साम्प्रदायिकता का समूल उन्मूलन करने, सच्चे राष्ट्र सेवक बनाने एवं संस्कृत के प्रचार-प्रसारार्थ ही इस गुरुकुल की स्थापना की गई है। अतएव यही सब बातें इसके उद्देश्यों में याथातथ्यतः निरूपित की गई हैं।

गुरुकुल के उद्देश्य–

१–महान् युग निर्माता महर्षि प्रवर देव दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में निर्दिष्ट वेदानुकूल ऋषि प्रणीत विशुद्ध आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन कराते हुए ब्रह्मचारियों को धर्मात्मा, विद्वान्, चरित्रवान्, परोपकारी, कर्मकाण्डी, समाज एवं राष्ट्र सेवक तथा महोपदेशक बनाना।

२–संस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) के लेखक तैयार करना।

३–पुरातन वैदिक तथा संस्कृत साहित्य का प्रचार-प्रसार करना।

४–वैदिक साहित्य के अनुसन्धान कार्य को प्रोत्साहित करना।

५–गुण, कर्म स्वभावानुसार प्राचीन आदर्श वर्णाश्रम व्यवस्था को पुनः प्रतिष्ठापित करना।

आवश्यकतायें–

१–यज्ञशाला २–बृहच्छात्रावास (लगभग ५० ब्रह्मचारियों के निवास हेतु) ३–विद्यालय भवन ४– पुस्तकालय भवन ५–अतिथि सदन ६–भोजनालय।

दातृ महोदय ! उपर्युक्त समस्त कार्य अर्थाभाव के कारण क्रियान्वित नहीं हो पा रहे हैं ' क्योंकि किसी भी कार्य की सिद्धि के लिये अर्थ (धनराशि) की महती आवश्यकता होती है। अतः आप से विनम्र निवेदन है कि आप राष्ट्र, धर्म की रक्षा तथा संस्कृत को व्यावहारिक [बोल चाल की] भाषा बनाने के लिये कटिबद्ध, महर्षि के नाम को शीर्षस्थ बनाकर उनके निर्मल चरित्र को लोकोज्ज्वल करने वाले विशुद्ध आर्ष शिक्षा पद्धति पर आधारित महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर को अपना पुनीत सहयोग अवश्य प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। हमें विश्वास है कि आप इस विश्वभृत यज्ञ में अपनी वित्तीय सहायता रूपी सात्विक आहुति निश्चित प्रदान कर अपना सत्कर्त्तव्य पालन अवश्य करेंगे। क्योंकि (दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यः) दान के समान अन्य कोई खजाना नहीं है। धर्म रक्षार्थ सत्पात्र में दिया हुआ दान परमात्मा के लोक कल्याण रूपी विश्व कोष [विश्व बैंक] में जमा होकर दाता के लिये भविष्य में उपकारी होता है।

निवेदक :

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर भज्जाना [फर्रुखाबाद]

आर्य समाज पर सुधार की जिम्मेदारी : जाखड़

सीकर ७ मई। लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा कि जो लोग अपने देश के प्राचीन गौरव तथा अपनी संस्कृति को भुला देते हैं उनका भविष्य कभी भी गौरवशाली नहीं हो सकता। वे आज यहाँ रामलीला मैदान में आयोजित आर्य महा सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे।

श्री जाखड़ ने कहा कि आर्य समाज के प्रणेता व संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र की परिस्थितियों को देखते हुये हमारी प्राचीन गौरवमयी वेद संस्कृति को नये सिरे से समाज के सामने आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र में नई चेतना स्वभाषा व स्वराज्य का मन्त्र फूंककर राष्ट्रीय जागृति की नई ज्योति प्रज्ज्वलित की थी,

स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में उस समय मान्यता देकर इस देश को भाषाई माध्यम से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया था।

श्री जाखड़ ने कहा कि किसी युग में इस देश में गंगा के किनारे वेदों की अमृत वाणी गूंजा करती थी, विदेशों से लोग आकर इस देश की पवित्र भूमि से प्रेरणा व ज्ञान की अमृतधारा लेकर विश्व के हर भागों में पहुंचाया करते थे, तब हमारा देश जगद्गुरु का वास्तविक अधिकारी था। उन्होंने कहा कि आज इसी देश में मानव के अधिकारों का हनन मानव द्वारा किया जाने लगा है समाज में जागृति के नाम पर पुरानी पोंगापंथी तथा विकृतियां फिर से पनपने लगी हैं। ऐसे समय में आर्य समाज पर देश के निर्माण व समाज सुधार की विशेष जिम्मेदारी आती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के कर्मों का प्रतिबिम्ब समाज व राष्ट्र पर पड़ता है। अतः हमें धर्मान्धता, अन्धविश्वास व शोषण के सिद्धान्तों को तिलांजलि देनी होगी।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद आचार्य भगवानदेव ने कहा कि आज देश के अन्दर या बाहर से ऐसी ताकतों को सक्रियता से जबर्दस्त खतरा पैदा हो गया है जो हमारी संस्कृति व राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने हमेशा राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार प्रसार करके देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। [संवाददाता]

भारत के लिए एक नई चुनाव प्रणाली

(डा० आ० प्रो० विद्यार्थी एम० ए०, एम० फिल, आर० एम० पी०, १७४ जयनगर जबलपुर सिटी)

[शासन व्यवस्था को उत्तम रीति से चलाने के लिए प्रजातान्त्रिक चुनाव पद्धति में योग्यतम एवं कुशलतम व्यक्ति ही चुने जायें–इस हेतु वर्तमान चुनाव प्रणाली में परिवर्तन संशोधन की आवश्यकता सभी विचारकों ने स्वीकार की है। लेखक ने जो बिन्दु प्रस्तुत किये हैं वे विचारणीय हैं– सम्पादक]

(१) हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली में निम्नांकित त्रुटियां हैं–

(क) [illegible] और [illegible] अधिक उम्मीदवार होने से ३० से ४० प्रतिशत मत [illegible] प्राप्त करने वाला भी विजयी हो जाता है, अर्थात् जिस व्यक्ति को ६० से ७० प्रतिशत मतदाताओं ने वोट नहीं दिया वह चुन लिया जाता है और वह उन सबका प्रतिनिधित्व भी करता है। इस प्रकार वह अल्प मत में होते हुये भी अपने विरोधी बहुमत का प्रतिनिधित्व करता है।

(ख) इस प्रणाली में [illegible] स्तर पर एक [illegible] और [illegible] मतदाताओं और [illegible] विशिष्ट व्यक्ति एवं साधारण [illegible] के मतों के मूल्य में कोई अन्तर नहीं है। [illegible] राष्ट्रपति [illegible] [illegible] कोई अधिकार नहीं है। सब धान बाइस पसेरी [illegible] जैसा हाल है।

(ग) इस व्यवस्था के [illegible] और [illegible] सुनिश्चित होता है [illegible] होता है कि [illegible] योग्य [illegible] नहीं [illegible] चुनाव [illegible] उम्मीदवार [illegible] पार्टी [illegible] है। पार्टी उम्मीदवारों के लिये 'सुहागिन वही जो पिया मन भाये' [illegible] है। इसलिये पार्टी का उम्मीदवार बनने के लिए एक असल से [illegible] [illegible] सरकार है, [illegible] के रूप में जनता है। इस अत्यधिक खर्चीले चुनाव का ही फलितार्थ है कि विजयी उम्मीदवार अपनी मदद करने वालों को लाइसेंस, परमिट, कोटा इत्यादि दिलाकर चुनाव में खर्च धन को कई गुना अधिक कमा लेने में मदद देता है। इस प्रकार [illegible] [illegible] होता है और [illegible] भ्रष्टाचार दिन दूनी रात चौगुनी [illegible] बढ़ता ही जाता है। बिना चुनाव प्रणाली व शासन प्रणाली बदले यह मिटने वाला भी नहीं है।

(घ) उन्हीं मतदाताओं द्वारा ग्राम पंचायत या नगरपालिका, राज्य विधान सभा और संसद के लिये अलग अलग मत डालने पड़ते हैं जिसमें [illegible] समय [illegible] है। उधर पुलिस नागरिक अधिकारियों तथा उम्मीदवारों द्वारा प्रबन्ध इत्यादि भी अनेक बार करने पड़ते हैं।

(ङ) इस प्रणाली में चुने हुये उम्मीदवार को मतदाता द्वारा वापिस बुलाने का कोई प्रावधान नहीं है चाहे वह अपने चुनाव क्षेत्र के अधिकांश मतदाताओं के विरुद्ध ही [illegible] क्यों न करे, और उनका विश्वास खो दे।

(च) उम्मीदवार के लिये शैक्षिक योग्यता इत्यादि सम्बन्धी कोई भी बन्धन नहीं है।

(२) उपर्युक्त दोषों को दूर करने के लिए सुझाई गई नई प्रणाली में निम्नांकित बातें होंगी–

(अ) कोई भी [illegible] (कान्स्टीट्यूएन्सी) [illegible] १०० से ६०० [illegible] का ही होगा। कोई भी उम्मीदवार इतने लोगों से [illegible] व्यक्तिगत सम्पर्क कर सकता है और [illegible] छपा हुआ घोषणा पत्र [illegible] है। इस तरह चुनाव का खर्च बहुत ही कम हो जायगा और एक ही मतदान केन्द्र पर कई मतदान क्षेत्रों का भी एक साथ चुनाव हो सकता है। प्रत्येक मतदान क्षेत्र के लिये एक ही बूथ होगा और एक ही मतदान पेटी भी पर्याप्त होगी।

(ब) प्रत्येक मतदान क्षेत्र के लिए दो से अधिक उम्मीदवार [illegible] का ही चुनाव [illegible] होगा। [illegible] दोनों ही [illegible] हुये [illegible] जायेंगे। मत एक ही उम्मीदवार के लिए [illegible] जायेंगे परन्तु सर्वाधिक मत पाने वाले और द्वितीय क्रम [illegible] पाने के दोनों उम्मीदवार विजयी मान जायेंगे। इस तरह विरोधी दल या [illegible] को भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व [illegible] हो जायेगा। [illegible] दोनों उम्मीदवारों के मतों का योग प्रायः ही ५० प्रतिशत से अधिक होगा। और [illegible] [illegible] अल्पमत के प्रतिनिधित्व का प्रश्न नहीं रह जायेगा।

(स) इस प्रणाली में प्रत्येक मतदाता को मतदान करना अनिवार्य होगा, और कुल मतदान ७० प्रतिशत से कम होने पर अथवा सर्वोच्च दो उम्मीदवारों को प्राप्त मतों का योग कुल मतदाताओं के ५० प्रतिशत से कम होने पर वह चुनाव निरस्त कर दिया जायेगा और [illegible] चुनाव [illegible] जिसका [illegible] उस [illegible] के मतदाताओं को ही देना होगा [चुनाव कर के रूप में]

(द) यह चुनाव ५ स्तरों पर होगा जिसका विवरण आगे दिया जा रहा है। प्रथम स्तर पर ही प्रत्यक्ष चुनाव होगा। अन्य स्तरों पर अप्रत्यक्ष चुनाव होगा परन्तु किसी भी स्तर पर बाहरी व्यक्ति भी [illegible] सकेगा जिसका नाम उस क्षेत्र का मतदाता सूची में न हो।

(य) इनमें प्रथम दो स्तरों के लिये आयु कम से कम २५ वर्ष और [illegible] [illegible] पास होने। तृतीय अर्थात् जिला स्तर की समिति के लिये आयु [illegible] वर्ष और शिक्षा हाई स्कूल पास होने। चतुर्थ अर्थात् प्रादेशिक विधायिका तथा पञ्चम संसद के लिये आयु [illegible] वर्ष व शिक्षा इन्टरमीडियेट (१२ वीं कक्षा) पास होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी दयानन्द और पाश्चात्य सभ्यता

[ले०—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी]

सत्यादि सद्गुणों से सम्बन्ध रखने वाली नैतिकता और जीवन के उदात्त गुण शाश्वत और सार्वभौम हैं—ये किसी देश या राज्य की सम्पत्ति नहीं हैं। पिछले तीन सौ वर्षों में यूरोपीय देशों में, और कोलम्बस के बाद अमरीका मे आधुनिक विज्ञान, शिल्प और समाजवाद के आधार पर एक नये दर्शन का उदय हुआ है, जिसे हम साधारण भाषा में पाश्चात्य सभ्यता या आधुनिक सभ्यता कहते हैं। यह सभ्यता अंग्रेजी शासन के साथ हमारे आर्यावर्त्त मे भी आई, और आज हम सब मिलकर इस सभ्यता का पोषण कर रहे हैं। कालिदास के शब्दों में, यह स्मरण रखना चाहिये कि कोई भी बात केवल पुरानी होने से ही मान्य हो, ऐसा नहीं है, और नवीन है, इस कारण त्याज्य हो ऐसा भी नहीं। (पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।) दूसरे देशों की अच्छी बातो को सदा ग्रहण करना चाहिये किन्तु किसी अच्छे आर्यावर्त्तीय तथ्य का तिरस्कार भी नहीं करना चाहिये।

आर्य समाज की स्थापना १८७५ ई० में हुई। इससे पूर्व बंगाल में राजा राम मोहन राय (१७७४–१८३३) द्वारा ब्राह्मसमाज की स्थापना हुई थी। १८२८ में यदि ब्राह्मसमाज के नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर से पृथक् होकर बाबू केशवचन्द्र सेन ने अपने प्रयास से 'नवीन भारतवर्षीय ब्राह्म समाज' की स्थापना [१८६६ में की। महाराष्ट्र में जस्टिस महादेव रानाडे, डा० आत्माराम पाण्डुरंग और सर रामकृष्ण भाण्डारकर आदि मनीषियों ने "प्रार्थना समाज" को [१८६७] में जन्म दिया। दोनो संस्थाओं ने रूढ़ियों को तोड़ने के लिए अच्छा काम किया, और नव जागरण के अच्छे दूत बने। इनकी अच्छी बातों को स्वीकार करते हुये स्वा०जी ने इनकी विनम्र आलोचना इस प्रकार की है—

[१] "इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आचरण बहुत से ले लिये हैं। खानपान, विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं।"

स्वामी दयानन्द ने जो सुधार प्रस्तुत किये उनका आधार स्वदेशी "आर्षकाल" की परम्परा है, और 'ब्राह्म समाज' आदि ने आधार यूरोपीय ईसाइयों से ग्रहण किये। इसलिए दृष्टिकोण में समुचित अन्तर पड़ गया।

[२] अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान पर पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नहीं लेते, प्रत्युत एसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नहीं हुआ। आर्यावर्त्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आ रहे हैं। इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।" (स० प्र०, एकादश समु०)

स्वामी जी के दृष्टिकोण से इस भेद के कारण भारत में जहां भी कोई आर्य समाजी है वह स्वभावतः देशभक्त और आर्य संस्कृति का उपासक है, और भारतीय होने के कारण वह, "हिन्दुओं" के हितों का भी पोषक है।

[३] "वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते। ब्राह्मसमाज के उद्देश्य के पुस्तक में साधुओं की संख्या में ईसा, मूसा मुहम्मद, नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।" (स० प्र०, एका० समु०)

खेद प्रकट करते हुए स्वामी दयानन्द फिर लिखते हैं—

"भला जब आर्यावर्त्त" में उत्पन्न हुए हैं, और इसी देश का अन्न-जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं, (तब) अपने माता-पिता-पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्म समाजी और प्रार्थना समाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त हुए मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्यों हो सकता है" ?

[एका० समु० पृ० ३५८]

स्वामी जी ने इस प्रकरण में १६ बातें लिखी हैं, जिनमें कुछ सैद्धान्तिक भी हैं। ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज वाले यज्ञोपवीत, शिखा-बन्धन, अग्निहोत्र आदि परम्परागत रस्मरिवाजों को भी नहीं मानते। सारांश में फिर महर्षि लिखते हैं—

"इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्य समाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आप को अति उचित है कि देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा "आर्य समाज" आर्यावर्त्तीय देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवे, तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।"

[एकादश समु० पृ० ३६३]

"महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण भारत के उज्ज्वल भविष्य को देश के प्राचीन अतीत इतिहास के साथ संयोजित करने का था। नैतिकता, आचरण, और ऐतिहासिक गौरव की दृष्टि से आर्य समाज की आस्था आर्यावर्त्तीय पुरातन-तम परम्परा में है, और ज्ञान-विज्ञान की उत्तरोत्तर प्रगतिशीलता में आर्य समाज विश्व-मानव के साथ सहयोग देने के लिये सदा उद्यत है।

यूरोपियन की विशेषतायें और उनके प्रशंसनीय गुण

जो लोग समझते हैं यूरोपियन लोग मुण्डे जूते, कोट-पतलून पहनते होटल में सबके हाथ का खाना खाते हैं, इसीलिये अपनी बढ़ती करते जाते हैं, उनके प्रति स्वामी दयानन्द लिखते हैं—

"यह तुम्हारी भूल है। क्योंकि मुसलमान, अन्त्यज लोग सबके हाथ का खाते हैं, पुनः उनकी उन्नति क्यों नहीं होती।"

[शेष पृष्ठ ११ पर]

"संस्कृत-भाषा और नूतन शिक्षा-पद्धति"

[आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी), पी-एच० डी०, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, भोगांव मैनपुरी]

संस्कृत भाषा विश्व को प्राचीनतम भाषा है। इस भाषा को विश्व की सम्पूर्ण भाषाओं का उद्गम-स्थान स्वीकार किया गया है। इस दृष्टि से संस्कृत भाषा को यदि "विश्व भाषा" के नाम से व्यवहृत कर दिया जाय तो यह कोई अतिशयोक्ति न होगी। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में अध्ययन किये जाने पर हम सभी पाठक इस परिणाम पर ही पहुंचते हैं कि यह विश्व की प्राचीनतम भाषा है तथा विश्व की सम्पूर्ण भाषाओं की जननी भी है।

इस भाषा में ही हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ तथा हमारी संस्कृति सुरक्षित है। धर्म एवं भारतीय-संस्कृति के मूलभूत तथा आधार भूत ग्रन्थ चारों वेद, वेदाङ्ग तथा सम्पूर्ण वैदिक एवं लौकिक संस्कृत-साहित्य संस्कृत भाषा में ही लिखित हैं। हमारे जीवन से सम्बन्धित सोलह संस्कारों की सम्पूर्ण विधि तथा विधान भी संस्कृत भाषा में ही है।

यह तो प्रायः सभी पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने स्वीकार किया है कि समस्त विश्व में प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद ही है।

कुछ अन्य विद्वानों का कथन है कि संस्कृत भाषा मृत-भाषा है। प्रथम बात तो यह है कि मृतभाषा तो उसी भाषा को कहा जा सकता है जिसका साहित्य लिखा न जा रहा हो तथा जिसका प्रारम्भ से ही लिखा गया साहित्य लुप्तप्राय हो चुका हो, किन्तु इन दोनों बातों में से एक बात को भी संस्कृत-भाषा के साहित्य के सम्बन्ध में नहीं कहा जा सकता है क्योंकि प्रारम्भ से ही लिखा गया साहित्य आज भी इसी रूप में विद्यमान है, साथ ही निरन्तर नवीन-संस्कृत-साहित्य का सृजन भी बराबर होता चला आ रहा है। ऐसी दशा में संस्कृत भाषा को मृत भाषा के नाम से कहा जाना पूर्णतया अनुचित तथा असंगत ही प्रतीत होता है।

दूसरी बात यह भी है कि संस्कृत भाषा देवों की भाषा है। इसी दृष्टि से संस्कृत-भाषा को देववाणी, देवगिरा, एवं सुरभारती आदि नामों से कहा जाया करता है। 'देव' कि जिनकी वाणी 'संस्कृत' है, "अमर" नाम से भी कहा जाया करता है। 'अमर' नाम भी देवों का है। अमर अथवा देव तो अमर है तथा नित्य भी है। अतएव देवों अथवा अमरों की वाणी का भी अमर अथवा नित्य होना स्वाभाविक ही है। और फिर जब देवों की वाणी अर्थात् संस्कृत अमर अथवा अविनाशी है, तो कभी नष्ट न होने वाली है, तो यह कहना उचित ही होगा कि संस्कृत-भाषा कभी भी मृत नहीं कही जा सकती है और न कभी मृत कही जा सकी है तथा न कभी कही ही जा सकेगी। ऐसी स्थिति में संस्कृत-भाषा को 'मृत' कहना पूर्णतया हास्यास्पद ही है। उसके विषय में यह कहा जाना भी उचित ही होगा कि:-

> "न जानाति यो यस्य गुणप्रकर्षं
> स तस्य निन्दां सततं करोति।"

संस्कृत-भाषा भारतवर्ष की प्रारम्भ से चली आरही निजी भाषा है। यह भाषा विश्व के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में भी ऐच्छिक-विषय के रूप में प्रचलित है। विश्व के प्रायः सभी बुद्धिजीवी इस भाषा की उपादेयता को भलीभांति समझते हैं।

वर्तमान काल में तो यह भाषा भारत को सर्वकालिक भाषा होते हुये होने पर भी आधुनिक युग की भी एक भाषा बन चुकी है। क्यों कि सभी विद्यालयों एवं इन्टरकालिजों में हिन्दी भाषा के साथ इसका अध्ययन सभी छात्रों को आवश्यक रूप से होता चला आ रहा था। साथ ही भारत के सभी विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषयों के रूप में जिसका अध्ययन बराबर होता चला आ रहा है। उसका प्रारम्भ से इन्टरकॉलेज तक के पाठ्यक्रम से पूर्णतया निष्कासित किया जाना हम सभी भारतीयों के लिए एक प्रकार से लज्जा एवं अपमानजनक ही है क्योंकि हिन्दी विषय के साथ जो संस्कृत विषय का थोड़ा-सा अध्ययन कराया जाता रहा है उससे छात्रों का अपना धर्म एवं संस्कृति विषयक स्वल्प ज्ञान तो अवश्य ही हो जाया करता था तथा संस्कृत विषयक उस स्वल्प ज्ञान से छात्रों का एक मूलभूत संस्कार भी बन जाया करता था। उसी के आधार पर वे महा विद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों में भी अपने विषयों का चयन किया करते थे। अब जब कि यह मूलभूत आधार ही नष्ट किया जा रहा है तो विश्व विद्यालयों अथवा सम्बन्धित महाविद्यालयों में भी छात्रों का 'संस्कृत-विषयक" चयन भी होना अति कठिन हो जायगा।

हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखित हैं। संस्कृत भाषा के अध्ययन को इन्टर कक्षाओं तक निकाल दिये जाने से संस्कृत भाषा सम्बन्धी किसी भी विचार के मस्तिष्क में विद्यमान न होने से कोई भी छात्र आगे चलकर संस्कृत-विषय को अध्ययन के रूप में किस आधार पर ले सकेगा, यह विचारणीय बात है? इस प्रकार शीघ्र ही एक दिन ऐसा आ जायगा कि जब भारतीय छात्र एवं छात्राओं को संस्कृत-अध्ययन करने की अभिरुचि ही उत्पन्न न होगी। परिणामस्वरूप न हम अपने धर्म के स्वरूप को ही समझ सकेंगे और न संस्कृति को ही समझ सकने में हम समर्थ हो सकेंगे। अतएव आरम्भ से लेकर इन्टर कक्षाओं तक के हिन्दी विषयक संस्कृत के अध्ययन को कोर्स से निकाल देने का परिणाम हम भारतीयों के लिये पूर्णतया अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने धार्मिक वातावरण से पूर्णतया अपरिचित हो जाना है और अपने जीवन के लक्ष्यभूत विषय को भी न समझ पाना है। अतएव यह कहा जाना कि नूतन शिक्षा-पद्धति हम भारतीयों के लिये एक प्रकार से निरर्थक होगी और इस भांति हमारे धर्म एवं संस्कृति पर एक प्रकार का कुठाराघात ही होगा अथवा यह कहा जाना कि यह नूतन शिक्षा पद्धति धर्म एवं संस्कृति को विनाश की ओर ले जाने का निम्न कोटि का एक षडयन्त्र ही है-पूर्ण सत्य है।

अब जब कि भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों में यह [संस्कृत-भाषा] लिखने पढ़ने का माध्यम बन चुकी है, इन विश्वविद्यालयों में भी शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा ही बन चुकी है, आयुर्वेदिक संस्थानों अथवा विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में भी आयुर्वेद के अध्यापन का माध्यम भी संस्कृत-भाषा ही बन चुकी है, भारत में अनेक संस्कृत-पत्र-पत्रिकाओं का निस्सरण भी बराबर किया जा रहा है। इसकी संख्या भी ७५ या ८० के लगभग होगी। इन पत्र पत्रिकाओं के ग्राहक अथवा अध्ययन करने वाले हजारों की संख्या में रहे होंगे [अपनी

] शेष पृष्ठ ११ पर [

आर्यों की सेवा में शुभ सूचना

एक स्वर्ण अवसर

महर्षि दयानन्द ने राजा श्यामकृष्णदास जी के अनुरोध पर मुरादाबाद में 'स्थल उमक' कोठी में तीन माह पर्यन्त रहकर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी। अब यह लोग अपने रहने के लिये देहली म कोठी बनवा रहे है, और इस कोठी को बेचना चाहते हैं। ७-८ लाख रुपया म मिल सकता है।

आज कल तो ९० लाख रुपया मे भी तैयार होना मुश्किल है। वे भाग इसे आर्यसमाज अथवा आर्य व्यक्ति को ही देना चाहते हैं। धनीमानी आर्यों अथवा आर्य संस्थाओं के लिए यह एक स्वर्ण अवसर है यदि किसी विधर्मी ने उसे खरीद लिया तो फिर अफसोस और पछतावा ही रहेगा।

अतः हमारा विनम्र अनुरोध एवं निवेदन है कि कोई धनीमानी आर्य व्यक्ति अथवा आर्य संस्था इसे खरीद ले तो हम उसके एक प्रकोष्ठ मे स्वामी जी का पावन स्मारक बना दें। धन के सदुपयोग और उसके द्वारा पुण्यार्जन का यह स्वर्ण अवसर है। अतः आर्य भाई स्वयं अथवा अपने किसी सम्बन्धी के नाम से भी खरीद सकते हैं, हम इस पवित्र कार्य मे पूर्ण सहयोग देंगे।

इन्द्रराज
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पंजाब मे उत्तरप्रदेश के विधायक द्वारा देशद्रोहपूर्ण विषैला भाषण

दिनांक २८ फरवरी १९७८ को मालिरकोटला (पंजाब) में बाबरी एक्शन कमेटी को सिखों और दलितों का सहयोग दिलाने के लिए एक रैली का आयोजन किया गया जिसमे बहुत ही देशद्रोहपूर्ण भाषण हुये और हिन्दू समाज और भारत सरकार के विरुद्ध जहर उगला गया है। वक्ताओं मे श्री आजम खान एम० एल० ए० उत्तर प्रदेश ने तो अपने भाषण मे हिन्दुओं को कायर और भारत माता को 'डायन' तक कहा। ऐसे ही हिन्दू देवताओं और गंगा जी की बहुत निन्दा की। आर्यसमाज सहारनपुर ने अपनी विशाल सभा मे एक प्रस्ताव पारित करते हुए माग की है कि श्री चन्द्रशेखर अध्यक्ष और श्री अजीतसिंह कार्यकारी अध्यक्ष आजम खान एम० एल० ए० उ० प्र० जैसे देशद्रोही और गद्दार को जनता पार्टी से निकाल दें, वरना भारत की हिन्दू जनता यह समझेगी कि जनता पार्टी के उच्चाधिकारी जानबूझ कर हिन्दुओं को अपमानित कराने हैं और सांपों को पाल रहे हैं ताकि मौका आने पर ये देशद्रोही, भारत से खुलकर गद्दारी कर सकें और इस देश मे पाकिस्तानी झण्डा फहरा सकें। साथ ही यह सभा प्रदेश और केन्द्र सरकार से अनुरोध करती है कि वह ऐसे देश द्रोहियों और कौम के गद्दारों पर कड़ी नजर रखे क्योंकि यह भेड़ के वेश मे भेड़िये मौका मिलते ही देश को दुश्मन के हाथों सौंपने मे जरा भी नहीं हिचकेंगे।

नामकरण संस्कार

श्री श्यामसुन्दर गुप्ता, कोषाध्यक्ष, आ०स० बागरमऊ (उन्नाव) के सुपुत्र का नामकरण संस्कार १८ अप्रैल को समारोह सम्पन्न हुआ।

अनुशासनात्मक कार्यवाही

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग दिनांक २२ मई ७८ के निश्चयानुसार प्रदेश की आर्यसमाजों की छान-बीन के परिणाम स्वरूप जिला सभा की आख्या पर नगला-बक्खू (गाजियाबाद) की आर्य समाज को फर्जी घोषित करते हुए निरस्त कर दिया है।

अन्तरङ्ग सभा ने उन सदस्यों के विरुद्ध भी अनुशासनात्मक कार्यवाही आरम्भ कर दी है जिन्होंने आर्यसमाज के संगठन को आघात पहुंचाने और प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ अधिकारियों के चरित्र हनन करने और समाज की छवि धूमिल करने का प्रयास किया है। इस सम्बन्ध मे श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य देहरादून की सभासदी को स्थगित कर दिया गया है।

भूसम्पत्ति विभाग की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के भूसम्पत्ति विभाग की आगामी बैठक आर्यसमाज मन्दिर सीतामऊ रामपुर महानगर मे २६-५-७८ को मध्याह्न १२ बजे से होगी। विषय सूची सदस्यों को डाक द्वारा प्रेषित कर दी गई है। माननीय सदस्य कृपया समय पर उपस्थित होने का कष्ट करें।

—देवप्रकाश आर्य मुख्याधिष्ठाता

प्रदेश में आर्य वीर दल के शिविर

प्रदेश की युवा पीढ़ी को चरित्रनिष्ठ एवं सन्मार्ग दिखाने के उद्देश्य से मई तथा जून मे अनेक शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। आवास एवं भोजनादि की व्यवस्था निःशुल्क होगी। मेरा प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों से अनुरोध है कि अपनी समाज की ओर से अधिक से अधिक संख्या मे आर्य वीरों को भेजकर उक्त शिविरों मे प्रशिक्षण दिलाये—

(१) व्यवस्थापक	(२) जनपद	(३) तिथि	(४) स्थान
श्री जयनारायण आर्य	अलीगढ़	२५ मई से ५ जून	हाथरस
श्री जगेश्वर प्रसाद आर्य	सहारनपुर	२१ मई से ३१ मई	डी०ए०वी० इण्टर कालेज अम्बेटा
श्री फूलसिंह जी आर्य	मेरठ	२५ मई से ५ जून	डी०ए०वी० इण्टर कालेज दौराला
श्री धर्मेन्द्र शास्त्री	बुलन्दशहर	३ जून से १२ जून	डी०ए०वी० इण्टर कालेज बुलन्दशहर
श्री पूर्णप्रकाश मिश्र	बिजनौर	६ जून से १० जून	आर्यसमाज झालू बिजनौर
श्री भास्कर आर्य	मुरादाबाद	१२ से २० जून	आर्यसमाज अमरोहा
श्री सियाराम आर्य	रामपुर	२२ जून से ३० जून	आ०म० रामपुर

सम्पर्क करें आचार्य धर्मपाल मुख्य संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश, गुरुकुल ततारपुर (गाजियाबाद)।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

—आर्यसमाज बागरमऊ (उन्नाव) द्वारा ८ जून से १३ जून ७८ तक जनपद के विभिन्न स्थानों पर प्रचार कार्य होगा जिसमें श्री प० युगलकिशोर, श्री पं० सीताराम तथा श्री महावीर स्वामी भाग ले रहे हैं।

भारत के लिए एक नई चुनाव प्रणाली

(पृष्ठ ५ का शेष)

(२) सभी मतदाताओं की आयु २१ वर्ष से कम नहीं होना चाहिए। मतदाताओं की भावुकता को नहीं विवेक को जाग्रत करना चाहिये। इसलिये आयु सीमा घटा कर मतदाता सूची बढ़ाना श्रेयस्कर नहीं है।

३. चुनाव प्रक्रिया के ५ स्तर

(१) प्राथमिक स्तर (अर्थात् ग्राम स्तर या नगर का मुहल्ला स्तर) इसमें लगभग १०० घरों को एक इकाई माना जायेगा जिसमे लगभग ६०० तक मतदाता होंगे। ये लोग उपर्युक्त प्रक्रिया के एक स्थान के लिये दो से अधिक उम्मीदवार होने पर ही चुनाव करके २ व्यक्ति चुनेंगे। ऐसी लगभग १० या २० इकाइयों से चुनकर आये लगभग ४० या कम व्यक्ति अपनी ग्राम पंचायत या मुहल्ला समिति बनायेंगे और राशन इत्यादि के वितरण के लिए दुकानदार नियत करने तथा उसकी देखभाल की पूरी जिम्मेदारी इस समिति की ही होगी। ये चुनाव ही प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली द्वारा होंगे।

[२] द्वितीय स्तर (अर्थात् तालुका या वार्ड स्तर का चुनाव)

प्राथमिक समिति अपने में से दो-दो व्यक्तियों का चुनाव करके तालुका समिति में भेजेंगी और फिर इस तरह चुनकर आये व्यक्ति अपनी संख्या का १/३ भाग उसी क्षेत्र के मतदाताओं में से चाहे वे प्राथमिक समिति के लिये चुने गये हों या न चुने गये हों, चुनाव कर लेंगे। इस तरह उसमें ७५ प्रतिशत सदस्य निचले स्तर की समितियों द्वारा चुने हुये होंगे और २५ प्रतिशत सदस्य उसी समिति द्वारा चुने हुये होंगे।

[३] तृतीय या जिला स्तर की समिति–

जिले में जितनी भी द्वितीय स्तर की समितियाँ होंगी वे सब अपने में से उपर्युक्त प्रणाली द्वारा दो-दो प्रतिनिधि चुनकर जिला समिति के लिये भेजेंगी और फिर ये जिला स्तर पर चुनकर आये व्यक्ति अपनी संख्या का १/३ उसी जिले के मतदाताओं में से चुनेंगे चाहे वे किसी निचले स्तर की समिति के सदस्य हों या न हों।

[४] चतुर्थ या प्रदेश स्तर की विधायिका समिति–

प्रत्येक जिले से चार-चार प्रतिनिधि उपर्युक्त प्रणाली से चुनकर प्रदेश की विधान सभा के लिये भेजे जायेंगे। ये जिला स्तर के चुने हुये विधायक अपनी संख्या का १/३ भाग प्रदेश के किसी भी मतदाता का चाहे वह किसी भी निचले स्तर का सदस्य हो या न हो चुन लेंगे। यह सम्पूर्ण सदस्य विधान सभा होगी। चुनाव के लिये अत्यधिक जनसंख्या वाले बड़े जिलों के दो या तीन भाग किये जा सकते हैं। और दो छोटे जिलों को एक गिना जा सकता है।

[५] पंचम या देश स्तर पर संसद का चुनाव–

प्रत्येक विधान सभा अपने क्षेत्र के प्रत्येक जिले के लिये एक-एक प्रतिनिधि के हिसाब से उपर्युक्त प्रणाली से चुनाव करेगी और ये चुने गये सांसद अपनी संख्या का १/३ भाग भिन्न-भिन्न प्रदेशों से चुनकर अपनी संख्या पूर्ण कर लेंगे। यह १/३ भाग सांसद देश की प्रत्येक विधान सभा या केन्द्र द्वारा शासित प्रदेशों से होंगे।

४. चुने हुए प्रतिनिधियों को वापस बुलाना

किसी भी स्तर पर कोई भी चुनाव क्षेत्र यदि अपने चुने गये प्रतिनिधि को वापस बुलाना चाहता है तो वह अपने बहुमत से प्रस्ताव पास करके उस चुने हुये प्रतिनिधि को चेतावनी देगा और उसे त्यागपत्र देने या एक निचले स्तर पर वापस आने को कहेगा। उसके ऐसा करने पर वह चुनाव क्षेत्र एक दूसरा प्रतिनिधि उसके स्थान पर चुनकर भेज देगा। चूंकि प्रत्येक मतदान क्षेत्र में दो-दो प्रतिनिधि चुने जाते हैं अतएव त्याग-पत्र देने और वापस आने पर भी उस चुनाव क्षेत्र का एक प्रतिनिधि बना रहेगा। जो सदस्य निचले स्तर से चुनकर नहीं आता बल्कि उसी समिति या सदन के ३/४ सदस्यों द्वारा किये गये चुनाव से सीधे लिये जाते हैं, उन्हें पूरे सदन के बहुमत द्वारा अविश्वास प्रस्ताव पास करके हटाया जा सकेगा, और उस हटाये गये व्यक्ति के स्थान पर नये सदस्य का चुनाव होगा परन्तु इस चुनाव में उस प्रतिनिधि के लिये उस समिति या सदन के पूरे सदस्य भाग ले सकेंगे।

५. निष्कर्ष–

इस प्रणाली से निम्नांकित लाभ होंगे–

१. चुनाव प्रक्रिया सरल व कम खर्चीली होगी।

२. द्वितीय से पंचम स्तर तक प्राथमिक मतों का मूल्य बढ़ता जायेगा।

३. इसमें सदस्यों को पृथक करने या वापस बुलाने का भी विधान है अर्थात् नीचे से चुनकर आया व्यक्ति एक स्तर नीचे की समिति या सदन का सदस्य हो जाता है। और उसी सदन द्वारा चुना सदस्य अविश्वास प्रस्ताव पास होने पर सदस्यता खो देता है।

४. इस प्रणाली में प्राथमिक स्तर को छोड़कर प्रत्येक स्तर पर ३/४ सदस्य नीचे के सदनों से चुनकर आवेंगे और १/४ सदस्य इस चुने हुये सदस्यों द्वारा ही मतदान सूची से चुने जायेंगे अर्थात् चुने हुए प्रतिनिधियों के बहुमत द्वारा बाहर का कोई भी व्यक्ति सीधे ही चुना जा सकता है और इस तरह सभी स्तरों पर विशिष्ट व्यक्तियों का ही प्रतिनिधित्व हो सकेगा। और एक ही स्तर पर दो विधायिका सदनों की आवश्यकता न होगी।

[६] जिन लोगों ने अपना मस्तिष्क योरोप और अमरीका के देशों की प्रणालियों को गिरवी रख दिये हैं, उन्हें इस प्रणाली में त्रुटियां ही त्रुटियां दृष्टिगोचर होंगी, विशेषकर प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली को अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली में बदलने के लिए, और अपराधों का क्षेत्र सीमित हो जाने के लिए। परन्तु जो स्वतन्त्र चिन्तक या विचारक हैं, वे इस पर विचार करके यथोचित संशोधन करके इसी तरह की कोई नई प्रणाली अपना लेंगे, और न केवल पश्चिम का अन्धानुकरण करने से बच जायेंगे, बल्कि देश को एक सुविधापूर्ण सरल व कम खर्चीली चुनाव प्रणाली दे सकेंगे जिसमें देश का कोई भी गरीब व्यक्ति विधायक या सांसद बन सकेगा। इस योजना के कार्यकारी विवरण निर्वाचन आयोग द्वारा आवश्यकतानुसार तैयार किये जा सकते हैं।

* * *

सभा उपदेशक डा० महावीर शास्त्री द्वारा विश्व हिन्दू सम्मेलन काठमाण्डो [नेपाल] तथा गोरखपुर में प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपदेशक, विद्वान विचारक तथा ओजस्वी वक्ता डा० महावीर शास्त्री ने विश्व हिन्दू सम्मेलन काठमाण्डो नेपाल में लाखों जनता तथा अनेक देशों के प्रतिनिधियों के बीच वैदिक सिद्धान्तों, महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारों तथा आर्य समाज के मन्तव्यों की धूम मचा दी। इसी अवसर पर राज नेपाल के शिक्षा मन्त्री, श्री भुवनेश्वर प्रसाद जी की स्वीकृति से नेपाल राज्य के ५४ विद्यालयों में वेद प्रचार, योगासन, प्राणायाम तथा शारीरिक प्रदर्शन किया। नेपाल के ही कृषि मन्त्री श्री परशुनारायण चौधरी, श्रम तथा सामाजिक कल्याण मन्त्री एवं बड़ा राजगुरु श्री अम्बिका प्रसाद जी के यहां यज्ञ, वेद प्रवचन तथा रामायण की कथा की। श्री डा० यादवप्रसाद पंत सिंचाई मन्त्री के यहां भी श्री विष्णु जी के सहयोग से वेद कथा कही। श्री गणेशकुमार शास्त्री भू०पू० एम०पी० के प्रयास से काठमाण्डो में ४ आर्यसमाजों की स्थापना की। डा० शास्त्री ने मध्य क्षेत्र प्रहरी कार्यालय के प्रहरी नायक महानिरीक्षक रणबहादुर चन्द्र के यहां २ दिन तक पुलिस जवानों के बीच वेद कथा, आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रतिपादन, यज्ञ प्रवचन योगासन, प्राणायाम प्रदर्शन तथा प्रशिक्षण के साथ मोटर सायकिल चलाते हुये निशाने बाजी का भी प्रदर्शन कर २००/– का पुरस्कार प्राप्त किया। वापसी यात्रा में आर्य समाज गोरखपुर बशीपुर के सहयोग से गोरखपुर जिले के चौतनवां, आनन्द नगर आदि स्थानों की समाजों में वेद प्रचार एवं उपदेश, एवं प्रवचन आदि किये। गोरखपुर में महिला आर्यसमाज गोरखपुर, फर्टिलाइजर, गोरखनाथ मन्दिर में गोरक्षा नाथ मन्दिर के महन्त अवैद्यनाथ जी के सहयोग से प्रचार एवं संगठन की दृष्टि से जागृति का प्रयास किया। जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के प्रधान महाशय कल्पनाथ आर्य तथा मन्त्री श्री के० एन० सिंह ने डा० महावीर शास्त्री के कार्यों से प्रभावित होकर उनको गोरखपुर जिले में संगठन एवं प्रचार की दृष्टि से कार्य करने का आग्रह किया जिसे डा० शास्त्री ने सभा की अनुमति प्राप्त होने पर स्वीकार करने का आश्वासन प्रदान किया।

अनाथ बालकों का प्रवेश

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ में विराजित एवं अनाथ बच्चों (केवल बालक)का पालन-पोषण और शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाने का सदन है इसमें १० बालकों के रखने का स्थान और है अतः सभी सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि स्थानीय समाजों के माध्यम से ऐसे बच्चों को रखने का प्रस्ताव एवं सूचनायें ३०-६-८८ तक दें ताकि उनके सदन में प्रवेश पर विचार किया जाय।

शिमला में आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमांचल प्रदेश की ओर से आर्य समाज लोअर बाजार शिमला में १० से १२ जून तक एक 'आर्य महासम्मेलन' का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अनेक गण्यमान्य नेता, महात्मा, विद्वान और संगीतज्ञ पधार रहे हैं। इस अवसर पर कार्यकर्ता सम्मेलन महिला सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन भी आयोजित किये जायेंगे। ११-६-८८ को एक भव्य शोभायात्रा भी निकाली जायेगी। आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। सभी आमन्त्रित हैं।

स्वधर्म प्रत्यावर्तन [शुद्धि] एवं विवाह

आर्यसमाज गोरखपुर (बशीपुर) के तत्वावधान में दि० १ मई १९८८ को सायंकाल ६ बजे एक मुस्लिम कन्या कु० बयतुन बानो शेख का स्वधर्म प्रत्यावर्तन (शुद्धि संस्कार) कर पुनः हिन्दू धर्म में प्रत्यावर्तित कर उसका नाम कु० ज्योति आर्या रक्खा गया। २० वर्षीया कु० ज्योति आर्या (पूर्व बयतुन बानो शेख) ने यज्ञ में स्वयं पुस्तक लेकर अत्यन्त सुन्दर तथा शुद्ध उच्चारण में अत्यधिक उत्साह के साथ वेद मन्त्रों का पाठकर सभी उपस्थित जनों का मन मोह लिया।

शुद्धि संस्कार के पश्चात् कु० ज्योति आर्या का विवाह श्री सुरेन्द्र प्रसाद आर्य देवरिया निवासी के साथ अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के पुरोहित पं० रामचन्द्र शर्मा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपदेशक डा० महावीर शास्त्री जी ने किया।

उक्त समारोह में आर्यसमाज गोरखपुर के प्रधान श्री अवधेशकुमार राय, मन्त्री श्री रामनरेश गांधी तथा महिला समाज और पुरुष समाज के अनेक सदस्य सदस्याओं सहित जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री के० एन० सिंह सहित अनेक गण्यमान नागरिकों ने उपस्थित होकर वर कन्या को आशीष एवं उनके मङ्गलमय दाम्पत्य जीवन को शुभ कामनाएं दीं।

उत्सव

आर्यसमाज टाण्डा अफजल(मुरादाबाद) के तत्वावधान में विशाल क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक १ से ३ जून तक मनाया जा रहा है। उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सभी आमन्त्रित हैं—मन्त्री

शमीम अहमद शैलेन्द्रसिंह बने

देहरादून के प्रसिद्ध व्याख्याता डा० आनन्द सुमन के विचारों एवं पुस्तकों से प्रभावित होकर स्थानीय अम्बाड़ी कालेज विकास नगर के आंगल भाषा प्राध्यापक प्रो० शमीम अहमद ने यहां ७-५-८८ को आर्य समाज विकास नगर के प्रांगण में सैकड़ों नर-नारियों की उपस्थिति में डा० आनन्द सुमन से वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। उनका नाम शैलेन्द्रसिंह रखा गया। —प्रचार विभाग

स्वामी मिथिलेश के हत्यारों को आजीवन कारावास की सजा

एटा चतुर्थ सत्र न्यायाधीश श्री धनीराम ने गुरुकुल प्रहलादपुर के संस्थापक श्री स्व० स्वामी मिथिलेश के हत्यारों को आजीवन कारावास की सजा दी है। अशोककुमार और दीनानाथ ने स्वामी जी को गुरुकुल में सोते समय गोली मार कर हत्या कर दी थी।

—ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी वैदरी प्रहलादपुर, एटा (उ० प्र०)

स्वामी दयानन्द और पाश्चात्य सभ्यता

(पृष्ठ ९ का शेष)

"जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे-बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होता वे विद्वान् होकर जिस किसी के पाखंड में नहीं फंसते, जो कुछ करते हैं, वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं, अपनी स्वजाति की उन्नति के लिए तन-मन-धन व्यय करते हैं। आलस्य छोड़ उद्योग किया करते हैं।

देखो! अपने देश के बने हुये जूते को कार्यालय (ऑफिस) और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने में ही समझ लो कि अपने देश के बने जूतों का भी कितना मान-प्रतिष्ठा करते है, उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।

[एकादश समु० पृ० ३५९]

स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग

विदेशी वस्तुओं के परित्याग और स्वदेशी वस्तुओं के प्रचलन के पक्ष में आवाज उठाने वाले प्रथम नेता स्वामी दयानन्द थे।

यूरोपियनो की प्रशंसा करते हुये वे लिखते है-"देखो, कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुये और आज तक वे लोग मोटे कपड़े आदि पहिरते हैं जैसा कि स्वदेश में पहिरते थे, परन्तु उन्होंने अपने देश का चालचलन नहीं छोड़ा, और तुममें से बहुत से लोगों ने उनका अनुकरण कर लिया, इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान ठहरते हैं।" [एकादश समु०, पृ० ३५९]

भारतवर्ष मे स्वदेशी आन्दोलन १९०५ ई० से आरम्भ हुआ। आर्य समाज का व्यक्ति स्वदेश भक्त और स्वदेशी-भक्त बराबर रहा है। स्वामी दयानन्द ने राजा-महाराजाओं को भी स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग का उपदेश दिया था। जनवरी १८७४ की बात है-अलीगढ़ मे एक दिन ठा० भूपाल सिंह का पुत्र ऊधोसिंह विदेशी वस्त्र पहनकर महाराज की सेवा में आया, तो उन्होने उसे स्वदेशी वस्त्र पहनने का उपदेश दिया। [घासीराम लिखित-'महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र' प्रथम भाग, पृ० २६३]।

संस्कृत भाषा और नूतन शिक्षा पद्धति

(पृष्ठ ७ का शेष)

[अवस्था तक पहुंचने पर जब भारतीय छात्र एवं छात्राओं को संस्कृत विषयक ज्ञान नाममात्र को भी न होगा तो ये पत्र-पत्रिकायें किसके लिये पढ़ने का विषय बनेगीं ?]

ऐसी स्थिति में यह बात स्वयं सिद्ध हो जाती है कि संस्कृत प्राचीन ही भाषा न होकर आधुनिक भारतीय भाषा भी है।

अतएव हम सभी बुद्धिजीवी भारतीय-जन भारत सरकार से अनुरोध व आग्रह करते हैं कि वे नवीन शिक्षा-पद्धति में संस्कृत-भाषा को भी आधुनिक भारतीय भाषाओं के समान स्थान प्रदान करें ताकि हमारे धार्मिक-ग्रन्थ एवं संस्कृत सम्बन्धी परम्परा पहले की ही भाँति अक्षुण्ण रूप से हमारे मध्य प्रचलित रूप से चलती रहे और हम सभी भारतीय-जन अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को सदैव की भाँति सुरक्षित रख सकें कि जिसके बारे में स्मृतिकार मनु ने कहा भी है-

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥"

★

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible] भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष [illegible]
रजिस्टर्ड नं० एल डब्लू/एन पी ७८
ज्येष्ठ शुक्ल ११
२८ मई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

शोक समाचार

आर्यसमाज सिकन्द्राबाद के महा कर्मठ श्री जगदीश प्रसाद कौशल की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का ८-३-८८ को आकस्मिक निधन हो गया व ५८ वर्ष की थीं। आर्यसमाज के कार्य में बहुत ही सहयोग देने वाली थीं। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

निर्वाचन

आर्यसमाज खैर (अलीगढ़)

प्रधान—श्री बनवारीलाल [illegible]
मन्त्री—श्री विमेशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रामकुमार आर्य

आ० स० मुट्ठीगंज बाजार (इलाहाबाद)

प्रधान—श्री [illegible]लाल जी
मन्त्री—श्री राजेन्द्र कपूर
कोषा०—श्री आर० पी० सिंह

आ० स० साहनपुर (बिजनौर)

प्रधान—श्री डा० रामकुमार आर्य
मन्त्री—श्री होरीसिंह आर्य
कोषा०—श्री रामगोपाल आर्य

आ० स० चौक प्रयाग

प्रधान—श्री [illegible] दीक्षित
मन्त्री—श्री पन्नालाल गुप्त
कोषा०—श्री मूलचन्द्र [illegible]



स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] आर्य [illegible] ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] [illegible]
एम० बी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुभाष सिनेमा) नादरगंज, लखनऊ में श्री [illegible] गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं ०१३८-१-७८

ज्येष्ठ कृष्ण ४ रविवार, संवत २०४५ वि०, दिनांक ५ जून १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

वैदिक उपासना
लेख व
ये सत्य के पहरेदार
वसन्त कालीन पर्वो में वैदिक (यज्ञ) विद्या एवं संस्कृति
सभा की सार सूचनाएं
आर्यसमाजों के चुनाव तथा उत्सव आदि

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

✱

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
गाजियाबाद

✱

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

✱

वर्ष	८१
अङ्क	१२

ईसाईकरण बनाम अराष्ट्रीयकरण के विरुद्ध आर्यसमाज जन जागरण अभियान चलाएगा

—इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

★ ★ ★

दिनांक २ मई १९८८ को लखनऊ में प्रदेश के कोने कोने से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों की महती सभा को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने देश में बढ़ती हुई अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है। उन्होंने आर्यमित्र के विशेष संवाददाता से अपनी भेंटवार्त्ता में कहा आज देश में इस्लामीकरण ईसाईकरण की प्रवृत्ति पुनः जोर पकड़ रही है। हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार भी चुप बैठी हुई है। फरवरी १९८६ में भारत सरकार के ही निमन्त्रण पर कैथोलिक ईसाइयों के गुरु पोप पाल को भारत आने के लिए आमन्त्रित किया गया था। उनके भारत आगमन की खुशी में कैथोलिक ईसाइयों ने एक लाख आदिवासियों को ईसाई बनाकर अपने धर्म गुरु को उपहार स्वरूप भेंट करने की योजना बनाई थी। आर्यजगत के यशस्वी नेता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध जी ने इस चुनौती को रूप में स्वीकार करते हुए व्यापक प्रदर्शन की योजना बनाई और यह कहा कि यदि ऐसा हुआ तो हम दो लाख ईसाइयों का आर्यकरण करके संसार के सामने ईसाइयत की पोल खोल देंगे। फलतः ईसाइयों की यह उपहार योजना स्थगित कर दी गई।

कई वर्ष पूर्व अमरीका के एक कुख्यात विलियम फ्रैंक ग्राहम ने मिशन की बड़ी कान्फ्रेंस में संसार के पादरियों का आह्वान करते हुए कहा था कि अगर संसार से कम्युनिज्म को भगाना चाहते हो तो तुम्हें इसके लिए भारत में पादरियों की सेना भेजनी होगी जिसका नारा होगा—भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो गया है उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहरा रहा है।

इस सम्बन्ध में मई के केन्द्रीय गृहमन्त्रालय द्वारा राज्यों को भेजे गये परिपत्र का हवाला देते हुए श्री प्रधान जी ने बताया कि भारत सरकार ने स्वयं देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में ईसाई पादरियों की देशद्रोही गतिविधियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है। गुप्तचर सूत्रों के अनुसार असम, नागालैण्ड, मिजोरम त्रिपुरा मणिपुर लद्दाख आदि सीमावर्ती क्षेत्रों में ईसाई जनसंख्या में १९२१-१९८१ के बीच आशातीत लगभग १९८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ईसाइयत के प्रचार में विदेशों से आनेवाली धनराशि में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। १९८१ में १६१ करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे जबकि १९८७ में यह राशि ७०३ करोड़ रुपयों से भी ऊपर पहुंच चुकी है। चोरी छुपे जो धन आ रहा है वह अलग है। १९ मई को लद्दाख अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री कुशक बाकुला ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी से भेंट करके लद्दाख क्षेत्र में विदेशी ईसाई पादरियों के प्रवेश पर तुरन्त रोक लगाने का आग्रह किया है। उन्होंने प्रधान मन्त्री से शिकायत की है कि कुछ दिन पूर्व ही ५० बौद्ध किशोरों को जबरी तौर पर ईसाई बनाकर विदेशों में भेज दिया गया है।

श्री प्रधान जी ने आगे बताते हुये कहा— इस प्रकार करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाकर हमारे देश की सीमाओं पर अराष्ट्रीय गतिविधियां जोर पकड़ती जा रही हैं। आर्यसमाज इस संकट की घड़ी में चुप नहीं है उसके समर्पित कार्यकर्ता इन अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों का समूल नाश करने हेतु कटिबद्ध हैं। हम केवल भारतीय जनमानस का सहयोग चाहते हैं तन से मन से धन से ताकि हमारा यह जन जागरण अभियान सफल हो और हम देश की सीमाओं में आर्यत्व लहरा सकें।

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

–राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

सम्पादकीय–ज्येष्ठ कृष्ण ५ संवत् २०४५, रविवार ५ जून १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

हमारा आदर्श सँगठन

ऋषि दयानन्द का सबसे बड़ा स्मारक "आर्य समाज" है। वह उनका स्मारक ही नहीं उनका प्रतिनिधि भी है। ऋषिवर्य ने सबसे बड़ा विश्वास जो मानव समाज को दिया,–वह था–"वेद ईश्वरीय वाणी है"। सृष्टि के आदिकाल से लेकर महाभारतकाल पर्यन्त हमारी धार्मिक, राजनैतिक, कार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्त–र्राष्ट्रीय, विश्वबन्धुता, भौतिक समृद्धि, आध्यात्मिक उन्नति, मानव कर्त्तव्य, उच्चशिक्षा आदि सभी का आधार वेद था। इसका प्रमाण यह है कि आर्यों का चाहे वैयक्तिक जीवन हो, चाहे सामाजिक जीवन हो, चाहे आध्यात्मिक या अन्तर्राष्ट्रीय जीवन हो, सभी पर वेदों की शिक्षा का प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। वेदों में दिया हुआ ज्ञान किसी पुरुष या महापुरुष का दिया हुआ ज्ञान नहीं है वह अपौरुषेय है यह हमारे ऋषि दयानन्द का मन्तव्य तो है ही, ऋषि दयानन्द से पूर्व के अनेकों ऋषियों और महर्षियों ने इस तथ्य को अपने ज्ञान और योग से स्वीकार किया है कि वेद का ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक ४ ऋषियों के हृदय में प्रकट हुआ था। इसीलिये आर्य समाज वेदों को सर्वोपरि महत्व देता है और उसका विशाल संगठन वैदिक शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए समर्पित है। समाजों के संगठन को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए प्रतिनिधि सभाएं बनी और प्रतिनिधि सभाओं के संगठन को अनुशासनात्मक ढंग से सुव्यवस्थित रखने हेतु सार्वदेशिक सभा का निर्माण हुआ। धार्मिक जगत में यह संगठन अभूतपूर्व ही माना जायेगा क्योंकि इसकी श्रेष्ठता अपने आप में सम्पूर्ण है और प्रजातांत्रिक पद्धति पर विकसित हुई है। यही कारण है कि संगठन दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है और अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी अन्य संगठन की अपेक्षा नहीं करता।

आज स्थिति यह है कि जितनी भी आधिभौतिक अथवा आध्यात्मिक उपलब्धियां हों,—अथवा सामाजिक सुधार की अपेक्षायें हों, अथवा धर्म की मान्यताओं का प्रश्न हो–व्यवस्थाएं हमारी ही [वेदों की] सब लेते हैं, भले ही वेदों का नाम न लेते हों। हर विचारशील मानव का विश्वास जगा है कि मानव शान्ति एवं विश्व कल्याण के लिये हमें वेदों की ओर ही आना पड़ेगा और इसके लिये किसी न किसी रूप में आर्य समाज की शरण लेनी होगी। ऋषि दयानन्द ने सत्यासत्य का निर्णय केवल बुद्धि और युक्ति से ही करने पर बल दिया था, अन्य किसी प्रकार से नहीं। आर्य समाज की यह विचार धारा दूसरे मतमतान्तरों से सर्वथा भिन्न है। हमने सत्य का निर्णय बुद्धि और तर्क की कसौटी पर किया इसीलिये हमारी मान्यताएं न तो एकदेशीय रहीं और न एकपक्षीय। इसलिये जो वैदिक मान्यताएं हैं वे शाश्वत हैं और उन पर आरूढ़ हमारे आर्य समाज का संगठन भी शाश्वत है। ईश्वर जीव प्रकृति यह तीन मूलतत्व हैं जिनमे ईश्वर और जीव सनातन सत्ता हैं, चेतन हैं। प्रकृति भी धारा प्रवाह से अनादि एवं जड़ है और ईश्वरीय व्यवस्था के अन्तर्गत कार्यरत है। ईश्वर, जीव तथा सृष्टि से पृथक सर्वथा अलग सत्ता है। उसकी उपासना का सम्बन्ध केवल परलोक से नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा स्थान से है। उसकी शिक्षायें मानव को दो प्रकार से मिली हैं एक निषेध परक तथा दूसरी विधिपरक। इसी को दार्शनिक भाषा मे कर्त्तव्य अकर्त्तव्य अथवा पाप व पुण्य भी कह सकते हैं। एक से बचना है दूसरे को करना है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पाप भावना के दो आधार हैं जब पाप किया जाता है तो उस पापी की यह धारणा बन जाती है कि मेरे इस पाप को कोई देखने वाला नहीं है दूसरा आधार पाप के क्षमा हो जाने की आशा से है यदि पाप करनेवाला समझ ले कि उसका पाप छिपा तो नहीं लेकिन क्षमा हो सकता है या किसी अन्य तरीके से क्षमा कराया जा सकता है तो पाप की स्थिति बनी ही रहेगी। यह दोनो स्थितियां आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत हैं। आर्य समाज डंके की चोट इस बात को कहता है कि कर्मफल ईश्वराधीन है। ईश्वर एक व्यापक शक्ति है जिससे न कुछ छिप सकता है और न जिसके न्याय से कुछ बच सकता है। इसका अर्थ हुआ पाप पुण्य का सम्बन्ध सीधे क्रियात्मक जीवन से है।

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज को विश्व में एक आडम्बरहीन विश्व कल्याणकारिणी आस्तिकों की संस्था के रूप में प्रस्तुत किया। इस संगठन का आधार वेद की शाश्वत और पवित्र शिक्षाएं हैं। ऐसे पवित्रतम संगठन में होना मनुष्य के लिए परम सौभाग्य की बात है। प्रभु हमें शक्ति दे हम इस विशाल संगठन को उत्तरोत्तर गतिशील बनाते रहे।

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर

डा० गया प्रसाद शास्त्री संचालक आर्य वीर दल जनपद कानपुर देहात के निर्देशन में २४८ आर्य वीरों का प्रशिक्षण शिविर दि० १०–५–८८ से १५–५–८८ तक हायर सेकेन्डरी स्कूल रवाईपुर–घालपुर जिला कानपुर देहात में सम्पन्न हुआ जिसमे श्रीयुत बालदिवाकर हंस अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने भी दि० १३–५–८८ को पधार कर आर्य वीरों को उद्बोधन व प्रोत्साहित किया। जिला प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य अभियन्ता विकास प्राधिकरण कानपुर ने अपना अमूल्य समय व आर्य वीरों को मार्ग व्यय आदि धन की सहायता प्रदान की अपना आशीर्वाद दिया संचालक श्री प्रभुदयाल रिटायर्ड प्रिंसपल ने तथा श्री हरिश्चन्द्र आर्य व श्री रामसिंह आर्य ने शिक्षण कार्य पूर्ण किया।

अगला शिविर लगभग १५० आर्य वीरों का दि० १० जून ८८ को पटेल धर्मशाला किदवई नगर कानपुर में लगेगा जिसका समापन श्री मन मोहन तिवारी दि० १४–६–८८ को प्रातः ८ बजे करेंगे।

गयाप्रसाद शास्त्री

अध्यात्म सुधा

वैदिक उपासना

(ईश्वर का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के साधन)

[श्री पं० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

(गतांक से आगे)

परन्तु शास्त्रीय परिभाषा स्तुति और निन्दा की यह नहीं है शास्त्रकार कहते हैं "गुणेषु गुणाः रोपणम् दोषेषु दोषाः रोपण स्तुति एव गुणेषु दोषाः रोपणम् दोषेषु च गुणाः रोपणम् निन्दा" अर्थात् गुणो मे गुण और दोषों मे दोष कहना स्तुति है तथा गुणो मे दोष और दोषो मे गुण कहना निन्दा है। यह स्तुति भी दो प्रकार की है (१) स्तुति (२) भाण्ड स्तुति। यथार्थ गुणो का गुणगान स्तुति है और व्यर्थ का गुणगान भाण्ड स्तुति है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने एक कथा व्यवहार भानु में लिखी है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भाण्ड स्तुति क्या है ? दृष्टान्त इस प्रकार है ?—एक राजा था उसके चारों तरफ उसके दरबारी खुशामदी थे। एक बार सायंकाल का भोजन करते समय वे दरबारी भी उसके पास थे। भोजन मे बैंगुन का शाक बहुत अच्छा बना था। भोजन करते समय जब राजा ने बैंगुन के शाक की प्रशंसा की तो चापलूसो ने कहना आरम्भ किया—राजन ! यह शाक तो बहुत अच्छा है। भगवान् ने इसको श्यामवरण का बनाया है। इसके सिर पर मुकुट भी है तथा इसका नाम महाराज बैंगुन नहीं है बहु गुण है। राजा शाक की प्रशंसा सुनते—सुनते बैंगुन अधिक खा गया। चापलूस दरबारी तो चले गये। अर्ध रात्रि मे राजा के पेट में बादल गरजने लगे। पतले दस्त प्रारम्भ हुए। प्रातःकाल तक राजा की हालत खराब हो गई। जब देर से राजा दरबार मे आया तो चापलूसों ने राजा का मुख उदास देखकर राजा से देरी और उदासी का कारण पूछा। राजा मुख टेढ़ा करके बोले भाई मन्त्रियों ! वह शाक तो बहुत ही बुरा था। उसने तो रात भर में हमारी हालत बिगाड़ दी। इस पर चापलूस दरबारी बोले राजन् वह शाक तो बहुत बुरा है। भगवान् ने उसको काला कलूटा बनाया है। उसके सिर पर एक कील भी ठोक दी है। इतना ही नहीं महाराज ! उसका नाम तो बेगुन है। इस शाक मे तो कोई गुण है ही नहीं। राजा आश्चर्य से बोला कि कल तो तुम बैंगुन को श्याम वरण, सिर पर मुकुट और बहु गुण कह रहे थे और आज उसको काला कलूटा, सिर पर कील और बेगुन कह रहे हो। खुशामदी मन्त्री बोले महाराज हमें बैंगुन से क्या लेना—देना है हमें तो आपसे मतलब है। यह होती है भाण्ड स्तुति।

परमात्मा मे तो गुण ही गुण हैं। दोष है ही नहीं। इसलिए उस की भाण्ड स्तुति एवं निन्दा तो हो ही नहीं सकती उसकी केवल स्तुति ही हो सकती है। उसका स्तुति नाम का अर्थ है उसके गुणो का कीर्तन करते हुए उन गुणो को अपने जीवन में ढालना। कोई भक्त जब उसको सत्यस्वरूप कहता है यह प्रभु का गुणगान है परन्तु यह सत्य उसके जीवन में भी उतरना चाहिये। ईश्वर की स्तुति करते-करते यदि सत्य उस भक्त के जीवन में दृष्टिगोचर होता है तो वह भगवान की स्तुति है। और यदि उसको सत्यस्वरूप गाते-गाते वह सत्य उसके जीवन मे नहीं आता तो वह ईश्वर की भाण्ड स्तुति है। वह ईश्वर दयालु है और न्यायकारी है। यह ईश्वर की स्तुति है। यह उसका गुणगान है परन्तु तब जबकि साधक के जीवन मे दयालुता और न्याय के दर्शन होने लगे। परन्तु उसको दयालु और न्यायकारी कहते-कहते यदि जीवन मे दया और न्याय के दर्शन न हों तो वह ईश्वर की भाण्ड स्तुति है और निन्दा है।

परमात्मा की स्तुति अर्थात् उसके गुणगान का यह प्रभाव पड़ना लगता है कि साधक परमात्मा के गुण कर्म,स्वभाव के अनुसार अपना गुण, कर्म स्वभाव बनाना प्रारम्भ करता है। जैसे-जैसे भक्त के जीवन में परमात्मा के गुणो का समावेश होने लगता है वैसे वैसे भक्त परमात्मा के निकट पहुंचता चला जाता है। सन्तों ने कहा भी है—"जहाँ सांच तहाँ आप"। जहाँ सत्य बोला, सत्य माना जाए तथा सत्य किया जाए वहाँ पर प्रभु स्वयं विराजमान हो जाते हैं। परमात्मा के गुणों का गान करते-करते और अपने जीवन में परमात्मा के गुणों को धारण करते—करते साधक परमात्मा की सन्निकटता को प्राप्त कर लेता है। परमात्मा के गुण उसके जीवन मे झलकने लगते हैं और वह साधक सबका प्रिय हो जाता है। वह समदर्शी हो जाता है सर्वत्र परमात्मा के गुणों का दर्शन करना प्रारम्भ कर देता है। गीता के शब्दों में—

> विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
> शुनि चैवश्वपाके च पण्डिता सम दर्शिनः॥ (५-१८)

अर्थात् ज्ञान-विज्ञान से ओतप्रोत प्रभु भक्त विद्या और विनय से युक्त ब्राह्मण मे, तथा गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में भी समभाव से देखने वाले हो जाते हैं। ईश्वर का गुणगान करते—करते सर्वज्ञ ईश्वर के गुणों के दर्शन होने से भक्त को समदृष्टि प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार वह सर्वत्र परमात्मा को देखने लगता है।

वैदिक भक्ति का दूसरा अंग है—'प्रार्थना'। हमारे जीवन मे और समाज के जीवन मे प्रार्थना का बहुत ऊंचा स्थान है। प्रार्थना के नाम पर भगवान् से आलसी—प्रमादी और पुरुषार्थ हीन होकर मांगना यह प्रार्थना का विकृत रूप है। यदि कोई भक्त पुरुषार्थहीन प्रार्थना करता है तो वह प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती और वह प्रार्थना व्यर्थ जाती है। एक व्यक्ति धन कमाने का पुरुषार्थ तो करता नहीं परन्तु परमात्मा से धन प्राप्त करने की प्रार्थना मात्र करता है तो उसकी प्रार्थना कभी भी परमपिता परमात्मा स्वीकार नहीं करते। हमारे शास्त्रो मे मनीषि विद्वानो ने लिखा भी है—"यादृशी प्रार्थना कुर्यात् तादृश कर्म आचरेत्" अर्थात् उपासक जिस वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा से परमात्मा से प्रार्थना करे पहले उस दिशा में पूरा परिश्रम करे। तभी उसकी प्रार्थना स्वीकार होती है। एक छोटे बच्चे को भूख लगती है वह पलने पर पड़ा—पड़ा रोता है परन्तु माता उसके रोने की परवाह न करती हुई अपने काम मे लगी रहती है। जब वह बच्चा रोते—रोते पलने से नीचे भी आता है तब भी माता अपने काम मे व्यस्त बच्चे की परवाह नहीं करती परन्तु यदि बच्चा मां की तरफ चलता—चलता धड़ाम से गिर पड़े तो माता सब कामों को छोड़कर उस बच्चे को गोद मे लेकर अपना अमृतमय दूध पिलाकर उसको शान्त कर सुला देती है। ठीक इसी प्रकार जब भक्त कार्य करता—करता थक जाता है और असमर्थ हो जाता है तब जब वह भाव विभोर होकर जगदम्बा उस जगदम्बा माता से शक्ति मांगता है तो वह सारे संसार की मां एकदम उस प्रार्थना को स्वीकार कर लेती है।

(क्रमशः)

—ये सत्य के ठेकेदार—

खद्दरधारी मे, १२-४-८८ को डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री के लेख के उत्तर मे

[श्री यशपाल आर्य, देहरादून]

शास्त्री जी, १५-११-८७ को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ के उस चुनाव में जो डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प्रांगण मे हुआ था—स्वयं उपस्थित थे। इसके बावजूद उन्होंने एकदम गैर जिम्मेदाराना और एक पक्षीय लेख लिखकर अपनी स्थिति को नितांत हास्यास्पद बना दिया है।

शास्त्री जी चुनाव के समय उपस्थित थे, परन्तु वे शायद यह भूल गये हैं कि प्रजातन्त्रीय मूल्यों और विधान के अनुरूप ही प्रधान पद के लिये आपके ही एक सहयोगी ने प्रधान का न केवल नाम प्रस्तावित किया था—बल्कि उसके पूर्व एक मार्मिक भाषण भी दिया था कि आर्य समाज के संगठन को बनाये रखने के लिये और प्रजातन्त्र के तकाजों को पूरा करने के लिये प्रधान पद के लिये श्री इन्द्रराज जी का नाम प्रस्तावित करता हूं, इस प्रकार की विधि क्या अप्रजातन्त्रीय है। क्या आपका उभरता असत्य लेख के लिये आपको कचोट नहीं रहा हूं, चुनाव मे स्वयं भाग लेना, अपने आदमियों से नाम प्रस्तावित कराना और यह आरोप लगाना कि उनकी हरकतें हो रही हैं।

मौलिक अधिकार क्या है—क्या नहीं है, इस पर आप जब चाहेंगे जमकर चर्चा कर लेंगे। भारतीय संविधान मे यदि कुछ मौलिक अधिकार नागरिकों को दिये गये हैं, सब को दिये गये हैं, तो वे आपको भी दिए गये हैं, मुझको भी दिये गये हैं, यदि कोई कर्त्तव्य है तो आपके भी हैं, मेरे भी हैं। क्या आपको ही यह अधिकार प्राप्त है, कि चुनाव में भाग भी ले और फिर रजिस्ट्रार की शरण में आकर दुबारा चुनाव कराने की गुहार भी करें। क्या दूसरे पक्ष को ये अधिकार नहीं है कि वह न्यायालय का दरवाजा खटखटाए अद्भुत तर्क है?

हम से कहा जाता है कि रजिस्ट्रार जब चुनाव करवा रहा है, तो उसे सहयोग दो। चुनाव मे भाग लो। उसकी मानो, बहुत ठीक, आपका आदेश शिरोधार्य। हम पूछते हैं, अब जब रजिस्ट्रार ने स्वयं चुनाव स्थगित कर दिया और अनियमितताओं को स्वीकार कर चुनाव स्थगन आदेश दे दिया—क्या आपकी न्याय प्रियता और ईमानदारी आपसे यही कहती है कि अब रजिस्ट्रार का आदेश न मानें आप आपके साथी रजिस्ट्रार के इस आदेश के विरुद्ध कचहरी मे गये हैं। दूसरों को नसीहत देने से पहले अपने गरेबां मे झांक कर देख लिया होता।

१५ नवम्बर को होने वाले उस चुनाव में [जिसमे आपने स्वयं भाग लिया था] उस समय प्रान्त के कितने प्रतिनिधि आये थे—इसकी चर्चा नहीं कि, आप तो उपस्थित थे। १७ जनवरी के चुनाव के दिन आपके कितने साथी आये थे यह भी आपने नहीं लिखा। २८ फरवरी को आपके ४०० प्रतिनिधि पहुँचे थे, य आपको याद है। चार सौ तो नहीं पहुँचे होंगे।

जब आप तो यह बताते कि उत्तर प्रदेश की १८०० आर्य समाजों मे से दो सौ या ढ़ाई सौ आर्य समाजों के ही प्रतिनिधि आये थे।

आपको अत्यन्त कष्ट हुआ प्रान्त के प्रतिनिधि, २८ फरवरी को आये थे और चुनाव स्थगन के कारण निराश लौट गये, उनका पैसा भी गया, कष्ट भी हुआ। परन्तु १५ नवम्बर के उस चुनाव मे जिसमे हजारों नर—नारी शामिल हुए थे—उनका किराया, उनका खर्चा, उनका पैसा नष्ट करने के लिये आपके साथी कोर्ट में जा पहुंचे। ये कैसी करुणा है मगर यही आंसू संभाल कर रखिये। आज आपने लिखा कि चुनाव २८ को स्थगित होने पर उसे पुन. १६ मार्च को कराने का आदेश दिया गया, क्यों नहीं कलम आपके हाथ है, जो चाहे लिखें, पर देखना यह भी तो लिखो कि १६ मार्च को चुनाव होने का आदेश किस कोर्ट ने दिया था। कब दिया था? झूठी बात लिख—लिखकर लोगों को कब तक बहलाइयेगा।

१६ का भी स्थगन हो गया, तब आपको इलहाम हुआ, ३ अप्रैल को चुनाव होगा। जब नदी की उत्ताल तरंगे तटों को टक्कर मारती हैं, तो बड़े—बड़े वृक्ष भी तिनके की तरह बह जाते हैं, फूंक मार कर उन्हें नदी में गिरने से नहीं बचाया जा सकता।

झूठी सच्ची बातें बनाकर कब तक अपने साथियों का मनोबल बनाये रखियेगा? ये काठ की हंडिया कब तक भट्ठी पर चढ़ाते रहेंगे। पहले कहते थे, १७ जनवरी को चुनाव पक्का है, फिर कहा, २८ फरवरी को हो जायेगा—फिर १६ मार्च को चुनाव की तारीख बताई और फिर तब ३ अप्रैल को चुनाव की तिथि घोषित करा दी। अब आपके इन बोगस आश्वासनों से आपके साथी उकता गये हैं।

आपने लिखा रजिस्ट्रार महोदय शीघ्र चुनाव की तिथि घोषित कर मतदाताओं को सूचना देंगे। बिल्ली को आता देख कबूतर ने आंखें बन्द कर लीं। अब बिल्ली का भय कैसे दूर हो गया। सरकार यानी रजिस्ट्रार ने चुनाव कराने का अपना आदेश स्वयं वापस ले लिया है, आंखें खोल कर देख लीजिये।

विधान और वैधानिकता की शास्त्री जी को बहुत चिन्ता है। आप चुनाव की सूचनायें न छापने के लिये आर्यमित्र से अत्यन्त खफा हैं, उस पर इल्जाम लगा रहे हैं। काश मैं लखनऊ मे स्वतन्त्र होता और सिर पर कन्टेम्प्ट आफ कोर्ट की तलवार न लटकती तो उत्तर देता। सत्य को कब तक छिपाइयेगा?

आप उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब आर्य प्रतिनिधि सभा का वैधानिक गठन होगया आप अब वादी प्रति नहीं हैं—आप तो अब न्यायाधीश हैं—कोर्ट हैं।

आपने निर्णय दे दिया और आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का चुनाव अवैधानिक हो गया, धन्य हो महाराज।

मठाधीशों के हाथ से मठ छिने—गद्दियां छिन। १५ नवम्बर, को तो ये मठ और मठाधीश नहीं थे। अब आप और आपके साथी उसमे लाव—लश्कर सहित भाग ले रहे थे दावपेंच चला रहे थे। एलची पदों के लिए वार्ता मे संलग्न थे। आपको उस दिन नहीं पता चला था कि आपके साथी मठाधीशों से सौदेबाजी में लगे हैं?

पत्रकारिता की मर्यादाओं का उल्लेख करके तो आपने हातिमताई की कबर पर ही लात मार दी।

ये कौन सी पत्रकारिता है जो आदमी को सत्य कहने से रोक दें? वह कौन सी पत्रकारिता है असत्य का प्रचार करने मे जिसकी सार्थकता है।

जो चुनाव अवैधानिक, जिसमे मैंने भाग लिया पर मैं चुना नहीं गया। वह चुनाव वैधानिक जो कभी हुआ नहीं, जिसमे किसी ने भाग नहीं लिया, और मैं उप प्रधान चुना गया, क्या इसी का नाम पत्रकारिता है।

★

संकल्प

[श्री रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ]

मानव-जीवन में कर्म की प्रधानता है। कर्म की शक्ति मन और मन की शक्ति संकल्प में है। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है- "संकल्पो वाव मनसो भूयान्" (प्रपाठक-७, खण्ड-४, श्लोक-१) अर्थात संकल्प मन से बढ़कर है। वस्तुतः मनुष्य के जीवन का व्यावहारिक आधार उसका संकल्प है।

ईश्वर ने संकल्प से सृष्टि की रचना की है। संकल्प के दो प्रसिद्ध अर्थ हैं-कामना एवं ईक्षण। कामना अप्राप्त की होती है और ईश्वर के लिए कुछ भी अप्राप्त नहीं है। अतः उसके संकल्प को ईक्षण कहा जाता है। ऐतरेय उपनिषद् के अनुसार 'स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति। स इमांल्लोकानसृजत ॥' (अध्याय-१, खण्ड-१, श्लोक-१, २) अर्थात् उसने ईक्षण किया कि मैं लोकों की रचना करूं और उसने समस्त लोकों को बना दिया। इस प्रकार ईश्वरीय कर्म में भी संकल्प का स्थान है।

पशुओं के लिये भी संकल्प का महत्व है। वेदान्त दर्शन में एक लौकिक दृष्टान्त दिया गया है-'उपसंहारदर्शनान्नेति चेन्न क्षीरवद्धि' (अध्याय-२, पाद-१, सूत्र-२४) अर्थात् गाय अपने संकल्प से बछड़े के लिए दूध स्रवित करती है। उक्त स्थिति केवल गाय नहीं अपितु अन्य पशु-पक्षियों की भी है। इससे संकल्प शक्ति की व्यापकता का बोध होता है।

संकल्प से मनुष्य के जीवन की दिशा निश्चित होती है। जैसे राम ने पिता का वचन निभाने का संकल्प किया और बीच में पिता की मृत्यु हो जाने पर भी उसे पूर्ण किया। कृष्ण ने युद्ध में पाण्डवों का साथ देने का संकल्प किया और भीष्म, द्रोण, कर्ण, अश्वत्थामा जैसे दुर्जेय शत्रुओं के होते हुये भी उसे पूर्ण किया। चाणक्य ने छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने का संकल्प किया और विलक्षण प्रतिभा के बल पर उसे पूर्ण किया। दयानन्द ने अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने का संकल्प किया और प्राण देकर उसे पूर्ण किया। इन महापुरुषों के संकल्पों ने विश्व इतिहास का निर्माण किया है। इसके विपरीत रावण, दुर्योधन, हिटलर नादिरशाह आदि के संकल्पों ने विध्वंसकारी कार्य किये हैं। जिस प्रकार बीज के अनुरूप वृक्ष होता है, उसी प्रकार संकल्प के अनुरूप कर्म होता है एक व्यक्ति धन के लिए दूसरों के प्राणों का हरण करता है। दूसरा व्यक्ति राष्ट्र के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग करता है। एक अपने स्वाद के लिए पशु-पक्षियों को मारकर खाता है। दूसरा पशु पक्षियों के पालन में अपना जीवन लगा देता है। एक क्षणिक सुख के लिए अन्यों का अपमान करता है दूसरा अन्यों के मान हेतु अपना सुख अर्पित करता है। एक अपनी जीविका के लिए वेदों का मिथ्या अर्थ करता है। दूसरा वेदों के सही अर्थ करने में निर्धनता को गले लगाता है। इन दोनों प्रकार के मनुष्यों में संकल्प का भेद है। संकल्प भीतर-भीतर उसे प्रेरित करता है कि ऐसा करो, ऐसा करो। मनुष्य वैसा-वैसा करता जाता है - स्थूल दृष्टि से प्रतीत होता है। कि मनुष्य सर्वाधिक प्रेम अपने प्राणों से करता है। सूक्ष्म बुद्धि से विदित होता है कि मनुष्य सर्वाधिक प्रेम अपने संकल्प से करता है। संकल्प की पूर्ति में वह अपने प्राण प्रसन्नता से त्याग देता है। संकल्प-पूर्ति में अपने प्राणों की चिन्ता न राम ने की थी न रावण ने, न कृष्ण ने की न दुर्योधन ने, न चन्द्रगुप्त ने की न सिकन्दर ने। ऐसी स्थिति में संकल्प की महत्ता को कौन स्वीकार नहीं करेगा, अर्थात् सभी स्वीकार करेंगे। जैसा मनुष्य का संकल्प होता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। अच्छा संकल्प, अच्छा जीवन। बुरा संकल्प, बुरा जीवन। इसीलिये वेद में प्रार्थना की गई है-'मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'-मेरा मन सदा कल्याणकारी संकल्प ही करता रहे।

वर्तमान समाज को देखें। स्वस्थ व्यक्तियों से अस्वस्थ व्यक्तियों की संख्या अधिक है। सत्यवादियों से मिथ्यावादियों की, विद्वानों से अविद्वानों की, याज्ञिकों से अयाज्ञिकों की, योगियों से भोगियों की और त्यागियों से स्वार्थियों की संख्या अधिक है। इससे यह विदित होता है कि अच्छे संकल्पों वाले व्यक्ति थोड़े हैं। तब देश और संसार का उपकार कैसे सम्भव है? राष्ट्र नेताओं में देश-भक्ति का संकल्प न होने पर वे देश-सेवा कैसे कर पायेंगे! विद्वानों में सत्य एवं धर्म का संकल्प न हो तो अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कैसे होगी! अध्यापकों में छात्र-निर्माण का संकल्प न हो तो वे उनका चरित्र-निर्माण कैसे करेंगे! वैद्यों में आरोग्य का संकल्प न होने पर रोगों का उपचार कैसे होगा! न्यायाधीशों एवं वकीलों में न्याय का संकल्प न हो तो वे उसकी स्थापना कैसे करेंगे! पुलिस में दुष्ट को दण्ड देने का संकल्प न हो तो नागरिक सुरक्षा कैसे सम्भव है! व्यापारियों में सामाजिक सहयोग का संकल्प न हो तो वे शुद्ध वस्तुयें कैसे देंगे! वस्तु स्थिति यह है कि इनमें से कोई भी वर्ग संकल्प बद्ध होकर कार्य नहीं कर रहा है। फलत. पुलिस-वृद्धि से भी सुरक्षा-वृद्धि नहीं हो रही है। अध्यापक एवं वकील बढ़ रहे हैं, विद्या एवं न्याय नहीं। हां, प्रत्येक वर्ग में कुछ व्यक्ति अवश्य संकल्पबद्ध हैं। वे व्यक्तिगत पीड़ायें सहकर भी कर्तव्य पालन कर रहे हैं। इन्हीं के कारण व्यवस्थायें चल रही हैं। किन्तु उत्तम स्थिति तो वही होगी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति यजुर्वेद के इस मन्त्र के अनुसार चले कि 'इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि' (अध्याय-१, मन्त्र-५) अर्थात् मैं सदा असत्य का त्याग एवं सत्य का पालन करूंगा।

दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति भी थोड़े ही होते हैं। अधिकांश व्यक्ति थोड़े-से लाभ के कारण सदाचार से डिग जाते हैं। वे क्षुद्र धन, मान, पद, सुख आदि के कारण सत्य सिद्धांतों एवं नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे देते हैं। यह संसार में प्रतिदिन स्वतः दृष्टिगत होता रहता है। जैसे एक शिशु माता के डॉटने पर कहता है कि अब कभी मिट्टी नहीं खाऊंगा और अगले ही क्षण माता के हटने पर तुरन्त मिट्टी खा लेता है। एक किशोर व्यसन का शिकार होने पर प्रतिदिन व्यसन त्यागने की शपथ खाता रहता है और प्रतिदिन व्यसन करता रहता है। एक प्रौढ़ व्यक्ति प्रत्येक बार शपथ लेता है कि इसके बाद कभी रिश्वत नहीं लूंगा। यह शपथ लेना एवं भंग करना सदा चलता रहता है। फलस्वरूप संकल्प की दुर्बलता के कारण लोग खान-पान के सरल नियमों का पालन नहीं कर पाते और स्वास्थ्य से वञ्चित रहते हैं। इसी प्रकार वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध लोग भी असत्य एवं क्रोध का त्याग नहीं कर पाते और सुख से वञ्चित रहते हैं। यह बालबुद्धि ही है। जब तक संकल्प दृढ़ नहीं होता, तब तक दोष-त्याग एवं गुण-ग्रहण भी नहीं होता। जीवन सुख, दुःख, विद्या-अविद्या, धर्म-अधर्म के बीच झूलता रहता है और विशेष उपलब्धि नहीं होती। जो व्यक्ति दृढ़-

[शेष पृष्ठ ६ पर]

अखिल भारतीय हैदराबाद (आर्यसमाज) स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी समिति दिल्ली के प्रतिनिधि मण्डल की श्री चिंतामणि पाणिग्रही राज्य मन्त्री गृह मन्त्रालय, भारत सरकार से भेंट

शनिवार दिनांक ७ मई १९८८ को हैदराबाद निजाम रियासत के सन् १९३८-३९ के आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय सत्याग्रह में सम्मिलित लगभग २२ हजार आर्य सत्याग्रहियों में शेष बचे हुए लगभग दो-ढाई हजार प्रार्थी आर्य सत्याग्रहियों की पिछले वर्षों से चली आ रही अनेक प्रकार की समस्याओं को निष्पक्षता के साथ बचे हुए सत्याग्रहियों के जीवन काल में ही अत्यन्त शीघ्र समाधान करने हेतु अखिल भारतीय हैदराबाद (आर्यसमाज) 'स्वतन्त्रता सेनानी समिति दिल्ली' के अध्यक्ष श्री नरदेव जी स्नातक पूर्व संसद सदस्य के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने श्री चिन्तामणि जी पाणिग्रही राज्य मन्त्री गृहमन्त्रालय भारत सरकार से भेंट की, इस भेंट में समिति के अध्यक्ष महोदय ने इस समिति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए नीचे लिखी कुछ साम-यिक समस्याएं और मांगें प्रस्तुत की इस भेंट में इस आर्यसमाज सत्या-ग्रह के विदेशों के थाईलैण्ड, फीजी और बर्मा के सत्याग्रहियों का भी जिक्र किया और यह भी बतलाया कि इस सर्वथा धर्म निरपेक्ष एवं अन्तर्राष्ट्रीय सत्याग्रह में आर्यों के अतिरिक्त सनातनी, सिख-जैनी और मुसलमान सत्याग्रहियों के भाग लेने के सम्बन्ध में भी संक्षेप से बतलाया।

१-मुसलमानों में से विशेष कर अजमेर के ७० वर्षीय एक फंदाज सैय्यद अली का जिकर इसलिए किया क्योंकि हैदराबाद की कट्टर मुस्लिमवादिता के कारण उनका नाम रियासत के जेल रिकार्ड से मुसलमान के तौर पर अंकित करने में जानबूझ कर आनाकानी की थी इस प्रमाणित मुसलमान के सम्बन्ध में प्रतिनिधि मण्डल ने यह मांग रखी इस मुसलमान सत्याग्रही को अनुसूचित जाति एवं महिलाओं को दी जाने रियासत के अनुसार केन्द्रीय पेंशन देने पर विशेष विचार करना चाहिए। लाहौर के नारायणी जत्थे में इसी प्रकार कुछ सिख आदि भी सत्याग्रही सम्मिलित हुए थे। यह नारायणी जत्था सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी श्री नारायण स्वामी जी के नाम पर था।

२-(क) दूसरी मांग यह प्रस्तुत की कि गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में सम्मान पेंशन आदि का निर्णय करने के लिए जो सात सदस्यों की एक "गैर राजकीय सलाहकार समिति" गठित की है जिसने अपने पिछले दो वर्ष के कार्यकाल में लगभग २२ सौ आगत प्रार्थना पत्रों में से अभी तक केवल केन्द्रीय सरकार से पेंशन लेने के लिए कुल सब्बे प्रार्थियों का और प्रान्तीय राज्यों से २५० सत्याग्रह प्रार्थियों को पेंशन देने के निर्णय करने की सिफारिश की है। हो सकता है कुछ प्रार्थियों का गृह मन्त्रालय ने सीधा निर्णय कर दिया हो।

(ख) यह भी बतलाया कि इस गैर राजकीय सलाहकार समिति के सदस्यों में एक सदस्य हैदराबाद रियासत के जेल यात्रा के भुक्तभोगी सत्याग्रही नहीं है।

अतः प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष महोदय ने श्री राज्य मन्त्री महो-दय का यह ध्यान दिलाया कि गृह मन्त्रालय को इस "गैर सलाहकार समिति" में कम से कम चार निष्पक्ष जेल यात्री सत्याग्रहियों को मनोनीत किया जाना चाहिए। इससे सत्याग्रहियों के लटकते आ रहे मामलों के निपटाने में और सरकारी स्तर पर हो रहे भ्रष्टाचार को दूर करने में सहायता मिलेगी। शेष समस्याएं दूसरी भेंट के समय प्रस्तुत की जायेंगी।

मन्त्री महोदय ने इन समस्याओं पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

—सत्यव्रत स्नातक स्वतन्त्रता सेनानी
भारतीय सूचना सेवा (निवृत्त) संयोजक
अखिल भारतीय हैदराबाद आर्यसमाज
स्वतन्त्रता सेनानी समिति, नई दिल्ली

ईश्वर प्रार्थना, उपासना क्यों करनी चाहिए?

[श्री रघुवीरशरण आर्य विश्व सेवक, विश्व कल्याण शोध सदन बरायन ठौला बहजोई (मुरादाबाद)

प्रार्थना करने से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण कर्म, स्वभाव का सुधारना तथा प्रार्थना करने से निरभिमा-नता, उत्साह और सहायका मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना सिद्ध होते हैं।

इसका फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपने भी करने का प्रयत्न करना चाहिये। जैसे वह न्यायकारी है तो हम भी न्यायकारी होवें। अपने चरित्र का सुधार करें। कथनी-करनी में लेशमात्र भी अन्तर न रहने दें। परमात्मा से सदैव सर्वोत्तम बुद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए, इसके लिए जितना प्रयत्न हो सके उतना पुरुषार्थ करते हुए गायत्री मन्त्र का जाप अर्थ व क्रिया सहित करते रहना चाहिए। सबका उपकार करने की क्षमता प्राप्त करने के लिए आलस्य का त्याग कर देना चाहिए।

अष्टांग योग में परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए। इससे आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है।

स्तुति, प्रार्थना उपासना का फल यह है-जिस प्रकार शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

ईश्वर का लक्षण

"क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः।'

(योग दर्शन १-२४)

जो अविद्यादि पांच क्लेश और अच्छे बुरे कर्मों की जो जो वासना, इन सबसे जो सदा अलग और बन्धन रहित है, उसी पूर्ण पुरुष को ईश्वर कहते हैं। जिससे अधिक या तुल्य कोई नहीं तथा जो सदा आनन्द ज्ञान स्वरूप सर्वशक्तिमान है, उसी को ईश्वर कहते हैं।

"तत्र निरतिशयं सर्वज्ञ बीजम्" (योगदर्शन १-२५)

जिसमें नित्य सर्वज्ञ ज्ञान है, वही ईश्वर है। जिसके ज्ञानादि गुण अनन्त हैं तथा जो ज्ञानादिगुणों की पराकाष्ठा है, जिसके सामर्थ्य की अवधि नहीं, वह सर्वज्ञ ईश्वर पूर्व ऋषियों महर्षियों का भी गुरु है। सारा संसार उसी से आच्छादित है।

ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर पुरुषार्थी, धर्माचरण करने वाले विद्वान मनुष्य के हृदय देश जिसे ब्रह्मपुर कहते हैं के बीच में गर्त में स्थित कमल के आकार का अवकाश रूप स्थान है। उसी प्रकाशित स्थान के बीच मे ओ३म् का जाप करते हुए खोज करने पर परमेश्वर मिल जाता है और मनुष्य प्राण द्वार से परमेश्वर के सत्य राज्य में प्रवेश करके सब दोषों से छूटकर परमानन्द मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

बसन्त कालीन पर्वों में वैदिक [ब्रह्म] विद्या एवं संस्कृति

[दुर्गा मनोरमा देवी अग्निहोत्री, 'किशोर', वानप्रस्थी, राजेन्द्र नगर, लखनऊ]

स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम् बहु शोभमानां-
उमां हैमवतीं ता ँ होवाच किमेतद्यक्षमिति ॥
केनोपनिषद् ३ । १२ ॥

केन=किसके द्वारा, उपनिषद्-समीप पहुंचा जाय । एक दृष्टान्त के द्वारा ब्रह्म को जानने का साधन पूछा गया तथा उत्तर भी दिया गया है ।

इन्द्र के समक्ष अग्नि. वायु देव अपनी-अपनी सामर्थ्य का वर्णन विजयोल्लास पूर्वक कर रहे हैं । तब एक एक तेज पुञ्ज दिव्य स्वरूप प्रकट होता है । इन्द्र अग्नि से उसे पहिचानने का आदेश देता है । अग्नि के आगे बढ़ने पर यक्ष ही उससे पूछता है- तुम कौन हो, तुम्हारी क्या सामर्थ्य है ? अग्नि बताता है । संसार में जो कुछ भी उसे मैं जला सकता हूं । यक्ष एक पल्लव डाल देता है । 'जलाओ' अग्नि नहीं जला पाता । लौटने पर इन्द्र वायु को भेजता है । वायु से यक्ष उस पत्र को उड़ाने को कहता है, वायु उसे उड़ा नहीं पाता । तब इन्द्र स्वयं जाता है । क्षण भर में यक्ष अदृश्य हो, एक सुसज्जित रूपसी को भेज देता है । वह इन्द्र को समझाती है-'यही ब्रह्म परमात्मा था" । इसी की शक्ति से तुम सब कार्य कर सकते हो । तुम्हारी इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं । नेत्र देखते है, त्वचा छूती है ।

इस देवी का नाम 'उमा' है । शब्दार्थ-सन्देह निवारण कर्त्री है । यह जीव की प्रकृत ऋतम्भरा (बुद्धि) है । परमात्मा की ओर से अव्यक्त प्रकृति को व्यक्त (प्रकृति) करके सृष्टि रचना प्रक्रिया में परमाणु सगठन से सर्व प्रथम 'महत्तत्व' बनता है, जो परमेश्वर के सृजन कार्य का प्रधान उपकरण है । इसी 'महत्' तत्व से प्रधान प्रोप्रस्फुटित होती है । उससे पञ्चतन्मात्रायें, पञ्च भूत, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च-विषय, अन्तः करण के चित्त [अहं] मन-कपिल मुनि द्वारा प्रवर्त्तित सांख्य दर्शन के अनुसार २४ तत्व बनते उनसे सृष्टि रचती है यही उमा पर-ब्रह्म की परम साधिका प्रकृति की प्रधान धी है ।

परमात्मा ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि का प्रारम्भ प्रथम सूर्य चन्द्रादि बनाकर लगभग १६७२९४६०८८ वर्ष पूर्व सदा की भांति इस बार भी किया है । भारत में षड्ऋतव. समय समय पर अपना चमत्कार दिखाता है । प्रारम्भ में भारत के उत्तर में नयपाल से ऊपर हिमगिरि से उस पार उपत्यका में स्थित त्रिविष्टप राज्य [आर्य्यावर्त्त के पूर्वांश] से ही बसन्त ऋतु से किया था । भारत की भांति सृष्टि का भी प्रथम ऋतु बसन्त है । बसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर में सदा दो बार आती है । एक ग्रीष्म के पश्चात् वर्षा व शरद में द्वितीय, शिशिरोपरान्त बसन्त बहार में । त्रिकालदर्शी-व्यतेनमुञ्जीथा वैदिक संस्कृति का आदर्श है ।

बसन्त कालीन पर्व एव उत्सव-आह्लादक बसन्त पञ्चमी से बसन्तर्तु का आगमन मान बैठते हैं, जब कि तब नितान्त शिशिरऋतु का पतझार होता है । शिरत्सूत्रुतृष्ट 'शीर्' 'शरी' शीर्यति इति शिशिरः । शिशिरे शुष्काणि पत्राणि शार्यन्ति । हिमवद्वायु वेगेनवहति । बसन्त पञ्चमी माघ सुदी पञ्चमी को मनाई जाती है । वर्ष के १२ मास में प्रत्येक ऋतु २-२ मास रहता है । गणनानुसार अन्तिम दो मास माघ एव फाल्गुन शिशिर के ही होते हैं । इस प्रकार यह पर्व शिशिर ऋतु में बसन्तागमन से १५ दिन पूर्व मनाया जाता है । किन्तु नाम करण में 'बसन्त शब्द' आगामी ऋतु के सन्दर्भ में उसके सम्बन्ध से युक्त किया गया है कि इतने पूर्व से उसको अगवानी की व्यवस्था की जाती है ।

मंजिले मकसूद का सौदा अगर हो जायेगा ।
मिस्लेजादा रास्ते मे अपना घर हो जायेगा ॥

पदार्थ-जादा-पड़ाव, मिस्ल-समान, मकसूद-ध्येय-साध्य, मंजिल-मन्तव्य ।

भावार्थ-लक्षित का गन्तव्य निर्धारित करने के पश्चात् पड़ाव के समान मार्ग में अपना घर हो जाता है-आधा मार्ग पार हो जाता, अर्द्ध कार्य उद्देश्य स्थिर करते ही निवृत्त हो जाता है ।

आर्य-ऋगतीसे प्रगतिशील अर्थात् श्रेष्ठ हैं । इनकी यह विशेषता रही है कि आगामी गतिविधि में पूर्व से ही रत हो जाते । बसन्तऋतु के स्वागत की तय्यारियाँ अत्यधिक समारोहपूर्वक करते हैं । गणवेश-तत्कालीन ऋतु के ही पीले वस्त्र धारण करते हैं । शिशिरऋतु में पत्ते शुष्क पर्ण झरते है । खेतों में पीली सर्षप (सरसो) फूली खड़ी होती है । पीले गेंदे, टेसू और सेफाली अपना रंग दिखाते है । पीली ही बहार है । इसी में सन्त हरण चतुर्थी १६ दिन पूर्व [पौराणिकी] की हो चुकी होती है । आगे महा शिवरात्रि [महर्षि बोधोत्सव] पर्व श्रेयस्कर है । बसन्त में हरीतिमा दिखाई देती है बसन्तर्तु आरम्भ से १५ दिन पूर्व होलिकोत्सव पुनः बसन्त कालीन नवान्न नवान्न पर्व हैं । द्वितीय नवान्ननवान्न पर्व शरद ऋतु में आश्विनशुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक होता है ये दोनों पर्व दुर्गा की आराधना अर्चना के निमित्त माने गये हैं ।

'दुर्गति नाशन दुर्गे जय जयो के अनुसार दुष्कर कार्य करा देने वाली दुर्गम स्थल मे पहुँचा देने, दुर्लंघ्य पथो को लंघा देन वाली चारो वर्णो चारा आश्रमो को अष्ठहस्त भुजा धारिणी राष्ट्र की शक्ति मानव की शक्ति जीवात्मा की शक्ति प्रकृति की प्रधानधी नारी [मानव योनि] की शक्ति उमा है । इसको यम नियम स संतुलित कर विवेचना द्वारा पोषित कर इससे मन को सुमार्ग पर लाकर वेदाध्ययन सतत स्वविद्या-सम अनुशीलन पूर्वक अपना इन्द्रियों का निग्रह कर शरीर रूपी रथ को सत्कार्य में उपयुक्त कर जीवन सफल बनाना है । शारदीय-नवान्न के २१ दिन पश्चात् दीपमालिका पर्व पर नवान्न तथा बसन्ती नवान्न चैत्र नवान्न के १५ दिवस पूर्व नवान्न [नवसस्येष्टि] होलिका पर्व [चने के होले तथा गोधूमयवादि की बालि-बालि की भरमार का दृश्य] होता है विराट् यज्ञ होते हैं । इन उभय पर्वों मे पञ्च महायज्ञ का अतीव महात्म्य है । मनसा, वाचा, कर्मणा राष्ट्रीय पर्व है ।

'ज्ञानेन्द्रिय' के अतिरिक्त नित्यप्रति की शारीरिक क्रियाओं के सञ्चालनार्थ मानव-तन मे प्रभु ने ९ छिद्र-नव द्वार दिये हैं । इन पर नियन्त्रण करने के हेतार्थ नव दिन रात्रि [नवरात्रि] की संख्या निर्धारित की है । अतः यह नवान्न नवरात्रि पर्व कहलाते हैं ।

आत्मा के दुरितों को निकाल कर भद्र वरने की कामना करते हुए प्रज्ञा-मेधा-धी की सब कामना करें । यही कामधेनु है ।

दिल्ली की आर्यसमाजें सत्याग्रह करेंगी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और राष्ट्रार्य सभा के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य ने आज एक प्रेस वक्तव्य में घोषणा की है कि पंजाब में हो रहे कत्लेआम को किसी भी कीमत पर अब सहन नहीं किया जायेगा। यदि सरकार ने जल्दी ही सारे पंजाब को सेना के हवाले न किया तो दिल्ली की आर्यसमाजें सत्याग्रह शुरू कर देंगी। यह सत्याग्रह प्रधान मन्त्री के निवास स्थान पर किया जायेगा और यह तब तक जारी रहेगा, जब तक हमारी उपर्युक्त मांग स्वीकार नहीं हो जाती।

श्री आर्य जी कि दिल्ली की आर्यसभाओं द्वारा मनाए गये "पंजाब बचाओ सप्ताह" और पाकिस्तानी दूतावास पर प्रदर्शन के प्रभारी थे, ने बताया कि सरकार आज से एक वर्ष पूर्व आर्यसमाज के सुझाव को मानकर पीछे न हट गयी होती तो हजारों माताओं के बेटे और हजारों स्त्रियों के सुहाग न उजड़ते। पंजाब में हो रहे कत्लेआम के लिए केवलमात्र राजीव सरकार ही दोषी है। वह बेगुनाहों के कत्लेआम की जिम्मेदारी से नहीं बच सकती। जो सरकार अपने नागरिकों की रक्षा नहीं कर सकती, उस सरकार को गद्दी पर रहने का कोई अधिकार नहीं है।

श्री आर्य ने विपक्ष पर भी कड़ा प्रहार करते हुए विपक्ष के रवैये को देश के हित के विपरीत करार दिया है। श्री आर्य ने कहा कि एक तरफ तो हजारों बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं, दूसरी तरफ विपक्षी जनता पार्टी जैसी पार्टियां अपनी राजनीतिक रोटियां सेक रही हैं।

श्री आर्य ने समस्त विपक्षी पार्टियों से अपील की है कि वे वोटों की राजनीति को त्याग कर वर्तमान समय में देश की एकता व अखण्डता के लिए एकजुट होकर सरकार को सारे पंजाब को सेना के हवाले करने, रणकच्छ से लेकर कश्मीर तक ५ किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाने, और उग्रवादियों को सख्ती से निपटाने के लिए बाध्य करें।

—डा० धर्मपाल प्रधान

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जा रहा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के युवा एवं कर्मठ प्रचारक/निरीक्षक श्री देवेन्द्र "स्वदेश बन्धु" का असामयिक निधन दि० २० मई को हो गया। श्री देवेन्द्र आर्यसमाज के उदीयमान युवा कार्यकर्ता थे। आर्यसमाज को उनसे बहुत आशाएं थीं। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य धारण करने की शक्ति दे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

प्रवेश सूचना

शासन द्वारा प्रथम श्रेणी में मान्यता प्राप्त सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध, महाविद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं (६, ७, ८) से लेकर स्नातकोत्तर (आचार्य, एम०ए०) पर्यन्त प्रवेश प्रारम्भ है। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करें।

गोविन्दसिंह आर्य
प्राचार्य
सिरसागंज (मैनपुरी)

कविता कलाप

कृपा तेरी सचमुच है वर्णन से बाहर

[आचार्य सोमदत्त विद्याभास्कर एम० ए०, गाजियाबाद]

बहुत दीप जलते हैं दुनियां के अन्दर।
सभी की है ज्योति बहुत ही मनोहर॥

दयानन्द! तुमने जो दीपक जलाया,
विलक्षण है वह तो जगत का उपासक।
नहीं हैं दीवारें यहाँ कोई मत की,
जो रोके किसी को बना शान्ति-नाशक।
जलाया है कैसा वह दीपक मनोहर॥

चारों तरफ से चमन लुट रहा था,
बना माली खुद था चमन का ही भक्षक।
शिकायत भला क्या करे कोई किससे,
समझता था दुश्मन उसे जो था रक्षक।
बचाया जो तूने खुली आंख रोकर॥

किसी को नहीं ध्यान था वेद-मत का,
मिथ्यामत का सबही भला चाहते थे।
बुराई में डुबकी लगाते थे गुरुवर,
किसी पाप को जो नहीं छोड़ते थे।
दिया खोल सबके सभी पोल डटकर॥

अगर वेद की राह तुम न दिखाते,
तो हालत न जाने क्या होती हमारी।
वही राष्ट्र-धारा को पावन जो गंगा,
कहीं खो जो जाती सिसकती बेचारी।
कृपा तेरी सचमुच है वर्णन से बाहर॥

सुधा को दिया, स्वयं विष पिया था,
सभी जाति पाँति विमत को भुलाकर।
सभी कष्ट सहकर मिला कुछ न आया,
हंसते गये खुद सभी को रुलाकर।
नहीं 'सोम' तुमसा कोई है दयाकर॥

प्रचार कार्य

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर के माध्यम से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री पं० युगुलकिशोर जी हरदोई व विश्वदेव वानप्रस्थी के द्वारा जौनपुर जनपद के विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी अंचलों में १२ मार्च १९८८ से २७ मार्च १९८८ तक बड़ी धूमधाम से वेद व सनातन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ जिससे प्रभाव से लगभग ४ नयी आर्यसमाजें स्थापित हुईं व १० समाजों में स्थापित होने की सम्भावना है।

आर्यसमाज देश सेवा में अग्रणी

भारत की आजादी के संघर्ष मे, शिक्षा के क्षेत्र मे और समाज सेवा के क्षेत्र मे जिन आन्दोलनो मे अनेक संस्थाओ ने भाग लिया, उनमे आर्य समाज और डी० ए० वी संस्थायें अग्रणी रही हैं। आर्य समाज समन्वयवादी और समाज को जोड़ने वाली शक्ति है, तोड़ने वाली नहीं। आर्य समाज देश की एकता अखण्डता के लिये जो कार्य करता रहा है वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। महात्मा हंसराज जी का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन रहा। सर सैयद अहमद का कहना था कि उनके पास पर्याप्त धन और भूमि है परन्तु संस्था चलाने के लिए कोई हंसराज नहीं है। महात्मा हंसराज जी ने अपने समय की पीढ़ी को देश भक्ति और नैतिकता के ढांचे मे ढाला है और भावी पीढ़ी को इसके लिये दिशा निर्देशन दिया है।

आज समाज के सम्मुख विभिन्न क्षेत्रो मे जो चुनौतियां हैं, उन सबका निराकरण करने मे आर्य समाज और डी० ए० वी० संस्थायें सक्षम हैं।

उक्त विचार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी० ए० वी० संस्थाओ के तत्वावधान मे आयोजित एवं स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न महात्मा हंसराज दिवस के उपलक्ष्य मे केन्द्रीय मन्त्री श्री के० सी० पन्त, श्री एच० के० एल० भगत, प्रख्यात न्यायविद् डा० लक्ष्मी मल सिंघवी, प्रो० वेद व्यास आदि महानुभावो ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर आर्य समाज एवं डी० ए० वी० की जिन लोगो ने वर्षों तक अथक सेवा की है, ऐसे १० महानुभावो को पुरस्कृत व सम्मानित किया गया। आर्य जगत् के हंसराज विशेषांक एवं स्वामी विद्यानन्द सरस्वती लिखित पुस्तक "भूमिका भास्कर" का विमोचन भी किया गया।

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद मे नवीन सत्र आरम्भ हो गया है। गुरुकुल मे योग्यतम आचार्यों द्वारा शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था है। प्रथमा कक्षा ५-६ से लेकर आचार्य (एम० ए०) पर्यन्त 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी' की परीक्षाओं के साथ-साथ धनुर्विद्या, संगीत विद्या, सैनिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, योगासन, व्यायाम, पी० टी० आदि विभिन्न कलाओ की निपुणता भी प्राप्त करायी जाती है।

बालको के अभिभावक प्रवेश हेतु कृपया शीघ्र ही प्रयत्न करें। विद्यालय मे प्रवेश तिथि १ जुलाई ८८ के अनुसार प्रवेश करायें। नियमों की जानकारी हेतु २) मनीआर्डर भेजकर नियमावली मगावें।

डा० रमामित्र शास्त्री प्राचार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग १८ अप्रैल की बैठक का प्रस्ताव

पिछले दिनो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के अवसर पर कतिपय समाज विरोधी तत्वो द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो पर झूठे और निराधार आरोप लगाकर सार्वदेशिक सभा और आर्यसमाज की स्वच्छ छवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की यह अन्तरङ्ग सभा पूर्ण छानबीन और गहन विचार विमर्श के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि ये सब आरोप मिथ्या, निराधार, मनगढ़न्त और शरारतपूर्ण हैं। यह प्रयास सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो पर नहीं अपितु समूचे आर्य जगत पर किया गया है। ऐसे असामाजिक तत्वो का यह कुकृत्य घोर निन्दनीय है और दूषित भावना से किया गया है। यह अंतरङ्ग सभा ऐसे तत्वों की घोर निन्दा करती है और सब सम्मति से आर्य जनता से अपील करती है कि वे इस प्रकार के दुष्प्रचार से विचलित न हों और आर्य समाज के कार्य मे उत्साह पूर्वक लगे रहे।

मुस्लिम युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश
मेराज जहाँ से अलका सक्सेना

दिनांक २६-५-८८ को आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ मे श्री बलराम गोविन्द अधीक्षक विधिक एवं भू-सम्पत्ति विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के विशेष सहयोग से एक मुस्लिम युवती मेराज जहाँ आयु २२ वर्ष ने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। इसका नाम अलका सक्सेना रखा गया। शुद्धी संस्कार आ० स० गणेशगंज मे सम्पन्न हुआ। इसका शुभ विवाह संस्कार श्री विमलकुमार सक्सेना आयु २६ वर्ष से सम्पन्न कराया गया। उपस्थित सभी बन्धुओं ने वर और वधू को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

—सार्वजनिक इन्टर कालेज, झालू [बिजनौर] में सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल शिक्षण शिविर संचालित हो रहा है। इसमे प्रशिक्षण पाने हेतु चरित्रवान स्वस्थ नवयुवक आमन्त्रित हैं। लिखें—

पूर्ण प्रकाश मित्तल संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल नजिबाबाद, बिजनौर

संकल्प

(पृष्ठ ४ का शेष)

संकल्पी होता है, वह शक्ति, कुशलता, सुख, विद्या एवं लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है। किसी कवि ने कहा है कि 'पुसा विनिश्चये कृते देवाः सहायता यान्ति' अर्थात् दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति की दिव्य गुण एवं देवगण सहायता करते हैं।

अच्छे एवं दृढ़ संकल्प वाले मनुष्य विरले होते हैं। वे ही आर्य कहलाते हैं। इन्हीं के तपरूपी स्नेह से सत्क्रांति की लौ प्रज्वलित रहती है। इनका जीवन यज्ञमय होता है। ऐसे जीवन हेतु आवश्यक संकल्प निम्न लिखित है—

(१) यम-नियम।
(२) पञ्च महायज्ञ।
(३) जागरण मन्त्र।
(४) शयन मन्त्र।
(५) संगठन सूक्त।
(६) आर्य समाज के नियमोद्देश्य।

★

निर्वाचन

आर्य स्त्री समाज लोहामंडी कानपुर
प्रधाना श्रीमती शशिकान्ता जी शास्त्री,
मन्त्राणी श्रीमती स्वर्ण कुमारी जी अरोड़ा
कोषाध्यक्षा श्रीमती शीलवती जी सक्सेना

आर्य समाज लोहामंडी कानपुर
प्रधान श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री,
मन्त्री श्री बशीलाल जी
कोषा० प्रह्लाद राय जी

आ० स० चन्द्रनगर, [आलमबाग] लखनऊ
प्रधान श्री सोहनलाल शर्मा
मन्त्री श्री सोमदत्त बाथवा
कोषा० श्री बलवन्त सिंह चावला

आ० स० दादों [अलीगढ़]
प्रधान श्री लाला देवीप्रसाद आर्य
मन्त्री कुंवर चन्द्रपाल सिंह आर्य
कोषा० श्री शिशुपालसिंह आर्य

आर्य विरक्त [वानप्रस्थ सन्यास]
आश्रम ज्वालापुर [सहारनपुर]
प्रधाना माता पुष्पावती जी
मन्त्री श्री गुलशन राय [सौम्य मुनि]
कोषाध्यक्षा माता शान्ति शर्मा

आ० स० देहरादून

आ० स० टाण्डा अफजल [मुरादाबाद]
प्रधान श्री बुद्धिराम वर्मा
मन्त्री श्री सत्यपालसिंह आर्य
कोषा० श्री छत्तरसिंह आर्य

वैदिक साधन आश्रम नालापानी [रजि०] तपोवन, देहरादून
प्रधान श्री दलीप जी
उप प्रधान श्री यशपाल आर्य
मन्त्री श्री देवदत्त बाली जी
कोषा० श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य

आ० स० सिकार शाखा पो० ममवाली [रामपुर]
प्रधान श्रीराम स्वरूप आर्य विशारद
मन्त्री श्री अभय स्वरूप आर्य ऐडवोकेट
कोषा० श्री ओम प्रकाश आर्य

आ० स० एटा
प्रधान श्री प० सत्येन्द्रनाथ वेदाचार्य
मन्त्री श्री गौरीशंकर वेदाचार्य
कोषा० श्री रघुनाथसिंह जी

आ० स० हुठिया [फर्रुखाबाद]
प्रधान श्री कृष्णचन्द्र जी
मन्त्री श्री कृष्ण कुमार जी वैद्य
कोषा० श्री जगदीश प्रसाद जी

आ० स० बैर [अलीगढ़]
प्रधान श्री बनवारी लाल गर्ग
मन्त्री श्री दिनेशचन्द्र आर्य
कोषा० श्री रामकुमार आर्य

आ० स० छोटी सादड़ी जिला चित्तौड़गढ़ [राजस्थान]
प्रधान श्री वृद्धिशंकर जी उपाध्याय
मन्त्री श्री विनयचन्द्र
स्त्री समाज साकेत (मेरठ)
प्रधाना श्रीमती सुशीलासिंह
मन्त्राणी श्रीमती सरोज आर्या
कोषाध्यक्षा श्रीमती कमला शर्मा

आ० स० लालगंज रायबरेली
प्रधान डा० शकुनचन्द्र गुप्त
मन्त्री श्री श्रीराम यादव एम० ए० बी० एड्०
कोषा० श्री भगवती प्रसाद गुप्त

आ० स० आवलगढ़
प्रधान श्री रामप्रसाद
मन्त्री डा० रमनीनाथ
कोषा० ओम्प्रकाश शास्त्री

आ० स० मऊनाथ भंजन
प्रधान श्री रामचन्द्रसिंह
मन्त्री श्री द्विवेन्द्र प्रसाद
कोषा० श्री रामबहादुर

आ० स० कोपागंज
प्रधान श्री मधुप्रसाद
मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य
कोषा० श्री सतीशचन्द्र

आ० स० चोली
प्रधान श्री देवन प्रसाद
मन्त्री श्री सुरेशा मिश्र शास्त्री
कोषा० श्री भद्रदत्त आर्य

आ० स० अकरौलिया
प्रधान श्री मुन्नीलाल
मन्त्री श्री मिश्रीलाल
कोषा० श्री हौसला प्रसाद

आ० स० रानी की सराय
प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री श्री रामचरन सेठ
कोषा० श्री रामकृष्ण आर्य

आ० स० सासनी द्वार, हाथरस
प्रधान श्री शिवदेव जी शर्मा ऐडवोकेट
मन्त्री श्री बालमुकुन्द दीक्षित
कोषा० श्री ओम प्रकाश जी वैद्य

आ० स० मन्दिर पुरानी मण्डी, फीरोजाबाद [आगरा]
प्रधान श्री शंकरलाल जी शर्मा
मन्त्री श्री ओंकारदत्त आर्य सिद्धांत शास्त्री
कोषा० श्री प० प्रेमनारायण शर्मा

आ० स० आगरा हींग की मण्डी, आगरा—१
प्रधान श्री किशनलाल गर्ग
मन्त्री श्री पूरनचन्द जी
कोषा० श्री सतीशचन्द्र जी

जि०आ० उपप्रतिनिधि सभा गोण्डा
प्रधान श्री बी० ऐस० मल्होत्रा
वरिष्ठ उपप्रधान श्री बलराम गोविन्द
मन्त्री श्री आनन्द उपमन्यु
कोषा० श्री सेठ सुन्दर दास जी

आ० स० मारहरा [एटा]
प्रधान श्री आस करन दास
मन्त्री डा० छोटेराम वर्मा
कोषा० श्री भूपालसिंह

आ० स० समसपुर [एटा]
प्रधान श्री हरप्रसाद द्विवेदी
मन्त्री डा० प्रद्युम्नेश शास्त्री
कोषा० श्री उजागर सिंह

आ० स० देवरी प्रहलादपुर [एटा]
प्रधान श्री लाखन सिंह आर्य
मन्त्री श्री अमारसिंह
कोषा० श्री बाबूराम

जिला सभा एटा
प्रधान श्री महीपालसिंह शास्त्री
मन्त्री श्री देवराज शास्त्री
कोषा० श्री गौरीशंकर वैद्य

आ० स० कासगंज
प्रधान श्री बिहारीलाल
मन्त्री श्री मुन्नालाल आर्य
कोषा० श्री दिनेश चन्द्र बिड़ला

स्त्री आ० स० कासगंज
प्रधाना श्रीमती पुष्पारानी
मन्त्राणी ,, विदुषी देवी
कोषा० ,, शान्ती देवी

आ० स० नगला कटोला [एटा]
प्रधान श्री कल्याणसिंह आर्य
मन्त्री श्री हरीशंकर
कोषा० श्री वीरपाल सिंह

आ० स० माधूपुर [एटा]
प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री श्री लाखन सिंह आर्य
कोषा० सुरेन्द्र सिंह

आ० स० घुमरी ऐटा
प्रधान श्री दयासिंह आर्य
मन्त्री श्री रामप्रसाद आर्य
कोषा श्री रामऔतार सिंह

आ०स० हिम्मतपुर काकामई एटा
प्रधान श्री रामचन्द्र सिंह
मन्त्री श्री रामवीर सिंह
कोषा श्री वासुदेव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजीपुर द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम

१४, १५ मई अगथऊ १६ मई बद बिलवार नगर २०, २१ २२ मई अमाड़ी २३' २४ मई कुसुमपुर २५, २६, धमौता २७ २८ २९ मई देवरिया ३० मई हरपुर ३१ मई १ जून पचरन।

—दैनिक यज्ञो तथा साप्ताहिक सत्संगों में पधार कर धर्म लाभ उठाइए। प्रत्येक पर्व आर्य समाज में धूमधाम से मनाया जाता है। यज्ञों तथा संस्कारों के लिए सम्पर्क करें। आ० स० देहरादून मन्त्री

निर्वाचन जनपद आजमगढ़

आ० स० लालगंज
प्रधान श्री गिरधारी लाल
मन्त्री श्री मुरारीलाल
कोषा० राजाराम

आ० स० मेहनगर
प्रधान श्री ब्रह्मदेवराय
मन्त्री श्री बाबूराम
कोषा० श्री किशोरीलाल

आ० स० फूलपुर
प्रधान श्री बाकेलाल
मन्त्री डा राजेन्द्र आर्य
कोषा० श्री कृष्ण मोहन आर्य

आ० स० सरायमीर
प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ पाण्डे
मन्त्री श्री युधिष्ठिर प्रसाद
कोषा० श्री अवधेश कुमार

आ० स० जोबतपुर
प्रधान श्री गोपाल दास
मन्त्री श्री रामचरनसिंह

आ० समाज सराया
प्रधान श्री इन्द्रजीतसिंह
मन्त्री श्री बरसाती सिंह
कोषा० श्री देवनसिंह

आ० स० अम्बारी
प्रधान श्री दयाराम
मन्त्री श्री हरिवंश प्रसाद

आ० उपप्रतिनिधि सभा जनपद (आजमगढ़)
प्रधान श्री ब्रह्मदेवराय
मन्त्री श्री गोविन्द दास एडवोकेट
कोषा० श्री ओमप्रकाश जी

— घोसिया । पो० औराई जि० वाराणसी में आर्य समाज स्थापना दिवस घोसिया बाजार में आर्य समाज का वार्षिक उत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया । इसमें श्री आशा राम जी गाजियाबाद श्री वीरेन्द्र जी गाजीपुर आदि ने प्रवचन किये तथा श्री महानन्द के भजनों का प्रभाव पड़ा ।

शोक संदेश

आर्यसमाज सरधना (मेरठ) के वरिष्ठ सदस्य एवं भूतपूर्व प्रधान तथा मन्त्री श्री आशाराम जी का उच्च रक्तचाप के कारण दिनांक २५-५-८८ ई० को निधन हो गया । वे इस क्षेत्र के प्रमुख आर्य समाजी और समाज के मन्त्री थे । आर्य समाज के अतिरिक्त शिक्षा संस्थाओं में भी उनका प्रमुख योगदान था । वे इस गाँव के इन्टर कालेज के प्रबन्धक थे ये प्रभु से दिवंगत आत्मा को शांति एवं पारिवारिकजनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है ।

सभा मन्त्री

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज गोनापुर [पुखरायां] कानपुर देहात का चुनाव दि० १५-४-८८ को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ प्रधान श्री गंगागोपाल आर्य व मन्त्री डा० गयाप्रसाद शास्त्री चुने गए ।

गयाप्रसाद शास्त्री मन्त्री आर्य समाज गोनापुर कानपुर

आ० स० बढ़ापुर बिजनौर
प्रधान श्री प्रेम स्वरूप जी गुप्त
मन्त्री श्री कृष्णऔतार

वेदमन्दिर सत्संग मण्डल चाँदपुर जनपद बिजनौर
प्रधान श्री उदयवास जी
मन्त्री श्री सुभाषचन्द्र भाटिया
कोषा० श्री देवदत्त बजाज

कन्या गुरुकुल हरद्वार

पोस्ट कनखल [जिला सहारनपुर] उत्तर प्रदेश के सुरक्षित छात्रावास, उत्तम भोजन व्यवस्था तथा धार्मिक वातावरण में कक्षा १ से १४ वीं तक कन्याओं को शिक्षित कराने के लिये सम्पर्क करें । प्रवेश प्रारम्भ हैं । —आचार्या

दयानन्द कन्या विद्यालय खुल गया

आ० स० पुखरायां कानपुर देहात द्वारा दयानन्द कन्या विद्यालय आ० स० पुखरायां कानपुर देहात १ मई ८८ से प्रारम्भ हो गया है अच्छे दाखिले हो रहे हैं इस वर्ष ६-७-८ कक्षाएं चले हैं ५ कमरे तैयार हो गए हैं सबसे अधिक धन की सहायता श्री ओमप्रकाश आर्य अध्यक्ष जिला उपप्रतिनिधि सभा द्वारा प्राप्त हुई है वही विद्यालय के अध्यक्ष भी हैं प्रबन्धक श्री प्रभुदयाल सिंह रिटायर्ड प्रिंसपल इण्टर कालेज बरौर सर्वसम्मति से चुने गए हैं ।

गयाप्रसाद शास्त्री उपप्रधान जिला सभा

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible] भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 44998 [illegible]
[illegible] एल० डब्लू/एन पी [illegible]
[illegible] ५
५ जून रविवार १९८३ ई०

आर्य मित्र

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

तुमको प्रणाम

प्रा० [illegible] पानीपत

ओ शुभ्र हिमालय शृंग तुल्य उज्ज्वल महान
गम्भीर परम पावन चरित्र गंगा समान

ओ [illegible] साकार, दिव्य जीवन अनूप
[illegible] के लिए उग्र विद्रोह रूप

ओ दया अहिंसा सत्य न्याय के [illegible]
ओ अबला दीन अनाथ दलित के [illegible]

ओ [illegible] स [illegible] विजलियों के [illegible]
ओ प्रखर तेज में सूर्य व क्षमा से [illegible]

[illegible] परिव्राट ओ ब्रह्मचारि
[illegible] स्थान व कोपीन धारि

ओ जन हित निज जीवन अर्पित करने वाले
विष [illegible] पर जोड़ा करने वाले

ओ [illegible] ओ [illegible] ओ [illegible]
युग पुरुष हमारा युग युग तक तुमको प्रणाम

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज [illegible]पुर ([illegible]) के समस्त [illegible] श्री [illegible] जी आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि-सभा, [illegible] की पूज्य माता जी के आकस्मिक निधन की सूचना पाकर अत्यन्त दुःखी हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व शोकाकुल परिवार को इस अपार क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए [illegible] भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible]
एस० पी० [illegible] ([illegible]) [illegible], लखनऊ में [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।८७ | लोकसभा पत्र सं. ७।१६-१-८८

ज्येष्ठ कृष्ण १३, रविवार, संवत् २०४२ वि०, दिनांक १२ जून १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सहायक सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	१४

आततायी को दण्ड

पुनः कृत्यां कृत्याकृते हस्तगृह्य परानय ।
समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ॥ अथर्व ५-१४-४

निर्दोष प्राणियों की हत्या करने वालों की साजिश को समूलतः नष्ट कर देने के उपायों का प्रयोग दर्शाते हुए पवित्र वेदवाणी राज्य व्यवस्था करने वालों का आह्वान करते हुए कहती है—" (कृत्याकृते) परप्राणघाती उपाय करने वाले समाज द्रोही, राष्ट्रद्रोही व्यक्तियों अथवा समूहों की (कृत्यां) साजिश को (पुनः) बार बार (हस्तगृह्य) हाथों से पकड़ कर अर्थात् उन साजिश करने वालों को और उनके केन्द्रों, अड्डों को पकड़ पकड़ कर ढूंढ़, ढूंढ़ कर (परानय) दूर समाज से पृथक, बन्दीघर में लाकर रख और उन्हें (अस्मै) (समक्षम्) हमारी आंखों के सामने ही, अर्थात् सार्वजनिक तौर पर (आ धेहि) स्पष्ट रूप से उपस्थित कर हमें दिखा कि (यथा) किस प्रकार से (कृत्याकृतं) ऐसा जघन्य कृत्य करने वालों को (हनत्) मृत्यु दण्ड दिया जाता है ।

भावार्थ—निर्दोष प्राणियों की हत्या करने वालों तथा उनके केन्द्रों (अड्डों) को ढूंढ़-ढूंढ़कर, पकड़-पकड़ कर बन्दीगृह में रखने तथा उन्हें सार्वजनिक तौर पर मृत्युदण्ड दिये जाने की व्यवस्था का उल्लेख इस वेद मन्त्र में मिलता है ।

आतंकवादियों के पास प्रक्षेपास्त्र और रिमोट कंट्रोल द्वारा बम विस्फोट की प्रणालियाँ मौजूद

'आपरेशन ब्लैक थंडर' के दौरान पकड़े गये आतङ्कवादियों ने अनेक सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किये हैं । उनके पास अत्याधुनिक शस्त्रों की कमी नहीं है तथा बम बनाने तथा उनका विस्फोट करने की आधुनिक जानकारी भी उनके पास है ।

एक उच्च पदस्थ पुलिस सूत्र ने बताया कि इन आतङ्कवादियों ने पूछताछ के दौरान बताया कि उनके पास प्रक्षेपास्त्र, अनेक प्रक्षेपक तथा रिमोट कंट्रोल प्रणाली युक्त आधुनिक तकनीक से विस्फोट करने की जानकारी भी है । सूत्र ने कहा कि राकेटों की बरामदगी के लिये छापे मारे गये लेकिन कोई सफलता नहीं मिली । यद्यपि 'आपरेशन ब्लैक थंडर' में गुरदासपुर और अमृतसर जिलों में हाल के हत्या काण्डों के लिए जिम्मेदार अनेक आतङ्कवादी पकड़े गये लेकिन सैकड़ों अभी भी फरार हैं । इन हत्याकाण्डों में सौ से अधिक निर्दोष लोग मारे गये थे । पूछताछ में एक बड़ी बात यह भी पता चली कि आतङ्कवादियों ने अपनी एक 'यातना शाखा' भी बना रखी थी जिसमें स्वर्ण मन्दिर परिसर की परिक्रमा के कमरा नम्बर १७ में यातनायें देकर अनेक लोगों को मौत की नींद सुला दिया गया ।

सूत्र ने बताया कि 'यातना शाखा' में करीब आधा दर्जन आतङ्कवादी थे । इस यातना गिरोह ने लोगों की लोहे की छड़ों और चाकुओं से निर्दयता से पिटाई की, बारबार हथियार से गोदकर उनमें नमक छिड़क और यहां तक बिजली के झटके लगाकर भी लोगों को यातनायें दीं । इस तरीके से कुछ महिलाओं समेत कम से कम आधा दर्जन युवाओं की हत्या की गई । ये मृतक विकटस्थ गांवों के थे ।

★ ★

('पंजाब केसरी' से साभार)

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

ज्येष्ठ कृष्ण ११ संवत् २०४५, रविवार १२ जून १९८८.
दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

केवल १० साल

वन्दना के स्वर

—: ★ :—

मेरे देव! प्राणों के प्राण!! सुना है तुम्हारे कान ही नहीं हैं, तो फिर मेरी पुकार सुनोगे कैसे? सुना है तुम्हारे हाथ भी नहीं हैं, तो फिर मेरी रक्षा करोगे कैसे? लेकिन सुना है तुम्हारे पास कुछ न होते हुये भी सब कुछ है!!!। तुम जो चाहो कर सकते हो......पर अपनी इच्छा से, मेरे कहने से नहीं, क्योंकि मैं पापी हूं न, तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन करने वाला, दुरितों से भरा हुआ विषकुम्भ???। मगर पूछ तो सकता ही हूं—"तुमने मेरे ऋषि को इतनी जल्दी क्यों उठा लिया?"। क्या १० साल, केवल १० साल, और रुक नहीं सकते थे। तुम तो कालों के काल महाकाल हो, तुम्हारे लिये १० साल क्या हैं, रुक जाते तो देखते तुम्हारी दुनियां कितनी साफ-सुथरी, स्फटिक मणि के समान चमकती दमकती होती। और हां, उसे तुम्हीं ने तो भेजा था, वह आया—टंकारा की मिट्टी खाकर कुछ बड़ा हो गया, कलकलनिनादिनी सरिता का पानी पीकर कुछ स्वस्थ हो गया। शिवरात्रि को रतजगा करके शिव का भक्त भी हो गया और चूहों को अवगुण्ठन करते देखकर बड़ा तार्किक हो गया। पिता से पूछता है—"शिव शिव??? पिता जी—यह कैसे शिव हैं, चूहों को नहीं हटा सकते, मुझे तो यह त्रिशूल कागज का बना लगता है। तड़ाक से कोमल कपोलों पर एक चांटा पड़ा—खबरदार! जो ऐसी बातें कीं तूने। देखता नहीं—कालों के काल महाकाल विकराल त्रिशूलधारी शिव को ऐसी बातें कहता है"। जा घर जाकर सो जा, रातभर का जगा है, बुद्धि विकृत हो गई है। पर वहां नींद कहां......घर जाकर मां की गोद में सुबकते हुए पूछने लगा—मां?—"तुम्हीं बताओ वे कौन हैं, चूहों को क्यों नहीं हटा पाये?"—मैं तो रात भर सोया नहीं, कहीं व्रत भंग न हो जाय...और फिर एक दिन उठ खड़ा हुआ तूफान की तरह, आंधी की तरह।

क्या तुम समझते हो वह बच्चा था। कहीं बच्चा ऐसी बातें सोचता है। फिर कौन था वह—बताओ?। लेकिन तुम बताओगे कैसे—सुना है तुम्हारे वाणी ही नहीं है। पर मैं जानता हूं—वह कौन था... सुना है गुजरात में तूफान बहुत आते हैं...समुद्र है न—लहलहाता हुआ पानी का अथाह सागर—ऐसा ही हृदय था उसका करुणा और दया से लहलहाता हुआ। स्फटिक मणि के समान चरित्र का दहकता हुआ अंगारा। वेदों का अगाध, अतुलनीय, अनुपमेय, पण्डितों का पण्डित और अद्भुत वक्ता।

...और फिर उसकी वाणी सुनकर दुनियां स्तब्ध रह गई। पाखण्डों के पत्ते पीले पड़ गये, मुरझा गये, अपनी मौत मर २ कर गिरने लगे। अब कोमलकिसलयकलिकायें फूट पड़ीं अपनी मादक सुगन्ध बिखेरती, तुम्हारे इस विश्व उपवन में। अज्ञान की अन्धेरी तमिस्रा विदा हो गई प्रभात की स्वर्णिम किरणें क्षितिज पर अठखेलियां करने लगीं। पवित्र वेदवाणी चारों दिशाओं में झंकृत और गुञ्जरित होने लगी। कैसी सुन्दर दुनियां बना रहा था वह। पाप तमिस्रा से कहीं बहुत दूर, श्वेत धवलमयी पुण्यसलीलामय सरिता बहा रहा था वह, पर तुमने बीच में ही बुला लिया. हम कैसे रोक सकते थे, रोकने का अधिकार ही तुमने हमें कहां दिया है। पर वह है कहां? कहीं तो होगा ही—तुम्हारी इतनी बड़ी दुनियां में। मोक्ष में तो हो ही नहीं सकता क्योंकि अकेले मोक्ष सुख भोगना उसे पसन्द ही नहीं था। प्राण में विष देने वाले आततायी को उसने यह कहकर छुड़ा दिया था—"मैं संसार को कैद कराने नहीं, मुक्त कराने आया हूं"।

चतुरचितेरे?

अच्छा माली भेजा तुमने, हमें सम्मोहित करके गायब हो गया... तेरी इच्छा पूर्ण हो...वह तो बहाना था हमें झुठलाने का.. जाना चाहता था क्योंकि तुम उसे बुला रहे थे। और हमारी इच्छा का क्या होगा? क्या हमारी इच्छा अपूर्ण ही रहेगी...हम जानते हैं उसे हमारे बीच पापियों के बीच ज्यादा रखना तुम्हें पसन्द नहीं था—क्योंकि तुम हमसे नाराज थे, हमारे कर्मों से नाराज थे, सदियों से पत्थर पूजते पूजते हम बुद्धिहीन हो गये थे, तुम्हारी वाणी से विमुख होते जा रहे थे। अपने ही कलेजों के टुकड़ों पर, मां बहिनों पर, दीन दुखियों पर, बहुत जुल्म ढाये थे हमने। दुधमुंहे बच्चों को बरछी की नोक पर उछाला था हमने, तुम्हारा नाम लेकर। बेजुबानों को जिबह किया था हमने—रेत रेतकर, तुम्हारा नाम लेकर। सती साध्वियों को आग में झोंक दिया था हमने—तुम्हारा नाम लेकर— इसलिए तुम नाराज थे और तुमने उसे बहुत जल्दी बुला लिया।

हे अनाथों के नाथ?

आज हम फिर अनाथ हैं। अन्धकार बढ़ता आ रहा है। हम फिर भटक जायेंगे। क्या करो. रोशनी न भेजी तो तुम्हारा नाम सार्थक कैसे होगा। दुनियां हम आर्यों पर फिर अट्टहास करेगी—बड़ा अपने को आर्य पुत्र कहते हैं, वेदों का स्वाध्याय करते हैं। कर्म देखो—जरा सा पद और लिप्सा आई नहीं कि बाहें समेट लेते हैं। "संगच्छध्वम्" बजता रहे... बजता रहने दो। और हम जानते हैं तुम सब देख रहे हो...बिना आंखों के, सब कुछ जान भी रहे हो, क्योंकि दिल में बैठे हो न, फिर भी कुछ नहीं करते—कैसा हमारा तुम्हारा नाता है। मित्र का नाता तो निभाना ही पड़ेगा—तुलसीदास ने कहा है—'आपरकाल परखिए चारी, धीरज धर्म मित्र अरु नारी। इसलिए हमारी पुकार सुनो—इस म्रियमाण आर्य जाति में प्राण फूंकने उसे एक बार फिर भेज दो सिर्फ १० साल के लिए मित्रवर? यही तुम्हारा हम आर्यों पर उपकार है और यही तुम्हारा धर्म। —भावप्रस्तुति—

—इन्द्रदेव पाठक

•

पं० विक्रमादित्य का सॅन्यास आश्रम में प्रवेश, स्वामी वेदबोध बने

'आर्यमित्र' तथा 'श्रेष्ठ मानव धर्म' के भूतपूर्व सम्पादक, और वर्तमान में 'वेद सविता' के सम्पादक, श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' ने रविवार १५ मई को महर्षि दयानन्द की निर्वाण नगरी, अजमेर में (स्वामी) 'वेदबोध' नाम से संन्यासाश्रम में प्रवेश किया है। अब आप सर्वात्मना वेद प्रचार में अपनी शक्ति का सदुपयोग करेंगे। आर्यमित्र परिवार की बधाई।

—सम्पादक

अध्यात्म सुधा

वैदिक उपासना

(ईश्वर का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के साधन)

[श्री पं० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

(गतांक से आगे)

प्रार्थना के क्षेत्र मे यह भी प्रश्न उठता है कि प्रार्थना कैसी होनी चाहिए ? शास्त्रकार कहते हैं प्रार्थना सब हित की होनी चाहिए । ऐसी प्रार्थनाएं जिनमें किसी का अहित भगवान् से मांगा गया हो कभी भी स्वीकार नहीं होती । दो उपासक यदि एक दूसरे की हानि की प्रार्थना परमपिता परमेश्वर से कर रहे हो तो वह परमात्मा किसकी प्रार्थना को स्वीकार करेगा । निश्चय ही ये सब प्रार्थनाएं व्यर्थ है और अस्वीकार करने योग्य है । प्रार्थना का बहुत बड़ा लाभ है । सर्वप्रथम प्रार्थना से अहंकार की निवृत्ति होती है । भक्त जब कुछ-कुछ परमात्मा के गुणों को अपने जीवन मे धारण करने लगता है जहां परमात्मा के गुण उसके जीवन मे प्रवेश करने लगते हैं वहां कभी-कभी रजोगुण और तमोगुण के प्रभाव से भक्त अभिमान करने लगता है कि यह जो कुछ हुआ है वह मैंने किया है । परन्तु उसका यह अभिमान चूर-चूर हो जाता है जब पुरुषार्थ करते-करते थक कर और हार कर वह सब शक्तिमान् भगवान् के सामने हाथ पसारने लगता है । प्रार्थना से अभिमान की निवृत्ति और प्रार्थना स्वीकृत होने पर परोपकार एवं जन कल्याण का सम्पादन होता है । व्यक्ति का हृदय सबके प्रति प्रेम और प्यार से भर जाता है वह अपने लिए भगवान् से कुछ नहीं मांगता अपितु सबके हित की प्रार्थना वह भगवान् से करता है । भक्त का हृदय पवित्र हो जाता है और प्रार्थना की स्वीकृति से उसे बल मिलता है कमजोरी दूर होती है और उसके जीवन मे शक्ति का संचार होता है । यह ही वैदिक प्रार्थना का सच्चा स्वरूप है ।

भक्ति का तीसरा अंग है 'उपासना' । उप का अर्थ है समीप और आसन का तात्पर्य है बैठना । उपासना शब्द का अर्थ हुआ परमात्मा के समीप बैठना । जब हमें गर्मी सताती है तो हम लोग कूलर, फ्रिज तथा वातानुकूलन के द्वारा जल की उपासना करते हैं । गर्मी तुरन्त दूर भाग जाती है । जब हमें सर्दी सताती है तो हम हीटर तथा वातानुकूलन के द्वारा अग्नि की उपासना करते हैं । सर्दी एकदम भाग जाती है। जब जीवात्मा जन्मजन्मान्तर से आवागमन के चक्र मे पड़कर अत्यन्त दुःखों का अनुभव करता है जब वह आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनो प्रकार के तापो की दहकती हुई अग्नि मे जलने लगता है तब केवल और केवलमात्र सच्चिदानन्द भगवान् की उपासना ही उन तीनो प्रकार के दुःखो और तापों से छुटकारा दिला सकती है । उस आनन्द घन की उपासना से उपासक को आनन्द की अनुभूति होने लगती है और उसके तीनो ताप दूर हो जाते हैं । परमात्मा की उपासना करते-करते उपासक को वह शक्ति प्राप्त हो जाती है कि वह पहाड़ जैसे दुःख को तिनके के समान समझने लगता है । वह हंसते-हंसते धर्म जाति और देश पर बलिदान हो जाता है । यह इतना बड़ा उत्सर्ग उस परमपिता परमात्मा की उपासना से ही प्राप्त हो सकता है । जो भक्त अपने पीछे सर्वशक्तिमान् परमात्मा को समझता है वह बड़े-बड़े तूफानो से अकेला ही टक्कर लेता है और संसार मे एक मापदण्ड स्थापित कर देता है जिससे छोटे-छोटे उपासक उससे प्रेरणा लेकर उसकी राह पर चलते रहते हैं । यह है उपासना का सच्चा स्वरूप ।

अब यह उपासना कैसे करनी चाहिए जिससे निरन्तर सब प्रकार की शक्ति उपलब्ध होती रहे । इस पर प्रकाश डालते हैं । उपासना के संबंध मे कुछ मौलिक निम्नलिखित प्रश्न हैं । जिनके विषय मे जानना जरूरी है ।

(१) संयम (२) आसन, (३) प्राणायाम (४) ध्यान की विधि संयम का उपासना मे मुख्य स्थान है । जब मन पवित्र होने लगता है तो उसमें शक्ति एवं एकाग्रता आने लगती है । यह मन कैसे पवित्र हो इसके लिए योग दर्शन मे यम और नियमों को पालने का उल्लेख किया गया है । यम और नियम के पालने से मन को ऊर्जा, पवित्रता, शान्ति और उपासना की भूमिका प्राप्त होती है । आइए ! यम और नियमों पर थोड़ा-थोड़ा संक्षेप से विचार करें । अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह ये पांच यम माने गये हैं । इसी प्रकार से शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम माने गये हैं । इनके पालन करने से मन मे संकल्प शक्ति जागृत होने लगती है । मन पवित्र, एकाग्र और निरुद्ध होने लगता है । ये यम और नियम उपासना की भूमिका निमित्त हैं । मन के पवित्र होने से ही तो मन एकाग्र होने मे समर्थवान् हो सकता है । अब थोड़ा-थोड़ा इन दसो पर हम दृष्टिपात करें ।

(क) अहिंसा-सर्वथा, सर्वदा प्राणीमात्र के लिए अनद्रोह की भावना अहिंसा कहलाती है । योगदर्शन मे इस भाव को प्रकट करने वाला एक बहुत ही सुन्दर सूत्र है-"सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोह अहिंसा" । व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है । उसके चारों ओर जैसा वातावरण होगा उसका प्रभाव उसके मन पर पड़ेगा । परिवार मे और समाज मे सब के अनभिद्रोह की भावना जब हृदय मे स्थान लेलेती है तब व्यवहार मे माधुर्य, सबका कल्याण, सर्वभूतहित की भावना प्राणि मात्र के प्रति प्रकट होने लगती है । उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप बदले में भक्त को सबका प्रेम, सबकी सहानुभूति और सबकी सहायता प्राप्त होने लगती है । हिंसा अशान्ति का घर है तथा अहिंसा शान्ति का केन्द्र बिन्दु । अहिंसा से सब भूत हित मे रत रहने की भावना चारो तरफ फैल कर समस्त वातावरण को मधुमय बना देती है । भक्त का मन प्राणिमात्र के कल्याण की बात सोचने लगता है ।

(ख) सत्य के मनसा-वाचा और कर्मणा धारण एवं पालन करने से एक अद्भुत शक्ति और उत्साह की उपलब्धि जीवन मे होती है । मन शक्ति से भरपूर हो जाता है । परमात्मा का प्रकाश मन को आलोकित कर देता है । आलोकित मन परमात्मा के ध्यान मे लग जाने मे सक्षम होने लगता है ।

(ग) अस्तेय-चोरी त्याग । किसी की वस्तु का प्रयोग स्वामी से बिना पूछे और बिना बताए करना यह स्तेय (चोरी) है । स्तेय समाज मे दुःख, कष्ट, क्लेश, व्याकुलता और अशान्ति को जन्म देता है और अस्तेय वृत्ति के कड़ाई से पालने से समाज मे शान्ति का उदय होता है । वह चारों तरफ फैली शान्ति भी मन को शान्त करती है ।

(क्रमशः)

ब्रह्मचर्य की महत्ता

[डा० शकुनचन्द आर्य प्रधान आर्य समाज लालगंज जिला रायबरेली]

भारतीय संस्कृति मे ब्रह्मचर्य का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए ही भारतीय साहित्य मे इसका बहुत ही गुणगान किया गया है। मानव जीवन को जिन चार भागों मे विभाजित किया गया है उनमें से ब्रह्मचर्य प्रारम्भिक एवं जीवन की आधार शिला है। पूर्ण स्वस्थ्य रहने के लिए आहार एवं निद्रा के बाद ब्रह्मचर्य की आवश्यकता बताई गई है।

'ब्रह्मचारी कितने प्रकार के होते हैं' इस सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि 'ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है–'कनिष्ठ–से अभिप्राय उस ब्रह्मचर्य से है जो २४ वर्ष की आयु तक रखा जाता है, मध्यम जो ४४ वर्ष पर्यन्त रखकर वेदाभ्यास की आज्ञा देता है, उत्तम ब्रह्मचर्य से आशय उस ब्रह्मचर्य से है जो कि ४८ वर्षों तक रखा जाता है। उपरोक्त अवस्थाओं मे जो व्यक्ति ब्रह्मचारी या जितेन्द्रिय रह कर वेदाभ्यास करता है वह सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता है।

इसके अतिरिक्त वे भी ब्रह्मचारी हैं जो कि 'एक नारी ब्रह्मचारी' की लोकोक्ति के अनुसार विवाहित तो है परन्तु काम-वासना का उचित एवं सम्यक् उपयोग करते हैं यद्यपि उसका एकदम दमन नहीं करते है।

ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में महापुरुषों के विचार एवं उदाहरण

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत' के अनुसार ब्रह्मचर्य मृत्यु पर भी विजय करने वाला होता है। मानसिक सुख–शांति और दीर्घजीवन का सर्वोपरि साधन ब्रह्मचर्य ही है। उसके बिना स्वस्थ्य रहने की कल्पना ही व्यर्थ है। विद्याध्ययन में सफलता के लिए बौद्धिक तेजस्विता की आवश्यकता होती है जो कि ब्रह्मचर्य के बिना सम्भव नहीं है: एक ब्रह्मचारी प्रखर बुद्धि से युक्त, अद्भुत स्मरण शक्तिवाला, निरोगी, सुन्दर, सुडोल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। ब्रह्मचर्य पालन से असीम कार्य शक्ति बढ़ती है।

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो कि स्वयं आदर्श एवं आजन्म ब्रह्मचारी थे ब्रह्मचर्य का गुणानुवाद करते हुये इसे देश की उन्नति के लिये परम आवश्यक बतलाया है। उन्होंने अपने व्यावहारिक जीवन में ब्रह्मचर्य की शक्ति के कई बार उदाहरण एवं दृष्टांत प्रस्तुत किये हैं। ऐसे तो उनके जीवन में जो अद्भुत ऊर्जा थी अलौकिक प्राणशक्ति थी, मारक विषों को प्रभावहीन करने की क्षमता थी, कठोर से कठोर कष्टों को सहने की क्षमता थी, उन्होंने वेदों तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों की सार्थक व्यवस्था करने में सफलता प्राप्त की तथा देश मे सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति की, वे उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य के ही परिणाम थे। परन्तु उन्होंने अपने जीवन में व्यावहारिक रूप में इसके कई उदाहरण प्रस्तुत किये।

कहा जाता है कि एक बार जालन्धर के सरदार विक्रम सिंह ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के ब्रह्मचर्य पर सन्देह व्यक्त किया। उस समय तो स्वामी जी नहीं बोले परन्तु एक दिन जब सरदार जी दो घोड़ों की बग्घी को लेकर सैर को निकले तो चलते समय बग्घी के पहिये को स्वामी जी ने पीछे से पकड़ लिया, घोड़े बहुत चाबुक मारने पर भी एक कदम न बढ़ सके, घूम कर देखा तो पीछे स्वामी दयानन्द पहिये को हाथ से पकड़े हुए थे। इससे सरदार जी बहुत लज्जित हुये और उनको ब्रह्मचर्य का बल ज्ञात हो गया।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध ने अपने सम्यक् स्मृति के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य पर जोर देते हुये सुखी निरोगी जीवन के लिये ब्रह्मचर्य को आवश्यक माना है।

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने मुक्त एवं निर्वाण के लिए ब्रह्मचर्य को अतिआवश्यक ठहराया है। इसलिए उन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों में ब्रह्मचर्य को शामिल कर लिया था।

इसी प्रकार जगद्गुरु शंकराचार्य की हिन्दू धर्म की पुर्नस्थापना में सफलता, रामभक्त हनुमान की आश्चर्य जनक सफलताय, भीष्मपितामह द्वारा मृत्यु पर अधिकार का स्वेच्छा से शरीर त्याग, ईसा द्वारा ईसाई धर्म का प्रवर्तन, रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द द्वारा हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण योगदान ब्रह्मचर्य के ही चमत्कार थे। इसके अतिरिक्त यदि विवाहित होने के बावजूद वीर्य रक्षा को ब्रह्मचर्य का एक रूप मानलिया जाये तो राष्ट्रपिता महात्मागांधी, महात्माबुद्ध, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस आदि की सफलताओं का कारण उनके द्वारा अधिकाधिक ब्रह्मचर्य का पालन था।

राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने अपनी पुस्तिका 'आरोग्य की कुञ्जी' में ब्रह्मचर्य के विषय में लिखा है कि 'आरोग्य की बहुत–सी कुञ्जियां हैं और उनकी आवश्यकता है परन्तु उनमें से 'ब्रह्मचर्य' मुख्य है।

इसके विपरीत ब्रह्मचर्य न पालन करने तथा विलासिता के दुष्परिणाम भी हमारे इतिहास में विद्यमान हैं। यदि दिल्ली का अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान तत्कालीन राजपूत नरेश, रघुवंश का अन्तिम राजा अग्निवर्ण, बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला, अन्तिम मुगल बादशाह तथा लखनऊ के नवाब आदि विलासिता में न पड़कर वीर्य रक्षा करते तो हो सकता था कि भारत को दासता के इतने बुरे दिन न देखने पड़ते।

वर्तमान स्थिति में ब्रह्मचर्य (वीर्यरक्षा) की आवश्यकता

परन्तु दुख का विषय है कि देश का वर्तमान समाज विशेषतः नई पीढ़ी ब्रह्मचर्य की उपयोगिता एवं महत्व से अपरिचित है यह वर्तमान पाश्चात्य अंग्रेजी शिक्षा का परिणाम है जिसमें 'ब्रह्मचर्य' नाम की कोई वस्तु नहीं है। दुख का विषय तो यह है कि हमारी वर्तमान राष्ट्रीय सरकार जो कि गांधी जी का अनुयायी होने का दावा करती है, भी गांधी जी का ब्रह्मचर्य एवं नैतिकता सम्बन्धी शिक्षाओं को बच्चों तक पहुंचाने के बजाय टी० वी० फिल्मों एवं रेडियो द्वारा ऐसे विचारों को प्रोत्साहित एवं प्रसारित कर रही है जिससे अश्लीलता, कामुकता, अनैतिकता, स्वच्छन्द यौनाचार, तथा अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों को बढ़ावा मिल रहा है, 'खाओ पियो और मौज करो' की संस्कृति पल्लवित हो रही है जिससे स्वतः ब्रह्मचर्य भंग एवं वीर्य नष्ट हो रहा है। उपरोक्त स्थिति का ही परिणाम है कि इस समय वैज्ञानिकों का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ऋषि भक्त ठाकुर कर्णसिंह

(वीरेन्द्रकुमार आर्य सम्पादक, आर्य पुनर्गठन अजमेर)

राजस्थान के तत्कालीन राजे व रजवाड़ो का नैतिक एवं चारित्रिक पतन देख ऋषि ने अपने समाज सुधार कार्यक्रम मे इन्हे प्रमुखता दी थी। उनके प्रचार जीवन का अधिकांश समय राजस्थान मे व्यतीत हुआ। इन्हीं राजे और रजवाड़ो के सुधार हित ही १८८१ ई० मे ऋषि के जीवन का बलिदान हुआ।

ऋषिवर के इन सुधारवादी प्रचार का रजवाड़ो पर व्यापक प्रभाव पड़ा था और अनेक राजा, जागीरदार–ठिकानेदार उनके भक्त बन गये थे। बीकानेर के ठाकुर कर्णसिंह भी इनमें से एक थे।

ठाकुर कर्णसिंह महर्षि दयानन्द की भक्ति के रंग मे पूर्णतया रंग गये थे। उनके द्वारा १८९३ ई० मे प्रकाशित राजस्थान के क्षत्रियो के चाल–चलन पर एक सरसरी निगाह' नामक पुस्तक के मुख पृष्ठ पर उन द्वारा दिया दोहा इस सन्दर्भ मे विशेष उल्लेखनीय है–

राज त्रिलोकी को हमे मिलनो मे आसान।
गुरु दयानन्द सारो मिलनो कठिन महान॥

ऋषि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु हो जाने के कारण ठाकुर कर्णसिंह के समय बीकानेर आर्य समाजी गतिविधियो का एक प्रमुख सञ्चालन केन्द्र बन गया था। १८९४ ई० में पण्डित लेखराम 'आर्य मुसाफिर' की अगुवाई मे बीकानेर मे शुद्धि आन्दोलन भी चलाया गया था।

ठाकुर कर्णसिंह एक अच्छे प्रशासक थे। जयपुर महाराजा के अधीनस्थ रहकर उन्होने जरायम पेशा मीणा जाति का सुधार कर उसे सम्मान जनक जीविकोपार्जन व्यवसायो मे लगाया था। मीणों की सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए उन्होने अन्य कई रचनात्मक कदम भी उठाये थे।

एक सुशिक्षित व्यक्ति होने के कारण वे देश की स्वतन्त्रता का महत्व जानते थे। इसीलिये परोक्ष–अपरोक्ष रूप से वे क्रान्तिकारियो को सहयोग देते रहते थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय व केसरीसिंह बारहठ आदि क्रान्तिकारियां से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। कहा तो यहां तक जाता है कि केसरी सिंह बारहठ आदि क्रान्तिकारियों से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। कहा तो यहां तक भी जाता है कि केसरीसिंह बारहठ के गुप्त क्रान्तिकारी संगठन की एक बैठक बीकानेर की हवेली मे भी हुई थी।

ठाकुर कर्णसिंह शिक्षा प्रसार को समाज–सुधार का एक विशेष साधन मानते थे। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुये उन्होंने १८९१ मे बीकानेर मे 'ऐंग्लो वैदिक स्कूल' की स्थापना की थी। आर्य समाज के क्षेत्र में यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ठाकुर कर्णसिंह ने इस स्कूल में ऋषि दयानन्द प्रवर्तित गुरुकुल–पद्धति को अपनाया था। यहाँ वेद मन्त्रों द्वारा वैदिक प्रार्थना होती थी। स्कूल मे पढ़ने वाले समस्त छात्रों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता था छुआछूत ऊँच-नीच के भावो के लिये यहाँ कोई स्थान नहीं था। यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि अपने इकलौते पुत्र नरेन्द्र सिंह को उन्होंने जागीरदारों के बच्चो को पढ़ाने हेतु उपयुक्त समझे जाने वाले किसी अंग्रेजी स्कूल मे भर्ती न कराकर बीकानेर के "एंग्लो वैदिक स्कूल' मे ही भर्ती कराया था। ऋषि भक्ति का यह अप्रतिम उदाहरण है।

ठाकुर कर्णसिंह एक ऊँचे चरित्र के आदमी थे। सामन्तों मे आम पाये जाने वाले दुर्व्यसनो से वे कोसो दूर थे। देशभक्ति, समाज सेवा, दया-शीलता और परोपकार जैसे गुणो से वे समलंकृत थे। उनके इन्हीं गुणों को देखते हुए समाज ने उन्हे राजर्षि की उपाधि से अलंकृत किया था उनकी शिक्षा यद्यपि अंग्रेजी पद्धति पर आधारित मेयो कालेज मे हुई थी लेकिन उनके आचार-विचार पर पाश्चात्य दूषित विचारधारा का लेश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा था। चन्दन की भाँति वे सर्प रूपी विषैले वातावरण में रहते हुए भी उससे अछूते रहे थे। उनकी वेशभूषा पूर्णतया देशी थी।

ठा० कर्णसिंह की ऋषि भक्ति और उनके अनुकरणीय जीवन को देखते हुए अन्य ऋषि भक्त, राजे रजवाड़े उनकी तुलना मे बौने प्रतीत होते हैं। ऋषि के इस अनन्य भक्त जनसाधारण मे अपने असाधारण गुणो के लिए विख्यात ठाकुर कर्णसिंह का अल्पायु मे ही सन् १९११ ई० मे देहावसान हो गया।

★

ऐतरेय–शतपथ–निरुक्त सरल हिन्दी में

स्वाध्यायशील आर्य बन्धुओ को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान श्री आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री काव्यतीर्थ एम० ए० (अध्यक्ष विश्व वेद परिषद्, सम्पादक वेद ज्योति मासिक, लखनऊ)ने ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण के १–३ काण्डो और वेदाङ्ग निघण्टु निरुक्त का सम्पूर्ण भाष्य बड़ी सरल और सुबोध हिन्दी भाषा मे अनुवाद किया है। इस श्रम साध्य कार्य की पूर्ति करके श्रद्धेय आचार्य जी ने हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा की है वहाँ वैदिक साहित्य का अनुशीलन करने वाले बन्धुओ के मार्ग की बहुत बड़ी बाधा को दूर कर दिया है। मेरा वैदिक साहित्य से रुचि रखने वाले बन्धुओ से अनुरोध है कि वे इन ग्रन्थो का स्वाध्याय करके अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करें और मान्य आचार्य जी के श्रम को भी सफल करें। आर्य समाजो के अधिकारियो को भी अपने पुस्तकालयो के लिए इन ग्रन्थों को क्रय करके रखना चाहिए।

मूल्य ऐतरेय ब्राह्मण सम्पूर्ण	३०-००
शतपथ (का० १–२)	२०-००
निरुक्त सम्पूर्ण	३०-००

पता–वेदसदन, सी ८१७, महानगर, लखनऊ उ० प्र०
पिन २२६००६

शिवकुमार शास्त्री काव्य–व्याकरणतीर्थ
पूर्व सदस्य लोक सभा
एम ८७ साकेत, नई दिल्ली

बाल जगत

आर्य वीर उतिष्ठत जागृत !

[यतीन्द्रसिंह (आर्य) पुत्र श्री यशपालसिंह ग्राम मोहद्दीपुर डा० मण्डी धनौरा मुरादाबाद]

आज हिन्दू (आर्य , पर सब ओर से विभिन्न प्रकार से आक्रमण हो रहे हैं उसका सम्मान उसके जन्म सिद्ध अधिकार और यहां तक कि उसकी प्रिय मातृभूमि भी सुरक्षित नहीं हैं। देश में भी और बाहर भी हिन्दुओं के वंश नाश की योजनायें भयावह आकार ग्रहण करती जा रही हैं। परिवार नियोजन धर्मान्तरण साम्प्रदायिक दंगे आदि कारणों से औसतन २५००० हिन्दू प्रतिदिन घट रहे हैं। १९८१ की जनगणना की रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि ३०% से अधिक है हिन्दू जनसंख्या वृद्धि २४% प्रतिशत मात्र है ।

इसीलिए आज वक्त की पुकार है आर्य वीरों उठो और जागो तुम्हारे बिना इस भारत को कोई नहीं बचा सकता। अरे ! तुम में जो ताकत है जिसे प्रसिद्ध कवि जयशंकर त्रिपाठी ने निम्न पंक्तियों में दर्शाया है।—

जलती है आग जवानों में, सागर भी उबला करता है।
पर्वत उठते हैं बांहो पर कानन भी लहरा करता है॥
जब राष्ट्र पताका झुकती है, वे अपना शीश कटाते हैं।
सम्मान राष्ट्र का रखने को, वह अपना खून बहाते हैं॥

तो आओ। आज से हम सभी आर्य वीर अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान देने की शपथ लेते हैं और हम एकता से रहें वेद का सन्देश है मा व्यस्टो अर्थात हम कभी अलग थलग न होवें। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी रही है अनेकता (फूट)। पढ़िए इस अनेकता के दुष्परिणाम की एक झलक–२०० वर्ष पहले हमसे अफगानिस्तान १९११ में लंका १९३५ में बर्मा १९४७ में पाकिस्तान और फिर काश्मीर का एक बटा तीन भाग १९५० में तिब्बत १९५४ में बेरूबाड़ी १९६२ में चीन द्वारा हड़पी गई ४५००० वर्ग मील भूमि यह है एक झलक आधे भारत के सुवाय की ओर हमारी अनेकता की।

अगर अपने देश पर कोई विपत्ति पड़ती है तो मरने से मत डरो और देश के लिए बलिदान कर दो कभी भी हार मत मानों सदा वेद का यह वचन याद रखो कि "वयम् जयेम" अर्थात हमारी विजय होगी यह शरीर तो नश्वर है भस्मातं शरीरम् अर्थात शरीर का अन्त केवल भस्म तक है। इस शरीर का अन्त होता है परन्तु आत्मा का नहीं, आत्मा अमर है न अवश्ये कदाचन् यह कभी नहीं मरता, अन्त में यही कहूंगा कि "आर्य वीरों उठो और जागो" तभी राष्ट्र का कल्याण होगा।

आचार्य स्व० वैद्यनाथ शास्त्री व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[श्री देवराज शास्त्री मुख्याधिष्ठाता आर्य गुरुकुल, एटा]

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के देहावसान से वैदुष्य के क्षेत्र में ऐसा अभाव उत्पन्न हो गया है, जिसकी पूर्ति अत्यन्त दुःसाध्य है। ६० से अधिक ग्रन्थों के प्रणेता पूज्य आचार्य जी वैदुष्य एवं सुचिन्तन के साकार रूप थे। वैदिक साहित्य के गहन रहस्यों को उद्घाटित करने वाले उनके ग्रन्थ आगामी अनुसन्धाताओं के लिये प्रकाशस्तम्भ का कार्य करेंगे। उनके द्वारा किया ,गया सामवेद का भाष्य प्राचीन आर्य प्रणाली के अनुसार है तथा सामवेद के विस्तृत अनुसन्धान का मार्ग प्रशस्त करता है, दर्शन एवं वैदिक वाङ्मय के, विभिन्न विषयों से सम्बद्ध उनके सभी ग्रन्थ अद्भुत हैं तथा गहरे चिन्तन एवं सुदीर्घ अनुसन्धान का परिणाम है। उनके दर्शनतत्वविवेक नामक ग्रन्थ का एक भाग प्रकाशित है, दूसरे भाग का प्रणयन पूज्य आचार्य जी कर रहे थे तथा उसका पर्याप्त अंश लिखा जा चुका था किन्तु काल के क्रूर हाथों ने उन्हें हमसे छीन लिया। दर्शन तत्वविवेक के दूसरे भाग के उपसंहार में वे जो दार्शनिक सूत्र प्रस्तुत करना चाहते थे, उन्हें अब सम्भवतः कभी न जाना जा सके, किन्तु उनका दार्शनिक चिन्तन जितना भी उपलब्ध है, वह भी दर्शन के क्षेत्र की अमूल्य सम्पत्ति है।—यदि वे कुछ समय और हमारे मध्य विद्यमान रहते तो दर्शन एवं वैदिक साहित्य के कुछ और दिशा निर्देशक महत्वपूर्ण सूत्र उनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा के द्वारा हमें प्राप्त हो सकते थे।

पूज्य आचार्य जी आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के कुलपति थे। आर्य गुरुकुल, एटा का संस्कृत साहित्य एवं वैदिक वाङ्मय के अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। आचार्य जी के कुलपति पद पर विद्यमान होने से गुरुकुल की उन्नति में महान् प्रगति हुई है। आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के संस्थापक पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने विश्व की अप्रतिम यज्ञशाला का निर्माण कर गुरुकुल को यज्ञतीर्थ का रूप दिया तो पूज्य आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने वैदिक–यज्ञ–दर्शन नामक ग्रन्थ का प्रणयन कर यज्ञ के विज्ञान एवं दर्शन को सुविशद एवं प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया। इस प्रकार इन दोनों विभूतियों के ये कार्य परस्पर पूरकता के साथ प्राचीन वैदिक संस्कृति के स्वरूप को गौरवमयता एवं प्रबल प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने वाले सिद्ध हुए।

हम सभी कुलवासी उनकी पुण्यस्मृति में उनके प्रति श्रद्धावनत होते हुए उनके द्वारा सौंपी गयी महती ज्ञान सम्पदा के रक्षण एवं प्रसारण के लिये सभी के प्रयत्न एवं सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

निर्वाचन

आर्य समाज सिविल लाइन्स नरही, लखनऊ
प्रधान श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित
मन्त्री डा० लक्ष्मी नारायण गुप्त
कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रसिंह

योग शिक्षा और समाज

(आचार्य अशर्फीलाल शास्त्री (एम० ए०) गुरुकुल महा विद्यालय सिराथू-इलाहाबाद)

योग की शिक्षा किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं अपितु मनुष्य मात्र के लिये उपयोगी है। चाहे वह किसी वर्ग का हो, किसी देश का निवासी हो, किसी सम्प्रदाय को मानने वाला हो। योग की शिक्षा समाज मे प्रत्येक नागरिक स्त्री पुरुष को अत्यन्त लाभकारी है। योग शिक्षा के अभाव मे मनुष्य उसी प्रकार निरकुंश रहता है जैसे घोड़ा बिना लगाम के ऊँट बिना नकेल के हाथी बिना अकुश के मोटर आदि वाहन बिना ब्रेक के रहते हैं।

योग की शिक्षा जितनी प्राचीनकाल मे उपयोगी थी उतनी अब भी उपयोगी है। और सम्भवतः ? उससे भी कहीं अधिक आज उपयोगी सिद्ध होगी। यदि इसका कुछ भी अंश जीवन मे उतार लिया जाय और उसका अभ्यास किया जाये। जीवन व्यवहार में आते २ गन्दा हो जाता है। राग-द्वेष रूपी तरगो मे बहता २ जल की तरह प्रदूषण से युक्त हो जाता है जैसे बहते जल को प्रदूषण से बचाना आवश्यक है। वैसे ही भिन्न २ प्रकार के व्यवहारो मे प्रवाहित जीवन को भी स्वच्छ सदाचरणमय बनाते रहना आवश्यक है।

प्रकृति के तीन गुणों से निर्मित यह शरीर स्वभावत. सांसारिक वस्तुओ की ओर खिचते हैं क्योकि प्राकृतिक पदार्थों के पोषण से यह शरीर पुष्ट होता है और उन्हीं प्राकृतिक पदार्थों के अभाव से यह शरीर ह्रास को प्राप्त होता है। इसलिये यह स्वभावतः आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी २ शारीरिक उन्नति के लिये और मानसिक सतुष्टि के लिये प्राकृतिक पदार्थों का सचय करता रहे और उनका बुद्धिमानी से उपयोग करता रहे।

सोचना यह है कि योग की शिक्षा समाज के लिये क्या आवश्यक है ? क्या आज शिक्षित समाज आचरण कर रहा है उसमे योग शिक्षा का कुछ अंश है ? इन दोनो प्रश्नो के उत्तर हम समाज के लिये खोजना है। और समाज से ही खोजना है।

आज से कुछ समय पूर्व अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले जो देश के अधिकांश व्यक्तियो मे सदाचार और सयम का जीवन देखने और सुनने में आ रहा था उसका पचास प्रतिशत भी आज समाज मे सदाचार और सयम का व्यावहारिक जीवन व्यक्तियो के देखने मे नहीं मिल रहा है। उसका कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बढ़ती हुई आकर्षक वस्तुओं के अधिकाधिक उपभोग मे तीव्र लालसायें ही हैं और साथ ही राजनैतिक महत्वाकाक्षायें भी जिसको योग शिक्षा के परिप्रेक्ष्य मे रजोगुण का मनुष्य पर प्रभाव बढ़ता हुआ कहा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति आज उसी प्रकार से अपने को भौतिकवाद की ओर बढ़ता जा रहा है। जैसे पतंगें रात्रि मे अग्नि की चमक को देखकर अग्नि की ओर भागने लगते हैं। और अपने जीवन का दुःखद अन्त कर देते हैं।

यहां यदि कोई व्यक्ति ऐसा कहने लगे कि आप विज्ञान के आविष्कार के प्रति द्वेष भावना को जन्म दे रहे हैं और वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कार किये गये साधनों का उपभोग करने में उचित दृष्टिकोण नहीं अपना रहे हैं तो उनके उत्तर मे मै यह कहना चाहता हू कि सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुयं चाहे वे प्रकृति एव परम्परा के द्वारा बनायी जा रही है अथवा चाहे वे प्रकृति और वैज्ञानिको के द्वारा आविष्कृत की जा रही हो उनका सयमपूर्ण ढग से उपयोग किया जाना ही उचित है। देखने मे आता है लोग वस्तुओ के उपभोग मे प्रवृत्त हो जाते हैं। यहाँ उपयोग एव उपभोग में यह अन्तर है कि उपभोग करने मे किसी भी वस्तु के प्रति तल्लीनता परिलक्षित होती है और जीवन के अन्तिम क्षणो तक भी उसके उस वस्तु के प्रति त्याग की भावना जागृत नहीं होती है। इस कारण से वह भोग की अपेक्षा से योग की ओर अग्रसर नहीं हो पाता इसीलिये प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि पदार्थों को भोगता हुआ उनमे सदैव लगाव रखने की भावना को भी मानते रहना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा कहता है उसे ऐसा समझना चाहिये कि वह वस्तुओं का उपयोग कर रहा है, उपभोग नहीं।

योग का अर्थ होता है-आत्म सयम, इन्द्रिय चचलता को सीमित करना, अल्प प्रतिष्ठा एव थोड़े सुख साधनो मे भी सतोष की भावना और दूसरो का अहित न करता हुआ अपना हित करने की कुशलता इसी को योगः कर्मसु कौशल मे श्रीकृष्ण जी महाराज ने अर्जुन से कहा था। सत कबीर ने भी इसी प्रकार के भाव को व्यक्त करते हुये कहा था "कबिरा आप ठगाइये और न ठगिये कोय"। आप ठगे सुख उपजे और ठगे दुख होय।

कबीर ने इस पद्य मे योग शिक्षा के ऊंचे स्तर की बात कही है कि दूसरे को कष्ट नहीं चाहिये। इसका कारण यह है कि दूसरे की बुराई करने मे अपनी आत्मा दूषित होती है। बुरे सस्कार आत्मा पर पड़ने आरम्भ हो जाते हैं इसके विपरीत यदि स्वय को कोई दूसरा ठग लेता है तो हमारी ही स्वय नश्वर वस्तुयें तो गयी है। जो दुबारा प्राप्त की जा सकती है। आत्मा शुद्ध बनी रही उस पर बुरा सस्कार नहीं पड़ा। बहुत.. .. है। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत। अपनी आत्मा द्वारा न चाहे हुये व्यवहार को दूसरे के साथ नहीं करना चाहिए। द्वेष की अग्नि मे सतप्त होगी जिससे समाज मे तनाव बढ़ेगा तथा अशान्ति क्रोध का वातावरण तैयार होगा। व्यापारी लोगो मे यह भोग की भावना अत्यधिक प्रतीत होती है। इनमें झूठ बोलने की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। खाद्य वस्तुओ में मिलावट करना तेल घृत बीज आदि सभी आवश्यक आज सभाओपयोगी पदार्थों मे मिलावट कर बेचना उनका धर्म बन गया है। यदि व्यापारी वर्ग के भोग के साधन के साथ २ सयम सन्तोष की सद्भावना रहे तो अल्प वेतन भोगी तथा देहातो मे रहने वाले किसानों का भी भला हो सकता है।

समाज में एक वर्ग अध्यापको का एक वर्ग डाक्टरो का एक वर्ग वकीलों का एक वर्ग इन्जिनीयरो का एक सार्वजनिक भक्तो का भी पृथक् २ है। ये सभी वर्ग अपने-अपने स्थान पर कार्य करते हुए यदि मात्र भोगवाद का ध्यान न रखकर सयम सन्तोष त्याग भाव सदाचार आदि का थोड़ा-२ ध्यान रखे तो भ्रष्टाचार का उन्मूलन अपने आप मे धीरे-२ हो सकता है। यही आत्म सयम सतोष त्याग भाव और सदाचार इस देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व था। उस समय अन्य समस्यायें भी थी किन्तु भोगवाद रूपी सकंट आज जैसा उस समय नहीं था। और भ्रष्टाचार का नाम यत्र तत्र सुना जाता था। प्रत्येक का दिल में घुसा हुआ भी नहीं था। किन्तु हमे खेद है भौतिकवाद का

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आचार्य विश्व बन्धु जी शास्त्री

[सावित्री शर्मा वेदाचार्या, बरेली]

[आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान धीरे-धीरे उठते जा रहे हैं। प्रभो ! तुम्हारी लीला अपार है, हम उसमें बाधक कैसे बन सकते हैं। हमारी तो केवल यही प्रार्थना और याचना है कि स्थान खाली न रहने पावे ... ... "आर्यमित्र' अपने दिवंगत आर्यमनीषियों की पुण्यस्मृति में उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक स्मृतिमाला प्रकाशित कर रहा है। इस सम्बन्ध में पाठकों के विचार सादर आमन्त्रित हैं। प्रस्तुत लेख में सौम्यता सज्जनता, एवं विद्वत्ता की सगुण साकार प्रतिमूर्ति आचार्य श्री विश्वबन्धु जी के विषय में पढ़िए-

—सम्पादक]

आर्य जगत को सूना करके ऋषि भक्त शास्त्री जी अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य से देव सभा को चमत्कृत करने के लिए महाप्रयाण की दिशा में निर्द्वन्द्व निस्पृह भाव से स्वर्गीय विश्राम धाम की ओर चल पड़े। वियोगाकुल शोक सन्तप्त परिवार, ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम के परिकर में रहने वाले स्नेही आर्य बन्धु अश्रुधारा बहाते हुए मूकदर्शक की भांति देखते ही रह गये शास्त्राय महारथी की इस अन्तिम दुःखद यात्रा को। प्रभु मिलन के हर्षोल्लास में आचार्य प्रवर ने मुड़कर भी न देखा अपने शोकार्त भक्त समूह को। कौन जानता था कि इतनी जल्दी लौकिक बन्धनों को तोड़कर शास्त्री जी चिर निद्रा में विलीन हो जायेंगे।

आज उनकी विद्वत्ता, कवित्व, मधुर वाणी, व्याख्यान कौशल एवं सद्व्यवहार की अमिट छाप सभी सम्बन्धी, परिचित स्वजनों के मानस पटल पर स्मृति रूप में अंकित है। स्थान-स्थान पर आयोजित शोक सभाओं में उनकी सदाचार से भरित नैतिकता तथा निष्कलंक जीवन को श्रद्धालु जनों द्वारा बाष्पावरुद्ध कण्ठ से सर्वत्र सराहा गया है। शास्त्र मर्मज्ञ शास्त्री जी न केवल विद्वान ही थे अपितु शास्त्र संचालन में निष्णात सच्चे आर्य वीर भी थे। उन्हीं के मुखारविन्द से बातों-बातों में यह रहस्य प्रकट हुआ कि आर्य वीर दल की शाखाओं को अनेक बार उनका कुशल निर्देशन प्राप्त हो चुका है।

वस्तुतः व्याख्यान वाचस्पति शास्त्रवर दिवंगत होने पर भी अपने यश: शरीर से हमारे मध्य सर्वदा वर्तमान रहेंगे। उनका कीर्ति सौरभ आर्य परिवारों को अपने दिव्य गुणों से आमोदित करता रहेगा।

"कीर्तियस्य स जीवति"

माननीय आचार्य जी अपने पीछे वियोगाकुला धर्मपत्नी, दो सरल सुबोध पुत्र छोड़ गये हैं। युवा पुत्र चि० वेदव्रत ग्वालियर में होम्यो-पैथिक चिकित्सा प्रणाली के अध्ययन में रत हैं तथा कनिष्ठ पुत्र ज्वालापुर के विद्यालय में ही सातवीं कक्षा में पढ़ रहा है। यह है शास्त्री जी का छोटा सा परिवार जिसे वह अपनी आँखों से फलता-फूलता न देख सके।

*

वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नैनीताल

आर्यसमाज नैनीताल के 114वें वार्षिकोत्सव (20 से 27 मई 88) में आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, प० यशपाल शास्त्री, पं० इन्द्रराज जी सभा प्रधान, प० गुसाईदत्त दानी, बांकेलाल जी, गुरदेव विद्या लकार आदि ने मानव धर्म-सभी के उत्थान हेतु-ज्ञान का प्रसार किया। 27 मई को प० ठाकाराम अध्यापक का तिलक मुनि के रूप में स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने वानप्रस्थ की दीक्षा दी। 27 मई को प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान के तत्वावधान में 'आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद-नैनीताल' का गठन निम्न प्रकार हुआ-

प्रधान-स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, उपप्रधान-श्री सत्येन्द्रचन्द्र गुड़िया एवं डा० अमृतलाल, मन्त्री-श्री उदयराजसिंह, उपमन्त्री-श्री श्रीकृष्ण आर्य, कर्मवीर, चरनदास टण्डन एवं रहुलदास, कोषाध्यक्ष-ज्ञानेन्द्रप्रसाद गोयल, पुस्तकाध्यक्ष-श्री नरेशचन्द्र।

रात्रि 27 मई को सभा मन्त्री प०मनमोहन तिवारी ने सभी समाजों की समस्यायें सुनकर राष्ट्रीय एकता-अखण्डता हेतु मार्गदर्शन दिया।

आवश्यक सूचना

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा एवं धर्मरक्षा अभियान समिति जनपद गोण्डा की कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक दिनांक 12 जून 1988 को सायंकाल 3 बजे आर्यसमाज मन्दिर खरगौला (गोण्डा) में आयोजित है जिसमें सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक श्री विश्वनाथ जी पधार रहे हैं। जनपद की सभी समाजों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म रक्षा अभियान में पूर्ण सहयोग दें।

बलराम गोविन्द

अधीक्षक विधिक एव भू-सम्पत्ति विभाग सभा,

श्रीमती सत्यवती शालवाले का निधन

दिल्ली २९ मई १९८८। दिल्ली की सुप्रसिद्ध समाज सेवी तथा दिल्ली आर्य महिला सभा की प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती सत्यवती शालवाले का आज दिल्ली के लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल मे प्रातः १० बजे ७० वर्ष की आयु मे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सायंकाल ६ बजे निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो एवं वैदिक विद्वानों के वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ।

उनके पुत्र श्री ओंकारनाथ ने वैदिक मन्त्रो के साथ चिता पर अग्नि प्रज्वलित की।

इस अवसर पर आर्य समाजो, विभिन्न राजनैतिक दलो, हिन्दू महासभा तथा अन्य धार्मिक संगठनों के नेता तथा कार्यकर्ता और परिवार के सदस्य तथा सम्बन्धी बड़ी संख्या मे वहाँ उपस्थित थे जिनमे महाशय धर्मपाल जी, प्र० सोमनाथ जी एडवोकेट, श्री रामनाथ सहगल श्री सूर्यदेव आदि मुख्य थे।

माता सत्यवती शालवाले ने हिन्दी आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया था। पहले आप रोहतक मे सत्याग्रह करने पर गिरफ्तार हुईं वहाँ एक मास जेल में रहीं। गो रक्षा सत्याग्रह मे भी सक्रिय रूप से भाग लिया। एक महिला जत्थे का नेतृत्व करते हुए आपको गिरफ्तार करके दिल्ली के तिहाड़ जेल मे रखा गया था। आप अपने पति श्री लाला रामगोपाल शालवाले के साथ प्रत्येक सामाजिक कार्यक्रमो मे पूरा सहयोग देकर कार्य करती रहीं। आपने दिल्ली आर्य महिला सभा को भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आपका जीवन त्याग एवं तपस्या का साक्षात उदाहरण था।

वह विगत कई महीनो से बीमार चल रही थीं। श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले द्वारा संन्यास दीक्षा लेने के ठीक दो वर्ष के बाद वह साधनामय जीवन व्यतीत करते हुए परम पिता परमात्मा की गोद में चली गयीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं प्रदेश की समस्त आर्यजनता इस महनीया दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हुई शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है। सभा कार्यालय मे एक सभा हुई जिसमें दिवंगत आत्मा के के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

उत्सव

–आर्य समाज महरामऊ, उन्नाव का वार्षिकोत्सव दिनांक १३-५-८८ से १५-५-८८ तक सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य जगत् के अनेक विद्वान भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। १५ मई ८८ को चिर० सत्यव्रत आर्य आत्मज आचार्य शिवदास शास्त्री मन्त्री जिला सभा का मुण्डन संस्कार श्री रविशंकर शर्मा प्रधान जिला सभा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इसमें जिले के गणमान्य व्यक्तियो ने उपस्थित होकर बालक को आशीर्वाद दिया।

आचार्य शिवदास शास्त्री मन्त्री जिला सभा, उन्नाव

ब्रह्मचर्य की महत्ता

(पृष्ठ ४ का शेष)

स्वास्थ्य तेजी से गिर रहा है। उनके मुखमण्डलो पर प्राकृतिक छटा का अभाव दिखाई पड़ रहा है, वे मधुमेह, कैन्सर, टी० बी०, हृदयावसाद, रक्तचाप तथा मोटापा आदि अनेक भयकर रोगों से पीड़ित हो रहे हैं, उनमें रोगों से लड़ने की क्षमता घटती जा रही है, लोगो की बात बात मे दवा खाने की प्रवृति जोर पकड़ रही है, सात्विक प्रकृति गायब हो रही है, हमारा चारित्रिक पतन तेजी से हो रहा है, परोपकार, परसेवा, कर्तव्यनिष्ठा, निष्काम कर्म, 'मातृवत् परदारेषु', 'लोष्ठवत् परद्रव्येषु' के हमारे आदर्श समाप्त होते जा रहे हैं, हममें भ्रष्टाचार, अन्याय एवं अराष्ट्रीयता का सामना करने की शक्ति समाप्त हो रही है। निस्सन्देह उपरोक्त स्थिति ब्रह्मचर्य के न पालन करने तथा वीर्यनाश के परिणाम हैं। फिर जिस प्रकार कि आधुनिक विज्ञान इस समय विश्व मे फैल रहे एड्स रोग का कारण समलैंगिक सम्बन्धो तथा अनुचित यौन सबन्धो को ठहरा रहा है, इससे निष्कर्ष पर पहुचना अनुचित न होगा कि आज ब्रह्मचर्य के पालन तथा वीर्यरक्षा की आवश्यकता पहले से भी अधिक है।

ऐसी स्थिति मे आवश्यकता है कि देशवासियों विशेषतः नई पीढ़ी को ब्रह्मचर्य की शिक्षा समाचार पत्रों, टी० वी, रेडियों तथा फिल्मों के माध्यम से भलीभाति दी जाये, आर्य समाज पौराणिक धर्म जैनधर्म, बौद्धधर्म तथा विशाल हिन्दू समाज के अन्य मतमतान्तरों के धार्मिक संगठन भी अपने अनुयायियों को ब्रह्मचर्य के लाभो से परिचित कराकर उसे जीवन में धारण करने अर्थात् यथा सम्भव वीर्यरक्षा करने की सलाह दे तथा इसके लिये उन पर नैतिक दबाव डाले तभी हमारी भावी पीढ़ी तथा वर्तमान समाज स्वस्थ्य, चरित्रवान, बलवान, विद्वान विवेकशील, निरोगी, सुखी एवं आत्मविश्वास से युक्त होकर देश को महान बनाने, विदेशी षड्यन्त्रो को विफल बनाने तथा देश की स्वाधीनता की रक्षा मे समर्थ हो सकता है। अन्यथा हम अपने को बहुत सुरक्षित एवं अपनी स्थिति को बहुत विश्वसनीय नहीं मान सकते हैं।

योग शिक्षा और समाज

[पृष्ठ ७ का शेष]

प्रवाह तथा झंझावात ऐसा समाज में प्रवाहित है। कि सभी बहे जा हैं और सभी बड़े इसी में उड़ जा रहे हैं।

हमारे भारतीय पूर्वज मनीषी विद्वान ऋषि मुनि बहुत दूरदर्शी थे। उन्होने समाज की इन विषय की भयोगामी तिरस्करणीय परिस्थितियों का पहले से ही अनुभव कर लिया था। इसलिये 'योग-दर्शन' जैसे अप्रतिम ग्रन्थ की रचना की।

किसने अपना देश बचाया

(श्री तेजपाल सिंह आर्य प्रचारक सभा)

किसने अपना देश बचाया, किसने बन्धन तोड़ गिराया।
लाखों संकट सहने पर भी अपना देश बचाया ॥
क्या गांधी, पटेल, जवाहर, तिलक, लाजपत राय।
आजाद, भगतसिंह, और बिस्मिल के पौधे दिये लगाए ॥
लाला लाजपत, सुख देव, यतेन्द्र, सुभाष दिये बनाये।
जिसने फांसी के फन्दों पर झूमे फिर भी न घबराये ॥
ऋषि दयानन्द आया था, ऋषि दयानन्द आया था ॥१॥
राज विदेशी कितना अच्छा ऋषि ने बुरा बताया।
लाखों संकट सहने पर भी अपना देश बचाया ॥
दीन दुखी विधवाओं का फिर अधिकार दिलाया ॥
मुरझाई थी सब फुलवारी हरा भरा बनाया।
जहर के प्याले पीकर जिसने ओ३म् का झन्डा लहराया ॥२॥
कभी न चेहरा मुरझाया चमकती आंखों में ज्योति।
हजारों साल से भरी पड़ी थी आर्य जाति रोती।
एक माला में पिरो दिये जो बिखरे हुए थे मोती ॥
धन्य ऋषि हो, धन्य ऋषि हो, धन्य हो दीपक की तुम ज्योति ॥
धन्य हो अपराधी पर भी तुमने दया का स्रोत बहाया।
किसने अपना देश बचाया, किसने बन्धन तोड़ गिराया।
लाखो संकट सहने पर भी अपना देश बचाया।

पंजाब की समस्या के सम्बन्ध में एक विशेष प्रस्ताव

आर्य समाज नवरसा-भरतकुण्ड-फैजाबाद के वार्षिक-उत्सव के अन्तिम दिवस दि० ३१-३-८८ को एक विशाल समारोह मे प्रस्ताव पारित किया कि भारत सरकार से नवरसा निवासी सभी नागरिक पुर जोर मांग करते हैं कि पंजाब मे हो रहे निर्दोष नागरिकों की जघन्य हत्या जो प्रतिदिन की जा रही है। यहां तक कि छोटे छोटे बच्चों, माता और बहिनो को घर मे घुस कर आतकवादी मार कर भाग जाते हैं। पकड़े तक नहीं जाते। अतएव यह विशाल जन-समुदाय भारत सरकार से मांग करता है कि पंजाब को अविलम्ब सेना के हवाले कर दिया जाये। कठोर इमरजेन्सी लगाई जाये। पाकिस्तान से लगी समस्त सीमा सीलकर दी जाये और सुरक्षा पट्टी बनाने मे देर न की जाये। जिससे देश की एकता और अखण्डता और लोकतन्त्र को बचाया जा सके।

भारत सरकार पंजाब समस्या को सुलझाने में तुरन्त कार्यवाही करे।

हम हैं आर्य सदस्यगण तथा नवरसा के नागरिक
विश्वमित्र आर्य

निर्वाचन

आ० स० कान्दा बिजनौर — मन्त्री श्री सियाराम वर्मा
प्रधान डा० शंकर दास भाटिया — कोषा० श्री प्रेमकुमार जी

आर्यसमाज जमानिया का प्रस्ताव और १०००रु० के पुरस्कार की घोषणा

आज दिनांक १७-४-८८ को रविवासरीय सत्संग के अवसर पर निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया।

१- दिनांक १५-४-८८ को होने वाले राम चरित्र मानस के मन्च पर श्री राम के चरित्र वर्णन से ज्यादा मूर्ति पूजा पर बल दिया जा रहा है जिसका आर्य समाज जमानिया घोर विरोध करती है।

२- श्री मदन मोहन जी ने मूर्ति पूजा के पक्ष मे मानस मन्च से वेद के मन्त्र द्वारा मूर्ति पूजा सिद्ध करने का असत्य प्रचार किया। स्पष्टीकरण हेतु कहे जाने पर उनके व्यवस्थापक द्वारा आनाकानी की गयी और वाराणसी मे समाधान देने के लिये कहा गया। आर्य समाज इसे पलायन वादी नीति मानती है।

३- आर्य समाज जमानिया राम चरित्र मानस मंच को ही नहीं, किसी भी मंच को चुनौती देती है कि यदि वेद मंत्र से यह सिद्ध करें कि परमपिता परमेश्वर की मूर्ति का रूप, रंग, आकार, धातु आदि का वर्णन है तो आर्य समाज जमानिया १०००/ एक हजार रुपये का पुरस्कार देगी।

४- आर्य समाज घोषणा करता है कि मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है।

५- श्री दिनेश जी मानस प्रवक्ता द्वारा आर्य समाज के वेदानुयायियो को उल्लू और नास्तिक कहना स्वयं उन्हीं पर सिद्ध होता है क्योंकि वेदों की निन्दा और उसके अर्थ का वे ही अनर्थ करते हैं और वेद विरुद्ध प्रवचन करते हैं।

६- श्री दिनेश जी ने आर्यसमाजियो को दहेज न लेने के लिये निर्देशित किया परन्तु उनके मंच के वक्ताओं और अनुयायियो को दहेज लेना क्या वर्जित नहीं है? यह एक प्रश्नवाचक चिन्ह है।

प्रधान — नारायण प्रसाद मन्त्री
आर्य समाज जमानिया — आर्य उपप्रतिनिधि सभा
गाजीपुर — गाजीपुर

धूम्रपान प्रेमियों से दूर रहें

अहमदाबाद (सीईई-एनएफएस) धूम्रपान से विश्व में प्रतिवर्ष लाखो लोगो की मृत्यु होती है। किन्तु धूम्रपान करने वालो के अलावा इनके आस पास रहने वाले लोग भी अनेक प्रकार की धूम्रपान जनित बीमारियों से ग्रस्त होते हैं। लन्दन स्थित मनोचिकित्सक शोध संस्थान की एक खोज के अनुसार ब्रिटेन में प्रतिवर्ष १००० से अधिक व्यक्ति धूम्रपान करने वालों के विसर्जित धुएं को ग्रहण करने के कारण मरते हैं। यद्यपि वे धूम्रपान नहीं करते।

शोध के अनुसार धूम्रपान करने वालों के बच्चे इससे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। बच्चे धूम्रपान तो नहीं करते किन्तु उनके अभिभावकों द्वारा किये जा रहे धूम्रपान के धुएं को ग्रहण करते हैं। ऐसी स्थिति में इस धुएं में मिश्रित निकोटीन नामक विषैला पदार्थ भी इनके शरीर में प्रवेश करता रहता है। ऐसे में ये धूम्रपान नहीं करने वाले भी धूम्रपान से पैदा होने वाली बीमारियों की गिरफ्त में आ जाते हैं।

"वेदों में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद" संगोष्ठी

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के तत्वावधान में आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई के ११४वें वार्षिकोत्सव पर एक भव्य संगोष्ठी हुई। इसका विषय था वेदों में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद और इसकी अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने की इसका संचालन कैप्टन देवरत्न आर्य ने किया। इसका मुख्य अभिलेख बम्बई के डा० सोमदेव ने प्रस्तुत किया। जबकि भारत के भिन्न भिन्न नगरों से आये जगत के उच्चकोटि के विद्वानों ने इसमें अनुसंधान युक्त पत्र द्वारा अपने विचार व्यक्त किये। इसमें भाग लेने वाले मुख्य-मुख्य विद्वानों के नाम इस प्रकार है। डा० भवानीलाल भारतीय चंडीगढ़ वि० वि० डा० जयपाल विद्यालंकार हंसराज कालेज दिल्ली, श्री क्षितीश वेदालंकार सम्पादक-आर्य जगत दिल्ली, श्री यू० जी० थीटे। पुने विश्वविद्यालय, डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी। गंगानाथ इन्स्टीट्यूट इलाहाबाद, डा० रुद्रमित्र बम्बई। डा०वागीश शर्मा गुरुकुल एटा, पं० सत्यकाम वेदालंकार बम्बई।

स्वामी सत्य प्रकाश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक संहिताएं विश्व पुस्तकालय में सबसे पुरातन साहित्य है। लाखों वर्षों से मौखिक अथवा लिखित रूप से वर्तमान मानक तक पहुंचा है। इसका मुख्य तत्व एवं लक्ष्य है। मानव जीवन को वास्तविक रूप देने के लिये यथार्थवाद के आधार पर पुरुषार्थ के लिये प्रेरित करना है।

वेदों में केवल प्राचीन काल के आर्यों के लिये आध्यात्मिक और नैतिक संहिता ही नहीं बनाई, अपितु इनका उद्देश्य सभी युगों में संस्कृति एवं सभ्यता के सभी क्षेत्रों में समाज को पुरुषार्थमय बनाना है। प्राचीन काल से ही आर्यों ने इस संसार को एक यथार्थ और वास्तविक पदार्थ माना है। इस को कभी भी मिथ्या या एक स्वप्न मात्र नहीं समझा और इसके अस्तित्व को उद्देश्य पूर्ण माना है। वैदिक प्रेरणा से ही आर्यों ने प्राचीन काल में व्याकरण दर्शन शास्त्र विज्ञान, आयुर्वेद, कला, और स्वर संगीत के गहन विषयों पर अद्वितीय पुस्तकों की रचना की। उस काल में सभी साहित्यिक रचनाएं वेदों पर ही केन्द्रित थी। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि आर्यों ने जीवन संघर्ष में सभी प्रकार की चुनौतियों से लड़ना और उन पर विजय पाना वेद से सीखा। इसी प्रकार उन्होंने एक सम्पन्न समाज की रचना की और राष्ट्रीय विचारधारा का सृजन किया यह वेदों की ही देन है। कि आरम्भ से आज तक मनुष्यों में दीर्घ आयु सुखी सम्पन्न और आनन्दमय जीवन के लिये भावना और कामना बनी रही। इसीलिये युद्ध एवं शान्तकाल में सर्वांगीण सफलता के लिए प्रयत्नशील रहे।

संगोष्ठी में अन्य वक्ताओं ने भी वेदों के क्रियात्मक प्रगतिशील यथार्थ और व्यवसायिक तत्वों पर बल दिया और बताया कि धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों को मिलाकर पुरुषार्थ चतुष्टय के नाम से जाना जाता है। यह भी बताया गया कि भारत के पतन काल में लोगों ने अंधभूल, रूढ़ियों, अन्धविश्वास और निरर्थक रीति रिवाजों को अपना लिया जिससे निराशा, आलस्य और निष्क्रियता की प्रवृत्तियां बढ़ने लगीं। प्रमाण स्वरूप आर्यावर्त अन्धकार की ओर पतन की खाई में गिरता गया।

विद्वान वक्ताओं ने कहा कि आज केवल वेदों में ही उदार विचार सम्प्रदाय निरपेक्ष भाव मिल पाता है जिसमें प्राणी मात्र को ठीक दिशा मिल सकता है और उसको पुनर्जागरण पुनर्निर्माण और सशक्त पुरुषार्थ की भावना उत्पन्न हो सकती है। वास्तव में वेद तो उस प्राचीन सतयुग की देन है। जबकि वर्तमान काल की संकीर्ण सम्प्रदायवादी स्वार्थी और द्वेष पूर्ण कुरीतियां नाम मात्र को भी नहीं थीं। उस समय मनुष्य एक यथार्थ में पुरुषार्थी का उद्देश्यमय जीवन रखता था।

इस संगोष्ठी में मोरसस के श्री मोहनलाल मोहित जिनकी प्रेरणा और सहायता से वेद पीठ की रचना की गयी और इस संस्था के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने शुभकामना देते हुए अपने विचार प्रकट किये।

संगठन मन्त्री

यज्ञोपवीत हिन्दुओं का परिचय पत्र है

डा० आनन्द सुमन

यज्ञोपवीत हिन्दुओं (आर्यों) का परिचय पत्र है जो यज्ञोपवीत धारण नहीं करता वह हिन्दू कहलाने का अधिकारी नहीं हिन्दू धर्म में शिखा सूत्र का महत्व है अतः सभी हिन्दुओं को यज्ञोपवीत धारण करना उतना ही आवश्यक है जितना राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना।

यह विचार डा० आनन्द सुमन वैदिक प्रवक्ता आर्य समाज साण्डी (हरदोई) के ५०वें वार्षिकोत्सव में व्यक्त किये।

तीन दिनों तक आर्य समाज के मंच से हजारों हिन्दुओं ने डा० सुमन जी के विद्वता पूर्ण क्रांतिकारी एवं ओजस्वी विचारों का लाभ उठाया। डा० सुमन के आह्वान पर १०० युवकों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया और राष्ट्र एवं धर्म रक्षा का संकल्प लिया।

आर्यसमाज छिमौली, महीउद्दीनपुर [मेरठ] का उत्सव

वार्षिक उत्सव ४ व ५ जून १९८८ को होना निश्चित हुआ है अनेक विख्यात प्रचारक एवं सन्यासी पधार रहे हैं।

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible] ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष [illegible]
रजिस्ट्रेशन सं० एल डब्लू/एन. पी [illegible]
[illegible] ११
१२ जून रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

[illegible]

3835-श्री सम्पादक जी,
गुरुकुल पत्रिका,
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कुठिला जि० हरदोई का वार्षिकोत्सव २२ से २४ मई ८८ ई० तक बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सभा के मुख्य प्रचारक पं० [illegible] ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। पं० [illegible] शास्त्री [illegible] सभा ने दीक्षा दी। श्री रामऔतार [illegible], श्री सीताराम जी, [illegible], [illegible], अमरसिंह, महावीर स्वामी के प्रवचन तथा [illegible] हुए। जनता पर काफी प्रभाव पड़ा।

उत्सव

सिविल लाइन्स [illegible] का वार्षिकोत्सव दिनांक १०, ११ तथा १२ जून १९८८ ई० को मनाया जायेगा और १२ जून को हिन्दू (आर्य) सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा। उत्सव में स्वा० [illegible] आगरा, स्वा० [illegible] जि० एटा, आचार्य [illegible] आगरा, आचार्य [illegible] जि० एटा, प्रोफेसर [illegible] 'सरर' पानीपत (हरियाणा), श्रीमती मनोरमा शर्मा जि० अलीगढ़, श्री [illegible] जि० [illegible] तथा [illegible] रेडियो सिंगर श्री [illegible] शर्मा आदि उपदेशकों तथा [illegible] के आने की स्वीकृतियां आ चुकी हैं।



आर्य समाज के कैसेट

- नवीनतम

१ वैदिक भजन सिन्धु — २५ रुपये
गायक श्री [illegible]

२ प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रुपये
गीतकार स्व [illegible] गायक श्री [illegible]

३-४ विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रुपये
[illegible] गीत एवं [illegible]
विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त [illegible] कैसेट।

५ ६ वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कैसेट) — ५० रुपये
मन्त्रोच्चारण स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७ वेद भारती — ३० रुपये
शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन श्री सत्यकाम विद्यालंकार [illegible] एवं संगीत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री [illegible] देशपाण्डे

- हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रुपये

८ पथिक भजनसिन्धु ९ मुसाफिर भजन सिन्धु १० श्रद्धा
११ आर्य भजनावली १२ वेदगीताञ्जलि १३ भजनसुधा।

- हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रुपये

१४ वैदिक सन्ध्याहवन १५ गायत्री महिमा १६ भक्तिभजनावलि
१७ महर्षि दयानन्द सरस्वती १८ आर्यभजनमाला १९ आर्यसंगीतिका
२० योगासन प्राणायाम स्वय शिक्षक २१ २२ महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) स्व महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मगाने के लिये

- कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रुपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
- वी पी पी के आदेश पर डाक एव पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार १२ कैसेट मगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्वरूप दिये जायेंगे।

सूचना व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

ससार साहित्य मण्डल
१४१ [illegible] बम्बई 400 082
फोन [illegible]

वैदिक रीति से निर्मित शत प्रतिशत शुद्ध

हवन सामग्री

हेतु आदेश पत्र भेजिए—

हवन सामग्री भण्डार (A. M.)

[illegible], दिल्ली—११००[illegible]

(१) १०० [illegible] शुद्ध सुगन्धित जड़ी-बूटियों से निर्मित सामग्री [illegible] भाव पर हमारे यहां उपलब्ध है।

(२) हवन सामग्री की शुद्धता और [illegible] के कारण [illegible] सरकार से पूरे देश में इसे वितरित करने का अधिकार प्राप्त है।

(३) [illegible] लोहे की चादर के बने [illegible], १०x१० तथा १२x१२ इंची ([illegible]) हवन कुण्ड भी क्रमशः रु० [illegible]/-, [illegible]/- तथा [illegible]/- में उपलब्ध हैं।

(४) [illegible] [illegible] में प्रयोग हेतु सामग्री [illegible] रु० [illegible]/- [illegible] के हिसाब से उपलब्ध है। पूरे देश में भेजने की व्यवस्था है।

[illegible] मुद्रक, प्रकाशक के लिए [illegible] प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible], लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० एल०१११२७ | लखनऊ पत्र सं० ०१७७-१-०७

ज्येष्ठ शुक्ल ५, रविवार, संवत् २०४५ वि० दिनांक १९ जून १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

सह सम्पादक–

सुखदेव शास्त्री एम० ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	२५

बाँगला देश में इस्लाम राज्य धर्म घोषित

दो धर्मान्ध मुस्लिम देशों के बीच में हमारा धर्मनिरपेक्ष देश

बंगला देश ने इस्लाम को अपना राज्य धर्म घोषित कर दिया है। यद्यपि कुछ विपक्षी दलों ने इसका विरोध करते हुए वहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दुओं, बौद्धों चकमा जाति के लोगों ईसाइयों आदि की सुरक्षा की माँग की है परन्तु यह विरोध नगण्यमात्र है। पाकिस्तान अपने जीवनकाल के प्रारम्भ से ही मुस्लिम राष्ट्र है। इस प्रकार पूर्व और पश्चिम दोनों ओर कट्टर मुस्लिम धर्मान्धता उदय हो चुकी है और बीच में हमारा विशाल धर्मनिरपेक्ष राज्य इसके जनक अपने प्रिय नेता पं० जवाहरलाल नेहरू का लाख-लाख धन्यवादी है जिनकी कृपा से आज हमारी स्थिति कबीर के इस दोहे में परिलक्षित हो रही है—

चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥

परन्तु आर्यमित्र एक बात बहुत स्पष्टरूप से कहना चाहता है। जिन्होंने मुस्लिम इतिहास का अध्ययन किया है वे जानते हैं– 'इस्लामी विस्तार' (सातवीं शताब्दी) से लेकर 'बाबरी विजय' (१६ वीं शताब्दी) तक मुस्लिम दुनिया का स्वप्न देखने वाले इस्लाम के प्रचार-प्रसार में मतान्ध आक्रमणकारियों ने दुनिया के तमाम छोटे-बड़े देशों को जीतकर पहिले उन्हें अपने आधीन बनाया और फिर वहाँ का राज्य धर्म इस्लाम घोषित करके नए मुस्लिमों का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया। जिन्होंने धर्म की मनुहार की उन्हें कत्ल करने तथा उनपर अमानुषिक अत्याचार करने की एक बहुत लम्बी सच्चाई से भरी कहानी है। भारतीय भूखण्ड के इन दोनों देशों में इस्लामीकरण की प्रक्रिया फिर जोर पकड़ रही है और हमारी यह धर्म निरपेक्षता हमें भय है कहीं हमको खोखला न कर दे। जहाँ-जहाँ मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना हुई है वहाँ-वहाँ के मूल निवासियों को या तो कत्ल कर दिया गया या इस्लाम में दाखिल कर लिया गया और बहुत को अपने धर्म की रक्षा हेतु वहाँ से भागना पड़ा। हालांकि उन देशों के इन अमानुषिक कृत्यों को यद्यपि याद न करने की वर्तमान में वकालत हो रही है परन्तु अतीत की वास्तविकता को मिथ्या नहीं किया जा सकता है। इस्लाम की सीमाओं का विस्तार धीरे-धीरे समस्त एशिया में हो चुका है। भारत में शोषित जातियों को इस्लाम का सम्मोहक सन्देश देकर धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है।

अतः हम चाहते हैं हमारे देश के कर्णधार समय की पुकार को सुनें और वैदिक धर्म की विश्वकल्याण की उदात्त मानवीय महानताओं को स्वीकार करें। इसे इस राष्ट्र का राष्ट्र धर्म घोषित करें। इसकी व्यापक प्रचार एवं प्रसार को अपना लक्ष्य बनाएं तभी विश्व का शान्तिकरण सम्भव हो सकेगा।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
-राष्ट्रकविमैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

आषाढ़–ज्येष्ठ शुक्ल ५ संवत् २०४५, रविवार १९ जून १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

महतां महीयसी

देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु वाजसातये–
ऋग्वेद ५।४६।७

[विद्वान पुरुषों की पत्नियां हमें यज्ञ कर्म की प्रेरणा देने वाली तथा हमारी रक्षा करने वाली हों]

सत्यस्निग्धा, सत्यशीला, सत्यवती शालवाले दिवंगता

फूल झरते थे उनके हर बोल से,
उनकी वाणी में लिपटी हुई थी मिठास।
उनके हर काम में थी प्यार की एक झलक,
उनके मन मन्दिर में भरा था रहता हुलास।

मानव जीवन एक प्रवाह है–जीवन और मृत्यु जिसके दो तट हैं। विश्व में यह प्रवाह अनादिकाल से चला आ रहा है। आनन्दकन्द प्रभु अपनी पवित्र वाणी में कहते हैं विद्वान आप्त पुरुषों की पत्नियां सदा सज्जनों को पवित्र कर्मों की ओर प्रेरणा देने वाली होती हैं। ऐसा ही था जीवन उस महनीया पूज्यनीया आर्य महिला का, जो शरीर से सत्यवती थी, गुणों से सत्यशीला थी सत्यस्निग्धा थी, जीवन भर सत्य पथ पर ही आरूढ़ रहीं, सत्य जिसका प्रेरक था और सत्य ही जिसका सम्बल था। व्यक्तित्व में अत्यन्त सरल निश्छल, निष्कपट, स्मितशील, सन्तुष्ट, आस्थावान, व्याधि पीड़ित होने पर भी सतत मनोबल से युक्त परम आस्तिक, श्रद्धा, करुणा, ममता और दया की प्रतिमूर्ति वे आज हमारे बीच में नहीं हैं।

रविवार २९ मई को दिल्ली में उनका निधन हो गया। वे ७० वर्ष की थीं, कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थीं। रुग्णावस्था में कुछ काल तक अचेत भी रहीं।

श्रीमती सत्यवती एक आर्य महिला थीं। उनका जीवन गृहस्थी से समाज सेवा तक विस्तृत रहा। जीवन के अनेक संघर्षों को उन्होंने आंधी–तूफान की तरह झेला परन्तु चट्टान बन कर अपने कर्त्तव्य में स्थिर रहीं। उनके पति श्री रामगोपाल शालवाले को २२ बार जेल जाना पड़ा। ऐसी अवस्था भी आई जब आर्थिक विषमता का भी सामना करना पड़ा और बन्धु जनों ने साथ छोड़ दिया था मुंह फेर लिया। लेकिन अपने गृहस्थ चलाने, बच्चों को पोषित करने में बिना भयभीत हुए वे लगी रहीं। देश, धर्म, समाज के लिये पति ने जेलें काटीं परन्तु इस देवी ने कभी उनकी हिम्मत को तोड़ा नहीं, न कभी निराश हुईं और न ही अपने पति को खतरों से खेलने से रोका।

श्रीमती सत्यवती ने स्वयं भी जेलयात्रा की। अमृतसर से आर्य महिलाओं का नेतृत्व करते हुए हिन्दी सत्याग्रह में उन्होंने गिरफ्तारी दी। वे लुधियाना में भी गिरफ्तार हुईं। गोरक्षा आन्दोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आर्य समाज दीवान हाल से माता ब्रह्मशक्ति के साथ उन्होंने महिलाओं के जत्थे लेकर गिरफ्तारी दी। कई बार ऐसा भी घटा कि लाला जी की जेल से रिहाई हुई तो माता सत्यवती उन्हें लेने पहुंचीं। कई बार माता जी की रिहाई हुई तो लाला जी उन्हें लेने पहुंच रहे हैं। ऐसी दशा में परिवार को व्यवस्थित रख पाना कितना कठिन था साथ ही समाज सेवा भी। माता जी को सेवा करने में विशेष रुचि थी। भारत पाक विघटन के कराल काल में उजड़े–लुटे विस्थापित दिल्ली में आ रहे थे उनके कैम्प जगह-जगह लगे थे। माता जी अपनी स्त्री समाज की सदस्याओं के साथ उनकी सेवा के लिए निकल पड़तीं। बाढ़ पीड़ितों के लिए भोजन पकाने खुद बैठ जातीं, काम खत्म हो जाता पर वे थकती नहीं थीं।

वेद एवं यज्ञ के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा थी। उन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों यज्ञ किये थे। चारों वेदों का पारायण उन्होंने कई बार स्वयं किया। किसी भी आर्य समाज के वार्षिकोत्सव का निमन्त्रण आता तो वे यज्ञ में सम्मिलित होने अवश्य जातीं। अपने साथ घृत सामग्री लेकर जातीं। यज्ञ के साकल्य का ही दान करना उन्हें अच्छा लगता था। प्रभु भक्ति के भजन वे झूम–झूम कर गाती थीं, इसीलिये महिलायें उनसे भजन सुनना नहीं भूलती थीं। आर्य स्त्री समाज कृष्ण नगर की वे प्रधाना रहीं। आर्य स्त्री समाज दीवानहाल एवं प्रान्तीय आर्य महिला सभा की कर्मठ कार्यकर्त्री रहीं।

उनके पति ने वानप्रस्थ के बाद संन्यास लिया तो रोड़ा बनकर नहीं खड़ी हुईं। उन्होंने कहा सारा जीवन तो मेरे पति ने संन्यासी जैसा जीवन बिताया, अब अगर सचमुच संन्यासी हो रहे हैं तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। संन्यास के समय वे काफी रुग्ण चल रही थीं परन्तु एकाकी जीवन की भयावह अवस्था का अनुमान करके भी निश्चल रहीं। संन्यास के बाद उनके पति स्वामी आनन्द बोध जी सामाजिकीय एवं राष्ट्रीय विषमताओं से संघर्ष करते रहे हैं और माता जी अपने रोग से। अपनी रुग्णावस्था से दुखी होकर वे कहतीं दुख है बस इस बात का मेरा यज्ञ और सत्संग छूट गया। साधु, संन्यासी, विद्वान् या कोई भी अतिथि उनके घर आता आतिथ्य करने में वे बड़ी तत्पर रहतीं।

श्रीमती सत्यवती की अन्त्येष्टि रविवार की शाम को ६ बजे निगम बोध घाट पर अनेक विद्वान् एवं मन्त्रपाठी जनों द्वारा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उनके रिश्तेदारों के साथ दिल्ली की अनेक आर्य संस्थाओं के सैकड़ों नर-नारी उपस्थित थे। मन्त्रोच्चारण एवं स्वाहाकार से दिशायें गूंज रही थीं। पूर्ण वैदिक रीति से व्यवस्थित रूप से संस्कार सम्पन्न हुआ।

उ० प्र० की आर्य जनता एवं आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उस महनीया आत्मा के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं–

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

अध्यात्म सुधा

वैदिक उपासना

(ईश्वर का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के साधन)

[श्री प० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

(गतांक से आगे)

(घ) ब्रह्मचर्य–जननेन्द्रिय पर संयम। जब हमारी समस्त इन्द्रियाँ ब्रह्म मे रमण करने लगती हैं तब स्वतः ही ब्रह्मचर्य का पालन होने लगता है। जब इन्द्रियाँ विषयाचारी बन जाती हैं तो संयम टूटने लगता है। ब्रह्मचर्य खण्डित होने लगता है। ब्रह्म का अर्थ वेद और ईश्वर है। इन दोनों मे रमण ही ब्रह्मचर्य है।

(ङ) अपरिग्रह–चारों तरफ से लेने की वृत्ति तथा इन्द्रिय लोलुपता 'परिग्रह' है। धर्मपूर्वक इन्द्रियो के विषयों का जनहित में प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपयोग करना ही अपरिग्रह है। सांसारिक आकर्षक वस्तुओं को चारो ओर से प्राप्त करने की इन्द्रिय लोलुपता परिग्रह है। और निश्चल भाव से शान्तिपूर्वक बिना आकर्षण के धर्म पूर्वक विषयो का उपभोग अपरिग्रह है। सामाजिक और वैयक्तिक जीवन मे अपरिग्रह का महत्वपूर्ण स्थान है। अपरिग्रह से ही वैराग्य की उत्पत्ति होती है।

नियम भी ५ ही हैं। क्रमश उन पर भी दृष्टिपात करें। (क) शौच–पवित्रता। पवित्रता भी चार प्रकार की है। शरीर–मन–बुद्धि और आत्मा। इन चारों की शुद्धि के साधनो का वर्णन मनु जी महाराज ने इस प्रकार किया है। श्लोक है–

> अद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यन्ति, मन. सत्येन शुध्यति।
> विद्या तपोभ्यामभूतात्मा–बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

शरीर जल से शुद्ध होता है। मन सत्य से शुद्ध होता है विद्या और तप से आत्मा पवित्र होती है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। चारों साधनों मे पवित्र शरीर–मन, आत्मा और बुद्धि परमात्म तत्व की ओर प्रेरित होने लगती है।

(ख) सन्तोष–अपने–अपने कार्यों मे अत्यन्त परिश्रम करने के पश्चात् जो प्राप्त हो उसी मे प्रसन्नता का नाम सन्तोष है। वेद मे लिखा है (१) 'त्यक्तेन भुञ्जीथा:' उस परमात्मा से दिये हुए ऐश्वर्य का उपभोग कर। यह छोटा सा वाक्यांश बड़ा महत्वपूर्ण है। मेरे पास जो भी कमाई है या ऐश्वर्य है उसमें बहुत व्यक्तियों का हाथ है। कहीं इन्जीनियर, कहीं श्रमिक, कहीं शिल्पी और कहीं कलाकार, कहीं पूंजीपति किसी वस्तु के निर्माण में सहायक होते हैं। इन सब का उस वस्तु के निर्माण में योगदान है। वेद कहता है कि जिन जिन का योगदान है ऐश्वर्य सम्पन्न व्यक्ति तू उन सबका उचित भाग उन्हे देते हुए जो अन्त मे तेरे पास बचे उसे तू प्रभु से प्रदत्त समझ कर प्रसन्नतापूर्वक उस बचे हुए का उपभोग कर यही सन्तोष है। सन्तोष व्यक्ति के उत्पादन की क्षमता को कुण्ठित नहीं होने देता अपितु शेष बचे हुए में सन्तुष्टि प्राप्त कर व्यक्ति के मन को ऊर्जा की प्राप्ति होती है ताकि दुगनी शक्ति से वह पुन. उत्पादन मे लगे। योगदर्शन मे लिखा है सन्तोषात् अनुत्तम सुख लाभ ' सन्तोष से अनुत्तम सुख की प्राप्ति होती है। सन्तुष्ट व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष के क्षेत्र से परे हट जाता है। सन्तोष से युक्त व्यक्ति को ईर्ष्या और द्वेष रूप अग्नि जलती नहीं है अपितु सन्तोष से अद्भुत शक्ति प्राप्त कर व्यक्ति अपने कार्य मे दुगुने वेग से लगते हुए भी शान्त रहता है। सन्तोष से अद्वितीय सुख की उपलब्धि होती है।

(ग) तप.–अपने कार्य की सिद्धि के लिए हानि लाभ मान–अपमान, यश–अपयश, सुख–दु:ख, सर्दी–गर्मी, भूख–प्यास आदि द्वन्द्वों का सहन करना ही तप है। तपस्वी व्यक्ति के मल क्षीण होने लगते हैं और उसके अन्दर ज्ञान का प्रकाश बढ़ने लगता है। उसकी इन्द्रियाँ शुद्ध होने लगती हैं।

(घ) स्वाध्याय–स्व अध्ययन, मुक्ति की ओर ले जाने वाले शास्त्रों का अध्ययन एवं प्रणव का जप स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय करने से इष्टदेव भगवान् की प्राप्ति होती है। स्वाध्यायशील पुरुष अपना चिकित्सक स्वयमेव बन जाता है। स्वाध्याय से अपने भीतर की कमजोरियों को देखता हुआ उनको दूर करने के उपायो का प्रयोग कर उन कमजोरियो को बाहर निकालने मे सफल होने लगता है। स्वाध्याय एक प्रकाश है। स्वाध्याय से साधक का मार्ग प्रकाशयुक्त होने लगता है और वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने मे सक्षम हो जाता है।

(ङ) ईश्वर प्रणिधान–परम गुरु परमात्मा के प्रति समर्पित होने का भाव ही ईश्वर प्रणिधान है। ईश्वर के प्रति समर्पित होने वाले भक्त का अहंकार नष्ट हो जाता है। प्रभु मिलन की राह मे अहंकार एक बहुत बड़ी चट्टान है। ईश्वर प्रणिधान से वह चट्टान दूर हो जाती है और प्रभु के मिलने का मार्ग सुगम हो जाता है।

ये पाँच यम–और नियम हैं जिनके कठोरता से पालन करने पर उपासक का मन पवित्र होने लगता है। उसका मन चंचलता और व्याकुलता रहित हो जाता है और वह मन उस आत्मतत्व मे एकाग्र होने मे सक्षम होने लगता है।

इस मन को किस स्थिति मे कहाँ लगाया जाए इसके लिये महर्षि पतञ्जलि ने सर्व प्रथम शरीर को अस्थिरता–गतिशीलता–चंचलता एवं व्याकुलता से बचाने के लिए और इसके माध्यम से मन को एकाग्र करने की दृष्टि से आसन का वर्णन किया है। किस दशा मे शरीर को रखा जाए ताकि मन भगवान् में लग जाए इसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं–'स्थिर सुखमासनम्' अर्थात् निश्चल शरीर जिस अवस्था मे रह कर स्थिर सुख प्राप्त कर सके उसी का नाम 'आसन' है।

जब आसन का वर्णन आएगा तो दो प्रकार से इसको सोचना होगा।

(१) शरीर उपासना के समय किस अवस्था या आसन मे रहे।

(२) किस प्रकार के आसन पर बैठकर व्यक्ति कौन-सा आसन लगाये। इन दोनो बातो का वर्णन शास्त्रो ने किया है। वैसे तो ८४ आसनो का वर्णन शास्त्रो मे आता है और आजकल के नए योगी आसनों को परस्पर मिलाकर नए आसनो का आविष्कार भी कर रहे हैं। अपने देश और विदेशो में योग के नाम पर सुनने और सीखने वाला व्यक्ति आसनों की दुनियाँ में आ जाता है। (क्रमशः)

महर्षि दयानन्द और आर्यावर्त्त राष्ट्र

(डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री--अमेठी)

महर्षि दयानन्द को सदा इस बात का गर्व रहा है. कि उनका जन्म आर्यावर्त्त देश मे हुआ। किन्तु सत्यासत्य और मानव कल्याण की दृष्टि से वे किसी के साथ पक्षपात नहीं करना चाहते। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे वे लिखते है–

यद्यपि मै आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातो का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी बर्तता हू, जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषयमें बर्तता हू, वैसा विदेशियो के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है।

आर्यों से पूर्व इस देश में कोई मनुष्य नहीं बसता था। स्वामी दयानन्द के मतानुसार प्रथम मानव सृष्टि हिमालय की गोदी मे हुई और इस मानव–समाज को ही वेद ज्ञान मिला। और ये आर्य ही धीरे.धीरे सरस्वती और दृषद्वती नदियो से सिंचित प्रदेशो मे बस गये।

आर्यावर्त्त के प्राचीन गौरव का ह्रास

महाभारत का समय अत्यन्त अध.पतन का समय बन गया था। महाभारत का युद्ध परस्पर की कलह, द्वेष और दुराग्रह का फल है। श्रीकृष्ण जी के सहयोग से भी यह युद्ध टल न सका। तब जो विनाश हुआ है, उससे आज तक भारतवर्ष पनप नहीं पाया। वर्णाश्रम धर्म जो एकसूत्रताके लिए थे, विघटनके कारण बने, मंदिरबने अवतारबने, पुजारी और महन्त बने, रैदास के चरित्र और भक्ति से उच्च वर्णों के लोग प्रभावित अवश्य हुए, पर उन्हे वैष्णव धर्म मे ब्राह्मण आचार्यो के समकक्ष स्थिति प्राप्त नहीं हुई। रैदास के अनुयायी सजातीय लोग एक पृथक पन्थ के रूप मे परिवर्तित हो गए और हिन्दू समाज मे उनकी स्थिति नीची ही मानी जाती रही। यही बात कबीर आदि अन्य सन्तो के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है,

भारत के सामाजिक जीवन से ऊंच–नीच और छूत–अछूत के भेद को दूर करने के लिये अनेक बार प्रयत्न हुए। गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीरने भी इस सम्बन्धमें अनथक प्रयत्न किया था और आंशिक सफलता प्राप्त की। उनकी अल्प सफलता का कारण यह था कि इन धर्मों की मान्यताएं भारत की प्राचीन परम्पराओं के अनुकूल नहीं थीं। ये न वेदों की प्रामाणिकता मे विश्वास करते थे, न सृष्टि के कर्त्ता, धर्त्ता और संहर्त्ता ईश्वर की सत्ता को ही स्वीकार करते थे। इसलिए ये भारतीय जनता को स्थायी व गहन रूप मे अपने प्रभाव में नहीं रख सके और समाज मे ऊंच–नीच आदि के भेदभाव को दूर कर समानता स्थापित कर सकने मे भी असफल रहे। अतः ये दोनो धार्मिक आन्दोलन भारतीय जनता के बड़े भाग को प्रभावित कर सकने में असमर्थ रहे। मध्यकाल के सन्त महात्मा भक्ति मार्ग के प्रतिपादक थे और भगवान की भक्ति मे ऊंच–नीच के भेदभाव को भूल जाते थे। भक्तो की सीमित मण्डली में नीच समझे जाने वाले लोगो से उन्होने प्रेम अवश्य किया, पर सामाजिक जीवनमे शूद्रों की स्थिति को परिवर्तन करने के लिए कुछ ठोस कार्य नहीं कर सके। इनके दिमाग में भी वर्ण परिवर्तन की भी बात नहीं आई। अर्थात--शूद्र अपने अच्छे गुण, कर्म, सदाचार तथा भक्ति आदि से भगवान को प्राप्त कर सकता है परन्तु शूद्र से ब्राह्मण नहीं बन सकता। श्रेष्ठगुण, कर्म तथा सदाचार का पालन करने वाले शूद्र जब तक समाज मे शूद्र नाम से ही कहे जाते रहेंगे, तब तक उनकी सामाजिक निम्नतम स्थिति समाप्त नहीं हो सकेगी। इस तथ्य की ओर मध्यकालीन सन्त–महात्माओ का ध्यान नहीं गया।

उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध मे भारत में नवजागरण का सूत्रपात हुआ। इस काल में समाज सुधार के लिए स्थापित संस्थाओ मे ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज तथा थियोसोफीकल सोसाइटी प्रमुख थे। ब्राह्म समाज का प्रभाव बगाल में ही सीमित रहा और प्रार्थना समाज का बम्बई में। इसके साथ ही इन संस्थाओ के प्रवर्त्तकों तथा सचालकों ने सामाजिक कुरीतियो व कुप्रथाओ के निवारण के लिए धर्मग्रन्थों का सहारा लेने पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। सामाजिक प्रथाओ का आधार प्रायः धर्म होता है। हिन्दुओ मे यदि कुछ जातियो को ऊंचा या नीचा और कुछ को अछूत माना जाता था तो उसका आधार भी धर्मको प्रतिपादित किया जाता था। पंडित लोग स्मृतियो और धर्मशास्त्रों के आधार पर यह निरूपित करते थे कि ब्राह्मणो की उत्कृष्ट स्थिति और शूद्रों की हीन दशा शास्त्र-सम्मत हैं। इन बुराइयो को समाज से तभी सफलतापूर्वक दूर किया जा सकता था, जबकि वेद–शास्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध किया जाए कि ये बातें न धर्मानुकूल हैं और न शास्त्र सम्मत। इस दिशा में महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य किसी ने भी प्रयत्न नहीं किया। सर्वप्रथम भारतीय वर्णव्यवस्था में शूद्रों की हीन स्थिति के बने रहने के जो प्रमुख आधार धर्मशास्त्र थे' उन्हें महर्षि दयानन्द ने चुनौती दी। उन्होने वर्णव्यवस्था को गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर व्यवस्थित करने के वैदिक नियम को उपस्थित किया मध्यकाल में विकसित धर्मशास्त्रो तथा धार्मिक मान्यताओ को कपोल कल्पित तथा वेदशास्त्रादि का विरोधी बताया। धार्मिक व्यवस्था तथा उस पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के लिए उन्होने वेदों की प्रामाणिकता की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया।

पौराणिक धर्मशास्त्रों तथा स्मृतियो मे शूद्रो के लिए दण्ड व्यवस्था अत्यन्त कठोर है। उदाहरणार्थ–यदि शूद्र द्विजातियो को कड़ी अर्थात चुभने वाली बात कहे तो उसकी जीभ काट डालनी चाहिये। (मनुस्मृति, ८/२७०) / यदि द्रोहपूर्वक कठोर वचन कहे तो जलती हुई दश अंगुल लम्बी लोहे की शलाका मुख में डाल देनी चाहिये। (मनु० ८/२७१)। यदि अहंकार से ब्राह्मण को धर्मोपदेश करे तो राजा तपा हुआ तेल उसके मुंह और कान मे डलवा दे (मनु० ८/२७२)। यदि उच्च जातियों के साथ एक आसन पर बैठने की कोशिश करे तो उसकी कमर दाग कर उसे देश से निकाल दे (मनु० ८/२८१)। यही नहीं शूद्र को प्राण दण्ड तक का विधान स्मृतिकारों ने किया है। यदि शूद्र द्विज–स्त्री से समागम करे तो दण्ड के रूप में राजा उसकी लिंगेन्द्रिय को कटवा दे और उसका धन छीन लेवे। यदि वह अपनी रक्षा करता हो तो उसका वध करा दे (गौतम स्मृति, अध्याय १२)। मनु के अनुसार ब्राह्मण जाति की कन्या से समागम करने वाला शूद्र वध के योग्य है।

(मनु० ८/३५९। ३६५)

ब्राह्मणी के साथ में गमन करनेवाले शूद्र को आग में फूंक देना चाहिए (संवर्त–संहिता, १५२–१५४, १६६–१६८)। शूद्र के प्रति यह अन्याय उस समय बहुत अखरने लगता है जब हम स्मृतिकारों द्वारा एक ही प्रकार के अपराध के लिये शूद्र को बहुत कठोर और

[शेष पृष्ठ ११ पर]

पं० वीरसेन जी वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य

[श्री गणपति वर्मा, योग साधना केन्द्र, आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर]

[आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान धीरे-धीरे उठते जा रहे हैं। प्रभो ! तुम्हारी लीला अपार है, हम उसमें बाधक कैसे बन सकते हैं। हमारी तो केवल यही प्रार्थना और याचना है कि स्थान खाली न रहने पावे ... ..."आर्यमित्र' अपने दिवंगत आर्यमनीषियों की पुण्यस्मृति में उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक स्मृतिमाला प्रकाशित कर रहा है। इस सम्बन्ध में पाठकों के विचार सादर आमन्त्रित हैं। प्रस्तुत लेख में सौम्यता सज्जनता, एवं विद्वत्ता की त्रिगुण साकार प्रतिमूर्त्ति पं० वीरसेन जी वेदश्रमी के विषय में पढ़िए-

—सम्पादक]

भारत भूमि रत्नगर्भा है। इसमें आदि काल से ऋषि, मुनि, आचार्य तथा वेद के पण्डितों ने जन्म लेकर भारतीय वसुन्धरा के गौरव को बढ़ाया है। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक के बताये हुये मार्ग को पुनः हमारे समक्ष रखकर हमें चेतावनी दी कि जागो ! अब सोने का समय नहीं है। महर्षि ने विलुप्त वेद मार्ग को पुनः स्थापित किया तथा वेदों द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद का, जन-जन में, अपने अकाट्य-तर्क से प्रबल प्रचार किया। वेद अपौरुषेय है, तथा वेद का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ से ही विद्यमान है। महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, वेदों के भाष्य व अनेक स्वरचित ग्रंथों में वेद की महत्ता को सर्वोपरि सिद्ध किया है। मध्य प्रदेश इन्दौर नगर को भी यह गौरव प्राप्त है कि उसमें पं० वीरसेन जी जैसा वेदश्रमी व वेद-विज्ञान का आचार्य रहता था। पंडित जी का आकस्मिक निधन दिनांक २२-१२-८७ को सायं ७। बजे ८० वर्ष की आयु में इन्दौर में ही हो गया और उसके साथ ही इन्दौर की वह विभूति जो देवास में एक आर्य परिवार में जन्मी थी, सदा सर्वदा के लिए अनन्त में विलीन हो गयी।

पं० वीरसेन जी की अंत्येष्टि उनके सुपुत्रों द्वारा (विक्रमादित्य, विश्वावसु, विभावसु) बड़े ही धूमधाम से बैण्ड बाजे के साथ वेदमन्त्रों का उच्चस्वर में उच्चारण करते हुए जूनी इन्दौर के श्मशानघाट पर, जहाँ अन्त्येष्टि हेतु वेदी बनी हुई है, पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक २३-१२-८७ को ५ बजे दिन में की गई। अन्त्येष्टि संस्कार में १६ किलो शुद्ध घी, ४० किलो हवन सामग्री, ५ किलो चन्दन, २५० ग्राम कपूर लगा। चिता चयन का कार्य संयोगिता गंज, इन्दौर आर्य समाज के के पं० नाथूलाल जी ने अपनी देखरेख में कराया। सिर उत्तर को, पांव दक्षिण को, सिर थोड़ा ऊँचा रखा गया। शरीर पर घी अच्छी तरह लगाकर समग्री से ढक दिया गया। पंडित जी का शान्ति व सौम्य चेहरा मरणोपरान्त भी वैसा ही देदीप्यमान दिखाई दे रहा था। नगर के अधिकतम आर्य बन्धु अन्त्येष्टि संस्कार में सम्मिलित हुए थे, इस कारण श्रद्धानन्द अनाथालय में वे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सके।

उनके पुत्रों ने दिनांक २४-१२-८७ को गृह शुद्धि यज्ञ कराया जिसमें पंडित जी के सैकड़ों भक्त व श्रद्धालु सम्मिलित हुए। दिनांक २५-१२-८७ को श्री श्रद्धानन्द अनाथालय इन्दौर में श्रद्धांजलि सभा श्री गणपति वर्मा की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने किया। प्रारम्भिक वक्ता श्री किशोरीलाल गोयल ने पं० वीरसेन जी प्रतिभा व परिश्रम का वर्णन बड़े ही विस्तार से रोचक ढंग से किया। उन्होंने बताया कि पण्डित जी की ही प्रेरणा से दयानन्द वैदिक प्रचार मिशन की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व की गई। जिसके तत्वावधान में सांवेर के जिन हरिजनो (बलाइयों) को मुसलमान बना दिया गया था, उन्हें शुद्ध किया गया। आगर व आस पास के गांवों के अनेक हरिजन जो ईसाई बन चुके थे, उन्हें शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया गया। इन्दौर के पास के गांव में नायतों को शुद्ध किया। सन् १९४६ में महेश्वर में गुरुकुल की स्थापना की व बालकों को भरती कर आर्यत्व सिखाया। उन्हीं दिनों में इन्दौर से 'आर्यावर्त' मासिक पत्र निकाला गया जिसके संपादक थे, आर्यसमाज मल्हारगंज के स्व० श्री रामकृष्ण वर्मा एम० ए० साहित्यरत्न, सम्पादन कला विशारद। तत्कालीन हिन्दू नरेशों में आर्यत्व का प्रचार कर उन्हें संगठित किया। आर्य वीर दल की स्थापना कर अनेक स्थानों पर शाखायें प्रारम्भ की। मध्य भारतीय क्षेत्र का आर्य सम्मेलन कराया जिसमें पंजाब से श्री खुशहालचन्द खुरसंद (महात्मा आनन्दस्वामी) को बुलाया था। सीहोर व ब्यावरा में भी आर्य सम्मेलन हुए। इस क्षेत्र की प्रतिनिधि सभा भी राजस्थान में थी। मध्य भारत क्षेत्र में जागृति उत्पन्न कर इस क्षेत्र की पृथक प्रतिनिधि सभा बनाकर सन् १९५१ में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का रजिस्ट्रेशन भी करा दिया। पत्रों द्वारा इसका प्रचार किया गया व इस सभा को सार्वदेशिक सभा से भी मान्यता प्राप्त हुई। पं० वीरसेन जी इस म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम मन्त्री थे। उन्होने वेदो का गूढ़ अध्ययन कर महर्षि के सिद्धान्तों का अक्षरशः प्रतिपादन किया।

श्री नाथूलाल जी वर्मा ने पं० वीरसेन जी की महानता बतलाते हुए कहा कि प्रारम्भ में कुछ लोगों ने उन्हें केवल आयुर्वेद का ही विद्वान माना था, वेदों का नहीं। किन्तु कालान्तर में वैदिक सम्पदा आदि ग्रन्थों की रचना देखकर वे स्वयं चकित हो गये और उन्होने भी हृदय से वेद का विद्वान् माना और पण्डित जी वेदश्रमी तथा वेदविज्ञानाचार्य की उपाधियों से विभूषित हुए जो बहुत कम विद्वानों को प्राप्त है। पण्डित जी ने हमें सही तरीके से ओ३म् का उच्चारण करना बताया और इस बात पर बल दिया कि जो महर्षि ने लिखा व माना है वैसा ह हमें भी मानना चाहिए। ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शांतिकरणम् के मन्त्रों का सस्वर पाठ करना हमें सिखाया, व जिस वेद का जैसा पाठ हो उसी प्रकार से बोलना चाहिये ऐसा बताया। महर्षि ने लिखा है कि प्रत्येक मन्त्र के साथ ओं नहीं लगाना चाहिये। प्रारम्भ में जहां संस्कार विधि में ओं लिखा है वहीं बोलना चाहिये, प्रत्येक मन्त्र के साथ नहीं। पण्डित जी ने ऋषि प्रणीत ग्रथों का अध्ययन करके ही यह शिक्षा, जहाँ भी वह गये वहाँ; बिना झिझक के दी। प्रतिक्रिया की कभी उन्होंने परवाह नहीं की। महर्षि के बताये नुसार पण्डित जी ने भी संस्कारों की समाप्ती पर महावामदेव्यगान होना चाहिये का प्रतिपादन स्वयं स्वर से गाकर किया। पूजनीय शब्द सही है, पूज्यनीय बोलना गलत है। पण्डित जी ने अनेक स्थानों में शिविर का आयोजन कर सस्वर वेद पाठ करना सिखाया। पण्डित जी के पूज्य पिता जी स्व० पू० स्वामी चैतन्य देव जी जब भी घर से बाहर निकलते थे, सदा सत्यार्थ प्रकाश अपने हाथ में रखते थे। बाजार में सेठ, साहूकार, व्यापारी, हरिजन, छोटे बड़े सबसे सत्यार्थ प्रकाश (अकल की पुस्तक) पढ़ने को कहते थे। पण्डित जी के वेदपाठ का ढंग

[शेष पृष्ठ ७ पर]

दूरदर्शन का तथ्यहीन प्रचार

[श्री जयदेव शर्मा सदर बाजार, लखनऊ]

नये दूरदर्शन धारावाहिक अमीर खुसरो मे खुसरो के सम्बन्ध मे तो नाममात्र को दिखाया जा रहा है और अधिक समय मुस्लिम आक्रान्ताओ के सम्बन्ध मे एकांगी पक्ष प्रस्तुत कर जन साधारण को भ्रमित किया जा रहा है। सूत्रधार महमूद के विषय मे स्कूलो मे पढ़ाये जाने पर एतराज प्रकट करता है। शायद अगले किसी धारावाहिक मे १९६५ एव १९७१ के भारत पाक युद्धो के सम्बन्ध मे पढ़ाने पर भी एतराज किया जायेगा। तो क्या इस विचार से कि इतिहास पढ़ाने से राष्ट्रीय (हिन्दू–मुस्लिम) एकता मे बाधा उत्पन्न हो सकती है। इसलिए इतिहास पढ़ाया ही न जाय। फिर इतिहास लिखने की ही क्या आवश्यकता है ?

महमूद धर्मान्ध नहीं था इसे प्रमाणित करने के लिए 'डिस्कवरी आफ इण्डिया' का उद्धरण पढ़कर भ्रम उत्पन्न किया गया कि महमूद का सेनापति तिलक नामक हिन्दू था। जबकि वास्तविकता यह है कि सन १०३० ई० मे महमूद की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र शाह मसऊद ने अपने ही एक विद्रोही सेनानायक अहमद नियाल्तगीन को काबू करने के लिए १०३३ ई० के लगभग तिलक को नियुक्त किया था। तबकात-ए अकबरी के अनुसार वह तिलक मलिक बिन जयसेन के नाम से धर्म परिवर्तित करके मुसलमान बन गया था। (इलियट एव डासन भारत का इतिहास भाग २/४३१) फिर किसी बादशाह का सेनापति किस धर्म का है इससे उसकी नीतियो मे कुछ भी अन्तर नहीं आता। सेवा शर्तें तो मालिक की होती हैं। फिर इस दृष्टि से अग्रेजी अमलदारी मे साधारण और उच्च प्रशासनिक पदो पर तो भारतीयो का बाहुल्य था ही उसके अतिरिक्त गवर्नर जिसका रुतबा वर्तमान मे राष्ट्रपति का अपेक्षा अधिक समझा जाता था जैसे पदो पर भी भारतीय आसीन होते थे, लार्ड सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा और नवाब छतारी इसके उदाहरण है। हाउस आफ कामन' मे भी भारतीयो की अच्छी खासी साझेदारी थी। फिर उसे विदेशी शासन कह कर क्यो गाली दी जाती है ?

महमूद को धर्मान्धता के दोष से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से बड़े नाटकीय अन्दाज मे समझाया गया कि एक बार तो उसने खलीफा तक को चुनौती दे दी थी। जो खलीफा को चुनौती दे भला क्या वह धर्मान्ध मुसलमान हो सकता है ? अमीमिया (दूरदर्शन का सूत्रधार) खलीफा तो बहुत ऊंची हस्ती है 'फरिश्ता' कहता है महमूद ने अपनी गलती की माफी उसके अदना कासिद (सन्देश वाहक) तक से अपने ही भरे दरबार मे रो–रोकर मांगी थी, जो कि खलीफा का मात्र 'हल्फ मुकत्तआत और कलमा लिखा पत्र लेकर उसके दरबार मे आया था फिर यह भी बताइये महमूद को सुल्तान क्यो कहते है ? क्या खलीफा का आशीर्वाद लिए बिना कोई सुल्तान की पदवी पा सकता है ?

इन सब झंझटो से दूर जिसकी योग्यता की प्रशंसा स्वय सूत्रधार ने २५ मई के प्रदर्शन मे की उसी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी कृत 'फतावये जहांदारी' के पृष्ठ ६ ब पर लिखा है, महमूद ने अपना समस्त जीवन खुदा के लिए जिहाद करने मे लगा दिया था। उसने जो धर्मयुद्ध किये, उनका उद्देश्य धन–सम्पत्ति की लालसा न था किन्तु बाल्यावस्था से अन्त तक उसकी महत्वाकांक्षा यही रही कि किस प्रकार इस्लाम के समस्त विद्रोहियों तथा शत्रुओ का विनाश किया जाय तथा कुफ्र के इमामों अर्थात ब्राह्मणो एव दार्शनिकों तथा उनके अनुयायियों को तलवार के घाट उतारा जा सके और इस्लाम के प्रकाश द्वारा समस्त ससार प्रज्वलित हो सके।

शायद कोई सैक्युलर कह सकता है यह तो इतिहासकार के विचार हैं महमूद तो हमारा बड़ा भाई अर्थात् पक्का सैक्युलरिस्ट था इसीलिए हम उसी के मुख से सुनते है कि वह क्या कहता है। तारीख अल्फी के अनुसार जब वह सोमनाथ की मूर्ति तोड़ने लगा तब मन्दिर के सारे पुजारियो ने कहा मूर्ति नही तोड़ी जायेगी तो वे करोड़ों स्वर्ण मुद्राए दे देंगे। महमूद के जीवन का उद्देश्य तो बिलकुल स्पष्ट था उसने उत्तर दिया, मैं चाहता हू कि आकबत के दिन मुझ यह कहकर बुलाया जाये कि वह महमूद कहा है जिसने काफिरों की सबसे बड़ी मूर्ति को नष्ट किया है। यह नहीं कहा जाये कि वह महमूद कहा है जिसने सोना लेकर मूर्ति काफिरो को बेची थी।' इलियट २ / ३४११ और यही नहीं वह मूर्ति के चार टुकड़ करके गजनी ले गया वहा एक टुकड़ा जामा मस्जिद की सीढ़ियो और एक महल की सीढ़ियो पर लगाया तथा एक–एक टुकड़ा मक्का और मदीना भेज दिया ताकि मुसलमानो के पैरो से पादाक्रान्त होती रहे। सत्यता को छुपाकर दूर दर्शन किस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह कुत्सित प्रचार कर रहा है ?

आर्यसमाज कौड़ीराम का पुनर्गठन एव निर्वाचन

गोरखपुर देवरिया तथा बस्ती जनपद हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा स्थायी रूप से नियुक्त आर्य प्रचारक एव उपदेशक डा० महावीर शास्त्री द्वारा गोरखपुर जनपद के कौड़ीराम नामक स्थान पर वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज का प्रचार किया गया। फलस्वरूप अत्यन्त पुरानी आर्यसमाज कौड़ीराम का पुनर्गठन तथा निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वसम्मति से श्री रामचन्द्र सेठ प्रधान, श्री हृदयनारायण जी मन्त्री श्री महादेवप्रसाद जी कोषाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए। यह भी निर्णय लिया गया कि अतिशीघ्र कौड़ीराम मे समाज का वार्षिकोत्सव भी सम्पन्न कराया जायगा।

प्रवेश सूचना

[सत्र १९८८–८९]

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

[अन्तर्गत आर्य विद्या सभा, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली]

पद	धर्म शिक्षक
प्रवेश योग्यता	एम० ए० (संस्कृत) अथवा आचार्य। हिन्दी, अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान आवश्यक।
पाठ्यक्रम अवधि	एक वर्ष
सुविधाए	शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सर्वथा नि शुल्क। योग्य छात्रों को २०० रु० मासिक छात्रवृत्ति।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यार्थियों को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं मे धर्म शिक्षक' पद पर टी० जी० टी० वेतनक्रम मे नियुक्ति की गारंटी।

केवल निष्ठावान् आर्यसमाजी ही पूर्ण विवरण (आयु, शैक्षिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र २० जून, १९८८ तक निम्न पते पर भेजें–

प्रो० धर्मसिंह
प्राचार्य
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान,
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।
पिन–११०००१

पं० वीरसेन जी वेदश्रमी

[पृष्ठ ५ का शेष]

ही निराला था, उन जैसा वेदज्ञ हमने आज तक नहीं देखा। दयानन्द वैदिक मिशन की स्थापना कर गांव-गांव वैदिक धर्म का प्रचार किया व कराया। उनका मुख्य उद्देश्य था कि जैसा महर्षि ने कर्मकाण्ड में लिखा है वैसा ही करो उसमें फेरबदल व सुधार की आवश्यकता नहीं है। वैदिक सम्पदा जैसा अमूल्य ग्रन्थ वैदिक जगत की बहुत बड़ी उपलब्धी है।

डॉ० मधुकर घोलप (आदिवासी सेवा संघ सुन्द्रेल-झाबुआ म० प्र०) ने अपनी संक्षिप्त सार गर्भित श्रद्धांजलि, अर्पित करते हुये बताया कि वृष्टि विज्ञान पर अनुसन्धान प० वीरसेन जी की ही देन है। "पर्जन्यो अभिवर्षतु" का विश्लेषण कर वरुण का आह्वान कर अनेक स्थानों पर यज्ञ कर सफलता प्राप्त की, सूखे तालाब भर गये, भूमि अनाज बोने योग्य हो गई। पण्डित जी ने मुझे भी रिसर्च मे मार्गदर्शन किया। श्री घोलप ने बताया कि आज जितना खतरा एटम बम से है उतना ही वायु-प्रदूषण से है। स्टाकहोम के एक वैज्ञानिक ने कहा था कि केवल भारतवर्ष की यज्ञ पद्धति ही इस विनाश को रोक सकती है। वैदिक वृष्टि विज्ञान को मान्यता दी पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, ने। मध्य प्रदेश ने उतना बढ़िया मूल्यांकन नहीं किया। यदि एक ट्रस्ट की स्थापना कर अनुसन्धान किया जाये, तो वैदिक वृष्टि विज्ञान द्वारा अतिवृष्टि अनावृष्टि को समाप्त किया जा सकता है। पण्डित जी द्वारा २० स्थानों पर इसका प्रयोग किया गया व १७ स्थानों पर सफलता मिली व भरपूर वर्षा हुई। वायु-प्रदूषण रोकने का एकमात्र उपाय यज्ञ है। समय आयेगा जब पण्डित जी का सही मूल्यांकन होगा, तभी विश्व कल्याण भावना सही जाग्रत होगी। पण्डित जी ने वेदों पर अकथनीय श्रम भी किया इसीलिए वे वेदश्रमी कहलाये, यह निर्विवाद सत्य है।

श्री पी० आर० आर्यकुमार ने आर्य समाज मल्हारगंज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये बताया कि प० वीरसेन जी ने स्वयं गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त की ओर सारा जीवन वेदों के अध्ययन व प्रचार प्रसार मे व्यतीत किया। श्री भट्ट वकील सा० ने स्पष्ट किया कि पण्डित जी की नम्रता, कर्मठता, मृदुता, सहयोगी स्वभाव तथा वेदों के प्रचार की अटूट लगन ने ही मुझे १९६५ मे आर्य समाज की ओर से आकृष्ट किया। वे मेरे गुरु थे। उन्होंने गायत्री मंत्र की व्याख्या जिस हृदयग्राही रीति से मुझे बतायी मैं नतमस्तक होकर उनका मुरीद हो गया। पण्डित जी के लेख व पुस्तकें पढ़कर ही पी० एच० डी० प्राप्त की जा सकती है। वृष्टि विज्ञान का सही प्रस्तुतिकरण उन्होंने ही किया था। पैसा उनके लिये गौण था, वे वेद प्रचार हेतु समर्पित थे। उनका जीवन सादा और विचार उच्च थे। वे अजात शत्रु थे। श्री बसन्त करमबेलकर ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा—मैं हैदराबाद में सत्याग्रह में जाने वाला इन्दौर का पहला व्यक्ति था। पण्डित जी के धर्माचरण से पूर्णरूपेण प्रभावित था। वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् तथा समाज के विभिन्न अङ्गों के प्रेरणादायी स्रोत थे।

पूज्य स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी ने फटकारते हुए सब उपस्थित आर्य जनों को कहा कि जीवन में उनके सिद्धान्तों का पालन नहीं करना ओर मरने के बाद मर्सिया गाना कहां तक उचित है? पण्डित जी ने सिद्ध कर दिया कि वेद का विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान है। जो भौतिक विज्ञान से बहुत आगे है। द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, आदि को यदि हमे नियन्त्रित करना है, तो उसके विज्ञान को समझना पड़ेगा। पंडित जी ने यज्ञ के माध्यम से प्रकृति को संतुलित संयमित करना बताया। "वैदिक सम्पदा" आर्य समाज को उनकी बहुत बड़ी देन है। पण्डित जी जीवन भर कर्तव्यनिष्ठ रहे, हम उनसे कर्तव्यनिष्ठा ही सीख लें। प्रभु का ज्ञान असीम है, प्रभु की सत्ता असीम है। प्रभु हमें शक्ति दे कि हम उसे समझने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकें। ईसा व हजरत मोहम्मद बड़े नसीब वाले हैं जिन्हे लाखो करोड़ो अनुयायी मिले। दयानन्द बड़ा बदनसीब रहा कि उसे सही अनुयायी नहीं मिले वरना संसार की काया पलट हो जाती।

श्री ठाकुरदास से भगत कंवरराम सिन्धी कालोनी आर्य समाज की ओर से तथा श्री हरिवल्लभलाल चम्मन ने दयानन्द गंज समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित कर सुझाव दिया कि प० वीरसेन जी के हस्तलिखित अप्रकाशित ग्रंथों को प्रकाशित कराया जाये व सारी समाजें इस शुभ कार्य मे सहयोग दें। पण्डित जी के चले जाने से वेदों का प्रचारक जाता रहा। शरीर का सारथी आत्मा है। पंडित जी हमारे सारथी थे। वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे।

श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने म० भा० आर्य प्रतिनिधि सभा तथा संयोगितागंज समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प० वीरसेन जी के विषय में कई ऐसे तथ्य उजागर किए जो बहुतों को नहीं मालूम थे। उन्होने बताया कि पण्डित जी को तीन वेद कण्ठस्थ थे। उन्होंने चारो वेदो का १२०० बार पारायण किया। इतना श्रम करने वाला विद्वान् कठिनाई से मिलेगा। उनकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। पं० वीरसेन ने इतिहास बनाया। वे आर्थिक विपन्नता में रहते हुए भी साहस नहीं खोते थे। उनकी दोनों पुत्रियां फीस जमा न कर सकने के कारण गुरुकुल से वापस आ गयीं पर पण्डित जी ने साहस नहीं छोड़ा, फिर से धन अर्जित कर दोनो पुत्रियों को गुरुकुल भेजा व स्नातिका बनाया। यहां वे राणाप्रताप से भी आगे बढ़ गये। जो पुत्री की रोटी बिलाव के ले जाने पर विचलित होकर अकबर से संधि करने को तैयार हो गये थे। पंडित जी में कभी हीन भावना देखी नहीं गई। पं० जी साक्षात् वेदमूर्ति थे। उन्होंने वेदों पर अनुसन्धान किया। उनकी २०-२३ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका कार्य आर्य जगत में स्वर्णाक्षरों मे लिखा जायेगा। वृष्टि विज्ञान उनका शोध विषय था। इतना बड़ा अनुसन्धान अन्य वैदिक विद्वान् बहुत कम कर पाये हैं। आर्य समाजों में पिछले ६० वर्षों से चली आ रही कर्मकाण्ड व्यवस्था मे पं० जी ने दृढ़तापूर्वक सुधार किया। स्वामी जी के ग्रन्थो की १-१ लाइन पढ़कर प० जी ने आत्मसात किया। व सबको वैसा ही सिखाया। पं० वीरसेन जी की स्मृति में एक संस्थान (ट्रस्ट) बनाना समीचीन होगा जिसके द्वारा उनके अप्रकाशित ग्रंथों का प्रकाशन किया जाये। यह कार्य प्रान्तीय सभा व समाजें कर सकती हैं आदि।

अन्त में सभाध्यक्ष श्री गणपति वर्मा ने सब महानुभावो का आभार माना व आर्य समाज मल्हारगंज के अन्तर्गत पिछले १२ वर्षों से चल रहे योग साधना केन्द्र की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की व बताया कि हमारी तो यह परम्परा रही है कि विद्वानों के गुण उनकी मृत्यु के बाद ही गाये जाते है, जीते जी उनकी कद्र नहीं होती, जो मरने के बाद होती है। संस्कार विधि में वर्णित अग्न्याधान अलग पात्र से करना, तीन-तीन समिधा गोल छाल वाली लाना, ओ३म् व ब्रह्मा का सही उच्चारण, संध्या विधिपूर्वक करना उन्होंने सिखाया था। वे अपने शिष्यों को पुत्रवत स्नेह करते थे, व उनके द्वार शिक्षा, वेदपाठ, सस्वर पाठ, आदि के लिये सदैव खुले रहते थे। पं० जी ने पत्र व्यवहार द्वारा अमेरिका में अमेरिकनों से प्रातः सायं यज्ञ नित्य कराके भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिया। परमपिता परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे व उनके परिवार जनों को धैर्य दें इन शब्दों के साथ दो मिनट का मौन रखकर शांति पाठ कर श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

शोक प्रस्ताव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की अन्तरंग सभा को यह जानकर दुख हुआ कि श्री प० इन्द्रराज जी मन्त्री जिला सभा की माता श्रीमती धुरदेवी जी का अचानक ८६ वर्ष की आयु मे निधन हो गया। जिला सभा के प्रधान श्री माधवसिंह जी ने उन्हें निर्माण करने वाली एक महान देवी की संज्ञा देते हुए उनके निधन पर शोक व्यक्त किया। वे पतिपरायणा, धार्मिक, साहसिक एवं राष्ट्रभक्त महिला थीं। उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम मे भी गिरफ्तारी दी तथा गोरक्षा आन्दोलन में वे तिहार जेल दिल्ली तथा हिन्दी आन्दोलन में चण्डीगढ़ मे गिरफ्तार रही। उनके निधन से परिवार और समाज की क्षति हुई है।

एक मिनट के मौन से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की अन्तरंग सभा में पंजाब बचाओ दिवस पर पारित प्रस्ताव

यह सभा स्वर्ण मन्दिर अमृतसर को उग्रवादियों से मुक्त करवाने की सरकार की कार्यवाही का समर्थन करती है। धार्मिक स्थलों का देश के विघटन के लिए प्रयोग की भर्त्सना करती है। स्वर्ण मन्दिर से निरन्तर उग्रवादियो की रक्षाबलों के साथ भयंकर गोलाबारी पर चिन्ता व्यक्त करती है। इस सभा का निश्चित मत है कि पाकिस्तान और अमरीका के इशारे पर यह देश को तोड़ने का भयंकर षड्यन्त्र है इसलिये इसको पूरी तरह से सख्ती से कुचल देना चाहिए।

यह सभा भारत के राष्ट्रवादी नागरिकों विशेष कर सिख भाइयों से अनुरोध करती है कि वे उग्रवादियो को आत्म समर्पण के लिए प्रेरित करें तथा जलते हुए पंजाब को इन विघटनकारी तत्वों से बचाने का संकल्प लें।

भारत सरकार से अनुरोध है कि वह उग्रवादियो से कोई समझौता वार्ता न करें तथा सुरक्षा पट्टी का निर्माण शीघ्र अतिशीघ्र करें ताकि उग्रवादियों को विदेशों से आ रही मदद को प्रभावी ढंग से रोका जा सके।

यह सभा भारत सरकार से यह भी अनुरोध करती है कि पंजाब को उग्रवादियो से सुरक्षित करने के लिए पंजाब को सेना के सुपुर्द किया जाये ताकि प्रभावी ढग से यह षड्यन्त्र असफल किया जा सके।

इन्द्रराज
मन्त्री

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की अन्तरंग सभा में पंजाब रक्षा दिवस पर प्रस्ताव

पिछले दिनों पंजाब में बढ़ती हुई हिंसा को दृष्टि में रखते हुए सरकार ने स्वर्ण मन्दिर अमृतसर को उग्रवादियों से मुक्त कराने हेतु जो कदम उठाया है यह सभा उसका समर्थन करती है।

यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि पंजाब के निरीह और निर्दोष व्यक्तियों के जीवन की रक्षा तथा देश की अखण्डता के लिए उग्रवादियों को कुचलने के लिये कड़ी कार्यवाही जारी रखे।

इन्द्रराज
मन्त्री

पञ्जाब रक्षा दिवस

आज दिनांक १५–५–८८ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर एटा में पंजाब रक्षा दिवस पर आयोजित सभा में उपस्थित सभी महानुभाव पंजाब में हो रहे नृशंस हत्याकाण्ड की घोर भर्त्सना करते हैं तथा भारत सरकार से मांग करते हैं कि–

१–पंजाब को काश्मीर की तरह विशेष दर्जा न दिया जाय।

२–पंजाब में शीघ्र फौजी शासन लागू करके वहां हो रहे नृशंस अत्याचार, हत्याओं एवं पलायन को रोका जाय।

३–पंजाब की सुरक्षा हेतु, सीमा सुरक्षा पट्टी का शीघ्र निर्माण कराया जाय।

४–भूतपूर्व सैनिको को सीमा क्षेत्रों मे बसाने की व्यवस्था की जाय।

प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। इसकी प्रति प्रधान मन्त्री एवं गृह मन्त्री भारत सरकार को भेजी जावे।

–मन्त्री आर्यसमाज एटा

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन की शिक्षा बी० ए० के स्तर तक का प्रवेश १ मई ८८ से शुरू है और जोलाई में भी रहेगा। नियमित दैनिक, दिनचर्या उत्तम सादा भोजन, सादगी रहन–सहन उच्चतर शैक्षिक व्यवस्था के लिए ८वीं कक्षा तक के प्रवेश हेतु पधारें।

–कीर्तिपाल शर्मा मुख्याधिष्ठाता

योग साधना शिविर

महात्मा नारायणस्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में २७ जून से ३ जोलाई तक लग रहा है भोजन शुल्क केवल ४०) रुपया शिविर में आने वाले सज्जन सूचित करें।

महात्मा नारायणस्वामी आश्रम
रामगढ़ तल्ला (नैनीताल)

विधर्मी महिलाओं की शुद्धि

१५–५–८८ को आर्यसमाज कुटला दोलत (बदायूं) के मन्त्री श्री प्यारेलाल आर्य ने ग्राम गंगोरा पोस्ट बसीमा (बदायूं) में ३ विधर्मी महिलाओं को शुद्धि उपरान्त पूर्ण वैदिक रीति से दाम्पत्य सूत्र में बांधा जिनके दाम्पत्य क्रमशः टीकाराम–गीतादेवी व बनवारीलाल–सुशीलादेवी और रामदास–कल्पनादेवी रहे। इस अवसर पर गांव गांव व अन्य स्थानों के २०० से अधिक व्यक्तियों व महिलाओं ने शुभ आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज उझानी के चेतराम आर्य का भी सहयोग रहा।

अमरसिंह मौर्य

आवश्यकता है

एक स्वस्थ, सुन्दर विधवा ब्राह्मण युवती की, भूमि एवं धन से सम्पन्नता, नौकरी पेशे से युक्त प्रवक्ता को।

सच्चिदानन्द तिवारी
आर्यसमाज रसड़ा, बलिया (उ० प्र०)

आर्यसमाज में वेद पारायण यज्ञ का प्रचलन कैसे हुआ ?

–स्वामी सत्यप्रकाश जी आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–१

१– आर्य समाज में यज्ञों के नाम पर पाखण्ड बढ़ता आ रहा है। इनमें से एक "वेद—पारायण"-यज्ञ भी है।

महात्मा नारायण स्वामी आत्म-लिखित जीवन चरित्रमें लिखते हैं– मैंने हवन आर्य समाज में सम्मिलित होने से पहले ही शुरू किया था और बराबर उसे करता रहा। रेल के सफर में भी उसका करना नहीं छूटा। अब आश्रम परिवर्तन करने से वह छूट जाने वाला था। इसलिये निश्चय किया गया कि आश्रम–परिवर्तन से पूर्व एक बृहद्यज्ञ (...) यजुर्वेद से किया जाए। वैशाख शुक्ला ८ सं० १९७९ (४ मई १९२२ ई०) से विधिवत् एक सुन्दर मंडप बनवा कर यज्ञ प्रारम्भ किया गया। मैं यजमान था, पंडित गौतम स्नातक गुरुकुल वृन्दावन ब्रह्मा बनाये गये। साहू रामस्वरूप मुरादाबाद, म० रामप्रसाद नैनीताल आदि ऋत्विक् थे।

यज्ञ विधिवत् होने लगा। कार्यक्रम इस प्रकार बनाया गया कि प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक यज्ञ और सायंकाल साढ़े ४ से ६ बजे तक उपदेश हुआ करें। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी जो इस अवसर पर पधारे थे उनके तथा अन्य महानुभावों के नियम–पूर्वक उपदेश होते रहे।

यज्ञ में शरीक होने के लिये, राय इन्द्रनारायण साहब रईस, सहोट [एटा] और साहू रामस्वरूप जी रईस, मुरादाबाद आदि सज्जन दूर–दूर से आए थे। ९ मई तक यज्ञ और व्याख्यान नियम–पूर्वक होते रहे। पूर्णाहुति का दिन था। उसी दिन आश्रम–परिवर्तन भी करना था। इसलिए ७ मईसे ९ मई तक उपवास करके संस्कारविधि में अंकित ३ दिन के व्रत को पूरा किया गया। यज्ञशेष के लिए मोहनभोग बनाने का काम श्रीमान् जुगलकिशोर जी बरेली निवासी की धर्मपत्नी जी ने अपने जिम्मे लिया था। देवी जी बाहर से आये हुए अतिथियों के लिए भोजन बनाने का कष्ट भी बराबर कई दिन तक उठाती रहीं।

महात्मा नारायण स्वामी जी सन् १९२२ में क्या जानते थे कि आर्यलोक में आकर उस समय उन्होंने यजुर्वेद के सम्पूर्ण मन्त्रों से जो यज्ञ किया (क्योंकि उनके जीवन का यह अन्तिम देवयज्ञ था) अब आर्य कर्मकाण्डियों के हाथ में पड़कर १९८८ में वेद पारायण यज्ञों का रूप धारण कर लेगा और जिसमें एक यजमान की जगह अनेक धनी यजमान बैठेंगे और उनको पुण्य प्रलोभन देकर अच्छा व्यापार चलाया जा सकेगा।

२– वेद पारायण देवयज्ञ है, या ब्रह्मयज्ञ ?

स्मरण रहना चाहिये कि वेदपारायण ब्रह्मयज्ञ है: न कि देवयज्ञ। वेद का प्रत्येक मन्त्र आहुति देने के लिए नहीं है। कर्मकाण्ड मे जिस मन्त्र का जो विनियोग परम्परा से आचार्यों ने निर्दिष्ट किया है, वे ही विनियोग करने चाहिये। महर्षि दयानन्द ने हमें पंच-यज्ञ महाविधि और संस्कार विधि में विनियोग दिए हैं, वे ही मानने चाहिए––न कम, न न्यून।

३– होमकृत्य में मन्त्र कौन पढ़े ?

संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण मे स्पष्ट लिखा है, कि मन्त्र यजमान पढ़ें (यदि वह जड़-मूर्ख अक्षर–ज्ञान से रहित हो, तो उस विकल्प में मन्त्र कोई और पढ़े। याद रखिए, वेद–पारायण रिले–रेस नहीं है, कि कुछ मन्त्र एक व्यक्ति पढ़े, और कुछ मन्त्र कोई दूसरा पढ़े। ऐसा पाठ तो किसी भी ग्रन्थ के पारायण में अभिप्रेत नहीं है।

दयानन्द कन्या विद्यालय का शिलान्यास

जनपद मुरादाबाद की आर्य समाज धोंटोपुरा में श्रीमद्दयानन्द कन्या महाविद्यालय का शिलान्यास स्वामी अग्निवेश भू० पू० शिक्षा मन्त्री हरियाणा सरकार के करकमलों से हुआ। यह विद्यालय उत्तर प्रदेश नारी जागरण कार्यक्रम का कार्यालय रहेगा और स्वामी जी ने शिल्प की शिक्षा देने पर जितना व्यय होगा उसे वे स्वयं प्रदान करेंगे। महर्षि दयानन्द जी ने नारी जाति के उत्थान के कार्य को मरण पर्यन्त किया यह विद्यालय उसे सही रूप में आगे बढ़ाएगा अनेक दान दाताओं ने दान दिए चौ० हरगोविन्द सिंह ने अपनी भूमि दान दी श्री चेतन स्वरूप आर्य मन्त्री आर्य समाज धोंटोपुरा ने रु० १६०००=०० नकद दान देकर। जुलाई ८८ तक दो कमरे पूर्ण कराने का वचन दिया सभा की अध्यक्षता चौ० धर्मपालसिंह प्रधान मोहम्मदपुर ने की तथा सभा संचालन रामस्वरूपसिंह मन्त्री आर्य समाज सवालपुर ने किया।

रामस्वरूप आर्य

आर्य विद्वान का निधन

आर्य समाज के प्रख्यात विद्वान, वक्ता तथा विचारक आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री [७४ वर्ष] का हृदयगति रुक जाने के कारण ९ जून, ८८ को उनके घर पर देहान्त हो गया। वे गत ४५ वर्षों से बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के तत्वावधान में निरन्तर प्रचार कार्य में संलग्न थे। कई सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थाओं के संचालन तथा मार्ग दर्शन में उनका प्रमुख सहयोग प्राप्त होता रहा। वे बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मन्त्री तथा उपप्रधान रहे तथा सम्प्रति संरक्षक थे। सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा से उनका वर्षों से सम्बन्ध बना रहा तथा वे अभी भी सदस्य थे। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के कई वर्षों तक मन्त्री रहकर इन्होंने विवादास्पद विषयों एक महत्वपूर्ण निर्णय भी दिया था।

परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति हेतु प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

बाल जगत

गणित का चमत्कार

यदि कोई व्यक्ति आप से किसी भी माह के सप्ताह का दिन पूछे, तो आप उस दिन का कुछ ही क्षणों मे बता सकते हैं। आपको इन १२ माह के सूत्रों को याद करना होगा--

१--जनवरी--	४	७--जोलाई--	४
२--फरवरी--	०	८--अगस्त--	७
३--मार्च--	१	९--सितम्बर--	३
४--अप्रैल--	४	१०--अक्टूबर--	५
५--मई--	६	११--नवम्बर--	१
६--जून--	२	१२--दिसम्बर--	३

इन सूत्रों को याद करने के पश्चात जिस माह की तारीख का वार निकालना हो, उस तारीख मे उस माह के सूत्र को जोड़कर सात से भाग दे दीजिए। जो शेष बचे, उसे सोमवार से क्रमानुसार लगाते हैं। यदि शेष शून्य बचे तो वह रविवार होगा। यदि तारीख मे सूत्र जोड़ने पर आया अङ्क सात से कम हो तो भाग मत दीजिए और क्रमानुसार लगा लीजिए।

जैसे- ५ जोलाई १९८८ का वार निकालिए-
५+४=९
७ से भाग देने पर-
९—७= २ शेष बचता है

क्रमानुसार लगाने पर ५ जोलाई को मगलवार होगा।
नोट--ये सूत्र केवल १९८८ ई० के लिए ही मान्य हैं।

— सौरभ समीर" कक्षा-८ पुत्र--श्री परमानन्द शास्त्री बड़ौत
(मेरठ)

वार्षिक चित्र शीघ्र भेजिये

समस्त जिला सभाओं तथा आर्यसमाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जिन जिला सभा अथवा आर्यसमाज ने वार्षिक चित्र अब तक न भेजे हों, वह ३० जून ८८ तक अवश्यमेव सभा कार्यालय मे प्राप्तव्य धन सहित भेजने की कृपा करें-बाद में कोई चित्र स्वीकार नहीं हो सकेंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज बतियाना मुजफ्फर नगर
प्रधान श्री चतरसिंह जी राठी
मन्त्री श्री धर्मवीर सिंह आर्य
कोषा० श्री राजसिंहजी

कविता कलाप

गायत्री जाप

ओ३म नाम है मुख्य तुम्हारा, हे जग रक्षक प्रभु त्राण करो।
ओ३म् प्राणप्रिय दुःख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो॥

वह सविता जग का उत्पादक
ऐश्वर्य सर्व का दाता है।
उसका ही हमने वरण किया
कर लिया उसी से नाता है॥

आ गए हृदय मे ओ३म् देव, तो निज गुण हमे प्रदान करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुःख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो॥

देदीप्य स्वयं हो रहे देव
जो हमको भी चमकाते हैं।
उनका अनुपम अति शुद्ध रूप
हम भर्ग ध्यान मे लाते हैं॥

शुभ रूप पक्ष देकर अपना, जीवन ज्योतित अघवान करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुःख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो॥

ओ३म् तुम्हारा कर वरण ध्यान
हम एक याचना करते हैं।
प्रेरित कर दो बुद्धि हमारी
बस यही कामना करते हैं॥

सन्मार्ग सुभग यह बुद्धि चले, प्रभु मगलमय विज्ञान करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुःख विमोचक हे सुखदायक कल्याण करो॥

—देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़

निर्वाचन--
नगर आर्य समाज अजमेर
प्रधान श्री कविराज धर्मसिंह कोठारी
मन्त्री डा० दिनेशचन्द्र शर्मा
कोषा० श्री चन्द्रप्रकाश भटनागर

वधू की आवश्यकता

आर्य युवक रामकिशुन राम, बी० एस० सी० ५ फुट ३ इंच आयु ३३ वर्ष, अधिकारी सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, भाटपरानी (देवरिया) मे कार्यरत हेतु वैदिक संस्कार युक्त जो गृह कार्य मे दक्ष, शिक्षित व सुशील कन्या की आवश्यकता है। युवक का निजी मकान, निवासी-वाराणसी। दो भाइयों मे श्रेष्ठ, अन्तर्जातीय वैदिक धर्मी कन्या भी स्वीकार्य, सूचित करें अथवा सम्पर्क करें-मन्त्री आर्यसमाज राजा बाजार बढ़हज जि० देवरिया।

महर्षि दयानन्द और आर्यावर्त्त राष्ट्र

[शेष पृष्ठ ४ से आगे]

ब्राह्मण को बहुत हल्का दण्ड दे पाते हैं । उदाहरणार्थ–ब्राह्मण के साथ समागम करने वाली कन्या को कुछ भी दण्ड न दे (मनु० ८/२६५) । शूद्र स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाले द्विज पुरुष को देश–निकाला दिया जाय । पर जो शूद्र द्विज-स्त्री से व्यभिचार करे, उसे प्राण दण्ड दिया जाय (आपस्तम्ब धर्म सूत्र, प्रश्न २, पटल १०, खण्ड २७, सूत्र ८–९) ।

किन्तु दण्ड व्यवस्था के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का सिद्धान्त मध्यकालीन स्मृतियों तथा सूत्रग्रन्थों के बिल्कुल विपरीत है । "जिस अपराध में साधारण मनुष्य को एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध में राजा को सहस्र गुणा, मन्त्री को आठ सौ गुणा तथा छोटे से छोटा [राजकोष) भृत्य को आठ गुणे दण्ड से कम न होना चाहिए । ...... ब्राह्मण को चौसठ गुणा वा सौ गुणा अथवा एक सौ अट्ठाइस गुणा दण्ड होना चाहिए। अर्थात् जिसका जितना अधिक ज्ञान और प्रतिष्ठा हो उसका अपराध में उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए (सत्यार्थ प्रकाश, षष्ठ समुल्लास पृ० १२१ ।

गुणकर्मानुसार चातुर्वर्ण्य की स्थापना के लिए जो क्रियात्मक पद्धति महर्षि ने प्रतिपादित की है, उसकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—(१) राजनियम तथा जातिनियम द्वारा सब बालक बालिकाओं को आठ वर्ष की आयु हो जाने पर गुरुकुलों (आवासीय शिक्षणालयों) में भेज दिया जाए । शिक्षा सबके लिए अनिवार्य हो और एक समान हो, चाहे द्विज की सन्तान हो, और चाहे शूद्र या अतिशूद्र की । (२) गुरुकुलों में सबकों समान आसन, समान वस्त्र और समान भोजन मिले चाहे वे धनी माता–पिता की सन्तान हों और चाहे दरिद्र माता–पिता की । [३] शिक्षणकाल में विद्यार्थियों का सम्पर्क उनके माता–पिता से बिल्कुल न हो जिससे उनमें माता–पिता की आर्थिक स्थिति या वर्ण के आधार पर उच्च या निम्न भावना न बने । [४] शिक्षण काल समाप्ति पर आचार्यों द्वारा उनका वर्ण उनके गुण, कर्म, स्वभाव तथा योग्यता के आधार पर निर्धारित किया जाए । [५] गृहस्थ जीवन में पदार्पण के निमित्त स्नातक तथा स्नातिकाओं का विवाह उनके आचार्य द्वारा निर्धारित वर्ण के अनुसार गुण, कर्म तथा स्वभाव गत आधार पर किया जाए ।

इस प्रकार गुणकर्मानुसार चातुर्वर्ण्य की स्थापना का यह क्रियात्मक मार्ग स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित किया गया है । न इसकी ओर, बुद्ध और महावीर का ध्यान गया, न मध्यकाल के सन्त–महात्माओं या धार्मिक तथा दार्शनिक आचार्यों का । इसकी ओर उन्नीसवीं सदी के उन सुधारकों का ध्यान भी नहीं गया जो पश्चिम से प्रेरणा लेकर भारत की सामाजिक दशा सुधारना चाहते थे । वस्तुतः भारत के इतिहास में अकेले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे चिन्तक हुए हैं, जिन्होंने कि इस देश की भयंकर सामाजिक व्यवस्था की जातिगत बुराइयों की बीमारी के मूल कारणों का पता किया और उसके निवारण के लिए क्रियात्मक और सशक्त उपाय प्रतिपादित किए ।

–आर्य समाज नवाना (मेरठ) का १०६ वां वार्षिकोत्सव दि० २७, २८ व २९ मई को मनाया गया जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशकों तथा विद्वानों व विदुषियों ने अपने मधुर प्रवचन तथा उपदेशामृत से जनता को धार्मिक प्रेरणा दी ।

आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज में क्रांति लाने के उद्देश्य से नवयुवकों को दीक्षित करने के लिए शिक्षको के निर्माण हेतु गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य–वीर दल का शिक्षक प्रशिक्षण शिविर १२ जून रविवार से २६ जून रविवार, तक आयोजित किया जा रहा है । इस शिविर मे शारीरिक उन्नति, आत्मरक्षण, राष्ट्रीयता, आर्य समाज के सिद्धान्त, शिष्टाचार नियमित दिन चर्या, धर्म शिक्षा इत्यादि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा । युवकों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है ।

योग्यता—शिविरार्थी इससे पूर्व कम से कम २ शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका हो ।

प्रवेश शुल्क—५० रुपये ।

साथ लाने योग्य आवश्यक सामान—खाकी हाफपैन्ट (नेकर) सफेद कमीज, सैण्डो बनियायन, नोट बुक, पैन, थाली, लोटा, लाठी, पायजामा, लँगोट, काला कच्छा, डोरी बिस्तर तथा अन्य अन्य आवश्यक सामान ।

नोटः— १–शिविरार्थी ११ जून को सायंकाल तक गुरुकुल में पहुंच जाये ।

२–शिविर में निर्धारित नियमों का पालन और अनुशासित रहना आवश्यक होगा । अनुशासनहीनता करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक भी किया जा सकता है ।

आचार्य विजयपाल

ग्राम हबीबपुर [बदायूं]

में आर्य समाज का विशाल महोत्सव

आर्य समाज चन्दौसी (मुरादाबाद) की प्रेरणा से ग्राम हबीबपुर में आर्य समाज का प्रचार सम्पन्न हुआ । दिनांक २३–५–८८ से २४–५–८८ दो दिन बहुत अनुपम और व्यापक आयोजन हुआ । उत्सव का प्रारम्भ प्रति दिन प्रातःकाल की वेला में यज्ञ से आरम्भ हुआ । रात्रि का कार्यक्रम दोनों दिन बहुत ही रोचक रहा । पास–पड़ोस के लगभग दो हजार स्त्री–पुरुष, नवयुवक व बच्चे वैदिक धर्म से लाभान्वित हुए ।

आर्य समाज पीपीगंज गोरखपुर द्वारा ग्राम प्रचार

आर्य समाज पीपीगंज गोरखपुर के तत्वावधान में जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के उपप्रधान डा० पतिराज कश्यप के निर्देशन में ग्राम-तिघरा [पीपीगंज] में विशाल यज्ञ, प्रवचन, भजन तथा शंका समाधान का दिवसीय भव्य आयोजन दि० ३१ मई १९८८ को सम्पन्न हुआ । उक्त कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण नवयुवको में सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों, आडम्बरों जैसे मूर्तिपूजा, श्राद्ध, दहेज, चोरी, जुआ, शराब आदि के विरुद्ध वातावरण बनाकर वैदिक मान्यता एवं विचारों की तर्कपूर्ण श्रेष्ठता प्रतिपादित कर जनजागरण का महत्वपूर्ण कार्य हुआ । यज्ञ के ब्रह्मा जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के पुरोहित श्री रामचन्द्र आर्य तथा मुख्य वक्ता श्री प्रताप कुमार जी सक्सेना रहे । डा० कश्यप जी के द्वारा प्रचार की गई आर्य भजन मण्डली के नवयुवकों ने अनेक सुन्दर वैदिक गीतों को प्रस्तुत कर जनता को सम्मोहित कर लिया ।

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible]-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 44991 [illegible]
[illegible]
[illegible] शुक्ल ५
१९ जून रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

प्रवेश सूचना

१–अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा मे नये विद्यार्थियो का प्रवेश आरम्भ। प्रवेश की अन्तिम तिथि १ जुलाई १९८८ है। आवेदन १५ जून तक स्थानीय आर्यसमाज द्वारा अपना परिचय पत्र साथ लगाकर भेजें।

२–इस विद्यालय का उद्देश्य योग्य, चरित्रवान, समर्पित उपदेशक उपलब्ध कराना है।

३–विद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्ष का है। विद्यार्थियों को इस काल में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ संस्कृत, दर्शन, उपनिषद, वेदादि साहित्य मे अधिक से अधिक योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

४–प्रवेश के लिए कम से कम दसम् श्रेणी संस्कृत के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। आयु १७ से २६ वर्ष तक और अविवाहित।

५–विद्यार्थियों के आवास भोजन, शिक्षा आदि का सम्पूर्ण व्यय टंकारा ट्रस्ट व्यय करेगा।

रामनाथ सहगल मन्त्री
दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा (गुजरात)
उपकार्यालय–आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

वैदिक अन्त्येष्टि

आर्यसमाज [illegible] (बलिया) के सदस्य श्री परशुराम शर्मा ने अपने पूज्य पिता श्री [illegible] शर्मा की अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक पद्धति से की गई व पीपल मे घडा टांगा व बाल की कानी की गई। रूढ़िवादिता के विरुद्ध उनका यह प्रयास सर्वत्र चर्चा का विषय बना है।

अपेक्षितता

प्रौढ़ अथवा सक्षम सेवा निवृत्त व्यक्ति जिसे शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अनुभव हो, श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ आश्रम बालकों की परिचर्या हेतु छात्र संरक्षक पद के लिए अपेक्षित है। स्नातक व प्रशासनिक अनुभवी को प्राथमिकता। रिटायर्ड मिलिट्री मैन को वरीयता। वेतन योग्यतानुसार देय। बायोडेटा सहित आवेदन पत्र जून तक आमन्त्रित। इच्छुक व्यक्ति आवेदन व सम्पर्क करें–

मुख्याधिष्ठाता–श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़–३१२००१ राजस्थान

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, [illegible] के लिए [illegible] ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible], लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।एम-२-८४

ज्येष्ठ शुक्ल १२, रविवार, सम्वत् २०४५ वि०, दिनांक २६ जून १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सहायक सम्पादक—

ब्रह्मदेव पाठक एम० ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	२६

समता, समानता और बन्धुता के आदर्शों से परिपूर्ण

हमारा वैदिक समाज

उत्तिष्ठतावपश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रान्तं जुहोतन यद्यश्रान्तं ममत्तन॥
—अथर्व ७-७२-१

ऐ मनुष्यो! तुम सब (उत्तिष्ठत) उठो और (इन्द्रस्य भाग) ऐश्वर्य के भाग को (अवपश्यत) देखो, प्राप्त करो। (यदि श्रान्त) यदि तुम्हारे पास आवश्यकता से अधिक है तो (जुहोतन) समाज हित मे आहुत अर्थात् दान कर दो (यद्यश्रान्तं) यदि आवश्यकता से कम है तो (ममत्तन) दुःख मत मानो, हानि लाभ में समभाव से रहो, किन्तु ऐश्वर्यवान् बनने के लिए सतत प्रयत्नशील रहो।

वेदों में समाज की परिकल्पना अत्यन्त उदात्त और सर्वकालीन सुख शान्ति के सिद्धान्तों पर आधारित है। यह मनुष्य को एकाकी रूप में नहीं, अपितु समष्टिरूप मे व्यवहृत करने का उपदेश देती है। यतः मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे विरासत में अपने पूर्व जन्मकृत कर्मानुसार विभिन्न आयाम और परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं जिनके फलस्वरूप ही उसके गुण कर्म स्वभाव मे भिन्नता आती है, अत. इसी विषमता को दूर करने के लिए अवसर की समानता सबको प्रदान करते हुए कठोपनिषद् ने भी इसी वेदवाणी की अनुकृति मे कहा है— "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"

"तुम सब उठो, जागो और श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करते हुए अपने ज्ञान का सतत उद्बोधन करते रहो।"

इतिहास साक्षी है जब-जब धन के प्रति स्वामित्व एवं ममत्व की भावना बढ़ी, खूनी क्रान्तियों ने जन्म लिया और लाखों प्राणी वर्गसंघर्ष की वेदी पर चढ़ा दिये गये। सोवियत रूस और चीन की विश्व प्रसिद्ध खूनी क्रान्तियों से सभी परिचित हैं। वैदिक समाज व्यवस्था मे अर्जित धन पर जहां व्यक्ति का अधिकार माना गया है वहीं उस पर समाज के अधिकार को भी स्वीकारा गया है पर यह अधिकारवाद छीना-झपटी पर नहीं अपितु समाज मे दान की प्रवृत्ति पर निर्भर है इसीलिए अनेक स्थानों पर मन्त्रों में दान की महिमा का गुणगान किया गया है और हम दैनिक प्रार्थना में—"इदं न मम" की भावना को विकसित किया करते हैं। इस प्रवृत्ति से समाज में कभी वर्गसंघर्ष की स्थिति नहीं आ सकती और मानव समाज सुख और शान्ति का धाम बना रह सकता है।

★

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—ज्येष्ठ शुक्ल १२ संवत् २०४५, रविवार २६ जून १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

भूताय त्वा न अरायते

—वेदवाणी

"मैंने तुझे प्राणियों की सेवा के लिए भेजा है न कि सताने के लिए"

मानव जीवन परमपिता परमात्मा की अनमोल देन है। इससे श्रेष्ठतर और कोई योनि नहीं है। न जाने कितने पुण्यार्जन के पश्चात् हमें यह मानव चोला मिलता है क्योंकि इसी के द्वारा हम अपना विकास करते हैं और देवत्व की ऊँची लांघते हुए उस अमृतमयी गोद में पहुंच सकते हैं जहाँ न दु:ख है न क्लेश, आनन्द ही आनन्द है। यही मानव जीवन का उद्देश्य है। तुलसी ने कहा है—

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहि परलोक संवारा।।

ऐसा अनमोल हीरा हाथ लगने पर भी हम पशुत्व, हिंसकत्व और निर्ममत्व की ओर बढ़ते जा रहे हैं। हम ईश्वर के दिए हुए इस महान उपहार का उसी प्रकार से दुरुपयोग में ला रहे हैं जैसे बन्दर के हाथ में जवाहरात। हमारा चाहे हृदयरूपी मन मन्दिर हो चाहे ईंट पत्थरों का बना हुआ मन्दिर—ये सब हमारी शान्ति आनन्द और श्रद्धा के केन्द्र हैं। पापी से पापी मनुष्य भी इन मन्दिरों में पाप करते हुए डरता है। "सर्वभूतहिते रताः" की मानवीय भावना का उद्गमस्थल यही मन्दिर हैं। अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर जहां प्रवेश करते ही अलौकिक आनन्द की अनुभूति हुआ करती थी—की पवित्र मर्यादा को उग्रवादियों ने किस प्रकार आघात पहुंचाया है—यह एक पीड़ादायक घटना है।

आपरेशन ब्लैक थंडर के दौरान आत्मसमर्पण करने वाले उग्रवादियों में अनेक स्त्रियां भी हैं। आजकल इनसे पूछताछ चल रही है। इस पूछताछ के दौरान जो रहस्य प्रकट हो रहे हैं उन्हें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मानवता सिर झुका लेती है और उस बर्बर युग की याद आ जाती है जब इन्सान इन्सान नहीं हैवान से भी बदतर बना हुआ था। परिसर में जमीन के नीचे दबे हुए अनेकों सड़े गले शव प्राप्त हुए हैं जिनका परीक्षण करने पर पता चला है कि कैसी-कैसी क्रूरतम यातनाएं देकर इन लोगों को मारा गया था। यातना देने के लिए कुछ कक्षों में केन्द्र खोले गये थे जहाँ निर्दोष प्राणियों को जो मन्दिर में दर्शनार्थ आया करते थे पकड़-पकड़ कर ले जाया जाता था और उन्हें कोड़े लगाये जाते थे उन्हें फिल्मी स्टाइल से लात घूंसों से मारा जाता था। उनके शरीर को काट-काटकर नमक भरा जाता था। गुप्तांगों में बर्छी कृपाण घुसेड़ दी जाती थी और जब उनकी करुणा से भरी हुई चीख निकलती थी तो अट्टहास लगाया जाता था। स्त्रियों के साथ दुराचार आम बात थी उन्हें जबरन शादी के लिए मजबूर किया जाता था। आत्मसमर्पण करनेवालों में एक १२ वर्षीय बालक बलराम सिंह द्वारा सुनाई गई आपबीती दहला देने वाली है। उस बच्चे के माता पिता को उग्रवादियों के एक गिरोह ने चिट्ठी भेजकर स्वर्ण मन्दिर में बुलाया। वह परिवार मन्दिर परिसर में ६ मई को ही आया जिस दिन सुरक्षा बलों ने घेराबन्दी की और गोलाबारी की। गोलाबारी के दौरान बच्चा अपने मां बाप से बिछुड़ गया और रोने लगा। उसे रोते चिल्लाते देखकर एक आतंकवादी ने उसे तहखाने में धकेल दिया। पानी मांगने पर उसे पेशाब पीने को दी गई उसे बुरी तरह मारा पीटा गया और पूछा गया कि तुम्हारे मां बाप गहने और रुपया कहां रखते हैं। पूछताछ के दौरान यह भी पता चला है कि खालिस्तान कमांडो फोर्स, खालिस्तान लिबरेशन फोर्स, भिण्डरां वाला टाइगर फोर्स और बब्बर खालसा सभी के अपने-अपने यातना केन्द्र थे। इन यातना केन्द्रों से पहिले चिट्ठियां भेजकर लोगों को स्वर्ण मन्दिर परिसर में बुलाया जाता था और उन्हें मुंह मांगी रकम देने को कहा जाता था। जो रकम देने से इनकार करता उसे यातना केन्द्रों में ले जाकर अमानवीय यन्त्रणायें दी जाती थीं। यातना देने वाले उपकरणों में कई तरह के हंटर, मिर्च का चूरा, नमक व तेजाब थे। जब असह्य यातना से व्यक्ति चीखता चिल्लाता था या बेहोश हो जाता था तो उस पर पानी की बाल्टी डालकर होश में लाया जाता था। इस प्रकार कम से कम ४० निर्दोष हिन्दुओं / सिखों की हत्याएं कर उन्हें अकाल तख्त के पास पड़े हुए मलबे के नीचे दबा दिया गया।

संसार का कोई मत या सम्प्रदाय इस प्रकार के अनाचार, पापाचार और क्रूर यातनाओं की इजाजत नहीं देता है। हमारे धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा है—"सुहृद सर्वभूतानां" सभी प्राणी हमारे सुहृद हैं। महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, गुरु नानकदेव, गुरु गोविन्दसिंह ने पराये हित में अनेकों कष्ट उठाये और अपनी वाणी से मानवमात्र को प्रेम से रहने की शिक्षाएं दी हैं। सिख मत अपने प्रारम्भिक काल से ही अशक्तों, निर्बलों की रक्षा के लिए बना है। हमारा विचार है इन घटनाओं ने सिख मत को ठेस पहुंचाई है और गुरुओं की पवित्र मर्यादा को भंग किया है। सिख मत की स्थापना गुरुओं ने हिन्दुओं के रक्षार्थ की थी जो उस समय मुगल साम्राज्य के आधीन अनेक प्रकार की यातनाओं के शिकार हो रहे थे। हमें आशा है स्वर्ण मन्दिर अपनी गत गौरवमयी परम्पराओं एवं पवित्र मर्यादाओं को पुनः स्थापित करने में सफल होगा और इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति का केन्द्र अब कभी नहीं बनेगा।

* * *

ईसाई महिला का वैदिक धर्म में प्रवेश

जिला भोजपुर (बिहार) १५-५-८८ को डुमरांव में श्री शिवमुनी आर्य जिनको गत वर्ष शुद्ध किया गया था उनके छोटे बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार तथा उनकी माता क्रिश्चेतुआ जोसेफ को शुद्ध कर नाम बदल कर श्री भगवानमनी देवी आर्या रखा गया। यह शुद्धि संस्कार एवं अन्नप्राशन संस्कार पं० केदारनाथ आर्य के पौरोहित्य में किया गया एवं वैदिक धर्म की दीक्षा मन्त्री राजेश्वरी प्रसाद ने दिया जिसका प्रभाव डुमरांवनगर के लोगों पर पड़ा नगर के गणमान्य व्यक्ति सहित सैकड़ों व्यक्ति पधारे थे।

अध्यात्म सुधा

वैदिक उपासना

(ईश्वर का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के साधन)

[श्री पं० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश]

(गतांक से आगे)

जिन आसनों का सम्बन्ध प्रभु की उपासना से है उन आसनों का वर्णन ऋषि व्यास जी ने अपने योगदर्शन के भाष्य मे किया है और वे आसन है–

तद्यथा पद्मासनं, भद्रासनं, स्वस्तिकासनं, दण्डासन सोपाश्रयम्, पर्यंक क्रौञ्चनिषदनं हस्ति निषदनमुष्ट्रनिषदन समसंस्थान स्थिर सुख यथा सुखं चेत्येवमादीनि' अर्थात् पद्मासन, भद्रासन, स्वस्तिकासन, दण्डासन, सोपाश्रयासन (सहारे के साथ आसन) पर्यंङ्कासन (पलंग का आसन) क्रौञ्चासन (जैसे क्रौंच पक्षी बैठता है (हस्ति निषदन (जैसे हाथी बैठता है) सम संस्थान आसन, स्थिर सुख आसन तथा यथा सुख आसन , जैसे महर्षि स्वामी दयानन्द जी का आसन था।

इन आसनों को लगाते समय किन-किन बातों का ओर ध्यान रखना चाहिये इस विषय मे श्रीयुत योगेश्वर कृष्ण जी ने गीता के छठ अध्याय मे इस प्रकार वर्णन किया है–

(१) सर्वप्रथम ध्यान लगाने या आसन जमाने का स्थान अत्यन्त एकान्त मे होना चाहिये। यथा–

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।
एकाकी यत चित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः॥
(गीता ६–१०)

अर्थात योगी को, जिसने शरीर को मन और इन्द्रियों सहित जीता हुआ है जो वासना रहित है तथा जो सग्रह रहित है, अकेला एकान्त स्थान मे आसन मे स्थिर होकर निरन्तर परमेश्वर में ध्यान लगाना चाहिये।

(२) स्थान पवित्र होना चाहिये और आसन सम होना चाहिये।

यथा– शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनम्।
नात्युच्छ्रितं नाति नीचं चैलाजिन कुशोत्तरम्॥
(गीता ६–११)

अर्थात् शुद्ध भूमि में नीचे कुशा, उसके ऊपर मृगछाला तथा उसके ऊपर वस्त्र इस प्रकार के आसन पर जो न तो अति ऊंचा हो न ही अति नीचा हो अर्थात् सम हो ऐसा आसन बिछाकर।

३–उस आसन पर आसन लगाकर बैठने पर इस बात का ध्यान रहे कि शरीर–सिर और ग्रीवा (गर्दन) सम रहें अर्थात् एक लाइन में रहे। जैसे–

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः। (गीता ६–१३)

अर्थात् काया-शरीर––सिर और गर्दन एक सीध में रहे। अर्थात् साधक न तो अधिक अकड़ कर बैठे और न ही बिलकुल ढीला बैठे अपितु सम होकर बैठे। यह आसन लगाने का प्रकार है इस प्रकार सम आसन में स्थित उपासक क्या करे ? योगीराज कृष्ण कहते हैं–

सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्। (गीता ६–१३)

अर्थात् अपने नासिका के अग्रभाग को देखता हुआ अन्य दिशाओं को न देखे। इस प्रकार से–

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये॥ (गीता ६-१२)

आसन पर बैठकर नासिकाग्र भाग मे ध्यान लगाता हुआ अपने मन को एकाग्र करे और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में करता हुआ अन्तःकरण की शुद्धि के लिये अभ्यास करे।

इस प्रकार गीता मे योगीराज कृष्ण जी न नीचे आसन किस प्रकार का होना चाहिये तथा शरीर को आसन में किस प्रकार रखना चाहिए इसको बहुत ही स्पष्ट शब्दो में उपासक जगत् के सामने रखा है।

मन बहुत चंचल है। यह काबू में नहीं आता। इसकी चंचलता के विषय मे गीता मे अर्जुन ने एक स्थल पर कहा है––

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ (गीता ६-३४)

हे कृष्ण यह मन बड़ा चंचल है। यह बड़ा मथ डालने वाला है और बहुत बलवान और दृढ़ है। इसका निग्रह तो मैं ऐसा मानता हू कि जैसे अन्धड़ को नहीं रोका जा सकता ऐसे ही मन को भी नहीं रोका जा सकता।

इस चंचल मन को काबू में करने के लिए महर्षि पतञ्जलि ने आसन के पश्चात् प्राणायाम का क्रम रखा है। मन और प्राण का परस्पर बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जहां प्राण को रोकते हैं वहाँ मन रुकता है जहाँ मन को रोकते है वहाँ प्राण रुकता है। एक की गति अवरोध मे दूसरा अपने आप रुक जाता है। इससे स्पष्ट है कि यदि मन को रोकना है तो प्राण का रोकना बहुत ही आवश्यक है। इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने प्राणायाम का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए योगदर्शन मे लिखा है–

तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गति विच्छेदः प्राणायामः॥
–योगदर्शन २–४९

अर्थात् आसन के लग जाने पर श्वास (जो बाहर से भीतर जाता है) तथा प्रश्वास (जो भीतर से बाहर जाता है) इन दोनों की सहज गति जारी रहती है। श्वास के पश्चात् प्रश्वास और प्रश्वास के बाद पुनःश्वास इस निरन्तर गति का तोड़ना या बन्द करना ही प्राणायाम है। यह प्राणायाम भी चार प्रकार का मुख्यता होता है।

(१) बाह्यवृत्ति, (२) आभ्यान्तर वृत्ति, (३) स्तम्भवृत्ति और (४) बाह्याभ्यान्तर विषयाक्षेपी। बहुत संक्षप मे पहला प्राणायाम श्वास को बाहर रोकने का है दूसरा प्राणायाम श्वास को अन्दर रोकने का है। तीसरा प्राणायाम जहाँ बाहर और अन्दर एकदम श्वास को बीच

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महात्मा गाँधी के बाद हिन्दू समाज न कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिया जो महात्मा गाँधी का पर्यायवाची बन सके, क्यों ?

—विशन स्वरूप गोयल

महात्मा गाँधी जो बहुत योग्य विद्वान् व्यक्तित्व के मालिक नहीं थे उन्होंने इस देश तथा विदेशों मे ख्याति तथा मान्यता प्राप्त की उनके बाद हिन्दू समाज मे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो उनका पर्यायवाची बन सकता।

वैसे तो आर्यसमाज, और रा०स्वय सेवक संघ तथा सनातन धर्म के पास योग्य, विद्वान दूरदृष्टा, वेदों के ज्ञाता महानुभावों की कमी नहीं रही है किन्तु वे सभी महात्मा गांधी का पर्यायवाची उनकी तरह ख्याति और मान्यता प्राप्त नहीं कर सके। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही स्वराज्य हमारा अधिकार है इसकी घोषणा कर माग की थी। किन्तु सम्भवत उन्होंने एक समाज सुधारक होने के नाते इस ओर ध्यान नहीं दिया था कि स्वराज्य की प्राप्ति समाज सुधार का कार्य करने से नहीं अपितु राजसत्ता को हिलाने से ही प्राप्त हो सकती है। राजसत्ता को हिलाने के लिये राजनीति परक होना आवश्यक होता है। राजनीतिक मंच से ही कही जाने वाली बात सुनी जाती है। यदि उस समय या महर्षि दयानन्द जी के बाद के उनके विद्वान अनुयायी महानुभावों ने ही जैसा कि महर्षि जी ने स्वयं भी कहा था कि यदि आवश्यकता हो आर्यसमाज राज्य आर्य सभा का गठन कर सकती है इसकी स्थापना की होती तो शायद देश का बटवारा भी न होता और समस्त हिन्दू आर्य उस राज्य आर्य सभा मे संगठित होकर मिल जाते और देश को स्वराज्य भी १९४७ से पहले ही मिल जाता।

इसी प्रकार रा० स्व० संघ के पास भी विद्वान, कर्मनिष्ठ, देश भक्त दूरदृष्टा महानुभावों की कमी नहीं है न थी। डा० हेडगेवार तथा श्रीमान गोलवलकर जी जैसे योग्य व्यक्तित्व के धनी लोग रहे हैं किन्तु वे भी समाज सुधारक या संगठनकर्ता का ही काय करते रहे इसी कारण वे भी गांधी जी के पर्यायवाची बनने मे असफल ही रहे। सनातनधर्म के पास भी करपात्री जी, मदनमोहन मालवीय जी जैसे लोगो की कमी नहीं रही किन्तु वे भी समाज सुधार के काम में ही जुटे रहे जिसके कारण वे भी गांधी जी के समान ख्याति प्राप्त नहीं कर सके।

अब प्रश्न उठता है ये सभी लोग अधिकांश महात्मा गांधी से योग्य तथा विद्वान कम नहीं अपितु अधिक ही थे फिर भी ये इतनी देश और विदेश मे ख्याति और मान्यता प्राप्त क्यों नहीं कर सके जितनी महात्मा गांधी प्राप्त करने मे सफल हुए। इस पर यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो हम इस निश्चय पर पहुचेंगे कि गांधी जी जहाँ समाज सुधार का काम करते थे वहाँ राजनीति से भी जुड़े हुए थे। यही कारण था कि उन्हीं के सिर पर स्वराज्य प्राप्ति का सेहरा बधा और देश-विदेश मे उन्हे ख्याति और मान्यता मिली। यदि सनातन धर्म और रा० स्व० संघ तथा आर्यसमाज ने स्वयं को समाज सुधार का काम करते हुए राजनीति से भी अपने को आरम्भ से जोड़ लिया होता तो जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि देश का विभाजन भी न होता और स्वराज्य भी १९४७ से बहुत पहले ही मिल जाता साथ ही समस्त हिन्दू समाज एकजुट और संगठित होकर एक राजनीतिक मंच पर सामूहिक रूप से खड़ा हो जाता। किन्तु इनमे से किसी ने भी ऐसा नहीं किया और समाज सुधार के काम का ही ठेका लिये रखा जिसके कारण आज न हिन्दू समाज की कोई पूछ है न आर्यसमाज की। न सनातन धर्म और रा० स्व० संघ की। भले ही ये अपने कामों मे संलग्न हैं किन्तु इनका राजनीतिक मंच पर कोई अस्तित्व नहीं है और न ही उन्हे उस क्षेत्र मे कोई मान्यता ही मिल सकी है। यही कारण है कि आज हिन्दू आर्यसमाज के हितों से खिलवाड़ की जा रही है और उसे अल्पमत मे बदलने के लिए उसके हितो पर चारों ओर से वज्रपात के प्रहार किये जा रहे हैं।

यदि अभी ये तीनों संगठन अपने निजी तथा संस्थागत एवं पद-लोलुपता को छोड़कर अपनी एक हिन्दू आर्यनिष्ठ राजनीतिक पहिचान स्थापित कर ले तो कुछ नहीं बिगड़ा है अभी सब कुछ ठीक हो सकता है। इन तीनों ही संगठनों के पास भले हुए देश भक्त कार्यकर्ताओं की कमी नहीं है और न ही इन्हे धन का अभाव रहेगा। किन्तु ये सभी राजनीतिक या राजसत्ता मे पिछले द्वार से तो प्रवेश करने के इच्छुक हैं सामने खुलकर आने मे हिचकिचाते हैं और यह हिचकिचाहट हिन्दू आर्यसमाज के लिए हानिकर और घातक सिद्ध होगी और आने वाले एक या दो दशको मे ही हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्थान समाप्त सा प्राय हो जायेगा। अभी समय है जबकि इन सभी को मिलकर एक हिन्दुत्ववादी राष्ट्रीय राजनीतिक दल स्थापित कर इस देश को बचाने के लिए संगठित होकर प्रयास करना चाहिये। प्रजातन्त्र और वोटों की राजनीति मे केवल राजनीतिक मंच से ही कही गयी बात पर सत्ताधारी ध्यान देते हैं क्योंकि उन्हे यह डर हो जाता है कि कहीं इनकी बात न सुनी गई तो हमारी गद्दी न छिन जाय और जनता हमारे विरुद्ध न हो जाये।

महात्मा गांधी आरम्भ से ही भले ही कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज ह्यूम ने की थी लेकिन वे उसस ही जुड़ गये और अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। श्री बिड़ला जी जैसे सनातन धर्मी उद्योगपति ने गांधी जी को अपने हस्ताक्षरों युक्त खाली कोरी चैकबुक दे रखी थी कि जब गांधी जी को जितने धन की आवश्यकता हो उसे प्राप्त कर सकें क्योंकि श्री बिड़ला जी जानते थे कि गांधी जी मे देश और समाज दोनो के प्रति आत्म समर्पण की भावना है।

महात्मा गांधी से जो सबसे बड़ी भूल हुई वह यह थी कि वह पण्डित नेहरू के दबाव मे आ गये जिसके कारण देश का बटवारा हो गया। जबकि उन्होंने स्वयं यह घोषणा की थी कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा। ऐसी स्थिति मे उन्हें पाकिस्तान की स्वीकृति न देकर यदि अंग्रेज पाकिस्तान बनाते तो आमरण अनशन कर अपने प्राण त्याग देते ऐसा करने से उन्हे लोग आज राम और कृष्ण से भी अधिक पूजते किन्तु उन्होंने ऐसा न कर पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये देने के लिये अनशन करने की धमकी दे दी जिसके कारण श्री नाथूराम गोडसे ने उनकी हिन्दू विरोधी नीति के कारण गोली मार कर हत्या कर दी। किन्तु नाथूराम गोडसे ने तो उनके केवल शरीर की ही हत्या की थी किन्तु उनके अनुयायी कांग्रेस के लोग आज भी राजघाट उनकी समाधि पर जाकर प्रार्थना तो करते हैं किन्तु उनकी जो मान्यतायें थीं उनकी पूरी तरह अवहेलना करते हैं। गांधी जी की मान्यतायें थीं कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद देश मे गोहत्या बन्द की जाए, हिन्दी को राज-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या

यह भूमि मेरी माता है मैं इसका पुत्र हूँ अत इसके सम्मान की रक्षा करना मेरा पावन कर्त्तव्य है ।

जिस भूमि पर हम पले हैं तथा जिसका अन्न फल फूल खाकर शरीर विकसित हुआ है उसकी रक्षा करना हमारा पावन कर्तव्य है ।

यदि हम केवल उदर पोषण मे ही लगे रहे तथा राष्ट्र और समाज का कुछ ध्यान नहीं किया तो हम पशु से भी बदतर हैं । कविवर मैथिली शरण जी लिखते हैं—

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं है पशु निरा
और मृतक समान है ।।

हम अपना आत्म निरीक्षण करें क्या उक्त बात हम पर तो नहीं घटती, यदि घटती है तो कृपया कुछ सोचें और समझें राष्ट्रीयता के भाव अपने अन्तस्तल मे भरें, तथा राष्ट्ररक्षा के पावन कार्य मे अपने को आहूत कर दे तभी राष्ट्र अखण्डित तथा सुरक्षित रह सकता है ।

भारत की स्वतन्त्रता ऐसे ही राष्ट्रीयता से परिपूर्ण महानात्माओ के बलिदानों से आई, यदि ये आज कल जैसे स्वार्थी देशभक्तो जैसे होते तो कदापि यह भारत स्वतन्त्र नहीं हो सकता था ।

) एक घटना नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन की बताते हैं । इस घटना से सिद्ध होता है कि नेता सुभाष कितने बड़े राष्ट्रवादी थे ।

जिस समय सुभाष कलकत्ता कालेज में बी० ए० मे पढ़ रहे थे, तो पढ़ने के साथ-२ छात्र संगठन का भी कार्य करते थे । इस कारण कालेज का प्रत्येक राष्ट्र भक्त छात्र उनकी ओर खिंचा चला आता था ।

सच्चे देशभक्त बनो !

[आचार्य राजदेव शर्मा शास्त्री व्याकरणाचार्य
आचार्य आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा)]

उसी कालेज मे एक प्रोफेसर थे मिस्टर ए० सी० उटेन । वे काले छात्रो से बेहद घृणा करते थे तथा भारतीय छात्रो को सदैव अपमानित करते रहते थे । अंग्रेज होने के कारण वे अपने आपको ही भारत का शासक मानते थे ।

भारतीय छात्र उनके इस दुर्व्यवहार से बेहद क्षुब्ध थे ।

एक दिन जब मिस्टर उटेन कक्षा मे पढ़ाने के लिए गये, वहाँ उन्होने देखा कि भारतीय छात्र एक छात्र के चारो ओर एकत्र हो रहे हैं, यह देखकर उनकी त्योरी चढ़ गई, पूछने पर पता चला कि वह छात्र सुभाष हैं, आज से सुभाष उनकी आंखो मे खटकने लगा ।

कक्षायें अभी प्रारम्भ ही हुई थीं कि सुभाष की कक्षा मे एक अंग्रेज बालक को सीट मिली, उसे देख कर सुभाष को स्मरण हो आया कि वह वही 'हैरो' है जिसे उसने छठी कक्षा मे एक भारतीय को 'ब्लैक मकी' कहने पर खूब धुनाई की थी । उधर हैरों ने जब सुभाष को देखा तो उसे भी पुरानी बात याद हो आई, उसके मस्तिष्क मे प्रतिशोध की आग सुलगने लगी, वह सुभाष को अपमानित करान का अवसर खोजने लगा ।

मिस्टर उटेन जब कक्षा में आये तो उन्होने कुछ प्रश्न पूछे, हैरी से भी प्रश्न पूछा लेकिन वह उसका उत्तर न दे सका, उटेन को बहुत बुरा लगा कि एक अंग्रेज बच्चा भारतीय छात्रो के सम्मुख बगलें झाकने लगे । तथा प्रश्न का उत्तर न दे सके ।

उटेन हैरी से बोले, तुम मुझे इन्टरवल मे मिलना । ये बातें सुभाष ने भी सुनलीं अत. वह भी इन दोनों की बातें सुनने के लिए उटेन को खोजने लगा, पार्क मे एक ओर उटेन को खडा देखकर सुभाष भी उसकी दृष्टि बचाकर एक ओर खडा हो गया, इतने मे वहाँ हैरी आ गया ।

उटेन हेरी से बोले—हैरी ! तुम अंग्रेज बच्चे हो अत तुम्हे कक्षा मे सबसे आगे रहना चाहिए, तुम जानते हो कि कक्षा मे एक मात्र तुम्हीं अंग्रेज लडके हो जब काले लोगो के सामने अपमानित होते हो तब समस्त अंग्रेज जाति का अपमान होता है ।

हैरो ने कहा ! सर ! आगे से ध्यान रखूगा आगे हेरी ने कहा कि सर ! क्लास मे सुभाष नाम का एक शरारती बदमाश लड़का है उसने मुझे एक बार छोटी कक्षा मे पढ़ते समय बहुत मारा था । केवल मैने एक भारतीय को ब्लैक मकी कह दिया था ।

हैरी की बात सुनकर उटेन बोले—–

अच्छा उस काले बन्दर की इतनी हिम्मत ! तुम जाओ हम देखेंगे । एक बात याद रखना कि तुम यहा पर कौओ मे हंस के समान हो, अत अपने को हंस बनाये रखना इन कौओ को हम अच्छा पाठ पढावेंगे ।

उटेन की बातें सुभाष सब सुन रहा था, सुनकर उसके हृदय मे आग लग गई उसका स्वाभिमान जाग्रत हो उठा, सुभाष लहू की घूट पीकर रह गया, कि हम कौए वह हंस ।

सुभाष ने अपने मित्रो को बुलाकर सारी बातो से अवगत करा दिया ।

मित्रो ने विचार किया कि मिस्टर उटेम को दण्डित किया जाय, सुभाष ने कहा कि कल सारे लोग तैयार होकर आयें । यदि मिस्टर उटेन कल किसी भी भारतीय को अपमानित करेंगे तो उन्हे उसका प्रत्युत्तर दिया जायेगा ।

कल का दिन आया सुभाष अपने मित्रो के साथ तैयार होकर कक्ष मे आया । सारे मित्रो के आगे की सीटें घेर लीं । हैरी को पीछ कोने पर एक सीट बैठने को मिली । जब मिस्टर उटेन पढाने आये हैरी को पीछे देखकर वे तड़प उठे कि अंग्रेज विद्यार्थी भारतीयो के पीछे बैठे ।

मिस्टर उटेन ने सुभाष से कहा कि तुम खड़े हो जाओ सुभाष खड़े हो गये । बाद मे हैरी से भी उठने को कहा, दोनों के उठ जाने पर मिस्टर उटेन दम्भ पूर्ण स्वर मे बोले—

हैरी ! तुम सुभाष की सीट पर जाकर बैठो तथा सुभाष तुम हैरो की सीट पर बैठ जाओ ।

सुभाष ने कहा—मै आगे बैठा हू पीछे क्यो जाऊँ, उटेन ने कहा—कि इसलिए वह अंग्रेज है तुम हिन्दुस्तानी, अंग्रेज हमेशा आगे रहता है ।

सुभाष पुन दृढ़ता से बोले—मैं ऐसा नहीं मानता अत आगे ही बैठूगा ।

तभी सुभाष के साथियो ने कहा कि यह अन्याय है सुभाष को आगे ही बैठ रहने देना चाहिए वह सबसे योग्य है ।

यह सुनकर उटेन बोले—शट-अप—क्यो कौओ की तरह कांव–२ करते हो कुत्ता कुत्ता ही रहता है । आदमी आदमी आदमी ही रहता है ।

जबान सम्भालिए उटेन साहब ! सुभाष ने चीख कर कहा पुन. उटेन बोले शट अप ब्लैक मकी । काला बन्दर हमको धमकाता है ।

बन्धुओ अन्याय की भी पराकाष्ठा होती है । आखिर सुभाष

[शेष पृष्ठ ११ पर]

वेदों में राजनीतिक सिद्धांत

[श्री वीरेन्द्रसिंहायुर्वेदाचार्यः पो० कुण्डरा नसरा (शाहजहांपुर)]

'वेद में राजनीतिक सिद्धान्त नित्य एवं सर्वोत्कृष्ट रूप से विद्यमान हैं' इस कथन में किञ्चिदपि आश्चर्य, गर्वोक्ति, मिथ्योक्ति, किंवा अतिशयोक्ति नहीं है। एतद्विषयक महाराज मनु का कथन युग युगान्तरो से हमें प्रमाण है– 'सर्वज्ञानमयो हि सः' वेद सर्वज्ञानमय है तथा 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम' सम्पूर्ण मानव धर्म का ही नहीं प्रत्युत समस्त जड़ चेतन विश्व के धर्म का मूल वेद ही है। अतः राजधर्म वेद बाह्य कैसे हो सकता है। सिद्ध है, कि राजनीति भी धर्म का ही विशेष है, तद्विपरीत नहीं, तद्बाह्य भी नहीं। मनु ने राज धर्म के उत्कृष्ट ज्ञान के लिए वेदाध्ययन की ही सलाह दी है–

"सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यच वेदशास्त्रविदर्हति॥"

सैन्य संचालन, शासन प्रबन्ध, न्याय एव दण्ड व्यवस्था, इतना ही नहीं, सर्वलोकाधिपत्य समस्त विश्व का अधिपति अर्थात् चक्रवर्ती सम्राट् बनना इन सब के लिये वेद शास्त्र का ज्ञाता ही सत्यरीत्या समर्थ होता है।

परम कारुणिक महर्षि दयानन्द ने लोक कल्याणार्थ निर्मित अपने विश्व विश्रुत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में राजधर्म का उल्लेख करके विश्व का मार्ग दर्शन किया है, वेदों एवं मनु प्रोक्त मनुस्मृति में प्रतिपादित राजधर्म की उन्होने सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की। तदुपरान्त अन्य विद्वानों ने भी इस दृष्टिकोण से वेदों का अनुशीलन किया तथा श्रेष्ठ परिणामो की घोषणा की, ग्रन्थ भी लिखे। ऐसे ही प्रयासो मे एक उत्तम प्रयास गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के भूतपूर्व प्रधानाचार्य प्रियव्रत जी का है, जिन्होंने 'वेदो के राजनीतिक सिद्धान्त' नाम पुस्तक के रूप मे आर्य जगत् में प्रसिद्धि प्राप्त की है। 'वेदवाणी' मासिक पत्रिका में भी जिसकी समालोचना प्रकाशित हुई थी। पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रज्ञादेवी जी ने भी उक्त पुस्तक की विगत आश्विन मास की वेदवाणी मे महती प्रशंसा की है, वे अपने लेख 'क्या वेदो के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं ? में लिखती हैं–"इस ग्रन्थ के लेखन में विद्वान् यशस्वी लेखक आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति ने निस्सन्देह बड़ा परिश्रम किया है और वेद मन्त्रों के अधिराष्ट्रपरक अर्थो को प्रदर्शित करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि राज्य शासन और राजा सम्बन्धी सांगोपांग विवरण वेद मे उपलब्ध हैं विद्वान् लेखक का यह परिश्रम वेद के प्रति उनके समर्पित जीवन का ही द्योतक है।

आचार्य प्रियव्रत जी की उक्त प्रशंसा के पश्चात् आचार्या प्रज्ञादेवी जी ने एक दो वाक्य और लिखे 'तथापि मन्त्रार्थ के सम्बन्ध में (आचार्य प्रियव्रत जी की) कुछ भयंकर भूलें (भी) हैं, जिनकी ओर मैं इस लेख में संकेत कर रही हूं' इसके पश्चात् उन्होंने अपने लेख में आचार्य जी की भूलें–भलीभांति प्रदर्शित भी कर दी हैं, जिससे वे क्षुब्ध से हो गये प्रतीत होते हैं और वेदवाणी के मार्गशीर्ष (दिसम्बर) मास के अंक मे प्रकाशित अपने 'वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं हैं" शीर्षक लेख में वे लिखते हैं, यथा–"...मन्त्रों के आधिदैविक अर्थ होने की बात को मैं नहीं मानता, यह परिणाम प्रज्ञाजी ने कैसे निकाल लिया ?...ऋषि दयानन्द ने मन्त्रो के जो आधिदैविक अर्थ किये हैं, उन्हें मैं नहीं मानता–भला यह पाप मैं कैसे कर सकता हूं...प्रज्ञादेवी ने अपनी आलोचना में यह दिखाने का भी प्रयत्न किया है, कि मैं वेदार्थ की यौगिक पद्धति को भी शायद नहीं मानता...मैंने अपने ग्रन्थ मे अनेक प्रकरणों कितने ही शब्दो के अर्थ करते हुये यह लिख दिया है, कि इस शब्द का जो अर्थ मैने किया है, वही हो सकता है अन्य नहीं। मेरे ऐसे लेख को पढ़कर प्रज्ञा जी क्षुब्ध हो उठी हैं. प्रज्ञा जी ने कई जगह मेरी हँसी उड़ाई तथा मेरे प्रति कटु एवं अवज्ञापूर्ण व्यंगात्मक वाक्यों का भी प्रयोग किया है ... प्रज्ञा जी की इस आलोचना से आर्य विद्वानो और जनता मे वेद विषयक मेरी मान्यताओं के तथा महर्षि दयानन्द के प्रति मेरी सम्मान की भावनाओं के सम्बन्ध में बहुत भारी भ्रम उत्पन्न होगा और आर्य जगत मे मेरी प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचेगा" इत्यादि।

गत आश्विन (अक्टूबर) मास की वेदवाणी मे प्रकाशित आचार्य जी की उक्त पुस्तक–समालोचना सम्बन्धी श्रीमती प्रज्ञादेवी आचार्या का लेख मेरे समक्ष है, इस सात पृष्ठीय (साढ़े तीन वर्की) लेख मे मुझे कहीं भी आचार्य प्रियव्रत जी के प्रति कटु व्यंगात्मक, अवज्ञापूर्ण अथवा हंसी उड़ाने वाला कथन दृष्टिगोचर नहीं हुआ। केवल दो स्थलो मे– जहाँ आचार्य जी ने वस्तुतः भयंकर भूल की है, प्राचीन आप्त पुरुषो यास्क, और दयानन्द जैसो द्वारा किए गए वेदार्थ की अवहेलना की है, वहाँ प्रज्ञादेवी जी ने केवल एक जगह "–वाह आचार्य जी" तथा एक स्थल पर "क्या कहूं" वाक्यांश लिखे है, यथा——

ऋग्वेद के दशम मण्डल के पच्चासवें सूक्त के नवम् मन्त्र के एकांश "सोमो वधूयुरभवत् १०, ८५, १९" का उद्धृत करते हुए आचार्य जी सोम का अर्थ "गुरुकुल का स्नातक" ही करते हैं, अन्यार्थ कदापि नहीं। वे कहते हैं–"वेद मे सोम के अतिरिक्त किसी भी देवता को वधूयुः नहीं कहा गया है इन युक्तियों से स्पष्ट है कि सोम ऐसा विद्वान है, जो अभी–अभी गुरुकुल से पढ़कर आया है" इस कथन पर प्रज्ञा देवी जी लिखती हैं–वाह आचार्य जी! इस दशम मण्डल के पच्चासवें सूक्त की ऋषिका सूर्या सावित्री है, इसमे तो आधिदैविक वर्णन इतना प्रिय और आलंकारिक है कि इसको केवल मनुष्य परक बता देने से सब सौन्दर्य ही नष्ट हो जाता है। "सोमो वधूयुरभवत्" का अर्थ हुआ—सोम–चन्द्रमा भावी वधू की इच्छा वाला हुआ तो सूर्य ने अपनी पुत्री सूर्या–किरणों का विवाह भावी चन्द्रमा से किया..."। वस्तुतः यह आलंकारिक वर्णन अत्यन्त रोचक एवं वैज्ञानिक है, आचार्य प्रियव्रत जी को इस अर्थ का तर्क पूर्ण खण्डन करके अपने एकमात्र "स्नातक" अर्थ की पुष्टि करनी चाहिए थी, परन्तु ऐसा वे नहीं कर पाये।

दूसरा स्थल जहाँ प्रज्ञादेवी जी ने केवल "क्या कहूं" लिखा है, इस प्रकार है—"राज्य, शिल्पो के और उद्योग धन्धों को प्रोत्साहित करें। "इस प्रकरण में ग्रन्थ लेखक लिखते हैं कि ऋभु पृथ्वी लोक मे रहने वाले सामान्य मनुष्य ही है, वे जो मन्त्र उदाहरण रूप में प्रस्तुत करते हैं उनमें नृम्णः, नरः, नृभिः, मत्यार्य शब्द आये हैं बस यही हेतु ऋभुओं को मनुष्य बताने में आचार्य जी का है, "क्या कहूं" आचार्य जी द्वारा

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द की प्रतिमा प्रतिष्ठा

दि० १० अप्रैल के आर्य मित्र मे श्री वीरेन्द्रचन्द्र का उपर्युक्त शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमे उन्होने इस चर्चा का उल्लेख किया है कि अजमेर के ऋषि उद्यान (आनासागर तट पर) स्वामी दयानन्द की एक प्रतिमा प्रतिष्ठापित करने का प्रस्ताव नवम्बर १९८३ मे लोगो के समक्ष आया था।

इस सम्बन्ध म निवेदन है कि उक्त ऋषि उद्यान परोपकारिणी सभा के अधिकार में है और सभा के समक्ष ऐसा कोई विचार नहीं है कि उक्त स्थान पर ऋषि की प्रतिमा स्थापित की जाय। उपर्युक्त लेखक के लेख में एक और ऐतिहासिक भूल भी है। उसने लिखा है कि आनासागर के तट पर स्वामी दयानन्द का अन्त्येष्टि संस्कार हुआ था। तथ्य यह है कि स्वामी जी के पांच भौतिक शरीर का अन्तिम संस्कार नगर के दक्षिणवर्ती श्मशान मलूसर (पहाड़गंज के समीप) में हुआ था न कि आनासागर के किनारे।

नेत्रहीन विद्वान को वैदिक विषय में डॉक्टरेट

देहरादून के नेत्रहीन शोध-विद्वान श्री रामनारायण रावत को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे १६ अप्रैल को हुए दीक्षान्त समारोह मे डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि दी गई है। इनके शोध का विषय था--"वैदिक तथा औपनिषदिक दर्शन–एक तुलनात्मक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य मे)"। विभिन्न विद्वानो ने डा० रावत के कार्य को उपयोगी बताया है और इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किये जाने योग्य बताया है। डा० रावत ने एक भेंट मे बताया कि कोई दानशील विद्या-प्रेमी व्यक्ति या संस्था पुस्तक को छपवाने मे सहायता दे तभी यह प्रकाशित हो पायेगी। श्री रामनारायण रावत की योग्यता और अध्यवसाय को देखकर ही इनके शोध-काल मे आर्य समाज देहरादून ने इन्हे शोध छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित किया था। उ० प्र० की आर्य जनता की ओर से बधाई।

सभा मन्त्री

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (अलीगढ़) मे नवीन प्रवेश प्रारम्भ

शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर एवं आचार्य तक की कन्याओ को निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर नि:शुल्क छात्रावास। सबका सीधा-सादा एक सा रहन सहन, कड़ा अनुशासन। ग्राम, नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयो के अतिरिक्त धर्म, नैतिकता गृह कार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दूध जलपान सहित भोजन शुल्क १२०–०० रु० मासिक। नियमावली मंगायें।

मुख्याधिष्ठात्री

उत्तराञ्चल में राष्ट्र व धर्म रक्षा अभियान यात्रा

गत लगभग पाँच वर्षों से वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने भारतीय उत्तराञ्चल के गढ़वाल मण्डल में आराष्ट्रीय ईसाई प्रचार-निरोध तथा आर्य समाजों की स्थापना के लिये राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान चला रखा है।

इस अभियान द्वारा सर्वाधिक कार्य साहित्य वितरण का किया जा रहा है। समय-समय पर इसके लिये उत्तराञ्चल मे वैदिक संस्थान नजीबाबाद के अध्यक्ष स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक स्वयं प्रचार यात्रायें करते हैं। उनकी इन यात्राओ मे कभी कभी भजनोपदेशक भी साथ होते है।

इस बार प्रथम यात्रा ९ मई को प्रारम्भ होकर २० मई को समाप्त हुई। इस यात्रा के मुख्य कार्य सार्वजनिक सभाओ तथा कालिजो मे भाषण, साहित्य वितरण तथा दीवारो पर प्रचार–पोस्टरो का लगाया जाना रहा। अभियान यात्रा के मुख्य पड़ाव आमजीवाल, हिण्डोलाखाल, रोडधार, टिहरी, उत्तरकाशी तथा बड़कोट नगर रहे।

दूसरी यात्रा ६ जून को कोटद्वार से प्रारम्भ होकर दुगड्डा, डाडामण्डी, लैन्सडौन सतपुली, पौड़ी, श्रीनगर तथा रुद्रप्रयाग की रहेगी और तीसरी यात्रा ऋषिकेश, नरेन्द्रनगर, चम्बा, टिहरी, देव प्रयाग होकर हरिद्वार मे समाप्त होगी।

सूचना

गंगा दशहरा के पवित्र पर्व पर दिनांक २४–६–८८ शुक्रवार को गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ की ओर से एक विशाल वेद प्रचार शिविर गेस्ट हाऊस भोला झाल मेरठ मे लगाया जायेगा। इस अवसर पर प्रातः ८ बजे भोलाझाल के लिये बसें चलेंगी।

कृपया अधिक से अधिक संख्या मे यज्ञ भक्ति संगीत और वेद प्रवचनों से लाभ उठावें।

इन्द्रराज, मन्त्री

कानपुर मे एक मुस्लिम परिवार ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर—आर्य समाज गोविन्द नगर मन्दिर म समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने तीन सदस्यीय एक मुस्लिम परिवार को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया।

इस अवसर पर आर्य समाज व विश्व हिन्दू परिषद के बहुत कार्यकर्ता व काफी जनता ने शुद्धि होने वाले परिवार का स्वागत किया। आर्य नेता श्री देवीदास ने इस परिवार के सभी सदस्यो को यज्ञोपवीत धारण कराकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराते उनके नाम बदलने की घोषणा करके उनके नाम मोहम्मद अमर से ओमप्रकाश अग्निहोत्री अकीला बेगम से सुशीला अग्निहोत्री तथा पुत्री का नाम मनीषा रखा। तत्पश्चात् इस परिवार के हाथो से उपस्थित लोगो ने प्रसाद ग्रहण किया।

सूचना

सभी आर्य बन्धुओ को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती) मेरठ उ० प्र० की स्थापना को सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे एक भव्य शताब्दी समारोह का आयोजन दिनांक १४, १५ व १६ अक्टूबर १९८८ को किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। जिन बन्धुओ के पास आर्य समाज लालकुर्ती से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग, संस्मरण या लेख आदि उपलब्ध हो वे उस सामग्री को मन्त्री, आर्य समाज लालकुर्ती, मेरठ कैन्ट उ० प्र० को भेजने की कृपा करें ताकि उसे स्मारिका में सम्मिलित किया जा सके।

हा ! स्वदेशबन्धु

ऐ अजल ? तुझसे सख्त नादानी हुई ।
फूल वो तोड़ा कि गुलशन मे वीरानी हुई ।।

[वह इस संसार रूपी बगिया का माली है जिस फूल को जब चाहे तोड़ ले हम क्या कह सकते हैं । लेकिन कभी कभी नादानी कर बैठता है एक ऐसी कली जो गुलशन में अपनी सुगन्ध बिखेरने से पहिले ही तोड़ ली गई— के विषय में हम और क्या कहें । आर्य विचारों से ओतप्रोत, वैदिक धर्म का दीवाना वह युवक देवेन्द्रसिंह "स्वदेशबन्धु" युवावस्था में ही हमें छोड़कर चला गया । वह हमारी सभा का उदीयमान नक्षत्र था उससे हमें बड़ी आशायें थीं । उसके निधन पर सभा प्रधान जी के उद्‌गारों को हम उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं—
—सम्पादक]

प्रियवर देवेन्द्र सिंह स्वदेश बन्धु अब इस संसार मे नहीं रहे । पता नहीं क्या बात थी कि जब से वह मेरे पास आया था तब से मैंने उसे पिता का प्यार ही दिया । उसने मुझे घर पर आने का निमन्त्रण भी दिया था । एक बहुत ही योग्य होनहार और आर्य समाज के प्रति समर्पित नवयुवक के निधन से आर्य जगत् की बहुत क्षति हुई है । अभी मुझे प्रिय देवेन्द्र से बहुत आशाय थीं । इस दुखद घड़ी में परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं परिवार को इस असामयिक दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें ।

यदि प्रिय देवेन्द्र का कोई स्मारक बन सके तो मै पूर्ण सहयोग करूंगा । उस बेटे के कुछ स्वप्न थे यदि हम पूरे कर सकें तो यह ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

इन्द्रराज सभा प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

साहित्यकार संतराम का निधन

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार और कर्मठ समाज सुधारक सन्तराम बी० ए० का ३१ मई को निधन हो गया । वह १०१ वर्ष के थे और पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे ।

श्री सन्तराम का जन्म १४ फरवरी १८८७ को पंजाब के होशियारपुर नगर के समीप पुरानी बस्ती नाम के छोटे गांव में हुआ था । उन्होंने १९०९ मे उर्दू और फारसी विषयों के साथ बी० ए० किया । बाद मे आर्य समाज के प्रभाव और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर हिन्दी सीखी । उस जमाने मे बी० ए० पास लोग कम थे । इसीलिये बी० ए० उनके नाम के साथ जुड़ गया ।

श्री सन्तराम ने एक सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं हैं । इनकी कुछ पुस्तकों का अंग्रेजी, मराठी और गुजराती में अनुवाद हुआ और कई पुस्तकें पुरस्कृत भी हुईं । राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने उन्हें १९५८ में महात्मागांधी पुरस्कार प्रदान किया । पंजाब सरकार ने उन्हें हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वान 'अलंकरण' से सम्मानित किया । वे आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्ता थे ।

"आर्यावर्त"

यह आर्यावर्त आदर्श देश यह सब देशों से उत्तम है ।
यह मानवता और मानव का हर सृष्टि काल से उद्‌गम है ।।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष हैं जीवन का आधार यहीं ।
यह दोनों लोक सुधरने का है सर्वोत्तम सिद्धांत यहीं ।।
नील गगन में इन्द्र धनुष यहाँ बदरजूं में सजता है ।
जब केशर क्यारी हंसती है धरती पर स्वर्ग उतरता है ।।
हेमन्त शिशिर और शरद ग्रीष्म वर्षा बसन्त की छवि न्यारी ।
इन छः ऋतुओं से शोभित है इस देश की सुन्दर फुलवारी ।।
कितनी पावन कितनी निर्मल यहाँ गंगा यमुना बहती हैं ।
जो ऋषि मुनि महापुरुषों का इतिहास पुरातन कहती है ।।
इस देव भूमि की बाहों में संसार सिमट कर आया है ।
हर भूले भटके राही ने प्रकाश यहीं से पाया है ।।
इस देश की माटी चन्दन है मस्तक पर इससे तिलक करो ।
यह सारे जग की जननी है सब मिलकर इसको नमन करो ।।

जगदीश शरण "शीतल"
भू० पू० प्रधान आर्यसमाज चांदपुर [बिजनौर]

वार्षिकोत्सव

आर्य स्त्री समाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव दिनांक १-२ जून ८८ को आर्य समाज मन्दिर की पुण्य भूमि में समारोह पूर्वक मनाया गया ।

श्री स्वामी जीवनानन्द सरस्वती के सारगर्भित प्रवचन हुये तथा श्री योगेशदत्त आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनों का जनता ने रसास्वादन किया । स्त्री समाज की अध्यक्षा श्रीमती ब्रह्मवती जी ने विद्वानों, प्रचारकों तथा आगन्तुक जनता का धन्यवाद किया ।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज सम्भोला की यह सभा, आर्य समाज सम्भोला के संस्थापक व पूर्व अध्यक्ष, कस्तूरबा आर्य कन्या पाठशाला के जन्मदाता, विष्णु पुस्तकालय के जन्मदाता मुन्शी परागीलाल जी की ८४ वर्ष की आयु में १९-४-८८ दिन शनिवार को सायं ३ बजे की मृत्यु से शोक संतप्त है, परम पिता परमात्मा से कामना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं शोक संतप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे । —मन्त्री आर्य समाज सम्भोला

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर का उत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय साढ़ीपुर, यमुनानगर जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव २८, २९ मई को मनाया गया । इस अवसर पर २३ मई से यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य सत्यप्रिय जी की देखरेख में सम्पन्न हुआ । आर्य युवकों को आर्य समाज में दीक्षित करने के लिये शिक्षण शिविर भी लगाया गया ।

वैदिक उपासना

(पृष्ठ ३ का शेष)

मे रोक देना है। और चौथा प्राणायाम जहां बाह्य और आभ्यन्तर प्राणायाम एक साथ होता है अर्थात् क्रमशः होता है। यह चार प्रकार का प्राणायाम है जिसका उल्लेख योगदर्शन मे है। परन्तु गीता मे भी प्राणायाम करने वालों को तीन भागों मे बांटा गया है। योगेश्वर श्री कृष्ण जी लिखते हैं-

अपाने जुह्वति प्राण प्राणेऽपानं तथा परे।
प्राणापान गती रुद्ध्वा प्राणायाम परायणाः ॥
(गीता ४-२९)

कुछ योगीजन अपानवायु मे प्राण का हवन करते हैं अर्थात् आभ्यन्तर प्राणायाम करते है। कुछ दूसरे प्राणवायु में अपान वायु का हवन करते है अर्थात् बाह्य प्राणायाम करते हैं। और अन्य योगीजन प्राण और अपान की गति को रोककर प्राणायामपरायण होते हैं अर्थात् स्तम्भवृति प्राणायाम करते हैं। और अगले श्लोक मे-

अपरे नियता हाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। (गीता ४-३०)

अर्थात् अन्य नियमित आहार करते हुए प्राणों को प्राणों मे ही होमते हैं यह चतुर्थ प्राणायाम बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी है।

प्राणायाम परायण योगीजनो को क्या लाभ होता है? इसका वर्णन करते हुए महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं-

'ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्' (योग० २ ५२७)

उस प्राणायाम के अभ्यास से प्रकाश अर्थात् ज्ञान रूपी प्रकाश का आवरण क्षीण हो जाता है।

प्रकाश का आवरण क्षीण हो जाने पर उपासक भगवान् मे मन एकाग्र करने मे सर्वथा सक्षम हो जाता है। परन्तु इस क्षमता मे भी एक रुकावट पैदा होने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है और वह रुकावट इन्द्रियो के आहार ही पैदा करते हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। आंख, जिह्वा, नासिका, कान और त्वचा। इनके विषय क्रमशः रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श हैं। ये ही इन्द्रियो के आहार हैं, भोजन हैं। ये आहार ही मन को एकाग्र नहीं होने देते। अब उपासक का प्रयत्न इन विषयों को हटाने के लिए चलता है। उपासक अपने मन को रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श के संस्कारों से शून्य करना चाहता है। यह प्रयत्न ही योग की भाषा में प्रत्याहार कहलाता है। अपने-अपने विषयों से इन्द्रियों के हट जाने पर चित्त के स्वरूप के अनुरूप हो जाना ही प्रत्याहार है जैसा कि कहा भी है-

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्त स्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।
(योग० २-५४)

महर्षि व्यास इस सूत्र के भाष्य में लिखते हैं कि जब इन्द्रियां अपने विषयों से हटती हैं तो चित्त के स्वरूप के अनुसार ही हो जाती हैं। जब उपासक अपने चित्त का निरोध करता है तो चित्त के आधीन वे इन्द्रियां अपने आप निरुद्ध हो जाती हैं। इन इन्द्रियों को वश करने के लिए किसी अन्य उपाय की आवश्यकता नहीं रहती।

इन्द्रियों के अपने-अपने विषय से पृथक् होकर चित्त के अनुरूप वे अपने-अपने विषयों के द्वारा मन के निरोध में किसी प्रकार की कोई रुकावट पैदा नहीं करती।

मन के एकाग्र और निरुद्ध होने पर स्वतः धारणा-ध्यान और समाधि की स्थिति उपलब्ध हो जाती है।

मानव जीवन का चरम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है। और धारणा ध्यान और समाधि से उस परमपिता परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

धारणा-ध्यान और समाधि इन तीनों को योगदर्शन में संयम कहा गया है यथा-"त्रयमेक त्र संयमः" (योग० ३-४) जब एक देश अथवा एक वस्तु में धारणा-ध्यान और समाधि इन तीनों को लगाया जाता है वह ही संयम कहलाता है। इस संयम को प्राप्त करने का प्रयत्न ही वैदिक उपासना का उद्देश्य है। अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति ही वैदिक उपासना का उद्देश्य है। ★

(पृष्ठ ४ का शेष)

भाषा बनाया जाए, शिक्षा को रोजगार परक बनाया जाए तथा स्वदेशी वेषभूषा को अपनाया जाए किन्तु आज इन सब बातों की ओर उनके ही ये वर्तमान अनुयायी अनदेखी कर रहे हैं और चुनाव तथा अन्य भ्रष्टाचारो की अपनी दुकानें गांधी जी के ही नाम पर चला रहे हैं जिसके कारण ये लोग उनकी आत्मा की हत्या कर रहे हैं जबकि नाथूराम गोडसे ने तो केवल उनके नाशवान शरीर की ही हत्या की थी।

अतः आज समय आ गया है जब आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के कथन के अनुसार राज्य आर्य सभा अथवा किसी नाम से एक राजनीतिक दल स्थापित कर सनातन धर्म और रा०स्व० संघ को आह्वान कर उन्हे भी इसमे शामिल कर देश तथा उसकी अखण्डता और एकता को बचाने म एकजुट हो संघर्ष करें। आज भी देश में हिन्दू बहु संख्यक हैं और वह लगभग ८० प्रतिशत हैं। यदि इनमे से ६० प्रतिशत या उससे अधिक हम अपने पास ला सके जो पूरी तरह आने की सम्भावना है तो देश का स्वरूप बदलने और उसे बचाने में सफलता मिल सकेगी अन्यथा बहुत जल्दी ही हिन्दू आर्यसमाज अल्पमत में बदल जायेगा फिर इनकी सुनने वाला कोई न होगा और देश का पुनः कई भागों में विभाजन हो जायेगा उस स्थिति में हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्थान तीनों ही पूरी तरह नष्ट हो जायेंगे इसलिये इन्हे बचाने के लिये पहल आर्य समाज को ही करनी होगी।

आशा है आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता तथा बुद्धिजीवी लोग इस पर गम्भीरता से विचार कर इस देश, हिन्दू समाज और हिन्दी को बचाने के लिये अब विलम्ब नहीं करेंगे।

★

वार्षिक चित्र शीघ्र भेजिये

समस्त जिला सभाओं तथा आर्यसमाजो के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जिन जिला सभा अथवा आर्यसमाज ने वार्षिक चित्र अब तक न भेजे हों, वह ३० जून ८८ तक अवश्यमेव सभा कार्यालय में प्राप्तव्य धन सहित भेजने की कृपा करें-बाद मे कोई चित्र स्वीकार नहीं हो सकेंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

वेदों में राजनीतिक सिद्धांत

(पृष्ठ ६ का शेष)

दिये गये प्रथम उदाहरण – आमनीषामन्तरिक्षस्य नृभ्यः (ऋ० १, ११, ६) मे ही जहाँ नृभ्य शब्द आ या है वहीं अन्तरिक्षस्य शब्द भी तो ध्यान देने योग्य है अन्य मन्त्रों मे सौधन्वना 'एव सौधन्वनेभि." शब्द आये हैं, धन्वन् शब्द अन्तरिक्ष नामो मे निघण्टु मे है तदनुसार सुधन्वन् अंतरिक्ष के पुत्र –अन्तरिक्ष मे होने वाले सौधन्वन् ऋभु पृथिवी के नर नहीं कहे जा सकते " आचार्य प्रियव्रत जी ने यहाँ पर भी कोई समाधान प्रस्तुत नहीं किया। केवल इन 'वाह आचार्य जी" और 'क्या कहूँ" वाक्यांशो को लेकर उन्होने प्रज्ञादेवी जी पर उन्हे अपमानित करने का आरोप मढ़ दिया है। जो व्यर्थ ही है। "क्या कहू' वाक्य यहाँ खेद सूचक ही है अपमान सूचक नहीं। "सुधन्वा अन्तरिक्ष के पुत्र सौधन्वन् यहाँ पृथ्वी लोक के मनुष्य ही हो सकते है।" यही सिद्धि अपने लेख में आचार्य प्रियव्रत जी को करनी थी, जो वे नहीं कर सके।

आचार्य जी ने अपने प्रत्युत्तर मे लिखा है–'मैं वैदिक मन्त्रों की त्रिविधार्थता को स्वीकार करता हू, वेदार्थ मे यास्काचार्य और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित यौगिक पद्धति की परम उपयोगिता को स्वीकार करता हू, मन्त्रो के आधिदैविक अर्थ किये हैं उन्हे भी ठीक ही मानता हू "परन्तु यह सब लिखते हुए भी उन्होंने अपने ग्रन्थ मे यास्क और दयानन्द दोनो की अवहेलना की है—यौगिकवाद के बल पर वे मिथार्थ तो कर सकते थे, परन्तु उनका यह कहना दुस्साहस मात्र ही है, कि इन मन्त्रो के जो अर्थ मैने किये हैं वही हो सकते हैं, अन्य नहीं। आचार्या प्रज्ञादेवी जी की प्रमुख आपत्ति यही है, वे लिखती है कि "आचार्य प्रियव्रत जी थोक के भाव बीस–बीस, पच्चीस–पच्चीस मन्त्र एक साथ प्रस्तुत करते हुए कहते हैं, कि यहाँ यही अर्थ हो सकते हैं, अन्य नहीं। प्रज्ञादेवी ने आचार्य–प्रस्तुत मन्त्रो मे से कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सिद्ध कर दिया है कि उन्हीं मन्त्रो की दयानन्दीय व्याख्या आचार्य जी से सर्वथा भिन्न है, तब तो दयानन्द ही भ्रमित थे–यही कहना पड़ेगा क्या ! यथा–

ऋग्वेद १. १२. २ मे हवीमभि.–ग्रहण करने योग्य उपासनादिको तथा शिल्प विद्या साधनों से। पुरुप्रियम्–बहुत सुख कराने वाले। विश्पतिम्–प्रजाओं के पालने हेतु। हव्यवाहम्–देने लेने योग्य पदार्थों को देने और इधर उधर पहुचाने वाले। अग्निम्–परमेश्वर, प्रसिद्ध अग्नि तथा विद्युत् को। वृणीमहे–स्वीकार करते है–यह अर्थ ऋषि दयानंद ने किया है। ऋ० १. १२. ७ मे ऋषि दयानन्द अग्नि को 'ज्ञातार दाहकं वा" कहते हैं, मन्त्रगत् जिन विश्पतिम्, चर्षणीनाम् मर्त्यानाम्, कृष्टीनाम् आदि शब्दों को देखकर यह घबराहट है कि इनके अर्थ मनुष्य परक ही हो सकते हैं अन्य भौतिक पदार्थ नहीं, यह विचार मिथ्या है। यहाँ देखें इन शब्दो के ऋषि प्रदर्शित कुछ अर्थ–

विश्पतिम्–प्रजायाः पालक सूर्यम् (ऋ० १. १६४. १) चर्षणीनाम् ऐश्वर्येण प्रकाशमानानाम् (ऋ० ४. ८. ८) चर्षणीः–प्राणान् मनुष्यान् वा (ऋ० ५. ८६. २) चर्षणि.–चायिता आदित्यः (निरुक्त ५. २४) मर्त्यानाम्–मर्त्येषु नश्वरेषु पदार्थेषु (ऋ० १. ६६. १) कृष्टिभिः–विलेखनक्रियाभिः (ऋ १. १००. १०)॥ कोई भी देख सकता है इन मन्त्रगत शब्दों को, फलस्वरूप मन्त्रो का आचार्य प्रियव्रत जी ने यास्क और दयानन्द से भिन्न अर्थ किया है और साथ ही यह भी मुहर लगा दी है कि इन मन्त्रो का यही अर्थ हो सकता है अन्य नहीं। तथा आर्य जगत् द्वारा दिये जा सकने वाले कुफ्र के फतवे के भय से यास्क और दयानन्द मे पूर्ण निष्ठा भी व्यक्त कर रहे हैं, क्या वे आर्य जगत् को मूर्ख समझते हैं ?

आचार्य प्रियव्रत जी को चाहिए था कि आचार्या प्रज्ञादेवी जी द्वारा दिये गये स्थलो का तर्क पूर्ण सम्यक् समाधान करते, परन्तु उन्होने अपने दिसम्बर–देववाणी–लेख मे उनको छुआ तक नहीं उल्टा प्रज्ञादेवी जी पर यह आरोप लगाते रहे, कि वे मुझ पर आरोप लगा रही हैं, आर्य जगत् मे मेरी प्रतिष्ठा मिटाना चाहती हैं, इत्यादि। जिन लोगो ने प्रज्ञादेवी जी एव प्रियव्रत जी दोनो के तत्सम्बन्धी लेख पढ़े हैं, वे इसी परिणाम पर अवश्य पहुंचे होगे कि प्रज्ञादेवी जी की पकड़ उचित है और आचार्य जी उसका कोई समुचित समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं, इस दृष्टि से आचार्य जी द्वारा आचार्या प्रज्ञादेवी जी के लेख के प्रत्युत्तर में लिखे गये लेख का महत्व क्या रह सकता है।

★

आर्य सभ्यता व संस्कृति पर विशेष बल

श्री दरबारीलाल द्वारा उद्बोधन

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान मन्दिर मार्ग, के तत्वावधान पर आयोजित समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुये डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्ता समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने कहा कि डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओ का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करना है। यदि ये संस्थायें आर्य सभ्यता व संस्कृति के प्रचार व प्रसार मे सफल नहीं हो पाती तो हमारे लिये इनकी कोई उपयोगिता नहीं है। संस्थान के छात्रो को सम्बोधित करते हुये श्री दरबारीलालजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्कूल के अन्य अध्यापको की अपेक्षा धर्म शिक्षको का कार्य अधिक कठिन है। उन का कार्य केवल बच्चो को कक्षा भवन मे पढ़ाना मात्र नहीं है वरन् स्कूल के सारे वातावरण को वैदिक विचार धारा से ओत–प्रोत करना है। जिन स्कूलो के प्रिंसिपल आर्य समाजी नहीं हैं, वहाँ धर्म शिक्षको के मार्ग मे कुछ बाधायें भी आ सकती है। परन्तु साहस के साथ सभी बाधाओ और असुविधाओ को सहन करते हुए धर्म शिक्षको को वैदिक मिशन को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने अपने विद्यार्थी जीवन के संस्मरण सुनाते हुए धर्म शिक्षकों को सब प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया। आर्य विद्या सभा के मन्त्री प्रिंसिपल तिलकराज गुप्त ने डी० ए० वी० शिक्षा संस्थाओं के धर्म शिक्षको के कर्तव्यो पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। आपने कहा कि धर्मशिक्षको को निर्भीकता के साथ स्कूल और स्कूल के बाहर आर्य समाज के प्रचार कार्य मे लगे रहना चाहिए। इस अवसर पर प्रिंसिपल रमेशचन्द्र जीवन, प्रिंसिपल मदनलाल बेदी व डॉ० मल्होत्रा ने अपने अनुभव से धर्म शिक्षको को बताया कि स्कूल मे छात्रो, अपने अध्यापक सहयोगियो तथा प्रिंसिपल से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। आर्य समाज 'अनारकली' के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी ने संस्थान के छात्रो के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हे आशीर्वाद दिया।

संस्थान के प्राचार्य प्रो० रत्नसिंह ने समारोह के आरम्भ मे सभी छात्रो का डी० ए० वी० के अधिकारियो से परिचय कराया और आयोजन की सफलता के लिए आर्य समाज के अधिकारियो से परिचय कराया और आयोजन की सफलता के लिए आर्य समाज के अधिकारियो के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

श्री ओंकारनाथ कविराज दिवंगत



गोरखपुर आर्य समाज के भूत पूर्व प्रधान श्री ओंकारनाथ कविराज का निधन १८ मई को लखनऊ मे हुआ। आप एक प्रतिबद्ध आर्य परिवार से सम्बद्ध थे। आप गोरखपुर आर्य समाज से ३५ वर्षों से भी अधिक काल तक सम्बद्ध रहे और. विभिन्नपदों पर कार्य किया। आप आर्य कन्या पाठशाला चिरआनन्द बाल सदन, गुरुकुल गोरखपुर के प्रबन्ध कर्ताओं में रहे। नगर की कई समाज सेवी व सस्थाओं के सक्रिय सदस्य रहे। आपके भ्रातृज डा० विनय प्रताप जी र्_ान में आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मन्त्री हैं। आप का शान्ति यज्ञ २१ मई को उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री अतुलकुमार के निवास स्थान १६ विक्रमादित्य मार्ग डंडरियाबाग लखनऊ मे सम्पन्न हुआ। दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना है--

सभा मन्त्री

सूचना

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है। गुरुकुल में विशुद्ध आर्ष प्रणाली द्वारा अध्ययन अध्यापन की समीचीन व्यवस्था है।

प्रवेशार्थी बालक की न्यूनतम अवस्था १२ वर्ष तथा षष्ठम कक्षोत्तीर्ण होना परमावश्यक है। भोजन, शुल्क मात्र १००) रु० मासिक विशेष जानकारी के लिये पत्रव्यवहार करें। इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्रता करें क्योंकि स्थान सीमित है।

आचार्य राजदेव शर्मा, प्रधानाचार्य
आर्ष गुरुकुल एरवा कटरा [इटावा]

उत्सव

आर्य समाज सहतवार का ४४ वां वार्षिकोत्सव दि० १३ से १५ मई तक पुरानी बाजार के प्रांगण में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान उपदेशक,संन्यासी आर्य भजनोपदेशक सर्व श्री सूर्यबली पाण्डेय जौनपुर, राजपति शास्त्री गाजीपुर, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जगदीशपुर (बिहार) ठा० इन्द्रदेवसिंह 'इन्द्र' छपरा के उपदेश व भजन हुये।

दहेज रहित विवाह

आर्य समाज नवासी जिला नैनीताल में श्री आसनसिंह का शुभ विवाह कु० विमला सुपुत्री श्री दीवानसिंह के साथ वैदिक रीतिनुसार दिनांक ६-५-८८ को दहेज रहित सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार श्री धूमिल आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया। वर-वधू की ओर से आर्य समाज को एक सौ दो रुपये दान स्वरूप दिया गया।

सच्चे देशभक्त बनो

[पृष्ठ ५ का शेष]

ने बहुत कुछ कहा लेकिन वह नहीं माना-अतः स्वाभिमान की रक्षा के लिए-शठेशाठ्य समाचरेत् की उक्ति चरितार्थ करनी पड़ी।

सुभाष का हाथ पैर के जूतो की ओर गया दुष्ट तथा आतातायी को दण्डित करने हेतु-मिस्टर उटेन गालियां बक रहे थे सुभाष अपने पैर के जूते से उनकी मरम्मत कर रहा था। प्रोफेसर उटेन वहां से निकलकर बाहर भाग गया।

उसने जीवन भर हजारों भारतीयों को अपमानित किया था यह पहला अवसर था जब उन्होंने भारतीय छात्रों में स्वाभिमान तथा राष्ट्रीयता के दर्शन किये।

उस दिन से उस प्रोफेसर ने कभी भी भारतीय छात्रों को अपमानित नहीं किया। क्यों कि उसका इलाज हो चुका था।

प्रिय बन्धुओ !! आज हमारे देश की दशा अतीव दयनीय है लाखों भारतीयों का नित्य प्रति वध हो रहा है। देश की सीमायें छोटी होती जा रही है। लोग भारतीयता से कोसों दूर भाग रहे हैं। आवश्यकता है आज सच्चे स्वाभिमानी देश भक्तो की।

तभी यह भारत राष्ट्र समुन्नतिशील हो सकता है। हम सदैव याद रखें--

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। हम अपने अन्दर यह भावना पैदा करें कि यह भूमि मेरी माता है तथा मैं इसका पुत्र हूं। इसकी रक्षा करना मेरा पावन कर्तव्य है। तभी राष्ट्र की रक्षा हो सकेगी। अन्यथा यह स्वार्थी देशभक्त देश को बेच करके भी अपना ही हित साधेंगे।

यदि इनके अन्दर तनिक भी राष्ट्रीयता होती तो देश से अराजकता का समूलोच्छेदन हो गया होता। लेकिन एक तरफ यह अराजकता के नाश की घोषणा करते हैं तो दूसरी ओर इशारों से इसे बेतहाशा बढ़ाने की कोशिशें करते हैं। क्या हम इन बोटी घसीटने वाले कुत्तों को राष्ट्र भक्त या देश भक्त भारतीय कह सकेंगे।

ओ मेरे भारत के लोगो ! ऐसे दुष्ट देशद्रोहियों को शासन से उतार कर सच्चे देश भक्त सदाचारी वीर पुरुषों को राष्ट्र रक्षार्थ सिंहासनारूढ़ करो तभी मां भारती की लाज बच सकती है। देश की रक्षा हो सकती है तथा देश अखण्डित रह सकता है। अन्यथा देश रक्षा के कार्य कलाप स्वप्न मात्र ही रह जायेंगे।

*

निर्वाचन

आर्य समाज रानीमण्डी
अतरसुइया, इलाहाबाद

प्रधान-श्री बलदेवलाल आर्य
मन्त्री-कुवर शेखरकुमार एडवोकेट
कोषा०-श्री आर० डी० सिंह

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जून १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

३६४, ४५५, २४७८, ६१५१, ८५९७, ८७९४, ८८७६, ८९५७, ९१७१, ९१८०, ९१८२, ९४२८, ९६५७, १०१७८, ११२१०, १२२०३, १२२१४, १२६७९, १२६८०, १२९१३, १३१२२, १३४७९, १३४८३, १३८८५, १३८९५, १३९०३, १३९०४, १३९०७, १३९०९, १३९१०, १३९११ १३९१२, १३९१५, १३९१८, १४२८०, १४२८१, १४२८२, १४२८३, १४२८४, १४२८५, १४२८८, १४२८९, १४२९०, १४२९१, १४२९२, १४२९३, १४२९४, १४२९५, १४२९६, १४२९७, १४२९८, १४२९९।

विनीत–
व्यवस्थापक

आदर्श विवाह

१–५–१९८८ को सायकाल आर्य समाज मन्दिर सीपरी बाजार झांसी में प्रधान श्री मथुराम आर्य के प्रयत्नों से एक आदर्श विवाह का आयोजन किया गया जिसमें श्री सुरेश कुमार पुत्र हरचरन एवं आयुष्मती सरोज देवी पुत्री श्री किम्बा चौन्होरिया निवासी प्रमगढ़ सीपरी-बाजार, झांसी दाम्पत्य सूत्र बन्धन में बंधे।

इस विवाह समारोह में आर्यसमाज के सदस्यों एवं स्थानीय जनता तथा वर-वधू के सम्बन्धियों ने भारी संख्या में भाग लिया और वर वधू को अपना आशीर्वाद दिया। यह दहेज रहित आदर्श विवाह था।

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए उत्तरदायी आर्य प्रकाशक [illegible] ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] एम० पी० प्रिन्टर्स ([illegible]) [illegible], लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

पंजि सं० २२४१।६८ — घोषणा पत्र सं ०।९८-९-७२

आषाढ़ कृष्ण ४ रविवार संवत २०४५ वि० दिनांक ३ जौलाई १९८८

इस अंक के आकर्षण

विज्ञान और वैज्ञानिक आस्तिकता

राष्ट्रीय जीवन और विनाश की

१८५७ की क्रान्ति के सूत्रधार

देव दयानन्द

सार्वदेशिक सभा के पदाधिका

रियो की सूची पृष्ठ ५ पर देखें

सभा की सार सूचनायें

आर्यसमाजों के चुनाव तथा

उत्सव आदि

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

सहायक सम्पादक

नरदेव भारती एम० ए०

आचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष	८१
अंक	२७

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न

विश्व के आर्य जन अपने कर्त्तव्य का दृढ़ता से पालन करें

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १९—६—८८ को दिल्ली में बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। देश के कोने—कोने से पधारे हुए प्रदेशीय प्रतिनिधियों ने सर्व सम्मति से आगामी तीन वर्षों के लिए संगठन के नेतृत्व का भार सुप्रसिद्ध सन्यासी श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के बलिष्ठ कन्धों पर पुनः सौंप दिया है। इस अवसर पर समस्त प्रतिनिधियों ने संगठन के प्रति पूर्ण समर्पित भावना से कार्य करने एवं अपने महान् नेता के पथ प्रदर्शन में उद्देश्य के प्रति सतत गतिशील रहने का व्रत लिया है।



श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री सभा मन्त्री



श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सभा प्रधान



श्री मनमोहन तिवारी सभा उप मन्त्री



श्री नवनारायण 'नवल' सभा पुस्तकाध्यक्ष

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमे रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकविमैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—आषाढ़ कृष्ण ४ संवत् २०४५, रविवार ३ जौलाई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

चुनाव की अन्त्यपरीक्षा

स्वतन्त्रता के साथ ही इस देश के राजनैतिक क्षितिज पर जहां और अनेकानेक प्रयोग हुए हैं, वहीं प्रजातान्त्रिक प्रणाली पर वयस्क मताधिकार द्वारा चुने हुये प्रतिनिधियों से शासन व्यवस्था चलाने की प्रणाली भी स्वीकृत एवं व्यवहृत हुई है। हमारे तत्कालीन संविधान निर्माताओं के मस्तिष्क में इसका ढांचा तैयार करते समय राजनैतिक दृष्टि से अतिप्रबुद्ध उन पश्चिमीय देशों, अमेरिका, ब्रिटेन आदि की चुनाव प्रणाली मस्तिष्क में थी जहां शिक्षा का औसत शतप्रतिशत है। भारत की जनता अंग्रेजी दासता के पहिले ही मुगलिया शासन के ८०० वर्षों की गुलामी के दौरान अनाचार और अत्याचारों की लम्बी चक्की में पिसती रही थी। सदियों से फैले वाममार्गीय विचारों ने इस आर्य जाति को इतना कुण्ठाग्रस्त बना दिया था कि एकता के नाम पर गर्व करने योग्य कोई सम्बल नहीं था। छोटी—छोटी रियासतों में देश बटा हुआ था। केन्द्रीय शासन का विचार ही नहीं था और न शत्रु के विरुद्ध एक राष्ट्ररूप में खड़े होकर प्रतिकार करने की भावना ही। परिणामतः शौर्य और बलिष्ठता में श्रेष्ठतर होते हुए भी वो वैदेशिक शक्तियों के नीचे हम बहुत काल तक पराधीन बने रहे। आंग्ल शासकों ने अपने २०० वर्षों के शासन के इतिहास में हमें मानसिक दृष्टि से पंगु बना दिया था और हम स्यात् बहुत काल तक उसी स्थिति में रहते किन्तु प्रभु कृपा से ऐसे मनीषियों का उदय हो गया, जिनमें महर्षिवर्य दयानन्द का नाम प्रमुख है, जिनके प्रयास से देश स्वाधीन हुआ और हम अपने भाग्य निर्माता स्वयं बने। आशा यही थी कि हमारा राष्ट्र फिर उसी वैदिक युग में पहुंच जायेगा जब आर्यों ने अपने विशाल साम्राज्य की स्थापना करके विश्व को शान्ति और सच्चे मानव धर्म का सन्देश दिया था।

इसी स्वप्न को साकार बनाने के उद्देश्य से राजनैतिक शब्दावली में जनमत और जनादेश जैसे शब्दों का प्रचलन हुआ और हमने बड़े गर्व से सराहा—"शासन जनता का ··· ···जनता से ··जनता के लिए···। इंगलैण्ड जो राजनैतिक एवं शिक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक प्रबुद्ध देश माना जाता है, और जहां इस प्रकार की प्रजातान्त्रिक चुनाव प्रणाली १०० वर्ष से प्रचलित है, पूर्णतया सफल नहीं कही जा सकती। वहां शासन और विरोध पक्ष के बीच इतना कम अनुपात रहता है कि किसी निर्णय को केवल बहुमत के आधार पर नहीं लिया जाता। भारतवर्ष की बात ही दूसरी है यहां सब धान बाईस पसेरी हैं—राजनीति का निष्णात पण्डित और घास छीलने वाला गंगुआ बराबर है। जहां तक मतपत्र का प्रश्न है वह मतपेटिका में मतपत्र बनकर पड़ जाये इसके लिये क्या—क्या पापड़ नहीं बेलने पड़ते। धुंआंधार चुनाव की आंधी में क्या—क्या नहीं कहा जाता और कौन-सा वाद है जो उभाड़ा नहीं जाता। जिस बीज को हमारे संविधान ने, राजनैतिक—मनीषियों ने, ऋषि महर्षियों ने, समूल नष्ट करने का व्रत लिया था, उसी सम्प्रदायवाद, भाषावाद, क्षेत्रीयतावाद, ठाकुरवाद, ब्राह्मणवाद, कायस्थवाद, मुस्लिमवाद को उन्हीं के द्वारा जिन्होंने व्रत लिया है, वे रोकटोक जी भर के उभाड़ा जाता है। कितनी लज्जा की बात है कि चुनाव जैसी पवित्र प्रक्रिया के अवसर पर भी हम राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, समता, समानता, बन्धुता के आदर्शों को अपने सामाजिक जीवन में नहीं उभाड़ पाये। चुनाव किसी आदर्श अथवा घोषणा पत्र पर नहीं व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर लड़े जाने लगे हैं। दबी हुई सामाजिक बुराइयां चुनाव के दौरान फिर हरी भरी हो जाती हैं। शराब, पैसा, झूंठ आरोप प्रत्यारोप, हिंसा का बोलबाला चुनाव वातावरण मे गूंजने लगता है। जिस पूंजीवाद को अनाचार का मूल समझकर हम समाजवादी व्यवस्था इस देश मे लाना चाहते थे, उन्हीं पूंजीपतियो के पैसो पर चुनाव की बाजी जीती / हारी जाती है। ऐसा ही होता हमने पिछले विधान सभा—लोक सभा चुनावो के दौरान

··· ··और इन चुनावों के अन्त्य परीक्षण पर हमे मिला द्वेष, दम्भ, वर्ग संघर्ष और अमानवीय मूल्यों की कालिमा भरी माला जिसने हमारे देश को सदा चौपट किया है और भविष्य में··· ··· ·· ।

* * *

आदेश

यह सभा इस संवेदनशील तथ्य का अत्यधिक समय से गम्भीरता पूर्वक अनुभव करती चली आ रही है कि—

आर्य संगठन में, महिलाओं के वांछित योगदान के अभाव के कारण, आर्य स्त्री समाजों व आर्य शिक्षण संस्थानों आदि की समृद्धि एवं उनके द्वारा नारी जागरण की दिशा में सफल और प्रभावी कार्य नहीं हो पा रहा है जिससे नारी के अपमान और उत्पीड़न आदि के कुकृत्य, जो आर्यसमाज के लिए एक खुली चुनौती हैं, दिन प्रतिदिन तीव्र गति से बढ़ते चले जा रहे हैं।

अतः संगठन को समृद्ध तथा नारी जागरण के आर्योचित कार्यक्रमों को सफल और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से, इस सभा की अन्तरंग सभासद एवं प्रदेश की योग्यतम आर्य शिक्षा—शास्त्री तथा विद्या मन्दिर महाविद्यालय कानपुर की प्राचार्या श्रीमती (डा०) आशारानीराय जी को इस सभा की ओर से, उसके महिला विभाग की, अवैतनिक मुख्य निरीक्षिका नियुक्त किया जाता है। इन्द्रराज

प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपदेशक, कुरान मर्मज्ञ, शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रसाद जी का ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सदैव की भांति आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में रविवारीय सत्संग में प्रवचन हेतु १९—६—८८ को पधारे थे वहीं आपकी तबियत खराब होने लगी। अनेक उपचारों के बावजूद रात्रि में ९ बजे आपका देहावसान हो गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों से धैर्य धारण करने हेतु प्रार्थना है।

—सभा मन्त्री

विज्ञान वार्ता

विज्ञान और वैज्ञानिक आस्तिकता

[डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज]

ग्वालियर के लब्ध-प्रतिष्ठ नागरिक, लेबर-कोर्ट के अवकाश प्राप्त जज श्री कृष्ण दास शाह एक पत्र में लिखते हैं-

एटम के विभाजन के पूर्व यह समझा जाता था कि प्रकृति जड़ है, और अनादिकाल से ऐसे ही है किन्तु विज्ञान द्वारा परमाणु के विभाजन करने में सफलता के बाद यह स्पष्ट हो गया कि प्रकृति जड़ न होकर शक्ति ऊर्जा व विद्युत् तरंगो का पुञ्ज है एवं मैटर अनादि न होकर ऊर्जा से बना है। इसी प्रकार जीवन से खून और खून से अण्डकोषों में शुक्राणुओं का निर्माण होता है। शुक्राणुओं को यदि माइक्रोस्कोप से देखें, तो वे हिलते-डुलते व आगे-पीछे चलते हुए दिखाई देते हैं, अर्थात् उनमे जीवन होता है। इस प्रकार मनुष्य का अण्डकोष ऐसा प्रकृति का यंत्र है जो मैटर को लाइफ (जीवन) में बदल देता है।

इसी स्पर्म में भावी मनुष्य के सब गुण होते हैं, व यही स्त्री के डिम्ब से मिलकर, स्त्री या पुरुष बन जाता है, व उसकी जीवनी शक्ति समाप्त होने पर यह जीवन पुनः मैटर (प्रकृति) मे बदल जाता है।

इस प्रकार इनर्जी (ऊर्जा) जिसे मैटर मानना उचित नहीं होगा, ही मैटर बनती है, व मैटर ही जीवन बन जाता है। व कुछ काल पश्चात् यह जीवन पुनः मैटर बन जाता है। इसमे आत्मा नाम की कल्पित पृथक् वस्तु कहां से आ जाती है, समझ मे नहीं आता। इनर्जी (ऊर्जा) को (जसा आइन्स्टाइन का मत है) ब्रह्म माना जावे तो यह ब्रह्म ही प्रकृति व जीवन को विशेष-विशेष परिस्थितियों में परिवर्तित होता रहता है। इससे अद्वैत मत की, कि ब्रह्म ही प्रकृति व जीवन मे परिवर्तित होता रहता है, पुष्टि व द्वैतवाद का खण्डन होता है।

ऊर्जा के मैटर (द्रव्य) व जीवन और जीवन पुनः द्रव्य और द्रव्य के पुनः जीवन मे परिवर्तन एवं इसके पुनः-चक्र को यदि पुनर्जन्म कहा जाय, तो कहा जाय, पर क, ख, ग नाम के मनुष्यों की कथित आत्मा मे उनकी मृत्यु के बाद पृथक् स्वतन्त्र सत्ता मे रहें व पुनः पृथक् पृथक् जीवों के रूप मे जन्म ले, तो यह विज्ञान के प्रकाश में सत्य नहीं लगता।

श्रीकृष्णदास शाह जी ने अपने इस पत्र में इतने प्रश्नों की प्रस्तावना प्रस्तुत की है, कि जिनकी न तो विवेचना आवश्यक है, और न निराकरण ही। आत्मा और परमात्मा की स्वतन्त्र नैमित्तिक आस्था माने बिना यदि कोई भी आधुनिक विचारक मीमांसा करने का प्रयास करेगा तो लगभग वह भी वैसा ही करेगा, जैसा कि शाह जी ने किया है। उस नास्तिक पक्ष के लिए और कोई मार्ग नहीं है। दो-तीन मोटी बातें केवल यहां मैं कहूंगा।

१-जिसको हम आस्तिक व्यक्ति चेतनता कहते हैं (चाहे अपने शरीर के प्रसंग मे या सृष्टि के प्रसंग मे-ईश्वर की चेतनता, जीवन की चेतनता और इन दोनो की चेतनताओं से प्रेरित इन्द्रिय, प्राण और मन की चेतनता में) वे बिजली पृथिवी परमाणु-ऊर्जा से सर्वथा भिन्न है, और सर्वथा भिन्न कोटि की है। उनमें आइन्स्टीन समीकरण के समान कोई भी गणितीय समीकरण नहीं लागू होता।

२-शुक्राणु की चेतनता परमाणु-विघटन वाली ऊर्जा के कारण नहीं है। सम्भवतया यह 'ब्राउनियन गति' के कारण हो, जिसके सम्बन्ध में भी आइन्स्टाइन ने मौलिक और उपादेय प्रकाश डाला था।

३-जिस सृष्टि में हम रहते हैं, वह अपौरुषेय सृष्टि है, जिसकी अपेक्षा से इस अत्यन्त छोटी सृष्टि को हम पौरुषेय कहते हैं, जो मनुष्य ने अपनी स्वतन्त्र सामर्थ्य से रची है। उदाहरण के लिए कपास अपौरुषेय और प्लास्टिक के तन्तु पौरुषेय हैं, अंगूर अपौरुषेय, लड्डू-पेड़ा-जलेबी पौरुषेय हैं। वैज्ञानिकों में साहस रहा है कि अपौरुषेय का अध्ययन करके पौरुषेय बनाने का प्रयास करें। अव्यक्त चेतनता को उसने चुनौती दी कि जो कुछ तू बनाती है, हम भी बनाकर दिखायेंगे-इस चुनौती ने आज के वैज्ञानिक और औद्योगिक युग के चमत्कार-पूर्ण आविष्कारों को जन्म दिया।

परन्तु एक दूसरा पक्ष भी स्वीकार करना पड़ेगा। आज का प्रत्येक विनम्र वैज्ञानिक यह स्वीकार करता है, कि वह कितना ही प्रयास क्यों न करे अपौरुषेय हरीभरी घास का एक तृण भी न बना सका है, न बना सकेगा, अंगुलियों का सजीव नाखून नहीं तैयार कर सकेगा। अपौरुषेय जगत् मे जिस सुविधा से और जिस विशाल मात्रा में अपौरुषेय चेतनता प्रेरित प्रकृति रचना करती है, वह मानव के पौरुषेय सामर्थ्य के सर्वथा बाहर है।

आस्तिक व्यक्ति जिस सर्वव्यापी, विश्वाधार चेतनता की बात करता है (जिसे आइन्स्टाइन ने भी स्वीकारा था) उसकी कुछ विशेषतायें निम्न हैं-

(क) यह विश्वाधार चेतनता स्रोत रूप से एक है-एक ही स्रोत से संचालित होती है-कई विभिन्न या विरोधी स्रोतों से नहीं। दो नहीं इसलिए यह अद्वैत है, इसके समान संचालक और सृजक कोई दूसरी नहीं, इस अभिप्राय से यह अद्वितीय है।

(ख) यह विश्वव्यापी संचालक स्रोत जैसा अरबों वर्ष पहले था, वैसा ही आज भी है-भूत-भविष्यत्-वर्तमान मे एक सा रहने वाला कालातीत।

(ग) इस स्रोत से आबद्ध सृष्टि परस्पर एक सूत्र में ग्रथित है, और उसका सृजनात्मक और प्रलयात्मक पक्ष स-उद्देश्य और कल्याणकर है।

इसी का नाम वैज्ञानिक आस्तिकता है, जो जो व्यक्ति अखण्ड, कालातीत, देश काल पर शासक इस प्रकार की अद्वैत अद्वितीय अपौरुषेय प्रेरक कल्याणकर अव्यक्त शक्ति को स्वीकार करता है, वही वैज्ञानिक है, और परम आस्तिक है। इससे भिन्न जो भी आस्तिकता के साम्प्रदायिक रूप हैं, वे संकीर्ण, भ्रममूलक और अन्धविश्वास-पोषित हैं।

निश्चय ही वैज्ञानिक आस्तिकता में और कर्मकाण्ड प्रेरित साम्प्रदायिक आस्तिकता मे बहुत भेद है। वस्तुतः ब्रह्माण्ड इतना विशाल है, कि उसकी परम व्याख्या करना मानव शरीरधारी चिन्तक की स्वाभाविक सीमाओं से बाहर है।

वैज्ञानिक की परम निष्ठा [१] सत्य, [२] ऋत, [३] दीक्षा, [४] तप, [५] ब्रह्म (ज्ञान) और [६] यज्ञ मे है--

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

(अथर्व १२-१-१)

वैज्ञानिक अपने कर्म प्रेरित ज्ञान क्षेत्र मे इन छः शब्दों का यथार्थ अभिप्राय और अर्थ स्पष्ट समझता है।

* * *

१८५७ की क्रान्ति के सूत्रधार देव दयानन्द

[श्री सतीश चन्द्र गुप्त एडवोकेट उपप्रधान मण्डी बांस आर्य समाज मुरादाबाद]

भारतीय जन मानस में १० मई १८५७ की स्मृति ताजा है। इस तिथि की पृष्ठ भूमि में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक अति स्मरणीय अध्याय छिपा पड़ा है। इस दिवस की एक बड़ी महत्ता है। यह प्रथम राष्ट्रीय दिवस है। जब भारत मे चेतना आयी थी। परन्तु प्रश्न उठता है कि कौन था वह चेतना जगाने वाला ?

वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक ने ऋषि दयानन्द से वार्तालाप करते हुये यह प्रस्तावित किया कि वह अपने प्रवचनों मे अखण्ड अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के लिये प्रार्थना करा करें। देव दयान द ने बिना आगा पीछा सोचे लार्ड को दो टूक उत्तर दिया "कि अंग्रेजी सम्राज्य की स्थापना के लिए प्रार्थना करना तो दूर रहा मै तो हमेशा ही भारत की स्वतन्त्रता और अंग्रेजी राज्य के विनाश के लिये प्रार्थना करता हूं।" बस स्वामी जी का यह कहना रहा होगा कि देखते ही देखते दयानन्द अंग्रेजी साम्राज्य के दुश्मनों की सूची में प्रथम संख्या में स्थान पा गये जिसकी परिणति १८८३ मे विष देकर शान्त हुई। विष देना जंगमा के नाम पर रचा गया षड़यन्त्र अंग्रेज अधिकारियों के खूनी पन्जों के माध्यम से हुआ था।

१८५५ में हरिद्वार में विशाल कुम्भ लगा परम्परानुसार कुम्भ मेले में संन्यासी गृहस्थी राजा एवं रंक भाग लेने आये और अंग्रेजों के अत्याचार के कारण उस समय निर्धन की जीर्ण-शीर्ण कुटिया से लेकर राजमहल तक अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी सुलग रही थी। ऋषि इस चिंगारी को दावानल में परिवर्तित करने के विचार का सुदृढ़ कार्यक्रम बनाकर पैदल ही दिल्ली होते हुए हरिद्वार जा पहुंचे और देव दयानन्द ने गंगापार चण्डी पहाड़ के एकान्त स्थल मे अपना डेरा लगाया। हुआ यह कि इस कार्यक्रम में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी नाना फड़नवीस बाला साहब, तात्याटोपे, अजीमुल्ला खाँ, महारानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह आदि आदि अनेकों नेता हरिद्वार में गंगा पार चण्डी के स्थल में ऋषि से मिले और भारत मां की पुकार और उस पर हो रहे अत्याचारों की समीक्षा की यह एक सत्य है कि ऋषि दयानन्द ने इन सभी को क्रान्ति के विचार प्रेरणा तथा कार्यक्रम दिये।

ऋषि साधू सन्यासियों तथा आम जनता में स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा का प्रबल प्रचार करने लग। उन्होंने सन्यासी दल को प्रेरणा दी और स्वामी जी साधू सन्यासियों के सभी सम्प्रदायों के मठाधीशों से मिले सबसे मिलकर समार्थं की और उनसे देश में आने वाले भावी स्वतन्त्रता के युद्ध में क्रियात्मक भाग लेने व उचित योगदान देने का परामर्श दिया। पाठक गण आप सबको यह जान कर अति आश्चर्य होगा कि संन्यासियों द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान देना तो दूर रहा परन्तु यह सब विलास में डूबे हुए वे मठाधीशों ने कहा एक लेखक के अनुसार "हमें देश की आजादी से कुछ लेना देना नहीं, समाज और राष्ट्र के विषय में सोचना भी हमारे लिए पाप है हमने तो गृह संसार का त्याग अपनी मुक्ति के लिये किया है" ऋषि दयानन्द को उस समय भारी निराशा हाथ लगी क्योंकि वह सोचते थे कि इन साधू सन्यासियों के माध्यम से जो देश में लाखों की संख्या में थे गठन करके स्वतन्त्रता की लड़ाई में आगे बढ़ा जाये।

देव दयानन्द समझ गये कि इनकी साधना विलासी जीवन का ही एक प्रकार है स्वामी दयानन्द प्रच्छन्न रूप में सन्यासियों के दल का गठन करने लगे और उन सब को सैनिक छावनियों में जाकर स्वाधीनता संग्राम का प्रचार एवम् प्रसार करने का परामर्श दिया और इस संगठन का गुप्त केन्द्र दिल्ली के महरौली स्थित योगमाया मन्दिर को बनाया इसी मन्दिर से समस्त देश की गुप्त सूचनायें प्राप्त की जाती थी और उचित निर्देशन दिये जाते थे।

रोटी और लाल कमल

१८५७ की क्रान्ति से पूर्व पहले एक रोटी भारत के गांव गांव में घूमती दिखाई देती थी जिस गांव मे वह रोटी पहुंचती गुप्त सन्देशों के अनुसार उस गांव का मुखिया रोटी का कुछ अंश स्वयं खाकर शेष ग्रामवासियों में बांट देता था और उसी के समान एक दूसरी रोटी बनाकर दूसरे गांव में प्रेषित किया करता था और इसी प्रकार एक लाल कमल प्रत्येक सैनिक छावनी मे घूम रहा था जिस छावनी मे वह लाल कमल जाता वहाँ स्वतन्त्रता संग्राम की तिथि घोषित हो जाता और लाल कमल चुपचाप बिना किसी के एक शब्द कहे एक सैनिक हाथ से दूसरे सैनिक के हाथ चला आता था और अन्तिम सैनिक के हाथ मे पहुंचाते ही सैनिक देखते ही देखते आंखों से ओझल हो जाता और वह सैनिक दूसरे सैन्यावास में लाल कमल पहुंचा देता।

उस समय जब कि यातायात सूचना प्रसारण व प्रचार की सुविधायें वर्तमान अनुसार नहीं थी रोटी और लाल कमल के ऋषि दयानन्द के संचालन ने जन-जन में क्रान्ति का मन्त्र फूंक दिया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि रोटी और कमल द्वारा क्रान्ति का प्रचार करने का सबसे प्रथम विचार देव दयानन्द ने कुम्भ मेले में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों को दिया था और कैसा आश्चर्य है कि रोटी और लाल कमल की भनक अंग्रेजों को अन्तिम क्षण तक न लगी माया मन्दिर महरौली दिल्ली में विराजे युग पुरुष देव दयानन्द ने ३१ वर्ष की आयु में रोटी और लाल कमल की संरचना करके अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय जन मानस में घृणा की धारा बहाई। क्रान्ति की अग्नि धारा दावानल के समान बढ़ती ही जा रही थी कि प्रथम यह दावानल मार्च १८५७ में विस्फोट व और फिर १० मई १८५७ को मेरठ से चिंगारी सारे देश मे अंग्रेजों के प्रति आग भड़काती ही गयी।

ऋषि की अज्ञात जीवनी "योगी का आत्म चरित्र" के नाम से प्रकाशित होने पर अनेकों भ्रान्तियों से पर्दा उठ गया है और वह सच्चाई सामने आ गयी है भारतीय जनता व सैनिकों के बीच भारत माता की मुक्ति के लिए अंग्रेजों से जूझने का जो विप्लव कार्यक्रम रोटी और लाल कमल के माध्यम से बनाया था उसकी पृष्ठ भूमि में देव दयानन्द ही थे।

१८५७ की क्रांति की जीत हार में परिवर्तित हो गई और अंग्रेजों ने क्रान्ति को दमन करने के लिए भारतीय जन मानस को उत्पीड़ित करना क्रूरता से प्रारम्भ कर दिया।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मन्त्री, श्री मनमोहन तिवारी का वैदिक धर्म प्रचारार्थ तूफानी दौरा

पर्वतीय अंचलों में जागृति की एक नई लहर

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उद्योयमान महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने हिमालय की उपत्यका में बसे हुए अनेकों स्थानों तथा आर्यसमाजों में तूफानी प्रचार यात्रा करके इस क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार को एक नई गति प्रदान की है। ऋषिवर दयानन्द एवं आर्यसमाज के जयजयकार के साथ ही उनका सर्वत्र बड़े उत्साह के साथ स्वागत हुआ। इस दौरे मे दिनांक २२ मई को नैनीताल के आर्य समाज मन्दिर में जिले की समस्त आर्यसामाजिक कार्यकर्ताओं, अधिकारियो तथा वैदिक धर्म के प्रति समर्पित आर्य युवको की एक विशाल बैठक को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा—"समय आ गया है, ऋषि मुनियो की तपस्थली हिमालय की इस उपत्यका मे वैदिक धर्म के प्रचार की दुन्दुभी निनादित हो। आर्यसमाज विश्व की महानतम सुधारवादी मानव कल्याणकारिणी संस्था है। आज के परिवेश में इसकी महान आवश्यकता है। मै चाहूंगा आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्त्ता ओ३म् की ध्वजा लेकर गांव-गांव पहुंच जायें और हिमालय की चोटी से विश्व को आर्य बनाने का सन्देश सुनायें।"

मन्त्री जी ने रामगढ़ जाकर आर्यजगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी के आश्रम तथा आर्य समाज मन्दिर का निरीक्षण किया और भवाली मे शम्भुनाथ रामेश्वरी देवी आर्य पुस्तकालय की व्यवस्था देखी। इन दोनों स्थानो पर अपेक्षित निर्माण कार्य शीघ्र प्रारम्भ कराये जाने का आश्वासन भी दिया है।

अपनी प्रचार यात्रा के दूसरे दौर मे मन्त्री जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री तथा दिल्ली के आर्य नेता श्री लक्ष्मीचन्द्र के साथ प्रयाग पधारे और उन्होंने दिनांक ११ जून को आर्यसमाज चौक इलाहाबाद के विशाल सभागार मे जिले के समस्त अधिकारी एवं समर्पित आर्य कार्यकर्ताओं की एक विशाल बैठक को सम्बोधित किया—इलाहाबाद जनपद मे आर्यसमाज के प्रचार की विभिन्न रूपरेखाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने उपस्थित जन समूह को वैदिक धर्म के प्रचारार्थ समर्पित भाव से जुट जाने के लिए उत्प्रेरित किया। उन्होंने कहा सात महीने बाद इस महानगरी मे महाकुम्भ मेला पड़ रहा है जिसमे लाखों श्रद्धालु नर-नारी सम्मिलित होंगे। वैदिक धर्म के प्रचार का यह स्वर्ण अवसर होगा अतः मै चाहूंगा कि योजनाबद्ध तरीके से इस अवसर पर वैदिक धर्म के प्रचार की विशेष व्यवस्था की जाये। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यह विशेष व्यवस्था की जायेगी जिसमें मेला क्षेत्र को कई भागों में बांटकर उच्च कोटि के उपदेशकों प्रचारकों द्वारा प्रचार कराया जायेगा। जनपद इलाहाबाद की समस्त आर्यसमाजें मिलकर एक रूपरेखा तैयार करें और प्रतिनिधि सभा को सहयोग देकर इस स्वर्ण अवसर से लाभ उठावें। प्रतिनिधि सभा द्वारा इस अवसर पर आर्य साहित्य का वितरण मुफ्त अथवा कम दामों पर किया जायेगा और मेला क्षेत्र में व्यापक जनसम्पर्क अभियान चलाया जायेगा उपस्थित जनसमूह ने तुमुल करतलध्वनि के साथ मन्त्री जी को इस योजना का स्वागत करते हुए पूर्ण सहयोग का वचन दिया।

इस प्रकार मन्त्री जी के इन तूफानी दौरों से पर्वतीय अंचलों तथा जनपद इलाहाबाद की आर्यसमाजों एवं आर्य जनता में नवजागृति की एक नई लहर पैदा हुई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्ष १९८८-९१ के लिए अधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यों की सूची

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में दिनांक १९-६-८८ को आगामी ३ वर्षों के लिए निर्वाचन नियम संख्या ११ के अनुसार निम्न प्रकार हुआ—

१—प्रधान		श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती	
२—उपप्रधान		१. श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्	(आं०प्र०)
३—	,,	२. श्री प्रो० शेरसिंह	(हरियाणा)
४—	,,	३. श्री सत्यानन्द मुंजाल	(प्रादेशिक)
५—	,,	४. श्री वासुदेव शर्मा	(बिहार)
६—	,,	५. पं० राजगुरु शर्मा	(म०भारत)
७—	,,	६. श्री छोटूसिंह एडवोकेट	(राजस्थान)
८—	,,	७. महाशय धर्मपाल	(दिल्ली)
९—	,,	८. श्री आर्य भिक्षु	(उत्तर प्र०)
१०—मन्त्री		१. श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री	(उ० प्र०)
११—उप मन्त्री		१. श्री पृथ्वीराज शास्त्री	(सेवाश्रम संघ)
१२—	,,	२. श्री डा० धर्मपाल	(दिल्ली)
१३—	,,	३. श्री मनमोहन तिवारी	(उ० प्र०)
१४—	,,	४. कैप्टन देवरत्न आर्य	(बम्बई)
१५—	,,	५. श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट	(पंजाब)
१६— कोषाध्यक्ष		१. श्री ओम प्रकाश गोयल	(प्रादेशिक)
१७—पुस्तकाध्यक्ष		१. श्री वनारायण 'मदन'	(उ० प्र०)

अन्तरंग सदस्य

१८—	१. श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती	(हरियाणा)
१९—	२. श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट	(पंजाब)
२०—	३. श्री कृष्णलाल	(हि० प्र०)
२१—	४. श्री रामचन्द्र राव कल्याणी	(आं०प्र०)
२२—	५. श्री भूपनारायण शास्त्री	(बिहार)
२३—	६. श्री सुमेधानन्द	(हिमांचल)
२४—	७. श्री दौलतराम चढ़ा	(महाराष्ट्र)
२५—	८. श्री बटुकृष्ण वर्मन	(बंगाल)
२६—	९. श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव	(मध्य प्र०)
२७—	१०. श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री	(जम्मू)
२८—	११. श्री इन्द्रप्रकाश गांधी	(मध्य भा०)
२९—	१२. श्री जगदीश प्रसाद वैदिक	(मध्य भा०)
३०—	१३. श्री मंगलसेन चोपड़ा	(गुजरात)
३१—	१४. श्री राजा मधुसूदन पित्ती	(गुजरात)
३२—	१५. श्री प० इन्द्रराज	(उ० प्र०)
३३—	१६. श्री सूर्यदेव	(दिल्ली)
३४—	१७. श्री डा० महेश विद्यालंकार	(दिल्ली)
३५—	१८. प्रो० योगेन्द्र नारायण	(बिहार)

विशेष आमन्त्रित

१—वि० आम०		१. श्री सत्यदेव भारद्वाज	(प्रेह कैलाश नैरोबी)
२—	,,	२. श्री ओम प्रकाश आर्य	(दिल्ली)
३—	,,	३. श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता	(उ० प्र०)
४—	,,	४. श्री स्वामी धर्मानन्द	(उड़ीसा)
५—	,,	५. पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री	

मोक्ष मार्ग दर्शन—

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे उपासना विषय

भावार्थ–(ततः०) इस प्रकार प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का आवरण अर्थात् ढापने वाला जो अज्ञान है, वह नित्य प्रति नष्ट होता जाता है, और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है [४४]

उस अभ्यास से यह भी फल होता है कि–(किच धारणा०) परमेश्वर के बीच मे मन और आत्मा को धारणा होने से, मोक्षपर्यन्त उपासनायोग और ज्ञान की योग्यता बढ़ती जाती है। तथा उससे व्यवहार और परमार्थ का विवेक भी बराबर बढ़ता रहता है। इसी प्रकार प्राणायाम करने से भी जान लेना [४५]

(स्वविषया०) "प्रत्याहार" उसका नाम है कि जब पुरुष अपने मन को जीत लेता है, तब इन्द्रियो का जीतना अपने आप हो जाता है, क्योंकि मन ही इन्द्रियो का चलाने वाला है। [४६]

(ततः पर०) तब वह मनुष्य जितेन्द्रिय होके जहाँ अपने मन को ठहराना व चलाना चाहे, उसी में ठहरा और चला सकता है। फिर उसको ज्ञान हो जाने से सदा सत्य में ही प्रीति हो जाती है, असत्य में कभी नहीं। [४७]

जब उपासनायोग के पूर्वोक्त पाँचो अंग सिद्ध हो जाते हैं, तब उसका छठा अंग धारणा भी यथावत् प्राप्त होती है "धारणा" उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुड़ा के नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्र भाग आदि देशों में स्थिर करके, ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है, उसका विचार करना। [४८]

तथा (तत्र प्र०) धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करने और आश्रय लेने के योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके प्रकाश और आनन्द में, अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ, इस प्रकार प्रवेश करना कि जैसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। उस समय में ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाना। इसी का नाम 'ध्यान' है। [४९]

इन सात अंगो का फल समाधि है–(तदेवार्थ०) जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्नि रूप हो जाता है, उसी प्रकार परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय होके, अपने शरीर को भी भूले हुए के समान जान के, आत्मा को परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान से परिपूर्ण करने को 'समाधि' कहते हैं। ध्यान और समाधि में इतना ही भेद है, कि ध्यान में तो ध्यान करने वाला, जिस मन से, जिस चीज का ध्यान करता है, वे तीनो विद्यमान रहते हैं। परन्तु समाधि में केवल परमेश्वर ही के आनन्द स्वरूप ज्ञान में आत्मा मग्न हो जाता है वहाँ तीनो का भेदभाव नहीं रहता। जैसे मनुष्य जल मे डुबकी मार के थोड़ा समय भीतर ही रुका रहता है, वैसे ही जीवात्मा परमेश्वर के बीच में मग्न हो के फिर बाहर को आ जाता है। [५०]

(त्रयमेकत्र०) जिस देश में धारणा की जाय, उस में ध्यान, और उसी में समाधि, अर्थात् ध्यान करने योग्य परमेश्वर में मग्न हो जाने को संयम कहते हैं जो एक ही काल में तीनों का मेल होना है, अर्थात् धारणा से संयुक्त ध्यान, और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है, उसमें बहुत सूक्ष्म काल का भेद रहता है। परन्तु जब समाधि होती है, तब आनन्द के बीच में तीनों का फल एक ही हो जाता है। [५१]

वेदों के मार्ग पर ही चल कर सुख शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। राजनीति के साथ धर्म है धर्म नहीं तो राजनीति का कोई मूल्य नहीं। धर्म सापेक्ष राज्य होना चाहिए।

वैदिक राष्ट्र की घोषणा से जनता व सरकार मे सुख शांति होगी। आज ढोंग गुरु मे पाखण्ड बढ़ने से सत्य सनातन धर्म व ईश्वर को भूल गये हैं।

आर्यसमाज ही हिन्दुओं की रक्षा कर सकता है

—डा० आनन्द सुमन

नई दिल्ली–आर्य समाज सनातन वैदिक संस्कृति का रक्षक एवं वैदिक धर्म का प्रचारक है, आज सारा देश पाखण्डवाद, चमत्कारवाद, साम्प्रदायिकता एवं अराजकता की अग्नि में जल रहा है ऐसे संकट के समय मे केवल आर्य समाज ही हिन्दुओं को बचा सकता है एवं भारत की एकता व अखण्डता की सुरक्षा कर सकता है। अतः सभी हिन्दू समाज के मञ्च पर आयें और अपनी संस्कृति की रक्षा में आर्य समाज के साथ कार्य करें। यह विचार युवा आर्य नेता डा० आनन्द सुमन के हैं।

डा० आनन्द सुमन ने गत एक माह में बिहार, पश्चिम बंगाल पूर्वी व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मधुपुर, देवघार, कलकत्ता कुल्टी बर्द्धमान लखनऊ, देहरादून, मसूरी, विकासनगर, डाकपत्थर क्षेत्रों में सघन प्रचार किया एवं इस प्रवास मे मधुपुर मे १०० कुल्टी मे १००एवं कलकत्ता में २५० नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण कराये गये। १०० युवक व युवतियों को आर्य समाज की सदस्यता के लिए प्रेरित किया गया। विकास नगर के निकट अम्बाड़ी के कालेज के आंग्ल भाषा प्रवक्ता प्रो०जमील अहमद, एम० ए० बी०एड० ने डा०आनन्द सुमन के विचारों एवं पुस्तकों से प्रभावित होकर वैदिक धर्म स्वीकार किया, उनका नया नाम देवेन्द्र सिंह रखा गया है।

डा० आनन्द सुमन शांत वय पूर्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी की प्रेरणा पर वैदिक धर्म में दीक्षित हुये थे। तभी से वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन कर निरन्तर आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे समर्पित रूप में लगे हुये हैं।

निधन

आर्य समाज सिक्कालिका [मुजफ्फरनगर] के भूतपूर्व उप प्रधान श्री भंवरसिंह पुत्र श्री सदाराम का निधन विगत माह मार्च में हो गया। श्री भंवरसिंह बड़े सज्जन, सहृदयी सम भाव के व्यक्ति थे, उनके निधन पर आर्य समाज के सभासदों ने शोक प्रकट किया।

गाण्डीव भी था और पिनाक भी

[स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद]

गत १९७५ ई० मे कुछ लोगो ने इस प्रकार के भ्रामक वक्तव्य प्रसारित किये कि जिनसे भारतीय जनमानस अपने प्राचीन इतिहास के विषय मे भ्रान्ति मे आ पड़े। यह लोग कभी कहते हैं महाभारत नहीं हुआ। कभी कहते हैं, महा भारत हुआ है मगर रामायण से पहले। कभी कहते हैं लङ्का मध्यप्रदेश मे थी तो कभी कहते हैं, रामायण को वाल्मीकी ने बौद्ध–साहित्य के 'दशरथ–जातक" के आधार पर ईसा से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व लिखा।

इन लोगो के उक्त वक्तव्य न केवल निराधार ही हैं अपितु यह लोग भारतीय इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ भी हैं यदि अनभिज्ञ नहीं हैं, और जानबूझ कर ऐसा कर रहे हैं तो विदेशियो की शीतयुद्ध की राजनीति के चगुल मे फसे हैं।

समाचार–पत्रो मे श्री डा० एच० डी० सांकलिया का एक और वक्तव्य पढ़ने को मिला। पहले आपने कहा था, लङ्का मध्य प्रदेश मे थी। अब आप उसे ढूढते फिर रहे हैं। कुछ समय पश्चात् आप भुवनेश्वर गये और वहा भाषण करते हुए आपने कहा कि लङ्का उड़ीसा मे थी और राम महा नदी पार करके लङ्का पहुचे थे, अपनी लङ्का खोजने की पहली यात्रा मे मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल नगर मे एक सभा को सम्बोधित करते हुए आप यह कह बैठे 'कि भारत अतीत में शस्त्र निर्माण के क्षेत्र मे पिछड़ा हुआ था। रामायण और महाभारत के युद्धों मे रथो, चक्रो, भाँति भाँति के धनुष–बाणो तथा तलवारो का जो वर्णन किया गया है, वह मात्र कवि कल्पना है।' आपने यह भी कहा कि, रामायण और महाभारत काव्यो मे जैसे हथियारो का वर्णन मिलता है, वैसे हथियार मानव सभ्यता के सन्दर्भ से हटकर विकसित नहीं किये जा सकते। आपने कहा "उक्त महाकाव्यो मे वर्णित युद्धोपयोगी शस्त्रो की कल्पना अति विकसित सभ्यता की पूर्व कल्पना है। पश्चिम एशिया और अफ्रीका सभ्यता की तुलना मे भारत शस्त्र निर्माण की दिशा मे बहुत पिछड़ा हुआ रहा है। यह कहना किम्वदन्ति है कि अर्जुन ने गाण्डीव का प्रयोग किया, राम ने शिव धनुष तोड़ा और रावण रथ में बिठाकर सीता को ले भागा था।" आप ने कहा, "उक्त हथियारो का विकास बहुत बाद मे किया गया है।"

गाण्डीव भी था और पिनाक भी—किन्तु जब अभागे भारतीय पश्चिम की ऐनक लगाकर ही भारतीय इतिहास को पढ़ते हैं तब उन्हे भारत मे कुछ भी क्यो दिखाई देने लगा। यह नितान्त लज्जा की बात है कि आदि सृष्टि से ही समस्त ससार को सब-विद्यायें सिखाने वाले देश के वासी अपने गौरवपूर्ण इतिहास के विरुद्ध इस प्रकार की मिथ्या धारणायें व्यक्त करने और फैलाने मे लगे हैं। विश्व का यह सब से बड़ा आश्चर्य कहा जाना चाहिए कि लोग अपने "पिता आदि" पूर्व पुरुषो के विषय मे विदेशियो का प्रमाण मानें .. .... .अपने घर के इतिवृत्त को नहीं। अपने पिता का नाम आदि परिचय देने के लिए व्यक्ति स्वय प्रमाण होता है किन्तु भारत की मानव सभ्यता के इतिहास मे पिछड़ा-बताने वाले भारतीय अपने आप को सभ्य और विकसित समझ रहे हैं और यह उनके विकसित मस्तिष्क की पहचान है कि भारतीयता के लिए भारतीय इतिहास को नहीं अपितु विदेशियो के पक्षपातपूर्ण अनर्गल और असगत लेखो मे प्रमाण मान रहे हैं।

सिद्धान्त-विवेचन की दृष्टि से हम यह कहना चाहते हैं कि श्री सांकलिया जी के नाम के साथ जो "सांकलिया" शब्द लगा है, इसका क्या महत्व और क्या इतिहास है। हमारा अभिप्राय यह है कि श्री 'सांकलिया जी तो अति विकसित सभ्यता के युग मे रह रहे हैं। इतिहास पर शोध कर रहे हैं, लका को ढूढते फिर रहे हैं, कभी उन्होंने इस साकलिया शब्द के विषय मे भी सोचा। उर्दू मे जिसे "जजीर" कहते हैं, उसे हिन्दी मे सांकल कहते हैं। "सांकलिया" पशुओ मे तो कुत्ता, बाघ, भैंस आदि को कहा जा सकता है, जो सांकल मे बांधे जाते हैं और मनुष्यों मे उन्हें कहा जा सकता है, जो 'सांकल' बनाने का कार्य करें अथवा जिनके वश मे 'सांकल' बनाने का कार्य होता रहा हो। सभ्यता के विकास की बातें करने वाले और भारत के रामायण–महाभारत कालो को सभ्यता के विकास मे पिछड़ा हुआ बताने वाले श्रीमान को यह तो समझना चाहिए कि यह शब्द विकसित सभ्यता का नहीं अपितु पिछड़ेपन का परिचायक है। रामायण–महाभारत के लेखकों को तो श्री साकलिया जी के ही शब्दो में, "उक्त महाकाव्यो मे वर्णित युद्धोपयोगी शस्त्रो की कल्पना अति विकसित सभ्यता की पूर्व कल्पना" करने की योग्यता और बुद्धि तभी प्राप्त हो गई थी, जब सभ्यता साकलिया जी के विचार से विकसित भी नहीं हो पाई थी। परन्तु साकलिया जी को अब तक भी यह बुद्धि न प्राप्त हो सकी—जो इस विकसित सभ्यता के युग में रह रहे हैं—कि जिससे वह यह जान लेते कि सांकलिया शब्द सभ्यता का नहीं अपितु अत्यन्त असभ्य युग में रहने का तथा अयोग्यता का परिचायक है।

इस विषय में हमारा निवेदन यह है कि रामायण और महाभारत विश्व की महानतम सभ्यता के युगों के परिचायक इतिहास है। उस समय के लोग आज से अधिक उच्च सभ्यता के वातावरण में पल और पनप रहे थे। उस समय की सभ्यता मानवीय इतिहास की महानतम सभ्यता थी और उसका बुद्धि कौशल भी उसी के अनुरूप था। सत्य तो यह है कि वर्तमान सभ्यता और बुद्धि–कौशल मानव–विनाश की ओर उन्मुख है और मानव–विनाश ही इसका आधार है किन्तु उस समय की भारतीय सभ्यता और बुद्धि–कौशल न केवल मनुष्य–मात्र अपितु प्राणि–मात्र के हित–चिन्तन में सलग्न थे। इस बर्बर युग का उस दिव्य–युग से क्या तुलना ?

इससे भी बढ़कर यह आश्चर्य कि ओर तो सांकलिया जी रामायण महाभारत को कल्पनाओ के ग्रन्थ बताकर उनकी ऐतिहासिकता से ही नकार रहे हैं तथा दूसरी ओर लका की खोज करते फिर रहे हैं। लका का कहीं वर्णन है तो रामायण में, किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं। किसी अन्य ग्रन्थ में है भी तो रामायण के आधार पर ही। अन्य ग्रन्थ–जिन में लका का वर्णन है—रामायण के पश्चात् के हैं। रामायण इस सब से प्राचीन १,८१,४९,०८७ वर्ष पुराना ग्रन्थ है। साकलिया जी की दृष्टि में जब रामायण केवल काव्य है और उसके वर्णन केवल पूर्व कल्पना है अर्थात् वह ऐतिहासिक ग्रन्थ है। हा नहीं तो रामायण की लका भी काल्पनिक ही हुई। उसकी खोज के लिए किसी बुद्धिमान इतिहासज्ञ अनुसंधान कर्ता के द्वारा समय, शक्ति और धन विनष्ट करते

[शेष पृष्ठ ११ पर]

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

आचमन

शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः ।

चारों ओर हमारे प्यारे प्रभु सुखदायक जल बरसाओ ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो, रसधार कृपा की सरसाओ ॥
जल शान्ति स्रोत सुखकारी हो
गुण दिव्य सतत संचारी हो
हो जायें पीकर तृप्त जिसे
सब ओर सुमंगलकारी हो
सर्वत्र व्याप्त हो आप प्रभो, कुछ बूंद इधर भी बिखराओ ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो, रसधार कृपा की सरसाओ ॥
प्राणी का प्राण वही जल है
परिपूर्ण आप से जल थल है
जो हमने ईश अभीष्ट किया
मन वही मांगता पल-पल है ।
आनन्द भोग हो सरस शुद्ध, रस आप वही प्रभु बरसाओ ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो, रसधार कृपा की सरसाओ ॥
सर्वत्र व्याप्त हो परमेश्वर
सर्वत्र हर्ष दो परमेश्वर
सर्वत्र कष्ट मम मिट जायें
छा जावे सुख रस परमेश्वर ।
है ईश दिव्य सुख बरसाओ, मत कहीं किसी को तरसाओ ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो, रसधार कृपा की बरसाओ ॥

अंग स्पर्श

हे सप्त लोक ब्रह्माण्ड ईश, बस अंश हमें कुछ मिल जाये ।
यह देह सबल तो हो जाये, पर तेरा मन्दिर बन जाये ॥
रसना – वाणी – प्रश्वांस श्वांस
दो नयन और दो कर्ण भास
बलवान नाभि बलवान हृदय
हो कण्ठ सबल सिर श्रुति प्रकाश ।
यश एक भुजा में सज जाये, दूसरी भुजा बल बल लाये ।
यह देह सबल तो हो जाये, पर तेरा मन्दिर बन जाये ॥
सुयश लिये हो करतल अपना
कर पृष्ठ शक्ति का हो ढकना
कर में कर्त्तव्य समावे
अधिकार तभी होता अपना ।
बलवान देह यह बन जाये, पर सत्कर्मों में लग जाये ।
यह देह सबल तो हो जाये, पर तेरा मन्दिर बन जाये ॥
यह शक्ति स्रोत तेरा बल है
देता स्पर्श शान्ति संकुल है
हो रोम रोम इन अंगों में
जब हट जाता इनका मल है
ऊपरी मैल जल से जाये, मन से भी कल्मष हट जाये ।
यह देह सबल तो हो जाये, पर तेरा मन्दिर बन जाये ॥
(क्रमशः)

बाल जगत

बच्चों द्वारा वेद प्रचार

[धर्मवीर आर्य, आर्य बाल सभा, भुनगार्जुनपुर (बहराइच]

आर्यसमाज के इतिहास में शायद यह सर्वप्रथम घटना होगी कि बच्चों द्वारा आर्यसमाज का उत्सव, वेद प्रचार किया गया हो। आर्य समाज भनगार्जुनपुर के होनहार, जिज्ञासु बच्चों ने आर्यसमाज के निकम्मे अधिकारियों से निराश होकर वेदोपदेश श्रवण की जिज्ञासा से 'आर्य बाल सभा' की स्थापना की। संस्थापक एवं मन्त्री हरीशमित्र आर्य (आयु १० वर्ष) है। इसके मन्त्री भवन कुमार (१५ वर्ष) अध्यक्ष सत्यमित्र (१७ वर्ष) प्रधान सत्यप्रकाश (१६ वर्ष) कोषाध्यक्ष शिवपूजन (१४ वर्ष) निर्वाचित हुए। इसमें बहुत से बच्चे सदस्य हैं जिनकी आयु ४, ५ वर्ष तक है। इस सभा का संचालन आर्य समाज की भांति कुशलतापूर्वक हो रहा है। इसकी स्थापना, संचालन में आर्य समाज का किसी प्रकार का कोई सहयोग नहीं है। बच्चे यथाशक्ति साप्ताहिक सत्संग, सन्ध्या, स्वाध्याय आदि करते हैं। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग, उत्सव लगभग १० वर्षों से बन्द होने के कारण वेदोपदेश श्रवण की जिज्ञासा तृप्ति न होने से इस सभा ने ५, ६ मई को उत्सव मनाकर जिज्ञासा तृप्ति करने की योजना बनाई। दो माह पूर्व से तैयारियां प्रारम्भ होने लगी। आर्यसमाज के अधिकारियों की बिना सहायता लिए बच्चों ने ८०० रु० चन्दा एकत्र कर लिया, वक्ता उपदेशक आमन्त्रित, कनात, ध्वनि विस्तारक, बिजली तक का प्रबन्ध कर लिया। क्षेत्र के चारों ओर की जनता सगे सम्बन्धी आमन्त्रित किये गए। दिन में यज्ञ, बाल सम्मेलन आदि तथा प्रचार का कार्यक्रम रात्रि ८ बजे से १० बजे तक निश्चित हुआ। जिससे जनता को सुनने की सुविधा रहे। सभी उपदेशकों को दो-दो घण्टे का समय दिया गया किन्तु ठीक उत्सव के दिन आर्यसमाज के अधिकारियों ने अनुचित हस्तक्षेप करके उपदेशकों का समय आधा घंटे, एक घण्टा कर दिया सायं ६ बजे से ही प्रारम्भ करा दिया गया जिससे १० बजे तक सभा विसर्जित कर सकें, बहुत वाँचातानी के पश्चात कार्यक्रम १२ बजे तक चल सका। पश्चात आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा विसर्जित कर दी। दोनों दिन इसी प्रकार से श्रोताओं, बच्चों के कार्य से निवृत्त होकर सभा में एकत्रित होते ही शान्तिपाठ हो जाता। जनता अंधेरे में ठोकरें खाती निराश हो घर जाती। बच्चे वेदोपदेश श्रवण से वंचित हो जाने के कारण हताश एवं दुःखी हैं। आर्यसमाज के अधिकारियों के विचार के अनुसार ऐसा इसलिए किया गया था कि जिसमें बच्चों का चित्त स्कूल की पुस्तकों पर एकाग्र रहे और परीक्षा में ऊंचे अंक प्राप्त कर सकें तथा श्रोतागण रात्रि जागरण के कष्ट से बच सकें और दैनिक कार्य ठीक से कर सकें।

इस सभा द्वारा मई मास में ५ यज्ञोपवीत संस्कार हो चुके हैं।

श्री देवीदास आर्य को आतंकवादियों द्वारा पुनः धमकी

कानपुर-कल्याण हत्याकांड की सरगर्मी अभी शान्त भी नहीं हुई कि गत दिवस प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य को पुनः एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आतंकवादियों ने उन्हें मार डालने की धमकी दी है। इस पत्र से पूर्व भी श्री देवीदास आर्य को इसी प्रकार के धमकी वाले चार पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

यह पत्र जो गुरमुखी भाषा [पंजाबी] में लिखा गया है, नई दिल्ली से सुखबीरसिंह 'सुक्खा' चीफ खालिस्तानी कमांडो फोर्स तथा लाभसिंह जनरल खालिस्तानी कमाण्डो फोर्स के नाम से अन्तर्देशीय पत्र में श्री आर्य को सम्बोधित करते लिखा है कि, तेरी मौत बहुत नजदीक है मरने के लिये तैयार रहना अब तेरे को कानपुर तो क्या सारी यू० पी० की पुलिस नहीं बचा सकती बहुत जल्दी ही कानपुर आयेंगे। अपनी मौत का ध्यान रखना। अपने बाप एस० एस० पी० से कह देना कि जितने नाम हमारी हिट लिस्ट मे हैं उनको चाहे जितनी सुरक्षा करलो चुन-चुन कर कुत्ते की मौत मारेंगे। जो भी हमारी खिलाफत करेगा। परिवार समेत मारा जायेगा' पत्र में ऊपर वाहें गुरु जी फतेह तथा नीचे खालिस्तान जिन्दाबाद भिण्डरवाला जिन्दाबाद राज करेगा खालसा, बाकी रहे न कोई का नारा लिखा है। इस पत्र में जो पता लिखा है वह हिन्दू नेता देवीदास आर्य लिखा है।

श्री देवीदास आर्य ने इस नये धमकी वाले पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने अपना जीवन तो पहले ही समाज को अर्पित कर रखा है इन धमकियों का मुझ पर किंचित भी प्रभाव नहीं है। मैंने अपने जीवन में तीन हजार अपहृत युवतियों को आतंकवादियों से अधिक गुण्डे बदमाशों के चंगुल से मुक्त कराया है, मेरा सारा जीवन आतंक के साये में गुजरा है अतः अब मुझे किसी प्रकार की धमकी विचलित नहीं करती। मेरा अटल विश्वास है कि परमात्मा जब तक मुझसे समाज की सेवा लेना चाहेगा तब तक कोई शक्ति मेरा बाल बांका नहीं कर सकती। मेरी मौत यदि आतंकवादियों के हाथ से होगी परमात्मा ने निश्चित की होगी तो मुझे परमात्मा का आदेश शिरोधार्य है।

अपनी सुरक्षा के सम्बन्ध में बताते हुए श्री आर्य ने कहा कि कल्याण हत्याकांड के बाद मेरी सुरक्षा के लिए अधिकारियों ने मेरे निवास पर सशस्त्र पुलिस भेजी थी जिसे मैंने वापस कर दिया। क्योंकि मैं एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हूं और मरते दम तक समाज से जुड़ा रहना चाहता हूं। मुझे वी० आई० पी० व्यवहार की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं एक आम आदमी की तरह ही रहना चाहता हूं।

श्री आर्य ने इस नये धमकी भरे पत्र की सूचना जिलाधिकारी श्री अनुराग गोयल को दी है।

विद्वत् सम्मान समारोह

आर्य समाज कलकत्ता के वयोवृद्ध बंगभाषी विद्वान् प० प्रियदर्शन सिद्धान्त भूषण को आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा ११०००) रुपये की राशि भेंट कर सम्मानित किया गया उन्होंने यजुर्वेद के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का बंगला अनुवाद, किया है। अभी तक बंगला भाषा में दयानन्द भाष्य उपलब्ध नहीं था। पं० प्रियदर्शन जी अब तक सत्यार्थ प्रकाश एवं पूना प्रवचन का बंगला अनुवाद कर चुके हैं इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रो० उमाकांत उपाध्याय ने इसे एक सराहनीय कदम बताया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री सीताराम आर्य ने बताया कि आर्य समाज कलकत्ता द्वारा स्थिर निधियों से मिलने वाले ब्याज से प्रति वर्ष विद्वान् सम्मान का यह कार्यक्रम अबाध रूप से चलता रहेगा।

इस अवसर पर पं० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी एवं पं० रुद्रदत्त शास्त्री (देहरादून) को वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए प्रत्येक को पांच-पांच हजार रुपये की राशि भेंट करने की घोषणा की गई।

१८५७ की क्रान्ति के सूत्रधार देव दयानन्द

[पृष्ठ ४ का शेष]

१८५७ क्रान्ति के पश्चात् साधू रूप में अज्ञात जीवनी के अनुसार नाना साहब, तात्याटोपे, दिल्ली के योगमाया मन्दिर मे पहुंचे और वहां पर इन दोनो वीरो ने साधू रूप देव दयानन्द का ठिकाना पूछा और फिर पहुंचे भारत के उत्तर दक्षिण में कन्याकुमारी में। नाना हताश हो चुके थे वे अंग्रेज उनके पीछे थे अंग्रेज जिन्दा या मरा नाना को पकड़वाना चाहते थे। हताश जीवन से तंग आकर नाना आत्म हत्या करना चाहते थे जिसको दयानन्द ने रोका और पुनः भारत माता की सेवा करने की प्रेरणा दी और यह अकाट्य सत्य है कि नाना साहब ने दयानन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द योगेन्द्र के नाम से उनके जन्म स्थान टंकारा में जनता की सेवा करने लगे और अज्ञात जीवनी के अनुसार नाना साहब पेशवा की समाधि भी टंकारा मे ही बनी हुई है।

प्रथम स्वाधीनता संग्राम की असफलता के बावजूद भी स्वतन्त्रता की लड़ाई ऋषि की प्रेरणा से रुकी नहीं और उनके दिये हुये वैदिक परम्पराओं को पुनः स्थापित करने के लिए देश की सामाजिक धार्मिक आर्थिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए जहां देव दयानन्द १८५७ के पश्चात पुनः जुट गये वहां उनके अनेकों वीर शिष्यों ने देश विदेश में स्वतन्त्रता की क्रान्ति की ज्वाला बुझने नहीं दी और १८५७ के ठीक ९० वर्ष के उपरांत ऋषि के दिये हुए मन्त्र के माध्यम से देश आजाद हुआ।

निर्वाचन

आर्य समाज परमानन्द बस्ती
[रथखाना] बीकानेर
प्रधान—श्री डा० रवीन्द्र जी कुलश्रेष्ठ,
मन्त्री—श्री जयकृष्ण जी
कोषा०—श्री सेठ छगनलाल जी आर्य

आर्य समाज अमरोहा
प्रधान—श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य
मन्त्री—श्री रामानन्द जी वर्मा
कोषा०—श्री धर्मेन्द्रकुमार आर्य

आर्य स्त्री समाज अमरोहा
प्रधाना—श्रीमती सत्यवती जी
मन्त्राणी—श्रीमती चन्द्र किरन जी
कोषा०—श्रीमती वीरबाला जी

आर्य समाज सिलीगुड़ी
अध्यक्ष—श्री रतीराम शर्मा
प्रधान—श्री रमेश प्रसाद
मन्त्री—श्री सर्वेश्वर झा
कोषा०—सुभाषचन्द्र नकीपुरिया

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान—श्री धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आमसेना
मन्त्री—श्री प्रियव्रत शास्त्री जी साहित्याचार्य
कोषा०—श्री गोपालदास रावलजी सम्बलपुर

जिला सभा गोण्डा के महत्वपूर्ण निर्णय

दिनांक १२-६-८८ को आर्यसमाज उतरौला (गोण्डा)में जिला सभा गोण्डा की कार्यकारिणी की बैठक को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक श्री विश्वनाथ खन्ना जी ने सम्बोधित करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि यदि आर्यसमाज के अस्तित्व को बचाये रखना है तो प्रत्येक आर्यसमाजो मे आर्य वीर दल के गठन की अत्यधिक आवश्यकता है । अपने मार्मिक शब्दो में खन्ना जी ने जनपद से आये हुये विभिन्न समाजों के अधिकारियों, प्रतिनिधियो एवं आर्य समाज उतरौला के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए इस बात पर भी बल दिया कि धर्म रक्षा अभियान को सफलतापूर्वक चलाये जाने हेतु सक्रिय कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है । जिसकी पूर्ति आर्य वीर दल के गठन द्वारा ही सम्भव है । सभा ने निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये—

१-गोण्डा एवं बहराइच जनपदो के बीच में सहेट-महेट (श्रावस्ती) जो बौद्ध धर्म का तीर्थस्थल है जहां पर विदेशी पर्यटक अधिक मात्रा में आते हैं, ईसाई तथा अन्य मिशनरियां सक्रिय रूप से कार्यरत हैं वहीं पर आर्यसमाज का कोई मिशन कार्यरत नहीं है । अतः जिला सभा गोण्डा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के माध्यम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से अनुरोध करती है कि इस स्थान पर एक पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था की जावे जिसके द्वारा सस्ते मूल्यों पर पाली एवं अंग्रेजी भाषाओं में वैदिक साहित्य का वितरण किया जावे । जिससे आर्यसमाज को विदेशों में प्रचार एव प्रसार को बल मिले एवं ईसाइयत तथा इस्लाम के प्रचार को रोका जा सके । आर्य समाज बलरामपुर गोण्डा इस कार्य हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने हेतु वचन बद्ध है ।

२-जिला स्तर पर एवं अन्य निकटस्थ जनपदों से सहयोग प्राप्त कर आर्य वीर दल के शिविर लगाये जाय । इस हेतु आर्य समाज उतरौला गोण्डा ने अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया ।

३-जिले को संगठित करने हेतु प्रत्येक मास मे आर्य समाजो की सुविधानुसार अन्य आर्य समाजो में इसी प्रकार की बैठकों का आयोजन किया जाता रहे जिससे समाजो को गति प्राप्त हो । इस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सहयोग प्राप्त किया जावे ।

४-धर्मरक्षा निधि का सचालन शीघ्रता से किया जावे । इस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से अनुरोध किया जावे कि इस समिति को जिसका गठन किया जा चुका है अधिक से अधिक सहायता प्रदान कर गोण्डा, बस्ती, बहराइच जनपदों मे हो रहे धर्मान्तरण पर रोक लगाई जा सके ।

सभा की अध्यक्षता श्री बी० एस० मल्होत्रा अध्यक्ष आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद गोण्डा ने की । प्रधान आर्य समाज उतरौला ने जनपद की विभिन्न समाजों से आये हुए प्रतिनिधियों का आभार प्रकट किया । मन्त्री आर्य समाज नवाबगंज गोण्डा ने अगली बैठक हेतु अपनी समाज का नाम प्रस्तावित किया तथा २४-७-८८ समय १ बजे दिन में अगली बैठक हेतु स्वीकृति प्रदान की गई ।

बलराम गोविन्द अधीक्षक
विधिक एवं भूसम्पत्ति विभाग आ० प्र० सभा उ० प्र०

यह कैसा ईसाई पन्थ ?

अमेरिका के मियामी प्रान्त के हवाना ग्राम में एक विचित्र प्रकार के पन्थ का उदय हुआ है । घरों के पृष्ठ भाग के किसी कक्ष मे ये लोग एकत्रित होते हैं और अपने शिष्यो के सम्मुख ईसाई धर्मप्रचारक जीवित बकरियों, सुअरों और मुर्गियों आदि के सीने में छुरा घोंपते है । यह बीभत्स कृत्य 'सटेरिया' नामक पन्थ वाले करते हैं जो कैथोलिक वाद के तान्त्रिक पक्ष का पोषण करता है अब तक इस पन्थ के लगभग ५० हजार अनुयायी बन चुके हैं । इसका चर्च मियामी प्रान्त के सेंटिंग नगर में स्थापित है । कुछ स्थानीय पादरियो एव राजनीतिज्ञों ने 'संटेरिया' की इस बलि प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाकर उस पर रोक लगाने को कहा है । इस पन्थ में अफ्रीकी देवताओं एव रोमन कैथोलिक सन्तों की पूजा होती है । तथा अपने अनुष्ठान में वे न केवल अपने हाथ में मानव खोपड़ी लिए रहते हैं अपितु सम्मोहन क्रिया का भी प्रयोग करते हैं वे भूत-प्रेतों पर भी विश्वास करते हैं ।

सूचना

आर्य जगत के आर्य जनों को विदित होवे कि मैंने अपना स्थाई आवास अब "आर्य समाज चन्दौसी, जनपद-मुरादाबाद कर दिया है । पत्राचार व वेद प्रवचनों के लिए आमन्त्रित करने वाले इच्छुक जन अब आर्य समाज चन्दौसी के ही पते को नोट करें ।

स्वा० ब्रह्मानन्द 'वेदभिक्षु'

स्वामी दयानन्द विदेह की छोटानागपुर यात्रा

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर वेद संस्थान दिल्ली के स्वामी दयानन्द "विदेह" ने कई स्थानों पर वेद प्रवचन का कार्य किया-तथा वेदमाता गायत्री यज्ञ एवं आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन किया इसमें पं० जय प्रकाश आर्य (हरियाणा) आचार्य प० रामकृष्ण जी पं० वासुदेव शर्मा पं० कृष्णदेव शास्त्री (उड़ीसा) प० गोविन्द प्रसाद आर्य (रांची) महिपालसिंह (बलिया) और ठा० इन्द्रदेव सिंह 'इन्द्र' (सारन) आये थे । प्रचार कार्यक्रम के अन्त में उक्त ग्राम में नवीन आर्य समाज की स्थापना भी की गई है ।

काशीपुर में वेद प्रचार

सुप्रसिद्ध चैती मेला काशीपुर (नैनीताल) में आर्य समाज काशीपुर ने वेद प्रचार कैम्प दिनांक २५ से २७-३-८८ के मध्य लगाया जिसमें उच्चकोटि के संन्यासी भजनोपदेशक पधारे जिन्होंने राष्ट्र की अखण्डता, धर्म की आवश्यकता, वेदों के महत्व पर प्रकाश डाला ।

रेडक्रॉस दिवस यज्ञ

पिथौरागढ़ । आर्य समाज मन्दिर में ८ मई १९८८ को सरजीन हेनरी डुनान्ट (संस्थापक, रेडक्रॉस) के जन्म दिवस पर श्री राकेश खलूजा की अध्यक्षता में रेडक्रॉस यज्ञ हुआ । स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने मानवमात्र की सेवा हेतु रेडक्रॉस के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला ।

गाण्डीव भी था और पिनाक भी

(पृष्ठ ७ का शेष)

फिरना सर्वथा अनुपयुक्त अनुचित और नासमझी है। भूगोल अवस्थित लंका को आप वह लंका नहीं मानते और रामायण को इतिहास नहीं मानते तो फिर आपके इस प्रकार मारे-मारे फिरने का क्या औचित्य? दूसरी ओर आपके द्वारा लंका की खोज यह सिद्ध करती है कि आप सम्पूर्ण रूप से न सही—कम से कम लंका के विषय में तो अवश्य रामायण को प्रमाण मानते हैं। इस स्थिति में आपको लंका को मध्य प्रदेश और उड़ीसा नहीं अपितु समुद्र में ढूंढना चाहिये। कारण कि रामायण के अनुसार राम लंका को जाते समय सह्य, मलय और महेन्द्र पर्वतों पर होते हुए गये थे और यह पर्वत मध्यप्रदेश से दक्षिण में कुमारी अन्तरीप तक फैले हुए नीलगिरि, आदि हैं। जब रामायण लंका का मार्ग इस प्रकार समुद्र तट की ओर भारत के दक्षिणी किनारे तक बताये तब मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि में उसकी खोज निरर्थक है। इसके अतिरिक्त रामायण में लंका की अवस्थिति का स्पष्ट वर्णन समुद्र में है। यह सीता की खोज करने वाले दल के सदस्य अंगद को सम्पाती ने इस प्रकार बताया है—

इतो द्वीपे समुद्रस्य सम्पूर्णे शत योजने।
तस्मिंल्लंकापुरी रम्या निर्मिता विश्वकर्मणा॥

अर्थात् समुद्रस्थ इस द्वीप में—जो यहां से पूरे सौ योजन दूर है—विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सुन्दर लंकापुरी है। इस वर्णन के होते हुए लंका को भारत के मध्य में ढूंढने की क्या तुक है? संक्षेप में हमारा अभिप्राय यह है कि लंका की खोज करना रामायण को इतिहास सिद्ध करना है और रामायण को इतिहास मान लेने पर लंका को समुद्र में खोजना चाहिये तथा रामायण को इतिहास न मानने वालों को लंका की खोज नहीं करनी चाहिये।

सांकलिया जी ने यह भी कहा है कि रामायण और महाभारत महाकाव्यों में जैसे हथियारों का वर्णन मिलता है, वैसे हथियार मानव सभ्यता के विकास के सन्दर्भ से हटकर विकसित नहीं किये जा सकते। जैसे कि ऊपर भी हम लिख आये हैं, हमारा यह कहना है कि मानव विनाश को आधार मानकर अस्त्रास्त्र के निर्माण की होड़ में नित नये-नये अस्त्रों का आविष्कार, मानव सभ्यता का विकास कभी नहीं कहला सकता। इसे तो बर्बर, जंगली, राक्षसी, दानवी और पिशाच-सभ्यता का विकास तथा मानवता और मानव-सभ्यता का ह्रास कहना ही उपयुक्त होगा। मानव सभ्यता का विकास तो आत्म-विज्ञान विवेचन द्वारा मानव को मानव जीवन के वास्तविक तथा परम और चरम उद्देश्य मोक्ष की ओर ले जाना ही है।

फिर भी हम इतनी चर्चा अवश्यमेव कर देना चाहते हैं कि रामायण और महाभारत काल के भयंकर आयुधों के समान आयुध वर्तमान तथाकथित मानव-सभ्यता के विकास का विज्ञान अभी तक निर्माण ही नहीं कर सका। इस विषय की जानकारी के लिये महर्षि भरद्वाज कृत 'यन्त्र-सर्वस्व' नामक ग्रन्थ उल्लेखनीय है। बड़ौदा के 'राजकीय संस्कृत पुस्तक भवन' में इस ग्रन्थ का 'वैमानिक प्रकरण' उपलब्ध है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मार्ग नई दिल्ली द्वारा इस 'वैमानिकप्रकरण' की हिन्दी टीका श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक कृत 'बृहद् विमान शास्त्र' के नाम से प्रकाशित हुई है। इसमें 'रक्षा विधान' के अन्तर्गत भारतीय अस्त्र-विद्या का वर्णन है। न केवल अस्त्रों का अपितु अस्त्र विद्या का।

यह भी तथ्य है कि यह ग्रन्थ भी रामायण काल का ही है। राम वन जाते समय प्रयागराज में इस ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि भरद्वाज के ही आश्रम में ठहरे थे। इस प्रकार यह ग्रन्थ भी रामायण कालीन अर्थात् भारत की लगभग दो करोड़ वर्ष पुरानी सभ्यता और बुद्धि कौशल के विकसित स्वरूप का दिग्दर्शन कराकर वर्तमान सभ्यताभिमानियों की एतद्विषयक भ्रान्ति को दूर कर देता है।

इस ग्रन्थ में एक 'गुहागर्भादिशयन्त्र' का वर्णन है। इस यन्त्र के विषय में कहा गया है कि विमान के तोड़ने के अर्थ शत्रुओं ने भूमि के अन्दर महागोल तथ और मुखवाला अग्निगर्भादि अद्भुत पचक यन्त्र (विमान भेदक) जहां गुप्त रूप से स्थापित किया है, उसके स्वरूप की वास्तविकता की ठीक-ठीक जानकारी के लिये शास्त्र क्रम से विमान में 'गुहागर्भादिशंयन्त्र' स्थापित करें।

इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रन्थ के निर्माण के समय अर्थात् रामायण काल में ऐसे भयंकर गोले थे कि जिनमें सब ओर को छेद रखे गये थे तथा जिनके अन्दर आग्नेय पदार्थ अर्थात् विस्फोटक सामग्री भरी रहती थी, जो भूमि में दबाकर शत्रु के आकाशयानों को मार कर गिरा देने के लिये रखे जाते थे और जो उपयुक्त समय पर स्वयं ही फट जाते थे। इनकी गुप्त अवस्थिति का ठीक पता लगाने के लिए—जिससे शत्रु की चोट से बचा जा सके। 'गुहागर्भादिशं' नामक यन्त्र को स्व-विमान में लगाने का विधान किया गया है। इसके आगे इस यन्त्र की निर्माण-विधि और उसमें प्रयुक्त होने वाले पदार्थों का वर्णन है।

इसी ग्रन्थ में एक 'अपस्मार धूम्र प्रसारण' यन्त्र का वर्णन है। जब स्व-विमान को चारों ओर से शत्रु के विमान घेर लें, तब इस यन्त्र के द्वारा शत्रु के विमानों पर धूम्र प्रसारण करें अर्थात् धुआं फेंकें। यह धुआं शत्रु विमान चालकों तथा उन विमानों में से आयुध प्रहार करने वाले सभी व्यक्तियों को अचेत करने वाला है। इसके विश्लेषण के प्रभाव से शत्रु विमान चालकों आदि के अचेत होने के परिणाम स्वरूप भूमि पर गिर जायेंगे। इस यन्त्र के निर्माण की भी पूरी विधि इस ग्रन्थ में दी है, यहां तक कि यन्त्र निर्माण की प्रक्रिया में भट्टी के अन्दर जलने वाली अग्नि के तापमान के अंशों (डिग्री) का भी विधान किया गया है।

यह सब विज्ञान इस ग्रन्थ के निर्माण काल में प्रकट हुआ। किन्तु इसके मूल सिद्धान्त आदि सृष्टि से उपस्थित हैं। इन सिद्धान्तों के मूल का वर्णन भी इसी 'विमान शास्त्र' के प्रारम्भ में बोधानन्द कृत टीका के मंगलाचरण में इस प्रकार है—

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्वरूपकम्॥

अर्थात् वेदरूपी समुद्र को मथकर भरद्वाज महामुनि ने उसमें से 'यन्त्र सर्वस्व' रूप में नवनीत को वास्तविक रूपेण उद्धृत किया है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि यन्त्र आदि समस्त विद्याओं का मूल वेद में है इसीलिये महर्षि दयानन्द ने घोषणा की कि—'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' उन्होंने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' नामक अपने ग्रन्थ में वेद मन्त्रों की व्याख्या करके इस विषय का रहस्योद्घाटन भी कर दिया है। उसके पश्चात् श्री अरविन्द घोष ने भी लिखा है कि वेदों में विज्ञान बताकर महर्षि दयानन्द ने अतिशयोक्ति नहीं की अपितु कुछ न्यूनोक्ति से ही काम लिया है क्योंकि वेद वर्णित विज्ञानों के अनेक रहस्य तो अभी तक छिपे हुए ही हैं।'

वेद रामायण के बहुत पहले के—आदि सृष्टि के हैं। इस प्रकार भारतीय-सभ्यता और बुद्धि कौशल मानव-सभ्यता के इतिहास में सर्व प्रथम और सर्वोच्च है। बुद्धिमानी इसी में है कि इसकी वास्तविक जानकारी प्राप्त की जाय और तथ्यों को स्वीकार किया जाय, न कि विदेशियों की भ्रान्त स्थापनाओं के चक्र में फंसकर अपने अत्यन्त गौरवपूर्ण इतिहास को झुठलाने का प्रयत्न किया जाय और स्वयं को पतित समझा व सिद्ध किया जाय।

आर्यमित्र साप्ताहिक
[illegible]-कमरा ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५५०१ [illegible]
[illegible] एल डब्ल्यू/एन पी [illegible]
आषाढ़ कृष्ण ४
३ जौलाई रविवार १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

प्रभात की सलोनी बेला

जागो उठो प्रभात की सलोनी बेला आ गया
तजकर प्रमाद को उठो भास्कर किरण जगा गया

आलस्य मे पड़ हुये क्यो खो रहे अनुपम प्रभा
देखो, उठो, पाओ सुखों की फैलती मधुकर विभा

ऋत् की ऋचा तुमको सुनाती जागरण का गीत है
साम की वाणी तुम्हें सुना रही संगीत है

[illegible] वेद का करलो पवित्र स्व-भावना
[illegible] प्रभु से मिलन की कामना

मित्रता को बाँहें प्रभु ने हैं पसारी हुयी
है तुम्हारा ही सखा वह [illegible] जी की हुयी

बस शर्त उसको जागरण की है, उठो, मानो उसे
जिन्दगी का सर्व सुख मिल जाएगा पाकर उसे

भाग्य खुलने की मधुर बेला सुनो अब आ गयी
वेद की इक इक कड़ी गाकर हमें सुना गय

जागो उठो प्रभात को सलोनी बेला आ गयी
तजकर प्रमाद को उठो भास्कर किरण जगा गयी

—आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्दनगर, लखनऊ

प्रवेश सूचना

[सत्र १९८८-८९]

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

[अन्तर्गत आर्य विद्या सभा, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली]

पद : धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम० ए० (संस्कृत) अथवा आचार्य। हिन्दी अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान आवश्यक।

पाठ्यक्रम अवधि : एक वर्ष

सुविधाएं : शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सर्वथा नि:शुल्क। योग्य छात्रों को २०० रु० मासिक छात्रवृत्ति।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यर्थियों को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं मे 'धर्म शिक्षक' पद पर डी० ए० टी० वेतनक्रम मे नियुक्ति की गारन्टी।

केवल निष्ठावान् आर्यसमाजी ही पूर्ण विवरण (आयु, शैक्षिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें—

प्राचार्य
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली
पिन-११०००१

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जून १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

१६४, ४५५, २४७८, ६१५१, ८५९७, ८७९४, ८८७९, ८९५७, ९१७१, ९१८०, ९१८२, ९४२८, ९६५७, १०१७८, ११२१०, १२२०५, १२२१४, १२६७९, १२६८०, १२९१३, १३१२२, १३४७९, १३४८३, १३८८५, १३८९५, १३९०३, १३९०४, १३९०७, १३९०९, १३९१०, १३९११, १३९१२, १३९१५, १३९१८, १४२८०, १४२८१, १४२८२, १४२८३, १४२८४, १४२८५, १४२८८, १४२८९, १४२९०, १४२९१, १४२९२, १४२९३, १४२९४, १४२९५, १४२९६, १४२९७, १४२९८, १४२९९।

विनीत—
व्यवस्थापक



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य-मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. स० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

आषाढ कृष्ण १३, रविवार, सवत् २०४५ वि०, दिनांक १० जौलाई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

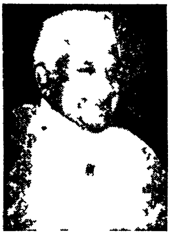
आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

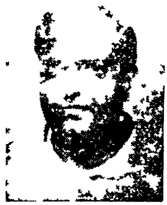
वर्ष	९१
अङ्क	२८

श्री नारायणदत्त तिवारी उत्तरप्रदेश के पुनः मुख्य मन्त्री

निवर्तमान मुख्य मन्त्री श्री वीर बहादुरसिंह केन्द्र में संचार मन्त्री बने



श्री नारायणदत्त तिवारी
मुख्य मन्त्री



श्री वीर बहादुरसिंह
केन्द्रीय संचार मन्त्री

लखनऊ २५ जून–कार्य कुशलता एव प्रशासनिक क्षमता के लिए विख्यात एव अपनी अनेक विशेषताओं के कारण जनप्रिय, तथा प्रदेश के गौरव, श्री नारायणदत्त तिवारी ने तीसरी बार पुन उत्तरप्रदेश शासन की बागडोर अपने हाथो मे समाल ली है। आज यहा राजभवन मे उन्होंने मुख्यमन्त्री पद की शपथ ग्रहण की और अपने मन्त्रि मडल मे १२ मन्त्रियो को शपथ दिलाई।

शपथ लेने वाले–श्री बलदेवसिंह आर्य राजस्व, श्री लोकपति त्रिपाठी–सिंचाई, श्री नरेन्द्रसिंह–कृषि, डा० अम्मार रिजवी–सार्वजनिक निर्माण, संसदीय कार्य, श्री गोपीनाथ दीक्षित–स्वास्थ्य, श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी–समाज कल्याण, श्री श्यामसुरत उपाध्याय–ग्राम्य विकास, पचायती राज, श्री सईदुल हसन–श्रम, श्रीमती सुशीला रोहतगी–ऊर्जा, श्री अरुणकुमारसिंह–डेरी विकास, पशुपालन, श्री हुकुम सिंह–खाद्य एव रसद, श्री अजितप्रतापसिंह–वन विभाग।

श्री तिवारी जी तथा उनके सहयोगी आर्यसमाज की गतिविधियो के सदैव प्रशसक रहे है और सदव आर्यसमाज की भूरि-भूरि सराहना की है इस अवसर पर प्रदेश की आर्य जनता एव आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हम उनका हार्दिक स्वागत करते हुए बधाई देते हैं और हमे पूर्ण विश्वास है उनके कुशल नेतृत्व मे हमारा प्रदेश सतत प्रगति पथ पर बढ़ता रहेगा।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमे रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकविमैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—आषाढ़ कृष्ण १२ संवत् २०४५, रविवार १० जौलाई १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

……और यह चुनाव—

हमारी शिरोमणि सभा का

…यहीं नहीं जीवन दानी अमरपूतों का—जहाँ प्यार है, शान्ति है, पीयूषवर्षी सन्देश है। न वाद है न विवाद है कुछ करने की मरने की तमन्ना है। उस दिव्यमूर्ति के बताये दिव्य धाम तक चलते रहने की उद्दाम अभिलाषा। सूर्य की किरणों से लिपटे हुए संन्यासी का पथ प्रशंस्त है। बाधाओं का अन्धकार तो बहुत दूर दूर तक भागता नजर आ रहा है क्योंकि हमारा तो स्वरूप ही तिमिर विनाशक है, पाप उन्मूलक है। और उस प्रभु ने ऐसे ही चुनाव की आज्ञा भी दी है—

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने।
येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारुवदानि पितरः सङ्गतेषु॥
अथर्व० ७।१२।१३

"तुम्हारी प्रतिनिधि सभायें, तुम्हारी समितियाँ (अन्तरङ्ग सभायें) प्रजा के लिए कल्याणकारिणी हों। तुम सब (संविदाने) परस्पर एकमत होकर (संगच्छा) चलना (कभी परस्पर कुटिल भाव से न बरतना)। तुम लोगों की (सङ्गतेषु) सभा में सदैव (चारुवदानि) ऊँचे विचार प्रकट किये जायें।

…और १९ जून को दिल्ली के दीवाने हाल में प्रेमलपेटे अटपटे वातावरण में आर्यों की शिरोमणि सभा, स्वनामधन्य सार्वदेशिक सभा का त्रिवर्षीय चुनाव सम्पन्न हो गया। किसका चुनाव किसने किया—सभी सेवक थे उस महान विरासत के जो ऋषिवर्य ने हमें सौंपी थी और सभी स्वामी थे उस वैदिक धरोहर के जो ऋषि हमें सौंपना चाहते थे। हमीं थे स्वामी हमीं थे सेवक। और फिर यहाँ न पद है न लिप्सा है यहाँ तो शीश कटाने की तमन्ना है—

कबीर यह घर प्रेम का खाला का घर नाँहि।
शीश कटावे हाथ पे, तो घर पैठें माँहि॥

और फिर संन्यासी की बनाई हुई संस्था का भार संन्यासी के ही कन्धों पर रख दिया गया। सर्व सम्मति का प्रयोग हमने जानबूझ कर इसलिए नहीं किया है क्योंकि हम जानते हैं असम्मति का तो कोई ठाँव ही नहीं है आर्य हृदय में। संन्यासी सदा पूज्य है और दिव्य है उसकी आभा में हम आर्य बने हैं और उसी की आभा में हम विश्व को आर्य बनायेंगे बना के रहेंगे।

आर्य समाज का मार्ग सदैव कण्टकाकीर्ण रहा है। आज हमारे देश में अराष्ट्रीय तत्व पुनः सक्रिय हो उठे हैं। विदेशों से पेट्रोडालर की भरी थैलियाँ चली आ रही हैं। अपने ही देश में हमें अपमानित किया जा रहा है, हमारे खून की नदियाँ बहाई जा रही हैं। भाषावाद प्रान्तवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद और इन सब वादों की जड़ स्वार्थवाद जीवन के हर क्षेत्र में पनप रहा है। जिन पर राष्ट्रोन्नति का भार हमने सौंपा है वे ही चुनाव के अवसर पर इन बुराइयों को सींच सींच कर हराभरा कर देते हैं। पाखण्ड का हाल यह है कि किसी न किसी रूप में फिर सिर उठाने लगा है। ऐसे समय में आशा की किरण आर्य समाज ही है। सार्वदेशिक सभा हमारी शिरोमणि संस्था है। उसके गरिमामण्डित, परमपावन गौरवास्पद प्रधान पद पर पू० स्वामी आनन्द बोध जी को प्रतिष्ठित करके निःसन्देह हमने बुद्धिमत्तापूर्ण दूरदर्शी निर्णय लिया है। सारा आर्य जगत् इस समाचार से प्रसन्न है और अपने प्रिय नेता के आदेश पर तन, मन, धन सर्वस्व समर्पण करने के लिए कटिबद्ध है। वे आर्य जगत् के प्राण हैं। आर्यजनों ने जहाँ पुकारा सिर पर कफन बाँधे दीवानों की तरह दौड़ पड़ते हैं। काश? उनकी अन्तरात्मा की तड़प को हम सुन सकें। प्रत्येक आर्यजन का कर्तव्य है उनके कन्धों को हजार हजार हाथों से मजबूत बनाये रखें।

अन्य सभी पदाधिकारी एवं अन्तरङ्ग सदस्य आर्य समाज के तपे तपाये अनुभवी कार्यकर्त्ता हैं। हमारे उत्तर प्रदेश के गौरव श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उदीयमान मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी तथा युवाशक्ति से भरपूर कर्मठ आर्य नेता श्री जयनारायण "अरुण" सार्व० सभा के मन्त्री उप मन्त्री तथा पुस्तकाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हैं। तरुणाई के इन प्रतीकों ने अपनी कार्य कुशलता और सूझबूझ से झंझावातों में फँसी हुई प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की किश्ती को बहुत संभालकर लगभग पार लगा दिया है। इतिहास इस बात को याद करेगा। हमें यह आशा है आर्य जाति के जीवन में आई हुई गहन वेदना के इन क्षणों में संन्यासी के आशीः और तरुणाई के इन बलिष्ठ हाथों में हम सुरक्षित हैं, सशक्त हैं।

हम आर्यमित्र परिवार की ओर से नव निर्वाचित सभी पदाधिकारियों अन्तरङ्ग सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनके निर्देशन में हम आगे ही बढ़ते रहें जब तक कि सुदूर उस ज्योतिपुञ्ज का झलकता चमकता स्वर्णिम किनारा हमें प्राप्त न हो जाये।

तुम जीवनदानी अमर पूत, जीवन अब यह न तुम्हारा है।
हम आर्यजनों ने मांग लिया अवलम्बन यही हमारा है।

* * *

अथर्ववेद पारायण यज्ञ

श्रीमती कैलाशदेवी जी प्रधान स्त्री आर्यसमाज शहर मेरठ के निवास स्थान ५३०/४ क्लोक नं० ७ मकबरे के पीछे शास्त्री नगर पर श्री स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा अथर्ववेद के मन्त्रों का सुमधुर पाठ हुआ तथा यज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक ९-६-८८ बृहस्पतिवार को प्रातः १०-३० बजे हुई जिसमें स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् ब्रह्मभोज भी हुआ। —सम्वाददाता

श्री भगवानदेव शर्मा का पत्र

[श्री भगवानदेव जी शर्मा ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं अधिकारियों के विपरीत झूठा प्रचार करने के निमित्त लेख प्रकाशन किया है। उनके पत्र की प्रतिलिपि अविकल नीचे दी जा रही है--

--सम्पादक]

सेवा में

श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली--११०००१

विषय-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की अन्तरङ्ग सभा दिनांक २४-१-८८ के प्रस्ताव सं ८ पर पुनर्विचार एवं वापस लेने हेतु

सादर नमस्ते।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा में जो प्रस्ताव दिनांक २४-१-८८ को सं० ८ के अन्तर्गत मेरे सम्बन्ध में पारित किया था, उससे उत्तेजित होकर मैंने सार्वदेशिक सभा और उसके अधिकारियों के बारे में कुछ लेख लिखे थे। बाद में मैंने उनकी छानबीन की थी जो बिल्कुल गलत साबित हुए। यह सब भ्रान्ति से हो गया। इससे आर्य समाज के कार्य को काफी धक्का लगा। आपको और आर्य समाज को इन लेखों से बड़ा कष्ट हुआ है। मुझे इसके लिए हार्दिक खेद है। मैं सार्वदेशिक सभा को मानता हूं और आगे भी उसके अनुशासन में रहकर कार्य करता रहूंगा। इसलिए प्रार्थना है कि प्रस्ताव सं० ८ दिनांक २४-१-८८ को वापस लेने की कृपा करें।

दिनांक--११-६-८८ भवदीय
भगवानदेव शर्मा भू० पू० संसद सदस्य
ब्लाक १९-१००८ लोधी कालोनी
नई दिल्ली--११०००३

गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) में--

वानप्रस्थाश्रम की स्थापना

गंगा नदी के किनारे कानपुर-बिठूर मार्ग पर चुंगी के पास संस्थापित गुरुकुल-आश्रम में वानप्रस्थाश्रम की स्थापना हो रही है। गुरुकुल आश्रम में सरस्वती शिशु मन्दिर, दयानन्द बाल-मन्दिर आदि के संस्कारी बालकों को गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रम के अनुसार निःशुल्क शिक्षण के साथ भोजन-वस्त्रादि की सुविधा रहेगी।

गुरुकुल आश्रम के आजीवन सदस्य (११०१ रुपये के दाता) अपने आजीवन निवास हेतु कुटी (एक कक्ष १२x१० फीट सह ८ फीट चौड़ा बरामदा+प्रसाधन) निर्मित कराने हेतु २३ दिसम्बर (श्रद्धानन्द बलिदान दिवस) १९८८ से पहले मुझसे सम्पर्क करें--

गुरुकुलानन्द सरस्वती कल्पाहारी
आर्य समाज पिथौरागढ़ उत्तर प्रदेश

सार्वदेशिक सभा द्वारा आचार्य विशुद्धानन्द जी सम्मानित

महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आलोचक श्री स्वामी करपात्री द्वारा लिखित पुस्तक "वेदार्थ पारिजात" का सटीक उत्तर आचार्य विशुद्धानन्द जी ने "वेदार्थ कल्पद्रुम" लिखकर दिया है। इस सराहनीय कार्य के लिए आचार्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन सार्वदेशिक सभा ने अपने साधारण अधिवेशन में दिनांक १९-६-८८ को दीवान हाल दिल्ली में किया। सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस पुस्तक लेखन के लिये आचार्यप्रवर की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें अपने कर कमलों से शाल भेंट किया। इस अवसर पर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री ने आचार्य जी का माल्यार्पण एवं ११०००) रुपयों की धनराशि से सम्मान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा

श्री प० शिवकुमार शास्त्री का अभिनन्दन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के साधारण अधिवेशन के अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल, दिल्ली में उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यजगत के सुप्रसिद्ध व्याख्याता, मनीषी विद्वान् एवं भूतपूर्व संसद् सदस्य मा० शिवकुमार शास्त्री का भावभीना अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि ऐसे मूर्धन्य मनीषी पर आर्यसमाज को सदैव गर्व रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वा० आनन्द बोध सरस्वती ने उन्हें एक कुशल एवं कर्मठ व्यक्तित्व वाले समर्पित कार्यकर्ता के रूप में उनकी सेवाओं की सराहना करते हुए उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया और उनके यशस्वी शतायु जीवन की कामना की। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेशीय आर्य जनता की ओर से उन्हें भावभरे श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश की आर्य जनता एवं प्रतिनिधि सभा उनके द्वारा की गई सेवाओं को कभी विस्मरण न कर सकेगी। प्रदेश की आर्य जनता को उनके पावन सहयोग एवं आशीर्वाद की सदैव कामना है। इस अवसर पर प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री प० इन्द्रराज जी ने उन्हें श्रद्धासमर्पित ५००१) की राशि भेंट कर सम्मानित किया। इससे प्रेरणा लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने ५१००), आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने ६१००) तथा श्री प० राजगुरु जी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने १०१) की सम्मानित राशि उन्हें भेंट की। 'आर्यमित्र' उनके इस अभिनन्दन पर उन्हें बधाई देता है और प्रभु से उनके यशस्वी जीवन की कामना करता है।

आर्य समाज असुरन वेद मंदिर रेलवे कालोनी गोरखपुर भंग

आर्य समाज असुरन [वेद मन्दिर] रेलवे कालोनी गोरखपुर के वर्तमान संगठन की अनुशासनहीनता, अनियमितता तथा सभा के निर्देशों की निरन्तर अवहेलना के कारण अन्तरङ्ग सभा की अनुमति से सभा प्रधान जी के आदेशानुसार भङ्ग कर सात व्यक्तियों की तदर्थ समिति गठित कर दी गई है। जिसके संयोजक श्री विनय कुमारसिंह जी नियुक्त हुये हैं। सभा के आगामी आदेश तक यही तदर्थ समिति आर्य समाज तथा सम्बन्धित संस्थाओं का सुव्यवस्थित संचालन करते हुए समाज का पुनर्गठन भी करेगी।

डा० विजयप्रताप उपमन्त्री सभा

आनन्द बोधो जयतान्महात्मा

[श्री धर्मवीर शास्त्री बी १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३]

य आर्य-नेतृत्वपदाप्तु म प्राहुर्गुणान्स्ते प्रथमं सुनेतुः ।
वाग्मी विवेकी विपदेऽस्मिन्धीरो नेतास्त्यमी यः कुशलश्च कार्ये ॥

जो आर्यों के नेता बनने के अभिलाषी हों उन्हें चाहिये कि पहले एक अच्छे नेता के गुणों से सम्पन्न हों। नेता वह है जो वाग्मी, विवेक सम्पन्न, आपत्ति में धैर्य रखने वाला तथा कार्य-कुशल हो।

सभा-प्रधानस्य पदं तरोर्वर्धोच्छाभिघातैरिव शीर्षलग्नम्।
विहाय नीतिं फलमीप्सितं ते कश्चिद् गुणं किं वदतीह नेतुः ॥

सभा (सार्वदेशिक) के प्रधान-पद को जिन्होंने नैतिकता छोड़ कर ठीक वैसे ही प्राप्त करना चाहा जैसे कोई पेड़ की चोटी पर लगे फल को ढेले मार कर पाना चाहे, क्या उनमें नेता बनने का एक भी गुण विद्यमान है ?

आनन्दबोधेन समाधिता तां विश्लिष्टबो नः सुसभामनाथाम्।
विनाशकाले विपरीतबुद्धि रित्यस्य जाता न निदर्शनं किम् ॥

(स्वामी) आनन्द बोध द्वारा भली प्रकार पोषित सुगठित सभा को अनाथ बना देने की इच्छा वाले क्या 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः' के उदाहरण नहीं बने ?

निन्दामगुस्ते सुजनाभिनन्द्यं हेतुं विना तं यमिनं विभिन्न।
उर्ध्वंव्रजात्तो भवतीह चोऽयं नीचैः सदाऽऽस्ते ह्यनुदात्तचित्तः ॥

सत्पुरुषों से अभिनन्दन के पात्र स्वामी आनन्द बोध की अकारण निन्दा करने वाले अन्ततः स्वयं निन्दा के पात्र बने। यह जानना चाहिये कि उदात्त व्यक्ति ऊंचाई की ओर जाता है तथा अनुदात्त हृदय वाला सदा नीचे रहता है।

जनो यदर्हो भवतान्स्तदुत्कः क्षमो न यो यस्य न तस्य सोऽर्हः।
अवेक्ष्य सामर्थ्यमतः स्वकीयं पदं निदध्याद् भुवि वन्धुरायाम् ॥

जो व्यक्ति जिस योग्य हो उसे उसी की कामना करनी चाहिये; जो जिस काम को करने मे समर्थ न हो वह उस काम के योग्य नहीं होता। इसलिए अपनी सामर्थ्य का विचार करके ही व्यक्ति को ऊंची-नीची जमीन पर पैर रखना चाहिये।

ईर्ष्यातमोऽभ्रच्छदृशः परेषां द्रष्टुं क्षमन्ते न गुण-प्रकर्षम्।
नुवन्ति घूकाः शशिनः सुधां किं या खं समन्ताद् धवलीकरोति ॥

ईर्ष्या के तिमिर से धूमिल दृष्टि वाले लोग दूसरों के उत्कर्ष को मूल्यांकित करने में असमर्थ रहते हैं, क्या सम्पूर्ण आकाश को शुभ्र बना देने वाली चन्द्रमा की चांदनी की उलूक प्रशंसा कर पाते हैं ?

न कालविज्ञावसरं विदन् यो नार्हः स्वयं नार्हकृते प्रयत्नम्।
स्वस्तद्भमत्सुरस्तरचनश्च यद्वा भितो वतिर्मत् पदस्य नार्हाः ॥

जो समय को न जानता हो, जिसे अवसर की पहचान न हो स्वयं योग्य न हो, जो किसी योग्य के लिये प्रयास न कर रहा हो, अथवा ऐसा शरीर से सक्षम व्यक्ति जिसकी वीरता की सीमा घर तक ही, सीमित हो या फिर ऐसा साधु-संन्यासी जिसने खाट पकड़ ली हो, नेता पद के योग्य नहीं हो सकते।

तन्वा तनुर्वस्तु दृढा बलीयान् वाग्मि स्फुटश्चेतसि निर्मलोऽस्ति।
सुदक्षिणः कर्मसु योऽभयः स आनन्द बोधो जयतान्महात्मा ॥

देह से यद्यपि कृश किन्तु मन से बलवान्, स्पष्ट वक्ता, निर्मल चित्त कार्यों में कुशल तथा जो निर्भय है, उस महात्मा आनन्द बोध की जय हो।

काले भृशं कष्ट-कथाविलेऽस्मिन् प्राप्ते च नाशावसरे स्व जातेः।
आनन्दबोधात् सुमहात्मनोऽन्यः को नस्तरेश्चालन-पेशलोऽस्ति ॥

इस कष्टपूर्ण वेला में जबकि जाति नाश का ही अवसर उपस्थित हो गया है, स्वामी आनन्द बोध से भिन्न कौन दूसरा व्यक्ति है जो हमारी नाव को खेने मे चतुर हो।

सर्वैरतो निर्मल चेतुधीभिरार्यैर्दशामद्यतनीं विभाव्य।
तदायुषो वर्धनपुण्यकामैर्भव्यं परित्यज्यमिथो विवादान् ॥

इसलिए वर्तमान कालीन परिस्थितियों पर सम्यक् विचार करके शुद्ध बुद्धि वाले आर्यों को पारस्परिक विवादों को भुलाकर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के दीर्घायुष्य की कामना करनी चाहिये।

*

शोक समवेदना

मेरी पूजनीया माता जी के निधन पर प्रदेश तथा प्रदेश से बाहर से अनेकों आर्यसमाजों, स्त्री आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं, भद्र पुरुषों, देवियों तथा इष्टमित्रों ने मुझे शोक सम्वेदना से भरे हुए अनेकों प्रस्ताव तथा पत्र भेजे हैं।

मैं उन सबके प्रति अपना हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

इन्द्रराज

प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

कैसे-कैसे अन्धविश्वास

शिव मन्दिर-जहाँ साल में एक दर्जन भक्त जीभ काटते हैं

मध्यप्रदेश के एक छोटे से गांव दुर्रा मे प्रति वर्ष कई शिव उपासक शिवालय में अपनी जीभ काटकर अर्पित कर देते हैं।

इस सम्बन्ध में ग्रामीण बताते हैं कि कुछ समय बेहोश रहने के बाद शिवोपासक होश में आ जाते हैं और १५-२० दिनों में उनकी जीभ भी ठीक हो जाती है। ग्रामीणों में यह अन्धविश्वास है कि यहां शिवलिंग पर अपनी जीभ अर्पित करने वालों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

गत वर्ष करीब ११ शिव उपासकों ने अपनी जीभ काट कर यहां शिव चरणों में अर्पित की थी। यह सिलसिला गत कई वर्षों से चला आ रहा है ग्रामीणों की मान्यता है कि शिवालय में जीभ अर्पित करने वाले शिव उपासकों की मनोकामना पूरी होती है। कई शिव-उपासकों के बारे में यह भी सुनने को मिला है कि उन्होंने दुबारा भी जीभ काटकर अर्पित की है।

(दैनिक नवज्योति २१ अप्रैल १९८८ अजमेर)

आर्यसमाज में शास्त्रार्थ युग प्रारंभ

क्या आर्य विद्वान् इनका उत्तर दे सकेंगे ?

[आचार्य विश्वश्रवा व्यास बरेली]

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने जीवन भर शास्त्रार्थ करते रहे। जगद्गुरु शंकराचार्य ने भी बौद्धों को शास्त्रार्थ करके ही परास्त किया। आर्य समाज के पिछले विद्वान् व ही आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों में जाते थे वहां शास्त्रार्थ कर लेते थे। पण्डित लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं० कालीचरण आर्यमुसाफिर पं० धर्मभिक्षु जी पं० विद्याभिक्षु जी, पं० देवेन्द्रनाथ जी, पं० भगवद्दत्त जी, आचार्य बद्रीनाथ जी, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० बुद्धिदेव मीरपुरी, अमर स्वामी जी, पं० शिव शर्मा जी, पं० बसन्तलाल जी, पं० मनसाराम जी पं० लोकनाथ जी, पं० गणपति शर्मा इत्यादि सारे विद्वान् वार्षिकोत्सवों पर जाते और शास्त्रार्थ भी करते थे। और जब कहीं वे जाते थे तो सभी पुस्तक साथ में लेकर चलते थे। और दिन रात अध्ययन करते हुए प्रमाणों को ढूंढते रहते थे। और ऋषि के सिद्धान्तों को पुष्ट करने के लिए ग्रन्थ भी लिखते रहते थे।

आज वार्षिकोत्सवों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। उन उत्सवों पर जो आर्य समाज के विद्वान् जाते रहते हैं उन्होंने आठ या दस व्याख्यान कापियों में नोट कर रखे हैं। उनको बोलकर वे अपनी दक्षिणा प्राप्त कर लेते हैं कुछ स्कूल व कालिजों के अध्यापक शनिवार रविवार को जलसे निपटाते हैं यह उनकी ऊपर की आमदनी है। अब आर्य समाज में इतवारी और नाटकुटा उपदेशक रह गये हैं। कुछ व्यक्तियों ने अपनी पत्नियों को व्याख्यान रटा दिये है, और वे भी उत्सवों में व्याख्यान देने जाती हैं। शास्त्रार्थ करने की योग्यता किसी में भी नहीं है। ये प्रोपगण्डा झूठा है कि अब कोई शास्त्रार्थ करने सामने नहीं आता। आजकल वार्षिकोत्सवों के व्याख्यान केवल धर्म कथा रह गये हैं। पाखण्ड का खण्डन करने की योग्यता किसी में नहीं इसीलिए मत-मतान्तर बढ़ते चले जा रहे हैं। कुरान, बाइबिल, पुराणों और गुरु-ग्रन्थ साहब के खण्डन पर तथा अवतार मूर्ति-पूजा आदि महा असत्य सिद्धान्तों पर कोई व्याख्यान नहीं होते तो शास्त्रार्थ हो ही क्यों ? आर्य समाज स्थापना शताब्दी जो दिल्ली में मनाई गई उसके जलूस में आर्य नेताओं के गले में, ईसाइयों ने मुसलमानों ने, सिक्खों ने, पौराणिक महन्तों ने मालायें पहनायीं उसका भी कारण यही था कि अब आर्य समाज ने हम सबका खण्डन करना छोड़ दिया है और वह निस्तेज हो गया है। शेर के पंजे, दांत व नाखून उखाड़ दिये जाएं तो चूहे व बिल्ली भी उसके गले में मालायें पहना सकते हैं। शास्त्रार्थ युग की समाप्ति का एक दुष्परिणाम यह भी हुआ कि वार्षिकोत्सवों पर लाला, बाबू, वकील व डाक्टर भी व्याख्यान देने लगे। आर्य समाज की प्रचार शैली इस समय है यदि ठीक है तो आर्य समाज को विश्व हिन्दू परिषद् में लय कर देना चाहिए।

[शास्त्रार्थ युग को किसने समाप्त किया]

आर्य समाज के तीन नवयुवक दिल्ली में आर्य समाज के नेता बन गये। वे तीनों कोई परीक्षा पास नहीं थे और उनकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यता भी साधारण थी। वे तीनों आपस में एक दूसरे को युवक हृदय सम्राट लिखते थे। वे एम० पी० बनना चाहते थे। हिन्दुओं की वोट के बिना वे एम० पी० नहीं बन सकते थे अतः उन्होंने नारा लगाना शुरू किया कि अब शास्त्रार्थ का जमाना गया, अब शास्त्रार्थ का जमाना गया। हमको एम० पी० बनने में सहयोग दो। हम आर्यों का चक्रवर्ती राज्य करा देंगे और आर्य समाज की आवाज को बुलन्द करेंगे। ये एम० पी० युग शास्त्रार्थ युग समाप्त करके स्वयं भी अपनी मौत मर गया।

[आर्य जगत से प्रार्थना]

आर्य समाजों तथा सभाओं के मन्त्री प्रधानों से साग्रह, सादर, सविनय मेरा निवेदन है कि कहीं पर शास्त्रार्थ विद्यालय खोलो और पंडित शान्ति प्रकाश जी, पं० शिवराज, पं० सत्यमित्र शास्त्री गोरखपुर पं० ओमप्रकाश शास्त्री खतौली, पं० शिवपूजन कुशवाहा पथिक ज्वालापुर, डा० श्रीराम कासगंज इत्यादि कुछ विद्वान् इस विषय में रुचि रखते हैं। उनका सहयोग प्राप्त करो। उसका प्रकार ये है कि दिल्ली में दिल्ली दरबार की शताब्दी मनाओ वहां बैठकर सोचो। क्या करना चाहिए। इस विषय में प्रोग्राम निश्चय करने के लिए आर्य समाज के प्रमुख विद्वान् और अधिकारी लोग मुझ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

★

वेद प्रचार की धूम

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) द्वारा सार्वभौमिक सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसारार्थ एक वैदिक प्रचार मण्डल नियुक्त है। इसके उपदेशक श्रीयुत स्वामी ब्रह्मानन्द जी सिद्धान्ती श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री, श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, श्री पं० राजकुमार जी आर्य, श्री ब्र० भारतवीर जी आर्य एवं श्री विजयपाल जी आर्य फर्रुखाबाद जनपद के अतिरिक्त निकट तथा सुदूरवर्ती जनपदों में स्वयं जाकर लोगों को वैदिक धर्म की मान्यताओं से सुपरिचित कराके राष्ट्र में अभिव्याप्त ईसाई मुसलमान आदि विधर्मियों के पाश से उन्मुक्त कराने के लिए कृत संकल्प हैं। गत मई मास में इस मण्डल के उपदेशकों द्वारा, सुनहुली, असगरपुर, रोशनाबाद, कृष्णपुर, परमनगर, ठलियापुर, कमबाग, कुइयाखेर, कुइयासन्न, किसरोली, रसूलाबाद, फरीदपुर, हथियापुर, हुड्डियापुर, अमिलैया मेरापुर (फर्रुखाबाद) बर्रा, सिरसा (हरदोई) आदि स्थानों पर जाकर ग्रामीण लोगों को वैदिक धर्म की ओर उन्मुख किया गया और बाह्य आडम्बरों से उन्मुक्तीकरण हेतु लोगों को सदुपदेश दिए गये। जिनका लोगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

मन्त्री सभा

पूर्णाहुति केवल देवयज्ञ में है

अनेक यज्ञों का अवैध प्रचलन हमारे कर्मकाण्डी आचार्यों द्वारा आरम्भ हो गया है। महर्षि दयानन्द ने पूर्णाहुति का विधान केवल देवयज्ञ (दैनिक अग्निहोत्र) में किया है। १६ संस्कारों में भी पूर्णाहुति का विधान नहीं है।

संस्कारों में आशीर्वाद उस व्यक्ति (युवा या बालक) को दिया जाता है, जिसका संस्कार हुआ है, न कि उस यजमान को जिसने संस्कार के निमित्त ऋत्विजों का वरण किया है (संस्कार विधि देखिए)

—स्वामी सत्यप्रकाश

ऋषि के शिष्य जोधपुर के महाराजा

महाराजाधिराज जोधपुर "सर" प्रतापसिंह ने हिन्दू धर्म, इस्लाम और ईसाइत से निराश होकर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना धर्मोपदेशक तथा गुरु स्वीकार किया था। प्रस्तुत लेख सर प्रतापसिंह की आत्मकथा पर आधारित है।

आचार्य दत्तात्रेय आर्य

वे लिखते हैं—प्रारम्भ से ही धर्म सम्बन्धी विषयों को सावधानी से पढ़ते रहने की मेरी आदत रही है। मै रामायण, गीता और भागवत् के पाठ सुना करता था, लेकिन इनमें किसी से मेरी आत्मा को सुख न मिला।

हिन्दू धर्म पर अनास्था के कारण—

किन्तु इस यथार्थरूप हिन्दू धर्म की वर्तमान स्थिति कुछ ऐसी है कि कोई शिक्षित व्यक्ति इसकी महत्ता पर विश्वास नहीं कर सकता और न ही इसका प्रामाण्य स्वीकार कर सकता है। बहुत काल तक मैने अपने विश्वास को इस धर्म मे केन्द्रित रखा किन्तु अन्ततोगत्वा यह मुझे ऐसी भूल प्रतीत हुई जिसे छोड़ना ही श्रेयस्कर था।

कुरान और बाईबिल से निराशा—

अतः इसे छोड़कर बाद में मैने मुस्लिम धर्म ग्रन्थों का परीक्षण किया और कुरान के बहुत से अंशो को कण्ठस्थ किया। यही नहीं मैने—कुछ कट्टर पन्थी मुसलमानों की संगति की ताकि उनके व्यावहारिक जीवन का कुछ प्रभाव मुझ पर पड़े किन्तु उनका सम्प्रदाय भी मुझे संतुष्ट न कर सका।"

"अपने लक्ष्यमें अग्रसर होते हुए मैंने बाईबिल भी खोली, निश्चत ही, इसकी कहानियो और नीति—कथाओ ने मेरी कल्पना को प्रभावित किया, किन्तु मेरे दिल या दिमाग पर इसका ऐसा प्रभाव नहीं हुआ कि मैं इसे ईश्वर का शब्द मान सकता और जीसस का ईश्वर—पुत्र होना, उनका एक कन्या मरियम से जन्म लेना आदि ऐसी बातें थी जिनका मतलब मेरी समझ के परे था।"

वेद और स्वामी दयानन्द का प्रभाव

'जब मेरा मन इन सन्देहो और अनिश्चयों से उद्विग्न था मुझे एक बार एक टांग टूट जाने के कारण जयपुर में दो माह के लिए अपने बिस्तर पर बंधना पड़ा। उस समय वेदों को सुनने और उनमें क्या है? इसे जानने की इच्छा जागृत हुई। तदनुसार, समय बिताने के साधन रूप में तथा अपने हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को दूर करने की आशा से मैने वेदों के मन्त्रों का पाठ और उनकी व्याख्या सुनना और उन पर ध्यान पूर्वक विचार करना प्रारम्भ कर दिया। इससे मेरे अशांत हृदय पर बड़ा सुखद प्रभाव पड़ा इसलिये अन्ततोगत्वा मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि आर्यों के प्राचीनतम और प्रतिष्ठित धर्म ग्रन्थ वेदों में धर्मके सम्बन्धमें वास्तविक सत्य सर्वांगरूपेण अन्तर्निहित है। दूसरे सभी धर्म ग्रन्थों में अच्छाई—बुराई, सच-झूठ, संश्यात्मक—रूप में मिश्रित हैं।" "इसके कुछ समय बाद, जब मैं जोधपुर में था। स्वामी दयानन्द सरस्वती वहां आए और मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैं भी उनसे मिलने को उत्सुक था, मैंने उनकी बड़ी प्रशंसा सुनी थी, अतः मैं अपने बड़े भाई महाराजा यशवन्त सिंह के साथ उनसे मिलने गया। थोड़े वार्तालाप के बाद ही हम लोगो को उनके बड़प्पन का विश्वास हो गया।

ऋषि दयानन्द का भव्य व्यक्तित्व

आकृत्या निस्सन्देह वे प्राचीन ऋषियों की भांति थे, उनकी वाणी सिंह के गर्जन सदृश थी। ब्रह्मचर्य का तेज उनकी आखों मे चमकता था। अब तो सम्पूर्ण विश्व उनकी विस्तृत विद्या और महान् व्यक्तित्व से परिचित हो चुका है। मेरे विचार से यह भारत के लिए गौरव की बात है स्वामी दयानन्द सरस्वती इसे दीर्घ सुप्तता की प्रगाढ़ निद्रा से प्रबुद्ध करने के लिये प्रकट हुए। वे भारत मां के महानतम और सच्चे से सच्चे शुभचिन्तक थे जिन्होने जीवन भर केवल उसी के लिए कार्य किया।"

आर्य समाज से आशायें

मैं उनका अत्यधिक सम्मान करता हू, वस्तुतः मै उन्हें अपना गुरु मानता हूं, क्योंकि उन्होने मुझे बहुत सी अच्छी चीजें पढ़ाई। बाद मे उन्होंने 'आर्य समाज' नामक एक संगठन की स्थापना की, मै इसमे सम्मिलित हुआ।

महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि

इसी प्रकार डी० ए० वी० आन्दोलन के संचालक दिवंगत महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सर प्रतापसिंह कहते है कि—

'जो कार्य स्वामी जी के द्वारा आरम्भ किया गया था, उनकी मृत्युके बाद (उसे कमसेकम उसको शिक्षा और धर्मोपदेश का अङ्ग) दयानन्द-एग्लो-वैदिक कालेज लाहौर के प्राचार्य लाला हंसराज बी०ए० ने अपने हाथो मे लिया और सभी इसे भली-भांति जानते है कि वे इसे किस प्रकार अब तक वहन करते रहे हैं। स्वामी जी की स्मृति में २० वर्ष मे लाहौर में एक कालेज स्थापित किया गया, अप्रैल, १९०२ मे उसकी इमारत का शिलान्यास करने का सौभाग्य मुझे मिला, लगभग २० वर्षों तक लाला हंसराज बिना किसी वेतन के इस कालेज की सेवा करते रहे, और यह सर्वविदित है कि इसकी सेवा लिये उन्होने अपना जीवन अर्पित कर दिया। यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके बहुत से शिष्य उनके पुनीत मार्ग का अनुसरण करने को तत्पर हैं। तीरा से लौटते हुये मैंने प्रथम बार कालेज को देखा था, पुनः १९०५ में शिलान्यास के समय इसका सावधानी से निरीक्षण किया।

मेरी दृष्टि में हिन्दुओं के शैक्षणिक विकास के लिये भारत में यह एक विशिष्ट संस्था है और इससे और अधिक की आशा की जा सकती है।

सन् १९१६ में 'सर' प्रतापसिंह ने इन विचारों को प्रकट किया, इसमें आश्चर्य नहीं कि उन्होंने खुले मस्तिष्क से परिश्रम पूर्वक धर्म के उस स्वरूप की खोज की हो जो उनकी आत्मा को शांति दा सके।'

'आर्य समाज के प्रति उनका त्याग उन लोगो के प्रति उनकी भक्ति का ज्वलन्त दृष्टान्त है जिनसे कभी उन्होंने शिक्षा ली थी।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राष्ट्र में शैक्षणिक तथा सामाजिक स्थिति और ऋषि दयानन्द—

राष्ट्र मे स्त्रियो की शिक्षा

(लेखक— डा० वसन्त कुमार शास्त्री, अमेठी)

इस सबन्ध मे स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं— "आर्यावर्त्त के राज पुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं। क्योंकि जो न जानती होती, तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकती और युद्ध कर सकती ? इसलिये ब्राह्मणी को सब विद्या, क्षत्रिया को सब विद्या, तथा राजविद्या विशेष, वैश्या को व्यवहार विद्या, और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिये। जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिये, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए।' (तृतीय समु०, पृ० ७०)

शिक्षा के क्षेत्र मे आज जो समस्याएं हमारे शिक्षा शास्त्रियों के मस्तिष्क को उद्वेलित कर रही हैं उनका समाधान आज से सौ वर्ष पूर्व ही महर्षि दयानन्द ने कर दिया है। शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का विचार आधुनिक युग मे महर्षि दयानन्द की ही देन है। आज हमारी शिक्षा-प्रणाली का जो खोखलापन हो रहा है, उसका इलाज गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के सिद्धांत मे ही निहित है। स्वामी दयानन्द ने विदेशी भाषाओं के अध्ययन की भी प्रेरणा दी है ('आदिम सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के सिद्धांत", पृ० ८८ तथा सत्यार्थ प्रकाश, समु० २)। किन्तु उन्होंने शिक्षा मे सर्वप्रमुख स्थान अपनी भाषा संस्कृत और हिन्दी को ही देने का आग्रह किया है। स्वामी जी ने सन्तानों को पाठशाला में न भेजने वाले माता-पिता के लिये राज्य शासन द्वारा दण्ड तथा प्रत्येक विद्यार्थी को समान वस्त्र, खान-पान तथा आदान-प्रदान (सत्यार्थ प्रकाश समु० ४) का विधान कर जो समाजवादी दृष्टिकोण दिया है, वह सर्वथा उपयुक्त है। आज विद्यार्थियों की जिस अनुशासन-हीनता और चरित्रहीनता को लक्ष्य कर धीप्रकाश एवं कोठारी कमीशन ने अनिवार्य धार्मिक शिक्षा की बात कही है, महर्षि ने पहले से ही उसका निर्देश यह कहकर किया है कि बालकों को माता-पिता घर मे ही आरम्भ से सदाचार की शिक्षा दें (-समु० २) और विद्यालयों मे केवल सदाचारी अध्यापक अध्यापिकायें ही रखें जाय (समु० ३)। आज जहां फैशन मे पले विद्यार्थियों को विद्यालयों मे तथा शिक्षकों को ग्रामों मे श्रमकार्य के लिये प्रेरित किया जाता है, उसका विधान महर्षि ने यह लिखकर किया कि "चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिये" (समु० ३) आज की एन० सी० सी० के समान सत्यार्थ प्रकाश मे कैकयी का उदाहरण देकर कन्याओं तक के लिये धनुर्वेद शिक्षा का विधान किया गया है (समु० ३)। सह-शिक्षा के जिन भयंकर परिणामों की चर्चा अमरीकन बाल-अपराधों के विशेषज्ञ लिण्डसे ने की और जिस सह-शिक्षा के कारण पश्चिमी देशों में अवैध बच्चों तथा विवाह-विच्छेदों की संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर है, उसे ध्यान में रखते हुए महर्षि ने विद्यालयों को भीड़ वाले नगरों से बहुत दूर स्थापित करने तथा अध्ययन-समाप्ति तक माता पिता से न मिलने का निर्देश दिया है, जिससे उसका चित्त अध्ययन से विचलित न हो (सत्यार्थ प्रकाश, समु० ३) स्त्री-शिक्षा के लिये महर्षि ने जोरदार वकालत की है और "स्त्री शूद्रौ नाधीयताम् इति श्रुति' जैसे प्रचलित वाक्यों को कपोल कल्पित कहा है।

सत्यार्थ प्रकाश में पाखण्डी मुफ्त साधुओं की राज्य द्वारा कृषि कार्यों में नियुक्ति और संन्यास से पूर्व परीक्षा का विधान ऋषि ने किया है ("आदिम सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के सिद्धान्त" पृ० ७३)। इसके अतिरिक्त ऋषि ने अपने जीवन काल में तथा बाद में उनके ग्रन्थों ने बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह, अनमेल-विवाह, कन्या-वध तथा यज्ञों में पशु-बलि के विरुद्ध जन मानस में तीव्र आक्रोश जागृत किया। स्त्रियों का दम घोटने वाली प्रथा की समाप्ति तथा पैर की जूती माने जाने वाली नारी को पूज्या मातृशक्ति का उच्च स्थान दिलवाने के लिये ऋषि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम गुहार लगाई थी। विवाह में दहेज और अन्य अपव्यय की निन्दा करते हुये ब्राह्म विवाह-विधि को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ माना है। इसके अतिरिक्त जाति-पाँति समीप स्थान, सगोत्र, युगपत् तथा निकट की पीढ़ी में सम्बन्ध करने का निषेध उन्होंने किया है। स्त्री के लिये पतिव्रत धर्म की अनिवार्यता के समान पुरुष के लिये भी एक-पत्नीव्रत का आदेश उन्होंने दिया है। गऊशाला एवं अनाथालय द्वारा दलित, पीड़ित एवं शोषित व्यक्तियों तथा उपयोगी गऊ आदि पशुओं की ओर भी उनका ध्यान गया था। हिन्दुओं का पण्डों द्वारा सर्वस्व हरण करने वाली दानप्रथा-जिसके अधीन लड़कियों का पण्डों को दान मूर्तियों से विवाह, देवदासियों की कुप्रथा तक पुण्य समझा जाता था—का महर्षि दयानन्द ने विरोध कर श्रद्धा तथा शक्ति-अनुसार लोकोपकारी विद्या आदि कार्यों के लिये ही दान दिये जाने का प्रतिपादन किया है। जहां शङ्कराचार्य ने कन्याओं का पाण्डित्य केवल गृहतन्त्र तक ही सीमित रखा था वहां सत्यार्थ प्रकाशकार महर्षि दयानन्द ने उन्हें लड़कों के समान ही सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा, यज्ञोपवीत तथा वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया। गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था में अन्य वर्ण को प्राप्त हुई सन्तानों के विनिमय में दूसरे वर्ण से आई सन्तानों को देने दिलाने का विधान करके तो उन्होंने अधतन प्रचलित साम्यवाद के सिद्धात को कहीं पीछे छोड़ दिया है (स० प्र० समु० ४)।

कहना न होगा कि स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उपर्युक्त सामाजिक तथा शैक्षणिक स्थिति जब तक देश में लागू न होगी तब तक राष्ट्रीय एकता, समता तथा सुख शांति का साम्राज्य स्थापित नहीं हो सकेगा। आज देश की विषम परिस्थिति में उपर्युक्त विचार अवश्यमेव मननीय तथा करणीय हैं क्योंकि देश के विभिन्न वर्गों तथा सम्प्रदायों की सामाजिक स्थितियों में परस्पर विषमता मौजूद है और स्वयं सरकार द्वारा भी सम्प्रदायों के आधार पर वर्तमान विषमता को प्रोत्साहित और उचित ठहराया जा रहा है। पिछले दिनों शाह-बानो के मामले में केन्द्रीय सरकार ने इसी प्रकार का अनुचित, अराष्ट्रीय और अनेकता-वर्द्धक कदम उठाया है।

राष्ट्र निर्माण

राष्ट्र रक्षा का अमोघ अस्त्र—दण्ड

[डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या, बरेली]

महाराज मनु ने राज्य व्यवस्था का आधार दण्ड को ही माना है। दण्ड ही राजा है। दण्ड ही प्रजा का नेता शासक और चारों आश्रमों के धर्म का रक्षक है। दण्ड की व्याख्या करते हुए कितने स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं—

दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्ड सुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्म विदुर्बुधा ॥ मनु. ७-१८

वस्तुतः राज दण्ड से भयभीत हुई प्रजा अनुशासन का पालन करती है। अधर्माचरण से बचकर धर्म मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती। सोये हुए प्रजाजनों में दण्डभय सदैव जागृत रहता है। अतः दण्ड ही राज धर्म का पर्यायवाचक है। भली प्रकार धारण किया हुआ दण्ड प्रजा को आनन्दित कर देता है। सत्यवादी विचारशील प्राज्ञ राजा ही दण्ड विधान का अधिकारी है। निष्पक्ष शासक दण्ड के द्वारा 'धर्मार्थ काम मोक्ष' मय पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि प्राप्त कराता है। अधर्मात्मा इस तेजोमय दण्ड को धारण नहीं कर सकता। राज नियम प्रणेता शासक मनु लिखते हैं—

'यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।'
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति ॥ मनु० ७-२५

यदि राज्य के नेता विद्वान् पक्षपात रहित हैं तो निश्चित ही उनके द्वारा संचालित श्याम वर्ण अर्थात् दुष्टों को भयकर प्रतीत होने वाला लोहित नेत्रों वाला, पापनाशक, दण्ड जनता की रक्षा करता है। प्रजा कभी भी पाप कर्मों में युक्त नहीं होती। आजकल प्रायः लोग पापाचरण में विश्वास करते हैं तथा कहते हैं—"सत्यवादी साधुजन सदैव पीड़ित हो रहे हैं, पापी पद-पद पर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। राजा की निष्पक्ष दण्ड व्यवस्था के अभाव में प्रजा इस प्रकार अज्ञान जनित मोह को प्राप्त होती है। हमारे भारतीय दण्ड संविधान के मुख पृष्ठ पर दण्ड संहिता का सारांश निम्नांकित शब्दों में उल्लिखित है। 'भले ही समस्त अपराधी छोड़ दिये जाय, किन्तु एक भी निरपराध व्यक्ति दण्डित न किया जाय। आश्चर्य होता है कि अपराधियों को यथोचित दण्ड दिये बिना न्याय कैसे सुरक्षित रह सकता है जो राजा का मुख्य कर्तव्य है उत्तरोत्तर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार का एकमात्र कारण लोहिताक्ष दण्ड के भय का अभाव ही है। सामान्य लोकोक्ति लकड़ी के बल बन्दरी नाचे के अनुसार न्यायरूपी दण्ड के प्रभाव से बड़े-बड़े दानव दुराचारी सुधर जाते हैं। राज्य संचालन में 'दाक्षिणा और दण्ड इन दो शब्दों का विशेष महत्व है। दाक्षिणा का अर्थ है गुणवान सदाचारी व्यक्ति का यथोचित सम्मान तथा दण्ड अर्थात् दुष्ट पापियों के प्रति कठोर विधान अत्यावश्यक है। चीन देश के सन्त कन्फ्यूशस ने कहा था—स्वच्छ प्रशासन के लिए दक्षिणा और दण्ड शासन के अनिवार्य अंग हैं। सामाजिकों के मध्य यदि साधुजन पुरस्कृत सम्मानित किये जाते हैं, तो साधारण नर्शक जनों में सदाचरण के प्रति विशेष श्रद्धा उत्पन्न होती है। तथा राजाज्ञा से राक्षसों को निर्मम दण्ड पीड़ा पाते देखकर जनता के हृदय में पाप के प्रति भय समा जाता है। जब तक प्रजाओं में दण्ड भय जागता रहता है, तब तक दुराचरण में प्रवृत्ति नहीं होती यह सुनिश्चित सिद्धान्त है। जिस प्रकार कठोर अनुशासक पिता या आचार्य की उपस्थिति के ज्ञान मात्र से बालक दुष्ट कर्म नहीं करते, उसी प्रकार घोर दण्ड भय पालनीय प्रजाजनों को अधार्मिक नहीं होने देता उन्हें धर्मात्मा बनाने का एकमात्र उपाय राजकीय न्याय विधान की कठोरता ही है। दण्ड विधान की कठोरता और सुगमता पर विचार करते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि दण्ड यथा शास्त्र यथापराध कठोर या सुगम होना चाहिये। सामान्य अपराधों पर सुगम दण्ड अपेक्षित है, किन्तु चोरी दुराचार अनृत साक्ष्य जैसे अपराधों पर कड़ा दंड अवश्य दिया जाये ताकि आगे यह पापाचरण न दोहराया जा सके। कभी हमारे देश में इस ही कठोर व्यवस्था के आधार पर महाराज अश्वपति जी ने सन्यासियों के समक्ष यह सत्य घोषणा की थी—'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुतः।' उन्हें गर्व था अपनी प्रजा के पावन चरित्रों पर जिसमें कोई भी चोर, कायर, शराबी अग्निहोत्र न करने वाला, मूर्ख अथवा स्वेच्छाचारी नहीं था। जब पुरुष वर्ग में ही कोई दुरात्मा नहीं था। तो देवियों से अपराध होना तो असम्भव ही था। आज विदेश यात्रियों के मुख से पश्चिमीय देशों के स्वच्छ प्रशासन—बेईमानी चोरी आदि का अभाव सुनकर यही समझ में आता है, कि अपराधों पर तात्कालिक कठोर दंड विधान से ही ऐसी स्थिति सम्भव है। दंड व्यवस्था में विलम्ब और अन्याय ने वर्तमान राज्य व्यवस्था को दूषित कर अराजकता को जन्म दिया है। परिणाम प्रत्यक्ष है।

वैवाहिक विज्ञापन

४० वर्षीय बाल ब्रह्मचारी, व्यायाम, प्राणायाम अभ्यस्त, (जंजीर तोड़ना आदि) शिक्षा इण्टरमीडिएट व्यवसाय गोपालन, कृषि, घड़ी साज के लिए सदाचारिणी सुशील गृहकार्यों में दक्ष आर्य कन्या की आवश्यकता है। दहेज जाति बन्धन नहीं। शमशेर आर्य

जमल्दीपुर' पो० कैसरगंज, बहराइच—२७१९०३

निर्णय के तट पर (शास्त्रार्थ संग्रह) नामक ग्रन्थ छपकर तैयार

"सभी आर्य भाईयों को विदित होवे कि उपरोक्त ग्रन्थ का प्रकाशन पूर्ण होकर उसके ग्राहकों को ३ भाग भेजना आरम्भ कर दिया गया है, इस ग्रन्थ के अब तक ३ भाग छप चुके हैं, जिनमे लगभग एक सौ के शास्त्रार्थों का समावेश हो चुका है, स्व० महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छानुसार हमने सभी प्राचीन शास्त्रार्थों को प्रकाश में लाने का संकल्प लिया हुआ है। इसलिए जो जो शास्त्रार्थ हम तीनों भागों में नहीं दे पाये हैं उन्हें चौथे भाग में दिया जायेगा।

प्रकाशन से सम्बन्ध स्थापित करें इस विशाल एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रत्येक भाग का मूल्य एक सौ पचास रु० है परन्तु आर्य संस्थाओं के लिए विशेष छूट की व्यवस्था है। प्रथम भाग जौलाई के अन्त तक भेजा जायेगा, जिन सज्जनों के दोनों भाग चुके हैं उन्हें एक साथ जौलाई में भेजा जायेगा, ताकि उनका पोस्टेज व्यय का भार दोगुना न पड़े।

प्रबन्धक
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर—गाजियाबाद
(उ० प्र०)

महिला मण्डल

भारतीय नारी और समाज

[श्री ताराबल्लभ पाँडेय एम० ए० (संस्कृत), आर्यसमाज ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)

युगों से चली आ रही भारतीय सभ्यता आज भी संसार में अपना उज्ज्वल ताज सबसे ऊँचा उठाये हुए है। विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के होते हुए भी सारी प्रजा भारत मां की सन्तान बनकर उसके पावन आंचल में बंधी हुई है। विभिन्न प्रवृत्तियों के होते हुये भी हमें यह देखते हुए गर्व होता है कि हम सब एक हैं, हम सब भारतवासी हैं। हजारों वर्ष पूर्व से चला आ रहा भारतीय इतिहास, वंश परम्परायें, विकसित ज्ञान-विज्ञान एवं कलायें इसकी सर्वोच्चता की प्रतीक हैं। लेकिन यह सर्वोच्चता और यह नियमित एवं संयमित सभ्यता का श्रेय किसे दें? यह जानने के लिये हम जरा सूक्ष्म विचारों से सोचें तो ज्ञात होता है कि इस सर्वोच्चता की द्योतक वही है जिसने इसकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वही है नियमित और संयमित सभ्यता की जननी, भारतीय सभ्यता की मूर्ति और भारत मां की बेटी "भारतीय नारी"।

भारतीय सभ्यता में चाहे किसी भी सम्प्रदाय में हो, नारी का स्थान सर्वोच्च है। प्रत्येक नारी एक मां होती है और मां का स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर होता है। कहा है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। भारत में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान सर्वोच्च बताते हुए कहा है कि– यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है अथवा नारियों को पूरा सम्मान और उन्हें पूरी इज्जत दी जाती है वहाँ देवताओं का निवास होता है। महाभारत में नारी का स्थान निर्धारित करते हुये कहा है कि "नारी प्रकृति की बेटी है वह फूल से भी कोमल है उस पर क्रोध मत कीजिए।

नारी चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम, सिक्ख हो या ईसाई एक भारतीय नारी ही कही जाती है चाहे वह भारत के किसी भी कोने में रहती है। धर्म के अलग-अलग होते हुए भी सबका आदर्श एक ही है। भारतीय सभ्यता की जननी केवल अपने आदर्श एवं चरित्र से ही संसार में सर्वोच्च नहीं है, बल्कि अपने ज्ञान, अपनी बहादुरी, अपनी भक्ति और प्रेम के लिए भी सर्वोच्च है।

पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही सीमित और सफल परिवार प्रथायें नियमित और संयमित चारित्रिक विकास एवं शुद्ध वंशावलियां भारतीय नारी से ही प्रभावित हुई हैं। क्योंकि किसी भी परिवार का आदर्श, उसकी सफलता पूर्ण रूप से गृह-लक्ष्मी से ही विकसित होती है। बच्चा मां की गोद में जन्म लेता है, मां की गोद से ही वह मां से सम्बन्धित अन्य लोगों से परिचित होता है। मां ही उसे दूध पिलाकर बड़ा बनाती है और मां से ही वह जन्म जात गुणों के अलावा अन्य कई बातें सीखकर समाज में कदम बढ़ाता है। उसका यही कदम समाज रूपी भवन की एक ईंट बनकर समाज को ऊँचा उठाता है। और इसी तरह के सभ्य समाजों से एक महान देश का निर्माण होता है ऐसा ही देश है हमारा भारत वर्ष।

हम ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर नजर डालें तो हम देखते हैं कि जो वंश परम्परायें भारत के इतिहास में हैं वह अन्य पाश्चात्य देशों के इतिहास में नहीं हैं। कोई भी वंशावली का वर्णन तभी किया जाता है जब कि पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही परिवारों की प्रथायें व्यवस्थित हों तथा पति और पत्नी का आवश्यक सहयोग अपने एक परिवार को आगे बढ़ाने अथवा ऊँचा उठाने के लिए कृत संकल्प हो। भारत की चली आ रही परिवार प्रथाएं भी इसी तरह की हैं पर पाश्चात्य देशों की नहीं। इन देशों की परिवार प्रथायें कोई नियमित नहीं हैं और न व्यवस्थित ही हैं। यहाँ तक कि किसी भी बच्चे को अपने मां और बाप का भी पता नहीं रहता है। इसका कारण है, हर नये दिन नया विवाह और नए प्रणय सम्बन्ध। जिस कारण व्यवस्थित परिवार के सपने भी नहीं देखे जा सकते हैं।

भारतीय नारी की महानता के होते हुए भी कुछ आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी सामने आते हैं कि आधुनिक समय से पूर्व अर्थात् मध्य युग से अब तक नारी को कुछ कम महत्व दिया जाता रहा है। जो परम्परा आज भी कुछ हद तक दिखाई देती है। जिसका मूल कारण था अशिक्षा। इतिहास के पन्ने पलट कर यदि हम देखें तो यह अशिक्षित काल ईसवी सन् १२०० से १९०० तक मिलता है। इस काल से पहले इस परम्परा का श्रीगणेश शिक्षित और सभ्य समाज ने कुछ दूसरे विचारों से किया था पर अशिक्षित समाज ने इसे परम्परागत रूप देकर रूपान्तरित कर दिया अब प्रश्न उठता है कि यह अशिक्षा क्यों हुई और कैसे हुई? इस बात का उत्तर भी इतिहास बताता है कि सातवीं सदी के बाद भारत पर विदेशी आक्रमणों का तांता सा बंधने लगा था जिसमें मुहम्मद गोरी और मुहम्मद गजनवी का प्रमुख उल्लेख मिलता है। भारतीय वीरता ने उनका भी काफी हद तक मुकाबिला किया था लेकिन सन् १२०० से विदेशियों का आगमन कुछ ज्यादा ही होने लगा था। धीरे-धीरे भारत पर युद्ध की स्थिति भी बढ़ती चली गई थी। इस समय की स्थिति काफी असामान्य और भयावह बन चुकी थी इसलिए महिलाओं तथा बच्चों को छिपाकर पुरुष उनकी रक्षा के लिए हर समय तैयार रहते थे। आत्म रक्षा करना और अपने परिवार को किसी तरह बचा कर रखना ही हर व्यक्ति का प्रमुख कर्तव्य हो गया था। आत्म रक्षा के लिये किये गये प्रयासों की भगदड़ में सदियों से चला आ रहा शिक्षा का क्रम भी जाता रहा। धीरे-धीरे भगदड़ तो कम होती गई पर नारियों की स्वतन्त्रता की बाग डोर पुरुष वर्ग के हाथ में ही रहने की परम्परा बनी रही जो आज भी दृष्टिगोचर होती है। पर सातवीं और आठवीं सदी से पहले के इतिहास में कहीं भी नारी को छोटे वर्ग का नहीं समझा गया है। नल दमयन्ती का प्यार, सीता और राम की मर्यादा, विद्योत्तमा का शास्त्रार्थ, पन्नाधाय का त्याग, मीरा की भक्ति, लक्ष्मीबाई की वीरता आदि ऐतिहासिक तथ्य हमें उस समय की नारी स्वतन्त्रता, नारी शिक्षा और नारी सहयोग से अवगत कराती है।

आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने तीव्रता से अपना ताज प्रगति के पथ पर काफी ऊँचा उठा लिया है। लेकिन वह केवल भौतिक क्षेत्र में, नैतिक और चारित्रिक क्षेत्र में नहीं। इसका प्रमाण है दैनिक

[शेष पृष्ठ १० पर]

भारतीय नारी और समाज

[पृष्ठ ९ का शेष]

समाचार पत्रों में छपने वाली खबरें, जिनको पढ़कर हर इन्सान को रोंगटे खड़े हो जाते हैं, लेखक आग बबूल होकर लखनी और कागज हाथ में लेकर लिखने बैठ जाते हैं, तथा क्रान्तिकारी क्रान्ति लाकर इस पर काबू पाने की सोचते हैं। वे खबर है—कम दहेज के कारण नारियों की हत्या करना अथवा उन्हें परेशान करके आत्महत्या के लिए विवश करना, बदचलन औरतों द्वारा घरों में गलत धन्धे करवाना उन लड़कियों की जिन्दगी बरबाद करना जो भावी जीवन में माँ बनने की आशायें लेकर अपना परिवार बसाने के सपने देखती हैं तथा मासूम लड़कियों तथा महिलाओं का अपहरण कर उन्हें नारकीय कारागार में बन्द कर वेश्यावृत्ति के लिए विवश करना। इन सब बातों का मूल कारण है कि पुरुषों को महिलाओं की महत्ता, उनका सम्मान, उनकी इज्जत का ज्ञान न होना और महिलाओं का स्वतन्त्रता की आड़ में अपने आप के महत्व को अपनी इज्जत को और अपने सम्मान को भूल कर इन समाज विरोधी तत्वों को बढ़ावा देना। स्वतन्त्रता पूर्वक आगे बढ़ने की होड़ में कर्तव्यों को भूलकर सीमित दायरे से बाहर होना है। इसके अलावा इसका कारण कुछ पाश्चात्य सभ्यता का भी प्रभाव है। पर यह पाश्चात्य सभ्यता भारत जैसे देश में नहीं पनप सकता है। भारत प्राचीन काल से ही एक आदर्शवादी देश रहा है। यहाँ का हर इन्सान अपनी मातृभूमि की मर्यादा की आन रखने के लिए, अपने आदर्शों को बनाये रखने के लिये तथा अपने चरित्र के लिए अपने खून की बाजी भी लगा सकता है, क्योंकि यहाँ की जनता के रग-रग में उन माताओं का खून भरा है जिन्होंने भारत माता की लाज रखने के लिए उसकी बेटी की तरह अपना आदर्श और सहयोग पुरुषों के साथ साथ बराबर बनाये रखा था।

नारी समाज की वह महत्वपूर्ण अंग है जिससे समाज अथवा देश सर्वोच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त भी कर सकता है और खो भी सकता है। समाज अथवा देश हर देश की नारियों के चरित्र, उनके आदर्श और दम्पतियों के आपसी प्रेम और सहयोग पर निर्भर करता है। इसलिये युगों से चली आ रही भारतीय सभ्यता और उसकी महानता का मुख्य श्रेय भारतीय नारी को ही है। जिसका दिल दया, प्रेम, व ममता से भरा हुआ है। मैथलीशरण गुप्त जी ने भी ठीक ही कहा है—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

*

केन्द्रीय मन्त्रि मण्डल

प्रधान मन्त्री ने सातवीं बार अपने मन्त्रि मण्डल का फेर बदल किया

नई दिल्ली २६ जून—केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में फेर बदल के बाद मन्त्रियों के नाम और विभाग निम्न प्रकार हैं—

श्री राजीव गांधी : प्रधान मन्त्री कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, विज्ञान, परमाणु ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, इलेक्ट्रानिकी, महासागर विकास।

१—श्री पी० वी० नरसिंहाराव : विदेश।
२—श्री बूटासिंह : गृह।
३—श्री पी० शिव शंकर : मानव संसाधन विकास।
४—श्री माधवसिंह सोलंकी : योजना।
५—श्री एस० बी० चह्वाण : वित्त।
६—श्री के० सी० पन्त : रक्षा।
७—श्री जे० वेंगलराव : उद्योग।
८—श्री बसन्त साठे : ऊर्जा।		९—श्री भजनलाल : कृषि।
१०—श्री बिन्देश्वरी दुबे : श्रम। ११—श्री दिनेश सिंह : वाणिज्य।
१२—श्री एच०के०एल० भगत : सूचना तथा प्रसारण, संसदीय कार्य
१३—श्री माखनलाल फोतेदार : इस्पात, खान।
१४—श्रीमती मोहसिना किदवई : शहरी विकास।
१५—श्री मोतीलाल वोरा : स्वास्थ्य।
१६—श्री रामनिवास मिर्धा : वस्त्र।
१७—श्री वीरबहादुर सिंह : संचार।
१८—श्री बी० शंकरानन्द : विधि एवं न्याय।
१९—श्री जियाउर रहमान अंसारी : पर्यावरण एवं वन।

राज्य मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री जगदीश टाइटलर, श्री माधवराव सिन्धिया, डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, श्री राजेश पाइलट, श्री सुखराम, श्री शिवराज पाटिल को अपने-अपने विभागों का स्वतन्त्र प्रभारी बनाया गया है इसके अतिरिक्त ३० राज्य मन्त्री एवं ५ उप मन्त्री अपने विभागीय कैबिनेट मन्त्रियों के निर्देशन में कार्य करते रहेंगे। इस प्रकार प्रधान मन्त्री राजीव गांधी अपने ६१ कुशल सहयोगियों के साथ भारत जैसे विशाल देश के प्रशासन का अत्यन्त कुशलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

भारत भ्रमण

आपको जानकर परम हर्ष होगा कि गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू–इलाहाबाद (उ०प्र०) के माननीय कुलपति श्री प० विश्वमित्र मेधावी भारत भ्रमण करते हुए गुजरात प्रदेश के भ्रमण पर आ रहे हैं। उनके भ्रमण का उद्देश्य गुरुकुल को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ करना और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रति आर्य जनता में जन जागरण पैदा करना है। वे पूर्ण त्याग भाव से गुरुकुल की उन्नति के लिए पुरुषार्थ करने में जुटे हैं।

अतएव विद्यानुरागी महानुभावों से सप्रेम निवेदन है कि उनके पहुँचने पर पूर्ण सम्मान के साथ उनका पूरा सहयोग करें और उदारता से अधिक दान देकर अमर यश के भागी बनें। —मन्त्री सभा

लालमणि माला

(१) थाली का एक दाना

भोजन कर चुकने के बाद, थाली मे पड़ा एक दाना बोल उठा—"मैंने क्या बिगाड़ा है? जो आपने मुझे स्वीकार नहीं किया! मनुष्य—"बिगाड़ा तो कुछ नहीं, परन्तु एक दाना मेरे लिये क्या है!" दाना—"थाली मे आये सभी दाने बराबर थे। एक को स्वीकार न करना, हमारी जाति का अपमान है। थाली के बाहर गिरे दाने को—ठीक है—स्वीकार न करें। बहुत से जीव मेरे ग्राहक हैं—मैं उन्हें सुख पहुंचाऊंगा—आशीर्वाद पाऊंगा।

अन्न प्राण है! अन्न का अनादर न करें। थाली या पत्तल मे उतना ही भोजन लें, जितना आप ग्रहण कर सकते हैं!

(२) नकल और अकल

परीक्षा मे नकल कर पास होना—अकल को ताला लगाना है! भावी पीढ़ी को अकल की सीढ़ी पर चढ़ने से रोकना है।

अकल (सुबुद्धि) द्वारा विद्या बढ़ाइये! सकल संसार में मानवता की शिक्षा फैलाइये!!

(३) प्रातःकाल

कितना सुहावना—अनोखा काल! सरस्वती की अमृत वर्षा! जो प्रातः जागते नहीं, ब्रह्म को याद नहीं करते—वे ब्रह्म (ईश्वर-विद्या-स्वास्थ्य) की प्राप्ति से वंचित रहते हैं।

सूर्योदय से चार घड़ी (४+२४=९६ मिनट=१ घण्टा ३६ मिनट) पहले उठिये! दो घड़ी—ब्राह्मकाल, दो घड़ी—उषाकाल (आकाश मे सूर्य की लाली) और सूर्योदय के पश्चात् प्रातःकाल का आनन्द लेते हुये प्रति दिन सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये!

(४) अण्डा और झण्डा

सभी जानते है कि हनुमान जी अण्डा नहीं खाते थे। उनके शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल का झण्डा ऊंचा था। शाकाहारी भोजन अपनाइये! सदाबहार जीवन पाइये!!

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती फलाहारी
आर्य समाज पिथौरागढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोक समाचार

आर्य समाज, महुआखेड़ा जनपद नैनीताल के कर्मठ सदस्य श्री नेतरामसिंह के एकमात्र पुत्र हरिओम् का १७-५-८८ को आकस्मिक निधन हो गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक-जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

आर्य कुटीर कायमगंज [फर्रुखाबाद] के स्वामी श्री जगन्नाथ प्रसाद आर्य की माता जी का ९२ वर्ष की आयु में २६-५-८८ को निधन हो गया। वे धर्म परायण परोपकारिणी महिला थीं। प्रभु उनकी आत्मा को शांति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

आर्य समाज सिरसी जनपद (मुरादाबाद) के आर्य समाज के २८ वर्षीय ब्रह्मचारी युद्धवीर का तथा ७१ वर्षीय श्री ओमप्रकाश का आकस्मिक निधन हो गया। यह दोनों आर्य समाज के रत्न थे। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

दयानन्द बाल मन्दिर पिथौरागढ़

सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ में ३१ अक्टूबर १९८२ को स्थापित प्रथम आर्य समाज के अन्तर्गत ८ जुलाई १९८६ को दयानन्द बाल-मन्दिर' की स्थापना १२००) रु० मासिक किराये के भवन मे की गई। १९८८ के जून मे कक्षा चार तक १८० से अधिक बालक निम्नांकित शिक्षक-मण्डल द्वारा शिक्षा-संस्कार पा रहे हैं—लक्ष्मणसिंह जोशिया एम० ए० बी० एड० (प्रधानाचार्य), माधवानन्द जोशी साहित्याचार्य, गणादत्त जोशी एम०ए० (प्रबन्धक), रेखा जोशी एम०ए०एम० एस. सी. बी०एड०, बीना जोशी एम० ए० बी० एड०, परमेश्वरी शर्मा एम० ए० बी० एड०, रमन सेठी एम० ए० बी० एड०, नीरू पाण्डे एम० ए० पीएच० डी० (शोधछात्रा) एवं उर्मिला (आया)।

बच्चों का गणवेश नीला-सफेद परिधान है। बाल मन्दिर मे नित्य प्रार्थना मे विश्वानि देव के ८ मन्त्र के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना होती है। हर शनिवार को हवन यज्ञ होता है। आर्यमित्र, सार्वदेशिक, आर्य जगत् आदि साप्ताहिक पत्र आते हैं। पुस्तकालय मे चारों वेद, एकादश उपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ आदि हैं।

आर्य समाज पिथौरागढ़ के वर्तमान अधिकारी सर्वश्री लक्ष्मीदत्त भट्ट [प्रधान], लक्ष्मी चन्द्र मिश्र [मन्त्री], डॉ० सावर्तसिंह [कोषा०] एवं माधवानन्द जोशी [पुस्तकाध्यक्ष] हैं।

निर्माणाधीन आर्य समाज मन्दिर एवं बाल मन्दिर हेतु ११००) से अधिक दान देकर संगमरमर पर दानवीर-सूची मे नाम अंकित कराइये। धनराशि चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'आर्य समाज पिथौरागढ़' के नाम भेजियेगा।

ओ३म्
स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती फलाहारी
आर्य समाज पिथौरागढ़, उत्तर प्रदेश

ऋषि के शिष्य जोधपुर के महाराजा

(शेष पृष्ठ ६ से आगे)

राजनीतिक क्रिया-कलाप, जिनमे कि समाज के कुछ सदस्य संलग्न थे—उनको घृणास्पद लगते थे और किसी भी रूप मे वे उनका समर्थन करने वाले अन्तिम व्यक्ति होते किन्तु साथ ही किसी भी मूल्य पर वे उस समाज से सम्बन्ध विच्छेद करना नहीं चाहते थे जिसके धार्मिक पक्ष से उन्हे पूर्ण सहानुभूति थी।'

सर प्रतापसिंह के जीवन मे घटित एक महत्वपूर्ण घटना मिलती है जिससे प्रतीत होता है कि वे उस समय प्रचलित जाति से सम्बद्ध स्वामी दयानन्द के विचारों से किस सीमा तक प्रभावित थे। सन् १८९७ मे जोधपुर मे एक अंग्रेज जे० डी० कंडेल [सैनिक] टाईफाइड से मर गया। वहां केवल तीन अंग्रेज और थे जो अर्थी को उठा सकते थे क्योंकि कोई सवर्ण हिन्दू अजाति को नहीं छू सकता था, इस व्यतिक्रम मे सैनिक के विराश पिता जो० टी० कंडल जी० सी० ने 'सर' प्रतापसिंह को सुझाव दिया कि वे एक भंगी को बुला लें क्योंकि उसकी कोई जाति नहीं जिससे छूत होने का डर हो। किन्तु लोगो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब अर्थी उठाने वालों में चतुर्थ सर प्रताप स्वयं बन गये। पर जब महाराजा को जातिच्युत करने वाली इस अनहोनी पर कुछ ब्राह्मण भयाक्रांत हुये तो 'सर' प्रतापसिंह ने उन्हें यह कहते हुए डाट लगाई कि ब्राह्मण और राजपूत सभी उसी मिट्टी में मिल जायेंगे और सभी सहृदय जनों की जाति एक है।

प्रादेशिक साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45998 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७६
आषाढ़ कृष्ण १२
१० जुलाई रविवार १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

मार्जन

मन्दिर-शरीर अगनाई है, जब बढ़नी रोज लगाई है।
तन-मन की करी सफाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

भू-भूमि प्राणप्रिय रक्षक है
करता पुनीत सिर शिक्षक है
भुव-व्योम दुखनाशक ईश्वर
नयनों का ज्योति प्रतीक है।

स्व-सूर्यलोक सुखदायी है प्रभु कण्ठ शुद्धता आई है।
तन-मन की करी सफाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

मह-महनीय पूज्य परमेश्वर
यह हृदय शुद्ध करता ईश्वर
जन-ईश सबका उत्पादक
यह शुद्ध नाभि करता सर्वेश्वर

तप-ज्ञान-पुंज का साई है, कर चरण शुद्ध गतिदाई है।
तन-मन की करी सफाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

सत्यम् नाम ईश अविनाशी
शुद्ध बुद्धि करता सुखराशी
खम् ब्रह्म सब व्यापक स्वामी
शुचि अंग करे सब सहवासी।

जो जिसने यह रमझाई है, मन चमक उसी ने पाई है।
तन-मन की करी सफाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

प्राणायाम

प्राणवायु बढ़ जाय देह में, तब यहीं योग का उद्गम हो।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो॥

अन्दर की दूषित निकल वायु
बाहर की आये शुद्ध वायु
आयाम बढ़ इन प्राणों के
मिल जाय दीर्घ आनन्द आयु।

उर योग द्वार खुल जाने से, परमात्म आत्म का संगम हो।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो॥

प्रभु भू भुव स्व मह शक्तियां
जन तप की सप्त उक्तियां
इस पृथ्वी से सत्य लोक तक
सब हरें व्याधि यह व्याहृतियां।

सब दोष निवारण हो जायें, मृदु अन्तमन तब जगमग हो।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो॥

ये सप्त लोक गुण सात यही
जीवन के पुण्य प्रभात यही
ये प्राप्त हमें भी मिल जायें
सुखमय हो जाये गात यहां।

रवि-रश्मि रंग ये सप्त मिल, तो सरस आत्म का सरगम हो।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो॥

(क्रमशः)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के समस्त अधिकारियों की एक बैठक दिनांक ३ जुलाई १९८८को अमरोहा में सम्पन्न हुई जिसमें सभा के उपदेशक विभाग के अधिष्ठाता पद पर श्री हरिश्चन्द्र आर्य, अमरोहा नियुक्त किये गये।

सभा भवन कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में सभा के समस्त वैतनिक उपदेशकों / प्रचारकों की आवश्यक बैठक दिनांक २० तथा २१ जुलाई १९८८ को होगी। सभा के समस्त उपदेशक / प्रचारक अनिवार्यतः इसमें सम्मिलित होने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी, सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स० ७।२८-२-८५

आषाढ़ शुक्ल ३, रविवार, सवत् २०४५ वि०, दिनांक १७ जौलाई १९८८

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	२९

अस्पृश्यता मानवता के नाम पर कलंक है

आर्यसमाज प्रारम्भ से ही इसका घोर विरोधी रहा है। इसने सदा जन आन्दोलन के रूप में, मानव-मानव मे भेद डालने की प्रवृत्ति का कड़ा विरोध किया है

हरि के मन्दिर हरिजनो के प्रवेश से पवित्र होगे। वे मन्दिर की शोभा हैं अस्मिता हैं उनके प्रवेश को वर्जित कहने वाले पाखण्डी हैं, धर्म की मर्यादाओ से अनभिज्ञ हैं, अराष्ट्रीय हैं

—मनमोहन तिवारी

★ ★ ★

लखनऊ १० जुलाई—उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उद्योयमान महा मन्त्री, एव अनेक सामाजिक, शैक्षणिक सगठनो के सचालक यशस्वी जननेता श्री मनमोहन तिवारी ने अपने एक वक्तव्य में पुरी के शकराचार्य श्री निरजन देव तीर्थ द्वारा जयपुर मे हाल ही मे दिये गये हरिजन विरोधी बयान पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक वक्तव्य मे कहा है—"आर्यसमाज जन्मगत जाति-पाति को नहीं मानता है। हरिजन हमारे समाजरूपी शरीर के शक्तिशाली अग हैं। हमारे प्राचीन धर्म शास्त्रो, वेदों और स्वय भगवान श्रीकृष्ण ने गीता मे कहा है—"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः" अपने-अपने व्यवसाय गुण और कर्मानुसार मानव चार वर्णों मे विभक्त हे वैसे समष्टिरूप मे शरीर की भाँति एक ही है। वेद पढ़ने, मन्दिरो मे जाकर पूजा अर्चना करने का अधिकार मनुष्यमात्र का है। हमारे गुरुकुलो, यज्ञ मण्डपो, भोजनालयो एव पूजा अर्चना के स्थानो मे हम सब साथ बैठे हैं, अध्ययन किया है, भोजन किया है और प्रभु की अमृतमयी वाणी का मनन श्रवण किया है। समता, समानता और बन्धुता की इस अमृतमयी बेला मे पुरी के शकराचार्य का ऐसा ओछा वक्तव्य अदूरदर्शितापूर्ण ही नहीं अपितु पद की गरिमा के सर्वथा प्रतिकूल है। उन्होंने इसी प्रकार कुछ दिन हुए सती प्रथा के समर्थन में एक वक्तव्य दे दिया था और पूरे हिन्दू समाज के कोप का पात्र बन गये थे। उनका यह बयान कि नाथद्वारा मन्दिर में हरिजनो के प्रवेश की कोई जरूरत नहीं है—असामयिक और राष्ट्रविघाती तो है ही, वैदिक मान्यताओ एव मानवीय भावनाओ के भी सर्वथा विपरीत है। आर्यसमाज उनसे इस विषय पर कहीं भी शास्त्रार्थ करने को तैयार है।

श्री तिवारी ने शकराचार्य जी से विनम्र अपील करते हुए कहा है कि वे अपने इस असामयिक, अवैदिक और अमानवीय वक्तव्य को तुरन्त वापस लें अन्यथा आर्यसमाज को विवश होकर उनके विरुद्ध सामाजिक बहिष्कार का प्रबल जन-आन्दोलन छेड़ना होगा और उन्हे धार्मिक तथा राष्ट्रीय एकता की प्रतीक शकराचार्य की गद्दी तथा पद दोनो छोड़ने होंगे।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—आषाढ़ शुक्ल ३ सम्वत् २०४५, रविवार १७ जौलाई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि सम्वत् १९७२९९९०८८

अन्धविश्वासों के घेरे में—

ऋचायें वेदों की

कुछ वर्ष पूर्व मुझे गायत्री महायज्ञ के एक समापन-समारोह मे सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ था। पूर्णाहुति हो चुकी थी। श्रद्धालु नरनारी यज्ञवेदि की परिक्रमा कर रहे थे, कुछ अग्नि मे शाकल्य चढ़ा रहे थे और कुछ यज्ञ की भस्म को माथे पर लगाकर यज्ञकुण्ड को नमन् कर रहे थे। पण्डाल मे आर्य समाज के एक वक्ता गायत्री और यज्ञ की महिमा का बखान करते हुये कह रहे थे—"गायत्री मे बड़ी शक्ति है। जो प्रतिदिन इसका जाप करता है उसे कोई रोग नहीं सताता, उसका घर धन धान्य से परिपूर्ण रहता है और यज्ञ मे इतनी शक्ति है कि यदि एक मास बसन्त सूख हुये आंवले के वृक्ष के पास इसे किया जावे तो वृक्ष हरा-भरा हो जायेगा और उसमे फल लगने लगेगें.. ...आदि। ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थो मे गायत्री को बुद्धि का प्रेरक माना है। उनके शब्द हैं— "उस परमात्मा का स्वीकार करने योग्य (वरेण्य) अतिश्रेष्ठ जो शुद्धस्वरूप (भर्गः) है उसे हम धारण करें। किस प्रयोजन के लिये जो परमात्मा हमारी बुद्धियो को प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामो से छुड़ाके अच्छे कामोंमे प्रवृत्त करे।' इसी प्रकार यज्ञ के सम्बन्धमे ऋषि ने "स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश" में लिखा है—"अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल औषधि की पवित्रता होके सब जीवो को सुख पहुंचाना है—इसको मै उत्तम मानता हूं।" (इन दोनो उक्तियो में मन्त्रजाप अथवा यज्ञ से रोग न होने अथवा सूखे वृक्ष के हरा-भरा होने की कोई बात नहीं है।)

मानवमन सदा से संवेदनशील रहा है विशेष तौर पर धर्म के मामले में। सृष्टि के आदिकाल से ही धर्म के साथ अनेको चामत्कारिक गाथायें मनुष्यो ने जोड़ दी हैं और स्वयं बिना किसी तर्क-वितर्क के उन पर विश्वास करता चला आ रहा है। इसे वह अपनी आस्तिकता की परमउपलब्धि भी मानता है। ऋषिवर्य की जो सबसे बड़ी विशेषता है वह है उनका सूक्ष्म वैज्ञानिक दर्शन जो पानी को पानी दूध को दूध अलग कर देता है। विश्वास का नम्बर तर्क एवं परीक्षण के बाद ही आता है और यही सच्चा धर्म है, अथवा होना चाहिए।

मन्त्रों की सार्थकता को वैज्ञानिक कसौटी पर परखना होगा। गायत्री का प्रचार हमने बहुत किया परन्तु लाभ उठा रहे हैं अन्य मत वाले जिन्होने उसकी मूर्ति बनाकर धनार्जन करने का साधन बना लिया। गायत्री मन्त्र केवल हमे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है न वह रोग से बचाता है न सोने चांदी के हार लाकर हमें पहिनाता है। यह उपलब्धियां तो अपने अपने कारणों से हमे मिलेंगी जिनके पीछे हमारी बौद्धिक प्रेरणा कार्य करेगी—बस इतना ही काम है इसी प्रकार यज्ञ के सम्बन्ध में है। सृष्टि अपने नियमो से चल रही है। वह नियम विधाता के बनाये हुये हैं। हम न तो उनमे परिवर्तन कर सकते है और न उसी कोटि का तद्वत् कोई दूसरा नियम ही बना सकते हैं। हवाई जहाजो में पानी भरकर ऊपर से छिड़काव लगाकर हम उसे वर्षा की संज्ञा दे दें तो यह—तो मनस्तुष्टि की बात हुई लेकिन घनघोर बादलों की घटायें आ आ के घिर घिर आवें और समुद्र से लिखित पानी को पृथ्वी पर लाकर बरसा दें—यह किसी अन्य के नियम से सम्भव हो रहा है जिसे हम भक्त की भाषा मे यज्ञमय परमात्मा के द्वारा किया हुआ यज्ञ (परोपकारी कार्य) कह सकते हैं। वहां हमारा वह यज्ञ (अग्नि होत्रादि) कार्य नहीं कर सकते वहां प्रभु का नियम ही कार्य कर रहा है। सूर्य की हजार हजार किरणें समुद्र की अनन्त जलराशि को अपनी किरणों से खींच खींच कर वाष्प बनाकर पृथ्वी पर घन-घोर वर्षा कर रही हैं। चारों ओर सुख ही सुख है। यह कार्य परमात्मा का है। वह अपना कार्य कर रहा है करता रहेगा। "यज्ञात् भवति पर्जन्य"—मे उस विराट् पुरुष द्वारा रचे हुये इसी विराट् यज्ञ का वर्णन है न कि हमारे द्वारा किए जाने वाले अग्नि होत्रादि का।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हव्य या जो पदार्थ अग्नि मे डाला जाता है वह वायु तथा वायु के सम्पर्क मे आने वाले पदार्थों (औषधि, फल-फूल) आदि की पवित्रता एवं वातावरण को प्रदूषण रहित बनाने के लिए है। इसलिये वेदमन्त्रों मे प्रभुचालित अनेक क्रियाओं को व्यक्ति पर अध्यारोपित कर व्यक्ति द्वारा वैसा ही चमत्कार दिखाना सत्य से सर्वथा परे मात्र अन्धविश्वास है। ऋषि दयानन्द ने यज्ञ (अग्निहोत्र) को वृष्टि की पवित्रता का कारण लिखा है न कि वृष्टि का कारण। सम्भव है वैज्ञानिक तरीके से कृत्रिम भाप बनाकर यत्र तत्र वर्षा की बूंदें या बौछारें हम आकाश से डाल भी दें किन्तु सृष्टि मे वृष्टि रूपी यज्ञ का जो महान चक्र विधाता ने आदिकाल से ही चला रखा है और जो हमें स्थानीय जल से नहीं अपितु सुदूर समुद्र के विशाल जलराशि से मेघों के रूप मे मिलता है वह तो उसी का नियम है और उसी के नियम से मिलता रहेगा इसी प्रकार गायत्री मन्त्र जपने मात्र से भौतिक उपलब्धियां नहीं मिल सकतीं, बुद्धि सत् हो सकती है यदि उसके अर्थ को आप स्वीकार करें, आरूढ़ हों और उस पर चलने का प्रयास करें।

अतः हमारा निवेदन यही है कि हर मन्त्र को चमत्कार से न जोड़िये। हर मन्त्र कार्य करने की प्रेरणा है और उसके नियम हैं जिनपर आपको स्वयं अनुसन्धान करना होगा ऐसी खाद तैयार करनी होगी जो सूखे आंवले के वृक्ष को हरा-भरा कर सकती हो। यदि यज्ञ वेदि पर आप मत्था टेकेंगे तो इसे मूर्तिपूजा का ही दूसरा रूप कहा जायेगा जिससे कोई लाभ नहीं होगा। यह प्रसंग इसलिये—आवश्यक हो गया कि आज कल अनेक प्रकार की सिद्धियों के लिये अनेक प्रकार के यज्ञ तथा जाप होने लगे हैं। आर्य समाज के द्वारा प्रायः उनका संचालन भी होता है। मथुरा में वृष्टि यज्ञ हुआ वर्षा का चमत्कार असफल सिद्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य यज्ञों की बात है। यज्ञ भौतिक रूप मे केवल अग्नि होत्र है आचरण के रूप मे कोई भी श्रेष्ठ कर्म है और भावना के रूप में वह आध्यात्मिक प्रेरणा है जो हमें इस योग्य बनाती है कि कर्म क्षेत्र मे हम कैसे, ऐसे नियम और अनुसन्धान करें जिससे इस संसार को सुखमय वर्षा से आप्लावित कर सकें। इसलिये यदि मन्त्रों को हम अन्धविश्वास के घेरे में रखकर प्रयोग करेंगे तो निःसन्देह मन्त्रों के प्रति हम अन्याय करेंगे। सम्भव है कुछ विद्वान मेरे कथन से सहमत न हों, उनके विचारों का स्वागत है।

—आचार्य इन्द्रदेव पाठक

मथुरा में वैदिक वृष्टि यज्ञ

[श्री जयकुमार मुद्गल मन्त्री वृष्टि विज्ञान मण्डल, मथुरा]

इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटना आर्य समाज तिलकद्वार मथुरा में वृष्टि विज्ञान मण्डल द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न वृष्टि यज्ञ परीक्षण है। यह यज्ञ केन्द्रीय सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी मन्त्रालय के सहयोग से भारतीय मौसम विज्ञान द्वारा निर्धारित तिथियों २५ से ३१ मई तक पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ था।

भारतीय मौसम विभाग ने अपने स्रोतों एवं साधनों से प्राप्त जानकारी के आधार पर घोषणा की थी कि मई मास के अन्तिम सप्ताह में वर्षा होने की सम्भावना एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः वृष्टि विज्ञान मण्डल ने इस चुनौती को स्वीकार कर इन्हीं तिथियों का चयन किया।

मण्डल के अध्यक्ष विद्वद्वर आचार्य हरप्रसाद जी इस यज्ञ के ब्रह्मा एवं अधिष्ठाता थे। यज्ञ के लिए शुद्ध एक क्विन्टल घी करनाल (हरियाणा) के राजकीय डेरी फार्म से मंगवाया गया था। सामग्री और साकल्य अधिकांश दिल्ली एवं मथुरा में क्रय किये गये। उनका शास्त्रीय विधि से संस्कार कराने के उपरान्त उन्हें प्रयोग में लाया गया।

याज्ञिकों एवं वेद पाठियों में प्रमुख डा० रमाशंकर शिरोमणि गुरुकुल के स्नातक तथा कर्मकाण्डी हैं। अन्य याज्ञिकों में ४ नेपाल के थे। यज्ञ के स्वागताध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी अग्रवाल एडवोकेट प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाज के अग्रगण्य थे। समाज के मन्त्री जी मुंशी मन्नीलाल जी, पं० आशाराम जी, श्री वेनीप्रसाद तिवारी, चौधरी राजेन्द्र सिंह एवं कृष्णगोपाल जी का सक्रिय सहयोग रहा।

यह पहला अवसर है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ मौसम विशेषज्ञ यहाँ अपने साधनों एवं उपकरणों के साथ पधारे थे। एक विस्तृत प्रयोगशाला आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज के भवनों में स्थापित की गयी थी। चार वैज्ञानिक प्रत्येक क्षण इस प्रयोगशाला में उपस्थित रहते थे। वर्षा एवं बादलों के विशेषज्ञ सरदार गुरमुख सिंह स्वयं प्रयोगशाला का कार्य देख रहे थे। प्रत्येक दिन विभिन्न रूपों में धूम एवं सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण होते थे।

सरकार की ओर से भेजे गये वैज्ञानिकों में प्रमुख डा० राजेन्द्र गुहा कलकत्ता, प्रो० आनन्दकुमार बड़ोदा, कु० विभा गुप्त वर्मा, डा० हेमन्त दुबा, डा० दत्ता डाइरेक्टर, श्री चटर्जी एस० एस० ओ०, विज्ञान एवं तकनीकी मन्त्रालय, रुड़की इन्जीनियरिंग विश्व विद्यालय, पन्तनगर वि० विद्यालय, आई–आई० टी० दिल्ली तथा युवा वैज्ञानिक परिषद के दस सदस्य उपस्थित रहे।

देश के प्रमुखतम पत्र टाइम्स ऑफ इंडिया के श्री नरेन्द्र मेहरोत्रा, श्री विक्रम भाई वकील विशेष प्रतिनिधि अभियान, बम्बई, डा० रामचन्द्रन विशेष प्रतिनिधि हिन्दू मद्रास, कु० पार्वती परसाई हिन्दुस्तान टाइम्स श्री मोहन स्वरूप भाटिया–आज के अतिरिक्त दैनिक जागरण, अमर उजाला, पंजाब केसरी, नव भारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, ट्रिब्यून, के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त, पी० टी० आई की टीम एवं आकाशवाणी के सदस्य पधारे थे।

दूरदर्शन वालों ने इस यज्ञ के एक अंश का प्रसारण एवं प्रदर्शन अच्छे रूप में किया था। आर्य समाज के वरिष्ठतम नेता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा आगरा, अलीगढ़, दिल्ली आदि के आर्य समाजी भी उपस्थित थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति १ जून को प्रातः १० १/२ बजे हो सकी थी तथा उसी दिन ७–४० पर तीव्र वर्षा हुई। मथुरा, आगरा, अलीगढ़ के क्षेत्रों के अतिरिक्त वर्षा का प्रभाव दिल्ली, तक रहा। मौसम वैज्ञानिक १० मई तक वर्षा की सम्भावना से इन्कार करते रहे थे। उनका तर्क था कि यदि यज्ञ समाप्ति के बाद ४८ घण्टों में वर्षा होती है तो यज्ञ की सफलता मानी जायेगी।

कुछ आर्य समाज के विरोधी, अनीश्वरवादी तथा कम्यूनिष्ट विचार धारा वाले समाचार पत्रों ने यज्ञ के विरुद्ध समाचार प्रकाशित किए हैं। अतः वैज्ञानिकों का एक दल पुनः सत्य की जांच करने आया। उसने रिपोर्ट दी है कि मथुरा आगरा भरतपुर (राजस्थान) तथा अलीगढ़ एवं हरियाणा के कुछ भागों में वर्षा का अच्छा प्रभाव पड़ा है।

यह यज्ञ एक परीक्षण था जिसमें वृष्टियज्ञ की वैज्ञानिकता प्रमाणित हो चुकी है। आर्य समाज के बड़े स्तर पर इस कार्यक्रम को अपनाना चाहिए। कृषि विज्ञान मण्डल प्रत्येक प्रकार सहयोग देगा।

*

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज चाँदपुर (नवाबगंज) फर्रुखाबाद के तत्वावधान में दि० १२, १३, १४ जून ८८ को श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री कुलपति महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का महती सफलता के साथ सम्पादन हुआ। उक्त गुरुकुल के ही ब्रह्मचारी सुरेश चन्द्रार्य, ब्र० मनुदेवार्य, ब्र० भारतवीरार्य एवं ब्र० महेशचन्द्रार्य ने पवित्र वेद मन्त्रों का पाठ किया। कई नवयुवक तथा युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किये और दुर्व्यसन त्यागने का कठोर व्रत लिया।

समारोह में श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी, स्वामी नारदानन्द जी, श्री रघुनाथसिंह, श्री शिवपाल सिंह (एटा) श्री अर्जुनसिंह आर्य एवं श्री अजयकुमार आर्य (मैनपुरी) आदि विद्वान् तथा उपदेशक भी पधारे। कार्यक्रम प्रभावी रहा।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस, जिला अलीगढ़

१ जुलाई १९८८ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास। सबका सीधा–सादा एक–सा रहन–सहन, कड़ा अनुशासन, गाँव नगर से दूर, स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, संगीत, नैतिकता, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा देशी–घी, दूध, जलपान सहित भोजन शुल्क १३०.०० रु० मासिक मात्र।

नियमावली मंगायें। मुख्याधिष्ठात्री

आओ सत्संग में चलें-

[वैद्य कुन्दनलाल आर्य ५४९/१६२ अर्जुन नगर लखनऊ-५]

सत्संग प्रेमी देवियो और देवताओ ! आर्यमित्र' के २२ मई के अंक में उपस्थान मन्त्रों पर कुछ चर्चा की गई थी। उपस्थान-बिल्कुल प्रभु के पास उसकी अमृतमय गोद में बैठ जाने की अवस्था का नाम है। उस अवस्था में साधक-आत्मा अधीन हो जाता है। आत्मा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अधीन हो गया-उसे अब किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। अतः सन्ध्या यहां ही समाप्त हो जानी चाहिए थी-परन्तु ऐसा हुआ नहीं-सन्ध्या के मन्त्र तो अभी शेष हैं। इनकी क्या आवश्यकता थी जो लक्ष्य प्राप्ति के बाद भी इनका पाठ करने का विधान है। आओ इस रहस्य पर विचार करें-

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य जन्म मरण के बन्धन से छूटकर मोक्ष प्राप्त करना है-इसके लिए ही वह प्रभु की उपासना करता है। पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी के शब्दों में-'उपासना-अधीनता प्राप्ति की परम रसायन है-स्वाधीनता-निर्भयता-आत्म विश्वास तथा स्वावलम्बन उपासक की दिव्य सम्पत्ति है।"

सन्ध्या केवल मात्र आंख बन्द करके मौन बैठ जाने का नाम नहीं है। यह तो आदि से अन्त तक चिन्तन की एक प्रक्रिया है-जिसके द्वारा भक्त अथवा निरीक्षण स्वयं ही करता है। चिन्तन का अर्थ है चिन्मा-सम्यक ज्ञान प्राप्त करना। जिस प्रकार दीवार बनाते समय कारीगर एक के ऊपर एक ईंट रखकर चिनाई करता है ताकि भवन सुदृढ़ और सुन्दर बन जावे। ठीक इसी प्रकार भक्त भी सन्ध्या के एक एक मन्त्र द्वारा अथवा निरीक्षण कर विचित्र आनन्द प्राप्त करता है-वह उसी में मग्न हो जाता है। बाहिर की सुधबुध भूल जाता है-इसी अवस्था को हम कहते हैं कि सन्ध्या में मन या ध्यान लगा। यह ही स्वाध्याय या ब्रह्म यज्ञ है। चिन्तन करना तो मनुष्य का स्वभाव-कर्म ही है-अतः वह अधीन होकर मनन करता है। मैंने सन्ध्या के आरम्भ में गायत्री का पाठकर प्रभु के दिव्य तेज और बुद्धि को धारण करने की प्रतिज्ञा की थी-जो आज अब पूर्ण हुई। नमन करना और कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का एक सद्गुण-भूषण है। यदि वह इस गुण से विमुख होता है तो वह कृतघ्न कहलायेगा। कृतघ्नता एक ऐसा पाप है-जिस का कोई प्रायश्चित्त ही नहीं है। महाभारतकार ने लिखा-

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च चोरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृति विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृति ॥
आशायास्तनयोऽधर्मः क्रोधोऽसूया सुतः स्मृतः।
लोभः पुत्रो निकृत्यास्तु-कृतघ्नो नार्हति प्रजाम ॥

अर्थात् ब्रह्म हत्यारे, शराबी, चोर और व्रत भंग करने वाले मनुष्य के लिये साधु पुरुषों ने प्रायश्चित्त का विधान किया है-किन्तु कृतघ्न के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है। आशा का पुत्र अधर्म है-असूया का पुत्र क्रोध माना जाता है। निकृति (शठता) का पुत्र लोभ है। परन्तु कृतघ्न मनुष्य सन्तान पाने के योग्य नहीं है। इसीलिये भक्त कृतघ्नता के पाप से बचने के लिए अपने प्रियतम प्रभु के पास पहुंचकर बड़ा प्रसन्न है। वह गद्गद होकर अपने आपको प्रभु के समर्पण करता है। प्रभो ! इसी पतित पावन सावित्री, गायत्री गुरु मन्त्र के द्वारा मैंने सन्ध्या के आरम्भ में जो धर्म-तेज और बुद्धि की प्रार्थना की थी। वह आपकी अपार दया से प्राप्त हो गये। वह फिर गायत्री मन्त्र का जाप करता है। गायत्री वेद माता है। गायत्री सकल पाप नाशिनी है। इससे बढ़कर पवित्र करने वाली और कोई वस्तु नहीं है। इसलिये गायत्री मन्त्र का जापकर प्रभु का धन्यवाद करने और कृतज्ञता प्रकट करने का महर्षि दयानन्द जी महाराज ने विधान लिखा।

लक्ष्य प्राप्ति के बाद साधक गायत्री का पाठ करते हुए अपने आप को प्रभु चरणों में समर्पण कर देता है-'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत् कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्यः सिद्धि र्भवेन्न." । हे दयानिधे ईश्वर ! जो जो उत्तम कार्य हम करते हैं-वह आपकी कृपा से ही करते हैं जप उपासनादि मेरा यह कर्म आपके ही अर्पण है कि जिससे-(१) धर्म-जो सत्य और न्याय का आचरण करता है। (२) अर्थ-जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है-(३) काम-जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है, और (४) मोक्ष-जो सब दुःखों से छूटकर सर्वदा आनन्द में रहना है। इन चारों पदार्थों की सिद्धि हमें शीघ्र प्राप्त कराईये। इस प्रकार प्रभु से प्राप्त किया हुआ उपहार प्रभु की देन समझ कर प्रभु के चरणों में ही अर्पण कर देता है-

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है प्रभु तोर।
तेरा तुझको सौंपते-क्या लागे है मोर ॥

पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी के शब्दों में-अन्न, बीज, फल, गुठली आदि सब धरती-भूमि माता से उत्पन्न होते हैं-यदि इनको उपज प्राप्त करके इनको घर में बन्द कर रख लिया जावे तो इन वस्तुओं का नाश हो जावेगा। किन्तु यदि इनको बड़ी सावधानी के साथ पुनः भूमि के अर्पण कर दिया जावे तो फिर एक से अनेक फल प्राप्त होते रहते हैं। इसलिए भी यह भक्ति साधना का क्रम सदा चलता रहे-बार बार गायत्री जाप करना हितकर है।

अन्त में साधक-भक्त-उपासक-परमदेव की कृपा-दया-महिमा का स्मरण करते हुए अगाध श्रद्धा और प्रेम से नमस्कार मन्त्र द्वारा अपना सिर प्रभु के चरणों में रख देता है और उसकी वाणी पुकार उठती है। प्रभु देव ! मेरे पास इस नमस्कार की अञ्जलि के सिवा कुछ नहीं-जो मेरी भेंट कर सकूं-अतः यह मेरी नमस्कार की अञ्जलि स्वीकार करो और संसार के दुःखी जनों का बेड़ा पार करो।

★

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जखोली जिला गंगोलीहाट का ६६ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १०, ११, व १२ जून १९८८ तीन दिन तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें ब्रह्मचारी रामकृष्ण रामायणी तथा स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती जी के द्वारा प्रातः एवं सायंकालीन प्रवचनों को स्थानीय सम्मानित आर्य बन्धो महिलाओं एवं नवयुवकों ने सुना तथा उसका लाभ उठाया।

४ जून १९८८ को प० मनमोहन तिवारी (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०) ने नारायणस्वामी आश्रम-रामगढ़ तल्ला' से आकर समाज मन्दिर-जखोली का निरीक्षण किया।

कृपया आर्यसमाज मन्दिर निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर, चैक/बैंक ड्राफ्ट (आर्यसमाज जखोली), मन्त्री आर्यसमाज जखोली (गंगोलीहाट) को भेजें। शंकरदेव आर्य

मन्त्री-आर्यसमाज जखोली (गंगोलीहाट)

-श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्यसमाज कर्णपुर रत्त जनपद फर्रुखाबाद का आकस्मिक निधन विशूचिका से हो गया। वे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें। -मन्त्री सभा

सामयिक समस्यायें–

आजादी के चालीस साल बाद

[आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्दनगर लखनऊ]

जिसको न निज भाषा तथा निज संस्कृती का मान है,
वह देश हित कुछ कह सकेगा झूठा उसे अभिमान है।

स्वाधीनता प्राप्ति के ४० वर्षों बाद आज देश भक्ति का स्वरूप सन्देहास्पद बन गया है। आज देश भक्ति के लिये स्वाधीनता से पूर्व आन्दोलन के समय का मापदण्ड कतई नहीं बचा है। उस समय–स्वदेशी भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी, हमें अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने देश की मर्यादा पर गर्व था। हमें विदेशी कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। हम उन वस्तुओं को इस्तेमाल करना कौन कहे छूना भी पाप मानते थे, देश के प्रति गद्दारी भी उसके इस्तेमाल की कल्पना भी न थी। परन्तु आज वह सब स्वप्न हो गया है। आज हमारे देश के भाग्य विधाता राजनीतिक नेताओं का दर्शन सर्वथा परिवर्तित हो रहा है। अंग्रेजी और अंग्रेजियत हमारे जीवन का पूर्ण अंग बन रही है। हम अपने निमन्त्रण कार्ड भी अंग्रेजी में ही छपाने में बड़प्पन का अनुभव करते हैं। हमारे प्रधान मन्त्री से लेकर प्रायः सभी मन्त्री अब शायद हिन्दी जानते ही नहीं। दूर दर्शन पर अपने इन नेताओं के दर्शन प्रायः नित्य होते हैं परन्तु हिन्दी में उनकी आवाज सुनने को हम तरसते हैं। उस दिन हम अपना परम सौभाग्य मानते हैं जब कभी हमारे प्रधान मन्त्री या मन्त्री गण किसी सभा को (भले ही वह मात्र राजनीतिक लाभ के लिये आयोजित की गयी हो) हिन्दी में सम्बोधित करते हैं। तब केवल यह आशा बंधती है कि हिन्दी अभी जीवित है। पूरी तरह से नहीं मरी। शायद बच जाये। एक समय था जब हिन्दी को सारे देश की सम्पर्क भाषा मानकर स्वाधीनता के बाद हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा के गौरवशाली पद पर प्रतिष्ठापित करने का हमारे नेताओं का संकल्प था। स्वाधीन भारत के संविधान में उसे वह गौरवपूर्ण स्थान दिया भी गया, परन्तु हमारी दास वृत्ति ने उसे वह गौरव लेने नहीं दिया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी का गढ़ माना जाता था परन्तु यहाँ भी अब सरकारी, गैर सरकारी विज्ञापन पट अंग्रेजी में ही अधिक देखे जा सकते हैं। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के नाम पर संचालित गांधी आश्रमों के विज्ञापन भी दूर दर्शन पर अंग्रेजी पट से युक्त दिखायी पड़ते रहते हैं।

अंग्रेजी मीडियम स्कूलों की भरमार हो गयी है। हिन्दी के लिए नारा देने वाले भी अपने बच्चों को उन्हीं स्कूल में पढ़ाने की होड़ में सम्मिलित हैं। अब वे भी अपने दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी का प्रयोग करने में संकोच का अनुभव नहीं करते हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादक, प्रतिनिधि भी प्रधान मन्त्री आदि विशिष्ट नेताओं के पत्रकार सम्मेलनों में अंग्रेजी के प्रयोग में ही अपना, अपने पत्र का गौरव मानते हैं।

सारे प्रदेश और देश में विदेशी वस्तुओं के प्रति असीम आकर्षण सभी का बढ़ गया है। आज सम्पन्न, समृद्ध, बड़े लोगों में वे ही गिने जाते हैं जिनके घरों में, विदेशी सामग्री, विदेशी रहन-सहन की भावना बेशुमार हो। आज उनकी ही देख-रेख, सुख सुविधा देने की अधिक सोची जाती है जो अपने को इस देश की संस्कृति सभ्यता से अलग ही रखना चाहते हैं। जिनके धर्म स्थान विदेशों में, जिनकी भाषा की लिपि विदेशी, जिनकी चेतना प्रेरणा केन्द्र विदेशों में है। आज के परिवेश में ऐसे ही लोगों को जो अपने देश में अपना कुछ नहीं देखते, अपितु गीदड़ भभकी देकर देश को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ना चाहते हैं महत्व दिया जाने लगा है।

राजनीति के खिलाड़ी अपने निजी स्वार्थ, महत्व के लिए उनकी भाषा में ही बोलने उनकी बात को महत्व देने में ही सतत यत्नशील रहते हैं। उन्हें अल्प संख्यक कहकर गलत सही सभी कुछ उनका–उनके लिए मनवाने को आतुर रहते हैं।

चाहे अंग्रेजी भाषा हो, चाहे उसकी लिपि हो, चाहे उर्दू भाषा या उसकी लिपि हो उसका उद्गम भारत को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ने वाले देशों से है। इन भाषाओं और लिपियों के लिये समर्पित जीवन अपने को कितना ही देश भक्त कहे परन्तु निश्छल मन उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

जिनके धर्म स्थान मक्का, मदीना यरुशलम में हों और वे वहीं के निर्देशन से ही इस देश की धार्मिकता बदलना चाहें उनकी देश भक्ति संदिग्ध ही होगी। जिनके प्रेरणा केन्द्र रूस, चीन, अमेरिका, इंग्लैण्ड हों, वे देश भक्ति का कितना ही राग अलापें उनकी देशभक्ति विश्वसनीय नहीं होगी।

सत्य कभी झुठलाया नहीं जा सकता, इतिहास बदलने का प्रयत्न मात्र विडम्बना होगी–जो इस देश में आक्रान्ता बनकर आये हम पर जोरजुल्म ढाया और हम पर दीर्घकाल तक शासन किया वे आज भी अपने स्वरूप को वैसा ही बनाना व देखना चाहते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

आजकल दूर दर्शन पर एक अमीर खुसरो नामक धारावाहिक प्रसारित हो रहा है। वह मानों सारा इतिहास ही बदल डालेगा। हमारा शासन समझता है कि ऐसे प्रदर्शनों से मुसलमानों के प्रति आक्रान्ता भाव समाप्त हो जायेगा देश में अमन चैन हो जायेगा। तमस जैसे धारावाहिक दिखाकर हिन्दुओं को दंगा फसाद करने वाला और मुसलमानों को दयालु सिद्ध करके देश में सुख शान्ति बढ़ जायेगी और उनकी सत्ता की गद्दी सुरक्षित रहेगी।

हमने सभी को अपनाया मुसलमान ईसाई कोई भी आये सबको अपने घर में स्थान दिया सबको अपने में रमाने और उनमें रमने का प्रयत्न किया। परन्तु उन्होंने सदा उसका गलत लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उन्होंने कभी हमको अपना नहीं माना। अपनी पहचान अलग ही रखने का संघर्ष करते रहते हैं। हमारे राजनीतिक नेतागण हिन्दू मुस्लिम ईसाई के भाई चारे का नारा खूब लगाते हैं परन्तु मुसलमान बादशाहों के गोवध बन्दी, मन्दिरों को तोड़कर मस्जिद में बदलने के फरमानों की याद कभी उस वर्ग को नहीं दिलाते। ईसा मसीह के सत्य, प्रेम, स्नेह, दया के निश्छल भावों को अंगीकार करने–बलात् प्रलोभन या धोखेबाजी से, मजबूरियों का लाभ उठाकर ईसाई बनाने की प्रक्रिया को बन्द करने का–मार्ग कभी नहीं सुझाते। वह अपने बयानों में तथाकथित अल्प संख्यकों की विघटनकारी भावनाओं को ही प्रश्रय देते हैं।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

आर्यो ! "आर्यावर्त" बनाने का समय आ गया है

[भोलानाथ दिलावरी, प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर]

यदि अब भी आपने आलस्य प्रमाद न छोड़ा, तो देश के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। मलेच्छ शक्तियां इसे टुकड़े करने में बुरी तरह सक्रिय हैं।

आओ। "आर्यावर्त"–हिन्दू राष्ट्र का मिल, बीजारोपण करें। महर्षि का यही परम लक्ष्य था।

करीब १५० वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती से जब पूछा गया कि हमारे देश एवं जाति का पूर्ण कल्याण कब होगा। उत्तर मे मन्त्र द्रष्टा ऋषि ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब तक आर्य सन्तान हिन्दू में धर्म प्रेम–एक भाषा–एक भावना, जागृत नहीं होता, तब तक देश जाती का पूर्ण उत्थान–कल्याण न होगा।

भारत की वर्तमान स्थिति को तनिक देखो किस प्रकार अल्प संख्यक जातियां समूचे देश में पूरी शक्ति के साथ साम्प्रदायिकता फैला देशके टुकड़े-टुकड़े करने में सक्रिय हैं। विदेशी शक्तियों से सहायता ले रही हैं, षड्यन्त्र रच रही हैं। काश्मीर, उत्तर प्रदेश, केरल आदि में मुसलमान, पंजाबमें सिख, पूर्वोत्तर क्षेत्रोंमें नागालैण्ड, मिजोरम मेघालय, त्रिपुरा, आदि में ईसाई। इधर हम आर्य सन्तान–हिन्दू हैं, जिनका वस्तुतः यह आदिकाल से देश है, चेतनाहीन से सब कुछ देख रहे हैं। हमारी संख्या कोई ६० करोड़ से कम नहीं। और यह अल्प संख्यक डेढ़ दो या ३–४ करोड़ से अधिक नहीं। परन्तु हम एकता के पाठ को भुला कर, अपनी ही अज्ञानता से, अपने ही देश को एक नये "सेक्यूलर" [धर्मनिपेक्षता] के रोग में ग्रसित कर, इसे एक 'सराय' बना डाला है।

इन अल्प संख्यकों के हौसले हमने ही इतने बढ़ा दिये हैं कि यह हमारी बहु संख्यकों की मान्यताओं को पैरों तले रौंद रहे हैं। गो-वध जारी है। भगवान राम भगवान कृष्ण जिनके इर्द गिर्द हमारी आर्य संस्कृति घूमती है, के जन्म स्थानों पर भी हमारा अधिकार नहीं। हमारे ही समक्ष हमारे पिछड़े वर्ग हरिजनों को यह मुसलमान ईसाई बनाने के लिये असंख्य धन–पेट्रो-डालर व्यय कर हमें अल्पसंख्यक बनाने में रात दिन, लगे हुये हैं। यदि अब भी हमने होश न सम्भाला, अपनी आर्य चेतना जागृत न की, तो आने वाला समय हमारे लिये बड़ा भयानक रूप धारण कर लेगा, ऐसा निश्चित दिखाई पड़ रहा है।

महर्षि दयानन्द इस सब स्थिति को भांप चुके थे। वह आयु भर इस स्थिति से दुःखी-बेचैन रहे। राती जागा किये। प्रयत्नशील रहे कि कैसे आर्य सन्तान हिन्दू में आर्य-चेतना, जागृत की जावे। इसी के लिये जिये और मरे। मरने से पूर्व हम आर्य समाजियों पर यह जिम्मेदारी डाल गये। इसी तरह महात्मा हंस राज जी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जाति में नव जीवन–आर्य चेतना जगाने हेतु स्कूल कालेज गुरुकुल खोले, जिसके फलस्वरूप ही हम आर्य डेढ़-दो करोड़ हो गये हैं। परन्तु अब जबकि यह संस्थायें खूब बढ़कर फल-फूल रही हैं, अपने ध्येय से विचलित हो, भटक गईं हैं। यह अपनी सन्तानों को पूर्ण ध्येय आर्य बनाने के लिये स्थापित की गई थीं। जबकि स्थिति यहाँ तक आ गई है कि इन संस्थाओं में इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। हो भी कैसे, जबकि इनके शिक्षक प्रायः अनार्य हैं। इस स्पष्ट वादिता के लिये मैं क्षमा चाहूंगा और साथ ही इन संस्थाओं, को अविलम्ब ठीक मार्ग पर लाने के लिये इनके कर्णधारों से अपील करूंगा। हमारी इन संस्थाओं ने स्वयं को धोखा देने के लिये केवल कभी कभी कुछ मन्त्रों को रटाने को ही धर्म-शिक्षा समझ रखा है। जब तक अपने पूर्वजों का गौरवमय जीवन उत्पादक इतिहास, संस्कृतिसे उज्ज्वल चरित्र हम अपने बच्चोंके हृदयगम न करायेंगे, उनमें अपने धर्म, संस्कृति के प्रति उत्कट प्रेम प्यार कैसे बन पायेगा। कहना होगा कि हमें अपने बच्चों को ऐसे संस्कार नित्य प्रति देने होंगे। अपनी इन शिक्षण संस्थाओं के स्वय निरीक्षणार्थ, कि वह कहां खड़े हैं संकेत मात्र कहना चाहूंगा कि क्या हमारा प्रत्येक बच्चा वीर बलिदानी हकीकत शहीद पं० लेखराम शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि के तप त्याग के प्रसंग, भगवान् राम–कृष्ण के वीरता के प्रसंग जानता है आदि आदि? क्या हमारे बच्चे जानते हैं कि हमारा देश अतीत मे आर्यावर्त के नाम से संसार भर में विख्यात था? और कि यहाँ क्या, संसार भर मे आर्यों का चक्रवर्ती में राज्य था? सब ज्ञान विज्ञान हम आर्यों ने ही समस्त संसार को दिये थे? ऐसा अब सब संसार के इतिहासकारों पुरातत्व वेत्ताओं एव वैज्ञानियों ने प्रमाणित कर दिया है। इस सम्बन्ध में मैंने बहुत से तथ्य एवं इतिहासकारों पुरातत्व वेत्ताओं की सम्मतियों का संकलन भी किया है। जो फिर कभी समय आने पर सर्व-विदित कराऊंगा।

आर्य राज्य–आर्यावर्त का बीजारोपण

सर्वप्रथम हमें हिन्दू-मात्र विशेष रूप से भावी पीढ़ी के मन, मस्तिष्क में इस तथ्य की जानकारी हर प्रभावी ढंग से बैठानी होगी और साथ ही उनके हृदय में दृढ़ संकल्प इसके प्रति उत्पन्न करना होगा। इस हेतु मैंने एक प्रार्थना का संयोजन किया है। इसे प्रतिदिन प्रातः स्कूलों में बुलवाना चाहिये। इसे सत्संगोंमें भी सब मिलकर श्रद्धापूर्वक बोला करें। इस प्रार्थना का स्पष्ट लक्ष्य आने वाली एवं वर्तमान आर्य जनता में, देश को सच्चे अर्थों में 'आर्यावर्त'–आर्य राज्य बनाने की भावना का बीजारोपण करना है। यदि इस कार्य को पूरी ईमानदारी से किया जायेगा तो बड़ा सुन्दर फल मिलना निश्चित है। अपनी धर्म संस्कृति के प्रति प्रेम श्रद्धा बढ़ेगी।

ध्यान रहे इस प्रार्थना के प्रारूप में इसे और प्रभावी बनाने के लिये, उचित परिवर्तन परिवर्धन किया जा सकता है। विद्वान एवं कवि महानुभाव इस पर मनन करेंगे, ऐसी मुझे पूर्ण आशा-विश्वास है।

आर्यों चेतो/आलस्य–प्रमाद को त्यागो, ऋषि के लक्ष्य–आर्य राज्य बनाने का दृढ़ संकल्प लो, कार्य क्षेत्र में तत्पर लगा दो।

प्रार्थना का सम्पूर्ण एवं सारांश प्रारूप

यह प्रार्थना प्रत्येक आर्य समाज के सत्संग में, सब उपस्थित स्त्री पुरुष बच्चे सम्मिलित रूप मे एक साथ बोला करें। हिन्दू आर्य-स्कूलों में भी नित्य अनिवार्य रूप से प्रार्थना के समय बुलवायें।

प्रार्थना–हे परम पिता परमात्मन! हम आर्य आपकी अमर सन्तान हैं। सृष्टि के आदिमें, लगभग दो अरबवर्ष पूर्व, आपने हमें पवित्र

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ द्वारा

सम्पन्न वेद प्रचार शिविर दि० २४-६-८८ शुक्रवार को गंगा हाइड्रल भोलाझाल पर हुआ। श्री मनवीर जी, श्री कर्णसिंह एवं श्री सोमाराम जी प्रेमी के भजनोपदेश हुए जिसमें उन्होंने वर्तमान कुरीतियों को उखाड़ फेंकने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्री पं. इन्द्रराज जी प्रभात आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का भी भाषण हुआ। उन्होंने अपने भाषण में देश पर गम्भीर खतरों की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए जनता को बताया कि इस समय विदेशी इशारों पर देश को तोड़ने का बड़ा भारी षड्यन्त्र चल रहा है। विदेशी शक्तियाँ पंजाब-त्रिपुरा मे उग्रवाद और आतंकवाद के रूप में, पूर्वाञ्चल प्रदेश में ईसाईकरण के रूप मे, उत्तर प्रदेश आदि मुस्लिम बहुल स्थानों पर इसलामी करण के रूप मे तथा उत्पादक क्षेत्रों में साम्यवाद के रूप में बड़ी सक्रिय हैं। इसका मूल कारण शिक्षा नीति का गलत होना है। १६ वर्ष में एक सन्तति तैय्यार हो जाती है। शिक्षा नीति में चरित्र, राष्ट्रीयता आदि का अभाव होने के कारण स्कूल कालेज आदि राजनीति के अड्डे मात्र रह गये हैं। नई शिक्षा नीति कोई उत्साहवर्धक नहीं है। केवल मात्र गुरुकुल शिक्षा पद्धति जिसका आज के विज्ञान और तकनीक से सम्बन्ध हो और जहां स्वामी विवेकानन्द जी जैसे विद्वान-तपस्वी-त्यागी-चरित्रवान आचार्य हों। वहीं पर ही युवाजन का निर्माण हो सकता है। अतः जनता को गुरुकुल का मुक्तहस्त से सहयोग करना चाहिये।

अन्त में स्वामी विवेकानन्द जी ने मेले का अर्थ समझाते हुए बताया कि जिस प्रकार थोड़ी देर में मेला समाप्त होने पर वह स्थान छोड़ते हुये किसी को दुःख नहीं होता उसी प्रकार संसार छोड़ते हुये व्यक्ति को कभी भी दुःखी नहीं होना चाहिये। आज गंगा दशहरा पर बहुत लोग श्री डोंगरे जी महाराज की कामना में स्वर्ग कामना से गये हुये हैं वहां जो वृद्ध स्त्री-पुरुष हैं और जितना युवावर्ग है वह यहां गंगा स्नान में आया हुआ है। इन दोनों को तो तथा कथित मुक्ति हो जायेगी परन्तु हम जैसों का क्या होगा जो न तो यहीं हो स्नान कर रहे हैं और न ही उस भागवत् कथा में हैं। स्वामी जी ने हंसते हुए कहा कि वास्तव में व्यक्ति को अन्तर्मुखी होने की आवश्यकता है। जब वह अन्तर्मुखी होगा तभी उसका कल्याण होगा। इसलिये इस मेले में आकर हम अन्तर्मुखी होने की प्रेरणा लें तभी यहां आने की सफलता है।

इससे पूर्व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भी कार्यक्रम हुआ। ब्रह्मचारियों ने संस्कृत गीतिका, व्याख्यान धर्म क्या है, प्रयाणगीतम् हिन्दू महान क्यों है, ऋषि महिमागीत एवं सुखास्त्यकारी आदि सफल प्रभावोत्पादक प्रदर्शन किये। मन्त्री जी ने त्रुटियों और कष्टों के लिये क्षमा मांगी। शान्ति पाठ के पश्चात् शिविर की कार्यवाही समाप्त हुई। आगन्तुकों के भोजन की व्यवस्था गुरुकुल में हुई।

इन्द्रराज मन्त्री

भजनोपदेशक त्रियुगी नारायण पाठक से सावधान

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों, विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश की समाजों को सावधान करते हुये सूचित किया जाता है कि गोरखपुर निवासी भजनोपदेशक त्रियुगी नारायण पाठक अनेक आर्य समाजों से

आर्य समाज, अल्मोड़ा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त "आधुनिक भीम-भारत" का अद्भुत शक्ति प्रदर्शन

आर्य समाज, अल्मोड़ा का ८४ वां वार्षिकोत्सव ३, ४, ५ जून, १९८८ को सम्पन्न हुआ। उत्सव में डा० सावित्री देवी शर्मा, वेदाचार्या श्री विक्रमसिंह, शास्त्रार्थ-महारथी, तथा ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त "आधुनिक भीम" के विविध विषयों पर हुये प्रवचनों से श्रोताओं ने लाभ उठाया।

इस अवसर पर श्री विश्वपाल जयन्त, अधिष्ठाता, गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, जिनको कि भूतपूर्व राष्ट्रपति वराह वेंकट गिरि द्वारा "आधुनिक भीम' की उपाधि" से अलंकृत किया गया है, ने कतिपय आश्चर्यजनक शौर्य-कर्तव्यों से स्थानीय क्रीडांगन में दर्शकों को आह्लादित कर दिया। उन्होंने ३, ४ तथा ६ सूत की मोटी लोहे की १० फुट लम्बी छड़ों को गर्दन के बल से मोड़ कर रख दिया, ८०० ग्राम की पीतल की थाली को हाथों से चीर कर अलग कर दिया, हाथी बांधने वाली लोहे की जंजीर को कमर के बल से तोड़ दिया, हाथों से कांच को पीस डाला, २ सूत लोहे की दो सरियों को मोड़ कर हाथों में चूड़ी की तरह पहन लिया, छाती के ऊपर ५० किलोग्राम का पत्थर घन से तुड़वाया और चलती हुई जीप को बाहुबल से रोक दिया। स्थानीय जनता ने इस शक्ति प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मार्ग व्यय लेकर बैठ जाते है तथा उत्सवों एवं प्रचार कार्यों में नहीं जाते इन मौके पर न पहुंचने से उत्सव अव्यवस्थित हो जाता है तथा अधिकारी किंकर्तव्य विमूढ़ स्थिति में हो जाते है। इतना ही नहीं वे मार्ग व्यय का धन न जाने पर वापस भी नहीं करते। अनेक समाजों से ऐसी शिकायतें प्राप्त हुई हैं। श्री त्रियुगी नारायण पाठक निरन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के विरुद्ध कुप्रचार एवं प्रान्तीय सभा तथा सार्वदेशिक सभा और उसके सम्मान्य अधिकारियों के विरुद्ध अमर्यादित एवं अपमान जनक भाषा एवं व्यवहार का प्रचार कर रहे है। अतः जो समाजें इन्हें इस सूचना के पश्चात भी प्रश्रय देंगी तथा बुलायेंगी वे भी सभा विरोधी कार्यों में लिप्त समझी जायेंगी तथा उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।

जिन समाजों से श्री त्रियुगी नारायण मार्ग व्यय लेकर भी न पहुंचे हों तथा मार्ग व्यय भी वापस न किया हो वे तत्काल सभा कार्यालय को सूचित करें।

गोरखपुर, बस्ती तथा देवरिया जिले में प्रचार हेतु एक स्थाई उपदेशक एवं भजनोपदेशक डा० महावीर शास्त्री की नियुक्ति सभा द्वारा कर दी गई है। जिन समाजों को आवश्यकता हो वे "पूर्वी प्रचार विभाग, आ० प्र० स० उ० प्र० कार्यालय-आर्य समाज मन्दिर बक्शीपुर गोरखपुर" से पत्र व्यवहार कर उनका कार्यक्रम प्राप्त कर सकती हैं। अन्य भी हर प्रकार की सहायता एवं सहयोग प्रचार एवं उत्सव के कार्यक्रमों में इस विभाग द्वारा सदैव उपलब्ध होगा।

डा० विनयप्रताप सभा उप मन्त्री

आर्यो ! "आर्यावर्त" बनाने का समय आ गया

[शेष पृष्ठ ६ से आगे]

वेद ज्ञान चार महर्षियों द्वारा प्रदान किया एवं ब्रह्मादि मन्त्र-द्रष्टा महा ऋषियों की परम्परा, पवित्र सत्य-सनातन आर्य धर्म के प्रचारार्थ चलाई।

प्रभु जी ! आपने ही इस सत्य सनातन-वेद-धर्म के प्रचारार्थ महा. प्रतापी चक्रवर्ती महाराजों को आदि मनु-महाराज, श्री भगीरथ, रघु, श्री रामचन्द्र, श्री कृष्णचन्द्र द्वारा यह परम्परा चलाई। उन्होंने 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्' आपकी आज्ञा के पालनार्थ भू मण्डल पर चक्रवर्ती आर्य-राज्य स्थापित किया। जो निरन्तर, सतयुग, त्रेता द्वापर युग पर्यन्त चलता चलता आया।

प्रभु जी ! हमें शक्ति दो, इस लक्ष्य की पूर्ति अर्थ प्राणपण से जुट जावें और मार्ग में आई हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान देकर दृढ़ता से मुकाबला कर सकें।

प्रार्थना का संक्षिप्त सारांश रूप भी दे रहा हूं। प्रार्थना चाहे जैसे भी हो-जिन शब्दों में हो, निम्न सारांश का समावेश अवश्य होना चाहिये अथवा इसे ही बोल दुहरा लें-

हे परम पिता ! आपकी महान कृपा से हमें आर्य कुल में जन्म मिला। इस नाते आपने हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान का अधिकारी बनाया। हम प्रतिज्ञा लेते हैं :-

हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे। सब आर्य सन्तान हिन्दू मात्र को जागृत कर सत्य सनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

प्रवेश प्रारम्भ

श्री मद्दयानन्दार्य गुरुकुल नगला कठोला (एटा) प्रदेश शासन से सहायता एवं मान्यता प्राप्त तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से सम्बन्ध निःशुल्क शिक्षण संस्था है। छात्रों के भोजन आवास की भी व्यवस्था है। विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क स्थापित करें।

प्रधानाचार्य
(भगवानसिंह मधुर)
आचार्य, एम० ए० सा० रत्न

"शुद्धि समारोह"

आर्य समाज, आर्य नगर, ज्वालापुर सहारनपुर के प्राङ्गण में २४-० ६-८८ को श्री अनवर हुसैन पुत्र श्री युसुफ कौम गाड़ा मुस्लिम जमात निवासी बुड्ढाखेड़ा सहारनपुर पूर्व महाराणा प्रताप वंशीय को इस्लाम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इनका नवीन नाम श्री अमर लाल आर्य रखा गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० रामप्रसाद वेदालङ्कार आचार्य एवं उपकुलपति गु० कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार थे। इस अवसर पर अनेक नर-नारियों विद्वान विदुषियों ने पुष्प वर्षा करके हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा श्री अमरलाल आर्य को विभिन्न रूपों में आशीर्वाद दिया।

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में-

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय में सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम भेजें रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न है तथा १५% कमीशन भी देय है।

	मूल्य
धर्म शिक्षा भाग १ ..	१-५०
" " भाग २ ..	१-५६
" " भाग ३...	२-७०
" " भाग ४...	२-७५
" " भाग ५...	३-६०
" " भाग ६...	४-७५
" " भाग ७...	४-१५
" " भाग ८...	३-००
" " भाग ९...	४-००
" " भाग १०...	३-००
" " भाग ११...	४-००
" " भाग १२...	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

वेद प्रचार की महती योजना

आर्य जगत का सर्वोच्च उद्देश्य वेद प्रचार है। हमारी योजना है कि विशिष्ट वेद भाष्य हो जिसमें एक मन्त्र में विहित ज्ञान विज्ञान, राजनीति, अध्यात्म, आयुर्वेद आदि आदि पर शब्दार्थ, पदार्थ, भावार्थ पर विस्तृत व्याख्या हो। इस निमित्त पाँच हजार रु० का एक तथा दूसरा तीन हजार रुपये का एक दोनों ही पुरस्कार प्रति वर्ष चालू रहें। दूसरा पुरस्कार उपनिषद, वाल्मीकि रामायण, भागवत-महाभारत आदि के अन्तर्गत कथाओं में वैज्ञानिक स्वरूप की श्रेष्ठ रचना पर सार्वजनिक रूप से भेंट किया जाय। देशी विदेशी जो भी राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें इस योजना का स्थाई रूप से संचालन का उत्तरदायित्व ले सकें वे हमसे सम्पर्क स्थापित करने की कृपा करें जिससे उन्हें इस योजना का प्रारूप भेजा जा सके। इससे वेद प्रचार कार्य तो होगा ही वैदिक विद्वानों का आदर व आर्थिक सेवा भी बन सकेगी।—पता—आचार्य निर्विकार गुप्त, ५६, द्वारिकापुरी, मुजफ्फर नगर।

महाराणा प्रताप के देश प्रेम और संघर्ष से प्रेरणा लेने का संकल्प

मेरठ १७ जून। महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह मे महाराणा के जाति धर्म से ऊपर उठकर देशहित मे आजीवन संघर्षरत रहने के आदर्श से प्रेरणा लेने का सकल्प लिया गया है।

सांसद, विधायक और राज्य संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे कुँवर मुहम्मद अली ने लोगो का आह्वान किया कि वे महाराणा के आदर्शों से प्रेरणा लेकर देश को मौजूदा सकट की घड़ी से उबारें। उन्होंने कहा कि इस देश का दुर्भाग्य है कि जनता साजिश का शिकार होकर हमेशा से बंटी रही है–कभी उसे अंग्रेजो ने बांटा तो कभी दूसरी ओर परस्त ताकतो ने। यही वजह है कि आज देश की एकता, अखण्डता खतरे मे है और ऐसे मौके पर राणा प्रताप के आदर्श हमारा मार्ग निर्देशन कर सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री प० इन्द्रराज जी ने कहा महाराणा जैसा संघर्षशील व्यक्तित्व विरले ही जन्म लेता है। महाराणा की सेना मे शाहशाह सूरी के पौत्र का सेनापति होना उनकी धर्म निरपेक्षता को साबित करता है, तो एक भील के हाथो मे सेना के बड़े हिस्से की कमान होना–छुआछूत और जातिवाद को उनके द्वारा समाप्त कर दिये जाने का।

देवनागरी इन्टर कालेज के प्रधानाचार्य प्रोफेसर शिवानन्द ने कहा कि अकबर को अंग्रजो ने महान स्थापित जरूर करवा दिया, पर उसमे महानता जैसी कोई बात नहीं थी। उसके हरम मे पांच हजार बेगमे थी, जिनमें से साढ़े तीन सौ तो विदेशी थीं। इसके अलावा वह जिस औरत को चाहता था, शादीशुदा होने पर भी तलाक दिलवाकर अपने हरम मे शामिल कर लेता था। उन्होंने कहा कि दूसरी ओर महाराणा घास की रोटी खाकर जीवनभर देश को विदेशी शक्ति के चंगुल से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करते रहे।

स्वामी दिव्यानन्द ने कहा कि यह स्थापित धारणा है कि कोई भी देश जब अपनी सभ्यता–संस्कृति से दूर हो जाता है तो उसके बुरे दिन शुरू हो जाते है। भारत के साथ भी यही दुर्भाग्य जुड़ गया है। उस देश को जिसकी पहचान सात सौ साल का इस्लामिया और दो सौ साल का ब्रितानी शासन भी नहीं मिटा पाया उसे मौजूदा राजनीतिज्ञो ने हल्का कर दिया है। आपसी झगड़ो और पाश्चात्य भौतिकवाद में उलझाकर जनता को प्राचीन सभ्यता से दूर ले जाने की साजिश की गयी है।

शकुन्तला सिसोदिया ने कहा महाराणा के साथ भामाशाह को भी इतिहास कभी नहीं भूल सकता, जिसने अपना सारा धन देश भक्ति के संघर्ष के लिए दे दिया। उन्होंने कहा कि यह जयन्ती तभी सफल नहीं मानी जायेगी, जब बच्चों को वह माहौल दिया जाए जिसमे वे महाराणा के आदर्शों से प्रेरणा लेकर देश भक्त बनने को प्रेरित हों।

कार्यक्रम का संचालन महाराणा आदर्श प्रचार समिति के बालिदान ने किया। इस अवसर पर महाराणा पर, संस्कृत मे लिखी एक पुस्तक का विमोचन भी उपपुलिस महानिरीक्षक श्रीराम अरुण ने किया। बच्चों ने गीत और भजन भी कार्यक्रम मे प्रस्तुत किया।

गुरुकुल स्नातक डा० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय विदेश मे

डा० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय, अनुसंधान अधिकारी, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् (भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय) दक्षिण एशियाई क्षेत्र में विदेश यात्रा कार्यक्रम सम्पन्न कर मई मासान्त मे स्वदेश वापिस आ चुके है। आपने दो विश्व तथा एशियाई स्तर की वैज्ञानिक संगोष्ठियो मे अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये तथा इनमे से एक विश्व सम्मेलन मे रिपोर्टियर के रूप मे भी भाग लिया है।

आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) से सम्बद्ध रह चुके हैं।

उत्सव सम्पन्न

–आर्यसमाज वैदिक आश्रम रेलवे रोड ऋषिकेश का वार्षिकोत्सव दिनांक १० जून से १२ जून ८८ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ, नगर के अनेक स्त्री पुरुषो ने उत्सव मे भाग लिया।

श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल के भजनोपदेश को बहुत सराहा गया।

–आर्यसमाज उझानी का ७७ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २७, २८, २९ जून १९८८ ई० को बड़ समारोह पूर्वक बस्टाबर, उझानी मे मनाया गया जिसमे श्री पूज्य स्वामी ओमानन्द जी योग तीर्थ आर्य समाज जंसबा पो० बकला जि० मथुरा, श्रीमती मनोरमा शर्मा भजनोपदेशिका ग्राम गोपी का नगला, पो० अतरौली जि० अलीगढ़। श्री रवीन्द्रकुमार सक्सेना (प्रवक्ता) आर्य गायन पार्टी उझानी, एवं प० फूलचन्द शर्मा भजनोपदेशक के प्रवचनो से जनता लाभान्वित हुई।

–दिनांक २५ से २९ जून ८८ को आर्यसमाज रमपुरा निकट बहजोई जि० मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव बड़ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ समारोह मे ब्र० कडक अज श्री ब्रह्मचारी व आचार्य रामजात जी द्वारा वेदो के प्रमाण से यह साबित किया कि सती प्रथा अवैदिक व समाज के लिए कलक है। इनके प्रवचनो द्वारा समाज में पुनंजागृति हुई आर्यसमाज रमपुरा के १० नये सदस्य बनाये गये।

–आर्यसमाज बांकनेर जि० अलीगढ़ का वार्षिक महोत्सव दिनांक ११, १२, १३ जून सन ८८ को सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री आशाराम व गजराज शर्मा व मोहनलाल जी के ओजस्वी भजनोपदेश हुए और श्री श्री १०८ श्री स्वामी वेदानन्द दण्डी (एटा) द्वारा पूज्य प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी जी ने सन्यास ग्रहण करके, पूज्यपाद स्वामी ईश्वरानन्द नाम संस्कार ग्रहण किया।



गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार में प्रवेश सूचना

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुसार आश्रम प्रणाली के आधार पर संचालित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में ६ से ११ वर्ष के छात्रों के प्रवेश के लिए आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। विद्यालय में संस्कृत, व्याकरण तथा धर्म शिक्षा आदि प्राच्य विषयों के साथ ही अंग्रेजी, विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के स्तरीय अध्यापन का प्रबन्ध है। भोजन, चिकित्सा, आवास, क्रीड़ा आदि पर होने वाला व्यय ही छात्रों से लिया जाता है। शिक्षा का प्रबन्ध सर्वथा निःशुल्क है।

पाँच रुपया मनीआर्डर भेजकर नियमावली एवं प्रवेशपत्र प्राप्त करें। प्रवेश नये शिक्षासत्र १ जुलाई १९८८ से नियमित रूप से खुलेगा।

आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

गुरुकुल अयोध्या मे प्रवेश प्रारंभ

निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या फैजाबाद का आगामी शिक्षा सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में अयोध्यास्थ गुरुकुल में धार्मिक, नैतिक शारीरिक एवं सामाजिक विकास हेतु अपने बालकों का प्रवेश कराकर लाभान्वित हों। सम्प्रति प्रथमा से आचार्य पर्यन्त पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था है, सम्प्रति प्रवेश शुल्क १२५) है। दूसरे मास से भोजन शुल्क ८०) मास है।

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद

दर्शनानन्द-ग्रन्थ माला प्रथम पुष्प
न्यायदर्शनम् (हिन्दी भाष्य सहित)

डिमाई अठपेजी, पृष्ठ २०४, मूल्य १५ रु०

प्रकाशक-गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण साहित्य 'दर्शनानन्द ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित करने की विशाल योजना है। स्वामी जी ने लगभग १०० ग्रन्थ दर्शन, धर्म, उपनिषद्, स्मृति एवं सैद्धान्तिक विषयों पर लिखे है। सर्व प्रथम स्वामी जी के दर्शनों के भाष्य प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रथम पुष्प 'न्याय दर्शनम्' छप गया है। इसमें गम्भीर दार्शनिक मन्त्रों को बहुत सरल हिन्दी में समझाया गया है। सभी साहित्य प्रेमी इसके द्वारा प्राचीन ऋषियों के गहन ज्ञान का लाभ उठा सकते हैं। यह ग्रन्थ सभी पुस्तकालयों एवं साहित्य प्रेमियों के लिए उपादेय है।

द्वितीय एवं तृतीय पुष्प के रूप में "वैशेषिक दर्शनम्" और "सांख्यदर्शनम्" प्रकाशनाधीन हैं। प्रधानाचार्य

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, (सहारनपुर)

शिलान्यास

आर्य समाज घोड़ासहन पूर्वी चम्पारन (बिहार) की यज्ञशाला का शिलान्यास श्री रामचन्द्र सिंह 'क्रान्तिकारी' (नेपाल) के पौरोहित्य में श्री बुद्धिसिंह 'पंजाबी' के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय आर्य समाज के सभी सदस्य गण मंत्री एवं प्रधान उपस्थित थे।

विज्ञान के माध्यम से कुतर्क

—डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

रविवार २२ मई १९८८ के साप्ताहिक सार्वदेशिक में श्री नरसिंहदेव अरोड़ा, अजमेर, की निम्न पंक्तियां छपी हैं।

प्राचीन शास्त्रों में शयन (सोने) सम्बन्धी एक सरल विधि का वर्णन मिलता है, तदनुसार सदैव उत्तर की ओर पैर करके सोना चाहिये, अर्थात् सोते समय सिर दक्षिण दिशा की ओर रहना चाहिये। विज्ञान ने पृथिवी को एक बड़ा चुम्बक माना है जिसके दो ध्रुव हैं—एक उत्तर और दूसरा दक्षिण। चुम्बक की बल रेखाएं उत्तर से दक्षिण की ओर गमन करती हैं, अतः उत्तर की ओर पैर करके सोने से उसका अनुकूल प्रभाव हमारे शरीर में बहने वाले रक्त पर पड़ता है, जिससे शरीर व्याधि-मुक्त रहता है, दुःस्वप्न भी नहीं आते हैं, इत्यादि।

मुझे कोई आपत्ति नहीं चाहे आपका सिर दक्षिण की ओर हो, या पश्चिम की ओर या किसी भी दिशा में, पर विज्ञान के नाम पर ऐसे कुतर्क देना हमारे विद्वानों को शोभा नहीं देता। धरती का चुम्बक भौगोलिक उत्तर-दक्षिण से कितनी भिन्न दिशा में है, रक्त शरीर में सभी दिशाओंमें चक्कर लगाता है, दुःस्वप्नों के कारण कुछ और ही हैं-इन्हें समझने का प्रयत्न करना चाहिये। मैं चाहता हूं कि आर्य युवक गम्भीरता से उच्चस्तरीय विज्ञान का अध्ययन करें, और उससे लाभान्वित हों, विज्ञान के नाम पर हेत्वाभास और कुतर्क से हम दूसरों को भ्रम में न डालें।

शोक समाचार

आर्य समाज सोदर (बेलघरा रोड) बलिया के सदस्य एवं भूतपूर्व मन्त्री श्री गुलाबचन्द जी का स्वर्गवास रविवार दि० २६-६-८८ को उनके निवास स्थान पर हो गया। वे सोदरी बाजार के लिए अपना तन, मन, धन अर्पण देते रहे।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

बिन्दकी (फतेहपुर) आर्यसमाज व दयानन्द इण्टर महाविद्यालय के संस्थापक एवं प्रधान प्रतिष्ठित श्री बाबूलाल जी आर्य-का स्वर्गवास कुछ दिनों की अस्वस्थता के उपरान्त दि० १६-६-८८ को हृदयाघात से हो गया था। उनकी आत्मा की चिरशान्ति एवं सद्गति हेतु 'शान्ति-यज्ञ' का आयोजन दि० १९-६-८८ को प्रातः ८ बजे किया गया।

निर्वाचन

आर्य समाज हल्द्वानी (नैनीताल)

प्रधान-डा० अमृतलाल विनायक
मन्त्री-श्री प्रेमलाल जी खण्डेलवाल
कोषाध्यक्ष-श्री पृथ्वीराज जी

आजादी के चालीस साल बाद

(पृष्ठ ५ का शेष)

निश्चय ही उनका यह मार्ग सौहार्द पनपाने में सहायक कभी नहीं हो सकता।

इस देश की धरती पर उत्पन्न व्यक्ति यदि इस देश के पूर्वजों को अपना पूर्वज नहीं मानता, उन्हें उनका वह मान नहीं देता तो वह देश भक्त नहीं देश द्रोही ही कहा जायेगा। राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का विवाद देश भक्ति और देशद्रोह का विवाद है। सही और गलत चिन्तन का विवाद है। जातीय आधार पर प्रदेशों के निर्माण, भाषायी आधार पर प्रदेशों का निर्माण साम्प्रदायिक आधार पर क्षेत्रों के निर्माण की भावना देश भक्ति पूर्ण नहीं देशद्रोही भावना है। चाहे खालिस्तान की मांग हो, चाहे गोरखालैंड की मांग हो, चाहे मिजोरम मणिपुर नागालैण्ड या आसाम की समस्याएं हों—इसमें देशप्रेम कहीं नहीं नजर आता—देशद्रोही प्रवृत्तियां ही हावी होकर अपना काम कर रही हैं।

अपनी भाषा और अपनी संस्कृति से अधिक महत्व दूसरे की भाषा और संस्कृति को जो देता है वह देश भक्ति के लिये कलंक है। सभी भाषाओं को पढ़ना चाहिये, उन्हें सम्मान भी देना चाहिए परन्तु गर्व अपनी भाषा और संस्कृति पर ही होना चाहिए।

आज हमारे देश मे धन को छिपाने, छिपाकर विदेशो में—सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ रही है। विदेशों में धन जमा होना भी बड़प्पन की निशानी सी बन रही है। परन्तु—कर—प्रवञ्चना, राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुंचाना, राष्ट्रीय सम्पत्ति का अपव्यय, राष्ट्रीय सम्पत्ति को विदेशों मे जमा कराने की प्रवृत्ति खुला देशद्रोह है, यह जघन्य अपराध है। आज हममें से कितने लोग इन प्रवृत्तियो मे ग्रस्त या बचे हैं यह तो हम स्वयं ही जान सकते हैं परन्तु—देश मे फैलता वर्ग भेद, जातीय संघर्ष विघटनवाद की प्रवृत्ति, एक दूसरे पर कीचड़ उछालने की प्रवृत्ति देश को विदेशी ताकतों से ग्रसता एक विचारक के लिये—चाहे सत्ता में बैठे हो या सत्ता के बाहर हो सभी को देश भक्ति प्रश्न वाचक चिन्ह बन जाती है।

आज राजनीति की पैंतरेबाजी में जब विरोधी शासक पक्ष पर और शासक पक्ष विरोधी पक्ष पर निर्वाचनों में बूथ कैप्चरिंग, जबरिया लाखों लोगों को वोट न डालने देने के आरोप लगाता है और जब यह कहता है कि अमुक जब हमारे साथ शासन में थे तब उन्होंने यह गलत काम किया था, अब विरोध में चले गये तो उसका विरोध करने लगे हैं—सुनकर बड़ी हंसी आती है और आश्चर्य होता है कि जिन पर देश की समृद्धि, आजादी की रक्षा का गुरुतर भार है वे चाहे शासन पक्ष में हों या विपक्ष में—ऐसी बेहूदी बातें करके देश की रक्षा कैसे करेंगे। शासक की कुर्सी पर बैठने वाले का तो और अधिक दायित्व बढ़ जाता है कि वह क्या करे, और क्या कहे क्योंकि कुर्सी पर बैठ कर वह व्यक्ति किसी दल, जाति या वर्ग विशेष के लिए नहीं प्रदेश और देश के लिए उत्तरदायी होता है, वह सम्विधान के लिए उत्तरदायी होता है।

देश की बिगड़ती स्थिति को देखकर सभी देशभक्त विचारकों के मन में अवसाद की रेखायें उभरना स्वाभाविक है। इस कठिन अवसर पर आर्य समाज का दायित्व देश के लिए अत्यधिक बढ़ जाता है—महर्षि दया[...] आर्य समाज की स्थापना ही इसीलिए की थी कि हर बुराई से संघर्ष करती हुई अच्छाई की संस्थापना करके देश की समृद्धि के लिये प्रयत्न करते रहना हम अपना धर्म मानें—अतः हम सभी आर्यजनों का कर्त्तव्य बनता है कि हम स्वयं अपने को टटोलें और देखें फिर सम्पूर्ण देश वासियों को कहें कि—आइये जरा शान्त चित्त होकर विचार करें कि हमारे अन्दर देशभक्ति के बीज अधिक पनप रहे हैं या देशद्रोह के। आजादी के चालीस साल बाद हम आजादी को सुरक्षित रखने का यत्न कर रहे हैं या नष्ट करने का, देश को हम समृद्ध बनाने के लिये प्रयत्नशील हैं, या कंगाल बनाने के लिए यत्न कर रहे हैं—स्वयं अपनी समीक्षा करें और समीक्षा करके देश द्रोही प्रवृत्ति के सर्वथा नष्ट करके देशभक्ति के अंकुर उपजाने के लिए प्रयत्नशील हों। स्वयं देश भक्त बनें औरों को बनायें। ताकि भारत माता का गौरव लुटने से बचे—पराधीनता की ओर ले जाने वाले घहराते बादल छटें। स्वाधीनता अक्षुण्ण हो। सुख समृद्धि बढ़े। परस्पर प्रीति स्नेह हो, चारो ओर सुख शान्ति और आनन्द हो।

★

आँचरू कलाँ [बुलन्दशहर] में आर्यवीर दल शिविर संपन्न

दिनांक १० जून से १९ जून तक आंचरूकलां इन्टर कालिज में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जिले का सर्व प्रथम आर्य-वीर दल शिविर आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ों आर्यवीरों ने जिले के कोने-२ से आकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प० उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल संचालक श्री जयनारायण जी आर्य ने शिविर का उद्घा-टन ध्वजारोहण द्वारा किया। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रमुख संचा-लक श्री प० बाल दिवाकर जी ने भी चार दिन शिविर में रहकर आर्यवीरों को उद्बुद्ध किया। आपने आर्यवीरों को देश बचाने की एक-मात्र आशा बताते हुए संगठित होकर आर्यवीर दल को व्यापक बनाने का निर्देश दिया।

समापन समारोह में बड़ी संख्या में जिले के गण्यमान्य जन सम्मि-लित हुए। श्री सेठ मेधानन्द जी आर्य [बिरसी] ने अध्यक्षता की। उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल के संचालक आचार्य धर्मपाल जी ने दीक्षान्त भाषण दिया तथा आर्यवीरों को शपथ दिलाई। उत्साह के साथ आगे बढ़ने और शिविर में प्राप्त शिक्षाओं एवं कार्यों पर दृढ़ता से आचरण करने का निर्देश दिया।

शिविर के मुख्य आयोजक एवं संचालक जिला मंत्री आचार्य धर्मेन्द्र जी शास्त्री थे। श्री चौ० विजयपाल सिंह, श्री शिवध्यान सिंह, प्रधाना-चार्य, श्री मनोहरलाल जिन्दल, श्री प्यारे लाल गुप्त, श्री बाबूलाल आर्य, श्री महेन्द्रपाल जी आदि पूरा समय देकर विशेष सहयोगी रहे।

धर्मेन्द्र शास्त्री मन्त्री

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा [बुलन्दशहर]

नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
आषाढ़ शुक्ल ३
१७ जौलाई रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

अघमर्षण

सर्वज्ञ सर्व व्यापक प्रभु को, है अनुपम शक्तिमत्ता ।
परमेश्वर विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता ।।

प्रभु ज्ञान पूर्ण तप द्वारा, हो प्रकट वेद की विद्यायें ।
हो कार्य रूप में प्रकृति प्रकट, इससे ही महाप्रलय आयें ।
जल से आकाश भरे सारा, लोक पिण्ड इससे बन जायें ।
यों चक्र चाल से इनको ही, हों सम्वत्सर की गणनायें ।
सब प्रकृति तत्व गतिशील किए, की अनव-समुद्र गुणवत्ता ।
परमेश्वर विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता ।।

वशकर्ता धर्ता स्वामी ने, दिन निशि का काल विभाग किया ।
पूर्व-सृष्टि की भांति नई का, आरम्भ सहज में राग किया ।
सब-सूर्य चन्द्र औ पृथ्वी का, नभ अन्तरिक्ष का भाग किया ।
सन्तुलित लोक लोकान्तर में, आकर्ष शक्ति अनुराग किया ।
प्रभु की इस अद्भुत रचना की, है सचमुच ही अकथ महत्ता ।
परमेश्वर विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता ।।

ब्रह्माण्ड विविध के निर्माता, यह सृष्टि अपार तुम्हारी है ।
कैसे पार तुम्हारा पाये, ये मानव की लाचारी है ।
तुम सूर्य सूर्य के प्रभापूर्ण, तव प्रखर ज्वाल उजियारी है ।
अघ-आत्म गर्व का हो विनाश, यह नन्हीं आत्म हमारी है ।
इस भव भंगुर में भाव भरी, भगवान आपकी भगवत्ता ।
परमेश्वर विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता ।।

मनसा परिक्रमा

१-जिस ओर तुम्हारे ओ३म चरण, हो वहीं हमारा भी विचरण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म नमन ।।

प्रिय अग्नि पूर्व के ज्योतित पति
सम्मुख आदित्य उन्हीं की कृति
अघ बन्ध से करते रक्षा
निज किरण बाण विस्तार सुगति ।
विद्वान आप्त या सूर्य किरण, दें तमस तोड़ हो प्रभाकरण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म नमन ।।

परमेश ओ३म को नमस्कार
आदित्य ईश को नमस्कार
जो अन्धकार में प्रभा करे
उन रश्मि करों को नमस्कार
जो जगत तुम्हारे कण-कण क्षण, सद्गुणी धारण करते रक्षण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म नमन ।।
यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे
तेरे जबड़े हैं सुदृढ़ सघन, हो जाय सहज ही द्वेष-दमन ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म नमन ।।
२-जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, हो वहीं हमारा भी विचरण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।
दक्षिण के इन्द्रदेव अधिपति
वायें प्रिय पितर उन्हीं की कृति
वचन बाण अज्ञान मिटायें
दें अधर्म को भट बहुगति ।
ऐश्वर्यवान हे इन्द्र नमन, करें मिल सब इन्द्र अनुकरण ।
मैं क[illegible] मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।
परमेश ओ३म् को नमस्कार
प्रिय इन्द्र सुपति को नमस्कार
जो अधम से रक्षा करते
उन पितृ वचन को नमस्कार
जिस वक्रचाल के कृमि कण, ये कीट पतंग आदि विष गण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।
यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे ।
कुटिल भ्रष्ट कटु मार्ग अपावन, तजकर कुकर्म हो सदाचरण ।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।
(क्रमशः)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

आषाढ़ शुक्ल १०, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक १७ जौलाई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

- आर्यसमाज आन्दोलन या संगठन
- क्या दफनाना दाह संस्कार से अधिक देशभक्ति पूर्ण है ?
- सती प्रथा वेद विरुद्ध है
- ईसाई मत की समीक्षा
- कब पूजा क्यों ?
- सभा मन्त्री का तूफानी दौरा
- सभा सार सूचनायें
- कविता कहानि:

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	१०

आर्यसमाजों में आर्यसभासद बनने के नियम में महत्वपूर्ण संशोधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा उपनियम की धारा ४ (क) का संशोधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को निर्देश दिया जाता है कि वे तात्कालिक प्रभाव से, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक १८ जून १९८८ में निम्नवत हुए संशोधित उपनियम धारा ४ (क) के अनुसार आर्यसभासद बनाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें। यह नियम नये तथा पुराने सभी आर्यसभासदों पर लागू माना जायगा।

—मनमोहनतिवारी
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक अधिवेशन

दिनांक : १८ जून, १९८८
स्थान : आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल, दिल्ली
समय : सायंकाल ४ बजे

उपनियम की धारा ४ (क) का संशोधन निम्न प्रकार हुआ

अब तक प्रचलित नियम

जिसका नाम किसी आर्य समाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय का शतांश मासिक व वार्षिक अथवा २५०) वार्षिक व अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत तक हो तो वह आर्य सभासद् माना जा सकता है।

संशोधित नियम

जिसका नाम किसी आर्य समाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय का शतांश वार्षिक १०००) रुपया या अधिक या कम से कम ५) रुपया मासिक समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत तक हो, वह आर्य सभासद् माना जा सकता है।

टिप्पणी : समस्त आर्य जगत् में प्रचलित उपनियम जो सार्वदेशिक सभा के नैमित्तिक अधिवेशनों द्वारा १९३५ और १९७१ में संशोधित हुए थे, उन सब में उपरोक्त नया संशोधन तत्काल लागू समझा जावे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान

जरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकविमैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—आषाढ़ शुक्ल १० संवत् २०४५, रविवार २४ जौलाई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

मन्दिर प्रवेश पर—

आर्य समाज का दृष्टिकोण

ऋषिवर्य दयानन्द के उदयकाल से पूर्व बहुसंख्यक हिन्दू समाज के पूजास्थल विभिन्न देवी देवताओं से मण्डित मन्दिर ही थे। इन मन्दिरों के निर्माण और उनमें विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियों का प्रतिष्ठापना का इतिहास काफी पुराना है। इसके पीछे पौराणिक युग की विभिन्न कल्पनाएं, मान्यताएं और ईश्वर के काल्पनिक साकारत्व के अनेक रूप, अनेक कार्य और अनेक प्रसङ्ग कार्य कर रहे हैं। तत्कालीन विद्वानों में उस समय इस बात की होड़ लगी हुई थी कि वे ईश्वर के स्वरूप को किस प्रकार मूर्तरूप में दर्शाकर अधिक से अधिक संख्या में अपने अनुयायी बढ़ाएं। वेदों में आये प्रभु के अनेक गुणकर्मवाचक नामों को पौराणिक युग के पण्डितों ने अपनी अपनी तूलिका से रंग-रंग कर अनेक आकृतियों वाले अनेक भगवानों को जन्म दे दिया था और उनकी पूजा उपासना के विभिन्न तरीके निकाले थे। राज्याश्रय पाकर अनेक छोटे से छोटे बड़े से बड़े विशाल मन्दिरों का निर्माण भी कराया था। नाथद्वारा, तिरुपति देवस्थानम्, मीनाक्षीपुरम्, रामेश्वरम्, बाबा विश्वनाथ, बद्रीविशाल आदि के मन्दिर इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। इन मन्दिरों में जो मूर्तियां प्रतिष्ठापित की गई हैं उनके दर्शनों का उद्देश्य यही रखा गया है कि मनुष्य उनके दर्शनों से पवित्र होगा। और पवित्र वही हो सकता है जो अपवित्र होगा—ऐसी स्थिति में देखा जाय तो अपवित्र को दर्शन करने का अधिकार पहिले आता है।

काशी विश्वनाथ के मन्दिर पर लिखा हुआ है "आर्येतराणां प्रवेशो निषिद्ध"। इसी प्रकार हमने सुना है "काबा" में गैरमुस्लिमों का प्रवेश वर्जित है। बात बहुत साफ़ है इनके प्रवेश से यदि मन्दिर मस्जिद अपवित्र होंगे तो फिर अपवित्र पवित्र कहां होंगे और उनके निर्माण का तो मूल उद्देश्य ही विनष्ट हो जायेगा। धार्मिक दृष्टिकोण से आर्यसमाज की बात बहुत स्पष्ट है—ईश्वर न मन्दिर में बंद है न मस्जिद में "एको देवः सर्वभूतान्तरात्मा" वह सर्वव्यापक है, ज्ञानचक्षुओं से वह सर्वदर्शनीय है। सामाजिक दृष्टिकोण से प्रत्येक पूजास्थल पर प्रत्येक व्यक्ति को जाने का सामाजिक एवं नैतिक अधिकार है। आर्य समाज ने कभी न ईश्वर को एकांगी माना और न किसी स्थान को किसी व्यक्ति या समाज विशेष के लिये प्रतिषिद्ध माना। इसी सामाजिक एवं नैतिक अधिकार को दिलाने के लिए आर्य समाज ने हैदराबाद में सत्याग्रह किया और अब नाथद्वारा में प्रदर्शन किया जा रहा है। हरिजन हमारे समाज के शक्तिशाली अंग हैं। किसी भी धार्मिक स्थल पर जाने अथवा पूजा करने का उन्हें पूरा-पूरा अधिकार है। यह अधिकार दिलाने के लिये हम सदा लड़ते रहे हैं लड़ते रहेंगे।

परन्तु धार्मिक दृष्टि से हम अपने हरिजन भाइयों से यह कहना चाहते हैं कि तुम आर्य हो, अनार्य नहीं, इन पौराणिकों ने मन्दिरों में अनार्यों का प्रवेश निषिद्ध—किया है। और वहां जाकर तुम्हें मिलेगा क्या? हम तुम्हें तुम्हारा सामाजिक अधिकार तो दिला ही देंगे पर वहां जाकर मूर्तिपूजा करने की अनुमति कदापि नहीं देंगे। हमारे आर्य समाज मन्दिर तुम्हारे लिए सदा से खुले हुए हैं वहां क्यों नहीं आते? किसने हाथ पकड़ लिया है। बताओ तो सही हम उसके हाथ तोड़ देंगे। यहां तुम्हें सम्मान मिलेगा। यज्ञवेदि पर बैठकर ब्रह्मा का आसन मिलेगा। संस्कार विधि हाथ में लेकर पवित्र पुरोहित बनोगे और गायत्री मन्त्र के पवित्र उच्चारण से मन और शरीर दोनों पवित्र होंगे यहां न कोई वर्गसंघर्ष है न कोई भेदभाव। एक साथ बैठकर हम खायेंगे पियेंगे और सबल आर्य राष्ट्र के सबल अंग बनकर विश्व को आर्य बनाने का स्वप्न चरितार्थ करेंगे। मन्दिर में हम तुम्हें प्रवेश दिलाकर मूर्तिपूजक बनाने के इच्छुक भी नहीं हैं। हम तो तुम्हें उस स्थान पर बुला रहे हैं जहां ईश्वर का सच्चा स्वरूप और उसकी भक्ति का सच्चा मार्ग तुम्हारी बाट जोह रहा है।

अतः हमारी आर्य जगत और उसके शिरोमणि नेतृत्व से यही प्रार्थना है कि अपने इन भाइयों को आर्य समाज में लाने का, बुलाने का, सम्मान देने का आह्वान दो आन्दोलन करो—जहां "समानीव आकूतिः, समाना हृदयानि वः" का निनाद हो रहा है। जहां पानी से पानी मिलकर एक हो गया है, सबके मुख से "वेदमन्त्रों के स्वर समवेत होकर गूंज रहे हैं।

प्रवेश सूचना

श्री रामशरण आर्य कन्या गुरुकुल सिरसागंज मैनपुरी (उ० प्र०) प्राचीन आश्रम पद्धति अनुसार योग्य अध्यापिकाओं द्वारा व्याकरण दर्शन, उपनिषद तथा आधुनिक विषयों के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था प्राकृतिक वातावरण योगासन आदि की उचित व्यवस्था। आवास एवं शिक्षा निःशुल्क।

विद्याभिक्षु वानप्रस्थ

सूचना

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल नई बस्ती रामापुरा, वाराणसी में सब कक्षाओं का यथावत् अध्ययन आरम्भ हो गया है। नये भवन का निर्माण हो चुका है। आर्ष पाठविधि से वेद अष्टाध्यायी, हिन्दी गणित भूगोल संगीत आदि का उच्च स्तरीय शिक्षण हो रहा है। इस वर्ष से समाज सेवियों, उपदेशकों तथा पञ्जाब के पीड़ित परिवारों की मेधाविनी पुत्रियों के लिए निःशुल्क भोजन, आवास तथा शिक्षण की सुविधायें दी गई हैं। वैदिक शोध (पी-एच० डी०) की भी सुविधाएं हैं। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

—प्र आचार्या

आर्य समाज आन्दोलन या संगठन

[श्री सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट, उपप्रधान आ.स. बच्ची बांस मुरादाबाद]

आर्यसमाज को नव प्रेरणा का आन्दोलन कहा जावे या एक सामाजिक उत्प्रेरणा का संगठन या उसको एक सिद्धांत की श्रेणी मे रखा जावे। मै तो अपने अनुभव के आधार पर ही कहूँगा कि आर्य समाज है विश्व कल्याण का एक महान आन्दोलन क्रान्ति की प्रेरणास्रोत का एक संगठन।

संगठन के स्तर पर आर्य समाज देव दयानन्द द्वारा निर्धारित नियमों के आधार पर मनुष्य मात्र की उन्नति [आध्यात्मिक व सामाजिक] करने का पूर्ण गति से प्रयास करता है और सैद्धान्तिक रूप से प्रत्येक मनुष्य के लिए चाहे वह किसी देश व जाति अथवा धर्म का मानने वाला हो उसका परोपकार करना आर्य समाज का महान् लक्ष्य है।

अध्ययन से यह प्रतिपादित हो चुका है कि आर्यसमाज धार्मिक संगठन का एक आन्दोलन और इसके अतिरिक्त एक जीवन दर्शन है। जिसको अपना कर मनुष्य मनुर्भव के सच्चे व्यापक सिद्धान्त को समझ सकता है और मनुष्य मे मानव की सेवा करने की छिपी भावना जाग्रत हो सकती है।

संक्षेप मे आर्य समाज के नियमों के आधार पर निर्धारित कुछ व्यवस्थायें इस प्रकार हैं--

१—मानव धर्म एवम् विश्व धर्म एक हैं।

ऋषि दयानन्द ने संसार के धर्मों मे परस्पर भिन्नता एवम् दूषित भाव को देखते हुये सार्व धार्मिक सार्व कालिक रूप को जाग्रत करने व स्थापित करने के यथा सम्भव प्रयास किये थे। सत्य ईमानदारी, संयम त्याग सेवा परोपकार, ईश्वर विश्वास आदि धर्म के मूल तत्व हैं, जिनसे किसी का कोई विरोध नहीं है। देव दयानन्द ने लिखा "कि जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानता हू। अर्थात् जैसे सत्य बोलना, सबके सामने मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसे सिद्धातो को स्वीकार करता हू और जो मत मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मै पसन्द नहीं करता'। आर्य समाज का सातवा नियम है-सब से प्रीत पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बतना चाहिये। इस प्रकार धर्म की वैज्ञानिक और बुद्धि संगत व्याख्या सर्व प्रथम दयानन्द ने की।

२—विश्व कल्याण का अमिट लक्ष्य।

महर्षि दयानन्द ने संसार के प्रत्येक प्राणी का समानरूप से कल्याण करने की भावना से आज से ११० वर्ष पूर्व १० अप्रैल १८७५ को बम्बई में आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना की थी। आर्य समाज के नियमों मे छठा नियम है-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। नवा नियम है-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। समाजवाद की सच्ची परिभाषा के आधार पर मनुष्य मात्र की उन्नति करने का इसमें सन्देश है।

३—धर्म का मूल आधार वेद—

दयानन्द ने भारत वर्ष के विभिन्न मत मतान्तरों को भी संगठित करने का प्रयत्न किया। इस देश के प्रत्येक सम्प्रदाय की वेद पर अटूट आस्था है अतः सब वेद को ही अपना धर्मग्रंथ मानते हैं।

४—परोपकार की भावना—

प्रात स्मरणीय देव दयानन्द ने अन्ध विश्वास गुरुडम व पाखण्ड व जड़ मूर्ति पूजा का स्पष्ट रूप से विरोध किया :

दयानन्द ने अन्धविश्वासों व जड़ मूर्ति पूजा का विरोध कर मनुष्य की पूजा का नया सन्देश दिया। जिस देश में करोड़ों की संख्या में दीन हीन जन हों अनाथ और दलित लोग हों वहां उनकी उन्नति करने के स्थान पर किसी पत्थर की पूजा करना, उस पर प्रसादि का चढ़ाना दयानन्द को बेतुका प्रतीत होता था। वे कहते थे कि पूजा ही करनी हो तो किसी अनाथ और दलित की करो। माला पुष्प और धन ही चढ़ाना है तो जड़ मूर्ति की अपेक्षा किसी सजीव प्रतिमा (मनुष्य) पर चढ़ाओ दीन हीन जन भी उसी प्रभू का पुत्र है जिसके तुम हो। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होने सब कर्मकाण्डो को छोड़ कर यज्ञ अथवा हवन तथा अग्नि होत्र करने की प्राचीन परम्परा का पुनः प्रचलन किया। यज्ञ केवल धार्मिक कृत्य ही नहीं है वरन् परोपकार का एक प्रकार है और मनुष्यो को परोपकारी बनने की प्रेरणा देता है। इससे वायु मण्डल पवित्र होता है तथा उनकी प्राण वायु से मनुष्य बलवान बनता है।

५—उचित शिक्षा—

दयानन्द को सबसे बड़ा कष्ट इस बात का था कि मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु है मनुष्य में परस्पर द्वेष वृत्ति है ऊंच नीच की भावना है धनी निर्धन और शिक्षित अशिक्षित का भेद है दयानन्द ने इस दुर्भावना पर कुठाराघात किया।

६—ऊँच नीच के भेदभाव को दूर करने की आस्था—

ऊँच-नीच की वृत्ति को समाप्त करने के लिए वे आवश्यक समझते थे कि मनुष्य मात्र को उन्नति के समान अवसर मिले, उन्नति के समान अवसर का अर्थ है— प्रत्येक को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना। दयानन्द के अनुसार इसमें राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष के आगे कोई अपने लड़के लड़कियो को घर मे न रख सके पाठशाला में अवश्य भेज देवे जो न भेजे वह दण्डनीय हो दयानन्द ने यह भी कहा कि एक जैसे वातावरण में ही सब बालक—चाहे निर्धन की सन्तान हो चाहे धनी की—शिक्षा प्राप्त करे। सबको तुल्य वस्त्र खान पान आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो तभी हम ऊँच नीच की भावना को समाप्त कर सकेंगे। वर्ण व्यवस्था को गुण कर्मनुसार मानने का अर्थ यही है कि सभी को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर दिये जायें।

७—आश्रम व्यवस्था प्रतिपादित हो—

वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है जीवन मे कोरे भौतिकवादी दृष्टिकोण के पनपाने की। नास्तिकता और तज्जन्य दुश्चरित्रता अराजकता आदि दुर्गुणों को सर्वत्र छा जाने की दयानन्द ने जहाँ कोरे निवृत्ति मार्ग का खण्डन किया वहाँ कोरी भौतिकवादी दृष्टिकोण का भी विरोध किया। एक संतुलित दृष्टिकोण के आधार पर भोग के साथ

(शेष पृष्ठ १० पर)

क्या दफनाना दाह संस्कार से अधिक देशभक्ति पूर्ण है ?

लेखक—सत्यवीर त्यागी, २८ पटौदी हाउस नई दिल्ली

पच्चीस जून के पंजाब केसरी ने खुशवन्त सिंह का स्तम्भ "ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर" छपा है। खुशवंत सिंह एक ख्याति नाम पत्रकार हैं, लेकिन उन्हें यह गलतफहमी कैसे हो गयी कि वे ही सर्वज्ञ हैं, यह एक आश्चर्य का विषय है। सरदार जी यदा-कदा उन बातों के बारे में बोलते रहते हैं जिनके बारे में उन्हें जरा भी जानकारी नहीं है।

उक्त लेख में उन्होंने हिन्दू परम्परा पर इस प्रकार का आक्रमण किया है कि जिसकी किसी प्रबुद्ध विचार वाले से तो क्या साधारण ज्ञान रखने वाले सड़क छाप आदमी से भी अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

खुशवंत सिंह जी ने उक्त लेख में कहा है कि हिन्दुओं को अपने शव जलाने नहीं चाहिये क्योंकि इससे करोड़ों टन लकड़ियां प्रति वर्ष नष्ट हो जाती हैं और इस तरह वनों का विनाश होता है। वृक्षारोपण के सदर्भ में कही गयी इस बात में खुशवंत सिंह ने यह भी कहा है कि हिन्दुओं को शव दफनाने चाहिये और चार-पांच साल बाद सब स्थलों पर ट्रैक्टर चला कर फलदार पेड़ लगा देने चाहिये। खुशवंत सिंह कहते है कि हिन्दू धर्म-ग्रन्थों में कहीं भी शवों को जलाने के निर्देश नहीं दिये गये हैं और दफनाना दाह-संस्कार से अधिक देशभक्ति पूर्ण है। आश्चर्य है कि खुशवन्तसिंह स्वयं को हिन्दू धर्म शास्त्रों का ज्ञाता कैसे मानने लगे? यजुर्वेद चालीसवें अध्याय के मन्त्र १५।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्। यजुर्वेद ४०/१५
यजुर्वेद के छठे अध्याय का मन्त्र २१ :
दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मना पृण। यजुर्वेद ६/२१
अथर्ववेद के अठारहवें काण्ड में सूक्त ३ के ७१ वें मन्त्र में
शरीरमस्य सं दाहैनं धेहि सुकृतामु लोके। अथर्ववेद १८/३/७१

उक्त वेद के प्रमाणों से स्पष्ट है कि मृत शरीर का दाह कर्म करना ही अभीष्ट है, ऐसा करना सुकृत कर्म माना है, और दाह कर्म न करना अर्थात शरीर को भस्मी न बनाना सुकृत कर्म नहीं कहा है। गरुड़ पुराण में भी दाह संस्कार का स्पष्ट निर्देश है।

अतः शव का दाह संस्कार करने के स्पष्ट निर्देश हैं खुशवंत सिंह को चाहिए कि वे इन धर्म ग्रन्थों को पढ़ें। शव दहन के बारे में हमारे शास्त्रों का कथन यों ही अकारण नहीं है बल्कि इसके पीछे वैज्ञानिक, और व्यवहारिक कारण हैं। रोग ग्रस्त अथवा किसी भी प्रकार से मृत देह में तुरन्त हानिकर जीवाणु पनपने लगते हैं। प्राणी की जीवनशक्ति ही वह कारण होती है जो देह किसी विषाणु को पनपने से रोकती है। यह जीव शक्ति सतत् उत्पन्न होते रहने वाले इन विषाणुओं से युद्ध कर उन्हें समाप्त करती है। किन्तु प्राणी के मृत्यु के तुरन्त बाद जीव-शक्ति समाप्त होते ही सड़ने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। इसलिये इस देह का किसी न किसी रूप में (नष्ट करना) उन्मूलन आवश्यक हो जाता है। अब इस बात को उन्मूलित करने की दो ही विधियाँ सुरक्षित विधियां बचती हैं। पहली यह कि इसे भूमि में दफना दिया जाये जबकि दूसरी विधि यह है कि इसे अग्नि में जला दिया जाय।

शव को दफनाने में दो व्यवहारिक कठिनाईयां हैं। पहली यह है कि इस प्रकार से शवों को दफनानेमें भरपूर उपजाऊ भूमि का दुरुपयोग होता है। जिस भूमि को विकास करने और अनाज उपजाने के काम में लाया जा सकता था उसे कब्रस्तानों के नाम पर सुरक्षित करना पड़ता है और दूसरे यह कि शवों की उचित देखभाल न की जाय तो इन्हें जंगली जानवर या देह अस्थियों का व्यापार करने वाले लोग निकाल कर ले जाते हैं। पिछले वर्षों ऐसी कई घटनायें अखबारों द्वारा प्रकाश में आई भी हैं। जब कब्रों से शवों को चोरी कर उनके अस्थि-ढांचों को विदेशों में बेचा गया है। इसके अतिरिक्त तांत्रिकों द्वारा इन शवों पर तांत्रिक प्रयोग भी किये जाते हैं और आध्यात्मिक तथा आत्मिक दृष्टि से यह प्रक्रिया मृतस्या के लिये हानिकारक है।

इसके विपरीत वैदिक धर्म-ग्रन्थों में शव-दहन का जो विधान है, वह हर दृष्टि से वैज्ञानिक और व्यवहारिक है। शव को दहन करने से विषाणुओं के फैलने की सम्भावना तो समाप्त हो ही जाती है, इसके किसी दुरुपयोग की भी सम्भावना समाप्त हो जाती है। इसके साथ ही इस धरती की एक इंच भूमि का भी मानव-देह के लिये दुरुपयोग नहीं होता बल्कि शव की बची राख धरती को उपजाऊ बनाने में अंतिम सार्थकता ही व्यक्त करती है।

खुशवंतसिंह के अनुसार जहां तक कुछ लकड़ियों के जलने का प्रश्न है, उसके बारे में तो इतना ही कहा जा सकता है कि वे ऊर्जा के नये साधनोंसे परिचित हो होंगे। ऊर्जा के स्रोत विद्युत,वायुविद्युत तरल गैस और न जाने कितने रूपों में विकसित हो चुके हैं। ऐसी हालत में खुशवंतसिंह ने शव दहन के लिए वन लकड़ी जलाने की जो चिंता व्यक्त की, वह कितनी सार्थक है। लकड़ी ऊर्जा बचाने के लिये शव दहन के लिये विद्युत शव दाह यन्त्रों का भी तो प्रयोग किया जाने लगा है ?

खुशवंतसिंह से चन्द सवाल और है कि जब जून १९८४ में "ब्लू-स्टार" आपरेशन में मारे गये सिख आतंकवादियों के शवों को जलाया गया तब खुशवन्तसिंह ने आदेश क्यों नहीं दिया था ? हाल ही में ब्लैक थंडर आपरेशन में मारे गये उग्रवादियों के शवों को दफनाने की सलाह भी खुशवंत सिंह ने क्यों नहीं दी ?

खुशवंत सिंह बतायें कि सिख शवों को क्या दफनाते हैं ? सिक्ख पहचान बनाए रखने वाले खुशवंत सिंह ने कभी सिक्ख पंथ के प्रमुखों को सलाह क्यों नहीं दी कि वे शवों को दफनाना शुरू कर दें। हम तो सिक्खों को हिन्दुओं से अलग मानते नहीं हैं क्योंकि संविधान की धारा पच्चीसवींमें सिक्खों को हिन्दू माना गया है परन्तु खुशवंतसिंह के आचरण से साफ लगता है कि वे अपने आप को हिन्दुओं से अलग मानते हैं। यदि ऐसा न होता तो हिन्दुओं का या उनके धर्म-ग्रन्थों का नाम लिए बिना वे शवों को न जलाने की बात कह सकते थे। परन्तु उन्होंने तो हिन्दू धर्म-ग्रन्थों के बारे में ही अनभिज्ञता प्रकट कर दी है।

यदि खुशवंत सिंह को सिक्खों से प्रेम है तो हिन्दुओं के विरुद्ध वक्तव्य क्यों दे रहे हैं ? क्या सिक्ख धर्म में किसी शव को दफनाया

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सती प्रथा के विरुद्ध सख्ती की मांग—

सती प्रथा वेद विरुद्ध है

[श्री देवरत्न आर्य आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई]

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री पानाचन्द जैन ने सती प्रथा की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए विरोध किया।

आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज में आयोजित एक सभा में आपने कहा कि वेदों में सती प्रथा का कहीं भी उल्लेख नहीं है और उसे धार्मिक नहीं माना जा सकता।

आपने कहा कि राजपूतों में जौहर के द्वारा जीवन त्यागने की घटनाओं के पीछे पति के पीछे जल मरने की भावना न होकर अपने चरित्र की रक्षा करना होता था। उसमें और सती में बड़ा फर्क है।

ऋग्वेद में जिस ऋचा पर "सती" को धार्मिक बताया जाता है उसके अग्रे शब्द को कट्टर पन्थियो ने "अग्ने" बनाकर स्त्रियों को जलाना धार्मिक नाम दिया जो सरासर अनुचित है। आपने दिवराला जैसी घटनायें न हों इसके लिए सख्त से सख्त कदम उठाने पर जोर दिया। सती प्रथा का प्रारम्भ १६ वीं सदी से प्रारम्भ हुआ। राजस्थान में इसका अधिक प्रसार हुआ।

१७ वीं सदी में सवाई मानसिंह ने जो जयपुर के महाराजा थे उन्होंने कानून निकाला कि कोई भी स्त्री अपने पति के चिता के साथ नहीं जलेगी। मुगल शासक ने भी इसका विरोध किया था। अकबर को जब यह मालूम हुआ कि जोधपुर की एक रानी सती होना चाहती है तो वे स्वयं वहां गये और उसे रोका। अतः इतिहास सती प्रथा के विरोध से भरा पड़ा है। राजा राममोहनराय के बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् उनकी भाभी को जिन्दा जला दिया गया इसे देखकर उनके मन में इस प्रथा के विरुद्ध विरक्ति हो गई। १८२६ मे उन्होंने अंग्रेज सरकार से अनुरोध कर इसका कानून बनवाया तब भी अनेक पंडितो ने इसका विरोध किया और १२० पण्डितो ने इस पर हस्ताक्षर किये थे।

जुलाई १६३२ मे प्रीवी काउन्सिल ने सती प्रथा को अवैध करार दिया अतः इसके विरोध का अधिकार किसी को भी नहीं यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट को भी नहीं। केवल सुप्रीम कोर्ट मे इस पर फिर विचार ही किया जा सकता है।

१६५० में भारत ने अपना नया संविधान बनाया। उसकी धारा २५, २६ में यह कहा गया कि धर्म के सम्बन्ध में प्रत्येक नागरिक स्वतन्त्र है किन्तु धर्म का तरीका लोक व्यवहार, सदाचार व स्वास्थ्य के विरुद्ध है तो मान्य नहीं होगा। एक्ट २६ में भी प्रत्येक संस्था धर्म में स्वतन्त्र है यदि वह लोकाचार, व्यवहार व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं हो।

सती प्रथा को प्रथा नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह लगातार अपनाया नहीं जाता था न ही प्रत्येक व्यक्ति इसे अपनाता है अतः इसे प्रथा नहीं मान सकते। इसलिए सती प्रथा धार्मिक प्रथा नहीं है। अधार्मिक है अनुचित है। धारा ५१ में नागरिक के कर्तव्य बताये हैं— महिलाओं की इज्जत, सुरक्षा उनकी देखभाल आदमी का कर्तव्य है। वैसे सती होना सुना है लेकिन यह कभी नहीं सुना कि कोई आदमी सती हुआ। क्या यह प्रथा मात्र नारी पर लागू होती है ?

अतः मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित मानते हुए इस प्रथा को खत्म करना होगा। भारतीय संविधान में लिंग भेद मानना अवैध है इसलिए सती प्रथा अवैध है। अतः राजस्थान कोर्ट ने इसके विरुद्ध जो कानून पास किया वह उचित है।

ए-२१ में कहा गया है कि जीने का अधिकार सबको है। आत्म हत्या का नहीं। सती होना अवैध है किन्तु सती के कारण को गौरवान्वित करना भी गलत है उसे भी सजा दी जानी चाहिए।

इस अवसर पर ओंकार नाथ जी आर्य ने श्री पानाचन्द जी जैन का स्वागत किया तथा महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद ने माननीय न्यायाधीश महोदय को वैदिक साहित्य भेंट करते हुए उनका स्वागत किया तथा इस सभा का संयोजन किया।

इस अवसर पर कैप्टिन देवरत्न आर्य सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री चुने जाने पर स्वागत किया गया श्री देवरत्न जी आर्य समाज सान्ताक्रुज के भी उपप्रधान हैं।

न्यायाधीश पानाचन्द जैन बम्बई महानगरी में लायन्स क्लब विले-पार्ले के नव निर्वाचित पदाधिकारियों के शपथ विधि समारोह की अध्यक्षता करने हेतु पधारे थे।

उन्होंने लायन्स क्लब के नये अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य एवं अन्य पदाधिकारियों को शपथ दिलाने के बाद अपने अध्यक्षीय भाषण में लायन्स क्लब को नेत्रदान आन्दोलन को तेज करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विश्व में चार करोड़ व्यक्ति नेत्रहीन हैं, जिनमें एक करोड़ व्यक्ति केवल भारतवर्ष में हैं। अतः आपको इस सामाजिक अभाव को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

उन्होंने चमरिया जी को वरिष्ठ उप प्रधान, श्री तिलावट को मन्त्री एवं श्री दीनदयाल अग्रवाल को कोषाध्यक्ष के पद की शपथ दिलाई।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने अध्यक्ष पद ग्रहण कर अपने भाषण में कहा—लायन्स क्लब का प्रारम्भ गरीब एवं निर्धन वर्ग की सेवाओं के उद्देश्य को लेकर हुआ था। मेरे नेतृत्व में यह क्लब उसी मार्ग पर अग्रसर होगा।

उन्होंने कहा कि आज लायन्स क्लब में पांच सितारा होटलों की संस्कृति पनप रही है। मैं अपने क्लब को इस संस्कृति से दूर रख कर "सेवा एवं मानवता संस्कृति" की ओर ले जाने का प्रयत्न करूंगा।

उन्होंने सदस्यो से कहा कि आप क्लब की सभाओं में पांच सितारा होटलों में जो खर्च करते हैं कम से कम उतना ही धन जन सेवा एवं मानवीय सेवाओ के लिए भी व्यय करें।

आम तौर पर लायन्स क्लब की बैठक में अंग्रेजी भाषा का बोल बाला होता है। परन्तु यह कार्यक्रम हिन्दी भाषा में हुआ और कार्यक्रम का शुभारम्भ वेदमन्त्रों के पाठ से हुआ।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं इकनामिक ट्रान्सपोर्ट आर्गेनाइजेशन के प्रबन्ध निदेशक श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने कैप्टन देवरत्न आर्य की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रसंशा की एवं कहा कि कैप्टन आर्य की प्रेरणा से मैं बम्बई के भाण्डुप उपनगर में बनने वाले डी० ए० वी० कालेज भवन के लिए ५१ लाख रुपये दान की घोषणा करता हूं।

*

ईसाई मत की समीक्षा

[श्री सोहन लाल अग्रवाल, अधिवक्ता, जबलपुर]

ईसाई मत की प्रसिद्ध पुस्तक बाईबिल है। उसका हिन्दी का संस्करण 'धर्मशास्त्र के नाम से प्रकाशित है। हिन्दी संस्करण का नाम 'धर्मशास्त्र' अबोधजनों को भ्रमित करने की क्रूर चाल है। इस शास्त्र में धर्म–कर्म की कोई व्याख्या नहीं है।

बाईबिल को महर्षि दयानन्द ने पढ़ा और इसको आपत्तिजनक जानकर अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें समुल्लास में सत्यासत्य निर्णय के लिये न किसी को दुःख देने व हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के लिए अपनी समीक्षा लिखी है, महर्षि द्वारा प्रस्तुत समीक्षा पर पादरियों ने बाईबिल मे अनेक स्थानो पर संशोधन किये हैं। परन्तु वे लोग बाईबिल के मूल लेख में परिवर्तन नहीं कर सके।

बाईबिल की उत्पत्ति पुस्तक पर्व ३ आयत ९–१०–११–१२–१३ में लिखा है—परमेश्वर [योहिवा] ने पुकार कर आदम से पूछा "तू कहाँ है?" उसने कहा मैं तेरा शब्द सुनकर डर कर बाड़ी मे छिप गया क्योंकि मै नंगा था" परमेश्वर ने पूछा "किसने तुझे बताया कि तू नंगा है?" जिस वृक्ष का फल खाने को मैने तुझे वर्जा था क्या तूने उसका फल खाया है? आदम ने कहा जिस स्त्री को तूने मेरे सग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया और मैंने खाया। तब परमेश्वर ने स्त्री से पूछा कि तूने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा कि सर्प ने मुझे बहका दिया और मैंने उसे आदम को खाने के लिए दिया। जब आदम को प्रथमतः वृक्ष का फल खाने से मना किया। तो आदम की सन्तान ईसाई पादरी और ईसाई जनता मे धार्मिक मामलों में तमीज नाम की कोई प्रवृत्ति देखने में नहीं आती।

भारतीय संस्कृति में तो–स्थान २ पर मेधा के लिये, बुद्धि के लिये प्रार्थनायें हैं–यथा :

१–ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु॥

अर्थ–हे रक्षक। ज्ञानप्रकाश स्वरूप प्रभो! जिस मेधा बुद्धि की प्रार्थना देवगण और पितर जन करते हैं उसी मेधा बुद्धि से मुझे भी आज मेधावी करो।

२–ओ३म्। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो–यो नः प्रचोदयात्। गायत्री॥

अर्थ–हे रक्षक। देव उत्पादक–सवितः। आपका प्रकाश अन्धकार का नाशक है। आपका भर्ग हमारी पाप वासनाओं का नाशक है। हम आपके भर्ग स्वरूप का नित्य प्रति ध्यान करें। देव हमारी बुद्धियों को सुप्रेरणा दे।

इसी कारण से भारत की संस्कृति अध्यात्म और शान्ति की रही है। यहां ही ऋषि और मुनि हुये। ईसाई सभ्यता के प्रभाव से पश्चिम के देशों की सभ्यता भौतिकी और मारकाट की रही है।

★

श्री नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला में योग शिविर संपन्न

श्री नारायण स्वामी आश्रम तल्ला में २७–६–८८ से ४–७–८८ तक योग शिविर सर्व श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती श्री स्वामी दयानन्द जी विदेह, श्री स्वामी केवलानन्द जी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी श्री स्वामी आत्मानन्द जी तथा आचार्य सुधीन्द्रनाथ शास्त्री जबलपुर एवं श्री रामपाल जी आदि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। आश्रमवासी साधक श्री स्वामी सज्जनानन्द जी एवं श्री स्वामी सोमानन्द जी ने यज्ञ योगादि प्रशिक्षण की सुन्दर व्यवस्था की। साथ ही श्री रामेश्वरदयाल जी अग्रवाल उनकी पत्नी एवं अभ्यागत मातृमण्डल ने योग शिविर में सबके भोजन जलपान आदि की सुव्यवस्था से सबका स्वागत किया। सभी महानुभावों ने आश्रम के इस योग शिविर की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। इसके प्रेरणा स्रोत आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मन-मोहन तिवारी जी हैं।

–सम्वाददाता

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरंभ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महा विद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रों का प्रवेश एक जुलाई १९८८ से आरम्भ हो गया है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला, इस गुरुकुल की अपनी विशेषतायें है।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

नरेशकुमार शास्त्री एम० ए०
आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर
जिला जालंधर (पंजाब)

सात्विक दान

आर्यसमाज नयाबांस देहली के उत्सव की समाप्ति पर श्री पं० धर्मा-नन्द जी भजनीक ने ५१००० इक्कावन हजार रु० की राशि दान में दी इस धन से आर्यसमाज शिवा जी पार्क शाहदरा देहली में नेत्र अस्पताल खोला जायगा–पिछले वर्ष भी श्री पंडित जी ने भारत भर के भजनीकों को आ० स० मन्दिर मार्ग दिल्ली में बुलाकर एक–एक हजार रु० तथा शाल भेंट की थी।

ओमप्रकाश मन्त्री आर्य समाज
नयाबांस देहली–६

कब्र-पूजा क्यों ?

[डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर कालोनी, श्यामगंज बरेली]

धर्मान्धता, अविश्वास, पाखण्ड, अज्ञान और भौतिकवाद के इस युग में, आत्म गौरव, धर्म गरिमा एवं निजी अस्मिता को भूल कर हिन्दू भी अब कब्र और मजारों को पूजते देखे जाते हैं। जिन कब्रों में अब हड्डियाँ भी मिट्टी हो गई होंगी, वहाँ चादरें चढ़ाकर मुरादें और मन्नतें माँग कर, क्या आर्यावर्त के आर्यजन उपहासास्पद नहीं बन रहे हैं ? इन कब्रों को पूजा करने से पूर्व क्यों नहीं सोचते कि आखिर इनमें कौन है ? इतिहास का सिंहावलोकन न करके, अन्धानुगमन की इस दौड़ से क्या सिद्ध करेंगे ? विचारणीय है।

भारत वर्ष का कोई भी नगर ऐसा न होगा, जहाँ मुसलमानों की एक दो मजारें न हों। उत्तर प्रदेश में बदायूँ की पीराने कालियर, बहराइच, आगरा व अजमेरादि मुसलमानों के पूजास्थल हैं। अजमेर के मुईनुद्दीन चिश्ती साहब की कब्र पर्याप्त स्थान घेरे है। इन कब्रों पर हिन्दू भी चादरें चढ़ाते जाते हैं। किन्तु यदि इतिहास उठाकर देखें तो पायेंगे कि कब्रों में दफनाये गये ये पीर आदि हिन्दुओं के द्रोही थे। 'अजमेर की दरगाह वाले ख्वाजा साहिब का नाम मीरा साहब था, जो सरहदी मुसलमान होने के साथ-साथ घोड़ों के व्यापारी बनकर भारत आये थे। जिस दिन भूचाल आया, उस दिन उन्होंने नगर लूटा जैन मन्दिर लूट लिया तथा मूर्तियाँ तोड़ दीं। जब किले से चौहानों की सेना आई तो इसके सब साथियों को चौहानों ने मौत के घाट उतार दिया। तदनन्तर मीरा का चामुण्डराय चौहान से युद्ध हुआ, जिसमें मीरा का सर धड़ से अलग कर दिया चामुण्डराय चौहान ने। हिन्दुओं के भ्रष्ट बुद्धि के परिचायक वे दो कमरे हैं जिन्हें ग्वालियर के सिन्धिया नरेश ने बनवाया है। (भारत का मध्य कालीन इतिहास वात्स्यायन पृष्ठ ६८) खेद है कि चामुण्डराय चौहान की अजमेर में कोई प्रतिमा नहीं है। ऐसा क्यों ?

इसी प्रकार बहराइच का मसूद, महमूद का भान्जा था, जो भारत विजय की इच्छा से मन्दिर तोड़ता तथा हिन्दुओं का कत्ल करता हुआ बदायूँ तक आ पहुँचा, फिर आगे गया। वह अपनी सेना के आगे 'गाय' रखता था, जिससे हिन्दू हिंसा भयात् तीर न चलायें। किन्तु बहराइच के महाराज सुहेलदेव द्वारा मसूद को यमलोक पहुँचा दिया गया। जब मुस्लिम राज्य स्थापित हुआ तो सूर्य मन्दिर तोड़कर मुसलमानों ने मसूद की कब्र वहाँ बनवा दी। नगर का नाम बृहदादित्य था जिसे बिगाड़ कर मुसलमानों ने बहराइच कर दिया। घोड़े पर सवार महाराज सुहेल देव की मूर्ति, उस टीले पर अब स्थापित करवाई गई है, जहाँ से उन्होंने मसूद को मारा था। ऐसी कब्रें और भी हैं जिनके पीर हिन्दुओं के घोर शत्रु थे। इन पीरों ने इस्लाम धर्म का भारत में प्रचार किया, जिससे मुसलमान उन्हें पूजते हैं।

किन्तु हिन्दुओं की बुद्धि को क्या हो गया है ? वैदिक धर्म की शिक्षा है कि हम शत्रुओं को नीचा दिखावें— "वि न इन्द्र मृधो जहि" (अथर्व० १। २१। २) अर्थात् प्रजाघाती दुष्टों को कड़े से कड़ा दण्ड मिलना चाहिए। आज भारत राष्ट्र दिग्भ्रान्त है। सद्-विवेक से वंचित होकर, स्वयं को निरन्तर पतन के गर्त में ढकेलता जा रहा है। आज हम संगठित होकर वेद ज्योति का सर्वत्र प्रसार करें, तभी यह आतंक, अशान्ति, अज्ञान, पाखण्ड, अधर्म व अन्याय का घोर तामिस्र मिट सकेगा। वेदामृत का पान करके, हम जड़ पूजा को त्याग कर चेतन विश्व की आस्तिक होकर अर्चना करें, तभी विश्व-व्यापी शान्ति प्रेम, और सद्भाव का प्रसार हो सकेगा।

★

आवश्यकता

स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारतीय स्मारक ट्रस्ट, श्रद्धानन्द सेवा संघ एवं पिछड़े वर्ग सेवा संघ और इनके द्वारा चलाई जा रही संस्थाओं के लिए ऐसे कर्मठ कार्य कर्ताओं की आवश्यकता है, जो समर्पण और लगन की भावना से सामाजिक सेवा का अवसर चाहते हों और कुशल रूप से इन ट्रस्टों के भिन्न-भिन्न कार्य कर सकते हों। ये कार्य इस प्रकार से हैं— (१) इन ट्रस्टों के नई दिल्ली स्थित कार्यालयों में प्रबन्धक, लेखक, टंकक, जायदाद रक्षक और सेवक के कार्य (२) देश के विभिन्न प्रदेशों और विशेष रूप से वनवासी क्षेत्रों में प्रचारक, प्रबन्धक, अध्यापक, चिकित्सक और बालकों व युवकों के संगठन कर्ता आदि के कार्य। विशेष रूप से उन आर्य सज्जनों के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर है जो गृहस्थ कार्यों से विरक्त हो चुके हों और समाज सेवा में अपना जीवन लगाना चाहते हैं। निर्वाह मात्र के लिए उन्हें सम्मान पूर्वक मासिक आदरी पुरस्कार दिया जायेगा। इस अवसर से लाभ उठाने के इच्छुक लोगों को निम्न पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिए।

पं० ज्ञानचन्द प्रधान श्रद्धानन्द सेवासंघ आर्य भवन
महाशय कृष्ण हाल, जोर बाग नई दिल्ली-११०००३

शोक समाचार

श्रीमती नारायणीदेवी माता श्री श्यामनरायन दास आर्य सभासद् मैनपुरी आर्य समाज की दाह का निधन लगभग ८४ वर्ष की आयु में हो गया है। ईश्वर मृतात्मा को शांति दे।

मन्त्री सभा

बाँदा क्षेत्र में वेद प्रचार

माह मार्च में ग्राम छनेहरा व हथौड़ा जामियाँ अरबिया मदरसा आदि अनेकों ग्रामों में स्वामी देवानन्द मेधावी गुरुकुल एरवा कटरा (इटावा) पं० रामदत्त आर्य भजनोपदेशक प० ज्योतिस्वरूप आर्य पूर्व (रशीद हसन) आदि के सहयोग से आर्य बन्धु वानप्रस्थी द्वारा वेद प्रचार हुआ सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए उपदेशकों ने जनता के सामने एक ऐसा दृष्टिकोण रखा जिससे लोगों ने आर्यसमाज के क्रान्तिकारी निष्पक्ष पाखण्ड रहित विचारों की भूरि-भूरि प्रशंसा की क्षेत्रीय निवासी मुसलमानों ने जब विद्वानों के निष्पक्ष विचार सुने तो अपने ग्रामों में प्रचार के लिए आमन्त्रित किया और बड़ी श्रद्धा के साथ प्रचार में सम्मिलित हो सहयोग दिया और फिर स्वामी देवानन्द जी ने संस्कृत में मौलाना जी से वार्तालाप किया मौलाना जी ने आर्य विद्वानों का स्वागत किया।

आर्यबन्धु वानप्रस्थी वैद्य बाँदा

क्या दफनाना दाह संस्कार से अधिक देशभक्ति पूर्ण ?

[शेष पृष्ठ ४ से आगे]

जाता है ? क्या गुरु ग्रन्थ साहब में दफनाने की बात कही गयी है? और यह तो जाहिर है कि खुशवंत सिंह अपने स्वार्थ के लिये सिख पहचान की बात करते रहे हैं। उन्होंने 'ब्लूस्टार" आपरेशन के बाद इसीलिये पद्मश्री की उपाधि भी लौटा दी थी क्योंकि वे अपने को सिक्ख नेता बताना चाहते थे जबकि इसके पूर्व आतंकवादियों द्वारा हजारों लोगों की हत्याओं पर पद्मश्री लौटाना उन्होंने जरूरी नहीं समझा था। लगता है खुशवंत सिंह अपनी सुविधानुसार जब और जैसे चाहें धर्म को ओढ़ व बिछा लेना पसन्द करते हैं।

यदि सचमुच हिन्दू और सिक्ख धर्म के अनुसार खुशवन्त सिंह दाह दहन के विरुद्ध हैं तो दाढ़ी मुड़ाकर मुल्ला क्यों नहीं बन जाते ? उन्हें मुस्लिम या ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेना चाहिये जिसमें शवों को दफनाने की परम्परा है और अगर उन्हें उसमें (मुस्लिम धर्म) में भी बुराई दिखाई देती है तो वे अपनी दाढ़ी मुड़वाकर स्वयं को धर्म विहीन घोषित करके नये आदर्श की स्थापना क्यों नहीं कर देते ? साम्यवादियों की तरह घोषित कर दें कि मेरा कोई धर्म नहीं है, और मैं सिक्ख पंथ को तिलांजली दे रहा हूं।

परन्तु खुशवंत सिंह का सिद्धांत है कि धर्म के आवरण से पूरा-पूरा लाभ उठाया जाए और जहां वह लाभ नहीं दिखाई दिया तो तथा कथित आधुनिकता का लबादा ओढ़कर स्वयं को प्रगतिशील घोषित कर दिया जाय। लेकिन इस झोंकमें खुशवंत को इतना तो ध्यान रखना चाहिये कि वे अवर्गल प्रलाप तो नहीं कर रहे।

प्रगतिशीलता दिखाने की झोंक में वे धर्म की वैज्ञानिक मान्यताओं का खण्डन करने से पहले तोल लिया करें कि वे स्वयं ही दोहरे आवरण का शिकार तो नहीं हो रहे हैं।

मर्यादाहीन प्रलाप से कोई व्यक्ति महान चिंतक होने का दावा नहीं कर सकता, व्यर्थ विवादों को जन्म देकर चर्चित बनने से इतिहास पुरुष नहीं बना जा सकता। खुशवंत सिंह को समझना चाहिये कि महान चिंतकों की श्रेणी में प्रतिष्ठापित होने के लिए बुद्धि के दरवाजे खोलकर समाज को निर्णायक दिशा देने वाले विचार देने जरूरी होते हैं।

कन्या गुरुकुल में प्रवेश

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून, अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, बृहद पुस्तकालय, नैतिकशिक्षा, चित्रकला, साइन्स, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधियां संस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृति देने की भी सुविधा है। संस्कृत, एवं अंग्रेजी सहित मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रायें ११वीं कक्षा में दाखिल हो सकती हैं। ट्यूशन फीस नहीं ली जाती।

एक और महान आत्मा का अवसान हो गया

आर्य समाज के कई तपस्वी संन्यासी एवं विद्वान गत एक वर्ष में स्वर्ग सिधार चुके हैं। इसी क्रम में धुन के धनी, कर्मठ एवं लगनशील तथा त्यागमूर्ति वानप्रस्थ महात्मा उत्थान मुनि (श्री ओम प्रकाश जी गुप्त) का भी गत २६ जून को हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। महात्मा उत्थान मुनि जी आर्य समाज के उन स्तम्भों में से थे जिन्होंने जीवन भर आर्य समाज के लिये अपना तन-मन-धन लगाकर सेवा की। दो वर्ष पूर्व कुम्भ मेले के अवसर पर हरिद्वार में उन्होंने आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण करके अपना शेष जीवन आर्य समाज एवं मानव मात्र की सेवा में लगाने का संकल्प किया। उनके दिमाग में अनेक महत्वपूर्ण योजनायें थी जिन्हें क्रियान्वित करके वे आर्य समाज की प्रतिष्ठा को चार चांद लगाने के लिये आस्था रखते थे स्वर्गीय वानप्रस्थी जी जिस कार्य में जुट जाते थे उसे पूरा करके ही हटते थे। गत दिनों दिल्ली से दिवराला की पद-यात्रा में जिसे सती प्रथा के विरुद्ध स्वामी अग्निवेश जी ने आयोजित किया, महात्मा जी तीन सौ किलोमीटर पैदल चले और कष्टों को भी सहन किया। उनका संकल्प हर समय मजबूत रहता था। हर पल वे आर्यसमाज के संगठन की उन्नति के लिये सोचते और कुछ न कुछ करते रहते थे।

उनकी तमाम योजनायें अधूरी रह गई। भगवान की लीला ऐसी है जिसके सामने मनुष्य का कोई चारा नहीं चलता। स्व० महात्मा जी अचानक पक्षाघात व हृदयगति रुक जाने से इस संसार से चले गये। उनके निधन से आर्यसमाज ने एक महान विचारक चिन्तक एवं मार्ग दर्शक खो दिया है।

सभा मन्त्री

श्री कन्या गुरुकुल रुद्रपुर तिलहर शाहजहांपुर में प्रवेश

शुद्ध, स्वच्छ ग्रामीण वातावरण में आर्ष पाठ विधि से चलने वाले कन्या गुरुकुल में नवीन कन्याओं का प्रवेश दिनाङ्क १ जुलाई से ३१ जुलाई तक होगा।

छात्रायें वाराणसेय सं० वि० विद्यालयकी प्रथमा मध्यमाआदि परीक्षायें देती हैं। व्याकरण संस्कृत हिन्दी के साथ आधुनिक विषय भी तथा सिलाई कढ़ाई का सामान्य ज्ञान दिया जाता है। प्रवेश के समय-हिन्दी ज्ञान तथा आयु ७ से १२ वर्ष तक होनी चाहिए। विशेष परिस्थितियों में छूट दी जा सकेगी।

प्रवेश के समय एक बार २११-०० दो सौ ग्यारह रुपये प्रवेश शुल्क लिया जाता है। और फिर आगे से ६०) साठ रु० भोजन व्यय हर मास देना पड़ेगा।

कन्याओं को धार्मिक विद्वान बनाने के इच्छुक महानुभाव शीघ्रता करें। स्थान सीमित हैं।

संचालक—सत्यदेव शास्त्री

---

१५ जौलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला प्रारम्भ है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०) रु० भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं

प्रिन्सिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

सभा मन्त्री का पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में तूफानी दौरा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उदीयमान मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने अपने पश्चिमोत्तर क्षेत्र में स्थित आर्य समाजों को जन-जागरूक बनाने के उद्देश्य से तूफानी दौरा किया और अनेक स्थानों पर नवयुवकों को सम्बोधित किया।

वे बरेली ३ जुलाई को पहुंचे और उन्होंने कहा कि संस्कृत को अनिवार्य पाठ्यक्रम में स्वीकार किये जाने के लिए आन्दोलन किया जायगा। इस निमित्त सभी समाजों से प्रस्ताव करने एवं सहयोग देने का आग्रह किया। श्री तिवारी वहाँ आर्य समाज मन्दिर बिहारीपुर में जिले के आर्य समाजी बन्धुओं को सम्बोधित कर रहे थे।

श्री तिवारी ने आर्य शिक्षा पद्धति एक्ट बनाने की मांग की। आपने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने आर्य समाज को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में स्वीकार कर लिया है। शीघ्र ही न्यायालय का मसौदा मिल जाने पर प्रदेश के सभी आर्य समाजी विद्यालयों के प्रबन्धकों की बैठक बुलाकर इस निमित्त कार्यवाही की योजना बनायी जायगी। श्री तिवारी ने समाज के संगठन को मजबूत करने पर बल दिया तथा युवकों के शिविर लगाने का आग्रह किया। आपने हरिजन बस्तियों तथा चिकित्सालयों में सेवा कार्य करने की अपील की। तिवारी जी शुद्धि कार्य में कोई कमी या कसर न रखे जाने की भी गर्जना की। आपने उपदेशकों के प्रशिक्षण हेतु एक विशद विद्यालय खोले जाने की योजना भी रखी।

सभा का संचालन करते हुए क्षेत्रीय मन्त्री श्री हरीशचन्द्र ने बताया कि प्रदेश की सभी समाजों के कार्यों को सफल बनाने हेतु जिला समाजों को प्रदेशीय सभा से पूरा योगदान मिलेगा।

प्रदेशीय मन्त्री श्री तिवारी यहाँ से रामपुर मुरादाबाद व अमरोहा की समाजों का निरीक्षण करने चले गये।

सम्वाददाता

आर्य वीर दल द्वारा, शंकराचार्य की निन्दा

आर्यवीर दल बम्बई ने अपनी आयोजित बैठक में कहा कि हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का विरोध करके शंकराचार्य ने अपनी अज्ञानता का परिचय दिया है। शंकराचार्य ने यजुर्वेद की पवित्र ऋचा, ब्राह्मण तामेति शूद्रताम्, का घोर अपमान किया है। जिसमें मनुष्य गुण, कर्म स्वभाव से ब्राह्मण से शूद्र और शूद्र से ब्राह्मण बन सकता है यही वर्ण व्यवस्था है। ऐसे व्यक्ति का न्यायप्रिय धार्मिक लोगों द्वारा बहिष्कार होना चाहिए। आर्य (हिन्दू) धर्म की एकता को छिन्न-भिन्न करने के आरोप में गिरफ्तार कर मुकद्दमा चलाना चाहिए। यह सरकार का उत्तरदायित्व है।

अपने आपको हरिजन कहने वाले भाई बहिनों से निवेदन है कि पवित्र वेद पढ़ें, अपनायें और अपने हक के लिए उचित मार्ग अपना कर अपने राष्ट्रप्रेम का पाठ अदा करें। वेद ही हिन्दू धर्म की एकता का मूल स्रोत है।

मन्त्री
वेद प्रकाश आर्य
आर्यवीर दल बम्बई (महाराष्ट्र)

पुरी के शंकराचार्य और स्वामी अग्निवेश जी

[डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी]

भाई अग्निवेश जी का मुझे २ जुलाई १९८८ का पत्र मिला है। वे चाहते हैं कि मैं उनके साथ १० जुलाई के नाथ नाथ द्वारा में हरिजनों के साथ प्रवेश करने के लिए उदयपुर चलूं। मैंने जो उत्तर दिया है, उसकी प्रतिलिपि 'आर्यमित्र" में प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं–

"भाई अग्निवेश ! आपका २ जुलाई का पत्र मिला। आप अपने आन्दोलनों से इन मूर्ख शंकराचार्यों को प्रोत्साहित न करें। हरिजनों को मन्दिरों में ले जाकर मैं मूर्तिपूजक नहीं बनाना चाहता। आप प्रोत्साहित करें कि आर्यसमाज मन्दिरों में ये अधिक से अधिक संख्या में आयें। आर्य समाज में प्रतिबन्ध न होने पर भी ये अधिक संख्या में क्यों नहीं आते–हम तो उन्हें अपने संगठनों में ऊंचे से ऊंचा स्थान भी देते हैं–ये पुरोहित, ब्रह्मा, ऋत्विक आदि के कर्म भी करते हैं। मूर्ख हिन्दुओं को अति मूर्ख शंकराचार्यों से निपटने दीजिए।" ये हरिजन हिन्दू मन्दिरों में जाकर पावेंगे भी क्या ? क्या उनमें से कोई शंकराचार्य बनने का अधिकारी हो सकेगा ?

राष्ट्रीय पौराणिकों में यदि साहस हो तो वे घोषित करें कि जिन मन्दिरों में हरिजनों का प्रवेश करने का अधिकार न होगा, उनमें वे भी कभी नहीं जावेंगे, उनका वे बॉयकॉट करेंगे।

शिमला में आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

शिमला में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की ओर से आयोजित आर्य महा सम्मेलन दिनांक १० से १२ जून तक बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर कार्यकर्ता सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, कवि/संगीत सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किये गये। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं के अतिरिक्त सर्व श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती स्वामी जगदीश्वरानन्द, ब्र० आर्य नरेश, माता आनन्दायति, डा० भवानीलाल भारतीय, प्रो० शेरसिंह, वीरेन्द्र, माता नारायति, डा० रमेश जोशन, रामकुमार गुप्ता आदि अनेक गणमान्य नेताओं एवं विद्वानों ने भाग लिया। महिला सम्मेलन की मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश की विधान सभा अध्यक्षा श्रीमती विद्यास्टोक्स थीं तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के मुख्य अतिथि समाज एवं कल्याण मन्त्री श्री चौधरी पीरूराम जी थे। कवि सम्मेलन में श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी अध्यक्ष थे। अन्य सम्मेलनों की अध्यक्षता क्रमशः ब्र० आर्य नरेश, माता आनन्दायति, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द तथा श्री वीरेन्द्र जी ने की। कुशल संयोजन श्रीमती चन्द्ररानी शर्मा, सर्वश्री कृष्णलाल आर्य, कृष्णचन्द्र आर्य तथा भगवानदेव 'चैतन्य, जी ने किया। शनिवार के दिन दोपहर में शिमला नगरी में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। श्री भगवानदेव 'चैतन्य' के सम्पादन में इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया। जून १२ को सायं छः बजे सम्पन्न होने वाले इस महा सम्मेलन का शुभारम्भ १० जून को स्वामी विद्यानन्द जी के करकमलों द्वारा किये गये ध्वजारोहण से हुआ। प्रति दिन ब्र० आर्य नरेश जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ भी होता रहा। सम्पादन समारोह में हिमाचल प्रदेश में सराहनीय कार्य करने के लिये आर्य जगत के पन्द्रह कार्य कर्ताओं को सम्मानित किया गया।

आर्य समाज आन्दोलन या संगठन

[पृष्ठ ३ का शेष]

त्याग और संयम का पाठ पढ़ाया इस दृष्टिकोण को व्यावहारिक रूप देने के लिये आश्रम प्रणाली पर बल दिया। यह सीमित उपभोग एवं समान वितरण की ही व्यवस्था है।

८—क्रान्ति के प्रेरणा स्रोत—

दयानन्द एवं आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता व उन्नति के लिए महान् प्रयत्न किया। अनेक क्रान्तिकारियों ने आर्य समाज से प्रेरणा प्राप्त कर अपने प्राणों की आहुति दी। अन्धविश्वास आडम्बर पाखण्ड ऊँच नीच एवं अत्याचार के विरुद्ध अनेक आन्दोलन चलाये।

देश मे दयानन्द और आर्य समाज द्वारा स्त्रियो की समानता एव सम्मान दिलाने, स्त्री शिक्षा के लिए क्रान्तिकारी पग उठाने विवाह मे युवक युवतियों को स्वयंवर का अधिकार देने बाल अनमेल वृद्ध और बहु विवाह दहेज आदि का विरोध तथा विधवा विवाह का समर्थन आदि कार्यों का स्मरण आवश्यक है।

—निष्कर्ष—

आर्य समाज ने इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न किया है १०० से अधिक गुरुकुल स्थापित किए जहां सब को समान रूप से शिक्षा प्राप्त होती है ३०० के लगभग संस्कृत विद्यालय और धर्मार्थ औषधालय तथा ४०० के लगभग अन्य केवल दलित जातियो के लिए पाठशालायें खोल कर शूद्रों की उन्नति की चेष्टा की है ५०० के लगभग महाविद्यालय और माध्यमिक विद्यालय २००० प्रार्थमिक और निम्न माध्यमिक विद्यालय स्थापित कर अज्ञान को दूर करने का प्रयत्न किया है शिक्षा के प्रसार का जितना कार्य आर्य समाज ने किया है उतना कोई भी संस्था नहीं कर सकी दयानन्द के आदेश पर स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज ने जो कार्य आरम्भ किया था उसे हमे दुगने वेग से पुरा करने में जुटना है। जिससे हमारे देश का गौरव बढ़े और हम सब मिलकर यह विचार कर सकें कि हम जिस देश में जन्में हैं वह हमारा देश धर्म मे विश्वास करता है जो हमारे राष्ट्रीय जीवन का महान स्रोत हैं।

ऋषि की यह भावना कि "मेरे शिष्य सभी आर्य सामाजिक है। वे ही मेरे विश्वास व भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति एवम् मनोरथ की सफलता अवलम्बित हैं" को हम चरितार्थ करें।

★

शंकराचार्य के बयान की निन्दा

नगर आर्य समाज लखनऊ के दिनांक १० जुलाई के साप्ताहिक सत्संग में एक स्वर से पुरी के शंकराचार्य द्वारा मन्दिरों में हरिजनों के प्रवेश को निषिद्ध करने तथा सती प्रथा समर्थक बयान देने की तीव्र निन्दा की गई। सभी आर्य प्रेमी बन्धुओ का आह्वान किया गया कि इस प्रकार के वैदिक मान्यताओं और मानवता के विरुद्ध दिये गये बयानों का डट कर प्रतिकार करें।

प्रधान नगर आर्य समाज लखनऊ

ईसाई महिला की शुद्धि

ईसाई सम्प्रदाय की एक कन्या को श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने वैदिक धर्म मे दीक्षित कर उसका नाम अनिता रखा तथा उसका विवाह संस्कार श्री महेशचन्द्र शर्मा के साथ आर्य समाज मन्दिर मेरठ शहर मे सम्पन्न करवाया।

सभा मन्त्री

स्वाधीनता सेनानियों की विधवाओं को निःशुल्क रेल यात्रा सुविधा

भारत सरकार के रेल मन्त्रालय ने स्वाधीनता सेनानियो को अगले एक वर्ष के लिए निःशुल्क रेल पास जारी करके बड़ा उत्तम कार्य किया है।

इस सम्बन्ध में निवेदन है कि स्वाधीनता सेनानियों की विधवा पत्नियों को जिस प्रकार पूरी पेन्शन दी जा रही है, उसी प्रकार उनको रेलवे पास की भी रियायत देने के लिए अखिल भारतीय हैदराबाद [आर्य समाज] स्वतन्त्रता सेनानी, समिति दिल्ली ने श्री माधव राव सिंधिया रेल राज्य मन्त्री भारत सरकार को एक पत्र लिखकर आदेश जारी करने के लिए अनुरोध किया है।

इससे न केवल नारी जाति का सम्मान बढ़ेगा अपितु स्वाधीनता संघर्ष के दौरान उनकी पत्नियों को जीवनकाल में सराहनीय योगदान देने के उपलक्ष्य में राष्ट्र की स्वीकृति मिल जायेगी।

मन्त्री सभा

शुभ विवाह

उ० प्र० राज्य विद्युत परिषद के उप सचिव श्री एच० डी० सिंह की आयु० कन्या सुमनसिंह का शुभ पाणिग्रहण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक ६ जुलाई, १९८८ को लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य पुरुषों ने वर–वधू को अपना शुभ आशो-र्वाद प्रदान किया।

आर्य समाज बहजोई का हीरक जयन्ती समारोह

दिनांक १—२—३ अक्टूबर ८८ शनि, रवि, सोमवार को
भव्य आयोजन

मण्डलीय आर्य सम्मेलन मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, पौड़ी गढ़वाल, नैनीताल, बदायूं, जनपदो के सम्मिलित सोजन्य से प्रभावी कार्यक्रम।

जयनारायण अरुण	हरिश्चन्द्र आर्य
प्रधान	मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज चन्द्रपुरवा बुजुर्ग जनपद हमीरपुर
प्रधान—श्री हरनारायण आर्य
मन्त्री—श्री प्रेमकुमार 'प्रेम'
कोषाध्यक्ष—श्री जयराम पाल

प्रकाश कवि रत्न स्मृति दिवस

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने। इस अमर गीत के रचयिता स्व० प्रकाशचन्द्र, कविरत्न अजमेरी का दि० ११ दिसम्बर को १० वीं स्मृति दिवस है उन्होंने सन् ७७ ई० को अपनी अन्तिम यात्रा की थी। वे आजीवन अपने कविता गीतों में वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के सिद्धांतो का प्रचार किया। रुग्णा-वस्था में रोग शैया पर पड़े-पड़े भी निरन्तर २८ वर्षों तक अपनी लेखनी को चलाते रहे और अपने काव्य गीतों से प्रचार की अपूर्व सामग्री आर्य जगत् को प्रदान की।

उनकी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध रचनायें, मधुर वेद वीणा बजाये चला जा आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है अखिल विश्व कल्याणी वाणी वेद कथा घर घर हो, आर्य समाज अमर हो. ये मत कहो कि जग में कर सका क्या अकेला, दयानन्द देव वेदों का उजाला ले के आये थे, आज दिखा दो दुश्मन को जौहर अपनी तलवार का आदि-आदि अनेक आध्यात्मिक धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय ऐतिहासिक गीत भजन साहित्य की रचना की।

अपने जीवन काल में अनेक योग्य शिष्य तैयार किये जिनमें पन्ना-लाल पीयूष, गंगाशरण सेनानी, मंगलदेव, ओंकारलाल जी महेशचन्द्र वेगराज आदि अनेक प्रचारक हैं, तथा ओमप्रकाश वर्मा, धर्मपाल, सत्यपाल, अमरसिंह, भूपेन्द्र, नामचन्द्र' गुलाबचन्द्र राघव स्व० स्वरूपा-नन्द आदि प्रायः सभी प्रचारक भजन गायक उनके गीत गाते हैं। उनके प्रति श्रद्धांजलि के रूप मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध कवि महोपदेशक, ओंकार मिश्र प्रणव की निम्न रचना हैं।

कवि, रत्न पं० प्रकाशचन्द्र प्रकाश अजमेरी

पञ्चम स्वर संगीत साम के गायक प्यारे,
 डिगे न कोई कदम साथे ना, पथ में हारे।

तम स्तोम से दूर दुग्ध सी कीर्ति पसारे,
 जीवर (१) पुष्पा रमा रम्य आंखों के तारे ॥१॥

प्रतिभा प्रखर प्रसिद्ध सुकृति रचना के हामी,
 काव्यानन्द समाधि सिद्धि के साधक स्वामी।

शत शत (२) स्नेहोलता सफलता के मधु मासी,
 चचरीक सम चाख रहे रस रीति प्रभासी ॥२॥

नन्दन सुख सम्प्राप्त आप्त उपदेश बिहारी,
 दयानन्द ऋषि चरणों के प्रिये प्रेम पुजारी।

नयी युग के सन्त सजग साहित्य मनीषी,
 सबल सदा रचनाएं होती सत्य मनीषी ॥ ३ ॥

कलित कल्पना मोसम के मधु मास निराले,
 विबुध जनों को पिला गये (३) पीयूष पियाले।

वैभव बलम को वीर भाव तुमने उपजाये,
 वरद वेद के (४) डंका भी तुमने बजवाए ॥ ४ ॥

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ

दिनांक १२-६-८८ को केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की वार्षिक बैठक हुई जिसमें पं० इन्द्रराज जी मन्त्री ने कार्य प्रगति पर विवरण प्रस्तुत किया तदोपरांत निम्न पदाधिकारियों का सर्व सम्मति से चुनाव हुआ।

पं० इन्द्रराज जी-प्रधान श्री शांति प्रकाश जी व श्री देवदत्त आर्य उप प्रधान और डा० वेदप्रकाश जी (प्राध्यापक हिन्दी विभाग मेरठ कालेज मन्त्री चुने गये। श्रीमती कैलाश सोनी श्री कैलाश चन्द्र आर्य एवम् हरवीर सिंह सुमन को उपमन्त्री चुना गया। श्री नन्दलाल पाहुवा कोषाध्यक्ष व श्री जगदीश नारायण जी निरीक्षक चुने गये। तथा नगर के प्रत्येक समाज से एक एक प्रतिनिधि का चयन किया गया।

चुनाव के पश्चात केन्द्रीय आर्य समिति के नव निर्वाचित मन्त्री डा० वेदप्रकाश जी ने कहा कि मैं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का कार्य अपने पूर्ण दायित्व के साथ करूंगा तथा नगर में फैलने वाले पाखण्ड व अन्धविश्वासों से लोगों को सावधान किया जायेगा। निरा-श्रित नर नारियों की सेवा सहायता की जायेगी। युवा पीढ़ी को दु:खद पाश्चात्य मार्ग से हटाकर भारतीय संस्कृति के मार्ग पर चलाया जायेगा निर्धन छात्र छात्राओं को आर्थिक सहायता दी जावेगी। अछूतोद्धार के लिये कार्य किये जायेंगे और पूरे नगर में वैदिक धर्म का प्रचार किया जावेगा।

उक्त समाप्त कार्यों को सफल करने के लिये डा० वेद प्रकाश जी ने सभी आर्य जनों से पूर्ण सहयोग की प्रार्थना की इस पर उपस्थित सभी आर्य नर नारियों ने डा० वेदप्रकाश जी का तन-मन-धन से अपना पूर्ण सहयोग देने का विश्वास व्यक्त किया। अन्त में श्री मानसिंह वर्मा भूतपूर्व सांसद ने सभी को धन्यवाद दिया तथा आर्य समाज की उन्नति में डा० वेदप्रकाश जी को सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सभा मन्त्री

निर्वाचन

जिला सभा [बहराइच]
प्रधान श्री बख्शी राममोहन
मन्त्री श्री चरतसिंह जी

आ० स० फखरपुर [बहराइच]
प्रधान श्री कृष्णानन्द जी

मन्त्री श्री सत्यनारायण जी

आ० स० नानपारा [बहराइच]
प्रधान श्री देवीप्रसाद जी
मन्त्री श्री विश्वनाथ जी

ललित जगत मे सूर्य चन्द्र सम-दिव्य मनोहर,
 मन में हो प्रभु भक्तों प्रभ की सबल स्वरोह।

यह अभिनन्दन वन्दन चन्दन सा सुखदाई,
 होवे सस्मृति दिवस युगों का प्रिय पर्याची ॥५॥

नम्बरों के संकेत नाम

१- पत्नी पुष्पा देवी २-पुत्री स्नेहलता प्रसिद्ध गायिका ३-शिष्य पण्डित पन्नालाल पीयूष संगीताचार्य स्वतन्त्रता सेनानी ४-विश्व प्रसिद्ध गीत वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू एन पी ७६
आषाढ़ शुक्ल १०
२४ जौलाई रविवार १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

३–जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

वरणीय वरुण पश्चिम के पति
पीछे सक्रिय पुकार के प्रति
सुन दीन क्षुधित का चीत्कार
कर अन्न सुरक्षा दें सम्प्रति।

सर्पादि विषैले जीव जतन, हो जाय न इनसे मृत्यु वतन।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
जग छत्र वरुण पति नमस्कार
हो हर अभाव से रक्षा प्रभु
बल अन्न सृजक को नमस्कार।

हो जाय न विष विषय आक्रमण, वह आत्म बचाओ ईश वरुण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम हीं द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्तें सबसे।

है धन बल वरुण पृष्ठ पोषण, कर सकें आक्रमण से रक्षण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

४–जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

उत्तर दिश सोम सृजक अधिपति
दे वाम असुर स्वाप प्रगति
ये सुखद शक्ति जग व्याप्य अशनि
दे वज्र दानवों को चितग्रनि।

ये स्वय अदृश्य कीटाणिक जन, कर नष्ट स्वस्थ कर दो तन मन।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
प्रभु सोम सुखद को नमस्कार
हो अशनि वज्र दे रक्षक को
जग व्याप्य करो को नमस्कार

सुख शान्ति आत्म मे करे रमण, हो बाहर कब इसके दर्शन।
मै करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम हीं द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्तें सबसे।

प्रभु विद्युत का हो आवेशन, हो आत्म शान्ति का सकर्षण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

५–जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

ध्रुव हृदय विष्णु व्यापक अधिपति
हो नीचे वेद प्रेरणा मति
प्रभु ग्रीवा मे कल्मष जाये
अज्ञान दोष से हो निवृति।

जो कलुष छिपा हो अन्तमन, उसका कर दो अब प्रक्षालन।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
जग व्याप्य विष्णु को नमस्कार
अघ दोष निवारक आप्त वचन
श्रुति शब्द शस्त्र को नमस्कार

काली ग्रीवा के प्राणि कुधन, प्रभु विष्णु करें इनसे रक्षण।
मै करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम हीं द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्तें सबसे।

ये वृक्ष लता के सुन्दर वन, हृदय बनायें सदा सुहावन।
मै करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

६–जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मै करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

दिश ऊर्ध्व बृहस्पति गुरु अधिपति
तव अमृत ज्ञान का वर्षा कृति
सताप रोग रक्षा करता
दे श्वत्रित शत्रु को स्वस्थ सुमति

हो सुखमय वातावरण सुमन, रोग दोष का करे निवारण।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
गुरु सुपति बृहस्पति नमस्कार
ऊपरी दोष के नित नाशक
वर्षा दूत को नमस्कार

जल बिन्दु बाति ये साधु सुमन, जग मे बरसाते शान्ति सुमन।
मै करूं अनुगमन, मन ही मन, सब ओर तुम्हे कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्तें सबसे।

पर्जन्य शान्ति का गुरु सदन, अब ये सुख का करता वर्धन।
मैं करूं अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए मनवामदेव आयभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए आर्यमित्र प्रेस व
एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ — घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

श्रावण कृष्ण ३, रविवार, सवत् २०४५ वि०, दिनांक ३१ जोलाई १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	११

धरा को वेदवाणी से पवित्र करो—

वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाइए

★ ★ ★

"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्"

हे वरदायिनी वेद माता ! तेरी महनीया, कमनीया, पूजनीया, शोभनीया, जन जन को पावन करने वाली पीयूषवर्षिणी धवलधारा में समस्त विश्व का अवगाहन, अवगुण्ठन, अवमज्जन करके हम जन–जन को पवित्र बना दें, महान से महान बना दें। हम आर्य हैं, अग्नि के जाज्वल्यमान दहकते अगारे। हमारे जीवन में निराशा, दुराशा, हताशा, आलस्य और प्रमाद जैसी कोई विकृति नहीं है। दुरितों को हमने भस्म कर दिया है। हिमालय से भी ऊंचा गगनचुम्बी हमारा चरित्र है। प्रभु की दिव्य वाणी हमारे हृदय मे है। ऋषियो का पुनीत आशीर्वाद हमारे साथ है। विश्व को आर्य बनाने का सकल्प हमारा सबल है। अन्धकार को चीरने वाले सहस्ररश्मियों के भी हम रश्मि हैं। "अहमिन्द्रो न पराजये" हमने पराजित होना कभी जाना ही नहीं है। तो आइए ! वेद प्रचार सप्ताह की इस परमपावन अवधि में हम घर–घर मे वेदों का डका बजाए। अग्निहोत्र की पवित्र ज्वालाओं मे ससार की समस्त बुराइयो को भस्म करके सुख और शान्ति की सुगन्ध फैलाए। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के ईशादेश को चरितार्थ करें। वेदों के निनाद से चारो दिशाए गुजायमान कर दें।

और दिनाक २७ अगस्त से ३ सितम्बर १९८८ तक, सम्पूर्ण आर्यजगत मे वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। यह आर्यों का पवित्रतम आह्वान पर्व है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश अपनी समस्त आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ, आर्यजनो तथा विश्व के सभी विचारशील मानवो का आह्वान करती है कि वे 'आर्यमित्र' के इसी अङ्क मे दिए गये कार्यक्रम के अनुसार इस सप्ताह को बड़ी ही दिव्यता एव भव्यता के साथ समाज मन्दिरों मे, अपने–अपने घरो मे, मोहल्लो मे, सार्वजनिक स्थानों अथवा पार्कों में आयोजित करें। ऋषिवर्य महाप्राज्ञ देव दयानन्द की यही महत्वाकांक्षा थी और यही उनका स्वप्न था। उनकी अन्तरात्मा हमारी ओर देख रही है जहाँ वहीं निहार रही है। ऋषि ऋण को चुकाइये, जगती के कण–कण को वैदिक धर्म प्रेमी बनाइए। वेद प्रचार सप्ताह को धूमधाम से मनाइए।

इन्द्रराज	**मनमोहन तिवारी**
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

—राष्ट्रकविमैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

सम्पादक—श्रावण कृष्ण ३ संवत् २०४५, रविवार ३१ जौलाई १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

पुरी के शंकराचार्य का वक्तव्य

इधर कुछ समय से पुरी के शङ्कराचार्य श्री स्वामी निरंजन देव-तीर्थ मठाधीश होने का अनुचित लाभ उठाते हुये समाचार पत्रों के माध्यम से अपना नाम प्रचारित कराने की लोकैषणा से शायद प्रताडित होकर अनर्गल वेद विरुद्ध, मानवता विरुद्ध धर्म एवं संस्कृति विरुद्ध—भेद बढ़ाने, अस्पृश्यता के कलंक को फैलाने, नारी जाति को अपमानित करने के लिए अनर्गल-प्रलाप करते रहते हैं। कुछ समय पहले देवराला में नारी हत्या के जघन्य कांड को समर्थन देते हुये—इसे सती प्रथा कहा और वेद-शास्त्र सम्मत कहकर मानवता एवं धर्म शास्त्रों की हत्या करने का—प्रयत्न किया। अनेक विशिष्ट पौराणिक विद्वानों ने भी उनके इस वक्तव्य की आलोचना की उनके इस वक्तव्य को असत्य सिद्ध करते हुये ऐसे ही एक विद्वान् ने निम्न श्लोक के द्वारा सती शब्द की सही व्याख्या प्रस्तुत की—

सिक्त्वा विवेक सलिलैः परिवारवर्ल्यों चेतांसि सुनृत गिरा परिनन्दयन्ती
वेदाभिराकलित मातृपदा प्रसन्ना नारी सतीत्वमुपयाति न वन्हिदग्धा है:।

स्वामी जी के अनर्गल प्रलाप पर जब आर्य समाज के विभिन्न विद्वानों ने उन्हें स्थान स्थान से शास्त्रार्थ के चैलेन्ज भेजे—उन्होंने किसी से भी शास्त्रार्थ करने का साहस नहीं किया किसी के पत्र का उत्तर तक न दिया। उस समय असमय मानो इस भावना को लेकर कि "बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा" वे नारी हत्या के जघन्य कांड को सती धर्म कहकर महिमामण्डित कराने के लिये अखबारों में अपने वक्तव्य छपवाते रहे। आर्य समाज की ओर से तब भी विरोध स्वरूप स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में एक पदयात्री दल राजस्थान गया—परन्तु राजस्थान सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करवा-दिया ।

अभी हाल ही में स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने फिर अस्पृश्यता को धर्म सम्मत सिद्ध करते हुए हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को अनुचित कहते हुए प्रवेश का विरोध किया एवं नारी हत्या को फिर सती प्रथा कहने का दुस्साहस किया है। पति के मरने पर पत्नी का चिता में जीवित जलाना परमात्मा के सभी पुत्र-पुत्रियों में भेद भाव, छुआ-छूत की भावना सर्वथा—वेद विरुद्ध है ऐसा करना जघन्य पाप है। स्वामी निरंजन देव जी के इस अधर्मंय वक्तव्य का देश के अनेक मनीषियों, आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य ने प्रबल विरोध किया। आर्य-संन्यासी स्वामी अग्निवेश ने पुनः कुछ आर्यजनों के साथ हरिजन कहे जाने वाले भाइयों को लेकर नाथ द्वारा मन्दिर में प्रवेश के लिये दिल्ली से यात्रा आरम्भ की। स्वामी निरंजन देव जी तीर्थ को यह बताने के लिये कि भगवान के पूजा घर मन्दिर मस्जिद गिरजा घर गुरुद्वारा किसी वर्ग जाति, विशेष के लिये नहीं सभी मानव जाति के लिए समान रूप से आदर स्थल हैं। परन्तु दुर्भाग्य है कि वोट की राजनीति खेलने वाले—राजनीतिज्ञों की दुर्बलता का स्पष्ट प्रदर्शन करते हुए राजस्थान सरकार ने उन्हें यह कहकर कि यह दफा १४४ का उल्लंघन है—इससे अशांति का खतरा है—पुनः गिरफ्तार कर लिया। शासन की गद्दी पर बैठने वालों का धर्म होता है कि वे सत्य की रक्षा करें, न्याय की प्रतिष्ठा करें। जनता जनार्दन का हित चिन्तन करें। स्वामी अग्निवेश की गिरफ्तारी करके सरकार ने प्रच्छन्न रूप से—स्वामी निरंजनदेव तीर्थ का समर्थनकर डाला है-इससे सत्य—न्याय मानवता धर्म और संस्कृति की हत्या का जघन्य मार्ग प्रशस्त होगा राजस्थान सरकार का यह कार्य उचित नहीं है।

स्वामी निरंजन देव तीर्थ शङ्कराचार्य की पवित्र गद्दी पर बैठे हैं निश्चय ही उन्हें वेद, वेदांग पारंगत होना चाहिये। उनके कथन संशय रहित होने चाहिये। परन्तु इसके सर्वथा विपरीत वे अवैदिक संशयात्मक वक्तव्य देकर शायद ओछी राजनीति के खिलाड़ी बनना चाहते हैं। शायद वे अब धार्मिक नेता नहीं—राजनीतिक नेता बन कर कुछ पाने की लालसा बना रहे हैं। धर्म के प्रति उनका लगाव नहीं रह गया है। परन्तु ध्यान रहे कि—शङ्कराचार्य की गद्दी एक पुनीत गद्दी है उस पर आसीन व्यक्ति को—मनमानी करने की छूट नहीं दी जा सकती। स्वामी निरंजन देव तीर्थ ऐसे अपलाप करना बन्द करें इसी में उनकी गरिमा है। यदि वे अपने वक्तव्य को सही समझते हैं तो शास्त्रार्थ के लिये तैयार हों। शास्त्रार्थ जनता के मध्य जनता की भाषा में हो। स्वामीजी और उनके समर्थक उनके-वक्तव्यकी सत्यताके लिए वेद-प्रमाण प्रस्तुत करें। आर्यसमाज के विद्वान् उनके इस वक्तव्य को वेद—प्रमाण से असत्य सिद्ध करेंगे। दोनों पक्षों के वक्तव्यों को सुनकर और उसे तर्क की कसौटी पर कसकर जनता सत्य का निर्णय स्वयं करेगी जो सत्य सिद्ध हो उसे सभी लोग स्वीकार करें।

यदि स्वामी जी शास्त्रार्थ को तैयार नहीं होते और अपने असामयिक वक्तव्यको वापसनहीं लेते तो अन्य शङ्कराचार्यों को उनकी भर्त्सना करनी चाहिये, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिये। उन्हें शङ्कराचार्य की पवित्र गद्दी छोड़ने को विवश किया जाना चाहिये।

विश्वास है स्वामी जी अपने अपवित्र विचारों को बदलेंगे और मानवता विभेदक विचारों का समूलोच्छेदन करके मानव—मानव में भाई चारा, परस्पर प्रीति—स्नेह फैलाने मातृशक्ति के गौरव को बढ़ाने में सहायक बनेंगे। केन्द्र या प्रदेशीय सरकारों का भी धर्म है कि वे वोट की कुत्सित राजनीति से ऊपर उठकर मानवता विरोधी मान्यताओं के समूल नाश में प्रयत्नशील हों। आर्य समाज का सम्पूर्ण सहयोग रहेगा। यदि सरकारों ने वोट—पाने की राजनीति में फंस कर अस्पृश्यता, (सती प्रथा के नाम पर) नारी हत्या के—जघन्य अपराधों की उपेक्षा करने का यत्न किया तो आर्य समाज इसके विरोध में प्रबल आन्दोलन करेगा।

★★★★

आर्यसमाज के भविष्य के चिंतन में संगोष्ठी का आयोजन

[डा० एम० एस० निबालकर वशिष्ठ एम०डी०, एम० आर० पी० सी०]

आर्यसमाज के मन्त्री श्री पी० डी० पारवानी के आग्रह पर करोल बाग आर्यसमाज नई दिल्ली ५ के वार्षिक उत्सव में दिनांक ५-५-८८ के मध्याह्न में आयोजित आर्यसमाज के वर्तमान शिथिलता की अवस्था से चिन्तित श्री विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कई विद्वान सम्मिलित हुए।

अध्यक्ष महोदय ने आर्यसमाज की वर्तमान शिथिलता के कारणों का निम्नलिखित उल्लेख किया। और विद्वानों से उपाय सुझाने को कहा-जिससे आर्यसमाज की प्रगति हो। अध्यक्ष महोदय की प्रस्तावना से यह आभास हो रहा था कि वे वर्तमान आर्यसमाज की दुरगति व अवनति से अत्यधिक चिन्तित व वेदना ग्रस्त हैं-

(१) सत्संगों, अधिवेशनों आदि में कम उपस्थिति।
(२) पदलोलुपता।
(३) पण्डित वीरसेन वेदश्रमी आदि विद्वानों द्वारा स्वलिखित विधि-विधानानुसार यज्ञ न करवाना आदि।
(४) आर्यसमाज के डी० ए० वी० कालेज हाईस्कूल गुरुकुलों में संस्कृत शिक्षा का अभाव।
(५) आर्यसमाजियों के घरों में वेदों का अभाव।
(६) पदाधिकारियों में मुकदमेबाजी व झगड़े।
(७) ऋषि आदेशानुसार न्यायसभा द्वारा झगड़े न निपटाना।
(८) आर्य समाजियों में कार्य करने की लगन व उत्साह का अभाव।
(९) आर्य विद्वानों की सभाओं में अंग्रेजी में बोलने की उत्सुकता व संस्कृत व हिन्दी भाषा में वार्तालाप को अहितकर समझना आदि।

चण्डीगढ़ कालेज के श्री ओकृष्ण प्रिंसिपल ने भाषण में कहा कि वर्तमान समय में आर्यसमाज की आवश्यकता पर जोर दिया जावे।

श्री बलराज मधोक ने कहा-आर० एस० एस० आदि राजनीतिक पार्टियां वर्तमान विषमताओं को दूर करने में असमर्थ हैं। आर्यसमाज ऋषि आदेशानुसार व सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लासानुसार जनसंघ के समान आर्यसमाज एक राजनैतिक पार्टी का निर्माण कर राजनीति में भाग लेकर सुराज्य की स्थापना करें।

डा० प्रशान्त ने कहा ऋषि आदेशानुसार कोई योग्य संस्कृत कन्या कालेज के अभाव के कारण अपनी पुत्रियों के लिए दाखिले की व्यवस्था की चिन्ता है।

श्री विनय शास्त्री जी ने भारत का दण्ड विधान मनुस्मृति आदि आर्ष ग्रन्थानुसार करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

श्री स्वामी अग्निवेश जी ने कहा-आर्यसमाज एक आन्दोलन है। आजादी के पूर्व शिक्षा राष्ट्रवाद, स्वराज्य प्राप्ति, अछूतोद्धार, नारी मुक्ति आदि पर केन्द्रित आन्दोलनों के कारण आर्यसमाज प्रगति के पथ पर रहा। स्वराज्य की प्राप्ति के बाद आर्यसमाज के सम्मुख आन्दोलन लक्षित न रहने के कारण आर्यसमाज की गतिविधियां शिथिल हो गईं।

डा० शिवकुमार जी ने कहा-किसी पर छींटाकशी करने से कोई फायदा नहीं बल्कि आर्य अपने-अपने पद पर ईमानदारी से कार्य करते रहकर ऋषि के ऋण से उऋण होने से ही आर्यसमाज की उन्नति होगी।

श्री क्षितीश वेदालंकार ने आधुनिकतम साज-सज्जा के साथ प्रभावी आर्य पत्रिका निकालने व लगन तथा निष्ठा के साथ प्रत्येक आर्य को अपनी जिम्मेवारी निभाने से आर्य समाज को गति मिलेगी-बताया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री विद्यानन्द सरस्वती जी ने इस प्रकार की गतिविधियों के आयोजन प्रत्येक आर्यसमाज द्वारा अपने उत्सवों व वार्षिक सम्मेलनों में करते रहना जिसमें अधिक से अधिक आर्य विद्वानों को बुलाकर विचार विमर्श करने का कार्य जारी रखने की अपील की। संक्षेप में ५ लघु बातें आवश्यक मानी गईं।

१-मुस्लिम व ईसाई पन्थों को छोड़कर भारत के सर्वधर्मावलम्बी इस विषम परिस्थिति में आर्यसमाज की आवश्यकता महसूस करते हैं। आर्यसमाज के सिवाय मुसलमानों व ईसाइयों से टक्कर लेने की क्षमता और किसी हिन्दू धर्म में नहीं यह सब जानते हैं।

२-आर्यसमाज के समक्ष संघर्ष या आन्दोलन हो तो चुनौती स्वीकार कर आर्य गतिविधियां तेज होने के कारण चमकता है व उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर उन्नति करता है। तो निम्नलिखित आन्दोलनों को ऋषि आदेशानुसार आन्दोलन कर उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् वेदोपदेश का पालन करें।

३-शुद्धी आन्दोलन को तेजी से कार्यान्वित करें। स्वामी श्रद्धानन्द जी की मनोकामना पूर्ण कर आर्यसमाज स्वामी जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

४-शास्त्रार्थ की दुन्दुभी बजाकर आर्यसमाज में ऋषि के समान पर चार चांद लगावें। शास्त्रार्थ का आन्दोलन चलावें तो कई विद्वान् तार्किक शिरोमणि व शास्त्रार्थ महारथी रूपी आर्यसमाज के क्षितिज पर कई सूर्य चमकेंगे। जिससे वर्तमान विषमता व पाखण्ड रूपी अन्धकार दूर होकर वेदों के प्रकाश द्वारा संसार जगमगा उठेगा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काश आज डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी होते !

—विशन स्वरूप करोल बाग, नई दिल्ली

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी आज हमारे बीच होते तो देश की जो दुरवस्था, अलगाववाद तथा आतंकवाद मच रहा है वह न होता और देश का नक्शा कुछ और ही होता। बंटवारे के बाद वह हमारे बीच बहुत थोड़े समय तक ही रह सके किन्तु इस अल्प समय में भी वह इतना काम कर गये जिसे हम इन ४० सालों में भी नहीं कर सके। ये उनकी महान उपलब्धियां ही कही जा सकती हैं।

उन्होंने जहाँ एक राष्ट्रवादी हिन्दू निष्ठ राजनीतिक दल भारतीय जनसंघ का गठन किया वहीं दूसरी ओर काश्मीर में हिन्दुस्तानियों को जाने के लिये परमिट प्रणाली और देश में दो विधान दो प्रधान तथा दो निशान का प्रबल विरोध भी किया इस परमिट प्रणाली को तोड़ने के लिये उन्होंने स्वयं ही बिना परमिट काश्मीर में प्रवेश करने का रचनात्मक कदम भी उठाया।

हमारे तत्कालीन प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू के सामने संसद में कोई भी सांसद ऐसा नहीं था जो उनके सामने निर्भीकता से उनका विरोध कर सके केवल डा० मुखर्जी ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनकी योग्यता और व्यक्तित्व का लोहा पण्डित नेहरू स्वयं भी मानते थे इसी कारण उन्हें यह भी आभास हो गया था वह व्यक्ति कभी भी मेरी प्रधान मन्त्री की कुर्सी को ले सकता है और कांग्रेस के लोग ही उन्हें स्वतः ही पण्डित नेहरू के स्थान पर प्रधान मन्त्री बना देते। इसी कुर्सी और सत्ता की भूख के कारण पण्डित नेहरू ने यह निश्चय किया कि इस व्यक्ति को किसी प्रकार अपने रास्ते से हटाया जाए और वह ऐसे अवसर की खोज में लग गये।

वह अवसर उन्हें तब मिला जबकि डा० मुखर्जी ने स्वयं काश्मीर मे बिना परमिट प्रवेश करने की तिथि की घोषणा कर दी। उन दिनों पण्डित नेहरूने इस अवसर को खोना उचित नहीं समझा क्योंकि काश्मीर का प्रधान मन्त्री उनका चहेता शेख अब्दुल्ला था इसलिये उन्होंने उससे गुप्त मंत्रणा कर उन्हें अपने मार्ग से हटाने की साजिश बना दी। यही कारण था कि डा० मुखर्जी को काश्मीर मे प्रवेश करने से पूर्व ही पठानकोट में गिरफ्तार कर लिया गया और काश्मीर से बाहर जेल में न रख काश्मीर की जेल में ही बन्दी बनाकर रखा गया ताकि पण्डित नेहरू की कुर्सी को बचाने के लिये उन्हें मार्ग से हटाया जा सके। यही हुआ जेल में बन्द होने के दो चार दिन बाद ही उनके बीमार होने की घोषणा हुई और जनसंघ के वरिष्ठ नेता श्री गुरुदत्त तथा बैरिस्टर उमाशङ्कर त्रिवेदी तक को उनसे मिलने नहीं दिया गया जो उनके साथ गये थे। और बीमारी एक दो दिन बाद ही समाचारपत्रोंमें उनकी अकस्मात मृत्यु की घोषणा कर दी गयी। इस घोषणा को सुनकर सारा देश स्तब्ध रह गया। डा० साहेब की माता जी ने इसे मृत्यु स्वीकार नहीं किया और उन्होंने तुरन्त पण्डित नेहरू को तार देकर इसकी जांच की मांग की किन्तु नेहरू ने उसे स्वीकार नहीं किया। देश के बुद्धिजीवी लोगों ने भी इसे मृत्यु स्वीकार नहीं किया किन्तु उनमें नेहरू का विरोध करने साहस नहीं था इसलिये उसे मृत्यु ही स्वीकार कर लिया गया किन्तु जनसंघ के लोग इसे बलिदान का ही रूप देते रहे। इसी बलिदानके कारण काश्मीर की परमिट प्रणाली और दो विधान, दो निशान, दो प्रधान समाप्त होकर रह गये केवल अलगाववाद की मुख्य जड़ विधान की धारा ३७० रह गई जो आज तक है। इसे समाप्त कराने के लिये देश व्यापी आन्दोलन किया जाये।

केन्द्र में जब जनता पार्टी की सत्ता आयी उस समय भी जनसंघ के लोगों ने इस हत्या की जाँच शायद इसलिये नहीं कराई कि उन्हें उस जांच के साथ पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की हत्या की जांच भी करानी पड़ती और शायद उस जांच में कोई जनसंघ का वरिष्ठ नेता फंस जाता।

उनकी आज इस पुण्य तिथि या बलिदान दिवस पर हमारी सच्ची श्रद्धांजली यही होगी कि हम उनके अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये राष्ट्रवादी हिन्दू निष्ठ राजनीति दलगठन करें और उनके बताये मार्ग पर चलें। और उसके अनुरूप इस देश का नवनिर्माण कर उनके स्वप्न को साकार करें।

श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान का आर्य समाज छपरौली (मेरठ) के वार्षिकोत्सव में भव्य स्वागत

दि० २६-६-८८ को मध्याह्नोत्तर ४ बजे आर्य समाज छपरौली (मेरठ) के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान श्री पं. इन्द्रराज जी के पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। श्री सभा प्रधान जी ने अपने भाषण में देश के अन्दर और बाहर खतरों का विस्तार से वर्णन करते हुए देश वासियों से अपील की कि वे सजग और सचेत होकर देश की रक्षा करें। इस समय भ्रष्टाचार बहुत अधिक है। इसी के कारण हमारे देश में तस्करी से सोना, घड़ियां, अफीम, नशीली गोलियां स्मैक, तथा घातक हथियार देश में आ रहे हैं। एक इतना बड़ा षड्यन्त्र चल रहा है कि देश के चारों कोनों पर खतरा है। पंजाब जम्मू काश्मीर, दार-जीलिंग आदि में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। युवा-पीढ़ी को नशा घुन के समान खा रहा है। देश में जातिवाद छूआ छात, हरि-जनों के लिए मन्दिरों के दरवाजे बन्द, मांस और शराब का प्रचुर-मात्रा में प्रयोग, शिक्षा नीति का बिगड़ जाना, जुआ, लाटरी, तथा वी० सी० आर० द्वारा घर घर में नग्नफिल्मों का देखना परिवारों, व्यक्तियों और समाज को खोखला बना रहा है। फिल्म इण्डस्ट्री में मार-धाड़, हिंसा, बलात्कार तथा नग्नता के दृश्य देश में अव्य-वस्था फैला रहे हैं। इन सबके होते हुए भी सत्ताधारी एवं विरोधी राजनैतिक पार्टियां मौन हैं। केवल आर्य समाज ही आवाज उठाता है। वोट की राजनीति ने सारी राजनैतिक गतिविधियों को पंगु बना दिया है।

अतः देश की रक्षा के लिये आर्य समाज को मजबूत बनाओ तथा तन, मन और धन से इसका सहयोग करो, तभी भारत बच सकता है, अन्यथा धर्म परिवर्तन ही देश को ले डूबेगा।

मन्त्री जिला सभा मेरठ

आर्यसमाज के शोध विद्वान्—
डा० भवानीलाल भारतीय

[डा० प्रशान्त कुमार शास्त्री]

भारतीय नवजागरण में आर्य समाज तथा उसके संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की भूमिका के अधिकारी व्याख्याकार डा० भवानी लाल भारतीय विगत ३८ वर्षों से लेखन कार्य में संलग्न हैं। उनका जन्म आज से साठ वर्ष पूर्व असाढ़ कृष्णा ३ सं० १९८५ वि० को राजस्थान के नागौर जनपद के अन्तर्गत परबतसर नामक ग्राम में एक मध्यवित्त वकील श्री फकीरचन्द माथुर के यहां हुआ। उनकी उच्चतर शिक्षा जोधपुर में हुई जहां से उन्होंने संस्कृत और हिन्दी में एम० ए० तथा आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन विषय लेकर पी० एच० डी० की उपाधि ग्रहण की।

अपने दीर्घकालीन साहित्य सेवा काल में डा० भारतीय ने लगभग ६० छोटे बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। धर्मों और धर्माचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन उनका अपना विषय है और राजाराम मोहनराय तथा स्वामी दयानन्द एवं महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द शीर्षक उनके तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ विशिष्ट ख्याति अर्जित कर चुके हैं। आर्य समाजी महापुरुषों के जीवन चरित्र लेखन में डा० भारतीय को विशेष सफलता मिली है। उन्होंने स्वामी दयानन्द का शोध पूर्ण बृहदकाय जीवन चरित "नवजागरण के पुरोधा" शीर्षक से लिखा, जो १९८३ में दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित हुआ। मौलिक ग्रन्थ लेखन के अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी तथा गुजराती के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का हिन्दी मे अनुवाद भी किया है।

डा० भारतीय की साहित्य साधना को विभिन्न पुरस्कारों द्वारा भूरिशः सम्मानित किया गया है। 'आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान्' पर उन्हें चौधरी नारायण सिंह पुरस्कार १९७२ में मिला। आर्य समाज उपलब्धियां और भविष्य पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें १९७६ में पं० लेखराम पुरस्कार से सम्मानित किया। उनकी दयानन्द और विवेकानन्द तथा श्री कृष्ण चरित्र पुस्तकें पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार से क्रमशः १९७८ तथा १९८२ में पुरस्कृत हो चुकी हैं। सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास पर लिखी गई उनकी व्याख्यात्मक कृति ज्ञान दर्शन को १९७७ में विद्यावती शारदा पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ने १९८२ में उन्हें पं० गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से तथा आर्य समाज फुलेरा (राजस्थान) ने १९८८ में महर्षि दयानन्द साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया है।

आर्य समाज का इतिहास और उससे सम्बद्ध महापुरुषों की प्रवृत्तियां उनके अध्ययन और शोध का प्रमुख विषय है। गत वर्ष ही उन्होंने ११ खण्डों में स्वामी श्रद्धानन्द की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का सम्पादन किया है जिसे श्री गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने प्रकाशित किया है। आर्य समाज के इतिहास का साहित्य विषयक पचम खण्ड उनकी आर्य समाज वाङ्मय विषयक विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी का उदाहरण है। स्वामी दयानन्द के जीवन एवं व्यक्तित्व पर शोधपरक उनके अनेक ग्रन्थ भारतीय नवजागरण के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करते हैं। उनका व्यक्तिगत पुस्तकालय आर्य समाज और उसके प्रवर्तक विषयक नितान्त दुर्लभ ग्रन्थों का अनुपम संग्रह है जिसमें लगभग ५ हजार महत्वपूर्ण कृतियों के अतिरिक्त पुराने पत्र पत्रिकाओं की सैकड़ों फाइलें भी सुरक्षित हैं।

आर्य समाजी लेखन से निरन्तर जुड़े रहने के साथ-साथ वे आर्य समाज के संगठन से भी सम्बद्ध रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री एवं उप प्रधान पदों पर अनेक वर्षों तक रहने के साथ-साथ वे आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सभासद् तथा उप मन्त्री भी रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वे प्रतिष्ठित सदस्य निर्वाचित किये गये। लब्धप्रतिष्ठ लेखक होने के साथ-साथ वे एक सफल एवं प्रभावशाली वक्ता भी हैं। स्वामी दयानन्द के जीवन और व्यक्तित्व का विवेचन करने वाली उनकी प्रभावशाली कथायें देश में सर्वत्र रुचि से सुनी जाती हैं। काश्मीर से महाराष्ट्र तथा गुजरात से बंगाल तक देश के विभिन्न भागों में भ्रमण कर उन्होंने दयानन्द सरस्वती के सन्देश को सर्वत्र प्रसारित किया।

विगत आठ वर्षों से वे पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ के आचार्य और अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। इसी वर्ष उन्होंने विश्वविद्यालय की औपचारिक सेवा से अवकाश ग्रहण किया किन्तु उनकी शोध विषयक योग्यता को लक्ष्य में रखकर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिए उन्हें पुनः इस विभाग के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया है। आर्य समाज विषयक शोध और लेखन कार्य में संलग्न प्रायः सभी स्वदेशी और विदेशी विद्वान् उनसे सम्पर्क करते हैं तथा यथोचित परामर्श ग्रहण करते हैं।

★

स्वामी दयानन्द वास्तविक अर्थ में समाज सुधारक थे सत्ता लोलुप नहीं

आर्यमित्र के २६ जून के अंक में श्री विशम्भरस्वरूप गोयल का एक लेख छपा है। इसमें लेखक ने लिखा है कि एक समाज सुधारक होने के नाते स्वामी दयानन्द ने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि स्वराज्य की प्राप्ति समाज सुधार से नहीं अपितु राजसत्ता को हिलाने से ही प्राप्त हो सकती है। निवेदन है कि स्वामी दयानन्द की यह दृढ़ धारणा थी कि जब तक भारतीय समाज धार्मिक और सामाजिक बुराइयों को त्याग कर सर्व प्रकार से समर्थ और शक्तिशाली नहीं होंगे तब तक वे न तो स्वाधीनता ही प्राप्त कर सकेंगे और यदि उन्हें अनायास स्वतन्त्रता प्राप्त हो भी गई तो समाज में व्याप्त कुरीतियों के कारण उनकी स्वाधीनता चिरस्थाई नहीं होगी। अपने इस विचार को उन्होंने अपने जीवन में अनेक बार व्यक्त किया था। वे सामाजिक पुनर्निर्माण को स्वराज्य प्राप्ति की प्रथम और आवश्यक शर्त समझते थे। स्वामी जी द्वारा समाज सुधार के कार्य को प्राथमिकता देने के महत्व को न मानने का ही यह परिणाम है कि आज देश की आजादी के चालीस वर्ष पश्चात् भी हमारा समाज सर्वथा असंगठित, दुर्बल तथा सैकड़ों विकृतियों से ग्रस्त है और हमारी स्वाधीनता के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहा है।

—भवानीलाल भारतीय
पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़

वर्ण-व्यवस्था का प्रचलन

[स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी]

विजानी हि आर्यान्ये च दस्यव: (ऋग्वेद १-५१-८) के अनुसार सज्जन-सदाचारी-सुकर्मी-मानवतावादी मनुष्य, आर्य हैं और इसके विपरीत दुर्जन-दुराचारी-कुकर्मी-दानवतावादी मनुष्य, दस्यु हैं। आर्य मनुष्य सेवा कर्म वाले हैं। आर्यों (हिन्दुओं) में चार-वर्ण (ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित 'वर्ण व्यवस्था' सरिता का बहता स्वच्छ-जल है तथा जन्ममूलक वर्ण व्यवस्था ताल का रुका जल है।

★ सवर्ण-अवर्ण ★

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत॥
(यजुर्वेद ३१-११)

अर्थात् समाज रूपी शरीर में मुख के समान-ब्राह्मण (शिक्षक-आचार्य, वैज्ञानिक, चिकित्सक, लिपिक, अभियन्ता आदि ज्ञानाहर्ता), बाहू के समान- क्षत्रिय (रक्षक-सैनिक, पुलिस आदि अन्यायहर्ता), उदर के समान-वैश्य (पोषक-कृषक, व्यापारी, शिल्पकार आदि अभावहर्ता) तथा पैर के समान-शूद्र (सेवक-श्रमिक, पाचक, स्वच्छक आदि श्रम कर्ता) चार वर्ण हैं। ये चार वर्ण -सवर्ण (वर्ण सहित) हैं; क्योंकि इन्होंने जीवन यापन हेतु इष्ट सेवा का वरण (चुनाव) करके गुण कर्म-स्वभाव के अनुसार 'वर्ण' अपनाया है। सवर्ण-मानव 'छूत' हैं।

दस्यु मनुष्य 'अवर्ण' (वर्ण रहित) हैं; क्योंकि इन्होंने समाज सेवा हेतु किसी का वरण नहीं किया है। और ये तब तक 'अछूत' (छून, छूये हुए, समाज से बहिष्कृत) हैं; जब तक कि इनका आचार-व्यवहार सुधर न जाय।

★ वर्ण का वरण ★

वर्ण जन्म से नहीं, अपितु गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित है तथा परिवर्तनशील है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥
(मनुस्मृति १०-६५)

अर्थात् शूद्र, ब्राह्मण और ब्राह्मण, शूद्र हो जाता है। क्षत्रिय व वैश्य की सन्तानों के भी वर्ण बदल जाते हैं। विभिन्न वर्णों में एक समान-गोत्र का मिलना सिद्ध करता है कि एक ही ऋषि की सन्तानों ने समय-समय पर स्वेच्छा से अपनी आजीविका हेतु अलग-अलग वर्णों का वरण किया।

हरिवंशपुराण-३१ के अनुसार भार्गववंश में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों ही वर्ण हुए। कूर्मपुराण-१९ के अनुसार वत्सर के दो पुत्र-नैध्रुव और रेभ्य हुये। रेभ्य के श्रेष्ठ वेद पारंगत पुत्र ने शूद्रवर्ण को चुना।

★ वर्णव्यवस्था व्यवहार में कैसे लाई जाये ? ★

सनातन वैदिक (हिन्दू) धर्म की श्रेष्ठता प्रसिद्ध है। धर्म समानता का अवसर देता है। चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागश: (गीता ४-१३) के अनुसार गुण-कर्म पर आधारित समाज सेवा जीवनयापन हेतु चार वर्ण हैं।

गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार तथाकथित अन्तर्जातीय, अन्तर्प्रादेशिक व अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के अन्तर्गत वर-वधू को वर्ण के चुनाव की मान्यता मिलनी चाहिए।

वर्णव्यवस्था को व्यवहार में लाने हेतु-धर्मार्य सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल विश्वविद्यालय, विश्व हिन्दू परिषद् आदि संस्थाओं को इच्छुक व्यक्ति से आवेदनपत्र प्राप्त कर 'वर्णनिर्धारण' का दायित्व अपने हाथ में लेना चाहिये। समाज में समता-एकता-उत्साह हेतु स्वेच्छा से वर्ण के वरण (चुनाव) की सुविधा गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित होनी ही चाहिए।

★

श्रीयुत प्रशस्यमित्र शास्त्री पुरस्कृत

समस्त आर्य जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, महोपदेशक एवं संस्कृत भाषा के कवि श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री को उनके कविता संग्रह "हास विलास:" पर संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश ने ५०००.०० (पाँच हजार रुपये) का पुरस्कार दिया है। यह पुरस्कार डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री ने ४ जून १९८८ को उप राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा के द्वारा दिल्ली के तीन मूर्ति भवन के सभागार में प्राप्त किया। इस अवसर पर संस्कृत भाषा के १७ अन्य भाषाकारों को पुरस्कृत किया गया। सभा के अधिकारी गण एवं आर्यमित्र परिवार डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री को बधाई एवं मंगल कामना प्रेषित करते हैं।

मनमोहन तिवारी — मन्त्री
इन्द्रराज — प्रधान

नि:शुल्क साहित्य वितरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान कविराज हरनामदास की लिखी पुस्तक "आर्य समाज क्या मानता है" बगैर मूल्य के भेजी जाती है आर्य समाज के उत्सवों के अवसर पर तथा साधारण जनता में वितरण करने के लिए मन चाही प्रतियां मुफ्त मगावें लिखें--

सुखदाता फारमेसी चांदनी चौक दिल्ली-६

लक्ष्मी आश्रम कौसानी में विवाह संस्कार

अल्मोड़ा। लक्ष्मी आश्रम कौसानी में साधना भट्ट का ब्रह्मविवाह संस्कार हंसराज पाण्डे के साथ १ जुलाई १९८८ को डा० कामतानाथ रिटायर्ड जज की अध्यक्षता में राधा बहन के संयोजन में स्वामी गुरुकुलानन्द के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यह हर्ष की बात है कि वैदिक विवाह संस्कार की ओर आकर्षण बढ़ रहा है।

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मड़ियाहूँ का वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४, १५ अप्रैल को मनाया गया जिसमें उच्चकोटि के आर्य विद्वान तथा उपदेशक पधारे।

निर्वाचन

आर्य समाज मड़ियाहूँ (जौनपुर)
प्रधान गोपालदास गुप्त मन्त्री-श्री शम्भुनाथ जी
कोषाध्यक्ष-श्री सुभाषचन्द्र जी

आर्य समाज में घुस पैठिए

[डा० पुष्पावती आचार्या मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी]

ज्यों-२ आर्य समाज की कलेवर वृद्धि हो रही है, त्यों-२ इसमें गति शैथिल्य बढ़ रहा है जो कि सब की चिन्ता का विषय बना है। इस गति शैथिल्य अथवा आन्तरिक टूटन का एक मुख्य कारण है कि आर्यसमाज के हरे भरे क्षेत्र में घुसपैठिए रूपी चालाक-शृगाल घुस गये हैं जो निर्बाध रूप से इसकी हरियाली चर रहे हैं। ये घुस पैठिये दो प्रकार के हैं-(१) राजनैतिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति (२) धन लोलुप गुट। विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बद्ध व्यक्ति आर्य समाजों के अधिकारी पदों पर येन केन प्रकारेण आसीन होकर वहां की धन व जन शक्ति का बलगत स्वार्थ सिद्धि में मनमाना उपयोग कर रहे हैं। एक प्रकार से आर्य समाज का क्षेत्र उनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का चरागाह बना हुआ है। इन्हें आर्य समाज के रचनात्मक कार्य, वेद प्रचार, वैदिक शोध, आर्य संस्थाओं की प्रगति, तथा आर्यों की कठिनाइयों का ध्यान नहीं है, न ही आर्य समाज के भविष्य की इन्हें चिन्ता है। ये निष्ठावान् आर्यों को चुनचुन कर समाज से बाहर निकालते हैं- उन्हें कुछ करने नहीं देते हैं। यदि वे आग्रहपूर्वक कुछ करते भी हैं, तो उन्हें लांछित करते हैं, तथा ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर देते हैं कि उन्हें या तो अपने सत्प्रयासों को स्थगित कर देना पड़ता है या वे विवश होकर समाज को ही छोड़ बैठते हैं। ऐसी दशा में गतिरोध न हो तो क्या हो ?

वर्तमान में आर्य समाज की परिवर्तित गुटबन्दी की विष बेल भी इन्हीं राजनीतिक लुटेरों की देन है। क्या सुन्दर क्रम बना है कि आर्य समाज को राजनीतिक प्रलोभनों के कीचड़ से बचाने के लिये राजार्य सभा का गठन नहीं किया गया, जिसके द्वारा वैदिक राजनीति का पक्ष कुछ तो उजागर होता, पर विभिन्न राजनीतिक दलों की अनुगामिता की परिधि में ओजस्वी आर्य समाज की अग्रगामी पदगति को बंद कर दिया है। अनेक उदाहरणों में आर्य समाज के रचनात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न दलों के स्वार्थों की टक्कर में चूर-चूर कर दिया गया है। परिणामतः आर्य समाज शक्ति सम्पन्न होते हुए भी वेद प्रचार के क्षेत्र में निरुपाय बना है, अमित धन व परिश्रम व्यय करके भी प्रभावहीन बना है। कुछ ऐसी स्थिति धन लोलुपों द्वारा भी उत्पन्न कर दी गई है। इन्होंने भी आर्य समाज को अपनी धन लिप्सा की पूर्ति का अखाड़ा बना रखा है। कई बार ये अत्यन्त घृणित हथकण्डे अपनाने से भी नहीं हिचकते, जिससे आर्य समाज की बदनामी होती है। इस प्रकार इन तथा कथित बनावटी आर्यों (घुसपैठियों) के पाप कर्मों का कुफल आर्य समाज को भोगना पड़ रहा है। आर्य समाज बदनाम भी होता है, और जिसमें निष्क्रियता तथा गतिरोध भी होता है, जिसका परिणाम हो रहा है कि आर्य समाज में आन्तरिक विशृंखलता, परस्पर उदासीनता व्याप्त हो रही है, और आर्य समाज का सकट महर्षि के उद्देश्यों से दूर-दूर चला जा रहा है, और ये घुस पैठिए चैन की बन्सी बजा रहे हैं। आर्य समाज की बर्बादी के दृश्य को देख कर सन्तोष की सांस ले रहे हैं !

आर्य समाज की भावी प्रगति के लिए इन आदर्श के हथियारों से आर्य समाज की शुद्धि करनी होगी, अवश्यमेव करनी होगी। पर यह हो कैसे, आर्य समाज के कर्णधार दिशा निर्देशन करेंगे।

★

आवश्यक सूचना

पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष पद से ३०-४-८८ को औपचारिक रूप से अवकाश ग्रहण करने तथा प्रोफेसर पद पर आगामी तीन वर्षों के लिए पुनः नियुक्त हो जाने के कारण मेरा निवास तथा विभाग (कार्यालय) का पता एक जुलाई १९८८ से निम्न प्रकार रहेगा- कृपया निम्न पते पर ही पत्र व्यवहार करें।

निवास---बी-२ पंजाब विश्व विद्यालय, चण्डीगढ़।

विभाग का पता-ई-१-११३ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

दूरभाष ३१४०६ (कार्यालय)

(भवानीलाल भारतीय)

आर्यवीर दल का गठन

नजीबाबाद आर्यसमाज में सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली के प्रधान सेनापति श्री बालदिवाकर जी हंस के मुख्य आतिथ्य में आर्य वीर दल का गठन किया गया। जिसके निम्न पदाधिकारी हैं।

सर्वश्री प्रवीण सिंह जी संरक्षक, श्रीराजेन्द्रस्वरूप आर्य संचालक चौ० निरंजन सिंह बौद्धिक अध्यक्ष, मानकचन्द्र आर्य मन्त्री, कमल कुमार मेहरा कोषाध्यक्ष, श्री नन्दकिशोर शर्मा वर्गनायक।

पुत्र शोक

श्री मानक चन्द्र आर्य सिद्धान्त शास्त्री मन्त्री आर्यवीर दल नजीबाबाद शाखा एवं संस्थापक वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र के पुत्र के असामयिक निधन पर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र पर एक शोक सभा हुई। १ मिनट का मौन धारण करके परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। और शोक परिवार एवं माता पिता को धैर्य शक्ति प्रदान करे।

मन्त्री सभा

वधू की आवश्यकता

४२ वर्षीय ५ फीट २ इन्च रंग गेहुआं डबल एम० ए०, पी० एच० डी० डिग्री कालेज में लेक्चरार मासिक २२३८ रुपये क्षत्रिय कुलोत्पन्न दहेज विरोधी आर्य युवक हेतु शिक्षित, सुन्दर, सुशील, स्वस्थ, गृहकार्य में कुशल ३० से ३५ वर्ष की वधू की आवश्यकता है। पर्वतीय को प्राथमिकता। सन्तानोत्पत्ति में समर्थ निःसन्तान विधवा तथा तलाक शुदा भी मान्य। जाति बन्धन नहीं।

डा० वसन्तकुमार शास्त्री

प्राध्यापक संस्कृत

रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी

जिला—सुल्तानपुर (उ० प्र०)

वेद–प्रचार–सप्ताह

श्रावण शुक्ल १५ शनिवार से भाद्रपद कृष्ण ८ शनिवार

२७ अगस्त से ३ सितम्बर १९८८ तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुंचाइये

इस वर्ष 'वेद–प्रचार सप्ताह' दिनांक २७ अगस्त से ३ सितम्बर १९८८ दिन शनिवार से शनिवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है–

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीर दल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहाँ आर्यकुमार सभायें तथा आर्य वीर दल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेद प्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास मनाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध–विश्वासों के अन्ध–कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान् व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया वेद प्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझें, तो वेद प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन सग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

३ सितम्बर १९८८ भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान् योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः ७॥ बजे से आर्य मन्दिरों में 'आर्य पर्व पद्धति' के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम २७ अगस्त से ३ सितम्बर १९८८ तक

प्रति दिन प्रातः सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्याह्न–वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद कथा का विशेष आयोजन हो वेदों के आधार पर विश्व–बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् संघर्ष–इस सप्ताह में आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ–श्रावणी (रक्षा बन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परिवार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः ७॥ बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक–बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें–वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद कथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा कीजिये–आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार निवारण, पंचमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी–(१) इस सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरो पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

(२) इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महापुरुषों की तैयार करें, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से शिक्षणालय आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद् नहीं है, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश–५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

हरिजन मन्दिर प्रवेश शंकराचार्य, स्वामी अग्निवेश व आर्य समाज ?

[श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर, प्रधान नगर आर्यसमाज जयपुर]

नवभारत टाइम्स आदि समाचार पत्रों में फारवर्ड ब्लाक के सचिव श्री आर० के० राही का एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने आर्य समाज व बन्धुआ मुक्ति मोर्चे को चुनौती दी है कि वे सिद्ध करें कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति पूजा के लिए कहाँ लिखा है, उन्होंने तो मूर्ति पूजा को अधर्म बताया है ? श्री राही ने नाथद्वारा मन्दिर में हरिजन प्रवेश के लिये स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा आर्य समाज के सिद्धान्त विरोधी बताई है।

जहाँ तक महर्षि दयानन्द, वैदिक सिद्धांत एवं उनके अनुसार आर्य समाज की मान्यता है, श्री आर० के० राही के विचारों से आर्यसमाज सहमत है, तदनुसार हरिजनो के मन्दिर में प्रवेश के लिये यह पद यात्रा आर्य समाज के संगठन की ओर से नहीं, स्वामी अग्निवेश की निजी है।

सिद्धान्ततः मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध, सर्वव्यापी निराकार परमात्मा की उपासना से विमुख करने वाली, आर्य (हिन्दू) जाति को अनेक उपासनाओ, सम्प्रदायो मे विभक्त करने वाली है, मूर्ति पूजा के कारण ही मन्दिर मे प्रवेश के प्रश्न को लेकर शंकराचार्य हरिजन व सवर्ण में घृणा, मतभेद तथा विघटन उत्पन्न कर रहे है। इसी कारण महमूद गजनवी सोमनाथ की मूर्ति व मन्दिर को तोड़कर भारत से अरबो रुपये के हीरे, जवाहरात, सोना, चाँदी आदि बहुमूल्य पदार्थ विदेश ले गये थे। मूर्ति पर अन्धविश्वास कर वीर क्षत्रियों ने उस समय युद्ध नहीं किया। फलस्वरूप भारत परतन्त्र हो गया। जो अपार धन देश जाति के उत्थान वैदिक धर्म प्रचार आर्य [हिन्दू] जाति की रक्षा में लग सकता था, वह मन्दिर निर्माण आदि में व्यय हो रहा है। अतः आर्य समाज मूर्ति पूजा को धर्म नहीं मानता। परमात्मा "ईशा वास्य-मिदं सर्वं..." "न तस्य प्रतिमा अस्ति"–वेद मन्त्र, "ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति–गीता के अनुसार तथा "ज्यो तिलमाँही तेल है है ज्यों चमकन में आग। तेरा प्रभु तो में बसे जाग सके तो जाग", मन मथुरा दिल द्वारिका काया काशी जान। दस द्वारे का देहरा या मे ज्योति पहचान", तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान"–आदि अनेक महापुरुषों के वचनो के अनुसार परमात्मा सर्वव्यापी है, उसका ध्यान व उपासना कहीं भी की जा सकती है, केवल मन्दिर मस्जिद व चर्च में ही नहीं।

जैसा कि नवभारत आदि समाचार पत्रों में यह दुखद समाचार पढ़ने को मिला कि हरिजनो ने मन्दिर प्रवेश के विरोध मे श्री शंकराचार्य निरंजन देव द्वारा दिये गये वक्तव्य के कारण बीकानेर मे ९ हरिजन परिवारो ने हिन्दू धर्म त्याग दिया है कि हिन्दू मन्दिर हमारे लिए बन्द हैं तो मस्जिद व चर्च खुले हुए हैं, जब कि उनका यह विचार व कार्य विवेक संगत नहीं है, क्योंकि आर्य समाज ने ईश्वर उपासना, संध्या, हवन व सत्संग के लिए उनके द्वार खोल रखे हैं, आर्य समाज के अनेक सदस्य, अधिकारी व पुरोहित व प्रचारक पिछड़ी जाति [हरिजन] तक रहे हैं। आर्य [हिन्दू] धर्म, वेद, शास्त्र, गीता, रामायण आदि पढ़ने एवं उनके अनुसार आचरण करने पर उन पर कोई भी धार्मिक, समाजिक व कानूनी प्रतिबन्ध नहीं है। इसके विपरीत शंकराचार्य के वक्तव्य धर्म, समाज व कानून विरुद्ध दण्डनीय घोर अपराध है, जिसके लिये सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, अन्य संस्थाओं व नेताओं की ओर से सरकार से मांग है कि वे शंकराचार्य को गिरफ्तार करें जिससे इस विषय पे उमड़ रहा जन रोष अशान्ति व आन्दोलन समाप्त हो सके।

जहाँ तक जनता के नागरिक, सामाजिक, धार्मिक व कानूनी अधिकारों की रक्षा का प्रश्न है, आर्य समाज उसका समर्थक रहा है। हिन्दुओं के इन अधिकारों पर हैदराबाद के नवाब ने तथा अंग्रेजों ने सिखों पर जब प्रतिबन्ध लगाये तब आर्य समाज ने उनकी रक्षार्थ बड़े बड़े आन्दोलन तथा बलिदान किये हैं।

*

आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज में क्रान्ति लाने के उद्देश्य से नव युवकों को दीक्षित करने के लिए शिक्षकों के निर्माण हेतु गुरुकुल अयोध्या (फैजाबाद) में पूर्वांचल आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन २९ मई, ८८ से २ जून ८८ तक आर्य वीर दल संचालक श्री अवध बिहारी खन्ना की प्रेरणा से आर्य उप प्रतिनिधि सभा फैजाबाद के तत्वावधान में किया गया। शिविर में १०० शिक्षकों एवं आर्यवीरों ने भाग लिया प्रशिक्षार्थियों को शारीरिक, बौद्धिक एवं शिविर से सम्बन्धित सभी प्रशिक्षण कुशल आर्य शिक्षकों द्वारा दिया गया १२ जून, १९८८ को आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्रीयुत बाल दिवाकर हंस द्वारा शिविर का समापन समारोह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। श्री हंस जी ने आर्यवीर दल के प्रशिक्षण के महत्व पर बड़ा ही विवेचना पूर्ण प्रकाश डाला और वर्तमान समय मे ऐसे आयोजनो की बहुत बड़ी उपयोगिता एवं आवश्यकता बताई।

उक्त समारोह में पूर्वांचल की आर्य समाजों के प्रतिनिधि तथा फैजाबाद–अयोध्या के सम्भ्रान्त नागरिकों ने उपस्थित होकर प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षणार्थियों का उत्साह वर्धन किया।

सभा मन्त्री

श्री हनुमान बन्दर न होकर वेदज्ञ तथा महापुरुष व अखण्ड ब्रह्मचारी थे

श्री सुनील कुमार जी शास्त्री ६३, चन्द्र शेखर आजाद
छात्रावास, लखनऊ

वैसे इस सम्बन्धमें लिखने की आवश्यकता न थी, परन्तु श्री रामानन्द सागर की कथित रामायण ने तो महर्षि, ब्रह्मचारी, वेदज्ञ, मनीषी महापुरुष हनुमान जी के चरित्र को तथा आकृति को नष्ट करने में कोई कसर नहीं रखी। मुझे टेलीविजन की इस रामायण से यह आशा नहीं थी कि इसके माध्यम से रामायण को काल्पनिक एवं मनोरंजन मात्र के स्तर तक पहुंचा दिया, जावेगा। इसका बच्चों पर विपरीत असर पड़ा है। मैं संक्षेप में वाल्मीकि रामायण के प्रमाण से सूक्ष्म लेख द्वारा "आर्यमित्र" पाठकों तथा जन-मानस व विशेष रूपेण बच्चों को हनुमान जी के बारे में बताना चाहता हूं।

ततः शारदाम्तरे लीनं दृष्टवा चकित मानसा।
वेष्टतार्जुन न वस्त्रं तं विद्युत्संघात पिङ्गलम ॥
(वा० रामा० सुन्दर कां० ३१)

श्वेतवस्त्रों को धारण करने के कारण हनुमान जी वानर नहीं थे मनुष्य ही वस्त्र पहनता है, बन्दर कभी वस्त्र नहीं पहना करते।

श्रीरामो लक्ष्मणं प्राह पश्येमं बटुरूपिणाम्।
शब्दशास्त्रमशेषेण श्रुतं नूनमनेकधा ॥
अनेनभाषितं कृत्स्नं किञ्चिदपशब्दितम्
ततः प्राह हनुमन्तं राघवो ज्ञान विग्रह : ॥
(वा० रामा० कि० का० सर्ग १)

इस मन्त्र के अनुसार राम कह रहे हैं लक्ष्मण से कि इस (हनुमान) ब्रह्मचारी को देखो निश्चय ही इसने व्याकरण (शब्द-शास्त्र) को कई बार भली भांति पढ़ा है। देखो इसने इतनी बातें कहीं किन्तु इसने बोलने में कोई अशुद्धि नहीं की।

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मन : ।
तमेव कांक्षमाणस्य ममान्तिक मिहागत : ॥
नानृग्वेद विनीतस्य नायजुर्वेद धारिण : ।
नासामवेदविदुषः शक्यमेव विभाषितम् ॥
नुन व्याकरणं कृत्यमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहार तानेन न किञ्चिदपशब्दितम् ॥
(वा० रामा० कि० काण्ड सर्ग १)

इन श्लोकानुसार राम लक्ष्मण से कहते हैं! यह (हनुमान जी) सुग्रीव के मन्त्री हैं और यह उनकी इच्छा से मेरे पास आये हैं, जिसने यजुर्वेद को धारण नहीं किया है, जो सामवेद का पण्डित नहीं है वैसे वाणी यह बोल रहे हैं। वैसी सामान्य व्यक्ति नहीं बोल सकता है। इन्होंने निश्चय पूर्वक सम्पूर्ण व्याकरण पढ़ा है। क्योंकि यह अशुद्ध कोई भी शब्द नहीं बोले हैं। इससे स्पष्ट है हनुमान जी वेदों और व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। हनुमान जी अत्यन्त वीर, पराक्रमी, ब्रह्मचारी थे। समय नहीं अतएव मैं इतने ही शब्दों में अपनी बात समाप्त करता हूं इस आशा के साथ कि अब भविष्य में भी हनुमान जी को पूंछ वाला बन्दर नहीं कहेंगे।

बाल जगत

चरित्र निर्माण में गुरुकुलीय शिक्षा का योगदान

[यतीन्द्रसिंह आर्य पुत्र श्री यशपालसिंह ग्राम मोहद्दीपुर मुरादाबाद]

आज ही नहीं अपितु संसार का कौन सा ऐसा देश है जो अनैतिक चरित्रहीनता अनाचार भ्रष्टाचार और अराजकता का शिकार न हो, विश्व के प्रत्येक कोने मे नास्तिकता का प्रलयंकारी ताण्डव नृत्य हो रहा है जिससे भयभीत होकर धर्म न जाने कहां छुप गया है समाज रूपी शरीर का मेरुदण्ड नवयुवक वर्ग अकर्मण्य होकर जर्जर हो चुका है।

प्रिय भारत वासियों! क्या? हमने कभी सोचा! कि जिस देश के पुरुष अपने चरित्रों की समुज्ज्वल शिक्षा दूसरों को देते थे जिसका वर्णन करते हुए मनु महाराज ने लिखा है--

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्याम् सर्वमानवाः ॥

क्या वे आज इतने गिर गये, उन सबका मूल कारण क्या हैं? यदि आपने नहीं सोचा! तो राम तथा कृष्ण शङ्कर और दयानन्द चैतन्य महाप्रभु, तथा सन्त तुकाराम गायक तथा कबीर, गांधी तथा नेता सुभाष, सीता और सावित्री, मीराबाई व पन्नाबाई की पवित्र भूमि आप देखते-देखते वीरान हो जायेगी, जिस देश की पवित्र भूमि पर वेद सस्वर पाठ से समस्त दिशायें गूंजती थी वहां की शरण सिनेमा के छन्द तथा अश्लील गानों से पूरित हो जायेगी इन सब बुराईयों का मूल कारण है धर्म हीन शिक्षा।

मानव का निर्माण अच्छी शिक्षा सेहोता है जिस शिक्षा से प्राचीन-काल में मनुष्यों का निर्माण होता था वह है "गुरुकुल शिक्षा।"

गुरुकुल के आचार्य के पास गरीब तथा अमीर राजा एवं रङ्क सभी के बच्चे समानभाव से रहते हुए तपस्या पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। हम राम, भरत, कृष्ण और सुदामा की कहानी सुनते हैं।

यह केवल किम्वदन्ति कहानी नहीं अपितु भारत के समुज्ज्वल अतीत का इतिहास है! यदि हम इस पुण्य भूमि को पुनः उसी गौरवान्वित रूप में देखना चाहते हैं तो हमको इस समय ऐसा चरित्रवान आर्य वीर बनना होगा जिसे संसार की कोई भी सम्मोहन शक्ति अपनी ओर आकर्षित न कर सके इसके लिए गुरुकुल शिक्षा का उद्धार करना आप सबका पुनीत कर्तव्य हो जाना चाहिये। तभी हम अपने राष्ट्र को सशक्त और सुदृढ़ बना सकते हैं "नान्यः पन्थाविद्यतेयऽनाय"

निर्वाचन

आ० स० बिधूना (इटावा)
प्रधान–श्री ओमचन्द्र गुप्ता बिधूना
मन्त्री–श्री भजन लाल गुप्त बिधूना
कोषा० श्री रामचन्द्र पोद्दार बिधूना

आर्य समाज के भविष्य के चिंतन में संगोष्ठी का आयोजन

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

आर्य समाज के प्रणेता स्वराज्य की कल्पना कर उसको कार्यान्वित कर स्वराज्य शब्द की सर्व प्रकाश की घोषणा निर्भीकता पूर्वक अंग्रेजों के शासन काल मे करने के पीछे उनकी मनोकामना क्या थी बतायें।

१– स्वराज्य के वे साम्निध्य से वे सार्वभौमिक आर्यों का चक्रवर्ती राज्य भी चाहते थे।

२– जिसकी पुष्टि पृथ्वी पैदा होने से लेकर श्री कृष्ण काल द्वापर युग तक आर्यों का चक्रवर्ती राज्य सारे संसार में था यह क्यों कर सिद्ध किया अपने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में ? बतायें ?

३– यदि आर्य समाज को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिये था तो क्यों कर ऋषि ने राष्ट्रवाद व स्वराज्य का नारा लगाया ?

४– तथा महर्षि आदेशानुसार भारत के आजादी के लिए ४५% आर्य समाजियों ने क्यों कर बलिदान देकर स्वराज्य प्राप्ति, में सबसे अधिक योगदान दिया ? बतायें आर्य समाजियों को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिये था तो स्वयं ऋषि आर्य समाज के संस्थापक १८५७ के क्रान्ति के प्रणेता क्यों कर बनें ?

५– तत्कालीन राजा–महाराजाओं से मिलकर क्रांतिकारियों को पत्र लिखकर स्वराज्य की प्राप्ति के प्रति राजनैतिक गुप्त रूप से भाग लिया ? बतायें ?

५– ऋषि दयानन्द ने अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश में छठे समुल्लास राजनीति विषय पर प्रेरणास्पद अध्याय क्यों लिखा ? प्रकाश डालें ?

(५) इन सबका तात्पर्य यह है कि आर्य समाज परोक्ष रूप से राजनीति में भाग लेकर फिर एक बार आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर विश्व को आर्य बनावें। बगैर राजनीति में भाग लिए आर्य समाज अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकने की कल्पना भी नहीं कर सकता। इसी तीव्र वेदना से महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में छठा समुल्लास लिखा बल्कि सन् १८५७ के प्रणेता के रूप में क्रांतिकारियों के जन्म दाता भूमिगत कार्य में रत रहकर अपनी आत्मा को पहुंचाकर राजनीति में आर्य समाज को किसी और नाम से भाग लेने के लिये अपने कृतित्व से सिद्ध कर वेद प्रवृति अनुसार प्रेरणा दे गये अन्यथा छठा समुल्लास लिखने का स्वयं राजनीति में भाग लेने का क्या कारण था विद्वान तथा व संन्यासी

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर देकर दर्शावें।

राजनीति में आर्य समाज को महर्षि आदेशानुसार भाग ले कर वर्तमान भारत की समस्याओं का समाधान करें। व आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित करें। यही आर्य समाजियों की अन्तरात्मा की आवाज है। इसे विचारकर कार्यान्वित करें। यही नम्र प्रार्थना है। या उपरोक्त विचार को पढ़कर आर्य विद्वान व संन्यासी गण अपने विचार प्रस्तुत करें।

शुभ विवाह

दिनांक ७, ८, ९ जुलाई को ग्राम बराड़ पाकड़ में श्री रामतीरथ शुक्ल की सुपुत्री का विवाह श्री हजारी मिश्र के साथ मैंने वैदिक रीत से कराया। हजारों नर-नारियों ने यह वैदिक संस्कार देखकर अतीव प्रसन्नता प्रकट की। सब लोगों के मुख से यही सुनाई पड़ रहा था कि पौराणिक पण्डित कुछ नहीं संस्कार कराते हैं।

तर्क रत्न लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्य रत्न
आर्य समाज लोकहर्षा जिला गोण्डा

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में–

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय में सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम भेजें रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न है तथा १५% कमीशन भी देय है।

	मूल्य
धर्म शिक्षा भाग १ "	१–५०
" " भाग २...	१–५५
" " भाग ३...	२–७०
" " भाग ४...	२–७५
" " भाग ५...	३–६०
" " भाग ६...	४–७५
" " भाग ७...	४–१५
" " भाग ८...	३–००
" " भाग ९...	४–००
" " भाग १०...	३–००
" " भाग ११...	४–००
" " भाग १२...	३–५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

वेद सप्ताह के अवसर पर

६० पैसे की १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, दैनिक यज्ञ प्रकाश, वैदिक धर्म, परमात्मा विचार वैदिक प्रश्नोत्तरी, सत्य पथ, आर्य समाज क्या है, ईश्वर प्रार्थना, प्रेम भक्ति जितने इच्छा हो मंगावें।

उत्तम हवन सामग्री ४) किलो।

वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३, रामजस रोड,
करोलबाग—नई दिल्ली-५

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५९६९९
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू एन पी ७६
श्रावण कृष्ण ६
११ जोलाई रविवार १९८८ ई०

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

(३) प्रभु भक्ति प्राप्त हो जाये, फिर क्या अप्राप्त रह जाये।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये ॥
अह्लाद भक्त जो तेरा है
उन्नति का सफल चितेरा है
श्रेष्ठ आत्मबल अनुपम पाये
जिनका जीवन प्रभु प्रेरा है।
प्रभु प्रीति हृदय में आये, तो आत्म शक्ति मिल जाये।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये ॥
सन्त मार्ग आत्म बल दिखलाता
वही वायु जल अग्नि बढ़ाता
द्यौ लोक भूमि या अन्तरिक्ष
सब कहीं वही है पहुंचाता।
उसके सुमित्र बन जायें, तो ज्ञान ज्योति गह पायें।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये ॥
यह प्रभु का बल ही तो बल है
जड़ चेतन सब का सबल है
सूर्य प्रकाशक जगत आत्मा
सब सृजन हार ये अविचल है।
आभास यही हो जाये, तो मिलन सरल हो जाये।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये ॥

(४) प्रलय पूर्व से ऊपर बैठा, अब निकट बैठ लें हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सो वर्ष देख लें हम भी।
था प्रलय पूर्व को सृष्टि समय
रह जाय वही बस प्रलय समय
आदि जन्म दाता ईश्वर ने
की वर्तमान यह सृष्टि उदय।
वह युग युग से जी रहा जगत, सो वर्ष जियें वह हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सो वर्ष देख लें हम भी ॥
वह मेघ गर्जना तड़ित नाद
सरिताओं का कलकल निनाद
वन वृक्ष पक्षियों की चहक गुन
संगीत मधुर सम्वाद वाद।
वह आदि काल से बोल रहा, सो वर्ष कहे सुन हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सो वर्ष देख लें हम भी ॥
हे नाथ आप सुन्दर समर्थ
मत आयु हमारी जाय व्यर्थ
स्वाधीन स्वस्थ भी बन जियें
या जियें शताधिक पर सदर्थ।
उसने ब्रह्माण्ड अधीन किया, स्वाधीन जियें बन हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सो वर्ष देख लें हम भी ॥

समर्पण

परिपूर्ण पिता परमेश्वर को, हम कौन भेंट व्यवहार करें।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्व समर्पण स्वीकार करें ॥
मेरे परमेश्वर क्या निधि
सम्मुख तेरे यह हाथ बँधे
कुछ पास हमारे क्या कोष सोच
कर सके कर्म क्या देव विधे।
सकोच शील यह हृदय अग, इसको ही अंगीकार करें।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्व समर्पण स्वीकार करें ॥
जप ध्यान उपासन आराधन
प्रभु कौन बड़ा है इससे धन
कर सके कर्म कुछ उत्तम हम
वे सभी तुम्हे है देव समर्पण।
जो भेंट तुम्हारी बन जाये, व्यवहार वही आधार करें।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्व समर्पण स्वीकार करें ॥
नित भक्ति भाव मे वृद्धि करो
यह आत्म शक्ति समृद्धि करो
धर्म अर्थ सब काम मोक्ष की
हे देव शीघ्र अब सिद्धि करो।
इस जगत पन्थ को पार करें, सुख शान्ति हृदय आगार करें।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्व समर्पण स्वीकार करें ॥

नमस्कार

निज जोड़ हाथ कर नमन भाव, कर रहे नमस्ते शंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शंकर को ॥
कुछ नहीं असम्भव है उसको
वह पार करे इस भव जग को
वह हरे मयोभव जग माया
तो करे मोक्ष सम्भव हमको।
जग जन्म योग या मरण करण, ताण्डवकारी प्रलयंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शंकर को ॥
जग जीवों का कल्याण करे
जग माया का भी दान करे
मन प्राण इन्द्रिय सुख साधी
शंकर देकर उत्थान करे
हे आत्म उसी को नमन करो, सुखदायक स्वयं शुभकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शंकर को ॥
वही तुम्हारा मंगलकारी
वही बनाये जग अधिकारी
है आत्म हितैषी नाथ वही
सब जगत मोक्ष सम्पद धारी।
हे आत्म उसे अवलोक चलो, निज हृदय ध्येय अभयंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शंकर को ॥

(क्रमशः)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ | घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

श्रावण कृष्ण १०, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक ७ अगस्त १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३।
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	८१
अङ्क	१२

आर्य मन्दिरों के कपाट मानवमात्र के लिए खुले हैं

★ ★ ★

अस्पृश्यता कलंक है—

...और एक सन्त ने कहा था—"हे दीन हीन कुटिया के वासी ? नम्रता के आगार ?? अपने निर्मल करों से मलिनता को बहती हुई धारा को धवलधारिणी निर्मल गंगा में परिवर्तित करने वाले ??? गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र के पावन जल से सिंचित इस आर्यावर्त में हम तुम्हे खोज रहे हैं" अपने कठोर करो से मिट्टी और कीचड़ में सने हुए हीरे को स्फटिक मणि के समान पारदर्शक बनाने वाले, तुम्हारा पतितपावन स्वरूप हमें सर्वत्र दिखाई दे रहा है। तुम आर्य जाति के सशक्त अंग हो। हमारे हृदयों में तुम्हारे लिये प्यार ही प्यार है। हमने तुम्हारे झूठे बेर खाये हैं। तुम हमें भगवान मानकर हमारे चरणों में अवलुंठित होना चाहते थे—हमने तुम्हें हृदय से लगा लिया था। राम जानकी को गंगा पार लगाने वाले तुम्हीं तो थे। तुमने सदा आर्य जाति की रक्षा की है क्योंकि तुम आर्य थे, आर्य हो, आर्य रहोगे। अरावली की पहाड़ियों में भटकते हुए हमारे अस्तित्व की तुमने भाला उठाकर रक्षा की थी। तुम्हारे प्रवेश से हर मन्दिर पवित्र होगा चाहे वह हरि का मन्दिर हो, चाहे आर्य समाज का मन्दिर। वेदों की ऋचाएं तुम्हें पुकार रही हैं। आर्य समाज मन्दिरों के दरवाजे तुम्हारे लिए खुले हुए हैं। हमारा आसन तुम्हारे लिए बिछा हुआ है। आओ, वेदों की ऋचायें साथ-साथ बोल कर हृदय और मन को पवित्र करें। तुम आर्यपुत्र राम के सखा, वीरवर प्रताप के शौर्य, दयानन्द की आत्मा, और बापू के प्राण हो। कौन कहता है तुम अस्पृश्य हो, मन्दिरों में अगम्य हो—

"समानी प्रपा सहवोऽन्न भागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि"।

अथर्व ३ / ३० / ६

तुम लोग (समानी प्रपा) साथ २ जल पीने वाले हों, (सहवोन्न भागः) साथ २ खाने वाले (सह भोजी) हों, (समाने योक्त्रे युनज्मि) क्योंकि परमात्मा ने हमें साथ २ एक ही बन्धन में बान्धा है। (परम्परानुरागवशेन एकत्रावस्थितमन्नपानादिकमुपभुज्यतामिति ईशादेशः)

हाँ, खानपान को सात्विक बनाना होगा और कुरितों को छोड़ना पड़ेगा। पापाचरण से दूर रह कर आर्यत्व के गुणों को धारण करना होगा। तो आओ ! ओ३म् की विजय पताका लेकर जन-जन को सच्चे अर्थों में हरिजन (आर्यजन) बना दें। पाखण्ड खण्डिनी युग-युग वरदायिनी अमर वेद माता का सन्देश घर २ सुना दें। आर्य समाज के मन्दिरों में बैठकर पवित्र वेद ध्वनियों से दिशायें गुञ्जाय-मान कर दें। सम्पूर्ण विश्व को आर्य बना दें।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

—राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—श्रावण कृष्ण १० संवत् २०४५, रविवार ७ अगस्त १९८८, दयानन्दाब्द १६१, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक १४ अगस्त १९८८ को प्रातः ११ बजे नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। विचारणीय विषयों की सूची सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों को डाक से भेज दी गई है। कृपया समय पर पधारने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज बुला रहा है

आर्य समाज का आन्दोलन जिस तूफानी गति से विश्व के कोने २ में प्रसारित हो रहा था, आज उसमें कुछ शैथिल्य परिलक्षित हो रहा है। जो अमानवीय, अवैदिक, सृष्टिक्रम के विपरीत प्रथायें मानवसमाज को अन्धकार के गर्त में ढकेले हुए थीं और जो इस तूफान की आंधी में तृणवत् तिरोहित होने लगी थीं, आज फिर सिर उठाने लगी हैं। वेद मानव समाज को मौलिक दृष्टि से एक तथा समान मानता है। गुणकर्मानुसार उसके वर्ण भेद हैं, जाति भेद नहीं। यजुर्वेद के—"ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत्..." में इसी वर्णचतुष्टय का भाव वर्णित है न कि किसी जाति का। स्वयं भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है—"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः"—मैने गुण कर्म विभागानुसार मनुष्य को चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभक्त किया है। इससे स्पष्ट व्याख्यान या उपदेश और क्या हो सकता है। जाति का लक्षण तो शास्त्रों में—"समान प्रसवका जातिः"—लिखा है। अर्थात् प्रसव में समान तथा सकल सूरत में जो समान हो, उसे जाति कहा जाता है। इस तरह संसार के समस्त मानवों की एक ही मानव जाति है। फिर भी हमारे पौराणिक भाई, सन्त महन्त और मठाधीश अपने ही इस चातुर्वर्ण्य को उपेक्षित और हेय मानते हैं और समय २ पर अनर्गल वक्तव्य देते रहते हैं जिसे आज के वैज्ञानिक युग में एक छोटा बच्चा भी सुन कर हंसने लगता है। वेद और गीता के इस सन्देश के अनुसार कोई भी किसी भी समय किसी भी वर्ण के अन्तर्गत आ सकता है। ईश्वरीय सृष्टि में परीक्षा और परिणाम साथ २ चलते हैं। कोई अपने को कुछ भी समझता रहे...।

पिछले दिनों जयपुर में पुरी के शंकराचार्य ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश पर आपत्ति उठाई थी। इस पर हम आर्य समाजियों का खून खौलता उठा था और हमने उन्हें शास्त्रार्थ के लिए चैलेन्ज किया था। प्रदर्शन और वक्तव्य देकर उनके इस अदूरदर्शितापूर्ण अवैदिक मन्तव्य को पूरी तरह धूमिसात कर दिया था। अब उन्होंने स्वयं ही अपना स्पष्टीकरण दिया है...मैंने ऐसा नहीं कहा था...मेरा मतलब...आदि।

महर्षि दयानन्द वर्ण व्यवस्था को इन रूढ़िवादी कुप्रथाओं से परिचित थे जिनके कारण हमारा देश पराधीन हुआ और वर्ण विद्वेष की भयंकर ज्वाला में सदियों तक झुलसता और तपता रहा। आज भी इस प्रकार के वक्तव्यों और भावनाओं से वातावरण को प्रश्रय मिलता है। वैदेशिकी और विधर्मी इसे तिल का ताड़ बनाकर सवर्ण असवर्ण के बीच ज्वाला को फिर भड़का सकते हैं। आर्यसमाज अपने दिव्य दूरदर्शी चक्षुओं से सम्मुख आने वाले इस भयानक ज्वालामुखी को देख रहा है। वह देख रहा है एक काली आंधी फिर उठ रही है जो हमारे वेद रूपी उजाले को ढक देना चाहती है। हम चुप नहीं बैठ सकते, हमारा विश्वास है अज्ञान की यह अंधेरी यामिनी नष्ट होगी और वेद रूपी सूर्य का प्रकाश फिर संसार को अपने ज्ञाना लोक से प्रकाशित कर देगा। अनादि काल से चली आ रही गुणकर्मानुसार इस वैदिक परम्परा का कब से उलंघन हुआ इसका सही २ पता लगाना मुश्किल है लेकिन मध्ययुग के उन अज्ञानी पण्डितों को धिक्कारते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने वाले आज के थोथे अज्ञानी सन्तों, मठाधीशों और तथाकथित पण्डितों को हम सचेत करना चाहते हैं कि वे हमारे समाज को विषमताओं और विकृतियों से न भरें। यदि उन्हें कोई सन्देह हो तो हमारे विद्वानों से परामर्श कर सकते हैं लेकिन अनाप शनाप वक्तव्य देकर समाज को विघटन के मार्ग पर न ले जायें। हमने समस्त समाजों को निर्देशित किया है कि आर्य समाज मन्दिरों को समता व समानता और बन्धुता का आदर्श आश्रयस्थली बनाया जाय। अस्पृश्यता कलंक है अभिशाप है। हमारे समाज में न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा। हम सबको समान अवसर देकर अपने समाज मन्दिरों में बुलाकर इतना ऊंचा उठाना चाहते हैं इतना ऊंचा कि हिमालय से भी ऊंचा उनका चरित्र बने, आसमान से भी ऊंचे उनके कृत्य हों और सूर्य से भी अधिक उनका तेजस्वी व्यक्तित्व हो।

अतः अपने इन हरिजन (आर्य) भाइयों को शतशः सहस्रशः की संख्या में आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में तथा अन्य समारोहों में ससम्मान आमन्त्रित कीजिए। उनके साथ सहभोज में सम्मिलित होकर "सहनौ भुनक्तु" का आदर्श स्थापित कीजिए। आप देखेंगे इन मैले कुचैले कपड़ों में कैसी हिमकिरीटिनि स्वर्णिम आभा छिपी हुई है इन सिकुड़े हुए हृदयों में हमारे धर्म के लिए कितना समर्पण और प्यार छिपा हुआ है।

★★★★

"वेदों के आविर्भाव में दार्शनिक पृष्ठभूमि"

*

लेखक–आर्य रत्न, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री दर्शन वाचस्पति

वेदों का कब आविर्भाव हुआ यह हमारा विवेच्य विषय यहाँ नहीं है, क्योंकि वेदों पर आस्था रखने वाले आर्यजन इसे अनादि मानते हैं। फिर जो अनादि है, उसके आविर्भाव की बात करना भी विरोधाभास है, वस्तुतः विरोध नहीं। कारण यह है कि जबसे इस जीवात्मा को वह ईश्वरीय ज्ञान मिला, तब से वेदज्ञान का प्रकट होना अभिमत है।

अच्छा, तो यह प्रकट–ज्ञान का अधिकरण जीवात्मा है या पर–मात्मा ? इस विवेचन मे वेद ज्ञान का प्रथम अधिकरण तो परमात्मा ही है, क्योंकि यह उसका स्वाभाविक ज्ञान है जो कि परमात्मा का गुण भी है, यहां गुणी और गुण का आधार और आधेय सम्बन्ध कहने की अपेक्षा समवाय सम्बन्ध कहना ही अधिक ठीक है। आधार और आधेय सम्बन्ध में तो गुणी और गुण का ही नहीं, प्रत्युत द्रव्य और द्रव्यान्तर का भी सबध हो सकता है जो कि अनित्य भी होता है। अतः समवाय सम्बन्ध कहना ही अतिव्याप्ति दोष से शून्य होगा इसीलिये वैशेषिक दर्शन में द्रव्य का लक्षण "क्रियागुणवत्–समवायकारणमिति–द्रव्यलक्षणम्" कहा है।

शङ्का:–इस प्रकट हुए वेदज्ञान का अधिकरण जीवात्मा तो हो नहीं सकता, क्योंकि परमात्मा ही इसको धारण करता हे। वही उसका नित्य आधार है यद्यपि जीवात्मा भी नित्य है, पर वह अपने स्वाभा–विक ज्ञान और इन्द्रिय–जन्य ज्ञान का ही समवाय सम्बन्ध से अधि–करण हो सकता है, न कि विषयिता सम्बन्ध से नैमित्तिक ईश्वरीय ज्ञान का।

समाधान.––यह किसी शास्त्र का सिद्धान्त नहीं है कि किसी नैमित्तिक गुण ज्ञान का आधार अन्य चेतन नहीं हो सकता। यदि यह कहा जाये कि ईश्वरीय ज्ञान का जब ईश्वर से नित्य सम्बन्ध है, तो अन्य चेतन ही कैसे उसका आधार बन सकेगा क्योंकि नित्य गुण पृथक् नहीं हो सकता। पर भाई, नित्य ईश्वर के साथ साथ उसका गुण ज्ञान भी तो सूक्ष्मतर और व्यापक है, जो जीवात्मा में व्याप्त रहता है। जीवात्मा ज्ञानकृत् सान्निध्य से उस ज्ञान को भी ग्रहण कर लेता है। पर वह ज्ञान जीवात्मा का ज्ञान न होकर ईश्वरीय ज्ञान ही कहलावेगा।

वेदान्तदर्शन के "शास्त्रयोनित्वात्" इस सूत्र पर भाष्य करते हुए शङ्कराचार्य लिखते हैं कि "महतः ऋग्वेदादे: शास्त्रस्यानेक विद्या–स्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनि: कारणं ब्रह्म" अर्थात् अनेक विद्यास्थानों से उपकृत, दीपक के समान सब अर्थों का प्रकाश करने में समर्थ और सर्वज्ञ के समान ऋग्वेदादि शास्त्र का कारण ब्रह्म है। अब यहां यह विचारणीय है कि समवायिकारण अर्थात् उपादान, असमवायी तथा निमित्त इन कारणों में से वेदज्ञान का ईश्वर कौन सा कारण है ?

कतिपय विद्वानों ने वेदज्ञान के प्रति ईश्वर को उपादानता स्वी–कार की है जो आपाततः ठीक प्रतीत होती है, क्योंकि "यत्समवेतं–कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्" अर्थात् जिसे लेकर कार्य उत्पन्न हो उसे समवायि या उपादानकारण कहते हैं, जैसे घट के प्रति मृत्तिका। इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान गुण को लेकर ही वेद बना, यह स्पष्ट है। यदि कोई शङ्का करे कि गुणी ईश्वर से उसका गुण ज्ञान पृथक् नहीं हो सकता, ऐसा मानने पर भी यदि ज्ञान गुण के साथ गुणी ईश्वर भी रहे, तो कोई सिद्धान्त हानि प्रतीत नहीं होती, जैसे प्रकृति से बने जगत् में परिणाम व विकार देखे जाते हैं, तो प्रकृति को परिणामिनी मानते हैं। इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान में तो कभी विकार भी नहीं आता क्योंकि उसका उपादान कारण ईश्वर और उसके गुण भी अविकारी व अपरिणामी हैं। तथा "जन्माद्यस्य यतः" और "शास्त्र–योनित्वात्" पञ्चम्यन्त होने से इसी उपादान कारण की ओर संकेत भी कर रहे हैं।

प्रश्न–एक बात विचारणीय है, कि उपादान कारणभूत ईश्वर से वह वेदज्ञान स्वयं उत्पन्न होता है, अथवा ईश्वर उसे उत्पन्न भी करता है ?

उत्तर–अरे भाई, यह नियम तो स्थूल कार्यरूप को प्राप्त होने वाले उपादानों के साथ घटित होता है, सूक्ष्म [निरवयव] कार्य के साथ नहीं, जब कि वेदज्ञान तो सूक्ष्म ही है।

पर उक्त कथन विवेचन की कसौटी पर खरा नहीं उतरता उसमें निम्न कारण हैं :––

संख्या १ :––अभिन्ननिमित्तोपादान् कारण का कोई दृष्टान्त नहीं है। अतः ब्रह्म को वेदज्ञान का उपादान कारण मानना तर्कसंगत नहीं। उपादान कारण सदा दूसरे के अधीन होता है जब कि ब्रह्म किसी के अधीन न होकर स्वाधीन है।

संख्या २ :––"स्वस्कन्धारोहणवत्" आत्माश्रयी दोष भी इस पक्ष में उत्पन्न होगा, अर्थात् इस प्रकार स्वयं को उपादान करके ईश्वर स्वयं ही वेदज्ञान करने के लिये निमित्त कारण भी बनेगा।

संख्या ३––सिद्धान्तमुक्तावली कारिका १८ में लिखा है "आभ्यां परं तृतीयं स्यात्" अर्थात् समवायिकारणासमवायिकारणाभ्याम् परं भिन्न कारणं तृतीयं निमित्तकारणमित्यर्थः। इससे ज्ञात होता है कि निमित्त कारण उक्त दोनों कारणों से भिन्न ही होना चाहिये।

संख्या ४––उपादान कारण सदा परतन्त्र और परिणामी होता है, जब कि निमित्त कारण स्वतन्त्र और अपरिणामी होता है तथा उपादान कारण के गुण सदा कार्य में आया करते हैं।

संख्या ५––यह भी नियम है, कि द्रव्य से द्रव्य, और गुण से गुण उत्पन्न होता है। यहां पर ब्रह्म और उसके ज्ञान में कार्य कारण सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसके अर्थ यह कदापि न समझे जाये कि परमात्मा जीवात्मा को दिये हुवे या प्रकाशित ज्ञान के प्रति निमित्त कारण भी नहीं हो सकता।

संख्या ६––वेद ईश्वर का ज्ञान रूप गुण है व निरवयव है जब कि उपादान कारण सावयव होता है तथा वेद को कार्य भी नहीं कह सकते, क्योंकि सत्कार्यवाद पक्ष में भी उद्भूत कार्य का विलय कारण में मानना पड़ेगा, जो यहां घटित नहीं होता। इस विषय को कुछ गह–

(शेष पृष्ठ ४ पर)

"वेदों के आविर्भाव में दार्शनिक पृष्ठभूमि"

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

राई से समझिये, जब मुक्ति से आने वाले अग्न्यादि जीवात्मा पूर्व संस्कारों से रहित थे और उनका आत्मा पूर्ण निर्मल व अन्त-करण स्वच्छ तथा तथा उन जीवों के अन्त करण स्वाभाविक ज्ञान,.जिसको नैमित्तिक ज्ञान से युक्त होना था व ईश्वर की ज्ञानकृत् अत्यन्त समीपता से चेतन होने के कारण ज्ञान के धारकता गुण से युक्त थे, चेतन होने से व अन्त करण से सक्रिय अर्थात् इच्छा (रिसीविंग) गुण से परिपूर्ण थे, अत ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रकाश या आविर्भाव होना सहज था, अर्थात ईश्वर ने उनकी आत्मा में ज्ञान का उपदेश किया।

प्रश्न—जब ईश्वर का ज्ञान अखण्ड होता है, तो ईश्वर का सारा ज्ञान अग्न्यादि में होना सम्भव नहीं था फिर उन्हें यह खण्ड या अंश रूप में कैसे प्राप्त हुआ ?

उत्तर—जिस प्रकार किसी बैटरी में विद्युत्संक्रमण (चार्ज) किया जाता है, तो अपनी सामर्थ्य के अनुरूप विद्युत् उसमें समा जाती है, इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि उस विद्युत के खण्ड हो गये। सृष्टि के प्राप्तियोग्य ज्ञान सृष्टि के आदि में प्राप्त कर लिया गया, उसके अवान्तर समस्त अन्य ज्ञान इसी में समाहित हुए। इस प्रकार वेद ज्ञान के प्रति ईश्वर निमित्त कारण ही है। न कि उपादान कारण।

जैसे कोई भी अध्यापक जब विद्यार्थी को पाठ पढ़ाता है तो विद्यार्थी के अन्त करण में पहुंचे हुए ज्ञान के प्रति अध्यापक और उसका ज्ञान उपादान कारण नहीं होता, प्रत्युत निमित्त कारण होता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में स्पष्ट लिखा है, कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है।

संख्या २—"वेदोपदेश के बिना ज्ञान सम्भव नहीं। इससे भी प्रतीत होता है, कि परमात्मा और जीवात्मा में उपदेशक और उपदेश्य सम्बन्ध था, तथा ईश्वर का उपदेश आत्मा में अनुप्रविष्ट हो गया।

प्रसङ्ग वश इस प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है, कि ईश्वर ने जीवों को यह उपदेश दिया तो क्यों ? इसका महर्षि व्यास ने समाधान किया है, कि वह ईश्वर स्वभावत करुणाशील है, इस पर कतिपय लोगों ने यह आक्षेप किया है कि फिर तो ईश्वर करुणा के पराधीन हो गया परन्तु ऐसी बात नहीं। पराधीन शब्द में पर शब्द ही इसका विरोध कर रहा है, क्योंकि करुणा परमेश्वर की अपनी है, अत वह सर्वथा स्वाधीन है तथा वेद ज्ञान तद्विद्यामय होने से नित्य है। ऊपर कहे गये वेदान्त के जन्मादि दोनों सूत्रों में उपादानता का कोई संकेत नहीं, पंचमी तो निमित्त कारण से भी होती है।

इस पर कोई कह सकता है कि ऊपर अधिकतर युक्तिवाद पर ही वेद ज्ञान के प्रति उपादानत्व का खंडन किया गया है, किसी शास्त्र के प्रमाण को उद्धृत नहीं किया गया, ऐसा नहीं समझना चाहिये, ऊपर का समस्त तर्क या युक्तिविन्यास पूर्णतया शास्त्रों पर आधारित है। सांख्यदर्शन में ईश्वर के सन्निधान मात्र से उपादान प्रकृति से सृष्टि-रचना बताई गई है। वहीं पर यह भी शङ्का उठती है कि सन्निधान मात्र से सृष्टि तो बन सकती है पर वेदोपदेश सामीप्य-मात्र से नहीं हो सकता - इसमें प्रयत्न भी अपेक्षित है। इसका समाधान सांख्यशास्त्र में इस प्रकार है — सिद्धरूप बोद्धृत्वात् वाक्यार्थोपदेशः, (१/९८) अर्थात् परमेश्वर सिद्धरूप है। सिद्ध की समस्त शक्तियां स्वाभाविक होती है तथा परमेश्वर बोद्धा (ज्ञानी) चेतन है। चुम्बक मणि के सदृश जड़ नहीं हैं। वह व्यापक ऋषियों के निर्मल हृदयों में भी था, तो उसके सन्निधान मात्र से ही वेदप्रकाश हो सकता था फलत. हो भी गया। और 'अन्त करणस्य तदुज्ज्वलितत्वात् लोहवदधिष्ठातृत्वम्' अर्थात् जीवात्माओं के अन्त करण स्वयं जड़ होते हुए भी पुरुष के सान्निध्य से उज्ज्वलित हो जाते हैं। वह पुरुष अन्त करण का अधिष्ठाता है। अत अन्त करण में सक्रियता आदि होना भी अनिवार्य है। जैसे लोहा स्वरूप से चमकीला और दाहक कुछ भी नहीं है, परन्तु अग्नि के पास होने से उसमें भी चमक और दाहकता आ जाती। इस प्रकार ज्ञान की धारकता जीवात्मा में स्वाभाविक रूप में रहती है वह वेदज्ञान को भी ग्रहण करता है, जैसे सूर्य के प्रकाश गुण को नेत्र स्वत उपयोग में ले आता है, उसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान गुण को निर्मल बुद्धि स्वत धारण कर लेती है। बस यही वेदाविर्भाव है। अतएव ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्पष्ट लिखा है कि "परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुवे अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात पढ़ाने हारा है।

यह भी निश्चित जानना चाहिये, कि बिना निमित्त के नैमित्तिक अर्थ की सिद्धि कभी नहीं होती। अत वेद का ईश्वर उपादान कारण कदापि नहीं हो सकता। यदि होता, तो महर्षि दयानन्द वेद को ईश्वर का "गुणमात्र न लिखकर ईश्वर-स्वरूप द्रव्यगुणमय ही लिखते, तथा आगे वेद को 'ईश्वरोक्त' भी लिखा है जैसे अस्मदादि स्ववचनों के प्रति उपादान कारण नहीं, प्रत्युत निमित्त कारण हैं, उसी प्रकार वेदों के प्रति ईश्वर भी निमित्त कारण है।

शंका—इसी सम्बन्ध में कुछ और विस्तार पूर्वक विचार कीजिए, कि वेद ज्ञान गुण है और गुणी परमात्मा है दर्शनों में स्वगुण के प्रति गुणी का समवाय कारण माना जाता है। इस प्रकार तो वेद ज्ञान के प्रति ईश्वर को समवायिकारण (उपादान) मानने में भी यही मूल है जो द्रव्य कार्य है तथा वह 'क्षण द्रव्य, निर्गुण निष्क्रियं तिष्ठति' अर्थात् प्रथम क्षण में द्रव्य निर्गुण और निष्क्रिय रहता है, द्वितीय क्षण में गुणयुक्त होता है। समाधान—पर यह सिद्धान्त समस्त संयोगजन्य द्रव्यों में ही घटित होता है, जैसे उत्पन्न घट प्रथम क्षण में रूपादि से रहित ही होगा, क्योंकि इसका निमित्त कारण कुम्भकार उपादान कारण मिट्टी और कपालद्वयसंयोग असमवायि-कारण है। परन्तु परमेश्वर जन्य नहीं है तथा न उसका अन्य कोई कारण ही है। ईश्वर तथा तत्स्वरूप ज्ञानादि गुण भी नित्य शाश्वत सदा से अनादि हैं अत वह स्वगुण ज्ञान के प्रति उपादान कारण नहीं हो सकता।

इसके साथ यह भी समझना चाहिये कि जिस प्रकार छै इन्द्रियायें लौकिक सन्निकर्ष हैं उसी प्रकार—

'अलौकिकस्तु व्यापारस्त्रिविध सम्प्रकीर्तित,
सामान्यलक्षणो ज्ञान लक्षणो योगजस्तथा।"

इन तीन अलौकिक सन्निकर्षों में से "योगज सन्निकर्ष से युत,

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कविता कलाप

वैदिक सन्ध्या गीतमाला

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

उपस्थान

पाथेय प्रभा प्रिय पाया है, तब उपस्थान यह आया है।
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है ॥

मिट गया हृदय से अंधियारा
तब हुआ हृदय में उजियारा।
दिख गये दृश्य प्रभु सदगुण के,
लिया उन्हीं का सतत सहारा।

गुण ने गुणवान मिलाया है, गुण गान तभी यह गाया है।
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है ॥

तिमिर रहित प्रभु रूप प्रभा मय,
देख लिया सुख रूप सुधा मय।
उच्च उच्चतर और उच्चतम,
हमें बनाये सूर्य विभामय।

सब ओर ज्योति रवि लाया है, प्रिय प्रभु से मिलन कराया है।
तन-मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया।।

वह देव देवों में महादेव,
मिल गया हमें वह एकमेव।
हम उसका हाथ पकड़ उठते,
अब दर्शन की बन गई टेव।

गुण अंश हृदय में भाया है, तब नयन दर्श कर पाया है।
तन-मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है ॥

(२)

अपनाती छटा सुहानी है, तो गोद ओ३म् की पानी है।
यदि गोद गोद को पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी ॥

प्रभु जातवेद उत्पादक है,
जड़ चेतन जगत प्रकाशक है।
वह ज्ञान सूर्य जगमग स्वरूप,
निज भक्त उच्च उद्धारक है।

यदि प्रगति उच्च अपनानी है, तो दिशा उसी की जानी है।
यदि गोद गोद को पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी है ॥

जहाँ कहाँ भी जिसने झांका,
इन जगत वस्तुओं को झाँका।
हर कहीं झलक उसकी पाई,
वही बन गई ओ३म् पताका।

जग की हर वस्तु निशानी है, जिसमें आभा मुस्कानी है।
यदि गोद गोद की पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी ॥

हर वस्तु देखकर ज्ञान करो,
अनुकूल कर्म कर भाव करो।
श्रद्धा से भक्ति करो उसकी,
यह ओ३म् ध्वजा सम्मान करो।
मन भक्ति तरंगें लानी हैं, तो ध्वजा लहर लहरानी है।

"वेदों के आविर्भाव में दार्शनिक पृष्ठभूमि"

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

भविष्य, सूक्ष्म, विवहित, विप्रकृष्ट, सभी वस्तुओं के साथ अलौकिक इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष हो जाता है। वह भी "युक्त और युंजान" दो प्रकार का है। "युक्तयोगी" को सर्वदा भाना रहता है और "युंजान योगी" को चिन्तन करने से अर्थ का भान होता है तथा यह भी स्वतः सिद्ध है कि सृष्टि के आदि में सर्वश्रेष्ठ अग्नि, वायु आदि ऋषि स्वतः सिद्ध, निर्मलान्तःकरण, आत्मसाक्षात्कारी थे, जिन्हें आत्मस्थ परमेश्वर के वेदज्ञान का 'युक्त' होने से ज्ञान हो गया।

एक तर्क और भी है, कि जो समवायिकारण होता है वह परिणामी अवश्य होता है तथा वह वस्तु जो उपादान कारण बनी है, वह वस्तु अनेक भी होनी चाहिये।

परन्तु "एकमेव ब्रह्म द्वितीयं नास्ति" से ब्रह्म का एक ही निरवयव होना सिद्ध है। अतएव भी वेदज्ञान में ब्रह्म उपादान कारण नहीं, प्रत्युत निमित्त कारण है। जिस प्रकार नेत्र ज्ञानेन्द्रिय सूर्य के प्रकाश को प्राप्त कर अपना कार्य चलाती है, उसी प्रकार वेदरूपी सूर्य से ज्ञान के प्रकाश को जीवात्मा की निर्मल बुद्धि रूपी आंख ने प्राप्त कर अपने मोक्ष साधनों को सम्पन्न किया था।

जिस प्रकार घट के नष्ट होने पर घट जाति में घट शब्द प्रयोज्य रहता है और प्रयोजक कुम्भकार के ज्ञान में भी रहता है।

उसी प्रकार वेदज्ञान सर्वज्ञ, ज्ञानाधिष्ठान ईश्वर में यौगिकार्थ रूप में नित्य वर्तमान रहता है।

"तद् वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्" वेद ईश्वर वचन है, अतः उसका प्रामाण्य है किसी वचन का वक्ता कभी भी उपादान कारण नहीं होता, प्रत्युत निमित्त कारण होता है, और 'निःश्वसिता वेदाः' इससे भी उक्त सिद्धान्त की पुष्टि होती है।

निर्वाचन

आ० स० सैक्टर २२-ए, चण्डीगढ़	आ० उपप्रतिनिधि सभा, जनपद आगरा
प्रधान श्री डा० इन्द्रराज शर्मा	प्रधान श्री हरिगोपाल सिंह चौहान
मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र मनचन्दा	मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्त
कोषा० श्री वेदप्रकाश महाजन	कोषा० श्री भगवान अग्रवाल

विदेशी आक्रान्ताओं की पूजा

[श्री जयदेव शर्मा, ८४ सदर बाजार लखनऊ]

प्रत्येक वर्ष बहराइच में एक मास तक चलने वाला गाजीमियाँ, बालेमियाँ तथा सैयद सालार मसऊद गाजी आदि नामों से प्रसिद्ध मेला, ज्येष्ठ मास के प्रथम रविवार (इस वर्ष ५ जून) से प्रारम्भ हो उसी मास के चौथे रविवार को समाप्त होता है।

देश के विभिन्न भागों से लाखों की संख्या में अनेक धर्मों के स्त्री पुरुष कुछ विशेष पाने, किसी कहानी कष्ट के निवारण की चाह मन मे लिए वहाँ पहुंचते हैं। पहुंचने वालों में हिन्दुओं की संख्या अधिक होती है। मेला गाजीमियाँ की बारात के पहुंचने से प्रारम्भ होता है। इससे दो–तीन दिन पूर्व गाजीमियाँ का निशान गाड़ दिया जाता है, जिस पर प्रत्येक आगन्तुक मुरीद अपना सिर झुकाकर सलामी देते हुए पलंग (डोले) और दहेज बालेमियाँ को अर्पित कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। ठीक उसी प्रकार जैसे अविजित सम्राट की शरण में आ जाने से छोटे–बड़े सभी राजा अपने को सुरक्षित अनुभव करने लगते हैं। सबसे अच्छ बारात को उसकी वरीयता की श्रेणी भी प्रदान की जाती है। प्रथम स्थान प्राप्तकर्ता सबकी चर्चा एवं किसी सीमा तक ईर्ष्या का पात्र भी बन जाता है। जैसे विवाह की सम्पूर्ण रस्में बारात से सवा मास पूर्व 'लगन रखकर तथा एक सप्ताह पूर्व 'मठछुआ' रस्म से प्रारम्भ होती है। यह सारी रस्मे गाजीमियाँ के प्रतीक (यथा-सामर्थ्य) लोहे, चाँदी, सोने आदि के बने त्रिशूल के साथ उनके (बारात लाने वालों के) घरों पर ही सम्पन्न हो जाती हैं। ये रस्मे गाजीमियाँ के प्रतिनिधि मुजावर लोग उनके घरों पर आकर कराते हैं। बाद मे (उक्त) निश्चित दिवस पर झोटयो के साथ दिया जाने वाला पीढ़ा पलंग आदि सभी आवश्यक सामान (दहेज के रूप मे) गाजीमियाँ को आदर के साथ चढ़ा दिया जाता है।

गाजीमियाँ महमूद गजनवी के अति प्यारे भांजे और उसके सेनापति सालार शाह के होनहार बेटे थे। इनका जन्म सन् १०१५ ई० मे अजमेर में तब हुआ जब सालार शाह महमूद गजनवी का नायक बना अजमेर की शासन व्यवस्था की बागडोर सम्भाले हुए था।

सालार मसऊद (गाजीमियाँ) को इस्लाम तथा राजनीति की प्रयोगात्मक और ज्ञानात्मक शिक्षा अति दक्ष उस्तादों के द्वारा ४ साल ४ मास और ४ दिन की अवस्था से दी गयी, जिसे उसने अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण बहुत शीघ्र मात्र १० वर्ष की अवस्था तक पहुंचते ही पूरी कर ली।

महमूद गजनवी को सालार शाह की योग्यता और वफादारी पर बहुत विश्वास था। महत्वपूर्ण अभियानों से पूर्व वह उससे अवश्य सलाह किया करता था। निजामुद्दीन और फरिश्ता के अनुसार महमूद समझता था कि उसका जन्म मुहम्मद के कार्यों के कार्यान्वयन के लिए ही हुआ है। महमूद के जन्म दिन पर उसके पिता ने अनेक मूर्तियों को तोड़कर खुदा का धन्यवाद अदा किया था। उस समय वह भारत के विनाश की लूट अभियान पर था। ईलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास भाग–२/४३१ इब्न–असीर की कामीलुत तवारीख के अनुसार महमूद ने भारत में मूर्तियों को खण्डित करने का जब अभियान छेड़ा हुआ था तब हिन्दुओं ने कहा कि सोमनाथ उन मूर्तियों से रुष्ट हैं वरना कोई भी व्यक्ति उन्हें छू भी नहीं सकता। महमूद ने यह बात सुनकर निश्चय किया कि सोमनाथ की मूर्ति को तोड़कर हिन्दुओं की आस्था मूर्तियों से हटायी जा सकती है, और तब वे इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे। (तत्रैव पृ० ४६६) इस अभियान को सफल बनाने की मन्त्रणा के लिए ही महमूद ने अजमेर से सालार शाह और सालार मसऊद को गजनी बुलवाया।

योजना के अनुसार सालार शाह काबुलीज (कश्मीर के पास) काफिरों से निबटने चला गया तथा सालार मसऊद सोमनाथ को ध्वस्त करने के उद्देश्य से महमूद के साथ अपने कई हजार युवक सैनिकों के साथ सम्मिलित हो गया। तवारीखे महमूदी के अनुसार 'महमूद की भारत विजय केवल मसऊद की सलाह से हुई थी और सोमनाथ की मूर्ति के टुकड़े भी उसी की सलाह से किये गये थे।"

(तत्रैव पृ० ४८४)

तारीख–ए–मसऊदी मे लिखा है कि महमूद ने गजनी ले जाकर सोमनाथ की मूर्ति को जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर लगवा दिया ताकि मुसलमान लोग नमाज के लिए अन्दर आते जाते उसे पैरों से कुचलें। जब हिन्दुओं ने ऐसा सुना तो महमूद के वजीर ख्वाजा हसन मेमन्दी जो [illegible] था के माध्यम से उनका एक शिष्ट मण्डल नमाजियों से पदाक्रान्त होती सोमनाथ की मूर्ति को उस के वजन का दुगना सोना देकर वापस लाने के उद्देश्य से गजनी पहुंचा। महमूद की स्वीकृति पर सोना उसके राजकोष में जमा कर दिया गया। जब सालार मसऊद को इस सम्बन्ध मे ज्ञात हुआ तो उसने महमूद से एकान्त मे पूछा, 'कयामत के दिन जब खुदा 'आजर' मूर्ति विनाशक को और महमूद मूर्ति विक्रयी को बुलायेगा तो आप क्या कहेंगे।" महमूद पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा पर उसने कहा मैं तो वचन दे चुका हू। मसऊद ने कहा आप मूर्ति मुझ दे दीजिए, और जब काफिर मूर्ति लेने हाजिर हो तो उन्हे मेरे पास भेज दें। जब शिष्ट मण्डल मसऊद के पास मूर्ति लेने के उद्देश्य से पहुंचा तो उसने शिष्टता से बैठाकर खाने के लिए पान तथा शरीर मे लगाने को चन्दन पेश किया। सब मे इन चीजों के उपयोग के पश्चात् जब मूर्ति माँगी तब मसऊद ने बताया कि मूर्ति तो उन्हे पीसकर पान और चन्दन में मिश्रित करके खाते ही दे दी गयी, जिसका उपयोग वे लोग कर चुके हैं। उसकी इस धूर्तता से शिष्ट मण्डल को भारी आघात लगा और कई लोगों ने वमन आदि कर दिया। (तत्रैव पृ० ४८३)

सालार मसऊद दूसरी बार भारत आने से पूर्व महमूद को वचन देकर आया कि जो राज्य अभी काफिरों के हाथ मे है उन्हे छीनकर अपना धर्म (इस्लाम) फैलाऊंगा और आपके नाम का खुतबा पढ़वाऊंगा। वह एक बहुत बड़ी सेना और स्वयंसेवकों के साथ मुल्तान होता हुआ दिल्ली पहुंचा। उसने अपनी सेना मे कह रखा था यदि वे (काफिर) हमारा धर्म ग्रहण कर लें तो ठीक है, यदि काफिर लोग इस्लाम धर्म ग्रहण कर लें तो उन पर कृपा करो अन्यथा उन्हें तलवार के घाट उतार दो। (तत्रैव पृ० ४८६)

महमूद और सालार शाह ने लाहौर को जीतकर उसे "दारुल इस्लाम" बना दिया था लेकिन वे दिल्ली तक न पहुंच सके थे। परन्तु सालार मसऊद दिल्ली पहुंच गया। उस समय वहाँ का राजा राय महीपाल था जो कि बहुत बहादुर था। एक मास तक दोनों ओर से

(शेष पृष्ठ १० पर)

फिल्मों में अश्लीलता के विरुद्ध अभियान

[भारतीय संस्कृति के प्राचीन स्वरूप को विकृत करने में फिल्मों का बहुत योगदान रहा है। यद्यपि सामाजिक सुधार को उजागर करने वाली फिल्में भी यदा कदा बनती रहती हैं परन्तु उनकी संख्या नगण्य है। मनोरंजन के नाम पर आजकल मारधाड़, बलात्कार, हिंसा और कामुकता को भड़काने वाली फिल्मों की भरमार है। इनसे हमारी भावी पीढ़ी का नैतिक पतन हो रहा है। शासन का सेंसर विभाग चुप बैठा हुआ है। आर्यसमाज ने समाज के चरित्र को दूषित करने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति का घोर विरोध किया है। हम यहां सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी का, सचिव, सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेंसर, बम्बई को लिखे पत्र की अविकल प्रति दे रहे हैं। ऐसा ही पत्र उन्होंने भारत सरकार के सम्बन्धित मन्त्री महोदय को भी लिखा है। यदि स्थिति में सुधार न हुआ तो आर्यसमाज को देशव्यापी अभियान चलाना ही होगा—

—सम्पादक]

श्रीयुत् सेक्रेटरी महोदय,
सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेंसर्स, बम्बई

महोदय,

सेवा मे निवेदन है कि इन दिनों फिल्मों मे निरन्तर नारि नग्नता और अश्लीलता का प्रदर्शन हो रहा। बाजारों में चौराहों पर अर्द्ध-नारि के चित्र लगाए जा रहे हैं। जिससे कामुकता चारों तरफ फैल रही है। भारतीय संस्कृति का मूल संयम समाप्त प्राय है। एक ही फिल्म को नवयुवती कन्या और पिता साथ-साथ बैठकर नहीं देख सकते।

यह आश्चर्य की बात अवश्य है कि आपका बोर्ड किस चीज को सेंसर कर रहा है। आपके द्वारा सेंसर हुई फिल्मो से देश के चरित्र का सत्यानाश हो रहा है।

सुना गया है कि आपने ५० बहुत ही अश्लील फिल्मों को स्वीकृति दी है जिसके पोस्टर अत्यन्त अश्लील और कामुकता को भड़काने वाले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि फिल्म इण्डस्ट्री मे अब केवल मारधाड़ बलात्कार, हिंसा और कामुकता को भड़काने के सिवाए और कुछ नहीं रह गया है। इस होड़ मे एक चलचित्र भड़कीला और नग्नता को उकसाने वाला है। ऐसे गन्दे दृश्य सार्वजनिक रूप से सेन्ट्रल बोर्ड से स्वीकृत होकर गली, मुहल्लों, बाजारों और चौराहों पर लगाना मानवता के प्रति अपराध है।

आर्यसमाज ने इस पर विचार करके यह निश्चय किया है कि ऐसे पोस्टरों को पोतने का एक देश व्यापी अभियान चलाया जाए। जनता में अब इन वीभत्स पोस्टरो और दृश्यो के विरुद्ध आक्रोश बढ़ रहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप यथाशीघ्र हमें उत्तर दें कि आपने किन-किन गन्दी फिल्मों को स्वीकृति दी है और आप इन नग्नता कामुकता हिंसा मारकाट और बलात्कार के दृश्यों को हटाने के लिए क्या कार्यवाही कर रहे हैं।

आपके उत्तर के अभाव मे हमारा पोस्टर पोतो आन्दोलन आरम्भ हो जायगा जिसकी समस्त हानि का उत्तरदायित्व आप पर होगा।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

श्री महाना जी को पत्नी शोक !

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के सहायक कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना श्रृंगारनगर लखनऊ की धर्मपत्नी एवं 'आर्यमित्र' की चिरपरिचित लेखिका श्रीमती सन्तोष महाना अति स्वल्पकालिक अस्वस्थता में दिनांक २४-७-८८ को प्रातः ६-५० बजे अपने सम्पूर्ण भरे पूरे परिवार को पीछे छोड़कर अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करके चली गयीं। अन्तिम विदाई से एक दिन पूर्व अनायास ही अपने पति श्री कृष्ण बलदेव जी से उन्होंने कहा कि मैं अपने सम्पूर्ण परिवार से पुत्र पुत्र वधुओं आदि से पूर्ण सन्तुष्ट हूं। मेरे बाद आपको ये सभी बच्चे कष्ट नहीं अनुभव होने देंगे। उस समय वे स्वस्थ थीं किसी को क्या पता था कि वे तो अन्तिम यात्रा की तैयारी कर रही थीं।

इस दुःखद समाचार को पाने पर सभा एवं 'आर्यमित्र' कार्यालय शोक सभा करके बन्द कर दिये गये। मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

रथयात्रा मेले में आर्यसमाज का प्रचार

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के तत्वावधान से रांची डोरण्डा, धुर्वा और आदर्शनगर आर्यसमाजों के सहयोग से रांची से १० किलोमीटर दूर रथयात्रा मेले में एक प्रचार केन्द्र स्थापित किया गया। इस अवसर पर वैदिक साहित्य की बिक्री के अतिरिक्त सभा द्वारा "क्या ईसा मुक्तिदाता है" नामक पैम्फलेट का वितरण किया गया। यह स्मरणीय है कि पुरी (उड़ीसा) के जगन्नाथ मन्दिर से प्रेरित होकर आज से २९७ वर्ष पूर्व २५० फुट ऊंचे पहाड़ी टीले पर १०० फुट ऊंचा मन्दिर इस क्षेत्र के वनवासियों का प्रेरणा स्रोत है। इस मेले में इस वर्ष तीन लाख लोगों ने भाग लिया।

सात्विक दान

इस वर्ष भी लक्ष्मण देव वैदिक समिति लखनऊ की ओर से विभिन्न संस्थाओं को निम्नवत दान दिया गया—

१—श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा	रु० ७००)
२—गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड कालाहाण्डी, उड़ीसा	५००)
३—मातृ मन्दिर (कन्या गुरुकुल) वाराणसी	५००)
४—आदर्श गुरुकुल धाड़ी, पीलीभीत	५००)
५—गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ	१०००)
६—सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति, दिल्ली	३००)
७—आर्य गुरुकुल कालपुर, पोस्ट महाना नारनौल, (हरयाणा)	३००)
८—लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा	२००)
९—आर्यसमाज चौक, लखनऊ	५००)
१०—श्री मद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर लखनऊ	५००)
११—आर्यसमाज इन्दिरानगर एवं एच. ए. एल. लखनऊ	५००)
१२—आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ	२५०)
योग	५७५०)

समस्त आर्य समाजों। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं। आर्य कुमार सभाओं एवं आर्यवीर दलों को आवश्यक निर्देश

सेवा में, दिनांक : २५-७-८८

समस्त प्रधान एवं मन्त्री महोदय,

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, आर्यवीर दल, आर्य कुमार सभा उत्तर प्रदेश।

ओम्नमस्ते,

जैसा कि आप जानते ही हैं इस समय हमारी प्यारी आर्य जाति को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से देश तथा विदेश में अनेकों अभियान चलाकर जबकर कुचक्र रचे जा रहे हैं। विदेशो से अथाह धनराशि प्राप्त करके हिन्दुओं का विशेष कर हरिजन भाइयो का सामूहिक धर्मान्तरण किया जा रहा है और उन्हें राष्ट्रीय विचारधारा से विमुख बनाया जा रहा है। शासन को राष्ट्र के भावी स्वरूप के प्रति कोई चिन्ता नहीं है, उसे तो अपनी आर्थिक नीतियो के क्रियान्वयन की धुन सवार है। हरिजन हमारे समाज के शक्तिशाली अंग हैं। इतिहास साक्षी है, इन्होंने सदैव आर्य जाति की रक्षा में अपना प्राणपण से योगदान दिया है।

आर्य समाज ने कभी जन्मना जातिबन्धन को नहीं माना और इस वर्ग को समान अधिकारी मानते हुए अपने हृदय में स्थान दिया है। इस समय आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो धर्मान्तरण रूपी इस अराष्ट्रीय कुचक्र को अपनी वैचारिक क्रान्ति एवं क्रिया कलापों से समूल नष्ट कर सकती है। धन का लालच देकर हरिजनों के सामूहिक धर्मान्तरण की प्रक्रिया बड़े ही सुनियोजित ढंग से देश में चलाई जा रही है। इन्हीं सब तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने कतिपय महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं,। आपसे निवेदन है कि तदनुसार अपने अधीनस्थ समाज अथवा अन्य संस्थाओं में इन कार्यक्रमों का संचालन तात्कालिक प्रभाव से प्रारम्भ कर दें और एतद्विषयक अपनी मासिक आख्या सभा कार्यालय में प्रेषित कर।

[१] समाज मन्दिरो में चलने वाले सामूहिक सत्संग मास मे कम से कम एक बार हरिजन बस्तियो मे किये जायें और हरिजन भाइयों को इस कार्यक्रम मे ससम्मान सम्मिलित किया जाय सहभोज का भी आयोजन किया जाय।

[२] वर्ष में कम से कम एक बार समाज मन्दिरों में सहभोज के आयोजन किए जायें तथा इस सहभोज में हरिजन भाइयों को प्रमुख रूप से आमन्त्रित किया जाय।

[३] समाज के वार्षिक उत्सवों में एक दिन आर्य (हरिजन सम्मेलन) अवश्य रखा जाय जिसका सभापति उन्हीं में से किसी को बनाया जाय।

[४] आर्य समाज में अधिक से अधिक संख्या में उन्हें आमन्त्रित किया जाय और उन्हें साधारण तथा आर्य सभासद् बनाया जाय।

[५] ऐसा वैदिक साहित्य एवं उनके पूर्वजों की चरित्र गाथायें जिन्होंने आर्य हिन्दू धर्म की रक्षा की हो, उनमें वितरित किया जाय।

[६] जन्मना जातिबन्धन तथा मांस मदिरा आदि अभक्ष्य खान पान के विरुद्ध वैदिक विचारो से उन्हें अवगत कराया जाय।

[७] उनके बच्चों को आर्य शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश, अध्ययन, अध्यापन आदि की विशेष सुविधा देते हुए छात्रवृत्ति आदि के रूप में उनकी सहायता की जाये।

[८] उनके मध्य सम्पन्न होने वाले संस्कारो को निःशुल्क रूप में, वैदिक रीति से आर्य समाज के पुरोहित किया करें।

[९] आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविरों, आर्य कुमार सभाओं आदि में उनके नवयुवकों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाये और उन्हें सम्माननीय पद भी दिया जाये।

[१०] उनके बच्चों को गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों में अध्ययनार्थ भेजे जाने की व्यवस्था समाज की ओर से की जाये तथा अपेक्षित सहयोग के लिए सभा से सम्पर्क स्थापित किया जाये।

आशा है इन क्रिया कलापों के कार्यान्वयन की मासिक आख्या आप नियमित रूप से सभा कार्यालय में भेजते रहेंगे।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश

धर्म-परीक्षायें १९८८

परीक्षा तिथि—३१ दिसम्बर १९८८

परीक्षा का नाम	कक्षा	शुल्क	संस्तुत पुस्तक
धर्म रत्न	५	रु० १.५०	धर्म शिक्षा भाग ५
धर्म प्रवेशिका	७	रु० २.००	धर्म शिक्षा भाग ७
धर्म भूषण	९	रु० २.५०	धर्म शिक्षा भाग ९
धर्माधिकारी	११	रु० ३.५०	धर्म शिक्षा भाग ११

अनुरोध

[क] सभी दयानन्द बाल मन्दिरों के प्रधानाध्यापक, चाहे वे सभा से सम्बद्ध है अथवा असम्बद्ध अपनी कक्षा ५ के विद्यार्थियों को धर्मरत्न परीक्षा में अनिवार्यतः प्रविष्ट कराने की कृपा करें।

[ख] सभी आर्य विद्यालयों (हाई स्कूल एवं इंटर कालेज) के प्रधानाचार्यों से साग्रह अनुरोध है कि वे अपने विद्यालयों मे इन परीक्षाओं को अनिवार्य करने की कृपा करें।

ज्ञातव्य

[क] इन परीक्षाओं के बहाने परीक्षार्थी कम से कम सन्ध्या हवन एवं प्रार्थना के मन्त्र अवश्य कण्ठस्थ कर लेंगे और इतना मात्र करने से ही वे इन में से हर परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकेंगे।

[ख] कक्षा १ से कक्षा १२ तक की धर्म शिक्षा की पुस्तकें लागत मात्र के मूल्य पर सभा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

[ग] आगामी परीक्षा के प्रमाण पत्र तीन मास में विद्यालय में पहुंच जावेंगे।

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

बाल जगत

सहयोग और जीवन

[श्री राममूर्ति गोस्वामी युवराजदत्त महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी]

मानव ने जन्म लिया। मानव ने ही उसे पाला। मानव का ही सहयोग पाकर शिशु शारीरिक तथा मानसिक उन्नति करता हुआ बड़ा हुआ तो दूसरों का सहारा किंचित छोड़कर अपनी आंखों से देखने लगा। जब कुछ और बड़ा तो वही शिशु अनेक व्यक्तियों का सहारा बना। यह समाज का विचित्र चक्र जाने कबसे चला आ रहा है। मनुष्य जन्मता है, समाज का सहयोग पाकर उन्नति के मार्ग पर चलता हुआ अन्त में मर जाता है और उनसे उत्पन्न नयी पीढ़ी भी अपने पूर्वजों का अनुसरण करती हुई उक्त स्थिति को प्राप्त होती जाती है।

पैदा तो सभी होते हैं और मरते भी सभी हैं लेकिन कुछ लोग तो पैदा होकर, अपने मां-बाप, गुरुजनों आदि की सेवा स्वरूप अनेक सुकर्मों से अपने परिवार तथा समाज को सुखी बनाते हैं। इसके ठीक विपरीत कुछ लोग अपने कुकर्मों द्वारा परिवार को परेशान करके तथा अन्य निन्दनीय कार्यों को करके अपने तथा पूर्वजों के नाम को कलंकित करते हैं। इसी प्रकार किसी की मृत्यु से शोक-सन्ताप का समुद्र उमड़ पड़ता है। और किसी की मृत्यु पर कोई खेद नहीं व्यक्त करता है। मनुष्यों में कुछ युगदृष्टा और पथ-प्रदर्शक होते हैं जो बहुजन हिताय सोचते हैं और बहुसुखाय कहते हैं। फिर उन्हीं के उसूलों पर शेष लोग चलते हैं। समय बीतता है, वह उसूल मन्द पड़ जाते हैं, युग बदल जाता है तब नये युग दृष्टा आते हैं।

हालांकि आज तक जितने लोग पैदा हुए हैं उन्होंने मानव जाति की कुछ न कुछ उन्नति की है। जिसे को यदि शब्दों द्वारा कहने का प्रयत्न किया जाय तो कुछ इस प्रकार होगा—

प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्र है किन्तु केवल अपनी सीमा में और स्वतन्त्र है कि चाहे तो सड़क पर लाठी चलाते हुए चल सकता है पर आपकी स्वतन्त्रता की सीमा वहां समाप्त हो जाती है जहां दूसरे व्यक्ति का नाम शुरू होता है।

आज हम इस धरती पर करोड़ों की संख्या में उत्पन्न हो चुके हैं। हमें हर हालत में तब तक जिन्दा रहना है जब तक हम वापस वहीं नहीं पहुंच जाते जहां से आये हैं। इसलिये हमें अधिक से अधिक एक दूसरे के साथ सहयोग भाव से रहना चाहिये। धन तो शरीर के मैल आदि नामों से प्रसिद्ध ही है। अतः व्यवहार में आर्थिक दृष्टि से कमजोर या शक्तिशाली का भेदभाव त्यागकर कार्य करना चाहिये क्योंकि यदि आप किसी कमजोर का सहयोग नहीं करते तो कोई आपसे शक्तिशाली व्यक्ति आपका भी सहयोग नहीं करेगा।

समझ बहुत बड़ी चीज है। प्रत्येक बात की तह तक पहुंचना समझदारी है। किसी घटना के मात्र एक पहलू के विषय में ज्ञान कर लेना पर्याप्त ज्ञान नहीं कहलायेगा। उस घटना की जड़ तक पहुंचना चतुरता है।

मनुष्य के बीच मनुष्य बनकर जिंदा रहना चाहिये, न तो देवता बनने से काम चलेगा और न राक्षस ही। मनुष्य के लिये जितना राक्षस होना बुरा है उतना ही देवता होना भी। क्योंकि जल के बाहर न तो तैरना सीखा जा सकता है और न सिखाया ही जा सकता है।

जिस प्रकार मानव में सहयोगी भावना पनपती है उसी प्रकार पशुओं में भी सहयोगी भावना की कमी नहीं है। अत: यदि हमें अपने जीवन की सीढ़ियों के मार्ग को प्रशस्त करना है तथा देश की उन्नति करनी है तो हमें आज प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम सहयोगी भावना से जीवन व्यतीत करेंगे और एक दूसरे का सहयोग करके आपस में प्रेम भाव जगायेंगे।

★

सभा मन्त्री पर प्राणघातक हमले का षड्यन्त्र

दिनांक ८-७-८८ को बदायूं निवासी श्री योगेन्द्रपालसिंह यादव स्नातक, आर्य प्रतिनिधि सभा के नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग स्थित कार्यालय में यकायक घुस आये और सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के प्रति अपशब्दों का प्रयोग करते हुए उन्हें तलाश करने लगे। उस समय वे बड़ आक्रामक स्थिति में थे और श्री तिवारी जी को न पाकर उन्हें फिर देख लेने तथा जान से मार डालने की धमकी देते हुए चले गये। उसी दिन सायंकाल वे फिर सभा कार्यालय में आये और श्री तिवारी जी की तलाश करने लगे तथा उन्हें न पाकर यह धमकी देकर चले गये कि तिवारी से कह देना कि आगामी तीन दिन उनके लिए बहुत अनिष्टकर हैं।

सौभाग्य से सभा मन्त्री श्री तिवारी जी दोनों ही बार सभा कार्यालय में उस समय नहीं थे। वे सभा के कार्य से शहर में कहीं गये हुए थे अतः अप्रत्याशित घटना घटित होने से रह गई। इस सम्बन्ध में थाना हजरतगंज कोतवाली, लखनऊ में योगेन्द्रपालसिंह यादव के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है। किन्तु खेद है कि अभी तक कोई कार्यवाही न होने पर जनरोष बढ़ता जा रहा है। कई समाजसेवी, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठनों ने पुलिस एवं प्रशासन से तुरन्त आवश्यक कदम उठाने का अनुरोध किया है।

स्मरण रहे कि इसी योगेन्द्रपालसिंह यादव ने १० सितम्बर १९८४ को सभाभवन में, सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी पर गोली चलाकर प्राणघातक हमला कर दिया था। जिससे वे बाल-बाल बच गये थे। इसका मुकदमा चल रहा है और यह जमानत पर छूटा हुआ है।

उत्सव

आर्यसमाज मदरसा जनपद फैजाबाद का २९ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २९ मार्च से ३१ मार्च १९८८ तक बड़ धूमधाम से मनाया गया। विद्वानों के भाषण तथा भजनों को सुनकर जनता प्रभावित रही।

विदेशी आक्रान्ताओं की पूजा

(पृष्ठ ६ का शेष)

झपटें होती रहीं। इस्लामी सेना घबड़ाने लगी उसके पाँव उखड़ने वाले ही थे कि एक बहुत बड़ी सेना (अधिकांशतया स्वयंसेवक) सहित गजनी से सालार कुत्बीन (मसऊद का चाचा) आदि पाँच अमीर जो कि आपस में सम्बन्धी थे उससे आ मिले। इनके आ जाने से मसऊद की सेना के हौसले फिर बढ़ गये। घमासान युद्ध हुआ राय महीपाल के पुत्र गोपाल की कुल्हाड़ी के वार से मसऊद बच तो गया परन्तु उसे नाक पर गहरा घाव खाकर दो दांतो की कुर्बानी देनी पड़ी। गोपाल तत्काल मारा गया महीपाल असाधारण वीरता का परिचय दिखाते हुए रणभूमि में लड़ता रहा और अन्त में मारा गया। दिल्ली की गद्दी पर अपने विश्वास पात्र अमीर वाजिद जफर को सौंपकर मसऊद स्वयं आगे बढ़ा। अयोध्या आदि कई राज्यों को पहले ही जीत चुका था। मेरठ, कन्नौज तथा सतरख को लूटता हिन्दू देवताओं को नष्ट भ्रष्ट करता, भेंटें लेता वहाँ की शासन व्यवस्था का यथायोग्य प्रबन्ध करता इस्लाम के हरे ध्वज के साथ वह बहराइच पहुंचा। वहाँ उसने अपने चाचा सालार सैफुद्दीन को सेना के साथ पहले ही भेज रखा था।

बहराइच के समीप सूरज कुण्ड पर सूर्य भगवान के मन्दिर में पत्थर की सूर्य प्रतिमा स्थापित थी, जिसका नाम बालार्क' था। इसकी बहुत अधिक मान्यता थी। बहराइच के आस पास के हिन्दू स्त्री पुरुष प्रत्येक रविवार को हजारों की संख्या में स्नान और पूजन के लिए आते थे, सूर्य ग्रहण पर कुण्ड में स्नान करने वालों की संख्या लाखों में पहुंच जाती थी। इन मेलों के कारण बहराइच बहुत सम्पन्न हो गया था। मसऊद को यह स्थान बहुत पसन्द था परन्तु जब वह इस कुण्ड और मूर्ति को देखता था तब बहुत क्रोधित होता था। वह कहा करता था कि खुदा की इच्छा और मदद से वह कुफ्र की इस जान को नष्ट करके खुदा की प्रार्थना के लिए एक कमरा (मस्जिद) बना देगा तब इस स्थान से कुफ्र निर्मूल हो जायेगा। वह चाहता तो उसे नष्ट कर सकता था परन्तु वह उसे उन सभी प्रतीकों सहित इबादत गाह में बदलने का अवसर देख रहा था, ताकि काफिर उसे देखकर अपमानित हों और उनका विश्वास "बालार्क। (सूर्य भगवान की प्रतिमा) से हटकर इस्लाम की श्रेष्ठता पर टिक जाये। (तत्रैव पृ० ३९३) वहीं एक महुए का वृक्ष था उसके नीचे उसने एक सुन्दर चबूतरा बनवाया जहाँ वह अकसर बैठा करता था। और वहाँ से कुण्ड आदि को देखकर मूर्ति तथा उसकी पूजा को नष्ट करने के विचार को दृढ़ करता जाता था। इस्लाम के प्रचार के लिए वह इसे अत्यावश्यक मानने लगा था कि बिना इसे वह इतना महत्वपूर्ण समझने लगा था कि बिना इसे पूरी किये वह सतरख में अपने पिता की कब्र तक नहीं गया यद्यपि उसकी याद में फूट-फूट कर रोता था।

(तत्रैव पृ० ३९४-९५)

मसऊद के आगमन से बहराइच के राय राजा अपनी सेनाओं सहित एकत्र हुए और उन्होंने अपना एक शान्तिदूत भेजा। परन्तु मसऊद ने स्पष्ट कहला दिया कि यह देश खुदा का है उसी के आदेश से मैं आया हूं। इस युद्ध में जीत तो उसे प्राप्त हुई परन्तु उसे अपनी एक तिहाई सेना खोकर भारी क्षति उठानी पड़ी।

शीघ्र ही हिन्दू राजा पहले से और अधिक शक्ति तथा नयी रणनीति के साथ एकत्र हुए। मसऊद की सेना का मनोबल टूट चुका था, उस अवसर पर उसने बहुत भावपूर्ण ढंग से इस युद्ध को विशेष 'जेहाद' घोषित कर उनमें जोश भरा। दो दिन भयंकर युद्ध हुआ मसऊद की इस्लामी सेना घास की भांति काट दी गयी। अपनी हार के आसार देखकर मसऊद खीज गया और उसने आदेश दिया मारे गये मुसलमान सैनिकों की लाशों को सूरज कुण्ड में डाल दिया जाय ताकि उनकी सुगंध (सड़ांध) से उस स्थान का कुफ्र समाप्त (अशुद्ध) हो जाय। कुण्ड शवों से भर गया। हृदय विदारक दृश्य था मसऊद को चारों ओर लाशें ही दीख रही थी कुछ आहत सैनिक पड़े-पड़े कराह रहे थे। इसी बीच राय सहलदेव ने कुछ अन्य सरदारों के साथ मसऊद को अपना निशाना बनाया। मसऊद को उसके अंगरक्षकों ने चारो ओर से घेर कर अपने बीच मे ले लिया, परन्तु बाणों की भीषण वर्षा से सब मारे गये। अन्त मे राय सहलदेव (सुहलदेव) के बाण से रविवार १४ जून १०३३ ई० को सायंकाल भारत को 'दारुल इस्लाम' बनाने की हसरत मन मे लिए हुए वह इस दुनिया से कूच कर गया। अन्तिम क्षणों में उसके सेवक उसे उसी महुए के वृक्ष के नीचे ले गये जहाँ उसका प्राणान्त हो गया। उस समय वह मात्र १८ वर्ष का था।

चूंकि सूरज कुण्ड पर पहले से ही प्रत्येक रविवार को 'बालार्क' के दर्शनार्थ हिन्दू स्त्री-पुरुष का मेला लगता था, जिसका आकार सूर्य ग्रहण पर ६ कगुना अधिक हो जाता था।' जब मसऊद के अनुयायियों ने सूरज कुण्ड पर मन्दिर को ध्वस्त कर उसके स्थान पर मसऊद की मजार बनाकर "बालार्क" मन्दिर के स्थान पर बाले "मियाँ की मजार" प्रसिद्ध कर दी तो अन्ध हिन्दू श्रद्धालुओं का आकर्षण पूर्ववत् बना रहा। कालान्तर में धीरे-धीरे वहाँ नियुक्त पुजारियों (मुजावरो) की (कुत्सित) प्रेरणा से आने वाले अन्ध हिन्दु श्रद्धालुओं के श्रद्धासुमन "बालार्क" से हटकर कब "बाले मियाँ" की मजार पर चढ़ने लगे यह उन्हें भी पता न चला। इन श्रद्धालुओं की अन्ध श्रद्धा का लाभ, बाले मियाँ की महिमा मंडित (मनगढ़न्त) कथाओं को जनसाधारण में नियोजित रूप से प्रचारित कर देश की भोली अन्धविश्वासी जनता को आज तक ठगकर उठाया जा रहा है।

इन तथ्यों की जानकारी के बाद यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि बाले मियां के नाम से विख्यात सैयद सालार मसऊद गाजी कितने बड़े हिन्दू-मुस्लिम मेल मिलाप एवं सम्मिश्रित संस्कृति में पोषक थे, जिसकी घोषणा देश के अनेक बड़े-बड़े राजनेता समय-समय पर उसकी मजार पर चादर चढ़ाते हुए कहते हैं।

* * *

मार्मिक अपील

श्रीमद्दयानन्दार्य गुरुकुल नगला कटीला (एटा) अपने स्थापना काल से प्रगति के पथ पर सतत गतिमान रहा है। इसकी प्रगति, उत्तम शिक्षा, एवं अनुशासन की दृष्टि से क्षेत्रीय जनता व विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से सराहना की है।

विगत वर्षों से शासन द्वारा स्वीकृत अनुदान धनराशि ३४१९९/- रुपया एवं शिक्षकों का मार्च १९८७ से अब तक का भुगतान जिला विद्यालय निरीक्षक एटा द्वारा न होने से गुरुकुल अपनी बदनसीबी पर रो रहा है। और शिक्षक भुखमरी के कगार पर खड़े हुए हैं। गुरुकुल का विकास अवरुद्ध हो गया है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में छात्रों के पठन-पाठन की व्यवस्था भंग हो रही है। ऐसी दशा में आर्य जगत से गुरुकुल मार्मिक अपील करता है कि यथाशक्ति गुरुकुल की सहायतार्थ दान देकर कृतार्थ करें।

आर्य प्रत्याशी विजयी

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के माननीय प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी के पत्रांक-मेरठ २४६ दि० १२-७-८८ द्वारा यह जान कर अतीव हर्ष हुआ कि आर्य समाज मैनपुरी के सभासद श्री अश्वेन्द्र सिंह जी स्नातक, ग्राम-पंचायतों के विगत सामान्य निर्वाचन में, अपनी ग्राम-सभा बरपरी के प्रधान-पद पर भारी बहुमत से विजयी हुए हैं। इस सफलता के लिए स्नातक जी को हार्दिक बधाई है। उल्लेखनीय है कि श्री स्नातक जी इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुं० ध्रुव पाल सिंह जी 'अटल' के सहोदर अनुज हैं।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह श्री स्नातक जी को अपने पद के दायित्वों के निर्वहन हेतु शक्ति प्रदान करें।

पुनः मङ्गल कामनाओं सहित--

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा।

निर्वाचन

आर्य समाज नया शहर इटावा	आर्य कन्या इन्टर कालेज, इटावा
प्रधान श्री महेश्वरी दयालु जी	प्रधान श्री महेन्द्र शंकर जी
मन्त्री श्री सुरेन्द्र बहादुर जी	प्रबन्धक श्री भगवत प्रसाद जी
कोषा० श्री कमल किशोर जी	कोषा० श्री रूपकिशोर जी

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में-

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय में सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम भेजें रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न है तथा १५% कमीशन भी देय है।

	मूल्य
धर्म शिक्षा भाग १...	१-५०
" " भाग २...	१-५५
" " भाग ३...	२-७०
" " भाग ४...	२-७५
" " भाग ५...	३-६०
" " भाग ६...	४-७५
" " भाग ७...	४-१५
" " भाग ८...	३-००
" " भाग ९...	४-००
" " भाग १०...	३-००
" " भाग ११...	४-००
" " भाग १२...	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

३ सितम्बर, १९८८ को देश भर में समान अधिकार दिवस श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आर्य मन्दिरों में हरिजनों के साथ यज्ञ तथा यज्ञोपवीत देने का कार्यक्रम-

मुख्य समारोह दिल्ली में लोक सभा अध्यक्ष-बलराम जाखड़ मुख्य अतिथि होंगे।

दिल्ली १८ जुलाई,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश भर की आर्य समाजों को आदेश दिया है कि आगामी ३ सितम्बर, १९८८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर देश के प्रत्येक नगर कस्बों और गांवों में आर्य समाज मन्दिरों में वृहद यज्ञों का आयोजन किया जावे। इस अवसर पर विशेष रूप से हरिजन भाइयों को भारी संख्या में आमंत्रित कर उन्हें यज्ञ वेदी पर यजमान बनाकर आहुतियां देने की प्रेरणा की जाय और सामूहिक यज्ञोपवीत दिये जायं, देश में चल रहे "मन्दिर प्रवेश" के विवाद का यही असली समाधान है।

स्वामी जी ने कहा आर्य समाज ने ही सर्वप्रथम ऊंच-नीच के भेद-भाव और जन्मगत जात-पात प्रथा वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर मानकर छूत-छात की दीवारों को तोड़ने का प्रयत्न किया था। आर्य समाज को ही यह गौरव प्राप्त है कि हिन्दू समाज में एकता और समता स्थापित करने के लिये अनेक हरिजन युवकों को अपने गुरुकुलों में पढ़ाकर वेद-शास्त्रों का विद्वान बनाया और आर्य समाजों में पुरोहित पद पर सुशोभित किया।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने देश भर की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं आर्य समाजों, तथा हिन्दू संगठनों को विशेष परिपत्र भेजकर अपील की है कि हरिजन भाइयों को समाज में बराबरी का दर्जा देने के लिए धार्मिक आन्दोलन का सूत्रपात करें और श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को समान अधिकार दिवस के रूप में सोत्साह मनावें।

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

—हस्तिनापुर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ का द्वितीय चरण १३, १४, १५ तथा १६ जुलाई से माता चन्द्रकला जी के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

प्रातः सायं दोनों समय प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा सस्वर पाठ होता था तथा यज्ञ के उपरान्त ब्रह्मा पद पर आसीन श्री धर्मपाल जी शास्त्री द्वारा यजमानों को आशीर्वाद तथा उस समय प्रयुक्त मन्त्रों में से एक मन्त्र के आधार पर प्रवचन होता था।

अन्तिम दिन पूर्णाहुति के उपरान्त सहभोज से उत्सव की समाप्ति हुई।

वेद सप्ताह के अवसर पर

६० पैसे की १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, दैनिक यज्ञ प्रकाश, वैदिक धर्म, परमात्मा विचार वैदिक प्रश्नोत्तरी, सत्य पथ, आर्य समाज क्या है, ईश्वर प्रार्थना, प्रेम भक्ति जितनी इच्छा हो सेट मंगावें। उत्तम हवन सामग्री ४) किलो। श्रद्धानन्द ग्रन्थावली १२), गुरुदत्त ग्रन्थावली १३)।

वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३, रामजस रोड,
करोलबाग—नई दिल्ली-५

साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 44998
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी-
श्रावण कृष्ण १०
७ अगस्त रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

दयानन्द बाल सदन मोतीनगर, लखनऊ में पुनर्वास प्रशिक्षण केन्द्र का शिलान्यास

दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ में २४/७/८८ को एक सादे समारोह में प्रदेश की समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी ने बाल प्रशिक्षण भवन का शिलान्यास किया।

इस अवसर पर नगर के गणमान्य व्यक्ति तथा आ० प्र० नि० सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी उपस्थित थे। सभा को सम्बोधित करते हुए श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी ने आश्चर्य व्यक्त किया कि समाज कल्याण में लगी जाली संस्थाओं की अनुदान सम्बन्धित याचिकायें उन तक द्रुतगति से पहुंच जाती हैं। जब कि असली संस्थाओं के पत्र उन तक पहुंचने में काफी समय लेते हैं और कई बार तो उनकी फाइलें आरम्भ में ही दब जाती हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा करना अन्याय ही नहीं अपितु पाप है। श्रीमती बख्शी ने यह भी बताया कि गत वर्ष उन्होंने लगभग १०० फर्जी संस्थाओं को अनुदान बन्द किए और ब्लैक लिस्ट घोषित किया।

श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी ने यह भी बताया कि अपने मन्त्रालय के अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि जो संस्थ[illegible] में कल्याणकारी कार्यों में संलग्न हैं। उनकी सत्यता को परखना एवं अनुदान देना उनका कर्तव्य है। इसके लिये संस्था के अधिकारियों को दर-दर भटकना नहीं चाहिए। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि श्रीमद्-दयानन्द बाल सदन, निराश्रित बच्चों की देखभाल में सराहनीय कार्य कर रहा है।

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन के अध्यक्ष श्री अर्जुन देव महाता ने उक्त अवसर पर बताया कि सही संस्थाओं के अनुदान के लिए प्रार्थना-पत्र देने में इसलिए भी कठिनाई होती है कि सरकार द्वारा मांगी जानकारी की पूरी शर्तों को पूरा कर पाना सम्भव नहीं होता और यह संस्थायें झूठी बातें करना पसन्द नहीं करतीं। उन्होंने कहा कि श्री मद्दयानन्द बाल सदन में ३८ अनाथ बच्चों का पालन एवं शिक्षा का सुचारु प्रबन्ध किया जाता है। बाल पुनर्वास कार्यक्रम चलाने की संस्था का उद्देश्य यह है कि यह बच्चे अपने पैरों पर खड़े होकर सामान्य नागरिकों का जीवन व्यतीत कर सकें।

नगर की प्रसिद्ध समाज सेविका एवं महिला विद्यालय की भूतपूर्व प्रधानाचार्या कुमारी कमल लता सब्बरवाल ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि इन असहाय व निराश्रित बच्चों के पुनर्वास हेतु अनुदान अथवा सहायता देना सरकार और हम सभी के लिए कोई दया दर्शाना नहीं अपितु कर्तव्य भाव होना चाहिये। श्री मनमोहन तिवारी ने मान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया।

बाल सदन के प्रांगण में इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया जिसमें श्रीमती स्वरूपकुमारी बख्शी ने भी अमरूद का एक पौधा लगाया।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

शिक्षक-धर्म प्रशिक्षण शिविर

विद्यार्थियों की धर्म शिक्षा में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिये यह आवश्यक है कि आर्य विद्यालयों के शिक्षकों में भी धार्मिक भावना को जाग्रत किया जावे और उन्हें वैदिक धर्म की सामान्य जानकारी भी दी जावे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक विद्यालय में दो दिन का अध्यापक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है। विद्यालय प्रशिक्षकों की आवश्यक सुविधा की व्यवस्था करता है एवं आर्य प्रतिनिधि सभा प्रशिक्षण के लिये विद्वानों की व्यवस्था करती है।

सभी आर्य विद्यालयों के प्रबन्धकों एवं प्रधानाचार्यों से निवेदन है कि वे अपने विद्यालय में शीघ्रातिशीघ्र इस प्रशिक्षण का आयोजन करें एवं सभा को विद्वानों की व्यवस्था के लिये लिखें।

दो दो तीन तीन विद्यालय मिलकर भी इस आयोजन को कर सकते हैं।

सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षणोपरान्त प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं।

शिविरायोजन की सूचना की प्रतीक्षा में,

माधवसिंह
मन्त्री, प्रदेशीय विद्यार्य सभा
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी व आर्य प्रति० सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी के सहयोग से मैंने अपने स्थाई आवास हेतु एक भवन क्रय कर लिया है।

अतः भविष्य में वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार या अन्य कार्यक्रमों एवं मेरे सम्पर्क हेतु केवल निम्न पते पर ही सम्पर्क करें—

डा० आनन्द सुमन वैदिक प्रवक्ता
४० बी० सेवक आश्रम रोड देहरादून २४८००१
फोन—२६००४

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज कटरा प्रयाग की १७ जुलाई ८८ की शोक सभा आदरणीय डा० बाबूराम जी सक्सेना भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० आर्य समाज कटरा प्रयाग तथा भूतपूर्व कुलपति प्रयाग विश्वविद्यालय एवं रायपुर विश्वविद्यालय तथा कमठ आर्य नेता एवं परम विद्वान के ११ जुलाई १९८८ ई० को आकस्मिक निधन पर अत्यन्त दुख व्यक्त करती है तथा परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि स्वर्गीय दिवंगत नेता की महान आत्मा को परम शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार एवं आर्य जगत को सहन शक्ति प्रदान करें।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एम०पी० प्रिन्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

श्रावण शुक्ल २, रविवार, सम्वत् २०४५ वि०, दिनांक १४ अगस्त १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	३३

नमस्ते वत्सले मातृभूमे !

★ ★ ★

राष्ट्र की गरिमा, अस्मिता और आत्मोत्सव के भावों से परिपूर्ण हमारा यह स्वातन्त्र्य–दिवस अमर रहे। हमारा स्वराज्य सुराज्य मे परिणित हो, तद्विचारों की क्रान्ति लाकर हम विश्व को एक नीड़ "विश्व भवत्येक नीडम्" बना दें। अवरोध, अवसाद, और तूफान तो आया ही करते हैं। आज से ५००० वर्ष पहिले भी तो तूफान आया था जब उस योगी पुरुष ने शंख ध्वनि बजाकर उद्घोष किया था- 'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्"। हमारे रहनुमा ऋषि दयानन्द ने तूफानों और झंझावातो के बीच ही तो खड़े होकर विश्व विजयनी वैदिक पताका फहराई थी। आज हमारे पास उसका तथा मातृभूमि के लिए प्राण उत्सर्ग करने वाले वीरों का दिया हुआ बहुत बड़ा सम्बल है। क्या हमारे प्राण उस सम्बल से अधिक मूल्यवान हैं ? नहीं कदापि नहीं।

तो फिर हम आर्यों के जीवन मे निराशा दुराशा और हताशा को कोई स्थान नहीं है। ज्योतियों के ज्योतिस्वरूप उस परम ज्ञान की ज्योति को लेकर हम आगे बढ़े हैं, बढ़ते रहेंगे। 'द्यौ शान्ति से लेकर सर्वं शान्ति" तक समस्त चर–अचर, जड़ चेतन को शान्तिमय बनाने की हमने शपथ ली है। ऐ दुनिया वालों ? तुम हमारा साथ दो हम तुम्हारे विश्व को भय से मुक्त करा देंग। शान्ति, प्रेम और ममता का लहलहाता हुआ सागर बना दें। जहां सब सुखी होंगे, प्रेम की सरिता मे डूबे होंगे। सुनो ? हमारी वैचारिक क्रान्ति में वह शक्ति है कि हम सूर्य और चन्द्रमा से भी हजार गुना बढ़कर प्रकाश को दे सकते हैं। हम उस आदर्श पथ के पथिक हैं जब हमने खुद जहर का प्याला पीकर दुनिया को अमृत का सन्देश दिया था। खुद हथकड़ियां पहनकर दुनियां की हथकड़ियां खुलवाई थीं। हमारा एक ही विश्वास है हम तो उस परम ज्योति के सन्देशवाहक हैं इस धरा को स्वर्ग बनाकर ही रहेंगे।

हम जहां चलें हल पड़े धरा, बन जाय मरुस्थल हेमालय।
हम जहां रुकें बन जाय वहीं, मन्दिर पुण्यस्थल देवालय॥

और · आज के इस पावन पर्व पर अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए जीवन उत्सर्ग करने वालों तथा समस्त स्वातन्त्र्य प्रेमियों को हमारा शत–शत नमन।

इस अवसर पर माननीय नारायणदत्त तिवारी के नेतृत्व में नवगठित प्रदेशीय मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को प्रदेश की आर्य जनता की ओर से बधाई एवं शुभकामना।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ॥

—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

लखनऊ—श्रावण शुक्ल २ संवत् २०४५, रविवार १४ अगस्त १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

यते महि सुराज्ये

भारत माता के वीर सपूतों की अनवरत संघर्ष साधना और उत्सर्ग के फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को वह पुण्य घड़ी आई जब विदेशी दासता से मुक्ति पाकर भारतमाता ने स्वतन्त्रता का वरण किया। यद्यपि इस वरण में भी अन्धकार का कम आवरण नहीं था, क्योंकि जाते-जाते अंग्रेज अपनी कूटनीति और चातुर्य से भारत माता का अंगभंग कर पाकिस्तान के निर्माण में सफल हो चुके थे। भारत माता ने इस पीड़ा को सहन कर स्वतन्त्रता का स्वागत किया था। तब से प्रति वर्ष यह दिवस आता है—इस दिवस को मात्र औपचारिक रूप से मनाकर हम इसे विदा कर देते हैं, और दूसरे दिन से फिर हम अपनी दिनचर्या में जुट जाते हैं। यह पर्व आकर क्या कह जाता है—क्या सन्देश दे जाता है और क्या अपेक्षायें छोड़ जाता है, उसके इस आह्वान [सुराज्य] को क्या हमने सुनने का प्रयत्न किया है?

वह त्याग—बलिदान और संगठन की भावना जिसके उपहार स्वरूप हमें यह स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उसका कितना सम्मान स्थापित करने तथा स्वराज्य को सुराज्य में परिणित करने में हम कितने सफल हुए हैं। जिन महा पुरुषों ने अपने भरपूर साधन—सम्पत्ति और सुविधायें ठुकरा दी थीं, जिन तरुणों ने अपने आशावान नवोदित सुखमय जीवन को तिलांजलि दे दी थी, जिन सुयोग्य छात्रों ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के उच्च पदों को त्याग दिया था, और माता—बहनों ने तिल तिल जलकर अपने जीवन को ज्योति दीप बना दिया था। वे आदर्श कहाँ समा गये। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद भाष्य—सत्यार्थप्रकाश और प्रार्थनाओं में स्वराज्य शब्द का ही बारम्बार उच्चारण नहीं किया था, प्रत्युत उसकी भावना को भी जाज्वल्यमान कर दिया था। साधारणजन ही नहीं राजे रजवाड़े भी जिससे आन्दोलित हो उठे थे। इतिहासकारों के अनुसार ८०% आर्य समाजी स्वातन्त्र्य संग्राम में कूद पड़े थे। स्वतन्त्रता तो ले आये—अब प्रश्न इसकी रक्षा का है। क्या यह कार्य अकेले आर्य समाज को करना होगा। वह कर सकता है, पर उसे कोई करने तो दे।

अज्ञान—अन्याय और अभाव के प्रति बराबर आर्य समाज सचेत करता रहता है। अवैदिक सती प्रथा, हरिजनों के प्रति असमानता का व्यवहार, ज्योतिषियों—तान्त्रिकों के पाखण्ड, और भ्रष्टाचार के कारण समाज की आर्थिक दुर्दशा के प्रति आर्य समाज ने सदैव सावधान किया

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक १४ अगस्त १९८८ को प्रातः ११ बजे नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। विचारणीय विषयों की सूची सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों को डाक से भेज दी गई है। कृपया समय पर पधारने का कष्ट करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

पर निकल पड़ते हैं, जब राष्ट्र पतन के गर्त की ओर झुकने लगता है। पौराणिक जन पाखण्ड—प्रदूषण का मण्डन करते हैं, तब आर्य समाज ही उसका खण्डन करता है। वास्तव में यह खण्डन कोई विखण्डन न होकर शरीर से मल प्रक्षालन कर उसे शुद्ध—बुद्ध और स्फूर्त बनाने के समान होता है।

इस स्वातन्त्र्य पर्व का आह्वान आर्य समाज सुनता है और घोष पूर्वक राष्ट्र को सुनाता भी है। आर्य समाज ने यजुर्वेद के उस सन्देश के द्वारा निरन्तर जागरण किया है, जिसमें ब्रह्मतेज और क्षात्र ओज दोनों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उस पर हम आप ध्यान देंगे तभी इस पर्व के आह्वान को सुनने में सक्षम होंगे और राष्ट्रोन्नति में सफल भी, और यही परस्पर पर्व की सच्ची बधाई होगी।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥

यजु० ३२/१६

ब्रह्म—क्षत्र दोनों का हमको, भरा हुआ भण्डार चाहिए।
श्री आये श्रेय दिलाये श्री, हमको वह शृंगार चाहिए ॥
ईश्वर ऐसा राज्य बढ़ाओ, ब्रह्म-शक्ति विज्ञान बढ़ाओ।
सब उत्तम आविष्कारों से, उत्तम श्री ऐश्वर्य बढ़ाओ ॥
जो विद्या ब्रह्म वैभव विहान, घर राज्य हमारा सुख महान।
हे क्षत्रिय करो उसकी रक्षा, कर क्षत्र हमें उत्तम प्रदान ॥
छोड़ संकलन जोड़ समन्वय, सद्गुण का संसार चाहिए।
श्री आये श्रेय दिलाये श्री, हमको वह शृंगार चाहिए ॥
चारों वर्ण समान सभी हैं, राष्ट्र पुरुष के शक्ति अंग हैं।
मिल जुलकर सब करें उन्नति ऐसा पुण्य विचार चाहिए ॥

★★★★

निःशुल्क ट्रैक्ट मँगाइए

आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र लखनऊ ने आर्य संस्कृति के प्रचार हेतु निम्न ट्रैक्ट प्रकाशित किए हैं। जनता इन्हें निःशुल्क वितरणार्थ मँगाये—(१) हिन्दुओं को चेतावनी (२) कुरान का पैगाम (३) सती प्रथा शास्त्र सम्मत नहीं। लिखें—

डा० ऋषिदेव विद्यालंकार, निदेशक आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र
ई२/ई२ रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ

इकतालीस वर्ष बाद

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान, नजीबाबाद उ० प्र०

१५ अगस्त सन् १९४७ ईसवी को विदेशी शासक भारत की बागडोर भारतीयों के हाथों में सौंप कर चले गये। २० जून सन् १९४८ ई० को भारत की राजधानी दिल्ली के गांधी मैदान में अंतिम अंग्रेज वाइसराय लार्ड माउण्टबेटन को विदाई दी गयी। मैं स्वयं उस समारोह में उपस्थित था। अब भी जब कभी वह दिन स्मरण हो आता है तो वह दृश्य जो उस समय था, नेत्रों के सामने घूम जाता है। साथ ही यह भी ध्यान आ जाता है कि उस दिन लग रहा था कि आज हमारे सर से पराधीनता की अन्तिम छाया भी टली और अब हम स्वाधीनता के साथ रहेंगे।

परन्तु अल्प काल में ही मेरे वह विचार जो २० जून ४८ को मेरे मस्तिष्क में आये थे, हवा होने लगे, जब मैंने यह देखा कि केवल अंग्रेज ही भारत से गया है, अंग्रेजियत नहीं गई। इस सबका कारण यह था कि जिन लोगों के हाथों में देश का शासन उस समय आया था, वह लोग केवल रक्त से ही भारतीय थे आचार और विचार से नितान्त अभारतीय। उनका न केवल रहन–सहन ही पश्चिमी था अपितु सोचने समझने का ढंग भी वैसा ही था उनका शरीर अवश्य भारत में था, किन्तु मन और मस्तिष्क इंगलैंड में था। वास्तविकता यह है कि उनके मस्तिष्क में भारत की नहीं अपितु ब्रिटेन की तस्वीर थी। यही कारण था कि वह प्रत्येक विषय में अंग्रेजों की नकल करते थे और यह नकल इस सीमा तक की गई गत इकतालीस वर्षों में सर्व-साधारण भारतीयों की गतिविधि भी पश्चिमाभिमुख हो गयी। सभी की आदतों में अंग्रेजियत की पुट लग गयी। और तो और अंग्रेजों के जाने के बाद अंग्रेजी भाषा की जड़ें यहां अधिकाधिक दृढ़ होती गयीं। इतनी दृढ़ कि चपरासी की पत्नी हो या रिक्शा चलाने वाले की वह भी अपने बच्चों से अपने को मम्मी कहलाने में गर्व अनुभव करने लगी। मम्मी-पापा की रट भारतीयों की रगों तक में घुस गई, ठीक उसी प्रकार-जिस प्रकार तुलसीकृत रामचरित मानस।

क्लबों की भरमार हो गयी और क्लबों में जाकर मद्यपान करना सभ्यता का चिह्न माना जाने लगा। अण्डे और शराब में ही सम्पूर्ण जीवन शक्तियां (विटामिन) आकर एकत्र हो गयी बतायी जाती हैं। दूध, दही, घी, मक्खन और बादाम खाने को पिछड़ेपन का चिह्न माना जाने लगा। स्वागत–पेय में दूध का स्थान चाय ने ले लिया था, किन्तु अब तो चाय के स्थान पर भी काफी ने आसन जमाना प्रारम्भ कर दिया है।

शिक्षा में इतना बिगाड़ हुआ है कि समस्त भारत के विद्यालय हुड़दंग के अड्डे बन गये हैं। विश्वविद्यालय तो विष-विद्यालयों में परिणित हो गये हैं। भारत के वर्तमान शिक्षा शास्त्री शिक्षा में परि–वर्तन के नाम पर उपाधि प्राप्ति की अवधि में परिवर्तन करते हैं। कई बार यह सोचना पड़ता है कि यह सरकारी शिक्षा–शास्त्री, शिक्षा–पद्धति शब्द के अर्थ भी समझते हैं अथवा नहीं? परन्तु क्योंकि यह सरकारी हैं और मैकाले के मानसपुत्र हैं, उसी मैकाले के जिसके मानस-पुत्र भारत के शासक हैं अतः प्रमाणित विद्वान् हैं। "जिसे पिया चाहे, वही सुहागिन" कहो अथवा "चोर–चोर मौसेरे भाई" कह लो, विशेष अन्तर नहीं पड़ता। केवल घुमाकर और सीधे हाथ से नाक पकड़ने जैसा ही अन्तर है।

दस वर्ष पूर्व जनपद पौढ़ी गढ़वाल (उ० प्र०) की कोटद्वार आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन मैंने अपने भाषण में कुछ इस विषय में चर्चा की थी। प्रदेश के तात्कालिक सामुदायिक विकास मन्त्री श्री बलदेवसिंह आर्य मंच पर थे। मेरे बाद उनका भाषण हुआ। वह कहने लगे कि वर्तमान शिक्षा की आलोचना तो सब करते हैं, किन्तु उसका विकल्प तो कोई आज तक पेश नहीं कर सका।

आदि काल से आर्य–परम्परा में गुरुकुल–पद्धति रही है, किन्तु अपने नाम के साथ आर्य लगाने वाले को मन्त्री पद पर आसीन हो जाने के बाद मैकाले की वर्तमान शिक्षा–पद्धति का विकल्प दृष्टिगोचर नहीं होता। नामधारी और रक्त से भारतीय होना और बात है, किन्तु आर्यत्व को धारण किए होना तथा वास्तविक अर्थों में भारतीय होना तथा भारतीयता के स्वरूप को पहचानना और बात।

इन लोगों को यह कभी दिखाई नहीं दिया कि राम और कृष्ण जैसे महामानव और गौतम, कपिल, कणाद, वशिष्ठ और वेद व्यास जैसे ऋषि–महर्षि वर्तमान शिक्षा पद्धति की देन नहीं थे। वर्तमान में भी आचार्य शंकर और महर्षि दयानन्द का निर्माण इस शिक्षा–पद्धति ने नहीं किया। इन महापुरुषों की उज्ज्वल परम्परायें वर्तमान-काल में भी संसार का मार्ग–दर्शन करने की अतुलित शक्ति रखती है। उन्हीं परम्पराओं के कारण भारत अतीत में संसार का गुरु बन कर रहा है। साथ ही सोने की चिड़िया भी कह-लाया है। वह भारत-जिसे वर्तमान में इन तथाकथित भारतीयों ने मैकाले की मानसिक रूप से अंग्रेजियत के गुलाम पैदा करने और लिपिक तैयार करने की पद्धति में रंग कर विगत इकतालीस वर्षों में अवांछनीय पथ पर डाल दिया है। जो थोड़े से गुरुकुल आधुनिक युग-प्रवर्तक जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने प्रारम्भ किये थे और जिनका प्रारम्भ अतीव गौरवास्पद रहा था, सरकारी सहायता के प्रभाव में आकर इन काले अंग्रेजों ने उन्हें भी भ्रष्ट करके रख दिया है। अब न वह गुरुकुल हैं और न कालेज-आधा तीतर और आधा बटेर। अन्ततोगत्वा भारत अतीत के स्वर्णिम युग को प्राप्त हो तो किस प्रकार? महर्षि मनु के शब्दों में वह दिन कब आयेगा, जब भारत स्वाभिमान पूर्वक यह घोषणा कर सके कि–

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

अर्थात् इस देश में उत्पन्न हुए विद्वानों के चरणों में बैठकर संसार के जिज्ञासु अपने–अपने लिए उपयोगी विषयों की शिक्षा प्राप्त करें।

स्वाधीनता की इस लगभग अर्द्ध-शताब्दि की अवधि में भारत में देश-द्रोह की प्रवृत्ति जन्मी तथा उभरी है और उसे बल मिला है। अलगाववाद के स्वर भारतीय राजनीति के आकाश में उत्तरोत्तर वृद्धि पर हैं तथा पंचमांगी देश द्रोही अल्पसंख्यक के नाम पर प्रत्येक क्षण साम्प्रदायिक रूप धारण कर देश भक्त जनता तथा शासन की नाक में दम किये रहते हैं, वह कोई अवसर नहीं जाने देते, जब अवसर मिलता है किसी न किसी बहाने से उपद्रव कर डालते हैं। शासन सब जानता है, जब लाखों-करोड़ों की धन की तथा सैकड़ों की जीवन की

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राष्ट्रीय पर्व - १५ अगस्त

[आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर, हिन्दनगर, लखनऊ [

१५ अगस्त १९४७ को सदियों की पराधीनता की बेड़ियों से त्रस्त भारत माता को स्वतन्त्रता मिली थी, इस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए अनेकशः भारत-पुत्र और पुत्रियों ने अपना सर्वस्व बलिदान किया, आत्मोत्सर्ग किया । यह इतिहास सभी के सामने स्पष्ट है । स्वाधीनता के लिए आन्दोलनरत भारतरत्नों की आन्तरिक आकांक्षा थी कि भारतमाता के खोये गौरव को पुनः स्थापित कराना है । हमारा देश विश्व गुरु था-सभी देशों से विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान प्रशिक्षण के लिए भारत की ओर दौड़ते थे । आत्म शान्ति का मार्ग उन्हें यहीं मिलता था । परन्तु कुछ स्वार्थी तत्वों के अपराध या भूल के कारण तथाकथित पण्डितों का प्रभाव बढ़ने लगा उन्होंने गुरुडम अन्ध विश्वास फैलाना आरम्भ किया देश तोड़क विदेशी शक्तियों के इशारे पर धन के लालच में हमारे पूर्वजों के चरित्रों को लांछित करके चमत्कारिक रूप में लांछनयुक्त उनके जीवन दर्शन अपनी पुस्तकों के माध्यम से प्रसारित करने प्रारम्भ किये, बस देश के पराभव की स्थिति आने लगी । क्रमशः इसके दुष्प्रभाव से हम विवेकहीन होकर 'तथास्तु' की भाषा बोलने लगे । अपने निजी क्षणिक लाभ तक ही हमारा चिन्तन बन्द रहा । सर्वाङ्गीण हित कल्पना भी समाप्तप्राय हो गयी । राष्ट्र निर्माण में मातृशक्ति का प्रमुख हाथ होता है । मानव की जन्मदात्री माता उसकी निर्मात्री होती है । उसके पददलित किये बिना मंसूबे पूर्ण न होंगे-इस सोच के साथ देशद्रोहियों ने नारी को अशिक्षित रखना, वेदज्ञान प्राप्ति के अधिकार से वंचित करना, उन्हें पुरुषों की आज्ञाओं के अनुरूप-बस कोल्हू के बैल की तरह जुते रहने का-दुर्भाव फैलाना आरम्भ किया । हमने चिन्तन बन्द कर दिया था इसलिए उनका प्रभाव बढ़ा । नारी की गरिमा नष्ट हुयी, देश पराधीन हो गया । पराधीनता का काल याद आकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं-क्या-क्या हमें अपने ही घर से नहीं सहना पड़ा ।

परन्तु हमारे सौभाग्य से महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ उनकी स्वदेशी गर्जना से चेतना आयी-देश में लोकमान्य तिलक, गोखले, महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, सुभाषचन्द्र बोस, पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल प्रभृति अनेक दिव्य विभूतियां जन्मी । उन तपःपूत आत्माओं की बलिदानी भावना ने रंग बदला-पराधीनता के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन हुये, संघर्षों को झेलते हुये अन्ततः हम स्वतन्त्र हुये । पराधीन का सुख भी पराधीन होता है । स्वाधीन का सुख स्वाधीन । स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् सुराज्य की स्थापना हमारा धर्म था । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने रामराज्य की स्थापना के अपने मन्तव्य की घोषणा की, हमारी राष्ट्रीय सरकार के उद्घोष, शासकीय घोषणायें भी हमारे पूर्वजों की मान मर्यादाओं के अनुरूप हो की गयीं, परन्तु शासन में अधिसंख्य पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने के कारण-उन्हें भारतीय संस्कृति, भारतीय मानसिकता संकुचित लगी, फलतः वे सुराज्य स्थापना के लिए विदेशों की ओर उन्मुख हुये । अंग्रेजों ने देश को पराधीन जब बनाया था तो अंग्रेज विद्वान् लार्ड मैकाले ने भारत के लोगों को मनसा, वाचा, कर्मणा, अंग्रेज बनाने की अपनी योजना बना डाली थी-उसकी मान्यता थी कि बिना इसके उनका राज्य स्थिर न रह सकेगा-उसी दास वृत्ति ने हमारे उन नेताओं को राम, कृष्ण, विदुर, चाणक्य की राजनीति समझ नहीं आयी । उन्हें कार्ल मार्क्स, लेनिन, लिंकन और माओत्सेतुङ्ग की राजनीति में सुगन्ध मिली । गांधी जी की कल्पना-कल्पना मात्र रह गयी । शासकीय घोषणायें-दीवालों पर या कागजों में रह गयीं । अंग्रेजियत, पराधीनता की वृत्तियां फिर हावी होने लगीं । भौतिक साधनों के रूप में निश्चय ही हम स्वावलम्बी बनें, परन्तु मानसिकता पराधीन बना बैठे । फलतः भौतिक साधनों की समृद्धि के साथ ही-नैतिकता, संगठन, राष्ट्रीय चेतना कुंठित होने लगी । जातीय साम्प्रदायिक वृत्तियां क्षेत्रीय भावनायें राजनीतिक क्षेत्र में प्रबल रूप में बढ़ने लगीं, तब सुराज्य की कल्पना कुण्ठित होने लगी । विघटनवाद सशक्त होने लगा । हमारे नेताओं ने इसे नहीं पहचाना । विवाद उत्पन्न करने का प्रयत्न करते रहे । बस आज देश में चहुंओर विखण्डनवाद की भावना संघर्षरत है । क्षेत्र-क्षेत्र का बटवारा, जाति-पाँति सम्प्रदाय के बटवारे की भावना ने मारकाट, लूटपाट का रूप ले लिया है । आज देश विघटनवाद की अग्नि में जल रहा है । हमारे राष्ट्रीय कर्णधार किसी भी राजनीतिक दल से सम्बद्ध क्यों न हों-अपनी मानसिकता सर्वाङ्गीण हितकारी नहीं बना रहे । कुर्सी का लालच सभी को विघटनकारी बना रहा है । भारतीय संस्कृति से दूर हो जाने के कारण बाह्य-आभ्यन्तर जीवन में बढ़ते अन्तर को नजरन्दाज किया जा रहा है फलतः देश पतन की ओर ही उन्मुख हो रहा है । जातिवाद को घटाने साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने के लिए जातीय-साम्प्रदायिक समीकरण किये जाते हैं । फलतः यह रोग बढ़ता ही जा रहा है ।

सभी पर्व अपने महत्व का स्मरण कराने के लिए ही प्रति वर्ष आते हैं । मानव पर्व पर जो आत्मालोचन करता है-पर्व के लक्ष्य को कितना पाया कितना संजोया । कितना भूला बिसराया कितना नकारा वह निश्चय ही उस पर्व के लक्ष्य को पाने में सफल होता है । १५ अगस्त का स्वाधीनता पर्व भी यही सन्देश लेकर पुनः आया है-आइये हम अपना निरीक्षण करें कि-हमने स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व जो संकल्प लिए थे-उन्हें हमने कितना याद रखा है, कितना उनका अनुपालन कर रहे हैं; कहां प्रमाद ने मुझे पथ विचलित कर डाला है, जिसके कारण हमारा देश वर्ग संघर्ष, साम्प्रदायिक संघर्ष में जल रहा है । मानवता की निरन्तर हत्या की जा रही है । विघटनकारी बातों को ही बढ़ावा दिया जा रहा है ।

निश्चय ही हम आत्मनिरीक्षण करेंगे और देखेंगे हम कहां से चले थे, कहां जाना था, कहां पहुंच गये । दिशा भ्रम से भटके अपने को संवारेंगे । अपने संकल्पों को दुहरायेंगे । विदेशी मानसिकता का सर्वथा परित्याग करके भारतीय संस्कृति, भारतीय दर्शन को आत्मसात् करके अपने को सर्वाङ्गीण मानवता का संरक्षक बनाने का दृढ़ निश्चय लेकर आगे बढ़ेंगे । अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को सर्वात्मना अपनाकर सर्वत्र समभाव की वैदिक भावना का प्रचार-प्रसार करेंगे । अवैदिक मान्यताओं को जिनसे वर्ग, जातीय साम्प्रदायिक संघर्ष उपजते हैं-उनके सर्वनाश के लिए प्रयत्नशील होंगे ।

यदि आज के इस पुनीत पर्व पर हम आत्मनिरीक्षण करके अपने पूर्व संकल्प को दुहरायेंगे, धारण करेंगे तो निश्चय ही हमारे पूर्वजों की सुराज्य की कल्पना आगे सार्थक होगी । हमारा भारत देश अपने पूर्व स्वरूप को प्राप्त करेगा और सम्पूर्ण विश्व में सुख शान्ति प्रसारण का एकमात्र केन्द्र बिन्दु बनेगा । प्रयत्न हमारा होगा कृपा प्रभु की होगी हमारा यह पर्व अक्षय आलोक रश्मियों से आलोकित होगा सारे विश्व को । कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की वैदिक भावना साकार होगी ।

विधर्मियो के कुचक्र से सावधान रहें

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सक्रिय होकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे प्राणपण से जुट जाय



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी २ जुलाई ८८ को आर्यसमाज रामपुर में जनसभा को सम्बोधित करते हुए, मंच पर बैठे हुए सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री जयनारायणजी अरुण।

★

रामपुर—दो जुलाई ८८ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी अपने तूफानी दौरे पर रामपुर पधारे, आपने जनपद के सुदूराञ्चल से आये आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों मे भी व्यापक रूप से प्रचार करना चाहती है इसके लिए स्थानीय समाजो व जिला समाओ का सहयोग आवश्यक है।

सभा मन्त्री जी ने बताया कि सभा अपने उपदेशको व प्रचारकों को और भी सुविधायें देना चाहती है ताकि वे विधर्मियों के कुचक्र से आर्य जनता को सावधान करें और सक्रिय होकर वैदिक धर्म के प्रचार मे प्राणपण से जुट जाँय। उन्होंने प्रत्येक आर्यसमाज मे आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभाओं की स्थापना पर बल दिया है। जिससे आने वाली सन्तति में वैदिक विचारधारा का समावेश हो सके।

रामपुर जिला सभा की ओर से मान्य मन्त्री जी को एक मानपत्र (अभिनन्दन) भेंट किया गया जिसमे, परिवारो के आयकरण की माँग की गई। —विश्वम्भरदत्त शास्त्री, रामपुर

हा लालताप्रसाद जी

श्री लालताप्रसाद मौलवी, पादरी, पण्डित।
ऋषि के शिष्य पुनीत, धर्म वैदिक के मण्डित।
क्रूरकाल के गाल माँहि, अब वहीं समाये।
करके उनको याद, नैन मे जल भरि आये।
शान्ति आत्मा को मिले, प्राप्ति हो परमानन्द की।
यही है प्रभुवर कामना, कविवर ब्रह्मानन्द की।

—ब्रह्मानन्दार्य भजनोपदेशक आ०प्र० सभा, उ० प्र०

अमर रहे यह दिवस महान

स्वतन्त्रता का शुभ्र दिवस यह
भारत भाग्य विधाता है!
इसकी गरिमा है अपराजित-
दीन - दलित का त्राता है!
स्वतन्त्रता के इस शुभ दिन पर—
हम सबको है अति अभिमान।
अमर रहे यह दिवस महान॥

अमर शहीदों के शोणित का
प्रतिफल है यह पावन दिन।
इसके लिए चढ़े बलि वेदी—
युवक विहँसते थे अनगिन।
इसकी रक्षा हित हम सब हैं—
लिए हथेली पर निज प्राण।
अमर रहे यह दिवस महान!!

प्रगति-पथों पर बढ़े निरन्तर
प्राण - पणो सा प्यारा देश।
सत्य धर्म का ध्वज लहराए
सारी अवनी पर सविशेष।
लेकर नव सन्देश शान्ति का—
करे तिरङ्गा जग कल्याण।
अमर रहे यह दिवस महान॥

—राधश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

★

दयानन्द का सैनिक प्यारा

[डा० बाबूराम सक्सेना के महाप्रयाण पर]

तिरोहित हो गया 'शान्त प्रभात'
नीरवता वाटिका मे छायी चला गया मधुमास,
निशा हो गई सारी 'सांझें' अद्भुत हुआ हुलास,
दयानन्द का सैनिक प्यारा सुधारा सुरधाम,
सकल आर्य जगत का प्यारा प्रज्ञाधाम महान,
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का किया हमेशा मान,
विश्व-विद्यालय का तू सच्चा आचार्यवान विद्वान,
वाग्मी, प्रज्ञावान विपुल थे सक्सेना सत् नाम,
वेद शास्त्रादि का रखते थे उर में अथाह सम्मान,
मानवता के लिए तू अर्पित रहा जगत मे प्राण,
जन-सेवा मे रहे समर्पित, कुलपति थे कुलकान्त
अमर रहे चिरकाल, वे, दयावान, गुणवान।

—अखिलेशसिंह आर्य, आर्यसमाज कटरा, इलाहाबाद

—सभा प्रचारक श्री सीताराम आर्य ग्राम करवा पो० पुरवाँ जि० हरदोई के सुपुत्र का विवाह संस्कार श्री रामप्रसाद आर्य ग्रा० अदा पो० सहादत नगर जि० हरदोई की सुपुत्री के साथ दि० ७-७-८८ को वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। जिले के लगभग सभी आर्य जनों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

स्व० श्री चाँदकरण शारदा की जन्म शताब्दी पर—

श्रद्धाञ्जलि

[डा० कपिलदेव द्विवेदी कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय
ज्वालापुर (हरिद्वार)]

श्रीमांस्तु 'चाँदकरणो' गुणिनां वरिष्ठो,
विद्या-विभा-विभव-भूषित-भास्वराङ्गः ।
यः 'शारदेति' विदितो नर पुंगवोऽयं,
स्वीयैर्गुणैः प्रतिपलं भुवने चकास्ति ॥

१–गुणियों में श्रेष्ठ श्री चाँदकरण शारदा विद्या और ऐश्वर्य से विभूषित थे। वे 'शारदा जी' नाम से प्रसिद्ध थे। यह महान् विभूति अपने गुणों से सारे संसार में विख्यात थी।

स्वार्थं विहाय निरतो जनता–हिते यो,
वेदोद्धृतौ धृतमतिः करुणा–पयोधिः ।
स्वीयं समस्तमपि वैभवमार्पयत् सः,
दीनोद्धृतौ पतित–हीन–जनार्ति–नाशे ॥

२–वे निःस्वार्थभाव से जनता के हित में लगे रहते थे। वे दयालु वेदों के उद्धार में तत्पर रहते थे। उन्होंने अपना सारा वैभव दीनों के उद्धार और पतितों के दुःख दूर करने में लगा दिया था।

आर्यं समाजमवलम्ब्य धुरिस्थितो यः,
सत्याग्रहे विविध–दुःखततिं प्रपेदे ।
सत्याग्रहेऽभवदसौ द्वितयो धुरीणो,
लेभे च तत्र विमलां कमनीय कीर्तिम् ॥

३–वे आर्य समाज के अग्रगण्य नेता थे। उन्होंने सत्याग्रह में अनेक दुःख सहे। वे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के द्वितीय अधिनायक थे और उन्होंने सत्याग्रह में प्रशंसनीय कीर्ति प्राप्त की थी।

वाग्मित्व–लेखन–गुणैः विदुषां वरिष्ठो,
लोक–प्रबोध–निपुणो विधिशास्त्र वेत्ता ।
धर्म–प्रचार–क्रियया प्रथितः स्वदेशे,
श्री शारदा–गुणिवरो नहि कस्य वन्द्यः ॥

४–वे अपनी भाषण कला और लेखन कला से विद्वानों में आदरणीय थे। वे कानून वेत्ता थे और जनता में जागृति उत्पन्न करने में दक्ष थे। श्री शारदा जी धर्म प्रचार के द्वारा भारत वर्ष में विख्यात थे, वे किसके आदरणीय नहीं थे?

यस्यास्ति चारु–चरितामृत–पान–पूता,
पुण्याऽजमेर–नगरी प्रथिता पृथिव्याम् ।
स्वातन्त्र्य–युद्धमवलम्ब्य गतस्तु कारां,
तत्रा सहिष्ट विविधां गुरु–यातनां सः ॥

५–उनके पवित्र चरित्र से अजमेर शहर सर्वत्र प्रसिद्ध था। वे स्वाधीनता–आन्दोलन में जेल गये और वहाँ उन्होंने अनेक प्रकार की यातनायें सहीं।

औदार्य–शील–गुण–शूरतया वरेण्यः,
त्यागेन शौर्य–निवहेन सदा प्रसिद्धः ।
सत्याग्रहेषु विविधेषु सदाऽग्रणीः सन्,
नेतृत्व–भारमवहद् विजयोपलब्ध्यै ॥

६–श्री शारदा जी अपनी उदारता, सुशीलता, त्याग और शूर-वीरता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध थे। वे विभिन्न सत्याग्रहों में नेता रहे और उन्होंने सर्वत्र विजय प्राप्त की।

धर्मं प्रचार मनुरुध्य गतो विदेशान्,
प्राचारयद् भरत–देश–सुसंस्कृतिं यः ।
ग्रन्थान् प्रणीय विविधान् श्रुति-धर्म-निष्ठान्,
विद्वज्जनेषु विपुलां समवाप कीर्तिम् ॥

७–उन्होंने अफ्रीका आदि देशों में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। उन्होंने धार्मिक और शास्त्रीय विषयों पर 'दुःखियाओं का रोदन' 'शारदा एक्ट' 'सृष्टि की कहानी' आदि पुस्तकें लिखकर विद्वज्जनों में विशेष कीर्ति प्राप्त की।

हिन्दू सभा ऽऽर्य–जनता–हित–तत्परो ऽयम्,
अध्यक्षतां विविध–संगमनेषु चक्रे ।
यातो दिवं भुवि गुणैर्महितैं र्वरिष्ठैः,
लोकद्वये गुणिवरः सततं चकास्तु ॥

८–वे हिन्दू महासभा और आर्य समाज के कार्यों में सदा तत्पर रहते थे। उन्होंने अनेक सम्मेलनों में अध्यक्ष का पद सुशोभित किया। वे दिवंगत होकर भी अपने महान् गुणों से सारे संसार में सदा प्रकाशित रहें।

*

आर्यसमाज गोरखपुर (बक्शीपुर) द्वारा सञ्चालित स्वामी विरजानन्द बाल सदन (हुमारीपुर–गोरखपुर) अनधिकृत व्यक्तियों के कब्जे से मुक्त

स्व० रामप्रसाद वड़ीलाल द्वारा प्रदत्त, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से आर्य समाज गोरखपुर द्वारा संचालित स्वामी विरजानन्द बाल सदन शिशु एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय हुमारीपुर गोरखपुर जिस पर समाज द्वारा निष्कासित रामसूरत चौधरी एवं भीमचन्द्र शर्मा आदि अनधिकृत एवं अवैध कब्जा कर विद्यालय की धन एवं सम्पत्ति का दुरुपयोग कर रहे थे, अतिरिक्त मुन्सफ ७ गोरखपुर तथा जिला जज गोरखपुर के निर्णय के पश्चात् दिनांक ८ जुलाई १९८८ से उपर्युक्त अनधिकृत व्यक्तियों के अवैध कब्जे से मुक्त हुआ। न्यायालय के आदेशों का पालन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त व अधिकृत आर्य समाज गोरखपुर के अधिकारियों के निर्देशानुसार निवर्तमान प्रधानाचार्य रामनिवास ने विद्यालय का समस्त कार्य भार नव नियुक्त प्रधानाचार्या श्रीमती मीरासिंह (एम० ए० बी० एड०) को सौंप दिया। अब नियमानुसार तथा दानदाता स्व० रामप्रसाद वड़ीलाल की भावनाओं के अनुरूप उक्त विद्यालय विधिवत् आर्य समाज गोरखपुर के प्रधान श्री अवधेश कुमार राय तथा मन्त्री श्री रामनरेश पांडी के कुशल निर्देशन में सुव्यवस्थित रूप से संचालित हो रहा है।

डा० विनय प्रताप
उपमन्त्री सभा

स्वस्तिवाचन-शान्ति करण से आहुतियाँ

[डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती लिखते]

गुरुकुल परिसर, होशंगाबाद से चतुर्वेदी श्री ओम्प्रेमी जी (पूर्व रामनारायण माथुर, एडवोकेट) स्वस्तिवाचन और शान्ति करण मन्त्रों के सम्बन्ध में लिखते हैं–

प्रायः स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण के मन्त्रों में से कुछ कुछ से आहुति दी जाती है। कहीं-कहीं तो पूरे ही ११+२८ मन्त्रों से भी। महर्षि के अन्त्येष्टि के बाद वाले यज्ञ में ही आहुति इन दोनों से देना विनियुक्त किया है। अतएव महर्षि आदेशानुसार इन दोनों का ही केवल पाठ होना चाहिए, आहुति नहीं।

श्री ओ१म् प्रेमी जी का प्रश्न स्वाभाविक है–यह शंका तर्क का विषय नहीं है। कर्मकाण्ड अपने आचार्य के निर्देशों की सीमा में ही करने चाहिए। मेरे विचार निम्नप्रकार हैं–

१–ऋषि दयानन्द हमें कर्मकाण्ड से प्रेरक युग से हटा कर कर्म-प्रेरक युग में ले जाना चाहते थे।

२–परम्परा से आये हुए कर्मकाण्डों के जंजाल से उन्होंने हमें मुक्त करके आर्य बन्धुओं के निमित्त उन्होंने हमें दो ही ग्रन्थ दिए–पंच यज्ञ महाविधि और संस्कार विधि। आर्य बन्धुओं को चाहिए कि अपने लिए इन दोनों में निर्दिष्ट सीमाओं को स्वीकार करें। संस्कार विधि केवल सोलह संस्कारों से सम्बन्ध रखने वाले कर्मकाण्ड का ग्रन्थ है (गृहस्थाश्रम के कतिपय कृत्यों को छोड़ कर)। इसका सामान्य प्रकरण केवल संस्कारों के लिए है।

ईश्वर स्तुति–प्रार्थना, स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण ये भी एक प्रकार से सामान्य प्रकरण के अंग हैं, (सब संस्कार विधि के अन्तर्गत हैं) और आगे चलकर ऋषि ने स्वयं संकेत किए हैं, कि कौन से मन्त्र कब और किस अवसर पर पढ़ने चाहिए।

३–पंचयज्ञ महाविधि में ईश्वर-स्तुति के ८ मन्त्र और स्वस्तिवाचन शान्तिकरण के मन्त्र भी नहीं हैं।

४–अतः स्पष्ट है, कि स्वस्तिवाचन–शान्तिकरण के मंत्रों का पाठ ही ऋषि के अभिप्राय के अनुकूल है। केवल पाठ करना चाहिए–आहुतियां नहीं देनी चाहिए।

५–अन्त्येष्टि के बाद स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्रों से आवश्यक आहुतियां देनी चाहिए। (केवल अन्त्येष्टि के बाद, अन्य संस्कारों में नहीं) इसमें कोई तर्क नहीं–ऋषि का विधान स्वीकार करना चाहिए।

६–आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में केवल देवयज्ञ करें। देवयज्ञ और संस्कारों के लिए किए जाने वाले यज्ञों का मिश्रण नहीं किया जाना चाहिए।

७–दैनिक देवयज्ञ के हवन सामग्री डालने वाले प्रातः सायं के मन्त्रों को संस्कारों को कराते समय नहीं पढ़ना चाहिए। (संस्कारों में हवन सामग्री वाले प्रतिदिन के मन्त्र हैं ही नहीं)

८–समस्त कर्मकाण्ड में जहां भी शंका उठे–पंचयज्ञ महाविधि और संस्कार विधि को अकाट्य प्रामाणिक ग्रन्थ मानना चाहिए। "आचार्य, ब्रह्मा या तथा-कथित पुरोहित को अपनी ओर से नये विस्तार नहीं देने चाहिए"।

९–मेरा एक कटु अनुभव दार–एस–सलाम (पूर्वी अफ्रीका के तंजानियां की राजधानी) में हुआ। १९७१ की बात है। एक सज्जन ने मुझसे पूछा–स्वामी जी हम कब स्वस्तिवाचन मन्त्रों का पाठ करें और कब शान्तिकरण के मन्त्रों का पाठ करें (या उन मन्त्रों से आहुति दें)। मुझे इस प्रकार का कोई अनुभव उत्तर प्रदेश में नहीं हुआ था। बाद में मुझे पता चला कि पंजाबी भाइयों में मृत्यु के कई दिन बाद तक किये जाने वाले यज्ञ की प्रथा चली है, जिसे वे शान्ति यज्ञ कहते हैं, और इस यज्ञ में वे शान्ति करण के मन्त्रों से आहुतियां देते हैं (स्वस्तिवाचन मन्त्रों की नहीं)। अभिप्राय यह है कि जहां भी शान्ति करण के मन्त्रों का उच्चारण सुने–समझ जावें, कि अवश्य इस घर में कोई परलोकगत हो गया है।

इस प्रकार के दूषित विनियोगों से हमें बचना चाहिए।

★

उपदेशक सम्मेलन

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त वैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों, प्रचारकों की एक बैठक उपदेशक विभाग के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के संयोजक श्री हरिश्चन्द्र आर्य के सभापतित्व में दिनांक २० तथा २१ जुलाई ८८ को सभा भवन, लखनऊ में सम्पन्न हुई। समस्त आगन्तुकों ने प्रदेश में प्रचार की गति को तीव्रतर बनाने हेतु अपने-२ सुझाव प्रस्तुत किए। विचार विमर्श के उपरान्त निम्न निर्णय लिये गये हैं–

१–सभी उपदेशक / प्रचारक मिलकर सित० में अपने-२ जिलों में आर्य उत्सव करायेंगे।

२–सभी उपदेशक। प्रचारक मिलकर आर्यमित्र के अधिक से अधिक ग्राहक बनायेंगे।

३–प्रत्येक महोपदेशक। उपदेशक। प्रचारक प्रचार कार्यक्रम की रिपोर्ट नियमित रूप से कार्यालय को भेजा करेगा।

४–वर्ष में एक बार सभा भवन लखनऊ में समस्त उपदेशकों। प्रचारकों की बैठक अवश्य हुआ करेगी।

५–समस्त उपदेशक। प्रचारक सभाओं की स्थापना एवं आर्य वीर दलों को शिविर लगाने हेतु प्रेरणा एवं सहयोग देंगे।

सम्मेलन को सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी चौ० माडलसिंह जी डा० विनय प्रताप उप मन्त्री ने अपने २ आमूल विचारों से सम्बोधित किया।

हरिश्चन्द्र आर्य
संयोजक

विद्वद्वरेण्य पू० आचार्य रामानन्द जी शास्त्री

(डा० सावित्री देवी शर्मा १० केलाबाग 'सावित्री सदन'
बरेली उत्तर प्रदेश)

मई १९८८ ई० के आर्य संकल्प प्रकाशन के प्रथम पृष्ठ पर ही "अनभ्र वज्रपात" शीर्षक के माध्यम से पू० बाबा जी (आदरणीय रामानन्द जी शास्त्री) के दुःखद महाप्रयाण की सूचना पाकर मर्मान्तक पीड़ा हुई। मेरे प्रति वात्सल्यपूर्ण हृदय वाले पू० बाबा जी अपुनर्दर्शनाय विवङ्गत हो चुके हैं यह सुनना भी हृदय को असह्य प्रतीत हुआ। सर्व-प्रथम छपरा बिहार में निवास करते हुये मुझे आर्य समाज बलिया के वार्षिकोत्सव का निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। मेरा परम सौभाग्य था कि उस अवसर पर पू० आचार्य जी का भी शुभागमन बलिया में हुआ पितृ तुल्य बाबा जी के सुपावन दर्शन तथा सारगर्भित वैदिक सन्देश सुनकर मैं कृतकृत्य हो गई। उन्हीं की अध्यक्षतामें कुछ मेरा भी संक्षिप्त व्याख्यान हुआ जिसे सुनकर मेरे उत्साहवर्धन हेतु उन्होंने मुझे अपनी पुत्री मानते हुए हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान किये। ऐसे शुभा कांक्षी पितृहृदय को पाकर मैं अत्यधिक प्रभावित हुई। यह था उनके प्रथम शुभ दर्शन का परिणाम जिससे मैं उनकी पुत्री तथा वे मेरे पूज्य बाबा जी बन गये। आज तक उनका वरद हस्त मुझे संबल प्रदान करता रहा। स्वरचित अनेक पुस्तकें भी मुझे मिलने पर सस्नेह समर्पित करते रहे।

हमारे बरेली नगर की जनता भी उनके विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से कई बार लाभान्वित हो चुकी है। उनकी जन्मस्थली बिहार प्रांत के अनेक स्थानों पर तो उनके प्रायः ओजस्वी भाषणों से श्रद्धालु आर्यजन कृतार्थ होते रहे हैं। ऐतिहासिक सुर के साथ उनकी धाराप्रवाहमयी वाग्मिता से श्रोतृजन मन्त्रमुग्धसे होकर मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे।

संस्कृत वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान-शास्त्रार्थ महारथी आचार्य प्रवर भारतीय संस्कृति के प्राण थे। सांस्कृतिक गम्भीर चिन्तन मनन ही आपके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। अपूर्व तर्क शक्तिके प्राबल्य से धर्म के नाम पर व्याप्त रूढ़ियों का खंडन करना अपना परम कर्तव्य समझते थे। अनेक शास्त्रार्थों में भाग लेकर अपनी विलक्षण वाक्पटुता एवं वैदुष्यपूर्ण प्रतिभा से वैदिक सिद्धान्तों का मंडन तथा विपक्ष मत खंडन कर आर्य संस्कृति की विजय पताका फहराते रहे हैं।

लोकैषणा से मुक्त, अपरिग्रही योगी के समान आपका आदर्श सात्त्विक जीवन वर्तमान युग में फैली भौतिकता से कोसों दूर था। सिद्धान्त मर्मज्ञ आचार्य जी ने बिहार प्रान्त के चम्पारण्य के अन्तर्गत बलथरी ग्राम को अपने पुण्य जन्म से महिमा मण्डित किया जहाँ कभी राष्ट्रीयता और महात्मा गांधी के सत्य-अहिंसामय कर्म सन्देश गूंजे थे, तपोनिधि ऋषिवर वाल्मीकि की चरण रज से जहाँ का कण कण पुलकित हो उठा था, स्वाभिमानी चाणक्य जैसे सफल राजनीतिज्ञ की सुविचरित राजनीति का जहाँ क्रियान्वयन हो सका। ऐसी वीर प्रस-विनी मातृभूमि की रत्नकुक्षि से प्रकट होकर साक्षात् सरस्वती के वरद पुत्र पू० शास्त्री जी ने स्वकीय कुल, स्नेहमयी जननी तथा स्वदेश को अपनी चिरन्तन तपोमयी साधना से कृतार्थ कर दिया।

उच्चकोटि के व्याख्याता होने के साथ साथ श्रद्धेय आचार्य जी साहित्य के समालोचक विद्वान लेखक भी थे सामयिक विषयों पर अनेक छोटी बड़ी पुस्तकें लिख कर जनमानस में छाये हुए अन्धविश्वासों का समूलोच्छेदन करते रहे। "श्री सत्यदेव व्रत कथा" आपकी पाण्डित्य पूर्ण पुस्तक है जिसका पूर्व लिखित सत्यनारायण कथा के स्थान पर लोक व्यवहार में प्रचलन बिहार के अनेक क्षेत्रों में आपके सामने ही होने लगा था। उनकी लेखन शैली में प्रयुक्त कोमल कान्त पदावली तथा भाषा गत माधुर्य और प्रसाद गुण का ही यह परिणाम था।

प्रभु का विधान सुनियोजित है किन्तु अल्पज्ञ जीव के लिये तो दुर्ज्ञेय ही है। विगत दो मास पूर्व ही तो माननीय पंडित जी का आर्य समाज बेतिया बिहार के श्रद्धालु भक्त आर्य बन्धुओं द्वारा सादर सोल्लास अभिनन्दन समारोह सम्पन्न किया गया था जिसमें विशिष्ट काव्य रचनाओं एवं विद्वानों के ओजस्वी भाषणों द्वारा उन्हें आर्य संस्कृति का पुरोधा, वैदिक धर्म के सुविख्यात सन्देश वाहक, विद्वत्ता एवं वाग्मिता के जाज्वल्यमान नक्षत्र बताकर उनकी दिग्दिगन्त व्या-पिनी कीर्ति कौमुदी का विस्तार किया गया था। आज वह अमर आलोक स्तम्भ हमारे बीच स्थूल शरीर से अदृश्य अलक्ष्य सा होता हुआ प्रतीत हो रहा है किन्तु अनन्त काल तक उनकी सद्भावपूर्ण आन्तरिक प्रेरणायें वियोगाकुल परिवार तथा शोक सन्तप्त आर्य जगत् का मार्ग दर्शन करती रहेंगी यह ध्रुव सत्य है।

पूज्य बाबा जी के चरण कमलों में मेरी सादर श्रद्धाञ्जलि सहित प्रणति राशि समर्पित है। परमपिता से यही प्रार्थना है कि दिवङ्गत पुण्यात्मा को सद्गति तथा विरहाकुल पारिवारिक स्वजनों को यह असह्य वेदना सहने की शक्ति प्रदान करें।

तपःस्वाध्याय निरतो नियतात्मा दृढव्रत : ।
सहृदय : शुभाकांक्षी सर्वभूतहिते रत : ॥
प्राज्ञ : शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञो वेदवेदाङ्गपारग : ॥
रामानन्दाभिधाचार्यो लोके विजयतेतराम ॥
नमोऽस्त्वाचार्यवर्याय पितृतुल्याय शास्त्रिणे ।
देवेशकृपया दिव्यं प्राप्नुयात परमं पदम् ॥
"कीर्तिर्यस्य स जीवति"

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियों के लिये ३१ अगस्त १९८८ तक प्रवेश खुला है। भोजन, दूध, पुस्तकें, छात्रावास व मनोरंजन की सर्वथा निःशुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाईपिंग तथा संगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी उत्तीर्ण छात्रों को शास्त्री कक्षा में सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित हैं, प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करें।

नरेश कुमार शास्त्री एम० ए० आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर (जिला जालन्धर)

शोक प्रस्ताव

दिनांक १०-७-८८ को एक शोक सभा श्री डा० गिरधारी लाल शर्मा (प्रधान) की अध्यक्षता में आर्य समाज गोला के उपप्रधान श्री हेराशाह मसीन के ज्येष्ठ भ्राता श्री बेठूसाह मसीन के आकस्मिक निधन पर सम्पन्न हुई।

जिसमें दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि दिवंगत आत्मा को शांति दे तथा शोक संतप्त परिवार जनों को इस महान दुःख के सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

घासरोटी दिवस (१५ अगस्त)

–स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी

भारत देश दासता की बेड़ी से छूटकर १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रता की नींव मे वीर–वीरो का तप है। भारत–रक्षा हेतु देश भक्तों ने कष्ट सहते हुए घास की रोटी भी खाई! भारत के वीर सैनिक यदा–कदा घास–पत्ते भी खाकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं।

भारतोदय से विश्व–सुख–शान्ति मे समृद्धि होगी। स्वतन्त्रता–दिवस (१५ अगस्त) भारत का राष्ट्रीय–पर्व है। हम हर पर्व पर स्वादिष्ट आहार लेते हैं। आइये, हर १५ अगस्त को एक छोटी घास रोटी या घासपत्ती अपने मध्याह्न–भोजन मे सम्मिलित करें।

जो नागरिक उक्त व्रत का पालन करना चाहें, वे कृपया एक पोस्ट कार्ड पर अपने नाम पता सहित—

"मैं भारत की एकता–अखण्डता–सम्पन्नता हेतु हर स्वतन्त्रता दिवस (१५ अगस्त) को अपने मध्याह्न–भोजन में एक छोटी घास रोटी या घासपत्ती सम्मिलित करने का व्रत लेता / लेती हूं।' लिखकर निम्न पते पर भेजें–

—स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी
आर्यसमाज–पिथौरागढ़ (उ० प्र०)

वैदिक विवाह

दिनांक २०–७–८८ को श्री पाटन (गोण्डा) में वैदिक विवाह संस्कार मेरे पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। रामूदेवी मातृ से हीन थी इस लड़की पर मुस्लिम गुण्डों की दृष्टि लगी हुई थी किन्तु हिन्दू नवयुवकों ने मुस्लिम गुण्डों की योजना को विफल करके इस अनाथ लड़की का हिन्दू नवयुवक रघुनाथ से वैदिक विवाह संस्कार कराया। बाजार के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री राधेश्याम जी, नवयुवक श्रीराम जी तथा कृष्ण कुमार तथा उनकी धर्मपत्नी ने पिता तथा मातृपद का स्थान ग्रहण करके सम्पूर्ण कार्य किया। सहस्रों अश्रुपूरित नेत्रों से लड़की को विदा किया गया।

—सर्वाराम लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्यरत्न
ग्राम–पो० सौकैहवा आर्यसमाज (गोण्डा)

–दिनांक २९–६–८८ को विमलादेवी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार पाली हरदोई में पं० आर्येन्द्रचन्द्र वेदाचार्य गुरुकुल महाविद्यालय ततपुर तिलहर के पौरोहित्य में शाहाबाद निवासी चन्द्र प्रकाश गुप्त के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

–श्री जटाशंकर दूबे पुत्र श्री गदाधर दूबे ग्राम बीपही जि० गोरखपुर का शुभ-विवाह दिनांक ६ जुलाई को सायंकाल कु० मीरादेवी पुत्री श्री जयदेव दूबे मो० ग्राम–रेवाड़ी जि० रीवां के साथ श्री सूर्यदेव शर्मा ने सम्पन्न कराया जिसमे वर–वधू पक्ष के अधिकांश लोग उपस्थित होकर वर–वधू को आशीर्वाद दिया। शादी आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुई, श्रीमती सन्तोषकुमारी कपूर ने आशीर्वाद दिया।

दयानन्द बाल मन्दिर पिथौरागढ़ में–

पं० लालताप्रसाद–शान्ति यज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज (दयानन्द बाल) मन्दिर में कुराण मर्मज्ञ शास्त्रार्थ महारथी पं० लालताप्रसाद जी (निधन–१९ जून ८८) की दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। १९०१ ई० में जन्मे पं० लालताप्रसाद जी भौतिक शास्त्र विभाग डी० ए० वी० कालेज कानपुर में सेवा करते हुये दैनिक स्वाध्याय के साथ सदैव समाज कल्याण हेतु शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहते थे। स्व० पं० विद्याधर जी कानपुर उनके शास्त्रार्थ विद्या से बहुत प्रभावित थे। उनकी डायरी शास्त्रार्थ हेतु प्रमाणों से भरी होती थी। मुझे भी उनकी बहुत-सी बातें नोट करने का अवसर मिला।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

छात्रवृत्तियां

श्री कबीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से चालू सत्र के लिये गुरुकुलों स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयो के सुयोग्य और सुपात्र विद्यार्थिनियों को छात्र–वृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है। इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुकों को चाहिये कि ट्रस्ट से नियत आवेदन फार्म को मंगवा कर शीघ्र ही भर कर निम्नलिखित को भेज दें।

सत्यदेव भारती सचिव
श्री कबीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, सी-३२, अमर कालोनी,
नई दिल्ली–११००२४

राष्ट्रकवि पं० सोहनलाल द्विवेदी के साथी—

श्री बाबूलाल आर्य दिवंगत !

आर्यसमाज एवं दयानन्द इन्टर कालेज, बिन्दकी (फतेहपुर) के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री बाबूलालजी आर्य का ७६वर्ष की आयु में १६ जून १९८८ को देहान्त हो गया। उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु १२ जुलाई १९८८ को दयानन्द बाल मन्दिर–पिथौरागढ़ में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह जुलाई १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे दिये हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

५११, ६२९, ६६९, ७४८, ७४९, ९७६, १२६९, १३४८, १६५६, १६६९, ५२७७, ५६३२, ६४६२, ६९८४, ८२९८, ८८८७, ८९७३, ८९७५, १०१८३, १०१४५, ११६५२, ११९४७, १२२६७, १२९३०, १२९३८, १२९४१, १२९४३, १३१३३, १३११९, १३१७०, १३४८८, १३४९६, १३५००, १३५११, १३९१५, १३९२६, १३९४७, १४३००, १४३०१, १४३०२, १४३०३, १४३०४, १४३०५, १४३०६, १४३०७, १४३०८, १४३१०, १४३११, १४३१२, १४३१४, १४३१४, १४३१५, १४३१६, १४३१७, १४३१८, १४३१९, १४३२०, १४३२१, १४३२२, १४३२३।

विनीत–
व्यवस्थापक

वैदिक क्रान्ति परिषद का गठन

देहरादून—समाज में फैली वैमनस्यता कटुता एवं साम्प्रदायिकता को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की सुरक्षा हेतु नवीन समाज की रचना करना आवश्यक है। युवा पीढ़ी में राष्ट्रबोध, नैतिकता एवं सौमनस्य की भावना उत्पन्न कर ही यह कार्य सम्भव है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वैदिक क्रांति परिषद का गठन किया गया है। यह विचार है प्रसिद्ध समाजिक कार्यकर्त्ता, लेखक, विचारक एवं प्रखर राष्ट्रवादी प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन के, जिनकी अध्यक्षता में आज वैदिक क्रांति परिषद नामक संगठन की स्थापना की गई है। परिषद के उद्देश्यों में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार, अन्तर्जातीय, बिना दहेज विवाहों का आयोजन, साहित्य प्रकाशन आदि को प्रमुखता दी गई है। परिषद का कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण भारत है।

परिषद की कार्यकारिणी में डा० आनन्द सुमन अध्यक्ष, श्री ब्रह्म स्वरूप खुराना, उपाध्यक्ष, श्री राम रतपाल शर्मा, मन्त्री, श्री रामपाल सिंह रोहिला उपमन्त्री, श्रीमती सरस्वती सिंह कोषाध्यक्ष, श्रीमती आशा शर्मा प्रकाशन सचिव, एवं श्री डा० नरदेव शर्मा प्रचार सचिव मनोनीत किए गए हैं।

परिषद शीघ्र ही देहरादून नगर से क्रांति चेतना मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ करेगी एवं रामायण टी० वी० धारावाहिक के प्रमुख कलाकारों का सम्मान समारोह आयोजित करेगी।

प्रचार सचिव

निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ का वार्षिक निर्वाचन दि० १७/७/८८ को श्री माधवसिंह जी प्रधान की अध्यक्षता में आ० स० दयानन्द पथ नगर में सर्व सम्मति से निम्नलिखित प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान श्री माधव सिंह जी
उपप्रधान श्रीमती शकुन्तला जी गोयल
मन्त्री श्री पं० इन्द्रराज जी
उपमन्त्री श्री ब्रह्मसिंह जी
कोषा० श्री ओमप्रकाश जी

आर्य समाज आयुध निर्माणी पूर्वी क्षेत्र, मुरादनगर जिला गाजियाबाद का वार्षिक निर्वाचन।

प्रधान श्री माया प्रकाश
मन्त्री श्री बृजेश कुमार
कोषा० श्री हरिनन्दन

आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद)
प्रधान श्री श्याम चन्द्र जी
मन्त्री श्री नित्य मूर्ति जी
कोषा० श्री अनिल कुमार जी

आर्य समाज सिरसी (मुरादाबाद)
प्रधान श्री ब्रह्मानन्द जी
मन्त्री श्री आदित्य वीर जी
कोषा० श्री राजेन्द्रपाल जी

हम माँगें दाता तुमसे

देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर, लखनऊ

हम माँगें दाता तुमसे तुम हमको बुद्धि विमल दो।
हम माँगें दाता तुमसे तुम अन्तस् निर्मल कर दो॥

हम अज्ञानी अभिमानी बनकर जीवन व्यर्थ गंवाते।
अहंकार के वशीभूत हो द्वेष घृणा फैलाते॥

हम पर हावी हुयी ईर्ष्या छली बना है मेरा मन।
जलन, कुढ़न से तड़प, तड़प कर झुलस रहा है मेरा तन॥

हे ज्ञान प्रभा मुझको दिनेश 'अन्तरतम आलोकित कर दो।
अहंकार को नष्ट करो प्रभु! विनम्रता से पूरित कर दो॥

सत्संग हमारा जीवन हो दुःसंग कभी ना आये।
हों पुनीत मनमन्दिर मेरा वासना कभी न सताये॥

हम माँगें भगवन् तुमसे तुम जीवन निर्मल कर दो।
हम माँगें भगवन् तुमसे तुम आत्म-ज्ञान विमल दो॥

आर्य समाज गंज स्टेशन मार्ग मुरादाबाद
प्रधान श्री राममोहन जी
मन्त्री श्री देवकीनन्दन जी
कोषा० श्री महाराज नरायन

आर्य समाज मंडीबांस मुरादाबाद
प्रधान श्री वेद प्रकाश जी
मन्त्री श्री अम्बरीश कुमार जी
कोषा० श्री राधेरमन जी

आर्य समाज ठाकुर द्वारा मुरादाबाद
प्रधान श्री वैद्य हरिराम जी
मन्त्री श्री छन्नूमल जी

आ० स० हसनपुर (मुरादाबाद)
प्रधान श्री सतीश प्रकाश जी
मन्त्री इन्द्रपाल जी
कोषा० श्री वैद्यनाथ जी

बाल जगत

यज्ञ और प्रदूषण

(श्री यतीन्द्र सिंह आर्य ग्राम मोहद्दीपुर पो० मन्डीधनौरा

जिला मुरादाबाद)

जो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त तथा जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान जो कि जगत के उपकार के लिए किया जाता है। उसको "यज्ञ" कहते हैं। महर्षि दयानन्द आज के युग में हमने जो औद्योगिक सभ्यता विकसित की है उसका दुष्परिणाम सामने आया है कि धरती के सब देशों के महानगरों में अब और साँस लेने के लिए स्वच्छ वायु सुलभ नहीं है जिसका मुख्य उदाहरण दिल्ली में हो रहा "हैजा और आंत्रशोथ रोग है।

हवन यज्ञ एक विज्ञान सम्मत कर्म है। इसका अपना आधार है। किन्तु दुःख है आज के वैज्ञानिक युग में भी लोग इसकी वैज्ञानिकता को न समझ कर इस पर मनमाने अवैज्ञानिक आक्षेप तथा निरर्थक शंकायें करने लग जाते हैं।

यज्ञ वैज्ञानिकता का आधार यह है कि हवन सामग्री के प्रत्येक पदार्थ में रोग निवारण की शक्ति होती है परन्तु प्रकट तभी होती है जब वह स्थूल से सूक्ष्म रूप धारण कर लेती है। स्थूल पदार्थ के पर-माणु जब सूक्ष्म रूप धारण करते हैं तभी उनके अन्दर की निहित शक्ति प्रकट हो पाती है यह अग्निहोत्र के अतिरिक्त और किसी प्रकार सम्भव नहीं है।

यदि हम आज की प्रदूषण समस्या को हल करना चाहते हैं। तो हमें दैनिक अग्निहोत्र करना चाहिए यदि हम दैनिक भी नहीं कर पाते हैं तो साप्ताहिक वृहद् यज्ञ तो अवश्य ही करना चाहिए। यज्ञ ही एक मात्र समाधान है। प्रदूषण समाप्त करने का :-

यज्ञ से मुख्य लाभ—तथा यज्ञ से शिक्षा :-

१- अग्नि में डाले हुए उत्तम पदार्थ स्वयं भस्म होते हैं परन्तु अपना सर्वस्व खोकर वे विश्व के हित में काम आते हैं। इसी प्रकार यज्ञ करने वाले को अपने मन में भावना उत्पन्न करना चाहिए।

२- आहुति डालने पर अग्नि की ज्वाला ऊपर ही ऊपर बढ़ती है। हवन इसी प्रकार का प्रबल जीवन धारण करने का संकेत है। आपत्तियों से घबराये बिना ऊपर उठने का यत्न करते रहो।

३-"इदम् न मम" यह संकेत करता है कि यज्ञ करते समय यह मेरा है इस ममत्व को परे फेंक दो। यह आपका कर्तव्य है।

४- जल तथा वायु की शुद्धि के कारण ये घर गली मोहल्ला और नगर की शुद्धि से आरोग्य प्राप्त होता है।

५- अन्न से प्राणी जीवित रहते हैं। वर्षा से अन्न की उत्पत्ति होती है। और यज्ञमय प्रभु के यज्ञ नियम से धरती पर वर्षा होती रहती है।

इकतालीस वर्ष बाद

*

शेष पृष्ठ ३ से आगे

दिलचस्पी हो जाती है। नेताओं के बयान और चित्र समाचार पत्रों में छप जाते हैं, गिरफ्तारियां होती हैं, सामूहिक अर्थदण्ड दिया जाता है, राहत कार्य होते हैं, पीड़ित सहायता के नाम पर धन संग्रह होता है और बस………। प्रश्न है कि अन्ततोगत्वा इस तथा अन्य समस्याओं के कुछ हल भी हैं, अथवा यह सब इसी प्रकार चलता रहेगा। नीति-विहीन भारत के राजनीतिक नेता दिशाहीन यान की भांति इधर, उधर हाथ मारते, भटकते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। न तो शासक और न विरोधी इस देश के रोग का समुचित निदान कर पाते हैं और न चिकित्सा हो पाती है। शासन पंगु बना रहता है। परमात्मा दया करे इस अभागे देश की दशा पर।

जब नाखुदाओं से होवे नाकामयाबी ;

तो याद खुदा आ ही जाती है।

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में-

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय में सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम भेजें रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न है तथा १५% कमीशन भी देय है।

	मूल्य
धर्म शिक्षा भाग १ …	१-५०
„ „ भाग २…	१-५५
„ „ भाग ३…	२-७०
„ „ भाग ४…	२-७५
„ „ भाग ५…	३-६०
„ „ भाग ६…	४-७५
„ „ भाग ७…	४-१६
„ „ भाग ८…	३-००
„ „ भाग ९…	४-००
„ „ भाग १०…	३-००
„ „ भाग ११…	४-००
„ „ भाग १२…	३-५०

व्यवस्थापक

प्रदेशीय विद्यार्य सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

[illegible] साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष [illegible] ४५९९१
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
श्रावण शुक्ल २
१४ अगस्त रविवार, १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

श्रीमती सन्तोष महाना की स्मृति में

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सहायक कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण-बलदेव महाना की धर्म परायण पत्नी श्रीमती सन्तोष महाना की स्मृति में दिनांक २८-७-८८ को सायं ३ १/२ बजे श्री महाना के निवास स्थान के भव्य प्रांगण में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आचार्य वेदव्रत शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें श्री महाना के सम्बन्धियों के अतिरिक्त दो हजार से ऊपर आर्य नर नारियों ने भाग लेकर श्रीमती महाना की स्मृति में अपने श्रद्धा सुमन भेंट किये। वेद मनीषी श्री हरिवंशलाल मेहता एवं वैद्य कृष्णलाल आर्य ने उपदेश किया। जिला सभा लखनऊ के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री सत्यदेव सैनी श्री हंसराज नन्दा प्रधान आर्य समाज श्रृंगार नगर हिन्दू एजूकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष श्री करमजीतसिंह के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी उत्तर प्रदेश नागरिक परिषद् की अध्यक्ष श्रीमती सन्तोष कपूर आर्यमित्र के प्रबन्धक श्री विश्वम्भर दयालु गुप्त आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक श्री इन्द्रदेव पाठक भी श्रद्धांजलि भेंट करने हेतु उपस्थित थे। यज्ञ एवं श्रद्धांजलि के पश्चात् श्री कृष्ण बलदेव महाना के पुत्रों ने अपनी माता की स्मृति में १५००) रु० का सात्विक दान निम्नलिखित संस्थाओं २५०) सार्वदेशिक सभा, २५०) आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० २५०) जिला सभा लखनऊ २५०) श्रीमद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ २००) आर्य समाज श्रृंगार नगर १०१) महात्मा प्रभु आश्रित धर्मार्थ आरोग्य सदन रोहतक १००) वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ के अतिरिक्त १००)-१००) लखनऊ की प्रत्येक आर्य समाजों को प्रदान किया।

श्रीमती सन्तोष महाना आर्य समाज के लिए समर्पित जीवन थी वे सरल हृदया मृदुभाषिणी स्वाध्यायशीला विनम्रता की प्रतिमूर्ति थीं। आप कठिन से कठिन परिस्थितियों का भी मुस्कराते हुये मुकाबला करती थीं। उन्होंने बड़े ही तप त्याग और साधनामय जीवन से अपने चारो ही पुत्रों एवं दोनों पुत्रियों का निर्माण किया। जिनके आदर्श जीवन आज के लिये अनुकरणीय है।

श्रीमती महाना देश के विभिन्न स्थानों में जहाँ कहीं भी जातीं अपने भजनों एवं प्रवचनों के माध्यम से आजन्म वैदिक धर्म का प्रचार करती रहीं। जाने से ४-५ दिन पूर्व ही मानो उन्हें पूर्वाभास होने लगा था क्योंकि वे उधर अपने पुत्रों, पुत्र वधुओं एवं अपने पति के प्रति सभी के कर्तव्यों का बोध कराते हुये सभी के अपने धर्मपालन के प्रति सन्तुष्टि प्रकट करती रहती थीं। मृत्यु के समय क्या अनुभूति होती है इसकी जिज्ञासा कई दिनों से वे पूज्य महाना जी से करती रहती थीं वे सामान्य रूप में आध्यात्मिक समाधान देते रहते थे। किसी को क्या पता था कि वे जाने की तैयारी कर रहीं हैं इसीलिये यह सब जिज्ञासा जागृत हो रही है।

आर्यमित्र के पाठक समय समय पर उनके आध्यात्मिक लेखों को पढ़ते रहते थे। उनकी लेखनी या वाणी से हम अब कुछ पढ़ या सुन तो न सकेंगे परन्तु उनका आदर्श जीवन प्रदत्त उपदेश छपे लेख हमें सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

प्रख्यात मनीषी डा० बाबूराम जी का निधन

आर्य समाज के समस्त विधि-विधानों से ओत-प्रोत डा० बाबूराम जी सक्सेना के देहावसान से सारा आर्य समाज हिन्दी जगत व शिक्षा जगत शोकाकुल है। इस प्रख्यात भाषाविद्, आर्य सैनिक का १३ जुलाई को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार रसूलाबाद घाट प्रयाग पर देवकी नन्दन जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

बाबू जी सन् १९३४ से ३९ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के प्रधान रहे, आर्य समाज कटरा से वे कई वर्षों से जुड़े रहे व अन्तिम समय तक आर्य समाज कटरा के सक्रिय सदस्यों में से थे, वे रायपुर विश्व-विद्यालय के कुलपति व प्रयाग विश्व-विद्यालय के कुलपति रहे, और अनेकानेक जन सेवी सभाओं से सम्बन्धित रहे, बाबू जी की कथनी व करनी में तादात्म्य देखने को मिलता था, वे जीवन भर आर्य समाज के प्रति समर्पित भावना से कार्य करते रहे। आ० प्र० नि० सभा कार्यालय उनके शोक में बन्द कर दिया गया। दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

जिला सभा जनपद गोण्डा की दिनांक २४-७-८८ की बैठक में धर्म रक्षा सम्मेलन किए जाने हेतु प्रस्ताव पारित

दिनांक २४-७-८८ को जिला सभा गोण्डा की बैठक स्थान-आर्य समाज जकोरगंज में श्री आनन्द उपमन्यु मन्त्री जिला सभा गोण्डा द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में निश्चय हुआ कि गोण्डा, बस्ती, बहराइच जनपदों में हो रहे धर्मान्तरण पर रोक लगाये जाने की दृष्टि से धर्म रक्षा सम्मेलन स्थान डी० ए० वी० इण्टर कालेज बलरामपुर में दिनांक १९, २०, २१ व २२-११-८८ को समारोह पूर्वक मनाया जाय। यह सम्मेलन जनपदीय स्तर पर मनाया जावेगा।

जिले की सभी आर्य समाजों से अनुरोध किया गया है कि इस सम्मेलन को सफल बनाने में अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान करें।

जिला सभा गोण्डा प्रान्तीय सभा से अनुरोध करती है कि इस सम्मेलन को वरीयता प्रदान कर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करे। इस बैठक की अध्यक्षता श्री बी० एस० मल्होत्रा अध्यक्ष जिला सभा गोण्डा एवम् सभा का संचालन श्री आनन्द उपमन्यु ने किया। अगली बैठक का आयोजन दिनांक २१-८-८८ समय १ बजे दिन प्रधान आर्य समाज गोण्डा के अनुरोध पर आर्य समाज गोण्डा सदर में रखा गया।

बलराम गोविन्द [illegible]
[illegible] एवं भू-सम्पत्ति विभाग

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से एम०पी० प्रिण्टर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयालु गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स० ७।२८ २ ८४

श्रावण शुक्ल ८, रविवार, सवत् २०४५ वि०, दिनाक २१ अगस्त १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

श्रावणी-अंक

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक—

कृष्णदेव पाठक एम०ए०
साहित्याचार्य

राजर्षि रणञ्जयसिंह जू देव दिवंगत !

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व प्रधान एवं अनेकों धार्मिक सामाजिक [illegible] के प्रवर्तक सचालक एव प्रसिद्ध जनसेवी आर्य नेता राजर्षि रणञ्जयसिंह जू देव का [illegible] जिला सुलतानपुर में दिनाक ४ अगस्त को रात्रि मे हृदयगात रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। [illegible] आर्यसमाज के प्राण थे। उनका सम्पूर्ण जीवन [illegible] के लिए समर्पित रहा। वे [illegible] इस वृद्धावस्था मे भी जनहित के कार्यों मे मग्न रहते थे। मृत्यु से ४ दिन पूर्व ही [illegible] उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के माननीय मन्त्री, श्री मनमोहन तिवारी से अपनी [illegible] आर्यसमाज के उत्थान मे अपनी गहरी दिलचस्पी दिखाते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के [illegible] भविष्य के प्रति अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त की थी। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ किया गया। उनकी अस्थियां [illegible] के पवित्र सगम मे उनके पुत्र युवराज डा० [illegible] द्वारा दिनांक [illegible] अगस्त ८८ को [illegible] तथा उनका अस्थिकलश हरिद्वार जाते समय दिनाक ८-८-८८ को कुछ समय के लिए [illegible] स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा भवन के हाल मे दर्शनार्थ रखा गया।

इस अवसर पर सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन को आर्यसमाज की [illegible] क्षति बताते हुए अश्रुपूरित नेत्रों से उस दिव्य आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। [illegible] के प्र० सम्पादक श्री कृष्णदेव पाठक श्री शिवप्रसन्नयालु [illegible] श्री [illegible] श्री [illegible] श्री भुवनपालसिंह अटन मुख्य निरीक्षक सभा, श्री ब्रजरामगोविन्द आदि अनेकों [illegible] को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

★ ★ ★

सभा प्रधान श्री प० [illegible] राम जी ने मेरठ से प्रेषित अपने शोक सन्देश मे राजर्षि को इस [illegible] महान समाजसेवी जननेता, धर्मधुरीण, आर्यसमाज का अनन्य [illegible] एवं अतिशय [illegible] को [illegible] विचारक बताते हुए कहा कि वे आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उनका [illegible] ऋषि के आदर्शों का ज्वलन्त मूर्तिमान था। उनके अवसान से ऋषि के सच्चे भक्तों [illegible] का हो गया है। वे कृतित्व और व्यक्तित्व दोनों मे महान थे। आर्यसमाज के [illegible] प्रारम्भिक काल से ही प्राणपण से समर्पित रहे। हमारी आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० को [illegible] अधिष्ठान एवं निर्देशन मे कई वर्षों तक काम करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। अन्तिम समय तक उनके हृदय में राष्ट्र और समाज के लिए शुभचिन्ता बनी रही। करुणा, ममता और [illegible] इस प्रतिमूर्ति के अवसान से निःसन्देह आर्यजगत की महान क्षति हुई है। मैं उस महान राजर्षि, [illegible] ऋषि के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी॥
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—श्रावण शुक्ल ८ संवत् २०४५, रविवार २१ अगस्त १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

यद् वेदेष्वभिहितं तत्सत्यम्—

वेद का प्रचार

मानव जाति में जितने भी लोग आस्तिक या ईश्वर विश्वासी कहे जाते हैं वह सभी विश्वसृष्टा, विश्वपालक, विश्वसंहारक महान सामर्थ्य शील ब्रह्मत्व में विश्वास रखते हैं। वैदिक वाङ्मय में वाक् की महिमा उसीप्रकार अनन्त और असीम है जैसे ब्रह्म। इस अनन्त वाक्शक्ति का स्वामी होने के कारण वह वाक्पति अर्थात् वाचस्पति है। विश्व नियन्ता की इस प्रेरकशक्ति की अनुकूलता प्राप्त किये बिना प्राणिवर्ग का कल्याण असम्भव है। यह सृष्टिरचना अपूर्ण ही रहती यदि परम शक्ति अपनी परम अनुकम्पा से अपनी पवित्र वेदवाणी द्वारा पुरुष को ज्ञानदान न देती। सर्वतोमुखी कल्याणाभिप्ररित इस पवित्रतम वाणी के प्रचार का समय हम आर्यों के समक्ष पुनः उपस्थित है। हम अपने प्रदेश में, समस्त विश्व में 'वेद प्रचार सप्ताह' बड़ी धूमधाम से मना रहे हैं। यह हमारा पवित्रतम पर्व है। हमारा विश्वास है—'यद् वेदेष्वभिहित तत्सत्यम्' सत्य वही है जिसका वेदों में प्रतिपादन है। सृष्टि के आदिकाल से लेकर महाभारतकाल पर्यन्त हमारी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, विश्व बन्धुत्व, भौतिक समृद्धि, आध्यात्मिक उन्नति, मानवकल्याण, दयाशीलता, आदि सभी का आधार वेद था। इसका प्रमाण यह है कि आर्यों का चाहे वैयक्तिक जीवन हो चाहे सामाजिक जीवन हो चाहे आध्यात्मिक या अन्तर्राष्ट्रीय जीवन हो सभी पर वेदों की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वेदों में दिया हुआ ज्ञान किसी पुरुष या महापुरुष का दिया हुआ ज्ञान नहीं है वह अपौरुषेय है—यह हमारे ऋषिवर्य दयानन्द का मन्तव्य तो है ही, ऋषि दयानन्द से पूर्व के अनेकों ऋषियों और महर्षियों ने इस तथ्य को अपने ज्ञान और बोध से स्वीकार किया है। यह हम आर्यों की अनुपम सम्पत्ति है। जब तक इस अनुपम सम्पत्ति का साम्राज्य रहा, संसार स्वर्गधाम बना रहा। ऐसी स्वर्गीय सम्पदा, मुनिजनसेविता, कलकण्ठकूजिता, पुण्यप्रवाहिनी, अमरपदप्रदायिनी वाणी के प्रचार और प्रसार का समय फिर उपस्थित है—हम आर्यों को इससे पुण्यतम अवसर और कब मिलेगा।

देखो! मोहम्मद के मरने के तीस वर्ष के अन्दर ही इस्लाम अरब और एशिया माइनर को पार करता हुआ योरोप के किवाड़ों से टकरा गया था। प्रचार की शीघ्रता में इस्लाम अपनी उपमा नहीं रखता है। इसके कुछ भी कारण रहे हों पर उनकी मजहबी दीवानगी (धार्मिक आस्था) जगप्रसिद्ध है। इस आस्था का हमारे अन्दर क्यों अभाव है जबकि हम सत्य पथ के अनुगामी हैं। केवल विश्वास की कमी है। महाभारत काल के पश्चात् मध्ययुग की अज्ञान भरी निबिड़ तमिस्रा में ५००० वर्ष तक डूबे रहने के कारण हमारी आस्था और हमारे विश्वास में कमी आ गई है। सब रास्ते वहीं पहुंचाते हैं—की दुष्प्रचारित भावना ने हमें अपनी श्रेष्ठता के प्रति शंकालु बना दिया है। इसीलिये तो ऋषिवर्य ने अपनी हुंकार से हमें जगाया था और—'वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना—सुनाना हमारा परम धर्म' बताया था। आज हमें परमधर्म का पालन करना है। इसी के लिए जीना और इसी के लिए मरना है। श्वास—श्वास में वेद की ध्वनि गूंजने लगे घर-घर में वरदायिनी वेदमाता की प्रतिष्ठापना हो—तभी हमारा परमधर्म पूर्ण होगा और तभी हम सच्चे आर्य कहलाने के अधिकारी होंगे। ऋषि दयानन्द का यही स्वप्न था—वेद का प्रचार, वेद का प्रचार। वे कहा करते थे मूल को सींचो वृक्ष स्वयमेव हरा भरा हो जायेगा—फूलने फलने लगेगा संसार से कुविचार, अविवेक, पाखण्ड स्वयं नष्ट हो जायेंगे। धरा पर स्वर्ग उतर आयेगा। आर्यसमाज का अन्तिम लक्ष्य भी 'वेद प्रचार' ही है। हमारी सभा ने परिपत्र भेजकर इस पर्व को बड़ी ही धूमधाम और आकर्षक रूप में मनाने का प्रदेश की आर्यजनता से आग्रह किया है। हम आशा करते हैं—हमारा वेद प्रचार पर्व पूर्ण सफल होगा। पूर्ण सफल होगा।

★★★★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरङ्ग सभा दि० १४-८-८८ के सर्वसम्मत निश्चयानुसार सभा का आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन (निर्वाचन) नवम्बर ८८ में डी०ए०वी०कालेज लखनऊ के प्राङ्गण में सम्पन्न होना निश्चित किया गया है।

जिसका विस्तृत कार्यक्रम आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

श्रीमान् आर्य रणञ्जयो विजयते

(डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री महोपदेशक, बी-२९ आनन्दनगर, रायबरेली

योऽभूद् आर्यप्रतिनिधिसभायाः पुरोऽध्यक्षतासु,
यस्याऽऽध्यक्ष्यम् अतिशयगणाद् आयसम्मेलनेषु।
आर्येभ्यो योऽसनुत बहुधा जीवनं स्वप्रभावम्,
धीरार्यविः सुरपदमगात् लोकमेन स स्वयन्त्व।।१।

यस्यार्येषु रतिरथ सत्यनियमैः शिष्टः सदा जीवने,
सत्यैर्वैदिकधर्मपुण्यकिरणैः विश्वं समुद्भासितम्।
काव्यानां प्रगतिश्च राजभवने नित्यं बुधास्तर्पिताः,
श्रीमान् आर्यरणञ्जयो विजयते धर्मप्रभासितः।२।

बहुजन सुभभावान् हार्दिकान् धारयन्तः,
मनसि वचसि काये सभ्यता भूषयन्तः।
श्रुतिपथमतिक्रम्य सर्वदा व्यापयन्तः,
रणम् अतिरमणीयम्प्राप्तवन्तो विजित्य।३।

वारं वारं मनसि बहुधा दुःखमुत्पादित मे,
स्मारं स्मारं मधु वचनं स्नेहसौहार्दसिक्तम्।
दर्शं दर्शं भवति परितः शून्यमेवासत्यमेठी,
शोकाक्रान्तं हृदयमभवद् भारतेऽद्य समेषाम्। ४।

अध्यात्म सुधा

भगवान् के ज्ञान से मृत्यु भय का नाश

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी०,
आर्य समाज गोरखपुर)

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू-
रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्यो-
रात्मानं धीर-मजरं युवानम् ।

अ० १०।८।४४

कामना रहित, धीर, धृतिमान् सर्वज्ञ, अविनाशी सदा मुक्त (स्वयंभू) स्वयं भू, 'स्व सत्ता में पर-निरपेक्ष (रसेनतृप्त :) आनन्द से तृप्त (कुत : चन न ऊन :) कहीं से भी न्यून नहीं । (तम्) उस (एव) ही (धीर मजरम्) धीर अजर (युवानम्) सदा नूतन (आत्मानम्) सर्व व्यापक भगवान् को (विद्वान्) जानने वाला (मृत्यो : न) मौत से नहीं (बिभाय) डरता है ।

इस मन्त्र में भगवान् के ज्ञान से मृत्यु भय का नाश होता है यह बतलाया गया है । मृत्यु बड़ी विचित्र वस्तु है । इससे ज्ञानी और मूर्ख दोनों ही भयभीत होते हैं परन्तु मन्त्र कहता है कि जो अपना जीवन ईश्वर को अर्पण कर देते हैं, जो प्रत्येक कार्य को प्रभु का समझ कर करते हैं उन्हें मृत्यु या संसार का कोई भय सताता नहीं । योगदर्शन में मृत्यु भय को (अभिनिवेश) नाम दिया गया है । उसके विषय में वहाँ कहा गया है :-

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढोऽभिनिवेश : । यो० २/९

'अभिनिवेश' अपनी निराली चाल से चलता है जैसे यह मृत्यु मूर्ख पर सवार है, वैसे ही विद्वान् भी इसके चंगुल में हैं । यह भय बिना प्रभु की प्रार्थना के दूर नहीं हो सकता । यदि ईश्वर की प्रार्थना में थोड़ा समय लगाना लाभ कर है तो सोचिए सारा समय प्रभु के हेतु लगाना कितना लाभकर होगा ।

जीवन का इससे और क्या उपयोग हो सकता है कि उसका प्रत्येक क्षण प्रभु की सेवा में लगे । प्रत्येक कार्य, विचार और हमारा प्रत्येक शब्द उनकी सेवा के लिए हो । यदि आप जीवन में सुख, सफलता, अभय अवस्था और मृत्यु भय से बचना चाहते हैं तो प्रभु के गुणों का स्मरण कर उन्हें अपने में ढालने का प्रयत्न करें । मन्त्र कहता है— अकामो धीरो अमृत : " वह प्रभु कामना रहित है अतः धीर=चंचलता रहित और अमृत=मृत्यु बन्धन से रहित है । वह परमेश्वर स्वयं भू है । अपनी सत्ता में किसी दूसरे की अपेक्षा नहीं करता है । यदि आप जीवन में सफलता और आनन्द चाहते हैं तो उसके पास जाइए । वह प्रभु रस से भरपूर है । 'न कुतश्चनोन : ' वह किसी प्रकार से न्यून नहीं है । कामना के कारण रस में विघात पड़ता है । कामना कमी की द्योतक है । भगवान् में किसी प्रकार की ऊनता=न्यूनता=कमी नहीं है । उसको जानने और उपदिष्ट साधनों पर आचरण करने से मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है ।

इस बात में विश्वास करने कि परमेश्वर से हमारी एकता है है । हम और परमपिता एक हैं, हमें अपूर्व धर्य, आश्वासन और विश्वास प्राप्त होता है हमारा विश्वास हो जाता है कि हम आकस्मिक संयोगों और किस्मत के गुलाम नहीं हैं, हम उनका संचालन करने वाले हैं उनके स्वामी हैं । हम उस दिव्य शक्ति प्रभु से एकता का सम्बन्ध जोड़ेंगे, जितना हम परमपिता में तन्मय होंगे, उतना ही हमारा जीवन शान्तमय, आश्वस्त पूर्ण और अपार शक्ति युक्त होगा ।

जब मनुष्य यह जान जाएगा कि सर्व शक्तिमान् परमात्मा से उसकी एकता का सम्बन्ध है तब उसके सब भय, शंकायें नष्ट हो जायेंगी । जब हमारे मन को उस दिव्य शक्ति की थोड़ी सी झलक मिल जाती है, जब मनुष्य को यह मालूम हो सकता है कि उस अकाम, धीर रस से पूर्ण प्रभु से हमारी एकता है तब उसका भय समाप्त हो जाता है तब उस सर्व शक्तिमान् प्रभु से हमारा सम्पर्क है फिर मुझे किस बात का डर है ?

मनुष्य ईश्वर से जितना सम्बन्ध जोड़ेगा उतना ही वह अपनी आत्मा में जीवन, सत्य और सौन्दर्य के स्वरों का विकास करेगा । उसकी आत्मा नई शक्ति, नए साहस के संचार से हरी-भरी होकर खिल उठेगी । मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और भक्ति का विकास करेगा और इन सबके मूल और आधार परमेश्वर से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा । हम परमतत्त्व में जितना तन्मय होंगे उतना ही जीवन स्वास्थ्य का प्रवाह हमें प्राप्त होगा जिससे हमारी सब आधि-व्याधि समाप्त हो जाएगी । यह अनुभूति ईश्वर के साथ ज्ञान पूर्वक सम्बन्ध जोड़ना ही सब प्रकार की शक्ति का, स्वास्थ्य का, सुख समृद्धि का रहस्य है । यदि हम इस पूर्ण आनन्द भव के प्रवाह में अपने शारीरिक, मानसिक दिव्य सुख को ठीक तरह रख सकें तो यही मनुष्य के कल्याण का परम रहस्य है ।

अतः सफलता की—सुख की कामना करने वाले साधक को चाहिए कि वह मृत्युञ्जय बनने के लिए उस अविनाशी, अजर, अमर, सब एक रस बने रहने वाले भगवान् का ज्ञान प्राप्त करे भगवान् के ज्ञान से ही मनुष्य का सर्वाधिक कल्याण होता है ।

आइए, जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है कि उसका प्रत्येक क्षण प्रभु की सेवा में लगे । प्रत्येक कार्य, विचार और हमारा प्रत्येक शब्द प्रभु की सेवा के लिए हो । यही ईश्वर भक्ति और उसकी एकता है ।

शोक समाचार

दिनांक ४-७-८८ सोमवार को श्री शंकरसिंह, प्रधान आ० स० टांडा (मुरादाबाद) के पू० पिताजी धर्मसिंह जी, का देहान्त हो गया और उनकी १७ वीं २०-७-८८ ई० बुधवार को सम्पन्न हुई है ।

शंकर सिंह आर्य

समस्त आर्यसमाजों को निर्देश

श्री प्रधान एवं मन्त्री जी,

सप्रेम नमस्ते !

आप जानते हैं कि पिछले दिनों हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के विरुद्ध पुरानी रूढ़िवादिता और ऊंच-नीच के भेदभाव ने फिर सिर उठाना प्रारम्भ कर दिया है। आर्यसमाज के लिए यही समीचीन है कि हरिजनों को अपने समाज मन्दिरों में उचित सम्मान और स्थान दें। ताकि मूर्ति पूजकों द्वारा हिन्दू जाति को विघटित और कमजोर होने से बचाया जा सके।

सार्वदेशिक सभा ने आगामी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर ३ सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर समान अधिकार दिवस समारोह के आयोजन का निर्णय लिया है। आप अपनी आर्यसमाज में इस दिन अधिक से अधिक हरिजनों को आमन्त्रित करें। उन्हें यज्ञोपवीत देकर उनके साथ सामूहिक यज्ञों का आयोजन करें। क्षेत्र के सम्भ्रान्त महानुभावों को भी इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित किया जावे। गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वैदिक वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त पर सुयोग्य विद्वानों के प्रवचन तथा छुआछूत और ऊंचनीच के भेदभाव को मिटाने के लिए आर्यसमाज द्वारा अब तक किये गये कार्यक्रमों पर भी व्यापक प्रकाश डाला जावे। हो सके तो सहभोज की भी व्यवस्था करें।

कृपया अपने कार्यक्रम की सूचना समाचार पत्रों और इस सभा को भी भेजें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

५ अगस्त १९८८]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

आर्यसमाज बिजनौर का वार्षिकोत्सव

दिनांक ८ सितम्बर ८८ से ११ सितम्बर ८८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। ८ सितम्बर को नगरकीर्तन निकलेगा एवं ११-९-८८ को विशाल आर्य कवि सम्मेलन व जिला सभा का निर्वाचन होगा।

रामपुर आ०स० का वार्षिकोत्सव

दिनांक ११ सितम्बर से १३ सितम्बर तक मनाया जा रहा है। इन दोनों उत्सवों में आर्यजगत के प्रख्यात सन्यासी, उपदेशक, भजनीक सम्मिलित हो रहे हैं। १३ सितम्बर को भवन समिति हरिद्वार की बैठक आर्यसमाज मन्दिर हरिद्वार में होगी।

जयनारायण 'अरुण'

संयोजक / अधिष्ठाता

गुरुकुल प्रभाताश्रम में हरिजनों द्वारा भण्डारा

९-८-८८ को आश्रम के निकटवर्ती ग्राम टीकरी के निवासी श्री उदयराम हरिजन ने अपनी मध्यम लड़की के विवाहोपरान्त गुरुकुल प्रभाताश्रम में ब्रह्मचारियों को खीर का भण्डारा दिया। जिसमें श्री उदयराम के दोनों दामाद (जामाता) जो इस समय भारती [पुलिस] पद पर सेवारत हैं तथा पुत्र श्री राजपाल सपत्नीक पुत्रों सहित उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि भवन निर्माण में कार्यरत हरिजन श्रमिकों ने भी भण्डारे में भाग लिया। आश्रम में भण्डारा देकर हरिजन परिवार बहुत प्रसन्न था।

इन्द्रराज

मन्त्री—गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ

आ०स० बुढ़ानाद्वार मेरठ में वेद प्रचार

२१-८-८८ से २८-८-८८ तक प्रातः ७-३० बजे से पारिवारिक सत्संगों तथा रात्रि ८ से ८-३० बजे तक भक्ति संगीत, पुनः ८-३० से ९-३० बजे तक पं० सत्यानन्द जी वेदवागीश के वेद प्रवचन।

२१-८-८८ से २६-८-८८ तक मध्याह्नोत्तर ३ से ५ बजे तक स्त्री आर्यसमाज मेरठ के सत्संगों में यज्ञ भजनों के पश्चात ८-३० से ९-३० बजे तक पं० आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के प्रवचन विषय—भगवान राम तथा वेद।

२७ अगस्त से ३ सितम्बर ८८ तक स्त्री आर्यसमाज मेरठ की ओर से पारिवारिक सत्संग दोपहर ३ से ५ तक।

२७-८-८८ शनिवार को प्रातः ७-३० श्रावणी उपाकर्म-नये यज्ञोपवीत धारण तथा हैदराबाद एवं अन्य धार्मिक एवं राष्ट्रीय अमर शहीदों को श्रद्धांजलि।

शनिवार दि० २७-८-८८ की रात्रि को संस्कृत दिवस।

दि० ३-९-८८ को प्रातः ७-३० बजे कृष्ण जन्माष्टमी यज्ञ। आर्यसमाज मन्दिर में।

आर्य स० द्वारा सफाई अभियान का शुभारंभ

मेरठ ७ अगस्त। जिलाधिकारी श्री विजय शर्मा के आह्वान तथा आजादी की चालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' की तर्ज पर 'गन्दगी हटाओ' अभियान का शुभारम्भ प्रातः उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने जब स्वयं अपने सिर पर कंधे से भरी टोकरियां उठाकर किया, तब प्रह्लाद नगर के नरनारी और बच्चे सफाई अभियान में जुट गये।

महापालिका के स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों के साथ सर्वश्री राधे लाल सिंघल, हरविन्दरसिंह, जगमोहन कैलाशचन्द्र तथा प्रह्लाद नगर आर्यसमाज के सैकड़ों कार्यकर्ता घण्टों तक सफाई करते रहे।

एक ओर सफाई अभियान जारी रहा तो दूसरी ओर आर्यसमाज ने हैजे से बचाव के टीके लगाने के लिए निःशुल्क शिविर प्रारम्भ कर दिया, जहां हर वर्ग तथा समुदाय के असंख्य लोग महामारी से बचने के लिए एकत्र हो गये।

शहर आर्य समाज की ओर से प्रह्लादनगर के बाद गोरीपुरा, नगर तथा स्वामीपाड़ा में सफाई अभियान प्रारम्भ किया गया।

त्रिभाषा फार्मूला और संस्कृत

नई शिक्षा नीति के अनुसार त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी और १५ क्षेत्रीय भाषाओं (संस्कृत, उर्दू, असमिया, बंगला, गुजराती, कश्मीरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, कोंकणी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, और मलयालम) में कोई एक भाषा पढ़ना है। उत्तर भारत में तो तमिल-तेलगू-कन्नड़-मलयालम में कोई एक भाषा पढ़ने का प्रावधान है।

भाषाओं के द्वारा भारत की एकता को संकट प्रदान करना है। विश्व की प्राचीनतम भाषा—संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसके शब्द सभी भाषाओं में हैं अतः भाषाओं की समृद्धि हेतु कक्षा ६ से १२ तक ५०% हिन्दी और ५०% संस्कृत—एक भाषा के रूप में पढ़ाया जाना चाहिये।

स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती कनखपुरी

आर्य समाज पिथौरागढ़ उ० प्र०

यज्ञ और वृष्टि

(श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती गुरुकुल प्रभाताश्रम भोला झाल मेरठ उ० प्र०

आर्य जगत् के सुपरिचित संन्यासी श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज विज्ञान के एक योग्य विद्यार्थी के साथ-साथ योग्य अध्यापक भी रह चुके हैं। ८० वर्ष की आयु में भी आप अहर्निश आर्य सिद्धांतों के प्रचार प्रसार में लगे रहते हैं। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण आप प्रत्येक वस्तु को स्थूल रूप से अर्थात् भौतिक दृष्टि से देखने के अभ्यासी हैं। अनेक विषयों पर कुछ नये चिन्तन देने के विचार से आप कहीं-कहीं ऋषि दयानन्द की मान्यताओं से भी बहुत दूर निकल जाते हैं किन्तु जनता के समक्ष यह रखने का प्रयास करते हैं कि मैंने ही ऋषि-दयानन्द को ठीक प्रकार से समझा है।

अस्तु। अनेक बार बहुत से मित्रों ने मुझे- श्री स्वामी जी के सिद्धांत के बारे में बताया तथा उत्तर देने को कहा किन्तु मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अभी आर्य समाज की अनेक पत्र-पत्रिकाओं मे "यज्ञ और वृष्टि" शीर्षक से स्वामी जी का लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें श्री स्वामी जी ने 'यज्ञ से वृष्टि नहीं होती है यह सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है वैसे तो यह विषय बृहत् है और अब भी अनेक परीक्षणों की अपेक्षा रखता है किन्तु श्री स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द जी को परम प्रमाण मानकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि यज्ञ से वृष्टि नहीं होती, और भी भौतिक विज्ञान के सम्बन्धित अनेक प्रमाण दिये हैं। उनकी प्रामाणिकता के बारे में तो स्वयं स्वामी जी महाराज साक्षी हैं। मैं तो लोगों को भ्रांति न हो जाये, अतः भ्रांति निवारणार्थ केवल ऋषि दयानन्द जी महाराज के ही प्रमाण दूंगा। जहां उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ से वृष्टि होती है। जिससे सर्वसामान्य जनता भ्रम में न पड़ जाय और स्वामी सत्य प्रकाश जी की भांति यज्ञ से वृष्टि होने को अन्धविश्वास या पाखण्ड न समझ लें।

वे प्रमाण यजुर्वेद के निम्नलिखित हैं।

(१) स्त्रीपुरुषौ स्वयंवरं विवाहयाति प्रेम्णा परस्परं प्राण-प्रियाचरणं शास्त्र श्रवणमोषध्यादि सेवनं कृत्वा यज्ञाद्वृष्टिञ्चकारयेताम्।

स्त्रीपुरुषों को चाहिये कि स्वयं-वर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रियाचरण शास्त्रों का, सुनना, ओषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें।

(यजुर्वेद भाष्य अध्याय १४ मन्त्र ८ में-भावार्थ)

२- यथा सुसेविता गावो दुग्धादि दानेन सर्वान् सन्तोषयन्ति तथैव वेद्यांसञ्चिता इष्टका वृष्टि हेतुकाभूत्वा वृष्ट्यादि द्वारा सर्वानानन्दयन्ति·········॥

जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्धादि के दान से सबको प्रसन्न करती हैं, वैसे ही वेदी में चयन की हुई ईंटें वर्षा की हेतु होके वर्षादि के द्वारा सबको सुखी करती हैं।

(यजुर्वेद भाष्य अध्याय १७, मन्त्र २ भावार्थ)

इन दोनों प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द जी यज्ञ से वृष्टि होने को मानते थे और उनकी "यज्ञ से वृष्टि होती है" इसमें आस्था थी।

हां! स्वामी सत्य प्रकाश जी की नहीं है जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं "मेरी वृष्टि-यज्ञ में आस्था नहीं है।" श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज की वृष्टि-यज्ञ में आस्था नहीं है; यह उनका विचार स्वातन्त्र्य है। अनेक लोग संसार में ऐसे हैं जिनकी ईश्वर एवं धर्म तथा वेद में भी आस्था नहीं है किन्तु उन्हें अपने विचारों को अन्य के ऊपर लपेटकर अशुद्ध व्याख्या करने का अधिकार नहीं है। कम से कम ऋषि दयानन्द जी महाराज को लपेटकर आर्यलोगों को भ्रान्त करने का प्रयास तो श्री स्वामी जी जैसे भद्र पुरुष को शोभा नहीं देता।

स्वामी जी ने एक और बात महर्षि दयानन्द जी के शिर पर थोपने का निरर्थक प्रयास किया। वह यह कि यज्ञ से फसल (कृषि) पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् यज्ञ से अच्छी फसल नहीं की जा सकती और स्वामी जी महाराज ने संस्कार-विधि की संम्वत्सरेष्टि एवं शस्येष्टि के उल्लेख की चर्चा की और अपने स्वभाव के अनुसार यह अर्थ निकाल लिया कि अच्छी फसल उत्पन्न करने में यज्ञ का कोई योगदान नहीं, मुझे इस पंक्ति से बड़ा आश्चर्य हुआ कि स्वामी जी जैसा विज्ञान का विद्यार्थी जो समाचार पत्रों को भी पढ़ता है विशेष कर भौतिक विज्ञान के समाचारों को वह प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका "नवनीत" के १९८१ के जनवरी अंक के विज्ञान वार्ता स्तम्भ में छपे हुए अमरीका में स्वामी वसन्त परांजपे द्वारा संस्थापित अग्निहोत्र विश्वविद्यालय के समाचारों को पढ़ना कैसे भूल गया जिसमें विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण किये गये तथा उन परीक्षणों का निष्कर्ष निकला कि विशेष द्रव्यों के सम्मिश्रण से यज्ञ करने से फसल चौगुनी बढ़ती है और सस्वर मन्त्रों का प्रभाव भी फसल पर आश्चर्य जनक होता है। स्वामी सत्य प्रकाश जी उस समाचार को पढ़ें और बैठकर यज्ञ के प्रभावों का परीक्षण करें, तब स्वयं ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा। मैं स्वामी जी को प्रभात आश्रम में आमन्त्रित करता हूं वे आवें एक वर्ष तक रहें विविध परीक्षणों द्वारा उनका अन्धविश्वास स्वयं दूर हो जायेगा और यज्ञ के विविध महत्व को समझ सकेंगे, हस्तामलकवत् सब प्रत्यक्ष हो जायेगा। पुनः निवेदन है पहले किसी वस्तु का परीक्षण कीजिये तब उसके अनुकूल या प्रतिकूल कहिए। मैं आशा करता हूं कि श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज प्रमाणों को ध्यान से पढ़ेंगे और आर्य जनता को भ्रांत करने की सहज कृपा नहीं करेंगे।

पर्वों का महत्व और–
आर्य समाज का कर्त्तव्य

[स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद]

पर्वों की उपयोगिता जितनी वैयक्तिक जीवन में होती है, उतनी ही सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी होती है। पर्वों का उद्देश्य आत्म-निरीक्षण, आत्मालोचन तथा आत्मोत्थान होता है, वैयक्तिक जीवन में भी और सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी। पर्व शब्द का अर्थ ही है पवित्रता और पूर्ति की ओर ले जाने वाला।

परन्तु पता नहीं कब और किस प्रकार पर्व का उद्देश्य रह गया है कहिये या हो गया है कह लीजिये–प्रत्येक पर्व कहलाने वाले दिवस पर एक विशेष प्रकार का भोजन पूड़ी, खीर, चावल तिल अथवा चौलाई के लड्डू आदि को बना कर खा लेना, तथा यथा शक्य बाजार से मिठाइयाँ आदि लाकर खा लेना, अपने मिलने वालों के घर भेजना, नये वस्त्र धारण करना और कुछ खेल तमाशे आदि खेलना तथा देख लेना। पर्व की वास्तविक भावना लुप्त नहीं हुई तो लुप्त प्रायः तो अवश्य ही हो गयी है।

अन्य क्षेत्रों की भाँति प्रारम्भ में आर्य समाज ने पर्वों के विषय में भी कुछ सुधारात्मक पग अवश्यमेव उठाये थे किन्तु वह भी अब इस विषय में उदासीन होता जा रहा है। लगता है हिन्दू समाज के विकृत ढांचे में आर्य समाज उसी प्रकार विलीन होता जा रहा है जिस प्रकार नदियों में नाले तथा समुद्र में नदियाँ विलीन हो जाती हैं। आर्यसमाजों ने अपने प्रारम्भिक जीवन में पर्वों को उपयोगी प्रकार से मनाना प्रारम्भ किया था, यद्यपि वह प्रकार भी था अधूरा ही।

आर्य पर्व पद्धति में पर्वों को मनाने की विधि इस प्रकार लिखी है कि प्रातःकाल घर का शोधन-लेपन स्नान आदि कर शुद्ध स्वदेशी वस्त्र परिधान पूर्वक प्रथम यज्ञ करे–कुछ पर्वों पर कुछ विशेष आहुतियाँ भी यज्ञ में देनी लिखी हैं–तत्पश्चात् उत्तमोत्तम भोजन पक्वान्न खीर, पूड़ी आदि बनाकर खाना लिखा है। यह वर्णन गृह–कृत्य का है।

पश्चात् मध्याह्नोत्तर किसी सार्वजनिक स्थान, किसी मैदान आदि अथवा आर्य समाज मन्दिर में ही सभा करें। उस सभा में पर्व से सम्बद्ध भाषण, भजन, कविता, निबन्ध आदि का पाठ किया जाना चाहिए तथा तदनन्तर प्रसाद वितरण करे। अच्छा तो यह हो कि ऐसे अवसरों पर वैदिक तथा आर्य सामाजिक दृष्टिकोण के राष्ट्रीय साहित्य वितरण का विशेष प्रबन्ध किया जाये।

इस कार्य में आर्य समाजी बन्धुओं ने दो बड़ी भूल की हैं। एक तो यह कि गृह-कृत्य भी आर्य समाज मन्दिरों में ही किये, घरों में नहीं। इसके परिणामस्वरूप घरों में पौराणिक पर्व प्रथा दूर नहीं हो सकी और आर्य प्रथा प्रारम्भ नहीं हुई। आर्य समाजी अधिकतर यह कहते हुए मिलते हैं कि इस कार्य में महिलायें साथ नहीं देतीं। यह नितान्त मिथ्या आरोप है। अपवाद तो प्रत्येक विषय और प्रत्येक क्षेत्र में मिल जाते हैं किन्तु जब घरों में कोई वैदिक कृत्य किया ही न जायगा तो महिलायें उसे करना सीखेंगी किस प्रकार? और वह क्या जानेंगी कि कौन पर्व किस प्रकार मनाया जाना चाहिए? उन्हें जो कुछ आता है, वह तो वही करेंगी।

आप बच्चे के हाथ से चाकू लेना चाहते हैं तो उसे खिलौना दे दीजिए, नहीं तो वह बिफरेगा, रोयगा। किसी की कोई आदत छुड़ानी हो तो उसके लिए उस आदत का विकल्प तैयार रखना चाहिए। महिलाओं से पौराणिक परम्परागत विधियां–जो उनका स्वभाव बन चुकी हैं–यदि छुड़ानी हैं तो उनके साथ भी उपर्युक्त प्रकार ही बरतना होगा। उनसे पौराणिक परम्परा छुड़ाना चाहें किन्तु उसका विकल्प देने का प्रयत्न न करें, यह नितान्त नासमझी की अमनोवैज्ञानिक बात है। सच बात यही है कि आप घर घर वैदिक पद्धति से पर्व संस्कार आदि कराने प्रारम्भ कर दीजिए, महिलायें धीरे-२ आप ही के रंग में रंग जायेंगी। उनके आपके रंग में रंगने का एक कारण यह भी है कि पर्वों की वैदिक पद्धति पूर्णतया युक्ति-युक्त है और पौराणिक पद्धति पूर्णतया अन्ध-विश्वास पर आधारित है। हाँ यह भी ध्यान रखिये कि सामाजिक कृत्य में सार्वजनिक सभाओं में भी उन्हें साथ ले जाइये। वहाँ जाकर वह भाषणों, कवितादि के द्वारा पर्वों के महत्व को सुन और समझ सकेंगी। यह भी दुर्भाग्य है कि आर्य समाज के सार्वजनिक कार्यक्रमों में आर्य समाजी लोग महिलाओं को प्रायः ही साथ नहीं ले जाते।

कुछ ऐसे कठमुल्ला ढग के आर्य समाजी हैं कि वह पर्वों के अवसर पर घरों में यज्ञ तो कर लेते हैं या करना चाहते हैं किन्तु मिष्ठान्न आदि कुछ पक्वान्न बनाने को पौराणिकता बताकर रोकना चाहते हैं। उन्हें यह समझ नहीं आती कि पौराणिकता पर्व मनाने के प्रकार में, उसकी पद्धति होती है, उत्तमोत्तम स्वादिष्ठ भोजन बनाकर खाने में नहीं होती। व्यावहारिक धरातल पर खड़े होकर ही सफलता प्राप्त हो सकती है, हवाई बात करने तथा कठमुल्लापन अपनाने से सम्भव नहीं।

यदि कठमुल्लापन छोड़कर पर्व पद्धति के अनुसार घरों में पर्वों के अवसर पर गृह–कृत्य होंगे तो महिलायें और बच्चे सभी प्रभावित होंगे और मुख्य–पारिवारिक सुधार की–नींव पड़ जायगी।

दूसरा है सामाजिक कृत्य–जो सार्वजनिक स्थानों में सभा के रूप में होना चाहिए। यह तो कुछ ही समाजों ने मनाना प्रारम्भ किया था, वह भी अब लगभग समाप्त ही है। हाँ, कुछ समाजों में गृह-कृत्य का केवल एक अंश, वह भी सामान्य यज्ञ–उस पर्व की पूर्ण पद्धति नहीं–करके इति श्री अर्थात् कर्तव्य की पूर्ति समझ ली जाती है। जिन समाजों ने सामाजिक कृत्य स्वरूप सभायें करनी प्रारम्भ की थीं या अब भी जो समाजें सामाजिक कृत्य करती हैं, वह भी आर्य समाज मन्दिरों से बाहर जाने को तैयार नहीं। सम्भवतः उन समाजों के अधिकारियों को यह भय रहता है कि लोग हमें मूर्ख समझ लेंगे।

जहाँ सार्वजनिक सभाओं के लिए स्थान उपलब्ध न हो वहाँ की बात छोड़ दीजिए, जहाँ पार्क नगरपालिका आदि के भवन आदि हैं, वहाँ तो आर्य समाज भवन से बाहर निकल कर ही सभायें की जानी चाहिए। लोगों को पता तो चले कि आज का पर्व क्या है और उसका क्या महत्व है तथा हमारे लिये उसकी क्या उपयोगिता है?

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महर्षि के अनुसार यज्ञों में एकरूपता

[श्री आचार्य वीरेन्द्र मुनि लखनऊ]

इस सम्बन्ध में गत दिनों पं० काशीनाथ शास्त्री (गोंदिया) और श्री पं० वेद- भूषण (हैदराबाद) के कई लेख प्रकाशित हुए। उनका सार और उस पर टिप्पणी यहां दी जाती है। पं० काशीनाथ के लेखों का सार—

१—सब मन्त्रों के आरम्भ में ओ३म् का उच्चारण हो।

यह ठीक नहीं, क्योंकि महर्षि ने ऐसा निर्देश नहीं किया। प्रार्थना स्वस्तिवाचन, शांतिकरण के मन्त्रों के प्रारम्भ में तो 'ओ३म्' लगाना चाहिये और वहां पर भी नहीं कि महर्षि ने ऐसा निर्देश किया, किन्तु अविराम पारायण में तथा गर्भाधानादि के मन्त्रों के प्रारम्भ में ओ३म् का उच्चारण ठीक नहीं। विद्वत् परिषद् का प्रस्ताव है कि प्रार्थना मन्त्रों के आरम्भ में सर्वत्र ओ३म् लगाया जाय। स्वाहा से पूर्व मन्त्र के अन्त में विसर्ग को काटकर ओ३म् न लगाया जाय।

२—यज्ञ की पूर्णाहुति संस्कार विधि के अनुसार हो।

पं० काशीनाथ शास्त्री को यह विषय सार्वदेशिक धर्मार्य सभा में उठाना चाहिए जिसके वे सदस्य हैं। संस्कार विधि की भाषा को ठीक से न समझने के कारण धर्मार्य सभा के मन्त्री ने ही पूर्णाहुति का विधान संस्कार विधि के अनुसार किया। तीन बार सर्वं पूर्णं स्वाहा के पश्चात् किसी मन्त्रसे आहुति नहीं होनी चाहिये। पूर्णमद : पूर्णमिद० तो वेदमन्त्र नहीं है। पूर्णादर्वि० को पूर्ण शब्द आने से लोगोंने प्रचलित कर दिया। वसो : पवित्रमसि० को शतधारम् शब्द आने से कुछ लोगों ने प्रचलितकर दिया, यद्यपि महर्षिने तथा अन्य याज्ञिकोंने इसका विनियोग घृत छोड़ने में कहीं नहीं किया और सार्वदेशिक सभा ने भी निषेध किया किन्तु जिनको आदत पड़ गई है वे मानते ही नहीं। लखनऊ आर्य समाज की यज्ञशाला में यज्ञकर्ताओं ने यह बोला और सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी उपस्थित रहकर सुनते रहे, रोका नहीं। आहुति से अष्टाज्याहुति पर्यन्त इतना लम्बा पूर्णाहुति मानना भी ठीक नहीं। मैंने बहुत पहले ही इसका विरोध किया था।

३—आचमन संस्कार विधि के अनुसार यज्ञविधि आरम्भ होने से पूर्व ही किया जावे। ईश्वर प्रार्थना, स्वस्तिवाचन शान्तिकरण से पूर्व आचमन का विधान इसलिए महर्षि ने नहीं किया क्योंकि ये तो प्रार्थनायें हैं—यज्ञ की विधि के अंग नहीं हैं प्रार्थना एक व्यक्ति भी आरम्भ कर सकता है। उस समय ऋत्विजों के आसन खाली रहेंगे। प्रार्थना के बाद ऋत्विग्वरण होगा तब आचमन हो।

४—अग्न्याधान घृतदीप से कपूर जलाकर हो, कपास की रुई, कागज या दियासलाई से नहीं।

५—जलप्रसेचन—अंजुलि में जल लेकर छिड़का जाय। यज्ञ कुण्ड के चारों ओर मिट्टी पर किया जाय। जल को छिड़कना चाहिये, न कि पात्र से एकदम बहुत सा उड़ेल देना।

६—आठ आज्याहुतियां घी की ही होनी चाहिये, क्योंकि ये आज्य [घी] की आहुतियां हैं।

७—दैनिक यज्ञ में कम से कम १६ आहुतियां हैं—आघारावाज्य-भागाहुति ४ सूर्यो० या अग्नि० ४, भूरग्नये आदि ४ और आपोज्योति० एवं १ पूर्णाहुति।

८—स्विष्टकृत् आहुति केवल घी या भात से ही दी जानी चाहिए बाजार या वनस्पति से बने मिष्ठान से नहीं। आज कल कई स्थानों पर यह और कुप्रथा चल पड़ी है कि यज्ञमें बैठे सभी को गुड़ या मिठाई आदि स्विष्टकृत् आहुति के लिए बांटी जाती है जैसे कि यह एक पुण्य हो और सभी उसे लूटना चाहते हों।

९—पं० काशीनाथ शास्त्री ने यज्ञशेष हाथ में लेकर उसे तनूपा० तेजोऽसि० पढ़कर तपाकर मुख पर मलने को निषेध किया है किन्तु यह एक अच्छी प्रथा है जिससे तत्काल लाभ मिलता प्रतीत होता है, अतः इसमें कुछ हानि नहीं।

१०—यज्ञके वस्त्र—आहुति देनेवालों को तो अवश्य शुद्ध धोती-कुर्ता या धर्मवस्त्र ही होने चाहियें। पैन्ट—पायजामा धारियों को थैले में धोती रखकर लाना चाहिये, या अन्दर धोती पहने हुए हों और यज्ञ के समय पैन्ट उतार दें। घर पर तो धोती होनी ही चाहिए।

पं० वेदभूषण जी के विचारों का सार—

१—यज्ञ तथा संस्कार संस्कार विधि के अनुसार हों।

२—रुई की बत्ती से अग्न्याधान तामसिक यज्ञ है। इससे वातावरण दूषित होता है। घृतदीप और कपूर से ही अग्न्याधान है।

३—घृत गाय का ही हो (भैंस का नहीं)।

आदर्श रूप में यह ठीक है किन्तु गरीब जनता के लिए बहुत कठिन है। जो यज्ञ होते हैं वे भी बन्द हो जायेंगे। भैंस का घी खाने को भी नहीं मिलता तो गाय के घी से ही यज्ञ करना कैसे सम्भव होगा। हां, डालडा वनस्पति तेल कदापि न होना चाहिए। हवन सामग्री में नारियल और तिल चढ़ाये जाते हैं तो क्या इनका तेल नहीं चढ़ाया जा सकता? या फिर गो घृत न मिलने पर केवल सामग्री से ही यज्ञ किया जावे?

४—चन्दन की लकड़ी से समिदाधान हो यह भी आदर्श है। हमें सरकार से मांग करनी चाहिए कि चन्दन की लकड़ी मंगाने का लाइसेन्स मिले, किन्तु इसके अभाव में समिदाधान बन्द नहीं किया जा सकता।

५—घी में कस्तूरी केसर अवश्य मिलाने चाहिए यदि मिल जायें। केसर और कपूर तो मिलाया ही जा सकता है।

६—आचमन प्रार्थनादि से पहले नहीं, अग्न्याधान के ठीक आरम्भ में ही होना चाहिये।

७—अयन्त इध्म से ५ घृताहुति केवल गृहस्थ के लिए है अनिवार्य नहीं। यह वेदमन्त्र नहीं। एक ही मन्त्र को ५ बार पढ़ते-पढ़ते दैनिक यज्ञ कर्ता थक सा जाता है। इस मन्त्र को छपते-छपते संस्कार विधि में हाशिए पर बढ़ाया गया। गृह्यसूत्र में इस मन्त्र को बनाने से पहले भी यज्ञ इसके बिना किए जाते होंगे। अतः यह अनिवार्य न रखा जाय।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

गुरू पूजा तथा गुरुदक्षिणा

(श्री नरेशकुमार शास्त्री एम० ए०, आचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालंधर (पंजाब)

"पूजा" एक अति प्रचलित शब्द है जिसका अर्थ ईश्वर के प्रसंग में स्तुति, प्रार्थना, उपासना तथा अन्यत्र यथा योग्य सत्कार अथवा सेवा लिया जाता है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के प्रसंग में अधिकांशतः स्तुति, प्रार्थना, उपासना शब्दों का ही उल्लेख किया है [देखिये आर्य समाज का दूसरा नियम]। पूजा की परिभाषा करते हुए महर्षि आर्योद्देश्य रत्न माला के ६५ वें रत्न मे लिखते है–"जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको 'पूजा" कहते है। "वही" रत्न ६४ "पंचायतन पूजा' में ऋषि लिखते हैं–जीते माता, पिता, आचार्य, अतिथि और परमेश्वर को जो यथायोग्य सत्कार करके प्रसन्न करना है उसको 'पंचायतन पूजा' कहते हैं। अर्थात् जो पूज्य हैं उनमें आचार्य अथवा गुरु भी एक है और जब तक आचार्य व गुरु जीवित है उनका यथायोग्य सत्कार करते रहना चाहिये। यहां तक स्पष्ट है कि महर्षि का अभिप्राय आचार्य वा गुरु में निरन्तर श्रद्धा रखकर उनसे श्रेष्ठ आचार ग्रहण तथा सब प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुये उनका यथा योग्य सत्कार करना है। उनका अभिप्राय आचार्य पूजा आदि से यह कदापि नहीं कि उनकी मूर्ति बनाकर मूर्ति को स्नान-वस्त्र धारण-नैवेद्य-पुष्प पत्र आदि भेंट कर पोपलीला को प्रचलित किया जाये। महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में पंचदेव पूजा की व्याख्या करते हुये स्पष्ट लिखते हैं—जो सच्ची पंचायतन वेदोक्त और वेदानुकूलोक्त देव पूजा है वह सुनो।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरम् ॥ यजु०
आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ २ ॥
अतिथिर्गृहानुपगच्छेत् ॥ ३ ॥ [अथर्व]
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत ॥ ४ । [ऋग्वेद]

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ॥ ५ ॥ [तैत्तिरीयोप०] कतम एको देव इति स ब्रह्म त्यदित्याचक्षते ॥ १६ ॥ शतपथ० प्रपाठ० ५१ ब्राह्म ७१ कंडिका १० । मातृ देवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव अतिथिदेवो भव ॥ १७ ॥ तैत्तिरीयोप० ।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥ ८ ॥
पूज्यो देववत्पतिः ॥ ९ ॥ मनुस्मृतौ ॥

प्रथम माता मूर्तिमती पूजनीय देवता, अर्थात् सन्तानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता सत्कर्तव्य देव उसकी भी माता के समान सेवा करनी। १। तीसरा आचार्य जो विद्या का देने वाला है उसकी तन-मन-धन से सेवा करना। २। चौथा अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सब की उन्नति करने वाला जगत में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेशों से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करें। ३। पांचवीं स्त्री के लिये पति और पुरुष के लिये स्वपत्नी पूजनीय है।

ये पांच मूर्तिमान् देव जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा विद्या और सत्योपदेश प्राप्ति होते है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव वेद विरोधी हैं।"

आदिकाल से ही गुरु शिष्य का सम्बन्ध पिता और मानसपुत्र का रहा है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि उनका पारस्परिक स्नेह भी प्रगाढ़ हो। क्योंकि शिष्य को द्विज अर्थात् विद्यावसान पर्यन्त अपने अनुशासन रूप गर्भ मे रखकर पूर्ण विद्वान् बनाकर दूसरा जन्म देने वाला गुरु वा आचार्य ही होता है। कोई सच्चा गुरु इस तुच्छ मनोवृत्ति का नहीं होता कि शिष्य उसके लिये द्रव्यादिक भेंट लाता रहे। पुनरपि विद्यावसान पर स्नातक शिष्यों द्वारा गुरु दक्षिणा रूप मे अपनी शक्ति के अनुरूप गुरु चरणों में श्रद्धा सहित वस्त्र–द्रव्य–फल आदि गुरु प्रिय पदार्थ अर्पित किये जाते रहे हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन में भी आता है कि उन्होंने भी अपने जीवन में विद्यावसान के पुण्य अवसर पर अपने परम गुरु को 'गुरु जी को लौंग प्रिय हैं' यह सोचकर भिक्षा किये हुये लौंग अर्पित किये थे और गुरु ने जब अद्भुत मेधावी कर्मठ दृढ़ संकल्पी प्रिय शिष्य दयानन्द के जीवन को आर्ष ग्रन्थों के उद्धार तथा राष्ट्र के लिये उपयोगी जान कर गुरु दक्षिणा मे दयानन्द को सर्वस्व समर्पित करने के लिए कहा तो दयानन्द ने निःसंकोच भाव से अपना सर्वस्व गुरु–आज्ञा में सहर्ष समर्पित ही नहीं कर दिया अपितु उस गुरु वचन को अपने प्राणों की आहुति देकर निभाया भी।

महर्षि दयानन्द तथा महर्षि विरजानन्द के उपलब्ध कई जीवन चरित्रों को मैंने इस ध्येय से पढ़ा कि किसी मे महान् शिष्य द्वारा महान् गुरु को दी गई इस अद्भुत जीवन दक्षिणा के दिनविशेष का उल्लेख कहीं मिल जावे। परन्तु मुझ इसमें सफलता नहीं मिली। दिन विशेष का उल्लेख न होते हुये भी सभी जीवन चरित्र लेखकों का यह निर्विवाद मत है कि महर्षि दयानन्द ने गुरु दक्षिणा में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। मेरे विचार के अनुसार उन दिनों संस्कृत पाठशालओं मे "गुरु–पूर्णिमा' पर गुरु दक्षिणा देने की परम्परा प्रायः सार्वत्रिक थी और इसी शिष्टाचार परम्परा का पालन दण्डी विरजानन्द की पाठशाला में भी होता था। अतः यह अधिक सम्भव है कि उक्त ऐतिहासिक गुरु दक्षिणा भी आषाढ़ १५ शुक्ल पौर्णमासी संवत् १९१९ या १९२० के दिन ही दी गई थी। यह इतिहास विषयक प्रश्न है जिसका निर्णय जीवनेतिवृत्तगवेषक ही कर सकेंगे। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने गुरुचरणों में दक्षिणा अवश्य दी थी यह निःसन्देह सत्य है।

महर्षि दयानन्द ने भी आचार्य–पूजा को उक्त रूप में स्वीकार किया है। आर्य समाज में आज इस परम्परा को विधिवत् कोई स्थान नहीं मिला। इसका भी एक कारण है और वह यह कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने परमात्मा प्रत्यक्ष तथा परमपद की प्राप्ति में मूर्तिपूजा को बाधक एवं अनेक कुरीतियों का केन्द्र होने से मूर्ति पूजा का सप्रमाण प्रबल विरोध किया है। साथ ही गुरुडम की भी निन्दा की है। आर्य समाज में भी कहीं गुरुडम न फैल जाए इसीलिये परम्परा का प्रायः परित्याग ही कर दिया गया। परन्तु किसी परम्परा में सम्भावित अवगुणों पर दृष्टि रख और उसके गुणों की अवहेलना करके परंपरा को लुप्त ही कर देने में कोई औचित्य दिखाई नहीं पड़ता।

आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के पोषक वैदिक दार्शनिक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय अपनी चरित्र नामक

(शेष पृष्ठ १४ पर)

वनिता विवेक

अहम् संजया अस्मि

[स्वामी वेद बोध सरस्वती, वेद संस्थान, सी २२ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली]

वैदिक शिक्षाओं के अभाव में आज इस विश्व की नारियां अपने वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ होकर विभिन्न रूपों से अत्याचारों की पीड़ाओं को सहन करने के लिये विवश हो रही हैं। जो अशिक्षित हैं, वे पर्याप्त शारीरिक श्रम करने के उपरान्त भी अपने दुराचारी पतियों के द्वारा वेदनाग्रस्त की जाती हैं और वे चुपचाप अन्याय और अत्याचार को सहन करती हैं। वेदना जब पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है तो अश्रुपात कर अपने मानसिक बोझ को उतारने का प्रयास करती है। इनमें से यदि कोई वाणी के माध्यम से प्रतिरोध करती है तो उस पर शारीरिक प्रहार किए जाते हैं, घर से बहिष्कृत कर दिया जाता है और यदि पितृ कुल वाले सहायक नहीं बनते अथवा वहां तक पहुंचने में असमर्थ होती है तो दुराचारियों के हाथों में पड़कर वेश्यालयों में पहुंच जाती है जहां उन्हें यौन व्यापार करने पर विवश कर दिया जाता है।

जो नारियां अपने को शिक्षित समझती हैं। जिन्होंने विद्यालयों में अध्ययन किया है और उपाधियां अर्जित की हैं वे भी वर्तमान युग के प्रवाह में प्रवाहित होकर आधुनिकता के नाम पर फैशन की दासिया बनी हुई हैं। कृत्रिम शृंगार से पतियों को कामोत्तेजित करके उन्हें प्रसन्न रखना, नौकर न होने पर भी उनके व्यसनों यथा धूम्र और मदिरापान तथा अभक्ष्य खान-पान को सहन करना उनके जीवन का अंग बनकर रह गया है। विडम्बना यह है कि ये शिक्षिताएं भी अपने को अबला समझती हैं। पुरुष की मनोकामनाओं को वे हैं वे कैसी भी और कितनी ही अनुचित क्यों न हों, उन्हें सहन करना और विवशता पर रोना ही जीवन का क्रम बनकर रह गया है। भारतवर्ष का आर्य समुदाय जो अपने को हिन्दू कहता है, उनकी ललनाएं भी दहेज के कारण जिन्दा जलाई जाती हैं, अथवा नाना प्रकार की यातनाएं देकर पितृकुल से कामनाओं की पूर्ति के लिए धन व अन्य बहुमूल्य पदार्थ लाने पर उन्हें विवश किया जाता है। फैशन के नाम पर कृत्रिम शृंगार मानव सतति को कितना भ्रष्ट और नष्ट कर रहा है, इसका इन शिक्षिताओं को कोई आभास नहीं है। वेद की शिक्षाओं के अभाव में उन्होंने केवल अपने को अबला और पुरुष पति की वासना की पूर्ति साधन अपने को बना रखा है।

नारियों के शोषण की रोकथाम के लिए जितनी भी संस्थाएं बनी हैं, उनकी संचालिकाएं भी वेद की अनभिज्ञता के कारण केवल बाह्याडम्बरों तक अपने को सीमित रखती हैं। उनका कार्य केवल प्रदर्शन करना, और निराश्रितों के आश्रय स्थल बनाकर उनको मांग के अनुसार प्रशिक्षण देना मात्र रह गया है। मूल तक न पहुंच सकने के कारण नारियों में वीरत्व की भावनाओं को जागृत करके उन्हें स्वयं सबल और स्वयं सिद्धाएं बनाना उनके लिए भी ज्ञात नहीं है। वेदानुसार एक नारी को कैसा होना चाहिए तो वेद के ही शब्दों में एक अबला कहती है—

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी। ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्। मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्। उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥ (ऋ० १०-१५९।१-२)

अर्थात् वेदाज्ञा कहती है—(अहम् केतु) मैं पताका हूं। उच्च ज्ञान को धारण करके फहराने वाली हूं। (अहम् मूर्धा) मैं शिर की भांति श्रेष्ठा पूजनीय हूं। (अहम् उग्रा विवाचनी) मैं तेजस्विता से बोलने वाली हूं। (पति मम से हानायाः क्रतुम् अनु) पति मुझ और शत्रु घातियों के ज्ञान और कर्म के अनुकूल है। (मम पुत्र शत्रुहण) मेरे पुत्र शत्रुओं का हनन करने वाले हैं। (अथो मे दुहिता विराट) तथा मेरी कन्या महान तेजस्विनी है (उत् अहम् संजया अस्मि) और मैं सम्यक रूप से विजय शालिनी हूं। (पत्यौ मे श्लोक उत्तम) पति के विषय में मेरा कथित वचन उत्तम है।

ऐसा उद्घोष जो वैदिक नारी करे उपरोक्त मन्त्रों के अनुकूल यदि उसका आचरण हो तो क्या उसे कोई अबला समझेगा या शक्ति की साक्षात प्रतिमा। क्या आर्य ललनाएं वेद की इन शिक्षाओं के अनुरूप अपने जीवन का निर्माण कर, अन्य शोषिताओं की सुप्त शक्ति को जाग्रत कर उनका उद्धार करेंगी ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण कार्यक्रम

अन्तर्राष्ट्रीयवाद [शास्त्रार्थ] विश्वविद्यालय

[शास्त्री, आचार्य अथवा स्नातक छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ]

निर्देशक—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास, वेद मन्दिर १०३ बजरिया मोतीलाल, बरेली

इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत १० परीक्षाएं होंगी।

[१] शास्त्रार्थ महारथ परीक्षा, [२] समीक्षा चक्रवर्ती परीक्षा, [३] महामहोपाध्याय परीक्षा, [४] महाभाष्याचार्य परीक्षा [५] विज्ञान वाचस्पति परीक्षा, [६] राजर्षि परीक्षा, [७] यज्ञ विज्ञानाचार्य परीक्षा, [८] याज्ञिक सम्राट् परीक्षा, [९] महर्षि परीक्षा, [१०] वेदाचार्य परीक्षा।

इन १० विभागों के अध्यापन के स्थान भिन्न-भिन्न स्थानों पर हो सकते हैं। आरम्भ की ४ परीक्षाएं हमारे निवास स्थान बरेली में (वेद मन्दिर) दिलाई जा सकती है। इनके साधन यहां मौजूद हैं।

[१] शास्त्री, आचार्य परीक्षोत्तीर्ण या किसी गुरुकुल की स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों का इसमें प्रवेश होगा। एक वर्ष के अन्दर छात्रों का प्रत्येक विषय पर शास्त्रार्थ करने का अभ्यास करा दिया जायगा। छात्रों को भोजन, आवास, शिक्षा आदि निःशुल्क होगा। प्रत्येक छात्र को १००) रु० मासिक व्यक्तिगत व्यय के लिए वृत्ति दी जायगी। प्रवेशार्थी शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

[२] सत्यार्थ-प्रकाश के उत्तरार्द्ध ४ समुल्लासों के अनुसार मुस्लिम सम्प्रदाय, ईसाई सम्प्रदाय, जैन बौद्ध सम्प्रदाय और पौराणिक सम्प्रदायों से शास्त्रार्थ करने की योग्यता सम्पादन करने के लिए पूर्ण शिक्षा दी जाएगी। जैसे कुछ छात्र मुस्लिम सम्प्रदाय से शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार किये जायेंगे उन्हें अरबी, फारसी और मुस्लिम साहित्य और मुस्लिम देशों का इतिहास और साहित्य आदि सब पढ़ाया जाएगा। इसके अध्ययन में छात्रों की योग्यता के अनुसार वर्ष लगेंगे। उसको 'मुस्लिम समीक्षा चक्रवर्ती की उपाधि से अलंकृत किया जाएगा। इसी प्रकार ईसाई, बौद्ध, जैन तथा पौराणिक सम्प्रदायों से सम्बद्ध "समीक्षा चक्रवर्ती" छात्र तैयार किये जायेंगे।

[३]स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यह लिखा है—सभी वैदिक साहित्य के उल्टे अर्थ टीकाकारों ने किये हैं। इनकी पुनः टीका करानी चाहिए। जो विद्वान् निरुक्त' शतपथ आदि ग्रन्थों की पुनः टीका करके इन ग्रन्थों को स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त के अनुसार बनाएगा उसे "महामहोपाध्याय" की उपाधि से विभूषित किया जाएगा। निरुक्त, शतपथ आदि एक-एक ग्रन्थ पर एक-एक विद्वान् को अपना पूरा जीवन लगाना पड़ेगा तब जाकर यह दुष्कर कार्य हो पायेगा।

[४] स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य तथा अन्य ग्रन्थों पर विस्तृत टीका लिखने की आवश्यकता है। और स्वामी जी के ग्रन्थों के खण्डन में जो ग्रन्थ लिखे गये हैं, उन सबके उत्तर स्वामी जी के उन-उन ग्रन्थों के भाष्य में आ जाने चाहिए। जैसे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डन में तीन ग्रन्थ लिखे गये—(क) वेदार्थ पारिजात, (ख) भूमिका तिरस्कार, (ग) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिकेन्दु। इन तीनों ग्रन्थों के उत्तर लिखने के साथ-साथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर भाष्य लिखने वाले विद्वान् को महाभाष्याचार्य की उपाधि से विभूषित किया जायगा। सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि के खण्डन में बहुत ग्रन्थ लिखे गये हैं, स्वामी जी के ऋग्वेदादिभाष्य के खण्डन पर "प्रकृतार्थवाहिनी" भाष्य और यजुर्वेद भाष्य के खण्डन पर स्वामी जी के हो सहपाठी उदय प्रकाश (विरजानन्द सरस्वती के शिष्य) ने ग्रन्थ लिखे। इन ग्रन्थों के आज तक उत्तर ही नहीं दिए गये।

विशेष सूचना—इन चार परीक्षाओं के प्रबन्ध हम अपने निवास वेद मन्दिर के पुस्तकालय से कर सकते हैं। सम्पन्न आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वे एक-एक छात्र का व्यय अपने-अपने जिम्मे ले लें और हमें सूचना दे दें। सम्पन्न समाजों के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है।

[५] आधुनिक भाषा विज्ञान, विकासवाद (डार्विन थ्यूरी) सांख्य विज्ञान, कार्लमार्क्स की (राज्य व्यवस्था) थ्यूरी आदि सभी मिथ्यावाद है जो पूरे विश्व में पढ़ाये जाते हैं। इन मिथ्यावादों में ईश्वर, वेद और ऋषियों-मुनियों के ग्रन्थों और सिद्धान्तों के लिए कोई स्थान नहीं है। इनमें से एक-एक विषय पर एक-एक विद्वान् लग जाएं और उसका ज्ञान प्राप्त करके उनसे शास्त्रार्थ करने की योग्यता प्राप्त करें। ऐसे विद्वान् को "विज्ञान वाचस्पति" की उपाधि से विभूषित किया जाएगा।

[६] वेदों तथा प्राचीन भारतीय इतिहास और साहित्य में राज्य तन्त्र और व्यवस्था का स्वरूप किस प्रकार था? चाणक्य के अर्थ शास्त्र, कामन्दकीय नीतिसार, शुक्रनीति, मनुस्मृति, महाभारत और स्वामी जी के सत्यार्थ प्रकाश में छठे समुल्लास और अन्य ग्रन्थों में संकेतिक साहित्य के आधार पर वैदिक राज्यतन्त्र क्या हो? इस विषय पर तथा कार्लमार्क्स की राज्य व्यवस्था और विश्व की अन्य राजनीतिक व्यवस्थाओं को पढ़कर उसकी मीमांसा लिखने वाले व्यक्ति को 'राजर्षि' की उपाधि से विभूषित किया जाएगा।

[७] ये श्रौत, स्मार्त यज्ञ सृष्टि विज्ञान है, पाखण्ड नहीं। इन पर जो अनुसन्धान करने में सफल होगा, उसे "यज्ञ विज्ञानाचार्य" की उपाधि से विभूषित किया जाएगा।

[८] इस समय यज्ञों को सिखाने वाले विद्वान् भारत भर में बहुत हैं। जो आर्य विद्वान् सब श्रौत स्मार्त यज्ञों को कराने की योग्यता प्राप्त करेगा। उसे "याज्ञिक सम्राट्" की उपाधि से विभूषित किया जाएगा।

[९] स्वामी जी के ४ धाम हैं [क] जन्म स्थान—टंकारा, [ख] शिक्षा स्थान मथुरा, [ग] आर्यसमाज स्थापना स्थान—बम्बई, [घ] मोक्ष धाम—अजमेर। इन चार धामों में एक-एक वेद की पीठ बनायी जाए। इस प्रकार एक-एक से सम्बद्ध सभी साहित्य एक-एक धाम पर सुरक्षित हो जाएगा। इन चारों पीठों पर एक-एक विद्वान् बैठें, जिसे महर्षि की उपाधि से विभूषित किया जाएगा। जो विद्वान् जिस पीठ पर बैठेंगे, उसे अपने-अपने वेद से सम्बद्ध सभी ग्रन्थों में पारंगत होना चाहिए। कृष्ण यजुर्वेद और उसका साहित्य विस्तृत है और इसका प्रचार दक्षिण भारत में बहुत है। अतः कृष्ण यजुर्वेद की एक गद्दी और बनानी होगी। जिसे दक्षिण भारत में ही कहीं स्थापित करनी होगी। उस पीठ पर बैठने वाले विद्वान् को ब्रह्मर्षि नाम से पुकारा जाएगा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्रद्धांजलि समर्पित राजर्षि को हमारी।

वैदि [illegible] खारवेला, जीवन क्रान्तिकारी।
श्रद्धांजलि समर्पित राजर्षि को हमारी॥
नर श्रेष्ठ हे रणञ्जय, जन जन के प्राण प्यारे।
सहृदय, सरल-स्वभावी, नायक सुधी हमारे॥
कीरति विमल रहेगी भूपर अक्षय तुम्हा[री]
श्रद्धांजलि समर्पित राजर्षि को हमार[ी]॥
उद्भट समाज सेवी, लेखक, [सु]कवि मनीषी।
सैनिक महर्षि के तुम, क्षमता महर्षि की सी।
निज राष्ट्र प्रति समर्पित सेवा सदा तुम्हारी।
श्रद्धांजलि समर्पित र[ाज]र्षि को हम[ा]री॥
युग-पुरुष थे रणञ्जय, सत्पुरुष थे रणञ्जय।
पौरुष अपार प्रतिभा के धनी थे रणञ्जय॥
प्रभुता असीम पाकर भी [थे] सदाचारी।
श्रद्धांजलि समर्पित र[ाज]र्षि को हमारी।
गौरवमयी अमेठी ही मात्र नहीं तुमसे।
उत्तर-प्रदेश सारा उपकृत्य नहीं [तुम]से॥
अमरत्व प्राप्त कर 'शिव' निज आत्मगति संवारी।
श्रद्धांजलि समर्पित राजर्षि को हमारी।'

शिवकुमार 'रेक [ा]र' पुरखी (कैसरगंज) बहराइच

(पृष्ठ १० का शेष)

(१०) स्वामी जी ने अपने वसीयतनामे में लिखा है कि सभी देशों की भाषाओं में उपदेशक मण्डली तैयार किये जावें। जर्मन, फ्रेंच, इटैलियन, चीनी, [र]शियन भाषाओं में बोलने वाले उपदेशक आर्यसमाज के पास नहीं। अतः इन भाषाओं के ज्ञा[ता]ओं का उपदेशक बनाकर उन देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कराया जाए। ऐसे उपदेशकों को इटली देशाचार्य, जर्मनी देशाचार्य आदि की उपाधि से विभूषित किया जाए।

विशेष—अन्तिम छह विभागों को किसी एक स्थान से संचालित नहीं किय[ा] जा सक[त]ा। अतः गुरुकुल कांगड़ी, दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक पंजाब विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के दयानन्द [आश्रम], डी० ए० वी० कालेज कमेटी, विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान होशियारपुर, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली की बड़ी आर्यसमाजें, अफ्रीका, मारिशस, इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि देशों की आर्यसमाजें एक-एक काम हाथ में ले लें। क्योंकि ये सब बड़े काम किसी एक व्यक्ति के वश के नहीं हैं।

आवश्यकता

स्वामी श्रद्धानन्द अखिल [भा]रतीय स्मारक ट्रस्ट, श्रद्धानन्द सेवा संघ [औ]र पिछड़े वर्ग सेवासंघ और उनके द्वा[रा] चलाई जा रही संस्थाओं के लिये ऐसे कर्मठ काय[क]र्ताओं [की] आवश्यकता है, जो समर्पण और लगन की भावना से सामाजिक सेवा का अवसर चाहते हों और कुशल रूप से [इ]न ट्रस्टों के भिन्न-भिन्न कार्य कर सकते हों। ये कार्य इस प्रकार [हैं]—[१] इन ट्रस्टों के नई दिल्ली स्थित कार्यालयों में प्रबन्ध, लेखक, गणक व भवन रक्षक और सेवक के कार्य [२] देश में विभिन्न प्र[दे]शों में विशेष रूप से वनवासी क्षेत्रों में प्रचारक, प्रबन्धक, अध्यापक, चिकित्सक और बालकों व युवकों के संगठन कर्त्ता आदि के काम। विशेष रूप से उन आर्यसज्जनों के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर है जो गृहस्थ कार्यों से विरक्त हो चुके हों और समाज सेवा [में] अपना [म]न लगाना चाहते हों। निर्वाह मात्र के लिए उन्हें सम्मानपूर्वक [मा]सिक आदरी पुरस्कार दिया [जा]येगा। अंशकालिक [पार्टटाइम] कार्य कर सकने वालों को भी सेवा का अवसर मिल स[क]ता है। इस अवसर से लाभ उठाने के इच्छुक [सज्ज]नों को निम्न प[ते] पर पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

पं० ज्ञानचन्द्र प्रधान
श्रद्धानन्द सेवा संघ आर्य भवन, महाशय कृष्ण हाल,
[ग]ोर[ख] [पार्क], नई दिल्ली-११०००३

निर्वाचन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा-मुरादाबाद का ५१ वां वार्षिक अधिवेशन २८-८-८८ को मुरादाबाद में सम्पन्न हु[आ]।

सभा के उपदेशक/प्रचारकों के वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम

१-श्री केशवदेव शास्त्री, महोपदेशक सभा-२६ अगस्त से ३ सितम्बर ८८ तक आ० स० बुढ़ानागेट (मेरठ) तथा आर्य समाज कोरतपुर (बिजनौर), ४ सितम्बर से ६ सितम्बर ८८ तक।

२-श्री विश्वम्भर दत्त शास्त्री महोपदेशक सभा-२६ अगस्त से ५ सितम्बर ८८ आ० [स]० रहमतगंज (रामपुर)।

३-ड० विजयपाल शास्त्री महोपदेशक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आर्यसमाज सिकन्दराराऊ (अलीगढ़)।

[४]-श्री सुकर्मानन्द उपदेशक सभा-२६ अगस्त से ३ सितम्बर (महाराष्ट्र)।

५-श्री ठा० गजराजसिंह भजनोपदे[शक] सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० टी० टी० नगर (भोपाल)।

६-श्री धर्मराजसिंह भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त [से] ३ सितम्बर आ०स० जगतपुर [बरेली]।

[७]-श्री कमलदेव भजनोपदेशक सभा-२७ [अग]स्त से ३ सितम्बर आ० स० हाथरस (अलीगढ़)।

८-श्री ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० गणेशगंज [लखनऊ]।

६-श्री नेमप्रकाश भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० गणेशगंज, लखनऊ।

१०-श्री युगुलकिशोर भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त ३ सितम्बर आ०स० [ग]णेशगंज लखनऊ।

११-श्री शिवदेव ढोलक भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्[ब]र आ०स० लखीमपुर खीरी।

१२-श्री ओमलाल जी ढोलकवादक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० लखीमपुर खीरी।

१३-श्री रामचन्द्र शर्मा भजनोपदेशक सभा-२[७] अगस्त से ५ सितम्बर आ०स० रहमतगंज [रामपुर]।

१४-श्री जगतवीर सनेही भजनोपदेशक सभा-२७ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० सिकन्दराराऊ [अलीगढ़]।

१५-श्री तेजपालसिंह आर्य भजनोपदेशक सभा-२६ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० चन्दौसी जि० मुरादाबाद।

१६-श्री विद्याव्रत [व]िद्यार्थी उपदेशक सभा-२६ अगस्त से ३ सितम्बर आ०स० मिर्जापुर।

१७-श्री महावीर शास्त्री उपदेशक सभा-२६ अगस्त से ३ सितम्बर आ० स० गोरखपुर।

१८-सत्य प्रकाश-आगरा।

१६-श्री खेमचन्द्र-फैजाबाद।

२०-श्री जीत नारायण-चन्दौसी।

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

पर्वों का महत्व और आर्यसमाज का कर्तव्य

(शेष पृष्ठ ६ से आगे)

वास्तविकता यह है कि लोग पर्व का अर्थ ही नहीं समझते। उन्हें तो इतना ही पता है कि अमुक पर्व पर अमुक-अमुक प्रकार का भोजन बनाना होता है और अमुक कृत्य करना होता है, फिर चाहे वह किसी मन्दिर मे जाकर कोई क्रिया विशेष की जाती हो अथवा दीवार, भूमि आदि पर कुछ चित्रित करके उसके आगे सर झुकाना हो या उसे भोग लगाने के लिये कोई पदार्थ उससे लगा देना हो। ध्यान देने की बात यह है कि इन प्रक्रियाओं से न तो व्यक्तियों को कोई प्रेरणा मिलती है और न समाज तथा राष्ट्र के हित मे चिन्तन की ही कोई प्रेरणा प्राप्त होती है। हाँ एक लकीर पीटने वाली आदत बनकर स्वभाव का रूप धारण कर लेती है। लोग पीढ़ी दर पीढ़ी ऐसा ही करते रहते हैं और पूछो तो कह देते हैं कि हमारे यहाँ तो पहले से ही इसी प्रकार होता आया है।

जब आत्म निरीक्षण तथा समाज और राष्ट्र के विषय मे सुनने और समझने को कुछ भी नहीं मिलेगा तो पर्व की मूल भावना पवित्रता और न्यूनताओं की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा।

आवश्यकता इस प्रकार, इस पद्धति को बदलने की है। हमें तो पता नहीं आर्य जाति कितनी पीढ़ियों, कितनी शताब्दियों से मनाती आ रही है किन्तु इससे परिवार सुधार, समाज और राष्ट्र के उत्थान की कोई प्रेरणा आज तक नहीं मिली। प्रेरणा मिलने का कोई सूत्र भी इसमे नहीं है। यह आँखें बन्द करके भेड़ के पीछे भेड़ के चलने की अन्ध परम्परा मात्र है। इस अन्ध परम्परा मे आँखें बन्द करके चलने के परिणाम स्वरूप आज जाति का उत्तरोत्तर पतन ही हुआ है। और अब भी स्वाधीनता प्राप्ति के ४१ वर्ष पश्चात् भी यही अन्ध विश्वासात्मक अन्ध परम्परा चल रही है, परिणाम स्वरूप व्यक्तित्व के निर्माण द्वारा परिवार, समाज तथा राष्ट्र निर्माण वास्तविक रूप में नहीं हो रहा है। यदि कुछ हुआ है तो केवल चारित्रिक पतन ही हुआ है। स्मरण रखने की बात है कि यदि व्यक्ति का चरित्र नहीं बनेगा तो न तो परिवार मे चरित्र की उज्ज्वलता पनपेगी और न समाज तथा राष्ट्र चरित्रवान बन पायेगा। यह भी ध्यान रहे कि चाहे देश के पास असीमित सम्पत्ति हीरे-मोतियों, भवनों, कल-कारखानों आदि के रूप मे हो, चाहे उत्तमोत्तम सड़कें हों, बड़ी-बड़ी सेनायें जलयानों, वायुयानों तथा आणविकास्त्रों से युक्त हों, तब भी संसार की दौड़ मे हम पिछड़े ही रहेंगे और विश्व में चल रहे शीत युद्ध मे हम पिट जायेंगे।

इतिहास से शिक्षा लीजिए महाभारत काल मे हमारे यहा क्या नहीं था? सेनायें भीषणतम आणविकास्त्र, महान् महारथी योद्धा तथा अपार सम्पदा थी। नहीं था तो चरित्र नहीं था—हमारा नैतिक पतन हो चुका था। इसी कारण महाभारत युद्ध हुआ और तदुपरान्त तभी से हम उत्तरोत्तर पतन की ओर बढ़ते चले जाते रहे। इतने लम्बे समय—पाँच सहस्र एक सौ वर्ष—की पतनोन्मुख आर्य जाति को यदि इस समय के शीतयुद्ध की विभीषिका पूर्ण परिस्थितियों से बचाना है तो आर्य समाज को आगे आना होगा। आर्य समाज ने यदि पर्वों को ठीक रूप में मनाना प्रारम्भ किया अपने सदस्यों को अपने-अपने घर पर्वों के अवसर पर गृह-कृत्य आर्य पर्व पद्धति के अनुसार करने को उद्यत किया तो परिवार का सुधार व उत्थान होगा, जो समाज व राष्ट्र की पवित्र और सुदृढ़ इकाई बनेगा तथा सामाजिक कृत्य को सार्वजनिक स्थानों, पार्कों आदि में मनाने से सामाजिक वातावरण बनकर राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त होगा। राष्ट्रीय चरित्र बनेगा, सर्व साधारण में राष्ट्रीय भावनायें जागेंगी, अनैतिकता दूर होगी और नैतिकता बढ़ेगी। अल्प संख्यक के नाम की ओट में देश-द्रोही सम्प्रदायों वर्गों की अराष्ट्रीय गतिविधियाँ अवरुद्ध हो जायेंगी। आने वाले समय में अल्पावधि मे राष्ट्र का नव निर्माण हो जायगा। अतएव 'उत्तिष्ठः जाग्रत." उठो, जागो— सावधान हो जाओ।

★

प्रवेश-सूचना

विगत वर्षों की उपलब्धियों के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय सद्रपुर" का शैक्षिक सत्र ८ जुलाई से शुभारम्भ हो गया है। आश्रम पद्धति के अनुसार ज्ञान चरित्र से समन्वित तथा व्यक्तित्व के सर्वाङ्गीण विकास पर बल देने वाली यह संस्था उत्तर प्रदेश राज्य प्रशासन से "प्रथम श्रेणी" मे वर्गीकृत एव आर्थिक सहायता प्राप्त है।

यहाँ "बेसिक शिक्षा परिषद" से सम्बन्धित प्रारम्भिक कक्षाओं [१ से ५ तक] तथा संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से प्रथमा [षष्ठ] से आचार्य [एम० ए०] पर्यन्त अध्ययन एवं परीक्षाओं की सुव्यवस्था है। निर्धारित पाठ्य-क्रम के अनुसार प्राचीन एव सभी आधुनिक विषयों [अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि] का यथेष्ट परिज्ञान कराया जाता है। ज्ञातव्य है कि उक्त परीक्षायें राजकीय विभागों में नियुक्त प्रशिक्षण [ट्रेनिंग] एवं तकनीकी संस्थाओं में प्रवेश हेतु, निरापद रूप से मान्य हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित एम०ए० [हिन्दी संस्कृत] मे स्वतन्त्र रूप से अध्ययन के इच्छुक छात्रों को पृथक् से कक्षायें चलाई जाती हैं।

साधना एव तपश्चर्या के पवित्र वातावरण मे रहते हुए बच्चे की अन्तर्हित प्रतिभा को उद्दीप्त कर व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास, भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि अनुराग, सह अस्तित्व एव पूर्ण स्वावलम्बन की भावनायें विकसित करना गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मूल भूत विशेषता है।

भोजन शुल्क ८०) प्रतिमास है। घृत दुग्धादि व्यय छात्र की आवश्यकता के अनुसार पृथक् से देय होगा। गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिये नितान्त उपादेय है। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क स्थापित करें।

आचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय सद्रपुर तिलहर, शाहजहाँपुर

सैमुअल से श्याम

दि० ३-७-८८ को सैमुअल नायर निवासी गांधी ग्राम कानपुर ने अपनी स्वेच्छा से आर्य समाज मन्दिर हरजेन्दर नगर कानपुर में आकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इनका परिवर्तित नाम श्याम जी नायर रखा गया है। इस पुनः मिलन कार्यक्रम को पं० राम जी आर्य ने सम्पन्न कराया। इस शुभ अवसर पर क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्ति श्री सीताराम आर्य (प्रधान आर्य समाज हरजेन्दर नगर कानपुर) तथा आर्य समाज के अन्य अधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी ने श्री श्याम नायर को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

गुरु पूजा तथा गुरुदक्षिणा

(पृष्ठ ८ का शेष)

पुस्तक के 'देवता, साधु तथा वीरात्मा'–अध्याय मे व्यक्ति पूजा अथवा गुरुडम के भयकर दोषो की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं– 'मानवी पूजा सब पूजाओं से अधिक भयकर है। यह सिद्धान्त जानते ही इसका परिणाम आरम्भ हो जाता है। आरम्भ तो ठीक ही होता है। उसके व्यक्तित्व के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है, यह स्वाभाविक है। इससे भी लाभ होता है। उसके नाम या उसकी स्मृति के लिये श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। पर बाद में इसमे सावधानी की आवश्यकता होती है। यह भी सम्भव है कि आप मार्ग भूल जायें। थोड़ी सी असावधानी से आप अपने मार्ग से दूर हो जाते हैं। यदि आपके मस्तिष्क में कोई विचार उठते हैं, जैसे प्राय लोगों के हृदयों मे उठा करते हैं, सम्मान उस व्यक्ति के लिए होता है, न कि उसकी शिक्षाओ के लिये। आप अपने मार्ग से बिछुड़ जाते हैं और भ्रमपूर्वक टेढ़े-मेढ़े मार्ग पर चलने लगते हैं। सम्भवत आप यह अनुभव नहीं करते कि आपने सिद्धांतों को पीछे छोड़ दिया जिससे आप इतना प्रेम करते थे उसके व्यक्तित्व के साथ–साथ आप उनके सिद्धान्तों को भी भूल जाते हैं और उनकी छाया के पीछे दौड़ने लगते हैं।

मानव–पूजा का एक और भयकर रूप होता है। सभी मनुष्य ऐसे हैं जो पूर्ण ज्ञानी नहीं होते। यह माना कि उनमें अच्छे गुण भी हों, पर उनमें अपूर्णता भी है। जब वे अपने शिष्यो को अपने सिद्धान्तों की शिक्षा दे रहे थे उन्होंने उनसे कभी कहा था कि जो अच्छे गुण उनमें हों उन्हें वे ग्रहण करें और जो बुरी आदतें हैं उनकी ओर कभी भी आकर्षित न हों। वैदिक ऋषि जब अपने शिष्यों को शिक्षा देना आरम्भ करते थे तो पहला उपदेश यह देते थे–

"यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि।"

उन शिक्षाओ को स्वीकार करो जो ठीक हो, अन्यो को नहीं। परन्तु इस शिक्षा पर ध्यान ही नहीं दिया जाता। कभी–कभी तो गुरु पूर्णता का ढोंग करते हैं। वे प्रचार करते हैं कि उनमें ईश्वरीय शक्ति है। भोले–भाले अनुयायी विश्वास करने लगते हैं। कभी–कभी तो अपनी दुर्बलताओं को छिपाने के लिए ऐसा किया जाता है। ऐसा भी देखा गया है कि इन गुरुओं ने अपना जाल लोगों के सामने फैला रखा है जिससे उनके अनुयायी पूरीतरह उनके कब्जे मे आ जायें। ज्योतिषियों ने अपने शब्दो को ऐसी–ऐसी व्याख्यायें कर रखी हैं कि उनके बन्धनों से निकल न पायें। ऐसा ही पैगम्बरों और गुरुओं ने किया है। यह स्वाभाविक है कि लोग अपनी नैतिक दुर्बलताओं को छिपायें, विशेष कर चरित्र सम्बन्धी। यह इच्छा उन व्यक्तियों मे और भी बढ़ जाती है जब वे व्यक्ति किसी समुदाय के गुरु हो जाते हैं। कभी–२ ऐसा होता है कि चारित्रिक दुर्बलतायें उन अनुयाइयों मे केवल इसीलिये आ जाती हैं क्योंकि उनके पैगम्बरों या गुरुओं में पाई जाती थीं। इस प्रकार के अवगुण बुरे न समझे जाकर गुण माने जाने लगे थे। एक गुरु जब तक गुरु रहता है वह आपको एक सच्चे मार्ग पर चलाता है, परन्तु ज्यों ही वह पैगम्बर, ईश्वरीय दूत बन जाता है उसका व्यवहार भयंकर हो जाता है। तुम यह विश्वास करने लगते हो कि वह तुम्हारा रक्षक है, वह तुम्हें पापों से बचाने वाला है। वह तुमको मार्ग नहीं दिखाता, वह तुम्हारे पापों का धोने वाला है। इस प्रकार आपका पतन हो जाता है।

एक और कमजोरी है जिसके दास प्रसिद्ध व्यक्ति भी हो जाते हैं, जानकर नहीं, केवल अनजाने ही। बड़प्पन प्राप्त करना इतना कठिन नहीं है जितना उसको नियमानुकूल रखना। बहुत से बड़े आदमियों का बड़प्पन के बोझ से लदे हुए पतन हो जाता है और इसका उनके अनुयाइयो पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्राय ऐसा होता है कि अनुयाइयों को एकत्रित करके और बड़ा सम्मान प्राप्त करके, नेता यह सोचने लगता है कि जो कुछ वे करते हैं वह ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है। जब तक वह और उनके अनुयायी जो कुछ वह करता था उसकी भलीभांति जाँच कर लेते थे। परन्तु जब जो सफलता उनको मिलती गई उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव उसके ऊपर पड़ा और वे ईश्वर के दूत बन जाते हैं। वह सोचने लगता है कि उसके हृदय में जो प्रेरणायें होती हैं वे उनकी नहीं बल्कि ईश्वर की ओर से हैं और उसको और उसके अनुयाइयों को यह अधिकार नहीं कि वे उसकी परीक्षा करें। इस भावना के होते ही नेताओ का पतन हो जाता है और उनके अनुयाइयो में भेड़ चाल की आदत आ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि उस महान् उद्देश्य के लिए जिसको लेकर वे चले थे, जिसके लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे उस उद्देश्य को लोग भूल जाते हैं। कितना भयकर पतन हो जाता है। हम सब अन्धकारमय खाई मे गिर जाते हैं, यद्यपि अनुभव यह करते हैं कि हम उन्नति कर रहे हैं। यही दशा बहुत से सुधारकों की हुई है। मानवी पूजा का यह भयकर रूप है और इससे बचने की चेष्टा करनी चाहिये। 'इससे पूर्व इसी पुस्तक के "मुख्य उद्देश्य" नामक अध्याय में भी उपाध्याय जी लिखते हैं–

"पूजा तो एक प्रकार का अभ्यास है जैसे विद्यालय में एक अध्यापक किसी बच्चे के हाथ से शिक्षा नहीं देता। उसको एक प्रकार का अभ्यास करना पड़ता है जिसको शिक्षा कहा जा सकता है। इसी प्रकार पूजा करने वाला जब पूजा करता है तो उसे यह अनुभव होता है कि वह लगातार ऊपर उठ रहा है और पूजा के परिणाम स्वरूप उसको एक प्रकार की शिक्षा मिल रही है।"

इससे स्पष्ट है कि पूजा एक कर्म है और ज्ञान पूर्वक किया गया कर्म ही कल्याणकारी होता है– अज्ञान पूर्वक किये गये कर्म के परिणाम भी निश्चित रूपेण अति भयकर होंगे। इसीलिये चाहे अज्ञान पूर्वक वह पशुबलि या नरबलि द्वारा मूर्तियों पर रक्त की धारा बहाकर ईश्वर की पूजा हो– चाहे गुरु का नाटक करने वाले किसी व्यक्ति या सम्प्रदाय के नायक की पूजा हो– नि:सन्देह हानिकारक होगी। परन्तु अग्नि या विद्युत जैसा देवो ऐसी सम्भावना पर उसका सावधानी पूर्वक उपयोग करना कोई नहीं छोड़ देता। महर्षि दयानन्द के अनुसार वास्तविक आचार्य व गुरु का यथार्थ में शिष्य बनकर [शिष्य उसको कहते हैं कि जो सत्य शिक्षा और विद्या के ग्रहण करने योग्य धर्मात्मा विद्याग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करने वाला है–स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश –१२] [आचार्य–जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण करके सब विद्यार्थियों को पढ़ा देवे, उसको 'आचार्य' कहते हैं। गुरु जो वीर्यदान से लेके भोजनादि कराके पालन करता है, इससे पिता को 'गुरु' कहते हैं और जो अपने सत्योपदेश से हृदय के अज्ञान रूपी अन्धकार मिटा देवे, उसको भी गुरु अर्थात् आचार्य कहते हैं। आर्योद्देश्य रत्नमाला–६१–६२] महर्षि दयानन्द की भाँति ही शिक्षाप्रणाली इस पुरातन गुरु–दक्षिणा रूप शिष्य परम्परा का पालन किया जाना

(शेष पृष्ठ १६ पर)

गुरु पूजा और गुरुदक्षिणा

[पृष्ठ १४ का शेष]

चाहिए। तभी 'आचार्य देवो भव' तथा आर्य समाज के चौथे नियम सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' को हम सार्थक कर पायेंगे।

गुरु दक्षिणा के सम्बन्ध में मनुस्मृति के निम्न श्लोक प्रमाणरूप द्रष्टव्य हैं–

न पूर्वं गुरवे किञ्चिदुपकुर्वीत धर्मवित् ।
स्नास्यंस्तु गुरुणाऽऽज्ञप्तः शक्त्या गुर्वर्थमाहरेत् ॥ २–२४५ ॥

[धर्मवित्] विधि या ज्ञाता शिष्य [स्नास्यन्तु] स्नातक बनने [समावर्तन कराने] की इच्छा होने पर [गुरुणा आज्ञप्तः] गुरु से आज्ञा प्राप्त करके [शक्त्या] शक्ति के अनुसार [गुर्वर्थम्] गुरु के लिये [आहरेत्] दक्षिणा प्रदान करे। किन्तु पूर्वं गुरवे किंचित् न उपकुर्वीत] समावर्तन से पहले गुरु को दक्षिणा या भेंट रूप में कुछ नहीं देना चाहिए।

गुरु दक्षिणा में देय वस्तुयें–

क्षेत्रं हिरण्यं गामश्वं छत्रोपानहमासनम् ।
धान्यं वासांसि वा शाकं गुरवे प्रीतिमावहेत् । २–२४६ ।

[शिष्य यथा शक्ति]–[क्षेत्रं] भूमि [हिरण्यम्] सोना (गाम्) गाय (अश्वम्) घोड़ा (छत्र+उपानहम्+आसनम्) छाता जूता आसन (धान्यम्) अन्न (वासांसि) वस्त्र (वा) अथवा (शाकम्) शाक (गुरवे) गुरु के लिये (प्रीतिम्+आवहेत्) प्रीति पूर्वक दक्षिणा में दे।

ध्यातव्य है कि उक्त श्लोक आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली द्वारा प्रकाशित मनुस्मृति में भी प्रक्षिप्त नहीं माने गये हैं और न ही प्रक्षिप्त हैं।

आर्य विद्वानों से निवेदन है कि वे इस पर्व की उपादेयता पर ध्यान देकर इसे व्यावहारिक रूप दें।

★

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज, मेस्टन रोड कानपुर की यह शोक सभा–आर्य जगत के प्रसिद्ध वक्ता एवं विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शास्त्री के आकस्मिक देहावसान पर शोक प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे आचार्य जी को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार वालों तथा आर्य जगत के आर्य महानुभावों को शक्ति देवे कि इस असह्य दुःख को सहन कर सकें। श्री आचार्य जी वहाँ बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी थे वहीं वे सार्वदेशिक सभा के भी अधिकारी रहे, आपका जीवन सरल सादा था इन पदों पर रहते हुये वर्षों आर्य समाज के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं। आपके न रहने से जो आर्य जगत् की क्षति हुई है वह अपूर्णीय है।

आपका कद लम्बा वाणी में गम्भीरता थी इसके साथ ही श्री लक्ष्मीधर जी शर्मा डा० बालमुकुन्द सहदेव शास्त्री श्री धर्मसिंह आदि ने भी श्री आचार्य जी के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट किये।

सूचना

श्रावणी के उपलक्ष्य में प्रेस में अवकाश रहने के कारण 'आर्यमित्र' का आगामी २८–८–८८ वाला अङ्क प्रकाशित नहीं होगा।

–व्यवस्थापक

आ०स० कैसरबाग का वेदप्रचार सप्ताह

आर्य समाज कैसरबाग (लखनऊ) का वेद प्रचार सप्ताह (श्रावणी पर्व) २७–८–८८ से ३–९–८८ तक घंटाघर पार्क हनुमान मन्दिर अमीनाबाद के प्रांगण में सम्पन्न होगा। प्रतिदिन प्रातः ७–३० से ९–०० बजे तक यज्ञ भजन एवं वेदोपदेश सायं ७–०० से ९–०० बजे रात्रि तक भजन एवं वेदोपदेश मुख्यवक्ता–वेदमनीषी श्री हरवंशलाल मेहता होंगे।

वेद-दर्शन

वीरेन्द्र गुप्ता का नवीनतम ग्रन्थ

मूल्य ८०) रुपये

जिसमें चारों वेदों से मानव उपयोगी विषयों को संग्रहीत किया है जैसे–पुत्र की कामना में पुत्रेष्टि यज्ञ, दीर्घायु के लिए–संजीवन सूक्त, विद्या प्राप्ति के लिए–सरस्वती सूक्त, धन प्राप्ति के लिए–श्री सूक्त, व्यापार वृद्धि के लिए–वाणिज्य सूक्त, दैविक विपत्तियों के लिए–शान्ति सूक्त, आदि अनेक विषयों को अंकित किया गया है। यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

१०-९-८८ तक केवल ४०) रु० में। मनीआर्डर द्वारा शीघ्र धन भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा सकते है। पैकिंग पोस्टेज का अतिरिक्त वी० पी० किया जायगा।

वीरेन्द्र नाथ अश्विनी कुमार
प्रकाशन मंदिर बाजार चौक मुरादाबाद

सफेद दाग से छुटकारा पाये

आयुर्वेदिक इलाज से हजारों रोगी अच्छे हो चुके हैं। सभी प्रकार के इलाज से निराश हो गये हो तो भी एकबार अवश्य आजमायें। रोग विवरण भेजकर सलाह या इलाज के लिये लिखें।

पता—समाज कल्याण (आर. एल.)
पो० कतरी सराय (गया)–५

निःशुल्क ट्रैक्ट मंगाइए

आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र लखनऊ ने आर्य संस्कृति के प्रचार हेतु निम्न ट्रैक्ट प्रकाशित किए हैं। जनता इन्हें निःशुल्क वितरणार्थ मंगाये–(१) हिन्दुओं की चेतावनी (२) कुरान का पैगाम (३) सती प्रथा शास्त्र सम्मत नहीं। लिखें–

डा० ऋषिदेव विद्यालंकार, निदेशक आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र
ई२/ई२ रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ | घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८५

भाद्रपद कृष्ण ९ रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक ४ सितम्बर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	३५

उत्तर प्रदेश में-

संस्कृत को पाठ्यक्रम में अनिवार्य करने का प्रयास किया जाएगा

—स्वरूप कुमारी बख्शी

★ ★ ★

मथुरा २१ अगस्त–उत्तर प्रदेश की शिक्षा मन्त्री श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी ने ब्रज अकादमी वृन्दावन में आयोजित सर्ववेद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि वेद ईश्वरीय वाणी है।

उन्होंने कहा कि आज विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। इतने विनाशकारी अस्त्र-शस्त्र आज विकसित देशों के भण्डार में भरे पड़े हैं तथा कम्प्यूटरों की मर्जी पर वे इस तरह आधारित हैं कि एक छोटी सी भूल पूरे विश्व के विनाश का कारण बन सकती है। ऐसी स्थिति में विश्व को शान्ति की आवश्यकता है जो कि वेदों के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय से ही प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि वे संस्कृत के विकास के लिए सभी सम्भव प्रयास करेंगी तथा पाठ्यक्रम के त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत इसे अनिवार्य स्थान दिलाने का प्रयास करेंगी।

भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार में ब्रज अकादमी के योगदान की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जब-जब विश्व विनाश और अशान्ति की ओर अग्रसर होता है, कोई न कोई विभूति उसकी रक्षार्थ आ खड़ी होती है। सैकड़ों वर्ष पूर्व आदि शंकराचार्य ने तथा वर्तमान युग में स्वामी दयानन्द ने वेदों का शंखनाद कर संस्कृति की रक्षा कर शान्ति स्थापना का प्रयास किया था। आज इसी कार्य को सन्त श्रीपाद बाबा कर रहे हैं। अन्तर इतना ही है कि ब्रजभूमि में यह आयोजन होने के कारण श्रीकृष्ण की वंशी का स्वर प्राप्त कर यह विश्व शान्ति की स्थापना का सहायक अंग बन गयी है।

शिक्षा मन्त्री ने घोषणा की कि वे ब्रज और वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित अनुसन्धान और अन्वेषण को समर्पित ब्रज अकादमी को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने का प्रयास करेंगी।

उत्तर प्रदेश के नियोजन मन्त्री श्री रघुवीरसिंह यादव ने कहा कि शिक्षा मन्त्री बख्शी जी का संस्कृत को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने व ब्रज अकादमी को विश्वविद्यालय का स्वरूप प्रदान करने का सुझाव अति सामयिक है इसका वे भी अनुमोदन करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने शिक्षा मन्त्री की इस घोषणा का स्वागत करते हुए संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार में सतत संरत आर्यसमाज की ओर से उन्हें साधुवाद देते हुए उक्त घोषणा को अविलम्ब मूर्तरूप दिये जाने का आग्रह किया है।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—भाद्रपद कृष्ण ९ संवत् २०४५, रविवार ४ सितम्बर १९८८, दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

गौरव गाथा—

चितचोर माखनचोर की

**

...और आ गई फिर वही भादों की काली अन्धेरी, घनघोर घटाओं से गरजती बरसती अष्टमी की रात, जब यशोदा मैया ने एक काला सपूत जन दिया था। जसोदा तूने—...... "काली अंधेरी में जायो......"। नहीं नहीं, जना नहीं था—गोद लिया था, उधार का ललना। काला इतना कि पता ही नहीं चला अन्धेरी रात में, कहां पैदा हुआ और कहां पहुंच गया। और फिर बड़ा हुआ तो किसी ने कहा—माखनचोर है, तो किसी ने कहा—नहीं नहीं, जिसके द्वारे लाख-लाख गायें बन्धी हों, वह मुट्ठी भर माखन की चोरी करेगा, चोरी का तो बहाना है, वह हमारा चितचोर है और ऐसे चोर पर हम अपने प्राण न्यौछावर करते हैं। ......और आज इतना प्यार उसके लिए...... हर मां यशोदा बनने के लिए तड़प रही है। घर-घर में पालने झूल रहे हैं। हर कोई व्रत रखे हुए है—काश! उसी के घर में वह आ जाये और उसकी कोख पवित्र हो जाय। वेद ने ऐसी ही जनयित्री मां को कहा है—

"पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम्,
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ।।"

—अथर्व० ३-२३-३

हे मां! (पुमांसं पुत्रं जनय) तेजस्वी पुमान् पुत्र को उत्पन्न करना ताकि (तं पुमाननु जायताम्) आगे भी पुमान् ही पुत्र पैदा हों। तू (जातानां पुत्राणां माता) ऐसे ही और पुत्रों की माता है और (च) उनकी भी (यान् जनयाः) जिनको तू आगे उत्पन्न करेगी।

......और अब बताइये वह कौन था। हम कहते हैं कि वह वह नहीं था। वह होने की उसे जरूरत ही क्या थी। पर वह था क्या?—एक रिश्ता हो तो बताया जाय—योगियों का योगी था, तो प्रेमरस की साक्षात् प्रतिमूर्ति। सखाओं का सखा था, तो दुश्मनों का दुश्मन। जिद्दी इतना कि महाभारत करा ही दिया क्योंकि अत्याचार मिटाना था और 'विनाशाय च दुष्कृताम्' के लिए तो आया ही था। दयालु इतना कि दीन सुदामा की दशा देखकर आंसुओं से उसके पैर धोने लगा। काला इतना कि काली अन्धेरी डर जाये और सुन्दर इतना कि बिहारीलाल कूद पड़े—

सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मेरे हिय बसौ सदा बिहारीलाल ।।

मीरा पागल होकर नाचने लगी। रसखान मुसल्मानियत भूल गये, पुनर्जन्म की दुहाई देने लगे—

'मानुष होऊं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारिन,
जो खग होऊं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारनि।

कोमल इतना कि माखन चोरी करते पकड़ा गया तो मूसल में बन्धे हाथों को न छुड़ा पाया और शक्तिशाली इतना कि उफनाती हुई यमुना के अन्तराल से फुफकारते हुए नाग को नाथ के ऊपर ले आया—जनरक्षा का व्रत जो लिया था। गरीब निवाज इतना कि दुर्योधन की मेवा त्याग दी, दासी पुत्र विदुर के हाथ का रूखा-सूखा साग खा आया—समता, सम ता, बन्धुता का आदर्श लेकर जो आया था। विनीत इतना कि जिसने जहां पुकारा दौड़ा हुआ चला आया और कठोर इतना कि यशोदा रोते-रोते मर गई—ज्ञान का उपदेश करने वाला तो भेज दिया पर खुद नहीं आया—प्रजाहितेरत होकर फुर्सत ही नहीं मिली' द्रौपदी ने पुकारा—बचाओ मेरी लाज, सभा में बैठे हुए यह मेरे रिश्तेदार बिक गये हैं मेरी रक्षा नहीं कर सकते—तो दौड़ा हुआ चला गया, चीर का तो बहाना है—चीर कहीं बढ़ता है, आते ही हुंकार लगाई—खबरदार! जो किसी ने द्रौपदी को हाथ लगाया—टांगें तोड़ कर रख दी जायेंगी " ... " यह सतियों का देश है, नारी यहां पूजा के स्थान पर बिठाई जाती है—यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते'।

तो आइए, हम बताते हैं—इतिहास के इस अद्भुत व्यक्तित्व और कृतित्व का रंगकर्मी वह कृष्ण, कौन था। हमने उसे अपने वेद प्रचार सप्ताह के समापन पर मानवीय मूल्यों के परिपेक्ष्य में उतारा, संवारा और संजोया है। हमारा मत है—'उसका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश सर्वोत्तम था। उसने जीवन पर्यन्त कोई अधर्म का आचरण नहीं किया।' हमारा ध्येय 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है और यही उस महापुरुष का उद्घोष था—

'सर्वान् मतान परित्यज्य वेदानां शरणं व्रज।
ते त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

जन्माष्टमी के इस पावन पर्व पर इस कर्त्तव्य का आर्यजन निष्ठापूर्वक पालन करें यही 'आर्यमित्र' का सन्देश है।

★

प्रभु की कृपा दृष्टि

ओ३म् इन्द्रश्च मृडयाति नो न नः पश्चादघं नशत्। भद्रं भवाति नः पुरः।

—ऋ० २-४१-११

(भावानुवाद)

दुःख हर्ता सुखदाता प्रभु की कृपा दृष्टि जब होती है।
मन की पाप वृत्तियों की सब नष्ट कालिमा होती है ।।

मैंने खुद तो पाप सहेजे प्रबल वासना के कारण।
दुःख दरिद्रता, कलुषित इच्छा मैंने स्वयं किये धारण ।।

मानव तन पाकर के भी यदि नहीं संवारा यह जीवन।
परमपिता की परम कृपा से मिला हमें जो अनुपम तन ।।

वह जीवन ही वह जीवन है जो जीवन स्वयं बनाता है।
परम पिता से प्रीति लगाकर मनवांछित फल पाता है ।।

उस प्रभु से अपनी डोर जोड़ के जो नर जीवन जीते हैं।
वही सदा करुणामय मां के अमृत रस को पीते हैं ।।

सदा हमारे पाप पंक को वह जगदम्बा धोती है।
प्रबल साध जब मेरे मन में अघदर्शन की होती है ।।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर, इन्दिरानगर, लखनऊ

आर्य नरेश--

राजर्षि राजा रणंजय सिंह

[डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, अमेठी]

अमेठी के राजा रणंजय सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे। ४ अगस्त १९८८ ई० को मध्य रात्रि में १२-३० बजे उनका ८७ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। २९ अप्रैल १९०१ ई० में भूपति भवन, रामनगर अमेठी में उनका जन्म हुआ था।

आर्य समाज का प्रभाव—

राजा रणंजय सिंह देश के उन थोड़े से राजाओं में थे जो महर्षि दयानन्द के भक्त और आर्य समाज के अनुयायी हुये। अपनी बाल्यावस्था में ही आर्य समाज के प्रभाव में आये और ऋषि दयानन्द की विचारधारा को स्वीकार किया। तब से आज तक धर्म प्रचार और आर्य समाज के सुधार में निरन्तर लगे रहे। धार्मिक तथा सामाजिक कुप्रथाओं, कुरीतियों, अन्धविश्वासों, और पाखण्डों के विरुद्ध जनजागरण का शंखनाद फूंकने वाले राजाओं की संख्या नगण्य रही है। किन्तु राजा साहब उन्हीं बिरले राजाओं में से थे। बलिप्रथा, मद्यपान, शुभ अवसरों पर वेश्या नृत्य, छुआछूत, अनमेल विवाह, अस्पृश्यता, नारी अत्याचार आदि धार्मिक तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करने का उन्होंने सार्थक प्रयास किया और उन्होंने इसमें सफलता भी प्राप्त किया। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान पद को तीन बार सुशोभित किया।

स्वातन्त्र्य संग्राम में योगदान—

आर्य समाजी होने के कारण राजा साहब देशभक्ति और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी अग्रणी रहे। राष्ट्रभक्ति उन्हें दाय में मिली थी। इनके पितामह राजा लाल माधवसिंह ने भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम १८५७ ई० के गदर युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया था। राजा साहब ने १९२१ ई० से स्वदेशी वस्त्र खादी को अपनाया। तब से आजीवन वे पूर्ण स्वदेशी वस्त्रों में ही रहे। १९२६ ई० में केन्द्रीय धारा सभा के सदस्य चुने गये। उस धारा सभा के सदस्यों में वे सबसे कम अवस्था के थे। मालवीय लाला लाजपत राय दल की ओर से राजा साहब प्रत्याशी बने और विजयी रहे। १९३० ई० में नमक सत्याग्रह में भाग लिया और सेन्ट्रल एसेम्बली की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। नमक सत्याग्रह के समर्थन के कारण अमेठी रियासत अंग्रेजों द्वारा कोर्ट आफ वार्ड्स के अधीन कर लिया गया। १९२६ ई० की केन्द्रीय धारा सभा के सदस्यों में राजा साहब अकेले बचे थे। अब वे भी चल बसे।

राजा साहब को कांग्रेस की नरम दलीय नीति पसन्द थी। इस क्षेत्र में वे महात्मा गांधी की अपेक्षा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अनुयायी थे। लाला लाजपत राय से उनका निकट का सम्पर्क था। पं० मदन मोहन मालवीय के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। मालवीय जी को अमेठी राज परिवार से बहुत ही घनिष्ठता थी। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को राजा साहब बहुत आदर देते थे। भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों से राजा साहब का परिचय था। क्रान्तिकारी युवक फरारी की अवस्था में गुप्त रूप से अमेठी रहते थे। क्रान्तिकारी और प्रसिद्ध लेखक यशपाल ने अपने संस्मरणों में राजा साहब की उदारता तथा क्रान्तिकारी कार्यों में सहभागिता का उल्लेख किया है।

प्रसिद्ध लेखक श्री गुरुदत्त राजा साहब के प्रथम प्राइवेट सेक्रेटरी रहे हैं। गुरुदत्त स्वयं एक क्रान्तिकारी तथा क्रान्तिकारियों के साथी थे।

देश सेवा—

आप आजादी के बाद १९५२ से १९५७ तक विधान सभा, १९५७ से १९६२ तक विधान परिषद्, १९६२ से १९६७ तक लोक सभा तथा १९६९ से १९७७ तक पुनः विधान सभा के सदस्य रहे। आजादी से पूर्व १९२६ से १९३० तक सेन्ट्रल एसेम्बली के सदस्य रहे। लोक सभा में राजा साहब की भूमिका को प्रखर सांसद पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है—

'शिक्षा, कृषि और रक्षा, यह उनकी रुचि के विषय रहे। हर विषय पर और हर समय बोलने की आदत तो शायद आरम्भ से नहीं रही। पर जितना वह बोलते उतना तैयारियों से बोलते थे। जिनका कुछ भी उनके जीवन की पृष्ठभूमि से परिचय था, विशेष कर प्रयाग वासी तीनों प्रधान मन्त्री तो और ध्यान से उन्हें सुनते थे। भारतीय संसद् में सत्ताधारी दल के दो ऐसे सदस्य थे, जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी और गोवध बन्द करने के प्रश्न पर कभी सरकारी नीति का समर्थन नहीं किया। एक थे श्री सेठ गोविन्ददास और दूसरे राजा रणंजय सिंह। जब भी इन दोनों राष्ट्रीय प्रश्नों पर चर्चा उठी तो उन्होंने सचेतक को स्पष्ट कह दिया—यह हमारी मान्यताओं का प्रश्न है। इस पर हमें सरकार के साथ मत देने के लिये विवश न किया जाय।" राजा साहब द्वारा विधान सभा में प्रस्तुत गोवंश संरक्षण विधेयक डा० सर सीताराम की अध्यक्षता में समिति संगठित की गई और उत्तर प्रदेश में गोवध बन्दी का कानून बना। इसके अतिरिक्त भी लोक सभा और विधान सभा में समाज सेवा सम्बन्धी अनेक प्रस्ताव राजा साहब के प्रयास से पारित हुए। जैसे—आठवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा, उच्चकोटि की व्यायाम शालाओं की स्थापना, मद्यनिषेध आदि।

शैक्षणिक सेवायें—

अमेठी क्षेत्र में शिक्षा प्रसार का एकमात्र श्रेय राजा साहब को है। जमींदारी उन्मूलन के बाद भी आपने अपनी चल अचल अतुल सम्पत्ति एवं सहयोग देकर अमेठी राज्य में अनेक इण्टर कालेज, जूनियर हाई स्कूल, आदर्श विद्यालय, वैदिक बाल मन्दिर, दीक्षा विद्यालय तथा स्नातकोत्तर महा विद्यालय की स्थापना की। आज से ६ वर्ष पूर्व राजा साहब ने अपनी धर्मपत्नी महारानी सुषमादेवी के देहावसान हो जाने पर उनकी स्मृति में लाखों रुपयों का दान देकर महारानी सुषमा देवी बालिका विद्यालय की स्थापना की थी। अमेठी के अतिरिक्त जनपद, प्रान्त तथा देश के विभिन्न भागों में स्थापित अनेक शैक्षणिक संस्थाओं को भी आपने मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग देकर समृद्ध बनाया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, काशी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अस्पृश्यता अस्मिता का सवाल है

[श्री विट्ठलराव आर्य एम०एस० सी०, एल एल०बी० पदयात्री']
महबूब नगर (आ० प्र०)

स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे हरिजन व दलितों को मन्दिर प्रवेश कराने हेतु आर्यसमाज द्वारा निकाली गई उदयपुर से नाथद्वारा तक की पद यात्रा ने 'गाधी के सपनों का भारत' की याद दिलाई है। छुआ-छूत कोढ़ की बीमारी है। छुआ छूत के रहते देश को आजाद करा लेने का कोई मतलब नहीं। इस बात को गांधी जी ने खूब अच्छी तरह से पहचाना था। इसलिए राष्ट्रपिता गाधी जी के लिए आजादी की लड़ाई से कहीं ज्यादह इस कोढ़ को समाप्त करना था। गांधी जी ने दलित व हरिजनों को उनके सामाजिक अधिकार दिलाने के लिए अहर्निश प्रयत्न किया। आजादी के ४० वर्षों बाद भी देश मे यह कोढ़ अभी भी है। इस कोढ़ को धर्म सम्मत कहकर प्रचारित करने वाले पुरी के के शंकराचार्य जैसे लोग देश के लिए कलक हैं।

संविधान की धारा १७ मे डा० अम्बेडकर ने अस्पृश्यता को अर्थात किसी भी प्रकार के छुआ छूत को अपराध करार दिया। धारा १९ (१) व २६ व अन्य धाराओ मे छुआ-छूत को समाप्त करने व समान सामाजिक अधिकार देने की बात उल्लिखित करने के बावजूद भी शंकराचार्य ने इसको नकार कर इस कोढ़ को बढ़ावा देने का बयान देकर देशघाती काम ही किया है संवैधानिक अधिकार प्राप्त होने के बावजूद भी हरिजन मन्दिर में नहीं जा सकता और न ही सरकार उन्हें संवैधानिक अधिकार दिलाने के लिए कृत संकल्प है। स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा से व उनकी गिरफ्तारी से यह स्पष्ट हुआ है कि सरकार हरिजनों के पक्ष में नहीं है। वह मठाधीशो के हाथ कठपुतली बनी हुई है।

स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा को कुछ लोग राजनीतिक स्टंट कह रहे हैं। राजनीतिक स्टंट है या नहीं यह तो समय बतलायेगा पर इतना जरूर है कि कठमुल्लाओं के धार्मिक अन्धविश्वास व भेदभाव की नीति को उन्होने चुनौती दी है। स्वार्थ की राजनीति से ग्रस्त देश लगभग मौलिक समस्याओं को भूल चुका है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक ढंग से आदमी-आदमी के बीच विषमता की रेखा खींचकर उन्हें हर ढग से शोषित-पीड़ित जिन्दगी गुजर करने के लिए मजबूर करने वाली मतान्ध व सामन्त शाही ताकतों को तोड़ना जरूरी है। गांधी जी के बाद पुनः मौलिक समस्या को उजागर कर संवैधानिक अधिकार दिलाने के लिए यह पदयात्रा साहसिक पदयात्रा कहलायेगी। थोड़ी देर के लिए इस पदयात्रा को राजनीतिक स्टंट मान भी लिया जाए तो सरकार भी तो राजनीतिक स्टंट ही कर रही है। सरकार राजनीतिक स्टंट के साथ-साथ तानाशाही व संविधान विरोधी ताकतों को साथ दे रही है जबकि स्वामी अग्निवेश प्रगतिवादी ताकतों का, सुधारवादी ताकतों का साथ दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में भी अग्निवेश जी की आवाज ठीक ही है। पदयात्रा ने कठमुल्लाओं की नींव को हिलाने मे काफी हद तक काम किया है। गांधी जी के इस देश में आज भी भेदभाव है। जातिवाद, छुआ-छूत कोढ़ है। और इसे बनाए रखने के लिए अभी भी कुछ लोग प्रयत्नशील हैं। इसे अब नकारा नहीं जा सकता। इसे तोड़ने के लिए प्रगतिशील शक्तियो का उभरना बहुत जरूरी है। सरकार की नीति से भी स्वार्थी राजनीतिज्ञो के चेहरे बेनकाब हुए हैं। जिस तरह से खुलकर जातिवादी ताकतों का उन्होने समर्थन किया है वह कांग्रेस के इतिहास मे बेमिसाल है। साथ ही साथ अपने आपको समस्त हिन्दुओं का हिमायती मानने वाले 'भाजपा' के के नेताओं व कार्यकर्त्ताओं के चेहरे भी बेनकाब हुए हैं। दलितों को सामाजिक अधिकार देना, इन्हे ना मंजूर है। हमेशा-हमेशा के लिए उन्हें उसी स्थिति में रखना चाहते हैं। कुछ अन्य प्रान्तों के नेता जरूर इसका विरोध किए हैं पर क्या वे अपने ही दल के ऐसे लोगों का बहिष्कार करने के लिए दबाव डाल सकते हैं ?

नाथद्वारा का मन्दिर उत्तर भारत का सबसे धनी मन्दिर है। वर्ष भर में लगभग ढाई से तीन करोड़ का चढ़ावा चढ़ता है। मन्दिर में बाकायदा दो कुएं बने हुए हैं। जिनमें घी डाला जाता है और जरूरत पर मोटर पम्प से निकाला जाता है। इतना बड़ा गोदाम है कि जिसमें आसानी से १०-१२ ट्रक अन्दर आ सकते हैं। धनी मानी लोगों के लिए विशेष रास्ता भी बना हुआ है। दीपावली त्योहार के अवसर पर 'अपरस' नाम से विशेष उत्सव का आयोजन कर हरिजनों को कुछ दूर अन्दर तक आने दिया जाता है, उसी अवसर पर 'अन्नकूट' के नाम से लड्डू आदि खाद्य पदार्थ प्रसाद के रूप में ऊपर फेंका जाता है जिसे हरिजन लूटते हैं। यह प्रथा अन्नकूट-अन्नलूट के नाम से प्रसिद्ध है। अन्नलूट की इस प्रथा से सवर्ण यह बताने की कोशिश करते हैं कि देखो ये कैसे नीच हैं। यह प्रथा ही सामाजिक गैर-बराबरी के व्यवहार को दर्शाती है। पर मन्दिर व्यवस्थापकों का कहना है कि बिना रोक टोक कोई भी मन्दिर में आ सकता है लेकिन उन्हें मन्दिर की मर्यादाओं का पालन करना होगा। याने कंठी-डोरा-चरणामृत लेकर हरिजन मंदिर में प्रवेश कर सकते हैं। यह नियम पुष्टि मार्ग मे दीक्षित होने के लिए है। सामान्य दर्शनार्थियों के लिए नहीं। इस तरह से हरिजनों से भेद-भाव किया जाता है। इसके बावजूद भी यह पता चला है कि गत ४०० वर्षों से स्थानीय हरिजन कंठी-डोरा लेकर भी अन्दर नहीं जा सकते। यहां तक कि उन्हे होटलों में चाय नहीं दी जाती। वे नाई से बाल नहीं कटवा सकते। सब्जीवाला सब्जी ऊपर से डालता है।

स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा १० जुलाई को प्रसिद्ध हरिजन नेता श्री चितामणी के पोरोहित्य में 'जाती तोड़ो यज्ञ' के बाद आर्यसमाज उदयपुर से आरम्भ हुई। उससे एक दिन पूर्व ९ जुलाई को रात को आम सभा में स्वामी अग्निवेश के विरुद्ध नारेबाजी व पत्थरबाजी हुई। यह मन्दिर माफिया का गिरोह था। मन्दिर में माफिया लोगो ने महाराष्ट्र की शिवसेना के तर्ज पर एक शिवदल नाया है। जिसने माफिया संस्कृति की ता के लिए उन्होने चारो ओर आतङ्क फैला रखा है। गुण्डागर्दी के साथ-साथ जब चाहे तब बन्द का आयोजन करा लेते हैं। इन्हे सरकारी अफसरों सहित स्थानीय कांग्रेस व भाजपा का पूरा समर्थन प्राप्त है। देलवाडा गांव गुजर रहे स्वामी अग्निवेश व उनके पदयात्रियों पर शिवदल के कार्यकर्त्ताओं ने पथराव बाजी किया व उनका पुतला भी जलाया। इनकी संख्या नगण्य थी। पर पूरे उत्साह के साथ गांव के सारे लोग व महिलायें बड़ी संख्या मे स्वामी अग्निवेश की बात सुनने को उपस्थित थीं। दूसरे दिन के पड़ाव स्थान गांव नेगडिया में मन्दिर व्यवस्थापक कमेटी का एक दल स्वामी जी से मिलने आया। उनका कहना था कि कंठी-डोरा-चरणामृत लेकर हरिजन मन्दिर में आएं। बाद में यह भी पता चला कि कंठी-डोरा-चरणामृत लेने के लिए स्वामी जी मान भी जाते तो वे नहीं जाने देते। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि हम पुष्टी मार्ग मे दीक्षित होने के लिए नहीं आ रहे। केवल दर्शनार्थियों को उनका सामाजिक अधिकार दिलवाने के लिए आ रहे हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

ईसाई मत समीक्षा

★

[सोहनलाल अग्रवाल अधिवक्ता, जबलपुर]

पूर्व में हमने ईसाई मत की मूलाधार पुस्तक बाईबिल की उत्पत्ति पुस्तक पर्व तीन आयत नौ से तेरह के आधार पर यह दर्शाया था कि बाइबल की शिक्षाओं में प्रथम शिक्षा तमीज अर्थात् बुद्धि के वृक्ष के फल को न खाने की है।

ईसाई पादरी बाईबल को ईश्वरी संदेश कहते नहीं थकते। दूसरे धर्मों के ग्रन्थों को वे ईश्वरी सदेश नहीं मानते। परन्तु बाईबिल क्या है? यह देखें। अनुचित साहित्य अनाचार निरोध समितियां बाईबल को पढ़ें। जिन बातों के लिये स्त्री पुरुषों को जेल की सजा दी गई है, बाईबल में उनकी अपेक्षा कहीं अधिक घृणित बातें लिखी हैं। उत्पत्ति पुस्तक [जीनेसिस बुक] के १९ वें से ३८ वें अध्यायों में तो बहुत ही भद्दी बातें लिखी हैं। उन्हें आप स्वयं पढ़िये पर्व। १९ आयत नम्बर ३०–से ३८ निम्न प्रकार हैं।–(बाईबल का पाठ) ३०–और लूत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा, क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था, इसलिये वह और उसकी दोनों बेटियां एक गुफा में रहने लगे। ३१–तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए: ३२ सो आ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उसके साथ सोएं, जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें, ३३–सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर उसने न जाना कि वह कब उठ गई। ३४–और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा देख कल रात को मै अपने पिता के साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। ३५–सो उन्होने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था ३६--इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं। ३७--और बड़ी एक पुत्र जनी और उसका नाम मोआब रखा वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है मूल पिता हुआ। ३८--और छोटी भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बेनम्मी रखा वह अम्मोन् वंशियों का जो आज तक हैं मूल पिता हुआ।

इस पाठ को पादरी न स्वयं पढ़ना चाहते हैं और न अपने परिवारों में पढ़ सकते हैं। वह चाहते हैं कि विश्व के मानव भी इस कथा को न पढ़ें चूंकि हम बाईबल की समीक्षा में कुछ सामग्री प्रस्तुत करना चाहते हैं जो बाईबल के शब्दों में इस कथा को न चाहते हुए भी प्रस्तुत करते हैं--चार्ल्स स्मिथ संम्पादक ट्रुथ सीकर अमेरिका के शब्दों में–

यदि आप इस अनैतिक पुस्तक में इसी प्रकार की और घटनाएं पढ़ना चाहते हैं तो इसी उत्पत्ति पुस्तक के १६, २६ २९ ३० ३४ और ३९ वें अध्याय। शमूएल २५ २ समूयल ११ और १३ १३ और न्यायियों का वृतान्त १९ अध्याय भी पढ़ें। रुत और एस्तेर पुस्तकें तथा सोलोमन के भजन नैतिक होने की अपेक्षा अधिक मनोरंजक हैं। यदि ये पुस्तकें और अध्याय बाईबल में न होते तो ईसाई इनकी निन्दा करते। आप लैव्य व्यवस्था १५-१६ से ३३ यशायाह ३६ : १२ और यहेजकेल ४–१२--१५ भी पढ़ जाइए। हमने स्थानीय बाईबल समिति के अधिकारियों से कहा कि जब पूर्व पश्चिम में बाईबल के ऐसे पाठों की निन्दा होती है तो इन अंशों को बाईबल से निकाल क्यों नहीं देते। उत्तर था कि यह कैसे संभव है। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें समुल्लास के पैरा २२ में लिखा है (उद्धरण) कि पिता पुत्री भी इस मद्यपान के नशे में कुकर्म करने से न बच सके ऐसे दुष्ट मद्य को जो ईसाई आदि पीते हैं उनकी बुराई का क्या पारावार है? इसलिए सज्जन लोगों को मद्य के पीने का नाम भी नहीं लेना चाहिये। इसी लूत को पैगम्बर भी माना गया है। यदि इनके पैगम्बर ऐसे दुराचारी हैं तो इनके समाज मे क्या नहीं होता होगा। उत्पत्ति पुस्तक पर्व २१ सो यहोवा [परमेश्वर] ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उनके साथ अपने वचन के अनुसार किया। सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

इसमें विशेष बात यह है क सारा और इब्राहीम दोनों सौ-सौ वर्ष के थे और प्रजनन क्रिया में असमर्थ थे। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि अब विचार कीजिये कि सारा से भेंट कर गर्भवती किया यह काम कैसे हुआ? क्या बिना परमेश्वर और सारा के कोई गर्भ-स्थापना का कारण दीखता है? ऐसा विदित होता है कि सारा परमेश्वर की कृपा से गर्भवती हुई १११ बाईबल का ईश्वर यही करता है। हजरत ईसा मसीह भी परमेश्वर से ही माता मरियम के पेट से पैदा हुआ। यही उनका प्रथम सिद्धांत है जो अत्यन्त महत्व का है। ईसाई लोग चाहते हैं कि पूरा मानव समाज ईसा मसीह को सभी पापों से मुक्ति दाता स्वीकार करें। अतः उसी की शरण में पहुंचे। यह एक बड़ा भारी कपट है। कपटों से कुछ लोगों को तो सब समय के लिए, बेवकूफ बनाया जा सकता है। सभी लोगों को तो कुछ समय के लिये परन्तु सभी लोगों को सभी समय के लिए नहीं बनाया जा सकता। ईसाई पादरियों के पापों का घड़ा भर गया है और अन्ततः फूटेगा ही। ईसाई धर्म के घर माने जाने वाले देशों के नागरिक ईसाई धर्म को छोड़कर भारतीय सभ्यता को ग्रहण करते जा रहे हैं।

श्री वी० एस० हिरण्यप्पा ने एक पुस्तक हिन्दू डस्टिनी इन नोस्ट्राडामस। लिखी है। नोस्ट्राडामस एक फ्रांसीसी भविष्यवक्ता की १५५५ ए० डी० की लिखी पुस्तक में ईसाई धर्म इसके पोपों तथा ईसाई पादरियों के चरित्र पर काफी प्रकाश डाला है। श्री हिरण्यप्पा ने ईसाइत को धोखे तथा अन्धविश्वास पर खड़ा किया हुआ मत बताया है जिसका अन्त १९९९ ईस्वी में हो जावेगा। उसने लिखा है कि बहुत से पोप चरित्रहीन थे, और बलात्कार के दोषी थे। पोप जिओ–७ [९६३–९६५ ए० डी०] एक विवाहिता स्त्री के साथ सम्भोग करते हुए ही एक आघात से मर गए। पोप अलेक्जेण्डर [१४३१-१५०३] भी दुराचारी थे और वेश्याओं की महफलें लगाते थे खूब शराबें उठती थीं और सभी कुछ होता था लिखते हुए शर्म आती है। आगे श्री हिरण्यप्पा लिखते हैं कि अमेरिकन उपन्यासकार नेथिनल हाथोरन अपने विश्वविख्यात उपन्यास द० स्कारलट लेटर में ईसाई पादरियों के जीवन का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

(शेष पृष्ठ १० पर)

राष्ट्रीय पर्व–

पन्द्रह अगस्त

[डा० शकुनचन्द्र आर्य [illegible], (रायबरेली)]

निस्संदेह आजादी प्राप्ति के बाद के गत ४१ वर्षों के अन्दर देश ने सर्वतोमुखी प्रगति की। जहां १५ अगस्त १९४७ को जबकि हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की थी हमें एक मामूली सुई के लिए विदेशों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था, आज हम रेल इन्जन, हवाई जहाज, जलयान, विविध रक्षा सामग्री, अच्छे से अच्छे हथियार, वैज्ञानिक उपकरण, अन्तरिक्ष एवं दक्षिण ध्रुवयात्रा सम्बन्धी सामग्री, कारें, ट्रकें, भवन निर्माण सम्बन्धी सामग्री, गगनचुम्बी भवन, दैनिक जीवन के लिये उपयोगी विविध वस्तुयें, विद्युत एवं परमाणु उपकरण आदि बनाने में समर्थ हैं।

इसी प्रकार सैनिक क्षेत्र मे भी हमारी प्रगति महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है। जहां उस समय हमारे पास एक अति साधारण सेना थी जिसे हर वस्तु के लिए ब्रिटेन के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था। आज हमारी स्थल, जल एवं नभ सेनायें विश्व की महानतम सेनाओं में से हैं जो कि प्रधान मन्त्री राजीव गांधी के शब्दों में 'किसी भी परिस्थिति में किसी भी आक्रमण का मुंहतोड़ उत्तर देने मे समर्थ हैं।' इसका प्रमाण उन्होंने सन् १९७१ ई० में दिया जबकि उन्होंने भारत–पाक युद्ध में तमाम बंगलादेश में एक लाख पाक सैनिकों को आत्म-समर्पण के लिए विवश किया था। उस समय भी विपक्षी दलों की आलोचना के बावजूद लंका में उसने जो भूमिका अदा की है वहां उसने स्वयं हस्तक्षेप कर पाकिस्तान तथा पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा हस्तक्षेप कर भारत-लंका सम्बन्धों को बिगाड़ने के मन्सूबे पर पानी फेर दिया। यही नहीं शस्त्रास्त्रों के मामले में भी हमने आश्चर्यजनक उन्नति की। जहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हमारे पास मामूली बन्दूकें, तोपखाना तथा कुछ हवाई जहाज थे, आज हमारे पास हवाईजहाजों का पर्याप्त स्टाक, हवाई हमलों से रक्षा हेतु उत्तम कोटि के राडार, परमाणु शस्त्रास्त्र, परमाणु बम बनाने की क्षमता वाली सामग्री, जमीन से जमीन तथा जमीन से आसमान तक मार करने वाले क्षेप्यास्त्र, समुद्री जहाजों का विशाल बेड़ा, विध्वंसक ऐसे विशाल जल पोत हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हमारी प्रगति महत्वपूर्ण है जहां पहले हमें मामूली शिक्षा के लिये विदेश जाना पड़ता था अब हमारे देश में ऐसे विद्यालय खुल गये हैं जिनमें विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, कानून, भौतिक विज्ञान तथा कृषि शास्त्र आदि की अच्छी से अच्छी शिक्षा दी जाती है, जिनमें अध्ययन के लिए विदेशों से विद्यार्थी एवं प्रशिक्षणार्थी आते हैं तथा जिनसे पढ़ी भारतीय प्रतिभायें अमरीका आदि विश्व के अनेक देशों में भारत का माथा ऊंचा कर रही हैं।

राजनीति के क्षेत्र में तो हमारी प्रगति गर्व का विषय है। जहां १५ अगस्त १९४७ को हम ब्रिटेन की दया पर निर्भर उसके एक पिछलग्गू राष्ट्र थे। आज हम विश्व के एक प्रमुख राष्ट्र, निर्गुट राष्ट्रों के नेता, ब्रसेल्स एवं राष्ट्र मण्डल के अति प्रमुख सदस्य हैं। हमारी बात विश्व में ध्यान से सुनी जाती है।

परन्तु उपरोक्त प्रगति के बावजूद हमारी स्थिति निरापद नहीं है। जिस प्रकार कि आज भी हमारे ऊपर अरबों रुपयों का विदेशी कर्ज है, विघटनवाद, राष्ट्रीयता, आतंकवाद, अशान्ति, भ्रष्टाचार आदि में निरन्तर वृद्धि हो रही है, चीन, पाकिस्तान तथा अमरीका आदि हमारी स्वतन्त्रता को समाप्त करने के लिए षड्यन्त्ररत हैं, चिन्ता एवं दुख का विषय है तथा इस बात का संकेत है कि हम सर्वत्र राष्ट्रविरोधी तत्वों से सावधान रहें तथा अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये तन, मन एवं धन से प्रतिक्षण तैयार रहें।

परन्तु हमारी सांस्कृतिक गुलामी चिन्तनीय विषय है। हमने स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी या लोकमान्य तिलक आदि महापुरुषों द्वारा प्रतिपादित स्वदेशी भावना का परित्याग कर अंग्रेजियत एवं पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। हम अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाकर, उनको अंग्रेजी वेषभूषा में देखकर गर्व का अनुभव करते हैं दैनिक जीवन में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग यहां तक कि विवाहादि में अंग्रेजी में निमन्त्रण देना बड़प्पन की निशानी समझते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के प्रयोग को हम पिछड़ेपन की निशानी समझने लगे हैं। हमारे शिष्टाचार एवं खानपान का ढंग विदेशी होता जा रहा है। विवाहादि में खड़े-खड़े खाना क्या अभारतीयता की निशानी नहीं है? हम 'जियो और जीने दो' 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'मातृवत् परदारेषु' तथा लोष्ठवत् परद्रव्येषु' के भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों को भुलाकर 'खाओ–पिओ और मौज करो' के अंग्रेजी आदर्श का पालन करने लगे हैं जो कि हमारी सांस्कृतिक दासता का परिचायक है। जिसके कारण हमारी यथोचित प्रगति नहीं हो रही है। गत ४० वर्षों में जहां जापान एवं चीन आदि एशियाई देश स्वभाषा एवं स्वसंस्कृति अपनाने के कारण पश्चिम के देशों को अनेक मामलों में पिछाड़ चुके हैं, हम अभी भी द्वितीय श्रेणी के राष्ट्र बने हुये हैं। निस्सन्देह बिना अपनी भाषा अपनाये द्रुतगति से उन्नति असम्भव है। इस बात को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र निम्नांकित शब्दों में व्यक्त किया–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु भाषा उन्नति बिना, मिटै न हिय को शूल ॥

★

निर्वाचन

आर्यसमाज आर्मापुर स्टेट कानपुर

प्रधान–श्री बलदेवराज कलोहा

मन्त्री–श्री गोरखनाथ गुप्ता

वेदाधारित भारतीय राष्ट्र-चिन्तन

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

"वसुधैव कुटुम्बकम्" सारी वसुधा ही जिसका कुटम्ब है और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को आर्य-श्रेष्ठ बनाने का जिसका संकल्प है, वह वैदिक संस्कृति मात्र किसी राष्ट्र के उत्थान की बात करे, उसमें बड़ा विस्मय सा प्रतीत होता है, किन्तु यह बात विस्मय की नहीं वास्तविकता की है, सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिए पहले तो व्यक्ति को श्रेष्ठ बनना होगा। जब व्यक्ति श्रेष्ठ होगी तभी समष्टि श्रेष्ठ बन सकेगी। वही वस्तु स्थिति एक कुटम्ब की है। कुटम्ब का हर प्राणी सुगढ़ और सुसभ्य होगा। तभी कुटम्ब सभ्य होगा ऐसे कुटम्बों से मिलकर राष्ट्र सभ्य होगा। ऐसे राष्ट्र से मिल कर सारी वसुन्धरा ही सुन्दर हो जायेगी। जिस प्रकार एक छोटे से कुटम्ब में कोई एक प्राणी अपनी कुटिलता से विक्षोभ उत्पन्न कर देता है, ठीक वैसे ही विश्व कुटम्ब के मनोरम वातावरण को कोई एक सदस्य देश अपनी कूट-नीति से विघटन के कगार पर ले जाकर खड़ा कर देता है। इसका सबसे प्रबल उदाहरण स्वर्णमयी लंका है जिसे देखकर राम ने लक्ष्मण से यही तो कहा था:-

अपि स्वर्णमयी लंका
न मे रोचते लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी॥
—वाल्मीकि रामायण

अर्थात् हे लक्ष्मण। यद्यपि लंका सोने की है तो भी मुझे रुचिकर नहीं है, क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती है। व्यक्ति की अभिरुचि उसके मनोभाव पर निर्भर है, और मनोभाव का धरातल भूमि और उस पर वास करने वाले मानव समूह के परम्परागत शिक्षण एवं चरित्र पर आश्रित है। इसी लिए तो राम को सोने की लंका से बढ़कर अपनी मातृभूमि अधिक आकर्षक लगती है। सोने से अधिक महत्त्व उस भूमि पर होने वाले मानव के आचरण का है। शिष्ट आचरण से मिट्टी भी सोने से अधिक उत्तम हो जाती है, जब कि दुष्ट आचरण से सोना मिट्टी भी नहीं रहने पाता है। शान्ति पूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्त पर चलकर यदि हम वेद की वाणी का श्रवण करते हुये उसका पालन करें, तो हम अपने २ राष्ट्रों को आत्मनिर्भर एवं ऐश्वर्यवान बना सकते हैं, और इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व या—मानवता ही सुखी एवं सहृदयी बन सकती है। इस प्रकार सारे विश्व को एक कुटम्ब ही नहीं उसे श्रेष्ठ भी बनाया जा सकता है।

भौगोलिक सीमाओं को मर्यादित विस्तृत क्षेत्र को यदि देश कहते हैं, तो इस भाग पर अवस्थित मानव समूह उसकी प्राकृतिक सम्पदा, उसकी अभिव्यक्ति पृथा के सम्मिलित स्वरूप का नाम राष्ट्र है। वेद ने राष्ट्र के विभिन्न पक्षों पर प्रचुर चिन्तन किया है, जो राष्ट्र की सुख समृद्धि एवं विकास की प्रेरणा देता है।

इळा सरस्वती मही
तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः॥
ऋक-मं० ५/अ०स० ५/मंत्र ८

"हे मनुष्यो! नहीं नाश को प्राप्त होने वाली प्रशंसित विद्या वाणी, एवं भूमि सुख को देने वाली श्रेष्ठ गुणवती तीन देवियाँ उत्तम गृहाश्रम में विराजें।" राष्ट्र की भूमि—भाषा और विद्या उसकी अमूल्य धरोहर है। भूमि प्राकृतिक सम्पदा की प्रतीक है, विद्या इसके उपयोग का मार्ग प्रशस्त करती है, और भाषा पारस्परिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। राष्ट्र की ये तीनों देवी सम्पुष्ट और समृद्ध होनी चाहिये। जब यह तीनों देवी सम्पुष्ट और सन्तुष्ट होंगी, तो सर्वत्र सौख्य एवं समृद्धि का पर्यावरण होगा, तभी राष्ट्र का अग्रणी नेता, शासक या सम्राट छान्दोग्य उपनिषद के राजा अश्वपति की भाँति घोषणा कर सकेगा—

न मे स्तेनो जनपदे
न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्
नस्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् मेरे जनपद [राज्य] में न चोर हैं, न कायर हैं, न मद्यपान करने वाले हैं, न अग्निहोत्र की उपेक्षा करने वाले हैं, न मूर्ख हैं, न व्यभिचारी हैं और न व्यभिचारिणी हैं। इस उपनिषद वाक्य में राजा अश्वपति द्वारा अपने राज्य क्षेत्र हेतु "जनपद" का प्रयोग किया है, जिससे स्पष्ट होता है कि वह राज्य जन जन के सहयोग से उनके द्वारा निर्वाचित राज्य समिति एवं शासक द्वारा संचालित होता होगा। जैसी उद्घोषणा अपने राष्ट्र के विषय में राजा अश्वपति ने की है, वह तभी सम्भव है जब हम उसे सर्व प्रकार से आत्मनिर्भर बना दें, जैसा कि वेद में कहा है:—

यास्ते रुहः प्ररुहो यास्त आरुहो
याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम्।
तासां ब्रह्मणा पयसा वावृधानो
विशि राष्ट्रे जागृहि रोहितस्य।
अथर्व १३/१/८

हे मनुष्य! तेरे लिये जो सृष्टि की सामग्री व वस्तुयें हैं और तेरे लिये जो सृष्टि की स्थितियाँ हैं, जिनसे आकाश और अन्तरिक्ष तक सब ओर वह ईश्वर भरता है। इनके अन्न और जल से बढ़ता हुआ, तू सबके उत्पन्न करने वाले प्रभु के राष्ट्र में और उसी की प्रजा में जागता रह। यह मन्त्र सुस्पष्ट करता है कि अन्न एवं जल राष्ट्र में उत्कृष्ट परिपुष्ट एवं पर्याप्त होना चाहिए। एक अन्य मन्त्र हमें राष्ट्र को सर्वोत्कृष्ट एवं विजयी बनाने का सन्देश देता है—

ये देवा राष्ट्रभृतोऽभितो
यन्ति सूर्यम्।
तैष्टे रोहितः संविदानो
राष्ट्रं दधातु सुमनस्यमानः॥
अथर्व० १३/१/३५

हे राजन्! जो राज्य पोषक विजय चाहने वाले तेजस्वी पुरुष सर्व संचालक प्रभु को सब से प्राप्त होते हैं, उनसे मिलता हुआ प्रसन्न चित्त सर्वोपासक प्रभु तेरे राष्ट्र को पुष्ट करे। इस मन्त्र की भावना के अनुरूप हम अपने राष्ट्र को सर्व प्रकार को सुदृढ़, सम्पन्न एवं सुखी तभी रख सकते हैं, जब उसके सभी अङ्ग सबल हों और समन्वयित रूप से कार्य करें, जैसा कि वेद का कथन है—

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी
जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूरऽइषव्योऽतिव्याधी
महारथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो
जायतां निकामे-निकामे
नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो
नओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः
कल्पताम्॥
यजु० २२/२२

[क्रमशः]

फिर भी हम कहते हैं कृष्ण के पुजारी हैं ।

—सावित्री रस्तोगी जवाहर नगर (मेरठ)

जन्म दिन मनाते आज उस कर्म योगी का,
द्रोपदी की लाज हाथ जिसने बचाई थी।
व्यथित हृदय की सुन आतुर पुकार झट,
दुष्ट दुशासन की गर्दन दबाई थी ॥

एक नारी की सुन करुण टेर योगी ने,
दुष्टों का दलन किया वीर को बचाया था।
एक नारी के सतीत्व को बचाने को,
उग्र रूप धार, महा विप्लव मचाया था ॥

किन्तु आज मानवता, गलियों में बिकती है,
होती है नीलामी नित्य पावनता की।
नित्य ही धज्जियां बिखरती हैं हाटों में,
प्यार की, त्याग की, स्नेह की ममता की।

✶

नित्य ही चीर हरे जाते, ललनाओं के,
और बन्द कमरों से, हम झांका करते हैं।
नित्य ही अनेकों शिशु, सोते फुट पाथों पर,
और चन्द टुकड़ों को, मुंह ताका करते हैं ॥

फिर भी हम कहते हैं, "कृष्ण के पुजारी हैं।"
कृष्ण का परम भक्त स्वयं को बताते हैं।
कृष्ण के अनुगामी, कृष्ण के अनुयायी,
कहते जो मुख से, कर्म करके दिखाते हैं ॥

गिरधर सुदामा के कष्ट मिटाने वाले,
भाभी के प्रीति भरे तन्दुल खाने वाले।
आंसु के जल से, पांव मित्र के पखारे जो,
सिंहासन तज कर, काज बिगड़े संवारे जो ॥

गौओं की टेर-दर्द जिसमें पैदा कर दे,
दीन दुखियों के ऊपर, निज को शैदा कर दे।
कौन है कहां है वह, ऐसा व्रत धारी जो,
जन जीवन जागृति में, सब कुछ अर्पण कर दे ॥

एक क्या अनेकों गुण, योगी के लेने हैं,
देव ऋण चुकाना है, मूल्य बड़े देने हैं।
गीता का ज्ञान, बड़ी निधि है इस भारत की,
कर्म वीर बनकर, दुःख दारिद सब खेवे हैं ॥

उसने जगाया हमें, उस मोह निद्रा से,
उसने बताया जग बन्धन, सब झूठे हैं।
झूठे रिश्ते नाते, झूठी है ममता सब,
सत्य एक ब्रह्म, रंग उसके अनूठे हैं ॥

यदि कृष्ण के उपासक हो, सच्चा व्रत ले डालो,
कुत्सित मल द्वेषों का, जीवन से धो डालो।
कपट छल, त्याग कर, "तुम आर्य" बन दिखा देना,
सच्ची श्रद्धांजलि, उस देव पर चढ़ा देना॥

सभी सस्करों में पूर्णाहुति का विधान

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

१० जुलाई के आर्यमित्र साप्ताहिक पत्रिका में स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा पूर्णाहुति केवल देवयज्ञ में है। यह पढ़कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज ने लिखा है कि 'महर्षि दयानन्द जी ने पूर्णाहुति का विधान केवल देवयज्ञ (दैनिक अग्निहोत्र) में किया है, सोलह संस्कारों में भी पूर्णाहुति नहीं। यह पढ़कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा इतना अधिक मिथ्या-प्रचार हो रहा है। जब कि महर्षि दयानन्द जी ने गर्भाधान विधि के अन्त में यह लिखा है कि "इन मन्त्रों से आहुति देकर, पूर्वलिखित सामान्य प्रकरण की सामान्याहुति देवे, पुनः २८ पृष्ठ में लिखे, प्रमाणे पूर्णाहुति देवे। यहां स्पष्ट ही पूर्णाहुति का विधान गर्भाधान विधि में स्वामी दयानन्द जी महाराज ने किया है।

क्या स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज इस स्थल को पुन. पढ़ने का कष्ट करेंगे। सामान्य-प्रकरण में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं "अर्थात गर्भाधानादि संन्यास सस्कार पर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित साम-वेदोक्त वामदेव्य गान अवश्य करें।" इस पूर्वोक्त में सामान्य यज्ञ सहित पूर्णाहुति भी लिखी हुई है, और सामान्य प्रकरण के अन्त में ऋषि दयानन्द जी ने यह वाक्य लिखा है कि यह सामान्य विधि सब संस्कारो में कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्य मे पूर्णाहुति का भी अवश्य उल्लेख है। अब आप ही बतायें कि पूर्णाहुति का अन्य संस्कारोंमें इससे अधिक और स्पष्ट उल्लेख क्या होगा।

स्वामी सत्य प्रकाश जी से निवेदन है कि संस्कार विधि के इन स्थलो का पुनः अवलोकन करें, और अपना भ्रम दूर करें।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल (टीकरी) मेरठ

डा० मोहनलाल सिंघल—शांतियज्ञ

पिथौरागढ़। 'आर्य समाज दयानन्द दास मन्दिर में ६ अगस्त को डा० मोहनलाल सिंघल-शांति यज्ञ हुआ। डा० सिंघल जी ने ३० जुलाई १९८८ को वरिष्ठ चिकित्सा अधीक्षक के रूप में जिला चिकित्सालय का कार्यभार ग्रहण किया था और ४ अगस्त १९८८ को दिलदौरा से चल बसे!

स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की!

लक्ष्मीचन्द्र मित्तल मन्त्री
आर्यसमाज पिथौरागढ़ उ० प्र०

"प्रभात आश्रम में प्रवेश बन्द"

अनेक अभिभावकों का छात्र प्रवेश के सम्बन्ध में पत्र आता रहता है तथा कई अभिभावक तो छात्र को साथ लेकर उपस्थित हो जाते हैं। इस समय स्थान पूर्ण हो चुका है अतः अभिभावकों से निवेदन है कि वे इस वर्ष प्रवेश के सम्बन्ध में कोई कष्ट न उठायें अगले वर्ष अप्रैल में प्रवेश तिथि की जानकारी प्राप्त करने का कष्ट करें।

आचार्य

राजर्षि राजा रणंजय सिंह

[पृष्ठ ३ का शेष]

विद्यापीठ, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर, गुरुकुल अयोध्या, डी० ए० वी० कालेज लखनऊ आदि बीसियो शिक्षण संस्थाओ से राजा साहब जुड़े रहे तथा आर्थिक सहयोग देते रहे।

साहित्यिक अभिरुचि–

राजा साहब स्वयं एक रससिद्ध कवि एवं कवियो के आश्रयदाता रहे। पिंगल शास्त्र मे उनकी गहरी पैठ थी। छन्दोबद्ध कविताओ के समर्थक और प्रशंसक राजा साहब ने अनेक रस सिद्ध कवितायें लिखी हैं। कविताओं का विषय भी धर्म, संस्कृति, समाज सुधार, देश प्रेम, चारित्रिक तथा नैतिक शिक्षा परक होता था। अमेठी राज परिवार के पूर्वज राजागण भी सुकवि और कवियो के आश्रयदाता के रूप मे प्रसिद्ध रहे हैं। राजा साहब ने अनेक साहित्यिक ग्रन्थ तथा काव्य रचनायें प्रकाशित करायीं जो उनके पूर्वजो द्वारा रचित थीं। जैसे– भूपति सतसई, कविकुल तिलक प्रकाश, सुमन तरंग, कविता कंकोश, रणधीर रत्नाकर आदि। "मनस्वी" नामक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिका का राजा साहब ने वर्षों सफल सम्पादन किया। पद्मश्री प० क्षेमचन्द्र सुमन इस पत्रिका के सह सम्पादक थे। प्रकाशन का सारा व्यय राजा साहब ही वहन करते थे। हिन्दी, संस्कृत, अवधी तथा ब्रज भाषा के अनेक प्राचीन ग्रन्थो, दुर्लभ रचनाओ तथा पाण्डुलिपियो का संग्रह राजा साहब ने "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" को भेंट किया। यह सामग्री सम्मेलन मे "रणवीर कक्ष" के नाम से सुप्रसिद्ध और स्थापित है।

सात्विक स्वभाव–

राजा साहब का स्वभाव बड़ा सरल, मृदु और सात्विक था। उनका रहन-सहन अत्यन्त ही सादा था। वे हमेशा खादी के ही वस्त्र पहनते। उनकी लम्बी ऊँची टोपी जन सभाओ मे आकर्षण का केन्द्र बनती। वाक् सुलभ सरलता के संग किन्तु गम्भीर और काव्यमयी उक्तियों में अपनी बात को कहने का अनोखा ढंग और बीच-बीच मे मन्द स्मित हास्य उनके वार्तालापो तथा व्याख्यानो मे एक समान दृष्टिगोचर होता था। राजा साहब पूर्ण निरामिष भोजी थे। मद्य से कोसो दूर थे। धूम्रपान की कौन कहे चाय तथा पान का सेवन उन्होने कभी नहीं किया। नित्य सन्ध्या, अग्निहोत्र और वेदपाठ उनके जीवन का अङ्ग था। उन्हे सैकड़ों मन्त्र और श्लोक कण्ठ थे। वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, दर्शन तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो का गम्भीर स्वाध्याय उन्होंने किया था। मत मतान्तरो के धार्मिक ग्रन्थो के तुलनात्मक अध्ययन मे उन्हे विशेष रुचि थी। उनके पुस्तकालय में अनेक विषयों के दुर्लभ ग्रन्थ वर्तमान हैं। उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी, उनके अनेक लेख और लोक सभा, विधान सभा मे दिये गये भाषण पत्र पत्रिकाओ मे आदर के साथ छापे जाते। उनका स्वस्थ और सुपुष्ट शरीर, क्रीड़ा प्रियता और व्यायाम प्रेम बालकों तथा युवको को सद्प्रेरणा प्रदान करता था। फुटबाल, लान टेनिस औ घुड़दौड़ उनका प्रिय खेल था।

धर्म, संस्कृति, साहित्य, कविता, राजनीति शिक्षा और इतिहास आदि क्षेत्रों में उनकी सेवायें अविस्मरणीय हैं। राजा साहब के निधन से एक युग का अन्त हो गया। आर्य जगत् और सम्पूर्ण देश के लिये उनकी क्षति अपूरणीय है और स्मृति चिरस्थायी।

★

आर्य समाज प्रहलादनगर (मेरठ, हैजा निरोधक शिविर



दि० ६–८–८८ को जिलाधिकारी महोदय मेरठ एवं श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के निर्देशन मे आर्य समाज प्रहलादनगर मेरठ की ओर से हैजे के बचाव के लिए एक नि शुल्क शिविर प्रात ९ से १-३० तक लगाया गया। इस अवसर पर डा०प्रदीपकुमार एम बी बी एस, एफ सी पी एस, डी सी एच (बम्बई) बाल रोग विशेषज्ञ ने अपनी नि शुल्क सेवायें अर्पित कीं। लगभग ४५० व्यक्तियो को नि शुल्क टीके लगाये गये। इस शिविर मे स्वास्थ्य विभाग नगर महापालिका का भी सहयोग रहा। इस शिविर के संयोजन मे जिन कार्यकर्ताओ का महत्वपूर्ण योगदान रहा वे निम्नलिखित हैं–

श्री लाला राधेलाल सिंघल प्रधान आर्य समाज प्रहलादनगर मेरठ।
श्री हरेन्द्रसिंह जी मन्त्री " " "
श्री कैलाशचन्द्र जी उपमन्त्री केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ।
श्री तेजवीरसिंह रेढी, महेन्द्रपाल चोपड़ा, श्री महेशचन्द्र मेहता, श्री जगमोहनलाल इत्यादि।

इस शिविर का शुभारम्भ ७–८–८८ को किया गया था और तीनों दिन शिविर सफलतापूर्वक चलता रहा।

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सम्मानित अन्तरङ्ग सदस्य एवं आ० स० चौक इलाहाबाद के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ज्ञानसिंह जी की पूज्यनीया चाची जी श्रीमती दीपकौर का ९६ वर्ष की आयु मे दिनांक २ अगस्त ८८ को मुरसान जिला अलीगढ़ मे निधन हो गया। वह और उनके पति कट्टर आर्य समाजी थे, वे परम धार्मिका एवं परोपकारिणी महिला थीं। ग्रामीण जनता की सुविधा के लिए उन्होने अनेक कुओं, धर्मशालाओ, और यज्ञ शाला तथा सत्संग भवन का निर्माण कराया था। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से हुई।

परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तकें कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय में सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम भेजें रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न है तथा १५% कमीशन भी देय है।

	मूल्य
धर्म शिक्षा भाग १...	१–५०
" " ...	१–५५
" " भाग ३....	२–७०
" " भाग ४....	२–७५
" " भाग ५....	३–६०
" " भाग ६....	४–७५
" " भाग ७....	४–९५
" " भाग ८...	३–००
" " भाग ९....	४–००
" " भाग १०..	३–००
" " भाग ११	४–००
" " भाग १२...	३–५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

ईसाई मत समीक्षा

(शेष पृष्ठ ९ से आगे)

पादरी महोदय अपने गिरजे के सदस्य की पत्नी को बहकाकर उसके साथ भोग करते रहते हैं। बेचारी स्त्री उस पादरी से गर्भवती हो जाती है, तो पादरी महोदय अपना अपराध स्वीकार करने के बजाय स्वयं को अत्यन्त विस्मित बताते हैं। बेचारी स्त्री को ही अपराधी ठहरा करके उसको अपनी गुनाहगारी बताने का लाल चिन्ह (स्कार्लेट) अपनी छाती पर पहनने के वास्ते बाध्य करते हैं। जो हिरण्यप्पा लिखते हैं कि सम्भव है ईसा मसीह भी इसी प्रकार उत्पन्न हुए थे।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन चरित्र कल्याण मार्ग का पथिक पृ० ३४–३५ पर प्रत्यक्ष वृत्तान्त ईसाई पादरी फादर लिफोंग तथा एक नन का बताया है। अंग्रेजी की प्रसिद्ध पत्रिका टाईम्स ऑफ इंडिया के २५–७–८८ के अंक में केरला प्रदेश के क्विलोन सत्र न्यायाधीश द्वारा ४९ वर्षीय फादर एन्टोनी को फांसी का दण्ड दिया है। उसका अपराध कुमारी मर्यकुट्टी से अवैध प्यार सम्बन्ध बनाकर उससे विवाह कर ले का झांसा देते हुए उससे भोग करता रहा। पादरी लड़की को तथा उसके माता पिता को रुपया भी देता रहा। यह भी विश्वास उसने दिया कि वह पादरी का धन्धा छोड़ देगा। परन्तु उसने न पादरीशिप छोड़ी न उस लड़की के साथ भोग। दिनांक १४-८-१९८५को लड़की की शादी सबर मिरण्ड से हो गई। अब पादरी महोदय लड़की से रुपया मांगने लगा। जज महोदय ने निर्णय में लिखा है कि पादरी विषधारी सर्प बन गया। लड़की से रुपया न मिलने पर पादरी ने आठ गुण्डों द्वारा लड़की को उसके घरमें मरवा डाला। यह प्रकरण न्यायालय में तीन माह चला। जज महोदय ने ऐसे धोखे बाजों की कड़ी निन्दा की है। और दूसरे ऐसे कर्म न करें इसलिये कड़ी से कड़ी सजा दी है। इस निर्णय को प्रकाशित करते हुए इस समाचार पत्र ने दो अन्य ऐसे अपराधों का भी वर्णन किया है। १९६६ में फादर बेनिडिक्ट को भी क्विलोन के सत्र न्यायाधीश ने मरियाकुट्टी ४३ वर्षीय के साथ भोग का सम्बन्ध स्थापित करते हुए उसे मार देने पर फांसी का दण्ड दिया था उस प्रकरण में अपराधी उच्चन्यायालय से दोष मुक्ति हो गया था।

सन् १९८४ में फादर जार्ज चेरियन उपनाम रवि ने १७ वर्षीय श्रीमती जोली के साथ उसके होस्टल के कमरे में बलात्कार की चेष्टा की तदुपरान्त फादर ने जोली का खून कर दिया। क्विलोन सत्र न्यायाधीश ने रवि को उमरकैद का दण्ड दिया था। प्रकरण अब उच्च-न्यायालय के समक्ष है।

प्यारे पाठक वृन्द। बाइबिल में लिखी ऐसी दूषित करतूतों तथा ऐसे अनन्त सम्भव प्रकरणों से ईसाई पादरियों की भोग लिप्सा की कितनी अविवाहिता विवाहिता स्त्रियां शिकार हुई होंगी, इसका तो अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

ईसाई भाईयों को चाहिये कि अपने पादरियों से होशियार रहें। इसी सद्भावना से जन्म कथ वन्हीं के हितार्थ प्रकाशित किये जाते हैं।

भारत के भगवान

श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

योगिराज हे कृष्ण ! तुम्हीं ने
धर्म ध्वजा फहराया ।
सारे जग को वेदों का–
पावनतम पथ दिखलाया ।
कंस तथा शिशुपाल जरासंध
से असुरों को मारा ।
आगे बढ़कर दुनिया को–
दानवता को ललकारा ।
नारी की रक्षा में प्रतिपल
रहे वीरवर ! दृढ़ कटिबद्ध ।
दुर्योधन को, दुःशासन को,
ललकारा, होकर प्रतिबद्ध ।
युद्ध महाभारत में तुमने,
सत्य पक्ष का साथ दिया ।
विजय श्री पाण्डव को तुमने
रण कौशल से दिला दिया ।
वैदिक पथ के थे अनुयायी,
वैदिक पथ विस्तार किया ।
वेदों की गरिमा से तुमने
प्रश्नों को निस्सार किया ।
अनुपम योद्धा अनुपम योगी,
अनुपम थे वीरत्व प्रतीक !
'भारत के भगवान' बने तुम–
कर्म किये निष्काम सटीक ।
तुम युग मानव ! रहे प्रणेता–
सत्य धर्म मानवता के ।
स्वीकारा तुमने निर्भय हो–
वेग सभी दानवता के ।
महामनुज । तुम ! संहारक थे,
असुर वृत्तियों, असुरों के !
प्रतिपालक थे, रक्षक थे तुम !
मुनि मानव के पुण्य सुरों के ।
जन्म दिवस पर आज तुम्हारा–
वन्दन है अभिनन्दन है ।
भारत के भगवान तुम्हारा–
कोटि-कोटि अभिनन्दन है ॥

★

आ० स० बहजोई (मुरादाबाद) की हीरक जयन्ती एवं मण्डलीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक १ से ३ अक्टूबर ८८ तक विशाल समारोह के साथ मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं संन्यासी पधार रहे हैं ।

बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ सार्वदेशिक सभा ने सहायता कोष खोला

सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर

दिल्ली २४ अगस्त । उत्तरी बिहार के मुंगेर और दरभंगा क्षेत्र में पिछले दिनों जो जोरदार भूकम्प आया था, उसमें गैर सरकारी सूचना के अनुसार एक हजार के करीब स्त्री-पुरुष और बच्चे मारे जा चुके हैं तथा कई हजार लोग घायल व बेघर-बार हो चुके हैं ।

आर्य समाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक सभा ने पीड़ितों की सहायता के लिये सभा में एक सहायता कोष खोल दिया गया है । सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की जनता तथा आर्य जनों से विशेषकर आर्य समाजों से अपील की है कि वह इस संकट की घड़ी में पीड़ितों की सहायता के लिये अन्न, वस्त्र व धन एकत्र करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के पते पर भेजें । धन राशि मनीआर्डर चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर ही भेजा जावे ।

आर्यसमाज का शिष्ट मण्डल सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जा रहा है ।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

—महिला आर्यसमाज सभा-भवन लखनऊ की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता बख्शी के अनुज श्री भारतभूषण आहूजा का दिनांक ७ अगस्त १९८८ को हृदयगति रुक जाने से लखनऊ में देहावसान हो गया । उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ । परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों से धैर्य धारण हेतु प्रार्थना है ।

—सभा मन्त्री

आर्यमित्र

नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष । ६ । ४५९९६१

रजिस्ट्रेशन सं० एल डब्ल्यू एन पी ७६

भाद्रपद कृष्ण ६

४ सितम्बर रविवार १९८८ ई०

१२७४६-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

मूल सुधार

दिनांक ३१ जुलाई १९८८ के आर्यमित्र मे प्रकाशित 'वधू की आवश्यकता' के रूप में जो विज्ञापन प्रकाशित हुआ है उसका सम्बन्ध डा० सुमेधामित्र वेदालंकार द्वारा श्री नरेन्द्रप्रताप वर्मा कस्बा घोसी पो० मिर्जा बमालपुर जिला आजमगढ़ के लिए है। डा०ज्वलन्त कुमार जी से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है और न उन्होने इस विज्ञापन को प्रकाशित ही कराया है। अतः इच्छुक सज्जन डा० सुमेधामित्र से ही उपरोक्त पते पर पत्रव्यवहार करें। —प्रबन्ध सम्पादक

(पृष्ठ ४ का शेष)

एक प्रश्न यह भी उठा है कि मूर्तिपूजा में विश्वास न रखने वाले आर्यसमाजी नेता ने मन्दिर की ओर क्यों प्रस्थान किया। स्वामी जी का कहना है कि सवाल मूर्तिपूजा या मूर्ति मे आस्था का नहीं है। सवाल तो हरिजनो के उपासना की स्वतन्त्रता का है। भेदभाव को मिटाने का व उनके सामाजिक अधिकार का सवाल है। उनके अपने अस्तित्व की रक्षा का सवाल है। छुआ-छूत का कोढ़ समाज से मिटना चाहिए इस आधार पर भेदभाव करना संविधान का उल्लंघन है।

संविधान समर्थक स्वामी अग्निवेश को व उनके साथियों को १२ जुलाई के दिन गिरफ्तार किया गया। लेकिन दूसरी ओर संविधान की धज्जी उड़ाने वाले शंकराचार्य को व जातिवाद का भेदभाव करने वाले श्री तिलकायत जी' (श्री नाथ मन्दिर के महन्त) को गिरफ्तार नहीं किया गया। उनके मन्दिर वासियों को भी नहीं गिरफ्तार किया गया ' जो खुले तौर पर घूम रहे थे। इससे भी साफ जाहिर है कि सरकार की इच्छा की कमजोरी है। व साहस नहीं है।

स्वामी अग्निवेश ने पदयात्रा के दौरान लोगो के सामने जो तर्क रखा वह विचारणीय है। मुसलमान आक्रमणकारी बनकर जब इस देश मे आये वे मुट्ठीभर ही थे फिर बंगलादेश व पाकिस्तान कैसे बना ? इन शंकराचार्यों जैसे मठाधीशों की वजह से इनके छुआ। छूत व जातिवाद गैर बराबरी के व्यवहारों की वजह से ही हजारों–हजारों दलित-हरिजन भाई मुसलमान व ईसाई बने। इनकी वजह से ही पाकिस्तान बना। अगर इनका रवैया यही रहा तो भारत के पुनः दो टुकड़े हो सकते हैं। धर्म परिवर्तन के नाम पर चिल्लाने वालों के सामने सवाल है कि क्या वे अपनी माफिया संस्कृति को छुआछूत की जातिवाद की संस्कृति को बदलेंगे ? वरना आगे पुनः भारत के टुकड़ों के जिम्मेदार वे ही होंगे।

छुआ-छूत, जातिवाद, गैर बराबरी का व्यवहार समाप्त किये बिना धर्म का, संस्कृति का ढिंढोरा पीटना वास्तव में ढोंग है। आज आवश्यकता है मानव गरिमा की अस्मिता को बनाए रखने की। अनेक विवादास्पद पहलुओं के बावजूद स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा एक सार्थक पहल व साहसिक कदम है। योद्धा संन्यासी को सभी का सहयोग आवश्यक है। आगे उनकी पदयात्रा में गांधी जी के कदम कूच करते दीख पड़ेंगे।

राजा रणञ्जयसिंह को श्रद्धांजलि

दिल्ली ७ अगस्त-राजर्षि रणञ्जयसिंह के देहावसान पर उनकी स्मृति मे आर्यसमाज दीवानहाल मे श्रद्धांजलि सभा हुई। जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध ने की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी और आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने श्रद्धांजलि अर्पित की स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा राजा रणञ्जयसिंह आर्यसमाज के मन्तव्य को जीवन मे अपनाने वाले महान ऋषि भक्त एवं मनस्वी कवि थे।

उन्होने जीवन पर्यन्त लोकोपकार व जनसेवा की। वे आर्यसमाज के विशिष्ट पदों पर कार्यरत रहे। उनके देहावसान से आर्यजगत की महती क्षति हुई ॥ —लक्ष्मीचन्द्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवनालवीय आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एम०पी० प्रिन्टर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ | घोषणा पत्र स० ७१२८-२-८५

भाद्रपद कृष्ण ३ रविवार, सवत् २०४५ वि०, दिनाक ११ सितम्बर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष ९१

अङ्क ११

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त्तनाशनम्—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध बिहार के भूकम्प पीड़ितो के बीच

★ ★ ★

२१ अगस्त ८८ को बिहार मे आये भूकम्प से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्यसमाज का प्रतिनिधि मण्डल बिहार पहुच गया है और पीड़ितों की सेवा मे जुट गया है।

और वह सन्यासी फिर निकल पड़ा है उस विधाता की क्रूरमयी आधिदैविक विपत्ति मे फसे, दबे कुचले त्रस्त हुए हजारो प्राणियो की रक्षा के लिए। बिहार, नेपाल का यह भूकम्प यातनाभरी दानवलीला की अपनी क्रूर कहानी छोड़ गया है। इस भूकम्प मे जो सो गये वे तो सो ही गये, जो बचे वह सोये हुओ से बदतर हो गये है। किसी की टांग टूटी है तो किसी का हाथ, किसी का सिर चकनाचूर हुआ है तो किसी के नेत्रो की ज्योति अन्तर्धान हो गई। प्रभो! इस आधिदैविक विपत्ति के क्या कारण है–हम नहीं जानते। हम जानकर कर भी क्या सकते हैं। हम तो प्रतिदिन तुम्हे पुकारा करते हैं–हे दया के सागर! द्यौ और पृथ्वी को शान्त रखना! शान्त रखना!! शान्त रखना!!! प्रकृति के यह दोनो स्तम्भ जब कुपित होते हैं तो महाभयानक हो जाते हैं, कालो के काल विकराल बन जाते हैं।

इसलिए "द्यौ शान्ति पृथ्वी शान्ति से यज्ञ का समापन करने वाले आर्य भाइयो और बहिनो! आर्यसमाज की जनसेवा के अतीत के इतिहास को स्मरण करो–जब–जब मानव विपत्तियो मे कराहा है हमने मलहम बनकर उसके घावो को भरा है। इसीलिए तो दुखियो की करुणाविगलित डबडबाई आखें तुम्हारी ओर निहार रही हैं। सन्यासी की गेरुआ झोली खाली न रहने पाये इसे अन्न, वस्त्र, औषधि, धन से भरे रहना। यह पीड़ित मानवता की सेवा का प्रश्न है।

लगभग अर्ध शताब्दी पूर्व भी बिहार मे भयानक भूकम्प आया था। चारो ओर त्राहि त्राहि मची हुई थी। उस समय आर्यसमाज के कार्यकर्ता जन सेवा में प्राणपण से जुट गये थे क्योंकि हमारा तो ध्येय ही जनसेवा है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी ने आर्यसमाज द्वारा की गई सेवाओ की सराहना करते हुए कहा था–कि बिहार मे भूकम्प पीड़ित जनता की जो सेवाएं आर्यसमाज ने की हैं वह सदा स्वर्णाक्षरो मे लिखी रहेगी। इसी प्रकार अन्य अनेक अवसरो पर चाहे वह नोआखाली का कत्लेआम हो चाहे हैदराबाद के क्रूर रजाकारों का अत्याचार आर्यसमाज सेवाकार्य मे सदैव अग्रणी रहा है।

बिहार / नेपाल का वर्तमान भूकम्प भी इतना ही भयानक है अतः हमारी आर्य जनता से अपील है कि यथाशक्ति अन्न, धन, वस्त्र से सहायता कर पुण्य के भागी बनें। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० कार्यालय मे प्राप्त धन सार्वदेशिक सभा मे भेज दिया जायेगा।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ॥
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—भाद्रपद कृष्ण ३० संवत् २०४५, रविवार ११ सितम्बर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

वागाम्भृणी

☆★

आज हमारा राष्ट्र कहने को तो स्वतन्त्र है किन्तु विचारणीय है कि क्या वैचारिक अभिव्यक्ति के स्वातन्त्र्य का हनन करके हम राष्ट्र को कुण्ठित नहीं बना रहे हैं । राष्ट्र का निर्माण लौह आवरण के पीछे नहीं हो सकता और न उसका निर्माण पुल, सड़कों और भवनों के निर्माण तक ही सीमित किया जा सकता है । सर्वप्रथम हमें वैचारिक स्वातन्त्र्य का निर्माण करना है । इस भूतल को स्वर्ग यह बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं नहीं करेंगी और न करेगा सोने चांदी का भरा हुआ स्वर्णभण्डार । इसे यदि उदात्त और स्वर्ग बनाना है तो वैचारिक क्रांति को जगाना होगा, वाणी और लेखनी के स्वातन्त्र्य को प्रमुखता देनी होगी । वेद कहता है—"अहं वाचस्पतिः अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम्" मैं वाणी का स्वामी हूं, मैं राष्ट्र की शक्ति हूं । (वसूनाम्) यहां के निवासियों का संगठन करने वाली वैचारिक शक्ति हूं । मैंने अपनी वाणी और लेखनी से जगत में क्रान्ति मचा दी है ।

लोकसभा ने मानहानि के जिस विधेयक को बहुमत के आधार पर स्वीकार किया है वह स्पष्टतया विचार स्वातन्त्र्य का हनन है । आज के युग में जनता की आवाज को जनता तथा शासन तक पहुंचाने का माध्यम प्रेस ही है । स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर अब तक शासन की नीतियां सर्वत्र प्रेस की आजादी के विचार के प्रति प्रतिबद्ध रही हैं । भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने नव राष्ट्र को प्रथम सम्बोधन देते हुए कहा था— ...."जैसे जैसे हमारे दिमागों में विचार हैं वह सब पेश होने चाहिये क्योंकि प्रजातन्त्रवाद में हमेशा जनता को मालूम होना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं और हमें मालूम होना चाहिए कि जनता क्या चाहती है" । (१५–८–१९४७)

प्रेस की स्वतन्त्रता लोकतान्त्रिक व्यवस्था का एक अत्यन्त मजबूत स्तम्भ है । लोकतन्त्र की पहली शर्त यही है कि अभिव्यक्ति का मुंह खुला रहे । यही कारण है कि प्रेस का गला घोटने वाले इस विधेयक का बुद्धिजीवी जनता ने स्थान-स्थान पर विशाल प्रदर्शन एवं सभाएं करके घोर विरोध किया है और इसे सर्वथा असंवैधानिक तथा अलोकतान्त्रिक बतलाया है । भारतीय प्रेस के इतिहास में पहिली बार देश के समग्र बुद्धिजीवी वर्ग ने समवेत स्वर में इस विधेयक को वापस लिए जाने की मांग की है । यह सही है कि हमें भी अपने विचारों में सन्तुलन, शिष्टता और मर्यादाओं का पालन करना होगा । अमर्यादित और असत्य दोषारोपण करके किसी का चरित्रहनन करना सबसे बड़ा सामाजिक पाप है । हमें सभी के मान सम्मान की रक्षा करते हुए एक ऐसी सर्वसम्मत आचार संहिता बनानी होगी जो आलोचना के स्वस्थ मर्यादित एवं शिष्ट मापदण्ड को स्थिर रख सके । द्वेष पर आधारित कोई भी अभिव्यक्ति वैचारिक स्वातन्त्र्य की श्रेणी में नहीं आ सकती । हमें असंगतियों विसंगतियों को दूर करते हुए सभी के विचारों का समीकरण करना होगा और राष्ट्र कल्याण का चिन्तन करने वाली वृत्तियों का सामन्जस्य करके विचार स्वातन्त्र्य की भावना को उन्मुक्त करना होगा क्योंकि प्रजातान्त्रिक प्रणाली में जनता को अपने कल्याण के लिये अपनी वैचारिक प्रणाली का स्वयं ही सृजन करना होता है । इसी को वैदिक विचारधारा में "वागाम्भृणी" कहा गया है अर्थात् वाणी और लेखनी की स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

लोकसभा ने इस विधेयक को जल्दबाजी में स्वीकृति दी है । हमारे संविधान ने स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का जो अधिकार हमें प्रदान किया है उसे लोकमत के आधार पर गठित लोकसभा ही इस प्रकार बिना पर्याप्त बौद्धिक विचार-विमर्श के हमसे छीन ले—इससे अधिक लोकतन्त्र का और उपहास क्या हो सकता है । बिहार जगत में इस काले कानून की संज्ञा दी जा रही है जो केवलमात्र शीर्षस्थ पद पर आसीन महान व्यक्तियों के मान सम्मान की रक्षा के लिए ही लाया गया है

'आर्यमित्र' सदैव शष्ट, मर्यादित तथा तथ्यपूर्ण अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य का पोषक रहा है । हमारे प्रवर्तक ने "सत्य के ग्रहण करने में सदा कटिबद्ध रहने का आदेश" दिया है । इसलिये हम इस विधेयक का विरोध करते हुए शासन द्वारा इसे अविलम्ब वापस ले लिये जाने की आशा करते हैं ।

★

बालिका विद्यालय इण्टर कालेज लखनऊ की छात्राएं ससम्मान उत्तीर्ण

कक्षा १२

कु० रजनी दीक्षित (विज्ञान वर्ग) वर्ष १९८८ की बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में पन्द्रहवां स्थान ।

कु०आभा गुप्ता (विज्ञान वर्ग) सम्मान सहित उत्तीर्ण

कक्षा १०

कु०ज्योति श्रीवास्तव (विज्ञान वर्ग) सम्मान सहित उत्तीर्ण

खादी बोर्ड द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में कु० प्रतिमा तिवारी कक्षा १२ ब (विज्ञान वर्ग) का प्रथम स्थान ।

मेरठ में वेद प्रचार

आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा समता दिवस समारोह मनाया गया । यज्ञ के यजमान श्री ओम पाल जी बाल्मीकि सपत्नीक थे ।

श्री पं०इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने बताया कि राधा के नाम पर जो श्रीकृष्ण को बदनाम किया जाता है वह अश्लील भोगी साहित्यकारों की कही हुई बातें हैं । वास्तव में कंस के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए राधा नाम की मण्डली का निर्माण हुआ जिसका नेतृत्व श्रीकृष्ण ने सम्भाला ।

डा० निरूपण जी ने योगेश्वर श्रीकृष्ण की कीर्तिमत्ता का व्याख्यान करते हुए बताया कि यदि हिन्दू जाति में से श्रीराम व श्रीकृष्ण तथा इतिहास में से निकाल दें तो हमारे पास कुछ भी शेष नहीं रह जाता है ।

श्री आर्यभिक्षु जी ने गल्प, माया, लीला और चमत्कार से ऊपर उठकर योगेश्वर श्रीकृष्ण को देखने की प्रेरणा की ।

वेद के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने का पर्व

(महोपदेशक डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री, डी० २६ आनन्दनगर, रायबरेली)

श्रावणी का पावन पर्व आ गया। 'श्रावणी' शब्द संस्कृत भाषा के श्रु धातु से बनता है। वेद का एक नाम 'श्रुति' भी है। यह शब्द भी श्रु धातु से ही निष्पन्न होता है। श्रु धातु का अर्थ है सुनना। कानों को संस्कृत में श्रवण कहते हैं। 'श्रावण शब्द श्रु धातु से ही णिच् प्रत्यय से बनता है। इसका अर्थ है सुनाना। श्रवणा नामक एक नक्षत्र भी आकाश में है। इस श्रावणा नामक नक्षत्र के समीप जब चन्द्रमा का गमन होता है तब उस मास को श्रावण मास कहते हैं।

वेद का सुनना

कानों का सबसे उत्तम उपयोग है अच्छे एवं कल्याणप्रद बातों का सुनना। इसीलिए वेद में प्रार्थना है- 'भद्रं कर्णेभि शृणुयामि' वेद से अधिक लाभप्रद एवं कल्याण कारक उपदेश मानवमात्र के लिये और कहाँ मिलेंगे? वैदिक ज्ञान एवं उपदेश का सुनना एवं सुनाना यह दोनों ही सर्वाधिक पावन कर्त्तव्य है। यदि हमने पवित्र एवं मंगलप्रद बातें सुनी किन्तु उनका प्रचार प्रसार नहीं किया तो यह हमारे विद्या की पूर्ण उपयोगिता नहीं हुई।

विद्या के उपयोग के चार प्रकार

महाभाष्यकार पतञ्जलि महर्षि ने अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही लिखते हैं-'चतुर्भिः प्रकारैः विद्या उपयुक्ता भवति-आगम कालेन, स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन व्यवहार कालेनेति।' अर्थात् विद्या सर्व प्रथम गुरु के पास जाकर अध्ययन के द्वारा फिर मनन के द्वारा पुनः प्रवचन के द्वारा एवं पुनः जीवन मे व्यवहार में क्रियात्मक रूप से अपनाकर ही पूर्णतया सिद्ध को जाती है।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में इसीलिये लिखा है वेद का पढ़ना पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महाभाष्यकार ने जो चार उपयोग के प्रकार बताये हैं उनमें प्रथम दो तो केवल वेद के सुनने के कर्त्तव्य में ही आते हैं। प्रवचन भी विद्या की उपयोगिता का एक विशिष्ट एवं आवश्यक प्रकार है। स्वामी दयानन्द वेद आदि सत्य शास्त्रों का अध्ययन करके एवं सत्य तथा मोक्षमार्ग को जान करके अपने ही व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति में लग कर जीवन को सार्थक कर सकते थे। किन्तु उनकी दृष्टि में ज्ञान का यह उपयोग अत्यन्त तुच्छ था। इस सत्य ज्ञान को स्वयं समझने के साथ ही इसका प्रचार प्रसार करना एवं उसके महत्व को अन्य लोगों को बताना तथा उस पर चलने की प्रेरणा देना भी अत्यावश्यक समझा।

आज अनेक लोग ऐसे हैं जो वैदिक सिद्धांतों को स्वयं समझ कर अपना तो लेते हैं किन्तु उन सर्वमान्य सर्व हितकारी सिद्धांतों के प्रचार में कोई रुचि नहीं लेते या फिर उसके प्रचार में आने वाली कठिनाइयों के कारण उससे दूर ही रहना चाहते हैं। 'श्रावणी' का यह पर्व हमें इस बात की ही प्रेरणा देता है कि मनुष्य केवल सुने ही नहीं प्रत्युत सुनाने के लिए भी तत्परता एवं निष्ठा पूर्वक कार्य करे।

साप्ताहिक प्रचार कार्यक्रम

भारत वर्ष के प्रायः समस्त आर्य समाजों में श्रावण पूर्णिमा से लेकर जन्माष्टमी पर्यन्त वैदिक यज्ञ, वेद कथा, वैदिक व्याख्यान या वेद उपनिषद् आदि आर्ष ग्रन्थों का आधार पर सैद्धान्तिक चर्चा तथा विद्वानों के भाषण का कार्यक्रम आयोजित होता है। आर्य समाज मन्दिरों के अतिरिक्त अन्य कोई संस्था या संघटन ऐसा इस समय नहीं है जो धार्मिक दृष्टिकोण से साक्षात् वेद के प्रचार एवं प्रसार मे योगदान करता है।

आज भारत में प्रायः समस्त धार्मिक संघटन गीता, रामायण आदि की कथा या उपदेशों का ही आयोजन करते हैं। वेदों का नाम एवं उनका अध्ययन अब केवल विश्वविद्यालयों के कुछ लोगों तक ही सीमित है। किन्तु भारतवर्ष में आर्य समाज ही एकमात्र ऐसा संघटन है जो आज भी अपने मन्दिरों में अपनी वेदि से वेदकथायें एवं वेद प्रचार सामान्य मानव मात्र के लिये आयोजित करता है। वेद सम्मेलन तो इस शताब्दी में आयोजित करने का सर्वप्रथम श्रेय आर्यसमाज ने ही प्राप्त किया। निश्चय ही हमारा दायित्व अन्य साम्प्रदायिक संघटनों से एवं धार्मिक संस्थाओं से इस नाते में भिन्न एवं अधिक बौद्धिक है।

वेदों के अर्थ में वैज्ञानिक दृष्टि

वेदों के अर्थ करने में केवल किसी सीमित दृष्टि कोण की अपेक्षा व्यापक दृष्टिकोण से पढ़ने पढ़ाने का श्रेय भी आर्य समाज का ही है। स्वामी दयानन्द का वेद भाष्य ही एकमात्र ऐसा वेदभाष्य है जो हमें वेदों के प्रति व्यापक दृष्टि प्रदान करके उसे मानवमात्र के लिये व्यापक एवं सर्वकाल में उपयोगी मानने को बाध्य करता है। आज तक वेद के जितने भी भाष्यकार हुये उनमें यह दृष्टि नहीं थी जो दयानन्द में थी। स्वामी दयानन्द की यह दृष्टि थी कोई उनकी अपनी निजी नहीं थी अपितु निरुक्त शास्त्र एवं प्राचीन ऋषियों की वैदिक मान्यताओं और अवधारणाओं पर अवलम्बित थी। आचार्य सायण आदि का किया हुआ वेद भाष्य वेदार्थ को जहाँ सीमित, कर्म काण्डीय एवं मात्र याज्ञिक दृष्टिकोण में ही समाहित कर देता है वहां स्वामी दयानन्द एवं उनके बताये दृष्टिकोण से चिन्तन करके अपना भाष्य प्रस्तुत करने वाले आर्य विद्वानों का भाष्य वेद के प्रारम्भिक मौलिक एवं मानव मात्र के लिए व्यावहारिक उपयोगी अर्थ को ध्वनित एवं संकेतित करने में सक्षम है। इस दृष्टिकोण से आधुनिक वेदाध्ययन में जो क्रान्ति आर्य समाज के विद्वानों ने प्रस्तुत की है उसका मूल्यांकन आने वाली शताब्दियाँ ही कर पायेंगी। हमारे सामने जो क्रान्ति इस क्षेत्र में हुई है उसकी महत्ता से हम उसी तरह कम परिचित हैं जिस तरह से स्वामी दयानन्द के समकालीन लोग उनके जीवनावस्था में तो कम प्रभावित रहे किन्तु उनके बाद कहीं अधिक व्यापक रूप से उनकी महत्ता एवं सार्थकता अनुभव कर सके।

श्रावणी का यह पावन पर्व हमें इन सब दृष्टिकोणों पर चिन्तन करने को बाध्य करता है। आइये हम भी इसमें सम्मिलित हों और इसमें ही अपने लिये उपयुक्त भूमिका की खोज करके उसमें गतिशील हों।

★

आर्यसमाज द्वारा आयोजित नारी उत्थान के कार्यक्रम : भविष्य के लिये दिशा निर्देश

[डा० भवानीलाल जी भारतीय]

जब हम आर्यसमाज द्वारा किये गये नारी उत्थान विषयक कार्यों की समीक्षा करते हैं तो यह लिख देना आवश्यक है कि इस क्षेत्र में भविष्य मे कार्य करने की भी अपार सम्भावनाएं निहित हैं। आज यद्यपि सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टि से नारी को इसके अधिकार प्राप्त हो चुके है तथा वह पुरुष की ही भांति उन्नति के पथ पर निर्बाध गति से आगे बढ़ा ही रही हैं, किन्तु पश्चिमी संस्कृति के अमर्यादित प्रवाह में बह जाने की आशंका भी उतनी ही स्पष्ट दिखाई दे रही है। अमेरिका में 'विमेन लिब' का जो आन्दोलन चला है वह स्त्रियों की गरिमा एवं मर्यादा का विनाशक है। यदि नारी अपने आत्म सम्मान, गौरव तथा शालीन स्वभाव को ही तिलांजलि दे देती है तो अपनी उद्दाम वासनाओं को ही भौतिक आवश्यकताओं की वह भले ही पूर्ति कर ले, समाज को समुन्नत बनाने में कोई रचनात्मक योगदान नहीं दे सकेगी।

अत: यह आवश्यक है कि नारी उत्थान विषयक कार्य की भावी, रूपरेखा का निर्धारण किया जाय जिससे कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। निम्न सुझावों को भविष्य के कर्त्तव्य के रूप में अंगीकृत किया जा सकता है—

१—यद्यपि समाज सुधार के क्षेत्र में बहुत कुछ प्राप्त किया जा चुका हैं, किन्तु बहुत कुछ अभी करना शेष है। पठित वर्ग मे बाल विवाह की कुप्रथा समाप्त हो चुकी है, किन्तु अनेक पिछड़े वर्गों मे अभी तक उसका प्रचलन है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अक्षय तृतीया को विवाह का शुभ मुहूर्त मानकर हजारों अबोध बालक और बालिकाएं विवाह सूत्र मे दिये जाते हैं, जबकि वे विवाह शब्द के अर्थों को भी नहीं समझते। अत: आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि वह ग्रामीण देहातों में प्रचलित सामाजिक कुप्रथाओं के उन्मूलन हेतु एक जोरदार अभियान चलाये।

२—पठित वर्ग मे भी विवाह के अवसर पर अत्यधिक आडम्बर धन का मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन, फिजूलखर्ची तथा दहेज के रूप में कन्या के माता पिता के समक्ष अनुचित मांगें प्रस्तुत करने जैसी बुराइयां दिन-, प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। दहेज के आतङ्क से पीड़ित नव विवाहिता स्त्रियां आत्महत्या कर लेती है अथवा उनके नृशंस सास-ससुर उन्हें येन केन प्रकारेण मृत्यु के मुख में ढकेल देते हैं। इन सामाजिक अभिशापों को नष्ट करने के लिए जोरदार आवाज उठाने की आवश्यकता है।

३—माता को संतान के चरित्र का निर्माता बनाना होगा। सन्तान में सभ्यता, शिष्टता, संस्कृति तथा सदाचार के तत्त्वों को प्रविष्ट कराना माता का ही काम है। आज यह सर्वत्र अनुभव किया जा रहा है कि आज की नारी घर की अपेक्षा सार्वजनिक मनोरंजनगृह तथा क्लब का जीवन जीने में अधिक रुचि लेती है। सन्तान निर्माण का कार्य तो उसने छोड़ ही दिया है, वह अपने बच्चों के भोजन, वस्त्र तथा पालन-पोषण का दायित्व भी आयाओं तथा नौकरानियों के ही सुपुर्द कर देती है। जितना समय और श्रम वह अपने शरीर को अलंकृत करने अथवा मनोरंजन में व्यतीत करती है उसका शतांश भी वह सन्तान के सर्वविध निर्माण मे नहीं लगाती। अत: नारी को सन्तान के चारित्रिक निर्माण के लिए प्रेरित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

४—आज के युग में धर्म और अध्यात्म के नाम पर नाना प्रकार के पाखण्डों का सर्वत्र प्रचलन हो रहा है। अनेक पाखण्डी गुरुओं ने स्वय को भगवान घोषित कर दिया है तथा योग एवं अध्यात्म के नाम पर भोले लोगों का सब प्रकार से शोषण किया जा रहा है। सरल स्वभाव युक्त तथा सहज विश्वासी होने के कारण पुरुषों की अपेक्षा प्राय: नारियां ही इन पाखण्डी गुरुओं के चंगुल में अधिक फंसती हैं और अपनी सर्वविध हानि करा लेती हैं। अनाचार, पाखण्ड तथा असंयम को प्रोत्साहित देने वाले ये गुरु अपनी भक्त स्त्रियों को तन, मन, धन समर्पित करने के लिये कहते हैं और इनके वाक् चातुर्य तथा अन्य प्रकार की चालाकियों से विस्मय विमुग्ध नारियां अपने चरित्र तथा आत्मसम्मान को खो बैठती है। नारी वर्ग के चरित्र का विनाश करने वाले तथा उनके पतन के लिए उत्तरदायी इन पाखण्डी बाबाओं, गुरुओं एवं तथाकथित योगियों के मोह जाल से स्त्रियों को बचाने के लिये एक जागरण अभियान चलाया जाना आवश्यक है। यह कार्य आर्यसमाज के द्वारा ही सम्भव है क्योंकि अतीतकाल में भी इसी ने धर्म के नाम पर चलने वाले आडम्बर अनाचार तथा शोषण का डटकर विरोध किया है।

५—एक ओर हम देखते हैं कि भारत का पठित नारी वर्ग साईंबाबा, रजनीश तथा ब्रह्माकुमारी जैसे नवीन गुरुओं के प्रति आकृष्ट हो रहा है, तो दूसरी ओर अल्पपठित अथवा सर्वथा अपठित स्त्रियां मठों, मन्दिरों तथा अन्य धर्म स्थानों पर आसन जमाये मठाधीशों, पुजारियों तथा बाबाओं के निकट जाकर विभिन्न प्रकार से पथभ्रष्ट तथा दिग्भ्रमित हो रही है। धर्म के मूल तत्वों तथा नैतिकता की सर्वथा उपेक्षा कर नाना प्रकार के बाह्य कर्मकाण्डों, आडम्बरपूर्ण पूजा उपासनाओं का अनुष्ठान करने तथा कपोल कल्पित देवी देवताओं के तीर्थ स्थानों में चक्कर लगाने में ही समाज का यह अर्धांश (नारी वर्ग) अपने श्रम, धन तथा शक्ति को नष्ट कर रहा है अत: आर्यसमाज के लिए यह आवश्यक है कि नारी के सर्वतोमुखी जागरण का अभियान नये सिरे से चलाया जाय ताकि पाखण्डों एवं अन्धविश्वासों से इसे मुक्ति दिलाई जा सके।

उपसंहार

यों तो भारतीय नवजागरण के सभी महापुरुषों ने नारी के उत्थान लिए यथाशक्ति के अनुसार प्रयत्न किये थे, किन्तु स्वामी दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाज की एतद्विषयक देन को सर्वथा अपूर्व ही माना जायगा। ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहनराय ने सती प्रथा को बन्द कराया। उन्हीं के अनुयायी केशवचन्द्र सेन ने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया। प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा विवाह को प्रचलित करने के लिये वैधानिक प्रयत्न किये। ये सभी महापुरुष तथा उनके कार्य प्रशंसनीय तथा वन्दनीय हैं। किन्तु नारी के सर्वतोमुखी उत्थान को आर्यसमाज ने जिस प्रकार सिद्ध कर दिखाया है, वह अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है। नारी को गृह, परिवार, समाज तथा राष्ट्र में सम्मानास्पद स्थान दिलाने में आर्यसमाज का कृतित्व उदाहरण रूप ही मा ा जायगा। नारी जागरण के कार्य में स्वामी दयानन्द के योगदान को स्मरण करते हुए प्रसिद्ध फ्रेंच मनीषी रोमा रोलां ने ठीक ही कहा था—"भारत की स्त्री जाति की पतितावस्था को सुधारने में दयानन्द ने बड़ी उदारता और निर्भीकता का परिचय दिया था। दयानन्द ने उन बुराइयों के विरुद्ध महती क्रान्ति की जिनसे स्त्रियां पीड़ित थीं। उन्होंने स्त्रियों को घर और समाज में प्रतिष्ठित स्थान देने का समर्थन किया तथा उनके सर्वतोमुखी कल्याण की अनेक योजनायें क्रियान्वित कीं।

यज्ञ और वृष्टि–

यज्ञ एक शुद्ध वैदिक विज्ञान

[आचार्य वेदभूषण अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद–२७]

मेरे पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने १३ जुलाई १९८८ के आर्य जगत् के सातवें पृष्ठ पर छपे लेख मे सिद्ध करने का यत्न किया है कि–यज्ञ से वर्षा सम्भव नहीं है।

पूज्य स्वामी जी मुझसे आयु मे आधुनिक विज्ञान मे और सन्यासी होने से भी मुझसे बड़े व महान् है इस नाते मे लेख लिखने से पूर्व उन्हे विनम्रतापूर्वक इस लेख में नमस्कार करता हू और धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हू।

इस लेख के लिखने मे मै स्वामी जी महाराज का रज मात्र भी दोष नहीं मानता। मनुष्य जो कुछ खाता है तो जब वमन करता है तो वही कुछ निकलता है कि–जो कुछ उसने खाया था।

स्वामी जी महाराज ने आधुनिक विज्ञान पढ़ा है और उस पर ग्रन्थ भी लिखते हैं। मेरा विरोध स्वामी जी महाराज से रत्तीभर नहीं है मैं उनका स्नेह भाजक हू। वे मेरे लिए अनेक क्षेत्र मे आदरणीय हैं। हमारी लड़ाई आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तो से है।

इस विज्ञान ने अभी ज्ञान की एक तिहाई मञ्जिल भी तै नहीं की है। क्योंकि ज्ञान के तीन भाग हैं एक स्थूल जिसे हम अधिभौतिक कहते है दूसरा सूक्ष्म जिसे आधिदैविक कहते हैं तीसरा कारण जिसे हम आध्यात्मिक कहते है। इस प्रकार आज का वैज्ञानिक तो अभी अधिभौतिक मंजिल पर भी पूर्ण रूप से नहीं पहुच पाया है। यह स्पष्ट है अभी यह बच्चा प्रयोगकालीन छात्र जीवन से गुजर रहा है। डार्विन की बन्दर की थियरी से यह अब कहीं जैनेटिक साइन्स मे 'जीन्स" तक पहुचा है। इनकी मान्यतायें सदा परिवर्तनशील हैं। मोम की नाक की तरह उनका शेप आकृति बदली जा सकती है। पर वेदो का ज्ञान पूर्ण स्थिर व अपरिवर्तनशील है वेदो मे ये तीनो विद्यायें उस मात्रा मे अन्तर्निहित है जितना एक स्वस्थ तथा मेधावी मानव मस्तिष्क समझ सकता है। पर वेदो का सम्पूर्ण ज्ञान पूर्ण रूप से एक ही मानव मस्तिष्क मे समा जाये यह कठिन है। क्योंकि–"अनन्तपार किल शब्द शास्त्र"

वैदिक विज्ञान वास्तव मे अद्भुत है यह अपरिवर्तनशील है क्योंकि यह सत्य ज्ञान है जो ज्ञान परिवर्तनशील है वह असत्य है जैसे पुराणो के मुकाबले डार्विन असत्य हो गया। वेदों पर दृष्टिपात करते हुये हमे हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि–वेद का ज्ञान तीन स्तर पर चलता है। इसे ही त्रिविध प्रक्रिया कहते हैं।

यह विज्ञान वास्तव मे तीन स्तर पर जाना जा सकता है। प्राचीन ऋषियो ने यज्ञ के आधिदैविक रूप को अधिक महत्व दिया है। एक यज्ञ भौतिक स्तर पर चलता है जितने भी लोकोपकारक कार्य हैं वे सब भौतिक यज्ञ की श्रेणी मे गिने जाते हैं। इन्हें पितृयज्ञ अथवा अतिथि यज्ञ कहा जाता है। मानव की शारीरिक सेवा ही भौतिक यज्ञ है। कुआं बनाना, धर्मशाला बनाना आदि। दवाखाने खोलना भी इसी यज्ञ का अङ्ग हैं।

दूसरी श्रेणी का यज्ञ है देवयज्ञ और बलिवैश्व देव यज्ञ। देवयज्ञ अधिदैविक श्रेणी का यज्ञ है। बलिवैश्व देव आधा भौतिक आधा दैविक है। मनुष्य समाज अपना कुछ भाग मानवेतर प्राणियो के लिए छोड़ता है त्यागता है इसीलिए इसे बलि कहा गया। बलिदान का अर्थ है उत्सर्ग। और इसमें हमने कुछ तो पशु, पक्षियो, कीट पतगों आदि के लिए दिया और कुछ चूल्हे की अग्नि मे जला दिया। जो जला दिया वह वैश्व देव होगा। इस प्रकार यह बलिवैश्व देव कहाया। देवयज्ञ तो शुद्ध अधि दैविक है जो भौतिक से सूक्ष्म है। भौतिक विज्ञानी की दौड़ भौतिक तक ही होगी। जैसे मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

जब आज का विज्ञान पचतत्वों को प्रत्यक्ष कर लेगा और यह जान लेगा कि– प्रत्यक्ष के परे कुछ अप्रत्यक्ष भी है और प्रत्यक्ष से कहीं अधिक शक्तिशाली व बलवतर है जहा भौतिक उपकरण की अपेक्षा सूक्ष्म मानसिक शक्ति ही या बुद्धि यन्त्र से ही काम लेना होता है। जैसे शक्ति या मानसिक जगत् को देखा नहीं जा सकता क्योंकि वह भौतिक से सूक्ष्म है वह भौतिक चिमटे की पकड़ में आ नहीं सकती। जहां तक वह स्थूल है उतना भर ही जाना जायेगा।

यज्ञ विज्ञान को समझने के लिए केवल मन बुद्धि और वेद की आवश्यकता है। यह दैविक विज्ञान भौतिक विज्ञान के ऊपर उसे समझने के लिए पहले भौतिक विज्ञान को समझना भी आवश्यक है।

आधुनिक वैज्ञानिक कहता है कि–यज्ञ मे डाला गया द्रव्य अधिक से अधिक १००–२०० फीट ऊपर तक जायेगा। बादल तो एक मील ऊपर होते हैं।

जिस प्रकार एक विशालकाय तालब मे कोई एक तोला नमक डाल कर वैज्ञानिक से पूछे कि–कृपया आप बतलाइये कि यह नमक पानी मे किस सीमा तक गया है? इस प्रश्न का उत्तर वह देगा कि यह पूरे पानी मे घुल गया क्या उस एक तोले नमक का भाग विशाल तालाब मे घुल गया है उसे किसी यन्त्र से आंका जा सकता है? इसके लिये बुद्धि यन्त्र ही काम देगा भौतिक यन्त्र नहीं। क्योंकि वह अति सूक्ष्म हो गया। पूरे तालाब को सुखाकर फिर उन क्षारों को पूरी मिट्टी से कहीं एक तोला नमक लौटाया जा सकेगा जो मानव की शक्ति के परे है। पर चूंकि मैने एक तोला नमक डाला है हम कह सकते है कि वह तालाब मे मौजूद है क्योंकि जल गया है पर हमारी पकड से बाहर है। यही बात वायु मण्डल के लिए भी है जो द्रव्य इस विराट् वायु मण्डल मे घुलेगा वह भी नमक के समान नहीं बल्कि अग्नि में जलाकर उसे अत्यन्त सूक्ष्म बनाकर वायु से वातावरण मे घोल दिया गया है उसे यन्त्रो से नापना कठिन है। हां पर्वतीय क्षेत्र मे जहां मेघ का घुआं हो उसे घर कर यज्ञ द्वारा परीक्षण किये जायें तो कुछ निष्कर्ष निकल सकते है। पर उनको सूक्ष्म स्थिति का सही मूल्यांकन परिणाम द्वारा ही निकाला जा सकता है।

जैसे कोई अबोध बालक कहे कि–मेरे सिर मे दर्द है आप गोली डाल रहे हैं पेट मे पेट की गोली का प्रभाव सिर पर कैसे होगा? पर प्रभाव होता है।

जैसे मानव देह है वैसे ही विश्वदेह भी एक देह के समान ही है। यो भूत च भव्य च आदि जो मन्त्र स्वामी महर्षि दयानन्द जी महाराज ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आरम्भिक प्रकरण मे ही दिये हैं वहाँ विराट् या विश्व को ब्रह्माण्ड का देह ही बतलाया है।

(क्रमश)

राष्ट्र द्रोह है 'अमीर खुसरो'

साम्प्रदायिक सौहार्द के नाम पर दूरदर्शन में जो धारावाहिक दिखाए जा रहे हैं वह इतिहास की तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर बिल्कुल गलत ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं वह सीधे राष्ट्र का अपमान करते हैं। इस प्रकार के धारावाहिकों मे 'अमीर खुसरो' है जिसने असत्यता की सब सीमाएं लांघ दी हैं। इससे पूर्व 'गेट वे आफ इण्डिया' अंग्रेजी में दिखाया गया था जिसका मूल भाव था कि भारत सर्वथा पिछड़ा हुआ देश था। ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और सभ्यता का विकास मुगलों तथा अन्य विदेशी आक्रमणकारियो ने भारत मे किया। यह धारावाहिक अंग्रेजी में होने के कारण इसके दर्शकों की संख्या कम थी। जिसके कारण इसके विपरीत कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई परन्तु जितने अंग्रेजी जानने वालों ने देखा होगा उसका उल्टा प्रभाव अवश्य हुआ होगा।

परन्तु अमीर खुसरो हिन्दी मे होने के कारण जनता मे इसकी प्रतिक्रिया बहुत तीव्र हुई है। अमीर खुसरो का जीवन चरित्र दर्शाने के बहाने केवल मुसलमान आक्रमणकारियो के गुणगान करना मात्र है। एक मौलवी जिस प्रकार से भोले-भाले बच्चो को बहका रहा बताते हैं ऐसा आभास होता है जैसे हिन्दू मानस पर एक जबरदस्त तमाचा मारा जा रहा है जिसका दर्द प्रत्येक आर्य हृदय अनुभव करता है।

महमूद गजनी ने बुत शिकनी को अपना धर्म बताकर सोमनाथ की प्रतिमा तोड़ी थी क्या यह केवल साम्राज्य की लिप्सा थी। सीरियल मे छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप को अपमानित करने मे भी कसर नहीं छोड़ी है।

गत २४ जून के प्रसंग मे इसी धारावाहिक मे आर्यों को भी विदेशी आक्रमणकारी बताकर मुगल आक्रमणकारियो के समकक्ष रखा गया है अर्थात् केवल मुसलमान ही आक्रमणकारी नहीं थे, आर्य भी तो आक्रमणकारी थे, विदेशी थे। जिस प्रकार भारत भूमि पर इनका अधिकार है अन्य सभी आक्रमणकारियो का भी वही अधिकार है फिर चाहे वह मुसलमान हो या ईसाई यह वही बेतुका असत्य इतिहास है जो अंग्रेजों ने भारतीयो की अस्मिता को समाप्त करने के लिए जानबूझ कर गढ़ा गया था। आज भी स्वतन्त्र भारत मे बच्चो को यही इतिहास पढ़ाया जा रहा है। पढ़ाने मे यह उल्टा भाव इतना प्रचारित न हो पाए तो अब 'अमीर खुसरो' सीरियल के बहाने इन कुभावों को भारत में प्रचारित करने का षड्यन्त्र रचा गया है।

स्वतन्त्र भारत में इस प्रकार के उल्टे इतिहास का प्रचार प्रसार सरासर राष्ट्र का अपमान है। अंग्रेज तो चाहे चले गये परन्तु राज्य अंग्रेजों के मानस पुत्रो ने सम्भाला है। मानस पुत्र अपने माता पिता के उद्देश्यो को पूर्ण करने मे सदा प्रयत्नशील रहते हैं।

अच्छा होता यदि बाल हकीकत, गुरु तेगबहादुर, बन्दा बैरागी, गुरु गोविन्दसिंह, शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि महापुरुषों पर धारावाहिक बनाकर दिखाते ताकि भारत मे रहने वाले हिन्दुओं से बिछुड़े वही राम, कृष्ण की सन्तान करोड़ो मुसलमानों की आंखें खुल जातीं कि हमारे पूर्वज कैसे बलपूर्वक, भय और लोभ से अपने सनातन धर्म से काट दिए गये उन्हें पुनः अपने घर लौटने की इच्छा जागृत होती फिर कैसा अलगाववाद या सम्प्रदायवाद रहता। सभा कार्य के मूल कारणों को खोज कर उन्हे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

—उर्मिला प्रधान आर्यसमाज लालबाग, लखनऊ

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा मिलाप सन्देश का स्वागत

दिल्ली १० अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक भेंटवार्ता में बताया कि वर्तमान काल में देश धर्म और समाज की रक्षा के लिए समाचार पत्रों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। स्वामी जी ने कहा—शहीदे धर्म पं० लेखराम ने मृत्यु से पूर्व वसीयत मे कहा था कि आर्यसमाज में लेख का कार्य जारी रहना चाहिए।

देश की युवा शक्ति को आज सिनेमा, दूरदर्शन आदि से जिस प्रकार भौतिकवाद का प्रचार कर दिग्भ्रान्त किया जा रहा है, ऐसी विषम अवस्था मे राजधानी दिल्ली से एक ऐसे धार्मिक तथा सामाजिक विचारो से ओतप्रोत दैनिक पत्र का अभाव खटक रहा था।

देश भक्ति एवं वैदिक धर्म की पुनीत विचारधारा से ओत-प्रोत दैनिक मिलाप सन्देश ने उस कमी को पूरा कर दिया है। हमे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि मिलाप सन्देश के प्रथम पृष्ठ पर गायत्री मन्त्र तथा सम्पादकीय लेख के ऊपर विश्वानि देव·· ·· मन्त्र की भूमिका से पूज्य लाला खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी जी) के पौत्र चिरञ्जीव नवीन सूरी ने अपने देश-मान्य पूर्वज तथा आर्यसमाज तथा आर्य समाज के प्रखर नेता के चरण चिन्हों पर चलकर मिलाप सन्देश को महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तथा उनके गुरु स्वामी योगेश्वरानन्द जी की विचारधारा को प्रति सप्ताह लेखनीबद्ध करके अपने पारिवारिक कर्तव्य को पूरा किया।

हम प्रिय नवीन सूरी को प्यार भरा आशीर्वाद देकर आर्य जनता से अनुरोध करते हैं कि मिलाप सन्देश को अधिक से अधिक अपनाकर पं० लेखराम की वसीयत को पूरा करें

वैदिक विद्वान पं० काशीनाथ शास्त्री का निधन

हमें सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली के सदस्य, आर्य सेवक के सम्पादक, प्रदेश के वेद प्रचार अधिष्ठाता 'वैदिक कालीन भारत' के लेखक पं० काशीनाथ शास्त्री गोंदिया का, अल्प बीमारी के पश्चात् गुरुवार दिनांक ४ अगस्त ८८ को पाढर अस्पताल में सायंकाल ४-३० बजे निधन हो गया।

आप पिछले मास १७ जौलाई को ही गोंदिया से अपनी सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति विक्रय कर धर्मपत्नी के साथ अपनी एकमात्र पुत्री जो होशंगाबाद में रहती है स्थायी निवास हेतु चले गये थे।

श्री शास्त्री जी लेखनी और वाणी के धनी थे। असत्य के खण्डन के लिए उनकी लेखनी सतत चलती रहती थी। इस सम्बन्ध में वे किसी को भी नहीं छोड़ते थे चाहे वह व्यक्ति कितने ही महत्वपूर्ण पद पर हो उनमें एक तड़प थी। वेद विरुद्ध तथा भारतीय संस्कृति इतिहास को तोड़ फोड़कर प्रस्तुत करने वालों के खिलाफ उन्होंने सदा ही कटु आलोचना की। वे धुन के धनी व लगन के पक्के थे तथा सिद्धान्त पर कभी समझौता नहीं करते थे। अवैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध उनकी लेखनी पाखण्ड खण्डनी पताका थी।

उनके निधन से आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश, आर्यसमाज और आर्य जगत की महान क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

आर्यसमाज के दिवंगत मनीषी–

आचार्य श्री पं० रामानन्द शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[डा० श्यामलकुमार शास्त्री, एम० ए०, अमेठी]

आचार्य जी का सर्वप्रथम दर्शन १९७१ ई० के नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित गायत्री महायज्ञ तथा वैदिक धर्म प्रचार महोत्सव स्थल निमोइया (चम्पारन) में मैंने किया। उस समय मेरी अवस्था १७ वर्ष की थी। आचार्य जी का नाम मैं ९–१० वर्ष की अवस्था से सुनता आ रहा था। कुछ इस रूप में कि वे बहुत बड़े विद्वान् हैं। शास्त्रार्थ महारथी हैं, महोपदेशक हैं, धाराप्रवाह संस्कृत और अंग्रेजी बोलते हैं। प्रथम दर्शन में ही मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ। जैसा सुना था, वैसा ही देखा और पाया। वे यह जानकर कि मैं निमोइया के निकट ही एक ग्राम माधवपुर का रहने वाला हूं और गुरुकुल में (उ०प्र०) पढ़ रहा हूं, बहुत प्रसन्न हुए भाषण देने का शौक मुझे भी बचपन से था। आचार्य जी ने उस सभा में ही 'अग्निमीळे पुरोहितम्" ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र पर भाषण देने को मुझे कहा। मैंने १५ मिनट में अग्नि शब्द की द्विविध व्याख्या–परमेश्वर और भौतिक अग्नि, इस व्याख्या का श्रेय स्वामी दयानन्द और उनके इस अर्थ पर महेशचन्द्र न्यायरत्न की आपत्ति, भ्रान्ति निवारण पुस्तक, प्रो० ग्रीफिथ, गुरुदत्त आदि पण्डितों की बातें सभी एक सांस में कह गया। आचार्य जी अति प्रभावित हुए। वहां आचार्य जी द्वारा किया जा रहा शंका–समाधान का कार्यक्रम निराला था। आचार्य जी विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर अंग्रेजी में, पण्डितों के प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में तथा साधारण जनता के प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दे रहे थे। ऐसा लगा कि उन में कोई प्रश्न भी उनके लिए नया न था। सब प्रश्नों के उत्तर देने के लिए वे सवथा तैयार तथा कन्दुक क्रीडा के समान मनोरंजक वातावरण तीन भाषाओं में बोलने से ही श्रोताओं में धाक बैठी हुई थी। ऐसी बात नहीं थी कि सभी प्रश्न पुराने और घिसे–पिटे ही थे। कुछ पण्डित मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण के श्लोक और ऋग्वेद–यजुर्वेद के मन्त्र भी क्रमशः मांस भक्षण, अवतार और मृतक श्राद्ध के पक्ष में प्रस्तुत कर रहे थे। उनमें कतिपय मन्त्र और श्लोक आर्यसमाज के क्षेत्र में अर्चाचित और अप्रसिद्ध भी थे। आचार्य जी अपने वैदुष्य और प्रत्युत्पन्नमतित्व से उन प्रश्न रूपी बाणों को एक कुशल धनुर्धर की भांति बीच में ही काट डालते। आचार्य जी का तेजोदीप्त मुखमण्डल पण्डित मण्डली में सर्वत्र आभा बिखेर रहा था।

आचार्य जी से प्रथम मिलन का ऐसा अद्भुत प्रभाव मेरे मन में हमेशा बना रहा। तबसे आज तक उन्हें सैकड़ों बार देखा हूं, सुना हूं, बातचीत किया हूं। सर्वत्र अपनी प्रतिभा से दूसरों को प्रभावित करते तथा आर्यसमाज का यश चहुंओर फैलाते हुए ही देखा। नरकटियागंज, बेतिया, मोतीहारी, चिरैया, रक्सौल, मसाढ़ी, छपरा, मुजफ्फरपुर, पटना, गया, वाराणसी–कहां तक गिनाऊं सभी जगह उत्सवों में आर्य समाज की शोभा बढ़ाते ही देखा। चरित्र के धनी, स्वाभिमानी और निश्छल विद्वान का व्यक्तित्व उन्हें मिला था।

आचार्य जी केवल संस्कृत के ही विद्वान नहीं थे और न हिन्दू धर्म शास्त्रों के। बौद्ध दर्शन, साहित्य और इतिहास का भी गम्भीर अवगाहन उन्होंने किया था। तथागत गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व और उनके धर्म प्रचार के निमित्त बौद्ध भिक्षुओं के तप, त्याग, करुणा, मुदिता, क्षमा और मैत्री के जीवन को उन्होंने हमेशा ही आदर्श और आदर की दृष्टि से देखा। पाणिनि कन्या विद्यालय वाराणसी के उत्सव में उन्होंने सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा द्वारा अपने लम्बे बाल कटाकर तथागत के अमर सन्देश का प्रसार प्रचार में जीवन खपा देने का ऐसा भावपूर्ण चित्र खींचा कि श्रोता धर्म प्रचार में उत्सर्ग की भावना से भर उठे और छात्राओं ने भी कुछ कर गुजरने का स्वप्न संजोया। एक बौद्ध भिक्षु विद्वान द्वारा चीन के राष्ट्रीय विद्वान् को पराजित करना शर्त के अनुसार उस विद्वान् द्वारा अपनी हत्या के लिए प्रस्तुत होना, सभा में हाहाकार मचना और उस परिस्थिति में उस बौद्ध विद्वान् द्वारा अपनी ही पराजय स्वीकार करके अपनी मृत्यु के वरण का दृश्य उपस्थित करते हुए तथागत के अहिंसा का सन्देश और परिणाम स्वरूप चीन के राजा और प्रजा का बौद्ध हो जाना, ऐसी न जाने कितनी घटनाएं और इतिहास आचार्य जी के लिए हस्तामलकवत् थीं और आचार्य जी जब उसका ओजस्वी वर्णन करते थे तो श्रोता भावोद्रेक में आंसू बहाने लगते थे।

पाणिनि विद्यालय के उत्सव में ही डा० सत्यदेव आर्य जयपुर प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने अपने प्रवचन में ऋषि दयानन्द की योगविद्या और भविष्य की कुछ घटनाओं को जान लेने की बात कही। प्रवचन के बाद ही शंका–समाधान का कार्यक्रम था। आचार्य जी समाधाता के आसन पर बैठे। पहला ही प्रश्न वाराणसी के आर्य व्यवसायी श्री जयदेव पिरवानी ने किया कि ऋषि दयानन्द योगविद्या से अपने मृत्यु के हेतु विष प्रदान की घटना को जानकर उससे क्यों नहीं बच सके ?

आचार्य जी ने कहा कि कोई भी व्यक्ति जिस किसी विद्या या हुनर का जानकार है उसे वह विद्या हमेशा हर समय या कोई अन्य काम करते हुए उपस्थित नहीं रहती। अनवधानता और अन्य कार्य में व्याप्त होने पर उस ज्ञान का प्रयोग वह नहीं कर पाता। मन एक समय में एक ही विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है–"न युगपज्ज्ञानुपलब्धेः" (न्याय ३–१–५६)। इन्द्रियों के काल भेद से व्यापार होने के कारण एक ही समय सभी विषयों का ज्ञानोत्पत्ति नहीं होती–'क्रमवृत्तित्वाद-युगपद् ग्रहणम्–(न्याय ३–२–६)। एक समय में अनेक विषयों का ज्ञान न होने के कारण 'न युगपदग्रहणात्" (न्याय ३–२–४ और) मन के विषयान्तर में आसक्त=लीन होने से पूर्व ज्ञात ज्ञान या प्रायभिज्ञान का अभाव हो जाता है (अप्रत्यभिज्ञान च विषयान्तरव्यासङ्गात् (न्याय ३–२–७) अतः स्वामी दयानन्द का ध्यान उस समय अपने विश्वस्त पाचक द्वारा दूध में विष दिये जाने की दुरभिसन्धि की ओर नहीं था। कोई भी योगी प्रत्येक काम की पृष्ठभूमि में परोक्षज्ञान को ही सदा जानने की चेष्टा करता रहे तो वह कोई दूसरा कार्य कर ही नहीं सकता। आचार्य जी के इस प्रत्युत्पन्नमतित्व और दर्शनशास्त्र से संवलित समाधान से श्रोतागण सन्तुष्ट हो गये।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी दिल्ली (१९७५) में आयोजित वेद सम्मेलन के संयोजक आचार्य पं० वैद्यनाथ शास्त्री थे। वेद सम्मेलन में भाषण के विषय पं० वैद्यनाथ जी ने पहले से ही निश्चित कर रखे थे और उन विषयों पर विद्वानों से लेख भी मंगा लिये थे। आचार्य पं० रामानन्द जी ने "ज्योतिष शास्त्र का मूल वेद" विषय पर निबन्ध लिखा था और इसी विषय पर स्थापना शताब्दी के वेद सम्मेलन में १० मिनट में ही सबसे अच्छा भाषण दिया। (क्रमशः)

संयुक्त निरीक्षण

इस सभा को प्राप्त निरीक्षण आख्या के अनुसार इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुँवर ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' के नेतृत्व में इस सभा की मुख्य निरीक्षिका श्रीमती डा० आशारानी जी तथा मुख्याधिष्ठाता (भू-सम्पत्ति) श्री वेदप्रकाशजी ने संयुक्त रूप से दिनांक २१-८-८८ से दि० २६-८-८८ तक, आर्यसमाज फर्रुखाबाद व याकूत गंज, आर्य कन्या इण्टर कालेज व आर्य महिला डिग्री कालेज फर्रुखाबाद, आर्य समाज व आर्य स्त्री समाज कासगंज (एटा), आर्यसमाज बदायूँ व बिल्सी व दातागंज, आर्य कन्या इण्टर कालेज बदायूँ व बिल्सी, आर्य समाज भुड़ व बिहारीपुर तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज व आर्य महिला डिग्री कालेज बरेली आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षक दल को सभा की ओर से बधाई है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री, सभा

अटल जी की ४७वीं वर्षगांठ

"जीवेम शरदः शतम्"

इस सभा के मुख्य निरीक्षक तथा युवा कल्याण अधिकारी के राजकीय पद पर सुशोभित कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल' ने अपने जीवन की ४७ शरद् ऋतुओं को सकुशल पूर्ण करके १६ सितम्बर से ४८ वीं शरद् ऋतु में प्रवेश कर रहे हैं।

कुँवर साहब का जन्म १६ सितम्बर १९४१ को मैनपुरी नगर के सन्निकट ग्राम बरवरी में, तत्कालीन जमींदार राजर्षि दुलारसिंह जू देव, प्रधान आ०स० मैनपुरी के प्रपौत्र तथा श्रीमन्महाराजकुमार महावीरसिंह के सुपुत्र के रूप में हुआ। आपको दयानन्द दर्शन अपने पूज्य पितामह तथा सदाचार अपने पूज्य पिता से उत्तराधिकार रूप में मिला है। आप प्रारम्भ से ही मैनपुरी आ० स० के निष्ठावान् सदस्य हैं। इस समय आपकी प्रदेश व्यापी निष्काम सेवाओं से हमारी सभा गौरवान्वित हो रही है।

प्रभु से प्रार्थना है कि वह ऐसे यशस्वी, आर्यवीर को दीर्घायु प्रदान करें। हार्दिक बधाई के साथ-

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी
प्रधान — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

निर्वाचन सूचना

इस सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार से, अधोहस्ताक्षरी ने आर्यसमाज विजयनगर-शास्त्रीनगर, कानपुर-महानगर का वार्षिक निर्वाचन, दि० २५-९-८८ को, प्रातः ८ बजे से कराना निश्चित किया है। आर्य सभासदों की सूची मन्दिर में टांग दी गई है। सूचनार्थ-

११-९-८८ —कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक सभा

'आर्यमित्र' के पाठकों को सूचना

कागज तथा छपाई आदि के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाने के कारण हमने 'आर्यमित्र' का वार्षिक मूल्य सभा के निश्चयानुसार १ जुलाई १९८८ से २५) रु० वार्षिक के स्थान पर ३०) रु० वार्षिक कर दिया है।

आशा है पाठकों का सहयोग यथापूर्व प्राप्त होता रहेगा।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक

आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर द्वारा आयोजित-
वेद प्रचार सप्ताह सुसम्पन्न

(निज सम्वाददाता द्वारा)

आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह दिनांक २७ अगस्त से ३ सितम्बर ८८ तक समारोह सम्पन्न हुआ। नित्य प्रातः ७ से ९ बजे तक विभिन्न परिवारों में तथा सायं ७ से ९ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर के भव्य सभागार में आयोजित समारोह में प्रसिद्ध आर्य विद्वान आचार्य वेदव्रत अवस्थी लखनऊ के प्रवचनों तथा श्री नरदेव आर्य (भरतपुर) राजस्थान के भजनों ने सहस्रों आर्य नर-नारियों के हृदयों में आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के हृदयंगम कराने में अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

३ सितम्बर को सायंकाल ५·३० से १०·३० बजे तक आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदव्रत अवस्थी लखनऊ के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री ओम् प्रकाश आर्य अधिशासी अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण ने समारोह की अध्यक्षता की। सभा में आचार्य धर्मानन्द हैदराबाद, श्री देवीदास आर्य, आचार्य वेदव्रत अवस्थी लखनऊ, श्री राम गुलाम, श्री रामकृष्ण आर्य, डा० ओम् प्रकाश आनन्द, श्री प्रतापसिंह श्री सन्तराम सेंगर प्रधान जिला सभा कानपुर के व्याख्यान एवं श्री नरदेव आर्य (राजस्थान), कु० अंजलि शास्त्री, कु० छाया आर्य के सुमधुर भजन हुये। जिसमें भगवान कृष्ण के जीवन पर गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत किया गया। अन्त में अध्यक्षीय भाषण के साथ समारोह समाप्त हुआ।

वन विहार (पिकनिक)

४ सितम्बर को प्रातः ८ से ३ बजे तक आयोजित व्यायामशाला में गंगा के तट पर आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर द्वारा आयोजित वन विहार में हजारों आर्य नर-नारियों ने सोल्लास भाग लिया जिसमें यज्ञ प्रवचन, भजन, लोकगीत, खेल कूद एवं सहभोज का आनन्द प्राप्त किया गया।

महिला आर्यसमाज, सभा भवन लखनऊ में वेद प्रचार सप्ताह

प्रतिवर्ष की भाँति, इस वर्ष भी सभा भवन की सुसज्जित यज्ञशाला में महिला आर्यसमाज, सभा भवन लखनऊ ने अपना वेद प्रचार सप्ताह एवं जन्माष्टमी समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया। प्रतिदिन यज्ञ एवं मधुर संगीतमय भजनों के साथ डा० शान्तिदेवबाला, श्री आचार्य पं० इन्द्रदेव जी, पं० अखिलेश तथा श्री करुणा दीपक के सारगर्भित भाषण हुए। महिलायें बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं। सभी ने वेद के स्वाध्याय एवं आर्य धर्म के प्रचार में सम्पर्ण भाव से यत्नशील रहने का व्रत लिया। श्रीमती प्रेम बक्शी का सराहनीय सहयोग रहा।—कैलाश कक्कड़

—श्री रामखेलावनसिंह चौहान शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ०प्र० की माता जी का १०-७-८८ को ९२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

वेदाधारित भारतीय राष्ट्र-चिन्तन

[श्री देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़]

[गताङ्क से आगे]

वैदिक युगीन आर्य नागरिक स्वयं संकल्प पूर्वक परमात्मा रूपी आदि शक्ति को स्मरण करते हुये कामना करता है-हे परमेश्वर हमारे राष्ट्र में सर्वत्र वेद विद्या से प्रकाश को प्राप्त सुयोग्य ब्राह्मण उत्पन्न हों। हमारे राष्ट्र में बड़े-बड़े रथ हो। शत्रुओं को अतीव ताड़ने-व्यथने का स्वभाव रखने वाले अत्यन्त बलवीर निर्भय राज पुत्र या क्षत्रिय सर्वत्र हो। हमारे राष्ट्र में कामनाओं एवं दुग्ध को पूर्ण करने वाली भूमि एवं धेनु हो। भार ढोने में समर्थ बड़े बलवान बैल हो। हमारे राष्ट्र में प्रचुर संख्या में शीघ्र गमन शील घोड़े हों। हमारे राष्ट्र में प्रभूत उत्तम व्यवहारों को धारण करने वाली नारियाँ हो। रथ पर स्थिर रहकर शत्रुओं पर विजय पाने वाले तथा सभाओं में उत्तम सभ्य सभासद का व्यवहार करने वाले युवा पुरुष हमारे राष्ट्र में उत्पन्न हों। हमारे राष्ट्र का शासक विद्वानों का सत्कार कर्ता सुख प्रदाता तथा शत्रु विनाशक हो। राष्ट्र में हम लोग जिन योजनाओं की संरचना कर के सभा निश्चय पूर्वक सफल हो। हमारे राष्ट्र में पर्जन्य रूपी मेघ को सर्वत्र वर्षा हो। बहुत उत्तम फलवाली ओषधियां परिपक्व हों। हमारे राष्ट्र में योगक्षेम-अर्थात् जो वस्तुयें भू गर्भ-सागर या आकाश मे हैं, किन्तु हमें अप्राप्त हैं-उन्हें प्राप्त कराने वाले योग की रक्षा हो। हमारा राष्ट्र अपने निर्वाह के योग्य पदार्थों की प्राप्ति में समर्थ हों।

इस सुन्दर मन्त्र मे राष्ट्र के सभी अवयवों का वर्णन है, जो उसे ऐश्वर्यवान बनाते हैं। यहाँ पर यह स्पष्ट करना असम्भव न होगा, कि इस मन्त्र में जिन शब्दों को जोगन्त किया गया है, वे किसी रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त नहीं है, जैसा कि इनके साथ बहुधा होता है। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि शब्दों को जन्म के आधार पर जाति विशेष से जोड़ दिया गया है किन्तु यहां पर ऐसा नहीं है। जो ज्ञान-विज्ञान का अनुसन्धान एवं प्रसारण करता है-वही ब्राह्मण है और जो बलपूर्वक अनवरत राष्ट्र की रक्षा में संलग्न रहता है-वही क्षत्रिय है। इसी प्रकार अन्नादि उत्पादन एवं वितरण में व्यस्त व्यक्ति वैश्य और अपने श्रम से उक्त कार्यों में सहयोग देने वाले व्यक्ति पुरुषार्थी शूद्र हैं। इसमें ऊँच-नीच का भेद नहीं, प्रत्युत कार्य विभाजन है। आज भी अनेक पठित जन भी वर्णाश्रम व्यवस्था को जाति प्रथा से सम्बद्ध कर देते हैं जो अनुचित है। अश्व शक्ति राष्ट्र के परिवहन की प्रतीक है तथा धेनु उसकी पोषण क्षमता की द्योतक है। वृषभ या बैल राष्ट्र के यातायात भारवहन एवं कृषि कार्यों के साधन का परिचायक है। संतान के निर्माण-उत्थान एवं गृह शक्ति की आधार नारी भी राष्ट्र का उत्तम अङ्ग भाग है। इस मन्त्र में युवाओं को विशेष महत्व दिया गया है, क्योंकि उनसे अपेक्षा की गई है कि वे सभा मे सभासद की भांति सुसभ्य एवं विजयी हों। यह मन्त्र एक ऐसा वैदिक राष्ट्र गान है, जो राष्ट्र को सर्वतोमुखी समृद्ध एवं वैभव सम्पन्न बनाने का व्याख्यान करता है।

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो
वुरीत सख्यम्-
यजु० २२ / २१

अर्थात् समस्त मनुष्य अपने विद्वान् नेता की मित्रता को स्वीकार करें। इस मंत्रांश की भावना यही तो है कि राष्ट्र के नागरिक ऐसे व्यक्ति को नेता के रूप में वरण करें जो उन्हें प्रिय हों। जो नागरिकों का मित्र और नागरिक उसमें मित्र हों। राष्ट्र में पारस्परिक समानता एवं प्रतिष्ठा का साम्राज्य हो। जाति प्रथा का द्वेष न हों, प्रत्युत वर्णाश्रम व्यवस्था की ज्योति हो।

प्रियं मा कृणु देवेषु
प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत
उत शूद्र उतार्ये ॥
अथर्व० १९/६२/१

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु
रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु
मयि धेहि रुचा रुचम् ॥
यजु० १८/४८

अर्थात् मुझको ब्राह्मणों में प्रिय कीजिए, क्षत्रियों में प्रिय कीजिए, वैश्यों में प्रिय कीजिये और शूद्रों मे प्रिय कीजिये। हमारी ब्राह्मणों में रुचि हो, क्षत्रियों में रुचि हो, वैश्यों और शूद्रों मे रुचि हो तथा इस रुचि में रुचि हो। इस रुचि में रुचि का आशय क्या है। यही तो कि ये प्रिय व रुचि की भावनायें सतही कृत्रिम नहीं, अपितु हृदय से ठोस होनी चाहिये। विश्व का कोई देश नहीं होगा, जिसमें शिक्षक-रक्षक-वणिक एवं श्रमिक न हों, जैसा कि भारत राष्ट्र में है। फिर वर्ग भेद क्यों-क्यों न प्रेम और रुचि हो, जैसा कि वेद का सन्देश है। जब हम इस प्रकार के भेदभाव को भूल कर एकता एवं अखण्डता की सुदृढ़ भावना से कर्तव्य का पालन करेंगे, तो हमारा राष्ट्र स्वावलम्बी और कल्याणकारी होगा।

उत स्वराजो अदिति-
रदब्धस्य व्रतस्य ये।
महो राजान ईशते ॥
साम उत्तरार्चिक अ० ११/१३५३

अर्थात् उन्नतिशील स्वराज्य अखण्ड कल्याणकारी हो और नियमों का पालन करने वाला उसका महान शासक समर्थ हो। यहाँ पर स्वराज्य पर बल दिया है, जिससे नागरिक अपना राज्य अपने सुयोग्य प्रिय नेता के माध्यम से स्वयं सञ्चालित करें। स्वराज्य को स्वावलम्बी स्वाधीन एवं सुखी रखने के निमित्त हमको वेद का आदेश है।

दिवं च रोह
पृथिवीं च रोह
राष्ट्रं च रोह
द्रविणं च रोह।
प्रजां च रोहामृतं
च रोह
रोहितेन तन्वां
सं स्पृशस्व ॥
अथर्व० १३ / १ / ३४

अर्थात् हे राजन्! निश्चय करके सूर्यलोक व पृथ्वी की विद्या को प्रकट कर, राष्ट्र का व धन को प्रकट कर, प्रजा व अमरत्व को प्रकट कर सबको प्रकट करने वाले प्रभु को साथ रखते हुए अपने विस्तार को प्रकट कर। यहाँ पर बारम्बार जो "निश्चय पूर्वक प्रकट करे" की पुनरावृत्ति है, उसका प्रयोजन यही है कि हम अपने अन्तरिक्ष पृथ्वी, राष्ट्र, ऐश्वर्य, प्रजा की यथार्थ उन्नति करते हुए उसे विश्व में प्रतिष्ठित करें। इस मन्त्र का अन्तर्निहित उद्देश्य बहुत महान है जो हम से उपेक्षा करता है कि हम उक्त वर्णित पदार्थों की विद्याओं को ग्रहण कर उनके अनुसन्धान द्वारा उत्तम फलश्रुति प्राप्त करते हुए सुकीर्ति से अमर हों जावे। "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" अर्थात् अपने स्वार्थ नहीं परमार्थ युक्त दूसरों की हित भावना से पूर्ण त्यागी-तपस्वी एवं बलिदानी पुरोहित हमारे राष्ट्र में निरन्तर जागते रहें, इन्हीं के जागते रहने से सम्पूर्ण राष्ट्र सदैव जागृत एवं समुन्नत रहेगा। इस प्रकार यदि सभी राष्ट्र अपनी मर्यादा में रहते हुए विकास एवं सहयोग करते रहें तो सकल विश्व स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण हो सकता है।

।। संगठन एक शक्ति है ।।

स्वामी-ब्रह्मानन्द सरस्वती (वेदभिक्षु) आर्य समाज-चन्दौसी--
२०२४१२ मुरादाबाद (उ० प्र०)

मन्त्र-सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। ऋग्वेद, १०·१९१·२।।

शब्दार्थ-परमात्मा सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि--हे मनुष्यों ! तुम लोग-सं गच्छध्वम्=साथ-साथ मिल कर गति करो, सं वदध्वम्=एक साथ मिलकर वार्तालाप करो, सं वः मनांसि=तुम्हारे मनोगत विचार एक हों,--जानताम्=तुम्हें एक ही प्रकार का प्रगति मान ज्ञान प्राप्त हो । देवाः=विद्वानों=विवेक शीलों ने भागम्=भाग को=अपने-अपने कर्तव्य भागों को, यथा=जैसे, पूर्वे=पूर्व समय में, सं-जानाना=-भली प्रकार से ज्ञात किया (और), उपासते=एक-दूसरे से प्रीतिपूर्वक समीपता प्राप्त की है ।

व्याख्या-किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति के लिए-एक भाषा,-एक धर्म और एक जाति का होना अत्यावश्यक है । इस वेद मन्त्र में संगठन शक्ति का बड़ा ही रोचक व दार्शनिक विवेचन हुआ है । काश; आज तथा-कथित न्यायालयों के द्वारों पर दस्तक देने वाले आर्य जन महर्षि दयानन्द तथा वेद माता के मर्म को समझ लेते तो, इन भयावह परिस्थितियों में आज आर्य समाज के द्वारा मानवता का अमित कल्याण सम्भव था। संसार भर के जन-जन की दृष्टि आज इस पावन वैदिक धर्म पर टिकी हैं, इसकी विशेषता है, मानवता-की पूजा । मानव संरक्षण चाहता है । सरक्षण, उच्च चरित्र में निहित होता है । उच्च चरित्र मात्र शाश्वत वैदिक धर्म में ही है । मानव मात्र के शुभ कल्याण हेतु वेद ही चिन्तन की शिक्षा देता है । परम वेद भक्त पूज्य महर्षि दयानन्द ने अक्षरशः वेद ज्ञान को आत्मसात करके मानव मात्र के उत्थान का शंख नाद किया । एक मानव, समाज की एक इकाई है । कई मानवों से मिलकर समाज बनता है । इस प्रकार के अनेक समाजों का आर्य करण और समाजों की प्रगति हेतु व्यक्ति-व्यक्ति का आर्य करण आवश्यक है । इस आर्य करण का प्रकार इस मन्त्र में बताया

(१) यथा- सं गच्छध्वम्=तुम्हारी गति या-चलन समान हो । जब गति करो तो गति का उद्देश्य नेक हो । अपनी उन्नति के साथ मानव मात्र की उन्नति का भी लक्ष्य हो । तुच्छ स्वार्थों में ही उलझ कर जीवन का ध्येय न हो, बल्कि सब समाज का जिससे हित हो वह चाल-चलन हमारा बन जाए । हम अकेले भोगवादी न बने । सब आपस में ऊंच-नीच के भावों का त्याग करके एक-दूसरे के सहयोगी बन जाएं; तभी हमारी गति सफलता के शिखर पर होगी ।

(२) सं वदध्वम्=एक साथ मिलकर बोलो । भाषा वह सूत्र है, जो बिखरे हुए समुदायों को एक दृढ़ सूत्र में पिरो कर रखती है । भाषा एक हो, राष्ट्र का जन-जन उसे प्यार करता हो । मन्त्र=विचार एक हों, धर्म पूर्वक आदर्शता का घोष एक हो । जो हमारा आर्य=श्रेष्ठ नेता उद्घोष करे, वही हमारा सारा समाज घोष करे इस प्रकार मिल करके वाणी का व्यवहार भी सम्यक् हो ।

(३) सं वः मनांसि जानताम्=तुम्हारे मन एक ही प्रकार के ज्ञान-संकल्पों से संयुक्त हों । मन विचारों का और संकल्पों का स्रोत है । आत्मा मन के द्वारा नाना विधि विचार व संकल्प संजोता रहता है । चाल-चलन, और भाषा विज्ञान के एक होने पर संकल्प-विचार भी साम्य हो जाते हैं । अतः मन की पवित्रता तथा एकता हेतु वेदाज्ञानुसार एक धर्म परायण बनों, एक ईष्ट को मानों, एक जाति में विश्वास करो और भाषा बोलो । तब संकल्प शुद्धि से विकास पथ पर बढ़ोगे ।

(४) देवा : जनाना : पूर्वे यथा भागम्=
जैसे देव=विद्वान जनों ने पूर्व काल में अपने-अपने ध्येय या लक्ष्य-भागों को-सं+उपासते=भली प्रकार से प्राप्त किया था । ऐसे ही तुम लोग भी करो ।

देव=विद्वान अर्थात श्रेष्ठ जन, जिनका जीवन, परार्थ हितों में व्यय होता है । दिन-रैन जो पर हित चिन्तन में व्यस्त रहते हैं । जो स्वार्थों की बलि देकर जीव मात्र के कल्याण हेतु तत्पर हैं । वही, देव, आर्य, सन्त और साधु कहाते हैं । इन्होंने स्वयं को तो वेद माता की आज्ञाओं के पालन मे लगाया हुआ है, परन्तु समाज के प्रत्येक वर्ग को भी बोध कराते हैं, कि तुम भी हमारा अनुसरण करो । तभी तो कहा है, कि जैसे पूर्व देवों ने संगठित होकर अपने उद्देश्य भाग को प्राप्त किया-तुम भी वैसा ही करो ।

देश के कर्णधारो ! आज तुम्हारे सामने महान चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं - राष्ट्र आज अनेक उलझनों मे फंसा हुआ है । वेद का यह उच्च ज्ञान, कब काम-आवेगा । 'संगच्छध्वम्' के पाठ करने वालों, अपने आप से पूछो कि क्या यह मन्त्र आपने सचमुच पढ़ा है । ? नहीं । तुम पाठ करने वाले आपस में ही उलझे रह गए । तुम्हारे भाषा, संकल्प ज्ञान और धर्म-जाति एक नहीं हो-पाये । तुम्हारे धर्म गुरु आज भी अमानवीय मान्यताओं को वेद से सिद्ध कर रहे हैं और इधर म्लेच्छ व यवन इन सूत्रों को अपना कर देव-सन्तानों (आर्यों) को मिटाने पर तुले हैं । सावधान; समय है, चेत लो । वेद माता की शरण में आकर 'संगठन-सूक्त' का पाठ सार्थक करो । एक छोटी सी (काल्पनिक) कहानी पढ़ो ! और मनन करो ।

कहानी--चार सहेली किसी यात्रा पर मिल कर चली । चलती-चलती वह एक नदी के तट पर जा पहुंची, वह तैरना नहीं जानती थी । नदी में पानी अधिक था । सहेलियां भी पक्की थी । एक बकरी, एक लोमड़ी, एक चुहिया और एक छिपकली । इन्हें एक बड़ा सा कछुवा तट पर धूप का आनन्द लेता दीख गया । चारों मिलकर उसके पास गई और बोली भाई जी, हमें अपनी पीठ पर बिठा कर नदी के उस पार लगा दें, जिससे हम अपनी यात्रा पूरी कर सकें । कछुवा को इनके प्रेम व संगठन को देख कर दया आ गई और कछुवा नदी में जाकर उन्हें पार करने लगा । सहसा, कछुवा को ध्यान आया कि इनकी प्रेम तथा संगठन की परीक्षा भी ले लूं--कितना सच्चा प्रेम व संगठन है ? कुछ जल में जाकर कछुवा बोला, बहिनों मेरी कमर टूटी जाती है, शीघ्र ही एक उतर जाओ, इतने कहते पर ही चुहिया ने अपने से छोटी छिपकली को पानी में धकेल दिया वह छट-पटा कर मर गई । कछुवा को ज्ञात हो गया कि इनका प्रेम व संगठन दिखावटी है । वह कुछ आगे और बोला कि मुझे कष्ट हो रहा है, एक और उतरो । लोमड़ी ने तुरन्त ही चुहिया डुबो दी । इसी प्रकार आगे बढ़ने पर बकरी ने लोमड़ी पर टक्कर मार कर वह भी जल में फेंक दी । बकरी अकेली रह गई । नकली प्रेम व संगठन पर हास्य करता हुआ कछुवा डुबकी लेकर जल के तल पर चला गया और बकरी भी अपने बड़प्पन के साथ डूब मरी ।

वेद पाठियों ! क्या हमारी भी यही दशा तो नहीं है ? विचार करो । बड़े-छोटे पन को भुला कर वेद माँ का पावन आदेश पालन करो ।

शोक समवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान राजर्षि रणञ्जय सिंह के दुखद निधन पर हमें निम्न आर्यसमाजों से शोक समवेदनाएं प्राप्त हुई हैं। आर्यसमाज जौनपुर, श्री ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थी लखनऊ, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, फतेहपुर, गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर, गुरुकुल विद्यापीठ पुष्पावती पू० (गाजियाबाद), प्रादेशिक संस्कृत विद्यालय गाजियाबाद, महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय गाजियाबाद, आ०स० अमरोहा, आ०स० गवां (बदायूं), आ० स० गांधी कालोनी मुजफ्फरनगर, आ०स० जनकनगर सहारनपुर, आ० स० जसवन्तनगर (इटावा), सरस्वती विद्यालय कन्या इन्टर कालेज मन्डी, लखनऊ, आ०स०बगहा (मिर्जापुर), महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट, आ०स० मल्लापुरा (वाराणसी) आदि।

सभा सबके प्रति अपना आभार प्रकट करती है। –सभा मन्त्री

गुरुकुल द्वारा प्रचार की धूम

महर्षि दयानन्दीय गुरुकुल कुम्पपुर (फर्रुखाबाद) जिसके उपदेशक गत कई वर्षों से सत्य सनातनी वेद विद्या के प्रचार–प्रसार द्वारा समाज सेवा में निरन्तर संलग्न हैं। गत माह गुरुकुलीय धर्मोपदेष्टाओं ने कायमगंज, नवाबगंज, कमालगंज, चावपुर, दूदेगई, म० बेग, म०चारंभ, म० बमू, म गुलाल (फर्रुखाबाद) तथा कनौरा, बाराई (हरदोई) आदि अनेक स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया और लोगों को वैदिक धर्म मे अवगत कराया तथा यज्ञोपवीत भी प्रदान किए।

आर्यसमाज का तुलनात्मक इतिहास

सात भागों मे आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित व प्रकाशित करने का जो संकल्प हमने किया था, वह अब पूरा हो गया है। 'इतिहास' के सातों भाग प्रकाशित हो गये हैं। अब हमारी योजना है कि अंग्रेजी भाषा में आर्यसमाज के इतिहास को प्रकाशित किया जाए, ताकि हिन्दी न जानने वाले देश-विदेश के लोग भी इस महान् जन–आन्दोलन के सम्बन्ध मे समुचित जानकारी प्राप्त कर सकें। जिसने भारत मे नव युग का सूत्रपात किया और जो समस्त संसार को उन्नति तथा शान्ति का सच्चा मार्ग प्रदर्शित कर सकता है। 'आर्य समाज का इतिहास के अंग्रेजी संस्करण के लिये हम आर्य नर-नारियों के सुझाव आमन्त्रित करते हैं, ताकि इस इतिहास' को हम पाठकों के लिये अधिक उपयोगी बना सकें।

हिन्दी मे आर्यसमाज का इतिहास जो हमने प्रकाशित किया है उसमें बड़े आकार के ५००० पृष्ठ हैं, आर्ट पेपर पर छपे चित्रों की पृष्ठ संख्या इनके अतिरिक्त है। सातों भागों के पूरे सेट का मूल्य केवल पाँच सौ रुपये है। जो लागत से भी कम है। शुरू में प्रकाशित दो भाग अब समाप्ति पर है,अतः बाद में पूरे सेट को प्राप्त कर सकना कठिन हो जाएगा। सानुरोध निवेदन है कि इस 'इतिहास' के सातों भागों के पूरे सेट का आर्डर शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों में यह 'इतिहास' अवश्य होना ही चाहिये। यह आर्यसमाज के विश्व कोश के समान है।

सत्यकेतु विद्यालङ्कार
आर्य स्वाध्याय केन्द्र, ए–१/३२ सफदरजङ्ग एन्क्लेव
नई दिल्ली–११००२९

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्रदेश के अन्तर्गत

उपदेशकों, महोपदेशकों एवं भजनोपदेशकों के कार्यक्रम मास सितम्बर ८८

१–श्री केशवदेव शास्त्री–महोपदेशक सभा–१ से ३ मेरठ, ४ से ९ किरतपुर, १७, १८, १९ कैरवा, २०, २१ रोसा।

२–श्री विश्वम्भरदत्त शास्त्री–उपदेशक–१ से ५ रहमतगंज, १४ से ३० बहजोई।

३–श्री सुकर्मानन्द जी महाराज–१ से ३ महाराष्ट्र, १५ से ३० ठाकुरद्वारा क्षेत्र।

४–श्री महावीर जी शास्त्री–उपदेशक–जनपद गोरखपुर।

५–श्री जीतनारायण जी शास्त्री–उपदेशक–१ से ३ चन्दौसी, ४ से १५ बहजोई।

६–श्री डा० विजयपाल सिंह आर्य–१ से ३ सिकन्दराराऊ, १५ से ३० धनौरा क्षेत्र।

७–श्री गजराजसिंह जी भजनोपदेशक–१ से ३ भोपाल, १५ से ३० ठाकुरद्वारा।

८–श्री धर्मराजसिंह जी प्रचारक–१ से ३ जगतपुर बरेली, ४, ५, ६ पीपली नायक।

९–श्री खेमचन्द्र जी प्रचारक–१ से ३ फैजाबाद, १० से २५ बदायूं।

१०–श्री कमलदेव जी प्रचारक–१ से ३ हाथरस, ४ से ८ मेरठ, ९ से १२ बयाना।

११–श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य भजनोपदेशक–१ से ३ लखनऊ, ८, ९, १० बिजनौर, ११ से १३ धामपुर, १५ से २५ बदायू।

१२–श्री उदय प्रकाश जी आर्य प्रचारक–१ से ३ आगरा, १५ से ३० सदरपुर।

१३–श्री रामचन्द्र जी शर्मा भजनोपदेशक–१ से ५ रहमतगंज, ६ से ७ पीपलीनायक, १० से १६ बदायूं।

१४–श्री जगतवीर जी सनेही–भजनोपदेशक–१ से ३ सिकन्दराराऊ, १५ से ३० सदरपुर क्षेत्र।

१५–श्री सीताराम जी शर्मा–भजनोपदेशक–१ से १२ पीलीभीत, १५ से ३० मोहद्दीनपुर धनौरा क्षेत्र।

१६–श्री सीताराम जी हरदोई वाले–भजनोपदेशक–१ से ३ कानपुर देहात, १७ से १९ कैरवा, २०, २१ रोसा।

१७–श्री नेमप्रकाश जी आर्य भजनोपदेशक–१ से ३ लखनऊ, ८, ९, १०, बिजनौर, ११, १२, १३ धामपुर, १४ से १८ बांगरमऊ।

१८–श्री युगलकिशोर जी भजनोपदेशक–१ से ३ लखनऊ, ४ से ६ ईसानगर, ९, १० महुयाई, ११, १२ मतापुर, १४ से १८ बांगर मऊ, २६ से ३० लालगंज रायबरेली।

१९–श्री तेजपालसिंह आर्य भजनोपदेशक–१ से ३ चन्दौसी, ५ से ८ मेरठ, १० से १३ गढ़ीनेगी काशीपुर।

२०–श्री मनवीरसिंह जी प्रचारक–५ से ११ बागपत, १५ से ३० ठाकुरद्वारा,

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता–उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

–आर्यसमाज मारहरा (एटा) में वेदप्रचार सप्ताह के उपलक्ष में श्रावणी पर्व पर श्री धर्मदेव जी वानप्रस्थी के अछूतोद्धार व दलितोद्धार पर प्रभावशाली भजन व प्रवचन हुए। समता दिवस भी समारोहपूर्वक मनाया गया।

आयमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५०८ ४५९९१
रजिस्ट्रेशन सं० एल डब्लू एन ०७२
भाद्रपद कृष्ण ३०
११ सितम्बर रविवार १९८८ ई०

आर्य मि

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद

प्रधान श्री खमचन्द्र जी आर्य, शाही चबूतरा, अमरोहा
वरिष्ठ उपप्रधान—श्री विक्रमसिंह जी आर्य, मोह० ठेर, सम्भल
मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र आर्य, मोह० काली पगड़ी, अमरोहा-२४४२२१
कोषाध्यक्ष—श्री अम्बरीशकुमार जी, मन्त्री आ०स० मण्डी बांस मुरा०

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद का वर्ष १९८८-८९ का वार्षिक निर्वाचन श्री प०शान्तिस्वरूप जी पाण्डेय (फतेहगढ़) के नेतृत्व मे आर्यसमाज मन्दिर शमशाबाद के प्राङ्गण मे सब सम्मति से निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रु०)
मन्त्री—श्री प० विद्यासागर जी आर्य मेरापुर ,,
कोषाध्यक्ष श्री मालताप्रसाद जी आर्य रम्पुरा ,,

महर्षि दयानन्दाद गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद)

आर्यकुमार सभा का वार्षिक निर्वाचन दि० २४-७-८८ को सर्वसम्मति से निम्नप्रकार सहर्ष सम्पन्न हुआ—

प्रधान—ब्र० मनुदेवार्य
मन्त्री—श्री विजयपाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री अशोक कुमार आर्य

आर्यसमाज राजाजीपुरम, लखनऊ

प्रधान—डा०आनन्दकुमार बरनवाल
मन्त्री—श्री देवीशंकर
कोषाध्यक्ष श्री सूरजप्रकाश तलवाड़

आर्यसमाज नौबस्ता (कानपुर)

प्रधान—श्री ब्रजगोपाल आर्य
मन्त्री—डा० गयाप्रसाद शास्त्री

आर्यसमाज रामपुरा, कोटा

प्रधान—श्री कृष्ण जी साधक
मन्त्री—श्री भगवतीप्रसाद श्याम
कोषाध्यक्ष श्री कल्याणमल मित्तल

आ० स० कोसीकला (मथुरा)

प्रधान—श्री वीरेन्द्रकुमार जी
मन्त्री—श्री प्रदीपकुमार आर्य
कोषा० श्री रमेशचन्द्र जी

आर्यसमाज नया बाजार, लश्कर

प्रधान—श्री भारतभूषण त्यागी
मन्त्री—श्री मदन मुरारी
कोषा० श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर

आ०स० गोसाईगंज(ज)नाथ (खोरी)

प्रधान—श्री डा०गिरधारीलालशर्मा
मन्त्री—श्री टीकमसिंह चौहान
कोषा० श्री इन्द्रपाल मलोम

आ०स० रामपुर सफदराबाद

प्रधान—श्री मगूसिंह
मन्त्री—श्री पूरेवसिंह
कोषा०—श्री सहदेव

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झांसी

प्रधान—श्री नाथूराम आर्य
मन्त्री—श्री माताप्रसाद त्रिपाठी
कोषा०—श्री निहालचन्द्र बजाज

आ०स० आसनसोल (बंगाल)

प्रधान—श्री भृगुनाथप्रसाद
मन्त्री—श्री रामसागरसिंह
कोषा०—श्री विजयकुमार खेतान

आ०स० वृन्दावन (मथुरा)

प्रधान—श्री प० बिहारीलाल जी
मन्त्री—श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषा०—श्री द्वारिकाप्रसाद जी

आ०स० मन्दिर नयाबांस दिल्ली

प्रधान—श्री ओमप्रकाश शीशेवाले
मन्त्री—श्री धर्मपाल जी आर्य
कोषा०—श्री राजेन्द्रनाथ मोठेवाले

आर्य उपप्रतिनिधि सभा,वाराणसी

प्रधान श्री अवधबिहारी खन्ना
मन्त्री—श्री दीपनारायणलाल
कोषा०—श्री सत्यप्रकाश आर्य

नगर आर्यसमाज लखनऊ द्वारा आयोजित—

समता दिवस समारोह सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार दिनांक ३-९-८८ को श्रीकृष्ण जन्म दिवस पर समता दिवस नगर आर्यसमाज रकाबगंज लखनऊ मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया।

श्री एवं श्रीमती शिवबालक आत्मीक यज्ञ के यजमान थे। श्री सुन्दरलाल एवं श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि पूर्व एम० एल० ए० सहित सैकड़ो हरिजन रैदास, कुरील, वाल्मीकि, पासी आदि स्त्री पुरुषो ने यज्ञ मे आहुति दी। लगभग ५० हरिजनो को यज्ञोपवीत दिया गया।

श्री कन्हैयालाल जी वाल्मीकि का सम्मान पट्ट पहनाकर किया गया। जनसभा मे श्री ओमचन्द्र (उन्नाव), ब्रह्मानन्द (हरदोई), श्री मुन्नालाल के प्रभावोत्पादक भजन हुए। निरंकारी दरबार श्री सेवक नारायणसिंह का प्रवचन हुआ। सभा की अध्यक्षता स्वामी नारदानन्द सरस्वती के शिष्य श्री जगदीशनारायण सक्सेना एडवोकेट अध्यक्ष ऋषि आश्रम ने की। श्री अर्जुनदेव महान ने जिला सभा लखनऊ की ओर से धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री महेन्द्रकुमार ने किया। लगभग ३०० व्यक्तियों ने कार्यक्रम मे भाग लिया। सभा का संयोजन श्री [illegible] एडवोकेट मन्त्री नगर आर्यसमाज ने किया। समारोह के [illegible] नगर आर्यसमाज की ओर से प्रसाद वितरण भी किया गया। समारोह की स्थानीय जनता ने अत्यन्त सराहना की।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अगस्त १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७ ५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर ३०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क ३०) रु० हो गया है।

५११, ६१८, ९२१, २१४५, ३०५०, ३७८०, ५२६५, ५३०१, ५३०९, ५५००, ५९३६, ६२०१, ६४९७, ६७८१, ६८३८, ८०९१, ८३१५, ८३८८, ८४२८, ८६४०, ८६६५, ९५००, ९५०१, ९५०६, ९९६९, ११२१५, ११२४९, ११२५३, ११६९४, ११९७१, ११६७३, ११९७८, १२३१४, १२३६५, १२७०९, १२७१०, १२७१२, १२७१८, १२९४६, १२९४९, १३१८१, १३१९१, १३५११, १३५०८, १३५४०, १३५४४, १३५६०, १३५६४, १३५६६, १३५७०, १३५७३, १३५७८, १३५७९, १३५८०, १३९५३, १३९५६, १३९५७ १३९५८, १३९५९, १३९६५, १३९७९, १४३२४, १४३२५, १४३२६, १४३२७, १४३२८, १४३२९, १४३३०, १४३३१, १४३३२, १४३३३, १४३३४, १४३३५, १४३३६, १४३३८।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नारायणस्वामी आर्यसमाज प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] एम०पी० प्रिन्टर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ — घोषणा पत्र सं० ७।२८-२ ८५

भाद्रपद शुक्ल ७ रविवार संवत् २०४५ वि०, दिनांक १८ सितम्बर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

हुतदेव पाठक एम०ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ९१

अङ्क ३७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

का

वृहदधिवेशन दि० १२,१३ नवम्बर

सन् १९८८ को

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज

लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१ सभा में चिट्ठ प्राप्ति की अन्तिम तिथि	१० ९८ ८
२ चिट्ठों की जांच	११ १० ८
३—मतदाता सूची का प्रकाशन	१८— ० ८८
४—आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	०— ०—८८
५—आपत्ति का निवारण	२ — ०—८८ से २४ १ —८८ तक
६—शुद्धमतदाता सूची का प्रकाशन	१५—१०—८८
७—वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	४—११—८८ तक १२—१ ८८
८ चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

स्थान—डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी—भवन
, मीराबाई मार्ग लखनऊ १

दिनांक ११-९-८८]

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

दिनांक—भाद्रपद शुक्ल ७ संवत् २०४५, रविवार १८ सितम्बर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

और अब… … … …

वेद प्रचार सप्ताह के बाद

* * *

हमने सम्पूर्ण देश विदेश विशेषतया अपने प्रदेश में वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया । इस अवसर पर अन्य कई रोचक कार्यक्रमों के अतिरिक्त समता दिवस भी आर्य मन्दिरों में बड़े समारोह के साथ मनाया गया । वेद कथाओं के साथ ही अस्पृश्य कहे जाने वाले अपने भाइयों को पवित्र यज्ञवेदि पर बिठाकर हवन किया और उन्हें यज्ञोपवीत दिया । सहभोजों में सबने साथ मिलकर खाया पिया और वैदिक धर्म की उदात्त मान्यताओं का श्रवण, मनन किया, उन पर चलने का व्रत लिया । समता दिवस की परिकल्पना नवीन है । यद्यपि हम सब समान हैं और समता समानता और बन्धुता के महान आदर्श से सृष्टि के आदिकाल से ही जुड़े हुए हैं, फिर भी आर्य जाति में, वर्तमान काल में आई हुई विसंगतियों को दूर करने हेतु हमने प्रदेशीय एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार इस अवसर पर सामूहिक रूप से इस दिवस का आयोजन किया । वेद में संगठन सूक्त का एक मन्त्र है जिसका हम प्रायः पाठ किया करते हैं, साप्ताहिक सत्संगों के अवसर पर तो अवश्य ही—"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" हम सब साथ–साथ चलें, साथ–साथ बोलें, एक दूसरे के मन की बातों को समझते हुए समान विचार वाले बनें—आदि । वेद प्रचार के साथ "समता दिवस" का आयोजन विशेष रूप से अपने उन भाइयों को वैदिक धर्म की ओर प्रेरित करने के लिए किया गया है जो किसी कारण से वेद के सन्देश से विमुख होते जा रहे हैं । संस्कार से वह वैदिक धर्मी ही हैं, हमारी संस्कृति के अभिन्न अङ्ग किन्तु सदियों से जन्मगत जातिपाँति की तथा छुआछूत की व्यवस्था समाज में पनपे रहने के कारण वे प्रभु के इस दिव्यज्ञान वेद के स्वाध्याय एवं वेद के प्रवचन से दूर होते गये और इतने दूर होते गये कि हमारी संस्कृति और हमारे रीतिरिवाजों को छोड़ते गये और यहां तक दूर हुए कि हमारे प्रबल विरोधियों के संगठन में जाकर हमारे घोर शत्रु बन गये ।

संगठन की दृष्टि से आर्यों के विरुद्ध इस समय दो प्रबल संगठन कार्य कर रहे हैं । एक इस्लाम की आड़ लेकर तो दूसरा ईसाइयत की। यह दोनों संगठन काफी शक्तिशाली है और साधन सम्पन्न भी । वेद के उक्त संगठन–सूक्त का क्रियात्मक पालन करने में वे हमसे अधिक जागरूक हैं । ईरान का मुसलमान लखनऊ के मुसलमान के साथ, एक थाली में, बैठकर, बेहिचक, रोटी खा लेगा और आवश्यकता पड़ने पर रोटी के साथ बेटी का भी व्यवहार कर लेगा । लेकिन, हम एक थाली की कौन कहे कहीं–कहीं पंगत में अपने से निम्न कहे जाने वाले को बिठाकर भी खिलाना पसन्द नहीं करते । यही हाल उनकी प्रार्थना का भी है । सामूहिक हो या एकाकी, विश्व के किसी कोने का रहने वाला मुसलमान ईसाई मिलकर प्रार्थना करेंगे । प्रार्थना तथ्यहीन है या अपूर्ण है—इस बात से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है । वह तो सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित होना अपना धार्मिक (फर्ज) कर्तव्य समझते हैं क्योंकि उससे उनकी कौमियत और मजहब को प्रश्रय मिलता है । सौभाग्य या दुर्भाग्य से कुरआन की अधिकांश आयतें आत्मिक उन्नति के साधन तो कम बताती हैं, इस्लाम विरोधियों को नष्ट करने अथवा उन्हें इस्लाम में दीक्षित करने की प्रेरणा देने वाली बातें अधिक कहती हैं । वे उन्हें पैगम्बर द्वारा प्राप्त ईश्वर का ही हुक्म मानते हैं और इस निमित्त कुरआन की आज्ञानुसार हिंसा का आश्रय लेने को वे सवाब (पुण्य) समझते हैं । परिणाम यह है कि उनका संगठन भी प्रबल है और हमें नष्ट करने की उनकी मारक शक्ति भी प्रबल है ।

इसका एक ही कारण है कि इस्लाम के प्रवर्तक मोहम्मद साहब एक ओर जहाँ धर्म की व्यवस्था (फतवा) देने वाले सर्वोच्च धार्मिक व्यवस्थापक थे वहीं दूसरी ओर तलवार लेकर लड़ने वाले सर्वोच्च कमाण्डर भी थे । उन्होंने कहा हमारी बात मानो—खुदा का हुक्म है नहीं मानते तो तलवार तुम्हारे सामने है कत्ल कर दिए जाओगे । अधिकांश लोगों ने मृत्यु भय से तथा अज्ञ होने के कारण बिना सोचे विचारे उनकी बात को मान लिया और आज विश्व का एक बड़ा समूह उनका अन्धानुयायी है । ईसाई लोग इतने उग्र नहीं थे किन्तु अशिक्षा अज्ञान और गरीबी से त्राण पाने के कारण तथा वैदिक शिक्षाओं से अनभिज्ञ रहने के कारण ईसाईमत को स्वीकार कर लिया । राज्याश्रय पाकर उनका मत खूब फला फूला ।

आर्यसमाज अपनी वैचारिक क्रान्ति द्वारा इस स्थिति को परिवर्तित कर सकता है बिना किसी हिंसा अथवा दुराग्रह का आश्रय लिए । हमारा विचार है मनुष्य मननशील प्राणी है, उसे डंडे के जोर पर किसी ग्रुप में धकेलना पाप है । वैदिक धर्म वैचारिक क्रान्ति द्वारा मानव के वैयक्तिक सामूहिक दोनों प्रकार की उन्नति का पक्षधर है । वह सद्विचारों द्वारा मनुष्य को सच्चे अर्थों में परम आस्तिक महामानव विश्वकल्याण कारी प्राणी बनाना चाहता है । यही वेद का सन्देश है जो हमने वेद प्रचार सप्ताह के माध्यम से संसार को दिया है । हम मानवमात्र को सद्विचारों का मनन चिन्तन एवं आचरण का मौका देना चाहते हैं जिसे आत्मसात करके वह स्वयं निर्णय ले कि सत्य क्या है और असत्य क्या है । यही आर्यसमाज का जीवन दर्शन है जिन्होंने मननशील होकर इस जीवनदर्शन को स्वीकार किया उन्होंने वैदिक धर्म की सत्यता को आत्मना स्वीकार कर लिया । अभी हमें इसमें सफलता कम मिल रही है—इसके क्या कारण हैं, इस पर आर्यसमाज के गतिशील कर्मठ नेतृत्व को विचार करना चाहिए ।

*

अत्यन्त आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के अन्तर्गत सभी उपदेशकों/प्रचारकों निरीक्षकों आदि से नम्र निवेदन है कि जब उनकी रसीद बुक भर जाय तो उसकी काउण्टर कापी (मुसन्ना) सभा कार्यालय में पत्र–प्रेषक के पास जमा कर दें तथा नवीन रसीद बुक उनसे प्राप्त कर लें ।

भरी हुई काउण्टर कापी (मुसन्ना) जमा करने पर ही दूसरी रसीद बुक दी जा सकेगी ।

जनवरी, ८८ से जो रसीद बुकें आपको दी गई हैं, उनकी काउण्टर कापी (मुसन्ना) सभा कार्यालय में जमा कर दें, इसमें किसी प्रकार की असावधानी न करें ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

जवाहरलाल नेहरू और संघी बन्धु

[स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद]

श्री किशन स्वरूप गोयल का एक लेख "काश आज डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी होते" शीर्षक से ३ जुलाई के आर्यमित्र में छपा है। मैं श्री गोयल जी के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूं कि नेहरू जी मुखर्जी से भयभीत थे और उन्हें अपने मार्ग से हटाना चाहते थे और जवाहरलाल नेहरू और उनकी नस्ल का सौभाग्य कहिये तथा देश का दुर्भाग्य कि शीघ्र ही नेहरू जी को वह अवसर प्राप्त हो गया।

वास्तविकता तो यह है कि शेख अब्दुल्ला बेचारा था ही कुछ नहीं, मुखर्जी की हत्या के पश्चात् वह सचमुच शेर बन गया था। मुखर्जी के देहान्त को हत्या मैं इसलिये कहता हूं कि उनके स्व० डाक्टर को जो उनसे मिलने गया था, यह कहकर बरामदे में बैठा दिया गया कि आप को अभी मिलाया जाता है, मुखर्जी ठीक हैं और पांच मिनट में उन्हें सूचित कर दिया गया कि मुखर्जी इस दुनिया में नहीं हैं।

इसका अर्थ तो यही हुआ कि उन्हें समाप्त कर दिया गया और उनके डाक्टर के आने से पहले ही उन्हें समाप्त किया जा रहा था तथा उनके जीवित रहते उनके स्व–चिकित्सक को उनसे मिलाना संभवतः उनके लिए जीवनदायी सिद्ध हो जाता और शासन के लिये भयंकर सिद्ध होता। मुखर्जी को इस प्रकार हत्या करने के पश्चात् शेख अब्दुल्ला नेहरू जी के लिये शेर बन गया था क्योंकि अब यदि नेहरू जी उसकी इच्छा के विरुद्ध कभी कुछ कहते या करते तो वह नेहरू जी का मुखर्जी हत्याकाण्ड को लेकर भण्डा फोड़ कर देते।

गोयल जी का यह विचार भी सत्य है कि नेहरू जी ने मुखर्जी की माता के पत्र की अवहेलना की और मुखर्जी की मृत्यु की जांच नहीं कराई। यदि मृत्यु स्वाभाविक कारणों से हुई होती तो नेहरू जी स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिये अवश्य जांच कराते और यदि मृत्यु अस्वाभाविक रूपेण भी शेख अब्दुल्ला द्वारा ही कराई गई होती तो भी वह जांच करा लेते क्योंकि अब मुखर्जी से तो नेहरू जी निश्चिन्त हो ही चुके थे, अब्दुल्ला को भी अधिक शक्तिशाली बनने से इस जांच द्वारा रोका जा सकता था और इस प्रकार उसका व्यक्तित्व समाप्त करके किसी और मिट्टी के माधो को मोहरा बना कर सामने लाया जा सकता था। परन्तु वह जानते थे कि अब्दुल्ला उन्हीं का मोहरा था और उन्हीं की कृपादृष्टि बने रहने के लिये उसने मुखर्जी को मरवाया था अतएव जांच के परिणामस्वरूप वह स्वयं इस हत्या के लिए दोषी सिद्ध होना नहीं चाहते थे। यही कारण था कि न केवल मुखर्जी की माता के पत्र की नेहरू जी ने उपेक्षा की अपितु उस समय देश के प्रत्येक क्षेत्र से मुखर्जी की मृत्यु के कारणों की जांच के लिए मांग हुई थी, नेहरू जी ने देश की उस सम्पूर्ण करुण पुकार को भी नितान्त अनसुना कर दिया था।

गोयल जी ने अपने इस लेख में संघियों की चर्चा की है। वह लिखते हैं "केन्द्र में जब जनता पार्टी की सत्ता आयी, उस समय भी संघ के लोगों ने इस हत्या की जांच शायद इसलिए नहीं करायी कि उन्हें उस जांच के साथ पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की हत्या की जांच भी करानी पड़ती और शायद उस जांच में कोई जनसंघ का वरिष्ठ नेता फंस जाता।"

जनसंघियों की तो बात ही निराली है। श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जेल जाने के बाद इनमें से एक ने भी कश्मीर की ओर मुंह नहीं किया। उनकी हत्या के बाद भी इनकी नैतिकता ने इन्हें नहीं झकझोरा। संसार के आन्दोलनों का इतिहास उठाकर देखियेगा तो एक मात्र संघियों का ही यह कश्मीर सम्बन्धी आन्दोलन है कि इतने बड़े नेता की आहुति लग जाने के बाद जो एक दम समाप्त होकर रह गया अन्यथा जब और जहाँ किसी आन्दोलन में किसी नेता की आहुति लग जाती है तो आन्दोलन भड़क उठता है। इस प्रकार से विचार करने पर तो मुखर्जी की हत्या के लिए जितने दोषी नेहरू और शेख अब्दुल्ला रहे, उनसे कम दोषी संघी बन्धु भी नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि यदि मुखर्जी के बन्दी बनाये जाते ही संघियो ने जेल भरने की ठान ली होती तो बहुत सम्भव था कि मुखर्जी की हत्या न होती। मुखर्जी की गिरफ्तारी के पश्चात् संघियों के सत्याग्रह करके जेल न जाने से नेहरू और अब्दुल्ला को यह स्पष्ट दीख गया था कि मुखर्जी के पीछे जनसंघ के नाम पर जो लोग उछलकूद मचाते हैं, उनके पास धमगजे दिखाने के अतिरिक्त कोई जीवट नहीं है और यही वह स्थिति है जिसे जान लेने के पश्चात् मुखर्जी के हत्यारों का साहस बढ़ गया और उनकी परिस्थिति को समझ लेने की बात इससे सत्य सिद्ध हो जाती है कि मुखर्जी के बलिदान के पश्चात् भी संघी बन्धुओं की नैतिकता ने इन लोगों को कश्मीर की ओर मार्च करने को नहीं ललकारा।

दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु की जांच का प्रश्न श्री गोयल जी ने अपने लेख में उठाया है। गोयल जी का यह विचार भी सत्य है कि यदि जांच होती तो दीनदयाल की हत्या का दोषी कोई जनसंघ का बड़ा नेता ही सिद्ध होता। कई प्रश्न दीनदयाल जी की हत्या के विषय में ऐसे हैं कि जिनका उत्तर आज भी अपेक्षित है।

दीनदयाल जी एक अखिल भारतीय दल के नेता थे, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वह दल के कार्य से ही यात्रा पर थे, कहीं व्यापार के लिए नहीं जा रहे थे किन्तु न तो उनके साथ उनका निजी सचिव था, न चपरासी तथा न अन्य कोई दल का स्वयं सेवक साथ ही था। प्रथम श्रेणी के जिस डब्बे में उन्हें जगह मिली थी, उसमें केवल एक सेना अधिकारी सज्जन–सम्भवत: कैप्टन शर्मा नामक–यात्रा कर रहे थे, उन्हें भी दूसरे कूपे में स्थानान्तरित करा दिया गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि उन्हें हत्या के लिये ही अकेला कर दिया गया था।

वह पांच रुपये का नोट हाथ में लेकर प्लेटफार्म पर गये बताये जाते हैं। वहां से लौटकर गाड़ी के दरवाजे पर डण्डा पकड़े खड़े हुये थे। गाड़ी के चलने पर किसी खम्भे से टकरा के नीचे पटरी पर जा पड़े, परन्तु नोट हाथ में ही रहा यह नितान्त असंगत प्रलाप है। इस प्रकार टकराकर गिरने वाले के हाथ में नोट रह ही नहीं सकता।

उनकी हत्या करके उन्हें लाइन पर डाल दिया गया हो और तब उनको नोट पकड़ा दिया गया हो, यह तो सम्भव है। फिर उनके सूटकेस में उनके वस्त्र, उनकी स्वर्णमयी घड़ी तथा उनके कई सौ रुपये के नोट ज्यों के त्यों रखे मिले, नहीं मिली तो उनकी डायरी।

[शेष पृष्ठ १० पर]

अध्यात्म सुधा

संगठन से उन्नति

[डा॰ सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम॰ ए॰ एल॰ टी॰ आ॰ स॰ गोरखपुर]

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ॥
ऋ॰ १० / १९१ / १

हे (वृषन्) बलवान् और (अर्य) श्रेष्ठ (अग्ने) तेजस्वी ईश्वर ! तुम (विश्वानि) सब पदार्थों को (इत्) निश्चय से (स सं आ युवसे) एकत्रित करके सम्मिलित करते हो, और (इळः पदे) भूमि अथवा वाणी के स्थान में (सं इध्यसे) उत्तम प्रकार से प्रकाशित होते हो, इसीलिए (सः) वह तुम (नः) हम सबके लिए (वसूनि) सब प्रकार के निवास साधक धन (आभर) प्राप्त कराओ।

इस मन्त्र मे संगठन की प्रार्थना की है। प्रार्थना के विषय मे यह ध्यान रखने की बात है कि प्रार्थना जीवों और परिस्थितियों मे आमूल परिवर्तन कर देती है। कुछ लोग प्रार्थना को इस खयाल से अच्छी चीज बतलाते है कि प्रार्थना द्वारा कठिनाइयो से मुकाबिला करने के लिए मनुष्य को हिम्मत और बल देती है। बहुत से मनुष्य यह कहते हैं कि प्रार्थना द्वारा मनुष्य विपत्तियों से बच जाता है और उसमे आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता है। कुछ लोग ऐसा बतलाते हैं कि जब मनुष्य प्रार्थना द्वारा कठिनाई मे ईश्वर को देख लेता है उस समय हम केवल कठिनाई से ही नहीं छूटते बल्कि हमको एक सुख की भी अनुभूति होती है।

इस मन्त्र मे प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे सर्वशक्तिमान् ! तुम इस सम्पूर्ण शरीर मे सम्मेलन का कार्य करते हो इस सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र मे एकता लाने की चेष्टा करते हो और सर्वत्र तेज के साथ प्रकाशित होते हो। तुम्हारे तेज मे हम अपना वास्तविक स्वरूप और विश्व से एकता का दर्शन कर सकते हैं।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री शेसर ने कहा था कि वर्तमान शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार विश्व के प्रत्येक पदार्थ मे एकता होगा है—सम्पूर्ण जीवन में समानता होगा है।

जब मनुष्य यह समझ जायगा कि सर्व शक्तिमान् से हम दूर नहीं हैं, उसके समीप हैं और हमारा उसका एकता का सम्बन्ध है तब उसके सब भय शंकायें नष्ट हो जायेंगी। इसीलिए वेद के दूसरे मन्त्र में कहा है—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।
ऋ॰ १०–१९१–२

परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और एकता प्रदान करने की शक्ति को ध्यान मे रखते हुए आपस मे किसी से द्वेष, शत्रुता आदि न करके एक हो जाओ आपस में एक दूसरे से प्रेम पूर्वक भाषण करो और सर्व सम्मति से मिलकर बातों का निश्चय करो तथा अपने मन को सुसंस्कार से युक्त करो। जिस प्रकार तुम्हारे पूर्व ज्ञानी लोग अपने अपने कर्त्तव्यों को ठीक तरह से करते आये हैं, उसी प्रकार तुम भी अपने कर्त्तव्यों का हिस्सा उत्तम रीति से करो। इस प्रकार करने से तुम्हें जो उन्नति चाहिए वह तुम्हें मिलेगी।

यह मन्त्र सफलता की कुञ्जी के दर्शन कराता है। हमें अपना जीवन ईश्वर को अर्पण करना है। जो कुछ काम करे प्रभु का समझ कर करें। जीवन का इससे अच्छा और क्या उपयोग हो सकता है कि उसका प्रत्येक क्षण प्रभु की सेवा मे लगे। प्रत्येक कार्य, विचार और हमारा प्रत्येक शब्द उनकी सेवा के लिये हो। यह भावना जब हृदय में आ जायगी तब हम विश्व के प्रति एकता और संगठन की भावना अपने हृदय मे भर लगे। आपका जीवन महान् हो, इसके लिए आवश्यक है कि आपके पास साहस का भण्डार हो। सब कुछ ईश्वरार्पण करके उसकी आज्ञा के अनुसार, उसकी इच्छा पूर्ति के लिये कीजिये। इससे आपके जीवन में मानवो के प्रति स्नेह और एकता, आनन्द और शक्ति और मधुरता तथा विश्वास का प्रवेश होगा।

बस हम आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि आप बड़े-बड़े काम कर सकते हैं। इसमें किसी प्रकार का भी सन्देह नहीं है परन्तु इसके लिये आवश्यक है कि आप अपना ध्येय ऊँचा रख कर लगन के साथ बुद्धिमत्ता पूर्वक काम करें। किसी के प्रति द्वेष न रखिए और असफलता के विषय में बहुत न सोचिए। आप जीवन मे उतने ही अधिक सफल बन सकते हैं जितनी आपमे दक्षता, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, उत्साह, निश्चय, दूरदर्शिता, स्वागतत्वप्रियता, धीरता, आत्मसंयम, सहानुभूति, बुद्धिविवेक और सरलता को विकसित करेंगे। आइये हम संगठित हों—एक हो गुणों से युक्त हो।

★

आर्य समाज गोण्डा में श्रीकृष्ण उत्सव

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के आदेशानुसार दि॰ ३–९–८८ को आर्य समाज गोण्डा ने विशेष आयोजन के साथ श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया। जिला श्रम–अधिकारी श्री हंसराज जी ने मुख्य यजमान का पद ग्रहण किया तथा यज्ञोपवीत धारण कर बड़ी श्रद्धा के साथ वेद यज्ञ सम्पन्न किया। दयानन्द बाल विद्या मन्दिर के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों से आल्हादित हो कर उन्हें १०१) प्रदान कर पुरस्कृत किया।

आर्य समाज की ओर से मुख्य अतिथि को स्वामी दयानन्द सरस्वती का एक बड़ा चित्र तथा सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति सप्रेम भेंट की गई।

शोक समाचार

आर्य समाज के स्तम्भ श्री हरनामसिंह आर्य निवासी ग्राम ढोडरपुर थाना–बेवर, जनपद–मैनपुरी का दिनांक १६–८–८८ को जल में डूब जाने के कारण असामयिक निधन हो गया है। वे एक समर्पित आर्य विद्वान्, वैदिक कर्मकाण्डी पुरुष एवं आर्य समाज सिसियानी के प्रेरणा स्रोत थे। उनके निधन से समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है।

परमात्मा मृत आत्मा को शान्ति एवं परिवार को धैर्य प्रदान करे।

मन्त्री आ॰ स॰ सिसियानी

"सत्ता की राजनीति में आर्य समाज"

श्री मुरारीलाल साहित्यरत्न, प्रधान आ० स० कैसरबाग–लखनऊ

विश्व के सभी अन्य देशों में राजनीतिक स्वतन्त्रता समाजिक क्रांति के पश्चात् हुई। भारत के कुछ महान् पुरुषों के अथक परिश्रम और प्राणपण चेष्टा के उपरान्त राजनीतिक स्वतन्त्रता उपलब्ध हुई। सामाजिक सुधार की प्रेरणा जन–मानस में समुचित स्थान नहीं ले सकी। इसका ही दुष्परिणाम है कि हमारे देश में स्वतन्त्रता के बाद अनेकानेक समस्याओं का उदय हुआ। जिनका समाधान ही नहीं हो पा रहा है। इन समस्याओं को अभी यदि गम्भीरता पूर्वक देखा किया जाय तो सामाजिक कुरीतियाँ ही हैं इन कुरीतियों के गहन तिमिर में हमारी राष्ट्र निष्ठा और देश भक्ति लुप्त प्राय है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के धनी महान् पुरुष थे। उनके विशाल हृदय में राजनीतिक स्वतन्त्रता की आग धधक रही थी। इससे अधिक ज्वाला जो उनके मस्तिष्क और हृदय को आकुल किये थी वह सामाजिक कुरीतियों में जकड़ी जनता की थी। इसी के निराकरण हेतु उन्होंने अनेकों बार विषपान किया और लाठी डण्डों का प्रहार सहन किया। सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का सहज उपाय उन्होंने 'विद्या का प्रचार बतलाया। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये आर्य समाज के नियमों में आठवाँ नियम "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये" पर बल दिया।

वर्तमान सत्ता की राजनीति के परिप्रेक्ष्य में जो यह प्रश्न उठता है कि आर्य समाज को भी राजनीति मे प्रवेश करना चाहिये कहाँ तक उपयुक्त होगा जब कि आर्य समाज का संगठन भी इसी बुराई के दल–दल में फँसा है। आज विरले ही व्यक्ति आर्य समाज में हैं जो वैदिक सिद्धांतों का पालन अपने व्यवहारिक जीवन में कर रहे हैं। तिकड़म और पाखण्ड के आधार पर लोग संगठन पर हावी है अथवा हावी होना चाहते हैं। क्या हम ऐसे व्यक्तियों के माध्यम से राजनीति में प्रवेश करके सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे? यह विचारणीय विषय है।

यह सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ही नहीं उनके गुरु विरजानन्द जी महाराज भी जिनको प्रेरणा से महर्षि में देशभक्ति जगी राजनीतिक स्वतन्त्रता के प्रबल पक्ष धर थे। स्वामी जी ने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में अप्रत्यक्ष नेतृत्व किया सत्यार्थ प्रकाश के छठवें समुल्लास में राजनीति का दिशा निर्देशन किया। महाशय श्यामकृष्ण वर्मा और स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे आदरणीय एवं प्रातः स्मरणीय महापुरुषों का निर्माण कर संकेत किया कि राजनीति के प्रांगण में सबल और पूज्य व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। यदि आर्यसमाज आदर्श चरित्रवान व्यक्तियों के साथ राजनीति में प्रवेश करता है तो सफलता उसके पैर चूमेगी अन्यथा राजनीति में प्रवेश करने से 'जैसे सब वैसे हम' की कहावत चरितार्थ होगी। इसके पूर्व कि आर्य समाज राजनीति में प्रविष्ट हो उसे प्रथम दृष्टया व्यक्तित्व को सवारना होगा अन्यथा यश के बजाय अपयश ही हाथ लगेगा।

"अवतारवाद"

[श्री जगदीश शरण "शीतल" (भूतपूर्व प्रधान) आ० स० चाँदपुर, बिजनौर]

पौराणिक मतानुसार जब–जब धर्म की हानि होकर अधर्म बढ़ता है तब–२ ईश्वर अवतार लेते और मनुष्य का रूप धारण करते हैं। इनकी यह भी मान्यता है कि सतयुग में धर्म और कलियुग में अधर्म प्रधान होता है। अब तक भारत मे चौबीस अवतार हो चुके हैं। इनमें से अधिक अवतार सतयुग में हुए जहाँ धर्म प्रधान था। परन्तु कलयुग मे अधर्म प्रधान है वहाँ अब तक कोई अवतार नहीं। जहाँ धर्म वहाँ अवतारों की भरमार और जहाँ अधर्म वहाँ पर शून्य। जब कि इनकी मान्यतानुसार सतयुग में एक भी अवतार न होकर सारे अवतार कलियुग मे होने चाहिए। क्योंकि सतयुग में धर्म और कलियुग में अधर्म प्रधान होता है। जब सतयुग में धर्म प्रधान होता है तो ऐसी दशा में ईश्वर के अवतार लेने की कोई आवश्यकता नहीं।

अब आप स्वयं विचार कर लीजिए कि यह कितना थोथा और असंगत है इनका अवतारवाद। अब इनकी बुद्धि का एक और नमूना देखिए। अब तक सारे अवतार संसार के किसी अन्य देश में न होकर भारत में ही हुए हैं। इसका यह अर्थ है कि संसार के सारे देश धर्मात्मा और भारत ही केवल पापी देश है। इनकी इन कुमान्यताओं के कारण धर्म भ्रष्ट व्यक्तियों ने भारत को कलंकित और अपमानित करके एक हजार वर्ष तक परतन्त्र कर दिया। जिसके कारण यहाँ की जनता को घोर यातनायें और भयंकर अत्याचार सहने पड़े। अब इस विषय को वेदानुसार बुद्धि की कसौटी पर कसिये। संसार में आने वाला व्यक्ति एक देशी अपूर्ण तथा अल्पज्ञ है। उसका जन्म मरण भी निश्चित है। अतः शरीर धारण करने वाला व्यक्ति किसी भी दशा में किसी प्रकार ईश्वर हो नहीं सकता। क्योंकि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टि कर्त्ता है। वह स्वसामर्थ्य से इस सृष्टि का सृजन, धारण, पालन तथा प्रलय करता है उसके शरीर धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार अवतारवाद वेद विरुद्ध तथा असत्य है। किन्तु सत्य यह है कि जब २ जिस देश को जैसे महा पुरुष की आवश्यकता होती है तब–२ दयालु दीनबन्धु भगवान् वैसे ही महापुरुष को उसके कर्मानुसार उस देश में जन्म देते हैं। जो उस देश की बिगड़ी हुई सामाजिक व्यवस्था को पुनः व्यवस्थित करता है।

*

शोक समाचार

आर्य समाज नदौली (बदायूँ) के मन्त्री श्री हरिशंकर आर्य के एक मात्र सुपुत्र कौशल किशोर का दिनांक ४–६–८८ को आकस्मिक निधन हो गया। वे लम्बे समय से बीमार थे। उनकी उम्र १८ वर्ष की थी। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

मन्त्री सभा

सती की वैज्ञानिकता !

—सन्तोष 'कण्व'—

मेरे एक मित्र है। आस्थाओं से पौराणिक हैं। एक दिन आए, बोले—आप आर्यसमाजी तो हवा में उड़ते हो।

मैंने पूछा—हुआ क्या ?

बोले—पति के मरने पर सच्ची पतिव्रता स्त्री के पवित्र शरीर से अग्नि का स्वतः प्रकटन पूर्णतया वैज्ञानिक है। विदेशी चिकित्सक की पुस्तक भी इसकी पुष्टि करती है।

बेचारे एक लेख छोड़ गए, पढ़ने के लिए। पढ़ते ही हंसी छूट पड़ी। पुस्तक मात्र का मान करते–करते इन हठी पोपों की रही-सही सामान्य बुद्धि भी चरने चली गई है।

कभी एक गिरधर शर्मा चतुर्वेदी हुआ करते थे। महामहोपाध्याय कहलाते थे। बड़ा आतङ्क था, उनके पाण्डित्य (?) का। पौराणिक गप्पों की वैज्ञानिकता सिद्ध करने का भूत उन पर भी चढ़ा था।

वह एक पुस्तक में लिखते हैं कि राधा और कृष्ण की रमण क्रियाओं पर लोग व्यर्थ ही आक्षेप करते हैं। ये मानवीय प्राणी नहीं प्रतीक हैं। राधा गौर वर्ण हैं; प्रकाश का प्रतीक हैं। कृष्ण श्याम वर्ण हैं; अन्धकार के प्रतीक हैं। जैसे अन्धकार में प्रकाश और प्रकाश में अन्धकार लिपटा रहता है; वैसे ही राधा और कृष्ण हैं। राधा में कृष्ण और कृष्ण में राधा। दोनों ही अभिन्न ! कवियों ने कलात्मक ढंग से सृष्टि की इस सहज घटना को अभिव्यक्त किया।

अब इस महापण्डित की बुद्धि को कोई क्या करे ! इसे इतना भी बोध नहीं कि तमस् या अन्धकार कोई पृथक् पदार्थ नहीं, प्रत्युत प्रकाश एवं तेज के अभाव का रूपमात्र है। 'आलोकाऽसहकृतचक्षुर्ग्राह्यत्वात्'—आलोक के सहाय बिना नेत्रों से गृहीत है, जैसे 'आलोकाभाववत्'—आलोक का अभाव। दोनों में बैर है। जहां प्रकाश होगा वहां अन्धकार नहीं और जहां अन्धकार है, वहां प्रकाश नहीं। दोनों एक साथ रह नहीं सकते। फिर भी राधा की गोद में कृष्ण और कृष्ण की गोद में राधा को बिठाकर वैज्ञानिक खोज (?) करने का दम्भ अवश्य है; इस पोप मण्डली को !

कितनी ही मूर्खताओं को विज्ञान सम्मत बताने के हास्यास्पद प्रयास समयासमय पर होते रहे हैं। ऐसी एक मूर्खता है—'पति की मृत्यु पर पत्नी का सती होना'। 'सती होना' चिता में जलना नहीं, प्रत्युत 'योगानल से जलना'।

एक पौराणिक गप्प की उपज है, यह 'योगानल'। धूर्तों ने कथानक गढ़ा—पिता दक्ष के यज्ञ में अपने स्वामी भगवान् शंकर का अपमान देख सती देवी को इतना सन्ताप हुआ कि उनके शरीर से अग्नि (योगानल) प्रकट हुई और वे जल गईं।

यहीं से शब्द 'सती' बना और यहीं से 'योगानल'। लोक में व्याप्त अज्ञानता का लाभ उठाया धूर्तों ने। फंस गए मूर्ख।

मैं उस लेख की चर्चा कर रहा था। लेखक की उड़ान देखिए—

'एक सच्ची सती, जिसके तन, मन और हृदय सर्वथा पवित्र हैं, जो अपने पति के प्रेम के आधार पर ही जीवित है, जिसने अपने हृदय में पति के सिवा दूसरे किसी को कभी स्थान ही नहीं दिया, जिसका जीवन पति के लिए सदा आत्म त्याग करने में ही बीता और जो पति का क्षण भर के लिए भी वियोग सहन करने में असमर्थ है, उसके इन चरित्र गत भावों का उसके शरीर की ग्रन्थियों पर कैसा प्रभाव होता है और उसके अन्दर के तमाम अवयव कैसी असाधारण स्थिति में पहुंच जाते हैं, इसका हम लोग कुछ भी अनुमान नहीं लगा सकते।'

लगा भी नहीं सकते। 'अनुमान' एक प्रमाण है, जिसको समझना स्थूल बुद्धि वालों के बूते का नहीं। हां, उड़ान भर सकते हैं। सो भरी है—

'पति वियोग की स्थिति प्राप्त होने पर उसके आन्तरिक अवयवों में ऐसी विशेष क्रिया हो, जिससे अग्नि प्रकट हो जाए, तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है ?'

आगे उद्धरण दिया है, डा० लुई बर्मन (एम०डी०) की पुस्तक—"द ग्लैंड्स : रेगुलेटिंग पर्सनलिटी" का।

'मनुष्य के शरीर में गले से आगे एक ग्रन्थि है, जिसे अंग्रेजी में थायोराइड ग्लैंड कहते हैं। यह गांठ शरीर में प्रेम और कामना उत्पन्न करती है, शरीर में गर्मी बढ़ाती है। इससे निकलने वाले रस को थायोरॉक्सिन कहते हैं। इस रस का प्रवाह यदि बढ़ जाता है, तो मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।'

लेख आगे चलता है—

'परन्तु यदि किसी सती के पति वियोग के समय उसके मन की स्थिति ऐसी असाधारण हो जाए कि जिससे थायोराइड ग्रन्थि पर सीधा प्रभाव पड़े और वह उसकी गर्मी को एकदम बढ़ाकर शरीर से अग्नि पैदा करदे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।'

'पतिगतप्राणा प्रेम मूर्ति सती के हृदय में जब पति वियोग की अग्नि सुलगती है, तब उसका रूप कैसा होता है—इसको हम लोग ठीक-ठीक समझ ही नहीं सकते। ऐसी हालत में गले के पास की थायोराइड ग्रन्थि में रस (थायोरॉक्सिन) का प्रवाह बढ़ जाना और उसके कारण कंधे आदि से अग्नि का फूट निकलना सर्वथा सम्भव और युक्ति सगत है। डा० बर्मन ने इस स्थिति को हाइपरथायरोडिज्म कहा है।'

इन तर्कों पर 'विश्व हिन्दू परिषद' और 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' जैसे संगठनों के लोग ही बल्लियों उछल सकते हैं। वे कितना ही प्रसन्न हो लें, इतना निश्चित है कि ऐसे लेखों से 'कल्याण' हिन्दुओं का अकल्याण ही कर रहा है।

डा० लुई बर्मन की सीधी सादी बात से कैसा कुटिल भाव निकाला है, इन पोपों ने। पुस्तक में मानव शरीर की विभिन्न ग्रन्थियों और उनकी कार्यप्रणाली की चर्चा है। इनका मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का भी उल्लेख है। क्रोध, हर्ष, शोक, लोभ, मोह, काम आदि के समय ग्रन्थियां किस प्रकार का व्यवहार करती हैं, इसकी विवेचना कर डा० बर्मन ने एक सराहनीय कार्य किया है। सती समर्थकों को उसमें 'योगानल' दिखाई दे तो दोष लेखक का नहीं उनकी स्वार्थ बुद्धि का है।

यह सृष्टि महानतम स्रष्टा की रचना है। सर्वज्ञ का सृजन है। सुन्दरतम की अनुपम कृति है। हमारा यह शरीर एक विलक्षण यन्त्र है। सर्वशक्तिमान विश्वकर्मा ने गूढ़ अन्धकार (गर्भ) में इसे बनाया है। यह सेफ्टी वाल्व (सुरक्षा कपाट) से रहित उस बायलर (वाष्पित्र) की भांति नहीं है, जो अधिक वाष्प–दाब से फट जाता

(शेष पृष्ठ ११ पर)

ईसाई मत समीक्षा

★

हजरत यीशू मसीह की अविश्वसनीय जन्म कथा

[सोहनलाल अग्रवाल अधिवक्ता, जबलपुर]

यीशू मसीह धर्म के एक प्रसिद्ध संस्थापक बने। परन्तु इनके जन्म जीवन तथा मृत्यु की गाथा जो बाईबल की चार पुस्तकों को मत्ती रचित, सुसमाचार, मरकुस रचित, लूका रचित, तथा यूहन्ना रचित सुसमाचारों में गाई गई है वह बहुत करके अविश्वसनीय तथा मन गढ़त है। ईसाई लोग बाइबिल की इन चार पुस्तकों को ईश्वरीय पुस्तकें कहते हैं। हजरत यीशू ने कोई पुस्तक नहीं लिखी और ना ही उनमें दावा किया था कि कोई पुस्तक उन पर अवतरित हुई। उनके उपदेशों का संग्रह, उनके शिष्य पर शिष्यों ने उनके मरने के दो सौ साल बाद एकत्रित किया है जो कि ऊपर लिखी चार पुस्तकों के रूप में है। सेन्ट लूका रचित सुसमाचार का पर्व नम्बर एक निम्न प्रकार से है--

(१) इसलिये कि बहुतो ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती है इतिहास लिखने मे हाथ लगाया है। (२) जैसा कि उन्होने जो पहले ही से इन बातों को देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया। (३ इसलिये श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों को सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। (४) किन्तु यह जान ले कि वे बातें जिसकी तू ने शिक्षा पाई है कैसी अटल है।

इस संकलन मे कितनी भी बातें मनगढ़त लिखी जा सकती हैं। क्योंकि इसकी नींव किसी प्रमाणित दस्तावेज पर नहीं है और इन १९ शताब्दियो मे इनके कितने भाग छोड़े गये और कितनी नवीन बातें लिखी गई उन पर कोई रोक नहीं थी। बाईबल का शेष भाग भी धर्म पुस्तक नहीं। मत्ती रचित सुसमाचार मे यीशू का जन्म निम्न प्रकार से लिखा है--

(१८) अब यीशू मसीहा का जन्म इस प्रकार से हुआ कि जब उनकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने के पहले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। (१९) सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था उसे चुपके से त्याग देने को मनसा की।

(२०) जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्ग दूत उसे स्वप्न में दरगई देकर कहने लगा हे, यूसुफ दाऊद की सन्तान तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर क्योंकि जो उसके गर्भ में है पवित्र आत्मा की ओर से (२१) वह पुत्र जनेगी। और तू उसका नाम यूशू रखना। क्योंकि वह अपने लोगो का उनके पापों के उद्धार करेगा। (२२) यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो (२३) कि देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जायगा जिसका अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे साथ" (२४) सो यूसुफ नींद से जाग कर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया। (२५) और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया। और उसने उसका नाम यीशू रखा।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें समुल्लास मे बाईबल की इस गाथा पर निम्न टिप्पणी की है-

(समीक्षा) इन बातों को कोई विद्वान नही मान स ता कि जो प्रत्यक्षादि प्रमाण और सृष्टिक्रम से विरुद्ध है। इन बातो का मानना मूर्ख मनुष्य जंगलियों का काम है। सभ्य विद्वानों का नहीं। भला जो परमेश्वर का नियम है उसको कोई तोड़ सकता? जो परमेश्वर भी नियम को उलटा-पलटा करे तो उसकी आज्ञा को कोई न माने और वह भी वह सर्वज्ञ और निर्भ्रम न रहे। ऐसे तो जिस-जिस कुमारी के गर्भ रह जाय। तब सब कोई ऐसे कह सकते हैं कि इसमे गर्भ का रहना ईश्वर की ओर से है और झूठमूठ कह दे कि परमेश्वर के दूत ने मुझ को स्वप्न मे कह दिया कि यह गर्भ परमात्मा की ओर से है। जैसा यह असम्भव प्रपंच रचा है। वैसा ही सूर्य से कुन्ती का गर्भवती होना पुराणों असम्भव लिखा है। ऐसी ऐसा बातों को आंख के अन्धे और गाँठ के पूरे लोग मान कर भ्रमजाल में गिरते हैं। यह ऐसी बात हुई होगी कि किसी पुरुष के साथ समागम होने से गर्भवती मरियम हुई होगी। उसने वा किसी दूसरे ने ऐसा असम्भव बात उड़ा दी होगी कि यह गर्भ ईश्वर की ओर से है।

बाईबल की अश्लील गाथाओं में से कुछ का संकेत मात्र हम पूर्व के लेख मे कर चुके हैं। ऐसी कथ वस्तु के साथ यह पुस्तक पढ़ने योग्य धर्म पुस्तक नही है। इसे भारतीय दण्ड विधान की धारा १९२ के अन्तर्गत जप्त होना चाहिए।

★

शोक समाचार

सर्वोदय नेता एवं स्वतन्त्रता सेनानी मास्टर सुन्दरलाल जी के निधन के समाचार से आर्य जगत में शोक छा गया। आर्य समाज के जन्माअष्टमी समारोह की सभा में श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने श्रद्धान्जलि देते हुए उन्हें त्यागी, तपस्वी, निर्भीक, राष्ट्रवादी और महर्षि दयानन्द जी, महात्मागांधी, विनोबा भावे की विचार धाराओं से ओतप्रोत बताया।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे।

—मन्त्री सभा

मेरठ में महात्मा आर्यभिक्षु जी का प्रवचन

दिनांक ४–९–८८ को रात्रि को आर्य जगत् के विद्वान आर्य भिक्षु जी ने अपनी कथा का प्रसंग एक संस्मरण से आरम्भ किया। उन्होंने बताया कि शास्त्रार्थ महारथी श्री रामचन्द्र देहलवी जब मुसलमानों (मौलवियों) से शास्त्रार्थ करते थे तो पहला प्रश्न उनसे पूछते थे, "मौलाना साहब बताइए कि खुदा ने खलकत (सृष्टि) को बनाई ?" जब मौलाना उत्तर नहीं दे पाते थे तो पंडित जी एक कुरान की आयत पढ़कर सुनाते थे कि कुरान में लिखा है "कि अल्लाहताला ने खलकत अपनी बन्दगी करवाने के लिए की।" तब पण्डित जी कहते थे कि ये कोई अच्छा उत्तर नहीं है और वह खुदा भी खुदा नहीं है जो कि अपने बन्दों को बन्दगी का मोहताज बना दे। जब यही प्रश्न पं० जी ईसाई पादरियों से करते थे कि ईश्वर ने संसार क्यों बनाया ? तो बाईबिल पढ़कर स्वयं उत्तर देते हुए कहते थे खुदा ने संसार को बिना प्रयोजन के बनाया है। पं० जी कहा करते थे जब मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो पं० जी हँसते हुए कहते थे कि तुम्हारा खुदा तो बिलकुल मूर्ख है। लेकिन जब स्वामी दयानन्द से संसार को बनाने का कारण पूछा तो उन्होंने एक पंक्ति में ही इस प्रश्न का उत्तर दे दिया जो बिलकुल ठीक है, "परमेश्वर जीवात्माओं के शुभाशुभ कर्मों के यथावत भुगतान निमित्त दया करके जीव मुक्ति प्राप्त करले अर्थात् जन्म मरण के चक्र से छूट जाये इसीलिये परमात्मा ने सृष्टि की रचना की है।"

वास्तव में ये संसार एक जेल के समान है और हर जेल की एक संहिता होती है। उर्दू के एक शायर ने कितना सुन्दर शेर कहा है—

> मर कर भी कहाँ छूटा है, सिलसिला कैदे हयात।
> हां इतना जरूर है कि, जंजीर बदल जाती है॥

उस संहितानुसार इस जेल में ३ प्रकार के कैदी हैं-प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी ठीक इसी प्रकार से संसार रूपी जेल की वेद रूपी संहिता का जो शत प्रतिशत पालन करता है वह भगवान है अर्थात प्रथम श्रेणी का है। जो व्यक्ति उस संहिता का कुछ पालन करता है कुछ नहीं करता वह मनुष्य है अर्थात द्वितीय श्रेणी का है। जो उस संहिता का बिलकुल पालन नहीं करता वह शैतान है अर्थात तृतीय श्रेणी का है। परन्तु इन तीनों श्रेणियों वालों को रहना तो जेल में ही पड़ता है। बस इस संसार की रचना करके भगवान ने कृपा करके जीवात्माओं के लिये भोग व अपवर्ग के लिये बनाई है। परमकारुणिक ईश्वर जब देखता है कि जीवात्मा ये संसार रूपी जेल में तीन प्रकार के तापों में झुलस रहे हैं तो वे करुणा करके संसार की रचना करता है ताकि कर्मों के भोग भोगकर वे सदैव के लिए इस संसार रूपी जेल से मुक्त हो जाये।

श्री सत्यप्रकाश जी बंसल बार्किडवेल के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग में बोलते हुए उन्होंने स्वर्ग और नरक के विषय में व्याख्यान देते हुए कहा कि संसार के जितने भी धर्म, समुदाय, मत के आचार्य, सन्त, धार्मिक नेता हुए हैं उन्होंने स्वर्ग और नरक को मृत्योपरान्त होना तथा ऊपर चौथे या सातवें आसमान पर माना है। परन्तु महर्षि दयानन्द एक मौलिक चिन्तक थे। उन्होंने मानव मात्र के कल्याण के लिए यह बताया कि स्वर्ग और नरक इसी पृथ्वी पर हैं तथा जीवन काल में ही दोनों की प्राप्ती होती है। स्वामी दयानन्द जी ने स्वर्ग का अर्थ सुख विशेष तथा नरक का अर्थ दुःख विशेष किया है। सुख का अर्थ है अनुकूल प्रतिती और दुःख का अर्थ है–प्रतिकूल प्रतिती। 'ख' का अर्थ इन्द्रिय होता है। इन्द्रियों के अनुकूल अनुभूति को सुख तथा प्रतिकूल अनुभूति को दुःख कहते हैं। दुःख व सुख केवल व्यक्ति को होता है। परन्तु जब वह गृहस्थ में प्रवेश करता है और जब वह एक से दो होते हैं तब सुख विशेष और दुःख विशेष की उत्पत्ति होती है। संसार भर की भाषाओं में एक वचन या बहु वचन होता है कि संस्कृत में द्विवचन भी होता है। दो के बिना (द्विवचन के बिना) तीन (बहुवचन) नहीं हो सकता इसलिये जब पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन, भाई–भाई, सास–बहू आदि में अनुकूलता नहीं होती तो दुःख विशेष अर्थात नरक विशेष होता है। लेकिन जब इन जोड़ों में अनुकूलता होती है तो सुख विशेष अर्थात स्वर्ग विशेष होता है। इसलिये स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर स्वर्ग और नरक की अद्भुत व्याख्या की जो आज तक किसी आचार्य ने नहीं की। इसीलिए स्वामी दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना चाहिए।

तत्पश्चात श्री इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने श्री आर्य भिक्षु जी तथा परिवार का धन्यवाद करते हुये बताया कि नरक और स्वर्ग में एक मात्रा का ही अन्तर है। पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–बहन, पिता–पुत्र, आदि जोड़े एक दूसरे को समझाते रहते हैं तो नरक बन जाता है। जब एक दूसरे को ये जोड़े समझ लेते हैं तो स्वर्ग बन जाता है। समझना स्वर्ग तथा समझाना नरक का प्रतीक है। गृहस्थ में इन दोनों शब्दों में 'आ' को समझाने की जरूरत है। इस 'आ' के अन्तर में एक विशाल परस्पर विरोधी दर्शन छिपा है।

★

आर्य समाज अमरोहा में जन्माष्टमी पर्व

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार दिनांक ३–९–८८ शनिवार को जन्माष्टमी पर्व को समता दिवस के रूप में अत्यन्त उत्साह एवं समारोह पूर्वक आर्य समाज मन्दिर में मनाया गया तथा नगर के हरिजन भाइयों ने भारी संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। यज्ञ पर श्री हरिजन भाई यजमान बने इस अवसर पर १५ हरिजन भाइयों को यज्ञोपवीत दिये गये यज्ञोपरान्त सभा का आयोजन हुआ सभा की अध्यक्षता श्रीमान न्यायाधीश फूलसिंह जी ने की, मुख्य वक्ता श्री रामप्रसाद जी सेवक ने आर्य समाज द्वारा हरिजन भाइयों के प्रति किये गये उपकारों के प्रति प्रकाश डाला तथा कहा–आर्य समाज सदा से छूतछात का बहिष्कार करता रहा है। श्री न्यायाधीश जी ने कहा कि आर्य समाज की बदौलत हमसे पं० शास्त्री विद्वान पुरोहित बने हैं। सभा उपरान्त आर्यसमाज के प्रधान श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया।

शोक समाचार

श्री पं० हरस्वरूप जी शास्त्री इन्द्रानगर, दिल्ली का स्वर्गवास ५ अगस्त १९८८ को हो गया वे 'आर्यमित्र' के प्रेमी बहुत लम्बे समय से थे–अध्ययन कार्य से निवृत्त होकर वेद एवं गायत्री प्रचार में सारा जीवन लगा दिया। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार गायत्री मन्त्र के साथ हुआ।

यज्ञ और वृष्टि-
यज्ञ एक शुद्ध वैदिक विज्ञान

[आचार्य वेदभूषण अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७]

[गताङ्क से आगे]

शास्त्रो मे मानव देह को पिण्ड और विश्वदेह को ब्रह्माण्ड कहा है। वैदिक विज्ञान का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण सूत्र है कि- यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। चिकित्सा विज्ञान वाले इस तत्व को जान सकते हैं कि- किसी सूक्ष्म व तीव्र प्रभाव वाले तत्व को सुई के नोक बराबर जिह्वा पर डालकर पूरे शरीर पर उसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे पिण्ड का ताना बाना है वैसे ही ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म तरंगे नस नाड़ियो के समान ही निरन्तर तरंगायित हो रही हैं।

अतः वैज्ञानिकों का यह तर्क कि- यज्ञ का सूक्ष्म बोध पेट के ही भीतर रह जायेगा सर्वथा भ्रान्त व अवैज्ञानिक है। सर्वथा तर्क सगत नहीं है।

वृष्टि यज्ञ का मौलिक आधार यही है कि- जिन द्रव्यो को आप मानव देह मे डाल कर जल सचय कर सकते हैं उन्हे ही आप यज्ञ द्वारा वायु मण्डल मे घोलकर ब्रह्माण्ड देह मे फैलाकर वैसा ही फल प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए जलग्राही "गोखरू" को ही लीजिए। छोटे गोखरू का क्वाथ लेने से वह देह के जल को खीच कर मूत्र की मात्रा को बढ़ा देता है। इसी गोखरू को घृत के साथ आप जलाकर ब्रह्माण्ड देह से भी जल सचित कर सकते हैं।

यह विज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म और अद्भुत विज्ञान है। जैसे जठराग्नि मे डाला हुआ अन्न रस पूरे देह मे फैलता है वैसे ही भौतिक अग्नि मे डाला हुआ वनस्पति वनौषधियाँ कम से कम एक सौर मण्डल मे अपना सूक्ष्म प्रभाव डाल सकती है। जैसे एक देह के लिए औषधो की एक मात्रा निश्चित है वैसे ही ब्रह्माण्ड देह के पर्यावरण के अनुकूल मात्रा मे उक्त द्रव्यों का उपयोग कर ब्रह्माण्ड देह की अनियमितताओं को नियन्त्रित स्वस्थ किया जा सकता है।

वर्षा कराई जा सकती है। वर्षा रोकी जा सकती है और क्या क्या किया जा सकता है लीजिए एक अत्यन्त दिव्य महान स्वामी महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद मन्त्र के स्पष्ट अर्थ को पढ़कर विज्ञ विवेकी जन हमारे कथन को स्वीकार करेंगे।

यजुर्वेद के २२ वें अध्याय का २६ वां मन्त्र है-

वाताय स्वाहा. धूमाय स्वाहा. अभ्राय स्वाहा. मेघाय स्वाहा.
विद्योत मानाय स्वाहा. स्तनयते स्वाहा. अवस्फूर्जते स्वाहा.
वर्षते स्वाहा. अववर्षते स्वाहा. उग्रं वर्षते स्वाहा. शीघ्रं वर्षते
स्वाहा. उद्गृह्णते स्वाहा. उद्गृहीताय स्वाहा. प्रुष्णते स्वाहा
शीकायते स्वाहा. प्रुष्वाभ्यः स्वाहा. ह्रादुनीभ्यः स्वाहा.
नीहाराय स्वाहा.।

मन्त्र कितना सरल है स्पष्ट है और इसमें वरुण लोक से सम्बन्धित सभी विकृतियों को विविध यज्ञों द्वारा नियन्त्रित करने का स्पष्ट उल्लेख है।

इस मन्त्र का अर्थ भी महर्षि दयानन्द के ही शब्दो मे देखिये-

अर्थ · जिन मनुष्यो ने जो बहना है उस पवन के लिए उसको शुद्ध करने वाली यज्ञक्रिया धूम के लिए (कोहरे) यज्ञ क्रिया मेघ के कारण के लिये यज्ञक्रिया (ध्यान दीजिये) मेघ के लिये यज्ञक्रिया बिजुली से प्रकाशित हुए सघन बद्दल के लिए यज्ञक्रिया (जहाँ बिजुली गिरने का भय हो जाये) उत्तम शब्द करती हुई बिजुली के लिये यज्ञ क्रिया एक दूसरे के घिसने से वज्र के समान भीषे को चोट करते हुये विद्युत के लिए शुद्ध करनेहारी यज्ञ क्रिया को बहुत बरसाता है उसके लिए यज्ञक्रिया (अतिवृष्टि को रोकने के लिए) शीघ्र लपट झपट से वर्षते हुए बद्दल के लिए उक्त क्रिया (बादल के फटने की स्थिति मे उसे रोकने के लिए) जिसने ऊपर से ऊपर जल ग्रहण किया उस बद्दल के लिए शुद्ध करने वाली यज्ञक्रिया. पुष्टि करते हुए मेघ के लिए यज्ञक्रिया जो सींचता अर्थात् ठहर-ठहर के वर्षता उस मेघ के लिए यज्ञक्रिया जो पूर्ण घनघोर वर्षा करते हैं उन मेघो के अवयवो के लिए यज्ञक्रिया, अव्यक्त गड़बड़ शब्द करते हुए बद्दलों के लिए शुद्धि करने वाली यज्ञ-क्रिया और कुहर के लिए उसकी शुद्धि करने वाली यज्ञक्रिया जो है वे ससार के प्राण पियारे होते हैं।

इस मन्त्र के भावार्थ में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि-

"जो मनुष्य यथाविधि अग्निहोत्र आदि यज्ञो को करते हैं वे पवन आदि पदार्थों के शोधने हार होकर सबका हित करने वाले होते हैं।

शुद्धि शब्द का अभिप्राय है दोषो का निवारण हर प्रकार के दोषों का निवारण ही शुद्धि है केवल पानी का प्रदूषण मात्र नष्ट करना मात्र शुद्धि नहीं है। क्रिया दोष को नष्ट करना व पदार्थ के दोष को नष्ट करना दोनो भी उपाय यज्ञक्रिया से सम्पन्न होते हैं। मैं बड़ी विनम्रता से पूछना चाहूंगा-क्या इस मन्त्र के अर्थ को पढ़ लेने पर भी सन्देह शेष रह सकता है ?

माननीय स्वामी जी यजुर्वेद के २२ वें अध्याय के २२ वें मन्त्र मे "निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधय. पच्यन्ताम्" का स्पष्ट अर्थ है कि-हमारी इच्छा के अनुसार वर्षा हो। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने इसका अर्थ कितना स्पष्ट किया है कि- निश्चययुक्त काम काम मे अर्थात् जिस-जिस काम के लिए प्रयत्न करें उस-उस काम मे मेघ (बादल) वर्षे।

देखिए ऋग्वेद मण्डल ५ सूक्त ८३ मन्त्र के भावार्थ मे महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि-

"मनुष्य लोगों को चाहिए कि-जिस मेघ से सब का पालन होता है उसकी वृद्धि वृक्षो के लगाने वनों की रक्षा करने और होम करने से सिद्ध करें जिससे सब का पालन सुख से होवे।

महर्षि ने यहाँ होम शब्द का प्रयोग किया है। यज्ञ शब्द का नहीं।

क्यो कि कुछ लोग यज्ञ का अर्थ विराट् यज्ञ से ले रहे हैं।

यहाँ तो स्पष्ट लिखा है कि होम से मेघ की वृद्धि करें।

[क्रमशः]

जवाहरलाल नेहरु और संघी बन्धु

[पृष्ठ ३ का शेष]

कोई चोर यदि उन्हें मारता तो उनके रुपये, घड़ी आदि क्यों छोड़ता ? और डायरी क्यों ले जाता ? यह तो निश्चित रूप से राजनीतिक हत्या है और उनके अपने ही दल द्वारा किया गया कार्य है। नेतृत्व की भूख में प्रायः ऐसा होता है। लगता है उनकी डायरी में कुछ ऐसे तथ्य अंकित थे, जो किसी दल की अन्तरंग समस्या से सम्बद्ध थे और कोई नेतृत्व की भूख से पीड़ित व्यक्ति उन तथ्यों के प्रगट होने से पहले डायरी को प्राप्त कर लेना चाहता ही था किन्तु उसके पश्चात् जो उपाध्याय जी द्वारा पद युत होने के भय से उपाध्याय जी को भी समाप्त करना चाहता था। उपाध्याय जी की उक्त यात्रा के अवसर का उसने लाभ उठाया और उपाध्याय जी को समाप्त कराके डायरी प्राप्त कर ली। यदि ऐसा न होता तो उपाध्याय जी की हत्या के पश्चात् डायरी से जो रहस्योद्घाटन होते वह हत्यारों को वंचित कराने वाले को भी नंगा कर अपराधी के कटहरे में ला खड़ा करते।

जितना-जितना गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाता है, इसी परिणाम पर पहुंचा जाता है। उक्त दोनों नेताओं की हत्या के दोष से संघी बन्धु स्वयं को निर्दोष सिद्ध नहीं कर सकते भले ही ... श्री डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के नाम से पखवारा मनायें या उपाध्याय पखवारा मनाकर संघी बन्धु उन दोनों के प्रति अपनी श्रद्धाभक्ति का प्रदर्शन कर लें किन्तु उनके यह प्रदर्शन प्रदर्शन मात्र ही हैं।

★

उत्सव

आर्यसमाज नाकुड़ (सहारनपुर) का ५८ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २६-२७-२८ अक्तूबर १९८८ को मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० भवानीलाल जी भारतीय (पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़) श्री वीरेन्द्र जी रत्तनम (मेरठ) श्री सहदेवसिंह बेधड़क (मेरठ) आदि पधार रहे हैं। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, महिला सम्मेलन, हरिजन रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

आ० स० खण्डवा में वैदिक धर्म ग्रहण

दिनांक ३-८ ८८ को स्टेनली फ्रान्सीस मैथ्यूसी नामक युवक ने वैदिक धर्म में स्वेच्छा से दीक्षा ली वैदिक धर्म स्वीकार करने के बाद उसका नाम राजनारायण रखा गया। कार्यक्रम के पश्चात् पधारे हुये लगभग २०० लोगों को उनके हाथों से स्वल्पाहार कराया गया।

आर्य समाज मैरोपुर की स्थापना

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद में विरनो प्रखण्ड के अन्तर्गत मैरोपुर ग्राम में दिनांक ६ सितम्बर १९८८ दिन मंगलवार को नालन्दा (बिहार) से पधारे आर्य विद्वान डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी की उपस्थिति में नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई दिनांक ५ सितम्बर सोमवार को रात्रि में श्री सत्यार्थी जी का प्रवचन ग्रामीणों के बीच में हुआ। नवीन गठित आर्य समाज के प्रधान श्री अम्बिका भारद्वाज जी एवं मन्त्री श्री रमाशंकर आर्य चुने गये कोषाध्यक्ष श्री रामजीयादव भारद्वाज एवं पुस्तकाध्यक्ष श्री मन्ता भारद्वाज जी चुने गए।

आ० स० बहजोई (मुरादाबाद) की हीरक जयन्ती एवं मण्डलीय आर्य महा सम्मेलन

दिनांक १ से ५ अक्टूबर ८८ तक विशाल समारोह के साथ मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं संन्यासी पधार रहे हैं।

आर्य समाज कुम्हरकी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कुम्हरकी का वार्षिकोत्सव दिनांक २५, २६ तथा २७ सितम्बर ८८ को बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। इसमें आर्य जगत के उच्चकोटि संन्यासी, महोपदेशक एवं भजनीक पधार रहे हैं। २५ ता० को विशाल शोभायात्रा निकलेगी।

उत्सव

आर्य समाज बिजनौर का वार्षिकोत्सव दि० ८ से ११ सि० ८८ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ८ सि० ८८ को प्रातः १० बजे विशाल शोभायात्रा निकाली गई इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन, मद्य-निषेध सम्मेलन, जाति भेद-निवारक सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन तथा राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने की। इस अवसर पर महात्मा आर्य भिक्षु जी, वैदिक विद्वान डा० आनन्द सुमन, प्रो० दिनेशचन्द्र त्यागी, पं० दिव्य रत्न आर्य, डा० ओम दत्त शास्त्री, श्री हरिश्चन्द्र आर्य, पं० रामचन्द्र शर्मा, भजनोपदेशक गीतकार राकेश आर्य, योगेशचन्द्र आर्य के विचारों एवं संगीत से जनता का ज्ञानवर्धन हुआ। सम्मेलन का आयोजन आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल के प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने किया।

जिला सभा बिजनौर का चुनाव

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल के वार्षिक निर्वाचन में दिनांक ११-९-८८ को निम्न लिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

प्रधान-श्री जयनारायण अरुण मन्त्री-श्री सुरेन्द्रसिंह

कोषाध्यक्ष-श्री प्रयागदत्त शर्मा

आ० स० खण्डवा में निःशुल्क योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज के प्रधान श्री माधवीभाई भानुशाली तथा मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि विगत दिनों आर्यसमाज खण्डवा के अन्तर्गत रंगून से पधारे ब्रह्मचारी वासव चैतन्य योगी के सानिध्य में दिनांक १७-८-८८ से ३१-८-८८ तक १५ दिन निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। योग के माध्यम से रोगोपचार की जानकारी दी। दि० ३०-८-८८ से रात्रि ७ से ९ ध्यान योग का आयोजन गुजराती धर्मशाला में किया इस कार्यक्रम की लोगों ने आश्चर्य की संज्ञा दी। लगभग १०,००० लोगों ने इसका लाभ लिया।

पं० रामप्रसाद बिस्मिल के सहयोगी के पुत्र एवं पुत्रवधू द्वारा आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार का संकल्प

शाहजहांपुर निवासी श्री हरगोविन्द जी पं० रामप्रसाद बिस्मिल के निकट सहयोगी तथा आर्य समाज मन्दिर शाहजहांपुर में उनके निरन्तर सम्पर्क में रहे। काकोरी षड्यन्त्र केस में इन्हें २ वर्ष का कठोर कारावास हुआ। श्री हरगोविन्द जी नैष्ठिक आर्य तथा आदर्श देश भक्त थे। उनकी वंश परम्परा में उनके आदर्शों तथा पद चिन्हों का अनुकरण करते हुये उनके सुयोग्य पुत्र श्री हंसराज जी आर्य तथा उनकी पत्नी पद्मावती आर्या ने दि० १५ अगस्त १९८८ को वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के संगठन, प्रचार तथा आदर्शों को आगे बढ़ाने का संकल्प किया है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

है। यहां तो अद्भुत सन्तुलन है। हर चीज को सीमित रखने की प्रकृति ने सुन्दर व्यवस्था की है।

फिर भी यन्त्र है। ठीक से न चलाया जाए तो बिगड़ जाता है। प्रकृति के शाश्वत नियमों की अवहेलना से रोग उत्पन्न होते हैं। उनके निदान, उपचार और शमन की भी व्यवस्थाएं बनाई गई हैं।

शरीर की ग्रन्थियां शरीर में सन्तुलन बनाए रखती हैं। सन्तुलन बिगड़ने पर उपचार होता है। यह तन्त्र ठीक काम करने लगता है। कभी-कभी स्थिति अनियन्त्रित हो जाती है। अनेक उपचारों से भी जब बात नहीं बनती जब अजर-अमर आत्मा इस शरीर को छोड़कर अन्य शरीर में चला जाता है। तीव्र ज्वर में हमारा शरीर अत्यधिक तप्त हो जाता है। ज्वर हो जाता है। ज्वर बढ़ने के साथ साथ ताप भी बढ़ता जाता है। परन्तु इस वृद्धि की भी सीमा है। १०५ अंश १०६ अंश १०७ अंश १०८ अंश, १०९ अंश । कहां तक बढ़ना? एक स्थिति ऐसी आ जाती है जहां शरीर की उष्णता बढ़ते-बढ़ते एकदम शीतलता में बदल जाती है। रक्त तप्त शरीर पीत-शीत शरीर में बदलने लगता है। आत्मा अपने गन्तव्य को चला जाता है। पञ्च तत्व का पार्थिव शरीर पड़ा रह जाता है। इसको शीघ्रातिशीघ्र पञ्चतत्व में विलीन करने के लिये अग्नि को समर्पित करना पड़ता है। यह विधान आदिकाल से चला आ रहा है। अन्तकाल तक चलता रहेगा। न कभी किसी के शरीर से योगानल प्रकटा है, न प्रकटेगा।

एक तर्क यह भी दिया गया है—जो स्वेच्छा से सती होना चाहे, उसे होने दिया जाए।

नहीं होने दिया जाए। आत्म हत्या महापाप है। इस पाप को प्रोत्साहन देना महा अपराध है।

जिसने जीवन और मृत्यु की मीमांसा को समझ लिया है अनित्य में नित्य और नित्य में अनित्य पदार्थों का जिसे भ्रम नहीं होता कर्म फल-सिद्धान्त पर जो निर्भ्रान्त है विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी जिसका धैर्य आत्म बल, ईश्वर विश्वास और उत्साह बना रहता है, वह पाप कदापि नहीं करता। इसके लिए मनुष्य को अविद्या जन्य लोभ, मोह भय आदि दोषों से मुक्ति दिलानी होगी। अर्थात् अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी होगी। अर्थात् आर्य समाज का सन्देश विश्व के कोने कोने में पहुंचाना होगा।

आवश्यकता

स्वस्थ, सुन्दर, गौर वर्ण—लम्बाई ५' ४" बी० ए०, बी० एड० (वनस्थली, विद्यापीठ राजस्थान) कन्या के लिये योग्य ब्राह्मण वर चाहिये। कन्या की आयु २२ वर्ष। पिता का गोत्र उपमन्यु। निम्न पते पर सम्पर्क करें।

लक्ष्मी शंकर द्विवेदी
२/२०० सिधाना, हमीरपुर (उ० प्र०)
११०१०।

वेद सप्ताह के अवसर पर

६० पैसे की १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, वैदिक धर्म प्रकाश, वैदिक धर्म, परमात्मा विचार वैदिक प्रश्नोत्तरी, सत्य पथ, आर्य समाज क्या है, ईश्वर प्रार्थना, प्रेम भक्ति जितनी इच्छा हो सेट मंगावें। उत्तम हवन सामग्री ४) किलो। श्रद्धानन्द ग्रन्थावली १२), गुरुदत्त ग्रन्थावली १३)।

वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३, रामजस रोड,
करोलबाग—नई दिल्ली-५

नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46998 42668
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७६
भाद्रपद शुक्ल ७
१८ सितम्बर रविवार १९८८ ई०

आर्य

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनि

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत में समता दिवस

आर्यसमाज बड़ा बाजार मे जन्माष्टमी के पर्व पर समान अधिकार दिवस मनाया गया। जिसमे नगर के लगभग ६५ हरिजन पुरुष एव महिलाओं को यज्ञोपवीत दिया गया। इसमे नगर के सभी समुदाय के लोगो न भारी सख्या म भाग लिया। यज्ञोपवीत श्री धर्मपाल शास्त्री ने दिये। सभी ने यज्ञोपवीत की पवित्रता को कायम रखने का सकल्प किया।

आर्यसमाज क मन्त्री श्री रामबाहुल राव एडवोकेट न समारोह मे उपस्थित लोगो का स्वागत करत हुए कहा कि आर्यसमाज एक आन्दोलन है जो हरिजनो के उद्धार का सबसे बड़ा पक्षधर है। ऐसा इसलिए है कि इसके दो सिद्धान्त हैं पहला कि परमात्मा की सभी एक समान सन्तान हैं दूसरी किसी भी व्यक्ति का परिचय उसके जन्म से नहीं बल्कि उसके गुण कम एव स्वभाव स होता है।

केन्द्रीय हरिजन सेवक सघ के नेता श्री प्रकाश भाई ने कहा कि आज भारत गुट निरपेक्ष आन्दोलन का अगुआ है तथा दक्षिण अफ्रीका में वहाँ की सरकार जो रगभेद वादी नीति चल रही है उसका सबसे बड़ा आलोचक भारत है। इसी प्रकार की भेद-भाव की नीति भारत मे होती है ता वह भी भारत की प्रतिष्ठा को ठस पहुचाना होगा।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे विधायक एव हरियाणा अर्बन्स के अध्यक्ष श्री ममफूलसिंह ने कहा कि यह ऊच नीच छुआछूत का भेदभाव मानव की ओर स ही बनाया है। परमात्मा की ओर से सभी जन समान हैं।

उन्होंने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज न होता तो हरिजन भी उन्नति न कर पाते।

सर्वस्व दहेज, बहू को समझो

आंसू पोछो अबलाओ के,
दहेज मांगने वालो!
समाज की कुरीतियों को,
कूड़ा करकट समझो।१।

दहेज की चाहत छोड़ो,
धन के लोभ वालो।
तुच्छ दहेज के कारण,
तुम नारी को मत मारो।२।

दहेज के कारण देखो,
दु ख है कितना मिलता।
सुन्दर-सुयोग्य बहू को,
वर है अयोग्य मिलता।३।

यदि तुमने बेटा पाला है,
तो उसने बेटी पाली है।
हालत पर उसकी तरस करो,
जिसकी झोली खाली है।४।

माता तो है, निर्माता,
मातृशक्ति की ज्योता।
तुम नारी को पहचानो,
तुम इसकी पूजा करो जानो।५।

पाषाण बना मत, मानव,
मानव का उलटा, दानव।
सर्वस्व दहेज, बहू को समझो,
इतनी समझ तो समझो।६।

—सुषमा पन्त (धमपत्नी सुरेन्द्र पन्त) आ० स० रामनगर (नैनीताल)

अधिष्ठात्री की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन अजमेर के लिये आर्य विचारो वाली अनुभवी, सब रहा, ३५–४० वर्षीय एक अधिष्ठात्री की आवश्यकता है। योग्यता अनुसार वेतन तथा निःशुल्क आवास, एव भोजन की सुविधा। शीघ्र आवेदन करें।

प्रधान
दयानन्द बाल सदन
चाँदबावड़ी रोड केसरगंज, अजमेर

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए सभामन्त्री आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए सत्यार्थी रूप में एस०पी० प्रिन्टर्स (सिकन्दराबाद जिला) चारबाग, लखनऊ में श्री ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८१

भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक २५ सितम्बर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०,
साहिबाबाद

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ९१

अङ्क ३८

आत्मनिरीक्षण, आत्मनिवेदन, आत्मसमर्पण—

'अहमिन्द्रो न पराजाग्ये'

★ ★ ★

मैं अपरिवर्तनशील हूं। न मुझे मौत का डर है, न कभी पैदा हुआ, न कभी मरा, न मेरा कोई माता पिता और न मैं किसी का माता पिता। मैं इन्द्र हूं, मैंने कभी हार नहीं मानी। न मैं दुःख का कारण हूं और न सुख का। न मेरा कोई शत्रु है, न मैं किसी का शत्रु। मैं अभय हूं– मित्रात् अभय अमित्रात् अभय मित्र से भी अभय शत्रु से भी अभय। मैं रूपहीन हूं, सीमा हीन हूं देश से परे काल से परे। मुक्त होकर लोक लोकान्तरों में विचरण करने वाला उन्मुक्त गगन का पंछी।

मेरा प्यारा हृदयम मेरे साथ है। चलते-चलते जब थक जाता हूं तो उसे अपने अन्तरतम में झांक कर देख लेता हूं–'दिल के आइने में तस्वीरे यार को, जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।' वह मुझे अनन्त बल और शक्ति प्रदान कर देता है–और मैं फिर चलने लगता हूं–क्योंकि परमात्मा मेरा सम्बल है। मैं शरीर नहीं हूं, शरीर का परिवर्तन भी नहीं हूं। मैं हाड़ मांस का पुतला भी नहीं हूं इसलिए चिता पर बहुत शान्त होकर विश्राम करके सो जाता हूं। न मैं शव हूं, न पुतला हूं। न मैं नश्वर हूं, न बूढ़ा हूं। मेरा मन संसार की दुनिया नहीं है और न उसी में लीन तल्लीन रहता हूं पर कि मैं उसके बहुत पास हूं–इतना पास कि इन आंखों से देख ही नहीं सकता। पर मैंने उसे देख लिया है–निकलती हुई तारिकाओं के बीच उनके शुभ्र निर्मल स्वरूप को। मैंने उसे सूंघ भी लिया है–प्रातःकालीन बहती हुई शीतल मन्द सुगन्ध समीरण में। मैंने उसके उन्नत दिव्य वक्षस्थल का विहार किया है–मैं उन चढ़ी हुई उत्तुङ्ग पर्वतीय चोटियों में। मैंने उसे सुन भी लिया है–भूख से तड़पते हुए दीनों की आह में। और अब मैं अपना सब कुछ उसी को समर्पित कर देना चाहता हूं और यही तो कह रहा हूं–ले लो मेरे जीवन धन! मेरा हृदय ले लो और उसे अपने प्रेमरस से परिपूर्ण कर दो। मेरे नयन ले लो और अपने दिव्य दर्शन से इन्हें कृतार्थ बना दो। मैं तुमसे न अलग हूं न अलग होना चाहता हूं–मैंने तो तुम्हें सबकुछ समझकर पूर्ण समर्पण कर दिया है–

'अब छोड़ तुम्हें प्रभु जाऊं कहां जब जलजाल में मीन फंसी है–
अब ऐसी करो जामें लाज रहे जो हमारी हंसी सो तुम्हारी हंसी है।'

वेद कहता है–'अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतोऽहं सर्वः"

तू मेरे अङ्ग प्राण इन्द्रिय शरीर और हर दिशा का स्वामी है। आंखों में तू तेज बनकर समाया हुआ है, प्राणों में तू श्वास बनकर हर क्षण मुझे चेतावनी देता रहता है तू मेरा सोम है तेरा अमीरस पीकर मैं बहुत आनन्दित हो गया हूं। तेरी दिव्य वाणी सुनकर मैं बहुत तृप्त हो गया हूं। अहा! अब मुझ सा भाग्यशाली कौन है।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी॥
—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—भाद्रपद शुक्ल १५ संवत् २०४५, रविवार २५ सितम्बर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

राष्ट्रभाषा हिन्दी

भारत के संविधान में हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी सुनिश्चित है। देश के बहुसंख्य वर्ग में बोलचाल, व्यवहार की भाषा हिन्दी होने के कारण ही इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। देश की संस्कृति, देश की सभ्यता के अध्ययन का सूत्र भी हिन्दी ही है। स्वाधीनता से पूर्व स्वराज्य आन्दोलन के कर्णधारों ने इसी कारण हिन्दी को स्वाधीनता के बाद देश की राष्ट्रभाषा बनाना एकमत से सुनिश्चित किया था।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने शताधिक वर्ष पूर्व देश को एकता के सूत्र में पिरोने की भावना से ही अहिन्दी भाषी क्षेत्र में जन्मने के बाद भी—अपने उपदेशों के लिए हिन्दी को अपनाया था। अपने समस्त ग्रन्थों का प्रणयन भी हिन्दी भाषा में ही किया था। उनके अनुगामियों ने अपने शिक्षण संस्थानों के माध्यम से चाहे वे गुरुकुल रहे हों, स्कूल रहे हों, कालेज रहे हों, हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए अपना सर्वस्वार्पण किया था। ऐसी क्रान्ति आई कि अंग्रेजी सरकार के हौसले पस्त हो गये। अंग्रेजी और अंग्रेजियत अन्तिम श्वासें गिनने लगी। तत्कालीन शासन ने गुरुकुलों व आर्य शिक्षण संस्थाओं को शासन विरोधी केन्द्र मानकर उन पर विभिन्न प्रकार से आतङ्क भी फैलाया परन्तु वे झुके नहीं अपने प्रचार प्रसार में बढ़ते ही गये। अंग्रेजियत का पराभव दृष्टिगत होने लगा। स्वाधीनता के बाद राष्ट्रीय नेताओं ने उस संकल्प को लोकसभा में दुहराते हुए भारतीय संविधान में हिन्दी को उसका राष्ट्रभाषा का गौरवमय पद प्रदान किया। परन्तु दुर्भाग्य से वह स्थान मात्र संविधान की पुस्तक के अन्दर ही बन्द होकर रह गया। हिन्दी विरोधियों की तुष्टीकरण की नीति का आश्रय लेकर हिन्दी के पद प्रतिष्ठापन में कुछ कालिक व्यवधान डाला। वह व्यवधान क्रमशः बड़ी ही मधुर बहानेबाजी से बढ़ाया जाता रहा। इस बीच हिन्दी विरोधियों की सजगता से अंग्रेजी का प्रबल प्रचार व्यावहारिक जीवन में बढ़ने लगा और आज अंग्रेजी और अंग्रेजियत पराधीनता काल से भी और विकराल रूप से हम पर हावी हो गयी है। ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुयायी भी इससे अछूते नहीं रहे। हम भी अब अंग्रेजियत को प्यार से ओढ़ने लगे हैं। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना हमें भी रास आने लगा है। हम भी अब गर्व से अपने निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपाने लगे हैं। हमें भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल चलाने की ललक उठने लगी है। परन्तु है यह महादुर्भाग्य। वास्तव में देश में फैलता आतङ्कवाद, वर्गभेद, भाषायी और क्षेत्रीय विवाद का जनक हमारा अंग्रेजी व्यामोह ही है। इस विषम भयावह परिस्थिति पर विजय प्राप्त करके देश को संगठित, सुखी, सुसम्पन्न बनाने का हम सबका साझा दायित्व है।

स्वाधीनता के मूल मन्त्र दाता महर्षि स्वामी दयानन्द थे और अब स्वाधीनता की संरक्षा का दायित्व उनके हम सब अनुयायियों पर है। अतः हम सभी आर्यजन चेतें, सजग हों, बिगड़ती दिशा को बदलें, अंग्रेजी और अंग्रेजियत की चकाचौंध के व्यामोह से बचकर हिन्दी के प्रचार प्रसार और व्यवहार के लिए सतत सचेष्ट हों। निष्काम कर्त्तव्य निष्फल नहीं जाते। यदि हमने बीड़ा उठा लिया तो संसार की कोई शक्ति हमें परास्त नहीं कर सकती। हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता हमारी भाषा हमसे छिन नहीं सकती। हम अपने दृढ़ निश्चय लगन और साध से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के गौरवमय पद पर पदासीन कर भारत माता के प्रति ऋणमुक्त होने की दिशा में अपने कदम बढ़ायेंगे। संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करके गौरवान्वित होंगे।

हिन्दी है पहचान हमारी हिन्दी अपनी भाषा है
स्वतन्त्रता की रक्षा का मूल मन्त्र हिन्दी भाषा है॥

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

बृहदधिवेशन

दि० १२, १३ नवम्बर

सन् १९८८ को

डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१-सभा में चिट्ठ प्राप्ति की अन्तिम तिथि	१०-१०-८८
२-चिट्ठों की जांच	११-१०-८८ से १५-१०-८८ तक
३-मतदाता सूची का प्रकाशन	१८-१०-८८
४-आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	२०-१०-८८
५-आपत्ति का निवारण	२१-१०-८८ से २४-१०-८८ तक
६-शुद्धमतदाता सूची का प्रकाशन	२५-१०-८८
७-बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१२-११-८८ एवं १३-११-८८
८ चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
दिनांक १२-९-८८] नारायणस्वामी-भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एक गहरा षड्यन्त्र

[आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद]

इस संसार में दैवासुर संग्राम सदा से चलता रहा है। सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत युद्ध पर्यन्त संसार में दैवी शक्तियाँ विजयी होती रही हैं। किन्तु जब महाभारत काल में राजवंश में ही ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि धधक उठी परिणामतः दैवी शक्तियाँ पराजित हुईं। यद्यपि महाभारत युद्ध में योगेश्वर कृष्ण के नेतृत्व में पाण्डव विजयी हुए किन्तु विश्व की शासन व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई और सारी धरती पर आसुरी शक्तियों ने बन्दर बाँट की नीति अपना ली।

महाभारत का युद्ध भारत की ही धरती पर लड़ा गया था किन्तु यह युद्ध वास्तव में विश्व युद्ध था। कौरव और पाण्डव समस्त विश्व के माण्डलिक राजाओं के प्रतिनिधि रूप में लड़ रहे थे। इस युद्ध में अरब देश कौरवों के साथ थे। पातालादि देश जिन्हें अब हम अमरिका कहते हैं पाण्डव के पक्ष में रहे। इस विभाजन का कारण भी पारिवारिक ही रहा।

गाँधारी एक अरब देश की कन्या थी। जिसे हम कन्धार कहते हैं। चक्रवर्ती राजवंश में फूट का प्रमुख कारण गान्धारी ही थी। उधर अर्जुन ने शक्ति सन्तुलन प्राप्त करने के लिए उलूपी नामक अमरिकन राज कन्या से विवाह किया था। यह विवाह पाताल देशों की सहानुभूति व सहयोग अर्जित करने के उद्देश्य से ही किया गया था। क्योंकि धार्मिक या सामाजिक व्यवस्था के आधार पर तो अर्जुन का स्वयंवर विवाह पहले ही द्रौपदी से हो चुका था।

जब साधन भ्रष्ट हो जाते हैं तब मनुष्य साध्य भ्रष्ट भी हो जाता है। परिणामतः भारत के चन्द्रवंश परिवार में फूट पड़ गहरा गई थी। तभी से यवन लोगों में चन्द्रवंश का अभिमान जागृत हुआ था जो कालान्तर में उनके मन का प्रतीक ही बन गया।

मुसलमानों में चन्द्रमा के प्रति जो धार्मिक आकर्षण है उसका मूल यही राजवंश रहा जिस राजवंश में गान्धारी ब्याही गई थी।

महाभारत के बाद विश्व की शासन व्यवस्था पूरी तरह से लड़खड़ा गई। यद्यपि महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ कर चक्रवर्ती शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने का यत्न किया था और इस सारी राजनीति में योगेश्वर कृष्ण की सूझबूझ काम कर रही थी। गिरते-गिरते भी कृष्ण ने पाण्डवों को विजयी बना दिया पर चक्रवर्ती सत्ता जो बिखरी सो बिखर ही गई।

महाभारत युद्ध के बाद भी अरब देशों में प्रतिरोध की ज्वाला धधकती रही चन्द्रगुप्त ने एक बार फिर काबुल और कन्धार को बाहुबल से परास्त किया और उन्हें फिर से भारत के शासन से आबद्ध किया। किन्तु जैसे ही पृथ्वीराज और जयचन्द में फिर से महाभारत कालीन द्वेष जगा तो इस बार फिर अरब देशों ने जयचन्द का साथ दिया पर पृथ्वीराज के बाहुबल ने उन्हें अनेकों बार धूल चटायी। अन्ततः गोरी ने विजय प्राप्त की और भारतीय शक्ति सन्तुलन बिगड़ा तो अवसर पाकर पाताल देशीय लोगों ने अपने सहयोगी देश ब्रिटेन को उकसाया और भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पैर जम गए।

प्रत्यक्ष में तो विश्व में हमें दो देश का परस्पर टकराव नजर आता है किन्तु उस टकराव के पीछे अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का हाथ होता है। वे किन्हीं दो राष्ट्रों को अपना प्रतिनिधि बनाकर अखाड़े में उतार कर अपना शक्ति परीक्षण करती हैं। आज भी विश्व में जहाँ कहीं दो देश टकराते हैं तो प्रत्यक्ष में यह युद्ध दो देशों का माना जाता है, पर पीछे ये विश्व की प्रतिस्पर्धी सत्ताएं लड़ती हैं। फिर ये युद्ध चाहे कोरिया में हो या वियतनाम में। चाहे भारत में हो या पाकिस्तान में अथवा चीन में इजरायल में हो या ईराक और ईरान में। ये युद्ध बड़ी शक्तियों द्वारा कराये जाते हैं।

पर्दे के पीछे के रहस्य गोपनीय ही रह जाते हैं प्रायः भारत और लंका के युद्ध का पृष्ठभूमि सीताहरण की घटना माना जाता है पर रावण से अयोध्या का विरोध महाराजा दशरथ के काल में पर्याप्त गहरा हो चुका था। पर इतिहास परिपेक्ष्य को छोड़ देता है।

उन्नीसवीं शताब्दी से ही समस्त विश्व में अमेरिकन राजनीति ने जोर पकड़ लिया है। तब से आज तक संसार में जितनी लड़ाइयाँ चल रही हैं उनके पीछे प्रमुख भूमिका अमेरिका की होती है। संसार में समझा कि ब्रिटेन शक्तिशाली है उसके शासन में सूर्य भी अस्त नहीं होता पर ब्रिटेन के अभिनय के पीछे सारी अमेरिकन राजनीति रही है। अमेरिका ने ब्रिटेन के कन्धे पर रखकर अपने निशाने दागे हैं। ब्रिटेन को शिकार बनाया गया असली विश्व शिकारी अमेरिका रहा। ब्रिटेन साम्राज्य के यश से सन्तुष्ट हुआ और अमरिका ब्रिटेन को आगे रख सारा आर्थिक लाभ बटोरा और समस्त विश्व की सम्पदा एकत्रित कर वह धनी हो गया और ब्रिटेन कंगाल का कंगाल ही रहा।

इस विश्व राजनीति के तीन आधार रहे। एक अर्थ लाभ दूसरा शासन बल तीसरा इन दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साम्प्रदायिक या तथाकथित धार्मिक प्रचार।

इन आधारों में अमेरिका ने अपना ध्येय बनाया आर्थिक लाभ। ब्रिटेन के लिए सत्ता बढ़ती जाती रही और धर्म प्रचार के क्षेत्र को दोनों ने साझा माध्यम बनाया।

जब भारत पर अंग्रेजी शासन हुआ तभी से वह इस बात को जानते थे कि—उनका शासन भारत में या अन्य देशों में स्थिर नहीं रहेगा। इस सारे इतिहास में प्रत्यक्ष में ब्रिटेन नजर आता है पर इसके पीछे अमेरिकन मस्तिष्क काम करता रहा है।

अमेरिका अर्थ को आधार बनाकर विश्व को आर्थिक दासता में कसना चाहता है। ब्रिटेन को वह केवल ईसाई मत प्रचार की भेंट देकर सन्तुष्ट रखता रहा है।

इस सारी दीर्घकालीन राजनीति के पीछे आर्थिक शोषण और दूसरा ईसाई मत के प्रचार द्वारा वैचारिक दासता का जाल फैलाना। आर्थिक दोहन में अमेरिका को आशातीत सफलता मिली और इस नीति को बनाए रखने के लिए ईसाई मत प्रचार की योजना भी वह आरम्भ में तो बहुत सफल रही पर इस योजना को सबसे गहरा जो आघात लगा उसके सबसे प्रमुख कारण बने भारत में जन्मे महर्षि दयानन्द सरस्वती। जैसे ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई तो अंग्रेज प्रसन्न था। किन्तु जब खण्डन की यह असि धार पुराण से ईसाई मत पर आयी तो अंग्रेज दहल उठा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यज्ञ और वृष्टि_
यज्ञ एक शुद्ध वैदिक विज्ञान

[आचार्य वेदभूषण अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७]

[गताङ्क से आगे]

महर्षि के निम्न उदाहरण भी कितने स्पष्ट हैं देखिए-

वर्षा का हेतु जो यज्ञ है उसका अनुष्ठान करके नाना प्रकार के सुखों को प्राप्त करो। यजुर्वेद १-१४

अच्छी प्रकार पदार्थों को इकट्ठा करके यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए जो वृष्टि व बुद्धि का बढ़ाने वाला है। यजु १-१६

अग्नि मे जो हवन किया जाता है तथा जिसको सूर्य अपनी किरणों से खींचकर वायु के वेग से ऊपर मेघ मण्डल मे स्थापन करता है। और फिर वह उसको वहाँ से मेघ द्वारा गिरा देता है। यजुर्वेद ८/८

इस अन्तिम उदाहरण मे यज्ञ का सूक्ष्म विज्ञान कितना स्पष्ट है। यह कहना कि यज्ञ का वाष्प सौ से दो सौ फीट ही ऊपर जाता है। काल्पनिक भ्रान्त भावना है।

वैज्ञानिकों का यह तर्क कि- 'गर्भाधान सस्कार और विवाह मात्र से सन्तानोत्पत्ति नहीं होती, जब तक कि मैथुन न किया जाये। पुत्रेष्टि यज्ञ करने मात्र से पुत्र नहीं उत्पन्न होता जब तक नियोग न किया जाय। सस्कार विधि मे सवत्सरेष्टि और शस्येष्टि का उल्लेख है अच्छी फसल होने पर शस्येष्टि का जाती है फसल तयार करने के लिए नहीं।"

शस्येष्टि या सवत्सरेष्टि सस्कार नही है। यह यज्ञ तो पहले सबको या दूसरो को खिलाकर फिर खाने के उद्देश्य से शस्येष्टि और सवत्सरेष्टि वर्षारम्भ व शुभ कार्य से आरम्भ हो इस उद्देश्य से होते।

फसल को जो उत्तम करने के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ फसल के बाग से पहले ही करना होगा बाद मे नहीं। पूना के अनुसन्धान केन्द्र मे फसल को उत्तम उगाने के उद्देश्य से गोमय को जला कर परीक्षण किया गया।

एक स्थान पर खेत मे बीज वपन कर उसमे गाय के गोबर को भरपूर खाद डाली गई और एक दूसरे स्थान पर खेत मे बीज डालकर उन्हे बिना खाद के ही अकुरित होने दिया गया। अकुरित हो जाने पर खेत के मध्य मे एक स्थान पर गाय के गोबर को जलाया जाता रहा। जिस खेत मे खाद डाली गई वहाँ के पौधो को विकसित होने मे अधिक समय लगा जब कि-जहाँ गोबर जलाया गया वहाँ के पौधे कम समय मे अधिक विकसित हो गये।

कारण स्पष्ट है कि-पेड़ पौधे वायु के माध्यम से भी शक्ति सचय करते हैं। जलाये गये गोबर को उन्होंने वायु मण्डल के सूक्ष्म रूप मे खींच लिया

अग्नि मे डाला गया द्रव्य सूक्ष्म होकर अधिक शक्तिशाली हो जाता और पेड़ पौधे वायु से उसे शीघ्र ही खींच लेते हैं। इसी प्रकार आप किसी व्यक्ति को कोई दवा खिला दें और दूसरे व्यक्ति को वही दवा इजेक्शन द्वारा सीधे रक्त मे डाल दें तो इजेक्शन का प्रभाव अविलम्ब होता है। इस वैज्ञानिक तथ्य को हमे स्वीकार करना होगा।

यज्ञ की प्रक्रिया भी इन्जेक्शन के समान ही है। जो द्रव्य वनस्पति आप यज्ञ मे जलाते हैं वह सूक्ष्म रूप मे श्वास द्वारा फफड़ो में जा रक्त से टकराकर उसमें घुल जाती है और उसका प्रभाव याज्ञिक पर पड़ता क्या कोई बुद्धिमान वैज्ञानिक इस तथ्य से इन्कार कर सकता है? कदापि नहीं।

जिस प्रकार वायु मण्डल में फेंक गये डी० डी० टी० पाउडर का अश श्वास द्वारा मानव देह को भी प्रभावित करता है और वातावरण को भी ठीक वैसे ही अग्नि में डाली गई वनौषधियो का व गाय के घृत का प्रभाव बाह्य वातावरण और प्राणियो के देह पर और अधिक गहरा पड़ता है क्योकि अग्नि उसे सूक्ष्म कर सहस्रगुना अधिक शक्तिशाली बना देती है।

पुत्रेष्टि यज्ञ मे श्रेष्ठ वनौषधियों बनाये गये चरु घृत को पति पत्नी को खिलाया भी जाता है और यज्ञ द्वारा सूक्ष्म रूप में उन्हीं औषधियों को श्वसन प्रक्रिया द्वारा रक्त मे भी पहुचा दिया जाता है। इस प्रकार का यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

आधुनिक विज्ञान अभी उन सूक्ष्मताओ को जान नहीं पाया है जिन्हे हमारे प्राचीन महर्षियो ने जाना व समझा था।

वहाँ तक अन्ध विश्वास और अज्ञान भरी मान्यतायें हैं उनसे बचना आवश्यक है। ऐसे अन्ध विश्वासो और पाखण्डो का निश्चय से विरोध किया जाना चाहिए जो केवल जनता को ठगने या अन्य दुरुद्देश्यो से किए जाते हैं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज का यह कथन कि-यज्ञ मे डाली गई आहुति केवल १०-२० फिट ऊपर जाती है यह धारणा सर्वथा मिथ्या है। साधारण से स्थूल धूलकण अन्तरिक्ष मे वायु के माध्यम से दूर-दूर तक चले जाते हैं जब कि-गोघृत अग्नि के सयोग से द्युलोक तक अपने प्रभाव को फेंकता है। तत्तीस जड़ देवताओं का पवित्रीकरण करने वाला यह यज्ञ हव्य यज्ञ नहीं देव यज्ञ कहाता है। यज्ञ शब्द यज् धातु से बना है यज धातु का अर्थ है-देव पूजा, सगतिकरण और दान।

वैज्ञानिक की दौड़ तो केवल दृश्य पदार्थो तक ही है पर दृश्य ससार से अदृश्य ससार कहीं अधिक विराट् है। फिर मन, आत्मा, परमात्मा तो उनकी स्थूल बुद्धि से बहुत परे की बात है।

यज्ञ उतना ही अनिवार्य कर्म है जितना घर में नित्य झाड़ लगाना वास्तव मे हमारे मान्य स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस यज्ञ के प्रभाव को कितना न्यून या प्राचीन आविष्कारों की स्मृति माना है यह यज्ञ विज्ञान की सूक्ष्मता को न समझने वाली बात है।

स्वामी जी ने अपने लेख में यज्ञ के गौण लाभों में "मूर्ति पूजा से बचे रहना" यह लाभ भी गिनाया है। वास्तव में यज्ञ तो मूर्ति पूजा ही है। मूर्ति की पूजा का शुद्ध वैज्ञानिक प्रकार ही अग्निहोत्र या देव यज्ञ है। वास्तव में "यज्ञ" करने वाला हर व्यक्ति मूर्ति पूजक है। मूर्ति पूजा का सही विधान ही यज्ञ है।

(क्रमशः)

जन-समर्पण की प्रतिमूर्ति–

श्री नारायणदत्त तिवारी

[श्री सुमन्त व्यास, महामन्त्री, उ० प्र० नागरिक परिषद् लखनऊ]

भारत के सर्वाधिक जन संख्या वाले और शायद सबसे अधिक समस्या-ग्रस्त राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री पद पर श्री नारायण दत्त तिवारी को चौथी बार वापसी राज्य को एक नई दिशा प्रदान करने का शुभ सन्देश देता है। पिछले वर्ष के सूखे के दीर्घवर्ती प्रभावों और अनेक अन्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कठिनाइयों से प्रदेश आक्रान्त है, और श्री तिवारी के सम्मुख विकास की गति को तीव्रतर करने और राज्य को सुदृढ़ और विचारवान नेतृत्व देने की कड़ी चुनौती है। आगामी वर्ष के अन्त के संसदीय आम चुनाव तथा उसके कुछ समय बाद राज्य विधान सभा के आम चुनाव के सन्दर्भ में श्री तिवारी के ऊपर राज्य कांग्रेस (ई) दल में एक नई उद्देश्यपरकता और समर्पण का संचार करने का गुरुतर दायित्व है।

श्री तिवारी ने जिस शान्ति आत्म-विश्वास और शालीनता से अपना कार्यभार ग्रहण किया, वह उनके व्यक्तित्व और राजनीतिक शैली का परिचायक है। आज से ४५ वर्ष पूर्व, १७ वर्ष की अल्पायु में भारत छोड़ो अभियान के दौरान [जिसमें उनको १५ महीनों का कारावास प्राप्त हुआ] आपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ से ही उन्होंने प्रचार और आडम्बर से हटकर अपने दायित्वों के सक्षम निर्वाह की विशेषता प्रदर्शित की है। स्वतन्त्रता सेनानी आम जनता के स्तर पर संलग्न राजनीतिक स्वयंसेवक प्रजातान्त्रिक समाजवाद के प्रखर समर्थक, दलगत संगठन में कुशल कार्यकर्ता, विधायक और सांसद, पत्रकार और लेखक, केन्द्रीय और राज्य स्तरीय मन्त्री और राज्य के मुख्य मन्त्री आदि विभिन्न क्षमताओं में उनकी सार्वजनिक सेवा का इतिहास सिद्धान्तों और मूल्यों के प्रति समर्पण उजागर करता है और उनमें दल के नेतृत्व का विश्वास और उनके प्रति विरोधियों और सामान्य जनता के आदर-भाव के लिए उत्तरदायी है।

राजनीति की दृष्टि से देश के सबसे महत्वपूर्ण और सम्वेदनशील राज्य का नेतृत्व ग्रहण करने से तत्काल पूर्ववर्ती तीन वर्षों के दौरान केन्द्रीय मन्त्री परिषद् के उद्योग, पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस, विदेश तथा वित्त एवं वाणिज्य के प्रमुख विभागों के कर्णधार के रूप में श्री तिवारी ने व्यापक ख्याति अर्जित की है। १९८० से अगस्त, १९८४ में उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री पद पर दूसरी बार आसीन होने तक केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में अपने तीन वर्षों से अधिक केन्द्रीय कार्यकाल में भी नियोजन एवं श्रम मन्त्री और उद्योग, इस्पात एवं खान मन्त्री के रूप में आपको प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

राज्य स्तर पर भी पहले जनवरी, १९७६ तक और फिर अगस्त ८४ से सितम्बर, १९८५ तक मुख्य मन्त्री पद पर अपनी मूल्यवान उपलब्धियों के अतिरिक्त १९६९ से कैबिनेट मन्त्री के रूप में विभिन्न विभागों–जैसे नियोजन, श्रम, स्थानीय स्व-शासन, संसदीय कार्य, भारी उद्योग, शिक्षा व गन्ना विकास के कुशल संचालन में श्री तिवारी की भूमिका को विस्तृत मान्यता मिली। उनकी सर्वाधिक विश्रुत उपलब्धियाँ राज्य वित्त मन्त्री के रूप में थीं। जिस विभाग का कार्यभार वे मुख्य मन्त्रित्व के साथ भी लिया रहे। इस क्षमता में उन्होंने राज्य का बजट पेश किया। इन सभी बजटों की विशेषता थी कि इनमें विकास और प्रशासनिक प्राथमिकताओं के सामञ्जस्य के साथ-साथ मितव्ययी वित्तीय अनुशासन तथा जनता पर करों के बोझ को न्यूनतम रखने की दृष्टि से राजस्व साधनों के अधिकतम विस्तार पर बल दिया गया था।

वित्तीय आर्थिक और नियोजन सम्बन्धी मामलों में श्री तिवारी की विशेषता तथा विस्तृत अनुभव को सार्वजनिक मान्यता तो मिली ही है, साथ ही इसकी स्पष्ट छाप केन्द्रीय वित्तमन्त्री के रूप में उनकी उपलब्धियों में परिलक्षित होती है। नवीनतम केन्द्री बजट [जो उनके द्वारा प्रस्तुत पहला बजट था] साहसिक, कल्पना शीलता तथा सुस्थापित वित्तीय सिद्धान्तों का बुद्धिमत्तापूर्ण सामञ्जस्य प्रदर्शित करता है। इस बजट में विकास योजनाओं तथा सार्वजनिक व्यय की अत्यावश्यक मदों पर तथा समाज कल्याण एवं उत्पादन साधनों के विस्तार पर समन्वित निवेश का कुशल प्रबन्ध किया गया तथा कर दाता पर बोझ बढ़ाये बिना शासन के राजस्व में विस्तार का लक्ष्य प्राप्त किया गया। बजट बनाने में आपने जिस सूझ-बूझ का परिचय दिया, उसके कारण विपक्ष के दिग्गज भी उसमें कोई विशेष त्रुटियाँ न निकाल पाये। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों तथा कमजोर आर्थिक व सामाजिक वर्गों के लिए प्रस्तुत जलधारा, कुटीर उद्योग तथा अन्य योजनाओं में कल्याणकारी प्रकल्प के साथ सामाजिक सुविधाओं के विस्तार का पथप्रदर्शन सामाजिक किया गया है।

केन्द्रीय वाणिज्य मन्त्री के रूप में निर्यातों के विविधीकरण को एक नई दिशा देने में श्री तिवारी सफल हुए। विदेश मन्त्री पद पर ९ महीनों के सापेक्षतः अन्य कार्यकाल में अत्यन्त महत्वपूर्ण विदेश यात्राओं के दौरान न केवल आपने भारत की पारम्परिक गुट निरपेक्षिता की ओजस्वी वकालत की वरन् विवादपूर्ण अन्तराष्ट्रीय मुद्दों पर भारत के दृष्टिकोण की स्पष्टवादी प्रस्तुति इस प्रकार की कि उन महाशक्तियों को भी शिकायत का मौका नहीं मिला, जिनकी नीतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन हुआ। इससे पहले केन्द्रीय नियोजन मन्त्रालय में आपने नियोजन प्रक्रिया में यथार्थवादिता, विकेन्द्रीकरण, क्षेत्रीय व क्षेत्रीय असंतुलनों के निराकरण तथा योजना के कार्यान्वयन के कुशल मूल्यांकन पर विशेष बल दिया, तथा उद्योग मन्त्री पद पर आपने सार्वजनिक उद्यमों के केन्द्रीय महत्व, निजी उद्यमों में स्वतन्त्रता के साथ सामाजिक दायित्व के निर्वाह तथा छोटे उद्यमों को विशेष संरक्षण की नीति का सफल प्रतिपादन किया।

विभिन्न मन्त्री पदों पर श्री तिवारी की उपलब्धियों में प्रशासनिक पहल तथा जनता की भागीदारी के समेकन के मूलभूत सिद्धान्त का आभास मिलता है। यह शासन और राजनीति के विभिन्न स्तरों पर आपके विस्तृत और विविध अनुभव का परिचायक तो है ही, जनहित के लिये आपके गहरे समर्पण तथा आपकी सुदृढ़ प्रजातान्त्रिक मान्यताओं का प्रतिनिधित्व भी करता है। जनता की कठिनाइयों के निवारण में आपकी निष्ठापूर्ण रुचि भी आपकी जनप्रियता तथा सहयोगियों एवं विरोधियों दोनों में आपके प्रति आदर-भाव की कुञ्जी है। वास्तव में श्री तिवारी के व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियों को प्राप्त व्यापक मान्यता के मूल में आपकी सौम्यता, गम्भीरता, नम्रता, तथा आम जनता से अपनी सहानुभूति और तादात्म्य निहित हैं। जनता के सभी वर्गों को विकास की प्रोन्नति में सम्मिलित करने की आपकी सच्ची आकांक्षा, पदभार ग्रहण करने के उपरान्त आपके पहले सार्वज-

(शेष पृष्ठ १० पर)

आओ सत्संग में चलें--

"बलिवैश्व देव यज्ञ"

(वैद्य कृष्णलाल आर्य ५४९/१५२ अर्जुन नगर, लखनऊ-५)

सत्संग के प्रेमी बन्धुओ—मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिलता है इसे प्राप्त कर सार्थक किया जाये-इसके लिए महर्षियो ने पंच महायज्ञों का विधान किया। केवल विधान ही नहीं किया-इनको अनिवार्य भी कहा-मनु महर्षि कहता है-"पंचैतानि महा यज्ञानि यथा शक्ति न हापयेत्'॥ पंच महा यज्ञ है-(१) ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या व स्वाध्याय) २-देव यज्ञ (हवन) ३-पितृ यज्ञ (जीवित पितरो का श्राद्ध एवं तर्पण) ४-अतिथि यज्ञ, ५-बलि वैश्व देव यज्ञ। इनमे से पहले चारो के सम्बन्ध मे हम लोग प्रायः कुछ न कुछ सुनते-सुनाते रहते हैं- परन्तु बलि वैश्व देव पर चर्चा बहुत कम सुनने को मिलती है। मेरे कुछ मित्रो ने इस पर विचार करने का आग्रह किया- मैं भी उनके आदेश का पालन कर जो कुछ विद्वानो से सुना या पढ़ा-वह आपको भेंट कर रहा हू।

बलि वैश्व देव यज्ञ क्या है---महर्षि ने पंच महा यज्ञ विधि मे लिखा-"जब भोजन सिद्ध हो-तब जो कुछ भोजनार्थ बने-उसमे से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़कर घृत मिष्ठयुक्त अन्न जो कुछ पाक शाला मे सिद्ध हो-उसको दिव्य गुणो के अर्थ पाकाग्नि मे नित्य होम करें- और फिर बलि प्रदान करें-तत्पश्चात् लवण युक्त अन्न-कुत्तो, कंगालो, कुष्ठी आदि रोगियो-काक आदि पक्षियो और चींटी आदि कृमियो के लिए छ भाग अलग अलग बांट कर देवें और उनकी प्रसन्नता सदा करना"। अर्थात् प्रतिदिन भोजन से पूर्व उस भोजन मे लवण रहित भाग को अग्नि मे कुछ आहुतियां देना-फिर लवण युक्त अन्न का कुछ भाग भूखे नंगे रोगी-कौआ कुत्ता चींटी आदि को देना और अन्त मे स्वयं खाना। ऐसा क्यो किया जावे-इसका क्या लाभ है-आओ इस पर विचार करें – और इसकी महत्ता को समझकर आचरण मे लावें।-

बन्धुओ-आत्मा का विकास करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है-नीचे से ऊपर उठना-दुःखों से परे हट कर सुख प्राप्त करना-जन्म मरण के बन्धन से छुटकारा पाकर मुक्ति प्राप्त करना-यह ही जो विकास का मार्ग या विकास है। इस विकास को प्राप्त करने के लिये मनुष्य को व्रत लेना पड़ता है-वह प्रत्येक कार्य कर्मकांड से पूर्व आचमन करते हुए कहता है-ओ३म् "सत्य यश श्रीर्मयि श्री श्रयतां स्वाहा'। अर्थात् इस व्रत के भी तीन भाग है-सत्य, श्री और यश। पौधे मे कली या उद्गम होना सत्य है जब फूल खिला-तो श्री की प्राप्ति-जब उस फूल की सुगन्धि फैली तो वह यश है। अर्थात् सुगन्धि या यश को प्राप्त करने के लिये सत्य और श्री का होना भी आवश्यक है। इसको जरा और स्पष्ट करें-जब किसी कार्य को करने का विचार मस्तिष्क मे उत्पन्न होता है-वह स्थिति सत्य है-उस विचार को पूरा करने का संकल्प या प्रेम हृदय मे धारण हो जाता है-तो वह श्री प्राप्ति की स्थिति है और जब उस विचार और प्रेम को हम कर्म मे ले आते हैं तो वह यश हो जाता है। कहने का भाव यह है कि यश या विकास को प्राप्त करने के लिए-विचार-प्रेम (लगन) और कर्म तीनों आवश्यक है। इसके लिए मस्तिष्क हृदय और हाथ तीनों का शुद्ध और निर्मल होना आवश्यक है। इनको शुद्ध निर्मल करने के लिए ज्ञान और उपदेश मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। यह उपदेश मनुष्य को माता-पिता और गुरु से प्राप्त होता है। इस उपदेश को (ज्ञान को) प्राप्त कर मनुष्य मे विवेक जागृत होता है-तभी वह यश के मार्ग का यात्री बन पाता है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए गुरु आचार्य अपने शिष्य को पहले उप नयन (यज्ञोपवीत) धारण कराता है बन्धुओ जब हम या हमारी आखें ठीक नहीं देख पाती तो हम ऐनक (उपनयन) का सहारा लेते है तो फिर हमे स्पष्ट दिखाई देने लगता है-हम ठीक देखते हैं और प्रसन्न हो जाते है। गुरु का दिया हुआ उपदेश ज्ञान ऐनक की भांति हमारे ज्ञान चक्षु खोल देता है-तभी हम वास्तविकता को जानने मे समर्थ हो जाते हैं। ज्ञान त्याग और तपस्या के बिना अधूरा है। त्याग करने से ही सम्मान-यश-विकास की प्राप्ति होगी। आओ इस रहस्य को और खुलासा करने के लिए अपने शरीर को देखें। हमारा मुंह शरीर मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है जैसे राष्ट्र मे एक ब्राह्मण का स्थान होता है मुंह का काम है-भोजन को लेकर आगे पेट को दे देना-पेट सारे शरीर को सौंप कर जीवन प्रदान करता है। यदि मुंह लोभी, लालची, स्वार्थी हो जावे तो वह भोजन को अपने ही पास रखे और पेट को न दे तो शरीर नहीं चल सकेगा। सिर्फ इसी स्वार्थ त्याग या पर हित करने के कारण ही मुंह को शरीर मे प्रधानता प्राप्त हुई। मुह और ब्राह्मण दोनों समान हैं-यदि ब्राह्मण त्यागी, तपस्वी स्वार्थ रहित होगा तो राष्ट्र ऐश्वर्यशाली होगा और यदि ब्राह्मण या नेता स्वार्थी हो जावेंगे तो राष्ट्र का नाश हो जावेगा। आज हमे नित्य नई समस्या-विपत्ति का सामना करना पड़ रहा है-इसमे भी यह ही रहस्य कार्य कर रहा है। शरीर-समाज-देश राष्ट्र को सुख समृद्धि ऐश्वर्य से पूर्ण करने के लिए त्याग की आवश्यकता है।

पाठक जिज्ञासा करेंगे-यह चर्चा आरम्भ की गई थी बलिवैश्व देव यज्ञ के लिए और चले आये त्याग और तपस्या पर--इसकी क्या आवश्यकता थी। मेरा निवेदन है कि उपलिखित भूमिका को जान लेने से उसको चर्चा कर देने से बलिवैश्व देव यज्ञ की महत्ता को समझने मे सरलता होगी। ऊपर लिखित सब चर्चा का सार यह है कि अपने श्रम पुरुषार्थ से अर्जित किये हुए अन्न धन से अहंकार रहित होकर प्रसन्नता पूर्वक दूसरो की सेवा करनी चाहिए-यह ही सब से बड़ा त्याग है। इसी का ही दूसरा नाम बलिवैश्व देव यज्ञ है। बलि को आज कल की भाषा में टैक्स कह सकते हैं-परन्तु टैक्स भी दो प्रकार से दिया जाता है (१) अपनी इच्छा से प्रसन्नता पूर्वक देना और दूसरा (२) रूप है राज्य या सरकार जबर दस्ती ले लें। जब सरकार जबरदस्ती लेती है तो मनुष्य को कष्ट या दुःख होता है और उसके अन्दर द्वेष एवं घृणा की भावना जन्म लेती है-दूसरी तरफ जब वह स्वयं प्रसन्नता पूर्वक देता है तो उसे सुख अनुभव होता है-उसे प्रेम और सम्मान मिलता है। भामाशाह का तो उदाहरण हमारे सामने है-उसने प्रसन्नता पूर्वक महाराणा को भेंट कर दिया। उसे सारा संसार आदर पूर्वक स्मरण करता है। बस बलि की भावना भी इसी दूसरी प्रकार की होनी चाहिए- बलि सदा स्वेच्छा से ही दी जाती है। इसका और एक उदाहरण हमारे सामने प्रतिदिन आता है। ग्वाला जब गाय का दूध निकालता है तो गाय की टांगों को रस्सी से कस कर बांध लेता है और फिर दूध निचोड़ता है- आवश्यकता पर कभी २ गाय को मारता भी है-आजकल तो दूध लेने के लिए पशु को सुई भी लगाई जाती है।

दूसरी तरफ जब गाय अपने बछड़े को दूध पिलाती तो बिना दबे बिना मार खाये वह पन्हाती है और मस्त होकर जुगाली करते हुए बच्चे को दूध पिलाती है। गाय से दूध प्राप्त करने की पहली अवस्था को हम टैक्स कहते हैं और दूसरी अवस्था को बलि। [क्रमशः]

वे चाहते क्या हैं ?

[स्वामी विवेकानन्द सरस्वती प्रभात आश्रम भोला, मेरठ]

डा० स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती आर्य जगत् के सुपरिचित व्यक्ति हैं। नित्य नये चिन्तन के विचार से वे कुछ नई बातें कहने का प्रयास करते हैं किन्तु शीघ्रता में वे यह भी भूल जाते है कि ऋषि दयानन्द जी का मन्तव्य उनके सब ग्रन्थों के मन्थन के पश्चात् तत् तत् विषयों में स्थिर किया जा सकता है, और ऋषि के ग्रन्थों का पूर्ण सतर्कता से अध्ययन करना चाहिए। अन्यथा उनके मन्तव्यों के समझने में भूल हो जायगी। जैसा कि– 'आर्यमित्र, १० जुलाई, पृष्ठ ५ पर पूर्णाहुति केवल देवयज्ञ में है। इस शीर्षक से स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा एक टिप्पणी प्रकाशित की हुई जो सर्वथा ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों की अनभिज्ञता की परिचायिका है। यह हम महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्मित 'संस्कार-विधि' के प्रकाश में ही दिखाने का प्रयास करते हैं। सामान्य प्रकरण के अन्त में ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं "यह सामान्य विधि अर्थात् सब संस्कारों में कर्तव्य है।" इस सामान्य विधि में पूर्णाहुति भी सम्मिलित है; जो कि सभी संस्कारों में कर्तव्य है। यह स्पष्ट ही सिद्ध हो जाता है।

गर्भाधान-प्रकरण के अन्त में पुनः ऋषि दयानन्द जी लिखते है : "इन मन्त्रों से आहुतियाँ देकर पूर्व लिखित सामान्य प्रकरण की शान्त्याहुति दे के पुनः अट्ठारहवें पृष्ठ में लिखे प्रमाणे पूर्णाहुति देवे। यहाँ तो स्पष्ट ही पूर्णाहुति का विधान किया गया है।

"कर्णवेध संस्कार विधि के प्रकरण में भी ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं कि पृष्ठ चार से उन्नीस तक में लिखा हुआ सब विधि करें। इस सब विधि में पूर्णाहुति भी है। सामान्य प्रकरण में मंगल कार्य शीर्षक में ऋषि दयानन्द जी पुनः लिखते हैं कि "गर्भाधानादि सन्यास संस्कार पर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित वामदेव्य गान अवश्य करें। यहाँ भी पूर्वोक्त पूर्णाहुति का ग्रहण अवश्य होता है। इससे स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा यह लिखना कि "महर्षि दयानन्द ने पूर्णाहुति का विधान केवल देवयज्ञ (दैनिक अग्नि होत्र) में किया है। सोलह संस्कारों में भी पूर्णाहुति का विधान नहीं है। कितना असत्य है संस्कारों का आशीर्वाद उस व्यक्ति (युवा व बालक) को ही दिया जाता है। हाँ यदि बालक शिशु है–(माता-पिता की गोद में है) तो भी उसी को लक्ष्य करके आशीर्वाद दिया जाता है। आशीर्वाद कोई छूत की बीमारी तो नहीं जिसे देते समय बालक को माता–पिता की गोद से उतरवाकर ही देना चाहिए।

"१४ अगस्त, के आर्यमित्र में पृष्ठ ७ पर "स्वस्ति-वाचन शान्ति प्रकरण से आहुतियाँ" नामक शीर्षक से डा० स्वामी सत्य प्रकाश जी का लेख प्रकाशित हुआ। जिसमें स्वामी जी ने अपना विचार व्यक्त किया है। ऋषि दयानन्द हमें कर्म काण्ड के (के) प्रेरक युग से हटाकर कर्म प्रेरक युग में ले जाना चाहते थे। पुनः......"परम्परा से आये इन कर्म काण्डों के जंजाल से हमें मुक्त करके आर्य बन्धुओं के निमित्त उन्होंने हमें दो ही ग्रन्थ दिये हैं–पञ्चमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि। यहाँ पर कर्मकाण्ड के जञ्जालों से स्वामी सत्यप्रकाश जी का क्या अभिप्राय है। यह समझ से परे की बात है। क्योंकि महर्षि दयानन्द जी महाराज तो अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों को करणीय मानते हैं।

हाँ जो-जो कर्म काण्ड वेदानुकूल युक्त प्रमाण सिद्ध है उसी को मानना योग्य है, अयुक्त नहीं, ऐसा उन्होंने "वेद भाष्य भूमिका" के प्रतिज्ञा विषय स्पष्ट ही लिखा है। ऋषि दयानन्द जी वेद विरुद्ध अयुक्त और अप्रामाणिक कर्मकाण्डों से सहमत नहीं थे किन्तु जो कर्म काण्ड वेदानुकूल है उन्हें वे अवश्य करणीय मानते हैं। अब जो लोग आलस्य या प्रमोद वश इसे जञ्जाल समझते हैं। उनसे भगवान् आर्य समाज की रक्षा करें ! क्योंकि ऋषि तो कर्म काण्डों को अत्यधिक महत्व देते थे और उन्होंने शिखा बन्धन, आचमन, अङ्गस्पर्श, सूर्यदर्शन अरुन्धती दर्शन, सप्त पदी आदि क्रिया कलापों का पूर्वाचार्यों के अनुरूप ही अपने कर्म-काण्डों में समावेश किया है। इसीलिए यदि अधिक होम करने की इच्छा हो तो उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका में स्पष्ट निर्देश दिया है कि–' उन मन्त्रों से होम करके अधिक होम करने की इच्छा हो तो "स्वाहा" शब्द अन्त में पढ़कर गायत्री मन्त्र से करें' – (ऋ० भाष्य भूमिका, पञ्च महायज्ञ विषय) सत्यार्थ प्रकाश में भी–

"जो अधिक आहुति देनी हों तो 'विश्वानि देव... इस मन्त्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवें ,"

[तृतीय समुल्लास]

संस्कार विधि में अन्त्येष्टि प्रकरण के अन्त में लिखते "घृत विशेष हो तो पुनः इन्हीं एक सौ इक्कीस मन्त्रों से आहुति देते जायें, यावत् शरीर भस्म न हो तावत् ।' यह नहीं कि कर्मकाण्ड के जंजाल से बचकर घृत को घर ले जायें और उसको अन्य भक्षणादि कार्यों में प्रयोग करें। ईश्वर स्तुति–प्रार्थना–उपासना, स्वस्तिवाचन, और शान्ति करण के मन्त्र केवल संस्कारों से सम्बन्धित नहीं किये जा सकेंगे क्योंकि जहाँ भी कोई विशिष्ट यज्ञ हो वहाँ इनका पाठ करना ही चाहिए– यह हमारी सांस्कृतिक परम्परा है, और जब संस्कार जैसे विशिष्ट यज्ञों में ये करणीय है तो उनसे भी विशिष्ट जो बृहद् यज्ञ हैं उनमें भी इनका करना उचित ही है। विशेषकर किसी महोत्सव व समारोह के अवसर पर अथवा आर्य सभाओं के अधिवेशनों में इसका पाठ करना उचित ही है। होम के समय मन्त्र पढ़ने का औचित्य बताते हुए सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी यह भी लिखते है कि...और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें, और वेद पुस्तकों का पठन पाठन और रक्षा भी होवे। (तृतीय समुल्लास में) स्वस्ति वाचन आदि का विशेष अधिवेशनों में पाठ कराना उचित ही है, जिन आचार्यों ने पारायण यज्ञों को चलाया उसके मूल में भी पठन–पाठन और रक्षा का भाव ही निहित था, अन्यथा अश्वमेधादि यज्ञ तो हम कर ही न पायें और इन यज्ञों का भी हम लोप करते जायें, यह लोप बहुल दृष्टि कोण हमें घातक सिद्ध होगा। ऋषि दयानन्द जी का उद्देश्य पोपलीला को छोड़कर वेद लीला से सम्बन्ध करना था न कि लोप लीला में विलीन होना।

रही बात पञ्चयज्ञ महाविधि की तो श्री महाराज ने प्रातःकाल एवं सायंकालीन मन्त्रों के द्वारा मुख्य आहुतियों का ही उसमें विधान

(शेष पृष्ठ ९ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

सर्वप्रथम जब सत्यार्थ प्रकाश निकला तो उसमे केवल बारह समुल्लास ही थे। जैसे ही सत्यार्थ प्रकाश मे तेरहवां व चौदहवा समुल्लास आया जैसे ही विश्व के इन षड्यन्त्रकारियो के दिल दहल उठे ! !

क्योंकि उनकी जो गहरी चाल थी कि–हम संसार को राजनीतिक गुलाम न बनाकर वैचारिक गुलाम बनाएंगे जैसा कि–मैकाले ने शिक्षा नीति की घोषणा मे अपने इस रहस्य को उजागर भी कर दिया था उसको साकार करने मे पर्वत जैसी बाधा बन गए महर्षि दयानन्द सरस्वती–और उनका सत्यार्थ प्रकाश।

गोरो ने महर्षि पर साम, दाम, दण्ड, भेद सब प्रकार से आजमा लिए जो महर्षि को वे उनके उज्ज्वल चरित्र और सत्य पर आधारित उनका वैचारिक प्रवाह से वे रंचमात्र भी डिगा न सके तो उन्होंने इस धीरोदात्त सेनानायक को पर्दे पर से ही हटा देने का षड्यन्त्र रचा।

महर्षि की सूझबूझ, उनका साहस सर्वथा सत्य पर आधारित था। और मानवीय सबल दृष्टिकोण का जिससे ब्रिटिश एम्पायर सिहर उठा !

विश्व के इतिहास को उठाकर यदि देखें तो पता चलेगा कि–इन दो शताब्दियो मे जिन बड़े–बड़े दार्शनिको, वैज्ञानिको और राज नेताओ की हत्या हुई है उन सब के पीछे अमेरिका सी० आई० ए० नाम से प्रसिद्ध जो संगठन आज विकसित व जगप्रसिद्ध है यही शक्ति व नीति इन समस्त हत्याओ के लिए उत्तरदायी है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की हत्या इसी दीर्घकालीन विश्व व्यापी संगठन की षड्यन्त्रकारी नीतियो की ही एक कड़ी है।

इन हत्याओ की पृष्ठभूमि अत्यन्त रहस्यमयी होती है। भारत की धरती पर ही नहीं सारे विश्व में जितनी महत्वपूर्ण हत्यायें विगत दो शताब्दियो मे कराई गई है वह विश्व इतिहास मे कभी भी इतना भयकर सुनियोजित हिंसा का ताण्डव नहीं खेला गया। महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द, वीर लेखराम, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, और कांगो का लुमुम्बा, श्रीमती इन्दिरा गांधी, और पाकिस्तान जिआ शहीद किया और विश्व मंच पर न जाने कितने लोगो को अमेरिकन कुनीति का शिकार होना पड़ा है। इन हत्याओ के षड्यन्त्र बड़े गहरे होते है और एक ही बार मे अनेक उद्देश्यो की प्राप्ति की जाती है।

महर्षि दयानन्द ने एक ओर सामाजिक सुधार का आन्दोलन चलाया तो दूसरी ओर मतमतान्तरो का प्रबल खण्डन की आंधी चला दी, तीसरा महर्षि का राजनीतिक प्रयास था कि भारत के रजवाड़ो को फिर संगठित किया जाए इसी उद्देश्य से राजस्थानी नरेशो के सम्पर्क मे चले गये और उन्हे उन्होने परस्पर निकट लाने मे सफलता भी प्राप्त की। अमेरिकन एजेन्सी ने अग्रेजों को उकसाया और महर्षि को मिटा देने की सुनियोजित योजना की वे चाहते थे कि आर्यसमाज को हिन्दू समाज से भी काटना जरूरी है क्योंकि आर्यसमाज को जनसमर्थन हिन्दू से मिल रहा है जब ईसाई हिन्दू को अपना चरागाह मान रहे थे। इसीलिये जगन्नाथ को चुना गया, नन्हीं जान थी हिन्दू किन्तु नाम और व्यवसाय से वह मुसलमान सी लगती थी। पर सत्य यह है कि महर्षि की हत्या का षड्यन्त्र एक गहरा अमेरिकन षड्यन्त्र था।

भोले लोगो ने महर्षि के देहान्त को-निर्वाण का जोश जश्न समझा। न कोई जाच व पड़ताल न जगन्नाथ या नन्ही जान की गिरफ्तारी न इसके लिए कोई आन्दोलन।

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के लिए तो जाच कमीशन बिठलाया गया कि–उनकी मृत्यु की जाच हो पर महर्षि के बलिदान की जांच आज तक न की गई न ही किसी ने ऐसी मांग ही की।

जैसे जिया के विमान की दुर्घटना रहस्य बन कर रह गई पर महर्षि के बलिदान की घटना तो ऐसी हुई जैसे महर्षि ने स्वाभाविक मृत्यु का वरण कर लिया।

एक साधारण से व्यक्ति के मरने पर भी वर्षों कार्यवाहियां चलती हैं पर ब्रिटिश शासन धन्य है कि-महर्षि के बलिदान पर कहीं कोई किसी प्रकार की कानूनी कार्यवाही का थोड़ा सा भी संकेत तक नहीं।

शासक तो षड्यन्त्रकारी था। उसे क्या दोष दें दोष हम लोगों का है कि-हमने कभी इस षड्यन्त्र के बारे मे जांच की मांग तक नहीं की।

स्वतन्त्रता के बाद यदि हमने कुछ किया तो केवल यह कि–केवल एक तैल चित्र ससद भवन मे लगा दिया जाए।

जितनी दूर तक और गहराई तक हम सोचते हैं तो यह बात बहुत रहस्यपूर्ण षड्यन्त्र की कड़ी का बोध होता है। पर यहां तो कोई रोने वाला नहीं है। क्योंकि यदि महर्षि मरने तो हम रोते वे तो मोक्ष धाम में पहुंचा दिए गए है। कैसी विडम्बना के हम शिकार हो चुके हैं।

अब सिवाय लेखो के शब्द विन्यास के सिवाय क्या किया जा सकता है। इस घटना को अभी–अभी तो केवल सौ वर्ष हुए हैं। क्या भारत सरकार इस सन्दर्भ मे कोई कमीशन नहीं बिठा सकती कि–इस मामले की जांच हो। पर उस समय शासक स्वयं षड्यन्त्रकारी था साक्ष्य कैसे सम्भव हैं। पर इस दिशा मे गम्भीरता से सोचने की और महर्षि के बलिदान के कारणो की खोज अधिक गहराई से की जानी चाहिए।

हमारा दृढ़ मत है कि महर्षि का बलिदान एक असाधारण षड्यन्त्र का परिणाम था। हत्यारे सफल थे कि–उनके प्रयत्न और सूझबूझ इतनी सफल रही कि–स्वामी जी के भक्तो ने बलिदान के मोक्ष यात्रा मानकर आत्म सन्तोष कर लिया।

काश ! आज भी संसार के विवेकी लोग इस युग मे खेले जा रहे इस हत्या के ताण्डव नृत्य को देखकर समझ कि–किस प्रकार से आसुरी शक्तियां विजयी हो रही है और मानवसेवी आत्म बलिदान के शिकार हो रहे है।

इसे जानने की और यथार्थ को जानने व समझने की आवश्यकता है। क्योंकि एक–एक महापुरुष का मोल चुकाया नहीं जा सकता। कहीं महर्षि दस साल अब और धरती पर रह पाते तो देश का नक्शा ही कुछ और होता। देश ही नहीं विश्व का नक्शा ही बदल जाता।

किन्तु आज भी हम राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रों के शिकार है। आर्यसमाज जैसे वेगवान प्रवाह को रोकने व इसे नष्ट करने के षड्यन्त्र आज भी महाशक्तियों के द्वारा रचे जा रहे हैं हमे सावधान होकर सोचने व समझने की आवश्यकता है।

आज तो भीतर से ही हमारे लिए अस्तित्व रक्षा का खतरा पैदा हो गया है।

हम समूचे आर्यजगत को सावधान करना चाहते हैं कि–हम आर्य समाज की विशुद्ध विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए समस्त भेदभावों को भुलाकर एक हों और आगे आने वाले युग मे हम विवेकपूर्ण भूमिका को निभाएं हम देख रहे हैं कि हमारे संगठन मे देशी और विदेशी तत्व सक्रिय हैं जो हमारी धारा को ही मूलतः नष्ट भ्रष्ट कर देना चाहते हैं।

क्या विचारशील देवगण असुरों की इस चाल को सम झेंगे। ✱

पुस्तक-परिचय

स्तुतामया वरदा वेदमाता

लेखक—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि, प्रकाशक वेद संस्थान लखनऊ पृष्ठ संख्या ६४ मूल्य ४) ।

श्री विक्रमादित्य वसन्त' वेदवारिधि—जिन्होने अब सन्यास की दीक्षा ले ली है और स्वामी वेदबोध नाम से अनवरत वेद प्रचार का संकल्प लेकर स्वयं ही समर्पित जीवन जी रहे है—ने स्तुतामया वरदा वेदमाता पुस्तक की बड़ी ही सरल भाषा मे संरचना करके वेदमाता को सर्व सुगम बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है ।

पुस्तक के प्रथम २४ पृष्ठो मे प्रश्नोत्तर रूप मे बड़े ही सुललित ढग से वेद परिचय, पृष्ठ २५ मे प्रभु चिन्तन एव ओ३म् को हृदयासन मे प्रतिष्ठापित करने का मार्ग सुगम किया है । शेष पृष्ठों मे चारो वेदो से चुन-चुन कर मन्त्रो को प्रस्तुत करके जन साधारण के लिए वेद सर्वथा उपादेय, सुकर्म प्रेरक एव प्रभु की अमृतमयी वाणी है और इसके ही साहाय्य से मानव जीवन को पूर्ण सार्थक बनाया जा सकता है—यह अमर सन्देश प्रसारित किया है । उन्होने बड़े ही रोचक ढग से वेद माता की लोरिया, पहेलिया जन जन को हृदयगम करके आनन्दित होने के लिए प्रस्तुत की हैं ।

पुस्तक सर्व साधारण के लिए उपयोगी पुस्तकालयो मे संग्रहणीय है ।

आर्य समाज शताब्दी समारोह के प० इन्द्रराज जी स्वागताध्यक्ष

आर्य समाज जवाहरनगर (लालकुर्ती मेरठ) की अन्तरग सभा द्वारा सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव मे आगामी १४, १५ व १६ अक्तूबर १९८८ को होने वाले 'शताब्दी समारोह' हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पण्डित इन्द्रराज जी का स्वागताध्यक्ष के रूप मे चयन किया गया है । उक्त समिति के मन्त्री पद हेतु श्री प्रयाग चन्द्र अग्रवाल स्वागत मन्त्री हेतु श्री ओम प्रकाश अग्रवाल का चयन किया गया है ।

आर्य समाज शताब्दी समारोह कार्यालय का विधिवत उद्घाटन

मेरठ २९ अगस्त । आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती) के शताब्दी समारोह कार्यालय का विधिवत उद्घाटन प० इन्द्रराज जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के द्वारा यज्ञ के उपरान्त पूर्व मन्त्री एव सासद् श्री मानसिंह वर्मा के कर कमलो द्वारा किया गया । शताब्दी समारोह आगामी १४, १५ व १६ अक्टूबर को मनाया जाने वाला है ।

★ तपोवन वैदिक साधन आ० स० देहरादून का वृहद् यज्ञ तथा साधना-शिविर १० अक्तूबर से आरम्भ होगा और पूर्णाहुति रविवार दिनांक १६ अक्तूबर को होगी ।

इस अवसर पर पूज्य महात्मा दयानन्द जी के अतिरिक्त दिल्ली से से प० पृथ्वीराज शास्त्री पधारेंगे सञ्चालक स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती पधारगे ।

बिहार के भूकम्प पीड़ितो की सहायतार्थ आर्य समाज की ओर से सार्वदेशिक सभा ने सहायता कोष खोला

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पीड़ित क्षेत्रो के दौरे पर

दिल्ली २४ अगस्त । उत्तरी बिहार के मुगेर और दरभगा क्षेत्र मे पिछले दिनो जो जारदार भूकम्प आया था उसमे गैर सरकारी सूचना के अनुसार एक हजार के करीब स्त्री-पुरुष और बच्चे मारे जा चुके हैं तथा कई हजार लोग घायल व बेघर-बार हो चुके हैं ।

आर्य समाज के शिरोमणि सगठन सार्वदेशिक सभा ने पीड़ितों की सहायता के लिए सभा मे एक सहायता कोष खोल दिया है । सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की जनता तथा आर्य जनो से विशेष कर आर्य समाजो से अपील की है कि वह इस सकट की घड़ी मे पीड़ितों की सहायता के लिए अन्न, वस्त्र व धन एकत्र करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—२ के पते पर भेजें । धनराशि मनीआर्डर चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर ही भेजा जावे ।

आर्यसमाज का शिष्ट मण्डल सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे भूकम्प पीड़ितो के दौरे पर हैं ।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वे क्या चाहते हैं ?

[पृष्ठ ७ का शेष]

किया है उसमे आचमन अङ्ग स्पर्श अग्न्याधान—जल—प्रोक्षण आदि किन्ही मन्त्रो का भी उल्लेख नहीं है, तो क्या ये कुछ भी नहीं करना चाहिए ? ऐसा ऋषि का अभिप्राय नहीं है वे समझते थे कि संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण मे लिखी हुई विधियां तो कर ही लेना चाहिए वहीं संस्कारो मे दैनिक अग्नि होत्र के मन्त्रो की आहुति देना तो संस्कार के मध्य इनकी आहुति कभी नहीं देनी चाहिए, ना ही कोई देता है । 'दैनिक अग्नि होत्र' संस्कार के अन्त मे या विधि आरम्भ होने से पूर्व करने मे कोई आपत्ति नहीं अपितु दैनिक अग्निहोत्र पद्धति के अनुष्ठ न करने का लाभ ही है । क्योंकि अग्निहोत्र आदि यज्ञ करने से अग्निहोत्र करने वाले व्यक्ति पर परमात्मा की कृपा भी होती है जैसा कि—ऋषि दयानन्द जी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे पञ्च महायज्ञ विषय प्रकरण मे लिखते हैं 'इस कारण अग्निहोत्र करने वाले मनुष्य को उस उपकार से अत्यन्त सुख का लाभ होता है और ईश्वर उन पर अनुग्रह करता है । ऐसे ऐसे लाभो के अर्थ अग्निहोत्र करना अवश्य उचित है ।

"अतस्तत् कर्म कर्तृणाम् जनानाम् तदुपकारेण—अत्यन्त सुखम् ईश्वरानुग्रहश्चैव भवत्येतदाद्यर्थम्—अग्नि होत्र करणम् ।"

इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी का कर्मकाण्ड के प्रति बहु विशाल दृष्टिकोण था वे कर्मकाण्ड रूपी यूप मे बंधे हुए समाज को सुरक्षित एव मर्यादित समझते थे अन्यथा समाज विश्रृंखलित होकर पथ भ्रष्ट हो जायगा । जो—जो स्थल उनको आपत्ति जनक प्रतीत हुए उनका उन्होंने बहिष्कार कर दिया था, अन्यथा प्राय. हमारी तथा—पौराणिक संस्कार प्रक्रिया मे कोई विशेष भेद नहीं । नव ग्रह पूजनादि को छोड़कर उपनयन एव विवाह संस्कार तो प्राय सर्वथा समान ही हैं, इसलिए ऋषि दयानन्द जी का दृष्टि कोण हमे बड़ी गम्भीरता से समझना एव विचारना चाहिए । 'इङ्गितेन चेष्टितेन निमिषितेन महता वा सूत्र निबन्धनेन आचार्याणा अभिप्रायो लक्ष्यते ।।

श्री नारायणदत्त तिवारी

(पृष्ठ ५ का शेष)

वनिक ा लक्ष्य से स्पष्ट होती है, जिसमें आपने यह घोषणा की कि सरकार की पहल को व्यापकतम आधार देने के लिये वह प्रतिपक्ष से सतत विचार-विमर्श करते रहेंगे।

श्री तिवारी का पूर्ण रूपेण धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण उनके राजनीतिक विश्वासों के स्रोत में विद्यमान समाजवादी विचारधारा का परिणाम है। जनता से सम्पर्क में आपके द्वार औपचारिकता तथा सुरक्षा के प्रबन्धों की परवाह न करना, जनता और विशेषतः कमजोर वर्गों के प्रति आपके समर्पण का परिचायक है। कुछ दिन पूर्व श्री तिवारी के शपथ ग्रहण के पश्चात् मुझे उनके साथ लखनऊ के मुख्य मार्गों पर यात्रा करने का अवसर मिला था, इस यात्रा के दौरान अनेक बार उन्होंने वाहन रुकवाया ताकि सड़क पर चलने वाले आम लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं और आकांक्षाओं की उनको जानकारी हो सकती। इस प्रकार के जन समर्थन को देखते हुए मुझे लेश मात्र भी सन्देह नहीं है कि श्री तिवारी न केवल वर्तमान चुनौतियों का मुकाबला कर सकेंगे, वरन् उनको परास्त करने में भी सफल होंगे।

*

विवस्वत् वेद मन्दिर शिवपुर, निकट घघसरा बाजार, में योग साधना शिविर

तपोनिष्ठ स्वर्गीय महात्मा वेदव्रतानन्द जी महाराज की पावन जन्मभूमि शिवपुर ग्राम में उन द्वारा संस्थापित आश्रम विवस्वत् वेद मन्दिर में दश दिवसीय साधना शिविर का अनुष्ठान कराया जा रहा है। इस साधना शिविर का मुख्य उद्देश्य होगा कि मानव जाति को सुख शान्ति और आनन्द के वास्तविक धरातल पर खड़ा किया जाय। भोगवाद के विविध रोगों से पर्यस्त मानव समाज को किञ्चित शान्ति जल से सिञ्चित किया जाय। भौतिक समाजवाद की भीषण आंधी से तृषित आत्म पिपासुओं की अध्यात्म पिपासा को दूर करने का यह किञ्चित प्रयास है। प्रशिक्षण शिविर में अन्तरङ्ग योग एवं बहिरङ्ग योग दोनों ही का अनुष्ठान कराया जायेगा।

डा० विनय प्रताप आर्य, उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
(महामन्त्री विवस्वत् वेद मन्दिर शिवपुर)

वेद प्रचार सप्ताह तथा श्रावणी पर्व

निम्न आर्य समाजों में वेदप्रचार सप्ताह, श्रावणी पर्व जन्माष्टमी एवं समता दिवस धूमधाम से मनाया गया।

आर्य समाज बदरपुर मुरादाबाद	आर्य समाज जगतपुर बरेली
,, बिहारीपुर बरेली	,, आगरानगर आगरा
,, एटा	,, नेपियर टाउन, जबलपुर
,, राजाबाजार बड़हरा (देवरिया)	,, भुवनेश्वर (उड़ीसा)
,, मवाना (मेरठ)	,, ताजगंज आगरा
,, वृन्दावन मथुरा	,, मेरापुर फर्रुखाबाद
,, बिसवां सीतापुर	,, डाकपत्थर देहरादून
,, नगरिया खाता रामपुर आदि	,, छावनी औरंगाबाद मध्य प्रदेश

जिला सभा जनपद गोण्डा का महत्वपूर्ण प्रस्ताव

दिनांक २४-७-८८ को जिला सभा गोण्डा की बैठक श्री वी० एस० महरोत्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उक्त अवसर पर स्त्री आर्य समाज गोण्डा की बिगड़ती हुई दशा पर गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श किया गया, तथा भवन निर्माण कार्य हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत हुए सभा में निर्णय लिया की अगली बैठक आर्य समाज नवाबगंज [गोण्डा] में दिनांक २५-९-८८ को बुलाई जाय।

सभा ने यह भी निर्णय लिया कि धर्मान्तरण को रोकने हेतु पूर्व निश्चयानुसार धर्म रक्षा सम्मेलन का आयोजन डी० ए० वी० इन्टर कालेज बलरामपुर [गोण्डा] में वृहद रूप से आयोजित किया जाय। श्री बलराम गोविन्द अधीक्षक विवाह एवं भू-सम्पत्ति विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से इसे सफल बनाने हेतु पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाय। आर्य समाज उतरौला में दि० १-६-८८ को हुये अधिवेशन में जो प्रस्ताव पारित हुए हैं उनको कार्यान्वित करने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाय।

—बलराम गोविन्द अधीक्षक

शोक समाचार

आर्य समाज नगरिया खाता पो० मिलक जनपद रामपुर के प्रधान जी का दिनांक ५-८-८८ को निधन हो गया। उनका जीवन कर्मठ आर्य जीवन था वे सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में लगे रहे। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है। सभा मन्त्री

मुस्लिम युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक १९-८-८८ को आर्य समाज बलरामपुर (गोण्डा) में श्री आनन्द उपमन्यु मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा के विशेष सहयोग से एक मुस्लिम युवती नूरनिशा ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया उसका नाम नूरुन निशा से बदल कर कमला देवी रखा गया। इनका शुभ विवाह संस्कार श्री सन्तू आर्य के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह ने अपना आशीर्वाद वर और वधू को प्रदान किया।

आर्य समाज हरदोई का १०२ वाँ वार्षिकोत्सव

सदैव की भाँति १८, १९ तथा २० अक्तूबर, १९८८ ई० को आर्य कन्या इण्टर कालेज, हरदोई के प्राङ्गण में उल्लास पूर्वक मनाया जायेगा।

उक्त उत्सव में आर्य जगत के प्रसिद्ध एवं प्रमुख संन्यासी, विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

निर्वाचन

आर्य समाज हरदोई

प्रधान—श्री रामदेव अग्निहोत्री एडवोकेट

मन्त्री—श्री नन्द किशोर अवस्थी कोषाध्यक्ष—श्री रामलाल गुप्त

प्रबन्ध समिति आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज हरदोई का भी निर्वाचन हुआ—

प्रधान—डा० ब्रजगोपाल गुप्त

प्रबन्धक—श्री रामेश्वर दयाल शुक्ल

कोषाध्यक्ष—ब्रजनारायण रस्तोगी

आर्य समाज गया

प्रधाना—श्रीमती शान्तिदेवी मन्त्री—श्री जगदम्बाप्रसाद एम.ए.

कोषाध्यक्ष—श्री मुन्शीप्रसाद

भरतपुर में वेदविज्ञान गोष्ठी

वेद विज्ञान शोध संस्थान भरतपुर के तत्वावधान में एक शोध गोष्ठी दि० १०,११ सितम्बर,को सम्पन्न हुई। इसका उद्घाटन जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० सतीशचन्द्र गोयल ने किया। गोष्ठी के चार सत्रों में डा० मनोहरलाल गुप्त ने वेद और विज्ञान के पारस्परिक सम्बन्ध का विश्लेषण किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा० भवानीलाल भारतीय ने स्वामी दयानन्द को वेद में विज्ञान के अस्तित्व की घोषणा करने वाला प्रथम वैदिक विद्वान् बताया। सगोष्ठी का सुचारु संचालन डा० ओम प्रकाश वेदालंकार ने किया तथा इसमें, दिल्ली, जयपुर, अजमेर, चण्डीगढ़ आदि के अनेक वेदज्ञों ने भाग लिया।

आवश्यक निवेदन

आर्य समाज जवाहर नगर लालकुर्ती मेरठ कैन्ट का शताब्दी समारोह दिनांक १४, १५, तथा १६ अक्टूबर को होने जा रहा है। इसकी तैयारियाँ तेजी से चल रही हैं। इस सन्दर्भ मे आपका तथा आपकी समाज का हर प्रकार का सहयोग अपेक्षित है। यह समस्त आर्य जगत् का प्रश्न है। इसकी सफलता आपकी सफलता है। अत आपसे निवेदन है कि आप कृपया (१) आर्थिक सहयोग (२) कार्यकर्ताओं और स्वयम सेवकों का सहयोग देने की कृपा करें।

प्र० च० अग्रवाल स्वागत मन्त्री

शताब्दी समारोह समिति, आर्य समाज जवाहर नगर

उत्सव

वेदवाणी प्रसार संस्था ग्राम आर्य नगर शाहजहाँपुर में श्रावणी पर्व बड़े ही हर्षोल्लास एव बृहद यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे संस्था के सभी कार्यकर्ताओ एव.सदस्यो ने भाग लिया।

–गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू (सैनी) इलाहाबाद का ३० वां वार्षिकोत्सव दि० ७,८ व ९ अक्तूबर १९८८ को सोल्लास सम्पन्न होगा जिसमे उच्चकोटि के विद्वान महात्मा भजनोपदेशक एवं नेता गण पधारेंगे।

५ से ९ अक्तूबर से युवाओं का आर्यवीर दल संध्या प्रशिक्षण शिविर जिसमे सैनिक शिक्षा, योगासन, धनुर्विद्या प्रदर्शन तथा सुसंस्कारो की दीक्षा दी जायेगी। ५ से ९ अक्तूबर से प्रातः सायं सामवेद महापारायण यज्ञ। दि० ७ अक्टूबर को अपराह्न २ बजे शोभा यात्रा। दि० ८ अक्तूबर को शिक्षा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन अपराह्न १ बजे। ९ अक्तूबर प्रातः पूर्णाहुति महिला सम्मेलन एवं आर्य महा सम्मेलन।

–कुलपति विश्वामित्र मेधावी विद्यावागीश

आर्य समाज लालकुर्ती का वेद प्रचार सप्ताह

आर्य स्त्री समाज, जवाहरनगर (लालकुर्ती) मेरठ के तत्वावधान में २७ अगस्त से ३ सितम्बर १९८८ तक 'वेदप्रचार सप्ताह' हर्षोल्लास से मनाया गया इस शृंखला मे पारिवारिक–यज्ञ, भजन व वेद व्याख्या आदि का आयोजन किया गया।

१ सितम्बर को श्रीमती वीना गोस्वामी, छोटा बाजार व २ सितम्बर को श्रीमती उर्मिला गुप्ता, पृथ्वीराज पुरी के निवास पर अपराह्न ३ से ५ बजे तक पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया।

आर्य समाज की ३ सितम्बर की प्रातः योगीराज भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव सामूहिक रूप से मनाया गया।

आर्य शिक्षा समिति आर्यसमाज भवन मठपारा दुर्ग (म० प्र०) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय मठपारा दुर्ग का वार्षिकोत्सव श्री गुलाबचन्द जी बंसल वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ की अध्यक्षता में दि० १-९-८८ को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी श्री वास्तव उप प्रधान श्री मोहनलाल गुप्ता भिलाई एवं श्री राजाराम तिवारी छिंदवाड़ा उपस्थित थे। बाहर से पधारे स्वामी श्री सत्यानन्द जी हरिद्वार एवं वेद मार्ग अजमेर के सम्पादक श्री मदन मोहन शास्त्री भी उपस्थित थे।

श्री गुलाबचन्द जी बंसल ने स्वागत भाषण दिया, पूर्व माध्यमिक-शाला की प्रधान पाठिका श्रीमती निर्मल क्षेत्रपाल ने शाला का प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया प्राथमिक शाला की प्रधान पाठिका सुश्री सन्तोष गुप्ता ने शाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रस्तुती करण पर प्रकाश डाला एवं शाला की सहायक प्रधान पाठिका श्रीमती अंजना देवी शास्त्री ने आभार प्रदर्शन किया।

शाला के बच्चो द्वारा प्रस्तुत गीत, संगीत, नृत्य, एकांकी आदि कार्यक्रमो की सभी दर्शकों ने अत्यन्त प्रशंसा की, मुख्यकर एकांकी 'सती प्रथा पर बच्चों द्वारा जो व्यग्य प्रस्तुत किया जिसको देखकर सभी दर्शकों ने भूरि–२ प्रशंसा की।

वेद प्रचार सप्ताह

निम्न आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं में वेदप्रचार सप्ताह श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं समता दिवस बड़े समारोह के साथ मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

आ० स० भगवानपुर जनपद सहारनपुर, आ० स० जमानिया जनपद गाजीपुर, आ० स० औरंगाबाद, (महाराष्ट्र), आ० स० सुल्तानगंज (हैदराबाद), आ० स० फतेहाबाद (आगरा), आ० स० सासनीद्वार (हाथरस), आ० स० लार टाउन (देवरिया), आ० स० स्टेशन रोड मुरादाबाद, आ० स० जवाहरलाल रोड, बिरनो (पोखर) मुजफ्फरपुर आ० स० सावली आदि पदपुरी (गढ़वाल), आ० स० काकडवाड़ी (बम्बई) आ० स० मठपारा दुर्ग (मध्य प्रदेश) आ० स० रहमतगंज (रामपुर) आ० स० भरथना (इटावा) आ० स० महराजपुर, छतरपुर (मध्य प्रदेश) जिला आ० सभा चम्पारन (बिहार) आ० स० खरसरा बलिया (उ०प्र०) नगर आ०स० रामपुरा कोटा (राजस्थान) आ० स० बालोतरा (राजस्थान) आ० स० मन्दिर समालखा (हरियाणा) आ० स० मिर्जापुर [उ० प्र०] आ० स० कालपी जालौन [उ० प्र०]।

निर्वाचन

(लालकुर्ती) मेरठ कैंट

गोदावरी देवी ट्रस्ट मेरठ

प्रधान–श्री मनोहर लाल जी

मन्त्री–श्री इन्द्रराज जी

कोषाध्यक्ष–श्री ओ३म् प्रकाश जी जोहरी

आ० स० मलाही जिला चम्पारन बिहार

प्रधान–श्री वैद्यनाथ प्रसाद आर्य मन्त्री–श्री दिनेशप्रसाद आर्य

कोषाध्यक्ष–श्री जवाहर प्रसाद

शिष्टमण्डल कुलपति से मिला

इस सभा के नियन्त्रण में संचालित गुरुकुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, जिला मैनपुरी में हो रही सभा विरोधी धोखाधड़ी तथा जालसाजी के प्रकरण को लेकर उसकी जांच कराने हेतु, इस सभा के आदेश पर, इस सभा की ओर से उसके मुख्य निरीक्षक पं० भूपपाल सिंह जी 'अ ल', मुख्य निरीक्षिका श्रीमती डा० आशारानी जी तथा मुख्य अधिष्ठाता (भू सम्पत्ति) श्री वेद प्रकाश जी एक शिष्टमण्डल के रूप में, संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के माननीय कुलपति व कुल सचिव से पृथक् पृथक दि० १८-९ ८८ को, मिले। दोनों अधिकारियों ने प्रकरण को बड़ी गम्भीरता और तन्मयता से सुना और तत्काल जांच कार्यवाही प्रारम्भ की समयाभाव के कारण शिष्टमण्डल के समक्ष उस दिन जांच पूरी न हो सकी। अतः उक्त अधिकारियों ने ... व जांच हेतु शिष्टमण्डल को पुनः आमन्त्रित करते हुए सर्वथा न्याय देने का आश्वासन दिया।

—विश्वम्भरदयाल गुप्त

'आर्यमित्र' के पाठकों को सूचना

कागज तथा छपाई आदि के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाने के कारण हमने 'आर्यमित्र' का वार्षिक मूल्य सभा के निश्चयानुसार १ जुलाई १९८८ से २५) रु० वार्षिक के स्थान पर ३०) रु० वार्षिक कर दिया है।

आशा है पाठकों का सहयोग यथापूर्व प्राप्त होता रहेगा।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अगस्त १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर ३०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क ३०) रु० हो गया है।

५६६, ६१८, ९५३, २१४५, ३०५०, ३७८०, ५२६५, ५३०१, ५३०९, ५५००, ५९३६, ६२०१, ६४९७, ६७८१, ६८३८, ८०९१, ८३३५, ८३८८, ८४२८, ८६४०, ८६६५, ९५००, ९५०१, ९५०६, ९९६९, ११२३३, ११२४९, ११२५२, ११६९४, ११९७१, ११९७३, ११९७८, १२३६४, १२३६५, १२७०९, १२७१०, १२७१२, १२७१८, १२९४६, १२९४९, १३१८१, १३१९१, १३५११, १३५०८, १३५४०, १३५४४, १३५५०, १३५६४, १३५६६, १३५७०, १३५७३, १३५७८, १३५७९, १३५८०, १३९५३, १३९५६, १३९५७, १३९५८, १३९५९, १३९६५, १३९७९, १४३२४, १४३२५, १४३२६, १४३२७, १४३२८, १४३३०, १४३३१, १४३३२, १४३३३, १४३३४, १४३३५, ..-३६, १४३३८।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवप्रकाशित आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एम०पी० प्रिन्टर्स (विश्वमुद्रण लिमिटेड) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयालगुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-७

आश्विन कृष्ण ७, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक २ अक्टूबर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

वेद ही क्यों ?

[illegible]

[illegible] वैदिक विज्ञान

तथा सार सूचनायें

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सहायक सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष ८१

अङ्क १६

आप्तवचन—

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।

यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

ऋग्वेद १०–१२१ ४

यह शक्तिशाली दिशाएं जिसकी भुजाएं हैं। समुद्र जिसकी महिमा का यशोगान कर रहा है, जिसने अपनी महिमा और पराक्रम से पहाड़ समुद्र और नदियों को उत्पन्न किया है, उस सुखस्वरूप परमात्मा की हम विशेष रूप से भक्ति किया करें। इस ऋचा के अनुसार महान पुरुषों ने अपने विद्याबल, तपोबल और बुद्धिबल से इस [illegible] मनुष्य के कल्याण व निमित्त आप्तोपदेश किये हैं—

सृष्टि के आदिकाल में महाराज मनु ने कहा था :

"धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"

जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है।

द्वापर युग के अन्त में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था :

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः"—अपने धर्म का पालन करते-करते ही मर जाना श्रेयस्कर है।

इस युग के महान तत्ववेत्ता ऋषिवर दयानन्द ने कहा था :

वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है, उसका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

और वर्त्तमान युग के ही महान सन्त महात्मा गांधी ने कहा था :

विदेशी मिशनरी न तो भारत की सेवा कर सकते हैं और न सेवा भाव से यहां आये ही हैं। वे कालेजों और अस्पतालों के माध्यम से ईसाई मत का प्रचार करते हैं। जितनी जल्दी वे देश छोड़कर चले जांय उतना ही अच्छा है। मेरे देश और प्राचीन सभ्यता को विदेशी मत की कतई आवश्यकता नहीं है। हमारी संस्कृति प्रत्येक प्रकार से पूर्ण है।

* * *

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी॥

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—आश्विन कृष्ण ७ संवत् २०४५, रविवार २ अक्टूबर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

विश्व का आर्यकरण

★ ★ ★

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक परमकारुणिक उस सर्वेश्वर ने हम आर्यों को एक परम उत्तरदायित्व सौंपा है—"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्…" विश्व को आर्य बनाये रखना… …आर्य बनाते रहना …… आर्य बनाते हुए समृद्धि पथ पर बढ़ना, तुम्हारा हर सुमन आर्यत्व से भरा हो, हर आने वाला जीवन्त पल आर्यत्व का प्रतीक हो, हर सुमन आर्य प्रसून हो, धरा का हर कोना आर्य प्रसूनों से पल्लवित और पुष्पित हो। और सचमुच हमारे मनीषियों, ऋषियों, मुनियों और वैदिक पथ के अनुयायी उन सच्चे सन्देशवाहकों ने लाखों लाख वर्ष तक इस धरा को पावन आर्य संस्कृति से ओतप्रोत बनाए रखा। इसके किसी कोने में, किसी वातावरण में, किसी काल में अनार्यत्व का प्रवेश नहीं होने दिया यह कोई कम गौरव की बात नहीं है क्योंकि आर्य बनना और बनाना दोनों छुरे की धार के समान तीक्ष्ण और दुरूह हैं। सृष्टि के आदिकाल से चले आ रहे हमारे बलिदानों की अबाध शृंखला ने और हमारी शिक्षाओं ने आसुरी वृत्तियों का चाहे वह मनुष्य रूप में किसी काल में किसी युग में उभरी हों और चाहे मनोविकारों के रूप में मन में उभर रही हों, दमन किया और अपने आर्यत्व का वर्चस्व विश्व के क्षितिज पर यथावत् जैसा वह चाहता है… आज तक बनाए रखा है। हमारा वह अतीत सूर्य की किरणों के समान आज भी उतना ही पावन प्रखर और जाज्वल्यमान है और हम उसके असीम आशीर्वाद के पात्र सदा रहे हैं और सदा रहेंगे। "शृण्वन्तु विश्वे देवाः अमृतस्य पुत्राः वयम्" दुनियां के लोगो सुनो, हम अमृतपुत्र हैं हमने कभी हार नहीं मानी है।

दुर्भाग्य से हम प्रमाद और स्वार्थ के कारण महाभारत का टकराव कर बैठे जिसका परिणाम यह हुआ कि मध्ययुग में हमारी विद्वत्ता अहम्मन्यता में बदल गई, ब्रह्म तेज जातीय अभिमान में डूब गया, क्षात्र शक्ति पररक्षण के स्थान पर परपीडनार्थ व्यय होने लगी, पाखण्ड बढ़ा और बहुदेवतावाद ने समाज में अनेकों कुरीतियों और मत-मतान्तरों को जन्म दे दिया और हमारे आर्यकरण की प्रगति में शिथिलता आ गई। हमारा शासक क्षत्रिय वर्ग क्षमा और अहिंसा की वैदिक भावना और उसके वास्तविक अर्थ को ही भूल गया। जिसने भी क्षमा मांगी………क्षमा। दुष्ट को भी क्षमा आततायी को भी क्षमा। परिणामतः हम पराजित होते गये और अहिंसक बनकर तलवार का मुकाबला तलवार से करने में कतराने लगे। और आज हालत यह है कि हमारे अपने ही खून के कतरे हमसे अलग हैं, अलग होना चाहते हैं और हमें मिटाने के लिए क्या-क्या नहीं सोच रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वृहदधिवेशन

दि० १२, १३ नवम्बर

सन् १९८८ को

डी० ए० वी० कालेज,

लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१—सभा में चित्र प्राप्ति की अन्तिम तिथि	१०–१०–८८
२ चित्रों की जांच	११–१० ८८ से १५–१०–८८ तक
३—मतदाता सूची का प्रकाशन	१८–१०–८८
४—आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	२०–१०–८८
५—आपत्ति का निवारण	२१–१०–८८ से २४–१०–८८ तक
६—शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२५–१०–८८
७—वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१२–११–८८ एवं १३–११–८८
८ चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
दिनांक १२–९–८८] नारायणस्वामी–भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–१

इसलिए आर्यसमाज प्रभु के उस दिव्य सन्देश को पुनः आर्य जाति को स्मरण कराना चाहता है—"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"। हमें विश्व का आर्यकरण करना है। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं अपने कर-कमलों से एक यवन को शुद्ध करके अलखधारी नाम दिया था। यदि प्रदेश की प्रत्येक आर्यसमाज विश्व के आर्यकरण के कार्य में तत्परता से जुट जाये तो वह दिन दूर नहीं जब हम समस्त विश्व को पावन आर्य संस्कृति के विचारों से ओत प्रोत कर देंगे। ★

हिन्दी दिवस

आर्यसमाज (रजिस्टर्ड) शाहजहांपुर में आज दिनांक १४-९ ८८ को हिन्दी दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

आर्यसमाज का हिन्दी सम्वर्धन में योगदान का व्याख्याताओं ने उल्लेख करते हुए शासन द्वारा हिन्दी के प्रति की जा रही उपेक्षा की घोर निन्दा की। उपस्थित समस्त जनता ने हिन्दी को उचित तथा सम्मानजनक स्थान दिलाने का व्रत लिया तथा अपने दैनिक जीवन में उसके व्यवहार का संकल्प लिया।

अध्यात्म सुधा

वेद ही क्यों ?

[श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश]

सारा संसार गतिशील है। वह गति भी नियम में बंधी हुई है। जहाँ जीवन है वहाँ गति है। अनेकानेक योनियों में जीवन पाया जाता है। भूमि पर रहने वाले, जल में रहने वाले और आकाश में रहने वाले प्राणी निरन्तर गतिमान हैं। दो प्रकार का जगत् दृष्टिगोचर होता है। जड़ जगत् और चेतन जगत्। जड़ जगत् में नियम पूर्वक गति हो रही है। हमारी पृथ्वी तथा चन्द्रमा ये ग्रह और उपग्रह सब नियमपूर्वक चल रहे हैं। चेतन जगत् में भी सूक्ष्मता से देखने पर नियम दृष्टिगोचर होता है। पृथक् पृथक् योनियों के पृथक्-पृथक् नियम हैं। मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना गया है। यदि मनुष्य को चलना है तो उसके लिए नियम संहिता की आवश्यकता है। यदि परिवार को चलाना है तो उसके लिए नियम संहिता पहले से कुछ पृथक् और बड़ी होगी। यदि देश को चलाना है तो इसका संविधान बनाना पड़ेगा। वह पूर्व से कुछ पृथक् और बड़ा होगा। यदि सारे संसार को और सारी मानव जाति को गति करनी है तो उसका भी एक विधान-नियम और संहिता होगी। और यदि समस्त वस्तुओं की गतिविधियों को इसमें सम्मिलित कर लिया जाए तो एक बहुत बड़ी नियमावली और संहिता की आवश्यकता है। जहाँ नियम में चलने वाले जड़, चेतन जगत् के पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं, वहां नियम है और जहाँ नियम है वहाँ पर नियामक की भी अनिवार्यता है। आस्तिक जगत् में इसे ही जड़ सृष्टि अर्थात् प्रकृति, चेतन सृष्टि अर्थात् जीवात्मा। नियम-आचार संहिता अर्थात् वेद और नियामक अर्थात् इन सब जड़ पदार्थों को नियम में चलाने वाला तथा चेतनात्मा के कर्मों का फल प्रदाता 'ईश्वर' कहा जाता है। वेद में भी लिखा है कि वह प्राणि और जड़ जगत् का एकमात्र राजा है शासक है, शासनकर्त्ता है (यः प्राणतो निमिषितो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव (यजु० २३-३)

संसार में जो बड़े-बड़े सम्प्रदाय हैं 'मुसलमान' और 'ईसाई' वे अपनी-अपनी धर्म पुस्तक को खुदाई किताब मानते हैं। कुराने मजीद और बाईबिल को खुदाई किताब माना जाता है परन्तु सारे संसार अर्थात् जड़ जगत् और चेतनजगत् की सब बातों का समाधान इनके द्वारा सम्भव नहीं है। इसलिए ये दोनों पुस्तकें ईश्वर का संविधान नहीं हो सकतीं। इन पुस्तकों में प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों के विरुद्ध, प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध बातें पाई जाती हैं। इसलिये वे पुस्तकें कभी भी ईश्वरीय पुस्तक नहीं हो सकती जो प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध हैं। हां यदि वेदों को देखें तो इसमें व्यक्ति, परिवार, समाज और प्राणिमात्र के कल्याण के लिए नियम पाए जाते हैं। सारे संसार के लिए जिस संहिता की आवश्यकता है वह केवल मात्र वेद ही हैं। और वेदों में वे नियम पाए जाते हैं जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। जो इहलोक और परलोक की समस्याओं का समाधान करते हैं। धर्म भी वह है जिससे यह लोक और परलोक बने। (यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" (वैशेषिक अ० १ / पा० / सू० २)।

सर्व प्रथम हम इस लोक को देखते हैं। यह लोक बहुत बड़ा है। हमारा सौर मण्डल ही बहुत बड़ा है और इस ब्रह्माण्ड में न जाने कितने सौर मण्डल हैं और हमारे सौर मण्डल से कितने बड़े हैं। परन्तु यदि हम अपनी सम्पूर्ण धरती की बात सोचें तो मनुष्य पशु पक्षी, कीट, पतंग, जलचर, भूचर और नभचर ये सब गिनती से परे हैं। वह नियामक ईश्वर समस्त चर और अचर जगत का राजा है। वह शासनाधिपति है। वह सब पर शासन करता है। (य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः (यजु० २३-४)।

वह संविधान भी उसका जो परमेश्वर समस्त जड़ चेतनो पर शासन करता है जहाँ संविधान राज्य स्थापित होने के समय से ही प्रकट होना और लागू होना बहुत आवश्यक है। उसे केवल १४०० वर्ष या २००० वर्ष पूर्व का कहा जाए तो वह युक्ति संगत और न्याय संगत नहीं होगा। वह सृष्टि के आरम्भ में ही अनिवार्य रूप से होना चाहिये। निःसन्देह वेद ही इस कोटि में आता है। स्वयं वेद में लिखा है कि उस यज्ञ रूप सच्चिदानन्दादि लक्षणों से परिपूर्ण परम पुरुष से ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद अर्थात् चारों वेद उत्पन्न हुये। (तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।)

(यजु० ३१-७)

सर्वप्रथम परम नियामक भगवान् ने संसार की उत्पत्ति के साथ ही वेद रूपी ज्ञान दे दिया ताकि हम लोग उस विधान को पढ़ें और उस पर ठीक ठीक आचरण करें ताकि हम कभी भी दण्ड के भागी न बनें।

वेदों का प्रश्न आते ही हम पर चारों तरफ से प्रहार होने लगता है। नास्तिक जगत तो कहता है कि वेदों की कोई आवश्यकता सृष्टि के आरम्भ में नहीं थी। मनुष्य पहले बन्दर था फिर विकास करते-करते वनमानुष बना, पुनः विकास करते-करते मनुष्य बना और उसने पशुओं और पक्षियों से धीरे-धीरे सीखा और कुछ विकसित होने के पश्चात् वेद का निर्माण हुआ होगा। यह एक आपत्ति नास्तिकों की है।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

महान व्यक्तित्व

★

मानतीय श्री मनमोहन तिवारी

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

को सादर भेंट

★ ★ ★

मधुर भाव अनुभव जीवन का बड़ा निराला।
नवल प्रबल व्यक्तित्व उदार उर बड़ा ही आला॥
मोहित होते हैं वे सब पड़े जिनसे पाला।
हन्त ! होए दुर्दन्त विरोधी मुख हो काला॥

समर्पणकर्त्ता—

रामप्रकाश 'सरस' शास्त्री डी०ए वी कालेज, राजनगर, गाजियाबाद

वेद ही क्यों ?

(पृष्ठ का शेष)

इसका उत्तर दिया गया कि परमात्मा ने पशु आदिको को स्वाभाविक ज्ञान दिया है और मनुष्यों को नैमित्तिक। पशु स्वभाव से ही अपने जीवन के अस्तित्व की सुरक्षा करने के लिए किसी से कुछ सीखता नहीं है अपितु उसे वह सहज भाव से प्राप्त है। परन्तु मनुष्य बिना सीखे जीवन के अस्तित्व को कायम नहीं रख सकता इसलिए उसको सिखाना और बताना बहुत आवश्यक है। जैसे कोई संस्कृत का प्रकाण्ड पण्डित बिना अंग्रेजी पढ़ अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं जान सकता। इसलिए मनुष्य को सृष्टि के प्रारम्भ में ही ज्ञान का मिलना बहुत आवश्यक है।

आस्तिक जगत् में भी वेद के विषय में कई भ्रान्तियां हैं। वेद कितने हैं ? वेदों को किसने बनाया। वेद नित्य हैं या अनित्य ? वेदों मे इतिहास है या नहीं ? और वेदों की इयत्ता ? आदि अनेकों प्रश्नों ने आस्तिक जगत को झकझोरा। इन प्रश्नों का समाधान प्राचीन भाष्यकारो के पास नहीं था। फिर पश्चिमी भाष्यकारों ने वेदो को गडरियो के गीत, प्रमत्त–प्रलाप आदि कहकर वेदों को बदनाम करने का प्रयत्न किया। आर्य हिन्दू जाति जो परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थीं, विदेशी भाष्यकारो का यह प्रयास रहा कि इस जाति को वेदों और वैदिक साहित्य से पृथक् कर दिया जाए ताकि ये अपने साहित्य को भूल जाएं विशेष रूप से उन वेदों की अमर वाणी को भूल जाएं ताकि निरन्तर परतन्त्र बने रहें और विदेशी इस जाति पर शासन करते रहे।

बहुत समय के पश्चात् परब्रह्म परमात्मा ने एक युगपुरुष को संसार में भेजा। वे थे मूलशंकर। बाद में वे स्वामी दयानन्द बने। सौभाग्य से एक दृष्टिहीन सन्यासी स्वामी विरजानन्द जी ने उनको मथुरा में एक विशेष अन्तर्दृष्टि प्रदान की और उनसे वेदो का प्रचार करने की प्रतिज्ञा करवाई। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों का उद्धार एवं प्रचार करना प्रारम्भ किया। और सृष्टि के आदि में प्रकट हुए उन वेदों के ज्ञान को जो विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियों के बादलों में विलुप्त हो गया था, उन बादलों को काट–छांट कर, उस पवित्र करने वाली वेद वाणी को पुनः पुनः जगत मे प्रकाशित किया। ऐसा लगता है जैसे अन्धकार में भटकते हुए मानवो को किसी ने प्रकाश दिया हो एवं प्यासे मानवों को जैसे किसी ने अमृत पिलाया हो।

महर्षि दयानन्द जी ने जिन वेदों का विचार मन्थन किया तथा उसका मक्खन निकाल कर जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत किया उस पर दृष्टिपात करने से ही पता चलता है कि इतने विशाल साहित्य के पूर्व से ही उपस्थित रहने पर आखिर वेदों को ही महर्षि ने क्यों चुना? इसका एक ही प्रत्युत्तर है कि प्राणिमात्र के कल्याण के लिए परम कारुणिक भगवान् ने सृष्टि के आदि मे जो वेदो का ज्ञान प्रदान किया उसका जन-जन तक पहुंचाना बहुत आवश्यक है ताकि प्रत्येक पिपासु वेदामृत का पान कर अमर हो सके और संसार में सुख, शान्ति और आनन्द का प्रचार और प्रसार हो सके।

महर्षि दयानन्द जी ने जो नवनीत वेदों में से निकाला उसका थोड़ा सा रसास्वादन बहुत ही हितकर होगा इस दृष्टि से इसका थोड़ा सा उल्लेख करना आवश्यक है।

सर्वप्रथम महर्षि ने वेदों के आधार पर बताया कि परमात्मा एक है और उसके बहुत से नाम हैं। उन्होंने वेद मन्त्र के द्वारा बताया "वह एक है परन्तु विद्वान लोग उसको बहुत सारे नामों से पुकारते हैं। उसको इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि के नाम से पुकारा जाता है। वह ही दिव्य सुपर्ण गरुत्मान् है। उसी अग्नि रूप प्रभु को यम और मातरिश्वा कहते हैं।" (इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः, अथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति, अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ (ऋ० १–१६ –१२) इस एक मन्त्र से ही ऐकेश्वरवाद की सिद्धि हो जाती है और बहुदेवतावाद का खण्डन। इसकी पुष्टि में अनेकों और वेद मन्त्र भी प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते है परन्तु इस लेख मे दिग्दर्शन मात्र का ही अभिप्राय है।

वेदों में अन्यत्र भगवान् के विराट् स्वरूप का वर्णन है जैसे अथर्व वेद मे लिखा है–"भूमि जिसका पैर है और अन्तरिक्ष उदर है, द्युलोक को जिसने अपना सिर बनाया है, उस महान् ब्रह्म को हमारा प्रणाम है। (यस्य भूमिः प्रमा अन्तरिक्षमुतोदरम्। दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ (अथर्व वेद १०–७–३२)

ऐसे ही अथर्व वेद में अन्यत्र लिखा है। "जो भूत और भविष्यत् सबका अधिष्ठाता है, जिसका अपना स्वरूप केवल प्रकाश और आनन्द है, उस महान ब्रह्म को हमारा प्रणाम है।" (यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति। स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ (अथर्व १०–८–१)। ऐसे अनेकों और मन्त्र है जिनसे भगवान् के विराट् स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है।

परमात्मा सर्वज्ञ है इसको भी स्पष्ट रूप से अथर्ववेद में इस प्रकार लिखा है–"जो मनुष्य बैठा है या चलता है, जो दूसरों को ठगता है, जो छिपकर कुछ काम करता है, जो दूसरों पर अत्याचार करता है और जो व्यक्ति मिलकर जो कुछ गुप्त मन्त्रणा करते हैं इन सबको तीसरा सर्वश्रेष्ठ वरुण राजा जानता है।" (यस्तिष्ठति, चरति, यश्च वञ्चति, यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्। द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा-तद्वेद वरुणस्तृतीयः ॥ (अथर्व ४–१६२)।

परमात्मा निराकार है यजुर्वेद में इसका स्पष्ट वर्णन है—"वह परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है, वह दीप्तिमान है, काया रहित है, व्रण रहित है, नसनाड़ियो से रहित है, वह परम शुद्ध है और पाप से बिंधा हुआ नहीं है, अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों शरीरों से रहित है, वह सर्वज्ञ है, मनीषी है, चारों तरफ विराजमान, स्वतन्त्र सत्ता वाला है उसने अपनी शाश्वत प्रजाओं को वेद रूपी याथातथ्य ज्ञान-प्रदान किया।" (स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपाप-विद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा-श्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ (यजु० ४०–८)।

इस मन्त्र से परमात्मा का स्वरूप स्पष्ट है। अन्य वेद मन्त्र भी हैं, जो उसका स्वरूप निराकार बताते हैं।

अच्छा सामाजिक प्राणी बनने के लिए वेदों में प्रार्थनाएं हैं जिन का थोड़ा सा दिग्दर्शन करवाया जाता है।

वेदों में लिखा है कि ऐ लोगो तुम परस्पर मिलकर सुसंगठित हो जाओ। जैसे अथर्ववेद में लिखा है–"तुम्हारी प्याऊ एक सी हो, अन्न का विभाजन साथ साथ हो, एक ही जुए में तुम्हें साथ-साथ जोड़ता

(शेष पृष्ठ ६ पर)

यज्ञ और वृष्टि–

यज्ञ एक शुद्ध वैदिक विज्ञान

[आचार्य वेदभूषण अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद–२७]

[गताङ्क से आगे]

यह बात ठीक है कि–मैथुन और नियोग के बिना सन्तान नहीं होती। पर यह धारणा उतनी ही गलत है कि–सन्तान प्राप्ति के लिये केवल मैथुन या नियोग ही पर्याप्त है।

कितने ही गृहस्थ मैथुन करते हैं पर सन्तानहीन ही रह जाते हैं। सन्तान मैथुन की क्रिया मात्रा से नहीं होती। वीर्य और आर्तव की पवित्रता या यूं कहें कि वीर्य और आर्तव का निर्दोष होना भी अनिवार्य है।

"वीर्य और आर्तव' को शुद्ध करने वाली इन्हें पुष्टि प्रदान करने वाली औषधियों के सेवन करने और उन्हीं के द्वारा यज्ञ करने से वीर्य और आर्तव पुष्ट व निर्दोष हो जाते हैं।

यहां पर प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि–केवल खिलाकर ही कार्य कर लिया जावे फिर यज्ञ किस लिए?

पुत्रेष्टि यज्ञ के लिये जो औषधि बनती है वह गाय के घृत में बनती है। निश्चय ही जिन पति पत्नी को सन्तान नहीं होती उसका कारण वीर्य अथवा आर्तव का पुष्ट न होना ही मुख्य है। पुष्टि आहार से व उसके ठीक–२ पाचन से ही होती है। अतः इसमें मुख्यतः पाचन दोष ही कारण होता है। पाचन यन्त्र खाये हुए पदार्थ को पूर्णतः ग्रहण नहीं कर पाता ऐसी स्थिति में उन औषधियों से युक्त घृत को अग्नि में भस्म कर उस सूक्ष्म गैस को श्वास द्वारा रक्त में पहुंचाया जाता है। इस प्रकार यज्ञ से सन्तान की प्राप्ति होती है।

यदि सन्तान न होने का कारण गर्भाशय का अविकसित रह जाना है तो जब तक उसका विकास न हो सकेगा तब तक लाख यज्ञ करने पर भी लाभ नहीं होगा।

आज के चिकित्सा विज्ञान में इन्जेक्शन या सूचिका भेद का जो प्रचलन है वह एक प्रकार से यज्ञ की ही अनुकृति मात्र है। पर इन्जेक्शन द्वारा जो औषधि रक्त में डाली जाती है वह उतनी प्रभावशाली नहीं होती जितनी भी अग्नि में गाय के घृत के साथ जलाकर सूक्ष्म बना फेफड़ों माध्यम से रक्त में घोली जाने वाली औषधि।

जैसे मानव का यह लघु देह है वैसे ही परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड एक विराट् देह है। जैसे देह के विकारों को हम इन्जेक्शन द्वारा उसम अनुकूल औषधियों को रक्त में घोल देते हैं वैसे ही यह अग्निहोत्र ब्रह्माण्ड में इन्जेक्शन की तरह कार्य करता है।

आधुनिक विज्ञान लघु पिण्ड पर ही प्रभाव डाल पाता है अतः यह लघु विज्ञान है और यज्ञ अपने आप में विराट् है। विराट् शब्द यज्ञ का विशेषण है। महा शब्द भी विराट् का पर्यायवाची है। "पंचमहायज्ञ" इसमें प्रयुक्त महा शब्द विराट् का ही द्योतक है।

काश आज के भौतिक विज्ञानी यज्ञ के सूक्ष्म किन्तु महान् प्रभाव को समझ लें।

आज विश्व की सर्वाधिक ज्वलन्त व प्रमुख समस्या प्रदूषण ही तो है। यह समस्या इतना प्रचण्ड रूप ग्रहण करती जा रही है कि–कुछ वर्षों के बाद तो इस प्रदूषित वातावरण में मानव का जिन्दा रहना क्या प्राणीमात्र का जीवित रह पाना दूभर हो जायेगा।

ऐसे समय में हमें यज्ञ के प्रचार के लिए पूर्ण यत्न करना चाहिए। क्योंकि–यज्ञ विद्या उन समस्त वैज्ञानिक अविष्कारों सर्वश्रेष्ठ आविष्कार है जिसका मुकाबला किसी भी अविष्कार से करना भी हास्यास्पद सा लगता है। आज के सब अविष्कार "पागू" तेली जैसे क्षुद्र है और यज्ञ राजा भोज के समान विराट् व सूक्ष्म है। हमारे इस लेख का उद्देश्य स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज का विरोध नहीं अपितु आधुनिक विज्ञान के आधार पर उठाए गये प्रश्नों का निराकरण करना मात्र है जिससे यज्ञ का सत्य-सत्य प्रकाश हो सके।

सौभाग्य से हमारे स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग में ही जन्मे हैं। प्रयाग शब्द ही हमारे यज्ञ के प्राचीन कालीन महत्व का स्मारक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती हमारे लिए व समस्त वैदिक विद्वानों के लिये व संन्यासियों के लिए मान्य व्यक्ति हैं।

यदि महर्षि के यजुर्वेद भाष्य व ऋग्वेद भाष्य के अनेक स्थलों को ध्यान पूर्वक पढ़ें तो यह बात इतनी स्पष्ट और पुष्ट हो जाती है कि–यज्ञ से वर्षा की प्राप्ति अवश्य होती किन्तु उसे विधि विधान व विज्ञान के अनुरूप ही किया जावे।

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज व पं० सत्यकाम जी ने मिलकर अंग्रेजी में वेद भाष्य किये हैं मैं समझ रहा था कि वे भाष्य महर्षि के वेदभाष्य के अनुरूप ही उन्हीं के आधार पर किये जा रहे हैं यदि ऐसा नहीं हुआ है तो वेदों के वास्तविक रहस्य पश्चिमी देशों में पहुंच नहीं पावेंगे। मेरा आग्रह महर्षि दयानन्द सरस्वती के सारपूर्ण वेदभाष्यों का अंग्रेजी में अनुवाद ही वेदों के सूक्ष्म विज्ञान व रहस्य को खोल पायेगा।

महर्षि दयानन्द और वैदिक विज्ञान के आधार पर हमारा यह दृढ़ मत है कि–यज्ञ द्वारा ज्वलन्त समस्या प्रदूषण का निदान व ऋतुचक्र की अनुकूलता व जड़ वेदों की पवित्रता तथा मनुष्य के दैहिक मानसिक रोगों की निवृत्ति के फल निश्चय पूर्वक प्राप्त किये जा सकते हैं यज्ञ से वर्षा सन्तान प्राप्ति निश्चय से सम्भव है। अनेक प्रकार दैवी बाधाओं और विनाश से भी मनुष्य से भी मनुष्य बच सकता है। महामारियों को नष्ट कर सकता है।

यज्ञ अत्यन्त सूक्ष्म विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है। अतः यज्ञ को निर्भ्रांत होकर स्वीकार करना अत्यन्त उपयोगी। ढोंग, पाखण्ड, ठगी तो आधुनिक विज्ञान द्वारा भी हो सकती है। इसका विरोध पृथक बात है और आवश्यक व उपयोगी भी है।

यदि स्वामी जी महाराज गृहस्थाश्रम नित्य यज्ञ करते रहे हैं तो फिर यज्ञ के वर्षा जैसे साधारण परिणामों के प्रति अनास्था क्यों अभी हम समझ नहीं पा रहे।

यज्ञ को विज्ञान का आधार कहा जाना चाहिए। प्राचीन ऋषियों

[शेष पृष्ठ १० पर]

आओ सत्संग में चलें--

"बलिवैश्व देवयज्ञ"

(वैद्य कृष्णलाल आर्य ५४९/१९२ अर्जुन नगर, लखनऊ-५)

[गताङ्क से आगे]

बलि वैश्व देव एक प्रकार की परीक्षा है–हमने ब्रह्म यज्ञ स्वाध्याय किया देव यज्ञ हवन भी किया– स्वाहा कह कर आहुति दी–इदं न मम भी कहा–स्विष्ट कृत आहुति भी दी–इन दो यज्ञों में जो शिक्षा प्राप्त की–उसी की परीक्षा पितृ यज्ञ–अतिथि यज्ञ और बलि वैश्व देव यज्ञ में देनी होती है।

अपने श्रम से अर्जित पदार्थों से भोजन बनाया गया–यह प्रभु की कृपा है– उस प्रभु का धन्यवाद करो। प्रभु का आदेश है–"केवलाघो भवति केवलादी" प्रभु कहता है अकेले नहीं खाओ–और यह अभ्यास प्रतिदिन करो। मनुष्य अपनी थाली का भोजन दूसरे के मुंह में भी डालो देवता बन जाओगे। दूसरे की थाली का भोजन छीन कर राक्षस मत बनना–राक्षस का अर्थ पापी और चोर है–जो मम उपासक है–आज राष्ट्र मम का उपासक बनकर नष्ट भ्रष्ट हो रहा है। यज्ञ की भावना इदं न मम ही सिखाती है तभी राष्ट्र का निर्माण और प्रजा सुखी होगी।

वेद कहता है–भोजन करने से पूर्व बाहर देखो–साधु-संन्यासी ब्रह्मचारी–अतिथि–गाय–कुत्ता–कौआ–भिखारी–रोगी-इन को पहले दो इनको एक दिन ही देके देखो–फिर यह अपने समय पर स्वयं ही आ जाया करते हैं। मनुष्य की घड़ी फेल हो सकती है–परन्तु यह सब ठीक समय और स्थान पर आ जावेंगे। यह तो पशु हैं–केवल देखते हैं–परन्तु मनुष्य तू देखते हुए भी नही देखता। बलि वैश्व देव सिखाता है–"यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति–सर्वं भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति" (वेद) विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गावे हस्तिनि–शुनि चैवश्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः (गीता) सब प्राणियो को आत्मवत् देखो– यही महानता है–यही देवत्व है "आत्म वत सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः॥

मनुष्य जरा विचार कर यह सब प्राणी तेरे द्वार पर क्यों आते हैं–इन से तेरा क्या रिश्ता–सम्बन्ध है हमारी संस्कृति और सभ्यता पुकार कर कहती है तू ने अपने खून के रिश्ते दारों को खिलाया–तो क्या खिलाया–बिना रिश्ते के खिलाओ–तो मजा आ जाये–बन्धुओं–इसी का नाम यज्ञ है। अपनी कमाई में से अपने से पहले दूसरों का पेट भरना ही बलि वैश्व देव यज्ञ है। देने को भोजन भला–लेने को हरिनाम–यह अवश्य याद कर लो। बांट कर खाओगे तो मनुष्य ही नहीं–पशु पक्षी भी तुम से प्यार करेंगे। माता-पिता पशु-पक्षी रोगी इनकी ओर ध्यान से देखो–यह ही तुम्हें कुछ देने के लिए ही आते हैं केवल पेट भरने के लिए ही नहीं आते। सन्यासी सबका पिता है–यह तुम्हें अभय देता है माता पिता गुरु आचार्य विद्या दान देते हैं और पशु पक्षी रोगी भय दान देते हैं यह पुकार पुकार कर कहते हैं–हमारी ओर देखो–प्रभु से डरो–वह बड़ा बलवान है– न्यायकारी है। मनुष्य यदि तू अपनों से अपनी बिरादरी से लड़ेगा तो कुत्ता बनेगा। कुत्ता कहता है–तू ऐसा मत कर–सावधान–कुत्ता बनना पड़ेगा। कुत्ता बनेगा तो फिर आ कर अपनों से और सेवा कर दूसरों की। हम हिन्दू आज क्यों दुःखी हैं–हम इस शिक्षा को भूल गये– हम अपनों से घृणा करते हैं–उनको अछूत कहते हैं–हरिजन कहकर उनको दूर करते हैं–और हिन्दुओं की जड़ काटने वाले विरोधियों के साथ सहयोग करते हैं।

कौआ कहता है–बन्धुओ कड़ुआ मत बोलना–मैं कड़ुआ बोला–कौआ बन गया–लोग मेरी बोली सुनकर पत्थर मारते हैं। फिर भी वह आकर हमको सावधान करता है–कहता है–कांव–कांव लाओ–लाओ–जब हम भोजन देते हैं तो फिर चिल्लाता है काऊं काऊं–आओ–आओ अपनी बिरादरी को बुलाता है–तब खाता है–अकेला नहीं खाता।

गाय कहती है कन्जूस मत बनना–मैंने कन्जूसी की–गाय बन गई लोग पांव में रस्सी बांधकर सब दूध निकाल लेते हैं। इसी तरह रोगी अपंग भी तुमको सावधान ही करते हैं–यह सब कहते हैं–हमारा टैक्स दो और सम्भल जाओ। जीवन में कमाते तुम हो–परन्तु अपनी कमाई में से ही आपको कर टैक्स देना पड़ता है। यदि दे दोगे तो जीवन में निर्भय होकर सुखी रहोगे। यदि नहीं दोगे– तो सरकार हथकड़ी लगाकर वसूल कर लेगी।

बस इसी बात को समझाने के लिए–माता-पिता-गुरु ने उपदेश किया यज्ञ का एक नाम मख भी है– मख–छिद्र–स्वार्थ–अहंकार रहित को कहते हैं। तुम यज्ञ करते हो– जीवन में इसका अनुसरण भी करो–पहले अपने अन्दर आत्मा में ज्ञान–त्याग–तपस्या की आग जलाओ–फिर बाहर आग जलाकर हवन करो। यह यज्ञ तो प्रेम बरसाता है और ऊंच–नीच का भेद मिटाता है। हमने वेद की बात मानी नहीं–और ऊंच–नीच का यह भेद नहीं मिटाया। अपने ही देश भारत में हम लोग बहुमत में होकर भी हर जगह उपेक्षित हैं–पीछे ढकेल दिये जाते हैं–दुखी हो रहे हैं। हम लोग हवन करते हैं–मन्त्र पाठ कर आहुति देते हैं–मवतस्रः समनसी ..भी बोलते हैं–परन्तु क्रियात्मक–प्रेक्टिकल जीवन में इस रहस्य को नहीं ढाला–यज्ञ के मार्ग पर चले ही नहीं–और यह भी कह रहे हैं–"हवन यज्ञ करते जीवन बीत गया– पर कुछ मिला मिलाया नहीं।

बन्धुओ–यज्ञ-हवन-दान कैसे करते हो–हाथ से ही तो करते हो–अब अपने ही हाथ को देखो–इसमें पांच अंगुलियां हैं–कोई बड़ी है, कोई मोटी है, कोई छोटी और कोई बहुत ही छोटी है। क्या यह अंगुलियां अलग-अलग रहकर कुछ कार्य कर सकती हैं? उत्तर स्पष्ट है–कुछ भी नहीं कर सकती–जब ऊंच-नीच का सब भेद मिटा कर इकट्ठी हो गई– तो सब काम सरलता से सम्पन्न होने लगे। जब सब अंगुलियां मिलकर काम करती हैं तभी इस अंग का नाम कर या हाथ होता है।

बन्धुओ–यह यज्ञ सिखाता है–तू तृष्णा को छोड़–दिखावा मत कर यज्ञ की सुगन्धि की तरह चुपचाप बिना भेदभाव के सब के पास पहुंच जा। आजकल सरकार कानून बनाती है और इसे तोड़ने वाले तोड़ पहले ढूंढ लेते हैं–कानून का पालन कब और कैसे होता है–यह बात अलग ही रह जाती है। परन्तु वैदिक महर्षियों का यह यज्ञ सरकार की तरह जबरदस्ती कानून बना कर नहीं लादता–यज्ञ तो भावना–मन–मस्तिष्क–हृदय को ही बदल देता है फिर मनुष्य बिना कानून के भी देता है और यज्ञ का भागी बनता है। इतिहास साक्षी है भामाशाह

[शेष पृष्ठ ८ पर]

आ० स० बुढ़ाना द्वार मेरठ में वेद प्रचार

आर्य समाज मंदिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तिम सत्र ८-९-८८ की रात्रि के ९ के अन्तिम प्रवचन में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री आर्य भिक्षु जी, वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर में भगवान राम और वेद विषय पर बोलते हुए कहा कि मनुष्य ३ प्रकार के होते हैं–

(१) वे मनुष्य जो ईश्वर के विधान वेद को पूर्ण रूप से मानते हैं, भगवान कहलाते हैं। (२) वे मनुष्य जो ईश्वर के विधान वेद को कुछ मानते हैं तथा कुछ नहीं मानते हैं वे मानव कहलाते हैं। तथा (३) वे मनुष्य जो ईश्वर के विधान वेद को बिलकुल नहीं मानते, शैतान कहलाते हैं

भगवान व ईश्वर में अन्तर—अखिल ब्रह्माण्ड के रचयिता और सृष्टि के आदि मे वेद का ज्ञान देने वाले को ईश्वर कहते हैं। यदि हम श्री राम को ईश्वर माने तो उनका जीवन अलौकिक होने के कारण नहीं अनुकरणीय हो सकता परन्तु यदि उन्हें महामानव माना जाये तो अनुकरणीय हो सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि हमें उपासना किसकी करनी चाहिए भगवान अर्थात् महामानव की या ईश्वर अर्थात् सारे संसार को बनाने वाले की ? इस विषय में रामचरित मानस में महा कवि तुलसीदास जी ने स्पष्ट लिखा है कि प्रातःकाल होते ही श्री रामचन्द्र जी ये काम अवश्य करते थे–प्रातःकाल उठकर माता–पिता, आचार्य के चरण स्पर्श करते थे एवं नित्यप्रति यज्ञ सन्ध्या वन्दन अर्थात् ईश्वरोपासना करते थे।

हमे भी उस ईश्वर की उपासना करनी चाहिए तथा भगवान राम के निर्मल चरित्र का अनुकरण करके अपने व्यक्तिगत पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाना चाहिए।

राजर्षि रणंजयसिंह एवं देशबन्धु की स्मृति में शोक

रायबरेली में आर्य कुमार सभा की बैठक आर्य समाज मन्दिर रायबरेली में हुई। इस बैठक में प्रस्ताव पारित करके दुःख व्यक्त किया गया कि आर्य जगत् के कर्मठ नेता वयोवृद्ध राजर्षि रणञ्जय सिंह जी अमेठी देहावसान से अपूरणीय क्षति हुई है प्रस्ताव मे राजा साहब के कार्यों की सराहना की गई और ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

इस बैठक मे प्रदेश कुमार सभा के कर्मठ ओजस्वी आर्य कुमार श्री देवेन्द्र स्वदेश बन्धु के आकस्मिक निधन के प्रति भी शोक सम्वेदना व्यक्त की गई। ज्ञातव्य है कि श्री स्वदेश बन्धु अपने निवास स्थान शाहजहाँपुर मे ही अचानक बीमार हो जाने से दिवंगत हो गये थे।

वेद प्रचार सप्ताह

सुलतानपुर आर्य समाज की ओर से दि० २७ अगस्त से ४ सितम्बर ८८ तक सहायता से वेद प्रचार का भव्य आयोजन घर-२में हुआ।

आओ सत्संग में चलें

[पृष्ठ ६ का शेष]

ने अपना सारा धन महाराणा प्रताप को स्वेच्छा से दे दिया–उसे कितना सम्मान मिला– वह इतिहास में अमर हो गया।

अतः याद रखो–यह यज्ञ ही शिक्षा देता है–कि अपनी खुशी से नहीं दोगे–तो सरकार–चोर–डाकू–जबरदस्ती तुम से छीन कर ले जायेंगे और साथ में मार पीट भी करेंगे–तब तुम हाथ मलते रह जाओगे।

सुनो–ध्यान से सुनो–अपने ज्ञान–बल–पुरुषार्थ से अर्जित किये हुए अन्न धन को स्वयं अकेले न भोगो–जरूरतमन्द लोगों को आस पास देखो और उनमें बाँट कर फिर स्वयं खाओ–यह ही बलिवैश्व देव महायज्ञ का सन्देश है– जो महर्षि दयानन्द की कृपा से हमें प्राप्त हुआ। हमारा–हमारे परिवार–समाज देश–राष्ट्र–संसार का कल्याण इसी में है।

★

—श्री महाशय चाबूलन्दन जी आर्य जो आर्य समाज माटुंगा बम्बई के सदस्य तथा कर्मठ कार्यकर्ता थे का निधन १२-९-८८ को हो गया। वह आर्य समाज हांसीपुर गोरखपुर को इह लीला समाप्ति के पूर्व अपना सात्विक दान १०१) दिया। इनकी अन्त्येष्टी पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार की गई।

विद्यार्य सभा की परीक्षा सम्बन्धी विज्ञप्ति

अध्ययनरत कतिपय वयवर्ग के छात्र। छात्राओं में उच्च नैतिक विचारों एवं वैदिक मान्यताओं के प्रति आस्था उत्पन्न करने की दृष्टि से, प्रदेशीय विद्यार्य सभा इस वर्ष भी आगामी दिसम्बर १९८८ के अन्तिम सप्ताह में धर्मरत्न, धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण एवं धर्माधिकारी परीक्षाओं का विभिन्न केन्द्रों में संचालन कर रही है। कक्षा १-५ तक के छात्रों के लिए "धर्मरत्न" परीक्षा का विशेष संचालन इस वर्ष से किया गया है।

आर्य समाज द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं, दयानन्द बाल मन्दिरों आदि के समस्त प्रधानाचार्य कृपया छात्रों को इन परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें और केन्द्र की स्थापना हेतु हमें लिखें।

माधवसिंह, मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

वेद ही क्यों ?

[पृष्ठ ४ का शेष]

हूं। जैसे पहिए के आरे नाभि मे चारों ओर से जुड़े होते हैं, वैसे ही तुम सब मिलकर प्रकाश स्वरूप भगवान् का पूजन करो। [समानी-प्रपा सह वोऽन्नभागः, समानेयोक्त्रे सह वो युनज्मि। सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः] (अथर्व ३-१०३)

ऐसे ही समाज संगठन के प्रसिद्ध मन्त्र का भाव है—"साथ २ चलो, साथ २ बोलो, तुम्हारे मन एक ज्ञान वाले हों, जैसे कि पूर्व देव (सूर्य चन्द्रादि) एक मन होकर अपने २ भाग का सेवन कर रहे हैं।" [संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥] (ऋ० १०-१९१-२)

अच्छा सामाजिक प्राणी बनने की प्रेरणा वेदों में बहुत है। अनेकों मन्त्र दिए जा सकते हैं। परन्तु थोड़ी सी झलक ही इसकी पर्याप्त है। वेदों में हमें अच्छी संगति मिले इस पर भी बहुत बल दिया गया है अच्छी संगति ही व्यक्ति और समाज को अच्छा बनाती है। देखें ऋग्वेद का मन्त्र कितना प्रेरणादायक है—

"सूर्य और चन्द्र की भांति हम कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें और दानी, अहिंसक तथा विद्वान पुरुषों का हम संग करते रहें।"

[स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि] (ऋ० ५-५१-१५)

अब जरा वेद मे सार्वभौम मैत्री भाव को देखें यजुर्वेद मे लिखा है—"हे दृढ़ बनाने वाले भगवान। मुझे ऐसा दृढ़ बना कि सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें। मैं स्वयं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं। हम परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।" [दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।]

(यजु० ३६/१८)

संसार के साहित्य में इस से बढ़कर सार्वभौम मैत्री का भाव कहीं भी नहीं दर्शाया गया।

वेदों में निर्भयता का अद्भुत उपदेश दिया गया है। अथर्व वेद को देखें—

"अन्तरिक्ष हमारे लिए अभय हो, द्यौ और पृथ्वी इन दोनों में अभय हो, अभय पीछे से, आगे से, ऊपर और नीचे से हमारे लिए हो।" [अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तात् उत्तरादधरादभयं नोऽस्तु।"]

[अथर्व १९/१५/५]

मैं मित्र से भय रहित होऊं। अमित्र से भी। परिचित से और अपरिचित से भी भय रहित हो जाऊं। रात्रि और दिन में भी हम भय रहित होवें। समस्त दिशायें मेरी मित्र हो जाएं।" [अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु] (१९/१५/६)

भय मनुष्य के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। भय रहितता की स्थिति मुक्ति की स्थिति है। इसलिए वेद की यह अद्भुत प्रेरणा है। एक २ शब्द की व्याख्या बड़ी ही सारगर्भित है।

वेदों में सदैव जागरूक एवं सतर्क रहने की भी प्रार्थनायें हैं। देखिए ऋग्वेद—"जो जागता है उसे ऋचायें चाहती हैं, जो जागता है उसे सोम प्राप्त होता है। जो जागता है उसे यह सोम कहता है:— मैं तेरा हूं। तेरी मित्रता में ही मेरा निवास है। तू मुझे जहां भी बुलायेगा मैं वहीं पर तेरा साथ दूंगा।" [यो जागार तमृचः कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति। यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।"] (ऋ० /५/४४/१४)

इसी प्रकार से वेदों में व्यक्ति, परिवार और समाज के उत्थान के लिए बहुत ही प्रेरणा भरे मन्त्र हैं। अखिल ब्रह्माण्ड में सुख, शांति और आनन्द की वृद्धि करने वाले अनेकों मन्त्र हैं।

हमारा जीवन कैसा हो ?, हमारी दिनचर्या कैसी हो, हमारे परिवारों में सुख शान्ति कैसे रह सकती है ? हमारे परिवार की क्या रूपरेखा है ? हमारे मकान कैसे हों ? हमारी बस्तियां कैसी हों ? हमारे व्यापारिक संस्थान कैसे हो ? हम विज्ञान मे कैसे उन्नति करें ? हमारे वाहन आदि कैसे हों ? हम जलचरों के समान पानी में कैसे विचरें ? और पशु पक्षियों के समान आकाश में कैसे विचरें ? हमारी न्यायपालिका और कार्य पालिका कैसी हो ? हमारे न्यायाधीश, अधिवक्ता और गवाह कैसे हों ? हमारा शत्रुओं पर कैसे विजय हो ? हमारी सेना के पास आधुनिकतम अस्त्र शस्त्र कैसे हों ? हमारा सेना-नायक कैसा हो ? हमारी राजनीति कैसी हो ? विज्ञान के क्षेत्र मे हम कैसे विकास करें ? भूगोल की जानकारी हमें कैसे हो ; वैदिक शास्त्र हमारा कैसे भला करे ? समस्त इह लोक की बातें तथा पुनर्जन्म आदि परलोक की बातें वेदों में उपलब्ध हैं। वर्णाश्रम व्यवस्था का विशुद्ध स्वरूप वेदो में देखने को मिलता है। सबसे बड़ी बात जो अन्य तथा कथित ईश्वरीय ग्रन्थों में नहीं मिलती वह केवल वेदों में ही है। वह है योग की बात और मुक्ति की बात। परा और अपरा विद्यायें दोनों ही वेदों में हैं। एक २ विषय में यदि एक २ वेद मन्त्र भी प्रस्तुत किए जायें तो लेख बहुत लम्बा हो जाएगा। इसलिए लेख को समाप्ति से पूर्व पाठक वृन्द को यह बताना आवश्यक समझते हैं कि वेदों में सब सत्य विद्याओं का मूल विद्यमान है। वेदों के पठन-पाठन से ही अखिल ब्रह्माण्ड को, ब्रह्माण्ड के रचयिता को और जिसके लिए ब्रह्माण्ड रचा गया है अर्थात् जीवात्मा को भलीभांति समझ कर हम इह लौकिक और पार लौकिक उन्नति कर सकते हैं। अन्य धर्म ग्रन्थ तो स्वर्ग और नरक तक ही सीमित है वह भी मरने के बाद। परन्तु वेद जीवन काल में ही स्वर्ग और नरक की बात कहता है और मृत्यु के पश्चात् तो वेद अपवर्ग अर्थात् मोक्ष की बात कहता है।

अतः वेदों के अध्ययन से ही अखिल विश्व में सुख-शान्ति और आनन्द स्थापित हो सकते हैं।

★

दण्डी स्वामी छात्रवृत्ति योजना

मैंने अपने पतिदेव श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति की इच्छा से अपनी पेन्शन का अधिकांश भाग ऐसे छात्र और छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में देने का निश्चय किया है, जिन्होंने यह व्रत धारण किया है कि हम विद्योपार्जन के पश्चात् वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में ही अपना जीवन समर्पित करेंगे। सहायता के पात्र छात्र व छात्रायें अपने अभिभावक तथा आचार्य से प्रमाणित कराकर प्रार्थना पत्र भेजें। ईसाई और मुस्लिम आक्रान्त प्रदेशों के निवासी छात्र व छात्राओं को विशेषता दी जायेगी।

सरला देवी शर्मा
शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम आजादनगर
दिल्ली–११००५१

मेरठ के प्रमुख आर्य नेता का निधन

दिनांक २२–९–८८ को प्रमुख आर्यसमाजी नेता महाशय मनोहर लाल आर्य का हृदयाघात से दुःखद निधन हो गया। वे ८० वर्ष के थे।

महाशय जी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्रेरणा देने के कार्य में जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगे रहे। खादी, हिन्दी, वेद तथा गोमाता के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाज सेवी श्री राजकुमार सिंघल के पिता थे। उनके निधन पर आर्य समाज, विश्व हिन्दू परिषद, सनातन धर्म, आर्यवीर दल आदि संस्थाओं ने हार्दिक सम्वेदना प्रकट की है। उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मन्त्री ने उनके निधन को समाज की अपूरणीय क्षति बताते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लखीमपुर का वार्षिकोत्सव १८, १९, २० व २१-११-८८ को समाज मन्दिर के विशाल प्रांगण में मनाया जा रहा है इस अवसर पर उच्च कोटि के विद्वान पधार रहे हैं।

आनन्द स्वरूप मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखीमपुर

शोक समाचार

श्री छोटेलाल वर्मा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता का स्वर्गवास दि० १३–९–८८ को हो गया। वे कई जन सेवी संस्थाओं के संचालक भी थे। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

—हरदोई के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री प्रभुदयाल आर्य का दिनांक १०-८-८८ को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ तथा निवास स्थान पर २२-८-८८ को शान्ति यज्ञ हुआ।

आपकी स्मृति में आर्य समाज कासिमपुर बेहदर कलां, हरदोई में शोक सभा हुई जिसमें अनेकों आर्यजनों ने दिवंगतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री धीवर आर्य विजयी

श्री धीवर आर्य आर्यसमाज कासिमपुर हरदोई के कर्मठ कार्यकर्ता हैं आपने हरदोई जिले के बेहदर ब्लाक के ग्राम कासिमपुर के ग्राम प्रधान चुनाव में भारी बहुमत से विजय प्राप्त की।

—लालबहादुर आर्य

आर्य समाज जवाहर नगर [मेरठ] की शताब्दी

मेरठ १८ सित०। आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ एवं केन्द्रीय आर्य समिति, जिला मेरठ की संयुक्त अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन आर्यसमाज' जवाहरनगर (लालकुर्ती) के प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

जिसकी अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला गोयल ने की।

अधिवेशन में सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि जिले की सभी आर्य समाजें एकजुट होकर आगामी १४, १५ व १६ अक्टूबर १९८८ को होने वाले आर्य समाज, जवाहरनगर (लालकुर्ती) के शताब्दी समारोह को सफल बनाने हेतु तन, मन, धन से सहयोग करेंगी।

शताब्दी समारोह के स्वागताध्यक्ष पं० इन्द्रराज जी के संरक्षण में समारोह के कार्य सम्पादन हेतु प्रचार, भोजन, आवास, यज्ञ, अतिथि सत्कार, शोभा यात्रा, प्रसाद वितरण, पण्डाल, स्वागत, परामर्शदात्री प्रस्ताव निर्माण, जल-थल-सफाई व प्रकाश तथा आर्यवीर उपसमितियों का गठन किया गया। उक्त समारोह के विस्तृत कार्यक्रम को शीघ्र प्रकाशित कराया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के प्रधान पं० इन्द्रराज जी की देख रेख में गंगा मेले के अवसर पर गढ़मुक्तेश्वर में आयोजित किये जाने वाले 'वेद प्रचार शिविर' की भी उप समिति का गठन किया गया।

यज्ञ और वृष्टि

[पृष्ठ ५ का शेष]

के इस अविष्कार का मुकाबला किसी भी बड़े से बड़े आविष्कार से सम्भव नहीं है।

इस यज्ञ को महत्ता पर जहां पर जब चाहे विचार विनिमय के लिए हम समुद्यत हैं। महमूदनगर की विचार गोष्ठी में यज्ञ से वर्षा न होने की मान्यता को सहमति न मिलना वैदिक विद्वानों की दुर्बलता का परिचायक है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग के अध्यक्ष मिस्टर अजय चौधरी ने दिल्ली के वैज्ञानिकों के समक्ष यज्ञ विज्ञान पर भाषण के लिये हम से प्रस्ताव किया था और तीन दिन में भाषण की व्यवस्था के लिए समय मांगा था पर उन्हीं दिनों में हमारा अन्य कहीं कार्यक्रम होने से मैंने असमर्थता किया था। उन्होंने बाद में भाषण कराने की बात कही थी पर मैं फिर एक वर्ष के लिए मोरीशस चला गया था। आने के बाद यह बात उन्हें विस्मृत हो गई होगी।

ऐसी किसी भी विचार गोष्ठी में यज्ञ विज्ञान पर हम विचार के लिए प्रस्तुत रहेंगे।

लेख में रचनात्मक भी हमारा उद्देश्य किसी के सम्मान को ठेस पहुंचाना नहीं है। केवल दृढ़ता पूर्वक यज्ञ विज्ञान को प्रस्तुत करना भर है। अतः कोई दोष अनजाने में आ गया हो तो क्षमा की प्रार्थना है।

*

वे करोड़ों मूक लोगों के मसीहा थे

"दरिद्र नारायण की सेवा करने का अर्थ है खादी प्रचार। हरिजन सेवा का अर्थ है अस्पृश्यता के कलंक को धो देना। ये दो भगवान के कार्य हैं।

—गांधी जी

महात्मा गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन देश के असहाय, गरीब और पददलितों की सेवा के लिए समर्पित था। उनकी समस्त नीतियों का ध्येय दरिद्र नारायण और हरिजनों की उन्नति और विकास था। यहाँ तक कि देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता भी अन्तिम लक्ष्य न होकर सामान्य जनता की गिरी हुई स्थिति में सुधार लाने के निमित्त साधन थी। बापू के देश में ऊँचनीच और वर्गों का भेद नहीं रह सकता था। वे ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और लघु उद्योगों के प्रसार और विस्तार को बहुत महत्व देते थे। राष्ट्रपिता ने प्रत्येक नीति की सफलता की कसौटी जनता जनार्दन की भलाई को माना था।

महात्मा जी के सपने साकार करने के प्रदेश शासन के प्रयास

१– खादी एवं ग्रामोद्योग के क्षेत्र में पाँच लाख नये परिवारों को रोजगार देने की योजना तैयार।

२– एक लाख लघु उद्योग और एक लाख ग्रामीण उद्योगों की शीघ्र स्थापना।

३– प्रत्येक विकास खण्ड में पचास खादी ग्रामोद्योग इकाइयों का लक्ष्य। इन इकाइयों द्वारा विगत वर्ष (८७–८८) पांच करोड़ रुपये की वस्तुओं की बिक्री।

४– ३८० विकास खण्डों में लघु औद्योगिक आस्थान योजना की स्वीकृति। चालू वर्ष में ही ३०० आस्थान स्थापित करने का लक्ष्य।

५–उत्तर प्रदेश पर्वतीय इलेक्ट्रानिक्स निगम द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में ४९ करोड़ रुपये के लागत की परियोजनायें।

६– एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत ८७–८८ में ८ लाख और चालू वर्ष जून ८८ तक २९८ हजार गरीब परिवार लाभान्वित।

७– राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम द्वारा ८७–८८ में ६ करोड़ ८ लाख और इस वर्ष जून ८८ तक लगभग २४ लाख मानव दिवसों का रोजगार सृजित।

८– ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम के अन्तर्गत ८७–८८ में लगभग ५ करोड़ १६ लाख और इस वर्ष जून तक लगभग १५ लाख मानव दिवसों का रोजगार सृजन।

९– ग्रामीण क्षेत्रों में अति निर्धन परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए कुटी बीमा योजना की शुरुआत।

१०– निर्बल वर्ग आवास योजना के अन्तर्गत मार्च ८९ तक २.५० लाख मकानों की योजना। विगत वर्ष लगभग १७,००० और इस वर्ष जून तक ४३१ आवास तैयार। लगभग २४ लाख भूमिहीनों को आवास स्थल आवंटित।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५२६६१
रजिस्ट्रेशन सं० एल डब्ल्यू एन पी ७६
आश्विन कृष्ण ७
२ अक्टूबर रविवार १९८८ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्यसमाज की स्थापना

जनपद शाहजहांपुर के ग्राम महाऊ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई। डा० रवीन्द्र के अथक प्रयास से आर्यसमाज की स्थापना उक्त ग्राम मे हो गई है। ९ तथा १ सितम्बर ८८ तक वहां समारोहपूर्वक उत्सव मनाया गया।

स्वामी अमर देव भजनोपदेशक श्री कृपालसिंह श्री श्यामबिहारी लाल, श्री प्रो० जयेन्द्रपाल आदि विद्वानों तथा भजनोपदेशकों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। आचार्य शर्मा के निर्देशन मे १४ किशोरों ने यज्ञ-सूत्र ग्रहण किया तथा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का व्रत लिया।

आर्य वीर दल की स्थापना भी कर दी गई। डा० रवीन्द्र तथा उनके साथ ... के पात्र है।

स्वत्वाधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए प्रकाशक डॉ० ... नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में ... प्रिंटर्स (प्राइवेट लिमिटेड) कारबाग लखनऊ से श्री ... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० ३२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-३-८६

आश्विन कृष्ण १४ रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक ९ अक्टूबर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

★

सहायक सम्पादक—
[illegible] पाठक एम०ए०,
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

९१

४०

परमात्मा की अमृतवाणी—

द्वेषों का कर लें अवसान

★ ★ ★

'प्राग्नये वाचमीरय, वृषभाय क्षितीनाम् । स. न पर्षद अतिद्विष ।।

—ऋक् १०-१८७-१

हे परम कारुणिक जगदाधार जगदीश्वर ! [क्षितीनाम] मनुष्यों के [वृषभाय] अभीष्टों को बरसाने वाले [अग्नये] सामर्थ्यरूपी अग्नि को उद्दीप्त करने के लिए [वाचम्] हमारी वाणी को [प्र+ईरय] प्रकृष्टता से उत्प्रेरित कर दे [स न द्विष अतिपर्षत] जिससे वह मधुमय वाणी हमें द्वेषों से पार लगा दे ।

इस वेद मन्त्र में वाणी को मधुमय बनाकर समस्त द्वेषों से पार होकर संसार के वातावरण को मधुमय बनाने की प्रार्थना है । इस महान आर्य जाति के पतन के कारणों में द्वेष भी एक कारण है । महाभारत काल के आगमन से पूर्व ही वेदों की शिक्षाएं आर्य लोग विस्मृत करने लगे थे जिसके परिणाम स्वरूप पारस्परिक सामञ्जस्य एवं संगठित होकर प्रेम पथ पर चलने की प्रेरणा धीरे–धीरे विनष्ट होने लगी । आपसी द्वेषों ने भयंकर शत्रुता का रूप धारण कर लिया और हम शताब्दियों तक आपस में ही एक दूसरे को मिटाने में लगे रहे । जो बाह्य शत्रु हमें बाहर से मिटाने आए थे उनका साथ देने में हमने अपना गौरव समझा । यदि जयचन्द ने गोरी का साथ न दिया होता तो आज भारत की यह दशा न हुई होती । हम परमात्मा के आदेश– 'सं गच्छध्वं संवदध्वम्' को भूल गये । साथ–साथ रहने साथ–साथ चलने की अपेक्षा हमारी वाणी और शक्ति एक दूसरे के विनाश में प्रयुक्त होने लगी और हमारी यह विशाल आर्य जाति भयंकर पतन के गर्त में जाकर गिर गई । १००० वर्ष की गुलामी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जिसे हम अतीत के पृष्ठों से मिटा नहीं सकते ।

प्रभु की असीम अनुकम्पा और आर्यों के पुण्योदय से हमारे बीच एक परमहंस ऋषिवर आये जिन्होंने हमारे प्राचीन स्वाभिमान एवं गौरव को जगा दिया । परमेश्वर की अमृत वाणी के सुन्दर–सुन्दर फूल आर्यों की उजड़ी हुई बगिया में लगा दिये और कहा–स्वयं सुगन्धित बनो और संसार के उपवन को अमृतमय सुगन्धि से भर दो ।"

आर्यों तुम्हारे द्वेष के दावानल में झुलसकर कहीं यह फूल मुरझाने न पावे ।

आओ गायें उसका गान !
जो सबके है दुःख मिटाता,
और अभीष्ट सुधा बरसाता,
वाणी को मधुमयी बनाता,
जिसके शीतल प्रेमस्पर्श से,
द्वेषों का होता अवसान
आओ गायें उसका गान !
द्वेषों का कर लें अवसान ।।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ॥

—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—आश्विन कृष्ण १४ संवत् २०४५, रविवार ९ अक्टूबर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

आतङ्कवाद का फैलता हुआ—

खूनी पंजा

★ ★ ★

१९४७ में इस भारतीय भूभाग का विभाजन द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त के आधार पर किया गया था यद्यपि तत्कालीन भारतीय नेता यही कहते रहे कि भारत के रहने वाले सभी एक राष्ट्र हैं। हिन्दू-मुस्लिम भाई–भाई हैं। धर्म और उपासना पद्धति के बदल जाने से राष्ट्रीयता नहीं बदलती। मगर राष्ट्र की परिभाषा न उस समय स्पष्ट हो सकी और न आज भी है। कुछ लोगों का विचार था, और है–किसी भूभाग पर रहने मात्र से विभिन्न विचारधाराओं के बीच भी राष्ट्रीय समन्वय पनप सकता है। उनके दृष्टिकोण में राष्ट्र भौगोलिक क्षेत्र, भौतिक प्रदेश अथवा बौद्धिक प्रत्यय मात्र है चाहे वे उस देश को पुण्यभूमि या पितृभूमि मानते हों, अथवा नहीं। दूसरी ओर एक विचारधारा यह भी थी और है कि राष्ट्रीय एकात्मवाद के लिए साथ–साथ एकात्म सांस्कृतिक चेतना और उस भूमि को मातृभूमि या पुण्यभूमि के भावों से श्रद्धासमन्वित कर देना राष्ट्रीय समन्वय का मूल आधार है। इसके लिये हमें भूमि के साथ-साथ "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" का मातृवत् प्रेम और उस पर पुष्पित पल्लवित अतीत की सांस्कृतिक चेतना से जुड़े हुये महान् पुरुषों को अपना पूर्वज स्वीकार करना अनिवार्य होगा। भारतीय भूभाग से अनेकता और विविधता के बीच हम जिस एकात्मवाद का दर्शन करना चाहते हैं उसकी गहराई में जाने की आवश्यकता है। प्रश्न विचारधाराओं की भिन्नता का नहीं है, प्रश्न है इस भारतीय भूभाग में अपने को एकात्म साकार कर देने का। जो विचारधारा इस देश को विजित भूभाग मानती है और यहां के मूल निवासियों को शासित समझती है वह यहां की भूमि को मातृवत् समझने और यहां के निवासियों को अपना अंग समझने की भावना कैसे विकसित कर सकती है और अतीत की सांस्कृतिक चेतना के साथ आत्मसात् होने का तो उसके सामने कोई प्रश्न ही नहीं है।

इस भूभाग पर रहने वाला एक बड़ा समुदाय जिसे हम इस्लाम मतानुयायी कहते हैं–कुरआन की शिक्षाओं से प्रभावित है। उसका वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन दर्शन वही है जो कुरआन की शिक्षाओं पर आधारित है। भूमि से अधिक उन्होंने धर्म को महत्व दिया है। स्वयं भारतविभाजन के समय तत्कालीन मुस्लिम लीगी नेताओं ने कहा था–"हमने पाकिस्तान इसलिए नहीं लिया है कि हमें किसी भूखण्ड की आवश्यकता है। हमने पाकिस्तान इसलिये बनाया है कि हम स्वतन्त्रतापूर्वक इस भूमि से अपने धर्म (इस्लाम) का प्रचार कर सकेंगे, और यही हमारा उद्देश्य है"। दूसरी ओर हमने भारत को स्वतन्त्र इसलिए कराया कि यहां के लोगों का आर्थिक सुधार होगा, जीवन स्तर ऊंचा होगा, बड़े बड़े बांध और विशाल अट्टालिकाएं बनेंगी। किसी धर्म के प्रचार या प्रसार की कोई बात ही किसी नेता ने कभी नहीं कही। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा उद्देश्य भौतिकवादी रहा और उसका परिणाम आज ४० वर्ष बाद हमें देश में दृष्टिगत हो रहा है। भौतिक दृष्टि से हम पहले से सम्पन्न हैं, ऊंची ऊंची अट्टालिकाओं में रहने लगे हैं, जीवन स्तर ऊंचा हुआ है परन्तु आत्मा अशान्त है, भयभीत है, नैतिकता का पतन हुआ है, आतंक और मौत के साये में हम जी रहे हैं। हमारी अवस्था उस पशु के समान मोटी होती चली जा रही है जो कुर्बानी से पहले बड़े-बड़े पौष्टिक पदार्थों का सेवन कराके मोटा ताजा बनाया जाता है। काश ! उसे यह पता चल सके कि यह मोटापा एक दिन उसे मौत की नींद सुला देने का उपक्रम मात्र है।

हमने देखा एकता, प्रेम और सौहार्द के सारे उपदेश आकाश में उड़ते हैं शब्दों और भावों के बुलबुले बनकर, और आकाश में ही

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वृहदधिवेशन

दि० १२, १३ नवम्बर

सन् १९८८ को

डी० ए० वी० कालेज,

लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१-सभा में चित्र प्राप्ति की अन्तिम तिथि	१०–१०–८८
२-चित्रों की जांच	११–१०–८८ से १५–१०–८८ तक
३–मतदाता सूची का प्रकाशन	१८–१०–८८
४–आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	२०–१०–८८
५–आपत्ति का निवारण	२१–१०–८८ से २४–१०–८८ तक
६–शुद्धमतदाता सूची का प्रकाशन	२५–१०–८८
७–बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१२–११–८८ एवं १३–११–८८
८-चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
दिनांक १२–९–८८] नारायणस्वामी–भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–१

शताब्दी समारोह

आर्यसमाज जवाहरनगर (लालकुर्ती)

मेरठ कैन्ट

– कार्यक्रम –

१४ अक्टूबर १९८८ (शुक्रवार)

प्रातःकालीन सत्र

'विश्वभूत यज्ञ' प्रात. ७-३० से ९-०० बजे तक

ब्रह्मा-स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

मन्त्र-पाठ-गुरुकुल के ब्रह्मचारी,

ध्वजारोहण प्रातः ९-३० से १०-०० बजे तक

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

शताब्दी समारोह का उद्घाटन– प्रातः १० से ११ ४५ बजे तक

सयोजक–श्री स्वराज चन्द्र जी,

ईश्वर स्तुति वेद मन्त्रों द्वारा (वृन्दगान)

वैदिक राष्ट्रगान, स्वागत गीतिका

अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी, आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम

उद्घाटन भाषण– स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्वागत भाषण–पं० इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

भाषण –श्रीयुत् सच्चिदानन्द जी शास्त्री

महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

मध्यान्हकालीन सत्र

युवा शक्ति सम्मेलन । २-०० से ५-०० बजे तक

अध्यक्षा श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, बरेली

संयोजिका–श्रीमती शशि गोड़, प्रधानाचार्या भागीरथी आर्य कन्या इं०का०

मुख्य अतिथि –श्रीमती सीता कक्कर, मण्डलीय बालिका विद्यालय

निरीक्षिका (प्रथम मण्डल मेरठ)

विषय–(१) मन्त्रोच्चारण ।

(२) स्त्री शिक्षा की आवश्यकता क्यों ?

(३) राष्ट्र की उन्नति में आर्यसमाज का योगदान ।

(४) चरित्र निर्माण एवं संस्कृति ।

(५) आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द की समाज को देन ।

(६) सांकेतिक गान ।

(७) सामूहिक गान ।

पुरस्कार वितरण–मुख्य अतिथि द्वारा;

अध्यक्षीया भाषण,

संयोजिका द्वारा धन्यवाद ।

सायंकालीन सत्र

'वेद सम्मेलन' ७-०० से १०-०० बजे तक

भक्ति संगीत ७-०० से ७-३० बजे तक

अध्यक्ष श्रीयुत् डा० सत्यकाम वर्मा,

पूर्व कुलपति, गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी

संयोजक –श्रीयुत डा० निरूपण विद्यालंकार

वक्ता –श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, बरेली, श्रीमती प्रज्ञावती जी, वाराणसी, श्रीयुत् स्वामी विवेकानन्द जी, श्रीयुत रमेश चन्द्र जी शास्त्री, श्रीयुत् विश्वमित्र जी विद्यावागीश, श्रीयुत् प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री, श्रीयुत् सत्यपाल जी शास्त्री ।

१५ अक्टूबर १९८८ (शनिवार)

प्रातःकालीन सत्र

'विश्वभूत् यज्ञ' ७-३० से ९-०० बजे तक

ब्रह्मा–स्वामी विवेकानन्द जी,

'शिक्षा सम्मेलन' ९-३० से १२-०० बजे तक

स्मारिका विमोचन–श्रीयुत् विजय शर्मा, जिलाधिकारी, आई० ए०एस०

अध्यक्ष –श्रीयुत् डा० भवानीलाल भारतीय

संयोजक –श्रीयुत् प्रो० रमेशचन्द्र शास्त्री,

मुख्य अतिथि –श्रीयुत् शिवकुमार शास्त्री, पूर्व सांसद

विशेष अतिथि –श्रीयुत् दरबारी लाल जी, दिल्ली

वक्ता –श्रीयुत् डा० गणेशदत्त शर्मा, प्राचार्य

वक्ता श्रीयुत् हरिदत्त शर्मा, रामपुर, श्रीयुत् मानसिंह वर्मा, पूर्व सांसद, श्रीयुत् डा० वेदप्रकाश, (हिन्दी), श्रीयुत् विश्वमित्र जी विद्या वागीश, श्रीयुत् डा० वेदप्रकाश, (दर्शनशास्त्र), श्रीमती मायावति आर्या, सरस्वती ।

मध्यान्हकालीन सत्र

'महिला सम्मेलन' २-०० से ५ ०० बजे तक

भक्ति संगीत, ईश वंदना–श्रीमती मृदुल कीर्ति

अध्यक्षा –आर्या मीरा यति जी,

संयोजिका –श्रीमती सावित्री रस्तोगी;

उद्घाटनकर्ता –श्रीमती शान्तिदेव बाला, लखनऊ

मुख्य अतिथि –श्रीमती शशि अरुण,

धर्मपत्नि श्रीराम अरुण, डी०आई०जी०, मेरठ

वक्ता –माता संजीवनी आनन्द सरस्वती, दिल्ली, श्रीमती विमला मोहन, श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, बरेली, श्रीमती पद्मा शर्मा 'साधिका', श्रीमती उषा शर्मा गुड़गावा, डा० प्रज्ञावती जी, वाराणसी ।

श्रीमती शकुन्तला जी, आशीर्वचन व भावी कार्यक्रम का संयोजन

'मेरठ की साहित्यिक महिला विभूतियों का अभिनन्दन

रात्रिकालीन सत्र

राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन' ७-०० से १०-०० बजे तक

भक्ति संगीत

अध्यक्ष –श्रीयुत् मानसिंह वर्मा पूर्व सांसद एवं पूर्व परिवहन मन्त्री

संयोजक –डा० ओशरण जी, अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, मेरठ कालिज

मुख्य अतिथि –श्री श्रीराम अरुण, डी०आई०जी०, मेरठ

वक्ता –श्रीयुत डा० भवानीलाल भारतीय, श्रीयुत् शिवकुमार शास्त्री, पूर्व सांसद, श्रीयुत् हरिओम पवार, श्रीयुत् प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्रीयुत् विश्वमित्र मेधावी, विद्या वागीश, श्रीयुत् डा० ओमदत्त शर्मा, श्रीयुत् डा० वेद प्रकाश, मन्त्री केन्द्रीय आर्यसमिति, मेरठ ।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ईसाई मत समीक्षा—

ईसा मसीह कोई था ही नहीं

[श्री सोहन लाल अग्रवाल, अधि वक्ता]

ईसाई मत अपने बानी मुबानी ईसा नाम से प्रसिद्ध है तथा उनके कथित उपदेशों पर आधारित है। ईसा ने अपने उपदेश नहीं लिखे थे बाईबिल ईसाईयों की धर्म पुस्तक है, जिसके दो भाग हैं ओल्ड टेस्टामेंट तथा न्यू टेस्टामेंट। ओल्ड टेस्टामेण्ट यहूदियों की धर्म पुस्तक है और न्यू टेस्टामेंट ईसाईयों के लिए।

न्यू टेस्टामेंट मे चार सुसमाचार १–सेन्ट मेथ्यू, २–संट मार्क, ३–संट लूका तथा ४–सॅट योहन के हैं। ईसाई लोग इन चार पुस्तकों को ईश्वरीय पुस्तकें मानते हैं क्योंकि इनमें ईसा मसीह के उपदेश संकलित हैं। ईसा मसीह के जन्म जीवन तथा मृत्यु का सारा समाचार इन्हीं चार पुस्तकों से मिल सकता है। इनके अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं है जिससे ईसा मसीह के बारे में कुछ भी पता चले। यह संग्रह भी ईसा मसीह के मरने के २०० वर्षों के बाद किया गया था। स्वयं स्वयं लूका रचित समाचार साक्ष्य प्रस्तुत करता है–(१) 'इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच मे बीतीं हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। (२) जैसा कि उन्होंने जो पहिले से ही इन बातो को देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया है। (३) इस लिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातो का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक २ जांच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। (४) कि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है, कैसी अटल है।"

[समीक्षा] १–इस लूका के लेख के पहिले बीती बातो का कोई इतिहास नहीं है।

२–वे सज्जन जिनने पूर्व मे इन बातो को देखा और लिखा कौन थे, कुछ नहीं पता। इन चारो सुसमाचारो के आधार भूत कोई पुस्तक ईसाई सम्प्रदाय के पास नहीं है। इन चारों समाचारो मे भी अत्यन्त भिन्नतायें हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि ईसाइयत की धर्म पुस्तकें मन गढ़न्त और धोखा धड़ी के वास्ते लिखी गई हैं। आज से १९०० वर्ष पूर्व के अन्तराल मे इन पुस्तको के कितने अनुवादो मे क्या क्या घटाया बढ़ाया होगा इसका सहज मे अनुमान लगाया जा सकता है।

सर्व प्रथम ईसा मसीह के अस्तित्व से ही इतिहास इंकारी है। आज से १९०० वर्ष पूर्व के इजराईल, इटली अथवा विश्व के इतिहास के लेखक ईसा मसीह के जन्म, जीवन तथा मृत्यु पर कुछ भी नहीं लिख सके। सेन्ट मेथ्यू, मार्क लुका योहन के समाचार भी ईसा मसीह के जन्म को विवादास्पद बनाते हैं।

सेन्ट मेथ्यू ईसा का जन्म का विवरण निम्न प्रकार से देता है-– "१–१८–अब यीशू मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मगनी युसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर गर्भवती पाई गई। १९–सो उसके पति युसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। २०–जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्ग दूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे युसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्यों कि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २१–वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों का उद्धार करेगा। २२–यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्य वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो सके। २३–कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम 'इम्मानुएल' रखा जायेगा जिसका अर्थ यह है कि "परमेश्वर हमारे साथ"। २४–सो युसुफ नींद से जाग कर प्रभु के दूत की आज्ञानुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया। २५–और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया, और उसने उसका नाम यीशु रखा।

इस कथा के अनुसार यूसुफ को जब यह पता लगा कि उसके साथ विवाह से पूर्व ही मरियम गर्भवती है तो उसने मरियम को चुपके से त्याग देने की मनशा की। परन्तु एक बड़े ही अद्भुत प्रकार से उसका मन इस मंशा से हटाया गया। जब वह ऐसा सोच रहा था तो एक देवदूत उसके स्वप्न मे आता है और उससे कहता है कि 'घबराओ मत क्योंकि जो उसके गर्भ में आया है वह पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ है" आजकल तो यदि किसी कुंवारी को गर्भवती के साथ देखा जाता है, उसके प्रियतम को ऐसा ही कोई स्वप्न उस कुंवारी के निरपराध होने का विश्वास नहीं दिला सकता। उस समय मे विश्व के उस भाग में सम्भवतः जनता की भावनायें कुछ भिन्न रहीं हों। ऐसे प्रियतम को ऐसे स्वप्न आने की बात आश्चर्य जनक ही है। माता मरियम ने अपनी गर्भस्थिति की बात अपने मंगेतर को अवश्य ही नहीं बताई होगी, यदि बताई भी होगी तो उसमें मरियम पर इस स्वप्न के पूर्व कोई शका नहीं की होगी।

ये बाईबिल के स्वर्गदूत ईश्वरीय कहे जाते हैं, वह ईश्वर आसमान मे कहाँ रहता है और वहाँ से ये दूत कौन सी सीढ़ी से मानवों के मस्तिष्क में आते हैं, इन बातों को स्वीकार करना तो बुद्धिहीनता ही है। बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती। मेथ्यू के ईसा के इस प्रकार से जन्म का कथन अथवा दूसरी गाथा ईसा जन्म विषयक सेंट मरकुस तथा सेंट योहन ने अपने समाचारों मे नहीं दी। यदि इन दिनों को इन कथा की जानकारी होती तो वह उसे क्यों छोड़ते।

सेंट लूका अपने सुसमाचार मे यीशू का जन्म वृतान्त निम्न प्रकार से देता है:– १ / २६–परमेश्वर की ओर से जिब्राइल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। २७–जिसकी मंगनी युसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी, उस कुंवारी का नाम मरियम था। २८–और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, आनन्द और जय तेरी हो जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है, २९–वह उस वचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? ३०–स्वर्गदूत ने उसने कहा, हे मरियम भयभीत न हो क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है, ३१–और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशू रखना। ३२–वह महान् होगा और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। ३३–और वह याकूब के घराने पर सदा

[शेष पृष्ठ १० पर]

राष्ट्रभाषा हिन्दी और महर्षि दयानन्द

[आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिन्दनगर लखनऊ]

शताधिक वर्ष हो गये जब आर्य समाज के प्रवर्तक अद्वितीय क्रान्त द्रष्टा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश की जनता में जागृति एवं संगठन की सुदृढ़ता के सम्पर्क सूत्र के रूप में अधिसंख्य देशवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी को—स्वयं अहिन्दी प्रदेश में जन्मे हुए होने के बाद भी सम्पर्क भाषा के रूप में अपने प्रवचनों व्याख्यानों एवं अपने ग्रन्थों के प्रणयन में हिन्दी भाषा को ही स्वीकारा था। संस्कृत के अद्वितीय विद्वान व वक्ता होते हुए भी जन सामान्य की बोल चाल की भाषा में बोलना एवं लिखना अपना धर्म बना लिया था। उन्होंने कहा था कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। हिन्दी में प्रकाशित उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश ने जन-जन में जो क्रान्ति की स्फूर्ति भर दी थी वह किसी से भी छिपी नहीं है।

पराधीनता के युग में आर्य समाज द्वारा संस्थापित शिक्षण संस्थाओं—चाहे वे गुरुकुल हो चाहे स्कूल या कालेज हो—सभी का अपना लक्ष्य हिन्दी का आमूल चूल प्रचार करके जन जन में संगठन का संस्थापन और अंग्रेजी भाषा का त्याग कर पराधीनता की बेड़ियां काटने के लिए चेतना जागृत करना था। महर्षि दयानन्द के इस क्रान्तिकारी कदम का प्रभाव सम्पूर्ण देश में फैला और फिर सम्पूर्ण देश वासी अपने पराये के भेद से परे हट कर एक भाषा एक संस्कृति के नारे के साथ स्वतन्त्र युद्ध में कूद पड़े। विजय भी मिली। हम स्वतन्त्र हुए। भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर प्रतिष्ठापित करने का गौरव दिया गया। परन्तु सत्ताधारियों में कतिपय लोगों के जिनका लालन पालन सदा कुछ अंग्रेजीमय था, उन्हें अपना स्वरूप खतरे में लगा। फलतः कुछ लोगों के साथ राजनीतिक छल प्रपंच के माध्यम से हिन्दी को उस पद पर प्राप्त करने के लिए क्रमशः धीरे धीरे का नारा दिया और १५-१५ वर्ष का अन्तराल देकर उसे क्रम बद्ध करने का बहाना करते हुए टालते रहे मानो राक्षस करते रहे अंग्रेजी दासता में रहने वाले इस अन्तराल को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सहायक बनाकर अधिक भाव से अंग्रेजी और पाश्चात्य के प्रचार प्रसार में लग गये। फलतः अंग्रेजी के पैर जमने लगे हिन्दी लुटने लगी। आज स्वाधीनता के ४० वर्ष बीतने के बाद भी हिन्दी न हमारे व्यवहार में है न हमारे आचरण में है। केवल संविधान में लिख रखा है। वर्तमान लोग तो हिन्दी का त्याज्य समझते ही हैं, केवल राजनीतिक हित साधन के लिए ही उसका प्रयोग करते हैं, सामान्य जन भी उसे ठुकराने लगे हैं, हिन्दी को अपने लिए, अपने राष्ट्र के लिए देन को भूलते जा रहे हैं। अब तो सभी अंग्रेजी दौड़ में लग रहे हैं। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाने की होड़ में हम आर्य समाज के सदस्य भी पूरी तरह से सम्मिलित हो रहे हैं। हमारे इससे और भी आगे कदम बढ़ते दिखाई देते हैं जब हम यह देखते हैं कि आर्य सामाजिक संगठनों द्वारा भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की स्थापना में भरपूर श्रम किया जा रहा है। निश्चय ही इसे देखते हुए चिन्तनशील व्यक्ति को विस्मय भी होगा और आत्म ग्लानि भी होगी।

महर्षि दयानन्द ने आजीवन हमारी भाषा-संस्कृति, सभ्यता, एकता के लिए अपना जीवन खपाया। जाने कितनी २ यातनायें उन्हें

आर्य समाज मोदीनगर में—
श्री पं० इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आर्य समाज मोदीनगर (गाजियाबाद) के समारोह में पहुंचने पर श्री इन्द्रराज जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का भव्य एवं हार्दिक स्वागत किया गया। प्रत्युत्तर में योगेश्वर श्री कृष्ण के जन्म दिवस पर बोलते हुए श्री प्रधान जी ने कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण के समय में भारत की बड़ी दुर्दशा थी। जनता कंस, शिशुपाल एवं जरासंध के अत्याचारों से पीड़ित थी। भारत वर्ष छोटे २ राज्यों में बंटा हुआ था। भगवान कृष्ण इन अत्याचारों को मिटाने के एवं महान भारत बनाने का संकल्प लेकर आये थे। वे योगीराज थे एवं किसी भी परिस्थिति में भी घबराते नहीं थे। उनका गीता उपदेश आज हमारे लिए बहुत उपयोगी है। क्योंकि स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्रता, अखण्डता, प्रभुसत्ता को इस समय तोड़ने के तमाम प्रयास चल रहे हैं। आज उग्रवाद और हिंसा को कुचलने की आवश्यकता है इस सबके लिये श्री कृष्ण जी का जीवन अनुकरणीय है।

इसके पश्चात् श्री इन्द्रराज जी ने "वैदिक संध्या हवन पद्धति" (सम्पादक आचार्य राजवीर शास्त्री, सम्पादक दयानन्द सन्देश तथा प्रकाशक एवं वितरक जवरलाल जी बजाज, बजाज पट्रोल पंप मोदीनगर) का विमोचन किया।

हमारे लिए सहनी पड़ी परन्तु वे निर्लेप भाव से सब कुछ सहते हुए हमारे जीवन्त जीवन संस्थापन के लिए आजन्म संघर्ष रत रहे

दीपावली पर्व उनका निर्वाण (बलिदान) दिवस है। दिवस उत्सव, पर्व हमें सम्बन्धित महापुरुष चरणानुगमन या पर्व विशेष के महत्व के अंगीकरण का सन्देश देने ही आते हैं। जो व्यक्ति उसके सन्देश को ग्रहण करने की चेष्टा करता है वही मात्र उस महा पुरुष का सच्चा अनुयायी होता है।

आर्य समाज के सदस्य आज अपनी भाषा अपनी संस्कृति अपनी सभ्यता और संगठन के प्रति अन्यों की भांति ही प्रमाद ग्रस्त हो रहे हैं। जिसका परिणाम है कि हम पर विदेशी भाषा, संस्कृति सभ्यता प्रभावी होने लगी है और हमारा देश पराभव की ओर अग्रसरित है।

आइये आज के निर्वाण दिवस पर हम अपने को बदलने का संकल्प लें, अंग्रेजी माध्यम स्कूलों का निष्ठा से बहिष्कार करें। दृढ़ता से राष्ट्र भाषा हिन्दी के सम्वर्धन के लिए प्रयत्नशील हों, अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम स्कूलों में पढ़ाने में गर्व अनुभव करें। अंग्रेजी में निमन्त्रण-पत्र छपा कर बड़े बनने की तृष्णा का सर्वथा त्याग करें। निश्चय ही यह हमारा संकल्प यह हमारा प्रयत्न राष्ट्र भाषा हिन्दी को उसके गौरवमय पद पर प्रतिष्ठापित करायेगा और यही हमारी सच्चे आर्यों में महर्षि के प्रति श्रद्धाञ्जलि होगी।

शताब्दी समारोह

आर्यसमाज, जवाहरनगर (लालकुर्ती) मेरठ छावनी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष करने वाले महर्षि दयानन्द ने 'मानव' को आर्य बनाने हेतु समाज सुधार का बीड़ा उठाया और १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। विश्व में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्वच्छता हेतु उनके द्वारा प्रतिपादित मूल-भूत सिद्धांत आज भी तर्क की कसौटी पर खरे उतरते हैं। महर्षि ने वेदों के आधार पर जन-जीवन को महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के रूप में एक आचार संहिता दी।

एक शताब्दी से भी अधिक पूर्व घोषित करके सिद्धान्त आज भी सर्वमान्य, व्यावहारिक एवम् विज्ञान सम्मत हैं। यही कारण है कि आज चाहे आर्य समाजों सदस्य के रूप में अधिक न हों, परन्तु विश्व का प्रत्येक मानव, संस्था एवम् समाज नैतिक एवम् व्यावहारिक रूप में उनको स्वीकार करता है।

आर्य समाज, लालकुर्ती भी समाज सुधार की क्रान्ति का एक अंग है जिसकी स्थापना १८८८ में हुई थी। यह इसके लिए और भी गौरव का विषय है कि क्रान्तिकारी संस्था का उदय १८५७ की क्रान्ति के उद्गम स्थल मेरठ छावनी की स्वर लहरियों में हुआ।

अपने उद्भव से लेकर आज तक अनेक ऐसी उल्लेखनीय घटनायें यह आर्य समाज अपने मार्ग में धारण किये है जो उज्ज्वल नक्षत्र के समान देदीप्यमान हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का इस क्षेत्र में ऐतिहासिक शुभागमन।

राष्ट्र को 'स्त्री-शिक्षा' के रूप में महान देन के रूप में 'कन्या पाठशाला' की स्थापना।

१९३७ में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती का क्रियान्वयन हमारे ही अध्यक्ष के नेतृत्व में अनेक राष्ट्रीय एवम् धार्मिक आन्दोलनों में जैसे-हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, गोवा आन्दोलन, गो-रक्षा आन्दोलन आदि में इस समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

स्थानीय नागरिकों के सार्वजनिक, पारिवारिक एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सम्पन्न कराने हेतु भव्य धर्मशाला का निर्माण कर योगदान देना।

शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु 'दयानन्द शिशु कल्याण केन्द्र' की स्थापना।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एवम् सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जैसे-दहेज प्रथा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, सती प्रथा, निरक्षरता, छुआछूत, विधवाओं एवम् अनाथों की दुर्दशा के विरुद्ध भी यह आर्य समाज सजग प्रहरी के रूप में निरन्तर चिन्तनशील एवम् क्रियाशील है।

आर्य समाज अपने उत्तर दायित्व को भली भांति समझता है तथा आज का समाज आर्य समाज में जो निष्ठा एवम् आस्था रखता है उससे हमारे उत्तरदायित्व का भार बहुत अधिक बढ़ गया है। हम मन, वचन और कर्म से समाज सुधार के लिये कृत संकल्प हैं

जातिवाद, सम्प्रदाय, हिंसा, मद्यपान, मांसाहार, दहेज, धार्मिक शोषण, सती प्रथा, अन्ध विश्वास, कब्र पूजा, निरीह पशु बलि, धर्म-परिवर्तन आदि समस्याओं ने भारत की स्वतन्त्रता, अखण्डता एवं प्रभु सत्ता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। आज देश पहले से भी अधिक बड़े खतरे में है। पंजाब की समस्या, आसाम, काश्मीर की समस्या, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय, पश्चिमी बंगाल आदि पूरे पूर्वांचल प्रदेश में विदेशियों से प्रेरित हजारों ईसाई मिशनरी एवं उग्रवादी सिखों का अराष्ट्रीय मुसलमानों से गठजोड़ आज देश को खण्ड-२ करने में संलग्न है। ऐसी स्थिति में भारत की जनता आर्य समाज की ओर निहार रही है। पेट्रोडालर के धन से उत्पन्न खतरे का मुकाबला आज भी आधुनिकतम साधनों का अभाव होने पर भी, केवल मात्र आर्य समाज ही कर सकता है।

सभी आर्य सदस्यों एवं शिक्षण संस्थाओं को साथ लेकर इनमें जीवन जाग्रत करना हमारा इस समय का प्राथमिक उद्देश्य है। स्वतन्त्रता के ४० वर्ष में सारा युवा समाज शृंगार-रस की मोह निद्रा से ग्रसित है। यह जागृति युवा शक्ति के आवाहन पर ही सम्भव है।

युवाजनों में आर्य समाज के प्रति आस्था उत्पन्न करना ताकि सद्विचार एवं स्वाध्याय द्वारा उनमें क्रान्ति की लहर उठने लगे। आर्य समाज में युवा शक्ति का समावेश हो यही इस समारोह की सफलता का मापदण्ड होगा।

शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों को नैतिक शिक्षा, सुन्दर संस्कार और अच्छी योग्यता प्रदान करना।

विद्यार्थियों को उद्बोधक एवं प्रेरणादायक सस्ता वैदिक साहित्य प्रकाशित कराके अथवा करवाकर क्रान्तिकारी साहित्य को उपलब्ध कराना।

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और तेजी से बढ़ते नैतिक पतन को तुरन्त रोकना।

धर्म परिवर्तन की बाढ़ को रोकना।

आर्यवीर दल, आर्य कुमार सभाओं एवं आर्य कुमारी सभाओं की स्थापना कर युवा शक्ति का इस धार्मिक क्रान्ति की ओर आकर्षित करना।

हमारे कार्यक्षेत्र के प्रमुख अङ्ग हैं-

इसी जन-जागरण और वैदिक उद्घोष के लिए आर्य जनता में शक्ति का संचार करने हेतु एवं नागरिकों को देश की समस्याओं के समाधान के लिए आश्वस्त करने हेतु इस महान शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया है। —प्रचार मन्त्री

*

लखनऊ बारह बिरवा में तपोयाग

वेद संस्थान लखनऊ के तत्वावधान में माता सुमित्रा देवी होम्यो-पैथिक कैंसर अस्पताल बारह बिरवा, आलमबाग लखनऊ में दिनांक १९-९-८८ से २१-९-८८ तक पू० स्वामी वेदबोध जी के निर्देशन में तपोयाग सम्पन्न हुआ। २० ९-८८ को स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस एवं ११-९-८८ को पूर्णाहुति यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रति दिन वेदोपदेश एवं भजन हुए। पूर्णाहुति के अवसर पर सैकड़ों धर्मप्रेमी नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक से भाग लिया।

[स्व० पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिए—]

निर्णय के तट पर (भाग ४) की प्रकाशन योजना का

❀ विवरण पत्र ❀

उक्त ग्रन्थ के अब तक तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमे सत्तावन शास्त्रार्थों का समावेश हो चुका है, परन्तु जो शास्त्रार्थ सामग्री हमारे पूर्ण प्रयास करने के बावजूद भी इन तीनो खण्डो मे नहीं आ पाई उसे अब चौथे भाग मे दिया जावेगा। इस चौथे भाग का प्रारूप भी पूर्व छपे भागो की भांति ही रहेगा, पेज भी ४०० के लगभग ही होगे। रही सामग्री की बात ? पूर्व छपे तीनो खण्ड इसका परिचय स्वय दे रहे हैं।

स्वर्गीय शास्त्रार्थ महारथी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छानुसार हमने सभी शास्त्रार्थ सामग्री को प्रकाश मे लाने का निश्चय किया है। अत जो भी शास्त्रार्थ विषयक सामग्री पूज्य अमर स्वामी जी महाराज के पास थी, उसको वह प्रकाशनार्थ हमे दे गये थे, अब उनकी अनुपस्थिति मे हमारा उत्तरदायित्व और भी ज्यादा हो जाता है, इसलिए हमारा प्रयास रहेगा कि हम उनकी अन्तिम इच्छा को पूरी कर, इस भावना के साथ-साथ हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारे द्वारा कोई ऐसा कार्य नहीं होगा, जिससे उस दिवगत पवित्र आत्मा के नाम को कलक लगे।

यह प्रकाशन कार्य हम व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं कर रहे इसलिए ग्रन्थ के प्रारूप को अच्छे से अच्छा बनाया जावेगा पूर्व छपे ग्रन्थो के तैयार करने मे देरी के अनेकों कारण रहे जिनका परिचय आपको उन पूर्व छपे तीनो भागो में मिल जावेगा।

इस ग्रन्थ के भाग-४ का मूल्य वर्तमान महगाई को देखते हुए छपने के बाद दो सौ रु० होगा, जो सज्जन अब इसके ग्राहक बनेंगे, उन्हे लागत मात्र अस्सी रु० मे दिया जावेगा, जिसके लिए आप अभी केवल तीस रु० भेजकर अपना पन्जीकरण करा सकते हैं। शेष पचास रु० ग्रन्थ के तीन हिस्से छपने के बाद लिए जायेंगे, ताकि ग्राहको को ग्रन्थ प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़े।

हमारी ओर से ग्रन्थ के प्रकाशन की तैयारी आरम्भ हो गई है। ग्रन्थ की प्रतियां बुकिंग के आधार पर ही प्रकाशित कराई जायेंगी, इसलिए—"मात्र तीस रुपये प्रति पुस्तक के लिए भेजकर अपनी प्रतियां अधिक से अधिक सख्या मे बुक करावें।" एव पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की "अन्तिम इच्छा पूर्ति' मे सहयोगी बनें।

यह विशेष छूट की व्यवस्था ३१ दिसम्बर १९८८ तक रहेगी।

इस ज्ञान यज्ञ मे जो सज्जन अपना आर्थिक सहयोग देना चाहे वह दिल खोलकर दें, उनके लिए यह यश व पुण्य कमाने का एक अच्छा अवसर है।

कोई भी राशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट जो "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद" के नाम हो रजिस्ट्री से भेजें, चैक स्वीकार नहीं किए जायेंगे। इस भाग ४ मे निम्न शास्त्रार्थ महारथियो के शास्त्रार्थ सग्रहित किए जायेंगे।

शास्त्रार्थ कर्त्ता

१-सर्वश्री अमर स्वामी जी महाराज, २-प० रामचन्द्र देहलवी, ३-प० आर्य मुनि जी, ४-प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, ५-प० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर, ६-प० राजाराम जी, ७-प० विश्वबन्धु जी, ८-प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, ९-प० रामगोपालजी, १०-प० बुद्धदेव जी मीरपुरी, ११-प० मनसाराम जी वैदिक तोप, १२-ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी, १३-प० गङ्गा प्रसाद जी उपाध्याय, १४-स्वामी ब्रह्ममुनि जी, १५-प० बालकृष्ण शर्मा, १६-डा० श्रीराम आर्य, १७-प० मुरारीलाल जी शर्मा, १८-प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्र तोष आदि दिग्गज विद्वानों की जो शास्त्रार्थ सामग्री इस भाग-४ मे आयेगी जिसे देखकर आप चकित रह जायेंगे।

देश व विदेशो से पूर्व छपे ३ खण्डो के बारे में प्रशसा पत्र लगातार आ रहे हैं। आप लोगो का सहयोग रहा तो मैं इस लुप्त सामग्री को प्रकाश में ला सकूंगा जिसको प्रकाश मे लाने हेतु आयजगत के महाविद्वान, शास्त्रार्थ महारथी श्री पूज्य अमर स्वामी जी महाराज जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगे रहे, और फिर अन्त मे वह सामग्री मुझे सौंपकर इस असार-ससार से विदा हो गये।

इस स्थिति मे हम सभी आर्यों के लिए यह एक उस दिवगत पुण्य आत्मा की चुनौती है, जिसे हमें स्वीकार कर उनके सपनो को साकार रूप देना है।

इसलिए आपसे प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ की बुकिंग अधिक से अधिक सख्या में करवावें तथा इसमें दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दें। तभी यह महान ज्ञान यज्ञ सफल हो सकेगा। विशेष जानकारी के लिए प्रकाशक से सम्पर्क करें। वसे हमारे साहित्य के मुख्य वितरक—"गोविन्द राम—हासानन्द—नई सड़क दिल्ली-६" से भी पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं।

विदुषामनुचर —

'लाजपत राय अग्रवाल'

'सम्पर्क सूत्र"— **अमर स्वामी प्रकाशन विभाग**

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद—२०१००१ (उ० प्र०)

ज्ञानी जैलसिंह द्वारा प्रसिद्ध महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य की भूरि भूरि सराहना एवं अभिनन्दन

कानपुर १८ सितम्बर–प्रसिद्ध महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य के सम्मान मे आयोजित अभिनन्दन समारोह मे बोलते हुए पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि श्री आर्य जी ने अपने जीवन के ५० बहुमूल्य वर्ष नारी जगत की सेवा एवं उत्थान मे लगा दिये परन्तु सरकार ने उन्हे कोई उचित सम्मान जैसे पद्म विभूषण या पद्मश्री से सम्मानित नहीं किया, यह अत्यन्त आश्चर्य का विषय है कि ऐसे महान समाजसेवी का मनोबल सरकार ने नहीं बढ़ाया। यह गलती मुझसे भी हो गयी। अब तो मै केवल सुझाव दे सकता हू।

ज्ञानी जी ने श्री देवीदास आर्य को शाल पहनाकर सम्मानित किया तथा उनके नारी उद्धार के कार्य को महान कार्य कहा तथा स्पष्ट रूप से कहा कि श्री आर्य ने अपने जीवन में सबसे महान काम एक और भी किया है कि ५० से अधिक भ्रष्टाचार काण्डों को उजागर किया है। आदमी एक भ्रष्टाचार उजागर करने मे बुरी तरह मुसीबत मे पड़ जाता है। यह वास्तव मे उन की बहादुरी है, यह बहादुरी कोई सच्चा आदमी ही कर सकता है। ज्ञानी जी ने श्री आर्य के कार्यों की मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए आवाहन किया कि हम जाति की संकीर्णता को त्याग कर प्रत्येक व्यक्ति भारतीयता की अपनी पहचान बनाए, इन्सानी भाईचारा और मानव कल्याण ही सबसे बड़ा धर्म है। श्री आर्य ने अपने जीवन मे तीन हजार से अधिक अपहृत कन्याओं व महिलाओं को गुण्डो से तथा ६०० से अधिक महिलाओ को वेश्यालयों के कोठो से मुक्त करा कर अमर हो गये हैं। ५०० कन्याओं का कन्यादान कर कर्मयोगी बन गये हैं।

अभिनन्दन समारोह में ज्ञानी जैलसिंह ने श्री देवीदास आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लिखित पुस्तक–"महिला उद्धारक देवीदास आर्य" का विमोचन किया। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (पूर्व लाला रामगोपाल शालवाले भूतपूर्व सांसद) ने की तथा महान महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य नामक अभिनन्दन स्मारिका का विमोचन किया। कार्यक्रम मे प्रदेश के सुप्रसिद्ध आर्य नेताओं तथा बुद्धिजीवियो एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

उत्सव

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ का ७८ वां वार्षिकोत्सव दि० १९, २०, २१ नवम्बर को होना निश्चित हुआ है जिसमें आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान, सन्त, महोपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

शोक समाचार

श्री प० रघुवरदत्त शर्मा प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का स्वर्गवास शनिवार २४ सितम्बर ८८ को हो गया है, और शान्ति यज्ञ सोमवार ३ अक्तूबर को होगा। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं दुःखी पारिवारिक जनो को धैर्य हेतु प्रार्थना है। –सभामन्त्री

सामवेद पारायण यज्ञ

१९५ सुभाष मोहाल सदर बाजार लखनऊ (आर्यसमाज मन्दिर के निकट) दि० १६ अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक सर्वश्री प० मेधावी शास्त्री एवं प० श्रोत्रीमित्र शास्त्री की अध्यक्षता में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन है। यज्ञ कार्यक्रम प्रातः ७ बजे से १० बजे तथा सायं ४ बजे से ६ बजे तक सम्पन्न होगा। पूर्णाहुति १८ अक्तूबर को प्रातःकालीन सत्र मे सम्पन्न होगी। मुख्य यजमान श्री वासुदेव श्रीमती कृष्णावन्ती (दम्पति) होगे। उपदेश एवं भजनो का विशेष आकर्षण रहेगा।

विद्यार्य सभा की परीक्षा सम्बन्धी विज्ञप्ति

अध्ययनरत कतिपय वयवर्ग के छात्र। छात्राओ मे उच्च नैतिक विचारों एवं वैदिक मान्यताओं के प्रति आस्था उत्पन्न करने की दृष्टि से, प्रदेशीय विद्यार्य सभा इस वर्ष भी आगामी दिसम्बर १९८८ के अन्तिम सप्ताह मे धर्मरत्न, धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण एवं धर्माधिकारी परीक्षाओं का विभिन्न केन्द्रों मे संचालन कर रही है। कक्षा १–५ तक के छात्रो के लिए "धर्मरत्न" परीक्षा का विशेष संचालन इस वर्ष से किया गया है।

आर्य समाज द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओ, दयानन्द बाल मन्दिरों आदि के समस्त प्रधानाचार्य कृपया छात्रों को इन परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें और केन्द्र की स्थापना हेतु हमे लिखें।

माधवसिंह, मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

मेरठ तथा गाजियाबाद में वैदिक धर्म प्रचार

(१) आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला गाजियाबाद की ओर से दि० २४, २५ तथा २६ अक्टूबर १९८८ को आर्य महासम्मेलन आर्य समाज हापुड़ (गाजियाबाद) में मनाया जायेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी दि० २५-९-८८ को जिला सभा गाजियाबाद की अन्तरङ्ग सभा में सम्मिलित हुए। महासम्मेलन के लिए तहसीलों उपसमितियों का गठन किया गया। बैठक श्री विजय भूषण जी प्रधान जिला सभा की अध्यक्षता में हुई।

(२) १ अक्टूबर ८८ को गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के अन्तर्गत एक वेद संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अनेकों विद्वानों ने भाग लिया। गोष्ठी का विषय था– 'वेद संहिताओं में लोकों की परिकल्पना"। श्री प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस गोष्ठी में भाग लिया। गोष्ठी का संयोजन डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने किया।

(३) गढ़मुक्तेश्वर मेले में सेक्टर न० ७ में दि० १९ से २३ नवम्बर ८८ तक वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर को आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ एवं गाजियाबाद मिलकर लगाएगी।

शोक समाचार

आर्यसमाज पाटन (उन्नाव) के मन्त्री डा० श्यामलाल गुप्त की धर्मपत्नी श्रीमती जानकी देवी का निधन दिनांक ९-९-८८ ई० दिन शुक्रवार को हो गया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें। –सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह सितम्बर १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर ३०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क ३०) रु० हो गया है।

१५१, ९९३ १८८०, २४१५, २७८२, २९९३, ३०६७, ३०७३, ३०७७, ३०९०, ३०९७, ३१९६, ५०२७, ५९२१, ५९४८, ६०३४, ६७०१, ६ ०१, ६८२२, ७०१२, ७०१५, ८१०६, ८३३१, ८३७७, ८६°०, ९०८७, ९२४२, ९७१४, ९९८०, ११२४३, ११२७०, ११२७२, ११२७३, ११९९१, ११९९४, १२१९ , १२४०७, १२७२३, १२७३२, १२९६४, १२९८४, १३१९८, १३२०२, १३२०८, १३२३०, १३२३५, १३५९३, १३५९८, १३६०२, १३६०४, १३६०९, १३९८५, १३९८७, १३९९९, १४००४, १४००६, १४०१०, १४०१५, १४०३९, १४०४०, १४०८२, १४०४४, १४०४६, १४०४७, १४३३८, १४३३९, १४३४०, १४३४१, १४३४२ १४३४४, १४३४५, १४३४६, १४३४७, १४४००, १४४०१, १४४०२, १४४०३, १४४०४, १४४०५, १४४०६, १४४०७, १४४०८, १४४०९, १४४१०, १४४११, १४४१२, १४४१३, १४४१४, १४४१५।

विनीत–
व्यवस्थापक

(पृष्ठ १ का शेष)

१६ अक्टूबर १९८८ (रविवार)

प्रातःकालीन सत्र

विश्वभृत् यज्ञ पूर्णाहुति ७-३० से ९ ३० बजे तक
ब्रह्मा–स्वामी विवेकानन्द जी,
आशीर्वचन स्वामी आनन्द बोध सरस्वती,
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
दैनिक यज्ञ करने वाले परिवारों का अभिनन्दन।

'शोभा यात्रा' १०-३० से २ ०० बजे तक
संचालक –श्रीयुत् डा० सतीशचन्द्र शर्मा,
उद्घाटन –श्रीयुत् रामनाथ सहगल,
मन्त्री, प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब
सम्प्रेरक –श्रीयुत् धर्मवीर आनन्द,
निर्देशक –श्रीयुत् शान्तिप्रकाश मित्तल, मन्त्री आर्यसमाज, सदर।

मार्ग—

शोभायात्रा प्रारम्भ–आर्य धर्मशाला लालकुर्ती मेरठ से छोटा बाजार, लालकुर्ती बड़ा बाजार, लालकुर्ती, पैंठ ऐरिया, बेगम पुल, गुरुद्वारा रोड, सब्जी मण्डी सदर, सर्राफा, चौक बाजार, घण्टाघर, बाबू लेन, बेगम पुल, शास्त्री चौक होते हुए सनातन धर्म रसायन इण्टर कालेज पर समापन।

सायकालीन सत्र

'समापन समारोह' ६-०० बजे
वक्ता –श्रीयुत् प० इन्द्रराज जी स्वागताध्यक्ष, श्रीयुत् केशव चन्द रस्तोगी, प्रधान, आर्यसमाज जवाहरनगर, (लालकुर्ती), श्रीमती सावित्री त्यागी जी प्रधाना आर्यसमाज, जवाहर नगर (लालकुर्ती)।

निर्देश—

(१) कार्यक्रम में परिवर्तन का अधिकार स्वागत मन्त्री को होगा।
(२) ऋतु अनुकूल वस्त्र लाने की कृपा करें।
( ) बाहर से आने वाले अतिथियों के भोजन एवं निवास की व्यवस्था की गई है।
(४) भोजन में श्री ओ३म् धर्मार्थ ट्रस्ट लालकुर्ती, मेरठ का योगदान सराहनीय है।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज मेरठ जनपद की समस्त इकाईयों का रविवारीय सत्संग दिनांक १६ अक्टूबर १९८८ को आर्यसमाज जवाहर नगर (लालकुर्ती) मेरठ के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में समारोह स्थल निकट आर्य धर्मशाला, लालकुर्ती में सामूहिक रूप से मनाया जावेगा।

–इन्द्रराज स्वागताध्यक्ष

आर्यसमाज शताब्दी समारोह मेरठ के संबन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यमित्र दिनांक २५-९-८८ में प्रकाशित सूचना को कृपया निम्नवत् संशोधित रूप में पढ़ें -

"आर्यसमाज जवाहरनगर (लालकुर्ती) मेरठ में दि० १४ से १६ अक्टूबर तक मनाए जाने वाले शताब्दी समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री प० इन्द्रराज जी, स्वागत मन्त्री श्री प्रभात कुमार जी, तथा स्वागत कार्याध्यक्ष–श्री ओमप्रकाश अग्रवाल हैं। –प्रबन्ध सम्पादक

ईसा मसीह कोई था ही नहीं

(पृष्ठ ४ का शेष)

राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा। ३४–मरियम ने स्वर्ग दूत से कहा, यह क्यों कर होगा ? मैं पुरुष को जानती ही नहीं ३५–स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जन जो उत्पन्न होने वाला है परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा।

इन दोनो कथनो मे अचम्भे की बात लिखी है और इनमे विषम भिन्नतायें हैं। सेन्ट मेथ्यू की कथा मे स्वर्ग दूत युसुफ को स्वप्न मे दिखाई दिया और कुंवारी मरियम को परमात्मा की ओर से यीशू के भावी जन्म का बताया। सेंट लूका की कथा मे स्वर्ग दूत जिब्राइल जागती मरियम को उससे परम प्रधान के पुत्र यीशू उत्पन्न होने का सन्देश देता है। प्रतीत होता है कि सेन्ट मेथ्यू एव सेंट लूका सही कहानी भूल गये। इससे अधिक सम्भावना ये है कि दोनों ने ईसा मसीह की कथा को गढ़ा। ईसा मसीह की जन्म कथा लिखने मे सेंट मरकुस तथा सेंट जोहन उनके साथी नहीं बने।

इससे और अधिक स्पष्ट ईसा मसीह के जन्म का उल्लेख ईसाई साहित्य मे नहीं है, वह जो कुछ मिलता है वह तथ्यो से अन्यथा और प्रकृति तथा परमेश्वरीय नियमो के विरुद्ध है और कभी भी विश्वसनीय नहीं हो सकता, नितान्त झूठ है। यदि ईसाईयो का ईश्वर बिना बाप के मरियम से अपने पुत्र को पैदा कर सकते तो मरियम के बिना ही अपने पुत्र को क्यो नहीं पैदा कर दिया। क्या कहीं भी बिना बाप के किसी कुंवारी ने सन्तान को जन्म दिया है। ऐसा हो नहीं सकता। यदि प्रकृति के नियम टूटें तो प्रलय हो जायेगी।

टेस्ट ट्यूब बच्चे भी माता-पिता के रजोवीर्य के बिना नहीं होते।

क्या ईसाई पादरी और विद्वान् इस वैज्ञानिक युग मे ईसा जन्म के गपोड़े मानते है यदि मानते हैं तो कृपया छोड़ देवें और ईश्वर पुत्र के नाम से लोगो को बपतिस्मा देकर नरक मे धकेलना बन्द कर दें।

सत्य वैज्ञानिक सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं–

सूक्ष्मा मातापितृजा: सह प्रभूतैस्त्रिधा विशेषा स्यु.।
सूक्ष्मास्तेषा नियता माता पितृजा निवर्तन्ते।

जीवो का एक सूक्ष्म शरीर होता है जो एक जन्म से अन्तिम जन्म तक चलता है और दूसरा शरीर माता पिता से उत्पन्न होता है जो जन्म जन्मान्तर मे बदलता रहता है। जीव का शरीर षट कौशिक है। माता के रज से लोम, रक्त और मांस, पिता के वीर्य से नसें हड्डियां और मज्जा मिलकर गर्भ बनता है। समय पर सन्तान बनकर मातृ योनि से बाहर आती है।

ईसाई धर्म की यह मान्यता कि ईसा मसीह मरियम [कुंवारी] से ईश्वर द्वारा उत्पन्न किये गये अत्यन्त बुद्धिहीन हैं इस प्रकार ईसाई धर्म का प्रथम आधार यीशू मसीह का कुंवारी मरियम से परम प्रधान ईश्वर द्वारा पैदा होना सृष्टि नियम के विरुद्ध होने से टिकता नहीं। उसके बिना ईसाईयत नहीं टिकती।

☆

वैदिक विद्वान पं० काशीनाथ शास्त्री का निधन

असत्य का खण्डन करने वाला कटु आलोचक चला गया

हमें यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि प्रदेश के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली के सदस्य, आर्य सेवक के सम्पादक प्रदेश के वेद प्रचार अधिष्ठाता "वैदिक कालीन भारत" के लेखक पं० काशीनाथ शास्त्री गोदिया, का अल्प बीमारी के पश्चात् गुरुवार दिनाक ४ अगस्त को पाहर अस्पताल में सायंकाल ४॥ बजे निधन हो गया। अन्त्य यात्रा दि० ५–८–८८ को उनके दामाद श्री अलख प्रकाश वर्मा (आर्य) के निवास स्थान होशंगाबाद से निकल कर नर्मदा के राजघाट पहुंची जहां गणमान्य लोगो तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो की उपस्थिति मे आचार्य अमृतलाल शर्मा एव ब्र० नन्दकिशोर जी ने वैदिक रीति से अन्त्येष्टि कार्य सम्पन्न कराया।

आप पिछले मास १७ जुलाई को ही गोदिया से अपनी सम्पूर्ण अचल सम्पत्ति विक्रय कर धर्मपत्नी के साथ अपनी एकमात्र पुत्री जो होशंगाबाद मे रहती है स्थाई निवास हेतु चले गये थे।

श्री शास्त्री जी लेखनी और वाणी के धनी थे। असत्य के खण्डन के लिए उनकी लेखनी सतत चलती रहती थी। इस सम्बन्ध मे वे किसी को नहीं छोड़ते थे चाहे वह व्यक्ति कितने ही महत्वपूर्ण पद पर हो। उनमें एक तड़प थी। वेद विरुद्ध तथा भारतीय संस्कृति इतिहास को तोड़ फोड़ कर प्रस्तुत करने वालो के खिलाफ उन्होने सदा ही कटु आलोचना की।

उनके निधन से आर्य जगत की महान क्षति हुई है परमात्मा से उनकी दिव्य आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनो के धैर्य हेतु प्रार्थना है। मनमोहन तिवारी, मन्त्री सभा

कमिश्नर का आदेश स्थगित

इस सभा के नियन्त्रण मे चल रहे म० वेद स्वामी गुरुकुल सिरसागञ्ज जिला–मैनपुरी के समानान्तर अवैध रूप से बनाये गये आर्य गुरुकुल के रजिस्ट्रेशन को कमिश्नर, आगरा द्वारा दी गई मान्यता के अवैध आदेश दि० २९-७–८७ को, माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद की सिविल रिट स० २०९९९ / ८७ के आदेश दि० १७–८–८८ द्वारा स्थगित कर दिया गया है। इस प्रकार आर्य गुरुकुल नामक फर्जी संस्था का अस्तित्व पुनः समाप्त हो गया है।

कुं० ध्रुवपाल सिंह 'अटल' मुख्य निरीक्षक, सभा

आँखों का निशुल्क आप्रेशन कैम्प

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (जिला मेरठ) की ओर से माता चनन देवी आर्य धमार्थ नेत्र चिकित्सालय सी, १ जनकपुरी नई दिल्ली के सौजन्य से शुक्रवार १४ अक्टूबर से शनिवार २२ अक्टूबर १९८८ तक आंखो का निःशुल्क आप्रेशन कैम्प शुक्रवार १४ व १५ अक्टूबर को प्रातः १० बजे से ५ बजे तक नेत्र रोगी देखे व भर्ती किये जायेंगे।

रविवार १६ अक्टूबर १९८८ को आप्रेशन कैम्प का शुभारम्भ प्रातः १० बजे यज्ञ के पश्चात् होगा।

स्थान : डी० ए० वी० इन्टर कालिज अग्रवाल मण्डी टटीरी

पुस्तक-परिचय

अपना जीवन चरित्र

सम्पादक–श्री आदित्यपालसिंह आर्य तथा श्री डा० वेदव्रत 'आलोक'

प्रकाशक–अदिति प्रकाशन, १५६५. हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग नई दिल्ली-११ ००१। मूल्य–साठ रुपये, पुस्तकालय संस्करण–सौ रुपये।

पुस्तक प्राप्ति का वर्तमान पता–सुरुचि मुद्रणालय, महाराणा प्रताप नगर [जोन-१], भोपाल, म०प्र०–४६२०११।

समीक्षक–आचार्य डा सुरेन्द्रदेव स्नातक, शास्त्री, भोगांव (मैनपुरी)

'अपना जन्म चरित्र" पुस्तक के तीन प्रमुख आधार हैं–(१) पूना प्रवचन जिनका संकलन "उपदेश मञ्जरी" नाम से विख्यात है। इन्हीं में अन्तिम भाषण "ऋषिवर दयानन्द की अपनी जीवनी" से सम्बन्धित है।] २–स्वहस्त लिखित अपनी जीवनी जिसका प्रकाशन १९८३ ई० में निर्वाण शताब्दी, अजमेर के अवसर पर किया गया। ३–तृतीय आधार है–'कलकत्ता कथ्य"। महर्षि दयानन्द १६ दिसम्बर सन् १८७२ से १६ अप्रैल सन् १८७३ ई० तक कलकत्ता में ही रहे। अपने इस समय में उन्होंने अपने जीवन के विषय में संस्कृत भाषा में कथन किया तथा विद्वान लेखकों द्वारा जिसे तुरन्त ही बंगला–भाषा में अनूदित कर लिखा गया। जिसको स्वर्गीय पं० दीनबन्धु वेदाचार्य बी० ए० द्वारा "अज्ञात जीवनी" के नाम से सार्वदेशिक समाचार पत्र में धारावाहिक रूप में प्रकाशित कराया गया।

स्वामी सच्चिदानन्द ने भी अपनी ओर से इस 'अज्ञात-जीवनी' में वर्णित तथ्यों के बारे में वास्तविकता को जानने में पर्याप्त भ्रमण तथा खोज भी की। वास्तविकता पर पहुंचने के अनन्तर ही उन्होंने–"योगी का आत्मचरित्र" नाम से पुस्तक को लिखा तथा प्रकाशित भी कराया।

विद्वान लेखकों द्वारा इन सभी प्रकार के ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित जीवनियों को अपनी पुस्तक "अपना जन्म चरित्र" में स्थान प्रदान किया गया है। इन सभी प्रकारों में प्रथम एवं द्वितीय प्रकार की प्रामाणिकता के विषय में आर्य विद्वानों को किसी भी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है। केवल 'कलकत्ता–कथ्य' के विषय में पाठकों एवं विद्वानों में मतभेद अथवा विवाद अवश्य है। इसका प्रमुख कारण यह है कि ऋषिवर दयानन्द द्वारा कलकत्ते में जो कुछ भी कथन किया गया वह सब संस्कृत भाषा में कहा गया। लिखने वाले सभी विद्वान बंगाली थे। बंगला भाषा का तो उन्हें पूर्ण ज्ञान था ही, साथ ही वे संस्कृत भाषा के भी पूर्ण ज्ञाता रहे होंगे। अतः उन्होंने ऋषि दयानन्द के मुख से अपने जीवन के विषय में जो कुछ भी कहा गया, उस सभी को वे बंगला भाषा में ही अनूदित कर लिखते रहे। यदि संस्कृत भाषा में कथित उक्त जीवनी संस्कृत भाषा में ही लिखी गई होती तथा वह लेखकों को उपलब्ध हो गई होती तो सम्भवतः कलकत्ता–कथ्य के विषय में कोई मतभेद अथवा विवाद उत्पन्न न हुआ होता।

इसके अतिरिक्त यह भी सम्भव है कि ऋषि दयानन्द ने १८६० तक के वर्षों के अपने कार्यों के सम्बन्ध में ही बतलाया था तथा यह भी कहा था कि इन वर्षों में हुये १८५७ के गदर (क्रान्ति) में किये गये कार्य को तब तक घोषित न किया जाय कि जब तक मैं जीवित हूं क्योंकि उनको भय था कि तत्कालीन विदेशी सरकार उन्हें कहीं पकड़ न ले और बन्द न कर दे। इस कारण उसका उद्घाटन उस समय न किया जा सका होगा।

"अपना जीवन चरित्र" के दोनों विद्वान लेखकों ने "कलकत्ता–कथ्य" की खोज करने तथा वास्तविकता को जानने का अत्यधिक प्रयास किया, दोनों का पर्याप्त अमूल्य समय भी इस कार्य में व्यय हुआ। परिणाम स्वरूप उन्होंने अनेक प्रमाण भी एकत्रित किये और उनमें से अधिकांश को अपनी पुस्तक में स्थान प्रदान किया। इस भांति उन्होंने ऋषिवर दयानन्द से सम्बन्धित सभी जीवनियों, भाषणों आदि का सामञ्जस्य स्थापित किया तथा बुद्धिगम्य अनेक सत्यताओं को अपनी पुस्तक में स्थान प्रदान किया। साथ ही ऋषि दयानन्द के अविदित १८५५ ई० से १८६० ई० तक के जीवन का भी अपनी पुस्तक में उद्घाटन किया। पुस्तक प्रकाशन के समय तक जो भी विवाद उठ खड़े हुये थे उनका भी निराकरण कर उनका सप्रमाण उल्लेख किया है।

निस्सन्देह दोनों ही लेखकों ने प्रस्तुत पुस्तक के विषयों एवं तथ्यों को जानने तथा समझने में अत्यधिक परिश्रम किया है, साथ ही उन्होंने अपने अमूल्य समय के अधिकांश भाग को भी इस पुस्तक के तथ्यों को जानने में व्यय किया है। इसी कारण उनका प्रयास तथा परिश्रम पूर्ण रूपेण सफलता को प्राप्त हो सका है। अतएव उनका परिश्रम पूर्णतया श्लाघनीय तथा सराहनीय ही कहा जा सकता है।

पुस्तक उपादेय तथा गम्भीर अन्वेषण से परिपूर्ण है। प्रत्येक ऋषि भक्त को यह पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये।

संयुक्त निरीक्षण

इस सभा की मुख्य निरीक्षिका श्रीमती डा० आशारानी जी की निरीक्षण आख्या के अनुसार, उन्होंने, इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुं० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' तथा मुख्य अधिष्ठाता (भू-सम्पत्ति) श्री वेदप्रकाश जी के साथ दि० १८–९–८८ को आर्यसमाज लल्लापुर, वाराणसी का संयुक्त निरीक्षण किया। तत्पश्चात् वहीं पर वाराणसी मण्डल के "वेद प्रचार मण्डल" की बैठक में भाग लिया। मण्डल की सभी आर्योपसमाजों के प्रधानों व मन्त्रियों तथा अन्तरङ्ग सभासदों, सभा से सम्पर्क किया तथा संगठन के हित में अनेक लिखित निर्देश दिए। वाराणसी नगर में बढ़ते हुए ईसाईकरण को देखकर, उक्त मण्डल की मांग पर, निरीक्षक मण्डल ने, माननीय मन्त्री जी, सभा की स्वीकृति की प्रत्याशा में, सभा से एक भजनोपदेशक भेजने का आश्वासन दिया।

–विश्वम्भर दयाल गुप्त

निर्वाचन

आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर बांगरमऊ जनपद उन्नाव के द्वारा बेरियापाड़ा, असरापुर में वैदिक धर्म प्रचार, हरिजन बालकों के यज्ञोपवीत एवं बांगरमऊ में नामकरण संस्कार सभा प्रचारक पं० नेमप्रकाश आर्य, पं० युगुल किशोर आर्य स्वामी महावीर जी द्वारा सम्पन्न हुए। नवीन निर्वाचन इस प्रकार हुआ।

प्रधान–श्री छिलेराम आर्य, मन्त्री–श्री डा० श्यामसुन्दर आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री कृष्ण कुमार आर्य

आर्यमित्र साप्ताहिक
राजर्षि स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 44998 ४५९९१
रजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७९
आश्विन कृष्ण १०
९ अक्तूबर रविवार, १९८५ ई०

आर्यमित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वे सपूत कहलाते

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी बरेली]

★

जीवन मृत्यु देश हित [illegible]
वे सपूत कहला[illegible] ।
कण-कण [illegible] पावन भू का,
[illegible] से भी प्यारा ।
[illegible] होकर कहते
[illegible] को प्यारा ।
कूद रहे जो रिपु ज्वाला में
प्रलयङ्कर बन जाते ।

होकर [illegible]
[illegible] के प्रति [illegible] ।
[illegible] के [illegible],
[illegible] के [illegible] ।
मानवता के [illegible]
तेजस्वी मुस्काते ।

जो [illegible]
[illegible] हैं कर [illegible] ।
[illegible] को [illegible] दे,
पल भर में दूर [illegible] ।
परहितकारक करुणा घन को
वसुधा पर सरसाते ।

पथ और धन का [illegible] हैं
[illegible] कभी न करता ।
किन्तु विनय का शक्ति स्रोत,
उल्लासपूर्ण है ममता ।
न्याय पन्थ के अनुगामी वे,
हिंसा को बहलाते ।

[illegible] नहीं नाम के केवल,
रहा साधना जीवन ।
कुर्सी का अनुराग मिटाकर,
करते दुख उन्मीलन ।
आ जाये प्राणों पर चाहे,
लक्ष्य नहीं बिसराते ।
जीवन, मृत्यु, देशहित जिनको,

सम्पादकीय—

(पृष्ठ २ का शेष)

लुप्त होते चले [illegible] हैं । अभी तो [illegible] को अग्नि में हमारा प्यारा पंजाब प्रदेश ही [illegible] था । [illegible] धीरे धीरे यह [illegible] जम्मू और काश्मीर में भी फैलता जा रहा है । जम्मू काश्मीर भारत का सबसे संवेदनशील प्रान्त है । यहां देश विरोधी एवं साम्प्रदायिक शक्तियां फिर सिर उठाने लगी हैं । काश्मीरी मुस्लिम [illegible] पाकिस्तान से गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग लेकर लौटे हैं और घाटी में पंजाब जैसी स्थिति उत्पन्न कर देने का प्रयास चल रहा है । [illegible] पुलिस के उच्चाधिकारियों की हत्या की कोशिश की गई [illegible] उनके घरों पर बम तथा अन्य हथियारों से सुनियोजित हमला किया गया । कई वर्ष पूर्व [illegible] स्थित हमारा [illegible] मन्दिर जलाकर खाक कर दिया गया था और शासन मूक बना देखता रहा । [illegible] समय पूरी काश्मीर घाटी में [illegible] चल रहा है । ऐसी स्थिति में आने [illegible] दिनों में पंजाब की तरह काश्मीर भी आतङ्कवादियों का गढ़ बन सकता है । इस देश के [illegible] के [illegible] का भी [illegible] हुआ है, [illegible] देने से पूर्व हमें अपने घर को सुरक्षित [illegible] बनाना होगा । अतः आन्तरिक समस्याओं से जूझते हुए [illegible] आर्य परिवारों से हमारा निवेदन है कि वे [illegible] के महान आदर्श को क्रियान्वित रूप देने के लिए संगठित होकर आगे आयें और [illegible] के [illegible] पर चलते जा रहे आतङ्क भय और निराशा के [illegible] को दूर कर ।

★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] [illegible] ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] [illegible] (सिक्युरिटी प्रिंटर) [illegible]

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ | घोषणा पत्र सं० ७।१८-२-८५

आश्विन शुक्ल ६ रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक १६ अक्टूबर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	८१
अङ्क	४१

ओ मानव !

जाग तुझको दूर जाना

★ ★ ★

वैदिक पथ के राही तू सो क्यों रहा है। अभी तो तेरी मञ्जिल बहुत दूर है बहुत दूर। क्षितिज के उस पार, उगते हुये सूर्य की किरणें तुझे पुकार-पुकार कर कह रही हैं—तेरा गन्तव्य मैं हूं मुझसे मिले बिना तेरी यात्रा अधूरी है। गगनचुम्बी हिमालय की उत्तुङ्ग शिखरें तुझे पुकार रही हैं—हे वीरपुत्र! तेरा गन्तव्य मैं हूं अभी तू मुझ तक पहुंचा कहां है। स्वर्णिम विहान के कूजते हुए खगकुल कह रहे हैं—तेरा लक्ष्य मैं हूं मेरे पास ही तेरी चिरनिद्रा और चिर विश्राम है। और मैं चलता चला जा रहा हूं चलता चला जा रहा हूं क्योंकि यही मेरा जीवन है और यही मेरे जीवन-पथ की कहानी है। यही मानव की कहानी है, यही आदिकाल से होता आया है और अनन्तकाल तक होता रहेगा। इसलिए इस जीवन पथ पर सोत्साह चलते रहिये और मां मेधा से प्रार्थना कीजिए कि वह अपनी गोद में आपको विश्राम दे।

और ··· मैं चल रहा हूं। न जाने कितने दिन, कितने मास, कितने वर्ष, कितने युग, कितने मन्वन्तर, कितने कल्प एक-एक करके बीतते जा रहे हैं, कब से इस जीवन पथ पर अग्रसर हुआ था और न जाने इस पथ का अंत कब होगा। चलते-चलते पैर थक गये पर थकने पर भी जैसे कोई अन्दर बैठा हुआ बराबर चलने के लिए प्रेरित कर रहा है। मेरा गन्तव्यस्थल कहां है, मैं किधर जा रहा हूं—कभी-कभी यह प्रश्न अन्तस्तल में उठकर मेरे मन को झकझोर देता है। कुछ प्रकाश आता है, पर फिर अन्धकार। मेरी इस यात्रा ने कितने वीभत्स दृश्य देखे, कितनी सदियां देखीं, कितने उजड़े हुए घर देखे, कितनी सतियां धू-धू करके चिता में जलती देखीं। तेरे नाम पर कितने समूहों को, व्यक्तियों को आपस में जूझते कटते देखा। चीत्कार करती हुई करुणा देखी, उफनता हुआ अभिमान देखा। रसना के स्वाद के लिए न जाने कितने निर्दोष मूक प्राणियों को निवह होते देखा। तेरे नामपर लड़-खड़ाती हुई मानवता देखी तो कहीं-कहीं प्रकाश की उज्वल रेखा भी देखी। मानव स्वभाव को न जाने कितने द्वन्द्वों में जूझते देखा, लेकिन मैं जानता हूं कि यदि इस यात्रा का आदि है तो इसका अन्त भी अवश्य होगा। इस तिमिराच्छन्न रात्रि का अवसान होगा और कमलिनीकुलवल्लभ की प्रभा फिर देदीप्यमान होगी। सुना है पूर्वजों ने, पितरों ने, देवों ने मेधा के प्रकाश का सहारा लिया था जिससे वे इस तम से पार हो गये थे, विनाशकारी बवण्डर से बच गये थे।

"या मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते, तया मामद्यमेधयाग्ने मेधाविनं कुरु"

इसलिए हे मंगलकारिणी मेधा! मैं तेरा आंचल पकड़कर इस जीवननैया को पार लगा देना चाहता हूं। हे कुमति! मेरे मार्ग से हट जा मैं सुमति पथ का राही हूं मुझे बहुत दूर जाना है बहुत दूर। मेरा प्रियतम मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, मुझे अपनी गोद में सुलाकर चिरशान्ति और चिर विश्राम की अनन्त निद्रा में मुझे सुला देने के लिए आकुल होकर बाहें पसारे हुये है। हे मेरे जीवनपथ! मेरा मार्ग प्रशस्त कर दे अभी मुझे बहुत दूर जाना है।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी॥
—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय—

लखनऊ—आश्विन शुक्ल ६ संवत् २०४५, रविवार १६ अक्टूबर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

संयुक्तराष्ट्र महासभा में—

भारती की गूंज

★ ★ ★

यह एक सर्वमान्य सत्य है कि देवनागरी लिपि में लिखित हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी मे वे सब क्षमताएं विद्यमान हैं जो किसी भी भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय रङ्गमंच पर अपने उद्गार प्रकट करने, सारे विश्व को एक सम्पर्क सूत्र मे आबद्ध करने, विश्व में बढ़ते हुए वैज्ञानिक आयामों के लिए तकनीकी शब्दावली की पूर्ति करने तथा विश्व के समस्त मानवों की भावनाओं, जिज्ञासाओं को उत्कृष्टतम रूप में अभिव्यक्त करने मे पूर्ण दक्षता रखती हो। इसकी लिपि इतनी वैज्ञानिक, सटीक एवं यथावत् है कि संसार के समस्त विचार को सरलतम एवं उत्तम तम रूप में प्रकट करने का आधार बन सकती है। इसके अक्षरविन्यास और लिपिवैज्ञानिकता की श्रेष्ठता को विश्व के सभी भाषा वैज्ञानिकों ने एकमत से स्वीकार किया हुआ है। इसे अपने असीमित शब्दभण्डार की पूर्ति हेतु संस्कृत जैसी विश्व की प्राचीनतम एवं महानतम भाषा का स्रोत प्राप्त है जो संसार की समस्त भाषाओं की जननी है और अपने व्याकरण में अनन्त शब्दनिर्माण की अनन्त क्षमता रखती है ऐसी भाषा को पाकर निःसन्देह हमारा मस्तिष्क गौरवान्वित हो उठता है और हम चाहें तो इसे विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर विचारों के आदान प्रदान का सर्वसुलभ, सर्वोत्तम एवं सशक्त माध्यम बना सकते हैं। दुर्भाग्य से परकीय दासता के प्रभाव के कारण जहां हम अपनी संस्कृति को विस्मृत कर बैठे हैं वहां अपने भाषा प्रेम को भी तिलाञ्जलि दे बैठे हैं और विदेशी भाषा को अपनाना अपना गौरव समझ बैठे हैं। १९४७ में भारत स्वतन्त्र हुआ, संविधान ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया किन्तु व्यवहार में हम अपनी इस भाषा को वह सम्मान नहीं दे सके जिसकी राष्ट्र ने अपेक्षा की थी। इसके कुछ भी कारण रहे हों परन्तु एक महान कारण हमारी मानसिक दासता भी है जिसने हमारे अंग्रेजी मोह को हमसे दूर नहीं होने दिया। जिस प्रकार विदेशी वेशभूषा हम पर हावी है उसी प्रकार विदेशी भाषा भी हमे अपने व्यामोह में बुरी तरह जकड़े हुए है। अपने बड़प्पन की उत्तमता को हम अंग्रेजी बोल कर ही सिद्ध करने में यत्नशील हैं।

१९७७–७८ में जब जनता पार्टी का शासन था और तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी संयुक्तराष्ट्र महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व करने गये थे तो उन्होंने सर्वप्रथम महासभा में हिन्दी मे भाषण देकर राष्ट्र के गौरव को बढ़ाया था। पिछले ४ अक्टूबर १९८८ को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के वर्तमान विदेश मन्त्री श्री नरसिंह राव ने अपना भाषण हिन्दी में दिया है—जिसकी सर्वत्र सराहना की जा रही है। यह निश्चित है कि कुछ अन्तराल को छोड़ कर जब से भारत स्वाधीन हुआ है—कांग्रेस का ही देश पर शासन रहा है। प्रान्तीय सरकारों मे भी कांग्रेस शासन का प्राबल्य रहा। यदि कांग्रेस चाहती तो राष्ट्रभाषा को उसके गरिमामय पद पर प्रतिष्ठापित करने मे न तो उसके सम्मुख कोई अवरोध होता और न कोई प्रतिरोध, किन्तु कांग्रेस ने अपनी इस विषयक ढुलमुल नीति के कारण ही हिन्दी के उत्थान के प्रति अपना पूर्ण सहयोग न देने की अक्षम्य भूल की है।

हम श्री नरसिंह राव को उनके प्रयास के लिए साधुवाद देते हैं और भारतीय शासन से निवेदन करना चाहते हैं कि भविष्य मे जिस प्रकार रूसी, चीनी, फ्रांसीसी, अरब आदि देशों के नेता प्रायः अपनी ही भाषा में संयुक्तराष्ट्र महासभा को सम्बोधित करते हैं, उसी प्रकार हम देश में, विदेश में अन्तर्राष्ट्रीय मञ्च पर हिन्दी का प्रयोग कर इसे विश्वजनीन वैचारिक माध्यम का सशक्त आधार बनायें तभी हम मैथिलीशरण की इस उक्ति का सम्मान कर सकेंगे।

'मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान देश-विदेश में गूंजे हमारी भारती॥"

★ ★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वृहदधिवेशन

दि० १२, १३ नवम्बर

सन् १९८८ को

डी० ए० वी० कालेज,

लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

२—चिट्ठों की जांच	११-१०-८८ से १५-१०-८८ तक
३—मतदाता सूची का प्रकाशन	१८-१०-८८
४—आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	२०-१०-८८
५—आपत्ति का निवारण	२१-१०-८८ से २४-१०-८८ तक
६—शुद्धमतदाता सूची का प्रकाशन	२५-१०-८८
७—वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१२-११-८८ एवं १३-११-८८
८ चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
दिनांक १२-९-८८] नारायणस्वामी-भवन
, मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१

हवन-यज्ञ और विज्ञान

[स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद]

८ या ६ वर्ष पहले की बात है, आर्यसमाज मेरठ सदर में मेरा वेद प्रवचन कार्यक्रम चल रहा था। एक दिन अपने रात्रिकालीन प्रवचन मे मैंने यज्ञ के द्वारा वायु-शोधन होकर रोगनिवारक तथा स्वास्थ्य-वर्धक पर्यावरण बन जाने की बात कही। अगले दिन रात्रि के प्रवचन से पूर्व एक सज्जन मेरे पास आये और गत रात्रि के प्रवचन की पर्यावरण के शुद्ध होने वाली चर्चा की ओर मेरा ध्यान दिलाते हुए बोले "यज्ञ से दुर्गन्ध का नाश नहीं होता।" मैंने कहा "होता है।" वह तीव्र होकर बोले—"नहीं होता।" मैंने पुनः कहा "होता है श्रीमान् जी।" तीसरी बार वह और भी कड़ककर बोले 'नहीं होता।"

अबकी बार जब मैंने उन्हे पहला वाला ही उत्तर दिया किन्तु स्वर मेरा कुछ कड़ा हो चुका था तो वह बोले "सुगन्धि तो फैलती है किन्तु दुर्गन्ध का नाश नहीं होता।" तब मैंने पूछा कि दुर्गन्ध का नाश क्यो नहीं होता? तो वह बोले "दुर्गन्ध और सुगन्ध के परमाणु अलग-अलग होते हैं। अत हवन से सुगन्ध का प्रसारण होता है किन्तु क्योंकि दुर्गन्ध के परमाणु तो आकाश मे बने ही रहते हैं, इस कारण से दुर्गन्ध नष्ट नहीं हो पाती।

इतने वार्तालाप के पश्चात् मैंने उनसे परिचय पूछा तो उन्होंने यह बतलाया कि "मै यहाँ मेरठ कालिज मे कैमिस्ट्री पढ़ाता था।" बाद मे मुझे जानकारी हुई कि वह डी० एन० डिग्री कालेज के कैमिस्ट्री के अवकाश प्राप्त प्रवक्ता श्री गोयल जी हैं। मैंने कहा—"अच्छा तो आप मैकाले के शिकार हैं।" इस पर उनका मुख मण्डल तमतमा गया, किन्तु वह कुछ कह नहीं सके।

अब उन्होंने अपने को कैमिस्ट्री का प्रोफेसर बता दिया तो मैंने भी उसी स्तर पर वार्तालाप करना पसन्द किया और उनसे कैमिस्ट्री का ही यह प्रश्न पूछ लिया कि "परमाणु द्रव्य है या गुण? वह इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सके। मैंने उनसे दूसरी बार फिर यही प्रश्न किया—'प्रोफेसर साहब बताइये श्री परमाणु द्रव्य है या गुण? जब दूसरी बार भी वह कोई उत्तर न दे सके तो फिर मैंने यह पूछा कि "गन्ध द्रव्य है अथवा गुण?" वह तब भी चुप रहे। इस प्रश्न को भी पूर्व प्रश्न की भांति मैंने फिर दोहराया किन्तु उन्होंने फिर भी उत्तर नहीं दिया।

जब मै प्रश्न उनसे कर रहा था तब आर्यसमाज के मन्त्री श्री शान्तिप्रकाश जी मित्तल वहा आ चुके थे और वह बड़ी रुचि ले रहे थे, मेरे इन प्रश्नो म तथा साथ ही कभी मेरी ओर कभी प्रोफेसर गोयलजी के मुखमण्डल की ओर देख लेते थे। उन्हे निरुत्तर देखकर मुझे सूझा कि उदाहरण से अपनी बात इनके सम्मुख रखनी चाहिये। यह विचार कर मैंने उनसे निवेदन किया कि "मेरी बात समझने मे आपको परेशानी हुई है इसलिए मै एक उदाहरण देता हू किन्तु उससे पहले यह जानना चाहूगा कि आपने गणित तो पढ़ा ही होगा।" उन्होंने इसे स्वीकार किया तो फिर मैंने यह पूछा कि "गणित के अन्तर्गत सम्पत्ति के बटवारे के प्रश्न भी हल किये ही होगे?" उन्होंने यह स्वीकारा। इसके पश्चात् मैंने यह प्रश्न किया कि 'सम्पत्ति के बटवारे के प्रश्न को हल करते समय प्रश्न हल करनेवाले के पास क्या सचमुच कोई सम्पत्ति होती है?" तब उन्होंने नकार करते हुये यह कहा कि "केवल कल्पना कर ली जाती है कि मान लिया सम्पत्ति एक है।" तब लगते हाथों यह भी पूछ लिया फिर "इससे प्रश्न ठीक-ठीक हल हो जाता है?" वह बोले "हाँ", यदि हल करने वाले ने भाग-गुणा आदि ठीक-ठीक लगा लिया होता है तो उत्तर बिल्कुल ठीक आता है।"

अब मैंने उन्हे अपनी बात समझाने के लिए उनसे उनके क्षेत्र के ही भोजन का उदाहरण देते हुये कहा—"कल्पना कीजिये कि आपने कल उड़द की धुली दाल और बासमती के चावल खाये थे। दाल शुद्ध गाय के घृत से हींग व जीरे का छौंक लगाकर तैयार की गयी थी। चावलो पर ऊपर से भी गोघृत लगा दिया गया था, फुलका कासे के कटोरे मे पिघले हुए गोघृत मे डूबा था और साथ मे एक कटोरी में बूरा रक्खा था तथा उसमे भी गोघृत पड़ा हुआ था। यह सब पदार्थ सुगन्धित ही थे, दुर्गन्धित तो इनमे कोई पदार्थ था ही नहीं।" उन्होंने स्वीकार किया कि "सब सुगन्धित थे, कोई दुर्गन्धित नहीं था।" साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "दुर्गन्धित होते तो खाते ही क्यो?" मैंने पूछा आज प्रात काल जब शौचालय मे गये, पेट से सुगन्धि निकली या दुर्गन्धि? कल आपने खाये थे सुगन्धित पदार्थ आज प्रातः निकला दुर्गन्धियुक्त मल। इसका स्पष्ट ही यह अर्थ है कि परमाणु न सुगन्धित होते हैं और न दुर्गन्धित। वह तो सुगन्ध और दुर्गन्ध परिस्थिति के अनुसार कहिये अथवा अवसर के अनुसार संसर्ग से ग्रहण कर लेते हैं और परमाणु द्रव्य है तथा गन्ध गुण है, नैमित्तिक गुण—जो निमित्त से, कारण बन जाने या उपस्थित हो जाने पर ग्रहण और पृथक किया जाता है, स्वाभाविक गुण होता अर्थात् परमाणु सुगन्धि और दुर्गन्धि के हुआ करते तो अपने उस स्वाभाविक गुण को छोड़ नहीं सकते थे।

तीन-चार दिन पश्चात् प्रो० गोयल एक अन्य प्रोफेसर को साथ लेकर आये और बताया कि "आप आजकल मेरे स्थान पर नियुक्त हैं। अभी पिछले तीन वर्ष जर्मन रहकर आये हैं। वहाँ अनुसन्धानात्मक कार्य हेतु गये थे। आपके अनुसन्धान का विषय सूर्य की किरणो की आकाश मण्डल मे गति तथा आकाश-मण्डल और भूमण्डल पर उनका प्रभाव है।" फिर कहने लगे कि "मैंने आपके विषय मे इनसे चर्चा की तो यह आपसे वार्तालाप करने आये हैं।" सामान्य वार्तालाप के पश्चात् मैंने नवागन्तुक महोदय से कहा—"पूछिये, आप क्या पूछना चाहते हैं? मै जानता होऊंगा तो अवश्य बताऊंगा।" प्रसग में मैंने उनसे उनके अनुसन्धान का आधार पूछा-तो उन्होंने अथर्व वेद बताया। उन्होंने मुझसे दो प्रश्न किये। एक तो यह कि "क्या कहीं वेद मे ही लियम गैस का वर्णन है? और दूसरा "विश्व की बढ़ती हुयी जनसख्या की दृष्टि से खाद्य समस्या का हल? हीलियम गैस के विषय मे मैंने एक वेद वाक्य बताया—"शकमय धूम सूर्यमारात्" यह श्वेत धूम्र सूर्य को चारो ओर से घेरे हुए हैं। उन्होंने इसे विज्ञान सम्मत बताया और तुरन्त अपनी स्मृति-पत्रिका में लिख लिया। मैंने कहा न तो मुझे पूरा मन्त्र स्मरण है न इस मन्त्र का पता ही मेरी स्मृति मे है। यह परिश्रम आपको करना पड़ेगा, देख लीजिये, यथा सम्भव ऋग्वेद या अथर्ववेद में मिलेगा।" उन्होंने कहा "मै खोज लूगा।"

उनके दूसरे प्रश्न के उत्तर में मैंने उन्हे ऋग्वेद १-१३-६ तथा ऋग्वेद १-४४-१ के दो मन्त्र अपनी स्मृति पत्रिका मे से लिखा दिये, जिनमे सूर्य मे खाद्य सामग्री का भण्डार बताया गया है तथा सूर्य, पृथिवी और अन्तरिक्ष के द्वारा उनकी उपलब्धि का वर्णन है। वह इस सबसे बड़े सन्तुष्ट हुए और कहने लगे कि—"मैं कभी-कभी कोई प्रश्न सामने आने पर आपसे पत्र व्यवहार की अनुमति चाहूगा।" मैंने कहा मै सर्वदा इस सेवा के लिये तैयार रहूगा किन्तु विज्ञान मेरा विषय नहीं है। हां, वेदाध्ययन करते समय कोई मन्त्र अथवा सूक्त इस प्रकार का सामने आता है तो उस पर स्व-बुद्धि से मनन कर तत्सम्बन्धी अन्य सामग्री भी खोजकर उसे अपनी स्मृति-पत्रिका मे लिख लेता हू।

भारत के गौरव मय अतीत से प्रेरणा

ले० सतीश चन्द्र गुप्त एडवोकेट
उपप्रधान मण्डी बांस आर्य समाज मुरादाबाद।

कोई भी देश हो अथवा राष्ट्र उसके अतीत की गौरवमय ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि हुआ करती है जो सोते हुए देश राष्ट्र को समुन्नति एवम विकास की ओर ले जाती है और यह कहना एक अकाट्य सत्य है कि किसी भी देश राष्ट्र की समुन्नति विकास में उसके गौरव पूर्ण एवम गरिमा युक्त अतीत का महिमामय इतिहास तथा साहित्य एवम भावनामय संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

जब हम दासता की बेड़ियो मे जकड़े हुए थे तब चतुर अंग्रेजों ने जो इस तथ्य को जानते थे और इस कारण से उन अंग्रेजों ने हमारे महान् राष्ट्र के प्रेरक एवम गौरवमय इतिहास संस्कृति साहित्य एवम भाषा को योजनाबद्ध षडयन्त्र के अधीन नष्ट एवं विकृत करने का प्रयास किया था। लार्ड मैकाले की दूषित तथा विकृत शिक्षा पद्धति का समय रहते यदि विरोध न किया गया होता तो चतुर अंग्रेज हमारे गौरवमय अतीत को सदा के लिए नष्ट कर देते हमारे देव दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर इस देश, राष्ट्र जाति और मानवता पर असीम उपकार किये हैं उसमे से एक है अंग्रेजो की उक्त चाल को अपने ज्ञान से समझना और उक्त चाल को विफल करना और भारतीय जन मानस को सक्षम शुद्ध तथा सत्य इतिहास के परम ज्ञान की ओर उन्मुख करना।

अंग्रेजों ने भारतीय जनमानसके सच्चे और गौरवमय इतिहास को छिपाया और तोड़-मरोड़ कर तथ्य प्रदर्शित किये जो समाज व व्यवस्था के प्रतिकूल थे। वही अंग्रेज की देन आज के विद्यालयों मे देखी जा सकती है। कैसी विडम्बना है भारत को स्वतन्त्रता को ४१ वर्ष हो चुके हैं परन्तु हमारे बच्चों को बताया जाता है–

१– मनुष्य के पूर्वज बन्दर थे और उसकी पूछ घिसते-घिसते वह मनुष्य के रूप मे आ गये।

२– आर्य भारत के मूल निवासी नहीं है।

३– भारत की प्राचीनतम द्रविड़ संस्कृति है।

४– आर्य लोग अग्नि जल, वृक्ष जड़ों की पूजा अर्चना करते थे।

५– आर्य लोग मांस खाते थे तथा मदिरा का पान करते थे।

६– भारत के आर्य विदासी असभ्य तथा जंगली थे स्वाधीन भारत में शुद्ध इतिहास व इतिहास की रक्षा का प्रश्न अति महत्वपूर्ण है। परन्तु अतिखेद व आश्चर्य का विषय है कि भारत के गौरवमय अतीत के विषय में विषय की गम्भीरता को जानते हुए भी शासक दल अथवा किसी अन्य का भी अद्यावधि ध्यान तक नहीं जा रहा था और सच्चे अर्थों में सच्चे इतिहास को प्रदर्शित करने के विषय पर उपेक्षा की जा रही है।

अति गम्भीर चिन्तन निसंकोच रूप से यह दर्शा रहा है कि हमारे देश की अनेक राष्ट्रीय समस्याओं के मूल में अशुद्ध एवम मिथ्या इतिहास का प्रचार है विदेशी शक्ति ने भारत में हमारे अतीत प्रेरणा युक्त इतिहास को नष्ट करने का योजनाबद्ध कुचक्र चलाया था जो आज भी उसी प्रकार प्रचलित है और हम सब भारतवासी उसी पाप पूर्ण प्रपंच के शिकार हुए पड़े हैं।

जरा देखिये तो सही भारतीय इतिहास को कपट वेश में जो अतीत के वृतान्त विश्व भर के विद्यालयों एवम शोध संस्थानों में पढ़ाये जाते हैं वे जले पर नमक है अब उनमें अंग्रेजी समय को या उससे पूर्व के मुस्लिमकाल को स्वर्ण युग बता दिया जाता है।

आधुनिक भारतीय इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास की घटनाओं को जिस खूबी से तोड़-मरोड़ कर गौरव का परिधान पहनाया है उससे स्पष्ट है कि ऐसे इतिहासकार वास्तव में इतिहासकार नहीं थे। परन्तु हमें भूलना नहीं चाहिए कि एक इतिहासकार न महात्मा होता है न राजनीतिज्ञ/इतिहासकार का काम तो अतीत को खोजना है और इसलिए एक सच्चे और ईमानदार इतिहासकार का कर्तव्य है कि तथ्यों एवम घटनाओं का उसी काल क्रम चक्र के अनुसार उल्लेख करे जैसे वह घटित हुई है।

यह विषय अतीत की गरिमा का यूं ही समाप्त नहीं हो सकता क्योंकि हमारे इतिहास को विकृत करने में जहाँ अंग्रेजों का हाथ रहा वहाँ हमारे गौरवमय इतिहास को पौराणिक बन्धुओं ने इतिहास के व्यक्तियों को अवसर की चादर ओढा कर अविद्या अंध विश्वास और गुरुडम का परिचय दिया और इतिहास के महापुरुषों को मात्र इतिहास के ग्रन्थों में पूजा की वस्तु बनाने का उपक्रम उजागर किया है।

पौराणिक अंध युग में जिस अविद्या, चमत्कारों का समावेश भारतीय संस्कृति में किया गया उसके गम्भीर परिणाम जिनकी ओर पौराणिकों का ध्यान भी नहीं गया था आज उजागर हो रहे हैं जिससे हमारे देश एवम राष्ट्र में अविद्या एवम अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला है किसी ने कहा है "महापुरुषों का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि हम भी अपने जीवन को उनके हीसमान उच्च उदात्त आदर्श बना सकते हैं तथा जब हम इस संसार से विदा हो तो ऐसे चिन्ह छोड़ सकते है जिससे आने वाली सन्तति उसका अनुगमन कर सके "हाँ यह एक प्रमाणित तथ्य है कि महापुरुष का प्रेरक जीवन ज्योति स्तम्भ का कार्य करता है युगों-युगों तक आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रकाश तथा प्रेरणा प्राप्त करती है आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने लिखा है" पर जब इन ज्योति सत्य (प्रकाश के केन्द्र) को अति श्रद्धा वश ईश्वर बनाने का प्रयत्न किया जाता तब इन्हें अवतार बना कर अलंकारों और चमत्कारों से मढ़ने का उपक्रम किया जाता है तो चरित्र पूजा के स्थान पर चित्र पूजाचल पड़ती है और घोर पतन की एक नई राह खुल जाती है।

इसको भूलना नहीं चाहिए कि सत्य आधारित श्रद्धा कल्याणकारी है और अन्धश्रद्धा इतनी ही विनाश करने वाली है। राम,कृष्ण को ईश्वर बताकर और उसकी वाह-वाहलूटने के लिए पुराणिको ने ऐसे महापुरुषों के जीवन के साथ उनको बुद्धि विपरीत तथा अवैज्ञानिक चमत्कार पूर्ण गाथा यें रच कर इन महापुरुषों के महान् गौरवमय जीवन के प्रति खिलवाड़ किया है और पाप किया है ऐसे देव पुरुषों की शौर्य पूर्ण गाथाओं से क्रूर मजाक हुआ है साथ इन पुराणिकों द्वारा हम सब के लिए महाविनाश का मार्ग खोला गया है।

अन्यथा जिस देश और जाति के पास राम कृष्ण जैसे महापुरुष हो,

[शेष पृष्ठ ५ पर]

प्रदूषण और सांस्कृतिक क्रान्ति

श्री देवराज आर्य 'प्रभाकर' २५/३ कबाड़ी बाजार, रुड़की सहारनपुर]

★

वास्तविकता यह है कि विश्व के पर्यावरण में कार्बन-डाय-आक्साइड की वृद्धि धरती के तल का तापमान बढ़ा देगी; विश्व भर में जलवायु की गड़बड़ी उत्पन्न हो जायेगी। मनुष्य स्वयं प्रलय करा लेगा। यह चेतावनी वैज्ञानिकों द्वारा बार-बार दी जा रही है।

परन्तु मेरा अभिप्राय उस प्रदूषण से है जो सदियों से हमारी संस्कृति को दूषित किये जा रहा है।

कभी भारत देश की संस्कृति विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत थी। वह संस्कृति कब और कहां खो गई? वेद शास्त्रों का ज्ञान लुप्त हो गया। हम अन्धकार में डूब गये और धर्म को ही भूल गये।

वर्षों पहले महाभारतकार महर्षि व्यास ने धर्म की जो सर्वमान्य परिभाषा की थी। धर्म क्या है?—

'अपनी आत्मा के विरुद्ध अन्य व्यक्तियों के साथ आचरण नहीं करना चाहिये।' इस धर्म का निर्धारण करने में किसी ग्रन्थ या गुरु या पैगम्बर की आवश्यकता नहीं है। जिससे अधिक से अधिक प्राणियों का अधिक से अधिक हित हो वही सत्य है या वही धर्म है। भारतीय संस्कृति का उद्घोष है जिसमें—

> सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया.।
> सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु.ख भाग्भवेत ॥'

का वर्णन है। इसी में—"वसुधैव कुटुम्बकम्" वाली भारतीय संस्कृति की विशेषता चरितार्थ होती है। इसी प्रकार धर्म और राजनीति का सन्तुलन बना रहता है। जब धर्म के इस सही रूप को रिलीजन, मजहब, सम्प्रदाय या किसी पंथ का पर्यायवाची माना गया तभी हम अन्धकार में आ गये। विदेशी मतमतान्तरों का स्वागत हुआ। विदेशी आक्रमण हुए हम निर्बल हुए, परतन्त्र हुए, स्वतन्त्रता खो बैठे।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भी साम्प्रदायिक मान्यता को धर्म देने का यही दुष्परिणाम हुआ। इस्लाम मतानुयायी अपने से भिन्न मतावलम्बियों को काफिर कहते हैं। इस्लाम के उपासक किसी गैर इस्लामिक राज्य के प्रति निष्ठा न रखना अपना धर्म समझते हैं। इसी प्रकार मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आज राजनैतिक केन्द्र बन गये हैं जो एक दूसरे के विरुद्ध अपने भक्तों को उकसाते हैं। आजादी के बाद यही तरक्की है।

यही नहीं धर्म के नाम पर बच्चों की बलि दी जाती है मजहब के नाम पर लाशों को जिन्दा जला दिया जाता है दहेज के लिये पत्नी की हत्या कर दी जाती है। सांस्कृतिक प्रदूषण केन्द्र आज तमाम सार्वजनिक प्रतिष्ठान स्कूल-कालेज बन रहे हैं। युवक-युवतियां, छात्र-छात्रायें मादक पदार्थों के मकड़ जाल में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। हिंसा व सेक्स प्रधान फिल्मों का प्रचार किया जा रहा है। नहिलाओं का व्यापार, भ्रष्टाचार उभर रहा है। हर शै में मिलावट और काले धन से हाथ काले किये जा रहे हैं। दूरदर्शन पर भी 'तमस' और 'अमीर खुसरो' जैसे सीरियल दिखाने के बहाने भारत का इतिहास घड़ा जा रहा है। भारतीय संस्कृति को दूषित करने वाले कौन हैं? शासक वर्ग या भारत की जनता? स्वस्थ संस्कृति पर ही स्वस्थ राजनीति हो सकती है। हम इस देश के सेक्युलर—धर्म निरपेक्ष नहीं पंथ निरपेक्ष—संविधान की रक्षा तभी कर सकते हैं जब हम किसी भी साम्प्रदायिकता धर्म (मजहब) को राजनीति पर हावी नहीं होने देंगे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली भारतीय संस्कृति पर चलकर ही हमें सांस्कृतिक क्रान्ति लानी होगी।

★

'आर्य समाज, सीसामऊ, कानपुर का उत्सव'

आर्य समाज सीसामऊ तथा आर्य स्त्री समाज सीसामऊ, कानपुर का वार्षिकोत्सव १८-१९-२० नवम्बर ८८ तक समारोह पूर्वक होगा। जिसमें श्री स्वामी गुरुकुलानन्द जी सरस्वती (पिथौरागढ़) श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय अध्यक्ष, दयानन्द शोध पीठ, (चण्डीगढ़) श्री डॉ० गणेश दत्त जी शर्मा, प्राचार्य (गाजियाबाद) आचार्या डॉ० प्रज्ञा-देवी जी (वाराणसी) श्री आचार्य देवव्रत जी अवस्थी (लखनऊ) श्री ओ३म् प्रकाश जी वर्मा (यमुनानगर) एवं श्री नरदेव जी आर्य (भरतपुर) आदि विद्वान् पधार रहे हैं।

शोक समाचार

श्री सुखदेव प्रसाद जी गुप्त आर्य भूतपूर्व प्रधान समाज रानी सराय (आजमगढ़) का ९० वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कर्मठ आर्य समाजी एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिकजनों को धैर्य प्रदान करे।

भारत के गौरवमय अतीत से प्रेरणा

[पृष्ठ ४ का शेष]

रामायण तथा महाभारत जैसे अति ग्रन्थ हों वह जातियां सदियों विदेशों द्वारा पदाक्रान्त होती रहे और वह राष्ट्र क्या अब भी कथित स्वतन्त्रता को पाकर बौद्धिक दासता का जञ्जीरों में बुरी तरह जकड़ा रहता है डा० हेडगेवार ने लिखा है "जहां कहीं भी कर्तव्यशाली या विचारवान व्यक्ति उत्पन्न हुआ कि हम उसे अवतार की श्रेणी में धकेल देते हैं"।

यदि देखा जाये तो यह पोपापंथी एक भीषण राष्ट्रद्रोह है जहाँ यह सिद्धान्त मिथ्या है वेद विरुद्ध है बुद्धि विज्ञान तर्क नियम आदि के विपरीत है कैसी विडम्बना है कि हम आज भी हममें राम कृष्ण जैसे इतिहास पुरुषों को जिनके अतीत से प्रेरणा मिलती है काल्पनिक आदि बताये जाने की पृष्ठ भूमि तैयार कर स्वयं अपने हाथों से भारत के उज्ज्वल अतीत को मिटाने जैसा घोर पाप हम आज भी कर रहे हैं।

हम भूल कर रहे हैं कि हम युग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द को जिन्होंने अज्ञानता एवम अविद्या को समूल नष्ट करने के लिए एक आन्दोलन छेड़ा था उसको नमन करें और देश व राष्ट्र को अज्ञान से बचाने के लिए उसके गौरवमय अतीत को स्थाई बनाने के लिए वेदों का प्रचार व प्रसार करें।

कविता कलाप

आर्यजगत के गौरव पू० महात्मा नारायणस्वामी की पुण्य स्मृति में

★

उर है आकुल, अन्तर व्याकुल, मानस मे हाहाकार यहाँ।
रस कदम्ब कल्लोलमयी कविता का अब संचार कहाँ॥
रमणीय रामगढ़ घाटी में
इसके सुरभित मृदु प्रांगण में
आध्यात्म सुधा का सोमपान करते नित थे गुरुदेव यहाँ॥

(२)

वह गुरुवर की सुन्दर कुटिया छवि पाती सुरभित फूलों में।
था रमा सदा मानस जिनका सरिता संगम के कूलों में॥
सहसा ही सूनी आज हुई
है चिर अतीत की बात हुई
बटुगण सिर धुनते हैं अपना, गिरि गह्वर में पाषाणों में॥

(३)

इस सूने आश्रम को लखकर कितने भावुक बन जाते हैं।
मानस के उनके भाव यहाँ आंसू बनकर रह जाते हैं॥
विद्युत गति सा बढ़ता है दुःख,
हृदयों के आंखों के सम्मुख
होकर अधीर कर याद देव! देखे कितने ही आर्य यहाँ॥

(४)

इस पावन वैदिक आश्रम में गौरव वैदिक चर्चा होती।
आकर देखो अविरल गति से अध्यात्म सुधा इसमें बहती॥
इसको तुम यूं ही भूलो ना
सुनसान इसे तुम छोड़ो ना
प्रतिपल तम दूर भगाने को ऋषि की सुन्दर गाथा बहती॥

(५)

विद्युत गति सा द्रुत काल चक्र ऋषि स्मृति में रुक जाता है।
सम्मान इसी का करने को बादल भी झुक झुक जाता है॥
ऊषा की स्वर्ण रश्मि आकर
पाती खोया प्रकाश पाकर
चंचल मन ध्यानावस्थित हो टुक ठहर यहीं पर जाता है॥

(६)

आश्रम यह केवल नहीं रम्य वैदिक संस्कृति का तीर्थ यहाँ।
बहता अणु अणु के कण-कण में वेदों का अनहद नाद यहाँ॥
वैदिक संस्कृति के मृदु कण थे
सन्तों के पुण्य सहायक थे
आदर्श साधना बिना कौन करता इसका निर्माण यहाँ॥

(७)

हे वैदिक संस्कृति के स्वरूप! हिमगिरि गौरव! हे पुण्य धाम।
शत शत अतृप्त आत्माओं के ज्ञानी ध्यानी के शान्त काम॥
वन्दनीय स्वामी की तुम आशा
पावन श्रुति की गौरव भाषा
स्वर्गीय स्वामि सम शान्त खड़े आलिपित संस्कृत से सकाम॥

(८)

तुम गीता के शुभ कर्मयोग श्रुति का रहस्य समझाते थे।
जिज्ञासु भक्तों के हितार्थ हो शोध शोध अपनाते थे॥
प्राकृतिक सत्व ऊपर लाते
गाकर साम श्रुति गाने
आर्यों के गौरव पुण्यतीर्थ हो वैदिक छवि दर्शाते थे॥

(९)

है भाग्य चक्र कहता प्रतिपल जग में किसका गौरव अविचल।
कल तक जो थे साम्राज्य अटल हैं आज वही अस्थिर आकुल॥
पर गिरि गौरव तुम बने रहो
सम्भ्रान्त सुधीन्द्र समान रहो
तुम अमर रहो साकार रहो नारायण आश्रम पुण्य पटल॥

—आचार्य सुधीन्द्र शास्त्री एम० ए०, सिद्धान्त शिरोमणि, लखनऊ

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन संपन्न

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृहत अधिवेशन नागदा में २४, २५ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के कोने-कोने से आए १६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। निर्वाचन निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ—प्रधान—श्री इन्द्रप्रकाश गांधी शिवपुरी, मन्त्री—श्री प्रकाश आर्य एडवोकेट महू, कोषाध्यक्ष—श्री लखपतसिंह राणा शिवपुरी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगदेव जी बैठा भोपाल, भू-सम्पत्ति अधिष्ठाता—श्री शिवलाल शर्मा बड़नगर, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—कन्हैयालाल अजमेरा शाजापुर।

निर्वाचन

आ० स० मगला हर्बी (अलीगढ़)

प्रधान—श्री गोपीचन्द्र जी आर्य, मन्त्री—श्री शेरसिंह आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र महाशय

मुरादाबाद में वेद प्रचार एवं जन जागरण सप्ताह

आर्य समाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह एवं जन जागरण सप्ताह सोल्लास मनाया गया इस अवसर पर बिहार राज्य (नालन्दा) के डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी जी के गवेषणापूर्ण प्रवचन का आयोजन किया गया प्रवचन का विषय था "भारत की आजादी के निर्माण में क्रान्तिकारियों का कितना योग"। डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी ने अनेकों कालेजों में अपने प्रवचनों में वैदिक विचारधारा से छात्रों एवं छात्राओं को अवगत कराया।

मन की संकल्प शक्ति

[श्रीमती सावित्री रस्तोगी जवाहर नगर, मेरठ]

हर एक बुद्धिमान व्यक्ति इस बात को जानता है कि मानव गतिमान है, उन्नतिशील है। उन्नति का विचार जब मन में उदय होता है, अन्तःकरण बुद्धि के द्वारा परखा जाता है तब मनुष्य स्वयं निश्चय करता है, एक ऐसा ही निश्चय, जो आत्मा की प्रेरणा से होता है।

कार्य आरम्भ करने पर अपने प्रयत्न मे शिथिलता नहीं आने देनी चाहिये, उत्साह की शक्ति बढ़े तो उन्नति कभी नहीं रुकती। जिस व्यक्ति का उद्देश्य उच्च है उसे आत्म विश्वासी होना आवश्यक है। आलस्य प्रमाद, व अभिमान नहीं आने देने चाहिये। उन्नतिशील व्यक्ति विनयशील हो तो अवश्य लोकप्रिय होता है। क्रोध, द्वेष, प्रतिकार की भावना दृढ़ संकल्प शक्ति को क्षीण कर देती है।

मन की एकाग्रता, स्थिरता, मन की शान्ति, निश्चलता कार्य की साधना के लिए अत्यन्त आवश्यक है। सशक्त मन और स्वस्थ मन ही श्रद्धामयी बुद्धि द्वारा कर्त्तव्य-कर्म मे लगता है। यह लिखना भी अनावश्यक नही है कि मनुष्य के आहार-विहार तथा कर्म चेष्टा के अनुकूल ही मन की स्थिति होती है।

विचारणीय तथ्य है कि हम अपनी अमर सत्ता, अपनी शक्ति को पहचानते हुए भी जीवन ज्ञान, प्रेम और आनन्द के स्रोत भगवान से सम्बन्ध जोड़ रहे। यह ज्ञान योग, कर्मयोग और भक्ति योग से सम्भव होता है। सत्ज्ञान भगवान की प्रार्थना से मिलता है सत्कर्म मे रुचि, भगवान की उपासना से दृढ़ होती है। जनता जनार्दन की निस्वार्थ सेवा, सच्ची प्रभु भक्ति है, वही समन्वय योग है। हमारे विचार आचार आदर्श के अनुकूल रहे तब सफलता व पूर्णता मिलती है। हमारे कार्य मानवों के हृदयों मे लिखे हुए हो।

अपने आपको कार्य के लिए समाहित कर देने का स्वभाव कार्य की सम्पन्नता मे दूसरा सहायक है जो मन को उत्साहित किये रखता है। जब हम उस कार्य के लिये अपने आपको समर्पित कर देते है इसी को कर्मयोग कहते है।

महर्षि दयानन्द ने जब अपने देश की दुर्दशा देखी तो उनका हृदय रो उठा। इसी संकल्प शक्ति के सहारे घर छोड़कर सारे देश का पैदल ही भ्रमण किया। जन सम्पर्क किया पता लगा कि लोग अपने आपको भूल चुके हैं, भगवान को भूल चुके हैं, धर्म कर्म को भूल चुके है, वह कर्म क्षेत्र मे उतर पड़, इसी शक्ति के सहारे आगे बढ़ते रहे। विष पीते रहे, अमृत बांटते रहे। इसी शक्ति के सहारे अमर हो गये।

*

शोक समाचार

आर्यसमाज सासनी द्वार (अलीगढ़) की कर्मठ आर्य कार्यकर्त्री व आर्य सभासद श्रीमती कमला देवी का ७८ वर्ष की आयु में १९-९-८८ को निधन हो गया।

प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनो के धैर्य हेतु प्रार्थना है। सभा मन्त्री

दस दिनों में संस्कृत बोलना सीखें

विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत हमारे देश भारतवर्ष की सांस्कृतिक समग्रता की प्रतीक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, विश्व-बन्धुता तथा विश्व शान्ति की स्थापना हेतु संस्कृत भाषा का ज्ञान प्रत्येक भारतीय के लिये आवश्यक है।

'संस्कृत' भारतवर्ष में प्रचलित सभी प्रादेशिक भाषाओ का मूल शुद्ध रूप है। सामान्यतः लोग संस्कृत को एक कठिन भाषा समझते हैं परन्तु आधुनिक शिक्षण पद्धति से बिना रटे और बिना व्याकरण पढ़े केवल प्रत्यक्ष व्यवहार के माध्यम से संस्कृत भाषा मे मात्र दस दिनों में ही बोलने की क्षमता प्राप्त की जा सकती है।

संस्कृत प्रेमियों से निवेदन है कि लखनऊ नगर के विभिन्न क्षेत्रों मे आयोजित किये जाने वाले दस दिवसीय सरल संस्कृत सम्भाषण शिविर में भाग लेकर संस्कृत भाषी बनें। निवेदक-

१-मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०,
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष-४५९९३ का०, ७०३२ नि०

२-मनोरमा तिवारी, प्राचार्या महिला विद्यालय अध्यक्ष सार्वदेशिक संस्कृत समन्वय समिति समन्वय कुटीरम् ई-१०५२, राजाजीपुरम्, लखनऊ-२२६०१७ दूरभाष-४४५३४

३-लक्ष्मी निवास पाण्डेय संयोजक-संस्कृत सम्भाषण शिविर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ-अलीगंज, लखनऊ-२

★ कार्यक्रम ★

२५ अक्टूबर ८८ से आर्यसमाज मन्दिर गणेशगंज, लखनऊ
समय-सायं ६ से ७ बजे तक

१४ नवम्बर ८८ से-आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में।

सौजन्य-आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

महापुरुषों के सोलह श्रेष्ठाचार

(१) शुचिता ·· (२) साहस ··· (३) सत्य ··· (४) सुशीलता-
··· (५) समरसता ·· (६) सुन्दर व्यवहार;
(७) ··· स्वास्तिक सर्वशुभंकी शान्ति-
(८) ··· श्रेष्ठ न्याय (९) ·· सज्ञान (१०) सहकार;
(११) ·· सुभग सभ्यता (१२) ··· संस्कृति-
(१३) स्वतन्त्रता (१४) ·· करुणा (१५) ··· लोकोपकार-
(१६) ··· मृदु मानवता, सभी महापुरुषो--
के सोलह श्रेष्ठाचार।

-राजेन्द्र वाग्नायण २/२०२ विश्वास खण्ड-२,
गोमतीनगर, लखनऊ-१६

आर्यसमाज दतियाना (मुजफ्फरनगर) में वेद प्रचार सप्ताह

प्रति वर्ष की भांति वेद प्रचार सप्ताह, श्रावणी एवं जन्माष्टमी समारोह धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन यज्ञ, प्रवचन तथा वेदकथा हुई। इस वर्ष पूरा वेद प्रचार सप्ताह हरिजनों के यहां सम्पन्न हुआ जिसमे आर्यसमाज के सभी कार्यकर्त्ता बड़ी श्रद्धा से उक्त कार्यक्रम में भाग लेने प्रतिदिन आते रहे और हरिजनो के यहां जलपान करते रहे। कई हरिजन भाइयों को यज्ञोपवीत दिया गया। आर्यसमाज के सभी कार्यकर्त्ताओं ने श्री ईश्वरचन्द पुत्र श्री सीताराम वाल्मीकि के निवास पर जाकर एक दिन यज्ञ किया और उनके द्वारा तैयार किया यज्ञ शेष ग्रहण किया। ग्रामीण जनता इससे बहुत प्रभावित हुई।

मेरठ सभा प्रधान जी का अभिनन्दन

सद्भावना, एकता एवं समिति की ओर से गांधी जयन्ती पर टाऊन हाल मेरठ में सद्भावना, एकता तथा सौहार्द दिवस मनाया गया। इस अवसर पर नवाब कोकब हमीद, खाद्य एवं ऊर्जा राज्यमंत्री उ०प्र० भी उपस्थित थे। इसके संयोजक श्री गंगाशरण जी त्यागी थे। इस अवसर पर नगर के ११ सम्भ्रान्त व्यक्तियों को अभिनन्दित किया गया जिनमें आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी भी थे जिनकी नगर में निःस्वार्थ सेवाओं को ध्यान में रखते हुए मन्त्री जी ने उन्हें प्रशस्तिपत्र भेंट किया तथा श्री राजेन्द्र प्रसाद जी गोयल ने उन्हें मेडल देकर सम्मानित किया।

मान्य लेखकों की सेवा में निवेदन

दीपावली के अवसर पर आर्यमित्र प्रति वर्ष की भांति अपना दीपावली विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। इसमें प्रकाशन हेतु मान्य लेखक अपने सूचना मक, राष्ट्रीय एवं वैदिक विचारों से ओतप्रोत प्रेरक लेख, कविताएं आदि मुझे विलम्बतम ३० अक्टूबर तक भेज देने की कृपा करें।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

उ०प्र० खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा बाल चित्रकला प्रतियोगिता का गांधी जयन्ती के अवसर पर आयोजन

खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड, उ० प्र० लखनऊ में रविवार दि० २ अक्टूबर को गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में बाल चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी। चित्रांकन के लिए विषय थे निसर्ग के उपहार, तथा (२) पर्यावरण की रक्षा कीजिए।

उपरोक्त प्रतियोगिता में दयानन्द विद्या मन्दिर लखनऊ की कक्षा ५ की छात्राएं कु०वर्षा शुक्ला ने प्रथम तथा कु०मीना श्रीवास्तव ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। छः वर्ष से कम आयुवर्ग में दयानन्द शिशु मन्दिर की छात्रा कु०मंजुलिका प्रमोद ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। दयानन्द शिशु मन्दिर के ही कु० यश गौरव मिश्र, कु० तूलिकादास गुप्ता तथा तरुण संन्यासी को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार वितरण उ० प्र० के लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री मुर्तजाहुसैन जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पुरस्कृत छात्राओं को बहुत-बहुत बधाई।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

गांधी जयन्ती पर शहीदों की विधवाओं का सम्मान

हमारा बिरादरी मेरठ शहर की ओर से २-१०-८८ को गांधी जयन्ती के अवसर पर जाफना में शहीद हुये मेरठ जिले के शान्ति सैनिकों की ५ विधवाओं को सिलाई की मशीनें दी गईं। यह कार्य श्री पं० इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की प्रेरणा से किया गया था। इस अवसर पर प्रधान जी ने शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा इस कार्यक्रम के उनके अधिकारियों का साधुवाद किया कि उन्होंने मेरे कहने पर शुभ कार्य को किया। सभा के युवा अधिकारी श्री महेन्द्रप्रताप खुराना तथा श्री सुभाष मोहन को भी प्रधान जी ने आशीर्वाद दिया।

आवश्यक सूचना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ का वृहद अधिवेशन तथा निर्वाचन २३ अक्टूबर रविवार कार्यालय वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ़ पर सम्पन्न होगा। समस्त जिले की आर्यसमाजों से निवेदन है कि उक्त तिथि को निर्वाचन में भाग लें।

डा० विजयपालसिंह आर्य मन्त्री जिला सभा, अलीगढ़

श्री दरबारीलाल जी सर्वाधिक वोटों से विजयी

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की सीनेट के स्नातक-स्तरीय सन् १९८८ के चुनावों में श्री दरबारी लाल संगठन सचिव डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री समिति चित्र गुप्त रोड नई दिल्ली ने विजय प्राप्त की।

श्री बाबू दरबारी लाल जी जन्मजात वैदिक धर्मी हैं। आप कुशल प्रशासक, सुयोग्य अनुभवी, प्रसिद्ध शिक्षाविद् व्यक्तित्व हैं। आपने देश-विदेश में अपने इस कार्य-काल में डी० ए० वी० संस्थाओं का जाल बिछा दिया है आज देश में पांच सौ के लगभग डी० ए० वी० संस्थाएं विभिन्न प्रकार की शिक्षा देकर भारत का नवनिर्माण कर रही हैं। इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से आपने वैदिक धर्म का पावन सन्देश देश-देशान्तरों में फैलाकर डी०ए०वी० का नाम ऊंचा किया है मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की ओर से मा० दरबारी लाल जी को हार्दिक बधाई देता हूं।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

योग साधना शिविर रामगढ़

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ (नैनीताल) में २३ सितम्बर से २९ सितम्बर तक योग साधना शिविर अत्यन्त उत्साह के साथ स्वामी जगनानन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें दिल्ली के तथा उत्तरप्रदेश के साधक पधारे।

मुस्लिम नवयुवक का वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक ११-९-८८ को आर्यसमाज उतरौला (गोंडा) में एक मुस्लिम युवक श्री मुन्नालाल पुत्र श्री सिद्दीक अहमद ग्राम जाफराबाद (गोंडा) ने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। इसका नाम रामानन्द आर्य रखा गया। शुद्धि संस्कार श्री जगदीश प्रसाद मन्त्री आर्यसमाज उतरौला द्वारा सम्पन्न कराया गया।

दि० ३-९-८८ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार श्रीकृष्ण जन्मदिवस पर समता दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया।

आ०स० टटीरी में वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) में २७-८ से ३-९-८८ तक वेद प्रचार सप्ताह एवं समता दिवस ससमारोह मनाया गया अनेक विद्वानों द्वारा नित्यप्रति प्रवचन हुए। ३-९ को कृष्ण जन्मोत्सव एवं सामूहिक सत्संग में श्री सत्यव्रत राजेश (आचार्य गुरुकुल कांगड़ी) श्री वेदप्रकाश शास्त्री, श्री नरेशपाल जी आदि विद्वानों के उपदेशों तथा भजनों से जनता बहुत प्रभावित हुई।

फिजी की नई सरकार द्वारा हिंदुओं को ईसाई बनाने का कुचक्र

भारत सरकार से हस्तक्षेप करने की माँग

कर्नल राबुका ने फिजी में सैनिक आधार पर नई सरकार का गठन करके संविधान में साम्प्रदायिक आधार पर अनेक परिवर्तन किये हैं जिनमें भारतीय मूल के बहुसंख्यक जनसमुदाय को ईसाई बनाने का कुचक्र चलाया गया है।

उक्त घटना पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने बताया कि फिजी में भारतीय मूल के ६ लाख ५० हजार लोग रहते हैं जो फिजी की जनसंख्या के अनुपात से बहुसंख्यक हैं। किन्तु कर्नल राबुका ने नये संविधान में साम्प्रदायिक विष घोलकर यह घोषणा की है कि फिजी में यदि भारतीयों को रहना है तो ईसाई बनकर ही रहना होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आज के युग में तानाशाही नहीं चल सकती है, क्योंकि भारतीय लोगों से ही फिजी का विकास हुआ है। उन्होंने अपना खून पसीना बहाकर वहां भूमि सुधार, खेती बाड़ी, व्यापार तथा उद्योग धन्धों आदि सब पर अपनी कड़ी मेहनत की जबरदस्त छाप छोड़ी है।

श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने फिजी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सर्वप्रथम १५ मई १८७९ को लियोनीदास नामक पानी के जहाज से अंग्रेजी सरकार ने ४६३ भारतीय मजदूरों को फिजी में उतारा था। उस समय वहां किसी प्रकार का विकास नहीं था और न सड़कें व खेतीबाड़ी का ही प्रबन्ध था। उद्योग धन्धों की तो चर्चा करना भी व्यर्थ है इसके बाद भारी संख्या में लोग वहां गए और उस छोटे से देश को समृद्धि की ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया।

आर्यसमाज ने फिजी में हिन्दी और भारतीय भाषाओं का जोरदार प्रचार किया। कई समाज मन्दिर व स्कूल खोले गये। हिन्दू जनता ने भी अपने अनेक मन्दिर व धर्म स्थानों की स्थापना की। कर्नल राबुका के सत्ता संभालने से पूर्व भी पिछली सरकार ने भारतीय लोगों को उनकी जनसंख्या के आधार पर पूर्ण अधिकार दे रखे थे। किन्तु राबुका की सैनिक सरकार पद भार संभालने के पश्चात् संविधान में आमूल-चूल परिवर्तन करके भारतीय मूल के लोगों को सब प्रकार की सुविधाओं से वंचित करने का षड्यन्त्र रचा और बहुसंख्यक भारतीय समुदाय को ईसाई बनने का आदेश दिया।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने यह रहस्योद्घाटन किया कि फिजी की पूर्व सरकार में ३ हजार फौजी जवान थे जो अब बढ़ाकर ५ हजार कर दिये गये हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले दिनों कुछ हिन्दू युवकों को लेकर वह प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के निजी सलाहकार श्री आनन्द शर्मा से मिले थे।

स्वामी जी ने भारत सरकार से मांग की है कि—

[१] भारतीय मूल के निवासियों के धर्म की रक्षा के लिये फिजी सरकार पर तुरन्त दबाव डाला जावे। तथा—

[२] फिजी के इस साम्प्रदायिक षड्यन्त्र के मामले को सुरक्षा परिषद् मे उठाया जावे।

श्री स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी और गृह मन्त्री श्री बूटासिंह को भी विशेष पत्र लिखकर भारतीय मूल के लोगों के धर्म की रक्षा के लिए तुरन्त उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

सच्चिदानन्द शास्त्री

महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

मेरठ में गाँधी जयन्ती पर समता सहभोज

दि० २-१०-८८ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में गांधी जयन्ती एवं स्व० प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री जी का जन्म दिवस मनाया गया। प्रातःकाल वैदिक संध्या एवं दैनिक यज्ञ से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। आर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओं ने "रघुपति राघव राजा राम" भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आधुनिक परिवेश मे महात्मा गांधी एवं महर्षि दयानन्द" विषय पर विचार गोष्ठी का आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री मामसिंह वर्मा पूर्व सांसद ने कहा कि उन्हें गांधी जी एवं शास्त्री जी का सानिध्य प्राप्त हुआ था। श्री वर्मा जी ने इन दोनों महानुभावों के साथ अपने जीवन के अनेक संस्मरण सुनाये जिनसे उन्हें बड़ी प्रेरणा प्राप्त हुई। मेरठ कालेज के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष श्री डा० ओमशरण गुप्ता ने अपने प्रवचन में महात्मा गांधी तथा ऋषि दयानन्द की तुलनात्मक व्याख्या की। उनका कथन था कि दोनों राष्ट्र भक्त, समाज सुधारक एवं पाखण्ड विरोधी थे। दोनों ही उपदेश देने में कम ध्यान देते थे परन्तु उन उपदेशों को अपने जीवन में उतारते थे। डा० गणेशदत्त शर्मा ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी विश्व के एकमात्र ऐसे महापुरुष हुये हैं जिन्होंने कहा कि मेरा व्यक्तिगत कोई दर्शन नहीं है बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनिमुनि तक इसके रचयिता हैं। डा० निरूपण विद्यालंकार ने कहा कि दयानन्द जी तथा गांधी जी दोनों ही हिन्दू धर्म में व्यापक सुधार चाहते थे तथा उस कार्य में बहुत हद तक सफल भी हुये। गांधी जी के चिन्तन में राजनीति का तथा दयानन्द जी के चिन्तन मे धर्म का समावेश था। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने कहा कि दयानन्द जी तथा गांधी जी ने भारत को भाग्यवाद से हटाकर पुरुषार्थ वाद की ओर लगाया। गांधीजी गीता का जीवित स्वरूप थे। गांधीजी नेगीता के कर्म, सत्य व अहिंसा को अपने जीवन में ढालकर दिखा दिया था। राज सत्ता में शास्त्री जी गांधी जी के विचारों के अत्यन्त निकट थे। शास्त्री जी पर दयानन्द जी तथा गांधी जी के विचारो का व्यापक प्रभाव पड़ा।

इस कार्यक्रम मे हरिजन, जाटव तथा अन्य पिछड़े वर्ग के व्यक्ति भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभा के अन्त में सभी वर्ग समता-सहभोज में सम्मिलित हुये।

आवश्यक सूचना

प्राय: सभा को यह शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं कि सभा के भजनोपदेशक अपना हारमोनियम (बाजा) आदि प्रचार स्थान पर नहीं ले जाते हैं, जिससे प्रचार कार्य में बाधा पड़ती है, अतः सभी भजनोपदेशकों को सूचित किया जाता है कि अपना-अपना बाजा साथ अवश्य ले जांय, कृपया अच्छी तरह नोट करें।

२–सभा के अन्तर्गत उपदेशक, भजनोपदेशक आदि प्राप्त मार्ग-व्यय की रसीद नहीं काटते हैं, इस सन्दर्भ में आप सभी को सूचित किया जाता है कि समस्त प्राप्त धन का विवरण सहित रसीद काटें, अन्यथा शिकायत प्राप्त होने पर सेवा से मुक्त किया जा सकता है।

मनमोहन तिवारी

मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

भूल सुधार

११ सितम्बर ८८ के अङ्क में प्रकाशित झांसी के चुनाव को कृपया निम्नवत् पढ़ें—

निर्वाचन–

आर्यसमाज सीपरी बाजार झांसी

प्रधान–श्री नाथूराम आर्य, मन्त्री–श्री माताप्रसाद त्रिपाठी

कोषाध्यक्ष–श्री निहालचन्द बजाज

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी

प्रधान–श्री मदन मोहन सिटोरिया, मन्त्री–श्री जगदीश चन्द्र बाधवा

कोषाध्यक्ष–श्री निहालचन्द्र बजाज

आर्यसमाज अलीगंज (एटा)

प्रधान–श्री रमेशचन्द्र गुप्ता, मन्त्री–श्री राजेशकुमार गुप्त

उपप्रधान–श्री आज्ञाराम गंगवार, कोषाध्यक्ष–श्री गेंदालाल जी गुप्ता

मन्त्री जिला सभा

आर्यसमाज मन्दिर शास्त्री नगर–विजयनगर, कानपुर

प्रधान–श्री सोमेश्वर प्रसाद आर्य, मन्त्री–श्री रामबली आर्य

कोषाध्यक्ष–श्री परशुराम

विद्यार्य सभा की परीक्षा सम्बन्धी विज्ञप्ति

अध्ययनरत कतिपय वयवर्ग के छात्र। छात्राओं में उच्च नैतिक विचारों एवं वैदिक मान्यताओं के प्रति आस्था उत्पन्न करने की दृष्टि से, प्रदेशीय विद्यार्य सभा इस वर्ष भी आगामी दिसम्बर १९८८ के अन्तिम सप्ताह में धर्मरत्न, धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण एवं धर्माधिकारी परीक्षाओं का विभिन्न केन्द्रों में संचालन कर रही है। कक्षा १–५ तक के छात्रों के लिए "धर्मरत्न" परीक्षा का विशेष संचालन इस वर्ष से किया गया है।

आर्य समाज द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं, दयानन्द बाल मन्दिरों आदि के समस्त प्रधानाचार्य कृपया छात्रों को इन परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें और केन्द्र की स्थापना हेतु हमें लिखें। माधवसिंह, मन्त्री

प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

वार्षिकोत्सव गुरुकुल ऐरवा-कटरा

इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुं० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' की सूचना के अनुसार आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा जिला इटावा का सप्तम वार्षिकोत्सव दि० २७–१०–८८ से ३०–१०–८८ तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर इस सभा के माननीय मन्त्री श्री पं० मनमोहन जी तिवारी दि० ३०–१०–८८ को होने वाले एकता सम्मेलन में मुख्य अतिथि तथा इस सभा की मुख्य निरीक्षिका डा० आशारानी जी प्राचार्या मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेंगी। मान० मन्त्री जी, सभा ने इस अवसर पर आर्यजनों से, गुरुकुल पहुंचकर उसे तन, मन, धन से सहयोग देने की अपील की है। —विश्वम्भरदयाल गुप्त

आर्यसमाज नजीबाबाद

प्रधान–श्री चन्द्रप्रकाश आर्य, मन्त्री–श्री सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल एडवोकेट

कोषाध्यक्ष–श्री विजय कुमार बंसल

आर्य कन्या इण्टर कालेज, प्रबन्ध कमेटी, नजीबाबाद

प्रधान–श्री रामकुमार अग्रवाल, मैनेजर–श्री क्रान्तीकुमार आर्य

कोषाध्यक्ष–श्री विजयकुमार बंसल

—आर्यसमाज नजीबाबाद में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक २७ अगस्त ८८ से ३–९–८८ तक मनाया गया। प्रतिदिन प्रभात फेरी निकली, यज्ञ प्रवचन हुए तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज नजीबाबाद की कन्याओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये गये।

उत्सव

आर्यसमाज नगला महेश्वरी (बिजनौर) का द्वितीय वार्षिकोत्सव दि० २५, २६, २७ अक्टूबर को मनाया जा रहा है जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध वक्ता व उपदेशक तथा आर्य नेता पधार रहे हैं।

आर्यसमाज जलीर (बिजनौर) का ३५ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जलीर (बिजनौर) अपना ३५ वां वार्षिकोत्सव धूमधाम एवं हर्षोल्लास पूर्वक २१ से २४ अक्टूबर तक मना रहा है।

सामवेद यज्ञ

आर्य समाज वेद मन्दिर सत्संग मण्डल चांदपुर (बिजनौर) का वार्षिक उत्सव तथा सामवेद यज्ञ महात्मा दयानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में २५ से ३० अक्टूबर तक होगा।

[स्व० पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिए—]

निर्णय के तट पर (भाग ४) की प्रकाशन योजना का

विवरण पत्र

उक्त ग्रन्थ के अब तक तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें सतावन शास्त्रार्थों का समावेश हो चुका है, परन्तु जो शास्त्रार्थ सामग्री हमारे पूर्ण प्रयास करने के बावजूद भी इन तीनों खण्डों में नहीं आ पाई, उसे अब चौथे भाग में दिया जावेगा। इस चौथे भाग का प्रारूप भी पूर्व छपे भागों की भांति ही रहेगा, पेज भी ४०० के लगभग ही होंगे। रही सामग्री की बात? पूर्व छपे तीनों खण्ड इसका परिचय स्वयं दे रहे हैं।

स्वर्गीय, शास्त्रार्थ महारथी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छानुसार हमने सभी शास्त्रार्थ सामग्री को प्रकाश में लाने का निश्चय किया है। अतः जो भी शास्त्रार्थ विषयक सामग्री पूज्य अमर स्वामी जी महाराज के पास थी, उसको वह प्रकाशनार्थ हमें दे गये थे, अब उनकी अनुपस्थिति में हमारा उत्तरदायित्व और भी ज्यादा हो जाता है, इसलिए हमारा प्रयास रहेगा कि हम उनकी अन्तिम इच्छा को पूरी कर, इस भावना के साथ-साथ हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारे द्वारा कोई ऐसा कार्य नहीं होगा, जिससे उस दिवंगत पवित्र आत्मा के नाम को कलंक लगे।

यह प्रकाशन कार्य हम व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं कर रहे, इसलिए ग्रन्थ के प्रारूप को अच्छे से अच्छा बनाया जावेगा पूर्व छपे ग्रन्थों के तैयार करने में देरी के अनेकों कारण रहे, जिनका परिचय आपको उन पूर्व छपे तीनों भागों में मिल जावेगा।

इस ग्रन्थ के भाग-४ का मूल्य वर्तमान मंहगाई को देखते हुए छपने के बाद दो सौ रु० होगा, जो सज्जन अब इसके ग्राहक बनेंगे, उन्हें लागत मात्र अस्सी रु० में दिया जावेगा, जिसके लिए आप अभी केवल तीस रु० भेजकर अपना पञ्जीकरण करा सकते हैं। शेष पचास रु० ग्रन्थ के तीन हिस्से छपने के बाद लिए जायेंगे, ताकि ग्राहकों को ग्रन्थ प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़े।

हमारी ओर से ग्रन्थ के प्रकाशन की तैयारी आरम्भ हो गई है। ग्रन्थ की प्रतियाँ बुकिंग के आधार पर ही प्रकाशित कराई जायेंगी, इसलिए—"मात्र तीस रुपये प्रति पुस्तक के लिए भेजकर अपनी प्रतियां अधिक से अधिक संख्या में बुक करावें।" एवं पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की "अन्तिम इच्छा पूर्ति" मे सहयोगी बनें।

यह विशेष छूट की व्यवस्था ३१ दिसम्बर १९८८ तक रहेगी।

इस ज्ञान यज्ञ में जो सज्जन अपना आर्थिक सहयोग देना चाहे वह दिल खोलकर दें, उनके लिए यह यश व पुण्य कमाने का एक अच्छा अवसर है।

कोई भी राशि मनीआडर या बैंक ड्राफ्ट जो "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद" के नाम हो रजिस्ट्री से भेजें, चैक स्वीकार नहीं किए जायेंगे। इस भाग ४ में निम्न शास्त्रार्थ महारथियों के शास्त्रार्थ संग्रहित किए जायेंगे।

शास्त्रार्थ कर्त्ता

१—सर्वश्री अमर स्वामी जी महाराज, २—पं० रामचन्द्र देहलवी, ३—पं० आर्य मुनि जी, ४—पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, ५—पं० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर, ६—पं० राजाराम जी, ७—पं० विश्वबन्धु जी, ८—पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, ९—पं० रामगोपालजी, १०—पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी, ११—पं० मनसाराम जी वैदिक तोप, १२—ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी, १३—पं० गङ्गा प्रसाद जी उपाध्याय, १४—स्वामी ब्रह्ममुनि जी, १५—पं० बालकृष्ण शर्मा, १६—डा० श्रीराम आर्य, १७—पं० मुरारीलाल जी शर्मा, १८—पं० देवेन्द्रनाथ जी सांख्य तीर्थ आदि दिग्गज विद्वानों की जो शास्त्रार्थ सामग्री इस भाग—४ में आयेगी जिसे देखकर आप चकित रह जायेंगे।

देश व विदेशों से पूर्व छपे ३ खण्डों के बारे में प्रशंसा-पत्र लगातार आ रहे हैं। आप लोगों का सहयोग रहा तो मै इस लुप्त सामग्री को प्रकाश में ला सकूंगा जिसको प्रकाश में लाने हेतु आर्यजगत के महाविद्वान, शास्त्रार्थ महारथी श्री पूज्य अमर स्वामी जी महाराज जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगे रहे, और फिर अन्त में वह सामग्री मुझे सौंपकर इस असार-संसार से विदा हो गये।

इस स्थिति में हम सभी आर्यों के लिए यह एक उस दिवंगत पुण्य आत्मा की चुनौती है, जिसे हमें स्वीकार कर उनके सपनों को साकार रूप देना है।

इसलिए आपसे प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ की बुकिंग अधिक से अधिक संख्या में करवायें तथा इसमें दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दें। तभी यह महान ज्ञान यज्ञ सफल हो सकेगा। विशेष जानकारी के लिए प्रकाशन से सम्पर्क करें। वैसे हमारे साहित्य के मुख्य वितरक—"गोविन्द राम—हासानन्द—नई सड़क दिल्ली-६" से भी पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं।

विदुषामनुचर :—
'लाजपत राय अग्रवाल'

सम्पर्क "सूत्र"— **अमर स्वामी प्रकाशन विभाग**

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद—२०१००१ (उ० प्र०)

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन पी ७६
आश्विन शुक्ल ६
१६ अक्टूबर रविवार, १९८८ ई०

आर्य

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह सितम्बर १९८८ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर ३०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क ३०) रुपये हो गया है।

३५१, ९६३, १४८०, २४१५, २७८२, २९९१, ३०६७, ३०७३, ३०७७, ३०९०, ३०९७, ३१९६, ५०२७, ५९२१, ५९४८, ६०३५, ६७०१, ६८०१, ६८२२, ७०१२, ७०१५, ८१०६, ८३३१, ८३७७, ८६६०, ९०८७, ९२४२, ९७१४, ९९८०, ११२४३, ११२७०, ११२७२, ११२७३, ११९९१, ११९९४, १२१९०, १२४०७, १२७२३, १२७३२, १२९६४, १२९८४, १३१९८, १३२०२, १३२०८, १३२३०, १३२३५, १३५९३, १३५९८, १३६०२, १३६०४, १३६०९, १३९८५, १३९८७, १३९९४, १४००४, १४००६, १४०१०, १४०१५, १४०३९, १४०४०, १४०८२, १४०४४, १४०४६, १४०४७, १४३३८, १४३३९, १४३४०, १४३४१, १४३४२, १४३४४, १४३४५, १४३४६, १४३४७, १४४००, १४४०१, १४४०२, १४४०३, १४४०४, १४४०५, १४४०६, १४४०७, १४४०८, १४४०९, १४४१०, १४४११, १४४१२, १४४१३, १४४१४, १४४१५।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए मुद्रक श्री आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अवैतनिक रूप से एम०पी० प्रिन्टर्स (मिर्जापुर निवासी) हजरतगंज, लखनऊ में श्री विश्वप्रकाशजी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२८-२-८४

आश्विन शुक्ल १३ रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक २३ अक्टूबर १९८८

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

सहायक सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०,
गाजियाबाद

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष ४१

अङ्क ४२

वीरपर्व विजयादशमी का आह्वान

प्रेता जयता नर इन्द्रो व शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽनाधृष्या यथासथ ॥

(नर.) नरो, आर्यो (प्र इता) विजय के लिए प्रयाण करो । (जयता) जयशील होने के लिए । (इन्द्र व शर्म यच्छतु) परमैश्वर्यवान् इन्द्र तुम्हें शक्ति दे [व बाहवः उग्र सन्तु] तुम्हारी भुजाएं अत्यन्त बलशाली हों [अनाधृष्या यथासथ] तुम अपराजेय, अदम्य, अधर्षणीय रहो ।

भावार्थ–आर्यो ! तुम अपनी अजेय वाहिनी लेकर विश्व में अन्याय, अत्याचार करने वालों को विजित करो । सर्वशक्तिमान प्रभु की शक्ति तुम्हारे साथ है। तुम्हारी भुजाओं में असीमित बल है तुम अदम्य हो, अजेय हो–यही आर्य वीरों का और उनके संगठन का ध्येय है ।

आर्य जाति और उसके संगठन आर्य समाज की उन्नति का कारण यह है कि इसे सदैव अटूट अखण्ड और प्रगाढ श्रद्धा वाले साहसी आर्यवीरों का नेतृत्व मिला है । समाज के अग्रणी मूर्धन्य सन्यासियों का वरद् आशीर्वाद सदा इसके साथ रहा है । प्रभु की दिव्य वाणी इस संगठन का सम्बल है। ऐसे ही संगठन से जो समस्त विश्व को एक नीड मानता हो और समस्त मानव जाति को अमृत पुत्र मानकर बिना किसी भेदभाव के आर्यत्व के गुणों से विभूषित कर देना चाहता हो, मानव कल्याण सम्भव है । अखण्ड ब्रह्मचर्य के प्रतीक मानवता के उत्प्रेरक परमहंस परिव्राजकाचार्य ऋषिवर दयानन्द की ज्योति ने इस संगठन को सदैव प्रकाशित रखा है ।

आर्यसमाज अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही वैचारिक क्रान्ति का उद्बोधन देकर समस्त मानव जाति को आर्यपथ का पथिक बनाना चाहता है। चरित्रवान् विद्यावान आस्तिक लोगों का यह संगठन है जो संसार के समस्त दुरितों को दूर करके विश्व के वातावरण को शान्तिमय बनाने का इच्छुक है । ऐसा संगठन आर्यों के अतिरिक्त और किस समाज का हो सकता है । यह संस्था ज्ञान का प्रचण्ड दावानल अपने अन्तरतम में छिपाये विश्व में आगे बढ़ रही है । यहां न कोई व्यक्ति पूजा है न कोई गुरुडम है न एकाधिकार है न स्वार्थलिप्सा । यह तो श्रेष्ठतम लोगों की प्रजातान्त्रिक आप्तसंस्था है । इस के दीवाने सिर पर कफन बांधे संसार की पाशविक नहीं सात्विक विजय के लिए चल पड़े हैं । उनका अभियान अज्ञान और अविद्या से भरे हुए तम को जीतकर ज्ञान की ज्योति को प्रकाशित करना है क्योंकि विश्व की समस्याओं का यही समाधान है और यही आर्यों का विजय प्रयाण है जिसके लिए प्रभु की दिव्यवाणी उक्त मन्त्र में हमें प्रेरणा दे रही है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वृहदधिवेशन

दि० १२, १३ नवम्बर

सन् १९८८ को

डी० ए० वी० कालेज,

लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

५–आपत्ति का निवारण	२१–१०–८८ से २४–१०–८८ तक
६–शुद्धमतदाता सूची का प्रकाशन	२५–१०–८८
७–वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१२–११–८८ एवं १३–११–८८
८–चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
दिनांक १२–९–८८] नारायणस्वामी–भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–१

हम कौन थे, क्या हो गये है, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी॥
—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय–

लखनऊ–आश्विन शुक्ल १३ संवत् २०४५, रविवार २३ अक्टूबर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

रावण उवाच

★ ★ ★

ओ दुनिया के लोगो! सुनो, अभी मैं मरा नहीं हूं। क्या तुम समझते हो तुमने मुझे दशहरे के दिन आग लगाकर भस्मसात कर दिया है। तुम्हें मालूम नहीं मेरे रक्तबीज की एक-एक बूंद से हजारों रावण पैदा हो रहे हैं। तुमने अपने बाणों से मेरा सिर उड़ा दिया और बहुत खुश… … … आज हमने रावण को मार दिया। खुशियां, बधाइयां और नगाड़ों की झंकार। मेरी मृत्यु पर बड़े सुन्दर–सुन्दर वस्त्र पहिन कर निकले हो। तुम्हारी भारतीय परम्परा तो कह रही है कि दुश्मन के मरने पर भी खुशी नहीं मनाई जाती… और आज मेरे मरने पर इतनी खुशी। घबड़ाओ नहीं…… अभी मैं जिन्दा हूं। तुम्हें मालूम नहीं मुझे भोलेनाथ शंकर ने अमरता का वरदान दे दिया है, और मैं मर–मरकर फिर जी जाता हूं। ५।। लाख साल पहिले मैं लंका में मारा गया था आज बीसवीं सदी में मैं फिर पैदा हो गया हूं। इस बार मेरे अनेक रूप हैं, तुम कहां तक मारोगे, कितने राम पैदा करोगे। देखते नहीं मैंने पंजाब में आग लगा दी है। एक नहीं दस राजीव आ जायें हजार दमकलें लेकर, आग बढ़ती जा रही है। मैंने तो उसका हरण ही किया था, अपने घर नहीं……दूर अशोकवाटिका में रखा था, स्पर्श तक से दूर रहा, भारत की सन्नारी थी, पातिव्रत्य की अग्नि में तपी हुई दमकती हुई कंचन की रेखा। अभिमान में आकर कटुवचन भले ही कह दिए हों, पर आंख मिलाने का साहस तक मुझ मे नहीं था, क्योंकि मैं त्रेता का रावण था। आज मै कलियुग का रावण हू, मेरे सामने कोई मान मर्यादा नहीं, कोई नियम, शिष्टता नहीं। पातिव्रत्य किसे कहते हैं मैं नहीं जानता। हर कमर में हाथ डालकर नाचने में मैं अपना गौरव समझता हूं… … वह भी समझती है। बिजली की चकाचौंध में अर्द्ध नग्न होकर खुलेआम गिलासों से गिलास लड़ाकर पी जाता हू। मस्ती में सराबोर होकर भूल जाता हूं कहां का ईश्वर कहां का धर्म, कहां का संयम कहां का सदाचार, "वहां तो मौज से गुजरती है–आकबत की खुदा जाने" अभी कुछ दिन हुये जलते हुए पंजाब पर बाढ़ का पानी लेकर झपटा था और देखते–देखते जलती हुई आग डूब गई पानी में, बह गये सैकड़ों प्रलय भरी आंधी में। लाशों का अम्बार तब भी था अब भी है, तभी तो मैं कहता हूं कलियुग का रावण हूं–क्या किस चिड़िया का नाम है।

आज मेरे बहुत रूप हैं। मसीहा और पैगम्बर बन कर, वोटों का टुकड़ा फेंककर, मैंने भाइयों को भाइयों से लड़ा दिया है–उनके अपने ही खून की मेंहदी से उनके हाथ रंग दिये हैं। कलियुग में पैदा होकर मैं डिप्लोमेट हो गया हूं। है न आश्चर्य की बात! मैंने आर्यों को आर्यों से भिड़ा दिया है–राम को राम से, वशिष्ठ को वशिष्ठ से। मुझे तलवार उठाने की जरूरत ही क्या है तुम आपस में ही मर जाओगे। चुनाव की रणभेरी बजी नहीं कि कुकुरमुत्ते की तरह मैं जगह–जगह बिना बुलाये, बिना पुकारे, उग आता हूं और फिर चलता है आरोपों प्रत्यारोपों का नगाड़ा पता ही नहीं चलता कौन झूठा है कौन सच्चा कौन राम है कौन रावण। मुखौटे सबके राममय हैं, वाणी में शहद है परपीड़ा में ऐसे द्रवित हैं जैसे आंच का स्पर्श पाकर घी। कहते हैं हम उद्धारक हैं, पालक हैं, जनमानस के रक्षक हैं सच्चे धर्मोपदेष्टा हैं और फिर होता है चुनाव–पहिला, दूसरा, तीसरा–दुरदा की तरह वह भी बढ़ रहा है और मै भी बढ़ रहा हूं। "असतो मा सद्गमय" रटते रहो, अभी तो विजय मेरी ही है क्योंकि मुझे मारने वाला अभी पैदा नहीं हुआ है।

त्रेतायुग में मेरा सर्वनाश इसीलिए तो हुआ था कि मैंने एक सन्नारी का अपमान किया था। आज न जाने कितनी, रास्ता चलते, घूमते-फिरते सिनेमा देखते उठा ली जाती हैं, गायब कर दी जाती हैं, जिन्दा झोंक दी जाती है, है कोई मेरा सर्वनाश करने वाला। सब पुलिस की ओर मुंह करके देखने लगते हैं। यह मालूम ही नहीं कि पुलिस का मुखौटा पहिने मै ही तो हूं। हां, मुझे मारना चाहते हो तो कोई नया जैसा राम पैदा करो। आर्यो तुम पैदा कर सकते हो तुमने पैदा किये हैं। वेद माता ने तुम्हें आदेश दिया था–

पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम्।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च याम्॥

हे आर्य जननी! ऐसा वीर पुत्र जनना जो दुर्गति से त्राण देने वाला हो–और हमारे शब्दों में–सचमुच वह त्रेता जैसा राम हो तभी संसार रावणत्व से मुक्त हो सकता है। ★ ★ ★

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री : एक कर्मठ व्यक्तित्व

वेदार्थ कल्पद्रुमप्रणेता आर्य रत्न, आचार्य श्री विशुद्धानन्द शास्त्री, दर्शन वाचस्पति

[आर्य समाज की सेवा मे अहर्निश अपना सर्वस्व समर्पित करने की अदम्य भावना लिए हुए छोटे से दुबले-पतले शरीर में गज़ब की आत्म शक्ति, प्रखर व्यक्तित्व एवं विरोधों प्रतिरोधों के बीच निखर-निखर कर चमकने वाले, जिन्होंने कभी झुकना जाना ही नहीं-ऐसी अद्भुत प्रतिभा के धनी श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री हमारी शिरोमणि सभा के महामन्त्री हैं। आर्य जगत उनसे गौरवान्वित है। यद्यपि "आर्यमित्र" में प्रशस्ति प्रकाशन की परम्परा नहीं रही है, फिर भी हम यहां, अपवाद रूप में, उनके कर्मठ व्यक्तित्व की संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं]

—प्र० सम्पादक

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति धर्मः समुन्नतिम् ॥

इस परिवर्तनशील संसार मे कौन नहीं मरता तथा कौन उत्पन्न नहीं होता ? पर उत्पन्न होना उसी का सार्थक है, जिसका जीवन धर्म की समुन्नति में लग जावे।

इन पंक्तियों के संदर्भ में मैं आज एक ऐसे व्यक्तित्व की चर्चा करने लगा हूं, जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, देश भक्त जीवन के अन्तिम श्वास तक धर्म प्रसार परायण रहे जो प० नेहरू और प० गोविन्द बल्लभ 'पन्त' के कारागार के साथियो मे रहे। मातृ-भूमि की परतन्त्रता की बेड़ी काटने मे जिन्होने अपना जीवन लगाया, जिन्होने जिला परिषद के अध्यक्ष रह कर प्रत्येक अध्यापक के हृदय मे आर्य समाज के सत्य सिद्धान्तो की कभी न बुझने वाली चिनगारी सुलगाई और घर-घर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पहुचाने का अपूर्व कार्य किया, वे यशस्वी स्वनामधन्य थे हरदोई निवासी श्री पं० रघुनन्दन प्रसाद शर्मा।

महर्षि दयानन्द ने एक स्थान पर इस महनीय भाव का उपन्यास किया है कि वे सन्तान बड़े भाग्यशाली हैं, जिनके माता-पिता विद्वान् और धार्मिक हैं। और वे माता-पिता भी महान् भाग्यवान् हैं, जिनकी सन्तान धर्मशील और विद्वान् हो, इन भावों के अनुरूप स्वर्गीय शर्मा जी ने आज से ६० वर्ष पूर्व अपनी सन्तान को महर्षि के सिद्धांतों में ढालने की अदम्य अभिलाषा से देववाणी संस्कृत के गुरुकुलीय वातावरण में परिपुष्ट करने का दृढ़ संकल्प कर लिया और अपने सुपुत्र श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री को वैदिक सिद्धान्तों की सास्कृतिक भट्ठी में तपने के लिए गुरुकुल ज्वालापुर मे प्रविष्ट कर दिया।

इधर अंग्रेजों के अत्याचार और दमनचक्र की चक्की मे पीसे जा रहे इस परिवार के ८ व्यक्ति कारागार की क्रूर यातनाओं में दिन काट रहे थे, फिर भी मातृ भूमि के बन्धन काटने के दीवाने इस कुटुम्ब सदस्य वासियों के लिए उनके होठों पर अनवरत गाया जाने वाला यह पावन गीत एक मोहक और मनोरंजक जयगीत बन गया था :—

भारत माँ ! तेरी जय हो, विजय हो।
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार,
बेड़ी की झन-झन में वीरों की जय हो।

परन्तु देश की स्वातन्त्र्य बलिवेदी पर प्रदीप्त दीपक की लौ पर जलने वाले, इस परिवार के पतङ्गों के मर मिटने के हौसलो में कोई कमी नहीं आई।

सच है :—

आदि मध्य निधनेषु सौहृदं, सज्जने भवति नेतरे जने।
छेद तापन निघर्ष ताडनैर्नास्य भावमुपयाति काञ्चनम् ॥

अर्थात आदि जीवन, मध्य जीवन और मौत पर भी सत्पुरुषों का सदा एक सा सौहार्द बना रहता है। छेदन, अग्नि प्रतापन, घर्षण और हथौड़ों के प्रताडन से क्या कभी कांचन विकृत भाव को प्राप्त होता है ? कदापि नहीं।

उधर गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के सुरम्य सांस्कृतिक उद्यान में हमारा यह चरित नायक, ब्रह्मचारी सच्चिदानन्द के रूप में पीत-परिधानो को लपेटे हुए पावन श्री पं० नरदेव जी शास्त्री जैसे महान् वैदिक तपस्वी की आशीर्वाद प्रेम-पूर्ण-पुण्य छाया में परिसिंचित, पल्लवित और पुष्पित हो रहा था। १४ वर्ष की नैष्ठिक तपस्या के कठोर नियन्त्रण में परिचालित ब्रह्मचारी सच्चिदानन्द के उर्वर हृदय मे देशानुराग, आर्य समाज की जलती ज्योति के लिये समर्पण का भाव 'प्रवर्तितो दीप इव प्रदीपात्' जैसे दीपक से जलाया हुआ अपर दीपक भी प्रकाश में अभिन्न होता है, उसी प्रकार उद्दाम अभिलाषी पिता के अरमानों के साथ-साथ यह साधक भी समृद्ध होता रहा।

पर ऐसे बलिदानी परिवार के धर्म दीवाने सदस्यों को अन्यत्र शान्ति और सुख कहां ! धर्म और देशानुराग के परीक्षणार्थ हैदराबाद का प्रसिद्ध सत्याग्रह इनके सामने फिर से चुनौती बन कर आ गया।

सच है :—

यह धूप का जगत है, न छाया टटोलिये।
तरुवर यहां के पेड़ हैं, पौधें बिलोलिये ॥

अंग्रेजों के दमन चक्र मे पिसते हुओ के लिये निजाम हैदराबाद के नृशंस अत्याचारों का कोल्हू इधर इन आर्य परवानों की बाट जोह ही रहा था। शास्त्री जी के दो भाई हैदराबाद सत्याग्रह मे निजाम के जेलों की यातनाओं की सौगात का स्वागत करने के लिए गिरफ्तार हुए। ब्रह्मचारी सच्चिदानन्द जी के भाई ब्रह्मचारी दयानन्द ने एक बार फिर से दयानन्द के समुज्ज्वल पवित्र नाम में बलिदान की मुहर लगा कर इस नाम को और भी पावनतर धन्य और अमर बना दिया। साथियों ने समझाया—दयानन्द रुग्णस्वस्थ है, सत्याग्रह की अगली खेंप में सम्मिलित होना, पर यह सहानुभूति वाक्य 'प्रचण्ड अग्नि में घृताहुति' बन गया। किसी कवि की सूक्ति में घोंसले को ऊंचा कर बैठी बुलबुल का कथन सुघटित है :—

सुना है, आसमां से इस चमन पर बिजली टूटेगी।
यह सुन कर, और ऊंचा कर लिया मैंने नशेमन (घोंसले) को ॥

ब्रह्मचारी दयानन्द इस सत्याग्रह के जौहर की लपटों से लिपट कर सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

[शेष पृष्ठ १० पर]

पुण्यश्लोक राजा रणंजयसिंह के पावन संस्मरण

ले० डा० भवानीलाल भारतीय

अमेठी के राजा रणञ्जयसिंह के निधन (१५ अगस्त) के साथ ही आर्य समाज में पुराने लगनशील तथा निष्ठावान् पुरुषों की एक परंपरा ही समाप्त हो गई। स्व० राजा साहब के पितामह राजा माधव सिंह स्वामी दयानन्द के समकालीन थे और श्री महाराज की पांचवीं काशी यात्रा के समय उनसे भेंट करने आये थे। यह भी स्मरणीय है कि काशी के दुर्गाकुण्ड स्थित जिस आनन्द बाग में स्वामी दयानन्द ने विशुद्धानन्दादि पौराणिक विद्वानों से मूर्तिपूजा की वैदिकता अथवा अवैदिकता पर अपना प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया था, वह अमेठी के उक्त राजा का ही था। कालान्तर में १९७९ ई० में इसी स्थान पर राजा रणंजय सिंह जी ने एक प्रस्तर शिलालेख निम्न श्लोकों से युक्त यहां स्थापित कराया था। यह शिलारोपण महात्मा आनन्द स्वामी जी के द्वारा सम्पन्न हुआ था। शिलालेख पर निम्न श्लोक हैं—

शास्त्रहस्ताक्षं चन्द्रेब्दे वैक्रमे कार्तिके सिते।
सौमे भाद्रस्तिथौ दिव्ये मूर्तिपूजा विनिर्णये॥
अमेठ्यानन्द बागेऽस्मिन् काशिराज 'सभापतौ।
जनौघे विपुले जातः प्रवृत्तः श्रुति तत्परः
विशुद्धानन्द मुख्यैर्वा शास्त्रादिभिर्बुधैः।
शास्त्रार्थमकरोत् सोऽत्र दयानन्दो यतिर्महान्॥
भगवान बख्शभूपाल भवनात्तत्सुतस्सुधी।
अलेखयच्छिलालेखं दानी राजा रणंजयः॥

अर्थात् १९२६ वि० कार्तिक शुक्ला, १२ मंगलवार को अमेठी राजा के आनन्दबाग में काशीराज के सभापतित्व में विपुल जनसमुदाय के समक्ष जो मूर्तिपूजा के निर्णय हेतु शास्त्रार्थ हुआ उसमें एक ओर महान् यति दयानन्द तो दूसरी ओर विशुद्धानन्द, बालशास्त्री आदि पण्डित थे।

इस शास्त्रार्थ की स्मृति के रूप में राजा भगवान्बख्श की आज्ञा से उनके विद्वान् और दानीपुत्र राजा रणंजयसिंह ने यह शिलालेख स्थापित किया है। यहां यह ध्यातव्य है कि राजा साहब को ऐसा शिलालेख लगाने के लिये प्रो० महेश प्रसाद (अरबी फारसी के प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, ने प्रेरित किया था। प्रो० महेश प्रसाद का यह एक सुन्दर विचार था कि स्वामी दयानन्द ने भारत देश के भिन्न-भिन्न स्थानों, ग्रामों, नगरों आदि को अपने पादारोपण द्वारा पवित्र किया है जहां सर्वत्र ऐसे शिलालेख लगा दिये जावें, जहां स्वामी जी के उक्त स्थान पर आगमन और प्रस्थानगमन की तिथियों का भी उल्लेख रहे।

राजा रणंजयसिंह की सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा वैदिक विचारधारा के अनुकूल हुई। उनके बड़े भ्राता युवराज रणवीर सिंह प्रतिभा में कहीं अधिक बढ़े-चढ़े थे, किन्तु विधाता ने उन्हें मात्र २१ वर्ष की ही आयु दी थी। किन्तु इस अल्पायु में ही युवराज महोदय ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कुशलता का परिचय दिया। कहना नहीं होगा कि राजा रणंजयसिंह ने भी अपने अग्रज के आदर्शों का पूर्ण तत्परता से पालन किया। उन्होंने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में अनेक बार भाग लिया और देश की आजादी के लिए बड़े से बड़े बलिदान किये। यद्यपि देश के स्वतन्त्र हो जाने तथा जमींदारी उन्मूलन कानून के पास हो जाने के कारण राजा रणंजयसिंह अमेठी के वंश शासक पद पर नहीं रहे, किन्तु वे अपनी निकटवर्ती जनता में अत्यधिक लोकप्रिय रहे तथा अमेठी तथा उसके समीपवर्ती लोग उन्हें पर्याप्त सम्मान देते थे। कांग्रेस के साथ उनके पुराने सम्बन्ध हैं। विशेषतः नेहरू परिवार से तो उन० सम्बन्ध बहुत ही निकटता के थे। पं० मोतीलाल नेहरू तो अमेठी रियासत के कानूनी परामर्शदाता ही थे। पं० जवाहरलाल नेहरू तथा स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी भी रणंजयसिंह का अत्यधिक सम्मान करती थीं। १९८० में स्व० संजय गांधी और उनकी मृत्यु के पश्चात् श्री राजीव गांधी ने लोकसभा की सदस्यता का चुनाव अमेठी से ही लड़ा था। विशुद्ध खादी की स्वदेशी वेशभूषा, निरामिष और सादा भोजन, त्याग, तप युक्त निराडम्बर जीवन यही राजा रणंजयसिंह की जीवन पद्धति थे।

वे आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे उन्होंने एक सहृदय कवि का हृदय पाया था। उनकी काव्य रचनायें विभिन्न आर्य पत्रों में यदा कदा प्रकाशित होती रही। राजा रणंजयसिंह अभिनन्दन ग्रंथ के द्वारा स्वर्गीय महापुरुष के जीवन एवं विविध लोक-कल्याणकारी कार्यकलापों का अच्छा परिचय मिलता है। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य भी थे। उन्होंने स्वनगर अमेठी में शिक्षा की उन्नति के लिए महत् उद्योग किया तथा एक इन्टरमीडियेट तथा दूसरा स्नातकोत्तर कालेज स्थापित किया। उनका पूर्वजों का निवास अमेठी के निकटवर्ती रामनगर स्थित भूपति भवन सामन्ती जीवन और मध्यकालीन अभिजात्य संस्कृति का एक जीवित प्रतीक है, जिसमे एक विशाल पुस्तकालय के अतिरिक्त अन्य अनेक पुरातात्विक वस्तुओं तथा दुर्लभ चित्रों का विशाल संग्रह है।

इन पंक्तियों के लेखक का स्व० राजा साहब से अत्यन्त सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध रहा। अजमेर, दिल्ली तथा लखनऊ में उनके दर्शन करने का सौभाग्य कई बार प्राप्त हुआ। वे मेरे द्वारा सम्पादित परोपकारी पत्र के नियमित पाठक थे और समय-समय पर अनेक सुझाव भी देते रहते थे।

१९८९ मे जब लखनऊ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का स्थापना समारोह मनाया गया तो एक बार पुनः राजा साहब के दर्शन करने का अवसर मिला। इस बार तो उनकी मोटर में बैठे-बैठे ही बहुत देर तक बातचीत होती रही। उन्होने आगामी मई मास में मुझे अमेठी की रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर कालेज में वार्षिक दीक्षान्त भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। तदनुसार मै ६ मई १९८९ को अमेठी गया। दूसरे दिन प्रातःकाल आर्य समाज अमेठी में राजा साहब की अध्यक्षता में मेरा भाषण हुआ मध्यान्होत्तर कालेज में दीक्षान्त भाषण। इस समारोह की अध्यक्षता अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० ए० सी० वर्मा ने की थी। इस अवसर पर राजा साहब के पुत्र डा० संजयसिंह भी उपस्थित थे, जो उस समय उत्तर प्रदेश के परिवहन मन्त्री थे। इससे पहले १९८३ में स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर राजा साहब ने वेद सम्मेलन का उद्घाटन किया। मैं इस सम्मेलन का संयोजक था।

गत वर्ष से श्री वी० पी० सिंह के कांग्रेस से पृथक् होने तथा वित्त मन्त्री पद से त्याग पत्र देने के कारण देश में जो राजनैतिक तूफान आया, यद्यपि उससे स्वर्गीय राजा साहब का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था किन्तु उनके पुत्र डा० संजय सिंह द्वारा कांग्रेस को छोड़कर जनता दल के कारण संकीर्ण स्वार्थ लिप्त लोगों को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने अपनी कुण्ठा को तुष्ट करने के लिये राजा रणंजय सिंह तथा उनके राजवंश पर अनुचित प्रहार किये। कांग्रेस के एक महामन्त्री ने तो उन्हें सामन्तवाद की उपज, अंग्रेजों का पिट्ठू तक कहने में संकोच नहीं किया। ऐसे निर्मूल आक्षेप करने वाले ने यह नहीं सोचा कि अमेठी का

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज कहाँ तक सफल ?

[श्री विशन स्वरूप गोयल, दिल्ली]

स्वामी अग्निवेश जी के उस आन्दोलन को आर्य समाज के लगभग सभी समाचार पत्रों में चर्चा है जो कि स्वामी जी ने शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ के द्वारा हरिजनों के मन्दिर प्रवेश निषेध के विरुद्ध चलाया। किन्तु यहाँ आर्य समाज व अग्निवेश जी के लिए विचारार्थ अनेक प्रश्न उभरते हैं।

महर्षि दयानन्द जी व उनके पश्चात् कितने ही आर्यसमाजी विद्वानों ने छुआछूत को मिटाने का प्रयास किया किन्तु छुआछूत मिट न सकी। इसका एक विशेष कारण तो यह है कि हमारे महात्मा गांधी ने इस सबद्ध वर्ग को हरिजन नाम देकर, व एक विशेष अधिकार देकर, इसे हिन्दू जाति से अलग कर दिया। आज इस वर्ग में एक से एक सम्पन्न परिवार हैं, किन्तु ऐसे परिवारों को भी आज वही सुविधायें सरकार की ओर से प्राप्त हैं जो कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को मिलनी चाहिए।

आज सबसे बड़ी परेशानी तो यह है कि देश-विभाजन को ४० वर्ष हो जाने पर भी हरिजन वर्ग के किसी नेता ने आरक्षण का जोरदार शब्दों में विरोध नहीं किया है, और न ही यह मांग की कि सभी हिन्दुओं के अधिकार बराबर हो

हिन्दू समाज को आज इस सत्ता ने सही मायने में कितने ही विभागों, मतों, जातियों, वर्गों व प्रदेशों में बाँटा हुआ है-इसका सबसे बड़ा कारण है चुनाव प्रणाली। जब तक देश में कांग्रेस-इ या इस जैसी पार्टियां सत्ता में रहेंगी, तब तक ये झगड़े चलते ही रहेंगे, और हमारी तथाकथित सरकार अपने चुनावी स्वार्थों के कारण सारे देश में द्वेष भावना को बढ़ाती ही रहेगी। हिन्दू समाज इस जैसे मूल कारण की ओर तो ध्यान देता नहीं; परन्तु कोई न कोई आन्दोलन छेड़ देता है।

१९५७ में गोरक्षा के लिए, तो १९६७-६८ में हिन्दी रक्षा हेतु आन्दोलन चलाये गये परन्तु हम इसमें सफल नहीं हुए। जानते है क्यों ? क्योंकि कांग्रेस सरकार चाहती ही नहीं कि गोरक्षा हो, या हिन्दी को उसका वास्तविक राष्ट्रीय दर्जा और मान-महत्व प्राप्त हो, वह देश भर की भाषा बन सके। इसका प्रमाण यह है कि सरकार ने अपने एक आदेश के द्वारा पिछले दिनों वाहनों पर नम्बर प्लेट रोमन लिपि में लिखना जरूरी बना दिया। इस आदेश का उल्लंघन करने पर वाहनों का चालान किया जाता है। इस आदेश का कोई विशेष विरोध नहीं हुआ और आदेश पर अमल बाकायदा तौर पर हुआ है और हो रहा है। स्पष्ट है यदि सरकार की नीयत व नीति हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने की होती तो वह वाहनों की नम्बर प्लेट पर नम्बर हिन्दी भाषा / देवनागरी लिपि में लिखना जरूरी घोषित कर सकती थी।

अब सवाल उठता है यदि सरकार चाहती तो क्या आजादी के ४० वर्षों में अछूत / हरिजन शब्द की समाप्ति, गो-रक्षा और हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के पद पर वास्तविक प्रतिष्ठा नहीं कर सकती थी ? चाहती तो कर अवश्य सकती थी, परन्तु उसके सामने तो मुख्य लक्ष्य अपनी सत्ता को स्थाई रखना रहा है, उसे हमेशा डर रहा है कि उसके वोट बैंक उसके हाथ से निकल सकते हैं। कांग्रेस सरकार को एक ही बात याद रही है कि गोरक्षा की मांग की उपेक्षा से उसका मुस्लिम वोट बैंक उसके हाथ में सुरक्षित रहेगा, हरिजन शब्द और आरक्षण समाप्त करने से उसका यह २० करोड़ हिन्दू वोट बैंक उसके हाथ से निकल सकता है, हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की मांग की उपेक्षा करने से दक्षिण, बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र इत्यादि में उसके वोट सुरक्षित रहेंगे। यही कारण है कि हमारे सभी राष्ट्रवादी आन्दोलन असफल हो जाते हैं। झाग की उफान की तरह अन्ततः बैठ जाते हैं। बैठते रहेंगे। इस सरकार की नीतियाँ ही ऐसी हैं।

जब तक हिन्दू समाज हमारी समस्याओं की जड़ में मौजूद कारणों को नहीं समझेगा, तब तक समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल सकेगी। हमारी समस्याओं की जड़ में मौजूद कुछ कारण इस प्रकार हैं-

१-संविधान की धारा-३७० : इसके अन्तर्गत कश्मीर को एक विशेष दर्जा प्राप्त है, और इसे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए अन्य राज्यों में भी इसकी मांग उठ रही है, हिंसा हो रही है।

२-आरक्षण : इसके कारण समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, यानी अनुसूचित जाति जन-जाति के लगभग २० करोड़ हिन्दू अपने आप को मुख्य हिन्दू समाज से स्वयं को अलग मान बैठे हैं।

३-कॉमन सिविल कोर्ट का न होना : इसके कारण एक केशधारी हिन्दू चाहे कितनी भी बड़ी कृपाण रख सकता है, जब कि उसका सगा मोना भाई छः इन्च का एक चाकू भी नहीं रख सकता। एक मुसलमान चार-चार विवाह कर सकता, जब कि गैर मुसलमान के लिये दूसरा विवाह करना अपराध है।

देश में इस तरह जब भेदभाव होता रहेगा, कॉमन सिविल कोड नहीं बनेगा, संविधान की धारा-३७० समाप्त नहीं होगी, तब तक देश में झगड़े-फसाद, मार-काट होती रहेगी। हमारी केन्द्र सरकार का मुख्य आधार हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं, लेकिन वह स्वयं ही हिन्दी में कार्य नहीं करती तो अन्य प्रदेश क्यों करेंगे ? इन प्रश्नों का चिन्तन करना आवश्यक है।

दयानन्द आदर्श विद्यालय की सहायता

चकनगड़ी ग्राम (पो०-गजरौला, जिला मुरादाबाद) में ईसाइयों का बहुत जोर है। उनका प्रेम धाम-गिरजाघर, अस्पताल और स्कूल चल रहे हैं। इसकी रोक थाम के लिये हमने सन् ८३ में दयानन्द आदर्श विद्यालय की स्थापना की है इस विद्यालय के पास एक एकड़ भूमि है तथा कक्षा ६ से ८ तक १५० छात्र-छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं परन्तु खेद है कि अभी तक धनाभाव के कारण विद्यालय भवन नहीं बन सका। यह समस्त आर्य जगत के लिये चिन्तनीय है। मैं समस्त आर्य जनता से अपील करता हूं कि वह इस विद्यालय भवन निर्माण के लिये सदा शक्ति दान दें।

सभा मन्त्री

नाम करण संस्कार

श्री सुखबन सिंह आर्य मन्त्री आ० स० रघुनाथपुर (अमरोहा) के सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रीतिभोज में ग्रामीण जनता भारी संख्या में सम्मिलित हुई। बधाई -सभामन्त्री

आर्य वीर दल क्या है ?

[श्री रामगोपाल आर्य (व्यायाम शिक्षक) सार्वदेशिक आर्यवीर दल पलड़ी]

आर्य वीर दल एक ऐसा संगठन है जहां पर पौध तैयार की जाती है कोमल पौधे को कुशल माली ही पनपा सकता है। यही हाल आर्य वीर दल में आने वाले बच्चों का होता है। जिस प्रकार से बच्चा कक्षा एक से पढ़ना शुरू करता है और वह पढ़ता हुआ आगे निकल जाता है ठीक उसी प्रकार ही आर्य वीर दल ने अपने पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभक्त किया है। १–प्रथम श्रेणी २–द्वितीय श्रेणी ३–तृतीय श्रेणी। सबसे पहले प्रथम श्रेणी का पाठ्यक्रम शुरू होता है। वहाँ से उनके जीवन का नव निर्माण शुरू होता है। कुम्हार की कच्ची मिट्टी के समान वे नन्हें–मुन्हें भी गढ़े जाते हैं।

आज देश मे चारो ओर हा–हाकार मचा हुआ है चारो ओर अशान्ति फैली हुई है देश का नैतिक पतन हो रहा है। माता-पिता का अनादर हो रहा है, बड़ों का अपमान हो रहा है, देश की शक्तियाँ घट रही है। आज देश में चारो ओर कुरीतियाँ ही कुरीतियां बढ़ रही है। चरित्र समाप्त होते जा रहे हैं। यदि हम गम्भीरता से सोचे तो इसका निराकरण यदि कोई कर सकता है तो वह आर्य वीर दल कर सकता है। क्योंकि आर्य वीर दल शारीरिक प्रशिक्षण के साथ–२ बौद्धिक प्रशिक्षण भी देता है। जिसमे देश–भक्ति, जागरूकता, व्यवहारिकता बड़ों के प्रति आदर सम्मान, माता-पिता की सेवा करना, और चरित्र निर्माण इत्यादि बात पर भी विशेष रूप से जोर देता है। इसके साथ साथ सैनिक शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देना है।

आधुनिक युग में देश के प्रत्येक व्यक्ति को सैनिक बनने की आवश्यकता है। आज की लड़ाई केवल युद्ध तक ही सीमित नहीं रह गई है। द्रुत गति से उड़ने वाले लड़ाकू विमान पल के किसी भी ठिकाने पर आक्रमण करके उसकी अर्थ व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर सकते है। ऐसी स्थिति में केवल सेना के भरोसे रहना आत्म विनाश को निमंत्रण देना है। अतः आवश्यकता आज इस बात की है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति को सैनिक शिक्षा सीखना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। देश को सैनिक शिक्षा की आज विशेष जरूरत है इसी लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए आर्य वीर दल सभी समर्थ छात्रों को, सभी नौजवानो को अनिवार्य रूप से सैनिक शिक्षा का प्रशिक्षण दे रहा है। जिससे वे किसी भी समय समाज व देश के काम आ सकें। डा० देवव्रत आचार्य (उप प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) ने आर्य वीर दल के प्रशिक्षण को सुचारु रूप से चला रखा है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ग्राम–पलड़ी (मेरठ) में भी दोनों समय (सुबह–साम) विनोद कुमार आर्य (उप व्यायाम शिक्षक) ने तो आर्य वीर दल के प्रशिक्षण को दैनिक रूप से चला रखा है जिसमें प्रति दिन ४५–५० नौजवान शिक्षण लेते हैं। इन सब बातों से यही प्रकट होता है कि आर्य वीर दल एक ऐसा मजबूत, विशेष संगठन है जहाँ पर बच्च का भविष्य उज्जवल बनाया जाता है।

★

वैदिक धर्म प्रचार योजना

प्राचीन समय में हमारा आर्यावर्त देश विश्व गुरु, संसार सम्राट् स्वर्ण निधि तथा स्वर्ग कहलाता था। कारण कि परम पावन वेद का सर्वत्र प्रचार–प्रसार होने से यहाँ के निवासियों का धर्म, सदाचार, सादगी, त्याग, तपस्या और ब्रह्मचर्य आदि उत्तम व्रतो से युक्त जीवन था। किन्तु–वेद के अप्रचार से कालान्तर में पारस्परिक वैमनस्य के कारण विदेशियों का प्रवेश होने से देश की दुर्दशा हुई। पूर्वजों के अथक प्रयास से आज हम स्वतन्त्र हैं और देश में स्वराज्य है परन्तु सुराज्य नहीं। क्योंकि आज देश में राष्ट्र-वंचिका धर्म निरपेक्ष शासन पद्धति प्रचिलित होने से जन समुदाय मानवता के शत्रु अज्ञान, अन्याय और अभाव से सन्त्रस्त है। मानव मात्र को धर्म सापेक्षता का पवित्र पाठ पढ़ाते हुए देश में सुराज्य स्थापना करने तथा लोगों को अज्ञान, अन्याय और अभाव से मुक्ति दिलाने हेतु आर्य समाज सतत प्रयत्नशील है। क्योंकि "संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

पुरे ग्रामेहि गोशाला यज्ञशाला तथैव च।
मल्लशाला तु सर्वत्र श्रमशाला च भूयसः॥

वेदोक्त पावन उद्घोष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को चरितार्थ करने हेतु आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद की ओर से जनपद मे व्यापक धर्म प्रचार योजना का निर्माण किया गया है। जिसका छः अक्टूबर ८८ से शुभारम्भ हो चुका है। इस योजना मे आर्य जगत के आर्य विद्वान् संन्यासी श्री स्वामी प्रज्ञानन्द जी संन्यासी (अलीगढ़) श्री पं० हरिशंकर जी आर्य एम० ए० (हरदोई) श्री पं० राजकुमार जी आर्य भजनोपदेशक, श्री प० केशवदेव जी आर्य (फर्रुखाबाद) श्री पं० अभयदेव जी शास्त्री (एटा) श्री पं० सत्य प्रकाश जी आर्य (बाराबंकी) तथा श्रीमती पं० मनोरमा देवी जी आर्या (अलीगढ़) आदि उपदेशक जनपद–फर्रुखाबाद के कोने कोने मे जाकर लोगो को वेद की मान्यताओं से अवगत करा वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट करेंगे।

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री,	विद्यासागर आर्य	यज्ञमुनि वानप्रस्थ
प्रधान	महामन्त्री	प्रचार मन्त्री

(आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद)

पूर्णाहुति केवल देवयज्ञ में ?

१० जुलाई के "आर्यमित्र" में स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा पूर्णाहुति केवल देव यज्ञ में है, यह पढ़कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि महर्षि दयानन्द जी ने पूर्णाहुति का विधान केवल देव यज्ञ (दैनिक अग्निहोत्र) में किया है, सोलह संस्कारों में भी पूर्णाहुति का विधान नहीं। यह पढ़ कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि स्वामी सत्यप्रकाश जी के द्वारा इतना अधिक मिथ्या प्रचार हो रहा है। जब कि ऋषि दयानन्द जी ने गर्भाधान विधि के अन्त मे लिखा है कि 'इन मन्त्रों से आहुति देकर पूर्व लिखित सामान्य प्रकरण की शान्त्याहुति देकर पुनः अट्ठाइस (२८) पृष्ठ में प्रमाणे पूर्णाहुति देवें। यहाँ स्पष्ट ही पूर्णाहुति का विधान गर्भाधान विधि में ऋषि दयानन्द जी ने किया है।

[शेष पृष्ठ ७ पर]

हमें ऋषि ऋण चुकाना है !

[डा० कमला प्रधान, एम० ए०, एच० एम० डी०, सी एच० पी सिद्धान्त शास्त्री, वेद रत्न द्वय]

कार्तिक अमावस्या तक खेतों में लहलहाते धान के पौधे पक कर खाद्य बन जाते हैं। अतः दीवाली पर धान की खील, लाई व बूरे तयार कर घृत व मीठा मिलाकर उसकी होम (हवनकुण्ड) में आहुति डाली जाती है फिर साफ सुथरे घर को जगमगाते दीपकों से सुशोभित करके उस नवान्न को इष्ट-मित्रों में बाँट कर खाया जाता है। साथ में उसके दूसरे दिन गोवर्द्धन पूजा (सत्कार) के निमित्त गायों की सींग रंग कर झाड़ पोंछ कर नवान्नादि दिया जाता है जिससे हमें स्मरण रहता है कि नवान्न के साथ गोघृत, दुग्ध व गोबर आदि सर्व श्रेष्ठ औषधि के संयोग से ही मानव को आयु, तेज, बल व बुद्धि प्राप्त होती है। इसी रहस्य को समझ कर महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा व वृद्धि पर बहुत बल दिया।

इसी दीपावली की अमावस्या को सायम् आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने अपनी विष-पीड़ित नश्वर देह का त्याग कर मुक्ति धाम को प्रयाण किया था। आर्य समाज के सञ्चालकों पर एक भारी उत्तरदायित्व आ पड़ा। उस समय की एक घटना स्मरण आ जाती है—

कायमगंज निवासी श्री रामलाल जी ने सत्सङ्ग में महर्षि दयानन्द से करबद्ध प्रार्थना की—भगवन् ! आपको आरोग्य पर कोई आघात हुआ जान पड़ता है।

महाराज ने कहा—इस देह को कई बार विष दिया गया है। ऐसे कालकूट विषों का कितना ही याग क्रियाओं से वमन तथा वस्तिकर्म द्वारा निकाल दिया जाय परन्तु रक्त में मिश्रित हुआ हलाहल विष सर्वाङ्ग से नहीं निकलता। यही कारण है जो मेरे स्वास्थ्य की आधार शिला हिल गई है। यदि मुझ पर ऐसा भीषण विष प्रयोग न किये जाते तो इस शरीर पर शिथिलता का चिन्ह एक शताब्दी में तो कदापि न दीख पड़ता।

रामलाल ने फिर प्रार्थना की—गुरुदेव ! जब आप अपने भक्तजनों को नैराश्य दिखाने वाले शब्द कहने लगते हैं तो आप ऐसे सुयोग्य शिष्य क्यों नहीं बनाते जो सर्वस्व स्वाहा करके भी आपके उद्देश्य का पालन करें।

महाराज ने गम्भीर भाव से कहा—"वत्स ! मैंने पहले पहल पाठशाला खोल कर अनेक पण्डित शिष्य बनाये। वे लोग मेरे सम्मुख तो बहुतेरी विनय प्रदर्शित करते पर पृथक होकर वैसे ही बने रहते। कई एक तो मेरे प्रतिकूल नाना बाधा बनने लग जाते। इसका एक प्रबल कारण भी है। मैं तीव्र वैराग्य वश यौवन काल ही में अपने पूज्य माता पितादि परिवार परिजन का परित्याग कर मृत्यु को जीतने के लिए योगाभ्यास करता रहा हूं। मैंने घर छोड़ते समय माता की ममता का कोई ध्यान नहीं दिया पितृ ऋण भी नहीं उतारा। ये ऐसे कर्म हैं जो मुझे सुयोग्य शिष्य मिलने के मार्ग में प्रबल बाधक हैं। परन्तु निराश होने की कोई बात नहीं है। आर्य समाज में ऐसे जन अवश्य प्रकट होंगे जो मेरे लक्ष्य की पूर्णता से पालना करेंगे।"

स्वामी सत्यानन्द लिखित "श्रीमद्दयानन्द प्रकाश" पृष्ठ ४०५ चौथी सर्ग से उद्धृत

ऋषि की वाणी में कितनी अन्तर्वेदना भरी हुई है। उन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिये अपने मातृ-पितृ-ऋण का बोझ सहना अंगीकार किया और अज्ञान-अन्धकार में भटकती जनता को सत्य ज्ञान प्राप्त कर वेद द्वारा बतलाये सत्य धर्म व शुद्ध आचरण का मार्ग खोल दिया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वेद में वैज्ञानिक सिद्धान्त के आधार पर सृष्टि रचना का क्रम, नियम व उद्देश्य दिया हुआ है। जीव को अपने शुभ अशुभ व मिश्रित कर्मों के अनुसार ही विभिन्न प्रकार के शरीर (योनि) प्राप्त होते हैं। प्रत्येक जीव को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। उपासना ईश्वर के सच्चे मन यौगिक विधि से ध्यान करने से सुख दुःख सहने की योग्यता प्राप्त होती है।

उन्होंने बताया कि व्यक्ति-गत चरित्र निर्माण से ही समाज का कल्याण होता है। व्यक्ति सुधरेंगे तो समाज भी सुधरेगा। उद्देश्य से उन्होंने वैज्ञानिक गुरुदत्त, पं० लेखराम, अमीचन्द मजनोक स्वामी श्रद्धानन्द (पूर्व नाम मुन्शीराम) आदि अनेक व्यक्तियों का सुधार किया जो बाद में आर्य समाज के जगमगाते हीरे बन कर उभरे। महर्षि दयानन्द के उपदेश से नवयुवकों में देश-प्रेम की ज्वाला भड़क उठी। स्वतन्त्रता-संग्राम में उन्होंने अपना बलिदान करके भारत को स्वतन्त्र बनाने में पूरा योग दिया, अन्त में भारत विजयी हुआ।

अब आर्य समाज के सञ्चालकों व अनुयायियों के ऊपर ऋषि ऋण उतारने का समय आया है। हमें सतर्क रहना है कि हमारे कार्य में शिथिलता न आ जाय। सांसारिक भौतिक उपलब्धियों की चकाचौंध से बची आगामी पीढ़ी के कर्णधार—आबाल वृद्ध, युवा व युवतियों को उभार कर भारत को फिर से समृद्धशाली व सच्चा गुरु बनना है। तभी हम ऋषि-ऋण से मुक्त हो सकेंगे।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने श्रद्धाञ्जलि देते हुए कहा है—'महर्षि दयानन्द उन महा पुरुषों में थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो इसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई नहीं कर सकता।

★

पूर्णाहुति केवल देवयज्ञ में

[पृष्ठ १ का शेष]

क्या स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज इस स्थल को पुनः पढ़ने का कष्ट करेंगे। सामान्य प्रकरण में ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं। 'अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कार पर्यन्त पूर्वोक्त और निम्न लिखित सामवेदोक्त वामदेव्य गान अवश्य करें। इस पूर्वोक्त में सामान्य यज्ञ सहित पूर्णाहुति भी आ जाती है। और सामान्य प्रकरण के अन्त में महर्षि दयानन्द ने यह वाक्य लिखा है कि यह सामान्य विधि सब संस्कारों में कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्य में पूर्णाहुति का भी अवश्य उल्लेख है। अब आप ही बतायें पूर्णाहुति का अन्य संस्कारों में उल्लेख इससे स्पष्ट अधिक क्या होगा।

स्वामी सत्य प्रकाश जी से निवेदन है कि संस्कार विधि इन स्थलों का पुनः अवलोकन करें और अपना भ्रम दूर करें।

—स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती गुरुकुल प्रभाताश्रम मेरठ)

ब्रह्मचर्य ही तप है

[श्री पूर्णचन्द्र शर्मा शास्त्री, आदर्श कृषि इ० का० सारौल अलीगढ़]

प्राचीन काल से ऋषियों ने मानव जीवन की चार अवस्थायें मानी हैं, जिसमें प्रथमा अवस्था में ब्रह्मचर्य को प्रधानता बताई है, जिसके द्वारा शारीरिक बल की वृद्धि तो होती ही है, बुद्धि का भी विकास होता है। सर्व प्रथम शरीर की शुद्धि जल से होती है, बुद्धि ज्ञान से, विद्या रूपी तप से, आत्म बुद्धि ज्ञान से पवित्र मानी जाती हैं। उक्तम च–यथा च

"अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येनशुद्ध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धि ज्ञानेन शुद्ध्यति॥

जल से शरीर मन सत्य से ही पवित्र होता है, विद्या एवं तप से प्राणियों की आत्मा एवं बुद्धि तो ज्ञान से ही शुद्ध होती है। ब्रह्मचर्य के द्वारा तो देवताओं ने मृत्यु को भी जीत लिया था यथा च उक्तम्–

'ब्रह्मचर्येण तपसादेवाः मृत्युं उपाघ्नत।

सर्व प्रथम जीवन की आधार नींव ब्रह्मचर्य ही है। जैसे–भवन की नींव मजबूत होती है, तो वह अधिक टिकाऊ बन सकता है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य अवस्था १ से २५ वर्ष तक जीवन रूपी नींव है। यथा च उक्तम् सुदृढ़ होनी चाहिए।

प्रसादस्य विनिर्माणे मूलभित्तिरपेक्षते।
तथैव जीवनस्यादौ ब्रह्मचर्यमपेक्षते।

इसके लिए आहार की शुद्धि पर बल दिया गया है, जब भोजन हमारा शुद्ध होगा, तो हमारी बुद्धि शारीरिक क्षमता भी वैसी ही होगी। यथा च उक्तम्

"आहार शुद्धौ सत्व बुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः"

भोजन के शुद्ध भक्षण करने से बुद्धि शुद्ध होती है। तथा बुद्धि के शुद्ध होने से स्मृति भी दृढ़ी होती है। गीता में राजसिक, तामसिक, सात्विक तीन गुणों को प्रभावित करने वाले भोजन बतलाये है। यथा च उक्तम्

सात्विक भोजन

आयुः सत्वबलारोग्यः सुखप्रीति विवर्धना।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विक प्रिया॥

चिकना पदार्थ घी, दूध, माखन आयु बुद्धि बल बढ़ाने वाले एवं सुख प्रीति वर्धक कहे गये हैं। अतः इन्हें सेवन करना चाहिए। गीता में कहा है। गीता १७ अ० ८–९–१० में तामसिक, राजसिक जैसे–के लक्षण बताये हैं। जैसे

कट्वम्ल लवणात्युष्ण तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःख शोकामय प्रदः॥ (९)

और कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त और गरम तथा तीक्ष्ण रूखे और दाह पैदा करने वाले आहार, अर्थात् यह सभी राजसी पुरुषों को प्रिय होते हैं। जो ब्रह्मचारी को त्याज्य हैं।

तामसी पुरुषों को अधपका, रस रहित, दुर्गन्धयुक्त एवं बासा झूठा अपवित्र ही भोजन प्रिय होता है। जो बुद्धि, बल, तेज को नष्ट करता है। इसलिए सभी को ऐसा भोजन त्याज्य है। साथ ही व्यायाम भी परम आवश्यक है। यथा च उक्तम्–

व्यायामेन पुष्टि गात्रस्य बुद्धि तेजो यशोबलम्"
'शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्'

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सर्व प्रथम व्यायाम अधिक महत्वपूर्ण है। यह बच्चे से बड़ों तक के लिए यथा शक्ति अवश्य करना चाहिए यह शरीर का धर्म है। इससे शरीर मजबूत एवं आयु बुद्धि यश बल की भी वृद्धि होती है। ब्रह्मचर्य से सदाचार की वृद्धि होती है यश बढ़ता है। कोई हानि नहीं पहुंचा सकता है। समस्त रोगों की निवृत्ति का मूलाधार ब्रह्मचर्य ही है। 'धर्म चर, ब्रह्म चरः" यही परम तप है।

✶

आर्य माता की पुण्य तिथि

३०–९–८८ को आर्य समाज मन्दिर अमरोहा में विद्यालय के संस्थापक प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य की पूज्य माता श्रीमती दुलारी जी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में दयानन्द बाल मन्दिर में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। एक बच्चे ने माता जी के जीवन के सम्बन्ध में अपने विचार रखते हुए बताया कि वह अत्यन्त दयालु तथा पूर्ण देश भक्त, सत्य भाषिणी तथा दानशील नारी थीं। उन्होंने आर्य समाज द्वारा १९५७ में चलाये गये हिन्दी रक्षा आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। अस्वस्थ होते हुये भी धन एकत्रित कर समय–समय पर नेताओं को भेंट किया। तथा अपने लेखों और जोशीली कविताओं के माध्यम से हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समर्थन में जन भावना जागृति की। भूखे व नंगे को देख कर वह दुखी हो जाती थी अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक सदैव उनके लिए जो कुछ हो सका किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री खेमचन्द्र आर्य जी ने पूजनीय माता जी के पद चिन्हों का अनुसरण करने का सन्देश दिया। श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य ने ११ स्टील के बर्तन एवं ४७४ रु० पुरस्कार तथा दान में दिये। बड़े पुत्र श्री धर्मेन्द्रकुमार जी ने विद्यालय को ५०१ रुपया प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अंजुला शर्मा द्वारा किया गया। अन्त में प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य ने माता जी के अनेक संस्मरण सुनाते हुये ईश्वर से प्रार्थना की कि हम सब को इतनी शक्ति दें कि उनके पद चिन्हों पर चल सकें। और सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा जिसकी सभी ने प्रशंसा की।

–सम्वाददाता

हापुड़ में आर्य सम्मेलन

आर्य समाज हापुड़ गाजियाबाद जिले की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के साथ दिनांक २४ से २६ अक्टूबर ८८ तक विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रहा है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध संन्यासी, प्रचारक, उपदेशक और आर्य नर–नारी भारी संख्या में भाग लेकर महर्षि दयानन्द के विचारों का गुणगान करेंगे।

देश की समस्याओं पर विचार किया जायेगा।

निर्वाचन

आ० स० साहूकारा उझानी (बदायूं)

प्रधान–श्री रामप्रसाद जी गोयल मन्त्री–श्री खेतराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री काशीराम जी आर्य

अधिकार नहीं

[कविवर-'प्रणव' शास्त्री एम० ए० महोपदेशक, आगरा]

★

विजयादशमी पर्व मनाने का तुमको अधिकार नहीं है।
करो राम लीलाएं तुमको वास्तविकता से प्यार नहीं है।१।

आज अयोध्या के आंगन में अब क्यों ढोल रहे हैं,
राजनीति-मदहोश मदारी धावा बोल रहे हैं।
पाखण्डी के तुला तथ्य को यों ही तोल रहे हैं।
देख रहे हैं सबही करता कोई किन्तु विचार नहीं है।२।

विश्वामित्र, अगस्त्य कहीं हैं जो कि प्रशिक्षणदाता हों।
राम और लक्ष्मण भी ढूंढो जो अनुजा-सम्मानता हों:
शबरी, केवट अधिक जनों को पावन प्यार प्रदाता हो,
भ्रातृ-भाव से भरित शत्रुघन भरत रूप साकार नहीं है।३।

निर्ममता की तड़ित ताड़िका क्षण-क्षण चमक रही है,
मारीची मा [illegible] सुबाहु की निर्भय धधक रही है।
दशों दिशाओं में दैत्यों की दामिनि दमक रही है,
यहां अमन के लिए दमन का क्यों उपचार नहीं है।४।

जन-स्वतन्त्रता सीता रोती रावण अरि की कारा मे,
बोल न सकती अश्रुधार मिल व्यास वारि की धारा मे।
कौन बंधाये धीरज उसको महानाश असिधारा में,
लङ्का में जाने को कोई पवन पुत्र तैयार नहीं है।५।

लिए विध्वंसक वज्र यहां खर, दूषण घूम रहे हैं,
देश-विभाजन की पी हाला मद मे झूम रहे हैं।
कुछ गुरुओं के शिष्य उन्हीं की पद-रज चूम रहे हैं,
पुण्य पुरातन स्नेह, शान्ति का खुलता द्वार नहीं है।६।

अङ्गद भी कहां है जो लङ्का में पैर जमा देगा,
जन सुलह सन्देश-पत्र रावण-हाथ थमा देगा।
निर्भय सत्य का विजय धर्म को जन-मन मध्य रमा देगा,
आतङ्कों के ठेकेदारों को करता कोई पार नहीं है।७।

'प्रणव' प्रेरणा और चेतना भरी रही है गागर में,
यौवन का पीयूष सूखता जाता गौरव-गागर में।
राम-सैन्य सब गोते खाती रामानन्दी सागर में,
कोई भी क्लीबत्व कला को देता निज धिक्कार नहीं है।८।

नमन तुम्हें है मेरा

राम! धन्य हो, तुमने भू की—
सारी दानव वृत्ति मिटायी
धरती के कण कण में—
तुमने! अभिनव जागृत ज्योति जगाई।
तुमने दिया अवनि-अम्बर को—
नूतन शुभ्र - सवेरा।
नमन तुम्हें है मेरा॥

विप्र-धेनु-सुर-सन्तों को दे—
करके निर्भयता अनुदान।
मानवता की रक्षा करके—
बने अप्रतिम तथा महान।
तोड़ दिया तुमने महिमण्डल—
पर दानवता का दृढ़ घेरा।
नमन तुम्हें है मेरा।

सत्य-धर्म की ध्वजा धरा पर—
तुमने लहराया मर्यादित।
मिटा दिया सारी धरती का—
अनाचार - अन्याय - अमित।
उत्तम आचरण तुम्हारे—
देख, भगा अज्ञान अंधेरा।
नमन तुम्हें है मेरा।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

"फिर तन धोने से क्या होगा ?"

जब अन्तर मन साफ नहीं तो,
फिर तन धोने से क्या होगा।
जन-जन जाके संगम नहाये,
फिर भी मन को चैन न आये।
आत्म तत्व को जान न पाया,
क्या हो राम नाम गुण गाये।
चिड़ियों ने चुग खेत लिया जब
तो अब रोने से क्या होगा।१।

जीवन के संग्राम रुधिर की,
बहती धार अकेली व्याकुल।
साथी संगी साथ छोड़ गये,
काम न आया कोई भी कुल
लहर-लहर-लहराती-लहरें,
नाव संजोने से क्या होगा।२।

जब क्यों देते झूठ सहारा,
बना रहस में स्वयं इशारा।
कंटक पथ ही सुपथ बन गया,
धारा ही बन गई किनारा।
रहा नहीं आकर्षण बाकी—
जादू टोने से क्या होगा।३।

अपराजित हार बने जो घर में,
पंच दस्यु राजा बन बैठे।
तन का तत्व छिपा कर ले गये,
अब क्या हो मन ऊमन बैठे
होना 'सरल' निराश न होना,
है तो होने से क्या होना।४।

—रामप्रकाश शर्मा 'सरल' शास्त्री, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री अब गृहाश्रम में आ चुके थे। इनको जीवन संगिनी होने का जिस सती साध्वी ने इन्हें आश्वासन दिया, वह अपने बुझते हुए जीवन की ज्योति एक मात्र कन्या के रूप में दे करके इस अकेले को अकेला रहने के लिये इस असार संसार को छोड़ कर सदा के लिए विदा हो गई; शायद इस लिये कि गृहस्थ का चिर-कालिक बन्धन आर्य समाज के सिद्धान्तों को फैलाने में बाधक न बन जावे। अपरिमित प्रीति की प्रतिनिधि उस धर्मपत्नी ने अपने गार्हस्थिक प्रेम के परिमित पाश में चिरकाल तक बांधे रहना स्वधर्म न समझा हो। पत्नीत्व के प्रबन्धनों से पति को उन्मुक्त कर दिया। शास्त्री जी ने भी मोहक सपनों के तानों बानों के जाल को क्षण भर में तोड़ कर पुनीत पथ को सत्वर अपना लिया। मानों संगिनी की वियोगाग्नि की ऊष्मा ही तभी से चतुरंगिणी निष्ठा और कठोर कर्मण्यता के केश पाशों में बांध कर श्री शास्त्री जी को आर्य समाज के कार्यक्षेत्र में एक दृढ़ संकल्पी कुशल शिल्पी, कर्मठ कार्यकर्त्ता, नेता और पथ प्रदर्शक के रूप में आर्य जगत के सामने उभार कर ले आई। सच भी है :—

'प्रेमापरिमितं यावद् भवेत् पथदर्शकम्।
जीवनेव हिमोचितमा: कर्त्तव्यं न निरुह्यते॥
अर्थात् इश्क का महदूद जब तक रहनुमा होता नहीं,
जिन्दगी से जिन्दगी का हक अदा होता नहीं॥

इसी हक को अदा करने के लिए धर्म के पथ से अनन्त सत्-चित् और आनन्द की गवेषणा मे भटकता तन की सुध न रखने वाला, बिना वेतन के ही आर्य समाज उत्तर प्रदेश के लिये एक त्यागी, तपस्वी व्यक्ति मिल गया। जो अपने ही अदम्य साहस, निरुपम धैर्य, अबाध पौरुषेय, सच्ची लगन और कठोर कर्मशीलता के सोपान पर चढ़कर आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के ससम्मान मन्त्री पद पर प्रतिष्ठित हुए। नीतिकार ने इसकी पुष्टि की है—

'साहसं वीरता त्यागो बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र देवः सहाय कृत॥

इस फक्कड़, मस्त, एकाकी व्यक्तित्व की धर्म प्रचारक कर्म यात्रा ने अविराम 'चरैवेति' चलते रहना ही सीखा है। घरबार छोड़ कर सारा जीवन महर्षि के सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में समर्पित करने का शिव संकल्प ही, मानों इस पथिक का सबल संबल और प्रचुर पाथेय है। फलतः श्री रामगोपाल जी शालवाले (वर्तमान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के प्रधान की पैनी दृष्टि से शास्त्री जी का त्यागमय कर्मठ व्यक्तित्व ओझल न रह सका अकबर कवि ने तभी तो कहा था :—

निगाहें कामिलों पै पड़ ही जाती है जमाने की।
कहीं छिपता है 'अकबर' फूल पत्तों में निहां होकर॥

गुणग्राही शालवाले महोदय ने इन्हें अपार स्नेह के आत्मीयता पाशों में इस सदाशयता और आसक्ति से उलझा लिया कि कभी ये सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री, कार्यालय मन्त्री, संयुक्त मन्त्री के रूप में स्वच्छायावत् अथवा चिरसहचर बना लिया। इसी बीच शास्त्री जी साहित्य रचना की ओर भी प्रवृत्त रहे, परिणामतः स्त्री शिक्षा आदि व्यावहारिक विषयों पर अनेक ग्रंथों का प्रकाशन किया। यह साहित्य अधिकतर आर्य विद्वान् भाई रामप्रसाद जी शास्त्री ने अपने 'मधुर प्रकाशन' से प्रकाशित किया है।

हम आज शास्त्री जी को बधाई और शतशः बधाई देते हैं कि वे आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) के मान्य महामन्त्री के रूप में प्रतिष्ठित होकर आर्य युवकों और वृद्धों के लिए भी पुनीत आशा के केन्द्र बन रहे हैं।

शास्त्री जी का स्वल्प काय कलेवर है, पर इसमें अनन्त और महान् आशाओं का फलवान् पादप पोषित और पल्लवित हो रहा है जिसकी विशाल छाया, देश के शताब्दियों से पीड़ित दलितों की आशा, हिन्दुओं के अभिन्न शक्तिशाली अंग हरिजनों के उत्थान का प्रबुद्ध आन्दोलन, नई शिक्षा की राष्ट्रघातिनी संस्कृत विनाशिनी प्रशासन नीति के वट-वृक्ष पर क्रूर कुठाराघात बन कर, संस्कृति और संस्कृत की रक्षा के लिये सुदृढ़ सत्याग्रह के रूप में उभर कर आयेगी।

इन आशाओं के साथ संस्कृत के विद्वान् गुरुकुल के स्नातक विद्या भास्कर, आगरा और लखनऊ विश्वविद्यालय के एम. ए. तथा निकट भविष्य में होने वाले पी-एच०डी० उपाधि से सुशोभित श्री शास्त्रीजी का हम सम्मान और अभिनन्दन करते हैं। अन्त में संक्षेप में इतना कहते हुए—

इस दौर में जीने का वह हकदार नहीं है,
मरने के लिये जो अभी तैयार नहीं है।

इस महान् कर्मठ व्यक्तित्व के हाथों हमारी संस्कृति और संस्कृत दोनों सुरक्षित हैं।

पुण्यश्लोक राजा रणंजयसिंह के पावन संस्मरण

(पृष्ठ ४ का शेष)

राजपरिवार सदा से ही राष्ट्रीय विचारधारा का संवाहक रहा है और पं० नेहरू तथा इन्दिरा गांधी जैसे मनस्वी लोगों ने राजा साहब की विशुद्ध देशभक्ति तथा उनके राष्ट्र प्रेम की सदा ही सराहना की है। राजनीतिक स्वार्थ मनुष्य को किस प्रकार विवांध बना देता है, यह प्रसंग उसका एक अच्छा उदाहरण है।

गत वर्ष मई मे अमेठी प्रवास मे मैंने भूपति भवन जाकर राजा साहब से भेंट करने का अपूर्व अवसर प्राप्त किया। उस समय उनके निजी कक्ष में अपने मित्र डा० उदयन्त कुमार शास्त्री की उपस्थिति मे राजा साहब ने अपने सुदीर्घ जीवन के अनेक रोचक संस्मरण हमें सुनाये। उनसे हुई वह मुलाकात मेरे जीवन की एक मूल्यवान निधि बन गई है। यहां यह स्मरणीय है कि अमेठी में ही हिन्दी के प्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी का समाधि स्थल भी है। यही वह प्रसिद्ध अवधी कवि था, जिसने हिन्दुओं में प्रचलित पद्मिनी और राजा रत्नसेन की प्रेम कथा को हिन्दुओं की ही बोली अवधी में शताब्दियों पूर्व दोहा चौपाई शैली में लिखा था। इसी काव्य के बारे में स्व० पं० रामचन्द्र शुक्ल को यह कहना पड़ा था कि उन्होंने जिस मुसलमान के घर में पदमावत की पोथी देखी, उसे साम्प्रदायिक दुराग्रह और संकीर्णता से दूर पाया। राजा साहब ने रामनगर स्थित महाकवि जायसी के विशाल समाधि स्थल पर एक भव्य द्वार बनवाया है तथा उस पर पदमावत की वे ही पंक्तियां अंकित करवाई हैं जिनमें कवि ने चारो वेदों को ईश्वरीय ज्ञान कह कर सम्बोधित किया है।

स्वर्गीय राजा साहब की आयु लगभग ८७ वर्ष की थी। उनका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं था किन्तु उनकी जीवन शक्ति प्रबल थी। वे आर्य समाज के पुरातन इतिहास के मर्मज्ञ तथा अनेक प्रकार की जानकारियों के विश्वकोष तुल्य थे। वे अपने जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष एक विशाल कवि सम्मेलन आयोजित कराते थे। उनके यहां विद्वानों, पण्डितों, सहृदय कवियों तथा काव्य रसिक व्यक्तियों का सदा से ही सम्मान और सत्कार होता रहा। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर पूर्ण गौरव के साथ प्रतिष्ठित देखना उनका एक सुखद स्वप्न था। काशी में स्वामी दयानन्द की शास्त्रार्थ स्थली पर निर्मित स्मारक की व्यवस्था के लिए निर्मित ट्रस्ट के वे सदस्य थे। स्वामी दयानन्द के प्रति अनन्य श्रद्धावान राजा रणंजय सिंह जी का निधन न केवल आर्य समाज की, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की एक अपूरणीय क्षति है।

आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ का वार्षिक उत्सव दि० ३१ अक्टूबर से ६ नवम्बर ८८ तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष यह उत्सव रामायण की कथा के रूप में मनाया जायेगा ताकि यह भ्रम दूर हो सके कि आर्य समाज भगवान राम को नहीं मानता। आचार्य प्रेमभिक्षु जी तपोभूमि मथुरा वाले पधार रहे हैं तुलसी रामायण के प्रसिद्ध गायक श्री पं० जयप्रकाश जी आर्य रामपुर से पधारेंगे। उत्सव से पूर्व २६ से ३० अक्टूबर तक प्रातः ५ बजे से प्रभातफेरी होगी। —मन्त्री

आगरा में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के तत्वावधान में ११४वां आर्य समाज स्थापना दिवस रविवार २० मार्च को आर्यसमाज नगर फ्रीगंज, आगरा में मनाया गया। इस अवसर पर स्थानीय आर्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं श्रीमद्दयानन्द अनाथालय के बालक–बालिकाओं ने ओजपूर्ण गीत प्रस्तुत किए।

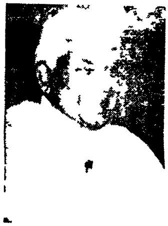
इस अवसर पर तीन प्रस्ताव पारित किये गये। एक प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री से मांग की गई कि वे भारत के सभी विश्वविद्यालयों को यह निर्देश दें कि जो छात्र विश्वविद्यालयों की किसी भी परीक्षा में प्रश्नपत्रों के उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें उनकी उत्तर पुस्तकों का विधिवत मूल्यांकन किया जाय।

दूसरे प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय सरकार से पंजाब में अविलम्ब सैनिक शासन लागू करने की मांग की गयी। तीसरे प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री से मांग की गयी कि उनके मन्त्रालय द्वारा अंग्रेजी भाषा प्रकाशित महर्षि दयानन्द की जीवनी के जिन आपत्तिजनक अंशों पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मन्त्रालय का ध्यान आकृष्ट किया है उन अंशों को उक्त पुस्तक में से निकालने के पश्चात् ही उसके विक्रय की अनुमति दी जाय।

शोक समाचार

आर्यसमाज शोहरतगढ़ (बस्ती) के मन्त्री श्री हरनारायनलाल आर्य की पूज्य माता सरस्वती देवी का २०–६–८८ को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री ज्ञानानन्द जी सरस्वती बड़नी (श्री शिवनारायण जी वेदपाठी) के द्वारा बाणगंगा नदी के तट पर सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें। —सभा मन्त्री

मुख्य मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी को जन्म दिवस पर बधाई



उत्तरप्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी के ७३ वें जन्म दिवस पर उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेश की आर्य जनता की ओर से हार्दिक बधाई प्रेषित करते हुए उनके यशस्वी एवं मंगलमय जीवन की कामना की है। श्री तिवारी ने एक वक्तव्य में विश्वास प्रकट किया है कि वर्तमान मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी के कुशल निर्देशन एवं उनकी अद्भुत प्रशासनिक क्षमता के कारण हमारा यह विशाल प्रदेश सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक प्रगति के पथ पर सदैव से अग्रशील बना हुआ है।

श्री नारायणदत्त जी तिवारी

प्रदेश अपने इस अनूठे नरपुङ्गव को जन्म देने पर गौरवान्वित है। प्रदेश के इस अद्भुत व्यक्तित्व ने प्रदेश अथवा केन्द्रीय शासन के जिस विभाग को भी सम्भाला उसे बुलन्दियों और ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। दूरदृष्टि एवं अद्भुत कार्यकुशलता ने आपके व्यक्तित्व को महान से महानतर बनाया है। प्रदेश एवं राष्ट्र का भविष्य आपके हाथों उज्वल है। प्रदेश की आर्य जनता श्री तिवारी जी के मंगलमय भविष्य की प्रभु से कामना करती है।

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में आयोजित अजमेर में भव्य ऋषिमेला

प्रतिवर्ष की भांति महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०५ वें निर्वाण दिवस के अवसर पर अजमेर में १२, १३, व १४ नवम्बर को विशाल समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, महात्मा आर्यभिक्षु जी महाराज ज्वालापुर, दर्शनाचार्य पं० उदयवीर जी शास्त्री, प्रो० शेरसिंह जी–पूर्व राज्य मन्त्री भारत सरकार एवं प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा, डा० भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़, श्री पन्नालाल जी पीयूष, आदि विद्वान्, महात्मा, आर्यनेता पधार रहे हैं। डा० भवानीलाल जी भारतीय का अभिनन्दन समारोह भी सम्पन्न होगा एवं देश भक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित होगी।

ऋषि मेले के अवसर पर अजमेर में आनासागर–तट पर ऋषि उद्यान स्थित भव्य यज्ञशाला में सामवेद पारायण यज्ञ, भजनोपदेश एवं वेदोपदेश का आयोजन किया गया है। यज्ञ का प्रारम्भ समारोह के अन्तिम दिन १४ नवम्बर को प्रातः सम्पन्न होगी।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज रामपुर धुन्सी अपनी प्रधान श्रीमती तारादेवी आर्य की माता जी के स्वर्गवास पर परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है तथा स्व० श्रीमती फुलवासा देवी के शोकाकुल परिवार के लिए धैर्य की प्रार्थना करता है। —मन्त्री

—आर्यसमाज विकासनगर कुर्सीरोड के सुप्रसिद्ध एवं कर्मठ सदस्य श्री रविशंकर श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री प्रियेश का ९ वर्ष की अल्प आयु में दि० ६–८–८८ को निधन हो गया।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य साहस प्रदान करे। —सभा मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46998 ४५९९१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन पी ७९
आश्विन शुक्ल ११
२३ अक्टूबर रविवार, १९८८ ई०

आर्यमित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

बाबू चन्द्रनारायण एडवोकेट का देहावसान

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् बाबू चन्द्रनारायण एडवोकेट का १० अक्टूबर १९८८ को सायंकाल बरेली में देहान्त हो गया। वे ८८ वर्ष के थे।

बाबू जी ने हिन्दी साहित्य, रंगमंच, और आर्यसमाज की विभिन्न प्रकार से अविस्मरणीय सेवाएँ की हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन पर 'गुरुधाम' और 'कर्णदास' दो नाटक उन्होंने लिखे जो रंगमंच पर अत्यन्त सफल रहे। पं० राधेश्याम कथावाचक, सोहराब मोदी, पं० नारायणप्रसाद 'बेताब', आगाहश्र कश्मीरी और पृथ्वीराज कपूर के साथ बाबू जी ने नाटक लेखन से लेकर मंचन तक सभी क्षेत्रों में काम किया।

वे एक प्रभावी लेखक और वक्ता थे। काव्य और संगीत दोनों पर उनका अधिकार था। उनके बनाये गीत आज भी आर्यसमाज के भजनीक गाते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का उपमन्त्री पद का कार्य करते समय उन्होंने 'आर्यमित्र' के सम्पादन में अनेक प्रकार से सहयोग किया।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, और 'आर्यमित्र' परिवार की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं दुःखी पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। —सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए जगदीश दीक्षित आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में एन०पी० प्रिंटर्स (निकट गुलमर्ग सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल शुक्ल द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

सभाकोषाध्यक्ष श्री यशपाल आर्य अस्वस्थ

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य कोषाध्यक्ष श्री यशपाल जी आर्य देहरादून के अचानक अस्वस्थ हो जाने के समाचार से बड़ी चिन्ता हुई।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्रस्वास्थ्य लाभ हो जिससे वे आर्य जनता की सेवा में पूर्ववत् तत्पर रहें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

कन्नौज की दो अपहृत लड़कियाँ बरामद

कानपुर—केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान तथा सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने अपने दो सहयोगियों श्री भगवानदास आर्य व श्री सीताराम आर्य की सहायता से कन्नौज से अपहृत दो युवतियों को हरजेन्दर नगर क्षेत्र से बरामद कर थाना चकेरी के सुपुर्द कर दिया। ज्ञातव्य है कि इन युवतियों में एक १५ वर्षीया हिन्दू कु० सुमन तथा दूसरी १२ वर्षीया कु० रुखसाना बेगम है। इन दोनों लड़कियों को [illegible] बहका कर कानपुर लाया गया पकड़े जाने के भय से युवतियों को हरजेन्दर नगर में छोड़ कर भाग गया। इस घटना की सूचना फोन पर श्री आर्य को दी जिस पर श्री आर्य ने दोनों बालिकाओं को थाना चकेरी के सुपुर्द कर दिया। पुलिस के पहुंचने पर उन्होंने अपने को अनाथ व सगी बहन बताया। परन्तु जब थानाध्यक्ष चकेरी श्री हरिशंकर शुक्ल व श्री देवीदास आर्य को विश्वास नहीं आया तब उन्होंने अपने सहयोगियों श्री भगवानदास आर्य व सीताराम आर्य सहित पुलिस फोर्स को मय बालिकाओं के कन्नौज भेजा तो सत्य पता लगा कि न तो वे अनाथ थीं न ही वे सगी बहनें थीं। उनके अभिभावक और पुलिस काफी परेशान थी, वे उनको पाकर काफी प्रसन्न हुए।

कन्नौज पुलिस अपहरणकर्ता जिसकी फोटो लड़कियों के बैग से बरामद हुई है कि तलाश कर रही है तथा इस सम्बन्ध में अपहृत बालिकाओं व उनके अभिभावकों से पूछताछ जारी है।

धर्म शिक्षा परीक्षा सबंधी सूचना

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ०प्र० द्वारा संचालित धर्म शिक्षा परीक्षाएं ८ जनवरी १९८९ दिन रविवार को होंगी, धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण, धर्माधिकारी एवं धर्मरत्न परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए आर्य समाजों द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं एवं दयानन्द बाल मन्दिरों के प्रधानाचार्य छात्रों को सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें, परीक्षा फार्म कार्यालय द्वारा भेजे जा चुके हैं जिन विद्यालयों से फार्म प्राप्त न हुये हों, वे सभा कार्यालय को लिखने की कृपा करें।

परीक्षा शुल्क धर्मरत्न १.५०, धर्म प्रवेशिका २.००, धर्म भूषण २.५०, धर्माधिकारी ३.०० मात्र निर्धारित है।

माधवसिंह
मन्त्री—प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं० ७।२७-२-८६

कार्तिक कृष्ण ६, रविवार, संवत् २०४५ वि०, दिनांक ३० अक्टूबर १९८८

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम०ए०, साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	३०)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९१
अङ्क	४३

गीर्वाग्वाणी सरस्वती

मां सुरभारती दिव्य वाणी संस्कृत का अपमान अब सहन नहीं होगा

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने स्कूल एवं कालेजों के पाठ्यक्रम से संस्कृत को हटाए जाने पर तीव्र आक्रोश व्यक्त करते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं नई शिक्षा नीति के संचालकों के फैसले की घोर निन्दा की है। उन्होंने कहा है—"संस्कृत हमारी प्रभु प्रदत्त दिव्य वाणी है इसी के माध्यम से हमने सृष्टि के आदिकाल से लेकर आज तक विश्व को वैदिक संस्कृति और सभ्यता का महान सन्देश दिया है। हमारे पूर्वज ऋषियों मुनियों और मनीषियों ने इसी भाषा के माध्यम से उस परम पावन कारुणिक जगदीश्वर का साक्षात्कार किया था और विश्व को एक सर्वोत्तम संस्कृति के सूत्र में आबद्ध रक्खा था। आज का भाषा-वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करता है कि विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत ही है। इस देश की तो यह अनमोल विरासत है। स्वतन्त्रता के पश्चात हमने आशा की थी कि शासन प्रदेशीय एवं केन्द्रीय स्तर पर इस भाषा के संवर्धन हेतु अनेक पग उठायेगा और इस अनमोल विरासत को उसके गौरवतम पद पर प्रतिष्ठापित करेगा, परन्तु यह देखकर महान आश्चर्य एवं दु:ख होता है कि हम अपनी इस सांस्कृतिक धरोहर को कम महत्व दे रहे हैं। यह निश्चित है कि यदि संस्कृत भाषा मिट गई तो हमारा सांस्कृतिक अस्तित्व ही लुप्तप्राय हो जायेगा।" स्वामी जी ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन फादर कन्नुकल के १६ सितम्बर के निर्देशों का विरोध करते हुए कहा कि संस्कृत राष्ट्र की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत की बुनियाद है। संस्कृत एकता को जोड़ने वाली शक्ति है।

स्वामी जी ने आगे कहा—संस्कृत को स्कूलों के कोर्स से हटाया जाना बहुसंख्यक समुदाय के धर्म और संस्कृति पर सीधा हमला है।'—उन्होंने बतलाया कि संस्कृत के देश मे संरक्षण और प्रसार की सरकारी नीति के सिलसिले मे, पिछले साल संस्कृत विद्वानों का एक प्रतिनिधि मण्डल प्रधान मन्त्री राजीव गांधी और मानव संसाधन विकास मन्त्री पी०वी० नरसिंह राव से मिला था। उस समय श्री राव ने भरोसा दिलाया था कि वे इस मुद्दे पर प्रमुख संस्कृत विद्वानो से बातचीत करेंगे। स्वामी जी ने कहा कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से जुड़े सभी स्कूलों में कक्षा ६ से १२ तक के छात्रों के लिए अंग्रेजी और हिन्दी के साथ कोई क्षेत्रीय भाषा पढ़ने का अधिकार था। क्षेत्रीय भाषाओं में संस्कृत भी एक भाषा थी।

स्वामी जी ने कहा कि 'संस्कृत रक्षा समिति' की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल जल्दी ही प्रधान मन्त्री और मानव संसाधन मन्त्री से मिलकर इस मुद्दे पर बात करेगा। उन्होंने कहा अगर इस प्रतिनिधि मण्डल को बोर्ड के इस अन्यायपूर्ण और अपमानजनक फैसले के खिलाफ कोई आश्वासन नहीं मिलता तो सार्वदेशिक सभा इस प्राचीन भाषा के महत्व को कायम करने के लिए देश भर में आन्दोलन चलाएगी।

इस अवसर पर उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने कहा कि यह एक ज्वलन्त राष्ट्रीय प्रश्न है और हमारी सांस्कृतिक अस्मिता से जुड़ा हुआ है। आगामी १२ तथा १३ नवम्बर को लखनऊ में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का वृहदधिवेशन होने जा रहा है जिसमें प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में भाग लेंगे। उसमें इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा। प्रदेश की आर्य जनता अपने शिरोमणि नेता पू० स्वामी आनन्द बोध जी के उक्त आह्वान का पूर्ण समर्थन करती है और उनके निर्देश पर अपना सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर है।

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वृहदधिवेशन
दि० १२, १३ नवम्बर
सन् १९८८ को
डी० ए० वी० कालेज,
लखनऊ में सम्पन्न होगा

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

७–वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन — १२–११–८८ एवं १३–११–८८
८ चुनाव परिणाम की घोषणा — निर्वाचन समाप्ति के बाद

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
नारायणस्वामी–भवन
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ–१

दिनांक १२–९–८८]

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी॥
—राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

सम्पादकीय–

लखनऊ–कार्तिक कृष्ण ६ संवत् २०४५, रविवार ३० अक्तूबर १९८८,
दयानन्दाब्द १६३, सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

साम्प्रदायिक एकता के लिए–

हमारा सुझाव

* * *

मानव शरीर परमात्मा की अनमोल देन है। पता नहीं कितने सुकृतों का परिणाम है। इस मानव शरीर को बिना किसी अपराध के केवल इसलिए कि उसकी उपासना पद्धतियां भिन्न हैं, छुरा भोंककर, गोली दागकर या बम फेंककर नष्टकर देना घोर एवं जघन्य अपराध है जो शासन की दृष्टि से भले ही ओझल हो जाय किन्तु परमात्मा ऐसे क्रूर हिंसक को जो निर्दोष मानव की हत्या करता है, कभी क्षमा नहीं कर सकता। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। उसमें वैचारिक क्रान्ति लाकर उसे महान, ईश्वराज्ञा के अनुरूप बनाना मानवीय कर्त्तव्य है। प्रथमतः और अन्ततः मानव और मानव मे भेद ही क्या है। पैदा होते समय न वह मुसलमान था न ईसाई न हिन्दू वह एक मानव चोला लेकर आया था–जिसके लिए मुण्डक उपनिषद् कहती है–

'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञान ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

ऐ मानव! वह सत्य से मिलता है, तप से मिलता है, सम्यक् ज्ञान से मिलता है। हमारा यह निश्चित विश्वास है कि एक दीनदार, ईमानदार मुसलमान अथवा एक धर्मभीरु, चींटियों तक को भक्ष्य की उपलब्धि कराने वाला हिन्दू किसी मानव की हत्या कर ही नहीं सकता। दोनों स्वस्तिपथ के राही हैं। हम तो विश्व में उस वैदिक कल्पना को साकार करना चाहते हैं जहां समस्त मानव समाज के हृदयस्थल एक ही हों, विचार एक हो, उपासना पद्धति एक हो आचिज्ञान की सन्देश वाहिका पुस्तिका एक हो। निर्दोष प्राणियों के खून से रंगने वाले हाथ गुलाल और अबीर लेकर आलिंगन करने को आतुर हों। जो धर्म इस के विपरीत शिक्षा देता है वह धर्म के नाम पर कलंक है, ईश्वर के प्रति श्रद्धा का द्योतक नहीं, विश्वासघात का द्योतक है।

इधर फैजाबाद, खतौली, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़ से साम्प्रदायिक उन्माद और हत्या की जो खबरें आ रही हैं उन्हें सुनकर मानवता का सिर लज्जा से झुक जाता है। हम आजादी के ४० साल बाद भी किस बर्बर युग मे जी रहे हैं। भय, आशंका और किस ओर से कब मृत्यु आ जाय–इस चिन्ता ने भारतीय नागरिकों का जीवन नरक तुल्य बना दिया है। कब हम अपने को इस राष्ट्र का अंग समझेंगे। कब इस मंजुला पावन भूमि को मातृवत् आत्मसात् करेंगे और कब एक ही पूर्वजों का खून रगों में लिए भाइयों को भाइयों से स्नेहालिंगन में आबद्ध कर पायेंगे। इस तथ्य को कब स्वीकारेंगे कि भारतभूमि पर रहने वाला हर व्यक्ति भारतीय है। उसके पूर्वज आर्य थे। लगभग १००० वर्ष पूर्व जब सिन्ध पर सबसे पहिला आक्रमण मुसलमानों का हुआ था उस समय थोड़े से अरब सैनिक आये थे और अपने साथ कोई स्त्री नहीं लाये थे। यहां के क्षत्रिय राजाओं की आपसी फूट और विद्वेष के कारण उन्हें विजय पर विजय प्राप्त होती गई। आज जितने भी मुसलमान इस भूखण्ड पर हैं वे शतप्रतिशत हिन्दू माताओं की कुक्षि से जन्मे हैं। रीतिरिवाज मे वे सब हिन्दू हैं परन्तु धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक विष से भरी हुई, धर्म से जिनका कोई ताल्लुक नहीं, ऐसी पुस्तकें पढ़ा–पढ़ाकर उनके मस्तिष्क को विषाक्त कर दिया गया है। शाहबुद्दीन और मौलाना बुखारी जैसे सम्प्रदायवादियों ने विषैले भाषण दे देकर उन्हें हिन्दुओं के खिलाफ कर दिया है। मुस्लिम देशों से आया हुआ अपार धन मुसलमानों में साम्प्रदायिक भावना उभाड़ने तथा उन्हें हिन्दुओ के खिलाफ भड़काने में प्रयुक्त हो रहा है।

भारतीय प्रबुद्ध समाज एवं शासन को इस पर गम्भीरता से विचार करना होगा। पश्चिमीय धारणा हमें एक राष्ट्र बनने में बाधक बन रही है। हम अपने को समस्त राष्ट्र का अंग न समझकर अपने को भिन्न–भिन्न राष्ट्रीयता का अंग मानने लगे हैं और अपनी २ राष्ट्रीय धारणाओं के अनुरूप अपना अलग राज्य भी मांगने लगे हैं। खालिस्तान, गोरखालैण्ड आदि की भावनाएं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

अतः इस मूल समस्या को सुलझाने हेतु हमारा सुझाव है कि शासकीय स्तर पर विभिन्न धर्मावलम्बी आप्त पुरुषों एवं धर्मव्यवस्थापकों का सम्मेलन बुलाकर सत्यासत्य का निर्णय लिया जाय और सभी अपनी धर्मव्यवस्था देने वाले उस सत्य को स्वीकार करें अपने-अपने अनुयायियों को उस निर्णीत सत्य का अनुपालन करने का आदेश (धर्माज्ञा) प्रसारित करें। * * *

शताब्दी समारोह आर्य समाज लालकुर्ती

स्वागताध्यक्ष पं० इन्द्रराज जी का स्वागत भाषण

★

परम पूज्य सन्यासी वर्ग, आदर के योग्य विद्वन्मण्डली एवं उपस्थित सज्जनों एवं देवियों

सदियों से पराधीनता की शृंखला में जकड़ी हुई अपनी पावन मातृभूमि को विदेशी दासता से मुक्त कराने का प्रथम उद्घोष इसी मेरठ की धरती ने किया था। अमर शहीद मंगल पाण्डे के मन में एक क्रांति की ज्वाला उठी जिसने बाद में उग्र रूप धारण कर लिया और आजादी के ये दीवाने, परवाने, मां के रणबांकुरे सिपाही अपनी चमचमाती चमचमाती तलवारें और राइफलें लेकर अमर शहीद मंगल पांडे के पीछे निकल पड़े थे अत्याचारियों का समूल नाश करने। मेरठ की रज को सरमाथे पर लगाकर उन्होंने एक ही कसम खाई थी—'हम पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई मां की बेड़ियां तोड़कर ही रहेंगे। और सचमुच १८५७ की उस क्रान्ति ने भारत की सुषुप्त आत्मा को झकझोर कर जगा दिया था और जगा दिया था उसके सोये हुये स्वाभिमान को। स्वतन्त्रता की रणभेरी बज चुकी थी। स्वतन्त्रता के स्वर्णिम विहान के आगमन ने भारत मां के ललाट पर स्मित मुस्कान की रेखायें खींचना प्रारम्भ कर दी थीं। भारत का कण-२ स्वाधीनता के निनाद से गुंजायमान हो गया था। हमने देखा, १८५७ की वह क्रान्ति जिसका शुभारम्भ इसी मेरठ की वीरप्रसाविनी धरती से हुआ था, कुचला गया, तोड़ा गया और हमारी हुंकार दरिद्रों की पार्लियामेन्ट में जाकर लन्दन तक टकरा गई फिर फन कुचले हुए नाग की तरह दरिन्दों ने हम पर जुल्मोसितम के अकथनीय अत्याचारों की शृंखलायें फिर शुरू कर दी थी परन्तु इन सब रक्त रंजित अत्याचारों को स्वामी दयानन्द जी ने भूमिगत होकर अपने नेत्रों से देखा था। उन के जीवन चरित्र में इन तीन वर्षों का कोई वर्णन नहीं मिलता। आज भी उन अत्याचारों के अवशेष खूनी पुल आदि नामों से मेरठ में दृष्टिगोचर होते हैं जहां इस क्रान्ति की ज्वाला को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने हमारे अमर शहीदों को फांसियां दी थी और मनमाने अत्याचार किये थे। वे सब क्रूर दृश्य स्वामी दयानन्द जी के समक्ष थे और उन्होंने उन खूनी दृश्यों का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में बड़े ही विचित्र और ओजस्वी ढंग से किया है। उन्होंने वहां सन् का प्रयोग न करके संवत् का प्रयोग किया है। सन् और सम्वत् में ५७ वर्ष का अन्तर होता है। और महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—'जब संवत् १९१४ के वर्ष में अर्थात् [१९१४-५७ वर्ष= १८५७ ईसवी में] तोपों के मारे मन्दिर मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं। उस समय वाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा उस समय मन्दिर की मूर्तियां कुछ भी न कर सकीं। हां जो कृष्ण सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।' इन ओजस्वी शब्दों से स्पष्ट प्रकट है कि इस क्रांति को कुचलने के लिये अंग्रेजों ने भयंकर अत्याचार किये थे। क्या इससे हमारी स्वाधीनता की तमन्ना समाप्त हुई कदापि नहीं,...उत्सर्ग की सहस्र-पुनीत भावना को लेकर हमने फिर संगठित होकर आजादी की लड़ाई लड़ी और हम जिन्होंने स्वतन्त्र हुए। मेरठ के उन बलिदानी वीरों का स्वप्न साकार हुआ जिन्होंने १८५७ में मां के चरणों में बैठकर मां को आजाद कराने की कसम खाई थी। हमें अपने पूर्वजों पर गर्व है, और मैं मेरठ के तथा देश के उन शहीदों को जिन्होंने भारत माता को स्वतन्त्रता के लिये हंसते-२ अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था—आर्य समाज की ओर से पावन श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूं।

आज मेरठ की इसी बलिदानी भूमि पर इस आर्यसमाज लालकुर्ती के शताब्दी समारोह पर आप सब आर्य भाई बहनों का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है। आर्य समाज अपने जन्म से ही अपने अन्तस्तल में कुरीतों के विरुद्ध विद्रोह की चिन्गारी छिपाए हुए हैं। इसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का जीवन संघर्ष का जीवन्त उदाहरण है। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है .....विदेशी शासन कितना ही अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज्य से अच्छा कदापि नहीं हो सकता। उनके जीवन की खोज में इस नये रहस्य का भी उद्घाटन हुआ है कि किस प्रकार उन्होंने स्थान-२ घूमते हुए अनेक राजाओं से सम्पर्क करके भारतीय स्वतन्त्रता के इस प्रथम संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

आर्य समाज की स्थापना--

महर्षि दयानन्द ने इस समाज की स्थापना अन्धविश्वास, रूढ़ि, धार्मिक शोषण, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह, बहुदेवतावाद, जातिवाद परस्पर की फूट, मद्य, मांस, बलि, जुआ आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाने के लिये की थी। भारत की जनता भाग्यवादी बनकर हाथ पर हाथ धरे बैठी थी। पुरुषार्थ और आत्म सम्मान से मुख मोड़ लिया था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द के तपस्वी अनुयाइयों के कारण आर्य समाज ने आध्यात्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक क्रान्ति करके अछूतों को गले लगाया, महिलाओं को सम्मान दिलाया, जड़ के स्थान पर एक चेतन देवप्रभु की पूजा चलाई और सृष्टि के आदि में उस परमकारुणिक प्रभु के दिये हुए दिव्य ज्ञान को वेदों के रूप में मानव के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। मानवीय इतिहास में यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति है और इसके लिए मानव समाज इस महर्षि के प्रति सदा सदा के लिये ऋणी है। आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती) मेरठ कैन्ट की स्थापना १८८८ में हुई थी और इसकी स्थापना को भी १०० वर्ष पूरे हो गये हैं। पहले-२ इस आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने वाले स्वर्गीय जगन्नाथ प्रसाद जी ठेकेदार, स्वर्गीय बाबू छेदीलाल जी [कमिस्सेरियट गुमास्ता], स्व० लाला राम जी लाल जी, स्व० लाला अयोध्या प्रसाद जी, स्व० लाला गोकुलचन्द जी, स्व०लाला रामचन्द्र सहाय जी, स्व० लाला नत्थूमल जी महेश्वरी तथा स्व० मगन प्रसाद जी थे। जिनके अथक परिश्रम से इस आर्य समाज का भवन बना। १८९० में इसका प्रविष्ट आर्य प्रतिनिधि सभा [संयुक्त प्रान्त] उ० प्र० से हुई। तत्पश्चात् स्व० बाबू कालीचरण जी [स्वामी अखिलानन्द जी] स्व० लाला रामस्वरूप जी, स्व० लाला प्रभुदयाल जी स्व० लाला सूरज भान जी सर्राफ आदि महान पुरुषों ने इसे सींचा और सेवा के क्षेत्र में कीर्ति स्तम्भ स्थापित किया। भवन की रजिस्टरी २४ जुलाई १९१३ में सभा के नाम करवायी गई एवं कन्याओं में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए आर्य

[शेष पृष्ठ ४ पर]

[पृष्ठ ३ का शेष]

कन्या पाठशाला की स्थापना की गयी जो आज भागीर्थी आर्य कन्या इन्टर कालिज के रूप में अपना गौरवमय स्थान मेरठ में बनाये हुए हैं पहले पहले श्रीमती कलावती देवी, पं० राजनारायण मेहता एवं बाबू हरगोविन्द प्रसाद की अथक सेवाओ के कारण ही यह महत्वपूर्ण स्थान इस शिक्षा संस्था ने प्राप्त किया है। इस आर्य समाज द्वारा युवाओं मे और जनता में बड़े-२ महत्वपूर्ण कार्य हुए जिनका श्रेय स्व० श्री रामधन जी एवं स्व० श्री विद्या सागर जी को जाता है अतः इन १०० वर्षों की उपलब्धियों का आंकलन मैं मेरठ की जनता पर छोड़ना चाहता हूं हमने किन-२ कठिनाइयों से गुजरते हुये अपने जनसेवा के महान व्रत को पूरा किया है और कर रहे हैं-यह सब आपके निर्णय पर मै छोड़ता हूं। हम तो केवल इतना ही जानते हैं, हम अच्छे हैं या बुरे हैं आपके हैं, मेरठ की जनता के हैं हमने तो आपकी सेवा का व्रत लिया हुआ है, आप सहयोग दें तो भी न दें तो भी हम सेवा के व्रत से कभी मुख नहीं मोड़ेंगे। आप कभी भी किसी भी स्थिति से हमें पुकार कर देखिए हम आपके साथ हैं, साथ रहेंगे। पिछले वर्ष हमने मेरठ को साम्प्रदायिकता की आग में धू-धू करके जलते देखा है। हमने देखा एक ही पूर्वजों का खून जिनकी रगों में बह रहा है वे कैसे वहशी बन गये हैं, एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। निर्दोष स्त्रियों, बच्चों के खून से उनके हाथ रंगे हुये हैं। मानवता चीत्कार कर रही है। ऐसे समय मे आर्य समाज अपने दायित्व को लेकर आगे आया और इसने मेरठ की जनता की जो सेवा की है उसे मै दोहराना नहीं चाहता हूं, आप सब उससे भलीभांति परिचित है।

विघटन के बादल—

आसुरी प्रवृत्तियां यदाकदा उभरती ही रहती हैं। आज दुर्भाग्य से हमारे देश पर विघटन के बादल पुनः मंडराने लगे है। भाषावाद, प्रान्तवाद, जातिवाद और सबसे भयंकर आतंकवाद ने भारतीय जन मानस को विलोडित कर रखा है। हमारे देश का हराभरा पंजाब प्रदेश आतंकवाद की क्रूर अग्नि में पिछले ७ वर्षों से जल रहा है। आज सब जानते हैं कि तरह निरीह निर्दये लाचार अल्प संख्यक हिन्दू आतंकवादियों के खूनी खेल का खिलौना बन रहे हैं। परिवार के परिवार या तो मौत की चादर से ढांक दिये जाते हैं अथवा बेसहारा निराश्रित बनाकर घर छोड़ने पर विवश कर दिये जाते हैं। मानवीय मूल्यों का कोई औचित्य ही नहीं है। दानवता अपने क्रूरतम अट्टहास में पंजाब की सुख शान्ति और समृद्धि को धीरे-२ निगलती जा रही है। मानव का यह वीभत्स स्वरूप अपनी इस पावन भूमि में हमें देखने को आज मिल रहा है। जहां सिक्ख धर्म की स्थापना गुरुओं ने हिन्दू धर्म के रक्षार्थ की थी वे ही आज उसका भक्षण कर रहे हैं और हिन्दू समाज असहाय बना आपकी, हमारी और आर्य समाज की ओर डबडबाई आंखों से निहार रहा है। ३० जुलाई १९८६ को बंगला साहब गुरुद्वारे में जो अखिल भारतीय सिक्ख धर्म संघ का अधिवेशन हुआ था उसके अध्यक्ष मण्डल के एक सदस्य ने स्पष्ट कहा था—सिक्ख हिन्दू नहीं हैं वे अलग कौम हैं और उनका हिन्दुओं से उतना ही सम्बन्ध है जितना ईसाई का मुसलमानों से।

इसी प्रकार कुछ समय पूर्व रामकृष्ण मिशन के उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर आसीन व्यक्तियो ने स्पष्ट कहा था कि उनका मिशन हिन्दू मिशन नहीं है। स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा का एक समान ही महत्व था। इसी प्रकार सुदूर उत्तरी भाग एवं दक्षिण में ईसाइयों की अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों ने देश की एकता और अखण्डता को चुनौती दे रखी है। अंग्रेजों ने हमें नारा दिया था भारत देश नहीं है — देशों का जो बड़ा उप महाद्वीप है, हम स्वस्वाभिमान से फूल कर कुप्पा हो गये। कांग्रेस ने हमें नारा दिया भारत अनेक शासनों, स्वतन्त्र इकाइयों का संघ है यह गणराज्य है—इस कल्पना ने हमें रूस और अमेरिका के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। आज का बुद्धि जीवी वर्ग कहने लगा है—सभी धर्म समान हैं, सब रास्ते वहीं जाकर मिलते हैं — हमारा दृष्टिकोण मानवतावादी हो गया—श्रेष्ठ आर्यत्व की भावना विलुप्त हो गई। हमारी दृष्टि में यह सब आर्य जाति को विघटित करने के आयाम हैं—आर्य समाज को इस समन्वयवादी प्रवृत्ति से बचते हुए अपने वर्चस्व को लगन से यथावत् रखना होगा।

कार्य प्रणाली एवं दिशायें—

सृष्टि के आदिकाल से लेकर महाभारत काल पर्यन्त हमारी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, विश्वबन्धुत्व, मानव कर्तव्य एवं शिक्षा आदि सभी का आधार वेद था। इसका प्रमाण यह है कि आर्यों का वैयक्तिक जीवन हो, चाहे सामाजिक, पारिवारिक या आध्यात्मिक जीवन हो, सभी पर वेदों की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वेद अपौरुषेय हैं और मानव के ऐहिलौकिक एवं पारलौकिक कल्याणार्थ जितना भी ज्ञान अपेक्षित है, सब उनमें समाहित हैं। इसीलिये वेद के आधार पर मानव समाज की रचना का उद्देश्य ही आर्य समाज की प्रमुख दिशा है। हमारा विश्वास है जिस दिन हम अपने इस गन्तव्य को प्राप्त कर लेंगे—विश्व सुख और शांति का आगार बन जायेगा। प्रतिस्पर्धा में जूझता हुआ मानव एक दूसरे का पूरक बन जायेगा और 'यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्' के स्वप्न को आज समाज साकार कर सकेगा। आर्य समाज एक कार्य प्रणाली है जिसके माध्यम से हमने अपना गन्तव्य बहुत कुछ पूरा कर लिया है। आज सबसे बड़ी, संभवा की, हमारी देन यह है कि हमने भ्रमों का उच्छेदन कर दिया है। सत्य की व्यवस्था के लिए विश्व के किसी कोने में रहने वाला मनीषी, विद्वान, नेता, शिक्षक, अभिभावक वेदों की ओर आ सकता है — उसे आना पड़ेगा क्योंकि हमारा विश्वास है— 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।'

हमारा अतीत महान था और भविष्य हमारे हाथ में है निराशा दुराशा हमारे शब्द कोष में नहीं है। हमारे प्रवर्तक ने निन्दा स्तुति भय से दूर रहते हुये पथ पर आगे बढ़ना सीखा था। विषपायी बनकर वे अमृतदायी बन गये थे। प्रभु का परम पावन आशीर्वाद उनके साथ था। हम उनके अनुयायी हैं उनके स्वप्न को साकार बनाने का हमने व्रत लिया है। आर्य समाज को प्रगति देने के लिये हमें नई-२ कार्य प्रणालियां अपनानी होंगी। नये आयाम निर्धारित करने होंगे। आबाल वृद्ध रुचिकर कार्यक्रमों का चयन करना होगा। इस शताब्दी में हमें और आप को मिलकर यही विचार करना है। हमारा मेरठ, प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। हम चाहते हैं हमारी समाज का यह शताब्दी समारोह इस क्षेत्र का नहीं अपितु प्रदेश एवं पूरे देश को प्रेरणा देने वाला सशक्त सम्बल बने। वेद के शब्दों में हम 'आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतो ऽयनम्' उदीर्ण पथ पर चलने वाले जीवन्तों के जीवन्त हैं। वेद की ज्योति ने हमारे पथ को प्रकाशित कर दिया है। हमारा पथ सुप्रकाशित है सुलक्षित है 'कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ हमारा ध्येय है और उसे प्राप्त करना हमारा उद्देश्य है। इन्हीं शब्दों के साथ में, इस शताब्दी समारोह में पधारे हुए सभी पू० सन्यासियों आर्य विद्वानों, प्रचारकों एवं श्रद्धालु जनता का हृदय से स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूं।

भगवन् ! हमारी रक्षा करो

(श्री हरिवंशलाल मेहता-वेदमनीषी ८-बी सिंगारनगर-लखनऊ-५)

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेः अराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतः बृहद्भानो यविष्ठ्य ।
ऋ० १-३६-१५

हे बहुत बड़े तेज तथा महाशक्ति से युक्त अतिशय बलवान् परमेश्वर ! हमारी राक्षसों से रक्षा कीजिये । धूर्त, कपटी, स्वार्थी कृपणों से हमें बचाइये । हिंसा करने वाले घातकों से हमारी रक्षा कीजिये तथा क्रूर विनाशकारी तत्वों से हमारी सुरक्षा कीजिए ।

निस्सन्देह आज का वातावरण अत्यन्त भयावह हो रहा है । सुबह सवेरे उठें, समाचार उठाकर पढ़ें, रेडियो खोल कर सुनने बैठें, टी०वी० सैट चालू करें प्रतिदिन सबसे अधिक समाचार हिंसा, मार धाड़, खून खराबा, आगजनी, लूट खसूट, बाढ़, भूकम्प आदि-२ ही पढ़ने सुनने को मिलते हैं । एक ओर आधुनिक सभ्यता का रहन सहन ठाठें मार रहा है तो दूसरी ओर मृत्यु का तान्डव नाच हो रहा है विनाश विनाश सर्वत्र विनाशलीला फैलती जा रही है ।

कुछ सम्प्रदाय ऐसे हैं जिनकी मान्यता के अनुसार जीवात्मा प्रथम बार परमात्मा द्वारा जन्म लेता है और कुछ दिन, महीनों अथवा वर्षों का एक ही जन्म व्यतीत कर लेने के पश्चात् कयामत की प्रतीक्षा में कबर में पड़ा रहता है । ऐसी मान्यता में रहने वाले संसार में कम नहीं बहुत पाये जाते हैं । संसार अच्छा हो, बुरा हो, सुख की स्थिति हो अथवा दुःख का बोलबाला हो, थोड़ा सा एक ही तो जन्म का समय है जैसे तैसे निकल जायेगा । यदि पाप अपराध करके भी गुजार दिया तो उनकी कुछ मान्यतायें अथवा विचारधारा ऐसी भी हैं कि वह अपने माने हुए पीर, पैगम्बर, औलिया गुरू, रहनुमा, रहबर आदि की सिफारिश से किये गये पापों अपराधों से क्षमा याचना करके मुक्ति पा लेंगे । इन एजेन्सियों की सहायता से वह अपने लिये तथाकथित स्वर्ग में स्थान सुरक्षित करवाने मे सफल हो जायेंगे । ऐसे सभी मान्यताओं वालों की क्या गति होगी उनकी वह जानें । परन्तु वैदिक धर्म के मानने वाले आर्य हिन्दु समाज में शरीर धारी जीवों के लिये विचार करने की बात यह है कि हमारी मान्यता के अनुसार तो जीवात्मा का या तो मोक्ष होता है [जो बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा रखता है] अथवा सच्ची बात तो यह है कि बहु संख्या में या यूं कहें एक आध को छोड़ कर समस्त जीवात्मा जन्म आवागमन के अनुसार बार-२ कर्मानुसार भिन्न-२ शरीरों में प्रकट होकर जन्म धारण करते आये हैं, आ रहे हैं और आते रहेंगे जब तक किसी भाग्यवान का मोक्ष न हो जाये । ऐसी जिनकी मान्यता है जैसे कि हम आर्य हिन्दू लोग हमें विचार करना चाहिये कि जब हमने अनन्त दीर्घकाल तक बार-२ शरीर धारण करके यहीं इसी संसार में आना है और आकर फिर २ यहीं रहना है तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं बन जाता कि हम अपने परमपिता के बने इस संसार को रहने के योग्य बनाये रखें । हम परमात्मा को अपनी माता अथवा पिता कहते मानते हैं । और भी बन्धु सखा आदि बहुत से सम्बन्ध आदि स्थापित किये रहते हैं तो हम कैसे सपूत हैं, कैसे उसके अपने हैं, कैसे सदा सर्वदा के उसके साथी हैं कि अपने शाश्वत साथी के बने सुन्दर संसार में हिंसा, घातपात, लूट-खसूट, मारधाड़, खूनखराबा, विनाश और उजाड़ पछाड़ के बढ़ते चले जाते वातावरण को सहन किये चले जा रहे हैं । प्रस्तुत मन्त्र में परमात्मा से सुरक्षा की प्रार्थना की गई है । हमारी मान्यता में प्रार्थना करके हाथ में हाथ रखकर बैठ जाना और परमात्मा के भरोसे पड़े रहना तो कहीं नहीं है । प्रार्थना से तो आत्मा में साहस, बल वीर्य का संचार होता है । परमात्मा का सहाय मिलता है । प्रार्थना पीछे प्रयास प्रयत्न तथा तत्सम्बन्धी पुरुषार्थ करना परमावश्यक है । हमने यहीं रहना है, हमने इस शरीर को छोड़ देने के पश्चात् भी यहीं बार २ आकर रहना है इसलिए अन्य सम्प्रदायों को छोड़िये हमारा जिनका पुनर्जन्म पर अटूट विश्वास है जो आत्मा की अमरता को मानते हैं, न इसे जन्मता और न मरने वाला ऐसी आस्था रखते हैं उन्हे तो गम्भीरता से सोचना ही चाहिए कि इस घृणित, दूषित, घातक, अत्यन्त हानिकारक तथा अवांछनीय वातावरण को कैसे बदला जाये । लोगों के हृदय में उस महा तेजस्वी अत्यन्त शक्तिशाली परमात्मा का भय भरना आज की परमावश्यकता है । आर्य नर-नारियों का यह परम पुनीत कर्तव्य है कि आज के मानव के मन मस्तिष्क में प्रभु के वास्तविक स्वरूप, उसके दण्ड विधान तथा उसकी पक्षपात रहित न्याय व्यवस्था का खुलकर तथा स्पष्ट रूप से बीज वपन किया जावे । लोगो को आज उस सर्व शक्तिमान, तेजोमय प्रभु के प्रति यदि कोई आस्था है तो केवल एक भावना है कि वह दयालु और क्षमा करने वाला भोले बाबा हैं । मन्दिर तथा गुरुद्वारों में भजन कीर्तन तथा चाटुकारिता की कुछ प्रार्थना अथवा अरदास के रूप में कुछ वाक्य बना लिए गए हैं जो तोते की रटन्त की भांति बोल दिये जाते हैं और इस प्रकार कृत पाप व अपराध के क्षमा के लिए मत्था टेकने के साथ आवेदन पत्र प्रस्तुत कर दिया जाता है । इस खुशफहमी में रहने वालों की इस अविद्या और भ्रान्त धारणा को कौन दूर कर सकता है । आर्य नर-नारियां ही साहस धारण करके आगे आयें और युद्ध स्तर पर परमात्मा का न्यायकारी स्वरूप दर्शाने का भागीरथ प्रयास करें समय आ गया है कि हम अपने को ईश्वर का पुत्र पुत्रियां कहने वाले आर्य जन ईश्वर का भय जन २ में बिठाने का जोरदार अभियान चलायें । इस विनाश की स्थिति के मूक दर्शक बनकर ही बैठे न रहें ' जैसे निज घर के उजड़ने पर हमें कष्ट होता है उसी प्रकार अपने मालिक के चमन को उजड़ते देखकर क्या हमें पीड़ा नहीं होनी चाहिए । तो आइए हम ऋषिवर दयानन्द के निर्वाणोत्सव की इस पावन घड़ी में प्राणपण से सपथ लें कि हम अपने २ क्षेत्र में इस कार्य को प्रथम स्थान देंगे । हमारा जयघोष होगा "लोगों ईश्वर सब देख सुन रहा है उसका भय खाओ ,"

*

महात्मा नारायण स्वामी

[श्री सुधीन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० सांख्य योगतीर्थ लखनऊ]

आर्य समाज के उन्नायकों में यों तो अनेक महान् विभूतियाँ हुई हैं परन्तु महात्मा श्री नारायण स्वामी जी का स्थान उन विभूतियों में अन्यतम है। आर्य समाज को आज विश्व में जो गौरव प्राप्त है उसमें स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा आर्य सत्याग्रह के प्रथम अधिनायक पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी का अपूर्व योगदान है यों तो महात्मा हंस राज जी प० गुरुदत्त जी आदि अनेक विभूतियों ने भी आर्य समाज के प्रचार प्रसार में महान् कार्य किए हैं परन्तु फिर भी महात्मा जी ने जिस प्रकार से आर्य समाज का संगठनात्मक रूप दिया है वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में सदैव अंकित रहेगा।

पूज्य महात्मा जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कर्मठ एवं मूर्धन्य कार्यकर्ताओं में अग्रगण्य थे सभा के प्रमुख साप्ताहिक पत्र आर्य मित्र के सर्वप्रथम सम्पादक थे। उन्होंने ही आर्य मित्र का हिन्दी में प्रकाशन प्रारम्भ किया था।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की सेवा में रहते हुए उन्होंने अपने जीवन को इतना अधिक तपस्वी बनाया कि गर्मी के दिनों में जब अधिक गर्मी पड़ती थी तब वे अपने बंगले से निकल कर बाहर आते थे और घण्टे आध घण्टे बाहर खड़े होकर पुनः बंगले में आकर अपने कार्य में संलग्न हो जाते थे। अधिक गर्मी में खड़े होकर अन्दर आने से उन्हें शक्तिमत्ता अनुभव होता था। यही उन तपस्वी का प्राकृतिक कूलर था।

गुरुकुल से विदा होते हुए प्रशासित आर्य प्रतिनिधि सभा ने उनको अभिनन्दन पत्र भेंट किया जिसमें उनकी अमूल्य सेवाओं के साथ ही भावी जीवन की मंगलकामना की गई थी।

गुरुकुल से विदा होकर उन्होंने अनेक स्थानों पर आश्रम हेतु भ्रमण किया अन्त में रामगढ़ में उन्होंने अपना आश्रम श्री नारायण स्वामी आश्रम नाम से स्थापित किया जो अब भी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रबन्ध में कार्यरत है। वहां २ वर्ष तक उन्होंने जो कठोर तपस्या की उसका उल्लेख उन्होंने अपनी आत्म कथा में किया है। इन दो वर्षों में उन्होंने अपना समस्त कार्य स्वयं ही सम्पादन किया। उस समय आश्रम की सीढ़ियों पर कभी कभी भालु आदि भी आ जाते थे पर निर्भीक स्वामी जी को देखकर स्वयं भाग जाते थे।

पुनः मथुरा शताब्दि के आयोजन में वे व्यस्त हुए। आर्य समाज का यह शताब्दी समारोह न भूतो न भविष्यति कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। ५)रु० में तलाश करने पर भी एक बीड़ी या पान पाना भी कठिन था। सरकारी सहायता के बिना उन्होंने जो सुन्दर प्रबन्ध तथा व्यवस्था की थी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा आज तक आर्य जन करते रहते हैं। शताब्दि के दिनों में पूज्य स्वामी जी एक ही समय दाये बायें दोनों हाथों से पत्रादि लिखते थे वह भी अलग-अलग विषयों पर यह उनकी योग साधना का अद्भुत प्रभाव था।

इसके पश्चात् उनके ही समय में निजाम शाही के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह हुआ उसके आप ही प्रथम अधिनायक थे।

आपने आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वानों की सभा की अध्यक्षता करते हुए आर्य सिद्धान्तों की विशद व्याख्या भी की आपने अपने जीवन में अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रणयन किया जिससे कि छात्रों का बहुत कल्याण हुआ। मृत्यु और परलोक एवं कर्तव्य दर्पण पुस्तक के तो ५० से ऊपर संस्करण हो चुके हैं।

ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम के भी आप ही संस्थापक रहे। जो कि अब भी आर्य जगत की प्रशंसनीय सेवा कर रहा है।

आप भारत स्वतन्त्रता के अमर शहीदों के भी सदा सहायक रहे। कितने ही क्रान्तिकारी आपकी शिक्षा दीक्षा से प्रभावित होकर राष्ट्रीय सत्याग्रह में कूद पड़े।

जब सिन्ध में सन् १९४६ में सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाया गया तब आप अपने श्री नारायण स्वामी आश्रम से शीतकाल में ८२ वर्ष की अवस्था में ६ मील पैदल भुवाली चल कर पहुंचे। शीत ऋतु की कसक लाहौर पहुंचते ही उनकी टांगें सूज गईं। इसी बीच सिन्ध सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश पर से प्रतिबन्ध हटा लिया। और आप वहां से सीधे बरेली श्री डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत जी के घर पर उपचारार्थ आ गये। वहाँ उनकी सुचारु रूप से सेवा शुश्रुषा की गई। पर अपने शरीर को अक्षमता के सेवा तथा वैदिक धर्म की उन्नति में असहायक समझ कर अपने जीवन का पटाक्षेप १५ अक्टूबर १९४७ में कर दिया।

यावत्-जीवन वे आर्य समाज वैदिक धर्म और दुखियों की सहायता में ही संलग्न रहे। अतः हम आर्यों का कर्तव्य हो जाता है कि उनका निर्वाण दिवस १५ अक्टूबर को प्रतिवर्ष मनाया करें।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९८९

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा आगामी जनवरी मास १९८९ में निम्न पुरस्कारों से विद्वानों को सम्मानित किया जाएगा।

१— वेद वेदांग पुरस्कार

जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगों का अनुसंधान एवं प्रणयन किया हो—उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। जिसकी पुरस्कार राशि २१०००/— होगी।

२— वेदोपदेशक पुरस्कार

वेद वेदांगों के अनुसंधान कर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने आर्य समाज के उपदेशक भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में ही जीवन पर्यन्त सेवा की हो पुरस्कार की राशि ११०००/— होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त पुरस्कृत किये जाने वाले विद्वान को अभिनन्दन पत्र, शाल एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ योग्य विद्वानों के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य पुरुष किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानों के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची आदि सहित विस्तृत पत्र दिनांक ३० नवम्बर ८८ तक भेजने की कृपा करें।

जो विद्वान अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जाएंगे।

★

आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती) मेरठ का शताब्दी समारोह

आर्य समाज जवाहरनगर (लालकुर्ती) का शताब्दी समारोह आज प्रातः स्वामी विवेकानन्दजी द्वारा वेद मन्त्रों के उद्घोषों के बीच विश्व शान्ति यज्ञ से प्रारम्भ हुआ।

यज्ञ के उपरान्त आर्य ध्वज फहराते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने शताब्दी समारोह की औपचारिकता पूर्ण की।

अपने उद्घाटन भाषण मे स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि ओ३म् ध्वज किसी देश, जाति व सम्प्रदाय की निजी धरोहर न होकर समूची मानव जाति का चिन्ह है। लालिमा रंग लिए हुये ध्वज चमकते हुए सूर्य का प्रतीक है तथा ध्वज का स्वर्णिम प्रकाश से जो समस्त विश्व को प्रकाशमय किये हुए है।

उन्होने कहा कि लाख योनियो को भोगने के पश्चात् सत्कर्मों से प्राप्त मनुष्य योनि श्रेष्ठ कर्मों एवं मानव सेवा के लिए प्राप्त हुई है। इस आशय को वेदो व महर्षि दयानन्द ने स्वीकारा है। पांच हजार वर्षों के पश्चात् महर्षि ने पुन वेदो की गरिमा को अवगत कराते हुए उन्हें पढ़ने और पढ़ाने पर बल दिया जिसके लिये समस्त वेदो के प्रति आस्थावान लोग महर्षि के ऋणी रहेंगे।

सन्यास पर बोलते हुये स्वामी जी ने कहा कि भारत मे लगभग ६० लाख व्यक्ति भगवें वस्त्र धारण किये हैं परन्तु सच्चा सन्यासी मन वचन व कर्म से प्रत्येक सांसारिक प्रसंगो से दूर रहता है।

मेरठ वासियों को स्वामी जी ने गुरुकुल प्रभात आश्रम की स्थापना व शताब्दी समारोह हेतु बधाई देते हुए आवाहन किया कि प्रत्येक परिवार मे एक को ब्रह्मचारी बनाने, घर २ मे आर्य समाज का ओ३म् ध्वज फहराने तथा भारत की प्रगति, उत्थान व सामाजिक उन्नति हेतु आर्य समाज के नियमो या महर्षि के दिखाये हुये मार्ग पर चलने पर बल दिया।

मूर्ति पूजा पर बोलते हुये स्वामी जी ने कहा कि यद्यपि आर्य समाज मानव सेवा पर अधिक बल देता रहा है तथापि काशी विश्वनाथ मन्दिर राम जन्म भूमि- कृष्ण जन्म भूमि पर यदि आक्रमण हुआ तो हम मूक दर्शक बने नहीं रहेंगे। आर्य समाज इसकी पुनरावृत्ति नहीं होने देगा। काश्मीर से कन्याकुमारी तक आर्य समाज के सिद्धांतो का प्रसारण निश्चित हुआ है जो विश्व मे प्रसारित होकर रहेगा। धर्म परिवर्तन समाप्त होगा। आर्य समाज जुझारु बन कर सक्रिय बन चुका है। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द के अटल सिद्धान्तो तथा प्राचीन वेदो की महिमा के फलस्वरूप ही भारत आज तक जीवित है और इन्हीं सिद्धान्तों पर चलकर आर्य समाज भारत को सुसंगठित बनाये रखेगा।

अन्त में स्वामी जी ने कहा कि वह दिन अब दूर नहीं जब भारत की सत्ता आर्यों के हाथ में पुनः आयेगी तथा लोक सभा में गायत्री मन्त्र का पाठ गूंजेगा तथा संविधान मे परिवर्तन करके पंजाब व काश्मीर को कम से कम १० वर्ष तक सेना के हवाले करने से ही दोनों प्रदेशों में स्थाई शान्ति का विकल्प है।

इस अवसर पर स्वागताध्यक्ष प० इन्द्रराज जी द्वारा स्वागत भाषण पढ़ा गया जिसमे उन्होंने लालकुर्ती आर्य समाज की स्थापना, वर्तमान में देश मे विघटन के बादल तथा कार्य प्रणाली एवं दिशाओं से विशद रूप मे अवगत कराया।

सार्वदेशिक आर्य प्रति० सभा दिल्ली के महामन्त्री श्रीयुत सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि आज आर्य समाज राष्ट्र की चेतना जागृत करने के लिए व्यवहारिक कार्य के प्रति आवाहन करता है। आत्म चिन्तन, राष्ट्र चिन्तन के तहत आर्य समाज जागरूक बना है। जाति-पाति रहित तूफान व बाढ पीड़ितो की निष्ठा पूर्वक सर्वेव सहायता प्रदान करेगा। मानवता का सपना जो महर्षि दयानन्द ने संजोया था, उसे साकार करना आर्य समाज का परम धर्म है।

अन्त मे स्वामी विवेकानन्द जी ने सम्मेलन की सफलता के लिए शुभ कामना व्यक्त करते हुये अध्यक्षीय भाषण दिया।

—ओपी गोयल प्रचारक सह संयोजक

गाजियाबाद में विशाल संस्कृत गोष्ठी का आयोजन

२ अक्टूबर १९८८ को भारत रत्न संस्कृत मनीषी स्व० श्री लालबहादुर शास्त्री एवं महात्मा गांधी की जयन्ती के अवसर पर 'चौधरी गोष्ठी कक्ष गाजियाबाद मे नगर के गणमान्य व्यक्तियों, संस्कृत हिन्दी अनुरागियो, प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्रियो, के साथ सम्पन्न हुआ।

सभी ने एक स्वर मे देव भाषा संस्कृत के प्राचीन गौरव और वर्तमान उपादेयता पर गहराई से विचार करते हुए यह स्वीकार किया कि संस्कृत भाषा हमारी पावन संस्कृति की खजाना है।

बिना संस्कृत को जाने भारत की भावी पीढ़ी उदात्त, आदर्शों वाली नहीं हो सकती।

अतः भारत सरकार को अभी इस दिशा में सबल कदम उठाना चाहिए और संस्कृत को अनिवार्य करके इसके विकास प्रचार मे तेजी लानी चाहिये—

उत्सव

आर्य समाज भारत नगर गाजियाबाद का ३८ वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से ३ अक्टूबर से ६ अक्टूबर तक मनाया गया है जिसमे युवा विद्वान वीरपाल शर्मा एम० ए० ने योगी राज श्री कृष्ण के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला ६ अक्टूबर को 'शिक्षा सम्मेलन' में नगर के सभी स्नातकोत्तर कालेजो के आचार्यों एवं अनेक शिक्षाविदो ने अपने विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सुधार के सम्बन्ध मे व्यक्त किये। उत्सव बहुत सफल रहा।

—रामप्रकाश शर्मा 'सरस'

निर्वाचन—

जिला साहू सभा, लखनऊ का त्रैवार्षिक चुनाव २ अक्टूबर १९८८ को साहू बिल्डिंग हजरतगंज, लखनऊ मे सम्पन्न हुआ। निम्न पदाधिकारी चुने गये—

अध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश साहू
मन्त्री—श्री एस० पी० साहू
कोषाध्यक्ष श्री रामगोपाल साहू

यह समस्या कौन सुलझावेगा ?

[ले० डा० कमला प्रधान लखनऊ]

मैं विद्वन्मण्डल-सन्यासी, उपदेशक तथा पुरोहित जनो से जन-समुदाय की ओर से उठी हुई समस्या को समझाने की विनम्र प्रार्थना करती हू । बीच-२ मे सन्यासी व विद्वान प्रवक्ता हवन विधि मे परिवर्तन लाने के लिए नई-२ खोज करके जनता के सम्मुख रखते हैं जिससे साधारण जनता कि कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाती है ।

अभी हाल मे 'वेद प्रचार सप्ताह' के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा भवन लखनऊ में लालबाग आर्य समाज का वेद प्रचार चल रहा था । आचार्य वेद भूषण जी हैदराबाद का प्रवचन हुआ । आचार्य जी ने कहा कि अग्नये इन्द्रात्मा' का मन्त्र उन लोगो को हवन करते समय नहीं बोलना चाहिये जिन्हें सन्तानोत्पत्ति की कामना नहीं है ।

शंका-समाधान के समय पर मैने उठ कर कहा- 'राजा अपनी प्रजा की सद्भावना प्राप्ति करने के लिये प्रार्थना करता है वह उसकी अपनी सन्तान तो नहीं होती, और प्रत्येक गृहस्थ भी अपने उत्सव-संस्कारों मे अपने परिजनादि को प्रणाम कहकर उनका सत्कार करता है । 'प्रजा' का संकुचित अर्थ 'अपना सन्तान लेना क्या उचित है ।

आचार्य जी ने कहा-यह ऋषि प्रणीत मन्त्र वानप्रस्थी व ब्रह्मचारी को बोलना उचित नहीं ।

किन्तु हम सबको शिक्षा-काल में यही सिखाया गया था कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द को यह मन्त्र बहुत प्रिय व उद्बोधक प्रतीत होता था अत उन्होने इसे केवल पाच बार ही नहीं छ बार बोलने का 'संस्कार विधि' मे आदेश दिया । इससे आत्मिक बल वृद्धि की कामना के साथ दूसरा शीघ्र लाभ यह है कि यज्ञ-कुण्ड की धीमी प्रज्ज्वलित अग्नि धीरे-२ तीव्र होती जाती है और जब इसमे होम सामग्री की आहुति डाली जाती है तो वह पूर्णतया भस्म होती जाती है जिसका प्रवाह अन्तरिक्ष तक जाता है ।

वैदिक ग्रन्थ व ऋषि प्रणीत मन्त्रों मे शब्दों के अर्थ प्रकरणानुसार यौगिक होते हैं । अर्थात् धातु' से बने शब्द का प्रकरणानुसार अर्थ किया जाता है । एक शब्द का एक ही अर्थ रूढ़' माना जाता है ऐसा लौकिक भाषा मे ही होता है ।

'प्रजा' का शब्दार्थ इस प्रकार किया गया है - 'प्रकर्षेण जायते इति प्रजा' अर्थ हुआ उत्तमता से उत्पन्न किया जाने वाला । इसके अन्तर्गत अपनी सन्तान, अन्य उपकारी जन जो हमारे सम्पर्क में नित्य प्रति सहायक होते हैं, तथा परमात्मा की सर्व श्रेष्ठ कृति 'शरीर धारी प्राणी' तथा इन्द्रियों के अर्थ आते हैं ।

'शिव सङ्कल्प' के छ मन्त्रो मे भी 'प्रजा' के अर्थ परमात्मा की बनाई उत्तम कृति 'प्राणी' के अर्थ मे आया है । (यजुर्वेद-अध्याय ३४)

(१) यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम्' प्राणियो के भीतर अपूर्व इन्द्रियो में अद्वितीय और यक्ष-पूजनीय है ।

(२) यज्ज्योतिरन्तरमृत प्रजासु जो ज्योति युक्त मन प्राणियों के भीतर है ।

(३) 'यस्मिश्चित्तं् सर्वमोत प्रजानाम्' जिसमें प्राणियों का सब (चित्तम्) विचार बना हुआ है ।

इन मन्त्रो मे 'प्रजा' शब्द परमात्मा की सर्व श्रेष्ठ कृति 'शरीर धारी प्राणी' के लिए आया है ।

महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार यज्ञ में 'अग्नये इन्द्रात्मा' का प्रयोग सर्व सम्मति से मान्य रहा है । 'प्रजा' शब्द का एक ही रूढ़ अर्थ लेकर यज्ञ कर्त्ता को भ्रम मे डालना है । तथा इससे यज्ञ-पद्धति मे एक रूपता नहीं रहती । यह समस्या कौन सुलझावेगा ?

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के अन्तर्गत

स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो का प्रकोष्ठ

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आगामी वृहदधिवेशन के अवसर पर स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले आर्य सेनानियो का, चाहे उन्होंने भारत की आजादी मे भाग लिया हो अथवा हैदराबाद सत्याग्रह मे, एक प्रकोष्ठ स्थापित करने का निश्चय लिया गया है । इसके संचालक मास्टर रणजीतसिंह, स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी, सदस्य आर्यसमाज ग्रा० पो० बहादुराबाद (सहारनपुर) हैं । सम्बन्धित व्यक्ति उक्त मास्टर जी से सम्पर्क स्थापित करें और इसकी सूचना मुझे भी भेजें । —मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

लखनऊ में संस्कृत सम्भाषण शिविर

आर्यसमाज मन्दिर गणेशगंज, लखनऊ मे भारत की प्राचीनतम दिव्य भाषा संस्कृत के सरल सम्भाषण पर २५ अक्तूबर से प्रारम्भ होने वाले दस दिवसीय शिविर की अध्यक्षता करते हुए श्री मनोहर लाल आर्य ने गोष्ठी मे पधारे हुए शिक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि-"संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओ की जननी है । इसके साहित्य में हमारी सभ्यता और संस्कृति सुरक्षित है । प्रत्येक भारतीय को यह भाषा अवश्य सीखनी चाहिए ।"

इस अवसर पर शिविर मे आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के महा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी शिविर के संयोजक श्री रामदुलारे द्विवेदी, श्री लक्ष्मी निवास पाण्डेय, एव श्रीमती मनोरमा तिवारी प्राचार्या महिला विद्यालय लखनऊ ने भी अपने विचारों से गोष्ठी को सम्बोधित किया ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा

अजनाला में बाढ़ राहत केन्द्र

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब से सूचना मिली है कि उप सभा पंजाब चण्डीगढ़ ने अपना बाढ़ राहत केन्द्र जिला अजनाला मे आरम्भ कर दिया है । वहां के डिप्टी कमीशनर ने हमे चार गांव जिला अजनाला मे दिये हैं । वहां ५०० व्यक्तियों को प्रात: का नाश्ता, दोपहर का भोजन एव रात्रि के भोजन एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की है । उप सभा पंजाब एव चण्डीगढ़ के प्रधान श्रीमती एस० बहुजावत, मन्त्री श्री वेद विद्यासागर, प्रचार मन्त्री श्री भूषण कुमार वैहर, प्रिन्सिपल डी० आर० गुप्ता, प्रिन्सिपल श्री राजकुमार सेठ आदि सब कार्यकर्त्ता अमृतसर में कम्बल, कपड़े खाद्य सामग्री तथा अन्य जरुरत की वस्तुयें एकत्र कर रहे हैं और अजनाला भिजवा रहे हैं । इस उपलक्ष्य में यदि कोई दानी महानुभाव इन बाढ़ पीड़ितों की सहायता करना चाहें तो श्री वेद विद्यासागर, २१-ए, दयानन्द नगर, लौरेन्स रोड़, अमृतसर, पंजाब को भिजवा सकते हैं । —सभा मन्त्री

यज्ञ से वर्षा

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

★ ★ ★

यज्ञ से वर्षा होती है या नहीं ? इस विषय में आर्य समाज के विद्वानों में मतैक्य नहीं। कोई यज्ञ से वर्षा की बात शतप्रतिशत स्वीकारते हैं तो कोई सर्वथा अस्वीकार देते हैं। यहां तक कि कोई-कोई यज्ञ से वर्षा पर महर्षि दयानन्द के मन्तव्य को भी तोड़-मरोड़ कर उपस्थित कर देते हैं। ऐसे लोगों का कहना है कि महर्षि ने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में यज्ञ से वर्षा की बात को कहीं नहीं लिखा। इस लिए इससे यही सिद्ध होता है कि महर्षि यज्ञ से वर्षा होने की बात को नहीं मानते थे। किन्तु वस्तुस्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे तो महर्षि के मन्तव्यों का अति संक्षेप में उल्लेख है। उनके ग्रन्थों विशेषतया सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में इनका विस्तार के साथ उल्लेख किया गया है। अतः महर्षि के मन्तव्यो को जानने के लिए इनका सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है। आइये ! एतद् विषयक महर्षि के मन्तव्यो का अन्वेषण करें—

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद-विषय प्रकरण मे महर्षि के एतद् विषयक मन्तव्य का उल्लेख मिलता है। महर्षि का लेख इस प्रकार है—"जो वायु सुगन्ध्यादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश मे चढ़ के वृष्टिजल को शुद्ध कर देता, और उससे वृष्टि भी अधिक होती है, क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि ओषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती है।" महर्षि यज्ञ से वृष्टि जल की शुद्धि तो मानते ही हैं, वृष्टि अधिक होने की बात को भी उन्होने स्पष्ट शब्दो मे स्वीकारा है। महर्षि इसी प्रकरण में लिखते हैं कि—'जब होम करने के द्रव्य अग्नि मे डाले जाते हैं, उनसे धुआं और भाप उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको भिन्न-भिन्न कर देता है। फिर वे हलके हो के वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं, उनमे जितना जल का अंश है, वह भाफ कहलाता है, और जो शुष्क है, वह पृथ्वी का भाग है, इन दोनो के योग का नाम धूप है। जब वे परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार से रहते हैं फिर वे परस्पर मिल के बादल हो के उनसे वृष्टि, वृष्टि से ओषधि, ओषधियों से अन्न, अन्न से धातु, धातुओं से शरीर और शरीर से कर्म बनता है।" इस प्रसंग में भी महर्षि ने यज्ञ से धूम, धूम से बादल और बादलों से वर्षा की बात स्वीकारी है। अतः यह कहना कि महर्षि यज्ञ से वर्षा होने की बात कहीं नहीं लिखी, यथार्थ नहीं। इतना ही नहीं—यजुर्वेद १४/८ के भाष्य में महर्षि लिखते है कि—"यज्ञाद् वृष्टिंचकारदेताम्" अर्थात् यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें। यजु० १७/२ के भाष्य में भी यज्ञ वेदी में ईंटों का चयन वर्षा का हेतु इन शब्दो मे स्वीकारते हैं—"इष्टका वृष्टि हेतुका भूत्वा वृष्ट्यादि सर्वानानन्दयन्ति।" वेदी में चयन की हुई ईंटे वर्षा की हेतु होके वर्षादि द्वारा सबको सुखी करती हैं।

इस शंका के उत्तर में कि जब धुएं से वर्षा होती है, तो धुआं तो अन्य भी अनेक प्रकार से उत्पन्न होता रहता है, फिर यज्ञ की आवश्यकता ही क्या है ? महर्षि लिखते हैं कि—"दूसरी शंका यह करते है कि जब आग-गाड़ी में (अर्थात् रेल के इंजन मे) और रसोई के घर मे तो धुआं बहुत उत्पन्न होता है, फिर वृष्टि भी बहुत होनी ही चाहिये, तो फिर होम किस वास्ते करना चाहिए ? इस पर हमारा यह कहना है कि यह धूम्र दुर्गन्ध और दूषित रहता है, इससे वायु शुद्ध नहीं होती।" (देखें—पूना प्रवचन सात ७) स्पष्ट है कि केवल धुएं से ही वर्षा नहीं होती, उसका शुद्ध होना भी अत्यन्त आवश्यक है। और यह कार्य हवन से ही सम्पादित हो सकता है, अन्य किसी प्रकार से नहीं।

महर्षि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पंच महायज्ञ विषय प्रकरण मे लिखते हैं कि—"अग्निहोत्र करने वाला मनुष्य ऐसी इच्छा करे, कि मैं प्राणियो के उपकार करने वाले पदार्थों को पवन और मेघमण्डल मे पहुंचाने के लिए अग्नि को सेवक की तरह अपने सामने स्थापन करता हू। क्योंकि वह अग्नि हव्य अर्थात् होम करने के योग्य वस्तुओ को अन्य देश में पहुंचाने वाला है। इसी से उसका नाम "हव्यवाट्" है।'

उपरोक्त प्रमाणो के रहते यह कहना कितना युक्ति संगत एवं सार्थक है कि महर्षि यज्ञ से वर्षा की बात नहीं स्वीकारते, इसका निर्णय पाठक स्वयं कर सकते हैं।

अल्पसंख्यकों के प्रति सरकार एवं विपक्ष की तुष्टीकरण की नीति का कड़ा विरोध

आर्यसमाज मैदान में कूदा

दिल्ली की आर्य समाजो की शिरोमणी सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की एक हंगामी बैठक १८-१०-८८ को डा० धर्मपाल की अध्यक्षता मे हुई, जिसमें कांग्रेस सरकार एवं विपक्ष द्वारा अपनाई जा रही मुसलमानो एव अन्य अल्पसंख्यको की तुष्टिकरण की नीति की कड़ी भर्त्सना की गयी और सरकार के २० सूत्री कार्यक्रम में अल्पसंख्यकों को दी जा रही विशेष सुविधाओं पर कड़ी आपत्ति की गयी। विपक्ष द्वारा विशेषकर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा अल्पसंख्यक आयोग को संविधानिक दर्जा देने की मांग को राष्ट्र के साथ द्रोह घोषित किया गया। सभा में सर्वसम्मति से मांग की गयी कि २० सूत्री कार्यक्रम में अल्पसंख्यक की सुविधा का चैप्टर निकाल दिया जाये। अल्पसंख्यक आयोग को तुरन्त भंग कर दिया जाये। पुलिस और फौज मे जातीय आधार पर भर्ती न करके केवल योग्यता के आधार पर ही भर्ती की जाये। सभा ने निर्णय लिया कि अल्पसंख्यकों की वकालत करने वाले व्यक्तियों का बहिष्कार किया जाये और प्रदर्शन, सभायें एवं गोष्ठियां करके जनता को इस खतरनाक नीति के दुष्परिणाम से अवगत कराया जाये।

उपरोक्त कार्यक्रम के लिए सभा ने २३ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक दिल्ली की समस्त आर्य समाजो को "भारत बचाओ" पखवाड़ा मनाने का निर्देश जारी किया है। इस पखवाड़े के अन्तिम दिन गृह मन्त्री श्री बूटा सिंह के निवास पर भारी प्रदर्शन किया जायेगा। और सरकार से अल्पसंख्यक आयोग को तुरन्त भंग करने और २० सूत्री कार्यक्रम में अल्पसंख्यको को विशेष सुविधायें देने के सूत्रो को निकालने की मांग की जायेगी। इस कार्य के लिए सभा मन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य को संयोजक बनाया गया।

आवश्यक सूचना

प्रायः सभा को यह शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं कि सभा के भजनोपदेशक अपना हारमोनियम (बाजा) आदि प्रचार स्थान पर नहीं ले जाते हैं, जिससे प्रचार कार्य में बाधा पड़ती है, अतः सभी भजनोपदेशकों को सूचित किया जाता है कि अपना-अपना बाजा साथ अवश्य ले जाय, कृपया अच्छी तरह नोट करें।

२-सभा के अन्तर्गत उपदेशक, भजनोपदेशक आदि प्राप्त मार्ग-व्यय की रसीद नहीं काटते हैं, इस सम्बन्ध में आप सभी को सूचित किया जाता है कि समस्त प्राप्त धन का विवरण सहित रसीद काटें, अन्यथा शिकायत प्राप्त होने पर सेवा से मुक्त किया जा सकता है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

वनवासी आर्य महा सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वनवासी क्षेत्रों में वनवासी बन्धुओं के सामाजिक जीवन स्तर, उनकी गरीबी, तथा लोभ लालच से विधर्मियों द्वारा किये जा रहे उनके धर्मान्तरण का गम्भीरता से अध्ययन कर रही है। इसी उद्देश्य से आगामी २६, २७ और २८ नवम्बर ८८ को जि० सरगुजा (म०प्र०) में विशाल स्तर पर वनवासी आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती करेंगे। इस सम्मेलन में देश भर के आर्य नेता तथा विद्वान पधार रहे हैं। वनवासी क्षेत्रों में यह अपने ढंग का पहला सम्मेलन होगा जिसमें कई हजार वनवासी भाग लेंगे। -सभा मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज अल्मोड़ा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्यारेलाल साह जी का एक मास की अस्वस्थता के अनन्तर दिनांक ९-७-८८ को ७० वर्ष की आयु में निधन हो गया। दि० १०-७-८८ को उनका अन्तिम संस्कार वैदिक विधि से किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज, अल्मोड़ा ने अपने एक सक्रिय सहयोगी के वियुक्त होने पर शोकोद्गार व्यक्त करते हुए आर्यसमाज के प्रति की गई उनकी सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के प्रति धैर्य धारण करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति दे।

-सभा मन्त्री

आवश्यकता

आर्य परिवार की कायस्थ (श्रीवास्तव) कन्या, आयु २३ वर्ष, इण्टर तक शिक्षित, गृह कार्य एवं सिलाई-कढ़ाई में निपुण, पूर्ण शाकाहारी के विवाह हेतु स्वजातीय शाकाहारी, नौकरी या व्यवसायरत आर्य विचारधारा वाले परिवार के युवक की आवश्यकता है।

पत्र व्यवहार का पता-नारायण वानप्रस्थी,
आर्यसमाज मोतीहारी, जिला-पूर्वी चम्पारण (बिहार)

कविता कलाप

वेद-सन्देश

वेद का सन्देश घर–घर में, पहुंचा दो आर्यो।
वेद की ज्योति को घर–घर, में जगा दो आर्यो॥

सत्य-चित आनन्द है वह, और अनादि निर्विकार,
है अजर अखिलेश ईश्वर, सृष्टि-कर्त्ता सर्वाधार,
ईश्वर निराकार की पूजा सिखा दो आर्यो।

वेद ईश्वरी-ज्ञान है, और सत्य का भण्डार है,
पढ़ने सुनने से सदा ही जीव का कल्याण है,
सत्यमेव जयते का, पाठ पढ़ा दो आर्यो।

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सम वो मनांसि जानताम्,
ज्ञानी जन मिल प्रेम से, गाया सदा ही जो नाम,
ईर्ष्या तज प्रेम की, गङ्गा बहा दो आर्यो।

मानुष्य चोला है मिला शुभ कम के व्यवहार मे,
बिखरे मोती फिर पिरो दो एकता की तार में,
देश से छुआछूत को, मिलकर मिटा दो आर्यो।

एक पिता के पुत्र हैं सब, किस लिये फिर रागद्वेष,
सद्-भाव का सचार हो, रह पाये न कोई क्लेश,
सार्वभौमिक धर्म वैदिक, को बना दो आर्यो।

मिशनरी परलोभन से भाई विचलित हो रहे,
छुआ छूत और कुरीतियो मे, अब तलक क्यो सो रहे,
जागने का है समय, जागो जगा दो आर्यो।

श्रद्धानन्द ने श्रद्धा से, सीने पे खाईं गोलियां,
शुद्धि के परचार में, निकली थीं बनकर टोलियां,
भूले भटके भाइयों को, सत पथ दिखा दो आर्यो।

खाये पत्थर और ईंटें, विष के प्याले पिये,
निर्भीक उस ब्रह्मचारी ने, पत्थर पूजन छुड़वा दिये,
पाखण्ड-खण्डिनी की पताका, फिर फहरा दो आर्यो।

स्वामी के पथ पर चलें सब, जैसे सूर्य-चन्द्रमा,
सूर्य दे प्रकाश और, बहुमूल्य रस दे चन्द्रमा,
निष्काम और परोपकार की भावना जगा दो आर्यो।

धर्म का गुलजार जीवन, बिन धर्म कुछ भी नहीं,
धर्म ही जीवन का साथी, सदा धर्म पर रखो यकीन,
धर्म फैले, पाप की हस्ती मिटा दो आर्यो।

कौन सा रावण जलायें

★

जीत लें बस इन्द्रियां दुर्भावना मन में न लायें।
आ विजय दशमी गई अब कौन सा रावण जलायें॥

हो चुके लाखों बरस जब जानकी रावण चुराई,
कर क्षमा अब तक न पाया लोक रावण की बुराई,
आज तक पुतला बना प्रतिवर्ष उसको फूंकते हैं,
नाम पर लकेश के धिक्कारते हैं थूंकते हैं,

पर न कितने मनुज मृग मारीच बन चालें चलायें।
आ विजय … … … … …

प्रेम करने को सिया से याचना करता रहा वह,
पर अनिच्छा को समझ मन मे सदा डरता रहा वह,
आज रावण से अधिक दुर्जन जगत में घूमते हैं,
बल सहित कामान्ध बन जो वासना को चूमते हैं,

शील हरने की अहो वे जानते कितनी कलायें।
आ विजय… … … … …

रोज सड़कों पार्कों में लाज जिनके छूटते हैं,
दिन दहाड़े आज सतियो की धरा पर लूटते हैं,
राम-लक्ष्मण के सभी आदर्श खोते जा रहे हैं,
छल-कपट आडम्बरो के बीज बोने जा रहे हैं,

रामलीला में बनें बजरंग अब सीता छलाय।
आ विजय … … … …

राम के हम भक्त फिर भी काम रावण से बुरे हैं,
बढ़ रहे अश्लीलता के राग कितने बेसुरे हैं,
आर्य (हिन्दू) जाति अब किस ओर को तू जा रही है,
राम के पावन चरित पर कालिमा क्यों ला रही है,

आज अपने आपका हम पाप का रावण जलायें।
जीत लें बस इन्द्रिया दुर्भावना मन में न लायें॥

–सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री पुरी, मैनपुरी

विश्व के कल्याण का साधन है केवल वेद-ज्ञान,
धर्म संस्कृति एक होवे, एक भाषा एक विधान,
हिन्दी भाषा धर्म वैदिक को फैला दो आर्यो।

मन-वचन और कर्म को साक्षी बनाना है तुम्हे,
करनी-कथनी में समानता फिर से लाना है तुम्हे,

"हरिवंश" सब मिल प्रेम से, वैदिक नाद गुंजा दो आर्यो।
वेद का सन्देश घर–घर में पहुचा दो आर्यो॥

–हरवंशलाल मलिक, एम-२, पश्चिमी पटेलनगर, नई दिल्ली-८

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

आर्यमित्र

लखनऊ- कार्तिक शुक्ल 12सवत 2045,20,27 नवम्बर 1988
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि सवत 1972949089



पण्डित जवाहर लाल नेहरू जिनका आज 100वा जन्म दिवस है। समूचे देश में आज से उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जायेगा।

स्वर गूजे सौ सौ एक साथ --



मनमोहन संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं ।

सभा का निर्वाचन

-- और प्रदेश की आर्यजनता जिस घडी की प्रतीक्षा बडी आतुरता से कर रही थी, वह आ ही गई, 12 और 13 नवम्बर 1988 गोमती के पावनतट पर अवस्थित डी0 ए0 वी0 कालेज,लखनऊ के प्रागण में ओ3म ध्वज मण्डित वितान, प्रेम और उल्लास से भरा वातावरण,जहाँ परमानन्द के प्रतीक आनन्द के बोध की आशीवचनीया स्वरलहरी जन-जन को आप्लावित कर रही थी, तो मनमोहन के मधुमते आतिथ्य ने जन-जन का मन मोह लिया था। जिस म च पर परमैश्वर्य के प्रतीक इन्द्र का राज विराजमान था एक बार तो वहाँ ऐसा लगा- सब चकित थे, स्तब्ध थे- आज अडिग हिमालय का गला रूधा हुआ क्यों है ? सघर्ष जिसकी परम्परा में लिखा हुआ है उसके करूण कलित स्वरों में यह रणक्षेत्रपलायिनी दैन्य रागिनी क्यों बज रही है। आर्य समाज के गौरव को आजीवन बढाते रहने का जिसने व्रत लिया है वह बाँकुरा आर्य सैनिक, आज रणभूमि से हट क्यों रहा है? क्या चुनौतियों से घबडा गया है--- नहीं नहीं, समवेत स्वर में फिर आवाज आई- सघर्ष करो सघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं ।

-- और प्रदेश के प्राय समस्त जनपदों से बडी सख्या में पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों ने एक बार फिर सभा का कार्यभार सर्वसम्मति से श्री प0 इन्द्रराज तथा श्री मनमोहन तिवारी के कन्धों पर डाल दिया है। इस अवसर पर आर्य समाज के अनन्य भक्त , प्रदेश के मन्त्री श्री बलदेव सिंह आर्य भी मच पर विराजमान थे। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज के योगदान की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए उसकी भावी भूमिका के प्रति आशाजनक सकेत दिया और सभा के वर्तमान सगठन के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए शासन द्वारा हर सभव सहयोग दिए जाने का आश्वासन दिया।

- हम अपने नवानर्वाचित पदाधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों को आर्य मित्र परिवार की ओर से शुभकामनाए प्रेषित करते हैं और एक बात कहना चाहते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा आज अतीत और अनागत की विभाजन रेखा पर खडी हुई है। उसे और उसके माध्यम से प्रदेश के समस्त आर्यसमाजों को न केवल बाह्य चुनौतियों का सामना करना है प्रत्युत अपनी आन्तरिक स्थिति को भी सुदृढ बनाना है। आर्य जनता अपनी इस प्राणप्यारी सस्था को प्रदेश में ही नही देश में सबलतम सगठन के रूप में देखना चाहती है। द्वेष ,विखण्डन और दुरितों की आग में झुलसती हुई मानवता को आर्य समाज से बहुत आशाए हैं। हमने ससार का उपकार करने का बीडा उठाया है वेद की ज्योति लेकर घर-घर को प्रकाशित करने की सौगन्ध खाई है। हम उस महर्षि के सन्देशवाहक हैं जिसने पलायन करना कभी जाना ही नही। इसलिए अतीत को अतीत समझकर विस्मृत कर देना समय की पुकार है यह आर्यत्व है और यही वेद की आज्ञा। जनता हमारे चुनाव से नहीं हमारे कार्यक्रमों से हमारा भावी मूल्यांकन करेगी। हमारी सभा प्रदेशीय आर्यसमाजों की शिरोमणि प्रतिनिधि सस्था है। इसका अनुशासन कोई वैयक्तिक अनुशासन नहीं है उसे हम यदि धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में स्वीकारें तो विरोध का कोई अवसर ही नही रहता और हम अपने अस्तित्व को नकारते हुए भी इसे ईश्वराज्ञा समझकर पालन कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में इसी को हम व्यक्तित्व को समष्टि में विलीन कर देना भी कह सकते हैं। आज हमारे सगठन में इसी भावना की आवश्यकता है। प्रभु की कृपा से सभा के पास साधनों की कमी नही है। विचारकों, मनीषियों, उपदेशकों और आर्यवीरों की विशाल सेना उसके पास है। आज आवश्यकता है योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की। विश्व को आर्य बनाने का स्वप्न अभी पूरा कहाँ हुआ है। आर्यत्व का प्रचार करने वाली आसुरी शक्तियाँ फिर प्रबल हो रही हैं- उनसे जूझना होगा। धर्मान्तरण रूपी विषधर को, जो हमारी आर्य जाति को धीरे-धीरे निगल लेना चाहता है सदा-सदा के लिए कुचल देना होगा। आर्यसमाज के उत्सवों और कार्यक्रमों को इतना रोचक बनाना होगा कि जनता दीवानी होकर टूट पडे। इस विशाल प्रदेश में सभा का कोई आर्य उपदेशक विद्यालय या सस्थान नही है। सभा का ध्यान हम इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं। ऐसा सस्थान हमारे प्रचार का मेरूदण्ड सिद्ध होगा जहाँ के दीक्षित आर्यनवयुवक नवयुवतियाँ विश्व में वैदिक धर्म की दुन्दभी बजा देगी।

हमारी सभा का आगामी वर्ष नवानर्वाचित इन मनीषियों, अनुभवियों की छत्र छाया में खूब फूले फूले- यही हमारी प्रभु से कामना है। आर्य प्रतिनिधि सभा अमर रहे"

रावबहादुर भोलानाथ साराभाई के जीवन चरित्र में स्वामी दयानन्द विषयक सन्दर्भों की समीक्षा

प्रो0 भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़।

11 दिसम्बर 1874 को स्वामी दयानन्द तीसरी बार अहमदाबाद आये। यहां प्रार्थनासमाज के जिन कार्यकर्ताओं ने उनका विशेष रूप से स्वागत किया उनमें रावबहादुर भोलानाथ साराभाई का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। श्री साराभाई का जीवन चरित उनके पुत्र कृष्णराव भोलानाथ ने अँग्रेजी व गुजराती में लिखा है जिसमें रा0ब0 भोलानाथ और स्वामी दयानन्द के परस्पर सम्बन्धों तथा उनके वैचारिक आदान प्रदान का एकांगी विवरण दिया गया है। स्वामी दयानन्द के अँग्रेजी जीवन चरित लेखक प्रो0 जार्डन्स ने अपनी पुस्तक में भोलानाथ साराभाई के उक्त जीवन चरित का संकेत किया है। मैं वर्षो से इस पुस्तक की तलाश में था। प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर, जो स्वयं स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित रहे हैं,ने मुझेउक्त पुस्तक के उन अंशों को सुलभ करा दिया जो स्वामी दयानन्द विषयक हैं।

मैं सर्वप्रथम दि लाइफ आफ भोलानाथ साराभाई के पृष्ठ 7·8 के उस उद्धरण का अनुवाद यहाँ दे रहा हूँ जिसमें स्वामी जी विषयक चर्चा आई है -

"वर्ष 1874 के अन्त में आर्यसमाज के संस्थापक तथा महान सुधारक दयानन्द सरस्वती अपनी प्रचार यात्रा पर अहमदाबाद आये। प्रार्थनासमाज ने इस महापुरुष को अपनी वेदी उत्सुकतापूर्वक प्रदान की जहाँ से उसने अनेक धार्मिक और सामाजिक विषयों पर अपने प्रवचन दिये। भोलानाथ ने स्वामी दयानन्द के कार्य की प्रशंसा की तथा उससे अपनी सहानुभूति भी व्यक्त की, किन्तु वे स्वामी जी की इस नीतियुक्त चतुराई से सहमत नहीं थे कि धर्म के मामले में मात्र अभीष्ट पूर्ति या कार्य साधन के लिए ही वेद के स्वतः प्रमाण होने और निर्भ्रान्त होनेके मत को प्रचारित किया जाय जैसा कि स्वामी दयानन्द धार्मिक विषयों की प्रामाणिकता के लिए वेदों को अन्तिम प्रमाण मानते थे। प्रार्थनासमाज ने तो किसी भी ग्रन्थ को निर्भ्रान्त या ईश्वरोक्त नहीं माना था और उसके सिद्धान्त तो इतने विश्वजनीन थे कि वह सत्य को चाहे जिस स्त्रोत से प्राप्त होता हो, स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता था - यह स्रोत चाहे ईसाई, इस्लाम या हिन्दू शास्त्रों पर ही आधारित क्यों न हो। प्रार्थनासमाज और आर्यसमाज के सिद्धान्तों में यह मौलिक अन्तर है। अहमदाबाद में अपने निवास के दौरान स्वामी दयानन्द ने अपनी एक निजी मुलाकात में भोलानाथ तथा रावसाहब महीपतराम से प्रस्ताव किया कि प्रार्थनासमाज का नाम बदलकर आर्यसमाज कर दिया जाय। कारण कि दोनों संस्थाओं की मूल मान्यताएँ एक सी हैं। यथा मूर्तिपूजा निषेध तथा एक ईश्वर की पूजा का प्रचार और फिर नाम में ही क्या धरा है? इस विषय पर अपनी स्वीकृति देने से पूर्व भोलानाथ ने इस पर विचार करने का समय मांगा। उस रात्रि को उनका सारा समय इस प्रश्न पर विचार करने में ही व्यतीत हो गया और अन्त में उन्होंने स्वामी दयानन्द के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का निश्चय कर लिया। इसप्रकार अपनी दूरदर्शिता तथा सत्यनिष्ठा से उन्होंने प्रार्थनासमाज को उस आसन्न विपत्ति से बचा लिया जो प्रथम द्रष्ट्या तो एक सामान्य परिवर्तन ही दिखाई पड़ता था किन्तु जिससे पर्याप्त खतरा उत्पन्न होने की सम्भावना थी। यदि भोलानाथ इस कूटनीतिज्ञ सुधारक के प्रस्ताव को मान लेते तो दयानन्द अपनी इस विजय को संसार में प्रख्यापित करने में थोड़ा भी समय नहीं गँवाते कि उन्होने अहमदाबाद में आर्यसमाज की स्थापना कर दी है, और इसे अपनी विजययात्रा के एक पड़ाव के रूप में प्रचारित करते। और यह भी कौन जानता है कि उस दिन प्रार्थनासमाज की गति उन अनेक संस्थानों की सी होती, जो आर्यसमाज के नाम से जाने जाते हैं, तथा जिनका अस्तित्व व महत्व नाम मात्र का ही है। अपनी इस कूटनीति को विफल होता देखकर दयानन्द ने अहमदाबाद में पृथक आर्यसमाज स्थापित करने का यत्न किया जो उनके प्रस्थान के बाद तुरन्त खत्म हो गया। यहाँ यह जानना मनोरंजक होगा कि 1881 में भोलानाथ जब बम्बई में थे तो स्वामी दयानन्द के एक महान प्रशंसक आदरणीय राव बहादुर महादेव गोविन्द रानडे ने बम्बई में आर्यसमाज और प्रार्थनासमाज को एक करने के प्रयत्न का विरोध तो नहीं किया, किन्तु उन्होंने स्पष्ट अनुमान कर लिया था कि स्वयं आर्यसमाजी ही इस एकता के इच्छुक नहीं होंगे और ऐसा ही हुआ।"

लगभग ऐसा ही उल्लेख भोलानाथ के गुजराती जीवनचरित में भी मिलता है, किन्तु इसमें कुछ अन्य बातें भी कही गई हैं, अतः हम यहां गुजराती उद्धरण का हिन्दी अनुवाद भी पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं -

"अहमदाबाद प्रार्थनासमाज के मंदिर के निर्माण के डेढ़ वर्ष पूर्व दिसम्बर 1874 में भारत में ख्याति प्राप्त स्वामी दयानन्द अहमदाबाद आए। इन्होंने अनेक भाषण दिये तथा शास्त्रियों और पण्डितों के साथ धर्म विषयक वाद-विवाद भी किये। परन्तु इनके तथा भोलानाथ के धार्मिक विचार कई बातों में समान नहीं थे। दयानन्द ने प्रार्थनासमाज का नाम बदलकर आर्यसमाज कर देने की बात कही, परन्तु आर्यसमाज तथा प्रार्थनासमाज के मत में प्रधान अन्तर होने के कारण और भोलानाथ की

अचल दृढ़ता के कारण यह प्रस्ताव निष्फल रहा।

इसकेपश्चात दयानन्द ने आर्यसमाज नामक पृथक मण्डल स्थापित किया, उसमें प्रार्थनासमाज के भी अनेक सभासद सम्मिलित हुए परन्तु उस समय यह आर्यसमाज भी नाम मात्र का ही था और स्वल्प समय बाद तो यह समाज नामशेष ही हो गई और उसकी स्थापना की बात भूतकाल की वस्तु होकर भुला दी गई। इसके अनेक कारण थे। दयानन्द सरस्वती की विद्वता, वक्तृत्व, धर्मसुधार के लिए उनका निःसमूह परिश्रम, वैराग्य तथा साधुत्व के लिए भोलानाथ उनकी प्रशंसा करते थे, किन्तु उसमें कतिपय न्यूनतायें भी थीं जिनके होने से धर्मप्रचार के कार्य में बाधा पहुँचती है। उनके इन दोषों के लिए भोलानाथ खेद व्यक्त करते थे। दयानन्द सरस्वती के अहमदाबाद आने से प्रार्थनासमाज को कोई विशेष लाभ नहीं पहुँचा, इसके विपरीत बहुत कुछ अस्त व्यस्तता ही हुई। परन्तु भोलानाथ की दृढ़ता तथा परिश्रम से सारी अव्यवस्था दूर होकर सुव्यवस्था हुई और पुनः प्रार्थनासमाज का काम निर्विघ्न तथा उत्तरोत्तर वृद्धि के मार्ग पर चल पड़ा।

प्रार्थनासमाज तथा आर्यसमाज के नाम की चर्चा किसी को तुच्छ लगेगी परन्तु इसके भीतर समाये महत्वपूर्ण तत्वों का विचार करने वाले को उसकी स्पष्ट गुरुता भी दिखाई देगी। दयानन्द विलक्षण, तीव्र बुद्धि वाले तथा धर्मप्रचार में भी राजनीति पूर्ण युक्ति का प्रयोग करने वाले पुरुष थे। उन्होने देखा कि अहमदाबाद में प्रार्थनासमाज के रूप में अपने प्रचार के अनुकूल सामग्री तो तैयार ही है, अन्य स्थानों में नवीन आर्यसमाजों की स्थापना में साधन अपेक्षित होते हैं, वे तो यहाँ अनायास उपस्थित हो हैं। वास्तव में ऐसा नहीं था। क्योंकि प्रार्थनासमाज के बीच कैविभेदक तत्व अधिक थे। प्रार्थनासमाज के मत में वेद ईश्वर कृत नहीं हैं, आर्यसमाज वेद को ईश्वर कृत मानता है। वेदों में सब कुछ है, यह सिद्ध करने के लिए उनके कृत्रिम अर्थ करने में दयानन्द को कोई बाधा नहीं होती, किन्तु भोलानाथ और प्रार्थनासमाज वेद का सर्व विद्यामयत्व नहीं मानते। इस प्रकार के अन्य भी कई विशेष मतभेद थे। परन्तु धर्मराज खटपटी दयानन्द को इनकी अधिक चिन्ता नहीं थी। यदि "प्रार्थना" के स्थान पर "आर्य" शब्द रख दिया जाय तो काफी है। अहमदाबाद में भी आर्यसमाज स्थापन हो गया। इस प्रकार का विजयघोष करने के लिए पर्याप्त सामग्री मिल जायगी। इसमें उनका उद्देश्य था - नाम मात्र में क्या है? अपने सब आर्य हैं अत॰ यह आर्यसमाज का नाम उचित है। इस प्रकार की मात्र ऊपरी दलीलों से भोलानाथ, महीपतराम आदि के मन को बदलने का पर्याप्त यत्न दयानन्द ने किया। भोलानाथ ने तो निश्चयात्मक उत्तर तुरन्त नहीं दिया और विचार करके उत्तर देने का वचन दिया। दयानन्द के मन में आधी विजय प्राप्त होगी, ऐसा विचार आया होगा। परन्तु इस भेंट के पश्चात इस विषय पर सारी रात विचार करने के कारण भोलानाथ उन्नद्र हो गये। अन्तत॰ दृढ़ निश्चय किया कि नाम को नहीं बदलना है। दयानन्द की युक्तियां निष्फल हुई। यह दृढ़ निश्चय करके प्रार्थनासमाज एक बड़ी विपत्ति से बच गया। यदि इस समय थोड़ी भी ढिलाई दिखाई जाती तो आज निस्तेज निरुपयोगी आर्यसमाज में प्रार्थनासमाज समा जाता और पता नहीं किस कोने में अज्ञानांधकार में पड़ा रहता। उस क्षण तो दयानन्द स्वामी को विजयघोष करने का एक और रणसिंहा (वाद्ययन्त्र) मिल जाता। प्रार्थनासमाज सत्य का अन्वेषी होने के कारण सत्य को प्रधान मानता है, आर्यसमाज अपने सामयिक मत को येन केन प्रकारेण सत्य सिद्ध करने के लिए किसी भी उपाय को स्वीकार कर धार्मिक सत्य को गौण मान लेती है। इसका एक उदाहरण यह है कि एक समय भोलानाथ ने दयानन्द से कहा - "स्वामीजी, आप वेद को ईश्वर प्रणीत बताने का प्रयत्न करते हो, सो बुद्धिमान लोगों के सामने तो व्यर्थ है"। इस पर दयानन्द ने कहा - यह सब बात तो सच है, परन्तु भोलानाथजी, ऐसा समझाये सिवाय - लोग सब अपने संग कैसे आने वाले? और अपनी गाड़ी चले कैसे? इस प्रकार धार्मिक सत्य को गौण मानने वाले समाज में विमग्न होने की अनिष्ट दशा से प्रार्थनासमाज बचा, यह ईश्वर की कृपा ही थी।"

भोलानाथ साराभाई के जीवनचरित के उपर्युक्त दो उद्धरणों से पूर्वपक्ष स्पष्ट हो गया है। स्वामी दयानन्द के जीवनी लेखकों का ध्यान भोलानाथ साराभाई के उपर्युक्त दृष्टिकोण की ओर गया तो अवश्य था, किन्तु साराभाई के जीवनचरित में स्वामी दयानन्द द्वारा वेद को निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान माने जाने के सम्बन्ध में जो मिथ्या बातें लिखी गई हैं तथा गलतबयानी की गई, उसका विस्तृत उत्तर हम यहाँ देने का प्रयास कर रहे हैं। तथ्य यह है कि अहमदाबाद में यद्यपि प्रार्थनासमाज ने स्वामी दयानन्द के भाषणों की व्यवस्था की थी और उन्हें वैचारिक सहयोग भी दिया था, किन्तु केवल महीपतराम ने ही आर्यसमाज की सदस्यता स्वीकार की थी।

जहाँतक वेदों की प्रामाणिकता का प्रश्न है तत्कालीन पत्र "हितेच्छु" ने अपने 11 मार्च 1875 के अंक में स्वामी दयानन्द के एतद् विषयक दृष्टिकोण का खुलासा करते हुए लिखा था - "वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार करने में पण्डित दयानन्द ने समाज के लिए बहुत ही युक्ति-युक्त कार्य किया है।" परन्तु भोलानाथ का सबसे अधिक आपत्तिजनक कथन तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने वेद के परम प्रमाण होने तथा ईश्वरोक्त होने के सिद्धान्त को एक कूटनीति के रूप मेंही स्वीकार किया और स्वयं अपने मन में उन्होंने इस तथ्य को इसी रूप में स्वीकार नहीं किया था। वस्तुतः दयानन्द के लिए वेदों की परम प्रामाणिकता तथा उसके ईश्वरप्रदत्त होने का सिद्धान्त तो सर्वोपरि ही था। भारत के परम्परागत धार्मिक और दार्शनिक विचारों का अध्ययन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुचे थे कि हमारे देश के सभी मत सम्प्रदाय, आचार्य, दार्शनिक और विचारक वेदों के प्रति ऐसी ही प्रामाण्य बुद्धि रखते हैं। अतः यदि देश में धार्मिक एकात्मता के भाव को प्रबुद्ध करना है तो वेद प्रामाण्य को उसके उसी प्राचीन और विशुद्ध रूप में स्वीकार करना होगा, जिस रूप में पुराकाल के ऋषियों से लेकर राजा राममोहन राय तक के आधुनिक धर्माचार्य स्वीकार करते आये हैं।

जीवनचरित के गुजराती अंश में स्वामी दयानन्द और भोलानाथ साराभाई का जो वार्तालाप उद्धृत किया गया है, वह सर्वथा कपोल-कल्पित और मनगढ़न्त है। भोलानाथ का यह कथन भी सर्वथा अलीक और प्रमाणरहित है कि वेद को

ईश्वर प्रणीत मानना बुद्धि मानो के आगे व्यर्थ है। आक्षेपकर्ता को सम्भवतः यह ध्यान नहीं रहा कि ऐतरेय महीदास याज्ञवल्क्यादि ब्राह्मणकार, उपनिषद प्रणेता, ऋषिगण, कपिल, पतंजलि, गौतम, कणाद, बादरायण और जैमिनि आदि दर्शन प्रणेता मन्वादि स्मृतिकार तथा वाल्मीकि एवं व्यास आदि इतिहासकार सभी वेदों को ईश्वर कृत तथा परम प्रमाण मानते आये हैं। और यह कहना तो और भी मिथ्या तथा हास्यास्पद है कि स्वामीजी ने भोलानाथ के उक्त कथन का अनुमोदन करते हुए कहा कि लोगों को साथ लेने और अपनी गाड़ी चलाने के लिए ही उन्होंने वेद प्रामाण्य को स्वीकार किया है। दयानन्द के लिए सत्य ही सर्वोपरि था। वह सत्य के लिए किसी से भी, किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं करते थे, अतः यह कहना तो छल मात्र ही है कि उन्होने वेद प्रामाण्य को एक नीति के रूप में स्वीकार किया था। भोलानाथ ने धार्मिक मामलों में तात्कालिक लाभ प्राप्त करने का जो आरोप स्वामीजी पर लगाया है, यह कितना मिथ्या है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। स्वामीजी का बड़े से बड़ा विरोधी भी यह स्वीकार नहीं करेगा कि वेद प्रामाण्य का सिद्धान्त स्वामीजी के लिए एक कूटनीतिक चतुराई से अधिक नहीं था।

स्वामी दयानन्द के जीवन और कार्यों पर अनुशीलन प्रधान ग्रन्थ लिखने वाले प्रो० जार्डन्स ने भी भोलानाथ के उक्त कथन को सर्वथा निःस्सार मानते हुए लिखा है - "आर्यसमाज के विरोधियों द्वारा यह बार-बार कहा जाता है कि स्वामीजी ने भोलानाथ के समक्ष स्वीकार किया था कि वेदों के निर्भ्रान्त होने को नही मानते, किन्तु इसे केवल नीति के रूप में ही स्वीकार करते है। यह भी केवल इसलिए कि वेद हिन्दुओं को मिलाने का एक केन्द्र बिन्दु है। किन्तु यह धारणा किसी विश्वसनीय प्रमाण पर आधारित नहीं है।"

प्रार्थनासमाज के वेद को प्रमाण न मानने के सिद्धान्त पर अधिक विचार करना यहाँ अप्रासंगिक होगा, तथापि इतना कह देना आवश्यक है कि सत्य को जानने के स्रोत अनेक नहीं होते। सत्य यदि एक है तो उसका स्रोत भी एक ही होगा। हाँ, असत्य के अनेक रूप हो सकते हैं। अतः ईसाई, इस्लाम या हिन्दू शास्त्रों में यदि सत्यांश है, और निश्चय ही है, तो वह उसी महान सत्य का अंश मात्र है जो परमात्मा प्रदत्त वेदों के माध्यम से मनुष्य जाति को पूर्व से ही प्राप्त है।

अब प्रश्न रह जाता है प्रार्थनासमाज को आर्यसमाज का नाम देने का। स्वामी दयानन्द तो आर्यसमाज की स्थापना के लिए भी अधिक उतावले नहीं थे। वे यह भली-भाँति जानते थे कि भारत में पहले से ही मत-मतान्तरों की संख्या बहुत अधिक है, अतः एक नवीन धर्मान्दोलन को प्रवर्तित करने में उनकी अधिक रुचि नहीं थी। इसीलिये बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के लिये उत्सुक अपनी भक्तमण्डली के समक्ष उन्होंने स्पष्ट कहा था - "भाई, हमारा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूँ .... आप यदि समाज के पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, समाज कर लो। उसमें मेरी कोई मनाई नहीं है। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जायगा।" आदि तथापि जब बम्बई के भद्र पुरुषों ने आर्यसमाज की स्थापना में विशेष उत्साह दिखाया तो वे इस प्रस्ताव से सहमत हो गये। निश्चय ही स्वामी दयानन्द आर्यसमाज की ही भाँति प्रार्थनासमाज और ब्राह्मणसमाज को भी एकेश्वरवाद का पोषक, मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि मिथ्या धारणाओं का विरोधी तथा समाज सुधार का समर्थक मानते थे। इसलिये उनकी यह एकान्त आकांक्षा थी कि उक्त समाजों को ही आर्यसमाज का रूप दे दिया जाय तो एक समान विचारधारक के संगठनों के पारस्परिक विलय से शक्ति बढ़ेगी और पृथक समाजें बनाने का श्रम बचेगा। किन्तु वेद को प्रमाण मानने में ब्राह्मणों और प्रार्थनासमाजियों का संकोच ही आड़े आ रहा था। तथापि कलकत्ता, महाराष्ट्र और पंजाब में ब्राह्मसमाजियों और प्रार्थनासमाजियों ने स्वामीजी को भरपूर सहयोग दिया था। अब यदि भोलानाथ अहमदाबाद की प्रार्थनासमाज को आर्यसमाज का नाम देने में संकोच करते रहे तो इससे स्वामी जी की तो कोई हानि नहीं हुई। साराभाई का जीवनी लेखक इसे प्रार्थनासमाज का एक आसन्न विपत्ति से बच जाना कहता है। परन्तु इतिहास साक्षी है कि इस घटना के 113 वर्ष पश्चात् आज आर्यसमाज तो फल-फूल रहा है, किन्तु भोलानाथ के प्रार्थनासमाज का नामोनिशान भी नहीं है। यह दूसरी बात है कि अहमदाबाद में आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास (जो दिसम्बर 1874 में किया गया) पूर्ण सफल नहीं हुआ, किन्तु इससे प्रार्थनासमाज के हर्षित होने का कोई कारण नहीं था।

शुभ विवाह

श्री हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता, उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं मन्त्री, जनपदीय आर्योपप्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के सुपुत्र चि० प्रवीण आर्य का शुभ-विवाह बिलारी के सुप्रसिद्ध डा० सन्तोष कुमार जी की आयुष्मती पुत्री लीना के साथ दिनांक 22 अक्टूबर 1988 को ससमारोह सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से प्रसिद्ध कर्मकाण्ड विशेषज्ञ श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर अन्य अनेक संभ्रान्तजनों ने वर-वधू को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए नवदम्पत्ति के मंगलमय जीवन की कामना व्यक्त की। आर्यमित्र परिवार की ओर से वर-वधू को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

प्रधान सम्पादक

आवश्यक सूचना

पूर्वांचल आर्य वीर दल के सभी अधिकारियों एवं सदस्य महानुभावों को सूचित किया जाता है कि आगामी 22 नवम्बर 1988 दिन मंगलवार को एक आवश्यक बैठक श्री अवधबिहारी खन्ना, संचालक की अध्यक्षता में दुर्गाकुण्ड, आनन्दबाग, वाराणसी में दिन के 1 बजे से होगी।

अतः सभी महानुभावों से निवेदन है कि उक्त बैठक में यथा समय उपस्थित होने का कष्ट करें।

प्रयागदीन जायसवाल, मन्त्री,
आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र०

विष पीकर अमृत सरसाया

डा0 श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने अपने युग की विसंगतियों का हालाहल पीकर भी समाज व राष्ट्र को अमृत का प्याला दिया, यही कालजयी की पहचान है, कविश्रेष्ठ प्रकाश जी ने इसी भाव को काव्य में व्यक्त किया है-

"पिलाया जहर का प्याला, उन्हीं कपटी कृतघ्नों ने,
कि वे जिनके लिये अमृत का प्याला लेके आये थे,
दयानन्द देव वेदों का उजाला लेके आये थे।"

जिस समाज व राष्ट्र के लिए युगपुरुष इतना सब करते हैं, उसी समाज के निष्ठुर जन उन्हें पहचान नहीं पाते। जैसे अबोध शिशु अपना हित नहीं समझता, उसी प्रकार साधारण बुद्धि के लोग, विवेक बुद्धि से शून्य होकर, अपने मार्ग में शूल बिछालेते हैं, किन्तु जो युगपुरुष, उन शूलों को हटाने की प्रेरणा देता है, उसे ये अबोधजन अपना शत्रु समझ बैठते हैं। महर्षि दयानन्द को भी दुर्मेधासम्पन्न जन नहीं समझ पाये। उस सुधा सरिता को बहाने वाले मृत्युञ्जय को विष देकर मिटाने का षड्यन्त्र कलुषित मानसिकता का सूचक है।

देवदयानन्द ने जो कर दिखाया, वैसा संसार में कोई न कर सका। ईसा, मुहम्मद, सन्त, महात्मा, व अन्य युगपुरुषों की तुलना में देवदयानन्द बेजोड़ हैं। ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति का क्षेत्र सीमित न था, जबकि कथित पैगम्बरों का क्षेत्र सीमित था। ऋषि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व अन्य क्षेत्रों में अपने विचारों से जो क्रान्ति की, वह कोई भी पैगम्बर, साधु व सन्त न कर सका। सभी के क्षेत्र किसी निश्चित विषय व मतमतान्तर तक ही सीमित हैं। ऋषि दयानन्द ने जो संसार को दिया, वह उनका निजी विचार व मान्यता न थी, अपितु उनके सिद्धान्तों का आधार सार्वभौम वैदिक धर्म ही था।

अनेक मतमतान्तरों को मिटाकर, देव दयानन्द केवल सार्वभौम वैदक धर्म का प्रसार, निखिल विश्व के लिए चाहते थे। संसार में अशान्ति क कारण है विविध मत, सम्प्रदाय, और मजहब, जो विचारमात्र हैं, जबकि वैदिक धर्म व्यापक है, जिसके अनन्त क्षेत्र में समस्न मानवता है। यहाँ एक जाति, देश, व सम्प्रदाय के लोगों के हित की बात नहीं, संसार के अन्य मतमतान्तर और मजहब, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनादि बनाने की बात करते हैं। जबकि "वैदिकधर्म" मानव बनाने और बनने की चर्चा करता है - "मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्" अर्थात् तू मानव बन । मनुष्य शरीर धारण करना ही मानवता की पहचान नहीं। यास्काचार्य के अनुसार जो मननपूर्वक कार्य करता है, वही मानव है - "मत्वा कर्माणि सीव्यतीति" "मनुर्मनुतेर्वा," देवदयानन्द भी समस्त संसार को मानव रूप में देखना चाहते थे, इसी कारण उन्होंने समस्त संसार को आर्य बनाने की बात प्रस्तुत की थी। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष समस्त मानव जाति को संगठित करने की उद्घोषणा है, वैदिकधर्म किसी जाति, देश, व सम्प्रदाय का नहीं, अपितु समस्त संसार के कल्याणार्थ ही है। "आर्यसमाज" की स्थापना विश्व में आर्यत्व के प्रसार के लिए ही युगनिर्माता महर्षि दयानन्द ने की थी। आर्यसमाज के नियम में घोषणा है-- "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" यह कार्यक्रम निखिल विश्व के लिए है न कि वर्ग विशेष, देश व जाति के लिए। योगीश्वर दयानन्द, ऐकेश्वरवाद से हटे हुए मानवों को आस्तिक बनाना चाहते थे। उनका स्वयं का कोई अपना मत नहीं था, अपितु वे सबको सार्वभौम वैदिकधर्म में दीक्षित करना चाहते थे। उनकी समालोचना, और तर्क, अविद्या, अन्याय और अभाव के विरुद्ध थी।

देवदयानन्द को भारतभूमि से अनन्य अनुराग था, भारत को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए ही उन्होंने गुजरात में जन्म लेकर भी आर्यभाषा में अपने ग्रन्थों का प्रणयन किया। उनका कार्यक्षेत्र पंजाब व उत्तर प्रदेश था। शास्त्रार्थ उत्तर प्रदेश व राजस्थान में हुए। वेदवाणी से शोभित देवदयानन्द की ओजस्विनी वाणी सुनकर कुमार्गगामी जोधपुर नरेश सुमार्ग पर आ गया था। भारत भूमि की गरिमा को नष्टप्राय देख कर वे व्याकुल थे। "महाभारत" में भी भारतभूमि व अपवर्ग का कारण बताया गया है--

"गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे ।
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते,
भवन्तिभूय· पुरुषाः सुर त्वात् ।।"

ऋषि दयानन्द संसार से पलायनवादा प्रवृत्ति के विरोधी थे। समाधि का फल तो उन्हें पूर्व से ही प्राप्त था, अतः समाधि को त्याग कर वे जगतोद्धार में लग गये। जब सन्त महात्मा प्रस्थानत्रयी के माध्यम से, मानवों की अभ्युदय सम्बन्धी व्यवस्था को छिन्नभिन्न कर रहे थे, उस समय ऋषि दयानन्द ने, अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के लिये उपस्थानत्रयी (सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि, लोकोन्नयनार्थ, तथा ऋग्वेदादिभूमिका निःश्रेयस की सिद्धि के लिए) प्रस्तुत की थी। महर्षि दयानन्द की पुनीत वाणी का ही यह प्रभाव था, जो महानास्तिक मुंशीराम आस्तिक ही नहीं बने, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द बन कर महर्षि का जीवन भर यशोगान करते रहे। भौतिक विज्ञान के चमत्कार से चमत्कृत पं0 गुरुदत्त को भी महर्षि के उत्तरों से निरुत्तर होना पड़ा। महर्षि की वाणी को सुन-सुन कर ईसाई मत के पादरी और मुस्लिम मौलवी खड़े-खड़े दाँतों तले उँगली दबाया करते थे। उनकी वाणी में सत्यता, मधुरता, हितभावना तथा ओजस्विता का अपूर्व मिश्रण था।

महर्षि दयानन्द ने अपनी ओजस्विनी वाणी से समाज का ही नहीं पूरे विश्व का हित किया था, वेदों का गौरव बढ़ाने

में महर्षि दयानन्द का लक्ष्य मानव-मात्र का हित करना ही था, "सत्यार्थप्रकाश" में देवदयानन्द ने ईश्वर के अनेक नाम गिनाये हैं, किन्तु उनके अनुसार ईश्वर के सभी नामों में "ओ३म्" का नाम ही सर्वश्रेष्ठ है, जिसका कारण है "ओमार्थ की व्यापकता। ओम् के जहाँ बीस अर्थ हैं, वहाँ "राम" शब्द के तीन से अधिक अर्थ नहीं निकल सकते। संसार में एक "धर्म" की स्थापना से ही परस्पर के भेद मिट सकते हैं।

शूद्रों पर महर्षि दयानन्द के युग में अत्याचार चरम सीमा पर थे। शूद्रों और स्त्रियों को वेद के पठनपाठन का अधिकार न था। ऐसे समय में, शूद्रों आदि के कल्याण के लिए ऋषि दयानन्द ने शूद्रों के वेदाधिकार के विषय में प्रमाण दिया--

"यथेमां वाचं कल्याणी भवदानी जनेभ्यः"।

अर्थात् वेदवाणी मानवमात्र के कल्याण के लिए है। छुआछूत, जाँत-पाँत, पर्दाप्रथा, बालविवाह, बेमेल विवाह, एवं विधवा समस्या को सुलझाने के लिए अनेक रचनात्मक कार्य ही नहीं किये, अपितु अपनी वेदामृत पोषित वाणी से जनमानस के हृदय में क्रान्तिकारी विचारों की लहरें उत्पन्न कीं। आज जो जनजागृति दीख रही है, उसके मूल में महर्षि दयानन्द की प्रेरक वाणी और रचनात्मक कार्य ही हैं। राजनैतिक क्रान्ति के सूत्रधार भी महर्षि दयानन्द ही थे। "स्वराज्य" के मूलप्रेरक भी वही थे। गाँधी, पटेल, व नेहरू, आदि से बहुत पहिले ही, क्वीन विक्टोरिया की घोषणा - "अब हमारा शासन तुम सब के लिए माता-पिता के समान हितकारी होगा," सुनकर महर्षि दयानन्द ने, सिंहगर्जना की थी कि माता-पिता के समाज हितकारी शासन स्वराज्य द्वारा ही हो सकता है। इस प्रकार हिन्दू-मुसलमान, दोनों की ही आँखें खोली थीं। किन्तु आम लोग इस तथ्य को जानना भी नहीं चाहते।

महर्षि दयानन्द ने गुणकर्मानुसार ही चारों वर्ण माने थे। इसके साथ ही गुरुकुलीय शिक्षा और वेदोक्त प्रणाली पर महर्षि ने जोर दिया था। उदयपुर के महाराजा ने जब महर्षि दयानन्द से महामन्दिर के स्वामी बनने का निवेदन करते हुए मूर्तिपूजा के खण्डन न करने का आग्रह किया, तब निस्पृह दयानन्द ने उपेक्षा से उच्च-स्वर में कहा- "राजन् तुम्हारे राज्य को तो दौड़ कर पार कर सकता हूँ किन्तु प्यारे प्रभु के साम्राज्य से पार नहीं जा सकता। इस प्रकार उदयपुर नगरी को सदैव के लिए छोड़ दिया।

महर्षि दयानन्द ने स्वामी-सेवक संबंध का वर्णन करके अपना और परमात्मा का सम्बन्ध संकेतित किया है, क्योंकि परमात्मा से जीवात्मा का सम्बन्ध पिता-पुत्र, गुरुशिष्य, स्वामी-सेवक, व्याप्य-व्यापक आदि का, सापेक्षतापूर्ण है--

- पिता-पुत्र- "स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव॰ ऋ॰ 1/1/2 ईश्वर हमारा पिता है, हम उसके पुत्र हैं ।
- गुरु-शिष्य- "स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनाऽनवच्छेदात् योग॰/26 वह परमात्मा पूर्व ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) का भी गुरु है। जीवात्मा सेवक और परमात्मा स्वामी है। महर्षि दयानन्द ने स्वामी-सेवक सम्बन्ध का वर्णन करके अपना और परमात्मा का सम्बन्ध संकेतित किया है।

भारतीय पुनर्जागरण के मुख्य दो चरण हैं- उदारवादी एवं सात्विक उग्रवादी चरण। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि-दयानन्द, उग्रवादी चरण के अग्रणी माने जाते हैं। देवदयानन्द ने भारत की प्रगति के लिए पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान को अस्वीकार किया। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की "भारत के वेद, संस्कृति, शिक्षा, भाषा आदि अपने में सम्पन्न हैं, तथा उनके सहयोग से ही देश का उत्थान सम्भव है, उन्होंने भारत की महानता की पुष्टि के लिए, वेद को सर्वोच्च बताया। यूरोप की तुलना में, उन्होंने भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठतम बताया।

अमृत की सुरसरिता बहाने वाले देवदयानन्द को फिर निष्ठुर समाज की ओर से विष क्यों मिला ? विषपान में ऋषि दयानन्द, शंकर, मीरा और सुकरात आदि से बढ़-चढ़ कर हैं :-

"शंकर ने तो एक बार ही, कहते हैं विषपान किया,
हो कल्याण देवताओं का, तम में मणि का दीप दिया,
चौदहवार किन्तु जिसने हालाहल का था मान किया,
एक मूल शंकर जिसने अमृत देने, विष मूक पिया"।
मीरा और सुकरात आदि से,
जो है आगे कहलाया।
रहा अग्रणी अमृतमय,
विष लज्जित होकर सकुचाया ।
दीपाली के दिन बुझ कर भी,
ज्योतिर्मय कर पाया।
दया और आनन्द समन्वित,
यश जग ने है गाया।"
(सौदामिनी का हास : डॉ महाश्वेता)

विषमताओं से पूर्ण वर्तमान युग में, युगपुरुष दयानन्द के विचारों से प्रेरणा लेकर, संसार को नूतन दिशा दिखाई जा सकती है, जिससे विश्वशान्ति और कल्याण के स्वप्न साकार हो सकेंगे"--

"दयानन्द के वीर सैनिक बनेगें,
दयानन्द का काम पूरा करेगें"।

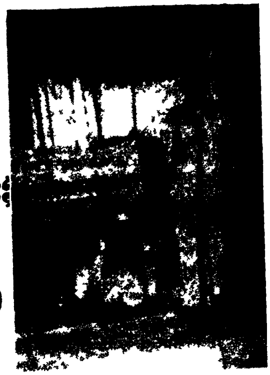
सुझाव और सम्मतियाँ

हम अपने प्रिय पाठकों की सेवा में आर्यमित्र का ऋष्यंक तथा यह साधारण अंक भेज रहे हैं। हम आर्यमित्र के क्लेवर को सुधारने तथा आधुनिक तरीके से छापने का प्रयत्न कर रहे हैं। कृपया कृपालु पाठक अपनी सम्मति एवं सुझाव भेजने की कृपा करें। सदैव की भाँति हम आपके सुझाव एवं सहयोग का स्वागत करेंगे।

प्रबन्ध सम्पादक

डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ, में
दिनाक 12 तथा 13 नवम्बर 1988 को सम्पन्न हुए

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के 103 वें वृहदाधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की झलकियां



सभा मत्री जी बोलते हुए।



सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा स्वामी आनन्दबोध जी का स्वागत करते हुए।



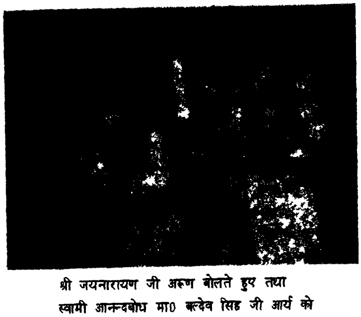
श्री मनमोहन तिवारी का सभामन्त्री पद पर विजयी होने के उपरान्त स्वागत। साथ में प्रसन्नमुद्रा में खडे हैं मा0 श्री बल्देवसिंह आर्य, {मन्त्री उ0प्र0शासन} श्री सुरेश शास्त्री तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू0स्वामी आनन्दबोध सरस्वती।



मा0 श्री बल्देव सिंह जी मत्री उ0प्र0 शासन द्वारा आर्य जनों को सम्बोधन



सभा मत्री अन्तरग सभा को सम्बोधित करते हुए।



श्री जयनारायण जी अरुण बोलते हुए तथा स्वामी आनन्दबोध मा0 बल्देव सिंह जी आर्य को पुस्तक के विमोचन के उपरान्त भेंट करते हुए ।



श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर जी बोलती हुई।



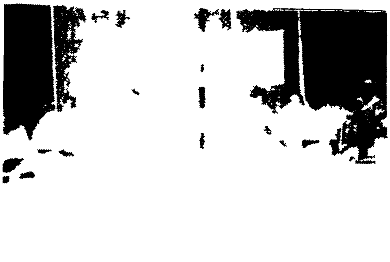
श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी, मंत्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली बोलते हुए।



प्रदेश के समस्त आर्य जन



अन्तरग की बैठक



मच पर सभा में अधिकारी गण



विशाल पडाल



प्रदेश के समस्त आर्यजन



सभास्थल पर आर्य प्रतिनिधिगण

महर्षि दयानन्द की दूरदर्शिता

श्री कृष्णदत्त, एम०ए० बी०एड०, हैदराबाद।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को केवल एक धर्म प्रचारक या समाज सुधारक ही माना जाता है। निस्सन्देह स्वामीजी महाराज ने वेद प्रतिपादित धर्म का प्रचार किया और उन्होंने अनेक सामाजिक त्रुटियों की ओर संकेत करके उन्हें दूर करने के लिए आर्यसमाज को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। किन्तु स्वामी जी केवल इतना ही नहीं करना चाहते थे। वे इससे भी कहीं अधिक और इससे भी कहीं भिन्न कार्य करने के इच्छुक थे और अपनी इन्हीं महान योजनाओं की परिपूर्ति के लिए आर्यसमाज की स्थापना सन् 1875 में की थी। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व ही वे सत्यार्थ प्रकाश नामक सिद्ध ग्रन्थ की रचना कर चुके थे। इसको एक प्रकार से आर्यसमाज का "मैनिफेस्टो" अर्थात् घोषणा-पत्र कह सकते हैं। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना अनेक आशाओं को लेकर की थी। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि ने लिखा है, "जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" इससे स्पष्ट है कि महर्षि ने भारत का सर्वांगीण तथा समुचित उन्नति को लक्ष्य में रखकर ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसीलिए स्वामीजी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जिन-जिन कार्यों को करना उचित है उन सभी के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं। वैयक्तिक कर्त्तव्य, धार्मिक आचार, सामाजिक दायित्व, राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवहार, तात्पर्य यह कि जीवन के प्रत्येक अंग और क्षेत्र के बारे में उन्होंने एक आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत किया है और यह सब कुछ वे आर्यसमाज के द्वारा ही करवाना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जहाँ यह चाहते थे कि यहाँ के लोगों में धार्मिक शिक्षा का प्रचार हो, वहाँ वे यह भी चाहते थे कि भारत के लोग नाना विषयों को सीखें तथा राजनैतिक, सैनिक, व्यावसायिक, संगीत, नृत्य आदि शिक्षाओं से विभूषित हों। उसी प्रकार महर्षि ने यह भी चाहा था कि भारतीयों को औद्योगिक शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध हो। उन्होंने जब यह देखा कि भारत की उर्वरा तथा शस्यश्यामला, रत्न गर्भा भूमि की गोदी में उसकी अपनी प्रिय सन्तान भूखों मर रही है, तो स्वामी जी बहुत दुःखी हुए। वे इस परिणाम पर पहुँचे कि भारत की सुजला-सुफला भूमि में भारतीयों को अकाल पीड़ित होने का कारण यहाँ पर उद्योग धन्धों का अभाव था। अँग्रेजों ने जानबूझकर यहाँ के उद्योगों को नष्ट कर दिया था। वे नहीं चाहते थे कि भारत में औद्योगिक शिक्षा का विकास हो। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि भारतीय युवकों को भिन्न-भिन्न उद्योगों की शिक्षा दी जाय। इंगलैंड से इसकी आशा ही नहीं की जा सकती थी। यूरोप में उन दिनों भी जर्मनी औद्योगिक दृष्टि से बहुत उन्नत था। महर्षि दयानन्द का यह भी एक चमत्कार ही था कि किसी विदेशी भाषा को न जानते हुए भी विदेशों में अपने अनेक भक्त और मित्र बना लिए थे। उन्हीं में से जी०ए० वीस नामक एक जर्मन सज्जन थे। महर्षि इन्हीं वीस महोदय की मार्फत भारतीयों की औद्योगिक शिक्षा में लग गए।

सन् 1880 ईसवी में उन्होंने वीस महोदय को अनेक पत्र लिखे। स्वामी जी ने उन पर इस बात का जोर डाला कि भारत के छात्रों को विभिन्न औद्योगिक शिक्षा दिलाने में वे उनकी सहायता करें। स्वामी जी के पत्र के उत्तर में 21 जून 1880 में लिखे पत्र में वीस महोदय ने यह प्रकट किया था, "जो-जो विषय आपके विद्यार्थियों के प्रयोजन के लिए सबसे उपयोगी और आवश्यक प्रतीत होते हैं, वे सब हम उन्हें सिखा देंगे। साधारण विद्यार्थियों की अपेक्षा, जिनके सामने ऐसा कोई उद्देश्य नहीं होता, हम आपके विद्यार्थियों की विशेष शिक्षा पर अधिक ध्यान देंगे।...... हम ऐसे प्रबन्ध करने के लिए उद्यत हैं जो आपके देशवासियों के लिए और हमारे लिए सन्तोषजनक हों।" (भूमिका श्री दयानन्द प्रकाश)

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी महाराज ने यूरोपीय देशों के तत्कालीन लोगों के व्यवहार से यह अनुभव किया कि वे लोग भारत को उचित दिशा में उन्नति करते हुए नहीं देखना चाहते। सम्भव है स्वामीजी महाराज ने भी वीस महोदय को इस सम्बन्ध में लिखा भी होगा कि उनके भेजे गये विद्यार्थी महान् उद्देश्य को लेकर भेज जा रहे हैं, अत उनको शिक्षा का बड़ा ही अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए। उस पत्र के उत्तर में 30 जून 1880 में वीस महोदय ने बहुत बड़ा पत्र लिखा और उसमें स्पष्ट किया, "मेरे इस पत्र का उद्देश्य आपको इस बात की सूचना देना है कि मैंने आपके नवयुवक देशबन्धुओं को ऐसे स्थानों में भेजने के विषय में और भी अधिक पूछताछ की। वे विविध कलाओं और व्यवसाय अत्यन्त क्रियात्मक और वाचनिक रीति से सीख सकते हैं। हम आपके आर्य विद्यार्थियों को सारी उपयुक्त कलायें और वस्तुयें सिखलाने के लिए अपनी रक्षा और देख-रेख में लेने के लिए उत्सुक हैं।..... मैं अपने नवयुवक भारतीय मित्रों की देख-रेख और विकास पर पूर्ण ध्यान दूँगा। उनको मैं किसी दूसरे की देख-रेख और रक्षा में कदापि नहीं छोड़ूँगा, इसके लिए चाहे मुझे अपने यूरोपीय विद्यार्थियों की रक्षा और शिक्षा के निमित्त दूसरों को भी नियुक्त करना पड़े।" (भूमिका श्री दयानन्द प्रकाश) वीस महोदय ने इसी पत्र में एक बात विशेष रूप से लिखी थी जिससे ऋषि दयानन्द के मन में भारतीयों के प्रति यूरोपीय देशों के लिये जो आशंका उठी थी उसका समाधान है। वे स्वामीजी को लिखते हैं "आपके पुत्र हमसे भौतिक कलायें और अन्य विद्यायें तथा शिल्प कर्म सहर्ष सिखा सकते हैं। हमें आपकी उन्नति का डाह नहीं है।" (भूमिका श्री दयानन्द प्रकाश)

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने एक विशेष बात यह की कि इस कार्य के लिए धनवानों को भेजने की अपेक्षा निर्धनों को भेजना चाहा। जिसके लिए सम्भव है उन्होंने वीस महोदय

को लिखा भी था और उनसे व्यय आदि के लिए उन निर्धन छात्रों के लिए कुछ सुविधा भी माँगी थी। उसके उत्तर में बीस महोदय ने स्वामी जी को लिखा, "मैं निर्धन माता-पिताओं के पुत्र लेने और उन्हें अपने सर्वोत्तम पुरुषों से शिक्षा दिलाने के लिए समुद्यत हूँ। कालान्तर में ज्योंही हमारी आय इस योग्य होगी, जब आप कहेंगे, तो आपके कुछ दरिद्र विद्यार्थी ले लूँगा। उनको बहुत थोड़े शुल्क पर अथवा बिना शुल्क शिक्षा दूँगा और उनकी उन्नति के लिए सहायता दूँगा।"(भूमिका श्री दयानन्द-प्रकाश)

पत्रों के इन उदरणों से प्रकट होता है कि महर्षि दयानन्द केवल कह देने को देशकल्याण नहीं समझते थे। उन्होंने जो लिखा और कहा उस पर आचरण किया। आचरण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बीस महोदय के पत्र-व्यवहार के उपरांत लाहौर तथा कुछ अन्य नगरों को अपने कुछ धनी भक्तों के पास धन के लिए पत्र भी लिखे। धन संग्रह का कार्य चल ही रहा था। यह कार्य छोटा तो था नहीं, क्योंकि स्वामीजी महाराज एक दो छात्रों को भेजकर सन्तोष नहीं करना चाहते थे। वे ऐसे छात्रों के दल के दल भेजना चाहते थे, जिसके लिए विपुल धन की आवश्यकता थी। सरकार से वे इसमें सहायता की आशा ही नहीं कर सकते थे। किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि सन् 1883 में ही विष देकर स्वामीजी की इहलोक लीला समाप्त कर दी गई और इस प्रकार अनेक महान कार्यों की भाँति यह कार्य भी अपूर्ण रह गया। किन्तु महर्षि के यह प्रयत्न उनकी दूरदर्शिता को सिद्ध करते हैं। हम इनसे यह जान सकते हैं कि महर्षि देश की सर्वांगीण उन्नति में किन-किन बातों को बढ़ावा देना चाहते थे और उनके सम्मुख कितनी महान् योजनाएँ थीं। वह योजनायें पूर्ण नहीं हुई, कुछ तो प्रारम्भ भी न हो सकीं, किन्तु ये निश्चित रूप से महर्षि की महानता तथा दूरदर्शिता का सूचक हैं।

महर्षि वाल्मीकि जन्म दिवस समारोह

महर्षि वाल्मीकि का जन्मदिन दिनांक 28-10-88 को रात्रि के 7·30 बजे से आर्यसमाज मंदिर, स्वामीपाड़ा, मेरठ में समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें हिन्दुओं के हर वर्ग ने भाग लिया। इस समारोह के अध्यक्ष श्री मानसिंह जी वर्मा पूर्व परिवहन मंत्री जी एवं पूर्व सांसद थे। श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य इसके संयोजक थे। सर्वप्रथम श्री हीरालाल जी,श्री कर्णसिंह जी, श्री धनीराम जी कँवल, श्री राजन भाई एवं मचल पार्टी ने मधुर संगीत के द्वारा महर्षि वाल्मीकि को श्रद्धा सुमन समर्पित किए। श्री धर्मपाल जी ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए जन्मगत जातपात का विरोध किया। श्री इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें आदि कवि और कुशल इतिहासकार बताया। उन्होंने यह भी बताया कि यदि साहित्य से और इतिहास से महर्षि वाल्मीकि की रामायण को निकाल दिया जाय तो अपने ऐतिहासिक साहित्य में कुछ नहीं बचता। श्री इन्द्रराज जी ने आगे कहा कि महर्षि वाल्मीकि के द्वारा रामराज्य का वर्णन और राष्ट्रवादी शक्तियों का ध्रुवीकरण आज के इस क्षुब्ध वातावरण में महत्वपूर्ण हो गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तमराम का चित्र एवं चरित्र चित्रण आज हम सब के लिए अनुकरणीय है। महर्षि वाल्मीकि सारे संसार में रामराज्य चाहते थे और एक ऐसा समाज चाहते थे जिसमें छूआछूत, ऊँचनीच का भेद भाव और परस्पर घृणा आदि न हो अपितु हम एक दूसरे को मानव समझकर प्यार करें।

वेद महिमा

आ० मुंशीराम शर्मा

वेद महिमा वेद शब्द से ही ध्वनित हो रही है। वेद का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान यहाँ का, अपने चारों ओर की परिस्थिति का भी होता है और द्यावा की पीठ से परे का भी। ज्ञान की येह दोनों निधियाँ गुहा में निहित है। गुहा के द्वार को खोलने वाला, अंधकार से निकाल कर प्रकाश में पहुँचाने वाला वेद है। जो आपको प्रकाश में पहुँचा दे, वह कितना ज्योति पुँज होगा, यह अनुमान से ही जाना जा सकता है। तम से परे ज्योति में, फिर उत्तम ज्योति में ले जाने वाला कितना महान है, कितना पावन है- वेद की, ज्ञान की इस पावनता की प्रशंसा में इसी हेतु गीता कहती है- नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।

ज्ञान से पूर्व वेद का पाठ या अभ्यास किया जाता है। ऋचाओं का सस्वर उच्चारण, कण्ठस्थ मंत्रों का मुख द्वारा विशुद्ध पाठ जिसके पास नहीं, वह वेद वेत्ता नहीं बन सकता। कंठस्थ-मंत्रों का ही मनन किया जाता है। मंत्र का अर्थ ही मनन है। जिसने मनन नहीं किया, वह अभ्यास तक ही सीमित है। पाठ करो, फिर उस पाठ के भीतर मनन द्वारा ज्ञान में प्रवेश करो, तभी पाठ की सार्थकता सिद्ध होगी। फिर ज्ञान प्राप्त करके उसे धारण करो, आचार में उतारो। जीवन को उसी के ढांचे में ढालो। पर याद रहे, इससे सांसारिक सुख की उपलब्ध होगी जो आपकोपथ से विचलित कर सकती है। अतः इस उपलब्धि को प्रभु अर्पित कर दो- त्यक्तेन भुञ्जी-थाः त्याग भाव से, फल मोह से दूर रह कर प्रभु आश्रित जीवन व्यतीत करो- विचलन नहीं, अविचल बनो-यह है वेद की महिमा, वेद चतुष्टय की त्रयी सेतुरीया-वस्था। वेद के विभाजन में यह प्रणाली ज्यो की त्यों, यथा तथ्य रूप से विद्यमान है।

वेद मंज स्वर-मात्रा-याद रूप में- ओंकार के अ-उ-म के विस्तार में दिखाई देते हैं। अ से ऋक्, उ से यजु और म् से सामवेद का बोध होता है। इसी को वेद त्रयी कहते हैं। इस त्रयी में बाह्योन्मुखता है। ज्ञान, कर्म, और उपासना इसी त्रयी के अपर नाम हैं। इन्हीं को भूः, भुवः और स्वः भी कहा जाता है। इनके द्वारा आपका ऋचापाठ, ज्ञान में, ज्ञान कर्म में, और कर्म उपासना में परिणत हो जाता है। यहाँ तक विचलन अथवा गति-कृति-क्रम बना रहता है। जैसे ही आप अपने उप=समीप आसीन हुए, वैसे ही अविचलन, स्थिरता, ध्रुवता या अद्वैतावस्था में प्रपंच से पृथक, शिवत्व में प्रवेश कर जाते हैं। जीवन का चेतना की,पुरुष की यही परमावस्था है। इसी परम में

अवस्थित हो जाना वेद के अक्षर में स्थित हो जाना है। क्षर से अक्षर की उपलब्धि में ही वेद की महिमा है। ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः । यस्तन्न वेद कि ऋचा करिष्यति, य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

कालजयी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

डा0 शकुनचन्द आर्य
रायबरेली

आधुनिक भारत के महान समाजसुधारकों, विचारकों, धार्मिक महापुरुषों एवं क्रांतिकारी देशभक्तों में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का अति प्रमुख स्थान है। जिसप्रकार कि उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य धारणकर तथा घर बार त्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन भारतमाता की सेवा, कुरीतियों, छुआछूत एवं ऊँचनीच की भावनाओं के उन्मूलन, वैदिक धर्म एवं संस्कृत भाषा के प्रचार, स्वदेशी भावना के प्रसार एवं नैतिकता की स्थापना में लगा दिया, उसके लिए देशवासी उन्हें सदैव स्मरण रखेंगे। तथा उनका नाम श्रद्धा एवं सम्मान के साथ लेंगे।

महर्षि दयानन्द का जन्म सन् 1824 ई0 में भारत के गुजरात प्रान्त के मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में हुआ था। उनके पिता श्रीकरसनजी तिवारी, जो कि औदीच्य ब्राह्मण थे, एक बड़े जमींदार थे तथा राज्य की ओर से लगान वसूली करते थे। वे शिव के उपासक थे एवं जप एव उपवास में बहुत विश्वास करते थे। दयानन्द का जन्म का नाम मूलशकर था।

जब मूलशंकर 14 वर्ष के हुए तो उनके शिवभक्त पिता ने फाल्गुन कृष्ण चर्तुदशी को शिवरात्रि के दिन उन्हें व्रत रखने का आदेश दिया। बालक ने बड़ी श्रद्धा से व्रत रखा तथा नियमानुसार जागरण किया। सभी उपासक सो गये परन्तु वह जागता रहा। इतने में उसने देखा कि शिवलिंग पर लगी भोग सामग्री तथा मिठाई को चूहे खा रहे हैं और दैत्यों का संहारक महादेव उन्हे अपने ऊपर से नहीं हटा पा रहा है। उन्हें शंका हुई। उन्होंने अपनी शंका समाधान के लिए अपने पिता को जगाकर अपनी शंका उनके सामने रखी। पिता ने कहा कि "असली महादेव तो कैलाशपर्वत पर रहते हैं, यह तो उनकी मूर्ति है।" तभी से उन्होंने सच्चे शिव की खोज का व्रत लिया और मूर्ति पूजा के ऊपर से उनका विश्वास उठ गया। इस बीच उनकी एक बहिन तथा चाचा का देहान्त हो गया। तत्पश्चात उनके मन में मृत्यु के विषय में जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हो गई। उनका मन घर से उचट गया। उनके पिता ने उन्हें गृहजाल में फासने के लिए विवाह की तैयारी आरम्भ कर दी। परन्तु इसके पहले उन्होंने सन् 1844ई0में पिता की दृष्टि से बचकर चुपचाप गृह त्याग दिया।

मूलशंकर ने घर त्यागने के बाद सच्चे शिव की खोज में दुर्गम जंगलों, नदियों के तटों, पर्वतों के शिखरों तथा तराई के क्षेत्रों की यात्राएं की, अनेक साधुओं, सन्यासियों एवं योगियों से भेंट की। एक दक्षिणी सन्यासी से सन्यास की दीक्षा ली। उनका नाम मूलशंकर से दयानन्द हो गया। परन्तु इसमे उनकी सच्चे शिव सम्बन्धी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई।

सच्चे गुरु से मिलन एवं उनके आदर्श का पालन

इसके बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती मथुरा पहुँचे जहाँकि विरजानन्द दण्डी नामक वेदों के विद्वान रहते थे। वहाँ उन्होने दण्डी जी के पाठशाला के दरवाजे को जब खटखटाया तो अन्दर से आवाज आई "तुम कौन" तब दयानन्द जी ने उत्तर दिया "यही तो मैं जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ?" स्वामी दयानन्द जी का उत्तर सुनकर विरजानन्द बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने दयानन्द को अपनी पाठशाला में भरती कर लिया, उन्हे वेद वेदांगों की शिक्षा देकर सुयोग्य बनाया। शिक्षा समाप्त कर जब दयानन्द ने अपने गुरु को दक्षिणा के रूप में लौंगे भेंट की तो उन्होने लौटाते हुए कहा कि "मुझे दक्षिणा में तुम्हारा जीवन चाहिए। मेरा आदेश है कि तुम अपना सम्पूर्ण जीवन अविद्या के विनाश, वेदों के प्रचार तथा पाखण्ड के खंडन में लगा दो।"

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामी दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों के प्रचार, कुरीतियों के उन्मूलन, नैतिकता की स्थापना तथा राष्ट्रवाद के जागरण में लगा दिया। इसके लिए उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा, पत्थर खाने पड़े कई बार विषपान करना पड़ा, गालियां सहनी पड़ी, उनके ऊपर तलवार का वार किया गया परन्तु वे अपने पथ से विचलित नहीं हुये और अपने श्रेष्ठ मार्ग पर चलते रहे।

स्वामी जी के विचार (धार्मिक एवं सामाजिक)

स्वामी दयानन्द सरस्वती **यथार्थवादी समाजसुधारक** थे। उन्होंने जातिप्रथा के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की। इस सम्बन्ध में महात्मा गाँधी ने लिखा है कि "स्वामी दयानन्द हमारे लिए विरासत में जो मूल्यवान वस्तुयें छोड़ गये हैं उनमें से अस्पृश्यता के विरुद्ध उनकी घोषणा निश्चय ही बहुत महत्वपूर्ण है।

स्वामी जी वैदिक धर्म एवं वर्णव्यवस्था के समर्थक थे। परन्तु वे भारत में प्रचलित जातिप्रथा के कटु आलोचक थे। **वे जाति का आधार जन्म नहीं अपितु कर्म मानते थे।**

स्वामी दयानन्द सरस्वती **मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे।** वे विशुद्ध आर्यसंस्कृति के समर्थक थे। उन्होंने कुरान और बाईबिल का सूक्ष्म अध्ययन करके उनकी प्रमाणिकता को सन्देह में डाल दिया। परन्तु उन्होंने बुद्धधर्म, सनातन धर्म, शैवधर्म एवं भारत में प्रचलित अन्य मत-मतान्तरों की आलोचना करने में संकोच नहीं किया। इस सम्बन्ध में उनका विचार था "यद्यपि मेरा जन्म आर्यावर्त में हुआ और मै यहाँ का निवासी भी हूँ ..... परन्तु मैं पाखंड का विरोधी हूँ और मेरा यह व्यवहार अपने देशवासियों तथा विरोधियों के साथ समान है। मेरा उद्देश्य मानव जाति का उत्थान करना है।" सुप्रसिद्ध इतिहासकार जायसवाल ने उनकी तुलना योरोप के सुधारक लूथर से करते हुये उन्हें 19वीं शताब्दी का सबसे महान भारतीय

स्वामी दयानन्द सरस्वती बालविवाह, दहेजप्रथा, नारी उत्पीड़न के विरोधी तथा विधवाविवाह, नारी मुक्ति आन्दोलन एवं नारी शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने अपने धार्मिक एवं सामाजिक विचारों की सुस्पष्ट व्याख्या अपने महान ग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** मे की है।

स्वामी दयानन्द के राजनीतिक विचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत की राजनीतिक अवनति का मुख्य कारण सामाजिक चरित्र का अभाव मानते थे। वे देश को राजनीतिक दृष्टि से एक करने के लिए सभी धर्मो के स्थान पर आर्यधर्म की स्थापना करना चाहते थे। जबकि किसी को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध बोलने की हिम्मत न थी, उन्होंने स्वशासन का नारा दिया एवं स्वराज्य की हिमायत की। अपने महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में उन्होंने लिखा है कि "विदेशी सरकार चाहे सब प्रकार के धार्मिक पक्षपातों से मुक्त हो तथा देशवासियों तथा विदेशवासियों के प्रति निष्पक्ष क्यों न हो परन्तु वह लोगों को पूरी तरह खुशी नहीं प्रदान कर सकती है।" वे लोकतंत्र, ग्रामप्रशासन एवं कानून के शासन के समर्थक थे। वे अँग्रेजी शिक्षा पद्धति के विरोधी तथा प्राचीन गुरुकुल पद्धति के पक्षधर थे। गुजराती होते हुये भी हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने स्वदेशी वेशभूषा एवं भावना अपनाने के हिमायती थे।

उनके महान कार्य

ऐसे तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म एवं संस्कृत भाषा के प्रसार, कुरीतियों के उन्मूलन, राष्ट्रीय भावनाओं के प्रसार तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए जो महान प्रयास किये, वे महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय हैं। परन्तु **उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य आर्यसमाज नामक सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठन की स्थापना थी।** आज आर्यसमाज विश्व में अपने इसी ध्येय को लेकर आगे बढ़ रहा है।

आवश्यक सूचना

देश व प्रदेश की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्यजनों से विनम्र निवेदन है कि आर्यमित्र के अधिक से अधिक संख्या में ग्राहक बनने तथा बनाने का हमें सहयोग प्रदान करें ताकि हम आर्यमित्र को अच्छे से अच्छे रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

प्रबन्ध सम्पादक

- आर्य समाज नकुड़ (सहारनपुर) के वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुये पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द पीठ के प्रो· भवानी लाल जी भारतीय ने आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन और विचारों का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया और देश वासियों को भारत राष्ट्र के नव निर्माण के लिए कहा उन्होंने अपने ओजपूर्ण प्रवचनों में ऋषि दयानन्द की स्वदेश भक्ति राष्ट्रीयता तथा देश के स्वाधीनता सग्राम में आर्य समाज की भूमिका की विस्तृत चर्चा की।

तमसो ज्योतिर्गमय

(आo विशुद्धानन्द-शास्त्री, बदायूँ।)

विश्व में पहले धरा पर, दीप था हमने जलाया,
ज्योति को फैला चतुर्दिक, तिमिर को हमने रुलाया ।।
जब गगन के दीप-सूरज की किरण थी मुस्कराई,
नाचती हिमगिरि-अजिर में, स्वर्णपरियाँ नजर आई ।।।।

विश्वम्भर का भीत तम, आया हिमालय के चरण में,
गहन अन्धेरी गुफा ने, रख लिया अपनी शरण में।
गुफा में बैठे तपस्वी का उधर से प्रश्न स्वर था-
"कौन तुम?" अज्ञानतम मैं, ज्योति से हूँ भीत, ऋषिवर।।

आपड़ा तेरी -शरण में, आप मुझको त्राण दे दो,
तुम शरण्य दयानिधे हो, भीख में लघु प्राण दे दो"।।
क्या करें? असमंजसी मुद्रा ऋषि पर छा चुकी थी,
करुण रस की माधुरी, मन को ऋषि के भा चुकी थी।।

सत्-असत्-चिन्तन-चमकता, तीसरा तब नेत्र जागा,
ज्योति की उज्जवल-विभा से, भीत तम भागा, अभागा।।
नेत्र बोला - "डरो मत, ऋषिवर करुण सहृदय बड़े हैं,
कहीं पर वे तिमिर तुमको, शरण देने को अड़े हैं।।

तुम रहो निश्चिन्त, ऋषिवर मुदित-मन कहने लगे हैं,
अधर तट से करुण-निर्झर-नाद यों बहने लगे हैं।
"दीप जलता हो जहाँ, उस ज्योति के तुम चरण चूमो,
दीप के नीचे, अंधेरे तुम रहो, भटके न घूमो।।

केश काले, कृष्ण-तिल, पिक, काक, नीले उस गगन में,
ज्योति आतम में तपे, और तुम रहो छाया सघन में ।
महापुरुषों के मरण-सन्देश जो लाती धरा पर,
क्रूर काली उस दीवाली की कहानी में बसो तुम ।।

आर्यसमाजी नेता का निधन

गाजियाबाद नगर के सुप्रसिद्ध आर्य नेता समाज सेवी एवं गाजियाबाद जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के भू0पू0 प्रधान श्री चौधरी अमर सिंह का दिनांक । नवम्बर को 65 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे कट्टर वैदिक धर्मी एवं समाज-सेवी आर्यपुरुष थे। जनता के दुखों को दूर करने में अहर्निश सर्वात्मना समर्पित रहते थे। उनके निधन से समाज सेवा के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने इस अवसर पर हार्दिक शोक प्रेषित करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभू से प्रार्थना की है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस असह्य वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0 प्र0 के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों का मास नवम्बर 1988 का कार्यक्रम

§1§ श्री पं0 केशवदेव जी शास्त्री ,महोपदेशकः 18 से 20 लालगंज जिला रायबरेली, 26 से 28 जमुनिया बाग फैजाबाद। §2§ श्री विशम्भरदत्तजी शास्त्री, उपदेशकः 1 अमरोहा, 11-12-13 लखनऊ, 15 से 18 रमपुरा जिला रामपुर,19-20 शाहबाद जिला रामपुर, 21 से 23 तिगरी मेला जिला मुरादाबाद। §3§ श्री स्वामी सुकर्मानन्दजी महाराज उपदेशकः 1 से 30 नवम्बर तक जम्मु कश्मीर। §4§ श्री पंडित महावीरजी शास्त्री उपदेशकः मास नवम्बर में चार उत्सवों का संकल्प, 500/- रुपये की सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत। §5§श्रीजीतनारायणजी शास्त्री. उपदेशक· 10 से 20 मिलक कैल बकरी परगना अमरोहा, 21 से 23 तिगरी मेला मुरादाबाद। §6§ श्री विजय पाल सिंह जी, उपदेशकः 15 से 18 रमपुरा जिला रामपुर, 19-20 शाहबाद जिला रामपुर, 20 से 23 मेला तिगरी, मुरादाबाद, 28-29-30 हफीजपुर पो0 नौगांवा परगना अमरोहा। §7§ श्री गजराजसिंहजी , भजनोपदेशक· 3 से 8 देवनगर कानपुर, 18 से 20 लालगंज रायबरेली, 22 से 24 बरेली चौबारी मेला, 27 से 30 गौंडा। §8§ श्री खेमचन्द्रजी , भजनोपदेशकः 1 से 10 फैजाबाद। §9§ श्री कमलदेवजी, भजनोपदेशकः 10 से 18 मिलक कैल बकरी परगना अमरोहा, 20 से 25 मेला ढाईघाट शाहजहांपुर 27 से 29 गौंडा। §10§ श्री ब्रहमानन्दजी आर्य, भजनोपदेशकः 1 से 20 शाहबाद जिला हरदोई, 22 से 25 माघ मेला इलाहाबाद, 27 से 30 शाहबाद जिला हरदोई। §11§ श्री उदयप्रकाशजी आर्य, भजनोपदेशक·10 से 20 फत्तेहपुर विश्नोई, पो0 खास रेलवे स्टेशन हकीमपुर जिला मुरादाबाद। §12§ श्री रामचन्द्रजी शर्मा, भजनोपदेशकः 14 से 20 दिल्ली, दरियागंज, 20 से 24 मेला दारानगर गंज, 28 अमरोहा। 29-30 हफीजपुर, पो0 नौगांवा, तहसील अमरोहा जिला मुरादाबाद। §13§ श्री सीतारामजी शर्मा, भजनोपदेशकः 10 से 20 मिलक कैल बकरी, परगना अमरोहा जिला मुरादाबाद, 21 से 24 चौबारी मेला बरेली। §14§ श्री सीतारामजी आर्य, हरदोईः बेहदर जिला हरदोई सचनकोट, उरईखेरा, रमूलाबाद, मटकरी, साकीपुर.हसनगंज, मुंशीगंज, गजफरनगर, जिला उन्नाव। §15§ श्री नेमप्रकाश जी आर्य, भजनोपदेशकः 15 से 18 रमपुरा, 19 शाहबाद, 20 लखनऊ, 22 से 25 इलाहाबाद। §16§ पं0 युगुलकिशोरजी आर्य, भजनोपदेशकः 1 से 13 शाहबाद हरदोई, 15 से 18 ईसानगर सीतापुर, 22 से 25 इलाहाबाद। §17§ श्री तेजपालसिंह आर्य, भजनोपदेशकः 15 से 18 रमपुरा, रामपुर, 19-20 शाहबाद, 21 से 23 मेला गढमुक्तेश्वर। §18§ श्री शिवनाथसिंह जी ,भजनोपदेशकः 10 से 15 फत्तेहपुर विश्नोई, 16 से 18 रमपुरा रामपुर, 19-20 शाहबाद, 21 से 23 तिगरी मेला। §19§ श्री योगेशदत्त आर्य, भजनोपदेशकः 1-अमरोहा, 2-3 महमूदाबाद, 4 से 6 इस्माईलपुर, 7-8 नायक नगला, 12 से 15 मुरादाबाद, 16 से 18 रमपुरा रामपुर, 19 से 23 तिगरी मेला। §20§ श्री विक्रमदेवजी आर्य, भजनोपदेशकः 1-2-3 महमूदाबाद, 4 से 6 इस्माईलपुर, 7-8 नायक नगला, 12 से 15 मण्ढी बांस, मुरादाबाद, 16 से 18 रमपुरा रामपुर, 19 से 23 तिगरी मेला। §21§ श्री ओमलालजी ढोलकवादकः 1 से 15 शाहबाद, हरदोई, 16 से 18 रमपुरा रामपुर, 19-20 शाहबाद, रामपुर 21 से 24 चौबारी मेला बरेली। §22§ श्री मनवीरसिंहजी , भजनोपदेशकः 1 से 23 श्री माननीय प्रधान जी के अन्तर्गत कार्यरत। §23§ श्री वेदप्रकाशजी आर्य, ढोलकवादकः10 से 18 मिलक कैल बकरी, परगना अमरोहा, 19 से 23 तिगरी मेला, 28 अमरोहा 29-30 हफीजपुर, पो0 नौगांवा परगना अमरोहा।

ध्यानाकर्षण

§1§ सभी उपदेशकों प्रचारकों को अपने पास व्यक्तिगत रूप से आये हुये कार्यक्रमों को स्वीकृति के लिये तुरन्त अमरोहा कार्यालय को भेज देना आवश्यक है।

§2§ मुद्रित अनर्तदेशीय पत्र आपूर्ति के उपरान्त प्रति सप्ताह कार्यालय अमरोहा को अवश्य भेजना चाहिये। इसी के आधार पर डायरी बिल पारित किये जायेगें।

§3§ कार्यक्रम पहुँचने पर यदि कोई सदेंह प्रतीत हो या कार्यक्रम स्थगित होने की कोई सूचना मिले तो उसे तुरन्त आपको अमरोहा कार्यालय को सूचना देना अत्यन्त आवश्यक है। सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत दो उत्सवों का कराना बैठक के अनुसार निश्चय किया गया है। आप 500/- रुपये की सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत उत्सवों का निश्चय कर इस कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी — हरिश्चन्द्र आर्य
मंत्री, सभा — अधिष्ठाता उपदेश विभाग,

खरसरा§बलिया§ - जिला आर्य उपसभा बलिया के मंत्री श्री इन्द्रदेव सिंह "साहित्यरत्न" के पौत्रों का मुंडन §चूड़ा कर्म§ संस्कार गत दिवस 20-10-88 को श्री रामनाथ चौरसिया,उप प्रधान, जिला आर्य उपसभा, बलिया के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

-आर्य समाज टोडरपुर जि0 हरदोई का वार्षिकोत्सव 10 व 11 अक्टूबर 88 को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। सभा प्रचारक पं0 ब्रहमानन्दार्य वानप्रस्थी, व नेम प्रकाश धनुर्धर व श्री युगुल किशोर भजनोपदेशक के प्रभावशाली उपदेश व भजन हुये। नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई। आसपास की ग्रामीण जनता पर आर्य समाज का बड़ा प्रभाव रहा।

- विगत दिवस हरसूद में वेद-प्रचार कार्यक्रम के अंतर्गत आर्य समाज, खंडवा में स्वामी सर्वानन्दजी सरस्वती के प्रवचन हुए जिसमें भारी संख्या में नगर वासियों ने भाग लेकर प्रवचन का लाभ लिया। स्वामीजी ने समाज में व्याप्त बुराईयों को छोड़ने हेतु प्रेरित किया।

गुरुकुल आश्रम बिठूर §कानपुर§ में वानप्रस्थ संस्कार

कानपुर । गुरुकुल आश्रम बिठूर में 14 नवम्बर §नेहरु जयन्ती§ 1988 को प्रातः 9 से 11 तक स्वामी गुरुकुलानन्द कचाहरी द्वारा वानप्रस्थ व संन्यास संस्कार सम्पन्न कराया गया।

- अहमदाबाद ता0 20-10-88 आर्य समाज, अहमदाबाद की ओर से विजया दशमी पर्व तथा पारिवारिक सत्संग का आयोजन आर्य समाज के अंतरंग सदस्य श्री हरिश्चन्द्र जी श्रीवास्तव के निवास स्थान बंगला नं0 9, गुंजन पार्क सो0 थलतेज, अहमदाबाद-54 में सहर्ष सम्पन्न हुआ।

- पिथौरागढ़ । 28 अक्टूबर ३ करवाचौथ३ 1988 को 26 वें फलाहार दिवस पर 54 वें वर्ष में प्रवेश करते हुये स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ३संस्थापक-गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर-कानपुर३ ने शरीरान्त होने पर नेत्र बैंक को नेत्रदान तथा मेडिकल कालेज को शवदान की इच्छा दुहराते हुये निम्नांकित संकल्प लियेः- ३1३ दो से अधिक गुरुकुलों की स्थापना ३2३ सौ से अधिक जनों को वानप्रस्थ व संन्यास की दीक्षा३3३ पाँच यज्ञ- सोलह संस्कार प्रचार ३4३ शाकाहार प्रचार व ३5३ भारत की एकता-अखण्डता-सम्पन्नता अभियान।

उक्त अवसर पर आर्य समाज ३दयानन्द बाल ३ मन्दिर में गंगादत्त जी जोशी की अध्यक्षता में आचार्य माधवानन्द जोशी के संयोजन में फलाहार-यज्ञ सम्पन्न किया गया । ३लक्ष्मीचन्द्र मित्तल३,मन्त्री

-विगत दिवस ग्राम आरुद ३पंधाना३ में वेद-प्रचार कार्यक्रम के अंतर्गत आर्य-समाज खण्डवा के तत्वावधान में मंदसौर से पधारे स्वामी सर्वानन्दजी सरस्वती का प्रवचन हुआ। जिसमें लगभग पूरे ग्राम के ग्राम -वासियों नें भाग लिया, स्वामी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को हटाने की बात कह कर लोगों को बीड़ी, तम्बाखू, सिगरेट, शराब आदि बुरी आदतों को छोड़ने की प्रेरणा दी। मंत्री

-आर्य समाज राधाकुण्ड गोण्डा ने दि0 9-11-88 को दीपावली के शुभावसर पर प्रातः लगभग 25-30 व्यक्तियों की उपस्थिति में श्रीमद्दयानन्द निर्वाण दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया मुख्य अतिथि के रूप में श्री दशरथ प्रसाद आर्य३जिला सेवा योजन अधिकारी गोण्डा३ ने परम पवित्र यज्ञोपवीत धारण कर बड़ी श्रद्धा से यजमान का आसन ग्रहण कर यज्ञ कार्य सम्पन्न किया।

-आर्य युवक एवं युवती दल, हरियाणा का तृतीय प्रान्तीय महासम्मेलन 29-30 अक्तूबर 1988 को डी0 ए0 वी0 हाई स्कूल, गुड़गांव ३हरियाणा३ में आर्य समाज के गौरव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष एवं डी0 ए0 वी0 प्रबन्धकर्त्री सभा के संगठन सचिव श्री बाबू दरबारी लाल जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

- आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 14 नवम्बर, 1988 से 20 नवम्बर 1988 तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया।

- दिनांक-10·9·88 से 12·9·88 के पूर्वाह्न समय तक वैदिक प्रचार कार्यक्रम आर्यसमाज मानपुरा ३प्राथमिक विद्यालय-मानपुरा के प्रांगण ३ में उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

- आर्य समाज सैक्टर 4 श्रद्धानन्द पुरम् ३अर्बन-एस्टेट३ गुड़गाँव में दिनांक-25·9·88 रविवार को वेद प्रचार सप्ताह समापन अवसर पर भारी जन समूह की उपस्थिति में पं0 मुल्कराज-शर्मा आर्य उपन्यास सम्राट की जन्म शताब्दी समारोह पूर्वक मनाई गई।



महान देशभक्त लाला लाजपत राय

महान देशभक्त लाला लाजपत राय जिनका बलिदान दिवस 17 नवम्बर को आर्य जगत में बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। वे ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित रहा। आर्य समाज को वे अपनी माता कहा करते थे। साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन करते हुए उन पर भयंकर लाठीचार्ज हुआ था और उसी के कारण देश का यह महान् सपूत 17 नवम्बर, 1928ई0, को हम से सदा-सदा के लिए बिछड़ गया। उनके अन्तिम शब्द थे- "मेरे शरीर पर पड़ी लाठी का एक-एक प्रहार अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील बनेगा"।

- आर्य समाज, मेस्टनरोड, कानपुर में महर्षि दयानन्द-सरस्वती का 105वां निर्वाण दिवस बुधवार, 9नवम्बर 1988 को मनाया गया। इस अवसर पर डा0 मुंशीराम जी शर्मा, डा0 बाल मुकुन्द जी गुप्त, प्रो0 लक्ष्मीधर जी शर्मा,डा0 विजयपाल-शास्त्री, श्री जय सिंह जी, डा0 चन्द्रकान्ता जी रोहतगी, श्री जयदेव जी मुद्दा, आदि के महर्षि जीवन पर प्रवचन हुये। दहेज प्रथा, जाति प्रथा, मधुपान आदि का विरोध किया गया।

वैदिक ज्ञान मेला

महिला आर्य समाज, उन्नाव के तत्वावधान में गतवर्षो की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 21 नवम्बन से 24 नवम्बर 1988 तक आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः व सायं यज्ञ,भजन व उपदेश होंगे तथा दिनांक 22 नवम्बर को, महिला सम्मेलन 23 नवम्बर को आर्यवीर सम्मेलन व जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की बैठक तथा 24 नवम्बर को बाल सम्मेलन के विशेष कार्यक्रम सायं 3 बजे से 5 बजे तक चलेंगे।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
कार्तिक शुक्ल 12
20,27 नवम्बर, रविवार, 1988 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम----"निर्णय के तट पर" प्रथम/तृतीय खण्ड
सम्पादक एवं संकलनकर्ता--पू॰ अमर स्वामी सरस्वती/
श्री लाजपतराय अग्रवाल
प्रकाशक--अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, 1058 विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद{उ0प्र0}
प्राप्ति स्थान--अमर स्वामी प्रकाशन विभाग,1058, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद{उ0प्र0} तथा भारत के सभी प्रमुख प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता ।
मूल्य--भारत में:- एक सौ पचास रुपया,
{प्रति विदेशों में:- पन्द्रह पौण्ड खण्ड}

आर्य समाज का उदय ही खण्डनमण्डनात्मक व्याख्यानों, प्रवचनों, एवं शास्त्रार्थों की अजेय परम्परा स्थापित करके सत्य का निर्णय करने हेतु हुआ है। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में न जाने कितने शास्त्रार्थ किए और बुराइयों का खण्डन तथ्यों के आधार पर बड़ी ही दृढ़ता के साथ किया। इधर कुछ समय से आर्य समाज में इस परम्परा का निरन्तर ह्रास हो रहा है जो आर्य समाज के भविष्य के लिए आशाजनक नहीं कहा जा सकता। वेद विरुद्ध मतों, सम्प्रदायों और पन्थों पर आर्य समाज की धाक खण्डन-मण्डन और शास्त्रार्थों द्वारा ही स्थापित हुई थी। आज प्रत्येक आर्य पुनः शास्त्रार्थकर्ता बने, असत्य के खंडन और सत्य के मंडन में उसे भरपूर सत्यपूरित सामग्री उपलब्ध हो इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस ग्रन्थ रत्न माला के प्रथम खण्ड में पच्चीस शास्त्रार्थों का संग्रह और साथ में अन्त में दिवंगत अमर स्वामी सरस्वती जी महाराज का जीवन वृतान्त भी दिया गया है और श्री पं0 बिहारी लाल जी का एक निबन्ध" शास्त्रार्थ कर्ताओं के लिये आवश्यकीय नियम व निर्देश" नाम से दिया गया है। तृतीय खण्ड में तीस शास्त्रार्थों का संग्रह है। इस प्रकार से आर्य समाज के लगभग सभी विषयों पर किये गये शास्त्रार्थों का अपूर्व बहुमूल्य संग्रह महाशय ला0 लाजपतराय जी अग्रवाल ने इन दोनों खण्डों में दिया है। यह संग्रहीत सब ही शास्त्रार्थ एक से एक बढ़-चढ़ कर विपुल शास्त्रों के प्रबल प्रमाणों से परिपूर्ण हैं। इन संग्रहीत शास्त्रार्थों में दिवंगत महाशय पं0 रामचन्द्र जी देहलवी और दिवंगतमहाशय पं0 गणपत जी शर्मा के शास्त्रार्थ तो सर्वोच्च कोटि के सर्वोत्तम हैं और अब तक के यह संग्रहीत सभी शास्त्रार्थ पठनीय तथा मननीय हैं। और महाशय पं0 बिहारीलाल जी शास्त्री का निबन्ध तो प्रत्येक आर्य समाजी को जो अपने आपको शास्त्रार्थ महारथी बनाना चाहता है हृदयंगम कर लेना चाहिये जिससे वह शास्त्रार्थ कला में निपुण हो सके।

मेरी सम्मति में इस अनूठी पुस्तक को पढ़ लेने पर प्रत्येक मानव हृदय में वैदिक धर्म के प्रति अमिट आस्था जागृत होगी और वह असत्य के खण्डन तथा सत्य के मण्डन में अजेय चट्टान की भांति खड़े होकर किसी भी स्थिति का सफलता पूर्वक सामना करने में पूर्णतया सफल हो सकेगा। प्रत्येक आर्य आर्य समाज आर्य शिक्षण संस्था, पुस्तकालय, उपदेशक,प्रचारक आदि सभी वैदिक वर्ग के लोगों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए, अपने पास रखना चाहिए ताकि उसकी शास्त्रार्थ पारंगतता सतत बनी रहे

आचार्य इन्द्रदेव पाठक एम0 ए0 दर्शनवाचस्पति

क्रान्तिकारी भाई परमानन्द का जन्मोत्सव

नगर आर्य समाज रकाबगंज लखनऊ में दिनांक 6-11-88 को यज्ञ का आयोजन हुआ तदुपरान्त भाई परमानन्द जी क्रान्तिकारी के जन्म दिवस को सोल्लास मनाया गया तथा विभिन्न विद्वानों ने पधार कर उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित की।

- दि0 7 नवम्बर 88 को श्री महावीर प्रसाद आर्य {सहायक अध्यापक} ग्राम सेरवा पो0 पुरवावाँ{हरदोई}के सुपुत्र श्री देवेन्द्र कुमार आर्य का मुंडन संस्कार वैदिक रीति से किया गया।

रिक्शा चालक

मथुरा के 77 वर्षीय पंडित कैलाशनाथ विगत दो दशक से रिक्शा चलाते हैं। वे फैजाबाद के रहने वाले हैं कैलाशनाथ ने गांधी जी की आवाज पर खादी पहनी। उसी समय स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित "सत्यार्थ प्रकाश" ने उनके जीवन की धारा बदल दी। उन्हें वेद पढ़ने की प्रेरणा मिली। तभी से कैलाशनाथ वेदों के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं। वेदों के ज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगी संस्था आर्य समाज के वे सदस्य हैं। 24 रुपये सालाना का चंदा भी देते हैं। लेकिन इतने बड़े ज्ञाता को आज रिक्शा चलाना पड़ रहा है। इसके बावजूद यदि कभी बूढ़ा शरीर खर्च नहीं जुटा पाता तो एक हलवाई की दुकान की चौकीदारी भी करनी पड़ती है।

मथुरा में पिछले दिनों वेद मंत्रों से वर्षा बुलाने के प्रयोग पर केन्द्रीय सरकार ने हजारों रुपए खर्च किए लेकिन इस गोष्ठी में नवललितियों ने यह जानने की जरूरत नहीं समझी की वेदों का ज्ञाता रिक्शा चलाने के लिए क्यों मजबूर है? इन सवालों के जवाब में धार्मिक ठेकेदार भी मौन धारण किए हुए हैं। {नव भारत}

सूचना

सभा के वृहदधिवेशन से सम्बन्धित कार्यो में व्यस्तता के कारण दिनांक 20 तथा 27 नवम्बर का अंक एक साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

[illegible] 2241/97 — योजना पत्र सं0 7/28-2-85

मार्गशीर्ष कृष्ण 11, रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक 4 सितम्बर 1988



उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् ।
धिया विप्रो अजायत ।।

साम0 2/3/9

तपस्वी लोग एकान्त [illegible] और [illegible] नदी संगमों पर ध्यान [illegible] करके शक्तिमान होते हैं और सच्चे तपस्वी ब्राह्मण बनते हैं।

प्रधान सम्पादक [illegible]

परमात्मा की अमृत वाणी -

ओ मानव, मन को शुभ संकल्प वाला बना

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरंगमम् ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

जागते हुए जो मन बहुत दूर चला जाता है, वैसे ही सोते हुए भी दूर-दूर भटकता रहता है। अर्थात् न सोते चैन, न जागते चैन। ऐसा यह मन चंचल और विकल है।

काम, क्रोध, लोभ, मद, ईर्ष्या, अभिमान आदि भयंकर विकार मन को निरन्तर आंदोलित करते रहते हैं। मैं (मेरी आत्मा) अकेली है। कैसे इन भयंकर आसुरी विचारों की विशाल सेना से पार पा सकता हूँ। हे ज्योतियों के ज्योतिस्वरूप भगवन् मेरे इस मन को शिवसंकल्प वाला बनाओ। इसके अन्तराल में शुभ विचारों की अनवरत धारा बहा दो।

"स्थिरं मनः चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्" ।

हे भगवन् तुम्हारी महान अनुकम्पा से और अपनी साधना से यदि मैं अपने मन को स्थिर कर सकूं तो मैं अकेला ही बहुतों से लड़ने को पर्याप्त हूँ। मैं विजयी हूँ, मैं मोक्ष तक पहुँच सकता हूँ। संसार के बन्धनों को तोड़ सकता हूँ -

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"

मन इन्द्रियों का राजा है, इन्द्रियां मन के सहयोग से कार्यरत होती हैं। आँख देखती है किन्तु मन के संयोग से। कान सुनता है किन्तु मन के सहयोग से।

"यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते"

अर्थात् जिसके बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता वह मन बड़ा चंचल है। गीता में अर्जुन ने कहा है -

"चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्"

हे कृष्ण, यह मन बड़ा चंचल है इसको वश में करना बड़ा दुष्कर है। इसलिए परमार्थ का साधक [illegible] के पथ पर आरूढ़ होने से पूर्व अभ्यास और प्राणायाम से, पवित्र ज्ञान और सत्संग से [illegible] भक्ति से सर्वप्रथम अपने मन को वशीभूत करने का प्रयत्न करता है और यहीं से उसकी साधना का प्रारम्भ होता है।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
>
> - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

आर्यमित्र

लखनऊ-मार्गशीर्ष कृष्ण।।, सवत् 2045, रविवार 4 दिसम्बर 1988

दयानन्दाब्द 164, सृष्टि सवत् 197299089

और अब · .....

आर्यकरण की त्रिसूत्री योजना

सभा का बृहदाधिवेशन अपनी मधुर स्मृतियों के साथ सम्पन्न हो गया। प्रदेश की आर्य जनता ने प्रदेश के आर्यकरण का भार विश्वास और आशा के साथ सन्त हृदय **श्री पं0 इन्द्रराज** और उनके सहयोगियों के बलिष्ठ कन्धों पर पुन सौंप दिया है। हमारी सभा इस विशाल प्रदेश के आर्यों की शिरोमणि सस्था है। समय की पुकार है कि प्रदेश के समस्त आर्यजन आपसी मतभेद भुलाकर इसके कार्यकलापों में अपना सहयोग दें और इसे प्रदेश की ही नहीं अपितु विश्व की सर्वोच्च धार्मिक सस्था के रूप में विकसित करें। प्रभु की कृपा से इसके पास साधनों की कमी नहीं है, आवश्यकता है योजनाबद्ध होकर कार्य करने की। जनपद का प्रतिनिधित्व करने वाले आर्यों पर जनपद के आर्यकरण का महान उत्तरदायित्व है। सभा के उचित मार्गनिर्देशन में प्रदेश का प्रत्येक आर्य दयानन्द का वीर सैनिक बनकर घर-घर में वेदों का नाद गुँजा दे - तभी हम ऋषिवर्य के ऋण से सच्चे अर्थों में मुक्त हो सकते है। हम केवल औपचारिकताएं निभाने के लिए बैठकें न करें वरन् सभा निर्देशित योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु बहुमुखी रूपरेखा तैयार कर उनके सचालन का उत्तरदायित्व ग्रहण करें।

सर्वप्रथम हम प्राथमिकता के आधार पर आर्यकरण की दिशा में प्रथम त्रिसूत्रीय योजना प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें विश्वास है इनके क्रियान्वयन से नि सन्देह हम आगे बढेंगे और इस दिशा के विविध आयामों को मूर्तरूप देने में समर्थ हो सकेंगे।

(1) सस्कृत भाषा का उत्थान
(2) गोरक्षा
(3) उपदेशक सस्थान की स्थापना

सस्कृत का उत्थान - वेदों के मूल तक पहुँचने के लिए हमें सस्कृत भाषा का माध्यम स्वीकारना होगा। महर्षि ने सस्कृत के प्रति अपना अनुराग प्रकट करते हुए पूना प्रवचन में कहा था - सस्कृत भाषा के सदृश, मृदु, मधुर और व्यापक सर्व भाषाओं की माता, ऐसी कौन सी दूसरी भाषा है"। शासन ने अपनी भाषा नीति में सस्कृत को उपेक्षित कर दिया है। उसे ए-कोर्स में हिन्दी के साथ मिला दिया है और हिन्दी के 100 अकों में 20 अक कम करके सस्कृत के लिए रख दिए है। इस प्रकार सस्कृत के साथ-साथ हिन्दी को भी कमजोर किया जा रहा है। जो छात्र 'ए" कोर्स नहीं लेंगे, वे अतिरिक्त भाषा के रूप में सस्कृत पढ सकते हैं किन्तु अनिवार्य रूप से तीसरी भाषा के रूप में नहीं। इस विषय में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में 'सस्कृत रक्षा समिति' गठित की गई है जो अपने स्तर से आन्दोलनरत है। हमारा प्राणपण से सहयोग उसके साथ है किन्तु इसके साथ ही हमारा कर्तव्य है कि प्रत्येक आर्य परिवार इसे धर्म भाषा समझ कर इसका कम से कम प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेवे। सभा को यह योजना कार्यान्वित करने हेतु आवश्यक कार्यक्रम बनाना होगा तथा समस्त आर्यसमाजों को निर्देशित करना होगा।

गोरक्षा - गाय की हत्या वेद विरुद्ध है। "अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि" कहकर वेद ने पशु मात्र की रक्षा करना धर्म बताया है। यह कार्य भी गोवध बन्दी आन्दोलन मात्र से पूर्ण नहीं होने का। इसके लिए प्रत्येक आर्य को सकारात्मक पग उठाना होगा। आज घर-घर में वैदिक विवाह हो रहे हैं, गोदान की परम्परा निभाई जाती है जो प्रवंचनामात्र ही कही जाएगी। यदि गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले नव दम्पति एक गाय अपने घर पर न पाल सके। समाज में ऐसे अनेकों धनाढ्य पुरुष हैं जो एक दो नहीं अनेकों गायें अपने घर पर पाल सकते हैं। समाज मन्दिर भी सामूहिक गोशालाएं खोल सकते हैं। सभा को इसे क्रियान्वित करने हेतु आवश्यक कदम उठाना होगा।

उपदेशक संस्थान - यह दुख की बात है कि सभा के पास अपना कोई उपदेशक विद्यालय नहीं है जहाँ आर्यसिद्धान्तों की शिक्षा दीक्षा से समन्वित उपदेशक उपदेशिकाएं तैयार होकर प्रचारार्थ विश्व में भ्रमण कर सकें। सत्य सिद्धान्तों की शिक्षा न मिलने के कारण कभी-कभी मनमाने ढग से इस क्षेत्र में आये हुए प्रचारक सिद्धान्तहीन प्रचार में लिप्त होते देखे गये हैं। यदि हम गहन दृष्टि से अवलोकन करें तो विदित होगा कि बौद्ध, इस्लाम या ईसाइ न के धर्मप्रचार के लिए अनेकों केन्द्र शासन तथा जनता की ओर से खुले हुए थे और आज भी खुले हुए हैं, जहाँ से दीक्षित भिक्षु-भिक्षुणियाँ, मौलवी, मुल्ले, ईसाई प्रचारक प्रचारिकाएं जगह-जगह घूमकर अपने धर्म का प्रचार कर रहे हैं। यह सत्य है कि उन देशों का राजधर्म भी वही होने के कारण उन्हें शासन का पूरा-पूरा सहयोग मिल रहा है जबकि हमारे यहाँ की स्थिति विपरीत है। हमारे मत में एक विशाल **"आर्य उपदेशक संस्थान"** की स्थापना से इस अभाव की पूर्ति हो सकेगी और सभा द्वारा किए जा रहे प्रचार के क्षेत्र मे आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

× ×

हमारा तीसरा नियम

श्री सोहन लाल शारदा,
शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान।

महर्षि के प्रवचनों से प्रभावित होकर राजकोट के शिक्षित समुदाय ने एक सभा आर्य समाज के नाम से स्थापित कर 26 नियम पास भी किए। मगर 6 मास के भीतर ही यहा का समाज बन्द हो गया। फिर जब सन् 1875 में विधिवत बम्बई में आर्य समाज की स्थापना हो गई तब 26 के बजाय 28 नियम बने। महर्षि प्रचार करते 1877 में लाहौर पहुँच कर वहा आर्यसमाज स्थापित किया तब इन 28 नियमों को सशोधित कर सभी सदस्यों की राय लेकर विचार विमर्श के बाद 10 नियम जो वर्तमान में चालू हैं स्वीकृत हुये।

इन नियमों के निर्माण की विचार धारा चल रही थी तब ब्रह्म समाजियों द्वारा यह प्रस्ताव आया कि तीसरा नियम न रक्खें तो हम भी आपके समाज में सम्मिलित हो जाय। परन्तु महर्षि ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसी समय राय बहादुर मूलराज ने जो ऋषि भक्तों में से थे। प्रस्ताव किया कि महाराज इस तीसरे नियम में जो वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा गया है उसमें सत्य शब्द निकाल कर वेद विद्याओं का पुस्तक है ऐसा वाक्य बना दिया जाय तो यह नियम बहुत व्यापी हो जायेगा। फिर इसको मानने में किसी को कुछ भी हिचक न होगी।" (श्री मद्दयानन्द प्रकाश) महर्षि दयानन्द सदा सर्वदा जो भी सत्य है उसेही दृढ़ता पूर्वक स्वीकारते थे। असत्य बातों का खण्डन बड़ी ही तीव्रता से करते थे। तभी तो उन्होंने कहा है कि यदि मुझे तोप के गोलों के सामने खड़ा भी करके उडा भी देवें तो भी मैं तो सत्य ही कहूगा। महर्षि ने तीसरे नियम को पास कर दिया और चालू भी कर दिया। जो सन् 1920 तक की सभी पुस्तकों में मिलता है। वहा है पाठ "वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

यद्यपि महर्षि यह जानते थे पूर्ण रूपण वेदों में सभी विद्याओं का मूल तो है। मगर सभी सत्य विद्यायें पूर्णरूप से नहीं है। इन्हें पढने-जानने-समझने के लिए हमें आर्यों को क्रमश वर्णोच्चारण शिक्षा से लेकर साधारण जनों को वेदाग प्रकाश और विशेष अध्ययन करने वालों को जो निर्देश वेदारम्भ संस्कार में कहे गये हैं जिसका संक्षेप से वर्णन सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कृत वाक्य प्रबोध में मिलता है, पढना-पढाना पड़ेगा। तभी वेदों में क्या है सभी सत्य विद्याओं का मूल है या सभी सत्य विद्याओं का पूर्णरूपण संक्षेप से वर्णन है। जाना जा सकेगा।

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द

ले0- कु0 तनुजा शुक्ला,
इन्दौर'

वैदिक साहित्य में सम्पूर्ण मनुष्य जाति को बौद्धिक स्तर पर तीन भागों में विभाजित किया है। जिस व्यक्ति की प्रशंसा के गीत सभी व्यक्ति गावें, वह "देव" कहलाता है। यह तो स्वयं सिद्ध है कि मनुष्य जन्म मिलना अनेक पूर्व जन्मों के सुफल का परिणाम ही है। मनुष्य योनि को भोग योनि और कर्मयोनि भी कहा गया है। इसी मनुष्य योनि में व्यक्ति पर निर्भर है कि अपने वर्तमान कार्यकलापों के द्वारा अपने को देव बनाये या दानव।

"देवता" की स्पष्ट व्याख्या यह है कि सेवा के समय जिसकी पलकें सदैव नीची रहें, जो अभिमान से कोसों दूर रहे। यह भी कहा गया है कि देवता "अमृत भोगी" होते हैं और वे सदैव स्वर्ग में रहते हैं। क्या यह सत्य नहीं है कि जो विष को भी अमृत समान पान कर जाते हैं, उन्हें ही देव या महादेव कहा जाता है। इस युग के महान आस्तिक और क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द को क्रूर मनोवृत्ति के लोगों द्वारा एक बार नहीं अपितु 13 बार विष दिया गया है। कहते हैं, शंकर ने तो केवल एक ही बार हलाहल पिया था, परन्तु वाह रे दयानन्द, तूने मनुष्यों के हित के लिए इससे भी बढ़कर 13 बार विष पान कर "महादेव" की उपाधि को सार्थक कर दिया।

वेद में नृचक्षसो अनिमिषयन्तो अर्हणा ..... स्वस्तये कह कर मानव को महामानव बनने की प्रेरणा दी गई है, जो मानव सदैव मन में वय राष्ट्रे जागृयाम: पुरोहित: के अनुसार दूसरों के कल्याण की कामना करता रहे ... स्वर्गा

समाज और राष्ट्रों को उत्तिष्ठत् जागृत प्राप्य वरान्नि बोधत..... कहकर चैतन्यता प्रदान करता हो, क्या उसके देवत्व में किसी को भी सन्देह हो सकता है? यही कारण था कि महर्षि दयानन्द मानव जाति की वर्तमान दुर्दशा देखकर उसे दूर करने के लिए उसे रात्रि भर जागकर चिन्तन किया करते थे। क्या इतने प्रकट सत्य पर दयानन्द "देव" कोटि में नहीं आते? जो निरन्तर जागता रहे, जिसे दुनिया सोते हुए कभी न देखे, जो नित्य जागृत रहे, उसे ही तो देवता कहते हैं। इसीलिए उपनिषदकारों ने ठीक ही कहा है कि उसके ही गीत समाज सदैव गाता है और परमात्मा उसे अपने के लिए अपने करूणापूर्ण हाथ फैलाता है।

मनुष्यों के कार्यकलापों की विशद चर्चा यजुर्वेद के राष्ट्रीय प्रार्थना में की गई है। उसमें समाज के बुद्धिजीवी, बलजीवी, वित्तजीवी और श्रमजीवी से विविध अपेक्षाएं की गई हैं। परन्तु उसमें इस तथ्य का भी आग्रह झलकता है कि विश्व में अधिक वैश्य और शूद्रों की रचना मत करो। यह दोनों वर्ग भौतिक सम्पदा और भोगवाद को अधिक प्रोत्साहित करते हैं। अधिक सम्पदा युद्धों को जन्म देती है। यही सम्पदा "देवत्व" के सिंहासन से नीचे गिरा देती है। इसलिए ब्राह्मण बनो, वेद को अपनाओ और देवत्व प्राप्त करो, यह सन्देश वैदिक मन्त्र बार-बार कह रहा है।

देवता बनने के लिए अमृत पान करो। प्रकृति अमृत की वर्षा प्रातःकाल ऊषा के पूर्व करती है। यही समय देवत्व प्राप्त करने का है। यही काल भक्ति से भक्ति प्राप्त करने का है। ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए ब्रह्म ग्रन्थि, ब्रह्मरंध्र और ब्राह्म मुहूर्त में उठो और इसे प्राप्त करने का प्रयत्न करो। इसीलिए तो कवि ने कहा है - अब रैन कहाँ जो सोवत है?

हाँ, तो अमृत क्या है? अमृत परमात्मा का प्यार है और मृत्यु उसका भोजन। जो भजन छोड़कर भोजन में ही रमता रहे, उस पेट को अमृत कैसे मिल सकता है। परन्तु जो मनुष्यों को इस मृत्यु से बचाने के लिए स्वयं मृत्युंजेय बनकर मृत्यु को खा जाते हैं, उन्हें ही देवता कहा जाना है। देव दयानन्द मृत्युंजेय थे। उन्होंने काल को ग्रास बना लिया था। उन्होंने काल को पराजित कर दिया था। इसलिए वे कालों के काल, महाकाल कहलाने के अधिकारी बने हैं।

जहाँ तक स्वर्ग का उल्लेख है, यह कोई स्थान विशेष नहीं अपितु परिस्थिति विशेष का नाम है। संस्कृत साहित्य में नारद, वीणा और आकाश मार्ग में पर्यटन करने वाला बादल को बहुत वर्णन आता है। अत्यन्त दुःख के साथ कहा जा सकता है कि नारद के समान महान ज्ञानी और ज्ञान संचारक व्यक्ति का कुछ लोग "लड़ाऊ भिड़ाऊ" या चुगलखोर कहकर अपने को ... करते हैं। वस्तुतः नारद देवता थे। वे वैदिक ज्ञान की वीणा बजाते हुए लोक-लोकान्तरों में वैदिक ज्ञान की वर्षा करते रहते थे। ऐसे महान ज्ञानी "नारद" के सही व्यक्तित्व को समझने की नितान्त आवश्यकता है। नारद जी को ब्रह्मा का शिष्य कहते हैं। ब्रह्मा चारों वेदों का बखान करने वाला है। वह चारों दिशाओं में चार व्यक्तियों के समकक्ष शक्तिवान बनकर वेदों का प्रचार करता है। ब्रह्मा का शिष्य नारद भी वेदों की वीणा बजाकर उसका प्रचारक है। इस प्रकार ब्रह्मा के द्वारा समाज के चारों वर्ण (चार मुख) से वेद को स्वीकार करने की घोषणा कर रहे हैं।

आधुनिक युग में वेदों - चारों वेदों का प्रचारक दयानन्द क्या ब्रह्मा से कम कोटि के मनुष्य कहे जा सकते हैं? वे नारद के समान सर्वत्र वैदिक ज्ञान फैलाने के लिए दृढ़ संकल्प थे। इन चारों विशेषताओं के कारण ही दयानन्द "देवता" कहलाते हैं। परन्तु दयानन्द के समान देवता, नहीं-नहीं - महादेव कई शताब्दियों के बाद ही इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

दयानन्द वेदों का उजाला फैलाने के लिए आए थे। उजाला उसे कहते हैं, जो जलने के बाद भी जलता रहे। जो समाज में प्रकाश फैलाने के लिए सदैव जलता रहे, जिसका सन्देश उसके जल जाने पर भी सदैव प्रेरणा देता रहे, उसे ही देव और महादेव कहते हैं। ऐसे महादेव ही "अमर" बनकर मानव जाति का हित करते हैं। दयानन्द कुन्दन के समान थे। घिसने-पीटने-छेदने और गर्म करने पर ही सोना कुन्दन बनता है। इसी प्रकार कुन्दन बनकर दयानन्द ने जाति को जीवित किया। इसीलिए कवि ने ठीक ही कहा है - दयानन्द देव वेदों का उजाला लेकर आये थे।

कालान्तर में जब 1908 में सार्व देशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा की स्थापना होकर 1914 में विधिवत रजिस्ट्री हो गई, तब अधिक प्रचार के लिए और साथ ही साथ परोपकारिणी सभा भी सन 1920 के बाद एक प्रक्षिप्त ही कहना चाहिए महर्षि के बनाए हुये नियमों में सब शब्द और बढ़ा दिया। मोहमें आकर जो अब चल रहा है, वह पाठ है" वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है"। यह सब शब्द बढ़ जाने से आर्यो को एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि वेद की पुस्तकें सभी साधन सम्पन्न जनों ने खरीद कर अलमारियों में रक्खी जाने लगीं। मन में आया जभी या नित्य नियमित निरन्तर एक दो मंत्र का क्रमशः अर्थ विचार पूर्वक पढ़ना-पढ़ाना होने लगा। मगर यह स्थिति थोड़े काल तक ही रहती देखी गई। जब अर्थ समझ में नहीं बैठा गहन विषय आया तो शंकायें पूछें किये। शंका समाधान आर्य समाज से उठता चला गया।

अब हम वार्षिक उत्सव मनाते हैं। तीन दिन सम्पूर्ण वर्ष भर का कार्यक्रम बस फिर गहरी नींद। फिर प्रचार हो भी कैसे। अतः हमें प्रत्येक समाजों में स्त्री पाठशालायें चलानी होंगी। जिसमें नई पीढ़ी को आर्य बनाने के लिए प्रथम नियम 10 व्याख्या सहित जैसे सभी सत्य विद्याओं में दोनों प्रकार की विद्यायें परा और अपरा आ गई फिर आगे यहां पदार्थ विद्या किसे कहते हैं। इसी प्रकार तीसरे नियम को भी समझाना होगा कि वेद में सभी सत्य सत्य विद्याओं का मूल तो विद्यमान है। मगर पूर्णरूप से विद्यायें नहीं हैं। जैसे राजनीति के तीन सभाओं का जो राजार्य, विद्यार्य, धर्मार्य सभा का उल्लेख तो है। मगर उनके कार्य-कलापों शासन सम्बन्धी व्यवस्था पर गम्भीर विचार तो मनुस्मृति महाभारत के शान्ति पर्वान्तर्गत तथा शुक्र, विदुर, चाणक्य नीतियों की पुस्तकों में है। जिन्हें पढ़ना पड़ेगा। और इन्हें पढ़ने समझने के लिए हमें महर्षि के मार्ग पर ही चलना होगा यानि प्रथम वर्णोच्चारणशिक्षा संस्कृत वाक्य प्रबोध सन्धि विषय आदि आदि। अतः विद्वान जन पुनः विचार देने की कृपा करें कि महर्षि के द्वारा स्वीकृत तीसरा नियम वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है ज्यादा व्यापक कर्तव्य निर्देशक है या वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मान अकर्मण्य होकर बैठ शनैः शनैः अधो मार्ग की ओर जाना।

सर्वजन कल्याणी वैदिक सम्पत्ति

श्री सोहन लाल अग्रवाल,
एडवोकेट, जबलपुर।

परमदेव परमात्मा ने सृष्टि की रचना प्राणीमात्र हाथी से लेकर च्यूटी, नर-नारी सभी के कर्मभोग तथा कल्याण के निमित्त की है। प्राणी मूलतः दो भागों में बंटे हैं- नरनारी एक भाग में आते हैं इतर प्राणी दूसरे भाग में आते हैं। द्वितीय भाग भोग योनि कहलाता है और नरनारी कर्मयोनि। मनुष्येत्तर प्राणी अपने कर्मों के भोग के लिए आते हैं- उनका ज्ञान प्रभु-प्रदत्त स्वाभाविक है- मनुष्यों का ज्ञान स्वाभाविक तथा नैमित्तिक है। मनुष्य नैमित्तिक ज्ञान माता-पिता गुरु तथा धर्मग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त करते हैं- मनुष्येत्तर प्राणी निद्रा, भय, मैथुन के अतिरिक्त आकाश में उड़ना तथा जल में तैरने के अतिरिक्त कुछ नहीं जान सकते मनुष्य के स्वाभाविक धर्म- आहार निद्रा-भय, मैथुन स्वाभाविक तो है ही परन्तु वह आकाश में उड़ना और जल में तैरना माता-पिता, गुरु इत्यादि से सीखता है। मनुष्येत्तर प्राणियों का ज्ञान घट बढ़ नहीं सकता उससे उन्नति कोई भी नहीं कर सकता। जंगली मनुष्यों में भी स्वाभाविक ज्ञान है- उससे वे अपनी उन्नति नहीं कर सकते और जो नैमित्तिक ज्ञान है वही उन्नति का साधक है।

माता-पिता जो ज्ञान अपनी सन्तान को देते हैं वह उनने अपने माता-पिता तथा गुरु जनों से पाया था पूर्व के माता-पिता तथा गुरुजनों ने अपने पूर्व के माता-पिता तथा गुरुजनों से पाया था इस प्रकार पीछे चलते-चलते सबसे प्रथम ज्ञानदाता परमदेव परमात्मा निश्चित होता है।

स एव पूर्वेषामपि गुरु.कालेनानवच्छेदात् ।। पातंजलयोग शास्त्र 1·1-26·

पूर्वोक्त ईश्वर पूर्वजों का भी गुरु है काल से उसका बाध न होने के कारण विश्व के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ज्ञान का भण्डार वेद ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद के रूप में उपस्थित है। इन चारों वेदों में प्रभूत मात्रा में ऐसी श्रुतियाँ हैं जो इनकी उत्पत्ति परमदेव परमात्मा से बताती है-

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋच· सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा-सिजज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ।। ।।

यज - अ031, मं·7 ।। अथर्व 19-6-13 ।।
ऋ-)·

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वा डिरसो मुखम्
स्कम्भतं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ।। 2।।

अथर्व· कां· 10,सू· 7/50

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्व सितमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गि·रसः §3§

बृहदारण्यको-अ-2-ब्रा·4 कं· 10·
अपूर्वेणेषिता वाचस्ता वदन्ति यथायथम्।
वदन्तीर्यत्रगच्छन्ति तदाहुर्ब्राम्हणं महत् ।4।।

अथर्व 1·-8-33·

प्रथम ईश्वर को नमस्कार और प्रार्थना करके वेदों की उत्पत्ति का विषय लिखा जाता है, कि वेद किसने उत्पन्न किये हैं।

§1§ जिसका कभी नाश नहीं होता, जो सुखस्वरूप और सबको सुख देने वाला इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरुष जो सब जगह परिपूर्ण हो रहा है जो सब मनुष्यों की उपासना के योग्य इष्ट देव और सब सामर्थ्य से युक्त है उसी पर-ब्रह्म से ऋग्वेद यजुः सामवेद और अथर्व में चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। ये सब मनुष्यों के ग्रहण करने योग्य हैं इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चले। वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं, मनुष्य से नहीं।

§2§ जो सर्व शक्तिमान् परमेश्वर है उसी से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार संयालंकार से वेदों की उत्पत्ति प्रकाश ईश्वर करता है - अथर्ववेद उसके मुख के तुल्य है और सामवेद लोमों के समान है। चारों वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं, सो कौन सा देव है उसको तुम मुझसे कहो? इस प्रश्न का उत्तर यह है- जो,सब जगत् का धारणकर्ता परमेश्वर है,उसका नाम स्कम्भ है, उसी को तुम वेदों का कर्ता जानो, और यह भी जानो कि उसको छोड़कर मनुष्यों को उपासना करने योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं क्योंकि ऐसा कौन सा अभागा मनुष्य है जो वेदों के कर्ता सर्वशक्तिमान परमेश्वर को छोड़कर दूसरे को परमेश्वर मानकर उपासना करे। वेद भ्रष्ट व्यक्ति अन्य देवी देवताओं और पैगम्बरों की पूजा करते हैं।

§3§ याज्ञवल्क्य जो महान ऋषि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं - हे मैत्रेयी जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है उससे ही ऋक, यजुः साम अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर आकर भीतर की ओर जाता है, इसी प्रकार से सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर सदा बने रहते हैं बीजांकुरवत्। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्षरूप होकर फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इनको नित्य ही जानना।

§4§ महान अपूर्व पुरुष प्रेरित वेद वाणियां सब विषय को बताती हुई ठीक प्रकार से उसी स्थान को जाती हैं जिसको कि महत् ब्रह्म के नाम से पुकारा जाता है।

वेदों की उत्पत्ति को 1,96,08,53,088 वर्ष हो चुके है ये गणना महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ऋगवेद आदि भाष्य भूमिका के अनुसार है बाकी धर्मग्रन्थ अभी 5 हजार वर्ष के भीतर के ही हैं। मनुष्य रचित हैं और अनर्थकारी हैं। चारों वेद मूलग्रन्थ होने से और ईश्वरीय शक्ति द्वारा प्रकट किये जाने से स्वत प्रमाण्य हैं।

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्।।
कपिल मुनि का सांख्य सूत्र 51·

परमेश्वर की निज अर्थात स्वाभाविक जो विद्याशक्ति है, उससे प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतः प्रामाण्य मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिये। महर्षि कणाद और कृष्णद्वैपायन के भी ऐसे ही वचन हैं।

स्वयं ईश्वर ने अपने प्रकाशित वेद और अपने रूप के बारे में वेद में कहा है---- "स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुध्दमपापविध्दम्। कविर्मनीषी परिभू स्वयंभूर्याथा तथ्यतो अर्थान व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। यजु 40 8·।।

जो परमेश्वर सर्वव्यापक आदि विशेषण युक्त है वो सब जगह में परिपूर्ण हो रहा है। वह जगत का रचयिता अनन्त विद्याबल से युक्त है। वह स्थूल सूक्ष्म और कारण इन तीनों शरीरों के संयोग से रहित है, अर्थात वह कभी जन्म नहीं लेता, जिसमें एक प्रमाणु भी नहीं घुस सकता, वह सर्वदा छेदरहित है। वह नाड़ियों के बन्धन से रहित है। वह अविद्या अज्ञानादि सब क्लेश और सब क्रोधों से मुक्त है, वह पापमुक्त वा पाप करने वाला कभी नहीं होता जो सब का जानने वाला है, सबका अर्न्तयामी है, भूत भविष्यत और वर्तमान तीनो कालों के व्यवहार को यथावत जानता है। वह सभी के ऊपर विराजमान हो रहा है-वह कभी उत्पन्न नहीं होता, उसका कारण भी कोई नहीं किन्तु वह सभी का कारण, अनादि और अनन्त है, इससे वही सबका माता पिता है और अपने ही सत्य सामर्थ्य से सदा वर्तमान रहता है। इन लक्षणों से युक्त जो ईश्वर है उसने सृष्टि की आदि में अपनी प्रजा को जो कि उसके सामर्थ्य से सदा वर्तमान रहती है, उसके सब सुखों के लिए सत्य अर्थों का उपदेश किया है। इसी प्रकार जब जब परमेश्वर सृष्टि को रचता है, तब-तब प्रजा के हित के लिए सृष्टि के आदि में सब विषयों से युक्त वेदों का उपदेश करता है और जब-जब प्रलय होता है तब-तब वेद उसके ज्ञान में सदा बने रहते हैं। इससे इनको सदैव नित्य मानना चाहिये।

वेद सर्व जनकल्याणकारी है

यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय स्वाय च चारणाय च ।
यजुः 26-2।।·

ईश्वर उपदेश देता है - हे मनुष्यो । जैसे मैने ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और अपने उत्तम लक्षण वाले समीप प्राप्त अन्त्यज और सब मनुष्यों के लिए इस संसार में इस कल्याण करने वाली चार वेद रूपी वाणी का सब ओर उपदेश करता हूं वैसे आप लोग भी उपदेश करें जैसे दान करने वाले पुरूष की तथा विद्वानों की दक्षिणा दान के लिए प्रिय होता हूं तथा मेरी यह कामना बढ़ती है। मुझे परोक्ष सुख प्राप्त होता है, वैसे आप लोग भी हो, वह परोक्ष सुख आप लोगों को भी प्राप्त होवे।

वेदों की महत्ता संक्षेप में

§1§ वेद सर्वतन्त्र सिद्वान्त अथवा सार्वभौम नियमों का प्रतिपादन करते हैं:

मित्रस्यामा चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।। यजु 36 18·

प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से मैं, हम, तुम, आप तथा वे सभी देखें।

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूतविजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ।। यजु 40·8।।

जिस अवस्था में एकता को देखने वाले विज्ञानी का आत्मा सर्वभूत हो गया है, वहाँ उस अवस्था में कौन मोह, क्या मोह, कैसा मोह? कौन शोक, क्या शोक, कैसा शोक ? कोई बैर विरोध, द्वेष नहीं सभी से मित्रता है। वहाँ लड़ाई भिड़ाई क्यों होगी। ऐसी शिक्षा वेदेतर, पुराण, कुरान, बाइबिल में नहीं है। वे ग्रन्थ तो मनुष्य रचित अतिहीन शिक्षा को देते हैं और मानव मानव से बैर सिखाते चले आए हैं। इतिहास के पन्ने उन्हीं की शिक्षाओं से रक्तरंजित किए हैं।

स्वस्ति गे भ्यः जगते पुरूष्यः । अथर्व - 1-31-4

हे ईश्वर गोधन समस्त जगत, तथा पुरुष मात्र का कल्याण हो।

वेदों में ईश्वर के गुण, कर्म, तथा सृष्टि नियमों का प्रतिपादन है -

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखः । ऋ· 10-81-3 ।

परमात्मा की परमाणु परमाणु में सब ओर आँखें हैं और परमाणु परमाणु उसकी शक्ति को गा रहा है।

§3§ वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

सर्वज्ञानमयोहि सः ।। मनु 2-7 ।।

§4§ वेद मानव जीवन के प्रत्येक अंग पर प्रकाश डालता है। यजुर्वेद का 31वां अध्याय इसका प्रतिपादक है। वेद चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों का प्रतिपादक है। जब तक चारों आश्रमों और वर्णों की मर्यादा रही देश स्वतंत्र और समृद्ध रहा यही विश्व का सम्राट रहा।

§5§ वेद ज्ञान तर्कसम्मत है-

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे । वेदोपदेश तर्क सम्मत हैं। तर्कहीन इसमें कुछ भी नहीं। पुराण, कुरान, बाईबल तर्कहीन और कुपथगामी हैं ।

§6§ इसमें व्यक्तियों का इतिहास नहीं। इन का प्रदान ईश्वर ने मानव समाज के इतिहास के पूर्व दिया था। वेद के इन्द्र, कृष्ण, अंगिरः नाम परमात्मा के ही विशेषण गुणवाचक हैं ।

§7§ वेदों की आज्ञाओं में कोई विरोध नहीं। कुरान का बनाने वाला अपने वास्ते 14 स्त्रियों से विवाह करने की आयतें बताता है साधारण मुस्लिम चार से अधिक औरतें नहीं कर सकते।

§8§ वेद सत्य का मार्ग अपनाने का उपदेश करते हैं अनृत का नहीं-

"दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत सत्यानृते प्रजापतिः
अश्रध्दामनृतेऽदधाच्छ्रध्दां सत्ये प्रजापतिः । यजु 19-77

"सत्यमेव जयते नानृतम्" मुण्डको 3-1-6·

§9§ वेद सुपथ पर चलने का उपदेश देते हैं कुपथ पर नहीं।

"अग्नेनयसुपथा राये अस्मान्-----" यजुः 40/16

§10§ वेद और उपनिषद् एक ओंकार की उपासना का उपदेश देते हैं किसी व्यक्ति विशेष का नहीं।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्थाविद्यते ।
अयनाय ।। यजुः 31-18

मैं इस अज्ञानातीत महान् पुरूष को जानता हूं। उसे ही जानकर पुरूष मृत्यु को पार करता है, इसके सिवा परमपद प्राप्ति का कोई मार्ग नहीं है।

§11§ वेद परा और अपरा विद्या के उपदेशक हैं। इन ही से मनुष्य अभ्युदय सर्वविध समृध्दि और निश्श्रेयस §मोक्ष§ की प्राप्ति कर सकता है। वेदेतर कोई भी धर्मशास्त्र नहीं है। अन्य सभी धर्मशास्त्र कुमार्ग पर ले जाने वाले हैं।

§12§ वेद बुध्दि की प्रार्थना करना बताता है अन्य धर्मग्रन्थ बुध्दि के शत्रु हैं।

§13§ वेद मनुर्भव का उपदेश देता है इसी से मानवता का कल्याण होगा।

ऐसे परोपकारी ग्रन्थ की शासन शिक्षा नहीं देता। महर्षि दयानन्द इस युग में वेदों का उध्दार किया है उनको सहस्रशः प्रणाम हैं।

xxxxxxxx

:- पुरूषोत्तम दास टण्डन -:

हिन्दी भवन मेरठ में काव्य-पाठ प्रतियोगिता

दिनांक- 21·11·88 मध्यान्ह 2 बजे कई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने महान कवियों की वेशभूषा में काव्य पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री·इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में उप निदेशक सूचना विभाग श्री नवीनचन्द जी ने भाग लिया।

पुरस्कार वितरण हिन्दी भवन के अध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जी जैन की प्रेरणा से समारोह के अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरण किए। चलवैजयन्ती बी0के0 महेश्वरी कन्या स्कूल ने जीती। एवं अपने-अपने वर्ग में प्रथम स्थान रीता शर्मा §हरिवंश राय बच्चन§ मीनाक्षी शर्मा §नीरज§ को मिला। शान्ता स्मारक कन्या इण्टर कालेज की छात्रा प्रीति §रामधारी सिंह-दिनकर§ तथा उपमा §सुभद्राकुमारी चौहान§ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल में श्रीमती लाज महता, श्री डा0 सुरेशचन्द्र व मनोजकुमार शामिल थे। श्री विष्णु खन्ना ने सफल संयोजन किया। श्री गजाधार जी तिवारी मंत्री हिन्दी भवन में सबका अभिनन्दन किया। मुख्य अतिथि श्री नवीनचन्द·जी ने अपने उद्बोधन में बच्चों में कविता के माध्यम से राष्ट्र-प्रेम भरने की प्रेरणा की। समारोह के अध्यक्ष श्री इन्द्रराज जी ने हिन्दी भवन में इस प्रकार के प्रथम समारोह पर श्री सुन्दरलाल·जी जैन अध्यक्ष हिन्दी भवन का धन्यवाद करते हुए हिन्दी काव्य के माध्यम से बच्चों में शिष्टाचार, राष्ट्रीय भावनाएं एवं आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करने वाले हर प्रकार के प्रयास करने की प्रेरणा की। उन्होंने बताया कि आज देश अपनी संस्कृति से हटता जा रहा है। राष्ट्रीय भावनाएं विलुप्त हो रही हैं। तथा देश में बढ़ती हुई हिंसा हमारी स्वतन्त्रता पर प्रश्नचिन्ह लगा रही है। आज इस सबकी रक्षा के लिए बच्चों की §भावी कर्णधारों की रक्षा का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व हिन्दी भवन जैसी संस्थाओं पर है। इन्होंने बच्चों को सुन्दर प्रस्तुतिकरण पर आशीर्वाद दिया। श्री सुन्दरलाल जैन अध्यक्ष हिन्दी भवन ने सबका धन्यवाद करते हुए घोषणा की कि भविष्य में हिन्दी भवन इस प्रकार के कार्यक्रमों को अधिक से अधिक संख्या में करेगा ताकि बच्चों का वास्तविक निर्माण हो सके।

विशेष सम्वाददाता द्वारा

महर्षि दयानन्द का आदर्श जीवन

{स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, कन्दौसी}

संसार के सामान्य लोगों के लिए बड़े प्रेरणा के स्रोत होते हैं। उनके पुनीत जीवन दर्शन में मानवीयता के अनेक शिक्षा प्रद मोती प्राप्त होते हैं। संसार के प्रत्येक महान पुरूष ने अपने जीवन दीपों से त्रसित मानवता को पथ प्रदर्शन कराया। ऐसे ही अनेक देव तुल्य महान आत्माओं में अग्रणी-युग पुरूष महर्षि दयानन्द अपने समय के एक अद्वितीय महा मानव हुए हैं। जिनका पावन जीवन-दर्शन विश्व भर को प्रद्योतित कर रहा है। 19वीं शदी के काल में इतना बड़ा मस्तिष्क देखने में नहीं आता है। इस दिव्य-देवता ने मानवता को प्रत्येक छोर से परखा है। धर्म और ईश्वर के विषय में वैज्ञानिक विचारधारा को जन्म दिया। विज्ञान और तर्क की कसौटी पर तथा कथित मत-मतान्तरों की परीक्षा करने की विधि मानव समाज को बताई। अनेकों विलक्षणताओं से भरा इस दिव्य-ऋषि का जीवन बड़ा ही रहस्य मय है। आइए, एक ऋग्वेद के मन्त्र के आधार पर प्रातः स्मरणीय ऋषि दयानन्द के- आदर्श-वेदोक्त जीवन-दर्शन का कुछ अध्ययन करें-------

मन्त्रः-- ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो
अनृतद्विषः ।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमें नरःस्याम
ये च सूरयः ।।
{ऋग्वेद,7/66/13}

शब्दार्थ.- ऋतावान = सत्य एवं यथार्थता के पक्षधर, ऋतजाताः= सत्यार्थ ही जिनका सारा जीवन प्रयत्नशील है, ऋतावृध = सर्वदा-तथा सर्वथा सत्य के प्रसारित करने में जो लगे हुए हैं, साथ ही जो--घारोसः= अतिशय घोर रूप धारण कर, अनृत द्विषः= असत्य और अधर्म के प्रति द्वेष अर्थात्= उसके विनाश हेतु प्रयत्न करते हैं। तेषाम्= उन, वः=आप सत्पुरूषों की, सुम्ने=शरण= आश्रय में सुच्छर्दिष्टमें= सुखदायनी, नर स्याम=हम सब मनुष्य होवें,-- ये च सूरयः= और जो विद्वान योगी जन हैं, वे भी, आप ऋत मय-जीवन, महानुभावों की शरण में कृतार्थ होवें।।

भाव- जो पावन जीवन सत्य पर ही निर्भर ह और सत्य हेतु ही जिनका 'सर्वस्व अर्पण है, वे असत्य के विनाशक महामानव हम सब मनुष्यों के आश्रय बनें। उन्हीं के संग से हम अपने जीवनों का शोधन करें। प्रस्तुत मन्त्र में वेद भगवान ने एक सत्य निष्ठ एवं पवित्र उच्च जीवन का रोचक वर्णन किया है। भयावह समय में मनुष्य किन का आश्रम लेकर अपना बचाव करें- इस का उत्तर इस मन्त्र में है। विश्व के अनेक महान आत्माओं में मन्त्रोक्त ऋत्=सत्य, पालन, आलम्बन और बर्धन के सब गुण कुछ न कुछ अंशों में पाते ही हैं, लेकिन=, "घोरासः+अनृत द्विषः" असत्य, अधर्म और अन्याय के विनाश हेतु विकराल रूप धारण करके, सत्य, धर्म और न्याय की रक्षा हेतु जो समर्पित हुआ हो- ऐसा पवित्र मानव मात्र दयानन्द ऋषि ही हुए हैं। मानवता तथा धर्म के नाम पर अनेक पापाचारों से समाज जब जर्जर-हो रहा था, उस भयानक समय में उस असत्याचार, एवं पापाचार के विनाशार्थ ऋषि ने महान संघर्ष किया और विश्व को सत्य का दर्शन कराया।

{1} सत्यमय जीवन की कठोर तपस्या ने सर्वप्रथम अनुभव किया था- पराधीनता का दुःख और स्वतन्त्रता का [illegible]ति मन्त्र दिया।

{2} भारत के गौरव की गाथाएं जन-जन के समक्ष [illegible] थीं।

{3} आपस की फूट के विषैले जहर से आर्य-जाति [illegible] आगाह- किया और अतीत की ओर ध्यान आकर्षित कराया [illegible]।

{4} भारत की सर्वोत्कृष्टता व महत्ता के अकाट्य [प्र]माण देकर राष्ट्रीय चेतना का दीप जलाया था।

{5} मात्र भौतिकवाद से मानव का कल्याण होगा-ऐसी [अधू]री-धारणाओं पर प्रहर करके, विशुद्ध वैदिक आध्यात्मिकता का प्रसार व प्रचार, वैज्ञानिक ढंग से किया।

{6} मानव मात्र को समान अधिकार व समानता का शंख नाद- महाभारत काल के बाद सर्वप्रथम किया था।

{7} नारी जाति तथा, तथाकथित शूद्रों के प्रति उदार भाव व्यक्त करके उन्हें समाज में समान अधिकार योग्य घोषित किया।

{8} वेद ज्ञान सर्व मौमिक है और निर्भ्रान्त हैं- यह समझाया।

{9} मानवता पुजारी बनकर दीन-दलितों के प्रति उदार भाव-व्यक्त किए।

{10} राष्ट्रभाषा "हिन्दी" के लिए कठोर प्रयत्न किए।

{11} विश्वभर के मत-मतान्तरों की निस्सारता की पोल खोल-डाली।

{12} राजनीति का शुद्ध स्वरूप {मनु प्रोक्त} सर्वप्रथम समाज के समक्ष रखा गया।

{13} बाल विवाह, बहु विवाह और अनमेल विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों का भन्डाफोड़ कर, वैदिक समाज की आदर्शता का पाठ पढ़ाया।

{14} गौ रक्षा हेतु सर्वप्रथम अभियान छेड़ा और गौ की महत्ता पर प्रकाश डाला।

{15} संसार के इतिहास में सर्वप्रथम "मृत्यु" के समय अति-उच्च मानवीय दर्शन का साक्षात् कराया।

आदि अनेक गुणों के भन्डार ऋषि दयानन्द पदार्थ जीवन जीते-जीते मृत्यु के क्षणों में भी एक महान सत्य का दीप जलाकर विदा हुए थे।

अजमेर नगर {राजस्थान में} की भिनाई कोठी पर 30 अक्टूबर 1983ई0 को साय 6 बजे के आस-पास - मन्त्र पाठ करके और आर्य जनों को अपने पास बुलाकर निम्न-तीन उपदेश देकर विदाई ली थी।

1- "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो"। यह दयानन्द का महान आस्तिकता का घोष था। जीवन भर महर्षि ने ईश्वराज्ञाओं का पालन किया था, लेश मात्र भी सैद्धान्तिक समझौता कहीं पर नही किया, वैदिक धर्म पर आरूढ़ रह कर वर्ण- आश्रम व्यवस्था का समुचित पालन किया।

2- "मेरे पीछे खड़े हो जाओं"। यह ऋषिवर का आर्ष अनुकरणीय - उपदेश था, कि जैसे मैंने वेदानुकूल जीवन बिताया और उसी की रक्षा में जीवन को तिल-तिल समर्पित किया- हे आर्य जनों। तुम भी सत्य+धर्म की रक्षार्थ ऐसा ही करो। जीवन दीप जलाओ।

3- "सब दरवाजे खोल दो"। जाति गत कल्पित भेद-भावों को भुलाकर मानव मात्र को सत्य {वैदिक धर्म} के पास सहर्ष आने दो। सब को गले लगा कर आर्य बनाओ।

बन्धुओं। आओ हम सब ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए, उस देवता के इन महान रहस्यमय उपदेशों को मान कर अपने जीवन को कृतार्थ करें। दीपमालिका के पावन पर्व पर महर्षि स्व जीवन-दीप जला कर असंख्य जीवन-दीप जला गया था और जलाने का भी मन्त्र आर्यो को दे गया था। लेख का कलेवर न बढ़ा कर महर्षि को नमन करता हूँ।

—— पराई आग में जलना पराई मौत मर जाना।
कोई सीखे दयानन्द से मरीजों की दवा होना।।

xxxxxxxxx

मुस्लिम युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्यसमाज छावनी, भोजूबीर वाराणसी में एक मुस्लिम युवती का शुद्धि संस्कार कार्यवाहक प्रधान श्री नानक राम जी की अध्यक्षता में ब्रह्मचारी व्यासनन्दन शास्त्री "वैदिक" आर्योपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, पटना के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। युवती के पूर्व नाम रेहाना से श्रीमती वेदप्रिया रखा गया। समारोह में ब्रह्मचारी जी द्वारा वैदिक धर्म के सत्यस्वरूप पर सारगर्भित व्याख्यान एवं श्री वेदपाल जी द्वारा सुमधुर भजन हुआ। उपस्थित नागरिकों ने नवदीक्षित वैदिक धर्मी महिला का हार्दिक अभिनन्दन किया।

ऋषि निर्वाण दिवस

एक सौ पाँच वर्ष पूर्व लाखों दीपों को जलाकर वह देदीप्यमान दीप बुझ गया, उस महान देदीप्यमान आत्मा की याददाश्त सालों से हम करते आ रहे है, इस वर्ष भी जलसे-जलूसों के माध्यम से ,भाषणबाजी से, नारों से यह औपचारिकता पूरी कर ली जायेगी, सवाल औपचारिकताओं के करने, न करने का नहीं, सवाल यह है कि क्या महर्षि दयानन्द के सपने इन औपचारिकताओं से पूरे हो जाएँगे ? दीपावली की घोर अन्धकारमयी अमावास्या के दिन जब उन्होंने प्राण त्यागा तो वे हमारे हाथों में "आर्य समाज" को रखकर आश्वस्त थे कि यह आन्दोलन मेरे सपनों को साकार करेगा। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा था कि इस संस्था की स्थापना किसी पंथ को चलाने के लिये करना है। चार दीवारों के कटघरे में संकुचित या सीमित आचार-विचार वाला मत चलाना है। लेकिन लगता है कुछ ऐसे ही, उस महान महर्षि के प्रति खिलवाड़ हो रहा है। पौराणिक जैसे लक्ष्मीदेवी की पूजा कर, नए बही खाते बनाकर प्रसाद बाँटकर अपनी आत्मतुष्टि करता है उसी तरह आर्य समाजी भी इस दिन हवन करके, भाषणबाजी करके, नारे लगाकर अपनी तुष्टि कर रहा है, जैसे कोई खाना पूर्ती कर रहा हो। श्राद्ध तर्पण कर रहा हो। उत्सव मनाएँ या न मनाएँ यह चर्चनीय विषय नहीं, चर्चनीय विषय तो यह कि क्या उत्सव, ये हवन, ये सभाएँ ऋषि की आकांक्षाओं को पूरा कर पाएँगी ? क्या इन कार्यों से ही हमारी उत्तरदायित्वता समाप्त हो जाती है या अति उन्मत होने की आत्मश्लाघी वाली शाब्दिक बहस बाजी में ही हमें उन्नत बना देंगी ? आज दुनियाँ ने हमें सवालों के कटघरे में खड़ा कर दिया है, सामयिक समस्याओं से सम्बन्धित उठ रहे प्रश्नों का हमें जवाब देना होगा। केवल जवाब ही नहीं क्रियात्मक परिणाम निकाल कर बताना भी होगा।

1824ई0 में गुजरात में जन्मा बालक मूलशंकर कुशाग्र बुद्धिवाला था। किसी भी विषय की गहराई तक जाना उनका स्वभाव था। एक चूहे की घटना ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। ईश्वर की खोज और मृत्यंजयी बनने की आकांक्षा ने बालक को सन्यासी बना दिया। निरन्तर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक घूमते-घूमते उन्होंने वेद आधार को ढूँढ निकाला। देश की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों ने उन्हें जनता जनार्दन के बीच ला खड़ा किया।

एक माँ अपने बच्चे के शव को लिए रोती बिलखती गंगा नदी की ओर जाने की घटना ने स्वामीजी के दिल को दहला दिया। वह माँ अपने बच्चे को पानी में बहा तो सकती है पर कफन के उस कपड़े को नहीं, क्यों? इस सवाल से स्वामीजी चिन्तित हो उठे। सन्ध्या में ध्यान न लग सका। रात भर सो न सके। उस तीव्र आवेदना ने उन्हें देश की दशा को समझने में सहयोग दिया। देश अनेकों समस्याओं से ग्रस्त था। स्वामी दयानन्द ने अपने अथक परिश्रम से हमें धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के समाधान में एक समग्र दर्शन दिया। तत्कालीन धार्मिक व सामाजिक कुरीतियों को जड़मूल से नष्ट करने का अनथक प्रयास भी किया व राजनीतिक, आर्थिक दर्शन की दिशा दी। स्वामीजी भारत के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करना चाहते थे। ऋषि अनुयायी उनकी इस दिशा को शायद पहचानने में भूल करते रहे हैं।

वर्णाश्रम व्यवस्था का विधान मन बहलाने का विषय नहीं, इसे समाज में स्थापित करने की जरुरत थी। यह एक सामाजिक व्यवस्था है जो देश की आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करती है व व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला भी है। ब्रह्मचारी (विद्यार्थी) वानप्रस्थी (परिवारिक व आर्थिक जिम्मेदारियों से मुक्त-रिटायर्ड), सन्यासी को सम्पत्ति का अधिकार न देकर व ब्राह्मण (शिक्षक), क्षत्रीय (रक्षक), शूद्र (सेवक) को भी सम्पत्ति का अधिकार न देकर उन्होंने एक सशक्त आर्थिक विधान की संरचना की, सामाजिक व आर्थिक सम्बन्धों को स्पष्ट किया। एक ही तरह के गुरुकुल विद्यालयों की बात कहकर, उसमें सबको समान व्यवस्था व शिक्षा-दीक्षा की बात कहकर समता मूलक समाज व्यवस्था के निर्माण में की बात कही। संस्कारों की महत्ता बतलाकर देश के निर्माण में भौतिक संसाधनों के बनिस्बत, उसको उपयोग करने वाले व्यक्ति को महत्वपूर्ण संसाधन माना। ब्रह्माण्ड में हो रहे क्रियाओं की सूत्ररूप में जानकारी देकर वैज्ञानिक उन्नति करने की अधार शिला रखी। प्रजातांत्रिक प्रणाली का प्रतिपादन कर स्वराज्य व सुराज्य की बात कही, उन्होंने एक सर्वांगीण कार्यक्रम दिया। लेकिन हमने समयानुसार उसका उपयोग न कर, किसी एक ही अंग को पकड़कर चार दीवारी में सिमटते जा रहे हैं। सामयिक परिस्थितियों के अनुसार किस मुद्दे पर संघर्ष होता है तो जिन्दगी भर के लिए उसी को मुद्दा बना लेना ना समझी कहलायेगी। आर्य समाज का गरिमापूर्ण इतिहास रहा है पर आज सन्ध्या हवन तक ही सीमित होना निष्क्रीयता का द्योतक है। हिन्दु-मुस्लिम की नीति से ही चिपट कर रहना साम्प्रदायिकता ही कहलायेगी, अपनी मानवतावादी नीति को तिलांजली देकर हिन्दुवादी बनना पतन का कारण होगा। आत्मतुष्टि के लिए समझौता विनाश का कारण बनेगा। स्वामी दयानन्द ने हर विषय पर इस सड़े-गले समाज से जूझा है और हमें जूझना सिखाया है तो समस्याओं से विमुखता क्यों ?

हमें यह कहने में संकोच नहीं कि आर्य समाजी हिन्दुत्व के नाम पर अब "संघी" बन रहा है। उसे संघ और आर्य-समाज का अन्तर भी समझ नहीं आ रहा। "संघ" ब्राह्मणवादको, जातिवादको, श्राद्धवादकों, अवतारवादको, पूँजीवाद को व यथास्थितिवाद को पुनः स्थापित करना चाहता है जबकि आर्य समाज इन सबके खिलाफ है ? फिर कैसी समानता? शंकराचार्य दलित व महिलाओं के खिलाफ बोलते हैं तो "संघ" मौन है। दलित व हरिजनों के बहुबेटियों की इज्जत सवर्ण लूटते हैं और नर संहार किया जाता है तो संघ मौन है। सती प्रथा के क्रूर कर्म से सारा देश क्षुब्द हो रहा हो व इसको तोड़ने के लिए कदम उठाए जा रहे हो तो हिन्दु कट्टर पन्थी इसे धर्म सम्मत कहता है तो "संघ" मौन है। हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को लेकर हिन्दु कट्टर पंथी विरोध करता है, गुंडागर्दी करता है तो संघ मौन है। तो संघ और आर्य समाज एक कैसे? संघ से सम्बन्धित अन्य संस्थाएँ चाहे वह भा.ज.पा. हो, विद्यार्थी परिषद हो, विश्व हिन्दु परिषद हो सभी मौन है। बयान भी दिया हो तो मगर मच्छी आँसू बहाने के लिए। कोई क्रियात्मक कदम नहीं। फिर एक कैसे? दूसरी तरफ आर्य समाजी सरकार परस्त बन रहा है। सरकारी नीतियों का तुष्टिकरण ही मानो अब इनका ध्येय बना है। किसी भी मसले पर सरकार से जूझना शायद ही इनके हिस्से में रह गया हो। सरकार परस्ती व संघी बनने ही के कारण आर्य समाजी अपने को नहीं पहचान पा रहा है और न ही स्वामी दयानन्द को। लगता है आर्य समाजी, आर्य समाजी नहीं रहा। इनके दिल और दिमाग को किसी ने छीन तो न लिया? या कुंठित हुआ है? या साम्प्रदायिकता से ग्रस्त है? ये सवाल हैं जिसे अपने अन्तःकरण में टटोलने की जरुरत है। महर्षि को अनेकों सन्दर्भो में समझने की जरुरत है। सभाएँ भाषणबाजी आदि से श्राद्धतर्पण करने से कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं होती। निष्क्रीय रहने से या निरपेक्ष सत्य कहने से भी कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं होती। कर्त्तव्य की पूर्ति तो तब होगी जब जी-जान लगाकर उस महान व्यक्ति के विचारों को जन-जन तक पहुँचाएँ नई पीढ़ी के लोगों तक पहुँचाए। केवल पहुँचाना ही नहीं सामयिक समस्याओं पर क्रियात्मक कदम उठाकर कुछ हासिल करें, समस्याओं का समाधान करने में योगदान दें, आज की भ्रष्ट राजनीति को प्रभावित करें और उसे झुकने पर मजबूर करें। महर्षि को याद करने का मतलब यही होगा कि हम उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में समझे और उनके सपनों की सामाजिक - राजनीतिक व्यवस्था कायम कर सकें।

xxxxxxxx

संसार का सर्वोत्तम महापुरुष

ऋषि दयानन्द जैसा मानव हुआ न होगा वसुन्धरा पर।
महान योगी सखा जगत का उदार हृदय दया का सागर।।

भटकता काशी गया में कोई किसी ने पत्थर को शिव था माना।
जो विश्व भर में रमा हुआ है वही है शिव ये गया बताकर।।

हो शूद्र स्त्री या कोई मानव सभी हैं संतान उस प्रभू की।
यह वेद वाणी है सबकी माता सभी की ममता इसे बराबर।।

हैं नभ में जबतक ये चन्द्र तारे ऋणी ऋषि का है विश्व सारा।
मनुष्यता जो सिसक रही थी वह फिर से उसको गया हँसाकर।।

हो पूर्ण इच्छा प्रभो तुम्हारी थे शब्द अन्तिम ऋषि के मुखपर।
कभी यह शीतल न बुझ सकेगी जो दिव्य ज्योति गया जगाकर।।

जगदीश शरण "शीतल"
चाँदपुर, बिजनौर।

तमसो मा ज्योतिर्गमय

-बिट्ठलरावआर्य, मंत्री आर्य समाज,
नारायण पेठ, जि॰महबूबनगर (आ0प्र0)

आत्मा अल्पज्ञ है। मात्र परमात्मा ही सर्वज्ञ है। उस सर्वज्ञ परमात्मा को जानने के लिए जितना भी प्रयास किया जाए कम है। अगर कोई यह समझ बैठे कि मैने जो कुछ परमात्मा के बारे में जाना है वह पूर्ण सत्य है, तो वह उसकी अल्पज्ञता ही कहलायेगी। परमात्मा पूर्ण सत्य है पर उसके बारे में जितना भी ज्ञान हमें है, वह आजतक का सत्य है, इस क्षण तक का सत्य है। अनेकों ग्रंथों को पढ़ने के बाद भी जो कुछ आपने जाना वह सापेक्ष सत्य है, निरपेक्ष नहीं। आपका ज्ञान उन किताबों की सापेक्षता से ही तो है, फिर आप पूर्ण विराम कहां लगाएंगे? कैसे लागायेंगे? किस आधार पर उस निरपेक्षता का आभास हुआ? अत· जितनी भी जानकारी है वह सापेक्ष ही है, निरपेक्ष नहीं। जिस दिन आप, अपने सापेक्ष ज्ञान को पूर्ण मान लेंगे वहीं से अज्ञान आरम्भ होता है। परमात्मा स्वयं पूर्ण सत्य व निरपेक्ष है। अत· कोई भी व्यक्ति अपने आपको पूर्ण ज्ञान का व अनुभव का ज्ञाता मानना व मसझना भूल है। जब परमात्मा के बारे में ही हमारी सीमा है तो प्रकृति की जानकारी भी सीमित व सापेक्ष ही हुआ करती है। कोई भी यह मान बैठे कि जो कुछ प्रकृति के विषय में लिखा गया है वह अंतिम सत्य है उसके आगे-पीछे कुछ भी जोड़ा जा सकता तो वह अज्ञानता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? कणाद, कपिल, गौतम, न्यूटन आयनस्टिन आदि मुनियों ने जो कुछ और जैसे भी इस प्रकृति को जाना, समझा, अनुभव किया उन्होंने वहां तक वर्णन कर दिया। लेकिन यह समझ बैठे कि कणाद-कपिल ने जो कुछ लिखा है वह अंतिम सत्य है तो आप असत्य का रास्ता अपना रहे हैं। वह उनके काल तक का सत्य था। उसी को आधार बनाकर, आगे और सत्य की सूक्ष्मता को खोजा व जोड़ा जा सकता है। अब तक और सूक्ष्मता की खोज नहीं होगी तब तक के लिए वही सत्य रहेगा। लेकिन उस सत्य को पूर्ण सत्य मानना असत्य ही होगा। चूंकि उनका सत्य भी सापेक्ष है। सापेक्ष की हमेशा सीमा होती है और सापेक्ष समय व प्रयत्न के साथ बदलता है या यूं कहिए कि वह विस्तार पाता है। यह अथाह सागर है जिससे आप अपनी सीमा ही निर्धारित कर पाते हैं पर पूरे सागर को अपना नहीं बना पाते। क्यों ? इसलिए कि मनुष्य अल्पज्ञ है। कणाद व कपिल की भी सीमा थी व न्यूटन व आयोनस्टन की भी सीमा है। वह सीमा एक दिन टूट सकती है। और यह तभी होगा जब आप अपने आपको पूर्ण नहीं मानोगे। पूर्ण मान लेंगे तो इसमें आपका ही नुकसान होगा। आपका अंतिम बिन्दु नजदीक ही दिखाई देने लगेगा और वह, मृत्यु व दु·ख अतिरिक्त और क्या हो सकता है ?

मनुष्य मे स्मृति व ज्ञान के होने की वजह से वह पशु से भिन्न है। मनुष्य विचारों का पुतला ही तो है। मनुष्य में से विचार निकाल दिए जांए तो फिर पशु बना। विचारों से ही उसके ज्ञान की सीमा को बढ़ाया जा सकता है। सूक्ष्म शरीर के माध्यम से आए हुए संस्कारों को, विचार व नए संस्कारों के जरिए से बदला जा सकता है। विचारों के इस पुतले को जब विचार देने ही हों तो उसको अपने साथ रखो, अपने से तोड़ो नहीं। संस्कार, देने के लिए ही हैं तो दूर करके किसे दोगे। अतः जोड़ो। जोड़ने में आनंद हैतोड़ने में कटुता। समाजशास्त्री व दार्शनिकों का विचार है कि जो श्रम करता है उसे भोजन मिलना ही चाहिए। जो श्रम नहीं करता उसे भी भोजन दिया जाना चाहिए। जब दार्शनिकों का यह अभिप्राय हो तो जो अच्छे संचित संस्कार ले आया है उसे अब सही विचार अर्थात संस्कार देकर और परिष्कृत किया जा सकता है। लेकिन जो हीन संस्कारों को लेकर आया है उसे भी अच्छे विचार व संस्कार देना है, चाहे उसमें आपको कष्ट ही क्यों न उठाना पड़े। बस यहीं पर मानवीय संवेदना की जरूरत है। मानवीय संवेदना न हो और उसके जीवन से न जुड़ सके तो उसी को समाज का मुख्य अंग नहीं बनाया जा सकता फिर आपके विचारों का क्या प्रयोजन ?

मनुष्य के लिये मनुष्य ही बड़ा संसाधन है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तो बाद में होगा और होगा भी तो वह भी मनुष्य के द्वारा ही होगा। इसलिए सामान्यतः आदमी यह भूल करता है कि वह मनुष्य को संसाधन नहीं मानता। महत्वपूर्ण संसाधन मनुष्य को, जब तक हम अपना नही बना पाएंगे तब तक सब कुछ बेकार है। व्यक्ति हो या व्यक्ति समूह आदमी-आदमी के बीच सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विषमता का समूल नाश होना चाहिए। समता का दर्जा सबको मिलना चाहिए। यही वेद का संदेश है। --------

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्—

व्यक्ति और समाज अन्योन्याश्रित होते हुए भी व्यक्ति एक बहुत छोटी इकाई है। उसकी सीमा बहुत अल्प है। जबतक व्यक्ति की सीमा उसकी अपनी ही है, मात्र उसके इर्दगिर्द तब तक वह व्यक्ति चाहे अच्छा हो या बुरा हो उसे अपना बनाना ही चाहिए। चूंकि वह व्यक्ति सार्वजनिक रूप से विचारों को या विचारों के प्रवाहों को, न बदल पाता है न ही नया प्रवाह बढ़ा सकता है ऐसे व्यक्ति की सीमा है उसे निरन्तर संस्कार देना है। बहुत ही संवेदनशील व सहनशील बनकर, उससे जुड़कर उसे संस्कार देना होगा। ऐसे व्यक्तियों के समूह को भी विचारों के प्रवाह में लाना है। यह होगा पर जब आप उनके सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक जीवन से जुड़ेंगे। वेद का आदेश है सभी समान हैं। सभी समान रहें। सभी को समान उपभोग की सामग्री दी गई है तो फिर जाति भेद क्यों ? छुआ-छूत क्यों? हरिजन को मंदिर में प्रवेश क्यों नहीं ? सती प्रथा से नारी के साथ अन्याय क्यों? ऐसे अनेकों सवाल हैं।

एक समान परिस्थितियों में हमेशा एक जैसा व निश्चित परिणाम देने वाली बात को वैज्ञानिक कहते हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों को भूमण्डल के किसी भी भाग में किए जा सकते। वह हर प्राणी पर उसके एक समान परिणाम निकलते हैं। लेकिन अंधविश्वासों को जन्म देने वाले लोग विज्ञान का मूल-भूत बातों भुलाकर, विज्ञान के साथ खिलवाड़ करना शुरू कर दिए हैं। जिन लोगों ने विज्ञान का नाम लेकर प्रचार शुरू किया है। उनकी आस्था का शोषण कर रहे हैं। विश्व में योग के नाम पर व्यापार चल रहा है। आपकी जानकारी के लिए यह आवश्यक समझता हूँ कि लगभग दो वर्ष पहले की बात है दिल्ली के दैनिक समाचार पत्रों में लगातार 15-20 दिनों तक यह विज्ञापन छपा कि महेश योगी के शिष्य जमीन से ऊपर उठकर हवा में चलने का योग कार्यक्रम पेश करेंगे। स्टेडियम में यह कार्यक्रम रखा गया था। हजारों लोग पहुँचे, पत्रकार पहुँचे, कुछ मुख्य लोग भी पहुँचे। जब हवा में चलने का प्रोग्राम आया तो उसके साधक स्पंज के गद्दों पर मेंढक जैसे उछलने लगे। यह था उनका योग। पोल खुल गई, दुनियां के सामने सही चेहरा पेश आया। शरम से सर को झुकाना पड़ा। लोगों की आस्था से खिलवाड़ करने के लिये अब नई दुकानदारी शुरू हुई है यज्ञ और होमो थरेपी के नाम पर कुछ लोग देश विदेश में अपने केन्द्र खोल रखे हैं। अपने आश्रमों में तय की गई बात को विज्ञान नाम से, वैज्ञानिक खोजों के नाम प्रचारित करते हैं, जबकि उनमें एक भी वैज्ञानिक नहीं और न ही वे विज्ञान का ए,बी,सी,डी जानते हैं। अपने नाम के सामने झूठी डिग्रियां भी लगाते हैं। इस तरह इनका धंधा चल रहा है। तभी तो यह लोग कहने लगे हैं कि एटम बम्ब की किरणें हवन वाले पर प्रभाव नहीं डालती। बंदूक की गोली हवन करने वाले के बाजू से दिशा बदल कर निकल जाती है। भाई ये सब गोल-गप्पे हैं, विज्ञान नहीं। अगर कोई पौराणिक यह माने कि हनुमान देवता का मन्नत से संतान हुई और किसी ने यहमाना कि हवन करने से संतान हुई तो दोनों में क्या अन्तर हुआ। किसी को हनुमान, हजरत, दुर्गा से मा यल्लमा देवी से संतान तो किसी को हवन से। दोनों में कुछ भी अन्तर नहीं। दोनों ही अन्ध विश्वास। दोनों के कार्य में कोई निश्चित वैज्ञानिक प्रक्रिया है नहीं और निश्चित परिणाम देने वाली क्रिया। कोई निश्चित नहीं बता सकता कि हवन कि किस विधि के करने मात्र से सन्तान होती है। इस देश में गपोड़े बहुत पले हैं चलें हैं। अब कुछ लोगों में अपनी तुष्टि के लिए यह गपोड़ा भी शुरू किया है। यह बहुत हानिकारक है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इन गपोड़ों की पोल खोलने के लिए पूरा जीवन लगा दिया। अब पुनः आर्य समाज में इन गपोड़ो को शुरू करना महापाप है। ऐसे कुकृत्यों को किसी भी हालत में नहीं पनपने दिया जाना चाहिए। यज्ञ के नाम पर इसी प्रकार के अन्ध-विश्वासों को भी पनपाने की चेष्टा की जा रही है।

" यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"

हर श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है। उसमें अग्निहोत्र भी एक अंग है। उसकी अपनी सीमा है। अग्निहोत्र अपनी सीमा में जरूर वातावरण की शुद्धि करता है। अर्थात् अनुपयोग वायु को ढकेल कर बाहर करता है व सुगन्धित वायु को

यह है हमारी देश भक्ति

यतीन्द्र कुमार आर्य,
विद्यारत्न प्रथम वर्ष
गुरुकुल महाविद्यालय,
ज्वालापुर (हरिद्वार)

क्या विश्व में कोई ऐसा देशभक्त समाज है जो अपने देश की भूमि का भूदान करने पर तुल गया हो? जहाँ देशभक्त बढ़ रहे हों किन्तु देश घट रहा हो। जी हाँ! यह प्रश्न जुड़ा है हिन्दू समाज से और उसके देश भारत से।

200 वर्ष पहले अफगानिस्तान, 1911 में श्रीलंका, 1935 में बर्मा, 1947 में पाकिस्तान और फिर कश्मीर का 1/3 भाग, 1950 में तिब्बत 1954 में बेरुबाड़ी, 1962 में चीन द्वारा हड़पी गई 45 हजार वर्गमील भूमि यह है एक झलक आधे भारत के भूदान की और हमारी अनेकता की। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी ये फूट ही रही है। हम वीर जरूर हैं और हमने देश की रक्षा तो की थी परन्तु चन्द रियासतों की, अखण्ड भारत की नहीं और हम आपस में लड़ते झगड़ते रहे। कितने कमाल की बात है देश घट रहा हो और देश भक्त बढ़ रहे हों--

"हो गये क्या से क्या? और क्या से क्या होंगे अभी।
आओ ! सभी सुलझायें ये समस्यायें सभी ।।

हम 1947 तक करांची, लाहौर, ढाका के भी देशभक्त थे। सन् 1935 तक रंगून तथा कोलम्बो के देशभक्त थे। कितने महान देशभक्त हैं हम कि प्रत्येक 10-20 वर्ष बाद अपने देश को छोटा कर देते हैं, देशभक्ति बढ़ रही हो और देश घट रहा हो ऐसा विपरीत संसार में अन्यत्र खोजने को नहीं मिलेगा।

"लें आँख मींच अन्याय देख वह खून नहीं वह पानी है।
जिसको भारत से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।

पंजाब में हो रहे निरन्तर अत्याचार तथा खालिस्तान की मांग यह स्पष्ट कर चुकी है कि इसमें विश्व राजनीति का मुख्य हाथ है और खालिस्तान ही नहीं अनेकों आन्दोलन इस देश में जन्म ले रहे हैं और लेते रहने की सम्भावनाएं प्रबल होती जा रही हैं। 21वीं शताब्दी तक हमारी देशभक्ति की सीमाएं कहां तक होंगी यह प्रश्न हमारे सामने है। अपने पौरुष पराक्रम से हमें इसका उत्तर देना होगा। तरुण भारत को भूदान की राजनीति छोड़नी होगी-

"कुर्बान अपने देश पर जो नहीं हो सकता,
कसम ईश्वर की वह इंसान नहीं हो सकता।
लहू से सींचते हैं जो बागेबां रोशन,
चमन वह कभी वीरान हो नहीं सकता ।।

अनेकों बार खण्डित हुए भारत को पुनः अखण्ड बनाने का संकल्प जगाना होगा। उत्तिष्ठत जाग्रत । उठो और जागो। भारत को सर्वप्रभुता सम्पन्न आर्यावर्त्त देश घोषित करना ही भावी विनाश की आकांक्षाओं से बचने का एक मात्र समाधान है। यदि केवल एक करोड़ हिन्दू नेपाल को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर सकते हैं। तो 60 करोड़ हिन्दू भारत में ऐसा क्यों नहीं कर सकते? जैसे हिन्दू राष्ट्र नेपाल में ईसाई, मुस्लिम स्वतंत्रता पूर्वक रह सकते हैं वैसे ही भारत में भी रह सकते हैं। जैसे इंग्लैण्ड, अमेरिका में हिन्दू रहते हैं वैसे ही भारत में ईसाई भी रह सकते हैं। जैसे पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में हिन्दू निवास करते हैं वैसे ही भारत में मुस्लिम रह सकते हैं।

"माता पृथ्वी पुत्रोहं पृथिव्या (वेद)

यह मातृभूमि मेरी माँ है मै इसका पुत्र हूँ। यह देश हमारे लिए मात्र धरती का टुकड़ा नहीं है केवल भूखण्ड नहीं है अपितु साक्षात् जगतजननी है। यह केवल भारत नहीं अपितु भारत माता है। भारत का एक-एक कण हमारे लिये पूज्य है, वन्दनीय है। माता की अखण्ड मूर्ति हमारे हृदय को विदीर्ण करती है।

आओ ! यदि हम भारत माता के सच्चे वीर हैं यदि हम महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, भगवान राम, योगिराज श्रीकृष्ण, तथा वेदों के सच्चे अनुयायी हैं तो आइये वेद की इस पवित्र ध्वनि द्वारा यह शपथ ग्रहण करते हैं कि --

"वयम् तुभ्यम् बलिहृतः स्याम"

हे ! मातृभूमि हम तुझे बलिदान देने वाले हों। हमारा एक नारा है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्," तथा "सठेसाठयम् समाचरेत्"। खण्डित भारत को पुनः अखण्ड करना ही सच्ची देशभक्ति है।

xxxxxxxxxxxxxxxxx

फैलाता है। लेकिन हर श्रेष्ठतम कर्म को अग्निहोत्र मानना गलत है। स्वामी अग्निवेश की पद यात्रा हरिजनों को सामाजिक अधिकार दिलाने के लिए भी निश्चित वह श्रेष्ठ कर्म था वह एक सामाजिक यज्ञ था पर अग्निहोत्र नहीं। इसी प्रकार सती निरोध में पदयात्रा भी तो नारी उत्पीड़न की कहानी दर्शाता व नारी के समान अधिकार का यज्ञ था। दूर संचार व दूरदर्शन के लिये उपग्रह छोड़ने वाला काम भी एक महान खगोल यज्ञ था। इसी प्रकार नेचर यज्ञ, सामाजिक यज्ञ आर्थिक समानता के आर्थिक उद्यम यज्ञ हैं पर उन यज्ञों को अग्निहोत्र से जोड़कर बबूल का पेड़ बोकर आम पाने वाली बात कह रहे है। यह अंधविश्वास है। यह सारी बातें सार्वजनिक जीवन को दूषित करने वाली हैं। अतः हर कीमत पर ऐसे अंध विश्वासों का विरोध होना चाहिए। यह तमस है इस पर घोर प्रहार हुए बिना यह छुटेंगे नहीं।

"यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः"

गीता 3/14

इसमें साफ लिखा है कि मेघ यज्ञ से उत्पन्न होता है और यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है। कर्म से उत्पन्न होने वाला यज्ञ अग्निहोत्र नहीं। नेचर यज्ञ है। इसलिए पौधे लगाइए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है:- "दुर्गन्ध युक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुख और सुगन्धयुक्त वायु और जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है। अर्थात् सुगन्धित वायु व हवन की वायु रोग के बैक्टिरिया को बाहर ही मार देती है अतः रोग आता ही नहीं। यह साधन सावधानी बरतने का है। हवन से यह महान उपकार होता है। अतः हवन को श्रद्धा से करिए। अग्निहोत्र से त्याग का, उच्चतम बलिदान का पाठ मिलेगा।

शुद्धि संस्कार

आर्य समाज मेरठ शहर में जयन्त कुमार जी पादरी शास्त्री नगर मेरठ चर्च का शुद्धि संस्कार श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के द्वारा दि0 28-10-88 को सायंकाल सम्पन्न हुआ। श्री इन्द्रराज जी ने जयन्त कुमार आर्य का वैदिक धर्म में स्वागत करते हुए वैदिक धर्म की विशेषताओं एवं यज्ञोपवीत के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री सभा प्रधान जी ने यह आशा व्यक्त की कि धर्म परिवर्तन के नाम पर जो देश में राष्ट्र परिवर्तन और विघटन की प्रवृत्तियाँ गुप्त रूप से इस देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता को खतरे में डालने वाली हैं जिसके लिए अथाह धन राशि ईसाई और इसलामी देशों से भारत में आ रही है, हम सब, इस नवयुवक के द्वारा पर्दाफाश होने पर प्रभावी ढंग से अपनी संस्कृति और देश की रक्षा कर सकेंगे।

श्री जयन्त कुमार जी आर्य ने भी, धर्म, संस्कृति और देश की रक्षा का प्रण लेते हुए अपना सर्वस्व बलिदान करने की घोषणा की।

महर्षि दयानन्द परमात्मा की अनुपम देन

रामबलि उपाध्याय

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास भवन में महर्षि दयानन्द जी महाराज का 105वां निर्वाणोत्सव मनाया गया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री रामबलि उपाध्याय उप कुलपति अजमेर विश्वविद्यालय ने महर्षि दयानन्द के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का विवेचन करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द परमात्मा की अनुपम देन है। आडम्बर व कुरीतियों से आज भी आर्य समाज को जूझना है और इसके लिए आत्म अनुशासन आवश्यक है। आर्य समाज का अतीत बहुत ही उज्जवल व गौरवपूर्ण रहा है। आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चल कर हम मन व इन्द्रियों को वश में कर सके अपने जीवन को सार्थक बना सकते है। हमें आत्म वत् सर्व भूतेषु की दृष्टि से देखना है। महर्षि दयानन्द ने एक क्रान्ति उपस्थित कर दी और यही वजह थी कि देश एक नई दिशा में सोचने लगा। आपने बताया कि गंगा पवित्र होते हुए भी कीचड़ आ जाता है, इसी प्रकार भारत में कुछ कुरीतियां व आडम्बर कीचड़ के रूप में आ गया था, जिसे महर्षि जी ने साफ किया। आपने आव्हान किया कि आर्य समाज अपना कार्यक्षेत्र बढाये और इस बात का ध्यान रखे कि आर्य समाज हिन्दुओं से अलग न होकर पथ प्रदर्शक है।

प्रमुख वक्ता ज्वालापुर से पधारे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, विचारक महात्मा आर्यभिक्षु जी अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द प्राणी मात्र के लिए परमात्मा का आशीर्वाद है। स्वामीजी ने गो करूणा निधि लिखकर यह सिद्ध कर दिया कि व प्राणी मात्र के कल्याण के लिए धरती पर आये थे। महर्षि जी के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए महात्मा आर्य भिक्षु जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द झूठ के सामूहिक शत्रु थे और यही वजह है कि उन्होंने अपने जीवन में सत्य को सदा स्वीकारा।

सुश्री सरला शारदा ने अपने विचार रखते हुए बताया कि नारी जाति पर स्वामी जी महाराज के बहुत उपकार है।

दयानन्द महाविद्यालय के प्राध्यापक प्रो० बुद्धि प्रकाश जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बताया कि ऋषि दयानन्द की विद्वता और चरित्र का लोहा देश विदेश में सबने माना। स्वामी जी ने धर्म के [illegible] प्राणी मात्र के लिए रखा।

श्रीयुत प० रामभजन जी मिश्र, मुरलीधर आचार्य एवं स्वामी केवलानन्द जी ने काव्यान्जलि प्रस्तुत की।

निबन्ध प्रतियोगिता एवं वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले छात्र-छात्राओं को उप कुलपति श्री रामबलि उपाध्याय ने पुरस्कार वितरण किया। श्री संतोष चन्द सुराणा सयोजक ने बताया कि निबन्ध प्रतियोगिता में 100 से अधिक स्कूली छात्र-छात्राओं ने भाग लिया तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में करीब 35 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

अध्यक्षीय पद से अपने उदबोधन में दैनिक न्याय के प्रधान सम्पादक श्री विश्वदेव जी शर्मा ने आर्यो को आव्हान किया

कि आर्य समाज में और शिथिलता को दूर करें तथा ऋषि के मार्ग पर चलते हुए देश व समाज की सेवा करें। श्री विश्वदेवजी ने अपनी ओर से एक चल वैजयन्ती निबन्ध प्रतियोगिता के लिए देने की घोषणा की।

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के मंत्री श्री मदन-मोहन शास्त्री ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा न्यास की गतिविधियों का परिचय दिया। श्री मदन मोहन शास्त्री ने उप-कुलपति जी को न्यास की ओर से एक ज्ञापन देते हुए अजमेर विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ प्रारम्भ करने की अपील की।

प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर छापरवाल ने सभी अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

महिला मण्डल

अबला और साहसिक कार्य

डा० नन्दता शास्त्री

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी।

अजलिबद्ध अर्धोनमीलितनयन भक्तिभाव सम्पन्न पौराणिक नारी समाज शक्ति की अधिष्ठात्री दुर्गा देवी की उपासना चाहे जितनी करले किन्तु स्वयं को भी आततायियों दुष्टों के प्रति कालस्वरूपा मानकर व्यवहार कर पाना इन नारियों के लिये आज भी असम्भव सा ही है। उपास्य का भाव उपासक में होना ही चाहिये पर जब उपासना में ही कुछ वैगुण्य हो तो यह होगा कैसे? वर्तमान हिन्दू समाज में पली-नारियां अपना दब्बूपन छोड़ दें इसके लिये केवल डिग्री प्राप्त कराने वाली शिक्षा की ही आवश्यकता नहीं अपितु हृदय में उस धधकती आग को आधान करने की है कि जो प्रत्येक अन्यायी दुष्ट पापियों को मुँह तोड उत्तर दे सके। प्रस्तुत है यहाँ इस पत्र के माध्यम से एक इसी प्रकार की साहसपूर्ण सच्ची घटना का विवरण-

अभी कुछ दिनों पूर्व पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या सश्री डा० प्रज्ञा देवी जी अपनी दो ब्रह्मचारिणियों सुश्री माधुरी स्नातिका (उम्र 27 वर्ष) कु० सुमित्रा (उम्र 13वां) के साथ वैदिक धर्म प्रचारार्थ सुदूर यात्रा पर 16 अप जी०एल०ट्रेन से गोहाटी जा रही थीं। रात एक बजे का समय था। बड़ी बहन माधुरी जी नीचे की बर्थ पर अपने सिरहाने रखी अटैची पर हाथ फैलाकर सोने की मुद्रा में अर्ध जागृत लेटी हुई थीं। तभी पटरियों पर घिसघिस करती हुई ट्रेन सिलीगुडी स्टेशन पर आकर रूक गई और एक घण्टे के पश्चात यानी ठीक दो बजे जब वह सिलीगुडी स्टेशन से छूटने को ही थी कि पाच मिनट पूर्व एक संदिग्ध व्यक्ति ने उस डिब्बे का आदि से लेकर अन्त तक दो-एक बार सर्वेक्षण किया सबको निद्राधीन देख निश्चिन्त हो प्लेट फार्म के दूसरी तरफ का दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया और जैसे ही ट्रेन चलने को हुई वह लपककर अन्दर घुसा और पलक झपकते ही उन बहिन के पास से उस अटैची को जबरदस्ती ही खींचकर भाग खड़ा हुआ तथा चलती ट्रेन से प्लेटफार्म के दूसरी तरफ वाले द्वार से अटैची सहित कूद गया। एक क्षण का भी बिना विलम्ब किये हमारी साहसी बहिन माधुरी जी चोर-चोर चिल्लाते हुए उसके पीछे चलती ट्रेन से ही कूद पड़ीं। कई पटरियों बाद में खड़ी मालगाडी को लाघते हुए गहन अन्धकार में अटैची लेकर भागने की चोर ने भरपूर चेष्टा की पर माधुरी बहिन ने उसका पीछा नहीं छोडा और वे भी मालगाडी के नीचे से ही निकलकर उसके पीछे झपटीं। आखिर वह पापी जिसकी आत्मा साक्षात रणचण्डी दुर्गा को अपना पीछा करते देख भय से स्वयं प्रकम्पित हो रही थी जिसके हाथ-पैर अपनी गतिमत्ता से जवाब दे रहे थे वह किसी तरह अंधेरी झाडी तक पहुँच उस अटैची को वहीं फेंक अपना कलंकित मुँह छिपाते हुए अदृश्य हो गया तथा अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति हमारी वह वीर बहिन अटैची को वापिस लेकर ही लौटीं।

इधर भयाक्रान्त स्थिति में अनेक सम्भावनाओं से त्रस्त हमारी पूज्या आचार्या डा० प्रज्ञा देवी जी ने तत्काल अपने प्रयास से ट्रेन रूकवाई। ट्रेन रूकते ही आचार्या जी सहित पूरा जनसमूह तथा रेलवे स्टाफ घटना स्थल की ओर बढा ही था कि उधर से अटैची लिये हुए माधुरी बहिन को सुरक्षित आता देखकर सब आश्चर्यचकित हो धन्य-धन्य कह उठे। आचार्या जी को तो इस विस्मयकारी क्षण ने कुछ पलों के लिये मानों भाव-विह्वल जड़वत् ही बना दिया। पुनः आनन्दातिरेक से अपनी पुत्री को हृदय से लगाते हुए वह ट्रेन में आ बैठीं, जहां माधुरी बहिन के दायें पैर में आई चोट का तात्कालिक चिकित्सा रेलवे विभाग द्वारा कराई गई और तभी सिलीगुडी प्लेटफार्म से ट्रेन आगे बढ सकी।

वस्तुत आज के युग की इस प्रकार की घटनायें महिला जगत के लिये एक चुनौती सदृश हैं। कहना न होगा कि ऐसा सतेज आत्मबल गुरूकुलीय शिक्षा नीति के प्रभाव से ही उपलब्ध हो सकता है अन्यत्र कालिज आदि के फैशन परस्ती के वातावरण या मात्र दुर्गा जी की प्रतिमा पूजन से नहीं।

भारत का संविधान-पन्थनिरपेक्ष है

-स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी

भारत के संविधानक की उद्देशिका में लिखा है- "हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पन्थनिरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों को : सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये, तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिये दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज 26 नवम्बर, 1949ई0 ﴾मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी" सम्वत् दो हजार छह विक्रमी﴿ को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

भारत में अपनी आस्था व विश्वास के अनुसार अनेक पन्थ ﴾मत,सम्प्रदाय, मजहब, रिलीजन﴿ के अनुयायी हैं। प्रत्येक नागरिक इच्छानुसार पूजा-उपासना-विधि अपना सकता है। कोई सम्प्रदाय सामूहिक रूप से कोई पूजा या उपासना स्थल चला सकता है। परन्तु इन स्थलों का उपयोग धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त नहीं होना चाहिये।

उपासना विधियाँ भिन्न होने पर भी धर्म के लक्षणों ﴾धृति-क्षमा-दम-अस्तेय-शौच-इन्द्रियनिग्रह-धी-विद्या-सत्य- अक्रोध﴿ से युक्त व्यक्ति, सज्जन-मानवतावादी-सुनागरिक-राष्ट्रभक्त होते हैं।

"धारणाद् धर्ममित्याहु: धर्मो धारयते प्रजाः।"अर्थात् जो धारण किया जाय और जिससे प्रजायें धारण की हुई हैं- वह धर्म है। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज का दसवाँ नियम व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिये बड़ा हितकारी है- "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"

अतः "समान नागरिक संहिता" के द्वारा भारत देश एकता-अखण्डता-सम्पन्नता को प्राप्त होगा।

गुरु गोविन्द सिंह का सिखों के नाम

सन्देश

रुक जाओ, नाम सिखों का क्यों डुबो रहे हो ।
गौरव अतीत का क्यों मिट्टी मिला रहे हो ।।

गर शिष्य हो मेरे तो इतनी कसम तुम्हे है ।
इस देश के लिए ही यह जिस्म और तन है ।।

निज मातृ भूमि भारत से घात तुम न करना ।
सदियों पुराने दुश्मन से प्यार तुम न करना ।।

वह जाल फेंकता है कहीं उसमें फंस न जाना ।
विश्वासघातियों का विश्वास कर न जाना ।।

आपस में एक होकर शत्रु को मात दे दो।
रक्षा में तिरंगे की तुम अपने प्राण दे दो ।।

यही धर्म है तुम्हारा यही कर्म है तुम्हारा ।
संकट की इस घड़ी में आदेश है हमारा ।।

झण्डा वतन का हरदम ऊँचा उठाए रखना ।
कुर्बानियों के पथ पर आगे ही बढ़ते रहना ।।

जिस राह पर चला मैं उस पर ही चलते रहना ।
वरना स्वयं को मेरा तुम शिष्य अब न कहना ।।

-सन्तोष "कण्व"

﴾बरेली﴿

उत्तरीरूस के याकूतियाई हिन्दू-मूल के।

﴾जिस प्रकार देवभाषा संस्कृत समस्त भारोपीय भाषाओं की जननी है, उसी प्रकार आर्यजाति भी समस्त मानव वंश की मूल है। आर्य शब्द गुण वाचक है सृष्टि के आदिकाल में उत्पन्न श्रेष्ठ पुरुष आर्य और विपरीत गुण स्वभाव वाले दस्यु कहलाए। कालान्तर में इन्हीं की विभिन्न जातियाँ ﴾वर्ण﴿ बनते चले गये और आज मानव समाज अनेक वर्गों तथा वर्णों में विभक्त हो गया है। रक्त के वैज्ञानिक परीक्षण से भी यह सिद्ध हो रहा है﴿

प्र0 सम्पादक ﴿

सोवियत संघ के उत्तरी भाग में रहने वाले याकूतियाई लोगों और उत्तरी भारत के हिन्दुओं में आश्चर्यजनक समानता देखकर सोवियत वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि दोनों एक ही मूल के हैं।

सोवियत विज्ञान पत्रिका "कैमिस्ट्री एण्ड लाइफ" रसायन शास्त्र एवं जीवन के अनुसार याकूतियाई लोगों और हिन्दुओं के रक्त की प्रतिरोधन व्यवस्था एक जैसी ही है। सोवियत संघ के स्वास्थ्य समस्या संस्थान के वैज्ञानिकों ने रोग विज्ञान संबंधी एक सर्वेक्षण के दौरान पाया कि याकूतियाई लोगों के रक्त में एच·एल·ए·बी· 70 नामक एंटीजन है जो सिर्फ उत्तरी भारत के हिन्दुओं के रक्त में होता है।

हालांकि देखने में याकूतियाई लोग मंगोलियाई नस्ल के लगते हैं और उनकी भाषा तुर्क भाषा समूह की है लेकिन उनकी संस्कृति आर्यों से बहुत मिलती जुलती है।

याकूतियाई लोग आर्यों की तरह सूर्य-पूजन पर अश्व-पूजन करते हैं और उनके बीच कल्पतरु की भी अवधारणा है। पर वे इस जीवन-वृक्ष को ड्रेवोझिझनी कहते हैं। उनके लोक-गीतों में हुरुड़ नामक एक पावन पक्षी का व्यापक उल्लेख है। यह पक्षी हिन्दू धर्मग्रंथों में वर्णित गरुड़ के समान हैं।

वैज्ञानिकों ने अपने गहन अध्ययन के दौरान पाया कि याकूतियाई लोगों के रक्त की प्रतिरोधण व्यवस्था में एच·एल·ए·एक एंटीजन हैं जो सिर्फ यूरोपीय नस्लों में मिलता है। यह एंटीजन मंगोलियाई नस्ल के लोगों में कभी नहीं मिला। इन वैज्ञानिकों के आश्चर्य का उस वक्त ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने याकूतियाई लोगों के रक्त में यूरोपीय एंटीजन और आर्य नस्ल के एंटीजन एच0एल0ए0बी0 70 का मिश्रण पाया।

अब ये वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि याकूतियाई लोगों और हिन्दुओं के पूर्वज एक ही थे।

स्वतन्त्र भारतसे साभार

xxxxxxx

क्रान्तिकारी म0 नारायण स्वामी का निधन

आर्य जगत को यह सूचित करते हुए बड़ा दुख है कि प्रसिद्ध वक्ता प्रखर राष्ट्र भक्त एवं कर्मठ आर्य सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी का दिनांक 5-11-1988 को निधन हो गया। वे निर्भीक वक्ता और ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त थे। उनके निधन से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। परम पिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना है।

प्रदेश के अनेको आर्यसमाजों ने इनके निधन पर शोक सन्देश प्रेषित किए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की शताब्दी

दिनांक 30-31 दिसम्बर 1988 व 1 जनवरी 1989 को अलवर राजस्थान में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी समारोह एवं आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सारे देश व विदेश के आर्यजनों को आमंत्रित किया गया है। अलवर राजस्थान में देहली-अहमदाबाद छोटी लाइन पर देहली व जयपुर के बीच में स्थित है। देहली, जयपुर, आगरा, मथुरा से 150 कि0मी0 का फासला है। इन स्थानों से आधा घन्टे के बाद बस अलवर आती-जाती रहती है।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
मार्ग शीर्ष कृष्ण ।।
4 दिसम्बर रविवार, 1988 ई0

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

:- मेला गढ़मुक्तेश्वर वेद प्रचार शिविर -:
दिनांक, 19 से 23 नवम्बर, 1988 तक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ एवं जिला गाजियाबाद की ओर से मेला गढ़मुक्तेश्वर सन्तर नं0-7 में श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के निर्देशन में एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के संयोजक थे **डा0 जयवीरसिंह जी**, मंत्री, जिला-सभा गाजियाबाद। पांच दिन निरन्तर प्रात तथा सायंकाल गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा0 भोलाझाल के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ हुआ तथा विशेष यज्ञ सम्पन्न करवाया गया।

इस अवसर पर श्री निरन्जन देव तीर्थ के उपदेश तथा श्री शोभाराम जी प्रेमी, श्री हरस्वरूप जी, श्री मनवीर जी, श्री कर्णसिंह जी, श्री तेजपाल सिंह जी, श्रीमती आशा जी आदि के भजन हुए। श्री जयन्त कुमार (पूर्व पादरी) ने भी भारतवर्ष में ईसाई षड्यन्त्रों का भाण्डाफोड़ किया।

श्री इन्द्रराज जी प्रधान सभा ने अपने भाषणों में दहेजप्रथा, सतीप्रथा, पंजाब में उग्रवादी हिंसा देश में विदेशी धन के प्रलोभन से धर्मपरिवर्तन देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, मद्य एवं मांसाहार की बढ़ोत्तरी पर चिन्ता व्यक्त की। विशाल जनसमूह को चेतावनी देते हुए उन्होंने सरकार से एवं विरोधी दलों से भी आग्रह किया कि वोटों की राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता की रक्षा को प्रमुखता देनी चाहिए। शिविर में आर्यवीर दल के तीन स्थानों से आए हुए आर्यवीरों के बल प्रदर्शन ने पर्याप्त आकर्षण उत्पन्न किया। शिविर में भोजन की व्यवस्था नि शुल्क थी।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने, 1000/- रुपये की राशि आर्यवीर दल के लिए प्रदान करने की घोषणा की।

विशेषसंवाददा.

शोक समाचार

(1) गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (गाजियाबाद) के प्राचार्य एव आर्य वीर दल उ0 प्र0 के मुख्य संचालक श्री धर्मपाल जी के पूज्य पिता जी श्री पहलवान धनन्तर सिंह जी का दिनांक 28-10-88 को हृदयगति रुक जाने के कारण आकस्मिक निधन हो गया। वे एक तपोनिष्ठ, वैदिक प्रेमी आर्यपुरुष थे। उनका सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित रहा। उनके निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ0 प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा है कि ऐसे महान पुरुषों की छत्रछाया में रहकर कार्य करने का सौभाग्य विरलों को ही प्राप्त होता है। योग्य पिता के योग्य पुत्र को विधाता ने आज उस सौभाग्य से वंचित कर दिया है। प्रभु की व्यवस्था में किसी का वश नहीं है।

श्री प्रधान जी ने शोकसन्तप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी अन्तर्वेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिवारजनों के धैर्य हेतु परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की है।

(2) आर्य समाज मेरठ शहर के साप्ताहिक सत्संग में यह जानकर शोक छा गया कि हमारे कर्मठ पुलिस डी0आई0जी0 मेरठ श्री रामजी अरुण की माता जी का देहावसान हो गया है। पूज्य माता जी धर्मनिष्ठ और एक आदर्श महिला थीं।

पुस्तक - परिचय

डा0 विश्वनाथ सहाय की दो मूल्यवान कृतियाँ

(1) **मातृभूमि (देवभूमि) भारत** मूल्य 6.50 रुपये मात्र,
प्रकाशक - पचवि प्रकाशन, 75-बी, आर्य भवन,
वकील रोड, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ0प्र0।

भारत वर्ष के इतिहास अनेक देशी विदेशी लेखकों ने लिखे हैं किन्तु बालोपयोगी ऐसी इतिहास-पुस्तकों की बड़ी कमी है जिनमें सरल भाषा और शैली में भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं को वर्णित किया हो। आलोच्य पुस्तक आर्य विद्यालयों की छोटी कक्षाओं के इतिहास के पाठ्यक्रम की दृष्टि से लिखी गई है। इसमें सृष्टि उत्पत्ति, सृष्टि विकास, धरती पर मनुष्य का जन्म जैसे प्रागैतिहासिक विषयों से लेकर भारतीय इतिहास के बौद्ध एवं जैन काल तक की घटनाओं को सुगम एवं सुबोध शैली में वर्णित किया है। परिशिष्ट में प्रत्येक पाठ पर प्रश्न भी दिये गये हैं जिनसे अध्यापक सहायता ले सकते हैं। आशा है आर्य संस्थायें अपने पाठ्यकम में इस उपयोगी पुस्तक को स्थान देंगी।

(1) **नीति कथायें** मूल्य 7-00 रुपये मात्र
लेखक तथा प्रका क उपर्युक्त

वेदों की सूक्तियों पर आधारित यह पुस्तक आर्य शिक्षण संस्थाओं में नैतिक शिक्षा के पा यक्रम में रक्खी जा सकती है। वेद मंत्रों में वर्णित सदाचार शिक्षाओं को लेखक ने नाना दृष्टान्तों, कथाओं तथा [illegible] से संपुष्ट किया है। बालकों को वेदों की गम्भीर शिक्षायें सुगम शैली में दी जा सकती हैं। इन सूक्तियों और [illegible], को बालक तथा अन्य लोग भी याद करें तथा समय [illegible] पर प्रयोग करें तो वेद के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक, दर्शनवाचस्पति

मुस्लिम युवक की शुद्धि

रविवार दिनांक 23 अक्टूबर 88 को कैन्टूमेन्ट आर्य समाज सदर, लखनऊ में 28 वर्षीय मुस्लिम युवक की शुद्धि श्री सच्चिदानन्द मन्त्री के ब्रह्मत्व में की गई व उसका नाम मोहम्मद यासीन से बदलकर प्रतापचंद्र रखा गया। राजस्थान से आए स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा आशीर्वाद व उपदेश दिया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, मेस्टन रोड, कानपुर का 109वाँ वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी शुक्रवार 3 मार्च से सोमवार 6 मार्च 1989 तक समारोह पूर्वक श्रद्धानन्द पार्क में मनाया जाना निश्चित हुआ है। शुक्रवार 3 मार्च को शोभा यात्रा (नगर कीर्तन) सायंकाल 4 बजे से तथा शनि, रवि, सोमवार 4,5,6 महोत्सव।

आवश्यकता

गुरुकुल विद्यालय के अन्य विषयों के साथ गणित विज्ञान तथा अंग्रेजी कक्षा 8 तक शिक्षण हेतु वानप्रस्थी - शिक्षकों तथा एक वानप्रस्थी पुरोहित। एक समर्पित सेवक भी आर्य समाज मंदिर के सभी कार्यों हेतु। रहने का स्थान, बिजली व पानी फ्री, गृहस्थी के रहने का प्रबन्ध नहीं है। स्वीकृत वेतन सहित पत्र-व्यवहार करें।

जगत नारायण,
रैन बसेरा, बुलन्द बाग,
लखनऊ-18

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

जि0 स0 2241/57 मार्ग शीर्ष शुक्ल 2, रविवार, सवत 2045 वि0, दिनांक 11 दिसम्बर 1988 घोषणा पत्र स0 7/28-2-85



या मेधा देवगणा पितरश्चोपासते तया

मामद्य मेधयाग्ने मेधाविन कुरु
यजु 32/14/

हे प्रभो। जिस मेधावी पावनी बुद्धि प्राप्ति के लिए हमारे पूर्वज एव देवता प्रार्थना करते आये हैं वही बुद्धि हमे प्रदान कीजिए।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अक	49

प्रश्न केवल राम जन्मभूमि का नहीं है

न्याय की तुला

रामजन्म भूमि विवाद पर केन्द्रीय शासन की मंत्रिमण्डलीय समिति ने इस मामले को इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच स्थित खण्डपीठ के समक्ष प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय समिति की जिस बैठक में लिया गया उसमें उ0प्र0 के मुख्य मत्री श्री नारायण दत्त तिवारी भी उपस्थित थे। समिति में गृहमत्री भारत सरकार ने सम्बद्ध पार्टियों से हुई बात-चीत का विवरण प्रस्तुत करते हुए उसकी समीक्षा की और अन्त में यही निर्णय लिया गया कि इस मामले को न्यायालय के सुपुर्द कर दिया जाये और फतवा वहीं से हासिल किया जाय।

हम शासन के इस निर्णय से असहमति व्यक्त नहीं करते परन्तु हम यहाँ यह जानना चाहते हैं कि न्याय की तुला पर इतिहास के किस पन्ने से विचार किया जायेगा। प्रश्न केवल भारतीयों के पूर्वजों की जन्मस्थली वापस करने का नहीं है जो जीवत लाल और ललनाए हजारों लाखों की सख्या में मुस्लिम शासन काल के बर्बर युग में हमसे छीन छीन कर विधर्मी बनाए गये उनकी वापसी का भी है। किसी देश पर हमला करना अन्याय है उस देश की सस्कृति पर हमला करना उससे भी बडा अन्याय है। वर्तमान न्यायालय जिन कानूनों का सहारा लेता है वे आधुनिक है। इतिहास के उस युग में की गई चोरी डकैती अपहरण लूटमार बलात-धर्म परिवर्तन आदि की सजाओं और पुनरावृत्ति के लिए उनमें कोई प्राविधान ही नही है। यह तो ऐसा ही अन्धा कानून हुआ कि लूट का माल अपने पास रखे रहो कुछ समय बाद वह कानूनन अपना हो ही जायेगा।

कतिपय मुस्लिम नेता चाहते है 1947 के पूर्व की स्थिति लाई जाये। क्यों? समय क्या कोई विभाजन रेखा है न्याय की। न्याय तो शाश्वत माना गया है। 1947से पूर्व की स्थिति मानी जाये तो वह स्थिति क्यों न मानी जाये जब बाबर या कोई मुस्लिम आक्रान्ता यहाँ आया ही न था। हम चाहते है वह स्थिति लाई जाये जब खून के प्यासे बर्बर मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इस शान्त देश की शान्त और सुशीतल सस्कृति को अपने खूनी पजे से लाल करके न जाने कितने मंदिरों को तोडा और उन्हें मस्जिद बनाया। कितने लाल और ललनाओं को विधर्मी बनाया। है कोई अन्तर्राष्ट्रीय कानून या संविधान की धारा जो हमारे इन लाल और ललनाओं को जो आज दाढी और बुरके में घूम रही है। हमें वापस दिला सके - हमारी राजपूत बेटी बेनजीर हमें मिल सके। अगर नहीं तो यह न्याय इतिहास के साथ धोखा है। वह न्याय जो इतिहास के तथ्यों और सबूतों को झुठला दे- न्याय नही कहा जा सकता । न्याय तो हमें यह मिलना चाहिए कि जहाँ जहाँ ऐसी घटनाए हुई हैं उन सब पर हमारा अधिकार है ।

आज यह ऐतिहासिक तथ्य किसी से छिपा हुआ नहीं है कि भारत का रहने वाला हर मुसलमान आर्यों की ही सतान है। स्वय बेनजीर भुट्टो ने अपनी आत्मकथा में इस बात को स्वीकारा है कि मेरे पूर्वज राजपूत हिन्दू थे। इसी प्रकार हमारे पूर्वजों की जन्मस्थली चाहे वह राम की अयोध्या हो अथवा कृष्ण की मथुरा उसे विदेशी आक्रमणकारियों ने तोड़कर मस्जिद बनाया। मूलत और पुरातात्विक अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है। अत न्याय और तथ्य के आधार पर हम अपने मुस्लिम भाइयों से यही निवेदन करेंगे कि वे अपने पूर्वजों का सम्मान करते हुए रामजन्म भूमि को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाए ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- मार्ग शीर्ष शुक्ल 2 संवत् ।। दिसम्बर 1988
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

विश्व आर्य महासम्मेलन बुलाने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को है

दिल्ली में आयोजित तथाकथित विश्व आर्य सम्मेलन से जनता सावधान रहे

"ते के न जानीमहे"

नीतिशास्त्र में हमें चार प्रकार की मानववृत्तियों का उल्लेख मिलता है। सबसे निकृष्टतम वृत्ति वह है जब व्यक्ति पारम्परिक ढग से जनसेवा में प्रवृत्त संस्थाओं अथवा व्यक्तियों से ईर्ष्यालु बनकर उस मूल पर ही प्रहार करने लगता है जिस पर वह बैठा हुआ है। अपने स्वार्थ में वह उस परमार्थरूपी वृक्ष को नष्ट कर देने पर उद्यत हो जाता है जिसकी सुशीतल छाया में "पर" के साथ उसके "स्व" का अर्थ भी अन्तर्निहित है। ऐसी ही वृत्ति के व्यक्तियों के लिए भर्तृहरि ने "ते के-न जानीमहे" कहकर उनकी निम्नश्रेणी की सज्ञा निश्चित करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की है। व्यक्ति से सस्था सदैव महान् मानी जाती है। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ हृदय में उमड़ती हुई अगाध निष्ठा वाले जिन सन्तों और मनीषियों ने हमारी शिरोमणि सभा को कभी अंकुरित किया था और जो आज विशाल वट वृक्ष के रूप में संसार के कोने-कोने में प्यारे वैदिक धर्म की शीतल मन्द सुगन्ध समीरण युक्त छाया से जन-जन को सुरभित और शीतल कर रही है। जिसके अतीत में आर्यजाति के उत्थान के लिए किए गये अगणित बलिदानों की अमर गाथाए छिपी हुई हैं। और जिसने, आर्यजाति के सम्मुख समय-समय पर आये भीषण संकट में अपने सम्मेलनों, समारोहों और निश्चयों द्वारा अजेय चट्टान के रूप में खड़े होकर आर्यजाति की अस्मिता को गौरवगिरि के उच्चशिखर तक पहुँचाए रखा है। यह वह सस्था है जिसे आर्यजाति के प्राण स्वामी श्रद्धानन्द और वीरलेखराम जैसे अगणित बलिदानियों ने अपने रक्त से सींच-सींच कर बड़ा किया है तो महात्मा नारायण स्वामी जैसे अडिग महारथी ने निजामशाही के क्रूर पंजों में तड़पती हुई इस जाति को नवजीवन देकर विजयश्री से विभूषित किया-ऐसी पवित्र और सर्वमान्य संस्था के प्रति अपनी निष्ठा को तिलाजलि देकर कतिपय निहित स्वार्थी व्यक्तियों द्वारा दिल्ली में तथाकथित "विश्व आर्य महासम्मेलन" का आयोजन किया जाना प्रवंचना और विश्वासघात की चरम सीमा ही कही जायगी ।

हमारी प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा इस अमान्य, अवैधानिक तथाकथित "विश्व आर्य-सम्मेलन" को किसी प्रकार का सहयोग (तन,मन अथवा धन से) न दिए जाने की पुरजोर अपील की है हम अपने पाठकों को यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि कतिपय स्वार्थी तत्व इस तथाकथित सम्मेलन के नाम पर अपना स्वार्थसाधन करना चाहते हैं, धन बटोरना चाहते हैं और जनता में आर्य समाज की छवि को धूमिल करना चाहते हैं।

इसलिए इस तथाकथित सम्मेलन से आर्य जनता सावधान रहे और इसे किसी प्रकार का सहयोग न दे।

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सभा की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक- 8 जनवरी 1989 रविवार को प्रातः- ।। बजे नारायण स्वामी भवन 5 मीरा बाई मार्ग, लखनऊ में होना निश्चय हुआ है।

कृपया नियत तिथि और समय पर पधार कर कार्यसम्पादन में सहयोग प्रदान करें ।

-मनमोहन तिवारी,
सभामंत्री ।

आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहदधिवेशन में सर्वसम्मत प्रस्ताव

लखनऊ 12-13 नवम्बर। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ के प्रांगण में विशाल पांडाल में हुआ। जिसमें उत्तर प्रदेश स्थित आर्य समाजों के हजारों प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आगामी वर्ष के लिए पं0 इन्द्रराज, प्रधान और श्री मनमोहन तिवारी, मंत्री सर्वसम्मति से चुने गए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री बलदेव सिंह आर्य और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

अधिवेशन में श्री जयनारायण अरुण ने प्रस्ताव रखा कि इस समय आर्य समाज के संगठन में कुछ स्वार्थी तत्व आर्यसमाज के नाम का दुरुपयोग कर रहे हैं और व्यक्तिगत रूप से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अथवा विश्व आर्य सम्मेलन के नाम से जनता से धन एकत्र करने की अपील कर रहे हैं। यह अधिवेशन आर्य जनता से जोरदार रूप से आह्वान करता है कि इस प्रकार के सम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को ही है अन्य किसी को नहीं। यह अधिवेशन आर्य जनता से अपील करता है कि आर्य समाज से निष्कासित तथा संगठन विरोधी लोगों को उनके वयक्तिगत स्वार्थ के लिए न तो धन दें और न किसी प्रकार का सहयोग दें।

उक्त प्रस्ताव का श्री मनमोहन तिवारी ने अनुमोदन किया और करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए सार्वदेशिक सभा से माँग की गई कि सार्वदेशिक सभा, संगठन विरोधी लोगों के इस कुचक्र से आर्य जनता को आगाह करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि आगामी 30-31 दिसम्बर और 1 जनवरी 1989 को अलवर में आर्य महासम्मेलन की तैयारियाँ जोरों पर चल रही हैं। इसलिए आर्यजनों को अलवर सम्मेलन के लिए अपना पूरा सहयोग सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए।

मनमोहन तिवारी
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0,
लखनऊ।

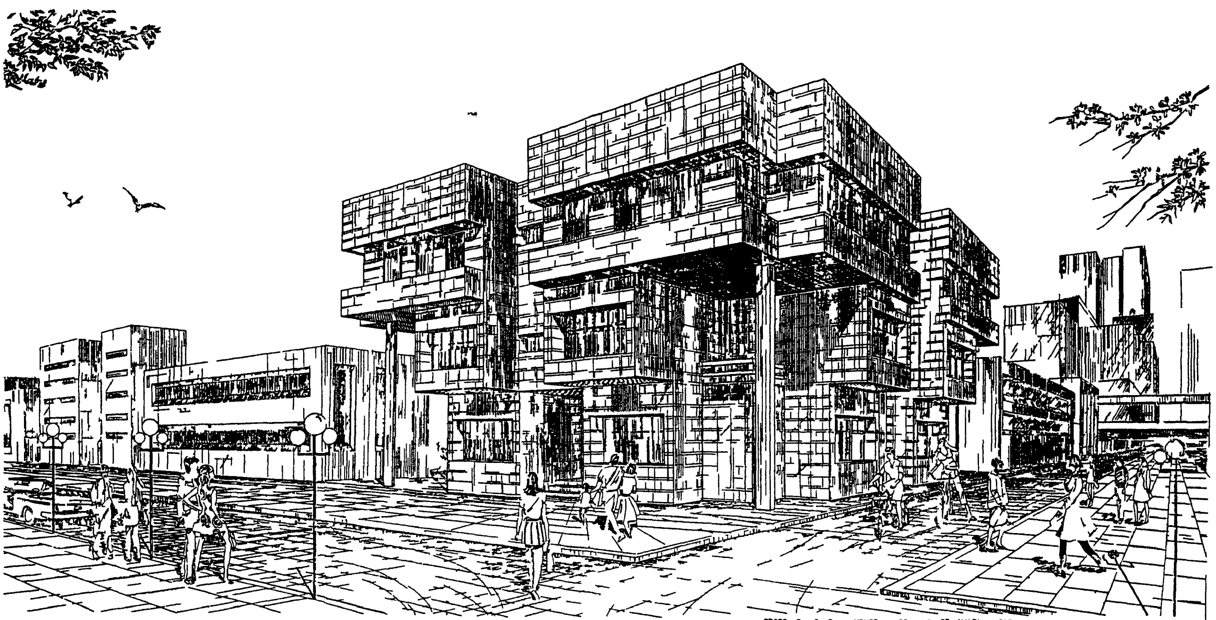
हीरक जयन्ती महोत्सव

आर्य समाज गाजीपुर के हीरक जयन्ती महोत्सव पर आयोजित पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन एवं पूर्वान्चल आर्य वीर सम्मेलन क्रमशः दिनांक 16 एवं 17 दिसम्बर 1988 को सम्पन्न होगें। आर्य जनता सादर आमन्त्रित है ।

आर्य समाज नई बाजार बस्ती

अठारहवाँ वार्षिकोत्सव

"आर्य समाज नई बाजार बस्ती" का "अठारहवाँ वार्षिकोत्सव" "स्वामी दयानन्द शिशु विधालय सुर्तीहट्टा, बस्ती" के प्रांगण में दिनांक 18,19,20, तथा 21 दिसम्बर 1988 को परमोल्लास के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। जिसमें श्री सोहनलाल पथिक, श्री उत्तमचन्द शरर, श्रीमती ऊषा शास्त्री, श्री त्रियुगी नारायण, श्री जय प्रकाश आर्य, श्री शिवनारायण वेदपाठी पुस्तक विक्रेता गण सूचना प्राप्त होने पर वे साहित्य लेकर पधारने का कष्ट करें ।



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के परिसर में प्रस्तावित स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन का विहंगम दृश्य

तुम पर नाज है

आर्य समाज के कर्मठ सेवक



श्री पं. इन्द्रराज जी

आर्य समाज के प्रवर्तक व वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द-सरस्वती के तपोनिष्ठ गुरु विरजानन्द जी महाराज ने जब उनकी शिक्षा समाप्त की तो प्रतिज्ञा कराई कि जीवन पर्यन्त आर्यावर्त में आर्ष ग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे एवं वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण भी अर्पित कर दोगे। स्वामी दयानन्द ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुये भारत में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु अनेक स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना की।

10 अप्रैल, सन् 1875 को प्रथम आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की गयी थी। आर्य समाज, मेरठ शहर की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 29 सितंबर, 1878को सम्पन्न की। परोपकारिणी सभा की स्थापना 15 अगस्त, 1880 को हुई व 18 अगस्त, 80 को उसे स्वामी जी द्वारा पंजीकृत कराया गया था। बाद में उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना भी मेरठ में ही 29 दिसंबर, सन् 1886 को हुई थी व तब इसके प्रधान थे लक्ष्मण स्वरुप जी। और अब इस पद को गौरवान्वित कर रहे हैं श्री इन्द्रराज जिन्होंने विगत पच्चीस से अधिक वर्षों में अपने श्रेष्ठाचरण, कर्मठता तथा दानशीलता से आर्य समाज की अखण्ड सेवा करते हुये निज जीवन समाजसेवा में अर्पित किया हुआ है।

रावलपिंडी में 10 जुलाई, 1930 को जन्मे श्री इन्द्रराज के पिताश्री दीवान चन्द व माता श्रीमती हरदेवी का परिवार आर्य समाजी तथा ब्रहमलीन स्वामी आत्मा नंद महाराज का अनन्य भक्त रहा है। स्वयं श्री इन्द्रराज ने उनके योग्य शिष्य के रूप में वैदिक धर्मपरायणता का सर्वहितकारी ज्ञान प्राप्त किया। गुरुकुल रावल से स्नातक होने के उपरांत श्री इन्द्रराज सिद्धांत शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर समाज सेवा में जुट गये। धर्मपरायण पत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी के सहयोग एवं त्याग भावना से उत्प्रेरित श्री इन्द्रराज ने स्वयं को सर्वात्मना आर्य समाज के लिये समर्पित कर दिया।

सन् 1953 में आप आर्य समाज, मेरठ शहर के उपमंत्री बने थे व सन् 1958 में मंत्री। उसके बाद तो आपने अनेकों बार इस पद सहित केंद्रीय आर्य समिति, मेरठ, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्रीपद को सुशोभित किया तथा अब आप केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ और तीन वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान हैं।

श्री इन्द्रराज "हिन्दी रक्षा आंदोलन" के संबंध में सन् 1957 में पांच माह हिसार जेल में और सन् 66 में हुये "गोरक्षा आंदोलन" में एक माह तिहाड़ जेल में बंदी रहे हैं। वैदिक संस्कार कराने में अत्यन्त निपुण पंडित इन्द्रराज का कार्यक्षेत्र आर्यसमाज है। जनपद की प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकलापों में आपका निरन्तर योगदान रहा है। प्रदेश के समस्त गुरुकुलों को आपका मार्गदर्शन मिला है। आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, आर्य समाज, हरिद्वार, श्री बुद्धदेव विद्यालंकार द्वारा स्थापित "गुरु-कुल प्रभात आश्रम, मेरठ" सहित अनेक शिक्षा संस्थायें भी आपके नियंत्रण में जनसेवा में रत हैं।

विगत वर्षों में शायद ही कोई ऐसा दिवस रहा है जब पं0 इन्द्रराज समाज के कार्यों, प्रचारार्थ एवं संस्कारों हेतु प्रदेश भर में किसी न किसी स्थान पर उपस्थित न रहे हों। आपने संस्कारों से प्राप्त तथा वैदिक साहित्य बेचने से अर्जित लाखों रुपये की राशि समाज की विभिन्न संस्थाओं को सविनय प्रदान की है। सरल, कर्मठ, दानी एवं विद्वान पं0 इन्द्रराज समय व धन द्वारा समाज की अक्षुण्ण सेवा करते आ रहे हैं।

आप सन् 1973 में संपन्न आर्यसमाज शताब्दी समारोह के स्वागत मंत्री और सन् 78 में मेरठ नगर समाज स्थापना शताब्दी समारोह के मंत्री थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के कानपुर अधिवेशन में सन् 74 में श्री बी0डी0 जत्ती ने आपको सम्मानित किया था। श्री इन्द्रराज ने अपने यशस्वी जीवन में कई समारोहों की स्मारिका का कुशल संपादन भी किया है। बहु आयामी प्रतिभा एवं अनुकरणीय सेवावृत्ति के धनी पं0 इन्द्रराज सौम्य व्यक्तित्व के स्वामी हैं और आतिथ्य सत्कार हेतु सदा तत्पर रहते हैं।

एक भेंट में आपने कहा- "देश में वोटों की जो राजनीति चल रही है वह जनसेवा के दृष्टिकोण से अनुचित है। भारतीय जनप्रतिनिधियों को राष्ट्र तथा जनसाधारण के हितों हेतु ही कर्त्तव्य पालन करना चाहिये, अन्य किसी परिप्रेक्ष्य में नहीं, जिस प्रकार से पश्चिमी देशों में धर्मपरिवर्तन पर संवैधानिक प्रतिबन्ध लगाये गये हैं, उसी भांति भारत में जनतंत्र होते हुये भी इस विषय में आवश्यक नियम धारायें होनी चाहियें जिससे भारत की एकता व अखंडता स्थापित रह सके। इस संदर्भ में राष्ट्र को हिंदू अथवा आर्य राष्ट्र घोषित किया जाना भी उचित रहेगा क्योंकि हम मूलतः आर्य समाज हैं और अपनी परम्पराओं एवं संस्कृति की सुरक्षा रखने में सक्षम होकर ही सर्वजन को संस्कारपूर्ण सुखी जीवन का मौलिक अधिकार प्रदान कर पायेंगे।

राजनेताओं के विषय में पूछने पर पं0 इन्द्रराज ने दिवंगत इन्दिरा गांधी का उल्लेख करते हुये कहा-"वह योग्य थीं तथा प्रत्येक कार्य निष्ठाभाव से पूर्ण करती थीं। सर्वाधिक प्रशंसनीय बात यह है कि इन्दिरा जी हरेक विषय वस्तु का गूढ़ता से मनोविश्लेषण व चिंतन करती थीं और तदुपरान्त ही कार्य सम्पन्न होता था।

1245, गौरीपुरा निवासी श्री इन्द्रराज वैदिक विचारधारा के वह सत्प्रेरक सेवक हैं जिनके त्याग, सदाचरण, दृढ़ संकल्प और अनुकरणीय सेवाभाव से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित पथ आलोकित होता रहेगा ।

केशव जैन "केश"

आर्य नेता विजयी

आर्यसमाज मैनपुरी के निष्ठावान सदस्य डा॰सुमन्त कुमार जी गुप्त, नगरपालिका मैनपुरी के अध्यक्ष पद पर तथा श्री जितेन्द्र आर्य जलाली (अलीगढ़) से टाउन एरिया के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हैं। उक्त दोनों महानुभाव आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं परम ऋषिभक्त हैं। इन पदों पर विजयी होने के उपलक्ष्य में आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

मनमोहन तिवारी, सभा मंत्री।

आवश्यक सूचना

उ0प्र0 विद्यालय प्रबन्धक महासभा के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने सूचित किया है कि महासभा का बाइसवां महाधिवेशन दिनांक 30 व 31 दिसम्बर 1988 को के0जी0के0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद में बड़े भव्य रूप से सम्पन्न होने जा रहा है। इस अधिवेशन में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के भी आने की पूर्णसम्भावना है तथा प्रबन्धतंत्र से सम्बन्धित अनेक विद्वान एवं शिक्षाविद् भाग ले रहे हैं।

विद्यालयों के प्रबन्धतंत्र से संबंधित सभी पदाधिकारियों सदस्यों एवं विद्या प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर महाधिवेशन को अपने अमूल्य सुझाव दे कर सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें।

बरेली में वैदिक धर्म प्रचार

दिनांक 22,23,24 नवम्बर 1988 में आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद-बरेली द्वारा आयोजित प्रचार शिविर जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के धार्मिक प्रवचन हुए। जिला सभा के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों तथा आर्य वीर दल के सहयोग से सम्पन्न यह प्रचार कार्य, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

यज्ञ चिकित्सा विज्ञान

(स्व0 वीरसेन वेदश्रमी,
वेद विज्ञानाचार्य, वेदसदन,
महारानी पथ,
इन्दौर-452007

1- यज्ञ से सब कामनाओं की पूर्ति -

तैत्तिरीय संहिता में लिखा है कि- सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते- अर्थात् समस्त कामनाओं के लिये यज्ञ का उपयोग होता है। इसलिये समस्त लौकिक एवं पारलौकिक कामनाओं की पूर्तिकेलिये भारत में यज्ञों का अनुष्ठान होता था और अब भी बहुतसी परिस्थितियों में यज्ञ किये जाते हैं तथा उनका किसी न किसी प्रकार का परिणाम प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में दृष्ट होता है। यज्ञ द्वारा ही तो नित्य हम- अस्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय- अर्थात् हमें प्रजा, पशु ब्रह्मवर्चस् अन्नादि से समृद्ध कर - यह कामना करते हैं। इसी प्रकार यज्ञान्त में- सर्वान्नः कामान्त्समर्धय (शतपथ) यह बोलते हुए अपनी समस्त कामनाओं की समृद्धि की कामना यज्ञ में करते हैं। यज्ञ से समस्त कामनाओं की पूर्ति के बारे में सहसा विश्वास लोगों को नहीं होता है। परन्तु प्राचीन ऋषियों ने दृढ़ता पूर्वक इसका प्रतिपादन निम्न शब्दों में किया है-

प्रत्यक्षेनानुमित्या वा यस्तूपायोन बुध्यते।

एनं वदंति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता।।

अर्थात् जहाँ प्रत्यक्ष और अनुमान से कोई उपाय प्रतीत नहीं होता है उस का उपाय वेद से ज्ञात होता है- इसी से वेद का वेदत्व है। यही वेद की अपूर्व सामर्थ्य है।

2- यज्ञ से रोग मुक्ति-

यजुर्वेद अध्याय 18 में जहाँ सैकड़ों कामनाओं की पूर्ति से प्रतिपादित की गई है वहीं अयक्ष्मंच में, अनामयच्च मे, जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वंच मे यज्ञेन कल्पन्ताम्- का भी उल्लेख 16 वें मन्त्र में है। अर्थात् मेरा यक्ष्मादि रोगा से रहित शरीर आदि और रोग विनाशक कर्म, मेरा रोगादि रहित और इसकी सिद्धि करने वाली औषधियाँ, मेरा जिससे जीते हैं या जो जीवन प्रदान करता है, वह व्यवहार और पथ्यभोजन, मेरा अधिक आयु का होना आदि से सामर्थ्यवान् बने। इस प्रकार वेदने आरोग्यता निमित्त रोग निवारण के लिये एवं जीवन वृद्धि के लिये यज्ञ करने का उपदेश या आदेश दिया है। इस पर श्रद्धा रखते हुए रोग अवस्था में रोग मुक्ति के लिये यज्ञ भी अवश्य करना चाहिये।

3- यज्ञ, चिकित्सा का प्रबलतम साधन है-

अर्थववेद काण्ड 3, सूक्त 11 के प्रथममन्त्र में कहा है-

- मुंचामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्-

अर्थात् - मैं तुझ रोगी को जीवन प्रदान करने के लिये ज्ञात और अज्ञात बड़े से बड़े राजयक्ष्मादि रोगों को यज्ञ में हवि प्रदान द्वारा रोग मुक्त करता हूँ। तात्पर्य यह है कि सभी प्रकार के प्रकट या अप्रकट तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म रोगों से मुक्ति प्रदान करने का प्रबलतम साधन यज्ञ है। इन दृढ़ विश्वास के साथ इसका उपयोग चिकित्सा कार्य में करना चाहिये। यज्ञ चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना होनी चाहिये और यज्ञ चिकित्सा के शिविरों का भी आयोजन कर के विश्व को निरोग बनाने एवं सुखी करने का प्रयत्न करना चाहिये। यह चिकित्सा का व्यावहारिक क्रियात्मक सुगम मार्ग का प्रबलरूप से जनता के सन्मुख उपस्थित करना चाहिये।

4- निराश एवं असाध्य रोग स्थिति में यज्ञ से लाभ -

अर्थववेद काण्ड 3, सूक्त 11 के दूसरे मन्त्र में कहा है -

- यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमाहरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय ।।-

अर्थात् यदि आयु नष्ट हो रही ज्ञात हो रही है या इससे परे हैं यह ज्ञात हो रही है या मृत्यु समीप ही आ गई है। ऐसी सब अवस्थाओं में मृत्यु के गोद से निकाल कर सौ शरद पर्यन्त जीवन के लिये मैंने तेरा यज्ञ एवं हवि से संस्कारित हाथों से स्पर्श किया है- यह मन्त्र यज्ञ की और भी अधिक महान् शक्ति का घोतक है। इतनी महान् सामर्थ्य यज्ञ की ज्ञात होने पर यज्ञ द्वारा चिकित्सा कार्य में अवश्य प्रवृत्त होना चाहिये। इसी महान् शक्ति का समर्थन अर्थववेद काण्ड- 4, सूक्त, 13, के मन्त्र 6 में भी निम्नप्रकार है-

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।
अयं मे विश्वभेषजो अयं शिवाभिमर्शनः ।।

अर्थात्- मेरा यह हाथ ऐश्वर्यवान् है- परम सामर्थ्यवान है। मेरा यह हाथ समस्त रोगों की चिकित्सा में समर्थ हो गया है- अब इसका स्पर्श या मर्दन कल्याणकारी है । इसी प्रकार अर्थववेद काण्ड 7, सूक्त 76 के मन्त्र पांचवें में कहा है-

-कथं हतत्र त्वहनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे -

अर्थात् - हे मृत्यु, तुने जिस घर में हमने यज्ञ किया है उसको क्यों मारा। ये वाक्य भी यज्ञ चिकित्सा के महत्व को प्रकट कर रहे हैं।

5- औषधियों का यज्ञ द्वारा उपयोग प्रभावशाली होता है-

अर्थववेद काण्ड 8, सूक्त 2 के मन्त्र 6 में कहा है-
-जीवलां नघारिषां जीवन्ती मोषधी महम् ।
त्रायमाणां सहमानां सरस्वतीमिह हुवे स्मा अरिष्ट तातये ।।

अर्थात्- जीवन देनेवाली, कभी न हानि करने वाली, जीवन प्रदान करने वाली, रक्षा करनेवाली, रोग दबाने वाली, बल देने वाली औषधी को रोग निवारण के लिये मैं हवि के रूप में प्रयुक्त करता हूँ- इसी प्रकार की औषधियों को यज्ञ में हवि रूप में प्रयोग करने की प्रेरणा वेद देते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में धूनी, धूम्रादि के प्रयोग अनेक रोगों की निवृत्ति के लिये ऋषियों ने लिखे हैं। इन धूनियों का प्रयोग अब भी ग्राम-ग्राम में प्रचलित है। ये धूनियाँ अर्थात् औषधि विशेष के धूम्र बाल रोगों के लिये बहुत प्रचलित थे, तथा इनका उपयोग स्त्री, पुरुषों , पशुओं के विविध रोगों पर तथा श्वासादिरोगो में भी प्रचलित है। मानसिक रोगों, उन्माद रोगों जिनको, भूतबाधा व ग्रहबाधा के रूप में माना जाता था उनके लिये तो अति प्रचलित यह धूनी चिकित्सामान्य थी। कृषि कार्य में, वृक्षों के रोगों में भी धूम्र चिकित्सा को लाभकारी मान्य किया जाता रहा ।

6- रोगियों का यज्ञ का सेवन अतिलाभकारी है -

प्रायः समर्थ रोगी अपनी चिकित्सा के लिये देश-विदेश या पर्वतीय स्थानों पर जाते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि यज्ञ का भी प्रयोग करें तो उनको अति शीघ्र लाभ होगा ही और बहुत से व्यय से भी बच सकते हैं तथा उन के द्वारा आयोजित यज्ञ से अन्य अनेक रोगियों को भी लाभ होगा। वर्तमान समय की चिकित्सा प्रणाली में कठिन एवं चिन्तनीय स्थिति में प्राणवायु-आक्सीजन देने की प्रणाली, वायु चिकित्सा का ही एक अंग है। रोग की चिकित्सा के लिये औषधि सेवन, इन्जेक्शन आदि का सर्वत्र प्रचार है। खाने की औषधियों से अधिक शीघ्र प्रभाव इन्जेक्शन से होता है परन्तु यज्ञ द्वारा रोगी को भेषज वायु के माध्यम से श्वास-प्रश्वास द्वारा स्वाभाविक रूप से औषधितत्व प्रविष्ठ होकर अधिक प्रभावशाली रूप में, अतिशीघ्र आश्चर्यजनक रीति से लाभ करता है। जो रोग वर्षो से शरीर में घर किये हुए हैं, वे भी बहुत अंशों में अतिशीघ्र दूर हो जाते हैं- ऐसा हमारा अनेक बार का अनुभव है ।

7- पर्वतीय स्थानों में आरोग्यता का रहस्य-

पर्वतीय स्थान एवं पर्वतों की घाटियाँ वृक्ष, वनस्पति, औषधियों तथा विविध गुल्म लता, पुष्पों से पूर्ण होती है। सूर्य के ताप से उनमें से मन्द-मन्द रूप से औषधियों का सार वहां की वायु में भर जाता है और इतस्ततः प्रवाहित भी होता रहता है। उस में भेषजपूर्ण वायु के सेवन का अपूर्व लाभ वहाँ जाने पर स्वतः ही अहर्निश उन्हें प्राप्त होता है जो पर्वतीय स्थानों पर जाते हैं। पर्वतीय मार्ग ऊँचे-नीचे होते हैं। उन पर भ्रमणार्थ जाने से श्वास प्रश्वास स्वभावतः गहरा चलने लगता है तथा शीघ्र भी। इससे पर्वतीय भेषजवायु का प्रभाव शीघ्र होने लगता है और रोगी को स्वास्थ्य लाभ भी विशेष होने लगता है। गहरे श्वास प्रश्वासों से स्वाभाविक रूप से प्राणायम की क्रिया भी स्वतः होने लगती है। अर्थात् भेषज युक्त वायु में गहरे श्वास- प्रश्वास से आरोग्यता शीघ्र प्राप्त होती है तथा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है ।

क्रमशः ----

वृष्टि यज्ञ और ऋषि दयानन्द

श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती,
गुरुकुल प्रभात-आश्रम, भोला-झाल (मेरठ)

ऋषि दयानन्द इस युग के एक ऐसे विद्वान् महापुरुष थे जो वेदों को परम प्रमाण मानते थे। वेदानुमोदित एवं प्रमाणित समस्त व्यवहार उनके लिये ईश्वर के आदेश के तुल्य थे। किसी भी मूल्य पर वैदिक मान्यताओं का तिरस्कार सहन नहीं सकते थे। बहुत सी वैदिक मान्यतायें जो पल्लवग्राही पण्डित्य अर्धनास्तिक व्यक्तियों को अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से युक्त प्रतीत होती थीं, ऋषि दयानन्द ने उनका अपनी लेखनी से मण्डन किया तथा व्यवहार के द्वारा भी उनका प्रत्यक्षीकरण कराके उनकी प्रमाणिकता प्रस्तुत की ।

डा० स्वामी सत्य प्रकाश जी द्वारा "यज्ञ और वृष्टि" शीर्षक से ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करना तथा यज्ञ से वृष्टि नहीं होती है यह ऋषि दयानन्द का मन्तव्य ऐसा सिद्ध करने का असफल प्रयास किया गया था। जिसका उत्तर ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य के अनेक प्रमाणों में से दो प्रमाणों को देकर मैंने आर्य जनता के समक्ष ऋषि की मान्यता को दिखाने का प्रयास किया था कि ऋषि दयानन्द यज्ञ से वृष्टि होती है ऐसा मानते थे। अब मैं ऋषि दयानन्द जी के दो पत्रों के द्वारा यह दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ कि वे वृष्टि यज्ञ के लिये अन्यों को भी प्रेरित करते थे, तथा एक बार कराया भी था जैसा कि पाठकों को उनके इन दो पत्रों के उद्धरण से स्पष्ट विदित हो जायेगा। वे पत्रोद्धरण निम्न हैं :-

प्रथम पत्र ऋषि दयानन्द जी ने श्री सज्जन सिंह जी महाराणा मेवाड़ाधीश उदयपुर को लिखा है -

"आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिये एक वर्ष में 10,000=00 (दस हजार) रुपये के घृतादि का जिस रीति से होम हुआ था उसी रीति से प्रतिवर्ष होम कराइये परन्तु इनमें से पांच हजार रु० (5000=00रु०) के सुगन्धित घृत, मोहनभोग का होम वर्षा ही में जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेकर विजय दशमी तक चारों वेदों के ब्राह्मणों का वरण करा । (एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रखकर होम कराइयेगा ।

(ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन)

द्वितीय पत्र- यह पत्र ऋषि दयानन्द जी ने यशवन्त सिंह राठौर महाराणा जोधपुर नरेश के नाम लिखा है वे लिखते हैं :-

"इस देश में वर्षा प्राय: न्यून होती है इसके लिये यदि मेरे कहे अनुसार एक-एक वर्ष में दस हजार रु० का घृतादि का नित्य प्रति और वर्षा काल में चार महीने तक होम करावें। यदि ऐसा होता रहे तो सम्भव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करे।"

ऋषि दयानन्द के पत्र और
विज्ञापन पत्र सं० 502/पृष्ठ सं० 463

इन दोनों पत्रों को पढ़ने के पश्चात् कोई विद्वान् व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि ऋषि दयानन्द यज्ञ से वृष्टि होने को पाखण्ड मानते थे। विज्ञ पाठक वृन्द यह देखें कि ऋषि दयानन्द के समय 10000=00रु० (दस सहस्र रुपये) वर्तमान मुद्रा अवमूल्यन काल में कितने लाख के समान होंगे। यह भी ज्ञातव्य है कि ऋषि दयानन्द यज्ञ विज्ञान के महत्व को समझते थे इसीलिये इतने व्यय साध्य यज्ञों को करना कराना उचित समझते थे और उनके करने के लिये प्रबल प्रेरणा भी देते थे। इन दोनों पत्रों के प्रमाणों को मैं पूर्व लेख में देना चाहता था किन्तु यह पुस्तक हमारे आश्रम के पुस्तकालय में नहीं थी। यह पुस्तक मैंने दो वर्ष पूर्व गुरुकुल विज्ञानाश्रम, पाली (राजस्थान) में देखी थी। पूर्व के लेख लिखते समय उसका उद्धरण देना सम्भव नहीं हो सका था, अब सम्भव होने पर जिज्ञासु पाठकों के लाभार्थ उसे देना आवश्यक समझा, अतः पाठकों की असुविधा के लिये खेद है। अब वे अपनी जिज्ञासा शान्त करें और स्वा०सत्यप्रकाश जी भी इन पत्रों को ध्यान से पढ़ें तथा अपना भ्रम दूर करें।

असतो मा सद्गमय

लेखक- श्री प्रियव्रत शास्त्री
साहित्य रत्न
एम०ए० सरधना।

"असतो मा सद् गमय" यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने "वेद और ईश्वर" विषयक सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में इसका अर्थ लिखा है" हे परम गुरु परमात्मन् । आप हमको असत् मार्ग से पृथक कर सन्मार्ग में प्राप्त कीजिये" ।

आधुनिक समय में अनेक सज्जन इसका अर्थ करते हैं कि "हे प्रभो । आप हमें असत्य मार्ग से सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा दें"। "असत् का अर्थ असत्य और "सत्" का सत्य सम्भव नहीं है ।

परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए "सच्चिदानन्द स्वरूप" किया है। सत् शब्द का अर्थ तीनों कालों भूत, वर्तमान, भविष्यत में वर्तमान रहने वाले के लिये होता है। चित् का अर्थ ज्ञानवान होता है। आनन्द का अर्थ सदैव आनन्द युक्त के लिये होता है। इस प्रकार स्वामीजी ने तीनों कालों में वर्तमान, सदैव ज्ञानमय एवं सर्वदा आनन्दमय प्रभु का स्वरूप "सच्चिदानन्द" बताया है।

प्रकृति प्रवाह रूप से तीनों कालों में विद्यमान रहने से सत्, तथा आत्मा भी तीनों कालों में वर्तमान रहने एवं ज्ञान का अधिकरण होने से सच्चित् और प्रभु में इन दोनों गुणों के साथ आनन्द युक्त रहने से प्रकृति, आत्मा तथा परमात्मा की भिन्नता हो जाती है ।

सत् शब्द का प्रयोग लोक व्यवहार में श्रेष्ठता के लिये होता है। जैसे- सत्कर्म, सद्गति, सन्मार्ग, सत्पुरुष, सद्व्यवहार आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

श्रीमद् भगवत गीता के 17 वें अध्याय के 26,27एवं 28 श्लोकोंमेंसत् शब्द के विषय में लिखा है :-

"सद् भावे साधु भावेच सदित्येतत् प्रयुज्यते ।
प्रशस्त कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ।।

सत् शब्द का प्रयोग विद्यमान अर्थ में होता है तथा साधुता के अर्थ में होता है। सत् शब्द का प्रयोग प्रशंसा के लिये भी होता है। जैसे सज्जन, सत् प्रकृति आदि ।

"यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ।।

यज्ञ, दान तथा तप की स्थिति भी सत् कहलाती है और इनके निमित्त सत्कर्म कहलाता है ।

असत् के विषय मेंश्री कृष्ण अर्जुन से कहते है:-

"अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ।।

हे पार्थ/ अश्रद्धा सेयज्ञ में जो आहुति दी जाती हैं, जो तप किया जाता है तथा जो दान दिया जाता है तथा जो इस प्रकार का आचरण किया जाता है वह सब असत् कहलाता है उससे इस लोक या परलोक किसी में भी कल्याण नहीं होता ।

इस प्रकार सत् और असत् का सत्य और असत्य अर्थ दोषपूर्ण एवं भ्रामक है। अतः हमें शास्त्रीय शब्दों के अर्थों को प्रकरणानुसार शास्त्रीय ढंग से करना चाहिये ।

क्योंकि कहा है :-

"एक शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति।

जाति एक समस्या

{श्री सत्यनिरूपण, शिकोहाबाद}

प्रथम में जाति शब्द को ही लेता हूं। इसके अर्थ को हम दो भागों में बांट सकते हैं- प्रथम- देश, भाषा, संस्कृति के विचार से मनुष्य समाज का विभाग, जैसे अंग्रेज जाति, जर्मन जाति, भारतीय जाति आदि। द्वितीय- आकृति तथा नस्ल आदि की समानता के विचार से विभाग जैसे मनुष्य जाति, पशुजाति, अच्छी जाति का आम, घोड़ा, बैल, गाय, भैंस आदि। कुछ लोग जाति का अर्थ जन्म से लेते हैं जो मेरे विचार से सही नहीं है। जाति शब्द स्त्रीलिंग है। इसकी धातु जन् है। इसमें क्तिन् प्रत्यय लगकर जाति शब्द बना है, जिसका अर्थ है- उत्पत्ति अथवा जन्म। अर्थात् जन्म से निश्चित होने वाली जाति । जैसे मनुष्य जाति, पशु जाति आदि कुछ लोग जाति का अर्थ जन्मा लेते हैं। मेरे विचार से यह भी ठीक नहीं है, क्यों कि शब्द है जात {जाति नहीं} यह शब्द जन् धातु में क्त प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ है- जन्मा हुआ, जैसे- जल जात, नवजात आदि। इसी प्रकार जातक का अर्थ है- जात कन् सद्योजात बालक, नवजात शिशु। इसी प्रकार बालक के उत्पन्न होने के समय किया जाने वाला चौथा संस्कार जात कर्म संस्कार है न कि जाति कर्म संस्कार। इसे जातेष्टि संस्कार भी कहते हैं।

जाति की पहचान बताते हुए गौतम मुनि कहते हैं- समान प्रसवात्मिका जातिः । जिसका समान प्रसव हो वह जाति है अर्थात् जिसके संयोग से वंश चलता हो। गाय तथा बैल से वंश चलता है। स्त्री-पुरुष से वंश चलता है। अतः ये दोनों समान जाति के हैं। योग शास्त्र में लिखा है- सति मूले तद्विपाको जातिः आयुः, भोगः । जाति की दूसरी पहचान है-आयुः जितनी आयु गाय की होगी उतनी ही बैल की होगी। इसी प्रकार स्त्री-पुरुष की भी आयु समान होगी, क्योंकि ये दोनों एक ही जाति के हैं। तीसरी पहचान है-भोग । अर्थात् समान जाति वालों का आहार-विहार भी समान होगा। यह सिद्धान्त समान जाति वाले सभी प्राणियों पर लागू होता है। अतः जाति का वास्तविक अर्थ क्या है? स्पष्ट हो गया होगा ।

प्रश्न उठता है फिर यह जाति प्रथा कहां से आ टपकी? पण्डित गंगा प्रसाद उपाध्याय ने अपनी पुस्तक वेद प्रवचन में लिखा है कि यह वर्ण व्यवस्था जिसे चातुर्वर्ण्य कहते हैं स्वतः सिद्ध नहीं है अपितु समाज कल्पित तथा समाज शासित है। आरम्भ में केवल गुण तथा कर्म ही ब्राह्मणत्वके निर्णायकथे, जन्म नहीं। कालान्तर में कभी कोई ब्राह्मण रहा होगा जो अपने अयोग्य पुत्र के लिए वही अधिकार चाहता होगा जो उसे प्राप्त थे, इसलिए उसने गुण कर्म पर आधारित परम्परा को तोड़ दिया तथा उसकी प्रबल आवाज के सामने जनता की ओर से विरोध न हो सका होगा। फिर क्या था तात्कालिक ग्रन्थों ने विशेषता पुराणों ने इस गलत परम्परा पर अपनी छाप लगा दी तथा आगे चलकर तुलसीदास ने इस पर - पूजिय विप्र जो वेद विहीना कह कर मुलम्मा की पर्त चढ़ा दी। ऐसे देवपीयु ही संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपेक्षा उसे नष्ट करने के कारण बनते हैं। यजुर्वेद का 31/11 वां मन्त्र इस जाति का जनक कहा जाता है, क्यों कि अविद्वानों के हाथों में पड़कर इसके अर्थ का वह अनर्थ हुआ है कि जिसे पढ़कर मस्तक शर्म से झुक जाता है। अर्थ करते समय वह व्यक्ति यह न समझ सका कि 11वां मंत्र 10वें मंत्र का उत्तर है, और बिना सोचे समझे बना पूर्वापर संबंध स्थापित किए इस 11वें मंत्र का अर्थ जाति परक कर डाला। फलस्वरूप चारों वर्णों का आपसी सहयोग जाता रहा। ऊंच-नीच, छुआ-छूत जाति भेद आदि की भावनाएं पनप गईं और देश फूट की भट्टी में जलने लगा और अद्युनापि जल रहा है। मंत्र है- यत्पुरुष व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किं आसीत् किं बाहू किमूरू किं पादो उच्यते ।। 31/10।। ऋषिकृत् अर्थ- जिस पुरुष {शरीर, समाज, सृष्टि} को विविध प्रकार से धारण करते हो उसको कितने प्रकार से कहते हैं। इस ईश्वर की सृष्टि में {शरीर, समाज} मुख के समान श्रेष्ठ कौन है ? भुजबल का धारण करने वाला कौन ? जंघाओं का कार्य करने वाला कौन ? पांव के समान नीच कौन कहे जाते हैं ? इस प्रश्न में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर क्रमशः 11वें मंत्र में इस प्रकार दिया गया है। इस शरीर समाज में मुख के समान मुख्य ब्राह्मण है, भुजाओं के समान पराक्रम युक्त क्षत्रिय है। जंघाओं के तुल्य वेगादि काम करने वाला इसका वैश्य है। पैरों के समान अभिमान रहित सेवा परायण मूर्खपन आदि गुणों से युक्त शूद्र कहे जाते हैं। अथवा माने जाने चाहिए। यहां सन्दर्भ की दृष्टि से अजायत का अर्थ उच्येते है। यह मंत्र पुरुषसूक्त का एक भाग है। अतः यह शरीर समाज से संबंधित है ।

अब आइये वर्ण व्यवस्था पर भी विचार कर लें। वर्ण शब्द वृञ् वरणे धातु से बना है। जिसका अर्थ है- वरण करना, चुनना। ऋषियों ने सर्वप्रथम मनुष्यों को अपना व्यवसाय चुनने {वरण} से पहले मनुष्य की प्रवृत्तियां {स्वभाव} आकांक्षाओं तथा गुणों का बंटवारा किया था। मनुष्य में चार प्रकार की प्रवृत्तियां विद्यमान थीं जिन्हें देखकर ही यह वर्ण व्यवस्था स्थिर की गई थी। प्रवृत्तियां हैं- 1-सात्विक 2-सात्विक राज. 3-राजसिक तामसिक तथा 4-तामसिक । अतः इसी सांख्य मनोविज्ञान के आधार क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शूद्र वर्णों का निर्माण किया गया था। परिणामतः पहली श्रेणी के लक्षणों वाला ब्राह्मण दूसरी श्रेणी में आने वाला क्षत्रिय, तीसरी प्रवृत्ति वाले को वैश्य तथा तामसिक प्रबलता वाले वर्ग को शूद्र नामों से अभिहित किया गया था। मनुःस्मृति के पहले अध्याय के 88,89,90 तथा 91वें श्लोकों में चारों वर्णों के गुणों के आधार पर ही लक्षण किए गए हैं। इससे स्पष्ट है कि ये वर्ण अर्जित हैं जन्म जात नहीं । अर्जन के द्वारा जो चाहे वह वर्ण ले सकता था। इसलिए प्राथम्य गुण, कर्म, तथा स्वभाव का ही था जाति का नहीं। यह बात गीता के 18वें अध्याय के 42,43 तथा 44 वें श्लोकों से स्पष्ट होती है।

इस 11वें मंत्र का अर्थ होना चाहिए था- मानव समाजरूपी विराट् पुरुष का जो मुख्य भाग {मुख} होगा उसको हम ब्राह्मण कहेंगे परन्तु अर्थ कर डाला- जो ब्राह्मण होगा उसको हम समाज का मुखिया कहेंगे 'वेद प्रवचन उपाध्याय जी' फिर क्या था प्रजापति के मुख से ब्राह्मण की, भुजाओं से क्षत्रिय की, जंघाओं से वैश्य का, तथा पैरों से शूद्र की उत्पत्ति करा डाली। उत्पत्ति कराते समय वह व्यक्ति यह भूल गया कि निराकार के शरीर से उत्पत्ति कैसी ? फिर ईश्वर प्रकृति के विरुद्ध कोई कार्य कैसे करेगा ? कुछ विद्वानों ने अपने प्रमाण में तैत्तरीय संहिताकी- स मुखतः त्रिवृतं निरमिमीत- ये पंक्तियां प्रस्तुत की हैं। यदि इस असम्भव को तर्क के रूप में मान भी लिया जाय तो फिर यह चौथा वर्ण कहां से आया इसे हम केवल घपला ही कह सकते हैं और कुछ नहीं । मुख से तो प्रथम तीनों ही वर्ण पैदा हुए फिर केवल ब्राह्मण को ही प्राथम्य क्यों ?

इस दुर्भावना ने ऊंच-नीच, की भावना पैदा कर दी। इसके विरुद्ध महर्षि दयानन्द ने अपनी आवाज बुलन्द की थी तथा तात्कालिक ग्रन्थों को अप्रमाणित कह कर उनकी धज्जियां उड़ाने वाला वह पहला व्यक्ति था। उन्होंने गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था के पुनरुद्धार का बीड़ा उठाया था। परन्तु दकियानूसी अपना असम्मान न सह सके और उसे मरवा दिया। देखिए - जनक क्षत्रिय होकर विदेह युधिष्ठिर धर्मराज तथा विश्वामित्र ऋषि कहलाए। पहले ऊंचनीच की कोई भावना थी ही नहीं। तभी तो कृष्ण विदुर के घर ठहरे थे तथा राम ने शबरी का आतिथ्य स्वीकार किया था। इतना ही नहीं। वसिष्ठ {गणिका पुत्र} महर्षि कहलाए, व्यास {दासी पुत्र} वेद व्यास बन गए, तथा पराशर ने महर्षि पद पाया। उपनिषद् काल में शूद्र शब्द का कितना सम्मान था। राजा जानश्रुति रैक्व के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए और बोले- महाराज, मेरी सभी गायें तथा भूमि स्वीकार कर मुझे शिक्षा दीजिए। रैक्व ने उत्तर दिया- हारेत्वा शूद्र तवैव सह गोभिः अस्तु ।। छान्दोग्य 4/2/3 यजुर्वेद में तो शूद्र को तप से शूद्र कह कर सम्मान दिया गया। दूसरी ओर तुलसीदास ने तपस्या कर रहे शूद्र को राम के द्वारा मरवा दिया था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार एलूष को दासी पुत्र होने के कारण शूद्र कह कर ऋषियों ने उसका अपमान करके यज्ञ से बाहर निकाल कर सरस्वती नदी के बालू की तट पर डाल दिया था। जब उसने अपोनप्त्रीय सूत्र गाना प्रारम्भ कर दिया तब उसके प्रभाव को देखकर ऋषियों ने तुरन्त उसे यज्ञ में बुला लिया। आगे चलकर यही एलूष ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 30 वें मंत्र से लेकर 34वें मंत्रों तक का द्रष्टा हुआ तथा ये पांचों मंत्र उसी के नाम से विख्यात हैं। इससे स्पष्ट है कि शूद्र भी वेदज्ञ थे तथा कोई भी वेदज्ञ हो सकता था। फिर चौथे वर्ण के साथ सौतेला व्यवहार कैसा ?

xxxxxxxxx

आर्य समाज का प्रमुख कार्यक्रम-

वेद प्रचार

धर्म विज्ञान मुनि धर्मवीर विद्यालंकार,
आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर।

आर्य समाज का तीसरा नियम है- "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

वेद को अवश्य पढ़ना चाहिए और प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ना चाहिए। पढ़ने का फल ज्ञान-वृद्धि, सन्तोष और आनन्द है और परिणाम है कि हम दूसरों को पढ़ायें। ज्ञान वृद्धि तथा आनन्द हम अकेले ही न पायें, अपितु दूसरों को भी लाभान्वित करें, यही वेद का अभिप्राय भी है। इसी प्रकार जो महानुभाव पढ़ नहीं सकते, वे सुनें। सुनने के अनन्तर उनका प्रथम कर्तव्य है कि दूसरों को सुनायें।

अगर पढ़ने के अनन्तर पढ़ाने नहीं, अथवा पढ़ाने की रुचि नहीं अथवा पढ़ा सकने की योग्यता प्राप्त नहीं की तो पढ़ना व्यर्थ है। दूसरों को पढ़ाने में रुचि का एक कारण स्वार्थ हो सकता है अर्थात् पढ़कर प्राप्त ज्ञानवृद्धि में हम दूसरों को सम्मिलित नहीं करना चाहते। पर स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति वेद के अनुरूप नहीं। इसे त्यागना है। "दूसरों की उन्नति में ही अपनी उन्नति है।"

पढ़ाने में अरुचि का दूसरा कारण हमारी अपनी अरुचि है, अर्थात् अपने में ही वेद पढ़ने की रुचि उत्पन्न नहीं हुई। इसका उपाय करें। वह यह कि जब वेद पढ़े तो उसे समझने का उसके अर्थ की गहराई तक जाने का प्रयत्न करें। बहुत से महानुभावों की वेद पढ़ने में आरम्भ में रुचि थी। परन्तु धीरे-धीरे वह रुचि समाप्त हो गई।

इनके कारणों पर ध्यान दें तो प्रथम कारण यह पाते हैं कि वेद के उच्च महात्म्य के अनुसार जो वस्तु वे पाना चाहते थे, वह वस्तु उन्हें यहाँ मिली। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अपने अभीष्ट को स्पष्ट स्वयं अनुभव करें। तदनन्तर प्रयत्न करने पर उन्हें अभीष्ट अवश्य मिलेगा। इस प्रकार उनकी रुचि बढ़ती रहेगी।

अरुचि का दूसरा कारण है वेद भाष्यों का मात्र ईश्वर स्तुति परक अर्थ होना। इसके लिए भाष्यकारों से दो निवेदन हैं। प्रथम यह कि ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-परक अर्थ करते हुए ईश्वर के विभिन्न नामों की प्रसंगानुसार व्याख्या करते हुए स्पष्ट करें कि वह ईश्वर व्यावहारिक अथवा पारमार्थिक सुख/सुखसाधन पाने में सहायक है। जैसे "हिरण्यगर्भ. समवर्तताग्रे ऋचा में हिरण्यगर्भ सृष्टि उत्पत्ति में कैसे सहायक है?" अग्ने नय सुपथा·····" ऋचा में अग्नि का अर्थ इस प्रकार से स्पष्ट करें कि हमें सम्पत्ति अर्जित करने का कौन सा मार्ग, किस प्रक्रिया द्वारा बताता है और किस प्रकार हम कुटिल पाप पर विजय पा सकते हैं। महत्व इस बात का भी है कि यह कार्य अग्नि द्वारा ही सम्पन्न क्यों हो सकता है।

"वरुण" को पश्चिम दिशा का, "सोम" को उत्तर दिशा का एवं "विष्णु" को ध्रुव दिशा का अधिपति क्यों माना है। प्रसंग के अनुसार ऐसे विषयों का, उस-उस नाम वाले ईश्वर का स्मरण क्यों किया गया है। अगर ऐसा स्पष्ट किया जाय, तो वेद-मंत्रों के अर्थ ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-परक होने पर भी ईश्वर के विभिन्न स्वरूप अर्थात् उसके गुण-कर्म-स्वभाव के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के सुखसाधनों को प्राप्त कर सकने के कारण, जनसाधारण में वेद के अध्ययन में रुचि उत्पन्न होती रहेगी ।

इंजिन चलाने के लिए हमें भाप, डीजल /पेट्रोल या विद्युत की आवश्यकता है। तब हम "तप" स्वरूप अग्नि या विद्युत के गुणों की खोज करते हैं। जब ट्रांजिस्टर सुनना है, तो उसके लिए हमने मातरिश्वा के गुणों की खोज की। जब हम दूरदर्शन का आविष्कार करते हैं तब हमनेप्रकाशस्वरूप अग्नि/विद्युत के गुणों पर गहन चिन्तन मनन किया। अग्नि के ताप और प्रकाश से वायु के शब्द प्रसारण के गुण से और विद्युत की तरंगों से हम व्यावहारिक लाभ लेते हैं। इसी प्रकार वरुण, सोम, रुद्र, प्रजापति, गरुत्मान् आदि नामों से जब ऋचाएं उस प्रभु का आह्वान करती हैं, तो वह साभिप्राय है। भाष्यकारों से यही नम्र प्रार्थना है कि वे विशिष्ट सन्दर्भ में प्रभु को स्मरण कराने वाले विशिष्ट नाम का विशिष्ट अर्थ कुछ विस्तार से स्पष्ट समझाने का कष्ट करें, तो जनसाधारण में वेदों के महात्म्य के प्रति रुचि जागृत होती रहेगी। बीच में ही लुप्त न होगी।

दूसरा निवेदन है कि वेदों में विद्यमान अन्य विविध सत्य विद्याओं की ओर भी प्रकाश डालें ।

पढ़ कर पढ़ाना तभी सम्भव होता है, जब पढ़ा हुआ अंश अपने ज्ञान का स्थायी अंग बन जाय। हमारा स्वभाव है कि हम पढ़ते तो बहुत हैं, परन्तु पढ़ा हुआ अंश हमारे ज्ञान का अंग नहीं बन पाता। उसका कारण है कि हम ध्यान पूर्वक होकर नहीं पढ़ते। एकाग्रचित्त होकर पढ़ने से पठितांश अपना बन जाता है। उसमें रुचि उत्पन्न होती है। रुचि से आनन्द मिलता है। और आनन्द में मनुष्य अपने को भूल जाता है। वह यूनान के वैज्ञानिक आर्कमीडस की भांति "योरेका, योरेका" (पालिया, पालिया) चिल्लाता हुआ दौड़ते हुए राजमहल में पहुँच जाता है ।

किसी भी ज्ञान को पा लेने के अनन्तर मनुष्य को दिव्य ज्योति दिखाई देती है, अपूर्व आनन्द अनुभूत होता है। वह उस दिव्य ज्योति एवं अपूर्व आनन्द को छिपा नहीं सकता। वह उस अद्भुत ज्ञान के विषय में दूसरों को बताता है। उससे पढ़ने वाले अध्येता/छात्र भी उस ज्योति का अंश अनुभव करते हैं, और आनन्दित होते हैं। इस प्रकार यह ज्ञान गंगा, दिव्य ज्योति एवं अपूर्व आनन्द के साथ निरन्तर प्रवाहित होने लगती है। शर्त एक ही है, पढ़ना और पढ़ाना एकाग्रचित्त से हो, ताकि वह ज्ञान हमारा अंग बन जाय।

इसी प्रकार सुनने और सुनाने के विषय में समझना चाहिए। एकाग्रचित्त से सुना हुआ ज्ञान भी मार्ग प्रदर्शक होता हुआ अद्भुत आनन्द प्रदान करता है। श्रुत ज्ञान को आत्मसात् कर लेने के अनन्तर, श्रोता दूसरों को सुनाता है। नए श्रोता भी एकाग्रचित्त हो, रुचि लेकर जब सुनते हैं तो हर्षित होते हैं। सुनने वालों की यह ज्ञान गंगा (श्रुतिरूप में) सतत् प्रवाहमान होती है ।

यह तीसरे नियम का उत्तरार्ध हुआ। पूर्वार्द्ध पर विचार करें तो विषय विचित्र रूप से प्रस्तुत होता है। पूर्वार्ध इस प्रकार है·-

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।"

इसीलिए तो उत्तरार्ध "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" -सार्थक है ।

इससे स्पष्ट है कि वेद वर्णित सभी विद्याएं सत्य विद्याएं हैं। असत्य विद्याएं जो संसार में दिखाई देती है, वे वेद में नहीं हैं। ईश्वर, जीव, प्रकृति, धर्म, यज्ञ, पुण्य, अमृत, मोक्ष आदि का सत्यस्वरूप वेदों में प्रतिपादित है। उससे भिन्न रूप जो संसार में दिखाई देता है, वह असत्य है, जैसा कि मृतक, श्राद्ध, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, नारी को अशिक्षित रखना छोटों का दमन, पराधीनता आदि।

इसी के साथ ही आर्य समाज का चौथा नियम है:-

"सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए। "स्वामी दयानन्द जी ने पांचवे नियम में सब काम धर्मानुसार करने की प्रेरणा दी है। वहां धर्म का स्वरूप उन्होंने- "सत्य और असत्य का विचार" बताया है।

इन समस्त सत्य-विद्याओं का उपदेष्टाअर्थातआदिमूल "परमेश्वर" है। यह तथ्य प्रथम नियम में घोषित किया गया है। प्रश्न होता है कि वह "ईश्वर" स्वयं कैसा है। इसका समाधान नियम दो में विशदरूप से किया है ।

आर्य समाज के समस्त कार्यक्रम इसी दृष्टि से निर्धारित किए गए। जैसे- ईश्वर के निराकार स्वरूप की पूजा, वर्ण एवं आश्रम की कर्म से (न कि जन्म से) व्यवस्था, शूद्रों एवं नारियों में शिक्षा का प्रसार, दलितों को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न

बनाना, तथा समाज में (अपमान छुड़ा) सम्मान दिलाना, पराधीनता से मुक्त हो स्वराज्य पाना, मिथ्या अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों का विनाश करना, आदि। इस सभी कार्यों का मूल वेद प्रतिपादित सत्य का मण्डन तथा असत्य का खण्डन है ।

विविध प्रकार के समस्त कार्यक्रमों की लम्बी सूची को अगर एक नाम दें तो वह है "वेद प्रचार"। अर्थात वेद प्रतिपादित सिद्धान्तों का मण्डन/पचार तथा वेद विरुद्ध मतों का खण्डन/विनाश। सभी मतावलम्बी वेद को स्वतः- प्रमाण मानते हैं। अपने मत की पुष्टि वेद से करते है। वेद ऋचाओं के अर्थ अपने अनुकूल करते हैं। वेद ऋचाओं के सत्यार्थ के प्रतिपादन से ही उनके असत्य का विनाश सम्भव है। इसलिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना, और सुनना-सुनाना परम आवश्यक (धर्म) है।

विगत 113 वर्षों से "वेद प्रचार" द्वारा कुरीतियां एवं अन्धविश्वास समाप्त हो चुके हैं। स्त्रियां और शूद्र पढ़ने लगे है। ऊंच-नीच, छुआछूत का भेद मिट चुका है। सौहार्द्र और परस्पर प्रेम बढ़ रहा है। शूद्र एवं महिलाओं में आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति दिखाई देती है। वर्ण का जनम से मानना छूट चुका है। देश स्वतंत्र हो गया है। प्रश्न उठता है- 'क्या अब वेद प्रचार की आवश्यकता है ?

उथले भाव से देखा जाय तो सभी कार्यक्रम पूर्ण मान लेने पर, वेद प्रचार की आवश्यकता नहीं है। जरा गहराई से विचार करें और वर्तमान समाज और राष्ट्र पर दृष्टिपात करें तो वेद प्रचार की आवश्यकता पहले से भी अधिक है ।

दूरस्थ ग्रामों में जहां विद्या नहीं पहुँची, आज भी पुरातनकाल का अन्धविश्वास, अज्ञान, दरिद्रता विद्यमान है। वहां का जीवन कष्टप्रद है। नगर की सुखसुविधा विहीन प्रदेश में परहित कामना से प्रेरित, परदुखकातर सज्जन प्रचारको को वहां भेजने की आवश्यकता है। उत्तर भारत के समस्त दूरस्थ ग्रामों तथा सुदूर दक्षिण भारत में तपःपूत, एकनिष्ठ प्रचारकों की आवश्यकता है ।

नगरों में कार्यक्रम अवश्य अपनाए गए हैं। परन्तु उनका स्वरूप और अधिक विकृत हो गया है। नारी स्वातंत्र्य के नाम पर नारियां गलत मार्ग अपना रही हैं। धीरे-धीरे परिवार की भावना नष्ट हो रही है। नारी का आभूषण "लज्जा" समाप्त प्राय है। नई पीढ़ी के लिए स्वमाप, स्वसंस्कृति के प्रति उनका आग्रह समाप्त हो रहा है।

दलितों को आर्थिक सामाजिक न्याय नहीं मिल रहा। उनके नाम पर मिला न्याय बीच में ही सूख रहा है। वे स्वावलम्बी नहीं रहे। पर मुखापेक्षी हो रहे हैं। स्वार्थ और अधर्म बढ़ रहा है। देश और धर्म के प्रति उनकी अटूट दृढ़ता, शिथिल हो रही है।

देश स्वतंत्र तो अवश्य हो गया है। परन्तु स्वदेश और स्वदेशी के प्रति अनुराग नहीं रहा। धन के लोभ का वर्चस्व है। देश की सीमाएं असुरक्षित हैं। भाषा, साहित्य, इतिहास ऐतिहासिक स्थल, परम्पराएं एवं धार्मिक-स्थल, सभी उपेक्षित हैं। गोवध बंद कराने के लिए विनोबा भावे-जो गांधी-जी के दायें हाथ थे और वर्तमान कांग्रेस के लिए सम्मानित थे- बलिदान हो गए और शासक वर्ग पर कोई असर नहीं पड़ा। कुशासन, भ्रष्टाचार, हिंसा बढ़ रही है।

इन सभी प्रकार की नई विधा से उपस्थित, विषम, अहितकर परिस्थितियों का सामना करने के लिए आर्य समाज को आगे आना है। सदा जागरूक रहने वाले आर्य समाज की ओर जनसाधारण आशा लगाए प्रतीक्षा कर रहा है। इस कठिन, दुदुष्कर, कार्य के लिये साहसी आर्यों की आवश्यकता है। वेद प्रचार की गहरी आवश्यकता है। ईश्वर, जीव, प्रकृति के सत्यस्वरूप को समझने वाले मृत्यु से निडर, निष्ठावान, निर्भीक, साहसी, परहितचिन्तक धर्मात्मा जितेन्द्रिय सज्जनों का निर्माण वेदाध्ययन से होगा। "अग्निहोत्र" हमारी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शिक्षा संबंधी नीतियों का पथप्रदर्शक नहीं बन सकता ।

xxxxxxxxx

राष्ट्र को आन्तरिक शक्तियों से अधिक खतरा है

आर्य समाज, स्त्री आर्यसमाज गोविन्द नगर एवं आर्य कन्या इण्टर कालेज, कानपुर के त्रिदिवसीय संयुक्त वार्षिकोत्सव के अवसर पर केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावान में आर्य समाज हाल, गोविन्द नगर में "राष्ट्ररक्षा सम्मेलन" का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवी दास आर्य ने की तथा सम्मेलन के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के महामंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि इस देश को विदेशी ताकतों की अपेक्षा आन्तरिक शक्तियों से अधिक खतरा है। देश को आन्तरिक विघटनकारी शक्तियां वर्ग, भाषा, जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय पर तुली हैं। राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है कि एक समान नागरिक संहिता, एक समान शिक्षा सम्पूर्ण देश में लागू की जाय। अध्यक्ष श्री देवी दास आर्य ने सरकार की तुष्टिकरण की नीति की आलोचना करते हुए माँग की कि कश्मीर को विशेष दर्जा देने संबंधी धारा 360 समाप्त की जाय, तथा धर्म की एक मानक परिभाषा निर्धारित की जाय ताकि विभिन्न मत-मतान्तरों व सम्प्रदायों के आपसी विवाद समाप्त हो सकें। श्री आर्य ने आगे कहा कि हिन्दी को अपना मान्य स्थल देने से राष्ट्र रक्षा में सहयोग मिल सकता है। वक्ताओं में सर्वश्री सत्यदेव शास्त्री (वाराणसी), ओंकार मिश्र "प्रणव", आचार्य रमेश चन्द्र, डा० शान्तिदेव बाला (लखनऊ), सोहन लाल पथिक (पलवल) ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह का संचालन केन्द्रीय आर्य सभा के मंत्री श्री श्याम प्रकाश शास्त्री ने किया तथा आर्य समाज के मंत्री श्री शुभ कुमार वोहरा ने धन्यवाद किया। इससे पहले उत्सव में शिक्षा सम्मेलन, अन्धविश्वास उन्मूलन सम्मेलन, धर्म रक्षा सम्मेलन भी किए गए। प्रथम दिन विशाल शोभा यात्रा निकाली गई।

आर्य समाज मन्दिर बुढ़ाना गेट मेरठ में रामकथा .

आर्य समाज मंदिर बुढ़ाना गेट मेरठ शहर में आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान श्री आर्य भिक्षु जी ने **"भगवान राम एवं वेद"** विषय पर बोलते हुए कहा कि जनता सदैव ऐश्वर्य चेतन स्वरूप महामानव को **"भगवान"** नाम से पुरस्कृत करती थी, करती है और करती रहेगी। श्रीराम तथा बुद्ध, महावीर आदि में क्या अन्तर है? केवल राघवेन्द्र ही मर्यादा पुरूषोत्तम कहे जाते हैं क्यों ? अब हम इस विषय पर विचार करेंगे। मर्यादा मनुष्य से होती है पशु से नहीं हो सकती। यम, नियम, संयम होने पर मानव मर्यादित हो जाता है। यम, नियम, संयम मिलकर ही मर्यादा होती है। श्री राघवेन्द्र क्यों मर्यादा पुरूषोत्तम कहे जाते हैं उसका प्रथम उदाहरण प्रस्तुत है। लंकाधिपति रावण के बार-बार अपनी प्रशस्ति बखान करने पर **श्री राम** कहते हैं - "लंकेश यद्यपि तुम मेरे शत्रु हो तब भी मैं तुम्हें ये परामर्श देता हूँ कि अपने यश व कीर्ति को बार-बार बखान करने से पौरूष तथा बल समाप्त हो जाता है ऐसा शास्त्रों ने कहा है"। चूंकि चार वेद तथा छःशास्त्रों का मूर्धन्य पण्डित रावण था इसीलिये इनके प्रतीक के रूप में उसके दस शिश माने जाते हैं। अब दूसरा उदाहरण प्रस्तुत है। जब लंका विजयोपरान्त श्री राम ने अयोध्या में प्रवेश किया तो सर्वप्रथम उन्हें महर्षि वशिष्ठ के दर्शन हुए। श्री राम उनके चरणों में लोट गये, और बोले "गुरुदेव मुझ में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि मैं रावण को मार पाता। ये सब तो आपके आशीर्वाद का ही प्रताप था कि मैं ये कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सका।" बड़प्पन पाने पर लोग अपने बड़ों को भूल जाते हैं। अब तीसरा उदाहरण प्रस्तुत है । लंका के विजयोपरान्त अयोध्या लौटने पर श्री राम सर्वप्रथम माता केकई के महल में गये तथा उनसे कहा "हे माता, तू कितनी महान् है ये कौन जान सकता है। तूने भरत के अपशब्द को सहन किया, स्वयं विधवा होना स्वीकार किया परन्तु देवताओं एवं संसार के लाभ के लिये ही मुझे वन भेजा।" ये श्री राम की मर्यादा के कुछ उदाहरण श्रीराम की मर्यादा चरमसीमा पर थी। वे जन्म से मृत्यु तक मर्यादित रहे। यही कारणा है कि वे मर्यादा **पुरूषोत्तम भगवान राम** कहलाते हैं ।

xxxxxx

मथुरा में महिला जनहितकारी ट्रस्ट

दिनांक 17 नवम्बर 1988 को मथुरा में महिला जागृति एवं समाजोत्थान हेतु "श्रीमती द्रोपदी देवी जिज्ञासु महिला जनहितकारी ट्रस्ट" का शुभ आरम्भ हुआ सामूहिक यज्ञ प्रवचन के पश्चात ट्रस्ट के संयोजक प्रो० जयकुमार मुद्गल ने ट्रस्ट के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

शोक समाचार

आर्यसमाज, मेस्टन रोड, कानपुर की यह शोक सभा डा0जे0एन0 राजपाल जी के दिवंगत होने पर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उन्हें सदगति देवें तथा उनके परिवार, इष्ट मित्रों आदि को सान्त्वना देवे कि इस असह्य वेदना को सहन कर सकें।

पंजाब में उग्रवाद का मूल क्या है?

आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता
अंतर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद- 27

आज पंजाब धधक रहा है। आब शब्द का मूल है आप। आपः शब्द का अर्थ है पानी। इस दृष्टि से कहा जाए तो आज आप में या आब में पानी में आग लग गई है।

पंजाब की मूल समस्या क्या है ? पंजाब में बना सिक्ख कौन है ? पंजाब आरंभ से ही भारत का सीमावर्ती प्रांत या प्रदेश रहा है। जब से भारत पर विदेशी आक्रमण आरंभ हुए तभी से पंजाब रणस्थली रहा है। यही कारण है कि पंजाब के व्यक्ति में साहस और शौर्य प्रचुर मात्रा में होता है। इतिहास इसका साक्षी है।

जैसे आज पंजाब में हिंसा प्रतिहिंसा का ताण्डव नृत्य चल रहा है वैसी ही समस्या अमेरिका के भी एक प्रदेश में एक बार उभरी थी। उस प्रदेश का शिक्षित युवक भी बहुत सरलता से मनुष्य की हत्या कर देता था। पढ़े लिखे बी0ए0, एम0ए0 उत्तीर्ण व्यक्ति भी साधारण सी बात पर अपने विरोधी की हत्या कर बैठते ।

अमेरिकी प्रशासन दुविधा में पड़ गया कि क्या कारण है कि देश के एक भाग में हिंसा की प्रवृत्ति चरम सीमा पर पहुँच गई है। अमेरिका की सरकार ने इस वृत्ति का मूल कारण जानने के लिए एक जाँच आयोग गठित कर दिया।

जांच आयोग ने उस क्षेत्र के दुर्दांत तीस हत्यारों को परीक्षण के लिए चुना। इन तीस व्यक्तियों को उन्होंने तीन भागों में विभक्त कर दिया। दस-दस व्यक्तियों का एक-एक दल (ग्रुप) बना दिया और उनकी जांच आरंभ की गई। इस वृत्ति के मूल कारणों की खोज के लिए उन्होंने कुछ क्रियात्मक परीक्षण आरंभ किए ।

तीनों दलों को पृथक्-पृथक् रक्खा गया और उन्हें तीन प्रकार का भिन्न-भिन्न आहार दिया जाने लगा। एक दल को जो उन तीस व्यक्तियों में भी अपेक्षाकृत अधिक हिंसक थे उन्हें आहार में केवल गाय का दूध दिया जाने लगा। दूसरे ग्रुप को बिना पालिश के मोटे चावल का ही आहार दिया जाने लगा। तीसरे दल को वही आहार जो उस क्षेत्र के लोगों का आहार था वही आहार दिया जाने लगा।

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस परीक्षण के जो परिणाम सामने आए वह अत्यंत आश्चर्यजनक थे ।

जिस दल को केवल गाय के दूध पर रक्खा गया था उस दल के व्यक्तियों ने एक ही महीने के उपरांत प्रायश्चित्त करना आरंभ कर दिया। उन्हें अपने कृत्य पर भीतर से प्रायश्चित्त होने लगा कि हमने जो कुछ अपराध किए वह ठीक नहीं थे। अपनी हत्या संबंधी वृत्ति के प्रति उनमें घृणा के भाव उभरने लगे ।

दूसरे दल में जिन्हें केवल बिना पालिश के मोटे उबले चावल का मांड व आहार दिया जाता था उनमें छः मास के बाद अपने दुष्कृत्यों पर प्रायश्चित्त की वृत्ति जाग उठी ।

तीसरे दल में जिन्हें उनका वही आहार जो वे नित्य खाया करते थे। मछली और पालिश किया हुआ बारीक चावल मांस और शराब दी जाती रही। हिंसा की प्रवृत्ति और अधिक बढ़ गई ।

वास्तव में मनुष्य का जैसा आहार होता है वैसी ही उसकी वृत्ति बन जाती है। अतः शरीर विज्ञान या आयुर्वेद में स्पष्ट लिखा है कि - "आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः" यह प्राचीन कहावत है कि -"जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन" यह कहावत अत्यंत सारपूर्ण है ।

स्वतन्त्र भारत में सबसे पहले हिंसा की प्रवृत्ति उभरी थी नलगोंडा (आंध्र प्रदेश का एक जिला) जिले में । जिले उसके बाद यह वृत्ति कलकत्ते के एक विशेष क्षेत्र में नक्सलाइट उभरे। मिजोरम, नागालैण्ड में भी ऐसे ही हिंसक आंदोलन चले और अब पंजाब में उग्रवादियों का हिंस्र नृत्य जारी है ।

आज पंजाब का हिंदू हो सिक्ख, स्त्री हो या पुरुष, बच्चे हो या जवान या बूढ़े यहां तक कि शुद्ध शाकाहार पर बल देने वाले आर्य समाजी की पंजाब में मांस, अण्डे और शराब में ऐड़ी से चोटी तक डूबे रहते हैं। पंजाब में उभरा उग्रवाद इसी आहार का परिणाम है ।

महाभारत काल के युद्ध के बाद यादवों में मांस और शराब की प्रवृत्ति इतनी बढ़ी कि सारा यादव वंश आपस में लड़कर नष्ट-भ्रष्ट हो गया । इतिहास इस बात का साक्षी है ।

भारत ने अपने प्राचीन विज्ञान वेत्ताओं की शिक्षा को भुला दिया है । भारत की आध्यात्मिक उन्नति का मूल कारण ही देशी गाय और उसका दूध रहा है। आज पश्चिम के देशों में प्रति व्यक्ति औसतन एक लीटर से दो लीटर तक गाय के दूध का सेवन करता है। यही कारण उनकी शारीरिक व भौतिक उन्नति का है ।

हमारे देश में जहाँ कृष्ण जन्माष्टमी और गोपाष्टमी जैसे पर्व मनाए जाते हैं। गाय को माता कह कर पूजा जाता है। हमारे जन साधारण की यह स्थिति हो गई है कि दूध के दर्शन नहीं होते ।

पंजाब घी, दूध और लस्सी के मामले में स्वतंत्रता से पूर्व तक प्रसिद्ध रहा। एक-एक लीटर दूध वाले गिलास केवल स्मृति चिन्ह के रूप में रह गए हैं। इसी का परिणाम है पंजाब का उग्रवाद ।

मांसाहार का घोर विरोध करने वाला आर्य समाज भी पंजाब में आहार के नियमों में शिथिल हो गया है। पंजाब के व्यक्ति ने जितना यश और गौरव अर्जित किया था आज उसके इसी दूषित आहार ने उसे मनुष्य से पशु बना दिया है ।

इन उग्रवादियों को न तो फाँसी दी जानी चाहिए और नहीं इन देश के नौनिहालों को गोली का निशाना ही बनाना चाहिए। इन्हें केवल मात्र पकड़कर जेलों में केवल दूध के आहार पर रखा जाए। सिवाय दूध के इन्हें और कुछ खाने के लिए न दिया जाए तो केवल कुछ दिनों में उग्रवाद मनुष्य के भीतर से ही स्वयं नष्ट हो जाएगा ।

स्मरण रखिए जब तक इस मूल कारण का निवारण नहीं होगा तब तक समस्या सुलझ नहीं पाएगी ।

क्या देश के कर्णधार इस मामले में गंभीरता से सोचेंगें। पर जब वे स्वयं ही मांसाहार को गलत नहीं मानते उनसे इस प्रकार की आशा करना ही व्यर्थ है ।

अमेरिका के चालाक लोग इस रहस्य को जानते हैं। उनके डालर ही इनमें मांस और शराब की वृत्ति को जन्म दे रहे हैं। आवश्यकता है इस दिशा में सही प्रयत्न करने की ।

xxxxxxxxx

सात्विक दान

बरेली - कलक्टरबुक गंज आर्य समाज मन्दिर में नई यज्ञशाला का उद्घाटन डा॰ श्रीमती सावित्री देवी शर्मा ने किया। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर वर्तमान समय में चलने से सभी सामाजिक समस्याओं के समाधान का एक मात्र उपाय बताया। इस अवसर पर श्री अरविन्द जी पुत्र स्व॰ पं॰ बिहारीलाल शास्त्री ने 500-00 रु0 दान दिए तथा आर्यसमाज मन्दिर का एक कमरा बनवाने का वचन दिया। इस अवसर पर जनता द्वारा 2400-00 दान स्वरूप दिए गए।

- आर्यसमाज पुलबंगश, दिल्ली का 27वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 26 दिसम्बर 1988 से 1 जनवरी 1989 तक मनाया जा रहा है।

प्रयाग कुम्भ मेले में वैदिक धर्म का प्रचार

आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के तत्वाधान में जिला सभा प्रयाग द्वारा संचालित वैदिक धर्म प्रचार शिविर का उद्घाटन दिनांक 14 जनवरी 1989 को कुम्भ मेले में होगा तथा 20 फरवरी तक. प्रतिदिन भजन व्याख्यान आदि द्वारा मद्यनिषेध, राष्ट्रक्षा, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलनों आदि का भी आयोजन किया गया है। जनता सादर आमंत्रित है। आर्य साहित्य के विक्रेताओं को निःशुल्क आवास व्यवस्था है। ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया है।

इन्द्रराज
सभा प्रधान

मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

मेरठ में वैदिक सत्संग

राजहंस प्रकाशन मंदिर, मेरठ के पारिवारिक सत्संग में आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान श्री आर्य भिक्षु जी ने अपने प्रवचन में कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने एक बार कहा था, "मैं था, मैं हूँ, मैं रहूँगा परन्तु जिसमें मैं था न तो वह रहा जिसमें मैं हूँ न वह रहेगा।" महर्षि दयानन्द जी सहित सभी विचारकों {प्राच्य और पाश्चात्य} ने स्वीकार किया है कि मनुष्य ही सारी योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। मोक्ष का अर्थ है छूटना। अब प्रश्न होता है कि किससे छूटना? उत्तर है द्वन्द्वों से। जीव अतीत काल से द्वन्द्वों में बंधा हुआ है। सुख और दुःख ही सबसे बड़ा द्वंद्व है। वास्तव में देह धारण करने पर ये द्वंद दंड रूप में प्राप्त होता है। ज्ञानी तो इसका ज्ञान प्राप्त करके हँस-हँस कर स्वीकार करता है, तथा मूर्ख रोते-रोते उसे भोगता है। जीव रूपी बालक का ईश्वर रूपी पिता बड़ा विचित्र है जो जीव की वासनाओं की पूर्ति के लिये भेजता रहता है। इन द्वंद्वों से बचने के लिये स्वामी दयानन्द जी ने एक सरल मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि "मनुष्य का जन्म सत्यासत्य का निर्णय करने, सत्य को ग्रहण करने के लिये है व्यर्थ का वाद-विवाद और झगड़ा करने के लिये नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने बहुत अध्ययन करके ... ओर लौटो वही एकमात्र मार्ग है।" जो दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होता है वह सच्चा साधू है ऐसे ही महान सन्यासी स्वामी दयानन्द जी थे जिन्होंने अंत में ये मार्ग बताया। आज पुनः सब स्वीकार करते हैं कि ईश्वर की वाणी एवं सत्य का मार्ग वेद है।

अन्तर्जातीय वैदिक विवाह

28 वर्षीय श्री राजाराम सिंह पुत्र श्री लीलाधर सिंह एवं 24 वर्षीय श्रीमती रीना {पूर्व नाम रफीकन} पुत्र श्री फकीरा का पारम्परिक वैदिक विधि से विवाह संस्कार श्री हरप्रसाद आर्य "दादाजी" की अध्यक्षता में डा0 रघुबीर शास्त्री के पौरोहित्य में श्री रामदीन आर्य मंत्री ने आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ की यज्ञवेदी पर दिनांक 10·11·88 को सम्पन्न कराया।

- आर्यसमाज अमरावती विदर्भ {महाराष्ट्र} के निर्वाचित पदाधिकारी :
प्रधान - श्री लालचंद नथ्यानी, **मंत्री** - श्री प्रकाश शर्मा **कोषाध्यक्ष**- श्री ब्रम्हदत्त शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष - श्री ओमप्रकाश शास्त्री तथा निरीक्षक - श्री महावीरप्रसाद शर्मा।

- आर्य उप प्रतिनिधि सभा, देहरादून के निर्वाचित पदाधिकारी:
प्रधान - श्री देवदत्त बाली जी। मंत्री - श्री नैनसुख वर्मा
कोषाध्यक्ष - श्री ऋषि कुमार वर्मा जी

लन्दन में विराट हिन्दू सम्मेलन

नवम्बर 18, 1988 - ब्रिटेन के 400 हिन्दू संगठनों तथा आर्य समाज के संयुक्त प्रयासों से तथा विश्व हिन्दू परिषद के तत्वाधान में लन्दन में एक विराट हिन्दू {आर्य} सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसमें एक लाख से अधिक हिन्दू भाग लेंगे, जिसमें एक हजार से अधिक हिन्दू ब्रिटेन से बाहर के देशों के होंगे। यह आयोजन लन्दन के समीप प्रसिद्ध एवं विख्यात वेम्बले स्टेडियम में 26 तथा 27 अगस्त 1989 को होगा। आशा है इसका उद्घाटन नेपाल नरेश करेंगे।

आर्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रकोष्ठ

आर्यप्रतिनिधि सभा उ0 प्र0 के वृहदधिवेशन के अवसर पर देश की स्वाधीनता संग्राम एवं हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वाले सेनानियों का एक प्रकोष्ठ आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तर्गत स्थापित किया गया है जिसके पदाधिकारी निम्नवत् हैं -

1- श्री ठाकुर महेन्द्र सिंह-अध्यक्ष, बहादुराबाद, सहारनपुर।
2- श्री रणजीत सिंह-कार्यकारी अध्यक्ष, बहादुराबाद, सहारनपुर।
3- श्री रामस्वरूप आर्य, महासचिव,
4- श्री रामचन्द्र आर्य, कार्यकारी सचिव,
5- श्री गंगाराम आर्य - कोषाध्यक्ष।

कृपया इस सम्बन्ध में निम्न पते पर पत्र-... करें।

सेनानी,
मा0 रणजीत सिंह, ..., सहारनपुर।
बहा...

लेख प्रतियोगिता

विषय : महर्षि दयानन्द की ...ताएं

...लेख लिखिये और आकर्षक पुरस्कार जीतिए।

इस विषय पर लेख प्रतियोगिता के नियम निम्न हैं :

1- लेख 2000 शब्दो तक होना चाहिये, अथवा 15से20 पृष्ठ फुलस्केप साइज में होना चाहिये।
2- लेख स्पष्ट, सुवाच्य शब्दों में हाथ से लिखा हुआ अथवा टाइप किया हुआ होना चाहिये।
3- निर्णायकों का निर्णय अन्तिम होगा।
4- तीन पुरस्कार प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय 500/-, 350/- व 250/- ... होंगे जो पुस्तकों के रूप में प्रदान किए जायेंगे।
5- लेख 31 जनवरी 1989 तक निम्न पते पर पहुँच जाना चाहिये।
6- 30 वर्ष तक की आयु वाला कोई भी युवक या युवती प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
7- पुरस्कार वितरण गुरुकुल कण्वाश्रम के वार्षिकोत्सव पर बसन्त पंचमी के अवसर पर किया जायेगा।
8- प्रविष्टि के डाक में गुम हो जाने अथवा खराब हो जाने पर आयोजकों की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी. अतः आप लेख को अच्छी प्रकार पैक करके भेजें।
9- प्रविष्टि के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का कोई पत्राचार नही किया जायेगा।

प्रविष्टियाँ भेजने का पता:

रमेशकुमार गोयल,
मैसर्स-बन्शीधर रमेशकुमार
गोखले मार्ग, कोटद्वार
{पौड़ी-गढ़वाल}

xxxxxxx

- आर्योपसभा बिजनौर गढ़वाल क्षेत्र में प्रचार जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बिजनौर गढ़वाल के क्षेत्र करतारपुर की एक सभा में क्षेत्रीय प्रचार की योजना स्वीकृत हुई जिसमें 26/11 से 11/12 तक विभिन्न स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार होगा।

xxxxxxx

- ज्ञानपुर {वाराणसी} विश्वभारती अनुसंधान परिषद के निदेशक एवं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर {हरिद्वार} के कुलपति डा0 कपिलदेव द्विवेदी के सुपुत्र श्री धर्मेन्दु द्विवेदी का शुभविवाह स्व0 श्री चैतन्य कुमार अदौलिया की सुपुत्री कु0 जयश्री के साथ होशंगाबाद {म0प्र0} में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के वरिष्ठ अधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति, अतिथियों ने नवदम्पती को आशीर्वाद दिया। यह विवाह बिना दहेज लिए सम्पन्न हुआ।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण स0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
मार्ग शीर्ष शुक्ल 2
11 दिसम्बर , रविवार, 1988 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

पाँच नवीन आर्य समाजों की स्थापना

लालगंज (रायबरेली) दिनांक 25-9-88 से 10-10-88 तक आर्यसमाज पुरानी बाजार, लालगंज के प्रधान श्री लाला रामकुमार मुनि वानप्रस्थ द्वारा वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत सर्वश्री प0 केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थी महोपदेशक सभा, श्री वीरेन्द्र आर्य गाजीपुर, श्री जलेश्वर सिंह, श्रीमती धर्मशीला जी भजनोपदेशकों ने जनपद के विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार किया जिससे 5 नवीन आर्य समाजों की स्थापना हुई और हजारों ग्रामीणांचल के लोगों ने आर्यसमाज का सन्देश सुना।

	नाम आर्य समाज	संयोजक
1-	आर्यसमाज ग्राम धन्नीपुर,दयालपुर	श्री कृष्णबिहारी सिंह ...मौरया
-	आर्यसमाज भीतरगाव	श्री ...शंकर ...य
3-	आर्यसमाज धर्मल...योजना,ऊँचाहार	श्री ओंकारमित्र शास्त्री
4-	आर्यसमाज देदौर	श्री सन्तप्रसाद ... आर्य
5-	आर्यसमाज अलीगंज	श्री ...सिंह

श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री तथा आर्यसमाज रायबरेली का भी विशेष योगदान रहा।

अनुकरणीय दान

दानेन तुल्यो निधिरस्तिनान्य दान के समान अन्य कोई खजाना नहीं। मात्र सात्विक दान पर ही आश्रित आपके प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर मझना, फर्रुखाबाद की जहां अन्य आवश्यकताएं हैं, वहां यज्ञशाला का निर्माण भी एक महती आवश्यकता थी। गुरुकुलीयजनों को इसका अभाव सदैव खटकता था आश्रमस्थ ब्रह्मचारी बरामदे आदि में बैठकर ही दैनिक यज्ञ का सम्पादन करते हैं। दानवीर महाशय श्रीयुत देवीदयालु जी आर्य रोशनाबाद, फर्रुखाबाद ने गुरुकुलीय इतिहास में नामांकन कराते हुए गुरुकुल के कुलपति श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री को गत दिनों इस पावमानी यज्ञशाला के निर्माण का सुवचन दिया और 7 नवम्बर, 1988 को स्वयं के करकमलों द्वारा यज्ञशाला का सहर्ष शिलान्यास किया साथ ही यह समुद्घोष किया कि गुरुकुल के अग्रिम वार्षिक महोत्सव (25,26,27फरवरी-1989) का पुनीत महायज्ञ इस निर्माणाधीन यज्ञशाला के पावन प्रांगण में ही होगा। इस प्रशंसनीय सहयोग के लिये समस्त आर्यजगत उनका हृदय से आभारी है। आशा है अन्य आर्यजन भी छात्रावास, विद्यालय भवन, पुस्तकालय कक्ष, अतिथि सदन, भोजनालय आदि गुरुकुलीय आवश्यकताओं को पूर्ण कराके कृतकारी होंगे।

शोक प्रस्ताव

दिनांक- 26 11 88 दिन शनिवार की सायं समय-8 बजे आर्य समाज बदौली जनपद अलीगढ द्वारा पूज्य स्वामी श्री नारायण स्वामी क्रान्तिकारी साधु आश्रम अलीगढ का निधन एटा गुरुकुल में होने पर एक शोक सभा की गयी जिसमें 1 मिनट का मौन धारण किया गया और परम पिता परमात्मा से कामना की गयी कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। वे एक महान समाज सुधारक क्रान्तिकारी महात्मा थे जिन्होंने अंतिम समय तक समाज हित में श्रेष्ठ कार्य किया।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

प्रधान	-	श्री भूप नारायण जी शास्त्री
मंत्री	-	श्री रामाज्ञा जी वैरागी
कोषाध्यक्ष	-	श्री द्वारिका प्रसाद 'ओज'
लेखानिरीक्षक	-	श्री जलधर प्रसाद आर्य
संस्था निरीक्षक	-	श्री भगवान सहायक,श्री रामचन्द्र प्रसाद आर्य

दो सौ परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

आर्य-प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर की ओर से टेम्ब्रुसोडा जि0 अमरावती में आदिवासी सहायता शिविर का आयोजन सत्यवीर शास्त्री मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के तत्वाधान में किया गया।

मुसलमानों ईसाइयों से मुकाबला करने के सिलसिले में इस विभाग में आर्यों का यह प्रथम प्रयास था फिर भी दो सौ व्यक्ति परिवार यज्ञ में पधारे थे। उनको उनकी इच्छानुसार कुंकुम तिलक लगाकर यज्ञोपवीत देकर यज्ञ के सामने वैदिक धर्म की दीक्षा प0 सत्यवीर शास्त्री सभा एवं ब्रज गोपाल आर्य हरियाणा की उपस्थिति में दी गई। भूतपूर्व विधायक श्री मामराज-जी खंडेलवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न विशाल सभा में श्री सत्यवीर-शास्त्री श्री अमृदयाल व्यास श्री अशोक पवार आदि विद्वानों ने ईसाई मुसलमान बनने से पैदा होने वाली विपत्तियों पर प्रकाश डाला।

श्री सत्यवीर शास्त्री श्री लालचन्द्र नाथानी श्री जमुना-दास जी आर्य श्री शम्भू जी खंडके इनके द्वारा 105 धोतियाँ, 131 साड़ियाँ 500पैन्ट एवं 1000 छोटे बच्चों को कपड़े बाँटे गये। दो हजार व्यक्तियों ने सामूहिक भोजन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की गोष्ठी सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की द्वितीय गोष्ठी दिनांक 1 ...म्बर को आर्य समाज सैक्टर 16 के सभा भवन में सम्पन्न हु... की अध्यक्षता प्रो0 शेर सिंह जी ने की तथा डा0 भवानी लाल भारतीय ने गोष्ठी का संचालन किया। वेद के स्वाध्याय स्वरूप पर हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत में 11 निबन्ध पढ़े गये। प्रथम गोष्ठी में डा0 भवानी लाल भारतीय के अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी के वेद विभाग के प्रवाचक डा0 सत्यव्रत राजेश, दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय की डा0 वसुन्धरा रिहानी, गुरुकुल कांगड़ी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा0 निगम शर्मा तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो0 कृष्णलाल ने निबन्धवाचन किया।

गोष्ठी के द्वितीय सत्र में सर्व श्री नरसिंह पण्डा, (पंजाब विश्वविद्यालय) श्री क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक आर्य जगत्) डा0 ब्रह्म मित्र अवस्थी (इलाहाबाद) डा0 बी0 धवन (चण्डीगढ) तथा स्वामी सत्यप्रकाशजी ने अपने निबन्धों का वाचन किया।

भवानी लाल भारतीय
संयोजक

'सत्यार्थ प्रकाश का महाभाष्य"

पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि "सत्यार्थ प्रकाश" के 1,2,3,4,5, 7,8,9,10,11 समुल्लासों पर मैंने विस्तृत भाष्य कर दिया है। सभी प्रमाणों को मूल ग्रन्थों को देख कर अंकित किया गया है।

इसका प्रकाशन आवश्यक है। जो प्रकाशक, व्यक्ति या सभा प्रकाशित करने के इच्छुक होवें मुझ से पत्राचार करें। एक वर्ष में मैंने यह अनुसन्धान कार्य किया है।

इसी प्रकार 18 पुराणों की आलोचनाएं भी मैंने लिखी हैं। इन्हें भी प्रकाशित करनी हैं। धनाभाव के कारण मैं प्रकाशित करने में असमर्थ हूँ।"

शिवपूजन शास्त्री,
वेदमंदिर (अशोक मिल के सामने) ज्वालापुर

...आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अध्यायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

अ० स० 2241/57 मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार, सवत 2045 वि०, दिनाक 18 दिसम्बर 1988 घोषणा पत्र स० 7/28-2 85



यस्मान्न ऋते किचन्कर्म क्रियते
तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु।।

हे प्रभो। यह मन बडा शक्तिशाली है इन्द्रियों का अधिपति है। इसकी आज्ञा और प्रेरणा के बिना कोई कर्म सम्भव नही है। इसे शुभ सकल्प वाला बनाइये ।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०, साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अक	50

श्रद्धानन्द के स्वप्न को साकार करके रहेंगे

विश्व के आर्य करण की दिशा में अनोखा जागरण

६००० ईसाईयों द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनाक 26 से 28 नवम्बर तक सरगुजा (म0प्र0) के सीता॰॰॰ नामक स्थान मे वनवासी आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने की। 26 नवम्बर को अभूतपूर्व विशाल शोभायात्रा में लगभग 40 हजार वनवासी युवको के सास्कृतिक लोकनृत्य सगीत तथा वैदिक धर्म के जयजयकार से समस्त वनवासी क्षेत्र गूज उठा। रायगढ से पत्थरगाव सीतापुर तक के लम्बे बीहड मार्गो तथा पगडडियो पर वनवासी स्त्री पुरुषो के अपार समूह द्वारा स्वामी जी तथा अन्य आर्य नेताओ का जोरदार स्वागत किया गया। सीतापुर मे एक विशाल यज्ञ कुण्ड बनाया गया जहाँ पवित्र वेदमन्त्रो द्वारा यज्ञ के कार्य क्रम सम्पन्न हुए और हजारो की सख्या मे वनवासियो ने बडी श्रद्धा के साथ यज्ञोपवीत ग्रहण किया। तीन दिनो के इस कार्यक्रम मे पहले दिन 1700 दूसरे दिन 3700 और तीसरे दिन 500 लोगो ने ईसाई धर्म को छोडकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। आर्य समाज के इतिहास मे धार्मिक जागरण की यह क्रान्ति इस क्षेत्र मे अभूतपूर्व मानी जायगी ।

आर्य समाज के सर्वोच्च नेता स्वामी आनन्दबोध जी ने वैदिक धर्म मे प्रविष्ट हुए लोगो को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह सम्मेलन राष्ट्रीय एकता अखण्डता और प्रभु सम्पन्नता को मजबूत करेगा । इस सम्मेलन मे सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि विदेशी पादरियो को तुरन्त देश से बाहर निकाल दिया जाय। क्योंकि उनका लक्ष्य धार्मिक जागरण न होकर लालच निर्धनता तथा अशिक्षा के कारण भोले-भाले वनवासियो को ईसाई बनाकर देश मे विघटनकारी शक्तियों को प्रोत्साहन देना है ।

इस सम्मेलन के लिए उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती तथा उनके सहयोगियो का बडा त्याग और परिश्रम रहा जिसके लिए आर्य जनता उनका हार्दिक अभिनन्दन करती है। इस सम्मेलन मे आर्य जगत के प्रसिद्ध नेतागण वक्ता एव प्रचारक बडी सख्या मे पधारे थे जो 26 नवम्बर को पूज्य स्वामी ओमानन्द जी द्वारा ओ३म ध्वज उत्तोलन से प्रारम्भ होकर 28 नवम्बर तक बडे उल्लास एव शान्ति के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। सैकडो वनवासी वैदिक धर्म मे दीक्षा लेने हेतु अभी प्रतीक्षारत है। उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने सम्मेलन की सफलता हेतु प्रदेशीय आर्य जनता की ओर से हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित की है ।

इन्द्रराज,
प्रधान।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ- मार्ग शीर्ष शुक्ल 10 संवत् 2045 18 दिसम्बर 1988
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

अद्भुत व्यक्तित्व के धनी ——

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

"बहुत शौक से सुन रहा था जमाना,
तुम्ही सो गये दास्तां कहते-कहते।।

· · ·और 23 दिसम्बर 1926 की वह दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी। दिल्ली के सार्वदेशिक सभा भवन के एक कक्ष में भगवावेषधारी एक सन्यासी लेटा हुआ है। आज कुछ अस्वस्थ है। तूफानों की तरह उमड़ने वाला, बादलों की तरह गरजने वाला, बिजली की तरह चमकने वाला, ऋषि का प्यारा आज सचमुच कुछ अस्वस्थ प्रतीत हो रहा है, इसीलिए तो लेट गया है कुछ क्षण विश्राम करने के लिए । प्रभु की विचित्र लीला, कोई नही जानता यह विश्राम अभी-अभी चिरनिद्रा में परिवर्तित होने वाला है। आज वह शरीर से अस्वस्थ अवश्य है पर मन से पूर्णस्वस्थ है, बलिष्ठ है। विचारों का तूफान मन में उठा हुआ है-"अभी तो मैने ऋषि के मिशन को पूरा नही किया·······घर-घर में वेदो का नाद नही गून्जा, इस बसुन्धरा पर वेदपाठी बटुकों की सेना तैयार नही हुई, अभी तो एक ही गुरुकुल स्थापित हुआ है, आर्यजाति के लाल जिन्हें मगरमच्छों ने लील रखा है, अभी मुझे वापस कहाँ मिले हैं- उन्हे अपने हृदय से लगाने के लिए मन आतुर हो रहा है। धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास और नफरत की आग फैलाने वालों को अभी मैं समझा" कहाँ पाया हूँ। वेदों का प्रकाश करके अज्ञान की तामस्रा छिन्नभिन्न करने में अभी सुफलता कहाँ मिली है- स्वस्थ होकर उठूँगा तूफान की तरह और वैदिक धर्म के प्रचार में जुट जाऊगाँ·· पर नही, यकायक सनसनाती हुई गोलियाँ साने को चीरती हुई पार हो गई और क्षणभर में ही क्षणिक विश्राम, चिरनिद्रा की अनन्तशायिनी गोद में जाकर विलीन हो गया। उस क्रूर हाथ की क्रूर जिज्ञासा शान्त हुई क्योंकि वह यही चाहता था। और उस दिन शान्ति का वह अमरदूत ओउम् शान्ति कहकर हमसे सदा-सदा के लिए विदा हो गया।

और आज हम इन 62 वर्षो में उस दिव्य पुरुष के सन्देश को कितना आगे बढ़ा पाये हैं- यह सोचने और विचारने का समय है। यह निश्चित है यदि वह वीरवर जीवित रहता तो आर्यो का यह प्यारा पंचनद कभी विभाजित न होने देता। गोलियो के लिए उसका सीना हमेशा खुला हुआ था। उसने ब्रिटिश साम्राज्यशाही से लोहा लेते हुए देहली के चांदनी चौक में ब्रिटिश बायनेटों के सामने सीना खोल दिया था। जलियाँवाले बाग की बलिदान भूमि में मार्शल लॉ के होते हुए भी अमृतसर की राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से ब्रिटिश साम्राज्य शाही के खिलाफ सिंह की तरह गरज उठा था। ऋषि के दर्शन ने उसके अपावन जीवन को तप्तस्वर्ण की भाँति चमका दिया था। वह ऋषि का सत्यनिष्ठ मानस पुत्र था। मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही उसने कहा था- "अब तो मेरी यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूँ।" उसने गंगापार घने जंगलों में गुरुकुल की स्थापना अपने बच्चों को कटिकौपीनधारी बटुक बनाने के साथ की थी। कितना ऊँचा त्याग था। सब कुछ समर्पित करने के बाद भी आर्य समाज के प्रति की गई अपनी सेवाओं से वह सन्तुष्ट नही था इसलिए अपनी डायरी में उसने आत्मविभोर होकर अपनी अन्तर्वेदना इन शब्दों में प्रकट की थी- "हे प्राणेश्वर । मन के जानने वाले, तू ही जानता है मैने आर्य समाज की कितनी सेवा की है। मैं सन्तुष्ट नही हूँ। इस दिखावे में अनेकों अपावन चेष्टाएं छिपी हुई हैं। मुझे बल दे कि मै आर्य समाज की सेवा में सदा दृढ़ बना रहूँ।

उसके बलिदान ने आर्य समाज को एक नई प्रेरणा और नई शक्ति प्रदान की है । आर्य समाज में आज धर्म की वेदी पर अपने को आत्माहुत करने वाले वीरों की कमी नही है। आवश्यकता है केवल संगठित और योजनाबद्ध होकर कार्य करने की। स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य समाज का जितना कार्य अकेले अपनी जीवन में करके दिखा दिया क्या हम सब मिलकर भी उससे अधिक कार्य करने में असमर्थ हैं। उनका आर्य (हिन्दू) संगठन किसी संकुचित साम्प्रदायिकता के आधार पर अवलम्बित न होकर विश्वबन्धुत्व की पुनीत भावनाओं पर आधारित था। उनका शुद्धि आन्दोलन घृणा एवं मिथ्याभिमान का द्योतक नही था वरन् पूर्ण आत्मिक एवं मानसिक शुद्धि के लिए था। वे विश्व के मानव मात्र को सच्चा आर्य बनाना चाहते थे। उन्होंने अछूतोद्धार किसी राजनीति से प्रेरित होकर संचालित नही किया था अपितु सदियो से चले आ रहे आर्यजाति में ऊँच-नीच के व्यवहार को दूर करने के लिए किया था। उनका बलिदान दिवस हमें आदर्शसंयमी, परम ईश्वर भक्त कट्टर देशप्रेमी, अछुतोद्धारक एवं प्राचीन आर्ष शिक्षा पद्धति का सच्चा अनुगामी बनाने में सहायक हो ।

सरकार द्वारा संस्कृत के मामले पर पुनर्विचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कल 10 नवम्बर, 1988 को मानव ससाधन विकास मंत्री श्री पी0 शिवशंकर से एक भेंट वार्ता में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा नई शिक्षा पद्धति पर जारी किए गए परिपत्र पर चर्चा की। बोर्ड के इस परिपत्र के अनुसार संस्कृत भाषा को अन्य विदेशी भाषाओं यथा-जर्मन, फ्रेन्च, अरबी, फारसी आदि के समकक्ष रखा गया है, तथा उसे अनिवार्य भाषा के रूप में अध्ययन के लिए स्कूलों के हिन्दी पाठ्यक्रम (अ) के साथ जोड़ा गया है।

मंत्री महोदय ने इस अवसर पर पहले उस पृष्ठभूमि की चर्चा की जिसके आधार पर शिक्षा पद्धति के नये स्वरूप को सृजित किया गया था। इस भेंटवार्ता के समय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष भी उपस्थित थे ।

बातचीत के परिणाम स्वरूप मंत्री महोदय ने इस बात को स्वीकार किया कि संस्कृत को अन्य विदेशी भाषाओं के साथ एकसम करने से जनता में जो रोष पैदा हुआ है, वह अकारण नहीं है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। उन्होंने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि इस दोषपूर्ण स्थिति को शीघ्र दूर किया जाय। आर्य समाज के नेताओं ने बातचीत के समय यह प्रश्न भी उठाया कि संस्कृत भाषा के साथ यह भेदभाव क्यों बरता जा रहा है, जबकि संविधान के अनुच्छेद आठ में दी गई प्रमुख भारतीय भाषाओं की सूची में उसका स्थान भी है। हिन्दी को प्रथम-भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तरह अन्य भारतीय भाषाओं को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में भी संस्कृत को क्यों सम्मिलित नहीं किया गया है।

वार्तालाप के अन्त में मंत्री महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि संस्कृत के मामले पर वे सब दृष्टिकोण से पुनः विचार करेंगे ।

मनमोहन तिवारी,
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ।

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी : अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

{श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य,
अजमेर- 305001}

"एक उन्नत कार्य दर्शनीय मूर्ति {प्रभावपूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा} हमसे भेंट करने आती है। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा मसीह की प्रतिकृति बनाने के लिए आदर्श के रूप में इसका स्वागत करता है और मध्यकाल की रुचि का चित्रकार इस में सन्त पीटर का रूप देखता है। "इंग्लैंड के प्रसिद्ध लेबर लीडर {जो बाद में चलकर इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री भी थे} मि0 रैम्जे मैक्डानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में उपरोक्त कथन 1914 ई0 में लिखा था।

महान् शिक्षाशास्त्री:-

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भारत के शैक्षणिक इतिहास में एक अद्भुत और नवीन प्रयोग किया था। वह एक सफल प्रयोग था। वह तत्कालीन प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरुद्ध विद्रोही पग था-लार्ड मैकाले की बनाई हुई शिक्षा योजना का प्रत्युत्तर था। स्वामी जी की शिक्षा योजना को "गुरुकुल शिक्षा योजना" का नाम दिया जा सकता है। महर्षि दयानन्द-सरस्वती ने "सत्यार्थ प्रकाश" में शिक्षा के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण विचार प्रकट किए हैं, उनको मूर्तरूप देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 16 मई 1900 ई0 को गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

गुरुकुल में स्वामी जी ने लार्ड मैकाले द्वारा सम्पुष्ट शिक्षा नीति के एकदम विपरीत शिक्षा नीति को अपनाया था। गुरुकुल कांगड़ी एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय था। सरकार से एक पैसा भी सहायता के रूप में नहीं लिया था। जनता को इस बात से बहुत आश्चर्य हो रहा था कि यहां एक भी अध्यापक अंग्रेज नहीं है। सरकारी यूनिवर्सिटीयो में प्रचलित पाठ्य पुस्तकें भी यहां प्रयोग में नहीं आती थी। अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान की पुस्तकें भी गुरुकुल ने अपने आप तैयार कर ली थी। यहां के विद्यार्थी किसी भी यूनिवर्सिटी की परीक्षा में सम्मिलित नहीं होते थे। गुरुकुल ने अपनी डिग्रियों को स्वतन्त्र नाम दे रखे थे और सबसे बढ़कर जो असम्भव कार्य समझा जाता था वह था माध्यम का प्रश्न। यहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं था। हिन्दी था। यह देश की सबसे पहली यूनिवर्सिटी थी, जहां उच्च शिक्षा की माध्यम एक भारतीय भाषा हिन्दी को बनाया गया था। वस्तुतः यह सरकार की खुली अवज्ञा थी, एक खुली चुनौती थी- मैकाले को स्वामी जी महाराज की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी माध्यम से गुरुकुल की पढ़ाई का प्रबन्ध करके राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छुआछूत विरोधी :-

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब छुआछूत व ऊंच-नीच का भाव तीव्र था तब स्वामीजी के गुरुकुल में गौड़ ब्राह्मण और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे, एक साथ भोजन करते थे। सब एक जैसे वस्त्र, एक जैसा भोजन और एक सा रहन-सहन था। सब एक दूसरे को भाई-भाई समझते थे।

स्वाधीनता सेनानी व प्रखर राजनेता:-

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजनीति को धार्मिक कार्य समझकर ग्रहण किया। लाखों आर्य समाजियों ने उनका अनुगमन कर कांग्रेस द्वारा प्रवर्तित असहयोग एवं स्वदेशी आन्दोलनों में भाग लिया। हिन्दू महासभा, स्वराज सभा और नैशनलिस्ट दलों में आर्यसमाज के प्रवेश से बसन्त बहार सी आ गई। खिलाफत आन्दोलन, जलियांवाला बाग आन्दोलन आदि को सर्वत्र आर्यसमाजी भावना एक नवीन चेतना प्रदान करने लगी। यही नहीं दिल्ली के घण्टाघर पर अंग्रेजी संगीनों के समक्ष छाती खोलकर उपस्थित होने वाले सन्यासी ने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद के मन्त्रोच्चार-पूर्वक हिन्दू मुस्लिम ऐक्य द्वारा स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग बताया। अमृतसर पहुंचकर "गुरु का बाग " सत्याग्रह में सम्मिलित होकर सिखों को अपने बृहत समाज की सहायता का आश्वासन दिया और जेल गए ।

साहित्यसेवी और पत्रकार:-

अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में स्वामी जी ने कल्याण मार्ग का पथिक जैसे हिन्दी के गौरव ग्रन्थ में आत्म कथा रूप में शब्द चित्रित किया। अपने पतन और उत्थान को अंकित करने का यह महाप्रयास साहित्य जगत में निरुपम है। "सुबह उम्मीद", {उर्दू}, "ब्रह्मचर्य एक्त की व्याख्या" {आचार्य} रामदेव के सहयोग से}, "आर्य समाज एण्ड इटस डिट्रैक्स" {अंग्रेजी}, "स्वामी श्रद्धानन्द धर्मोपदेश", "हिन्दू संगठन मरणोन्मुख जाति का रक्षक" {अंग्रेजी} "आर्य समाज के इतिहास की सामग्री} {जिसके आधार पर उनके सुपुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति ने आर्यसमाज का इतिहास लिखा} तथा "सद्धर्म प्रचारक", अर्जुन, "श्रद्धा", "दी लिबरेटर" आदि पत्रों में प्रकाशित उनके लेख तथा लेखमालाएं उनके साहित्यानुराग के प्रमाण हैं। अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में पढ़ा गया अभिभाषण तथा भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में पढ़ा गया अभिभाषण तात्कालिक समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता के प्रतिबिम्ब हैं। वे अंग्रेजी, हिन्दी उर्दू के सिद्धहस्त लेखक थे। पंजाबी और संस्कृत के सुधी अध्येता एवं प्रयोक्ता थे। कुशल पत्रकार थे। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार एवं उसे राष्ट्रभाषा बनाने में उन्होंने रचनात्मक एवं प्रचारात्मक दोनों धरातलों पर बढ़ चढ़कर काम किया।

कट्टर सिद्धान्तवादी:-

स्वामीजी कट्टर सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे, कभी भी अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ हित सिद्धान्तों की बलि नहीं देते थे। अपनी इसी सिद्धान्त प्रियता के कारण ही उन्हें महात्मा-गान्धी एवं कांग्रेस दोनो का त्याग करना पड़ा था।

प्रसिद्ध गोभक्त लाला हरदेव सहाय जी ने एक बार स्वामीजी से कहा, "नित्य आपको मारने की धमकियां मिलती हैं। गान्धी जी जैसे नेता भी आपसे रुष्ट हैं"। इसके उत्तर में स्वामीजी ने गरजकर कहा--

"क्या हुआ जो गान्धी जी रुष्ट हैं ? क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र आते हैं? जब परमात्मा मेरे पास है, उनका वरदहस्त मेरी पीठ पर है और जब मेरा पक्ष सत्य है तो मुझे किसका भय ? ----- मै देश धर्म के कल्याण के लिए हर प्रकार के विरोध का सामना करूंगा।"

स्वामी जी जीवन भर देश, धर्म एवं आर्य समाज के लिए तिल-तिल जलते रहे एवं अन्त में एक दिन राष्ट्रहित में ही अपने प्राणों की आहुति दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या का समाचार जब गोहाटी में हो रहे कांग्रेस सम्मेलन में पहुंचा तो सभी स्तब्ध रह गए। महात्मा गान्धी ने शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा था कि भारत माता के एक देशभक्त और वीर सपूत की दुखद मृत्यु से ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। उनका जीवन और जीवन की विशेषताएं अपने देश और धर्म की सेवा पर अर्पित रही उन्होंने निर्भीकता और दृढ़ता के साथ असहायों, पतितों और दीन दुखियों को सहारा दिया ।

मानवता के पुजारी, स्वतन्त्रता के पक्षधर, क्रान्ति और शान्ति के प्राण, शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी के प्रबल समर्थक, ऋषि दयानन्द के महान् शिष्य, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से श्रद्धावनत हृदय से कोटिशः श्रद्धान्जलियां उनकी पावन स्मृति में सादर समर्पित हैं ।

काकोरी काण्ड के नेता बिस्मिल

§आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार§

रामप्रसाद की शिक्षा शाहजहांपुर §उ0प्र0§ में उर्दू से प्रारम्भ हुई। यह नटखट और शरारती स्वभाव के थे। यद्यपि जीवन के प्रारम्भिक काल में अनेकों बुराइयाँ थीं किन्तु आर्य समाज के सम्पर्क से जीवन में परिवर्तन आ गया। पिता कट्टर सनातनधर्मी थे। शास्त्रार्थ युग था पड़ोस में एक धार्मिक सज्जन रहते थे। उनके सत्संग से इस किशोर का जीवन प्रभावित हुआ और नियमित रूप से व्यायाम, प्राणायाम, संध्या शुद्ध अल्प भोजन इत्यादि के साथही आर्य समाजी हो गया। नगर के सनातन धर्मियों ने आर्य समाज के विरुद्ध एक पण्डित द्वारा प्रचार कराया। आर्य समाज ने पण्डित अखिलानन्द को बुलाया। शास्त्रार्थ हुआ संस्कृत में। आर्यसमाज का जनतापर प्रभाव पड़ा। बिस्मिल की इस प्रकार की आर्यसामाजिक प्रवृत्तियों से चिढ़ मुहल्ले के कुछ लोगों ने उनके पिता से शिकायत कर दी। बिस्मिल द्वारा आर्य समाज का प्रबलता से पक्ष लेने के कारण वह चिढ़ गये और क्रोध में आ पुत्र को पीटते हुए हुक्म दिया "अगर इस घर में रहना है तो आर्य समाज से अभी त्यागपत्र दो।" बिस्मिल चुप रहे वह मामला बढ़ते देख कपड़े पहन पिता के चरण स्पर्श कर घर के बाहर जाने लगे। पिता ने क्रोध में आ पुत्र के हाथ से पायजामा छीन लिया केवल लगोट बांधे किशोर को घर से बाहर निकाल दिया। शाम हो रही थी। शहर में सर्वथा अपरिचित किशोर कहां जाता कोई उपाय न देख जंगल में एक वृक्ष पर चढ़ एक रात और एक दिन बैठा रहा। भूख लगी तो खेतों में से हरे चने तोड़ खा लिये। दूसरे दिन सांय आर्य समाज में पं0 अखिलानन्द का व्याख्यान सुनने अकेले एक पेड़ के नीचे बैठ गये। इसी समय उनके पिता दो आदमियों के साथ पुत्र को ढूंढने वहां आ गये। पास में ही वह स्कूल था जहां बिस्मिल पढ़ता था। मुख्याध्यापक के पास ले गये। उसने पिता जी को विशेष रूप से बच्चों के साथ स्नेह और अपनत्व की भावना के लिए समझाया और इस किशोर को भी शिक्षा दी। इस घटना के बाद फिर उसके पिता के व्यवहार में काफी परिवर्तन आ गया। पर इकलौते पुत्र बिस्मिल के घर से बाहर जाने के कारण घर में गहरा शोक का वातावरण रहा। उसके बिना कैसे रह सकते थे।

स्वामी सोमदेव जी की प्रेरणा :-

आर्य समाज के साथ बिस्मिल जी का सम्पर्क विभिन्न प्रकार से बढ़ता रहा इसी अवधि में शाहजहांपुर आर्य समाज में स्वामी सोमदेव जी आये। बिस्मिल का स्वामीजी से अत्यन्त निकट का सम्पर्क हुआ। निर्बल और रोगी रहने के फलस्वरूप बिस्मिल इनकी बहुत सेवा करते स्वामी जी वृद्ध आर्य समाजी विद्वान और उत्तम वक्ता थे। बिस्मिल इन्हें अपना गुरु मानते थे। सचमुच, देशभक्ति विदेशी शासन के प्रति विद्रोह और भारत माता के चरणों में प्राण तक समर्पण करने , संकल्प इत्यादि जीवन मार्ग के लक्ष्य बिस्मिल में दृढ़ता से इन्हीं स्वामी जी की शिक्षा और सतत् प्रेरणा से बहुमूल्य हुए। बिस्मिल लाहौर के भाई परमानन्द पर बड़ी श्रद्धा रखते थे लाहौर षडयंत्र के समय भाई जी को फांसी का दण्ड दिया गया। स्वामी सोमदेव जी भाई जी के निकटतम परिचितों में से थे। इस कठोर सदाचार से उनका और साथ ही बिस्मिल दोनों के हृदयों में पाशविक विदेशी सरकार के प्रति तीव्र क्रोध घृणा और उसके पूर्णतः विनाश के लिये कुछ प्रभावी कदम उठाने के संकल्प स्वाभाविक ही थे। बिस्मिल ने दैनिक संध्या प्रार्थना के बाद इस अंग्रेजी राज्य के विध्वंस करने की प्रतिज्ञा की। स्वामी जी की सेवा में तत्काल पहुँच इसकी जब उन्हें जानकारी दी, तब महाराज ने कहा- "प्रियवर ! प्रतिज्ञा करना तो बड़ा सहज है पर उस पर दृढ़ रहना कठिन है। बिस्मिल ने स्वामी जी महाराज के चरण स्पर्श कर निवेदन किया "यदि श्री चरणों की कृपा बनी रही तो इस प्रतिज्ञा पूर्ति के लियेजीवन के अन्तिम श्वांस तक किसी प्रकार की त्रुटि नहीं आने दूँगा ।" उस दिन से स्वामी जी का मानस-पटल खुल गया और कई रहस्य जो अब तक शिष्य को नहीं बताये थे सब निःसंकोच प्रकट कर दिये। बिस्मिल के क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात इसी दिन हुआ। फलतः इस युवक के जीवन में धार्मिक और आत्मिक दृढ़ता का बीज वपन इस शुभ घड़ी में पूज्य स्वामी सोमदेव जी महाराज की छत्रछाया में आज के दिन ही हुआ। इस व्रतपालन की दिशा में बिस्मिल का पहला कदम स्वामी जी की प्रेरणा से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का था। निश्चय ही बिस्मिल इस दिशा में सर्वथा अडिग ही रहे।

लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में लोकमान्य की बग्घी युवकों ने खींची

लखनऊ कांग्रेस में बिस्मिल ने उत्साह से भाग लिया। उस समय कांग्रेस पर नरम दल का प्रभाव था लोकमान्य तिलक इस अधिवेशन में शामिल होने के लिये आ रहे थे। युवक दल ने बड़ी धूम-धाम से उनके स्वागत का निश्चय किया। यद्यपि तत्कालीन नरम-दलीय नेता इसके पक्ष में कम थे। लोकमान्य को गाड़ी से उतरते ही एक मोटर में बैठा ले जाने का प्रबन्ध स्वागत समिति ने किया था। पर युवक दल इसके विरुद्ध था। बिस्मिल तथा अन्य दो-तीन युवक उस मोटर के आगे लेट गये जिस मोटर गाड़ी द्वारा लोकमान्य को चुपके से रेलवे स्टेशन से ले जाने का विचार कांग्रेस अधिकारियों का था, उसका टायर एक युवक द्वारा काट दिया गया। युवकों में बड़ा जोश था कांग्रेस अधिकारी देखते रह गये। युवकों ने लोकमान्य के चरण स्पर्श कर एक बग्घी के घोड़े खोल उसमें उन्हें बैठा कर स्वयं बग्घी अपने हाथों से खींच कर शहर में बड़ी धूमधाम से जलूस निकाल दिया। बिस्मिल के नेतृत्व में जनता में बड़ा जोश था फूलों की वर्षा के साथ जनता चिल्ला रही थी कि "लोकमान्य की बग्घी को एक बार हाथ लगा लेने दो "जीवन सफल हो जावेगा।"

क्रान्तिकारियों से सम्पर्कः- काकोरी गाड़ी की लूट-

लखनऊ कांग्रेस के इस अवसर पर बिस्मिल को क्रांतिकारियों से मिलने और विचार-विमर्श के बाद कुछ ठोस कार्य करने का अच्छा अवसर मिला। एक तथ्य प्रबल रूप से उजागर हुआ कि बिना हथियारों के क्रांति आन्दोलन सफल नहीं हो सकता। इस सशस्त्र क्रान्ति के लिये पर्याप्त धन की आवश्यकता है। ताकि शस्त्र खरीदे जा सकें। चाहे भारत में और चाहे विदेशों से। बिस्मिल के चिन्तन का केन्द्र जब शस्त्र प्राप्ति के लिये धन हो गया। इस कार्य के लिये किसी से दान, सहायता व उधार धन प्राप्ति की कोई संभावना नहीं है। बिस्मिल को एक ही उपाय सूझा-स्थिति का सब प्रकार से अध्ययन करने के बाद वह सरकारी धन की लूट । बिस्मिल किसी व्यक्ति के घर डाका डालना उचित नहीं समझता था। एक बार वह रेलयात्रा कर रहे थे। और गार्ड के पास वाले डिब्बे में बैठे थे उन्होंने देखा कि किस प्रकार स्टेशन मास्टर एक थैली लाया और गार्ड के डिब्बे में डाल गया। बस इस घटना ने उसके दिमाग में सरकारी धन लूटने का रास्ता खोल दिया।

काकोरी षडयंत्र केस बिस्मिल और दस युवक गिरफ्तार-

इसी के आधार पर "काकोरी रेल डकैती" का कार्यक्रम 9 अगस्त 1925 को बनाया गया। बिस्मिल की प्रेरणा से 10 युवकों के साथ बिस्मिल सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली पैसेन्जर गाड़ी बीच के एक छोटे स्टेशन काकोरी से कुछ आगे चल जब जंगल के पास पहुँची तो दूसरे दर्जे के डिब्बों में बैठे क्रान्तिकारी युवकों ने जंजीर खींच ली। गाड़ी रुक गई गाड़ी में बैठे यात्रियों को सावधान कर दिया गया कि वे अपने डिब्बे से नीचे न उतरें, बाहर की ओर सिर निकाल न देखें, केवल अपनी जगह बैठे रहें उन्हें कोई खतरा नहीं होगा। ऐसा ही किया गया। क्रान्तिकारी नीचे उतर गार्ड के पास पहुँच गये लोहे का सन्दूक उतार कर छैनियों से जब न कट सका, तब कुल्हाड़ों से तोड़ दिया गया। गार्ड को जमीन पर लिटा दिया गया। ताकि बिना गार्ड की झण्डी के गाड़ी न चल सके। एक यात्री जोश में रिवाल्वर चलाने को आ गये। दूसरे डिब्बे में बैठी अपनी स्त्री के पास जाने के लिये। रोका गया उन्हें, नहीं माने, संभवतः उन्हीं की गोली से एक यात्री मर गया।

संदूक तोड़ तीन गठरियों में थैलियां बांध ली। कुछ समय बाद ही लखनऊ पहुँच गये। अधिकतर यह युवक 20-30 वर्ष के थे। लगभग पांच हजार रुपया इस प्रकार लूटा

गया। समिति पर जो कर्ज था उसे उतारने और कुछ शाखाओं को भेजा गया। बिस्मिल ने एक पैसा भी इस राशि में से नहीं लिया। फलतः कार्यकर्ताओं की श्रद्धा बिस्मिल पर बढ़ गई।

पुलिस द्वारा गिरफ्तारियां- बिस्मिल की दृढ़ता- अब पुलिस ने बड़े जोर-शोर से गिरफ्तारी करनी शुरूकर दी। क्रान्तिकारी दल के कुछ साथियों ने ही अपने को निर्दोष बताने के लिए मुखबरी करनी शुरु कर दी। क्रान्तिकारी बनने के लिये जिस मानसिक-बल की आवश्यकता है, वह बिस्मिल को छोड़ अन्य साथियों में बहुत कम था। बिस्मिल इस घटना के तीन दिनबाद प्रातः अपने मकान में ही गिरफ्तार किया गया। और तनहाई कोठरी में रखा गया। अब जासूसी विभाग में बिस्मिल पर प्रलोभन डालने शुरु किये उन्हें कहा गया कि यदि वह इस मामले की आवश्यक जानकारी देदें तो 15 हजार रुपया इनाम के अतिरिक्त उन्हें इंग्लैण्ड भेज दिया जायेगा। फिर अगले दिन गुप्तचर विभाग के एक बड़े अधिकारी आये। बिस्मिल किस धातु का बना हुआ है। और ऋषि दयानन्द, का कैसा शिष्य है यह तथ्य भला यह विदेशी सरकार के यह जासूस नौकर कैसे समझ सकते थे? बिस्मिल अपने इस हृदय के साथ तनिक भी न तो प्रलोभनों में फंसे और न ही किसी भी प्रकार की क्षमा की भावना के शिकार हुए। जेल में अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में बिस्मिल ने भूख हड़ताल कर दी। नाक से जबरन दूध पिलाने की व्यवस्था की गई। बिस्मिल ने दृढ़ता से यह न करने दिया। फिर कुछ सामान्य सुविधायें दी गई।

काकोरी केस स्पेशल अदालत में- बिस्मिल की अपनी पैरवी -

काकोरी केस की सुनवाई के लिये विशेष अदालत जज-हैमिल्टन की अध्यक्षता में गठित की गई। बिस्मिल ने अपनी पैरवी स्वयं इतनी योग्यता और युक्ति संगत की कि जज और उपस्थित वकील भी आश्चर्य में पड़ गये। बिस्मिल के द्वारा की गई अपनी पैरवी के बाद सरकारी वकील को जब कोई प्रबल जवाब न सूझा तब उसने एक ही दलील पेश की सरकार के विरूद्ध कोई और किसी प्रकार का भी षडयंत्र कभी क्षमा नहीं किया जा सकता।

बिस्मिल और अशफाक आदि को फांसी का आदेश :-

6-अप्रैल 1927 को मुकदमे का फैसला सुनाया गया। श्री बिस्मिल और श्री अशफाक उल्ला-दोनों को फांसी की सजा दी गई। यह दोनों अटूट और घनिष्ठ मित्र थे। आज की पीढ़ी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि बिस्मिल कहां आर्य समाजी और अशफाक कहां मुसलमान धार्मिक मान्यताओं के एक दूसरे के सर्वथा विरूद्ध, पर मानवीय स्तर पर प्रगाढ़ मित्र काकोरी षडयंत्र कांड का यही अमृतफल है। जो भारत के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा।

गोरखपुर जेल में फांसी -

बिस्मिल को गोरखपुर जेल की फांसी की कोठरी में तीन महीने तक अपील की तारीख की और साढ़े तीन महीने फांसी की कोठरी में अत्यन्त कठोर यातनाओं के बीच रखा गया। मिट्टी के पात्रों में भोजन और सर्दी में फटे पुराने दो कम्बल मिलते थे। बिस्मिल उर्दू एवं हिन्दी के अच्छे शायर और कवि भी थे,-

"जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे हमारे डस खाने को।।

"सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।"

19 दिसम्बर 1927 ई0 सोमवार प्रातः साढ़े छः बजे गोरखपुर जेल में इस वृद्ध आर्य और त्यागी, आजन्म ब्रह्मचारी जनसेवक, परोपकारी देशभक्त रामप्रसाद बिस्मिल प्रातः संध्या, यज्ञ के बाद भारत माता की जय। वैदिक धर्म की जय। साम्राज्यवाद का नाश हो इत्यादि नारों के साथ प्रसन्न हृदय फांसी के तख्ते पर ओम् का जाप करते हुए झूल गये।

महर्षि श्रद्धांजलि

तुम ज्ञान सिन्धु थे, सत्य रूप,
तुम कर्मठ योगी मत वाले।
तुम देव पुरुष थे, लौह पुरुष,
थे धर्मध्वजा के रखवाले।।

सब जग को जीवन दान दिया,
औ स्वयं गरल का पान किया।
उद्धार जगत का हो------ कैसे,
था मर्म भेद यह जान लिया"

तब थी विचित्र भारत गाथा,
कैसा अज्ञान समाया -- था।
थे वेद ज्ञान सब भूल गये,
औ जाल बिछा था माया का।।

ईंटे पत्थर दीवाल वृक्ष,
कब्रों पे शीश पटकते थे।
वे भूत प्रेत चाण्डाल मियां,
व दैरो - हरम में भटकते थे।।

ऊँच नीच औ छूत छात का,
कैसा भेद किया जारी।
थे वर्ण जन्म से मान रहे,
की चौका चूल्हे ने ख्वारी।।

नारी औ शूद्र पर्दे कैसे,
विद्या के द्वारे बन्द किये।
मठ मन्दिर ठाकुर द्वारे में,
वे जगत पिता कर बन्द दिये।।

मद्य मांस हिंसा आदिक में,
पाप न माना जाता था।
भारत में बाल विवाहों को,
तब खूब रचाया जाता था।।

विधवायें क्रन्दन करती थीं,
व्यभिचार आँधियाँ थीं जारी।
यज्ञों में भेंट चढ़ाते थे,
हरा।. बने आर्य अत्याचारी।।

अज्ञान अविद्या की आँधी,
हे ऋषी आपने काटी थी।
पाखण्ड खण्डिनी पकड़ खड्ग,
पोपों की लीला छाँटी थी।।

उपकार आपका हे ऋषिवर,
न भूल सकें दुनियाँ वाले।
जो मार्ग आपने दिखा दिया,
हम उसी राह चलने वाले।।

हम बन कर आर्य स्वयं पहले,
फिर जग को आर्य बनायेंगे।
"वीर" वृती बन कर जग में,
ऋषि का उपकार चुकायेंगे।।

वीरेन्द्र "वीर",
सभा निरीक्षक,
बरेली जनपद।

श्रद्धानन्द की आत्मा जाग रही है

धर्म परिवर्तन क्यों

{"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की वैदिक भावना से ओतप्रोत अहर्निश समाज सेवा में समर्पित हमारे मान्य प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी घर-घर में अलख जगाते हुए घूम रहे हैं- बिछड़े हुए भाइयों,

वैदिक धर्म की शरण में आकर विश्व को शान्ति और प्रेम का आगार बना दो। उन्हीं की प्रेरणा से, उन्हीं के द्वारा आर्यसमाज मेरठ शहर में दिनांक- 28-10-88 को ईसाई धर्म के एक प्रचारक को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। ईसाई मिशनरियों के कारनामों का भण्डाफोड़ उसी दीक्षित वैदिक प्रेमी की लेखनी में पढ़िये - प्र० सम्पादक}

आज कल भारत के हर भाग में धर्म परिवर्तन की कोशिशें बहुत ही बड़े पैमाने पर चल रही हैं। मैंने व्यक्तिगत तौर पर देखा है कि धर्म परिवर्तन का कार्य वहीं सफल होता है जहाँ गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन, जातिवाद का बोलबाला है। और यही कारण है कि धर्मपरिवर्तन का घिनौना खेल आदिवासियों, हरिजनों, जनजातियों, उत्तर-प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, नागालेण्ड, मिजोरम, अरूणांचल प्रदेश, मेघालय, और असाम के ट्राइबल लोगों में बड़ी भयकर सफलता के साथ खेला जा रहा है। जो निश्चय ही भविष्य में भारत की एकता, अखण्डता, और संप्रभुता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। जिस तेजी के साथ धर्म परिवर्तन हो रहा है, विशेषकर सीमावर्ती राज्यों में वह इस बात का द्योतक है कि हमारी सरकार, खुफिया विभाग, और प्रशासन या तो नाकारा हो चुके हैं या जानबूझकर आंखें मूंदकर भारत की सुरक्षा को खतरा पैदा करने वालों को बढ़ावा दे रहे हैं।

धर्म परिवर्तन का एक कारण गरीबी है। आदिवासी और हरिजन, और पिछड़ी जाति के लोग इतने गरीब हैं कि उन्हें दो जून की रोटी जुटा पाना मुश्किल होता है, उन्हें सरकार और सम्पन्न वर्ग के लोगों से उपेक्षा और शोषण के सिवा कुछ भी नहीं प्राप्त होता हैं। ऐसे समय में इन भूखें और उपेक्षित लोगों के बीच में ईसाई मिशनरी जा पहुँचते हैं। इनके पास बेइन्तहा विदेशी पैसा होता है और इन पैसों को ये इन अभागे उपेक्षित गरीब लोगों में बनावटी प्यार और सहानुभूति के दिखावे के साथ बिखेर देते हैं और इन भूखे-नंगे उपेक्षित लोगों का धर्म, ईमान और आत्मसम्मान खरीद लेते हैं। इनके बच्चों को शिक्षा के नाम पर पाश्चात्य विचारधारा और ईसाई मजहब में पूरी तरह प्रशिक्षित करके इनके दिल में अपने देश, धर्म और संस्कृति के प्रति घृणा पैदा करते हैं। ये नये ईसाई अपनी मातृभूमि और संस्कृति के प्रति वफादार न होकर ईसा-मसीह के एजेन्टों के वफादार होते है। ऐसे नये बने ईसाइयों का, जो इन ईसाई मिशनरियों के हाथ की कठपुतली होते हैं, हर तरह के राष्ट्र और संस्कृति-विरोधी कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

अशिक्षा और पिछड़ापन भी धर्म परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। जनजातियाँ और ट्राईबल उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, मिजोरम, अरूणांचल प्रदेश, नागालैण्ड, मेघालय, आसाम की जनजातियों में शिक्षा का विकास नहीं हो पाया है जिससे ये भारत और इसकी संस्कृति एवं इतिहास के बारे में कुछ नहीं जानते। यदि कुछ शिक्षण संस्थायें हैं तो वे केवल ईसाई मिशनों द्वारा चलाई जाती हैं। जहाँ पाश्चात्य-दर्शन, संस्कृति और विकास के बारे में तो बताया जाता है परन्तु भारतीय संस्कृति एवं धर्म की पूरी तरह उपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि नागालैण्ड, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणांचल प्रदेश में भूमिगत विद्रोहियों की शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। ये विद्रोही भारत और भारतीयता के प्रति वफादार न होकर विदेशी शक्तियों के प्रति वफादार हैं जो भारत की एकता, शान्ति, अखण्डता के लिए खतरा बन गये हैं। हमारी सेना की लगातार कोशिशों के बावजूद इनको कुचला न जा सका है। मैं दावे से कहता हूं कि यदि उत्तर पूर्वी भारत में ईसाई मिशनों के शिक्षण संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये और इनका भारतीयकरण किया जाये तो इस खतरनाक स्थिति को धीरे-धीरे सुधारा जा सकता है। ये ईसाई शिक्षण संस्थाएँ इन विद्रोहियों की प्रेरणा-स्रोत हैं। इन सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास की गति को और तीव्र करने की आवश्यकता है।

भारत में जातिवाद भी धर्म-परिवर्तन का एक बड़ा कारण है। जातियों द्वारा अन्याय तथा दुर्व्यवहार और उपेक्षा भी छोटी जाति के लोगों को इन ईसाई मिशनरियों के चंगुल में फँसाती है। छुआछूत को जब तक पूरी तरह समाप्त नहीं किया जाता, धर्म परिवर्तन की समस्या बनी रहेगी। सवर्णों द्वारा छोटी जाति के लोगों को मंदिरों में न घुसने देना, उनको धार्मिक अनुष्ठानों, कार्यों से अलग रखना और उनकी उपेक्षा करना भी धर्म परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है।

एकता और जागरुकता का अभाव भी इन ईसाई मिशनरियों को प्रोत्साहित करता है कि वह हमें तोड़ सकें और निःशंक होकर धर्म-परिवर्तन का घिनौना खेल खेल सकें। हमारे समाज में संकीर्ण विचारधारा वालों का बोलबाला है, ऐसे लोग केवल स्वार्थ के लिए जीते हैं, इनका कार्य हर गलत तरीके से सम्पन्न होता है और इनमें सम्पत्ति की तृष्णा इतनी होती है कि ये शोषण और अत्याचार करने से भी नहीं चूकते। इस तरह सम्पत्ति कुछ इनेगिने लोगों के हाथ में आ जाती है तथा समाज का एक विशाल वर्ग गरीबी से परेशान हो उठता है। वह अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता, ऊपर से इस वर्ग को बेकारी, अपमान, उपेक्षा और भूख का सामना करना पड़ता है। कथित सम्पन्न वर्ग का दृष्टिकोण स्वार्थवश इतना संकुचित हो जाता है कि वह इस अभागे वर्ग के लिए अपना कोई कर्तव्य नहीं समझता, उल्टे सब सामाजिक, आर्थिक अधिकार अपने पास केन्द्रित कर लेता है। परिणामस्वरूप समाज का एक बड़ा वर्ग भूखा, नंगा, बेरोजगार और उपेक्षित हो जाता है तब यही कहावत चरितार्थ होने लगती है "मरता क्या न करता"। इस विशाल किन्तु गरीब उपेक्षित बेकार वर्ग को ईसाई या मुसलमान दिखावटी सहानुभूति, आर्थिक सहायता, सामाजिक उत्थान का लालच दिखाकर उनका धर्म परिवर्तन करन में सफल हो जाते हैं।

पारिवारिक अशान्ति और पति-पत्नी के बीच सामान्य प्रेमपूर्ण सम्बन्ध का न होना भी संतान को मानसिक तनाव की स्थिति की तरफ धकेलता है। जिस बच्चे को माता-पिता की उपेक्षा मिलती है, उसको समझने की कोशिश नहीं की जाती है, उस संतान के बहक जाने की प्रबल सम्भावना रहती है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी संतान को मानसिक तनाव और हीनभावना या उपेक्षित समझने का अवसर न दें। मेरा धर्म परिवर्तन भी इसी कारण हुआ था। माँ की मृत्यु, पिता के द्वारा उपेक्षित और रिश्तेदारों की स्वार्थ-परता ने मेरे तरुण हृदय को प्यार की खोज में भटका दिया और मैं इन धोखेबाज देशद्रोहियों के चंगुल में फंस गया था। ऐसा फिर नहीं होने देना है। इसलिए हमें अपने बच्चों को सहानुभूति और प्यार के साथ अपने संस्कारों, संस्कृति एवं धर्म के प्रति जागरुक बनाना चाहिए।

शांति की आड़ में ये ईसाई मिशनें अशान्ति का बीज बो रही हैं। यदि सचमुच शान्ति के लिए कार्य करते हैं तो क्यों नहीं केवल शिक्षा, चिकित्सा का कार्य करके लोगों की सेवा करते और छुआछूत मिटाने में सहायक बनते हैं? वे ईसाई बनाना क्यों चाहते हैं? धर्म परिवर्तन क्यों करते हैं? सेवा, चिकित्सा, शिक्षा की आड़ में ईसाइस्तान बनाने की प्रेरणास्रोत विदेशी शक्तियाँ हैं। ये ईसाई मिशनें इनके एजेन्ट हैं। इनकी चालों, मीठे बोलों, सेवा के नाटकों से सावधान रहकर अपने देश, धर्म संस्कृति की रक्षा करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। क्या ईसाई चर्चों मिशनों का उद्देश्य लोगों में शान्ति और सौहार्द उत्पन्न करना है? क्या जगह-जगह स्कूल व अस्पताल खोलकर ये लोगों की सेवा करना चाहते हैं? क्या सचमुच इनकी रुचि भारत में एकता, शान्ति और भाईचारा उत्पन्न करना है? ये ईसाई, पादरी और बिशप कहते हैं कि जी हां हम तो उपरोक्त बातों और कार्यों के लिए ही भारत में कार्यरत हैं और हमने शिक्षा और चिकित्सा में बहुत योगदान किया है। जी हां इन्होंने बहुत योगदान दिया है भारत को एक ईसाई राष्ट्र बनाने की दिशा में भी यहां के लोगों के एक विशाल भाग को ईसाई भी

बनाया गया, इसी शिक्षा और चिकित्सा की आड़ में। क्या भारत के लोगों को शिक्षा और चिकित्सा केवल ईसाई बनाने के बाद ही उपलब्ध किया जा सकता है ? वास्तव में इनका मूल उद्देश्य भारत को एक ईसाई राष्ट्र के रूप में बदलना है। शिक्षा और चिकित्सा तो साधन मात्र है क्योंकि धर्म परिवर्तन के लिए यह बहुत ही सुरक्षित दीवार है। इनकी आड़ में खुलकर धर्म परिवर्तन का खेल खेला जाता है और खेला जा रहा है।

हमारा देश, हमारी संस्कृति और हमारा धर्म (वैदिक-धर्म) आज विदेशियों और विधर्मियों की सुनियोजित आक्रमण का लक्ष्य बन गया है। हमारे देश में जहां मुसलमानों की जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ी है और बढ़ रही है वहीं ईसाइयों द्वारा हमारी आर्य जाति को तीव्रता के साथ धर्म-परिवर्तन का शिकार बनाया जा रहा है। और इनका धर्म परिवर्तन का कुचक्र इतना भयावह रूप ले चुका है कि यदि हम और समय तक सोते रहे तो हमारी आर्य जाति का एक विशाल भाग विधर्मी बन जायेगा और हमारी आर्य जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा, वैदिक धर्म नष्ट हो जायगा और इस देश का पूर्ण रूप से विखण्डन होकर हमारी संस्कृति और धर्म का लोप हो जायेगा। देश का उत्तर-पूर्वी भाग आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से भारत से अलग हो चुका है। इस भाग को किसी भी समय ईसाई राष्ट्रघोषित किया जा सकता है। इधर उत्तर भारत में जातिवाद, छुआछूत और अंधविश्वासों से त्रस्त गरीब और उपेक्षित हरिजनों और आदिवासियों को पैसा, नौकरी, शादी इत्यादि का लालच देकर दिखावटी प्यार दिखाकर सेवा, शिक्षा और चिकित्सा की आड़ में धर्म परिवर्तन का प्रयास और कार्य पूरी गति से जारी है।

क्या हम तब जागेंगे जब हमारी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक मृत्यु हो चुकेगी? क्या हम तब जागेंगे जब हम अपने देश में अल्पमत में होकर असहाय और उपेक्षित बन जायेंगे? क्या हम तब जागेंगे जब मातृभूमि का टुकड़ों-टुकड़ों में विखण्डन हो जायेगा? क्या हम तब जागेंगे जब हम धर्मच्युत होकर पशुवत जीवन जीने को विवश हो जायेंगे?

आइये अपने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए हम स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर चलें और वैदिक धर्म का वास्तविक रूप में अनुसरण करके अस्पृश्यता, अन्धविश्वास को त्याग कर अपनी मातृभूमि को विखण्डित होने से बचायें और विधर्मियों और देशद्रोहियों की चालों को विफल कर दें।

पं० जयन्त कुमार आर्य
भूतपूर्व पादरी,
दी फ्री विल बेप्टिस्ट चर्च आफ इण्डिया।
भूतपूर्व वार्डेन, सेन्ट पीटर्स कालेज, आगरा,
भूतपूर्व मिशनरी आसाम, अरुणांचल प्रदेश।

आवश्यक सूचना

16(द)- अधिष्ठाता प्रचार विभाग ने घोषित किया कि एक व्यक्ति अपने को उपदेशक बताकर आर्य समाजों में घूम रहा है और सदस्यों को भ्रमित करके अनुचित ढंग से धन एकत्र कर रहा है। आयु तीस वर्ष, रंग गोरा, आँखे भूरी, लम्बाई 5 फुट 3 इन्च, प्रायः कुर्ता पायजामा पहने हुए देखा गया है और एक 8 वर्षीय सांवले रंग के लड़के को साथ रखे हुए है। जिसकी लम्बाई 3 फुट है। वह स्थान-स्थान पर अपना नाम तथा घटनाओं को अदल-बदल कर बताता है और सहायता की मांग करता है। प्रदेश के आर्यजन ऐसे व्यक्ति से सावधान रहें तथा किसी प्रकार की सहायता न दें।

नारायण स्वामी शान्ति यज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में नारायण स्वामी क्रान्तिकारी की दिवंगत आत्मा हेतु 27 नवम्बर, 1988 को हरिराजशरण जी अग्रवाल की अध्यक्षता में शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी ने स्वर्गीय नारायण स्वामीजी के जीवन के संस्मरण सुनाते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रो. वासुदेव सिंह के प्रति नमन

(आर्य समाज के अनन्य भक्त, राष्ट्रभाषा हिन्दी के परम समर्थक उ०प्र० शासन के मन्त्री पद एवं विधानसभा के अध्यक्ष पद को कई वर्षों तक सुशोभित करने वाले प्रो०वासुदेव-सिंह का आकस्मिक निधन 23 दिसम्बर-1986 को लखनऊ में हो गया था। उनके निधन से आर्य समाज एवं हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।)

-सम्पादक

ऋषि दधीचि देवासुर-रण में अस्थि दान कर हुए अमर ।
हिन्दी-हित में प्राणदान को, अब आये बन प्रोफेसर ।।

चक्रव्यूह के मध्य अचानक हुआ हाय । अभिमन्यु-हनन ।
हिन्दी के उस हित-चिन्तक को, मेरा शत-शत बार नमन ।।

"ठाकुर" होकर बना "सुदामा", सात्विक था जीवन-ध्येय ।
राजनीति के कृमि-कर्दम में, जिसका था व्यक्तित्व अजेय।।

सत्ता में सत्ताधीशों की सत्ता पर कर सका शमन ।
हिन्दी के उस हित-चिन्तक को, मेरा शत-शत बार नमन ।।

"टण्डन" और "मदनमोहन" की बनकर आया सुदृढ़ कड़ी ।
"जय प्रकाशजी" और "लोहिया" की जिस पर थी छाप पड़ी।।

"नरेन्द्र देव" "गोविन्द दास" के उपवन का उत्फुल्ल सुमन ।
हिन्दी के उस हित-चिन्तक को मेरा शत-शत बार नमन ।।

"दल" में रहकर दलबन्दी की दल-दल से जो दूर रहा ।
भाषा-भूषा संस्कार से, भारतीय भरपूर रहा ।।

हिन्दी तन थी, हिन्दी मन था, हिन्दी था जिसका जीवन ।
हिन्दी के उस हित-चिन्तक को, मेरा शत-शत बार नमन ।।

समझौतों से अलग-अलग था, जिसके थे सिद्धान्त अटल ।
साहस, सेवा, सतत-साधना, जिसका था जीवन-संबल ।।

हिन्दी-हित में जिसकी गाथा, आज गा रहा है जन-मन ।
हिन्दी के उस हित-चिन्तक को, मेरा शत-शत बार नमन ।।

-शिवअवतार रस्तोगी "सरस"
मालती नगर, मुरादाबाद ।

शोक समाचार

1- आ० स० नगर गाजियाबाद के प्रधान एवं महर्षि दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय पटेल मार्ग, गाजियाबाद के प्रबन्धक चौ० अमर सिंह का 1-11-88 को देहावसान हो गया ।

2- बुन्देलखण्ड संभाग में आर्य समाज की गतिविधियों में अनेक दशक तक प्राण फूंकने वाले स्वामी धीरानन्द सरस्वती की पुत्रवधू श्रीमती विमला अरोरा का निधन 26-11-88 को हो गया ।

3- स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी कुशल अध्यापक प० कमलनयन-शर्मा भू० पूर्व प्रधान आ०स० भागलपुर का गतदिवस निधन हो गया ।

4- आ०स० सदर बाजार झांसी के पुरातन प्रयोग्य सक्रिय सदस्य श्री हेमराज भाटिया का आकस्मिक निधन 26·11·88 को हो गया। प्रभु से दिवगत आत्माओं की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है ।

सभा मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन

(श्री यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद)

"कौमें बलिदानों से ही जिन्दा रहती हैं।" किसी महापुरुष का यह वाक्य अक्षरशः सत्य है। जिस कौम में बलिदान देने की परम्परा समाप्त अथवा लुप्त हो जाती है, वह कौम भी प्रायः समाप्त हो जाती है। अपने प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज में बलिदानों की तीव्र उत्कण्ठा थी, तभी आर्यसमाज द्रुतगति से प्रचारित हो सका। महर्षि स्वामी दयानन्द के अमर बलिदान से प्रेरणा पाकर पं0 लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और ऐसे ही अनेकों अमर बलिदानियों ने आर्यसमाज को अपने रक्त से सींचा था। इतिहास साक्षी है, आर्यसमाज का वह काल "स्वर्ण काल" के नाम से सुविख्यात है। उसी काल के प्रमुख बलिदानी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति महापुरुषों ने जो श्रद्धासुमन समर्पित किये थे, उसी की माला पिरो कर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर समर्पित कर रहे हैं, जिससे आर्य जाति की ठण्डी रगों में कुछ गरमी आ सके।

सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं -

श्री सन्तराम जी बी0ए0 -

"महापुरुषों की तुलना करना प्रायः विरक्तिकर होता है, फिर भी कहना पड़ता है कि दयानन्द के बाद आर्यसमाज में ही नहीं, वरन् समूचे भारत में जो महान् व्यक्ति हुए हैं, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द की शान निराली है। जैसे किसी पर्वतमाला में अनेक चोटियां होती हैं और वे सब अपने-अपने स्थान पर सुन्दर प्रतीत होती हैं, पर उन सबमें एक पर्वत-श्रृंग विशेष रूप से ऊँचा उठ कर दर्शकों को दूर से अपनी भव्यता से और अनोखेपन के कारण आकर्षित करता है, वैसे ही श्रद्धानन्द थे। रूस के ऋषि काउंट टालस्टाय की भांति उनका प्रारम्भिक जीवन उतना अच्छा न था, पर उनकी आत्मा प्रगतिशील थी। हम उन्हें बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करके प्रतिक्षण ऊपर उठता पाते हैं। अन्त में वे इतने ऊँचे उठ गये कि उनको देखने के लिए सिर को पीछे की ओर झुकाना पड़ता था।"

लाला लाजपतराय

"श्रद्धानन्द वीर सन्यासी, वीर स्वामी थे। वीर और सन्यासी शब्द सुन कर आश्चर्य होता है, परन्तु वैदिक आदर्श यही है। कलियुग में हमारा सौभाग्य है, कि स्वामी श्रद्धानन्द ने इस आदर्श को पूरा किया।"

महात्मा गान्धी-

"स्वामी जी वीरों में अग्रणी थे। स्वामी जी ने अपनी वीरता से भारत को आश्चर्यचकित किया था। उन्होंनें अपनी देह को भारतवर्ष के लिये कुर्बान करने की प्रतिज्ञा ली थी, इसका मैं साक्षी हूँ। .... आज श्रद्धानन्द की मौत के लिये आँसू बहाने का समय नहीं है। आज तो क्षत्रियता बताने का अवसर है। क्षत्रियता क्षत्रिय का विशेष गुण भले ही हो, परन्तु ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र सब क्षत्रियता बता सकते हैं। खास तौर पर आज का स्वराज्य-युग हम सबके लिये क्षत्रियता का युग है।

भाई परमानन्द-

"मुझे तो सिर्फ इतना ही कहना है कि राजनैतिक आन्दोलन में सबसे आगे कदम रखते हुए स्वामी जी ने अपनी प्राचीन सभ्यता और धर्म के प्रेम को ही प्रधानता दी। जब उन्हें हिन्दू जाति संकटापन्न प्रतीत हुई तो वह पहिले पुरुष थे जो शुद्धि के खतरों से भरी हुई रणभूमि में कूद पड़े। ..... उनके पिछले जीवन का हरेक क्षण धर्म के लिये बलिदान का क्षण था। यदि उनकी मृत्यु वैसे ही सामान्य रूप से हो जाती तो साधारण जनता को इस सच्चाई का अनुभव न हो पाता। मुझे तो हर्ष है कि एक कातिल ने अपने इस कार्य से सारी दुनिया को दर्शा दिया कि स्वामी जी का जीवन ऐसे ही बलिदान का जीवन था जैसी कि उनकी मृत्यु हुई।"

वीर सावरकर -

"इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू-जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलि-वेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू-जाति के लिये एक स्पष्ट सन्देश देती है।"

प्रो0 सुधाकर एम0ए0 -

"श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान वर्तमान समय में सब से बड़ा बलिदान है। यह बलिदान हिन्दू जागृति का सबसे बड़ा साधन बनेगा।"

पं0 जवाहर लाल नेहरु-

"विशुद्ध शारीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ कार्य के लिये शारीरिक कष्ट सहन करने एवं उस कार्य के लिये मृत्यु तक की परवाह न करने वाले युद्ध गुणों का मैं सदा से प्रशंसक रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि हम सभी व्यक्ति ऐसे अद्भुत साहस की प्रशंसा करते ही हैं। स्वामी श्रद्धानन्द में इस प्रकार की निर्भीकता-पूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा में विद्यमान था। वृद्धावस्था में भी उनकी उन्नत सीधी आकृति तथा सन्यासी वेश में उच्च भव्यमूर्ति, लम्बा कद, शाहाना शक्ल, चमकती हुई अन्तर्भेदिनी आँखें और कभी-कभी दूसरों की निर्बलताओं पर मुख पर आ जाने वाली झुन्झलाहट की झलक-इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हूँ ? प्रायः यह तस्वीर मेरी आँखों के सामने आ जाती है"।

प0 मदनमोहन मालवीय

"जैसे तेगबहादुर की मृत्यु से हिन्दू-जाति में जागृति आयी थी और औरंगजेब का ज़ोर टूटा था, वैसे ही हमें यह चीज़ सीखनी है कि हिन्दू-जाति का प्रत्येक मनुष्य शुद्धि और संगठन के काम में लग जाये।"

मौलाना मुहम्मदअली

"गोरखों की संगीनो के सामने अपनी छाती खोल देने वाले उस बहादुर देशप्रेमी का चित्र अपनी नजर के सामने रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। ऐसी उम्दा मौत के मिलने से उन्हें तो कुछ नहीं लगता, मगर हमारे लिये यह महान् दुःखदायक घटना है।"

अन्त में पुनः लाला लाजपतराय के शब्दों के साथ अपने इस लेख को समाप्त करते हैं। उस समय जब स्वामी श्रद्धानन्द के अमर बलिदान पर सब लोग बुरी तरह से रो रहे थे, लाला जी ने अपनी सिंह गर्जना से आर्यों में नयी स्फूर्ति भरी थी। उन्होंने कहा था कि-"तीन दिन से स्वामी जी के मृत शरीर पर रो-रो कर फूल चढ़ा रहे हैं, परन्तु स्वामी जी के शरीर में से जो आवाज़ आ रही है, उसे सुनियें। वह आवाज है कि इस अनार्यपन को दूर करो। रोना अनार्यपन है। रोना बन्द करो। अब तो उद्यम होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द के कतरे से, उनकी हड्डियों से दरख्त उगेगा। जिसकी जड़े पाताल में जायेंगी। मित्रों ! रोना-धोना समाप्त करो। प्राइवेट रिश्तों में हम तमाम उमर रोयेंगे। यह समय रोने का नहीं है। यह समय यह दिखाने का है कि जिसने यह समझा था कि स्वामी जी का खून कर शुद्धि बन्द होगी, वह वृक्ष स्वामी जी के खून से सींचा जाकर, भारत में बढ़ और फैल कर संसार भर में फैलेगा। किसी शख्स ने लिखा था कि स्वामी जी की अरथी यमुना में बहेगी। परन्तु याद रखना चाहिये कि यमुना इतनी निर्दयी नहीं है। यमुना शुद्धि की अरथी को बहाती नहीं।"

आज उन का बलिदान दिवस फिर यही सन्देश लेकर आया है कि --

मिलाओ शुद्ध दिल से शुद्ध करके लख्ते जिगरों को ।
तेरे नूरे नजर नज़रों से पिनहा होते जाते हैं ।।

और

न हर्गिज़ चाहिये कभी तकसीर शुद्धि की ।
बड़ी मुश्किल से आई है नजर तस्वीर शुद्धि की ।।
यह वह पौधा है जिसको खून से स्वामी ने सींचा था।
मुसाफिर भी गये लिखकर यही तहरीर शुद्धि की ।।

आज आवश्यकता इसी बात की है कि आर्यसमाज शुद्धि का तराना फिर से छेड़े, यही उस अमर बलिदानी के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी ।

xxxxxx

सभा उपदेश विभाग के मास दिसम्बर के प्रोग्राम

1- पं० केशवदेव जी शास्त्री महोपदेशक	16 से 18 गाजीपुर, 23 से 25 कायमगन्ज
2- श्री विशम्भर दत्त जी शास्त्री उपदेशक	1 से 31 दिसम्बर रामपुर जनपद में उत्सवों का आयोजन। रहमतगन्ज, सोतीपुरा, मन्धरी, वरिया-गढ़, टान्डा बादली, तीरा कला, पजावा, हरसूनगला, समरिया, गहलूईया, त्रिरहा।
3- श्री स्वामी सुकर्मानन्द जी, महाराज उपदेशक।	आर्य प्रतिनिधिसभा जम्मू कश्मीर के अन्तर्गत। से 26 दिसम्बर तक
4- श्री महावीर जी शास्त्री, उप0	श्री डा0 विनय प्रताप जी के अन्तर्गत।
5- श्री जीत नारायण जी शास्त्री उपदेशक।	6दिसम्बर1988 से 31दिसम्बर, 1988 तक बरेली जनपद में उत्सवों का आयोजन। दबोहरा, मिंयापुर, बसुधरन आदि।
6- श्री जयन्त कुमार आर्यः उपदेशक	श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान सभा के निर्देशन में।
7- श्री डा0 विजयपाल सिंह जी उपदेशक।	10 से 30 ठाकुरद्वारा तहसील में उत्सवों का आयोजन। सुरजननगर, कुल्हापुर, टांडा अफजल, असालतपुर, भायपुर, मलकपुर सेमली, कुण्डेश्वरा, बैरमपुर, अलियाबाद आदि।
8- श्री खेम चन्द्र जी आर्य प्रचारक	10से 30रामपुर जनपद 10को आर्यसमाज रामपुर पेट्टी टोला में पहुँचे।
9- श्री कमलदेव जी आर्य प्रचारक	1से 31दिसम्बर 1988रामपुर जनपद में उत्सवों का आयोजन। श्री विशम्भर दत्त जी के साथ।
10- श्री रामचन्द्र जी शर्मा प्रचारक	14 से 16 महावतपुर, 18 से 23 रामनगर फैजाबाद।
11- श्री सीताराम जी आर्य प्रचारक	10 से 20 तक हरदोई उपसभा के अन्तर्गत कार्यक्रम।
12- श्री नेम प्रकाश जी आर्य प्रचारक	14से18 बोरी झाँसी, 16-17 निजामपुर, 20 से 23कानपुर, 27से 31 चम्बा, हिमाचल।
13- पं0 युगल किशोर जी प्रचारक।	6 से 31 बरेली जनपद में उत्सवों का आयोजन।
14- श्री तेजपाल सिंह जी आर्य श्री मती आशा आर्या	आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के अन्तर्गत। से26तक
15- श्री शिवनाथ सिंह जी प्रचारक	12से30 ठाकुरद्वारा तहसील, नोटः 12को आर्यसमाज सुरजननगर में पहुँचना।
16- श्री योगेश दत्त जी आर्य उपदेशक	18-19 नागल सोती,
17- श्री विक्रम देव जी आर्य प्रचारक	6 से 31 रामपुर जनपद, श्री विशम्भर दत्त जी शास्त्री के साथ उत्सवों में सहयोग।
18- श्री मनवीर सिंह जी भजनोपदेशक	10से30 ठाकुरद्वारा तहसील, सुरजननगर कुल्हापुर, असालतपुर, टान्डा अफजल, भायपुर कुण्डेश्वरा, मलकपुर सेमली, बैरमपुर आदि क्षेत्रों में कार्यक्रम।
19- श्री ओम लाल जी ढोलक वादक	6से31 बरेली जनपद कार्यक्रम। श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य प्रचारक सभा के साथ कार्यरत
20- श्री वेद प्रकाश जी आर्य ढोलक वादक	10दिसम्बर से 30 दिसम्बर तक ठाकुरद्वारा तहसील में उत्सवों का आयोजन। सुरजननगर, कुल्हापुर, असालतपुर, टान्डा अफजल, भायपुर, कुण्डेश्वरा, बैरमपुर आदि।
21 श्री गजराज सिंह जी राघव प्रचारक	17से 19 तालिबनगर, अलीगढ़। 20से30 आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के निर्देशन में कार्य।"

==

आवश्यक बातें

1- आर्य उप-प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, उपदेश विभाग ने निश्चय किया है कि समस्त उपदेशकों को परिचय पत्र दिये जायें जिसके लिये आवश्यक है कि आप अपना पासपोर्ट साइज का फोटो दो प्रतियों में आप सभा कार्यालय को भेज दें। यह कार्य 10 दिसम्बर तक आप पूरा कर दें।

2- आर्य प्रतिनिधि सभा, उपदेशक विभाग, की जुलाई की बैठक में उपदेशकों, प्रचारकों के लिये आर्य मित्र ग्राहक पुनर्जीवन, नवीन स्थापना, उत्सवों का निश्चय एवं संगठन इस प्रकार पन्चसूत्रीय कार्यक्रम उनकी सहमति के आधार पर निश्चय किया गया था, विभाग अब इस कार्य की समीक्षा करना चाहता है। आपसे प्रार्थना है कि आप मास अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, एवं दिसम्बर के कार्य की प्रगति उपरलिखित बिन्दुओं पर क्रमवारलिखकर इस कार्यालय को भेजने की कृपा करें जिससे आपके कार्य का विवरण उपदेश विभाग समिति के सम्मुख प्रस्तुत कर आपके सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सके।

3- कार्यालय सभा चाहता है कि उपदेशकों प्रचारकों का वेतन समय पर भुगतान किया जाये। इस सम्बन्ध में आपसे अनुरोध है कि आप अपने मासिक डायरी बिल प्रत्येक मास के अन्त में विधिवत आपूर्ति के उपरान्त कार्यालय को भेज दिया करें। कठिनाई यह है कि कुछ उपदेशक प्रचारक तीन-तीन मास की डायरी बिल कहने के उपरान्त भी नहीं भेज रहे हैं। जिससे सभी के भुगतान पर प्रभाव पड़ता है।

4- कार्यक्रम के अभाव, अप्राप्ति एवं स्थगित होने पर आप तुरन्त प्रचार कार्यालय अमरोहा से सम्पर्क कीजिये।

मनमोहन तिवारी, मन्त्री।

हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता उपदेश विभाग,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0।

xxxxxxxxxx

वेद प्रचार की धूम

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद के अन्तर्गत वैदिक प्रचार मण्डल के उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों ने जनपद के विभिन्न ग्रामों में आर्य समाज के विकास हेतु सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। समय-समय पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आचार्य चन्द्र देव शास्त्री तथा मंत्री श्री पं0 विद्यासागर आर्य ने भी अनेक समाजों को सम्बोधित किया। लोग वैदिक धर्म के प्रति आकृष्ट हुए। कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावी रहा। 21 व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा दो ग्रामों श्री चकपुर एवं कर्णपुरदत्त में आर्य वीर दल की भी स्थापना हुई।

xxxxxxx

- आर्य समाज हफीजपुर (मुरादाबाद) का द्वितीय वार्षिक उत्सव ससमारोह दिनांक- 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक मनाया गया। अनेक प्रसिद्ध आर्यवक्तागण पधारे। जनता में वैदिक धर्म के प्रचार का बहुत प्रभाव पड़ा।

- खण्डवा के सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री बाबूलाल सोनी श्री जुगनूलाल-मिश्र एवं आ0स0 के पूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य के पौत्र अभय का आकस्मिक निधन हो गया। प्रभु दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

यज्ञ चिकित्सा विज्ञान

(स्व0 वीरसेन वेदश्रमी,
वेद विज्ञानाचार्य, वेदसदन,
महारानी पथ,
इन्दौर-452007

गतांक से आगे :-

8- यज्ञ द्वारा अपने गृह को औषधिपूर्ण वायु से भरें -

यदि आप चाहते हैं कि पर्वतीय भेषज वायु आपको घर पर ही प्राप्त हो जावे तो आप घर पर ही नित्य यज्ञ करें और यज्ञ की वायु का सेवन करें तथा अन्यों को भी सेवन करायें। यज्ञ में जो धूम और औषधियों से युक्त हवि स्वाहा के उच्चारण के साथ अग्नि में दी जाती है उससे तुरन्त ही भेषज वायु- औषधियुक्त वायु- निर्माण होने लगता है। यज्ञ करते समय स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर में करें जिससे भीतर का दूषित वायु वेग से बाहर निकल जाये और यज्ञ से निर्मित औषधियुक्त भेषज वायु आपके भीतर गहरा प्रविष्ट हो सके। जितने जोर से आप स्वाहा का उच्चारण करेंगे- परिणाम स्वरूप आपके आस-पास का भेषज वायु उतना ही गहरा वेग से आप में प्रविष्ठ हो कर आरोग्यता का संचार करता जावेगा। अर्थात् स्वाहा की उच्च ध्वनि से प्रणायाम का लाभ स्वत· ही होता जावेगा। जो लोग घर में या अन्यत्रयज्ञ न करके प्राणायाम करते हैं, उनको लाभ उतना नही हो सकता है, जितना कि यज्ञ से निर्मित आरोग्यप्रद वायु से होगा। अत· अपने घर में नित्य प्रातः- सायं सूर्योदय एवं सूर्यास्त समय पर यज्ञ अवश्य करके अपना व संसार का महोपकार कार्य अवश्य करे। यज्ञ द्वारा औषधियों से वायु मण्डल में सोमतत्व तथा उसका वायु मण्डल के जल तत्व के साथ संयोग होने से अमृत तत्व भी भर जाता है। सोम और अमृत तत्व से जीवन में दिव्यत्व उत्पन्न होता है।

9- सोम एंव अमृत से पूर्ण कलशों का निर्माण-

यदि आप सोमतत्व एवं अमृतपूर्ण कलश प्राप्त करना चाहते हैं तो यज्ञ केकुण्ड के समीप और यज्ञ शाला में जलपूर्ण कलश रखें। इन कलशों में यज्ञ से निर्मित सोम तत्व स्वत· आकर्षित होगा और इनमें प्रविष्ट होगा तथा इनमें परिस्रुत भी होगा। सोमतत्व के उनमें परिस्रुत होने से वे कलश जल अमृत में परिणत होगें। उन जलों में यज्ञ की सुगन्ध यज्ञान्त में अनुभूत होगी। उन जलों का जो रोगी पान करेंगे, उनके रोग दूर होगे और जीवन शक्ति बढ़ेगी। उन्ही जलों से स्नान, अभिषेक तर्पण, मार्जन, आचमन आदि से शारीरिक एवं मानसिक रोगों की शान्ति होगी। बुद्धि सात्विकता को प्राप्त होगी। असाध्य रोग भी शान्त होगे। यज्ञ चिकित्सा के लिये आज सोम और अमृत पूर्ण कलशों - कुम्भो के निर्माण के महत्व को समझ कर उपयोग करने की आवश्यकता है। रोगी के पीने के जल, भोजनादि पकाने मे भी यह जल उपयोग में लेना चाहिये।

10- यज्ञोत्पन्न भेषज वायुपूर्ण कलश निर्माण-

यजुर्वेद में- वायव्यैर्वायव्यानाप्नोति - अ· 19, मन्त्र 27 यह कहा है। अर्थात् जिन कलशों में यज्ञोत्पन्न वायुओं से कलश भरे जाते हैं वे वायव्य कलश हैं। इनका भेषज कार्य में उपयोग करना चाहिये। वर्तमान स्थिति में जैसे गैस सिलेण्डर होते हैं उसी प्रकार भेषज वायु से पूर्ण कलश-सिलेण्डर तैयार करके रोगी के कमरे में छोड़ना चाहिये या गुब्बारों में यज्ञ की गैस- धूम्र को भर कर यथा अवसर औषधयुक्त पर्यावरण रोगी के कमरे या बड़े हालों का बनाया जा सकता है। रोगी के कपड़ो पर जिनको पहनना है उन पर छिड़क कर उसे यज्ञ धूम से सुवासित किया जा सकता है। इसमें रोगी को विशेष लाभ होता है। विविध कल्पनाओं के द्वारा यज्ञ के जल धूम्र आदि का प्रयोग करना चाहिये ।

11- आचमन एवं अंग स्पर्श-

यज्ञ कार्य में आचमन एवं अंग स्पर्श का बहुत महत्व है। परन्तु जब रोगी की चिकित्सा निमित्त यज्ञ हो तो औषधि भावित जल का उपयोग अधिक लाभदायक है। जिस रोग के लिये जो औषधि-वनस्पति उपयोगी हो, उनमें से एक या अधिक वनस्पतियों के हरे पत्तों को आचमन के जल में मसल देना चाहिये। उस जल को छान लेवे। यज्ञ से पूर्व और यज्ञान्त में उस जल से 3-3 आचमन करना या कराना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर यदि यज्ञ बड़ा हो तो मध्य में भी आचमन तथा अंग स्पर्श किया करना या कराना लाभदायक ही है। यदि हरी औषधि-वनस्पति न मिले तो यज्ञ से एक घन्टा पूर्व हवन सामग्री हो 10 ग्राम एक गिलास पानी में डालकर उसे छान कर उस जल से आचमनादि किया करे या करावें।

(क्रमश :-----)

आर्य समाज क्रान्तिकारी कदम उठाये

डा0 सुधांशु मोहन अग्निहोत्री,
सम्पादक, क्रांति चेतना (देहरादून)

आश्चर्य चकित होकर तथा नैराश्य के कुहासे में डूबकर हम यह सोचने को विवश हैं कि हमारे जिस स्वदेश में एक समय कोई चोर, लम्पट, जुआरी, मद्यपानी और व्यभिचारी था ही नहीं, वहीं आज अनैतिकता, अमर्यादा, अराजकता और अराष्ट्रीयता का साम्राज्य सा स्थापित हो गया है। जिस पावन वसुन्धरा को महर्षियों ने अपने रक्त से सींच कर वीर प्रसू बनाया, जिस पर दूध-दही की नदियां बहीं- उसी पर एक ओर निरीह, निर्दोष बाल, वृद्ध, नर, नारियों का रक्त बहाया जा रहा है तो दूसरी ओर शराब का समुद्र हिलोरें ले रहा है ।

इतना ही नहीं राष्ट्रोत्थान और विश्वकल्याण हेतु कृतसंकल्प आर्य समाज को कुचलने के लिये अनेक शक्तियां जुटी हुई हैं। वेद प्रचारकों को धमकी भरे पत्र मिलना तो सामान्य बात है। ऐसी परिस्थितियों में आर्य समाज को निम्नलिखित क्रान्तिकारी कदम उठाने चाहिये-

1- आर्य समाज से सम्बद्ध तथा दयानन्द शिक्षण संस्थानों से सम्बद्ध सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों में प्रत्येक छात्र एवं छात्रा के लिये आर्य वीर दल अथवा वीरांगना दल में सम्मिलित होना अनिवार्य किया जाये।

2- सभी प्रमुख नगरों व महानगरों में आर्य अतिथिशालाओं तथा भोजनालयों की व्यवस्था की जावे ।

3- प्रदेशीय स्तर पर विवाह समितियों का निर्माण हो जो युवक, युवतियों को गुण कर्म स्वभावानुसार दाम्पत्य सूत्र-बन्धन में आबद्ध करने हेतु यत्नशील रहें।

4- प्रत्येक जनपद में एक गुरुकुल की स्थापना अवश्य हो।

5- देश में पूर्ण मद्यनिषेध तथा अन्य मादक पदार्थों के उत्पादन एवं विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किया जाये ।

6- अश्लील फिल्मों के नर्माण तथा प्रदर्शन के विरुद्ध जेहाद छेड़ा जाये ।

7- आर्य समाज के जो सदस्य केन्द्रीय अथवा प्रदेशीय मंत्रिमण्डलों में सम्मिलित हैं, वे वैदिक शिक्षा पद्धति लागू करने पूर्ण मद्यनिषेध कराने, गोवध बन्द कराने, तथा भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति समाप्त कराने हेतु आवाज बुलन्द करें तथा उपेक्षा होने पर पद-त्याग हेतु प्रस्तुत रहें।

विश्वास है कि सम्पूर्ण आर्य जगत देव दयानन्द के स्वप्नों का भारत निर्मित करने हेतु संकल्पबद्ध होगा ।

उत्सव

आर्यसमाज विकास नगर कुर्सीरोड लखनऊ का द्वितीय वार्षिकोत्सव 11 से 13 नवम्बर तक ससमारोह मनाया गया। आचार्य सूर्यवली पान्डेय, श्री कुन्दनलाल- वैद्य, श्री पं0 शिवचरनी के प्रवचनों से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई ।

आवश्यक सूचना

निम्नलिखित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि उनके सम्मुख दी हुई राशि के शताब्दी कूपन सभा को अभी तक वापस नहीं प्राप्त हुये न ही उनकी राशि सभा को प्राप्त हुई अतः यदि 31 दिसम्बर 1988 तक कूपन या उनकी राशि सभा को प्राप्त नहीं होती तो यह धन उनके नाम डाल दिया जायेगा।

क्रम सं0	नाम व पता	रकम रु0 पै0
1-	श्री मंगल दत्त शर्मा, कचेहरी रोड, मुजफ्फरनगर	984=00
2-	श्री आनन्द उपमन्यु, बलरामपुर, गोण्डा।	1480=00
3-	श्री ध्रुवपाल सिंह अटल, खरपरी, मैनपुरी।	10529=00
4-	श्री विनय प्रताप, गोरखपुर।	8269=00
5-	श्री सत्यप्रकाश, एडवोकेट, बलरामपुर, गोण्डा।	1000=00
6-	श्री श्री ओम प्रकाश, पीलीभीत।	2400=00
7-	श्री श्री विजयपाल प्रधान, मेस्टन रोड, कानपुर।	7250=00
8-	श्री कृष्न किशोर, फतेहपुर।	2051=00
9-	श्री श्री बेचन सिंह, शाहपुरी, वाराणसी।	13200=00
10-	श्री श्री लाल बहादुर शास्त्री, प्रयाग, इलाहाबाद।	3712=00
11-	श्री जयनारायण अरुण, बिजनौर।	11781=00
12-	श्री सन्तोष कुमारी कपूर, लखनऊ।	1244=00
13-	श्री हरपाल सिंह, आजादनगर, कानपुर।	5=00
14-	श्री डा0 सुरेश चन्द्र सीपरी बाजार, झाँसी।	6200=00
15-	श्री प्रेम नारायण तिवारी, बलरामपुर, गोण्डा।	4250=00
16-	श्री विद्या रतन जी, टुण्डला, आगरा।	74478=85
17-	श्री श्री विमल कुमार एडवोकेट, हरदोई।	350=00
18-	श्री जैपेन्द्र कुमार जी, प्रतापगढ़	1850=00
19-	श्री श्रीचन्द्र गौण, सहारनपुर।	3715=00
20-	श्री जयकरण सिंह, कानपुर, देहात।	500=00
21-	श्री अमर सिंह चौधरी,	10=00
22-	श्री महेन्द्र शास्त्री, रायबरेली।	500=00
23-	श्री बालकृष्ण आर्य, फतेहपुर बिन्दकी।	275=00
24-	श्री सूबेदार जी आर्य, बेवर, मैनपुरी।	350=00
25-	श्री श्री रमाशंकर आर्य, केराकत, जौनपुर।	638=00
26-	श्री सच्चिदानन्द बाजपेई, फर्रुखाबाद।	750=00
27-	श्री बसन्त सिंह गहलौत, नगीना, बिजनौर।	7800=00
28-	श्री जितेन्द्र कुमार एडवोकेट, जलाली, अलीगढ़।	3503=00
29-	श्री श्री जीवन प्रकाश, गांधीनगर, जिला-बस्ती।	5500=00
30-	श्री ब्रह्मानन्द आर्य, गोकुल, हरदोई।	2394=00
31-	श्री अतर सिंह, श्यामली, मुजफ्फरनगर।	1650=00
32-	श्री ओम प्रकाश बाजपेई, शाहजहाँपुर।	750=00
33-	डा0 रामबरदान सिंह महराजगंज	62=00
34-	प्रधानाचार्य ज्वाला प्रसाद आर्य कन्या इन्टर कालेज इटावा	500=00
35-	श्री जग स्वरूप सिंह कानपुर देहात।	900=00
36-	श्री राजकुमार आर्य, पुरानी बाजार लालगंज, रायबरेली।	740=00
37-	श्री रामकुमार कासगंज, एटा।	150=00
38-	श्री इन्द्रपाल सिंह आर्य समाज मैनपुरी।	850=00

श्री इन्द्रराज जी द्वारा कूपन वितरण मेरठः-

क्रम सं0	नाम व पता	रकम रु0 पै0
39-	श्री सोम दत्त आर्य	500=00
40-	श्री सुरेन्द्र सिंह आजाद	1050=00
41-	श्री जगबीर सिंह बागपत	43250=00
42-	श्री चौधरी समय सिंह	1250=00
43-	श्री राजेन्द्र प्रसाद मंन्त्री	2899=00
44-	श्री नरेन्द्र कुमार आर्य	1000=00
45-	श्री शास्त्री जी	3500=00
46-	श्री माया प्रकाश	250=00
47-	श्री नन्दलाल पाहवा	3995=00
48-	श्री बीरेन्द्र पाल	250=00
49-	श्रीमती ऊषा शर्मा जी	195=00
50-	श्री जगपाल सिंह	250=00
51-	श्री राधेश्याम लालकुर्ती	293=00
52-	श्रीमती सरस्वती गोयल	105=00
53-	श्री माता सिंह जगमोहन सिंह	200=00
54-	श्री आर्य कन्या इण्टर कालेज	1262=00
55-	श्रीमती बृजरानी	800=00
56-	श्रीमती शारदा आर्य	850=00
57-	श्रीमती सत्यवती	750=00
58-	श्री गोपाल आर्य	500=00
59-	श्री जगन्नाथ	3750=00
60-	श्री नरेन्द्र प्रकाश जी	2750=00
61-	श्री सतीश चन्द्र गुप्ता, एडवोकेट।	1000=00
62-	श्री बालकिशन जी बहाम पुरी।	500=00
63-	श्री बीरेन्द्र कुमार जी	15=00
64-	श्रीमती चन्द्रा मुकर्जी	600=00
65-	श्री जुगल किशोर	2500=00
66-	श्री राम कुमार	500=00
67-	श्री रमेशचन्द्र, एडवोकेट।	417=00
68-	श्री महावीर प्रसाद	350=00
69-	श्रीमती गोदावरी देवी	300=00
70-	श्री निरंजन प्रसाद	200=00
71-	श्री खासे राम	350=00
72-	श्री दयानन्द शिशु सदन	400=00
73-	श्री देवेन्द्र जी	350=00
74-	श्री शिवनाथ सिंह त्यागी	350=00
75-	श्री ओम पाल	100=00
76-	श्री चेतराम	100=00
77-	श्री धर्मपाल सिंह आर्य	20400=00

कुल योग- रु0- 280571=85

कोषाध्यक्ष,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0।

सम्पादक के नाम पत्र -

स्वामी दयानन्द और सी.आई.ए.

महोदय,

आपके प्रतिष्ठत पत्र आर्यमित्र के 25 सितम्बर के अंक में श्री वेदभूषण का एक लेख छपा है, जिसका शीर्षक है- "महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एक गहरा षडयंत्र"। खेद है कि लेख में प्रस्तुत की गई अधिकांश बातें तथ्यों के विपरीत, इतिहास विरुद्ध तथा कल्पनाजन्य ही हैं। उदाहरणार्थ- गांधारी को अरब देश की कन्या कहना सर्वथा बेतुकी बात है। अफगानिस्तान या गांधार मुस्लिम देश तो कहला सकता है, उसे अरब देश कहना समीचीन नहीं होगा। मुसलमानों के धार्मिक प्रतीक चन्द्रमा को भारत के चन्द्रवंशी क्षत्रियों से जोड़ना भी कल्पना का अतिरेक ही है।

मुख्य बात यह है कि जब स्वामी दयानन्द का निधन या बलिदान हुआ था तब तक तो सी0आई0ए0 की नींव ही नहीं पड़ी थी। अमेरिकन इतिहास इस बात का साक्षी है। स्वामी जी को विष देने वाले का नाम जगन्नाथ नहीं अपितु धौड़ मिश्र था जो शाहपुरा का रहने वाला था। स्वामी जी को विष दिलाने में नन्हीं वेश्या जो वैष्णव थी, चक्रांकित वैष्णवों तथा मियां फैजुल्ला खां का सम्मिलित षडयंत्र था। नन्हीं को व्यवसाय से मुसलमान वेश्या कहना भी गलत है। वह सामान्य अर्थ में रूपाजीवा वेश्या नहीं अपितु राजा जसवन्त सिंह की पड़दायत (पर्दे में रहने वाली उप पत्नी) थी जिसे रानियों जैसा सम्मान प्राप्त था।

-भवानी लाल भारतीय,
चण्डीगढ़

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
मार्गशीर्ष शुक्ल 10
18 दिसम्बर , रविवार, 1988 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सभा की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक- 8 जनवरी 1989 रविवार को प्रातः- 11 बजे नारायण स्वामी भवन 5 मीरा बाई मार्ग, लखनऊ में होना निश्चय हुआ है।

कृपया नियत तिथि और समय पर पधार कर कार्यसम्पादन में सहयोग प्रदान करें।

-मनमोहन तिवारी,
सभामंत्री।

मेरठ में स्वामी सत्यानन्द जी का प्रवचन

आर्य समाज मेरठ शहर में वेदों के प्रकाण्ड विद्वान प0 सत्यानन्द जी वेदवागीश ने अपने वेद प्रवचन में कहा "दुनियां भर के आस्तिक समुदाय संसार की समस्त कामनाओं को त्याग देने का उपदेश करते हैं परन्तु वेद हर व्यक्ति को तीन कामनायें पूर्ण करने की प्रेरणा करता है -

1- **प्राणेषणाः-** अर्थात् दीर्घ जीवन प्राप्त करने की कामना। प्रत्येक व्यक्ति को सर्वहित के लिये दीर्घ आयु प्राप्त करने की कामना करनी चाहिये।

2- **वित्तेषणाः-** अर्थात् अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की कामना। वेद में लिखा है "वय स्याम पतयों रयीणाम्" अर्थात् हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें। धन किस लिये एकत्र करें ? इसके लिये वेद का वचन है कि असहाय, निर्धन, विकलांग, समाज के कमजोर वर्गों को उठाने के लिये हमें अधिक से अधिक धनोपार्जन करना चाहिये अर्थात् सबके उत्थान के लिये प्रयोग करना चाहिये।

3- **परलोकैषणा-** अर्थात् परलोक सुधारने वाली कामना करना। संसार में बड़ी संख्या में भोगी द्वारा परलोक माना ही नहीं जाता परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि परलोक नहीं है। परलोक को न मानने वाले नास्तिक वर्ग यह तर्क देते हैं कि चूँकि परलोक दिखलाई नहीं देता इसलिये परलोक नहीं है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। हमारे ऋषियों ने किसी भी वस्तु के अस्तित्व के होने पर भी वस्तु के न दिखाई देने के 8 कारण बताये है :-

1- अति दूर, 2- अति समीप, 3- आवरण, 4- इन्द्रियों की दुर्बलता 5- मन की एकाग्रता का न होना, 6- अपने से तीव्र वस्तु से अभिभूत होना, 7- समान आकार वाली वस्तु में मिल जाना, 8- अति सूक्ष्म होना।

इन कारणों से वस्तु की सत्ता होने पर भी उनकी उपलब्धि हमें इन्द्रियों द्वारा नहीं होती।

इसी प्रकार से परलोक का अस्तित्व है परन्तु इन इन्द्रियों द्वारा परलोक दिखाई नहीं देता। वह परलोक बिगड़ न जाये, यही मानव जीवन की कामना होनी चाहिये। इन तीनों कामनाओं की पूर्ति से ही मानव जीवन सफल होता है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज आदर्शनगर, लखनऊ का वार्षिक उत्सव दिनांक- 31 अक्टूबर से 6 नवम्बर 1988 तक बड़े उत्साह एवं समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः सायं वेद और रामायण पर आदरणीय आचार्य प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थ मथुरा एव श्री प0 जय प्रकाशजी शर्मा भजनोपदेशक रामपुर के सुन्दर ओजस्वी सारगर्भित व्याख्यान एव भजन होते रहे।

चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमांचल प्रदेश सुन्दरनगर कालोनी मण्डी

प्रधानः- सर्वश्री कृष्ण लाल "आर्य" (सुन्दरनगर)
महामन्त्रीः- भगवान देव "चैतन्य" (सुन्दरनगर)
कोषाध्यक्षः- अरुणेश कुमार सूद (सुन्दरनगर)

आर्य समाज द्वारा भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ितों में कम्बल वितरण

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित समिति द्वारा महीनों कपड़ा, चावलादि वितरण होने के पश्चात् पुनः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध- सरस्वती और सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं0 बालदिवाकर हंस नई दिल्ली से पटना पधारे।

स्वामी जी ने धनी समाज से अपील करते हुए उनसे अनुरोध किया कि शरदऋतु आने से पीड़ित भाईयों के रक्षार्थ कम्बल वितरणार्थ उन्हें अपने पवित्र कमाई को लगाने के लिए दिल से आगे आना चाहिए। यज्ञानुष्ठान के बाद पीड़ित भाई-बहनों में कम्बलों का वितरण कार्य हुआ। यह कार्य जारी रहेगा।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री पं0 बालदिवाकर हंस, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रामाज्ञा वैरागी, सभा के उपप्रधान श्री धर्मदेव आर्य मुंगेर जिले में मुस्मात महिलाओं, विकलांग और रोगियों में स्थानीय महिला आर्य समाज की मंत्रिणी श्रीमती विद्यावती जी आर्या, श्री शिवशंकर प्रसाद के सहयोग से कम्बलों का वितरण किया गया। पीड़ितों को सहायता जारी है।

xxxxxxx

आर्य समाज "अनारकली", नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का 64वां वार्षिकोत्सव 14 से 20 नवम्बर तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। 14 नवम्बर से प्रातः श्री जैमिनी शास्त्री के नेतृत्व में यज्ञ और रात्रि को श्री यशपाल सुधांशु की वेदकथा हुई जो 19 नवम्बर तक निरन्तर चलते रहे।

20 नवम्बर को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् खचाखच भरे हाल में श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री, प्रो0 रत्नसिंह, प्रि0 सर्वदानन्द आर्य (हिसार) और श्री पं0 राम प्रसाद वेदालंकार (आचार्य गुरुकुल कांगड़ी) के विशेष प्रवचन हुए जिन्हें आर्य जनता ने वार्षिकोत्सव की विशेष उपलब्धि माना।

आर्य समाज-गौरव

"जो उन्नति करना चाहो तो "आर्य समाज" के साथ मिलकर उनके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें इसलिए जैसा "आर्य समाज" आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

-महर्षि दयानन्द

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

0 सं0 2241/57 पौष कृष्ण 2, रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक 25 दिसम्बर 1988 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

सृजन, पालन और संहार करने वाली तीनों शक्तियों के देवता है परमदेव। मुझे मृत्यु के बन्धन से छुड़ाकर अमृत के बन्धन से युक्त कर दो ।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	51

त्रिविधि ताप

7 दिसम्बर, 1988 की वह कालरात्रि जब सोवियत संघ के अरमेनिया गणराज्य में केवल मात्र एक मिनट के आये भीषण भूकम्प ने क्षणमात्र में एक लाख से अधिक प्राणियो को अपने गर्भ में समेट लिया। हरे भरे मैदान उलट गये, गगनचुम्बी अट्टालिकाएं भूमिसात हो गईं। दबे प्राणियों के करुण चीत्कार और हाहाकार ने प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित कर दिया। जिस माता पृथ्वी ने **"मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु मां"** कहकर अपने पुत्रों को मधुमयी ओषधियो, अन्न फल फूलो से सदा तृप्त रखा था- आज वही कुपित होकर नरसंहार ········नहीं-नहीं, अपने ही पुत्रों के सामूहिक सहार पर उतर आई है। कैसा कारुणिक दृश्य है- हम सब विवश होकर देख रहे हैं, न कोई उपाय तब सम्भव था, न अब और न आगे ······अरे इन्सान । तू कितना ही बड़ा विज्ञानवेत्ता क्यो न बन जाय, माँ के इस कोप को कभी नही रोक सकेगा --

वेद कहता है- "यस्यां पूर्वे पूर्वजना· विचक्रिरेयस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन ।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भग वर्च· पृथिवी नो दधातु ।।

जिस भूमि पर हमारे पूर्व पुरुष पूर्व से ही भाँति-भाँति के कर्म करते आये हैं, जिस भूमि पर रहकर देवों ने आसुरी वृत्तियों को परास्त किया है, जो हमारे प्यारे पशुओं का नीड है, जहां अन्नों का भण्डार स्थापित है, वह भूमि हमें वर्चस्व प्रदान करे। **"माता-भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः"** तू मेरी माँ है मैं तेरा पुत्र हूँ। मेरे पर तेरा ऐसा कोप किस लिए?

शास्त्रों में तीन प्रकार के दुःखों का वर्णन आता है- आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, वर्षा, बाढ़, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आधिदैविक विपत्तियाँ मानी जाती हैं। इसके क्या कारण हैं- यह दार्शनिक विवाद का विषय है। लेकिन इतना निश्चित है कि चाहे वैयक्तिक दुख हो अथवा सामूहिक, दुखों का मूलकारण पाप ही है। "परोपेहि मनस्पाप किंशस्तानि शंससि। परेहि नत्वा कामये वृक्षान् वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः ।। जब तक पाप से मानव दूरस्थ नहीं होगा उसे दुख की प्राप्ति होती ही रहेगी, बाढ़ के रूप में, भूकम्प के रूप में, बीमारी के रूप में आदि। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने कहा था- **अभिमान मत करना··· मत करना ।**

देखते नहीं घूमती हुई इस पृथ्वी ने एक मिनट के खेल मे ही सब स्वाहा कर दिया······· । याद रखना यह एक मिनट एक घंटा भी हो सकता है। अभी तो बहुत दया है उस दयामयी माँ की। इसलिए त्रिविध ताप विनाशिनी पुण्य सलिला वेदगंगा में अवगाहन करते हुए हमें उस रामराज्य की कल्पना साकार करनी चाहिए जहाँ तुलसी के शब्दों में -

दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुहि व्यापा ।

धार्मिक नगरी अलवर में-

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह एवं आर्यमहासम्मेलन

दिनाक 30,31 दिसम्बर तथा 1 जनवरी 1989
लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़, महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे।

लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ 30 दिसम्बर को अलवर मे सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह का उद्घाटन करेंगे। इस जलसे मे इंग्लैड, अमेरिका, हालैड, कनाडा, नेपाल, भारत अफ्रीका और मारीशस वगैरह से करीब 10000 आर्य समाजियों के भाग लेने की उम्मीद है।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती करेगे। जलसे मे इंका नेता सीताराम केसरी भी आयेंगे। 31 दिसम्बर को अलवर में शोभा यात्रा निकलेगी। इसी दिन दोपहर बाद साढे तीन बजे से देश विदेश के आर्य समाज के पदाधिकारियो का सम्मेलन होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के

उपदेश विभाग की आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि निम्न व्यक्तियों को जिनमे दो सज्जनों ने त्यागपत्र दिए और दो को सभा द्वारा पृथक किया गया।

1- श्री धर्मराजसिंह जी प्रचारक सभा का त्यागपत्र 1 नवम्बर 1988 से स्वीकार कर लिया गया है।

2- श्री जगतवीर जी सनेही, प्रचारक सभा का त्यागपत्र 1 नवम्बर 1988 से स्वीकार कर लिया गया है।

3- श्री शिवदेव जी बेधडक प्रचारक सभा की सेवाएँ गम्भीर आरोपों के कारण 16 अक्टूबर 1988 से समाप्त कर दी गई हैं।

4- श्री उदयप्रकाशजी आर्य प्रचारक सभा की सेवाएँ अन्तरंग सभा द्वारा 1 दिसम्बर 1988 से समाप्त कर दी गई हैं, रसीदबुक सभा को वापस नही की है।

उपरोक्त प्रचारकों का अब आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहा है - सभा निमित्त किसी प्रकार की धनराशि उन्हें न दी जाये।

सभा मंत्री

साय यज्ञ में उपस्थित होने के लिये कहा। वे आये यज्ञ मे बैठे। यज्ञ के पश्चात् पूछा कैसी स्थिति है - उत्तर मिला बिल्कुल ठीक है।

इसी प्रकार बहुत से रोगियों पर तुरन्त लाभ यज्ञ का ज्ञात हुआ। गत वर्ष सामाना पटियाला में भैषज यज्ञ कराया था। एक महिला को 10 वर्ष से रीड़ की हड्डी में दर्द था। बहुत चिकित्सा हुई परन्तु रोग बना रहा। आधा घण्टा भी बैठना कठिन था। यज्ञ प्रारम्भ होने पर पहले दिन 2 घण्टे बाद से बहुत आराम हुआ और सब कार्य करने लगी। इसी प्रकार के लाभ अनेक रोगों में हुए। लेख विस्तार भय से 2 ही उदाहरण प्रस्तुत किये गये है।

××××××

'शाहजहाँ ने नहीं बनाया था लालकिला'

बंबई, 25 सितम्बर (प्रेट्र)। अमेरिका के पुरातत्वेत्त मारविन मिल्स ने कहा है कि दिल्ली का लालकिला मुगल बादशा शाहजहाँ ने नहीं बनवाया था। वह उनके शासन मे आने पहले ही मौजूद था।

मिल्स ने अपनी यह धारणा लालकिले मे रंगमहल व लकड़ी के परीक्षण के आधार पर बनायी है। उन्होंने कहा रंगमहल की पिछले साल उन्होंने बीटा एनालिटिकल इनकार्पोरेट एलोरिड के पास कारबन परीक्षण के लिये भेजा था। इस परीक्षण से पता चला है कि वह लकड़ी 1460 ई0 के आस-पास की है। इसमें 60 साल का समय पहले या बाद में जोड़ा ज सकता है। कहा जाता है कि शाहजहाँ ने लालकिला 164 मे पूरा करवाया। परीक्षण के नतीजों के अनुसार इस सम में 200 साल का अन्तर आ जाता है।

परीक्षण के नतीजों की एक प्रति मिल्स ने इंस्टिटियू फार ओरयन्टल स्टडी थाने के निदेशक डा0 विजय बेडकर को भेजी है।

इससे पहले मिल्स आगरा के ताजमहल के लिये कह चुके हैं कि वह शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज की या मे नहीं बनवाया था बल्कि वह तो उनसे पहले ही वहाँ मौजू था।

मिल्स ने अपना यह फैसला चार साल पहले सुनाय था। अब जबकि लालकिले के बारे में भी उनकी यही धारण पुख्ता होती जा रही है उन्होंने भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण अपील की है कि वह भारत स्थित तमाम मध्य कालीन ऐतिहासि इमारतों को पुरातात्विक परीक्षण के लिये खोले।

लालकिला के शाहजहाँ से पहले होने की जानकारी प कलाचित्र से भी मिलती है। यह चित्र आक्सफोर्ड की बेदलीय लाईब्रेरी मे रक्खा हुआ है। चित्र में बादशाह सम्राट किले दीवाने-ए-आम में पर्शिया के राजदूत का स्वागत कर रहे हैं यह चित्र 1628ई0 का है। लालकिला में पुरातत्व विभाग क ओर से जो सूचना पट लगाया गया है उसमें कहा गया है कि शाहजहाँ ने अपनी नई राजधानी शाहजहानाबाद में यह किल अपने रहने के लिए बनवाया था। इसे पूरा बनने में नौ सा (1639-1648ई0) का समय लगा था।

इंस्टीट्यूट आफ ओरियन्टल स्टडी के निदेशक डा0विज बेडकर का मानना है कि लालकिला पहले किसी हिन्दू राजा क राजमहल था। अपनी मान्यता के पक्ष में किले के "खासमहल में बने सूर्य के चिन्ह, उसमे लिखा "ओ3म्" कलश मे से निकलत हुआ कमल, हाथियों का स्वागत करती तलवारें आदि चिन्हों क हवाला देते हैं। उनके अनुसार यह सभी चिन्ह हिन्दू राजा के धार्मिक चिन्ह थे। इनसे कई खोजकर्ताओं की अवधारणा पु होती है कि लालकिला पहले किसी हिन्दू राजा का (लालकोट था।

लाहौर के लालकिला के शीश महल में भगवान कृष्ण क करीब 12 कलाचित्र मिले थे। अभी तक यह किला भी शाहजा की ओर से बनवाया हुआ माना जाता है।

डा0 बेडकर ने कहा कि "शाहजहाँ की सभी ऐतिहासि इमारतों का कार्बन और थर्मोल्यूमिनेसेंस परीक्षण करवाया जा चाहिए। इन परीक्षणो के नतीजों को विदेशों की दो ख्यातिप्राप्त प्रयोगशालाओं द्वारा पुष्टि कराई जानी चाहिए।

जनसत्ता से साभार

विधि व्यवस्था की विडम्बना

- स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष,
वैदिक सस्थान, नजीबाबाद।

भारतीय विधि- व्यवस्था की दो बाते लगभग सन्-1972 ई0 से मेरे मस्तिष्क को यथा अवसर बार-बार झकझोरती रही है। इन मे से एक तो है न्यायालय मे बयान देने से पहले शपथ लेने की और दूसरी डाकूओं की पहचान की है ।

शपथ -

सन् 1977 में जाँच आयोग के सामने श्रीमती इन्द्रागाँधी के शपथ न लेने पर बडा बावेला मचा था। सप्ताहो तक समाचार-पत्रो में इस विषय पर टीका-टिप्पणी और चर्चा चलती रही थी। इससे बहुत पहले मुझे भी इस शपथ समस्या से वास्ता पड चुका है। बात सन् 1966 या 67 की है। एक गोलीकांड के अभियोग में साक्षी देने के लिये मुझे सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में जाना पडा था। उससे दो वर्ष पूर्व एक सज्जन को गोली मारी गयी थी। उन्हें लेकर उनके पारिवारिक जन जब जिला चिकित्सालय बिजनौर गये तो उस समय मै भी उनके साथ था। कोहनी से ऊपर उनके दाये हाथ को छेद कर गोली उनकी पसलियों में जा घुसी थी। हाथ की हड्डी टूट जाने के कारण वह लिखने मे सर्वथा असमर्थ थे इसलिये पुलिस में देने के लिए प्राथमिकी मैने लिखी थी।

न्यायालय में उपस्थित होने पर जब मेरा नाम-पता लिख लिया गया, उसके बाद न्यायाधीश के पेशकार ने मुझसे शपथ लेने को कहा। मैंने कहा 'मै शपथ नहीं लिया करता।' वह फिर बोले "शपथ तो आपको लेनी होगी।" मेरे पुन ना करने पर उन्होने कहा- ' फिर तो आपका आना बेकार हुआ।' मैं बोला 'मेरा आना नही न्यायालय का बुलाना बेकार हुआ।' जेब से समन निकाल कर दिखाते हुए मैने कहा "यह रहा परवाना मेरे पास, इस कारण यहाँ उपस्थित हुआ हूँ। हाँ, एक बात बताइये, क्या मेरे शपथ लेने पर न्यायालय मेरे बयान के अनुसार निर्णय दे देगा?" पेशकार महोदय बोले यह काम न्यायालय का है वह भी तो सोचेगा कि क्या ठीक है और क्या गलत है?" मैने निवेदन किया" इसका अर्थ है कि न्यायालय को शपथ पर कोई विश्वास नही और जब विश्वास ही नही तो न्यायालय शपथ क्यो दिलाता है?" यह सुनकर न्यायाधीश जी पेशकार को बोले 'बयान-लिखो" हो सकता है न्यायाधीश का यह अभिप्राय हो कि लिख दो कि मै शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ कहूँगा, ठीक-ठीक कहूँगा और पेशकार ने ऐसा ही लिख दिया हो।

क्या मेरे शपथ लेने पर न्यायालय का है। वह भी तो सोचेगा कि क्या ठीक है और क्या गलत है? "मैंने निवेदन किया" इसका अर्थ है कि न्यायालय को शपथ पर कोई विश्वास नहीं और जब विश्वास ही नहीं तो न्यायालय शपथ क्यों दिलाता है?" यह सुनकर न्यायाधीश जी पेशकार को बोले 'बयान लिखो" हो सकता है न्यायाधीश का यह अभिप्राय हो कि लिख दो कि मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ कहूगा, ठीक-ठीक कहूँगा और पेशकार ने ऐसा ही लिख दिया हो।

देश के प्रबुद्ध नागरिकों और विशेषकर विधि-वक्ताओं तथा न्यायाधीशों के सम्मुख इन पंक्तियों मे वही प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूँ कि जो उस दिन न्यायालय मे किया था कि जब न्यायालय पर विश्वास नही करता तो शपथ दिलाना क्या निरर्थक नहीं हो जाता? और फिर विचित्र बात यह है कि दोनों पक्षों के व्यक्तियों को शपथ दिलायी जाती है। शपथ दिलाने का अभिप्राय तो यही हो सकता है कि शपथ लेने वाला मिथ्या न बोले। परन्तु एक ही अभियोग में दोनों पक्ष परस्पर विरोधी बात कहते है।क्या यह मान लिया जायकि एकविषय मे दो विरोधी बयान होकर भी दोनो सत्य होंगे? न्यायाधीश तो क्या, कोई जड़मति भी यह स्वीकार नहीं कर सकता। फिर भी शपथ दिलाई जाती है। इसका चरितार्थ तो यह हुआ कि शपथ में कुछ नहीं रक्खा, यह केवल एक परम्परा बन गयी है और फलितार्थ यह हुआ कि जन-मन में शपथ का महत्व समाप्त होकर दूसरों को धोखा देने तथा अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिये शपथ का प्रयोग बढ़ता जाय। दूसरे यह कि सत्य और न्याय पर से सर्व साधारण का विश्वास हटता जाय और दिनोदिन यही सब होता जा रहा है ।

जब न्यायमन्दिर मे ही शपथ का कोई महत्व नहीं, केवल परम्परा के निर्वहन मात्र के लिए ही उसका प्रयोग होता है तो इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव सामान्य जन पर होना ही ठहरा, उसे रोका नहीं जा सकता। ग्रामों की चौपालो मे अभी भी शपथ का महत्व है। वहाँ बैठकर शपथ लेने के पक्ष पर मनुष्य दस बार सोचता है और प्राय अपवाद स्वरूप ही मिथ्या शपथ कोई लेता है किन्तु न्यायालय मे आकर शपथ लेने में कोई व्यक्ति भी लेशमात्र भी संकोच अनुभव नही करता। इससे यह परिणाम सहज ही निकलता है कि शपथ एक परम्परा है, इसका सत्य-झूठ से कोई सम्बन्ध नही और न्यायालयों में भी सत्य और मिथ्या का विवेचन कर न्याय नहीं होता अपितु लकीर पीट कर धाराओं का विवेचन तथा तदनुसार ही निर्णय किये जाते हैं। अन्ततोगत्वा मिथ्यावाद को पाप समझकर उससे भयभीत होने की प्रवृत्ति लोगो के मनो से विदा होती जा रही है। इससे भ्रष्टाचार को बल मिलता है। इसीलिये मेरा यह विचार है कि न्यायालयों से शपथ की प्रक्रिया को समाप्त कर दिया जाना चाहिये।

शपथ के विषय मे अपने मनोभावों को मैने ऊपर की पंक्तियों मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। यदि इस विषय पर अन्य विद्वज्जन भी लेखनी उठायें तो हो सकता है, यह प्रक्रिया न्यायालयो से समाप्त कर दी जाय।

डाकूओ की पहचान -

दूसरी प्रक्रिया डाकुओ की पहचान कराये जाने की है। लगभग सभी लोग यह जानते हैं कि डाकू लोग सर पर साफा आदि बाँधे हुए आते है। उन्होंने आँखो को छोडकर शेष सम्पूर्ण मुख-मण्डल को किसी वस्त्र से छिपाया होता है और या चेहरे पर स्याही से ही मूँछे-दाढ़ी आदि बनायी होती है। पुलिस और नागरिको से मुठभेड मे जो डाकू मारे गये होते है, उन्हे देखने से यही पता चलता है ।

फिर जब डाकू आते है तो लोग अपनी जान बचाने और हो सके तो धन भी बचा लेने के लिये प्रयत्नशील होते हैं और ऐसी स्थिति मे जिनके यहाँ डाका पड रहा होता है, उनके होश ठिकाने नही रहते। पडोसी भी घबडाये हुए होते है। तब क्या वहाँ डाकुओ की पहचान कर लेना व्यवहारिक और सम्भव होता है और क्या उस समय उन्हें डाकुओं की पहचान भी सूझती है? जिनके यहाँ डाकू लूट मचा रहे होते है, क्या उस समय उनके मन में यह विचार आता है कि डाकुओ की पहचान की प्रक्रिया साक्षी रूप मे जेल तथा न्यायालय में करनी होगी अत जैसे भी हो, डाकुओं की पहचान कर ली जाय?

यदि उस समय यह सब नही होता तथा इस प्रकार सोचने का अवकाश ही नहीं होता और डकैती मे लूटने वालों तथा उनके पडोसियो के होश-हवास इस स्थिति में नही होते तो फिर इस प्रक्रिया का क्या अर्थ? दैवयोग की बात अलग है कि किसी डाकू के चेहरे पर बन्धा हुआ वस्त्र खुल जाय और उसे कोई पहचान ले।

हाँ, इसका अनुचित लाभ भ्रष्ट पुलिस वाले अवश्य उठा लेते हैं। वह जिन्हें गिरफ्तार करते हैं, चाहे उस डकैती की उन्हें जानकारी तक न हो, अपनी जाँच के अवसर पर पुलिस स्टेशन पर ही साक्षी बनने वालो को उनकी भलीभाँति पहचान करा देते है। इस प्रक्रिया को समाप्त किया जाना चाहिये और अपराधियों का ठीक-ठीक पता लगाने के लिये इसके अतिरिक्त अन्य समुचित प्रकार अपनाये जाने चाहिये, ऐसा मेरा मत है। अन्य प्रकार क्या हो सकते हैं? विधिज्ञ जन इस पर विचार कर विधि-व्यवस्था मे उनका विनियोग करायें ।

सन्ध्या से लाभ पढ़ने से नहीं करने से होता है

- आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता
अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान, हैदराबाद।

केवल पाच-दस मिनट आँख बन्द करके संध्या के मन्त्र पढ़ लेने मात्र से संध्या के फल की प्राप्ति नहीं होती। वास्तव में संध्या पढ़ने की वस्तु नहीं है। संध्या करने के कर्म का नाम है। कर्म है इसीलिए यज्ञ है। पंच यज्ञों में ब्रह्म यज्ञ संध्या ही सबका प्रथम कर्त्तव्य है। आज हमारा आध्यात्मिक अवमूल्यन हो चुका है। यही वास्तव में हमारे पतन और गिरावट का मूल कारण है। संध्या के क्रियात्मक रूप पर लेखक के विचार स्तुत्य हैं -- सम्पादक

जीवन मे आखें बन्द करके घण्टों बैठना या संध्या के मन्त्रों का पाठ करना कोई मूल्य नहीं रखता है। मूल्य तब बनता है जब हम जीवन को संध्या में ढालने का प्रयत्न करते है। हमने सध्या को पढ़ने की वस्तु मान लिया है जब तक हम सध्या को पढ़ने के साथ-साथ कर्म में नहीं उतारते तब तक उसके सुफल हम कैसे प्राप्त करते हैं? संध्या को ब्रह्म यज्ञ कहा इसीलिए गया है कि संध्या को कर्म में आचरण में आचरित करना है। हम मन्त्र पढ़ते हैं - "ओ३म् भूः पुनातु-शिरसि"। जब हम इसे पढ़ते हैं तब हम क्या सोचते हैं- यही न कि - हे प्राण दाता परमेश्वर आप मेरे सिर को पवित्र कर दीजए। पाठक गण जरा ध्यान दीजिए कि इस प्रार्थना में और कोई कहे "हे प्रभु आप मुझे रोटी पकाकर खिलाइए" इस प्रार्थना में क्या अन्तर है? जैसे रोटी बनाकर खिलाने की प्रार्थना निष्फल है वैसे ही मेरे सिर को पवित्र कर दो कि प्रार्थना निष्फल है ।

मन्त्र तो एक फार्मूला मात्र है। मन्त्र हमें ज्ञान देता है। क्या केवल ज्ञान मात्र से फल की प्राप्ति सम्भव है? कदापि नहीं । मान लीजिए कि हमने हलवा पकाने की विधि जान ली। क्या विधि के ज्ञान मात्र से हमें हलवे की प्राप्ति हो जाएगी? कदापि नहीं। जब तक हम प्राप्त ज्ञान को आचरण में नहीं उतारते तब तक फल की प्राप्ति सम्भव नहीं। ठीक यही बात "भूः पुनातु शिरसि" के बारे में जान लेनी चाहिए।

वास्तव में इस मन्त्र का वास्तविक अर्थ भी हमने नहीं समझा। ये आर्य वचन भी बड़े अद्भुत हैं। हम ऊपर जो अर्थ कर रहे हैं उसमें हमारे लिए तो किसी भी कर्म का बोध नहीं होता। वहा तो सिर को पवित्र करने का दायित्व भक्त ने पूरा का पूरा परमात्मा पर डाल दिया है। महर्षि कहते हैं कि प्रार्थना भी यत्नपूर्वक होनी चाहिए। हम स्वयं उस दिशा में प्रयत्न करें तभी प्रभु सहायक होते हैं।

वास्तव में "भूः पुनातु शिरसि" कह कर सिर पर पानी का छिड़काव किया जाता है। "अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति" जल से वाह्य शरीर की शुद्धि होती है। दूसरी शुद्धि भीतर की है। भीतर की शुद्धि का उपाय महर्षियों ने इस आर्ष वचन के द्वारा दर्शाया है। वह यह है कि - भूः अर्थात् भूमि। नींव। इसे ही मूल या आधार कहते हैं। हमारे शरीर का मूल आधार है मूलाधार चक्र।

मूलाधार चक्र के शोधन से हमारा सिर भीतर से पवित्र और शुद्ध होता है। हम जानते हैं कि मल बढ़ता होने से ही शिरोव्याधियाँ होती हैं। कहा जाता है कि आंत भारी तो माथ भारी । आहार शुद्धि से मलशुद्धि और मलशुद्धि से ही मूलाधार चक्र भी शुद्ध रहता है और इस मूल के शोधन से शिखर भी सिर भी शुद्ध रहता है ।

"ओ३म् भूः पुनातु शिरसि' के इस आशय को ध्यान में रखकर हम सदा मल त्यागने के चक्र को शुद्ध रखें अर्थात् मलबद्धता या रेचकता से बचें तभी हम मन्त्र द्वारा आचरण कर उसके सुफल को प्राप्त कर सकते हैं। संध्या के करने का वास्तविक रूप उसका क्रिया में परिणयन ही है ।

हमारे पूर्वज संध्या के मन्त्रों के अर्थ भलीभांति जानते थेया नहीं यह तो हम नहीं कह सकते पर वे संध्या को आचरित करते थे। पूर्वज से अभिप्राय हमारे पिता या प्रपितामह से है। प्राचीन ऋषि महर्षि युग के लोगों से हमारा अभिप्राय नहीं है।

वास्तव में आखें मूद कर परमात्मा को खोज रहे है और अंधों के समान ही भटक चुके हैं। इसी का नाम है वास्तविक अन्ध-विश्वास। हम अन्ध-विश्वासी बनते चले जा रहे हैं।

हम अपने उन सभी परमात्मा के भक्तों से परम योगियों व योगीराजों से बहुत विनम्रता से कहना चाहेंगे कि - हम प्रभु पिता परमेश्वर को तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम पूर्ण रूप से या सर्वांगीण रूप में पवित्र व सूक्ष्म हो पाएंगे।

यह हमारा विकास तीन स्तर पर होना है। इन्हीं तीनों स्तरों पर उन्नत होना ही संध्या है। मन्त्र पाठ संध्या नहीं है। मन्त्र हमें ज्ञान देता है आधार देता है दर्शाता है। उन्नति का मार्ग दिखलाता है। बिना जाने आचरण सम्भव नहीं है। ज्ञान को ही मन्त्र कहते है। इसलिए संध्या के लिए उन्नति के लिए मन्त्र भी अनिवार्य है पर केवल मन्त्र पाठ तो तोते का अनुकरण ही कहलाता है।

अपने पूर्ण विकास के लिए हमें शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्तर को उन्नत बनाना होगा। इन तीनों के पूर्ण विकास के लिए किया जाने विचारपूर्वक यत्न है उसी को हम संध्या कहते हैं न कि - केवल मन्त्र पाठ को।

प्रातः ब्राह्म मुहूर्त्त मे उठना, शौच, स्नान से निवृत्त होना। शुद्ध वायु में भ्रमण करना, योगासन, व्यायाम और दौड़ तथा प्राणायाम यही संध्या की प्रथम सोपान है। शारीरिक उन्नति के सर्वांगीण उपाय ही संध्या का प्रथम भाग है।

इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अघमर्षण भी आवश्यक है। प्रदूषण नष्ट करने का ही दूसरा नाम "अघमर्षण" है। शरीर अर्थात् पिण्ड शोधन के लिए मार्जन व प्राणायाम मन्त्र है। अंग स्पर्श भी इसी का अंग है।

शारीरिक उन्नति का दूसरा पूरक उपाय है ब्रह्माण्ड के अघ का मर्षण। अर्थात् वातावरण का प्रदूषण नष्ट करना। ब्रह्माण्ड का शोधन ।

इन दोनों को मिलाकर संध्या का पहला भाग पूर्ण होता है। अर्थात् स्नान, व्यायाम और प्राणायाम तथा देव यज्ञ (अग्नि होत्र) अघ का मर्षण करना। जो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ है वह 1/3 एक तृतीयांश संध्या की साधना कर रहा है। या उसकी तृतीयांश संध्या सफल है। सफलता का नाम ही सिद्धि है।

संध्या का दूसरा भाग है मन की शुद्धि। जो मनसा परिक्रमा द्वारा होगी। सत्याचरण, द्वेष का नाश और ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म तरंगों के रहस्यों को जान सूक्ष्म मनोमय शरीर का संशोधन करना ही मनसा परिक्रमा है।

यह संध्या का दूसरा भाग है। मानसिक रूपेण स्वस्थ व सक्षम होना सध्या की तीसरी स्थिति है आत्मा का विकास। उत्तम उत्कृष्ट स्वभावयुक्त होना। आत्मिक उन्नति कहाती है।

इन तीनों उन्नतियों के लिए जो यत्नशील है वही साधक है। वही संध्या करने वाला है। वही उपासक है। सध्या के इस रहस्य को जानकर जो क्रियात्मिक रूप से यत्नशील है उसके जीवन में और साधारणों के आचारण में आकाश

पताल का अन्तर होगा ।

एक आर्य में और साधारण व्यक्ति में हर क्षेत्र में एक अन्तर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होना चाहिए ।

एक साधारण दुकानदार में और एक आर्य या प्रभु भक्त दुकानदार में निश्चित रूप से अन्तर होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो हममें आर्यत्व का अभाव है। हम सध्या पढ़नेवाले हैं करने वाले नहीं हैं। एक अर्थ में हम नास्तिक हैं। क्रियात्मिक संध्या को जीवन में आचरित करने से निश्चय ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि सरलता से सम्भव है। अन्यथा संध्या व्यर्थ और निरर्थक बन कर रह जाएगी।

इसीलिए महर्षि कहते हैं कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

यहाँ शारीरिक आत्मिक का अभिप्राय शरीर से आत्मा तक की उन्नति है। अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति करना है। यही संध्या का उद्देश्य है। यही अष्टांग योग है। यमनियम आसन प्राणायाम शारीरिक उन्नति के सूक्ष्म उपाय हैं। प्रत्याहार एवं धारणा मानसिक उन्नति के उपाय हैं। तथा ध्यान व समाधि आत्मिक उन्नति के साधन हैं। देव यज्ञ सामाजिक उन्नति का कारण बनता है।

इस साधना को करना ही संध्या है। संध्या एक अखण्ड क्रम है जिस पर आचरण करना प्रतिफल सम्पूर्ण जीवन के लिए अत्यावश्यक है ।

आर्यसमाज देहरादून का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज देहरादून का 109वां वार्षिकोत्सव दिनांक-18, 19, 20 नवम्बर को सोत्साह मनाया गया। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० देवदत्त बाली ने ओम ध्वजारोहण करके उत्सव का शुभारम्भ किया। प्रवचनकर्ताओं में नई दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा के उपमंत्री पं० पृथ्वीराज शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से पं० वेदप्रकाश शास्त्री और डा० महावीर पधारे। स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती तथा स्वामी-दिव्यानन्द सरस्वती तथा मेरठ से पधारे पं० धर्मपाल सिद्धान्तशास्त्री के भी व्याख्यान हुए। पं० सुगनचन्द जी के भजनोपदेश हुए।

उत्सव के अन्तिम दिन जनपद के आर्य कार्यकर्ताओं की गोष्ठी पं० देवदत्त बाली की अध्यक्षता में हुई जिसमें निश्चय किया गया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की स्मृति में जनपद के विभिन्न स्थानों पर पूरे दिसम्बर मास में वेदप्रचार का कार्य तीव्रता से चलाया जाए। देहरादून नगर की सभी आर्य समाजें 25 दिसम्बर को संयुक्त रूप से आर्य समाज देहरादून में बलिदान-दिवस मनाएंगी ।

xxxxxx

-: गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल मुजफ्फरनगर का महोत्सव :-

गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल का 24वाँ वार्षिक महोत्सव 20 से 23 नवम्बर तक बड़े हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। महोत्सव में समाज सुधार सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, किसान सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन व दीक्षा-सम्मेलनों का आयोजन किया गया। महोत्सव में लगभग 50हजार लोगों ने भाग लिया इन सब लोगों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से की गई थी ।

महोत्सव में सर्वश्री स्वामी आनन्दवेश जी, स्वामी कर्मपाल जी स्वामी चन्द्रदेव जी, वेदप्रकाश शास्त्री, डा० महावीर मीमांसक जगवीर सिंह {प्रधान सर्व आर्य युवक परिषद} धीर सिंह शास्त्री आदि आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान पधारे और जनता में आर्य समाज के प्रचार का बहुत प्रभाव पड़ा ।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

हमारे पास "आर्यमित्र" की प्रशंसा के ढेरों पत्र प्राप्त होते रहे हैं जिनमें प्रकाशित सामग्री की उच्चस्तरीयता, लेखों की मौलिकता एवं आकर्षक मुद्रण, साज-सज्जा आदि के सम्बन्ध में प्रशस्तिपूर्ण विचारों का उल्लेख रहता है। हम प्रशंसा एवं आलोचना के क्षेत्र से सर्वथा निर्लिप्त रहते हुए आर्यमित्र की उन्नति हेतु कर्तव्यपथ पर अग्रसर हैं। "ऋष्यक" से आपका प्रिय "आर्यमित्र" नये कलेवर में आपके पास पहुंच रहा है। हम यहाँ कतिपय प्राप्त सम्मतियों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं:

- सम्पादक

1- सम्पादक महोदय,

मैं गत 50 वर्षों से आर्यमित्र की सेवा से सम्बन्धित रहा हूँ। इसके लेखन, प्रकाशन, मुद्रण आदि सभी व्यवस्थाओं को मैं ही देखता था! मेरा सारा जीवन ही आर्यमित्र की सेवा में समर्पित रहा किन्तु गत एक वर्ष से जितना आकर्षक, उच्चस्तरीय सामग्री से परिपूर्ण, यह पत्र प्रकाशित हो रहा है वैसा मैंने कभी नहीं देखा। विशेषतया इसका सम्पादकीय अत्यन्त प्रभावित करने वाला तथा मौलिक समस्याओं पर प्रकाश डालने वाला होता है, जो स्तुत्य है।

- नारायण गोस्वामी,
भूतपूर्व प्रबन्ध सम्पादक,
"आर्यमित्र", लखनऊ।

2- श्री तिवारी जी, प्रधान सम्पादक,

"आर्यमित्र" साप्ताहिक वर्षों से यहाँ आ रहा है। बड़ा ही ज्ञानपूर्ण सम्पादकीय, निबन्ध, लेख आदि देने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं एक श्वास में ही सारा साप्ताहिक पढ़कर अत्यन्त आनन्दित होता हूँ।

-कमलेश कुमार, महेसना{गुजरात}

3- "आर्यमित्र" दिनोंदिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। रचनाओं का स्तर भी अत्यन्त श्रेष्ठ और शिक्षाप्रद होता जा रहा है। सम्पादकीय एवं प्रथम पृष्ठ की सामग्री उच्चकोटि की है - मैं बहुत प्रभावित हूँ। सम्पादक एवं अधिकारी गण को मेरी बधाई - -

—चन्द्रपाल सिंह "मयक", कानपुर।

4- "मित्र" का "ऋष्यक" तथा अन्य अंक प्राप्त हुए। आवरण एवं साज-सज्जा देखकर लगा कि "सरिता" "मुक्ता" जैसी पत्रिकाओं के पाठकों के समक्ष अब वैदिक दस्तावेज रखने का माध्यम इसे बनाया जा रहा है। अन्दर की प्रकाशित सामग्री ने सोने में सुगन्ध ही डाल दी है, काश "मित्र" इसी रूप में और आकार में निकलता रहे और इसकी प्रकाशित सामग्री दस्तावेज के रूप में सुरक्षित रहे और भेंट में प्रस्तुत की जा सके।

- सत्यदेव प्रसाद "मस्त"
नवादा, बिहार।

5- बड़ी प्रसन्नता है "आर्यमित्र" का स्तर बढ़ा है। पहले की अपेक्षा कागज छपाई अत्युत्तम है। सामग्री भी बौद्धिक स्तर पर सन्तोषपूर्ण है। दिनांक 9 अक्टूबर का सम्पादकीय "खूनी पंजा" बहुत ही अच्छा लगा। कई-कई बार पढ़ा। प्रभु से प्रार्थना है आपकी लेखनी दिनो-दिन सशक्त समर्थ होती रहे जिससे हम लोगों का ज्ञानवर्धन होता रहे।

कृष्ण चन्द्र कौशल,
हल्द्वानी {नैनीताल}

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की मुख्य घटनाओं का चित्रण

§श्री राजाराम जिज्ञासु - बदायूं

§1§ 1856 के फरवरी मास या फागुन कृष्ण पक्ष-13 स0 1913 को तलवन §जिला जालन्धर§ में जन्म, पिता का नाम श्री नानकचन्द और पितामाह का नाम श्री सुखानन्द और प्रपितामाह का नाम श्री गुलाबराम जो कि खत्री §क्षत्रिय§ वंशज परिवार था।

§2§ 1866 विद्यारम्भ संस्कार वाराणसी में उनके पिता वहाँ कोतवाल पद पर नियुक्त थे। इस कारण बनारस में हुआ।

§3§ 1873 क्वीस कालेज वाराणसी में प्रवेश कालेज के प्रिन्सपल श्री ग्रीफ्थ जी जिन्होंने चारो वेदो का भाष्य किया था, थे।

§4§ 1875 पाखण्डी पण्डो और फिर गिरजाघर के पादरियों के प्रलोभनों, पतित चरित्र हीनता आदि दोषों से नास्तिकता की ओर झुकाव।

§5§ 1876 पिता का बनारस से बरेली स्थानान्तरण होने और वहाँ स्वामी दयानन्द महाराज के आगमन पर शंकाओ का समाधान।

§6§ 1880 ला0 सालिगराम की पुत्री शिवदेवी से विवाह, §शिव देवी ला0 देवराज की बहिन थी। जिन्होंने जालन्धर में कन्या म0वि0 खोला था§

§7§ 1884 आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की।

§8§ 1887 मुख्त्यारी की परीक्षा देने के बाद वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जो कुछ दिनों बाद गुरुकुल सेवा के कार्यों मे संलग्न होने के कारण बन्द कर दी थी। इसी वर्ष 1887 में स्वामी जी के प्रथम पुत्र हरिशचन्द्र का जन्म हुआ।

§9§ 1888 वैदिक धर्म प्रचार की धुनि, श्री गुरुदत्त विद्यार्थी जी के 15-11-88 को व्याख्यान सुनकर दोषों का परित्याग, हुक्का न पीने तक का संकल्प।

§10§ 1889 द्वितीय पुत्र श्री इन्द्र का जन्म।

§11§ 1890 सत्धर्म प्रचारक पत्र का प्रकाशन।

§12§ 1891 धर्म-पत्नी का निधन, §पाँचवी सन्तान उत्पन्न होने पर "पूज्य पति को अन्तिम प्रणाम" एवं "बच्चो को न भूलें" पत्नी द्वारा अन्तिम इच्छा की अभिव्यक्ति§।

§13§ 1892 आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर चयन।

§14§ 1898 आर्य मुसाफिर पं0 लेखराम जी के बलिदान होने पर उनकी स्मृति में आर्य मुसाफिर पत्रिका का प्रकाशन। जो 18 वर्ष उर्दू और फिर हिन्दी में छपती रही थी। पुत्री वेदकुमारी द्वारा घर में क्रिश्चयन कालेज की प्रार्थना, §"ईशा-ईशा बोल तेरा क्या लगेगा मोल"§ गुनगुनाने को सुनकर पाश्चात्य शिक्षा से घृणा और गुरुकुल स्थापना का संकल्प।

§15§ 1900 मई मास की 16 तारीख को हरिद्वार में गुजरावाला भवन मे गुरुकुल का संचालन।

§16§ 1904 गुरुकुल संचालन की तीन कठिनाईयाँ धन, विद्यार्थी प्रबन्धक के समाधानार्थ अपनी कोठी, प्रेस, पुस्तकालय भेटकर 30,000/= का संकलन कर धन, और अपने दोनों पुत्रों के रूप में विद्यार्थी, और प्रबन्धक की समस्या के लिए स्वयं, अपने को समर्पित करने का संकल्प।

1902 मार्च मास की दूसरी §किसी के मत से चौथी§ तारीख को झोपड़ियों में गुरुकुल स्थानान्तरित।

§18§ 1909 सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर चयन तथा रियासत पटियाला द्वारा आर्यसमाजियों [illegible] बागी घोषित किये जाने पर सदस्यों को मुक्त कराने के लिए निशुल्क वैधानिक सहयोग देकर उनको बचाना, तथा शुद्धि सभा की स्थापना से पूर्व लुधियाना जिले के 7 गाँव के रमदासी सिक्खों §जो सिक्खों से प्रथक रविदासी चर्मकार थे§ का मुण्डन करा यज्ञोपवीत देकर आर्य समाज के सदस्य बनाकर उनकी रक्षा करना।

§19§ 1909 भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद पर चयन।

§20§ 1915 रियासत धौलपुर नवाब द्वारा आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध लगाने पर सत्याग्रह का उद्घोष देना।

§21§ 1917 में अप्रैल मास की 12 तारीख को 61 वर्ष की आयु में स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर मुन्शी राम जी के स्थान पर स्वामी श्रद्धानन्द नाम ग्रहण करना।

§22§ 1918 में सन्यासी बनकर गढवाल में अकाल पीड़ितो की सेवा तत्पश्चात राजनीति में सक्रिय प्रवेश।

§23§ 1- 1919 अमृतसर में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष रूप में चयन, देहली में प्रचार कार्य एव भाषण। अप्रैल मास की 4 तारीख को शाही जामामस्जिद के मन्च से पवित्र वेदमन्त्र के उद्घोष द्वारा हिन्दू मुस्लिम एकता पर ऐतिहासिक भाषण।

2- अप्रैल मास की 18 तारीख को रोल्ट एक्ट के अन्तर्गत हड़ताल के विरुद्ध चाँदनी चौक दिल्ली में गोरखा सैनिकों के सामने सीना खोलकर निर्भीकता का परिचय देना। मई मास की 2 तारीख को कांग्रेस की नीति से क्षुब्ध होकर त्यागपत्र देना।

§24§ 1920 "श्रद्धानामक" पत्रिका का संचालन जो पौने दो वर्ष तक रहा। गुरुकुल के सेवा कार्य के लिए कृत संकल्प तथा गुरुकुल मे आवास।

§25§ 1921-22 असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना।

§26§ 1923 के फरवरी मास की 13 तारीख को शुद्धि तथा दलितोद्धार सभा स्थापित करना। जिसके द्वारा मात्र 10 मास की अवधि में 50 हजार से अधिक अहिन्दुओं को स्वधर्म में लौटा लिया था।

§27§ 1924 दक्षिण भारत में प्रचार तथा विधर्मी मुगोपलो को स्वधर्म में लौटाना तथा अस्पृश्यता निवारण कार्य करना।

§28§ 1925 मे दयानन्द शताब्दी मथुरा का नेतृत्व, श्रद्धापूर्ण श्रद्धान्जलि।

§29§ 1926 में §1§ मार्च को 26 तारीख को असगरी बेगम व उसके पुत्रों को स्वधर्म में लौटाकर शान्ती देवी व पुत्रो के धर्मपाल व अर्जुन नाम रखना। उक्त परिवार आज भी बम्बई नगर में आवासित है। §11§ अप्रैल में लिबरेटर का प्रकाशन §111§ 30-11-26 को बनारस व मिर्जापुर के उत्सवों से लौटने पर रुग्ण होना। §§23·12·26 §पूस 4 स0 1983§ सायं 3-45 पर अब्दुल रशीद नामक आये व्यक्ति द्वारा "शुद्ध होने का" बहाना लेकर स्वामी जी पर घातक प्रहार व स्वामी जी का बलिदान। हत्यारे के पकड़ने का श्रेय उसके भागने पर स्वामी जी के सचिव पं0 धर्मपाल §पूस 4 स0 1983§ जी विद्यालंकार §जो गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक और वर्तमान में आर्य समाज बदायूं के प्रधान व भू0पू0 मन्त्री आ0प्र0 सभा उ0प्र0 के है§ जिन्होंने पुलिस आने तक हत्यारे को 20 मिनट तक रोके रहना।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रचित साहित्य का विवरण:-
1- सुबह उमेद 2- मुहम्मिदी साजिश का इन्साफ 3- अन्धा पतिकाद और सुफिया जहाज 4- आर्यो की नित्य कर्म पद्धति 5- आर्य पथिक 6- ईसाई तालुव और आर्यसमाज 7- मात्र भाषा का उद्धार 8- पार्सी मजहब और वैदिक धर्म 9- मेरी जिन्दगी के नशोफराज 10- वेदानुकूल से मनुस्मृति 11- आर्य समाज और उसके बदनाम करने वाले 12- हिन्दू-मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी 13- कल्याण मार्ग का पथिक 14- दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान 15- विस्तार पूर्वक सन्ध्या 16- हिन्दू संगठन 17- अछुतोद्धार 18- मेरा आखिरी शोरा 19- आर्यसमाज और पौलिटिक्स 20- धर्मोपदेश 1 से 3 भाग 21- आदिम सत्यार्थ प्रकाश 22- गढ़वाल का दुर्भिक्ष 23- स0 धर्म पर लाइवेल केश 24- वेद और आर्यसमाज 25- आचार अनाचार और छूत-छात।

यज्ञ चिकित्सा विज्ञान

स्व0 वीरसेन वेदश्रमी,
वेद विज्ञानाचार्य, वेदसदन,
महारानी पथ,
इन्दौर-452007

गतांक से आगे

12- हव्य घृत का निर्माण- और उसका प्रयोग:-

यज्ञ में गौ का ही घृत सर्वाधिक लाभकारी है। रोगानुसार रोग की औषधि, वनस्पतियों से सिद्ध घृत तैयार करना चाहिए। उसी सिद्ध घृत का रोगी के निवास कमरे में अखण्ड दीपक प्रदीप्त रखना चाहिये। उसी सिद्ध घृत की यज्ञ में आहुति प्रदान करना चाहिये। उसी घृत को सामग्री में भी मिलाना चाहिये और आहुति शेष घृत बिन्दु को काँसे के जलपूर्ण पात्र में टपकाना चाहिये। यज्ञ के मध्य एवं पश्चात् उस घृत को थोड़ा सा हथेलियों में मसल कर यज्ञाग्नि से हथेलियों को तपाकर अपने अंगों पर लगाना चाहिये तथा रोग पीड़ित स्थान पर गरम हथेलियों से सेंक करना चाहिये। यज्ञ घृत के साथ तपी हुई हथेलियों को जोर से सूंघने की क्रिया भी करनी चाहिये। इस घृत को जो आहुति शेष जल में है उसका नासा छिद्रों के भीतर लगाना चाहिये जिससे श्वास प्रश्वास के साथ यज्ञ घृत की सुगन्ध सदा प्रविष्ठ होती रहे। नाक के नीचे के प्रदेश में भी उस घृत को लगावें। यदि मूँछ हो तो उन पर भी उसे लगावें।

13- हव्य द्रव्य :-

कुछ हव्य द्रव्य ऐसे हैं जो रोगी और निरोग दोनो के लिये सामान्य रूप से लाभकारी हैं उनका उपयोग हव्य के रूप में करना चाहिये। गिलोय, हरड़, बहेड़ा ब्राम्ही, बच,अपामार्ग, पुनर्नवा, बायविडंग कूठ, शतावरी, शंख पुष्पी, अर्जुन की छाल, पलाश के फूल, पीपल की छाल, सोमराजी, निगुंडी, बिल्व फल, नागरमोथा, गूगल आदि द्रव्य ऐसे हैं जो स्वास्थ्य एवं रोगी दोनों को लाभ दायक हैं। इन्हीं के साथ रोगानुसार ओषधियों की वृद्धि करने से रोग शमन कार्य विशेष हो जाता है। इसी हव्य सामग्री में सुगन्धित द्रव्य चन्दन, कपूर, अगर, नगर, खस, पानड़ी, गुलाब की पँखुड़ियाँ, कपूर काचरी, तोमड़ बीज, सुगन्धबाला, सुगन्धकोकिला,जटामाँसी, जायफल जावित्री, तेजपात्त, बड़ी व छोटी इलायची आदि का मिश्रण कर देना चाहिये। इस प्रकार हव्य द्रव्यों से निर्मित हवि में नित्य घृत डालकर रोगी दोनो हाथों की हथेलियों से मसलें। इस प्रकार से सामग्री के साथ घृत को रगड़े या मसलें कि हथेलियों की रगड़ से हथेली मे गर्मी उत्पन्न हो जावे। यह कार्य बहुत लाभकारी है। सामग्री में घृत मिलाने के बाद हथेलियों को मसल कर ही झाड़ दे और हथेलियों को 2-4 बार जोर से सूघें और श्वास को कुछ देर रोकें। हाथ धोवें नहीं और आचमन भी वैसी ही स्थिति की हथेलियों से करें जिससे सामग्री से प्रभावित हथेली का जल और भी औषधयुक्त हो जावे ।

14- मन्त्रोच्चारण और स्वाहा की ध्वनि :-

यदि रोगी को मन्त्र याद हो या पढ़ सकता हो तो उनका उच्चारण वह अवश्य करे। मन्त्र एक श्वास में ही बोल सकता है तो एक ही श्वास में बोले। अन्यथा एक श्वास में जितना बोल सकता हो बोले। शेष भाग को दूसरे श्वास में बोले। इस निमित्त मन्त्र प्रारम्भ करने से पूर्व श्वास को भर कर मन्त्र बोलने का प्रयत्न करे। बार-बार ऐसा ही प्रयत्न करे और मन्त्रान्त में स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर में करे। मन्द ध्वनि या मन्त्र की ध्वनि के बराबर की ध्वनि न करें। यदि मन्त्र, याद न हो तो स्वाहा की ध्वनि मन्त्रान्त में जोर से ही करें। इस प्रकार से स्वाहा की उच्च स्वर से ध्वनि करने से रोगी को बहुत लाभ होता है तथा शीघ्र ही लाभ होता है। यज्ञ की आरोग्यप्रद भेषजवायु स्वाहा उच्च स्वर से बोलने के बाद स्वतः शरीर के भीतर गहरी प्रविष्ठ होती जाती है और भीतर की सूक्ष्म नाड़ियों को स्वच्छ तथा आरोग्यता प्रदान कर देती है।

15- यज्ञ और प्राणायाम :-

जो यज्ञ करता है, मन्त्र को एक श्वास में बोलता है और उच्च स्वर से स्वाहा की ध्वनि करता है उसके अन्दर स्वभावतः ही रेचक, कुम्भक और पूरक क्रियाएँ मन्त्र माध्यम से होने लगती हैं। यह सर्वोत्तम है। इतना विशेष लाभ या इससे बढ़कर लाभ अन्य रीति से असम्भव है। अन्य व्यक्ति भी जो यज्ञ में उपस्थित हों उन्हें भी स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर से करनी चाहिये - सभी को आश्चर्य जनकलाभ होगा। कतिपय रोगियों को तो एक समय के ही यज्ञ में वह लाभ हुआ जो चिकित्सा कराते थक गये थे और निराश हो गये थे।

16- यज्ञ के पश्चात् यज्ञ धूम्र का पान करें:-

यज्ञ के पश्चात् यज्ञ प्रदेश में ही बैठकर दीर्घ श्वास-प्रश्वास की क्रिया भी यथा सामर्थ्य 5, 10, 15, 20 बार करना चाहिये। घृत पात्र से कुछ घृत बिन्दुओं को अपनी हथेली में लगाकर किंचित जल का अगुलियों से स्पर्श कर हथेलियों को परस्पर रगड़ कर गरम करें, उन गरम हथेलियों को यज्ञाग्नि से और तपा लेवें तथा हथेलियों एवं अंगो पर लगावें। पुनः दोनों हाथों की अंजलिवत आकृति में करते हुए जैसे नदी या तालाब में जल भरकर पीने के क्रिया करते हैं ऐसी क्रिया वैदिक सम्मुख करते हुए, यज्ञ प्रभावित सोमतत्व को हम भर कर पी रहे हैं इस भावना से करें। अजलि को मुख के पास ले जाकर अंजलि मध्य में थोड़ा सा छिद्र रख कर जोर से नासिका द्वारा वायु को खींचना चाहिये। वह वायू हथेलियों से रगड़ कर आनी चाहिये। पुनः उसे भीतर ही रोकें ओम् भू-ओम्-भुवः-स्वः-ओम् महः - ओम्जनः ओम् तपः ओम् सत्यम् - इस मन्त्र का जाप करते हुए श्वास छोड़ दे। ऐसी प्रक्रिया तीन बार करें।

17- यज्ञान्त का आचमन और अमृताभिषेक:-

उपरोक्त क्रिया के समय हथेलियों से सामग्री के सूक्ष्म अंश का स्पर्श कर, करने से और भी अधिक लाभ होता है। उसी स्थिति में आचमन भी लाभदायक है। उन्हीं हाथों से अंगो का स्पर्शादि भी करें कलशे में रखे जल से ब्रह्मना या ऋत्विजादि अपने दाहिने हाथ की अंजली में जल लेकर यजमान एवं यज्ञ में उपस्थित रोगियों एवं अन्य जनों पर जल का प्रोक्षण मन्त्रपूर्वक करें ।

18- यज्ञ की भस्म का उपयोग:-

यज्ञ की भस्म का उपयोग रोगियों के लये तो बहुत उपयोगी है। यज्ञाग्नि के शीतल हो जाने पर उस भस्म को छलनी से छान कर पुनः बारीक वस्त्र से छान लेना चाहिए। इस भस्म को विविध कार्यों में प्रयुक्त करें । श्वास, दमा, खासी, वायु के रोग, उदर रोगों में 2-4 रत्ती भस्म को शहद के साथ दिन में 2 या 3 बार लेना चाहिये। 4 से 6 रत्ती भस्म को 2 तोला जल में डाल दें। उस चम्मचसे चलावें। छान कर रोगी को पिलावें। पेट दर्द आदि में बहुत उपयोगी है। शरीर के किसी भाग पर खुजली, मक्खी, मच्छर के काटने से दर्द हो तो यज्ञ की भस्म वहाँ लगा दें तो तुरन्त लाभ होता है। दाद या अन्य चर्म विकार हो, सफेद दाग हो तो यज्ञ शेष घृत में भस्म को मिला कर प्रलेप किया जा सकता है। जल के साथ भी भस्म का प्रलेप किया जा सकता है। यज्ञ की भस्म का, क्षार-निर्माण विधि से क्षार तैयार करके भी प्रयोग जल में मिला कर किया जा सकता है। नेत्र रोगों में 1 भाग क्षार, 20 भाग वर्षा जल या डिस्टिल्ड वाटर में मिलाकर टपकाया जा सकता है। इत्यादि अनेक प्रकार से प्रयोग करना चाहिये।

19- यज्ञ का आश्चर्यजनक द्रष्ट लाभ:-

यज्ञ से रोगियों को आश्चर्यजनक लाभ हमने प्राप्त किया - सन् 1966 के फरवरी मास में आदर्श नगर जयपुर में यज्ञ था। एक रिटायर्ड इन्जीनियर बीमार थे, उन्हें कहा गया कि कल प्रायः आप यजमान बनें। उनने कहा कि बहुत बीमार हूँ- आ नहीं सकूँगा। अधिक निवेदन करने पर कहा कि प्रातः काल तक का भी भरोसा नहीं। यदि आ सका तो आ जाऊंगा। वे प्रातः आये 2 घटा यज्ञ में बैठे। यज्ञ के पश्चात पूछा कि कैसी स्थिति है- कहा कि पहले से ठीक है।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
> --राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष कृष्ण 2 संवत् 2045 वि0, 25 दिसम्बर, 1988
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

विगत बनाम आगत

सन् 1988 के वर्ष का अवसान हो रहा है। आर्यसमाज के इतिहास मे एक-एक वर्ष का महत्व है। हम इस वर्ष का सिंहावलोकन करें। आज सारा विश्व अनेक ऊहापोहों और परिवर्तनों के बीच से गुजर रहा है। लौह-आवरण तिरोहित हो रहे हैं, खुली वायु के झोंके मानव मस्तिष्क को कुछ सोचने के लिए विवश कर रहे हैं। आर्य समाज भी इन परिवर्तनों की आँधी से बचा नहीं है। हमने एक ओर जहाँ पजाब को आतकवाद के साये मे बुरी तरह कराहते हुए देखा है वहाँ राजनैतिक क्षितिज पर उठे भ्रष्टाचार के अनेक आरोप प्रत्यारोपों के बीच राजनैतिक प्रतिद्वन्दियों को जूझते हुए भी देखा है। संसार का घटनाचक्र अपनी गति मे परिभ्रमण कर रहा है वर्ष जाते-जाते अपने क्रूर आधिदैविक विपत्ति के विनाशकारी रूप को भूकम्प के साथ अरमीनिया और कोकेशस के अभागे प्राणियो पर छोड़ गया है। सौभाग्य से इस प्रदेश मे सभा के चुनाव का झंझावात अब शान्त है। नेतृत्व वर्ग कर्मक्षेत्र मे नए उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा है। सभा की आर्थिक स्थिति सुदृढ़तर बनाने हेतु नए आयाम प्रतिष्ठापित किए जा रहे हैं। स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में एक विशाल अतिथि भवन का निर्माण सभा परिसर मे क्रियान्वित रूप ले चुका है, जो स्तुत्य है।

अब हमें आगत के स्वागत मे आर्य समाज की गतिविधियों में सामन्जस्य लाना है। क्या कारण है कि आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता मौलिक रूप से इस सस्था में बड़ी श्रद्धा और लगन के साथ आते हैं, किन्तु कुछ समय बाद अन्य राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक लहरों मे बहने लगते हैं। यह भी विचारणीय है कि उनके इन कृत्यों से आर्य समाज को कितना लाभ अथवा हानि पहुँचती है और वास्तव में उन लहरों का कितना अंश हमारे सिद्धान्तों के अनुकूल होता है और कितना प्रतिकूल। हो सकता है लोकैष्णा के लुभावने मोह से प्रेरित होकर ऐसे कर्मठ आर्य सेवी उन सस्थाओं में चले जाते हों परन्तु हमें यह भी सोचना है कि प्रतिकूल का दमन और अनुकूल की अभिवृद्धि के लिए हमने तथा हमारी संस्था ने क्या किया। बहुत से कर्मठ आर्य समाजी सघ की गतिविधियों और उसके आकर्षक हिन्दू सगठन की ललक तथा कार्यक्रमों से प्रभावित होकर उसमें सम्मिलित हो गए तथा वहाँ जाकर ध्वज प्रणाम, हिन्दू शब्द की मान्यता तथा अन्य प्रवृत्तियो के, जिनका आर्यसमाज खण्डन करता आ रहा है, प्रबल पोषक बन गए। इसी प्रकार बहुत से आर्यसमाजी राजनैतिक सस्थाओं में जाकर उनकी रीति-नीति के अनुयायी बन गये और वहाँ पहुँचकर उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रतिकूल विचारों का समर्थन किया। श्री बनारसीदास के मुख्यमंत्रित्वकाल में जब मंत्रिपरिषद में संस्कृत को हटाकर उर्दू को उसके स्थान पर प्रतिष्ठापित करने का निर्णय लिया जा रहा था तो सभा के तत्कालीन मंत्री जो उस समय शिक्षा मंत्री भी थे, उस परिषद में उपस्थित थे और उनकी उपस्थिति में वैसा ही निर्णय लिया गया। संस्कृत को हटाया जाने वाला यह निर्णय आर्य समाज के सिद्धान्तों के सर्वथा प्रतिकूल था जिसने बाद में एक आन्दोलन का रूप ले लिया था। तत्कालीन सभामंत्री की उपस्थिति में मन्त्रिपरिषद द्वारा लिए गए उस निर्णय से आर्य समाज की छवि निश्चित रूप से धूमिल हुई।

वर्तमान मे समाजों के अन्तर्गत चलने वाले शिक्षणालय क्या हमारे लिए उपयोगी हैं ? यदि उन शिक्षणालयों से सच्चे तपोनिष्ठ वैदिक प्रेमी युवक-युवतियों का निर्माण नहीं होता है - तो हम अपने उद्देश्य में कितने सफल हुए है - इसे भी सोचना होगा। हमारे मन्तव्यों के अनुसार हमारी शिक्षा केवल "अर्थकरी" न होकर "साविद्या या विमुक्तये" वाली है जो हमारे बच्चों को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के समन्वित आधार पर जीवन का सम्पूर्ण विकास करने मे सक्षम हो। हमें अपने शिक्षणालयों में इसी भावना को प्रोत्साहन देना होगा।

आज का युग पत्र-पत्रिकाओं का है इन्हीं के द्वारा हमारे बौद्धिक ज्ञान की अभिवृद्धि होती है और विचार परिवर्तन आता है। आपका प्यारा **"आर्यमित्र"** अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही आर्य समाज के विचारों को व्यापक बनाने और आर्यत्व की छवि को उज्वल से उज्वलतर करने में सराहनीय योगदान देता आ रहा है। यह आपके विचारों की आत्मा है। विगत वर्ष में जो भी पठनीय सामग्री और कलेवर हमने आपको प्रस्तुत किया उसमें, हम आशा करते है, आपको इसी भावना के दर्शन हुए होंगे। आगत के स्वागत में वैचारिक क्रान्ति के प्रमुख स्रोत इस पत्र के स्तर को उन्नत करने हेतु आपके परम पावन सहयोग की आकाक्षाओं सहित हम अपने पाठकों तथा समस्त आर्यजनों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

आवश्यक सूचना

सभा भवन परिसर में
स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन का शिलान्यास
दिनाक- **8 जनवरी 1989 को प्रातः 11 बजे**
पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न होगा।

सभी सादर आमंत्रित हैं ।

(मनमोहन तिवारी)
सभा मन्त्री ।

आवश्यक निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के उपदेश विभाग द्वारा दिनाक- 2-3-4-5 जनवरी 1989 प्रकाशवीर शास्त्री भवन, आर्य समाज मन्दिर, ब्रजघाट पो0 खास, जिला गाजियाबाद, में सभा के समस्त उपदेशको-प्रचारको ढोलक वादको का "प्रशिक्षण-शिविर" आर्य जगत के सुयोग्य सन्यासी पूज्यवाद स्वामी जीवनानन्द जी महाराज, की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक आयोजित हो रहा है ।

इस शिविर मे सभा के सभी उपदेशको, प्रचारको, ढोलक वादकों की उपस्थिति अनिवार्य है। दिनाक- 1 जनवरी, 1989 रविवार को मध्यान्ह 2 बजे तक आर्य समाज मन्दिर ब्रजघाट में पहुँचकर अपनी उपस्थिति अंकित करायें ।

साथ मे बिस्तर, आवश्यक सामान, लोटा, नोटबुक, अपनी जन्म तिथि एव शैक्षिक योग्यता का प्रमाण-पत्र, पासपोर्ट साइज के दो फोटो । मास अगस्त से दिसम्बर 1988 तक का पच सूत्रीय कार्यक्रम, आर्य मित्र ग्राहक पुर्नजीवन, नवीन समाज स्थापना, वार्षिकोत्सव एवं सगठन की प्रगति का चित्र ब्योरे वार। वैदिक धर्म प्रचार कार्य की सफलता हेतु लिखित रूप में अपने सुझाव एवं सम्मति अवश्य लाये ।

समस्त आगन्तुक महानुभावों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था आर्य समाज मन्दिर ब्रजघाट में की गई है। ब्रजघाट दिल्ली एवं मुरादाबाद राज मार्ग पर गजरौला से 10कि0मी0 दिल्ली की तरफ है। ब्रजघाट पहुँचने के लिये रेल एवं बस दोनो सुविधायें उपलब्ध हैं। केवल पैसिंजर ट्रेन ही ब्रजघाट पर रुकती है। प्रकाशवीर शास्त्री भवन, आर्य समाज मन्दिर, रेल एवं बस दोनों स्थानो से केवल दक्षिण दिशा में 1/2 कि0मी0 पर स्थित है ।

मुरादाबाद से एवं दिल्ली से बस द्वारा ब्रजघाट आया जाता है। दिल्ली से आने पर गढ़मुक्तेश्वर के बाद ब्रजघाट पड़ता है। तथा मुरादाबाद से जाने में गजरौला से 10 कि0मी0 है जहाँ से टैम्पू भी ब्रजघाट तक जाते हैं।

पं0 इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी	हरिश्चन्द्र आर्य
प्रधान	मन्त्री	अधिष्ठाता

सत्य को ग्रहण करना धर्म है

(प्रभात कुमार,
एडवोकेट,-इलाहाबाद)

उर्दू के प्रसिद्ध लेखक श्री सलमान रशीदी के लिखित उपन्यास सैटोनिक वर्सिस के विरुद्ध मुसलमानों ने एक आन्दोलन खड़ा कर दिया है। मुसलमानो का कहना है कि इस पुस्तक से उनकी धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचता है। यह दूसरी बात है कि 10 में से 9 मुसलमान अशिक्षित हैं और वे पुस्तक को पढ़ नहीं सकते। हमारी सरकार ने जिसमें उच्चतक न्यायालय के अत्यन्त उचित प्रसिद्ध शाहबानो के केस की एक नये बिल के द्वारा रद्द कर दिया उसने पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया है क्योंकि इस समय कांग्रेसी सरकार को मुसलमानो के डगमगाते वोटों को प्राप्त करना है। मुस्लिम नेता मिया शाहबुद्दीन ने सरकार के इस कार्य की प्रशन्सा की है उन्होंने अपने लेख में जो टाईम्स आफ इन्डिया, लखनऊ मे 16 10 88 को प्रकाशित हुआ है। उसमे पुस्तक और पुस्तक लेखक की घोर निन्दा की है। यद्यपि उन्होंने यह स्वीकार किया है कि न उन्होंने पुस्तक को पढ़ा है और न पढ़ने का विचार है, अच्छा होता कि एक विवेकशील व्यक्ति की भाँति वे स्वय पुस्तक को पढ़कर अपना विचार प्रकट करते मिया शाहबुद्दीन ने लिखा है कि कुरान ईश्वरीय ज्ञान है। वे कुरान अथवा पैगम्बर मुहम्मद के विरुद्ध कुछ भी लिखा जाना सहन नहीं कर सकते। कुरान के अनुसार कुरान अरब के निवासियो के लिये है इसलिये वह अरबी भाषा में है। कुरान के अनुसार बाइबिल भी ईश्वरीय ज्ञान है। बाइबिल में लिखा है कि पृथ्वी चटाई की तरह चपटी है और सूर्य पृथ्वी के चारो ओर परिक्रमा करता है। आज सर्वमान्य तथ्य यह है कि पृथ्वी नारंगी की तरह गोल है और पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमती है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो को इस लिये जिन्दा जला दिया था क्योंकि उसने कहा था कि पृथ्वी सूर्य के चारो तरफ घूमती है। कुरान ईश्वर का नान है तो वह मानव मात्र के लिये है और मुसलमान उस पर अपना एकाधिकार नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति को उसको पढ़ने और अपनी बुद्धि के अनुसार समझने का अधिकार है यह भी देखना है कि क्या हम आज इस युग मे कुरान की शिक्षा के अनुसार कार्य कर सकते है। कुरान मे लिखा है कि प्रत्येक मुसलमान काफिर से तीन बार इस्लाम स्वीकार करने को कहे और उसके मना करने पर उसका वधकर दे। मुस्लिम अधिकारियो ने विजित देशो के निवासियों से यही कहा था या तो इस्लाम स्वीकार करो या मरना और इस्लाम स्वीकार न करने पर उन सबको मृत्यु के घाट उतार दिया। मुस्लिम बादशाहो ने भी इसी नीति का अनुसरण किया। बालक हकीकतराय, गुरु अर्जुन देव व गुरु-गोविन्द सिंह के पुत्रो के इस्लाम न स्वीकार करने पर उनकी नृशंश, क्रूर और बर्बरता पूर्वक हत्या कर दी। क्या मियाँ शाहबुद्दीन इन सब क्रूर कृत्यों का समर्थन कर सकते है? मौलाना शौकत अली मुहम्मदअली पहिले खिलाफत आन्दोलन मे महात्मा गाँधी के सहयोगी रहे पर बाद मे उन्होने महात्मा गाँधी का साथ इस कारण छोड़ दिया कि इस्लाम मे हिंसा वर्जित नही है और स्वय पैगम्बर ने कई युद्ध किये। कुरान के अनुसार प्रत्येक स्त्री को बुरका पहिनना अनिवार्य है। आज पाकिस्तान और बगला देश के राजनैतिक दलो का बिना बुरका पहिने महिलायें नेतृत्व कर रही हैं। किन्तु उनके विरुद्ध इस्लाम के नाम पर कोई भी आन्दोलन नही हो रहा। यद्यपि कुरान मे स्पष्ट तौर से कहा गया है कि स्त्रियो का कार्यक्षेत्र घरों के अन्दर ही सीमित है। कुरान के अनुसार चोरी के अपराधी के हाथ जनता के सामने काटकर फेंक देना चाहिये। क्या मिया शाहबुद्दीन इस बात का आन्दोलन करेगे कि चोरी के अपराधी मुसलमान को इसी प्रकार दण्डित किया जाय। कुरान के अनुसार धार्मिक व्यक्तियों को स्वर्ग मे सुन्दर लड़के व हूरे मिलेंगी जिनकी आँखें मोती जैसी। होगी और वे सदैव तरुणी ही रहेगी। कोई मुसलिम सन्त कुरान के बहिश्त की कल्पना को अच्छा न समझे तो क्या वह निन्दनीय है? मुसलमान बादशाहो ने कुरान के इसी बहिश्त की कल्पना को अपने महलो मे साकार रूप देने के लिये अपने लिये हरम बनाये जिनमे सहस्त्रो रूपवती स्त्रियो को रखा जाता था। क्या आज इस सभ्य युग मे यह उचित कहा जा सकता है? देशकाल और परिस्थितियो के अनुसार नई मान्यतायें पुरानो मान्यताओं का स्थान ले लेती हैं। कमालपाशा ने समय के अनुसार तुर्की मे जो परिवर्तन किये उनके कारण तुर्की आज एक समृद्धशाली एव प्रगतिशील राष्ट्र बन चुका है। और भी मुस्लिम देशो मे नवीन सुधारो का स्वागत हुआ है। बेनजीर भुट्टो ने अपनी पार्टी के घोषणा पत्र मे स्पष्ट लिखा है कि इस्लाम की दुहाई देकर स्त्रियो के विरुद्ध जो कनून बनाये गये है उन्हे हटाने का उनकी पार्टी पूरा प्रयत्न करेगी।

आवश्यक्ता है कि भारत के मुसलमान समय के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर हो और अन्धविश्वास के स्थान पर विवेक से काम करे।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ0प्र0

प्रधानाचार्य सम्मानीकरण समारोह

जिन विद्यालयों की कक्षा 7,9 11 के सभी विद्यार्थी सभा द्वारा सचालित धर्म परीक्षाओ मे प्रति वर्ष सम्मिलित होते रहे है उनके प्रधानाचार्यों को दिनाक- 8 1 1989 को प्रात 11 बजे सभा भवन मे अन्तरग सदस्यो एव प्रदेश की आर्य समाजो के अधिकारियों के समक्ष विशेषरूप से सम्मानित किया जावेगा। इस वर्ष बाराबकी व बहादराबाद के प्रधानाचार्य तथा गगोह (सहारनपुर लालकुर्ती, मरेठ), गुलावठी (बुलन्दशहर), लखीमपुर, हल्दानी, सीतापुर, चंदौसी, कालपी (जालौन) के आर्य इण्टर कालेजो की प्रधानाचार्यो को सम्मानित किया जावेगा। यह कार्यक्रम भविष्य मे भी प्रति वर्ष चलेगा।

माधव सिंह,
मन्त्री।

अर्न्तराष्ट्रीय वैदिक अग्निहोत्र शोध एवं प्रशिक्षण प्रतिष्ठान

अर्न्तराष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद के तत्वाधान मे 17 दिसम्बर 1988 के दिन हैदराबाद व सिकन्दराबाद नगर द्वय के मध्य क्षेत्र मे श्री बी0आर0 लक्ष्मयया स्मारक भवन, बंसीलाल पेठ मे अर्न्तराष्ट्रीय वैदिक अग्निहोत्र शोध एव प्रशिक्षण प्रतिष्ठान की स्थापना की गई। इस केन्द्र मे देश-विदेश के प्रतिभा सम्पन्न सज्जनों को पौरोहित्य का प्रभावशाली प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस केन्द्र के आचार्य वेदभूषण जी होगे जो स्वयं प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

मूर्ति पूजा अवैदिक ही नहीं वरन पुराण मत विरुद्ध

श्री श्याम मोहन आर्य,
भरथना (इटावा)

वर्तमान समय में हिन्दु (आर्य) समाज दो भागों में विभाजित हो गया जहाँ एक वर्ग वेद को आधार मानकर वैदिक मान्यताओं का प्रतिपादन करते हुए वैदिक सिद्धान्त के आधार पर ईश्वर अजन्मा है। जन्म-मरण बन्धन से मुक्त है। तथा ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है। वैदिक मन्त्र "न तस्य प्रतिमा अस्ति" का उद्घोष करते हुए वैदिक सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, मातृ पित्र यज्ञ, अतिथि यज्ञ बल वैश्य यज्ञ पंच महायज्ञानुसार कार्य पर वैदिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करते है। वहीं पर दूसरा समुदाय जिसको पौराणिक मत का मानते हैं। वह भी वेद को तो मानते हैं। परन्तु वैदिक मान्यताओं को स्वीकार करते हैं। लेकिन ईश्वर की मूर्ति की कल्पना कर अजन्मा मानते हुए भी ईश्वर का जन्म अधर्म की वृद्धि पर विनाश हेतु धर्म की स्थापना हेतु ईश्वर का जन्म आवश्यक मानते है। जहाँ प्रथम वर्ग वैदिक सिद्धान्तों का परिपालन कर जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं पौराणिक बन्धु पुराणों को वेद के समक्ष मानकर अवतार को सिद्ध करने का असफल प्रयास किया जाता है। जबकि पुराणों में मूर्ति पूजा के विरुद्ध स्पष्ट मत निम्नलिखित मन्त्र प्रस्तुत करते हैं। आइये समीक्षा करते है ।

भागवत में निम्न मन्त्र पूजा का स्पष्ट निषेध करते हैं।

यस्यात्म बुद्धि करणे त्रिधातुके।
स्वधीः कलत्रादिषुभौम इज्यधीः।
य तीर्थ बुद्धि सलिलेन कर्हिचित।
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ।।

भागवत 10/84/13

अर्थ:-

जो लोग इस शरीर को आत्मा समझते है। स्त्री-पुत्रादि मे जो ममत्व रखते हैं। मिट्टी पत्थर काष्ठ आदि से बनी मूर्ति को पूज्य देव मानते हैं। तथा जल में तीर्थ बुद्धि रखते हैं। ऐसे सभी लोग विद्वानों के मध्य नीच गधे के समान हैं ।

भागवत मे मूर्ति पूजा तथा जल में स्नान करने से तीर्थ मानकर पाप से मुक्ति मानते हैं। वह भागवत के अनुसार गधा माने जाते हैं।

अब हमारे पौराणिक बन्धु विचार करें कि जिन पुराणों को वेद के समक्ष मान्यता देते है। उसका मूर्ति पूजा के बारे में उपरोक्त विचार हैं।

हमारे पौराणिक बन्धु शकराचार्य जी को मान सम्मान देते हैं। तथा उनके शिष्यों को पूजा जाता है। लेकिन अफसोस एवं दुःख है कि उनके शिष्य (अनुयायी) शकराचार्य जी को पूजते हैं। लेकिन शंकराचार्य के सिद्धान्त पर चलने का प्रयास नहीं करते हैं।

मूर्ति पूजा के बारे में शकराचार्य ने अपनी पुस्तक "पश पूजा नामक" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप में प्रस्तुत की है। जो कि निम्न लिखित है ।

1- पूर्णस्य वाहनं कुत्रसर्व धारस्य चासनम्।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यंच शुद्धस्या चमनकुतः ।।

अर्थ-

सर्व व्यापक का आवाहन कैसा सार्वाधार के लिए आसन कैसा स्वच्छ के लिए अर्घ पाद्य कैसा शुद्ध के लिए आचमन क्या।

2- निराधारः
सर्वाधारो निराधारः सर्व व्यापक ईश्वरः।
प्राणादि प्रेरकत्वेन जीवने हेतु ह्रेवच ।।

अर्थ-

ब्रह्म जो सार्वाधार और निराधार है सर्व व्यापक ईश्वर है प्राणादि का दाता होने से जीवन का हेतु है ।

3- अधमाः प्रतिमा पूजा स्तोत्रजाप्यचमध्यमाः
उत्तमा निगमः पूजा सोऽहं पूजा माहात्मनः ।

अर्थ-

अधम पुरुषों के लिए मूर्ति पूजा मध्यम के लिए स्तोत्र और जाप है। वेदानुकूल आचरण (पूजा) उत्तम है। और महात्मा के लिए सोऽहं पूजा है ।

4- तीर्थेषु प्रश यज्ञेषु काष्ठ पाषाण मृन्मये।
प्रतिमाया मनोयेषां तेनरामूढः चेतसः ।।

अर्थ-

तीर्थों में पशुवाले यज्ञों में काष्ठ मिट्टी पत्थर की प्रतिमा में जिनका मन है। वे पुरुष मूढ (मूर्ख) बुद्धिवाले हैं।

5- पाषाणो शलयं बद्धा देव पाषाण एवच ।
ब्रूहि पंडित देवस्तु कस्मिन्न 2-स्थानेसः तिष्ठति ।।

अर्थ -

पत्थरों के मन्दिर में बाँध कर यह पाषाण देव है ऐसा मानकर अरे पंडित यह तो बतला सही वह देव कहाँ ठहरेगा।

6- स्वगृहे पायसं त्यक्तवा भिक्षा मृच्छति दुर्मतिः ।
शिलामूर्त दास चित्रेषु देवता बुद्धि कल्पिता ।।

अर्थ-

अपने घर की खीर को छोड़कर दुर्गति भीख माँगता फिरता है। पत्थर-मिट्टी और लकड़ी में देवता बुद्धि कल्पित करता है।

7- निर्मल स्यकृतः स्नानं वस्त्रं विश्वोदरस्यच ।
निरालम्बस्योपवीतं श्र्यस्यामरर्णाकृतः ।।

अर्थ-

जो निर्मल है। उसको स्थान कैसा साथ विश्व जिसके उदर में है उसको वस्त्र कैसा निरालम्ब को जनेऊ कैसा? श्र्य को आभूषण कैसा किस लिए?

8- निर्लेपस्य कुतोगन्धं पुष्पं निर्वसनस्यच।
निर्गन्धस्य कुतोधूपं स्वप्रकाशस्य दीपकम ।।

अर्थ-

निर्लेप निर्वास है। उसके लिए गन्ध कैसी स्वप्रकाश स्वरूप के लिए दीपक कैसा?

9- नित्य तृप्तस्य नैवेद्य निष्कामस्य फलकृतः ।
ताम्बूलं च विमोक्तस्य नित्यानन्दस्य दक्षिणा ।।

नित्य तृप्त के लिए नैवेध कैसा? निष्काम के लिए फल कैसा विमुके लिए ताम्बूल कैसा नित्यानन्द को दक्षिणा कैसी?

10- स्वप्रकाश मानस्यकुतो नीराजनं विधिः ।
प्रदक्षिणा ह्यनन्त च द्वितीयस्य कानतिः ।।

अर्थ-

स्वप्रकाशमान को दीपक कैसा दिखाना अनन्त की प्रदक्षिणा कैसी अद्वितीय को नमस्कार कैसा?

11- अन्तर्बहिश्च पूर्णस्यकर्थं मुन्द्वासन भवेत ।
इयमेव परा पूजा शम्भो सत्य स्वरूपिका ।।

अर्थ-

भीतर बाहर परिपूर्ण को उद्वासन कैसा सत्य परमेश्वर की पूजा तो वह है।

12- देहो देवालयप्रोक्तो जीवो देह सदाशिवः ।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अक्टूबर 1988 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वीoपी भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर ले, नम्बर नीचे लिखे है। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है:

अक्टूबर-८८,

2248, 2968, 3210, 4566, 4622, 5055, 5352, 5980, 6234, 6411, 9142, 9534, 11287, 11292 11335, 11351, 12016, 12429, 12740, 13253, 13272, 13620, 13627, 13628, 13631, 13639, 14063, 14068, 14079, 14106, 14412, 14413, 14414, 14415, 14471, 14472, 14473, 14474, 14475, 14476, 14482, 14483, 14484, 14485, 14486, 14488, 14489, 14490, 14491, 14492, 14493, 14494, 14496, 14497, 14498, 14499, 14500, 14501, 14503, 14505, 14506, 14507, 14509, 14524,।

नवम्बर-८८,

632, 5724, 8139, 8382, 8682, 11070, 11376, 12062, 12063, 12448, 12452, 12774, 13649, 13650, 13653, 14124, 14525, 14526, 14530, 14531, 14532, 14533, 14535, 14536, 14537, 14538, 14539, 14540, 14541, 14542, 14543, 14544, 14545, 14546, 14548, 14549,।

दिसम्बर-८८

463, 592, 624, 2110, 2254, 2255, 2267, 2656, 2661, 2627, 3947, 4716, 5416, 5995, 8160, 9349, 9352, 9764, 9770, 9772, 10026, 10061, 11087, 11088, 11796, 12530, 12781, 12785, 12788, 13560, 13661, 13662, 14130, 14133, 14144, 14551, 14552, 14553, 14556, 14557, 14558, 14559, 14560, 14561, 14563, 14564, 14565, 14566, 14567, 14571, 14572, 14574, 14575, 14576, 14577, 14578, 14580, 4581, 14582.।

-व्यवस्थापक

नम्र-निवेदन

आपका प्रिय "आर्य मित्र" अब नई साज सज्जा एवं कलेवर के साथ आफसेट में मुद्रित होकर आपकी सेवा में प्रस्तुत हो रहा है। इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री अब टाइप होकर ही मुद्रित होती है। अतः अपने लेख आदि जहाँ तक सम्भव हो टाइप करके अथवा अत्यधिक स्वच्छ हस्तलिपि में पृष्ठ के एक ओर ही लिखकर भेजने की कृपा करें।

-प्रबन्ध सम्पादक

त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत ।।
अर्थ-

यह शरीर मन्दिर है। जीव सह शिव है अज्ञान निर्माल्य के त्याग ही से सोऽहं भाव से पूजा करे।।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है। कि शकराचार्य जी ने मूर्ति पूजा का यश पूजा नामक पुस्तक में डटकर विरोध किया है। अतः पौराणिक बन्धुओं से निवेदन है कि वह हर एक दुराग्रह को छोड़कर अवैदिक प्रथा को समाप्त कर वेदरूपी प्रकाश से आत्मा प्रकाशित करे।

प्रह्लाद नगर मेरठ में सत्संग

श्री वजीरचन्द्र जी के निवास स्थान प्रह्लाद नगर मेरठ के सत्संग में बोलते हुए आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री आर्य भिक्षु जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रसिद्ध पुस्तक "कल्याण मार्ग का पथिक" के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है कि "ऋषि दयानन्द जी को मेरे अलावा कौन जान सकता है, जिनके स्मरण मात्र से मैं कई बार पतित होते-होते बचा।" इस्लाम की सबसे बड़ी देन यह है कि उसने एक मात्र उपास्य ईश्वर को ही माना है। यही बात ऋषि दयानन्द जी भी स्वीकार करते हैं। अकृतज्ञता संसार का सबसे बड़ा पाप है। स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि "यदि सांसारिक सुख और मोक्ष का अनन्द चाहते हो तो नियमपूर्वक गृहस्थ जीवन व्यतीत करो। जीवन में सुखपूर्वक रहो।" गृहस्थ जीवन की आवश्यकता पर बल देते हुए आर्य भिक्षु जी ने वैदिक धर्म के अनुसार गृहस्थ आश्रम व्यतीत करने की लोगों को प्रेरणा दी।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम सिक्टहा, थाना महुली (बस्ती) में दिनांक 14 दिसम्बर से 18 दिसम्बर तक मनाया गया।

xxxxxxx

भारत-भ्रमण

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) के कुलपति श्री विश्वमित्र मेधावी भारत भ्रमण के प्रसंग में सम्प्रति आर्यसमाज शहीद नगर भुवनेश्वर उड़ीसा में हैं। उनके भ्रमण का उद्देश्य गुरुकुल महाविद्यालय को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ करना और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रति आर्य जनता मे जन जागरण पैदा करना है।

विद्यानुरागी महानुभावों से निवेदन है कि उनके पहुँचने पर पूर्ण सम्मान के साथ उनका पूरा सहयोग करें और उदारता से अधिकाधिक दान देकर अमर यश के भागी बनें।

xxxxxxxxx

मानव संसाधन मन्त्री द्वारा संस्कृत के मामले मे पुनर्विचार का आश्वासन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती तथा वरिष्ठ उप प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम ने 10 नवम्बर 1988 को मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री पी0 शिवशंकर से एक भेंट वार्ता में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा नई शिक्षा पद्धति पर जारी किए गए परिपत्र पर चर्चा की। बोर्ड के इस परिपत्र के अनुसार संस्कृत भाषा को अन्य विदेशी भाषाओं यथा- जर्मन, फ्रेंच, अरबी, फारसी आदि के समकक्ष रखा गया है, तथा उसे अनिवार्य भाषा के रूप में अध्ययन के लिए स्कूलों के हिन्दी पाठ्यक्रम (अ) के साथ जोड़ा गया है।

बातचीत के परिणा स्वरूप मन्त्री महोदय ने इस बात को स्वकार किया कि संस्कृत को अन्य विदेशी भाषाओं के साथ एकसम करने से जनता में जो रोष पैदा हुआ है, वह अकारण नहीं है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। उन्होंने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि इस दोषपूर्ण स्थिति को शीघ्र दूर किया जाये। आर्यसमाज के नेताओ ने बातचीत के समय यह प्रश्न भी उठाया कि संस्कृत भाषा के साथ यह भेदभाव क्यों बरता जा रहा है, जबकि संविधान के अनुच्छेद आठ में दी गई प्रमुख भारतीय भाषाओं की सूची में उसका स्थान भी है। हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तरह अन्य भारतीय भाषाओ को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पाठ्क्रम में भी संस्कृत को क्यों सम्मिलित नहीं किया गया है।

वार्तालाप के अन्त में मन्त्री महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि संस्कृत के मामले पर वे सब दृष्टिकोण से पुनः विचार करेंगे ।

xxxxxxx

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
पौष कृष्ण 2,
25 दिसम्बर, रविवार, 1988 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मि...
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आर्य सम्मेलन सम्पन्न

27 से 30 अक्टूबर 1988 तक आर्ष गुरुकुल पेरवा कटरा [इटावा] का सप्तम वार्षिक आर्य सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन शिक्षा सम्मेलन गुरुकुल के प्रधानाचार्य प0 राजवेन्द्र शर्मा के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर व्यसनमुक्ति सम्मेलन, गो कृषि रक्षा सम्मेलन, तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन भी आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के मुख्यातिथि श्री मुलायम सिंह यादव लोकदल अध्यक्ष उ0प्र0 ने राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता की चर्चा करते हुए कहा कि देश की आजादी में 85 प्रतिशत आर्य समाजियों ने काम किया था किन्तु आज तक सरकार ने आर्य समाज एवं गुरुकुलो की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मुख्य अतिथि जी ने इस अवसर पर सहायतार्थ गुरुकुल को 21000रु0 देने का वचन दिया। इसके अतिरिक्त आर्य जगत् के श्रेष्ठ संयासी स्वामी वेदानन्द जी दण्डी [गुरुकुल पटा], डा0 वीरेन्द्र राय उपमन्त्री सभा, श्री धुवपाल सिंह "अटल" मुख्यनिरीक्षक सभा, श्री पं0 ओम प्रकाश जी आर्य, श्री पं0 जलेश्वर-मुनि जी, श्री पं0 राम स्वरूप जी, तथा स्थानीय जनता ने बड़ी उत्सुकता पूर्वक भाग लिया।

xxxxxx

पिछड़े और बिछुड़े लोगों को गले लगाओ

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह

उपसभा द्वारा पूरे दिसम्बर मास चलने वाले "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-स्मृति-समारोह" का उद्घाटन गत रविवार को ग्राम भोगपुर में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। उक्त ग्राम के निष्ठावान आर्य स्व0 अध्यापक मेहर सिंह रावत की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य मे उनके पुत्रों ने यज्ञ का आयोजन किया जिसमे पौरोहित्य कार्य जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री नैनसुख वर्मा ने किया।

समारोह के मुख्य वक्ता जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प0 देवदत्त बाली ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर विस्तारपूर्वक बोलते हुए कहा कि कुव्यसनों में ग्रस्त जन इस जीवनी से विशेष प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं कि वे भी बुराइयों से छुटकारा पाने में वैसे ही सफल हो सकते हैं जैसे युवक मुंशीराम कुव्यसन-त्याग से हीरा बनकर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अमर कृतित्व को पा सका।

शोक समाचार

दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर [फर्रुखाबाद] के आद्य संचालक तथा उसकी संचालन समिति के वर्तमान प्रधान श्री जगनूलाल मिश्र का दो माह की बीमारी के पश्चात गत 20 नवम्बर 1988 को निधन हो गया। वे 81 वर्ष के थे। उनका संस्कार पूर्ण वैदिक रूप से किया गया। इस अवसर पर उनके यशस्वी पुत्र श्री आदित्य पाल सिंह आर्य ने एक हजार रु0 वार्षिक "श्री जगनूलाल मिश्र संस्कार प्रशिक्षण छात्रवृत्ति" भी प्रदान करने की घोषणा की।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सभा मंत्री

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम	- वेदाधार आचार प्रकाश
लेखक/प्रकाशक	- श्री रामसिंह आर्य, भू0पू0 बैं अधिकारी, 17-गांधीनगर, आगरा
मुद्रक	- मे0 राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टिर्स, मोतीला नेहरु रोड, आगरा-3
पुस्तक प्राप्ति स्थान	- मे0 वंशीराम एण्ड सन्स, अस्पता रोड, आगरा-3 तथा प्रकाशक
मूल्य	- रु0 12=00 मात्र।

मनुष्य संसार का श्रेष्ठतम प्राणी माना जाता है। ऐन्द्रि शक्तियों में अन्य प्राणियों से तुलना में श्रेष्ठ न होते हुए उस श्रेष्ठतम पदवी प्रभु ने इसलिए प्रदान की है क्यों कि अपने नैमित्तिक ज्ञान के सहारे असीमित विकास करने की पू क्षमता रखता है। यह सृष्टि उसकी कर्मभूमि है जहाँ शुभ क करता हुआ वह इसी ज्ञानमयी बुद्धि के सहारे उस परमधा तथा परम आनन्दरसमय मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, क्यों यही मानव का चरमलक्ष्य है, परमगति है। इस लक्ष्य व प्राप्त करने के लिए उसे मानव कोटि में आना ही पड़ेगा औ अपने जीवन को आचारवान् बनाना होगा। यह आचार ही उस जीवन के समग्र विकास की सार्वभौम प्रक्रिया है। आचार नियमों को ही हम परमात्मा का उपदेश भी कह सकते हैं जि ना-चलाना मानव का परम कर्त्तव्य है। अन्ततः हमा भोग और कर्मयोनि के समन्वितरूप से ऊपर उठक आनन्द को भोगना है जो सांसारिक विषय भोगों से क बहुत दूर अनिर्वचनीय माना जाता है और जिसे शास्त्रो में " वर्णयितुं गिरा" कहा गया है। यही जीव के पुरुषार्थचतुष्ट [धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष] की अन्तिम परिणिति है। इसे प्राप करने के लिए आचार रूपी क्षुरे की धार पर चलना होगा, जीव को तपस्या की कठोर सिढियों द्वारा तपाकर अपने को आचारवा तथा परम श्रेष्ठवान् बनाना होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बड़ी ही रोचक शैली मे परमात्म की अमरवाणी वेद के आधार पर सत् आचार के कतिपय आया दिए है और उनकी सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है। निःसन्दे इस पुस्तक को पढ़कर मनुष्य जीवन को उन्नत करने की बहु प्रेरणा मिलेगी। पुस्तक पठनीय है मननीय है सदाचार प्रति निष्ठा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इसका अध्ययन/मन करना चाहिए। आर्य समाज के प्रचारक/उपदेशक इस पुस्त के आधार पर दार्शनिक भावों से ओत-प्रोत व्याख्यान तैया कर सकते हैं। नैतिकता के उत्थान में सहयोगी संस्थाए इसे अपने यहाँ अवश्य रखे।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
एम0 ए0
दर्शनवाचस्पति

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।